पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

युग-परिवर्तन कैसे और कब ?

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग परिवर्तन कैसे ? और कब ?

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मूल्य १२५)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं हैं किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि ''प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।''

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अत: पुन: सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमश: उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंत: स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी। उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ। गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी। धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है। १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है। १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया। कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं। संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था। तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं। हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया। परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था। तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए। स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये। एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी। ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे। इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक। इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

सभी एक स्वर से यह कह रहे हैं कि प्रस्तुत वेला युग परिवर्तन की है । इन दिनों जो अनीति व अराजकता का साम्राज्य दिखाई पड़ रहा है, इन्हीं का व्यापक बोल बाला दिखाई दे रहा है, उसके अनुसार परिस्थितियों की विषमता अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी है । ऐसे ही समय में भगवान "यदा-यदा हि धर्मस्य" की प्रतिज्ञा के अनुसार असन्तुलन को सन्तुलन में बदलने के लिए कटिबद्ध हो "संभवामि युगे युगे" की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए आते रहे हैं । ज्योतिर्विज्ञान प्रस्तुत समय को जो १८५० ईसवी सदी से आरम्भ होकर २००५ ईसवी सदी में समाप्त होगा- संधि काल, परिवर्तन काल, कलियुग के अंत तथा सतयुग के आरम्भ का काल मानता चला आया है । इसीलिए इस समय को युगसंधि की वेला कहा गया है। कुछ रुढ़िवादी पण्डितों के अनुसार नया युग आने में अभी ३ लाख २४ हजार वर्ष की देरी है, किन्तु यह प्रतिपादन भ्रामक है, यह वास्तविक काल गणना करने पर पता चलता है । हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व से लेकर श्री मद्भागवत तथा श्रीमद्भगवत गीता का उल्लेख कर परम पूज्य गुरुदेव ने इसमें यह प्रमाणित किया है कि वास्तविक काल गणना के अनुसार सतयुग का समय आ पहुँचा । हजार महायुगों का समय जहाँ ब्रह्मदेव के एक दिवस के बराबर हो व ऐसे ही हजार युगों के बराबर रात्रि हो, वहाँ समझा जा सकता है कि काल की गणना को समझने में विद्वत्जनों द्वारा कितनी त्रुटि की गयी है ।

परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि १९८० से २००० व बाद का कुछ समय अनय को निरस्त करने और सृजन को समुन्नत बनाने वाली, देव शक्तियों के प्रबल पुरुषार्थ के प्रकटीकरण का समय है । जब भी ऐसा होता है, तब दैवी प्रकोप, विभीषिकाएँ, विनाशकारी घटनाक्रम, मनुष्य जाति पर संकटों के बादल के रूप में गहराने लगते हैं । मानवी दुर्बुद्धि को सुमति में, सद्बुद्धि में बलात् बदलने हेतु किया गया अदृश्य स्तर का उसे एक उपक्रम भी समझा जा सकता है । ऐसे समय में मानसिक उन्माद, आत्म हत्याऐं, युद्धोन्माद, स्थान-स्थान पर उभरते देखे जाते हैं, ऐसी व्याधियाँ फैलती दिखाई देती हैं जो कभी न देखी, सुनी गयीं किन्तु समय रहते ही यह सब ठीक होता चला जाता है ।

देखें तो, वस्तुतः विज्ञान के वरदानों ने मनुष्य को आज इतना कुछ दे दिया है कि सब कुछ आज उसकी मुट्ठी में है । द्रुतगामी वाहनों ने जहाँ आज दुनिया को बहुत छोटी बना दिया है, वहाँ इसका एक बहुत बड़ा प्रभाव मानव की मानसिक शान्ति, पारिवारिक-दाम्पत्य-जीवन एवं सामाजिकता वाले पक्ष पर भी पड़ा है । विज्ञान ने वरदान के साथ प्रदूषण को बढ़ाकर ओजोन की परत को पतला कर परा बैंगनी किरणों तथा अन्यान्य कैंसर को जन्म देने वाले घातक रोगाणुओं की पृथ्वी पर वर्षा का निमित्त भी स्वयं को बना लिया है । सात लाख मैगावाट अणु बमों की शक्ति के बराबर ऊर्जा प्रतिदिन पृथ्वी पर फेंकने वाला सूर्य इन दिनों कुपित है । सौरकलंक, सूर्य पर धब्बे बढ़ते चले जा रहे हैं । सूर्य ग्रहणों की एक शृंखला इस सदी के अन्त तक चलेगी, जिसका बड़ा प्रभाव जीव समुदाय पर पड़ने की सम्भावना है ।

परम पूज्य गुरुदेव एक दृष्टा, मनीषी, भविष्य-वक्ता थे । जो जो भी उनने १९४० से अब तक लिखा, समय-समय पर वह सब सही होता चला गया । इस खण्ड में उनने अतीन्द्रिय दृष्टा महायोगी श्री अरविन्द से लेकर, बरार के विद्वान ज्योतिषी श्री गोपीनाथ शास्त्री चुलैट, रोम्यां रोलां, भविष्य वक्ता व हस्त रेखा विद कीरो, महिला ज्योतिषी बोरिस्का, बाइबल की भविष्य वाणियाँ, नार्वे के प्रसिद्ध योगी आनन्दाचार्य, जीन डीक्सन, एण्डरसन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गेरार्ड क्राइसे, चार्ल्स क्लार्क, प्रो. हटार, जूल वर्न, जार्ज बावेरी से लेकर कल्कि पुराण तथा आज के कम्प्यूटर युग में यूरोपिया द्वारा भविष्यवाणी करने वाले विद्वानों, एल्विनटाफलर, फ्रिटजाफ काप्रा, प्रो. हमीश मैकरे आदि का हवाला देते हुए, आने वाले दिनों के स्वरूप के विषय में लिखा है । उज्ज्वल भविष्य के दृष्टा परम पूज्य गुरुदेव ने समय-समय पर कहा है कि स्रष्टा को सुव्यवस्था और सुन्दरता ही प्रिय है । संकटों की घड़ियाँ आसन्न दीखते हुए भी यह विश्वास नहीं छूटना चाहिए कि स्रष्टा अपनी इस अद्‌भुत कलाकृति- विश्वसुधा को, मानवी सत्ता को, सुरम्य वाटिका को विनाश के गर्त में गिराने से पहले ही बचा लेता व अपनी सक्रियता का परिचय देता है । परिस्थितियों को उलटने का चमत्कार-युग परिवर्तन का उपक्रम रचने वाला पराक्रम करना ही इस युग के अवतार का प्रज्ञावतार का उद्देश्य है, यह भली भाँति आत्मसात होता चला जाता है, पूज्यवर की पंक्तियों को पढ़कर । पूज्यवर ने लिखा है कि "अवतार सदा ऐसे ही कुसमय में होते रहे हैं, जैसा कि आज है । अवतारों ने लोक-चेतना में ऐसी प्रबल प्रेरणा भरी है, जिससे अनुपयुक्त को उपयुक्त में बदल देने का उत्साह लगने वाली संभावनाएँ सरल होती प्रतीत हों। दिव्य चक्षु युगान्तरीय चेतना को गंगावतरण की तरह धरती पर उतरते देख सकते हैं ।"

अपने १९९० के वसंत पर्व पर, महाकाल के संदेश में उनने प्रत्येक से प्रज्ञावतार के साथ, साझेदारी करने की बात को, समय की सबसे बड़ी समझदारी बताया तथा लिखा कि अब सभी के मन में ऐसी उमंगें उठनी चाहिए कि युग परिवर्तन की महाक्रान्ति में उनकी कुछ सराहनीय भूमिका निभ सके ।

यह आमंत्रण सबके लिए है । "इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य" का उद्‌घोष पूज्यवर ने आशावादिता की उमंगों को जिन्दा रखने के लिए दिया एवं उसी का सन्देश इस वाङ्मय में है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय सूची

आर्ष ग्रन्थ और काल-गणना १.१
युग-संधि का यही समय क्यों ? १.१
अन्य धर्म ग्रन्थ और युग-निर्णय १.९
मानवी दुर्बुद्धि और आसन्न संकट २.१
बढ़ रहे है, मगर किसी दिशा में २.१
स्थिति निश्चित ही विस्फोटक २.२
बढ़ती आबादी बढ़ते संकट २.३
हर ओर बेचैनी, व्याधियाँ एवं उद्विग्नता २.३
वास्तविकता को नकारा कैसे जाय ? २.४
यदि अब न चेते तो महाविनाश होकर रहेगा २.७
भूगर्भीय उत्पातों की शृंखला अभी थमने वाली नहीं २.९
सन् १९८२ में प्रकृति प्रकोप २.११
दुर्गतिजन्य दुर्गति-मौसम के असंतुलन के रूप में २.१५
असन्तुलित पर्यावरण से व्यापक
उथल-पुथल सम्भावित २.२०
बाइबिल में संकट के संकेत २.२३
हम प्रलय की ओर तो नहीं बढ़ रहे है २.२६
विभीषिका का अन्त नहीं २.२८
जनसंख्या-वृद्धि स्वयं में एक संकट २.३०
क्या धरती खिसक जायगी ? २.३१
जब हमें प्यासे रहना होगा २.३६
जब साँस लेने पर बीमार होना पड़ेगा २.३८
कैसे बुझेगी प्यास ? पानी तो मिलेगा नहीं २.४३
जल प्रदूषण के कुछ भयंकर दुष्परिणाम २.४६
यह विषाक्त भोजन मारे बिना नहीं छोड़ेगा २.४७
अवरोध क्यों आते है ? प्रयास क्यों
असफल होते है ? २.५२
बुद्धिवाद और नीति-निष्ठा का समन्वय
युग की परम आवश्यकता २.५४
आसन्न विभीषिकाएँ व उनके पीछ छिपी यथार्थता २.५७
यह कुचक्र देर तक टिकेगा नहीं २.५८
क्या मानवी प्रतिमा ध्वंस में ही लगनी चाहिये ? २.६०
प्रस्तुत प्रचलन बदल कर रहेगा २.६३
सभ्यता की उपेक्षा करना अपने पैरों पर
कुल्हाड़ी मारना २.६६
खोखली पाश्चात्य सभ्यता २.६९
असंतुलन का असमंजस एवं इक्कीसवीं सदी २.७१
महाविनाश पर उतारू मानव समुदाय २.७४
कहीं हम आत्मघाती संकट की ओर तो
नहीं बढ़ रहे ? २.७६
परस्पर जुड़े हुए है अन्तःकरण एवं पर्यावरण २.७८
प्रकृति से छेड़छाड़ हमें बड़ी मँहगी पड़ेगी २.८०
समृद्धि के नाम पर बढ़ता जहर २.८२
प्रकृति के साथ खिलवाड़-याने सामूहिक
आत्महत्या २.८४
दूरदर्शिता को अपनाना ही श्रेयस्कर २.८६
खण्ड प्रलय को निमंत्रण तो न दें २.८८
प्रकृति पर बलात्कार को उतारू विज्ञान २.९०
प्रकृति संतुलन बिगाड़ने का प्रतिफल २.९३
प्रकृति का गला न घोंट दिया जाय २.९४
प्रकृति से छेड़ छाड़ अब बन्द की जाय २.९६
क्यों इस चक्र को तोड़ें जिसमें बंधे हैं हम सब २.९८
प्रकृति की पुकार जियो और जीने दो २.१०१
प्रकृति सन्तुलन बिगाड़ने से हानि ही हानि है २.१०३
भौतिक विज्ञान के अभिशाप और वरदान २.१०५
कोलाहल एक भयावह जीवन संकट २.१०७
यह समृद्धि बहुत मँहगी पड़ रही है २.११०
भारत के वायुमंडल में बढ़ती विषाक्तता २.११२
अब तो साँस लेना भी दूभर हो जायेगा २.११५
प्रदूषण रूपी महा व्याधि से बचाव कैसे करें ? २.११७
वातावरण प्रदूषण का क्या कोई समाधान है ? २.११८
प्रदूषण घटाने वाली दूरदर्शिता २.१२०
अब पर्जन्य नहीं अम्ल बरसेगा २.१२२
सूखा आसमान भी बरस सकता है २.१२४
युग परिवर्तन और उसकी पृष्ठ भूमि ३.१
प्रगति की बेलगाम दौड़ पर दूरदर्शिता
का अंकुश लगाया जाय ३.१
बुद्धिमान मनुष्य की मूर्खतापूर्ण प्रगति ३.३
हम अन्तरिक्ष को ही नहीं अन्तर को भी खोजें ३.६
सौर ऊर्जा का अथाह सिन्धुकाश ! उसे धारण
कर पायें ३.८
ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों पर अब ध्यान दिया
ही जाना चाहिये ३.११
कचरे के संकट से कैसे निपटें ? ३.१५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्वच्छता से आत्म-रक्षा करे ३.१६
इस कचरे को समेटेगा कौन ? ३.१८
डिस्पोजिबल कल्चर-नासमझी का प्रतीक ३.१९
पृथ्वी का गिरता जल स्तर संकट का सूचक ३.२०
प्रगति के नाम पर अवगति तो न अपनाये ३.२१
अभिवर्धन ही नहीं परिशोधन भी ३.२३
सावधान ! पृथ्वी का सुरक्षा कवचक्षीण हो रहा है ३.२५
महामरण की एक व्यापक तैयारी ३.२६
ध्रुव केन्द्रों पर छेड़छाड़ अबिलम्ब रोकी जाय ३.२८
मौसम बदला, तो हम संकट में पड़ेंगे ३.३१
पृथ्वी से भार सहन नहीं हो रहा ३.३२
मनुष्य जीवन का अन्त कितना निकट ३.३३
क्या रेगिस्तानों को उद्यानों में बदला जा सकेगा ? ३.३५
रेगिस्तानों को उपजाऊ बनाना पड़ेगा ३.३६
उभरता एक संकट समाधान चाहता ३.३९
वृक्ष न रहेंगे तो मनुष्य भी न रहेगा ३.४१
यंत्र मानवों की गुलामी के लिए तैयार रहें ३.४४
मनुष्य का प्रतिद्वन्द्वी-यन्त्र-मानव ३.४७
दुर्बुद्धि के रहते उपलब्धियाँ विघातक ३.४८
क्या अगली पीढ़ी अपाहिजों की होगी ३.५०
विज्ञान की अंधी दौड़ कहाँ तक उचित ३.५१
मानवकृत विभीषिकाओं के मंडराते बादल ३.५३
पृथ्वी के पिंजड़े से निकल भागने की महत्वाकांक्षी योजना ३.५६
प्रगति के जोश में अवगति ओर बढ़ते हुए कदम ३.५८
तब हमें भी अपना अस्तित्व गँवाना पड़ेगा ३.६१
निकट भविष्य में अध्यात्म युग आकर रहेगा ३.६२
अदृश्य का अनुकूलन अध्यात्म प्रयोगों द्वारा ३.६५
भविष्य इस प्रकार का उभरेगा ३.६७

अन्तर्ग्रही हलचल और विश्वव्यापी उथल-पुथल ४.१
दृश्यमान संकट के मूल में सक्रिय परोक्ष हलचलें ४.१
भू-चुम्बकत्व में गिरावट-एक अशुभ संकेत ४.४
सूर्य स्फोटों का अपनी पृथ्वी पर प्रभाव ४.६
वर्तमान में उभरने वाले ४.७
ज्योतिषियों के निष्कर्ष ४.१०
ज्योतिर्विज्ञान के सही स्वरूप का निर्धारण हो ४.१३
ज्योतिष-एक विज्ञान सम्मत विधा ४.१४
सूर्य-ग्रहणों की असाधारण शृंखला और उनकी अवांछनीय प्रतिक्रिया ४.१५
खग्रास ग्रहण से व्यापक उथल-पुथल सम्भावित ४.१९
आखिर यह हस्तक्षेप क्यों ? ४.२२
मूर्धन्यों और मनीषियों के कथन ४.२४

युद्ध और अणु आयुध ५.१
दुर्बुद्धि अपनाने पर दुर्गति का त्रास भी सहना ही होगा ५.१
विनाश की दिशा में बढ़ते चरण ५.३
धन विनाश में नहीं, विकास में लगे ५.४
प्रतिभा का सुनियोजन हो ५.७
युद्ध में मनुष्य ने खोया बहुत कुछ, पाया कुछ नहीं ५.९
विज्ञान अपनी गरिमा समझे ५.१०
शक्ति को विनाश-विग्रह में लगने से रोका जाय ५.१३
काश ! दिमाग ही नहीं दिल भी बड़ा होता ५.१९
बुद्धि प्रगति की अनुगामिनी बने ५.१९

निराकरण और समाधान ६.१
मानवी दुर्बुद्धि से ही उपजी है-आज की समस्यायें ६.१
सृजन के साथ जुड़ी हुई ध्वंस की अनिवार्यता ६.३
आसन्न विभीषिकाओं से डरे नहीं समाधान सोचें ६.६
प्रत्यक्ष ही नहीं परोक्ष भी समझें ६.१०
बुद्धिवाद नीतिनिष्ठा का पक्ष धर बने ६.१२
सदुपयोग बन पड़े, तो परिवर्तन सम्भव ६.१४
सदुपयोग बनाम दुरुपयोग ६.१५
सुनियोजन की सही परिणति ६.१५
समाधान इस प्रकार भी संभव था ६.१६
निराशा में आशा की झलक ६.१६
निराशा हर स्थिति में हटे ६.१७
प्रस्तुत समस्यायें सुलझने ही जा रही हैं ६.१९

ऋषि सत्ता की भविष्यवाणी ७.१
सूर्योदय हो चला अब प्रकाश फैलना ही बाकी है ७.१
हमारी भविष्यवाणी सतयुग की वापसी ७.४
भारत का भविष्य निश्चित रूप से उज्जवल है ७.६
चौथी क्रान्ति सर्वनाश नहीं ला रही ७.८
नव युग की नई आचार संहिता ७.१०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तरिक्ष में चल रही उच्चस्तरीय उथल-पुथल ७.१३
चिन्तन-चेतना में उत्कृष्टता उभरे ७.१४
अवरोधों से जुझने की सूझ-बूझ जगे ७.१६
विनाश विभीषिकाओं का अन्त होकर रहेगा ७.१८
सहायता के दिए दैवी शक्ति का आव्हान ७.२०
खतरा इतना गम्भीर नहीं है ? ७.२३
बढ़ती हुई विभीषिकाओं के हल निकलेंगे ७.२४
भावी परिवर्तन की पृष्ठि भूमि ७.२७
प्रतिभाएँ अग्रिम पंक्ति में आयें ७.२९
युग परिवर्तन-नियन्ता का सुनिश्चित आश्वासन ७.३१
विश्व-शान्ति में भारत की भूमिका ७.३४
परिवर्तन की अदृश्य किन्तु अद्भुत प्रक्रिया ७.३६
दिव्य सम्भावना सुनिश्चित है ७.३९

इक्कीसवीं सदी एवं भविष्य वेत्ताओं के अभिमत ८.१

अन्तः स्फुरणा बनाम भविष्य बोध ८.१
वैज्ञानिक शोधें भी पूर्वाभास से उपजीं ८.२
दिव्य दृष्टाओं का भविष्य कथन ८.३
जीन डिक्सन ८.४
जूलवर्न ८.६
प्रो० हरार ८.७
पीटर हरकौस ८.७
नोस्ट्राडेमस ८.८
२१वीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य ८.९
जान सैवेज ८.१०
एण्डरसन ८.१०
अगले दिनों की विनाशकारी संभावनाएँ ८.११
चार्ल्स क्लार्क ८.१३
महात्मा रामचन्द्र ८.१५
जौन एडम ८.१६
सतयुग एक भवितव्यता ८.१७
मुझे स्वर्णयुग स्पष्ट दिखाई दे रहा है ८.१९
भारत विशाल बनेगा ८.२१
पूरब की लाली लाई नवयुग का सन्देश ८.२३
सुखद भविष्य की एक और बानगी ८.२५
भविष्य की झांकी, मस्तिष्क के झरोखे से ८.२६
भवितव्यता परिवर्तन का संकेत दे रही है ८.२८
भविष्य सम्बन्धी पूर्वानुमान भी संभव ८.२९
सत् युगी समाज-सपना या वास्तविकता ८.३०
भविष्यवाणियों से सार्थक दिशा बोध ८.३१
लार्ड टेनसिन की भविष्यवाणी ८.३३
पिरामिडों में अंकित सन् २००० की दुनिया ८.३४
भारत द्वारा नव युग नेतृत्व की भविष्यवाणी ८.३७
मात्र यूटोपिया नहीं, वास्तविकता ८.३९
भविष्य उज्ज्वल है ८.४१
मालिका की भविष्यवाणी ८.४१
अगले दिनों धर्म फले फूलेगा ८.४२
नवयुग आ रहा है ८.४३
उलट पलट अवश्यंभावी है ८.४४
महाव्रत का उद्यापन ८.४४
विश्व की संचालन शक्ति ८.४४
मंदिर जन जागरण के केन्द्र बनेंगे ८.४५
पृथ्वी ईश्वर की होगी ८.४६
उपासना पद्धति एक होगी ८.४६
महान आध्यात्मिक क्रान्ति ८.४७
भगवत सत्ता का अवतरण हो चुका ८.४७
ओरेकल का निष्कर्ष ८.४७
नवयुग का मार्ग संकटों में होकर ही है ८.४८
सृजन से पूर्व ध्वंस संभावी है ८.४८
अनौचित्य को उलटने को तत्पर दैवी चेतना ८.४९
समस्याएँ मिटेंगी, इस तरह नवयुग में ८.५१
विनाश टलेगा ८.५२
नयी संस्कृति का उदय ८.५२
ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में विश्व का भविष्य ८.५३
क्रुम हैलर ८.५३
प्रोफेसर कीरो ८.५५
गोपीनाथ शास्त्री चुलैट ८.५५
आत्मनूल ज्योतिष ग्रन्थ में वर्णित भविष्य ८.५८
क्रान्ति विश्वव्यापी होगी किन्तु होगी व्यापक ८.५९
धर्मग्रन्थों में वर्णित भविष्य कथन ८.६०
सतयुग का सच्चा स्वरूप ८.६१
मुस्लिम धर्मग्रन्थों में युग परिवर्तन के संकेत ८.५३
निष्कलंक अवतार, धर्म एवं संस्कृति का पुनरुद्धार ८.६४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्य विज्ञानियों के अनुमान और आकलन ९.१
निकट भविष्य में यह परिस्थितयाँ सामने आयेंगी ९.१
आवश्यकता है अब व्यवस्था में परिवर्तन की ९.३
कैसे बदलेगा मानव जाति का भविष्य ९.५
हम विनाश की कगार पर खड़े है ९.७
कैसी होगी बीस वर्ष बाद की यह दुनिया ९.९
अगली शताब्दी का भविष्य कथन ९.१०
अगले दिनों हमें घास खाकर ही जीना पड़ेगा ९.१५
प्रस्तुत है एक वैज्ञानिक भविष्य कथन ९.१७
इक्कीसवीं सदी की परिणति ९.१९
मूर्धन्य विश्व विचारकों का अभिमत ९.२०
इक्कीसवीं सदी का आधार स्तम्भ बनेगा-आध्यात्मिक अर्थशास्त्र ९.२१
परिवर्त्तन प्रकृति की एक नियमित प्रक्रिया ९.२३
क्या पृथ्वी का नक्शा बदलने जा रहा है ? ९.२४
नवयुग का अरुणोदय अब निकट ही ९.२७
निन्यानवे का फेर क्या आखिरी फेर ९.२८
इक्कीसवीं सदी अर्थात् एन्यूमिलेनियम ९.२९
विज्ञान ही कठिनाइयों का हल ढूँढेगा ९.२९
हमारा भविष्य अन्धकारमय नहीं है ९.३१
अब बारी है नवयुग के नवोन्मेष की ९.३२
युगान्तरकारी परिवर्तन के मोड़ पर खड़े हम सब ९.३५
अगली पीढ़ी समझदारों की होगी ९.३६
अध्यात्म पर आधारित नवयुग का साम्यवाद ९.३६
चेतना के स्तर पर हो रही परिवर्तन प्रक्रिया ९.३८
अगले दिनों विश्व का नेतृत्व भारत ही करेगा ९.४०
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज ९.४२
भारत का भविष्य ९.४३
भारत विश्व की अगुवाई करेगा ९.४४
भारत विश्व का मार्ग दर्शन करेगा ९.४४
भारतः एक उभरती हुई महाशक्ति ९.४५
इक्कीसवीं सदी की रूपरेखा ९.४६
इक्कीसवीं सदी का सार्वजनीन वाहन-साइकिल ९.४७
इक्कीसवीं सदी में कैसी होगी संचार व्यवस्था ९.५०
ऐसी होगी इक्कीसवीं सदी की दुनिया ९.५०
इक्कीसवीं सदी युवकों की होगी ९.५०

सभ्यता का शुभारम्भ
मानवी गरिमा और सभ्यता १०.१
अवरोध का निराकरण तो होना ही चाहिए १०.३
सुव्यवस्थित और विकासमान जीवनक्रम १०.६
प्रसन्नता पराक्रम और प्रगतिशीलता १०.११
प्रसन्नता-प्रफुल्लता १०.१४
संघर्ष-पराक्रम १०.१५
प्रशिक्षण १०.१६
सुसंस्कारिता की ओर भी बढ़े १०.१७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आर्ष ग्रन्थ और काल-गणना

युग-संधि का यही समय क्यों ?

काल गणना के संदर्भ में 'युग' शब्द का उपयोग अनेक प्रकार से होता है । जिन दिनों जिस प्रचलन या प्रभाव की बहुलता होती है उसे उसी नाम से पुकारा जाने लगता है । जैसे ऋषि युग, सामंत युग, जनयुग आदि। रामराज्य के दिनों की सर्वतोन्मुखी प्रगति, शांति और सुव्यवस्था को सतयुग के नाम से जाना जाता है । कृष्ण की विशाल भारत निर्माण सम्बन्धी योजना के एक संघर्ष पक्ष को महाभारत नाम दिया जाता है । परीक्षित के काल में कलयुग के आगमन और उससे राजा के संभाषण अनुबंधों का पुराण गाथा में वर्णन है । अब भी रोबोट युग, कम्प्यूटर युग, विज्ञान युग आदि की चर्चायें होती रहती हैं । अनेक लेखक अपनी रचनाओं के नाम युग शब्द जोड़कर करते हैं । जैसे यशपाल जैन का ''युग बोध'' आदि । यहाँ युग शब्द का अर्थ जमाने से है । जमाना अर्थात् उल्लेखनीय विशेषता वाला जमाना, एक एरा, एक पीरियड इसी संदर्भ में आमतौर से 'युग' शब्द का प्रयोग होता है ।

युगों की गणना कितने ही प्रकार से होती है । उनमें एक गणना हजार वर्ष की है । प्रायः हर सहस्राब्दी में वातावरण बदल जाता है, परम्पराओं में उल्लेखनीय हेर-फेर होता है । बीसवीं सदी के अन्त और इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ को एक युग का समापन और दूसरे का शुभारम्भ माना गया है ।

इसी भाँति पंचांगों में कितने ही संवत्सरों के आरम्भ संबंधी मान्यताओं की चर्चा है । एक मत के अनुसार युग करोड़ों वर्ष का होता है । इस आधार पर मानवीय सभ्यता की शुरूआत के खरबों वर्ष बीत चुके हैं और वर्तमान कलयुग की समाप्ति में अभी लाखों वर्ष की देरी है । पर उपलब्ध रिकार्डों के आधार पर नृतत्ववेत्ताओं और इतिहासकारों का कहना है कि मानवीय विकास अधिकतम उन्नीस लाख वर्ष पुराना है, इसकी पुष्टि भी आधुनिक तकनीकों द्वारा की जा चुकी है ।

काल गणना करते समय व्यतिरेक वस्तुतः प्रस्तुतीकरण की गलती के कारण है । ग्रन्थों में जो युग गणना बतायी गई है, उसमें सूर्य परिभ्रमण काल को चार बड़े खण्डों में विभक्त कर चार देव युगों की कल्पना की गई है । एक देव युग को ४,३२,००० वर्ष का माना गया है । इस आधार पर धर्मग्रन्थों में वर्णित कलिकाल की समाप्ति की संगति प्रस्तुत समय से ठीक-ठाक बैठ जाती है ।

यह संभव है कि विरोधाभास की स्थिति में लोग इस काल गणना पर सहज ही विश्वास न कर सकें, अस्तु यहाँ ''युग'' का तात्पर्य विशिष्टता युक्त समय से माना गया है । युग निर्माण योजना आन्दोलन अपने अन्दर यही भाव छिपाये हुए है । समय बदलने जा रहा है, इसमें इसकी स्पष्ट झाँकी है ।

प्रत्येक संधि काल का अपना विशेष महत्त्व होता है । सूर्योदय और सूर्यास्त का समय संध्याकाल कहलाता है । यह दोनों समय 'पर्व काल' कहलाते हैं । साधना पर विश्वास करने वाले इन दोनों समयों में उपासना साधना का विशेष महत्त्व मानते हैं । मंदिरों से आरती और मस्जिदों से अजान की ध्वनि इन्हीं संधि वेलाओं में सुनाई देती है ।

सर्दी और गर्मी, इन दो प्रधान ऋतुओं के मिलन काल पर आश्विन और चैत्र की नव रात्रियाँ होती हैं । इन दोनों बेलाओं को पुण्य पर्व माना जाता है । इस अवधि में साधक गण विशेष साधनायें करते हैं ।

रात्रि का अंत और दिन का उदय 'प्रभात पर्व' है । उस वेला में सभी में उत्साह उमड़ता है । फूल खिलते हैं, पक्षी चहचहाते है और सभी प्राणी अपने-अपने कार्यों में विशेष उत्साह के साथ लग पड़ते हैं । नयी सहस्राब्दी के बारे में भी ऐसा ही मानना चाहिए । इक्कीसवीं सदी भी ऐसे ही शुभ संदेश साथ लेकर आ रही है । उसके सम्बन्ध में उज्ज्वल भविष्य की ही कल्पना और मान्यता बनानी चाहिए ।

रात्रि जब समाप्त होती है तब अंधेरा अधिक सघन हो जाता है । दीपक बुझने को होता है तो उसकी लपक बढ़ जाती है । मरने वाले की साँसें तेज चलती हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धड़कनें बढ़ जाती हैं । समापन का समय ऐसा ही होता है ।

कलियुग की समाप्ति और सतयुग की शुरूआत के सम्बन्ध में आम धारणा है कि सन् १९८९ से २००१ तक के बारह वर्षों का समय संधिकाल के रूप में होना चाहिए । इसमें मानवी पुरुषार्थयुक्त विकास और प्रकृति प्रेरणा से सम्पन्न होने वाली विनाश की, दोनों प्रक्रियाएँ अपने-अपने ढ़ंग से हर क्षेत्र में सम्पन्न होनी चाहिए । बारह वर्ष का समय व्यावहारिक युग भी कहलाता है । युग संधिकाल को यदि इतना मानकर चला जाय, तो इसमें कोई अत्ययुक्ति जैसी बात नहीं होगी ।

हर बारह वर्ष के अन्तराल में एक नया परिवर्तन आता है, चाहे वह मनुष्य हो, वृक्ष, वनस्पति अथवा विश्व ब्रह्माण्ड सभी में यह परिवर्तन परिलक्षित होता है । मनुष्य शरीर की प्रायः सभी कोशिकाएँ हर बारह वर्ष में स्वयं को बदल लेती हैं । चूँकि यह प्रक्रिया पूर्णतया आन्तरिक होती है, अतः स्थूल दृष्टि को इसकी प्रतीत नहीं हो पाती किन्तु है यह विज्ञान-सम्मत ।

काल गणना में बारह के अंक का विशेष महत्व है । समस्त आकाश सहित सौरमण्डल को बारह राशियों, बारह खण्डों में विभक्त किया गया है । पंचांग और ज्योतिष का ग्रह गणित इसी पर आधारित है । इसी का अध्ययन कर ज्योतिर्विद यह पता लगाते हैं, कि आगामी समय के स्वभाव और क्रिया-कलाप कैसे होने वाले हैं ? पाण्डवों के बारह वर्ष के बनवास की बात सर्वविदित है । तपश्चर्या और प्रायश्चित परिमार्जन के बहुमूल्य प्रयोग भी बारह वर्ष की अवधि की महत्ता और विशिष्टता को ही दर्शाते हैं । इस आधार पर यदि वर्तमान बारह वर्षों को उथल-पुथल भरा संधिकाल माना गया है, तो इसमें विसंगति जैसी बात नहीं है ।

कुछ रुढ़िवादी पण्डितों का कथन है कि युग ४ लाख ३२ हजार वर्ष का होता है । इस प्रकार इसका एक चरण १ लाख ८ हजार वर्ष का हुआ । इस हिसाब से तो नया युग आने में ३ लाख २४ हजार वर्ष की देरी है ।

वर्तमान परिस्थितियों के पर्यवेक्षण से यह सत्य जैसा नहीं लगता । वास्तव में शास्त्रीय प्रतिपादन हर जगह विशिष्ट अर्थ रखते हैं, उन्हें उल्टा-पुल्टा जोड़ा गया, उसी के कारण अन्ध मान्यतायें फैलीं । प्रतिपादन गलत नहीं, पर प्रस्तुतीकरण भ्रामक है, उसे समझा जाना चाहिए और उसका निराकरण किया जाना चाहिए ।

ग्रह-नक्षत्रों की भिन्न-भिन्न परिभ्रमण गति तथा उसके पृथ्वी पर पड़ने वाले भिन्न-भिन्न परिणामों को देखकर युग शब्द की समय अवधि भिन्न-भिन्न है । वाजस संहिता में मनुष्ययुग-देवयुग अलग-अलग स्पष्ट बताये गये हैं ।

'श्रुतकर्ण ॐ सं प्रथस्तमत्वागिरा देव्यमानुषा।'११।१११

तैतिरीय संहिता में युग की कल्पना—

'या जाता ओषधयो देवेन्यस्त्रियुगं पुरा।'

ऋग्वेद ज्योति पाठ में प्रजापति ब्रह्मा का युग ५ सम्वत्सर का बताया है :-

पंचम संवत्सरमय युगाध्यक्षं प्रजापतिम् ।
युगस्य द्वादशाब्दानि तत्र तानि बृहस्पतेः ॥
तिष्यादिच युग प्राहुर्ववसिष्ठात्रि पाराशराः ।
बृहस्पतिस्तु सौम्यान्त सदा द्वादश वार्शिकम् ॥

अर्थात्— बृहस्पति १२ राशि भोग लेते हैं तब एक युग आता है । एक राशि एक वर्ष की होती है अतएव १२ राशियों का युग १२ वर्ष का हुआ । इसी प्रकार सूर्य की, चन्द्रमा की गणनाओं के हिसाब से युग की अवधि में काफी अन्तर है । वैज्ञानिकों ने खोज की है कि ११ वर्ष में सूर्य की अन्तर्दशा बदलती है, इस १२ वर्ष को ही उसका एक युग कहा जा सकता है ।

जहाँ ४ लाख ३२ हजार वर्ष के एक-एक युग की कल्पना की गई है, वहाँ उसकी संगति आर्षग्रन्थों की युग-गणना से किसी भी प्रकार नहीं बैठती ।

मनुस्मृति में इस सम्बन्ध में स्पष्ट कहा गया है—

ब्राह्मस्यतु क्षपाहस्य यत्प्रमाणं समासतः ।
एकैकशो युगानान्तु क्रमशस्त्र्यान्निबोधत ।
चत्वार्याहु सहस्राणि वर्षाणांतु कृतं युग ।
तस्यतावत् शती संध्या संध्याशश्च तथाविधः ।
इतेरेषु स संध्येषु स संध्याशेषु च त्रिषु ।
एकोयायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ।
मनु० १।६७-६९

अर्थात्— ब्रह्माजी के अहोरात्र में सृष्टि के पैदा होने और नाश होने में जो युग माने गए हैं, वे इस प्रकार हैं—चार हजार वर्ष और उतने ही शत अर्थात् चार सौ वर्ष की पूर्व संध्या और चार सौ वर्ष की उत्तर संध्या इस प्रकार कुल ४८०० वर्ष का सतयुग, इसी प्रकार तीन हजार छह सौ वर्ष का त्रेता, दो हजार चार सौ वर्ष का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वापर और बारह सौ वर्ष का कलियुग । ज्योतिषी मेधातिथि ने सोचा होगा कि कलियुग तो मुझ तक ही कई हजार वर्षों का व्यतीत हो चुका है, फिर यह १२०० वर्षों का नहीं हो सकता । तब उन्होंने श्रीमद्भागवत के स्कन्ध १२, अध्याय २ के इस ३४ वें श्लोक को देखा होगा ।

दिव्याब्दानां सहस्रान्ते चतुर्थेतु पुनः कृतम् ।
भविष्यति यदा नृणां मन आत्म प्रकाशकम् ॥

इसका शब्दार्थ यह है कि– ''चार हजार दिव्य वर्षों के अन्त में अर्थात् चार हजार दिव्य वर्षों में (कलियुग बीता) फिर सतयुग आयेगा जो मनुष्यों के मन और आत्मा में प्रकाश करेगा ।''

इस श्लोक में दिव्य शब्द आया है । मेधातिथि ने इसका अर्थ देवता कर डाला और अभी तक प्रायः सभी पण्डित लोग ऐसा ही अर्थ करते रहे हैं । चूँकि एक मानुषी वर्ष के बराबर देवतओं का एक दिन होता है, यह विचार करके मेधातिथि ने भ्रम से १२०० वर्षों का कलियुग समझा और उन्हें देव वर्ष मानकर उनको ३६० से गुणा करके ४३२००० बना दिया और कलियुग की इतनी अवधि लिख दी जो सर्वथा मिथ्या है । 'दिव्य' शब्द का अर्थ देवता नहीं हो सकता । इसका प्रमाण ऋग्वेद २।१६४।४६ में दृष्टव्य है ।

'इन्दं मित्रं वरुणमग्नि माहुः रथो दिव्यः ससुपर्णो गरुत्मान् । अर्थात् अग्नि रूपी सूर्य को इन्द्र मित्र वरुण कहते हैं । वही दिव्य सुपर्ण, गरुत्मान है ।

यह मंत्र निरुक्त दैवत काण्ड ७।१८ में भी आता है। वहाँ दिव्य शक्ति की व्युत्पत्ति यह की गई है- ''दिव्यो दिविजो'' अर्थात् जो दिवि में प्रकट होता है, उसे दिव्य कहते हैं । दिवि 'द्यु' को कहते हैं । नैघण्टुक काण्ड में दिन के १२ नाम लिखे हैं, उनमें द्यु शब्द भी दिन का वाचक है, अब दिव्य का अर्थ यह हुआ कि ''जो दिन में प्रकट होता है ।'' और यह प्रत्यक्ष है कि दिन में सूर्य ही प्रकट होता है । अतः दिव्य सूर्य का नाम है ।

ऋग्वेद १।१६।३।१० के मन्त्र–ईर्मान्तांसः सिलिक..... दिव्य मज्मश्वाः ।'' का ''अश्वो अग्निर्देवता'' अर्थात् आग का घोड़ा (सूर्य) है । इसमें भी सूर्य का ही वर्णन है । इस मंत्र पर निरुक्त ने दिव्य शब्द की व्युत्पत्ति दिव्या दिविजो' की है । बात वही है । जो दिन में प्रकट होता है, वह दिव्य सूर्य है और यह भी स्पष्ट लिखा है कि- ''अस्त्यादित्यस्तुति'' अर्थात् इस नाम से सूर्य की स्तुति है । वेद में दिव्य नाम सूर्य का है, देवता को दिव्य कदापि नहीं कहते । यह दो बड़े प्रमाण वेद के हैं ।

व्याकरण से भी दिव्य शब्द का अर्थ देवता नहीं बनता । दिव् धातु में 'स्वोर्थेयत'' प्रत्यय लगाने से दिव्य शब्द बनता है । इसकी व्युत्पत्ति यह हुई– ''दिवि भवं दिव्यन्'' अर्थात् जो दिवि में प्रकट होता है, वह दिव्य है और दिन में सूर्य ही प्रकट होता है । अतः दिव्य केवल सूर्य ही को कहते हैं । दिवि द्यु को कहते हैं और द्यु दिन का नाम है । देवता शब्द दूसरे ''देवातल'' आदि सूत्रों से बनता है इस कारण भी दिव्य और देवता शब्दों का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है । दिव्य शब्द और देवता शब्द बनाने के रूप ही अलग-अलग हैं ।

कुल्लूक भट्ट ने तो अपनी मनुस्मृति से १।७१ की टीका करते हुए पूरा खंडन किया है कि ''एतस्य श्लोकस्यादो यदे तन्मानुषम् चतुर्युगं परिगणितम् एतद्देवानां युग मुच्यते ।'' अर्थात्-चारों युग मनुष्यों के हैं, इनके बराबर देवताओं का एक युग होता है । इसलिए सतयुग ४८०० वर्षों का और कलियुग १२०० वर्षों का ही हुआ।

मेधातिथि ने चारों युगों को देवताओं के युग और उनके वर्षों को देव वर्ष लिखा है, जिसका खण्डन कुल्लूक भट्ट ५०० वर्ष पहले ही कर चुके हैं ।

वास्तव में सूर्य की उत्तर दक्षिण गति को ही दिव्य वर्ष कहते हैं, जिसकी गति ३६० संख्या की है, अर्थात् उत्तरायण के ६ मास और दक्षिणायन के ६ मास के ३६० दिन-रात मनुष्यों के हुए । इसी को दिव्य वर्ष कहते है ।

अतः दिव्य देवताओं का वर्ष नहीं है । इसलिए जो आगे ३६० से १२०० को गुणा कर आये हैं वह गुणा न किया, तो कलियुग की ठीक आयु १२०० वर्षों की ही हुई ।

हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व में भी युगों का हिसाब इसी प्रकार बताया गया है यथा–

अहोरात्रं विभज्यनो मानव लौकिकं परम् ।
सामुपादाय गणानां शृणु संख्य, मन्दिरम् ॥
चत्वार्येव सहस्राणि वर्षाणानुकृत युगं ।
तावच्छसी भवेत्संध्या संध्याशश्च तथानृप ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्रीणि वर्ष सहस्राणि त्रेतास्या स्परिमाणतः ।
तस्याश्च त्रिशती संध्या संध्याशश्च तथा विधः॥
तथा वर्ष सहस्रे द्वे द्वापरं परिकीर्तितः ।
तस्यापि द्विशती संध्या संध्यांशश्चैवतद्विधः ॥
कलिवर्ष सहस्रं व संख्यातोऽत्र मनिषिभिः ।
तस्यापि शतिक संध्या संध्यांशश्च तथाविधः ॥

अर्थात्– हे अरिदंम ! मनुष्य लोक के दिन रात का जो विभाग बतलाया गया है उसके अनुसार युगों की गणना सुनिए, चार हजार वर्षों का एक कृतयुग होता है और उसकी संध्या चार सौ वर्ष की तथा उतना ही संध्यांश होता है । त्रेता का परिमाण तीन हजार वर्ष का है और उसकी संध्या तथा संध्यांश भी तीन-तीन सौ वर्ष का होता है । द्वापर को दो हजार वर्ष कहा गया है । उसकी संध्या तथा संध्यांश दो-दो सौ वर्ष के होते हैं । कलियुग को विद्वानों ने एक हजार वर्ष का बतलाया है और उसकी संध्या तथा संध्यांश भी सौ वर्ष के होते हैं ।

लिंग पुराण तथा श्रीमद् भागवत में भी इसी प्रकार की युग गणना मिलती है । भागवत के तृतीय स्कन्ध में कहा गया है-

चत्वारि त्रीणि द्वे चैके कृतादिषु यथाक्रमम् ।
संख्यातानि सहस्राणि द्वि गुणानि शतानि च ॥
भागवत ३।११।१९

अर्थात्– चार, तीन, दो और एक ऐसे कृतादि युगों में यथाक्रम द्विगुण सैकड़े की संख्या बढ़ती है । आशय यही है कि कृतयुग को चार हजार वर्ष में आठ सौ वर्ष और जोड़कर ४८०० वर्ष माने गये । इसी प्रकार शेष तीनों युगों की कालावधि समझी जाय । कुछ स्थानों पर मनुष्यों के व्यवहार के लिए बारह वर्ष का एक युग भी माना गया है । जिसको एक हजार से गुणा कर देने पर देवयुग होता है, जिसमें चारों महायुगों का समावेश हो जाता है । इस बारह वर्ष के देवयुग को फिर एक हजार से गुणा करने पर १ करोड़ २० लाख वर्ष का ब्रह्मा का एक दिन हो जाता है, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति और लय हो जाता है । भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इसी युग की बात कही है–

सहस्र युगपर्यन्त मर्ह्यद् ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रि युग सहस्रान्तां तेऽहोरात्र विदोजना ॥
८।१७

अहोरात्र को तत्वतः जानने वाले पुरुष समझते हैं कि हजार महायुगों का समय ब्रह्मदेव का एक दिन होता है और ऐसे ही एक हजार युगों की उसकी रात्रि होती है। लोकमान्य तिलक ने इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि महाभारत, मनुस्मृति और यास्कनिरुक्त में इस युग गणना का स्पष्ट विवेचन आता है । लोकमान्य तिलक के अनुसार "हमारा उत्तरायण देवताओं का दिन है और हमारा दक्षिणायन उनकी रात है । क्योंकि स्मृति ग्रन्थों और ज्योतिष शास्त्र की संहिताओं में भी उल्लेख मिलता है कि देवता मेरु पर्वत पर अर्थात् उत्तर ध्रुव में रहते हैं । अर्थात् दो अयनों छः-छः मास का हमारा एक वर्ष देवताओं के एक दिन-रात के बराबर और हमारे ३६० वर्ष देवताओं के ३६० दिन-रात अथवा एक वर्ष के बराबर होते हैं । कृत, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग माने गये हैं । युगों की काल गणना इस प्रकार है कि कृत युग में चार हजार वर्ष, त्रेता युग में तीन हजार, द्वापर में दो हजार और कलियुग में एक हजार वर्ष । परन्तु एक युग समाप्त होते ही दूसरा युग एकदम आरम्भ नहीं हो जाता, बीच में दो युगों के संधि काल में कुछ वर्ष बीत जाते हैं । इस प्रकार कृत युग के आदि और अन्त में प्रत्येक और चार सौ वर्ष का, त्रेता युग के आगे और पीछे प्रत्येक ओर तीन सौर वर्ष का, द्वापर के पहले और बाद में प्रत्येक ओर दो सौ वर्ष का तथा कलियुग के पूर्व और अनन्तर प्रत्येक ओर सौ वर्ष का सन्धिकाल होता है, सब मिलाकर चारों युगों का आदि अन्त सहित सन्धि काल दो हजार वर्ष का होता है । ये दो हजार वर्ष और पहले बताये हुए सांख्य मतानुसार चारों युगों के दस हजार वर्ष मिलाकर कुल बारह हजार वर्ष होते हैं ।" (गीता रहस्य भूमिका पृष्ट १९३)

इन गणनाओं के अनुसार हिसाब फैलाने से पता चलता है कि वर्तमान समय संक्रमण काल है । प्राचीन ग्रन्थों में हमारे इतिहास को पांच कल्पों में बाँटा गया है । (१) महत् कल्प १ लाख ९ हजार ८ सौ वर्ष विक्रमीय पूर्व से आरम्भ होकर ८५८०० वर्ष पूर्व तक, (२) हिरण्य गर्भ कल्प ८५८०० विक्रमीय पूर्व से ६१८०० वर्ष पूर्व तक, (३) ब्राह्म कल्प ६०८०० विक्रमीय पूर्व से ३७८०० वर्ष पूर्व तक, (४) पाद्म कल्प ३७८०० विक्रम पूर्व से १३८०० वर्ष पूर्व तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और (५) बाराह कल्प १३८०० विक्रम पूर्व से आरम्भ होकर इस समय तक चल रहा है ।

अब तक बारह कल्प के स्वायम्भु मनु, स्वरोचिष मनु, उत्तम मनु, तमास मनु, रेवत-मनु, चाक्षुष मनु तथा वैवस्वत मनु के मन्वन्तर बीत चुके है और अब वैवस्वत तथा सावर्णिमनु की अन्तर्दशा चल रही है । कल्कि पुराण में बाराह कल्प के सावर्णि मनु के दक्ष, ब्रह्म, रुद्रदेव और इन्द्र सावर्णियों के मन्वन्तर बीत जाने पर, अवतार होने और धरती में कलियुग की संध्या समाप्त होकर सतयुग प्रारम्भ होने का वर्णन आता है । सावर्णिमनु का आविर्भाव विक्रमी सम्वत् प्रारम्भ होने से ५७३० वर्ष पूर्व हुआ था। इन्द्र सावर्णियों के मन्वन्तर के बाद ही कल्कि प्रकट होने और कल्कि सम्वत् प्रचलित होने की बात लिखी है जो कल्कि के जन्म से प्रारम्भ है और उसका काल वि० सं० ४९७० आस-पास पाया जाता है । कलियुग सम्वत् की जानकारी के लिए राजा पुलकेशिन (द्वितीय) चालुक्य ने विद्वान् ज्योतिषियों से गणना कराई थी । दक्षिण भारत के इहोल नामक स्थान में प्राप्त शिलालेख में भी उसका उल्लेख १९६९-७० में पाया जाता है । इससे यही सिद्ध होता है कि भारत के बौद्ध प्रभाव को निरस्त करने वाले कल्कि का प्राकट्य सम्वत् १९६९-७० के आस-पास हो चुका है । इस सम्बन्ध में पुरातन इतिहास शोध-अधिष्ठान' मथुरा की ऐतिहासिक गवेषणायें बड़ी महत्त्वपूर्ण है । उसके शोधकर्ता ने भी उक्त तथ्य को माना है और अपनी विज्ञप्ति में ज्योतिष गणना का उल्लेख करते हुए स्वीकार किया है, इस समय ब्राह्म-रात्रि का तमोमय सन्धिकाल है ।

भागवत के दूसरे अध्याय में भी कलियुग की समाप्ति का स्पष्ट उल्लेख है—

यदा देवर्षयः सप्तमघासु विचरन्ति हि ।
तदा प्रवृत्तस्तु कलिर्द्वादशाब्द शतात्मकः॥३१॥
यदा मघाभ्यो यास्यन्ति पूर्वाषाढ़ा महर्षयः ।
तदा नन्दात् प्रभृत्येष कलिर्वृद्धिगमिष्यति ॥३२॥
यस्मिन् कृष्णो दिवं यातस्तस्मिन्नेव तदाहनि।
प्रतिपन्नं कलियुगमिति प्राहुः पुराविदः ॥३३॥

अर्थात् जब सप्तऋषि (तारगण) मघा नक्षत्र पर आये थे तब कलियुग का आरम्भ हुआ और जब सप्तऋषि पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में आ चुकेंगे तो बारह सौ वर्षो में कलियुग राजा नन्द के समय में वृद्धि को प्राप्त हो जायगा जब भगवान् कृष्ण अपने धाम को पधारे, उसी समय से कलियुग चल पड़ा ।

सप्तऋषि तारागण वर्तमान समय से कृतिका नक्षत्र पर है । एक नक्षत्र पर इनके १०० वर्ष रहने का प्रमाण है । मघा में जब यह थे तो कलियुग का आरम्भ हुआ । अब तक यह एक बार सत्ताइसों नक्षत्रों पर घूम चुके है । इस प्रकार मघा से रेवती तक १८ एक बार का पूरा चक्र २७ और कृतिका तक ३ अर्थात् कुल ४८ नक्षत्र घूम चुके । इस प्रकार कलियुग सम्वत् २००० में श्रावण कृष्णा अमावस्या को पूरा हो जाता है ।

कलियुग समाप्त होने का ठीक-ठीक समय निम्न श्लोक से प्रकट हो जाता है—

यदा चन्द्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य बृहस्पति ।
एक राशौ समेष्यन्ति तदा भवति तत् कृतम्॥

अर्थात् जिस समय चन्द्रमा, सूर्य और बृहस्पति एक ही समय पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करते है, एक राशि में आते है तो कलियुग समाप्त होकर सतयुग आरम्भ होता है, यह योग संवत दो हजार की श्रावण कृष्णा अमावस्या तदनुसार १ अगस्त सन् ४३ में आ चुका है ।

महाभारत में भी इससे मिलता-जुलता वर्णन है—

ततस्तु मुल संघाते वर्तमाने युगक्षये ।
द्विजाति पूर्वको लोकः क्रमेण प्रभाविष्येति ॥
दैवःकालान्तरेऽन्यास्मिन्पुनर्लोकं विवृद्धये ।
भविष्यति पुनर्दैवमनुकूलं यदृच्छया ॥
यदा चन्द्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य बृहस्पति ।
एक राशौ समेष्यन्ति प्रपत्स्यति तदा कृतम्॥
काल वर्षी च पर्जन्यो नक्षत्राणि शुभानिच।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं भविष्यति निरामयम् ॥

महाभारत ? वन पर्व अध्याय १९० श्लोक ८८,८९,९०,९१

''वर्तमान युग के समाप्त होने के समय बड़ी कठोर घटनाऐं घटेंगी और उत्तम वर्ण वाले मनुष्यों की धीरे-धीरे उन्नति होने लगेगी । कुछ समय पश्चात् दैव की इच्छा से लोक की वृद्धि करने वाला समय फिर आ जायगा । जब तिष्य में चन्द्र, सूर्य और बृहस्पति एक राशि पर समान अंशों में आवेंगे तो सतयुग फिर आरम्भ हो जायेगा । फिर यथासमय वर्षा हुआ करेगी, सब लोग स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे ।''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपरोक्त पंक्तियों में "तिष्य" शब्द आया है। इसके दो अर्थ होते हैं—पौष मास या पुष्य नक्षत्र। पौष का अर्थ स्वीकार करने वालों के मत से कुछ वर्ष पूर्व यह आ चुका है और सतयुग आरम्भ हो गया है। पुष्य नक्षत्र मानने वालों के मत से यह योग श्रावण कृष्णा अमावस्या संवत् २००० में आ चुका है।

महाभारत में अन्यत्र कहा गया है-

चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तत् कृतं युगम्।
तस्य तावच्छती संध्या संध्याशश्च तथाविधः॥
त्रीणि वर्ष सहस्राणि त्रेतायुग महोच्यते।
तस्य तावच्छती संध्या संध्यांशश्च ततः परम्॥
तथा वर्ष सहस्रे द्वापरे परिमाणतः।
तस्यापि द्विशती संध्या संध्यांशश्च तथा विधः।
सहस्रमेकं वर्षाणां ततः कलियुग स्मृतम्।
तस्य वर्ष शतं संधि-संध्यांशश्च ततः परम्।
संधि संध्यांशयोस्तुल्यं प्रमाण मुपधारय॥

(वन पर्व १८८-२२ से २६)

अर्थात्—चार हजार वर्षों का एक सतयुग बताया गया है। उतने ही सौ वर्ष उसकी संध्या और संध्यांश के होते हैं (अर्थात् सतयुग कुल मिला कर ४००० हजार + ४०० + ४०० = ४८०० वर्ष का होता है। त्रेता तीन हजार वर्षों का होता है और उसकी संध्या तथा संध्यांश तीन-तीन सौ वर्ष के होते हैं। इस प्रकार सब मिला कर ३००० + ३०० + ३०० = ३६०० वर्ष का होता है।

द्वापर का मान दो हजार वर्ष का और उसकी संध्या और संध्यांश दो-दो सौ वर्ष की होती हैं। इस प्रकार यह २४०० वर्ष का होता है। कलियुग एक हजार वर्ष का कहा गया है और संध्या तथा संध्यांश मिला कर वह बारह सौ वर्ष का हो जाता है।

'लिंग पुराण' में इसी विषय का विवेचन इस प्रकार मिलता है—

चत्वारिच सहस्राणि मानुषाणि शिलासन।
आयुः कृतयगे विद्धि प्रजानामिह सु व्रत॥९॥
ततः कृतयुगे तस्मिन् सन्ध्यांशेप्र गतेतुवै।
पादवशिष्टो भवति युगधर्म्मसु सुर्वतः॥१०॥
चतुर्भागै कहीनन्तु त्रेतायुग मनुत्तमं।
कृतार्द्ध द्वापरं विद्धि तदर्द्ध तिष्यमुच्यते॥११॥
त्रिशती द्विशती सन्ध्या तथा चैक शतीमुने।
सन्ध्यांश कंतीथा शेवं कल्पेष्वेवं युगे युगे॥१२॥

अर्थात् "सतयुग मनुष्यों के चार हजार वर्ष का होता है। सतयुग का अन्तिम सन्ध्यांश बीत जाने पर धर्म का तीन हिस्सा रह जाता है। त्रेतायुग तीन हजार का, द्वापर दो हजार का और कलियुग एक हजार वर्षों का होता है। इन सब की सन्ध्या और सन्ध्यांश मिल कर क्रम से आठ सौ, छः सौ, चार सौ और दौ सौ वर्ष के होते हैं।"

काल निर्णय के संबंध में भगवान व्यास ने वेदान्त दर्शन के चतुर्थ प्रपाठक में अपना मन्तव्य निम्न प्रकार प्रकट किया है-

द्विधऽसुमन्तः क्रमर्द्धीतर बीजाभ्याम्॥१०॥

भाष्य—द्विधेतिः असुमन्तः प्राणिनः क्रमर्द्धी तर बीजाभ्यो क्रमोन्नति क्रमावनत्योः शक्ति विशेषाभ्याम्। तत्रयस्य बाहुल्यं भोगभूमौ द्वितीयस्य कर्म भूमौ द्रष्टव्यम्। अत्राच मनुजेषु ये क्रमर्द्धिषी जिनस्तेषां प्रागुन्नतिर नुमीयतां वियति विहगानाम् वोर्ध्वागामिनाम्।

अर्थात्—मनुष्यों की सृष्टि दो प्रकार की होती है। एक क्रमोन्नति वाली और दूसरी 'क्रमावनति' वाली, प्रथम प्रकार की क्रम से उन्नति करने वाली प्रजा 'भोग-भूमि' (जैसे योरोप, अमरीका आदि) में पाई जाती है और दूसरी प्रजा कर्मभूमि (जैसे भारतवर्ष) में मिलती है। क्रमोन्नति बीज वालों की पहले अवनति और पीछे क्रमशः उन्नति होती जाती है। क्रमावनति बीज वालों की पहले उन्नति और पीछे क्रमशः अवनति होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिन भारतवासियों की अभी अवनति हो रही है उनकी पहले उन्नति हुई थी और जिन विदेशियों की इस समय उन्नति दिखलाई पड़ रही है वे पहले अवनति की दशा में थे। इसका दृष्टान्त इस प्रकार है कि जैसी पक्षी आकाश में उड़ रहे हों तो उनमें से जो पक्षी क्रमशः ऊपर की ओर चढ़ रहा है उनकी उन्नति और जो नीचे उतर रहा हो उसकी अवनति का अनुमान करना चाहिए।

तद्वतीर्युगानि व्यस्तैक क्रमाभ्याम्॥११॥

भाष्य—तद्वतोरिति न द्वतो क्रमर्द्धी तरवीजतोर्व्यस्तैक क्रमाभ्यां व्युत्क्रमानुक्रमाभ्यां युगानि सत्यत्रेता द्वापर संज्ञकानि प्रतिभान्तीत्यर्थः तथाच क्रमोन्नति बीजिनां कल्यादि सत्यान्तानि क्रमादनति बीजिनां तु सत्यादि कल्पन्तानि युगनिवर्त्तनते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्—उन दोनों (क्रमोन्नति तथा क्रमावनति बीज वालों) के युग व्युत्क्रम और अनुक्रम दो प्रकार के होते है । क्रमावनति वालों के सत्य, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग ये चार युग क्रमशः होते हैं । इसके विपरीत क्रमोन्नति वालों का प्रथम कलियुग होता है फिर क्रम से उन्नति की वृद्धि होते-होते सतयुग की सी उत्तम अवस्था आ जाती है । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पहले भारत में सतयुग की अवस्था थी, जिसका क्रमशः त्रेता, द्वापर, कलियुग के रूप में ह्रास होता गया है । क्रमोन्नति वालों ने आरम्भ में (कलियुग में) जो थोड़ी उन्नति आरम्भ की वह आगामी युगों में क्रमशः बढ़ती हुई इस समय चरम सीमा पर पहुँच गयी । अब उसके पुनः गिरने के लक्षण स्पष्ट हो रहे हैं । इससे अनुमान लगाना भी असंगत नहीं कि अब कर्मभूमि भारत में कलियुग समाप्त होकर पुनः सतयुग की दशा आने वाली है ।

युग-निर्धारण का यह अप्रत्यक्ष तरीका हुआ, जिसमें सीधे गणना द्वारा काल-निर्णय न कर उस समय की परिस्थितियों के आधार पर उसका अनुमान लगाया जाता है । भारतीय शास्त्रों में यह शैली भी प्रचलित है । दृष्टव्य हैं उसके कुछ उदाहरण—

''ऐतरेय ब्राह्मण'' में इस संबंध में एक प्रकरण बड़ा ही भावपूर्ण और शिक्षाप्रद है । एक ऋषि को हतोत्साहित और निराश देखकर इन्द्र उपदेश देते हैं—

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः ।
उत्तिष्ठन्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन् ॥

अर्थात् ''जिस समय समाज या व्यक्ति निद्रावस्था में बेखबर पड़े रहते है अर्थात् अज्ञानावस्था में रहते हैं उस समय कलियुग होता है । जब निद्रा भंग होकर वे जँभाई लेते है (चैतन्य जान पड़ते हैं) तब द्वापर होता है । फिर जब वे उठकर बैठ जाते हैं तब त्रेता समझना चाहिए। जब वे खड़ा होकर चलने लग जायें अर्थात् अपने कर्त्तव्यकर्मो में उचित रूप से संलग्न हो जाय तब कृत युग अथवा सतयुग समझ लेना चाहिए—

कृष्ण ने युद्ध को रोकने के लिए समझाते हुए कहा था—

यदा द्रक्षसि संग्रामे श्वेतश्वं कृष्ण सारथीम्।
एन्द्रमस्त्रं विकुर्वाणामुवं चाप्याग्नि मारुते ॥६॥
गांडीवस्य च निर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः ।
न तदा भविता त्रेता न कृतं द्वापरं न च ॥७॥
यदा द्रक्षसि संग्रामे कुन्तिपुत्र युधिष्ठिरम् ।
जप होम समायुक्तं स्वं रक्षन्तं महा चमूम्॥८॥
आदित्यमिव दुर्धर्षं तपंतं शत्रुवाहिनीम् ।
न तदा भविता त्रेता न कृतं द्वापरं न च ॥९॥

अर्थात्—''जब संग्राम में श्वेत घोड़ों के सारथी कृष्ण को आग बबूले की तरह होते और महावीर अर्जुन को गांडीव धनुष से वज्राघात की सी टंकार करते देखोगे, तब न तो त्रेता ही रहेगा न कृतयुग और न द्वापर ।''

''जब जप होम आदि किये हुये सूर्य के समान प्रखर तेज वाले कुन्तिपुत्र युधिष्ठिर को अपनी सेना की रक्षा करते और शत्रु की सेना को जलाते देखोगे, तब न त्रेता रहेगा न कृतयुग और न द्वापर ।''

इन उल्लेखों में शास्त्रकारों ने प्रकारानतर से आज की मनःस्थिति का ही वर्णन कर परोक्ष रीति से समय बोध कराने की चेष्टा की है ।

महाभारत के 'हरिवंश पर्व' में इससे भी अधिक स्पष्ट शब्दों में युग-परिवर्तन के वे लक्षण बतलाये गये हैं, जो इस समय हमको अपने सम्मुख दिखलाई पड़ रहे हैं—

परस्पर हतश्वाश्च निराकंक्ष सदुःखिता ।
एवं कष्ट मनुप्राप्तः कलि सन्ध्यांशके तदा॥
प्रजाक्षयं प्रयस्येति साध्यं कलियुगे न हि ।
क्षीणो कलियुगे तस्मिन्ततः कृतयुगं पुनः ।
प्रवर्त्स्येत यथान्यायं स्वभावादेवनान्यथा ।
इते चान्ये च बहवो दिव्या देवगुणैर्युतः ॥
प्रादुर्भावा पुराणेषु गीयन्ते ब्रह्मवादिभिः ।
विश्वत्व श्रृणु मे विष्णोर्हरित्वं च कृतेयुगे ॥

अर्थात्—कलि समाप्त होने पर उसके संध्यांश के समय प्रचण्ड व्याधियां उठ खड़ी होती हैं । प्रजा में असन्तोष बढ़ता हैं और घोर युद्ध भी होते हैं, जिनमें जनता का अत्यन्त नाश होता है । सतयुग आरम्भ होने के पहले एक बार पाप और अशन्ति की पराकष्ठा हो जाती है । ऐसा होने पर ही समझना चाहिये कि कलियुग क्षीण हुआ । फिर सुधरी हुई परिस्थिति कृतयुग के रूप में प्रकट होती है और मनुष्यों में दिव्य गुणों का आविर्भाव होता है । उस समय शास्त्रों के आदेशानुसार लोग अध्यात्मवादी और ब्रह्मपरायण होने लगते हैं ।

हरिवंश पुराण में कलिकाल का वर्णन निम्न प्रकार किया गया है—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शस्य चौरा भविष्यन्ति तथा चैला पहारिणः ।
भक्ष्य भोज्या प्रहारश्च करण्डा नांम्ब हारिणः॥२२॥
चौरा श्चौरस्य हन्तारो हन्ता हर्तु भविष्यति ।
चौरा श्चौर क्षये चापि कृते क्षेमं भविष्यति ॥२३॥

लोग अन्न, वस्त्र तथा खाने पीने की चीजों को भी चुराने लगेंगे । चोर आपस में ही चोरी करेंगे और एक दूसरे को मारेंगे, इस प्रकार जब चोरों से चोरों का नाश होगा तक शान्ति होगी । उस समय–

निःसारे क्षुभित लोके निष्क्रिये कन्तर स्थिते।
नराः श्रविष्यन्ति बनं कर भारं प्रपीड़िता॥२४॥

दुनियाँ के लोग अपने को निःसार और बेकार समझ कर दुखित होंगे और क्या करें, क्या न करें सोचेंगे ठीक इसी समय प्रजा पर इतने अधिक टैक्स बढ़ाये जायेंगे कि प्रजा दुखित होकर वन को चली जायेगी । तब-

नैव शून्या न चा शून्या भविष्यति वसुन्धरा।
गोप्तार चाण्य गोप्तारः, प्रभविष्यन्ति शस्त्रिणः॥३३॥

न तो 'पृथ्वी खाली हो गई' यह कहा जा सकेगा और न यही कहा जा सकेगा कि पृथ्वी में काफी मनुष्य हैं,उस समय इतने व्यक्ति ही मौजूद रहेंगे, जितने हिमालय के तट पर तथा वनों में रह सके क्योंकि सभी व्यक्ति तो महायुद्ध इत्यादि के कारण काल के गाल में समा चुके होंगे । जो थोड़े से व्यक्ति रह जायेंगे वे ही वनों में और हिमालय के बगल में रहेंगे । इसमें भी जो शस्त्रधारी होंगे वे कुछ रक्षक होंगे और कुछ सताने वाले ।

भविष्यति तंदा तेजां रोगै रैन्द्रियः सक्षयः ।
आयुः प्रक्षय सं रोधा द्विषादः प्रभाविष्यति ॥४१॥
सुश्रुषवो भविष्यन्ति साधूनां दर्शनेरताः ।
सत्यं च प्रति पश्यन्ति व्यवहारोप संक्षयात् ॥४२॥
भविष्यन्ति च कामानाम् लाभाद्धर्म शीलिनः ।
करिष्यन्ति च संकोचं स्वपथ्य क्षय पीड़िताः॥४३॥
एवं श्रुशुजनो दाने सत्य प्राणा निरक्षणे ।
चतुष्पादः प्रवृत्त श्च धर्मः श्रेयोऽभियत्स्यते॥४४॥
तेषां लब्धानुमाना नान् गुणेषु परिवर्तताम् ।
स्वादु किंम्बिति विज्ञाय धर्म एवं वदिष्यति॥४५॥
यथा हानिः क्रमात्प्राप्ता तथा वृद्धि क्रमागता ।
प्रगृहीत यतो धर्मे प्रवत्स्यन्ति कृतयुगम् ॥४६॥

रोगों से उनकी इन्द्रियों का क्षय होगा और आयु क्षय के संरोध से परम विषाद को प्राप्त होंगे । उन्हें साधुओं के टहल और दर्शन की इच्छा होगी और साधुओं से उपदेश ग्रहण करेंगे, रोगी रहने के कारण, सभी प्रकार के व्यवहार बन्द हो जाने के कारण, सत्य वचन को बोलने लगेंगे । काम के न होने से धर्मशील हो जायेंगे । आयु क्षय और रोग होने के डर से दुराचार के करने में संकोच करेंगे और दान करने लगेंगे, प्रिय और सत्य बोलने के कारण जब वे सेवाभाव को अख्त्यिार करेंगे तथा धर्म चारों पैर से आ पहुँचेगा तब उनके मन में यह बात पैदा होगी कि अधर्म करना बुरा है, और धर्म करना बहुत अच्छा है । तब सब कोई धर्म का उपदेश करेंगे और स्वयं धर्म ही पर चलेंगे । जिस क्रम से क्रमशः करके धर्म की इतनी हानि हुई है, वैसे ही क्रम-क्रम करके धर्म की वृद्धि होगी और जब सब धर्मी हो जायेंगे, तब वही सतयुग कहा जायेगा । जब सतयुग और धर्म दोनों आ पहुँचेंगे तो सुख सम्पत्ति आप ही आ जायेंगी । इसी प्रकार सारा संसार सुखी और सतयुगी होगा ।

हरिवंश पुराण के भविष्य के पुराण के अध्याय ४ में १२ से १९ तक के श्लोकों में भी युगान्त का उल्लेख है । द्रष्टव्य है उनमें से कुछ बानगियाँ–

मूर्खा स्वार्थापरालुब्धा क्षुद्राःक्षुद्र परिच्छदा ।
व्यवहारोपकृत्त श्चच्युतां धच्चि शाश्वतात् ।
हर्तारः पर रत्नानां पर दारा पहारकाः ।
कामात्मानो दुरात्मानः सोपधाः प्रिय साहसाः।

लोग मूर्ख स्वार्थपरायण, लोभी, तुच्छ नीच कामना वाले, दुर्व्यवहार करने वाले शाश्वत धर्म से पतित, पराये धन को चुराने वाले, पराई स्त्रियों में रत, कामी, दुरात्मा, ठग, भयंकर कर्म करने वाले हो जावेंगे ।

विप्र रूपाणि रक्षांसि राजान् कर्ण भेदिनः ।
पृथ्वीमुप भोक्ष्यन्ति युगान्ते समुपस्थिते ॥
निःम्वा स्यायाबब षट्कारां अर्नयाश्चभि मानिनः।
विप्राः कृव्याद रूपेण सर्व भक्षा वृथा व्रताः॥

दुष्ट, राक्षस लोग ब्राह्मण रूप बनाकर फिरेंगे, राजा कानों पर विश्वास करने वाले होंगे, ब्राह्मण लोग स्वाध्याय और धर्म कर्मो को छोड़कर अनीति एवं अभिमान का आश्रय लेंगे । चील कौओं की तरह अभक्ष भोजन करेंगे और मिथ्या व्रत करेंगे । जब युग का अन्त होने को होगा तो ऐसी बातें होने लगेंगी ।

महायुद्धं महानादं, महावर्ष, महाभयम् ।
भविष्यति युगे क्षीणे तत्कषावम्य लक्षणम् ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महायुद्ध होंगे, तोप, बम जैसे आग्नेय अस्त्रों की भयंकर गड़गड़ाहट होगी, अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि होगी , साम्प्रदायिक दंगे, लूटमार, अग्निकाण्ड आदि के द्वारा बड़े भय उत्पन्न होंगे । इस प्रकार के दृश्य युगान्त के समय उपस्थित होंगे ।

अन्य धर्मग्रन्थ और युग-निर्णय

सिख धर्म के आचार्य श्री गुरुगोविन्दसिंह जी महाराज ने अपने दशम् ग्रन्थ साहेब में तथा और भी कई जगह कलियुग की समाप्ति का समय सम्वत् २००० वि० लिखा है । इस सम्वत् को उन्होंने सम्वत् कह कर पुकारा है ।

जरदस्त पैगम्बर के खलीफा जामास्य ने अपनी पुस्तक ''जामास्यनामा'' में लिखा है—जब सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति कर्क राशि पर आवेंगे, तब एक महान् आत्मा प्रकट होगी वह दुनिया भर में न्याय और आनन्द फैला देगी । दुनिया पाप कर्मों को करना छोड़ देगी ।'' यही योग श्रीमद्भागवत् में कलियुग समाप्ति के लिए दिया गया है । जो सम्वत् दो हजार में पड़ता है ।

तिब्बत के लामा योगी विश्वास करते है कि अब शीघ्र ही चंबाल युग (सतयुग) प्रारम्भ होगा और असत्य के ऊपर सत्य की विजय होगी ।

यहूदी धर्म ग्रन्थों में ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जिससे इन्हीं दिनों 'गुएरगजर युग' (सतयुग) आरम्भ होने वाला है ।

ईरान के बहावी विश्वास करते है कि ठीक यह समय सतयुग शुरू होने का है ।

जापानी बौद्धों का विश्वास है कि सन् १९३६ ई० से 'अबतिरी' (सतयुग) आरम्भ हो गया ।

'माला बुद कब्लुत कयामत' नामक एक अरबी पुस्तक में कयामत आने के पूर्व, चिन्ह इस प्रकार बताये गये हैं—''निद्रा के अतिरिक्त जागृत अवस्था में किसी को शांति न मिलेगी । पूर्व वाले पश्चिम के प्रशंसक बनेंगे । स्त्रियाँ पुरुषों की बराबरी करेंगी । सोने से लोहा मूल्यवान होगा । चाँदी जैसी एक और धातु निकल आवेगी । हाट बाजार में बैठ कर खाना बुरा न समझा जायगा । स्त्रियाँ लाज पर्दा छोड़ कर बाहर फिरेंगी । लोग दिन चढ़े तक सोया करेंगे । पंक्षियों की तरह आकाश में उड़ना संभव होगा । अपने विचारों को जरासी देर में दूर देशों को भेज देना सुगम होगा । खाने के लिए लोहे के हाथ होंगे, चारपाइयाँ भी लोहे की होंगी । सवारियां ऐसी होंगी जिन में जान न होगी पर हजारों मील की यात्रा बहुत शीघ्र कर लेगी । माता पिता का आदर न रहेगा, धर्म न रहेंगे और सूरज सवा नेजे पर आ जायेगा जिसकी रोशनी सब पसंद करेंगे ।''

यह सभी बातें आज दिखाई दे रही हैं । बिजली की बत्तियों के द्वारा सूरज सवा नेजे पर आ गया है, जिसे सब पसंद करते हैं ।

मक्के के हमीदिया पुस्तकालय में ''अल्कश्फ वल्कत्मफी मार्फत' पुस्तक रखी हुई है । उसमें लिखा हुआ है कि ''जिस समय फूट, कलह और व्यभिचार बहुत बढ़ जावेंगे तब एक पुरुष आवेगा । यह आध्यात्मिक शक्तियों से पूर्ण होगा । वह अग्नि के अस्त्रों को बेकार कर देगा । वह हर जगह विजय प्राप्त करेगा । उसे अपनी सेना कहीं ले जाने की आवश्यकता न होगी । आत्म-शक्ति ही उसके लिए पर्याप्त होगी । दुनिया उसकी बात मानेगी । वह संसार को स्वर्ग बना देगा और बूढ़ों को जवान कर देगा ।''

इसी प्रकार का विवरण 'इमामे आखिकज्जमा' ग्रन्थ में भी मिलता है ।

इस्लाम धर्म की पुस्तकों के अनुसार संवत् २००० के करीब कयामत आवेगी, कयामत का तात्पर्य यही समझना चाहिए कि ''कोई पापी न रहेगा ।'' मदीने की प्रसिद्ध पुस्तक 'मकसूम बुखारी' में ऐसा उल्लेख है कि ''हिजरी सन् की चौदहवीं शताब्दी की दूसरी तिहाई में कयामत आयेगी और हजरत मेंहदी प्रकट हो जायेंगे ।''

प्रत्येक शताब्दी की एक तिहाई ३३ वर्ष ४ मास की होती है । दूसरी तिहाई ६६ वर्ष ८ मास की हुई । संवत् दो हजार विक्रमी की श्रावण अमावस्या को हिजरी सन् १३६३ के रजब महीने की २८ तारीख पड़ती है । इस प्रकार यह हिसाब भी हिन्दू धर्म पुस्तकों के अनुसार संवत् दो हजार में कलियुग समाप्त होने के मत का समर्थन करता है ।

समय संबंधी उपरोक्त गणनाओं और उल्लेखों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस समय हम जिन परिस्थितियों से होकर गुजर रहे है, वह संक्रान्ति काल का पुण्य-प्रभात है, जिसमें कलियुग की समाप्ति और सतयुग का शुभारम्भ होता स्फुट जान पड़ता है । अगले ही दिनों यदि इसका प्रखर प्रकाश दृश्यमान होने लगे, तो कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिए । ***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी दुर्बुद्धि और आसन्न संकट

हम बढ़ रहे हैं, मगर किसी दिशा में ?

प्रकृति की व्यवस्थाएँ इतनी सर्वांगपूर्ण हैं कि उसे ही परमात्मा के रूप में मान लिया जाय तो कुछ अनुचित नहीं होगा । शिशु जन्म से पूर्व ही माँ के स्तनों में ठीक उस नन्हे बालक की प्रकृति के अनुरूप दूध की व्यवस्था, हर प्राणी के अनुरूप खाद्य व्यवस्था बनाकर जगत में सुव्यवस्था और सन्तुलन बनाये रखने वाली उसकी कठोर नियम व्यवस्था भी सुविदित है। इस व्यवस्था को जो कोई तोड़ता है, उसे दण्ड का भागी बनना पड़ता है।

इन दिनों मनुष्य ने अपनी बुद्धि का उपयोग कर अनेकानेक साधन सुविधाएँ विकसित और अर्जित कर ली हैं। वह निरन्तर प्रगति करता जा रहा है उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित किया है। मानवी रुचि में अधिकाधिक उपयोग की ललक उत्पन्न की जा रही है ताकि अनावश्यक किन्तु आकर्षक वस्तुओं की खपत बढ़े और उससे निहित स्वार्थों को अधिकाधिक लाभ कमाने का अवसर मिलता चला जाय। इसी एकांगी घुड़दौड़ ने यह भुला दिया है कि इस तथाकथित प्रगति और तथाकथित सभ्यता का सृष्टि संतुलन पर क्या असर पड़ेगा । इकॉलॉजीकल बैलेन्स गँवा कर मनुष्य सुविधा और लोभ प्राप्त करने के स्थान पर ऐसी सर्प विभीषिका को गले में लपेट लेगा जो उसके लिए विनाश का संदेश ही सिद्ध होगी ।

एकांगी भौतिकवाद अनियंत्रित उच्छृंखल दानव की तरह अपने पालने वाले का ही भक्षण करेगा । यदि विज्ञान रूपी दैत्य से कुछ उपयोगी लाभ उठाना हो तो उस पर आत्मवाद का, मानवीय सदाचार का नियंत्रण अनिवार्य रूप से करना ही पड़ेगा ।

मनुष्य प्रगति की दिशा में आगे बढ़े यह उचित है। विज्ञान की प्रगति इस युग की एक बड़ी उपलब्धि है । उसने मनुष्य जाति को एक नया उत्साह दिया है कि उज्ज्वल भविष्य के लिए अधिकाधिक सुख सम्वर्धन के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है, सो किया जा भी रहा है । इन्हीं शताब्दियों में वैज्ञानिक खोजों ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है और कितने ही क्षेत्रों में आशा भरा उत्साह उत्पन्न किया है । इन उपलब्धियों के महत्त्व को झुठलाया नहीं जा सकता ।

वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय सुख सुविधाओं में जो वृद्धि हुई है उसकी महत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता । यातायात, कल-कारखाने, कृषि व शिल्प, विनोद, चिकित्सा, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में सौ-दो सौ वर्ष पूर्व के लोगों की तुलना में अब कहीं अधिक साधन सम्पन्नता है । बिजली, तार, रेडियो, टेलीफोन, प्रेस, अखबार आदि के सहारे जो सुविधायें मिली हैं वे अभ्यास में आने के कारण कुछ आश्चर्य-जनक भले ही प्रतीत न हों, पर आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व का कोई मनुष्य आकर यह सब देखे और अपने जमाने की परस्थितियों के साथ तुलना करे तो उसे प्रतीत होगा कि वह किसी अनजाने दैत्य लोक में विचरण कर रहा है। द्रुतगामी वाहनों की अपनी शान है । रेल, मोटर, वायुयान, पनडुब्बी, जलपोतों के कारण मिलने वाली सुविधायें कम नहीं आंकी जानी चाहिए । चिकित्सा एवम् शल्य क्रिया, की उपलब्धियाँ कम नहीं हैं । सिनेमा और टेलीविजन,रेडियो के माध्यम से गरीब लोगों के लिए भी मनोरंजन की सुविधा सम्भव हो गयी है । अन्तरिक्ष यात्रा के क्षेत्र में हुई प्रगति ने मनुष्य के चरण, तीन चरणों में तीन लोक नाप लेने वाले वामन भगवान जितने लम्बे बना दिये हैं । शस्त्रास्त्रों की दुनिया में अब मारण का व्यवसाय इतना सरल बन गया है कि एक बच्चा भी पृथ्वी पर निवास करने वाले समस्त प्राणधारियों का अस्तित्व क्षण भर में समाप्त कर सकता है ।

पशु-पक्षियों और वृक्ष-वनस्पतियों की वर्णसंकर जातियाँ उत्पन्न करने की कृत्रिम गर्भाधान, टेस्टट्यूबों की सफलता प्राप्त करके मनुष्य सृष्टि के निर्माता विधाता के पद पर आसीन होने की तैयारी कर रहा है। विशालकाय स्वसंचालित यन्त्रों से पौराणिक दैत्यों का काम लिया जा रहा है । वरुण से जल भराने, वायु से पंखा झलवाने, अग्नि से ऋतु का प्रभाव सन्तुलित कराने का काम रावण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लेता था, आज जल-कल, बिजली की बत्ती, फेन, रेफ्रीजरेटर, हीटर, कूलर आदि के माध्यम से वे रावण जैसी उपलब्धियाँ हर किसी के लिए सम्भव हो गयी है । पुष्पक विमान पर अब हर कोई उड़ सकता है और समुद्र लाँघने की हनुमान जैसी शक्ति किसी भी वायुयान और जलयान यात्रा से सहज ही उपलब्ध है ।

'सोमियोलोजी' नामक मस्तिष्क विद्या के एक शाखा के अन्तर्गत ऐसे अनुसंधान हो रहे हैं कि मनुष्यों की चिन्तन पद्धति कुछ समय के लिए आवेश रूप में नहीं वरन् स्थायी रूप में बदली जा सकेगी । जिस प्रकार प्लास्टिक सर्जरी से अंगों की काट-छाँट करके कुरूपता को सुन्दरता में बदल दिया जाता है, उसी प्रकार मस्तिष्क की विचारणा एवं संवेदना का आधार भी बदल दिया जाय जिससे वह सदा के लिए अपने मस्तिष्क चिकित्सक का आज्ञानुवर्ती बनने के लिए प्रसन्नतापूर्वक सहमत हो जाये।

समुद्र के खारे पानी को मीठे जल में बदलने की, कृत्रिम वर्षा कराने की, रेगिस्तानों की उपजाऊ बनाने की, अणु शक्ति से ईंधन का प्रयोजन पूरा करने की, समुद्र सम्पदा के दोहन की, जराजीर्ण अवयवों का नवीनीकरण करने की, योजनायें ऐसी ही हैं जिनसे आँखों में आशा की नई ज्योति चमकती है ।

इन उपलब्धियों से मदोन्मत्त होकर मनुष्य अपने को प्रकृति का अधिपति मानने का अहंकार करने लगा है और अपने को सर्व शक्तिमान बनाने की धुन में मारक अणु आयुध बनाने से लेकर जीवन-यापन की प्रक्रिया में उच्छृंखल स्वेच्छाचार बरतने के लिए आतुरतापूर्वक अग्रसर हो रहा है । सफलताओं के जोश में उसने होश गँवाना आरम्भ कर दिया है । इसका दुष्परिणाम उसके सामने आ रहा है ।

कारखाने और द्रुतगामी वाहन निरन्तर विषैला धुआँ उगलकर, वायुमण्डल को जहर से भर रहे हैं । उनमें जलने वाले खनिज ईंधन का इतनी तेजी से दोहन हुआ है कि समूचा खनिज भण्डार एक शताब्दी तक भी और काम देता नहीं दीख पड़ता । धातुओं और रसायनों के उत्खनन से भी पृथ्वी उन सम्पदाओं से रिक्त हो रही है । उन्हें गँवाने के साथ-साथ धरातल की महत्त्वपूर्ण क्षमता घट रही है और उसका प्रभाव धरती के उत्पादन से गुजारा करने वाले प्राणियों पर पड़ रहा है । जलाशयों में बढ़ते शहरों का कारखानों का कचरा, उसे अपेय बना रहा है। साँस लेते एवं पानी पीते समय यह आशंका सामने खड़ी रहती है कि उसके साथ कहीं मंद विषों की भरमार शरीरों में न हो रही हो । उद्योगों-वाहनों द्वारा छोड़ा गया प्रदूषण, "ग्रीन हाउस" इफेक्ट के कारण अन्तरिक्ष में अतिरिक्त तापमान बढ़ा रहा है, जिससे हिम-प्रदेशों की बर्फ पिघल जाने और समुद्रों में बाढ़ आ जाने का खतरा निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है । ब्रह्माण्डीय किरणों की बौछार से पृथ्वी की रक्षा करने वाला ओजोन कवच, विषाक्तता का दबाव न सह सकने के कारण फटता जा रहा है । क्रम वही जारी रहा तो जिन सूर्य किरणों से पृथ्वी पर जीवन का विकास हुआ है वे ही छलनी के अभाव में अत्यधिक मात्रा में आ धमकने के कारण विनाश भी उत्पन्न कर सकती हैं।

अणु-ऊर्जा विकसित करने का जो नया उपक्रम चल पड़ा है, उसने विकिरण फैलाना तो आरम्भ किया ही है यह समस्या भी उत्पन्न कर दी है कि उनके द्वारा उत्पन्न राख को कहाँ पटका जायेगा ? जहाँ भी वह रखी जायेगी वहाँ संकट खड़े करेगी ।

स्थिति निश्चित ही विस्फोटक

यह विज्ञान के उत्कर्ष के साथ ही उसके दुरुपयोग की कहानी है, जिसमें कि सुखद अंश कम और दुखद भाग अधिक है । वह उपक्रम अभी भी रुका नहीं है, वरन् दिन-दिन उसका विस्तार ही हो रहा है । अब तक जो हानियाँ सामने आयी हैं, जो समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, उन्हीं का समाधान हाथ नहीं लग रहा है, फिर इस सबका अधिकाधिक संवर्धन अगले ही दिनों न जाने क्या दुर्गति उत्पन्न करेगा ? इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि कुछ ही समय के वैज्ञानिक दुरुपयोग का क्या नतीजा निकला और अगले दिनों उसकी अभिवृद्धि से और भी क्या अनर्थ हो सकने की आशंका है ?

विज्ञान का दर्शन प्रत्यक्षवाद पर अवलम्बित है । उसने दर्शन को भी प्रभावित किया है और यह मान्यता विकसित की है जो कुछ सामने है उसी को सब कुछ माना जाय । इसका निष्कर्ष आज के प्रत्यक्ष लाभ को प्रधानता देता है । परोक्ष का अंकुश अस्वीकार कर देने पर ईश्वर, धर्म और उसके साथ जुड़े हुए संयम,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सदाचार और पुण्य-परमार्थ के लिए भी कोई स्थान नहीं रह जाता । मर्यादाओं और वर्जनाओं को अन्धविश्वास कह कर उनसे पीछा छुड़ाने पर इसलिए जोर दिया गया है, कि इससे व्यक्ति की निजी सुविधाओं में कमी आती है । पूर्ति का सिद्धांत यही कहता है कि जिस प्रकार भी, जितना भी लाभ उठाया जा सके उठाना चाहिए, उसमें सिद्धांतवाद को आड़े नहीं आने देना चाहिए । इसी मान्यता ने पशु-पक्षियों के वध को स्वाभाविक प्रक्रिया बनाकर असंख्यों गुना बढ़ा दिया है । अन्य प्राणियों के प्रति निष्ठुरता बरतने के उपरांत जो बाँध टूटता है, वह मनुष्यों के साथ निष्ठुरता न बरतने का कोई सैद्धान्तिक कारण शेष नहीं रहने देता । मनुष्य को पशु-प्रवृत्तियों का वहनकर्त्ता ठहरा देने के उपरान्त यौन स्वेच्छाचार न बरतने के पक्ष में भी कोई ठोस दलील नहीं रह जाती ।

विज्ञान और बुद्धिवाद की नई धाराएँ खोजने के लिए और उनके आधार पर तत्कालिक लाभ के जादू-चमत्कार प्रस्तुत करने वाली आधुनिकता, नीति और सदाचार का एक सिरे से दूसरे तक उन्मूलन करती, मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनाती जा रही है ।

बढ़ती आबादी बढ़ते संकट

यह सब बातें कामुकता को प्राकृतिक मनोरंजन मानने और उसे उन्मुक्त रूप से अपनाने के पक्ष में जाती हैं । फलतः बन्धनमुक्त यौनाचार जनसंख्या वृद्धि की नई विभीषिका खड़ी कर रहा है । गर्भनिरोध से लेकर भ्रूण हत्याओं तक को प्रोत्साहन मिलने के बाद भी जनसंख्या वृद्धि में तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है । पूरी पृथ्वी पर जनसंख्या चक्रवृद्धि व्याज के हिसाब से बढ़ रही है । एक के चार,चार के सोलह, सोलह के चौसठ बनते-बनते संख्या न जाने कहाँ तक जा पहुँचेगी । तीन हजार वर्ष पहले मात्र तीस करोड़ व्यक्ति सारे संसार में थे , अब तो वे छः सौ करोड़ हो गये हैं ।

लगता है कि अगले बीस वर्षों में कम से कम दूने होकर ऐसा संकट उत्पन्न करेंगे, जिसमें मकान का, आहार का संकट तो रहेगा ही, रास्तों पर चलना भी मुश्किल हो जायेगा ।

पृथ्वी पर सीमित संख्या में ही प्राणियों को निर्वाह देने की क्षमता है । वह असीम प्राणियों को पोषण नहीं दे सकती । बढ़ता हुआ जन-समुदाय अभी भी अगणित संकट खड़े कर रहा है । खाद्य उत्पादन के लिए भूमि कम पड़ती जा रही है । आवास के लिए बहुमंजिले मकान बन रहे हैं,फिर भी खेती के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए भी भूमि की बड़ी मात्रा में आवश्यकता पड़ रही है। जंगल बुरी तरह कट रहे हैं। उससे घिरी हुई जमीन को खाली कर लेने की आवश्यकता,कानूनी रोकथाम के होते हुए भी किसी न किसी तरह पूरी हो रही है। वन कटते जा रहे हैं। फलस्वरूप वायु प्रदूषण की रोकथाम का रास्ता बन्द हो रहा है। जमीन में जड़ों की पकड़ न रहने से हर साल बाढ़ें आती हैं,भूमि कटती है, रेगिस्तान बनते हैं। नदियों की गहराई कम होते जाने से पानी का संकट सामने आता है। फर्नीचर,मकान और जलावन तक के लिए लकड़ी मुश्किल हो रही है । वन कटने की अनेक हानियों को जानते हुए भी,आवास के लिए,खाद्य के लिए,सड़कों, स्कूलों और बांधों के लिए जमीन तो चाहिए । यह सब जनसंख्या बृद्धि के दुष्परिणाम ही तो हैं । इन्हीं में एक अनर्थ और जुड़ जाता है,शहरों की आबादी का बढ़ना । बढ़ते हुए शहर,घिचपिच की गंदगी के कारण नरक तुल्य बनते जा रहे हैं ।

हर ओर बेचैनी, व्याधियाँ एवं उद्विग्नता

कोलाहल,प्रदूषण,गंदगी,बीमारी आदि विपत्तियों से घिरा हुआ मनुष्य,दिनोंदिन जीवनी शक्ति खोता चला जाता है । शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ उसे जर्जर किये दे रही हैं । दुर्बलताजन्य कुरूपता को छिपाने के लिए सज-धज ही एकमात्र उपाय दीखता है । शरीर और मन की विकृतियों को छिपाने के लिए बढ़ते श्रृंगार की आंधी,आदमी को विलासी,आलसी,अपव्ययी और अहंकारी बनाकर एक नये किस्म का संकट खड़ा कर रही है ।

चमकीले आवरणों का छद्म उघाड़ कर देखा जाय,तो प्रतीत होता है कि इन शताब्दियों में मनुष्य ने जो पाया है, उसकी तुलना में खोया कहीं अधिक है । सुविधायें तो निःसंदेह बढ़ती जाती हैं, पर उसके बदले जीवनी शक्ति से लेकर शालीनता तक का क्षरण अपहरण बुरी तरह हुआ है । आदमी ऐसी स्थिति में रह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहा है,जिसे उन भूत पलीतों के सदृश कह सकते हैं,जो मरघट जैसी नीरवता के बीच रहते और डरती-डराती जिन्दगी जीते हैं ।

समृद्धि बटोरने के लिए इन दिनों हर कोई बेचैन है,किन्तु इसके लिए योग्यता,प्रामाणिकता और पुरुषार्थ परायणता सम्पन्न बनने की आवश्यकता पड़ती है, पर लोग मुफ्त में घर बैठे जल्दी-जल्दी,अनाप-शनाप पाना चाहते हैं । इसके लिए अनाचार के अतिरिक्त और कोई दूसरा मार्ग शेष रह नहीं जाता । इन दिनों प्रगति के नाम पर सम्पन्न बनने की ललक ही आकाश चूमने लगी है। उसी का परिणाम है कि तृष्णा भी आकाश छूने लगी है। लोगों में अपव्यय और दुर्व्यसन अपनाने की लगन लगी रहती है । इस मानसिकता की परिणति एक ही होती है, मनुष्य अनेकानेक दुर्गुणों से ग्रस्त होता जाता है । पारस्परिक विश्वास और स्नेह सद्भाव खो बैठने पर व्यक्ति हँसती-हँसाती सद्भाव और सहयोग की जिन्दगी जी सकेगा,इसमें संदेह ही बना रहेगा।

अस्त-व्यस्तता और अनगढ़ता ने उभर कर, प्रगतिशील उपलब्धियों पर कब्जा कर लिया लगता है अथवा अभिनव उपलब्धियों के नाम पर उभरे हुए अति उत्साह ने, अहंकार बनकर शाश्वत मूल्यों का तिरस्कार कर दिया है । दोनों में से जो भी कारण हो,है वह सर्वथा चिन्ताजनक ।

वास्तविकता को नकारा कैसे जाय ?

समस्त विश्व के आधे प्रतिभाशाली लोग युद्ध उद्देश्यों के निमित्त किये जाने वाले उद्योगों में प्रकारान्तर से लगे हैं । पूँजी और इमारतें भी इसी प्रयोजन के लिए घिरी हुई हैं । बड़ों के चिंतन और कौशल भी इसी का ताना बुनने में उलझे रहते हैं । इस समूचे तंत्र का उपयोग यदि युद्ध में ही हुआ, तो समझना चाहिए कि परमाणु आयुध धरती का महाविनाश करके रख देंगे । तब यहाँ जीवन नाम की कोई वस्तु शेष नहीं रहेगी । यदि युद्ध नहीं होता है, तो दूसरे तरह का नया संकट खड़ा होगा, कि जो उत्पादन हो चुका है उसका क्या किया जाय ? जन-शक्ति, धन-शक्ति, और साधन-शक्ति इस प्रयोजन में लगी है उसे उलट कर नये क्रम में लगाने की विकट समस्या को असम्भव से सम्भव कैसे बनाया जाय ?

इन सब में भयंकर है मनुष्य का उल्टा चिंतन, संकीर्ण स्वार्थपरता से बेतरह भरा हुआ मानस, आलसी, विलासी और अनाचारी स्वभाव, इन सबसे मिलकर वह प्रेत पिशाच स्तर का बन गया है । भले ही ऊपर से आवरण वह देवताओं का, संतों जैसा ही क्यों न ओढ़े फिरता हो ? स्थिति ने जन समुदाय को शारीरिक दृष्टि से रोगी, अभावग्रस्त, चिन्तित, असहिष्णु एवं कातर-आतुर बनाकर रख दिया है । इस सबका समापन किस प्रकार बन पड़ेगा ? इन्हीं परिस्थितियों में रहते, अगले दिनों क्या कुछ बन पड़ेगा ? इस चिन्ता से हर विचारशील का किंकर्तव्यविमूढ़ होना स्वाभाविक है । सूझ नहीं पड़ता कि भविष्य में क्या घटित होकर रहेगा ?

इसी आधार पर दुनिया के वैज्ञानिक, विचारक, अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री हर कोई भविष्य की दुखद विनाशकारी सम्भावनाओं को लेकर चिंतित हैं । भविष्य में क्या होगा ? निश्चित तौर पर इसका कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता । भविष्य अविज्ञात है । उसके सम्बन्ध में पहले से कुछ नहीं कहा जा सकता । नियति का ऐसा कोई निर्धारण नहीं है कि अमुक घटनाक्रम अमुक प्रकार से ही घटित होगा । परिस्थितियों के अनुसार भविष्य की कल्पनायें अथवा संभावनायें उल्टी भी हो सकती हैं। फिर भी तथ्यों के आधार पर भावी संभावनाओं का बहुत कुछ अनुमान लगाया जा सकता है और वह करीब-करीब सही होता है ।

ग्रह गणित वाले ज्योतिषियों और अतीन्द्रिय शक्ति से भविष्य कथन करने वालों की बात छोड़ दें तो भी तथ्यों के आधार पर भावी सम्भावना की रूपरेखा प्रस्तुत करने वाले लोगों का महत्त्व बना ही रहेगा क्योंकि उस आधार पर वर्तमान गतिविधियों की सथापना करने में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता है । अस्तु , अब भविष्य-कथन प्रबुद्ध वर्ग में प्रचलित एक महत्त्वपूर्ण शास्त्र माना जाने लगा है और उसका उत्साहपूर्वक समर्थन-अभिवर्धन हो रहा है ।

भविष्य कथन की ज्ञान शाखा का विकास अमेरिका में उच्च स्तर पर हुआ है । वहाँ की सरकार ने प्रो० डेनियल वेल की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जिसमें सन् २००० में विश्व का क्या स्वरूप होगा इसके बारे में एक पूर्व कल्पना की है । समिति की रिपोर्ट पाँच खण्डों में प्रकाशित हुई ।

इसके अतिरिक्त हरमन इन्स्टीट्यूट के अध्यक्ष हरमन काहन तथा उनके सहयोगी एन्थोनी वीनर ने इसी विषय पर एक पुस्तक प्रकाशित की जिसका नाम है 'दि ईयर २००० ए फ्रेम वर्क फार स्पेकुलेशन' । इसमें भी वर्तमान शताब्दी के अन्त तक विश्व के घटनाक्रम का सुविस्तृत एवं तथ्यपूर्ण उल्लेख है ।

इस प्रकार के भविष्य कथन की पुस्तकें पिछले दिनों भी छपती रही हैं जिन्हें 'युटोपिया' कहा जाता है । ऐसी अनेक टोपियाओं का एक संकलन 'येस्टपडैज टुमारोज' नाम से प्रकाशित हुआ है । भूतकाल में यत्रांद जूवेनेल,टामस मूर, आल्ड्स हक्सले, स्विफ्ट, ब्रेल्सफोर्ड आदि विद्वानों ने समस्त विश्व अथवा उसके किसी भाग का भविष्य कथन करने वाली टोपिया पुस्तकें प्रकाशित की हैं ।

टोपिया अललटप्पू कल्पना उड़ानों पर आधारित नहीं होती, वरन् उनके पीछे वर्तमान गतिविधियों और भावी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही कुछ निष्कर्ष निकाला जाता है । विज्ञान की प्रगति, औद्योगिक विकास, राज सत्ताओं की उलट-पुलट, जनसंख्या वृद्धि, साधन स्रोतों की सीमा, मानवी प्रकृति में परिवर्तन, खपत और उत्पादन का सन्तुलन जैसे अनेक तथ्यों का सहारा लेकर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि भविष्य का ऊँट किस करवट बैठने वाला है । यह सभी तथ्य एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं । किस तथ्य का रुझान किस ढलान की ओर लुढ़क रहा है और अगले दिनों उसमें क्या मोड़ आने वाला है जो इस शतरंज को ठीक तरह समझ सकने की प्रखर कल्पना शक्ति सँजोये हों और आवश्यक तथ्यों का सही रूप से संग्रह कर रहे हों, उनके लिए भविष्य का ऐसा निष्कर्ष निकाल सकना कुछ बहुत कठिन नहीं होता जो प्रायः सही ही उतरे । सम्पन्न देशों के बड़े व्यापारिक फर्म अपना एक विभाग ही इस भविष्य कथन की शोध करते रहने के लिए नियुक्त रखते हैं और उस पर प्रचुर खर्च करते हैं ।

भविष्य शास्त्र की ज्ञान शाखा के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण शोध का कार्य अमेरिका की एक संस्था पिछले दिनों कर रही थी—नाम था उसका रैंड । सेन्टामोनिका बीच के पास उसका विशाल भवन था । उसमें अनेक बुद्धिजीवी-संसार की विभिन्न गतिविधियों का अध्ययन करके भावी संभावनाओं का आकलन करके उस दिशा में अमेरिका के विभिन्न वर्गों को उपयोगी सुझाव देने योग्य निष्कर्ष प्रस्तुत करते थे । इन्ही शोधकर्त्ताओं में एक था हरमन काहन । उसने उक्त संस्था छोड़कर ठीक उसी तरह का अपना अलग संस्थान बनाया । नाम रखा हरमन इन्स्टीट्यूट । जिसे लोग 'थिंकटैंक' अर्थात् ज्ञान सरोवर के नाम से भी पुकारते हैं । हरमन संसार के उच्च कोटि के ज्ञानवानों में से एक गिना जाता है ।

हरमन की महत्त्वपूर्ण पुस्तक है- 'आन थर्मोन्यूक्लि आर बार' इसमें अणु युद्ध उसकी संभावना तथा प्रतिक्रिया पर विस्तृत प्रकाश डाला है और सुझाव दिया है कि उस विभीषिका के संदर्भ में अमेरिका को क्या करना चाहिए । इस पुस्तक ने जनता और सरकार के मस्तिष्क को बेतरह झकझोरा । पुस्तक की जहाँ उसके प्रकाशक ने भूरि-भूरि प्रशंसा की वहाँ लेखक को 'इडियट जीनियस' कहकर तिरस्कृत भी किया गया । जो हो हरमन अपने शोध कार्य में दत्त-चित्त से लगा है । उसकी शोध संस्था में ७५ व्यक्ति काम करते हैं । इनमें से ३५ तो बहुत ही उच्च कोटि के विद्वान तथा सूक्ष्म दृष्टि संपन्न हैं । ३०० पोंड भारी इस मोटू भविष्यवक्ता की संसार भर में चलते-फिरते कम्प्यूटर के रूप में ख्याति है । समय-समय की गई उसकी राजनैतिक और औद्योगिक भविष्यवाणियाँ अब तक सही निकलती रही हैं ।

हरमन ने (१) बढ़ती हुई जनसंख्या (२) बढ़ती हुई सम्पन्नता (३) बढ़ते हुए सरकारी नियन्त्रण (४) बढ़ती हुई वैज्ञानिक प्रगति (५) बढ़ती हुई स्वार्थपरता की ओर संसार का ध्यान आकर्षित किया है और कहा है समय रहते इन पाँच विभीषिकाओं को रोका जाय अन्यथा अगली शताब्दी की असाध्य समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, वर्तमान प्रगति अगले दिनों मनुष्य जाति के गले में पड़ा हुआ फाँसी का फन्दा सिद्ध होगी ।

निस्सन्देह मनुष्य ने पिछली शताब्दियों में असीमित प्रगति की है । अपने इस युग को प्रगति युग माना जाता है । इस प्रगति के लिए कहा जाता है कि जो जानकारियाँ एवं सुविधाएँ पूर्वजों को प्राप्त थीं, इनकी तुलना में अपनी उपलब्धियाँ ही अधिक बढ़ी-चढ़ी हैं । यह दावा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस हद तक ही सही है कि निस्सन्देह बढ़ोत्तरी हुई है पर प्रगति किस दिशा में हुई है यह विचारणीय है । बढ़ना उत्थान की दिशा में भी हो सकता है और पतन की ओर भी । साधनों की मात्रा बढ़ाने में नहीं वरन् उनका सदुपयोग कर सकने, बुद्धिमत्ता के बढ़ने पर ही यह कहा जा सकता है कि प्रगति हुई । यदि बढ़ते हुए साधन विनाश विग्रह और पतन के लिए प्रयुक्त किये जा रहे हैं तो यही कहना पड़ेगा कि इस उन्नति की तुलना में वह अभावग्रस्तता अच्छी थी जिसमें मनुष्य स्नेह, सद्भाव और चैन सन्तोष के साथ रहता था ।

वर्तमान प्रगति किस दिशा में हुई है ? उससे हमने क्या पाया है ? मानसिक, शारीरिक और सामाजिक सुख शान्ति के बढ़ने में, मानवी मूल्यों को बढ़ाने में उसने कितना योगदान दिया है, यह विचारने योग्य बात है ।

योरोप का सबसे प्रगतिशील व्यवसायी देश है पश्चिमी जर्मनी और इस महाद्वीप का सबसे अधिक सम्पन्न देश है फ्रांस । इन दोनों देशों की प्रजा बहुत सुसम्पन्न और साधनों से भरपूर है ।

इस समृद्धि का उपयोग व्यक्तिगत विलासिता के अतिरिक्त और भी हो सकता है यह सोचने की उन्हें फुरसत नहीं है । विलासिता की मस्ती ही उन्हें जीवन की उपलब्धि प्रतीत होती है । अकेले पेरिस नगर में १५०० क्लब ऐसे हैं जिसमें युवा नर-नारी निर्वसन होकर नृत्य करते और राग रंग में लीन रहते हैं । नशेबाजी आकाश चूमने लगी है । पूर्वी जर्मनी में ४ लाख पुरुष और दो लाख स्त्रियाँ ऐसी हैं जो अहर्निश नशे में चूर पड़े रहते हैं । फ्रांस में एक लाख आबादी के पीछे हर साल २० व्यक्ति नशे की अधिकता से दुर्घटना ग्रसित होकर बेमौत मरते हैं । अमेरिका में नशेबाजी के कारण मरने वालों की वार्षिक संख्या ३,५०,००० पहुँच चुकी है ।

रूस जब अमेरिका से हर क्षेत्र में बाजी मारने में कटिबद्ध है तो नशेबाजी में ही पीछे क्यों रहे ? उस देश में २० अरब रूबल अर्थात् भारतीय सिक्के के अनुसार २०० अरब रुपये की 'बोदका' शराब पी जाती है ।

अस्त-व्यस्त, अनिश्चित आशंकाग्रस्त एवं एकाकी जीवन का तनाव इतना भारी पड़ रहा है कि लोग नींद की गोली खाये बिना मस्तिष्कीय उत्तेजना से पीछा छुड़ा ही नहीं पाते । यह नींद की गोलियाँ दैनिक आहार में शमिल हो गई हैं । दिन-दिन बढ़ता तनाव-नशीली गोलियों का घटता प्रभाव अधिक मात्रा में सेवन करने के लिए विवश करता है । उस समय तो लगता है कि अनिद्रा की व्यथा से छुटकारा पाने का अस्त्र हाथ लग गया किन्तु शरीर के सूक्ष्म संस्थानों में यह विषाक्तता इतनी गहराई तक घुस जाती है कि उनमें विविध प्रकार की व्याधियाँ उठ खड़ी होती हैं । सन्तानोत्पादन पर तो नशेबाजी का और भी बुरा प्रभाव पड़ता हैं । अमेरिका में हर वर्ष ढाई लाख बच्चे विकलांग पैदा होते हैं । पिछले वर्ष ऐसे बच्चों की संख्या डेढ़ करोड़ से ऊपर निकल गई थी । इंग्लैण्ड में हर ४० नवजात शिशुओं में एक विकलांग या अर्ध-विक्षिप्त उत्पन्न होता है । हाँगकाँग में ८७ के पीछे एक, स्पेन में ७५ के पीछे एक, आस्ट्रेलिया में ५३ के पीछे एक बच्चा विकलांग पैदा होता है । इसका एक मात्र कारण नशेबाजी की नर एवं नारियों में बढ़ती हुई आदत, रात को नींद की गोली लेना ही माना गया है ।

विवाहों और तलाकों की अमेरिका में पूरे उत्साह के साथ धूम है । १९,१३,००० नये विवाह और ५,३४,००० तलाक । हर साढ़े तीन विवाहों में से एक को तलाक लेनी पड़ती है । उस देश में इन दिनों ३ करोड़ महिलायें विवाह के झंझट में फँसने की अपेक्षा नवविवाहित जीवन-यापन कर रही हैं और प्राप्त हुए कटु अनुभव को दोबारा दुहराने की हिम्मत नहीं कर रहीं हैं ।

पारिवारिक भ्रष्टता का बच्चों पर कितना बुरा असर पड़ता है इसका अनुमान इस एक ही जानकारी से लगा जाता है कि १८ वर्ष की आयु तक पहुँचने से पूर्व ही हर छः में से एक अमेरिकी लड़के को किसी बड़े अपराध में जेल की हवा खा लेनी पड़ती है ।

यह तरक्की का एक पहलू है जो आँखों से दिखाई पड़ता है और मोटी बुद्धि भी प्रत्यक्ष परिणामों के आधार पर जिसकी विभीषिका को समझ लेती है किन्तु अन्य असंख्य तस्वीरें ऐसी हैं जो परदे की ओट में खड़ी रहने के कारण अपने संहारी प्रभाव से जनसाधारण को अपरिचित जैसी स्थिति में डाले भुलाये रहती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उदाहरण के लिए नशे को ही लें । नशेबाजी के उपकरण और मादक द्रव्य बनाने में लगभग उतनी ही जन शक्ति और सम्पत्ति लगती है जितनी युद्ध व्यवसाय में । मनुष्यों ने जितनी आयु युद्ध की वेदी पर चढ़ाई उसका हिसाब लगाया जा सकता है । मनुष्य की औसत आयु साठ वर्ष की मानी जाय और युद्ध में मरने वालों की औसत उम्र ३५ साल तो यह कहा जा सकता है कि औसत सैनिक ने अपनी २५ वर्ष की आयु युद्ध देवता की वेदी पर समर्पित कर दी । यदि लड़ाई में एक लाख मनुष्य मरे हों तो मानवी उम्र के २५ लाख उसमें हो दिये गये, यह तथ्य स्वीकार किया जा सकता है । अब नशेबाजी को लीजिए यदि संसार की आधी आबादी नशा पीती मानी जाय और उन दो सौ करोड़ मनुष्यों में से हर मनुष्य अपने जीवन के दस वर्ष नशे की वेदी पर कम कर रहा हो तो कहा जायेगा कि बीस अरब वर्ष नशा खा गया। यह युद्ध से कम नहीं वरन् बढ़ा-चढ़ा विनाश है । इन साधनों को उत्पन्न करने और बनाने में जो श्रम एवं धन लगता है उस पूँजी की युद्ध पूँजी से और युद्ध श्रम से तुलना की जाय तो इस आधार पर भी नशा आगे है और युद्ध पीछे । बारूद जल जाती है और धमाके के बाद उसके पीछे कोई उत्पादक परिणाम नहीं रहता। नशे के उपकरण भी पीने के साथ नष्ट हो जाते हैं इतने तक दोनों की समता है । किन्तु नशे का प्रभाव पीछे भी बना रहता है । जो लोग पीते है वे आधि व्याधियों से घिरते जाते हैं और रोते-कलपते, सिसकते-कराहते जिन्दगी के दिन काटते हैं । उनका बुरा प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी चलता चला जाता है ।

कहते हैं कि नशा पीने से सुस्ती दूर होती है और गम गलता होता है । फिर ऐसे काम ही क्यों किये जाँय जो सुस्ती और गम पैदा करें । भलमनसाहत का हल्का-फुलका जीवन जिया जा सकता है और सुस्ती तथा गम उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से बचा जा सकता है । यदि ध्वंस के स्थान पर सृजन को नियोजित किया जाय और नशे के स्थान पर दूध उद्योग खडा कर दिया जाय तो हर व्यक्ति को एक किलो दूध हर रोज मिलता रह सके ऐसी व्यवस्था हो सकती है । साथ ही खाद, गोबर और बछड़ों से अनुत्पादक जमीन उपजाऊ बना कर खाद समस्या सर्वदा के लिए हल की जा सकती है ।

मानवी बुद्धि के ध्वंस और सृजन का एक छोटा सा उदाहरण है कि यह युद्ध एवं नशे के नाम पर कितनी बड़ी बर्बादी करता और अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारता है ।

यह तो मानवी बुद्धि के दुरुपयोग की ही चर्चा हुई है । इन परिणामों या उपयोगों का प्रभाव निश्चित रूप से प्रकृति पर पड़ता है और वह परिणाम कितना विक्षोभजनक, विध्वंसकारी होगा ? इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । प्रकृति विक्षोभ की प्रतिक्रिया मानवीय अस्तित्व के लिए किस प्रकार संकट प्रस्तुत कर देगी यह जनसंख्या बृद्धि, वायु और जल प्रदूषण तथा प्रकृति के दोहन से उत्पन्न विकृतियों के रूप में देखा समझा जा सकता है, जिनका विवेचन विश्लेषण समय-समय पर अधिकृत प्रतिभाओं तथा विद्वानों द्वारा किया जाता रहता है ।

यदि अब न चेते तो महाविनाश होकर रहेगा

पर्यावरण सन्तुलन में वृक्ष वनस्पतियों का जितना योगदान है उतना प्रकृति के अन्य किसी भी घटक का नहीं है । दिन-प्रतिदिन वातावरण में घुलते जहर के परिशोधन तथा जीवन के परिपोषण के लिए उपयोगी तत्वों के अभिवर्धन में ये मूक पर सजीव संरक्षक की भूमिका निभाते हैं । इनके महत्त्वपूर्ण उदात्त अनुदानों को देखकर ही पुरातन काल में दृष्टा ऋषियों ने वृक्ष-वनस्पतियों के पोषण और संरक्षण को देव आराधना जितना पुण्य फल देने वाला माना था । वृक्षारोपण को दान, पुण्य, तीर्थ, उपासना और साधना के समकक्ष माना जाता था । यह मान्यता अकारण नहीं थी । वृक्ष-वनस्पतियों के असंख्या अनुदानों के कारण ही उन्हें इतना अधिक महत्त्व मिला हुआ था ।

मनुष्य की भौतिक समृद्धि में असाधारण सहयोग करने वाली वृक्ष सम्पदा का तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्धाधुन्ध कटाई का एक दौर शुरू हुआ । उसके दूरवर्ती किन्तु महत्त्वपूर्ण परिणामों की उपेक्षा हुई । फलतः सम्पूर्ण इकॉलॉजिकल चक्र ही डगमगा गया जिसकी परिणिति अनेकों प्रकार की विभीषिकाओं के रूप में सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मौसम में असामयिक हेरफेर, अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसे कितने ही प्रकृति प्रकोप सन्तुलन के लिए अनिवार्य वृक्ष सम्पदा के नष्ट करने के ही दुष्परिणाम हैं ।

प्रकृति विक्षोभों की श्रृंखला में एक भयंकर कड़ी जुड़ी है भूस्खलन एवं भूक्षरण की । जिससे प्रतिवर्ष उपजाऊ भूसम्पदा का एक बड़ा भाग गँवाना पड़ रहा है । साथ ही असंख्यों व्यक्तियों को अपने जीवन से प्रति वर्ष हाथ धोना पड़ रहा है । विगत कुछ वर्षों से हिमालय के निकटवर्ती क्षेत्रों में भूस्खलन की घटनाओं में निरन्तर अभिवृद्धि हो रही है । १६ अगस्त १९७९ की रात को चमोली जिले के कोथा गाँव में मूसलाधार वर्षा हुई । वर्षा के साथ हुए भूस्खलन से पूरा गाँव ही नीचे दब गया । श्मशान जैसी स्थिति बन गई । अगस्त १९७८ में हिमाचल प्रदेश में हुए एक भूस्खलन से लगभग तेरह सौ व्यक्ति मारे गये और सैकड़ों घायल हुए। इसी माह जन्माष्टमी की मध्य रात्रि को पिथौरागढ़ जिले के शिशना गाँव के तीन सौ व्यक्ति जमीन के अचानक धँसने से भीतर दब गये । सैकड़ों पशु भी इस चपेट में मारे गये । उसी रात निकटवर्ती एक अन्य गाँव गाशिला में भी भूस्खलन से असंख्यों जानें गई । गांव की खेती और बने घर बर्बाद हो गये । इसी प्रकार १५ अगस्त १९७७ को तवाघार क्षेत्र में पृथ्वी में दरार पड़ने से सैकड़ों व्यक्तियों की अकाल मृत्यु हुई ।

भूरक्षण विशेषज्ञ एरिक एकहोम ने भूस्खलन की इन घटनाओं का कारण पर्वतीय क्षेत्र में वृक्षों की कटाई को माना है । उनका कहना है कि भारत की समृद्धि का महत्त्वपूर्ण स्रोत हिमालय बीमार है । उसकी बीमारी भूस्खलनों के रूप में अपना परिचय दे रही है । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि हिमालय की वृक्ष सम्पदा की कटाई रोकी न गई तो देश को गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ सकता है । गंगा के पानी से लाखों हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि सिंचित होती है । अनुमानतः तीन सौ करोड़ रुपये प्रति वर्ष का गंगा जल से लाभ होता है । भूस्खलन से गंगा के प्रवाह का रुख भी बदल सकता है । भूस्खलन के कारणों को स्पष्ट करते हुए वैज्ञानिकों ने बताया कि तेरह हजार की ऊँचाई पर हिमालय की वृक्ष सम्पदा को बुरी तरह नष्ट किया जा रहा है । वनों के काटे जाने से पर्वतीय क्षेत्र में जल रोकने की क्षमता नष्ट हो जाती है । मिट्टी, पत्थर की पकड़ वृक्षों के कारण बनी रहती है । उनके कटते ही जमीन पर कृत्रिम नाले एवं झीलें बन जाती हैं तथा भूस्खल की घटनाएँ आरम्भ हो जाती है ।

कुमायूँ विश्वविद्यालय के भूगर्भ विज्ञान के अध्यक्ष ने विस्तृत सर्वेक्षण एवं अध्ययन के बाद अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा है कि हिमालय के मध्यवर्तीय सन्धि स्थान पर कमजोर चट्टानों की पट्टी है । पिछले दशक के अधिकांश भूस्खलन इसी पट्टी के क्षेत्र में आते रहे हैं। वर्तमान समय में इस क्षेत्र में भूस्खलनों के निरन्तर बढ़ने के प्रमुख कारण हैं—वनों का विनाश तथा विस्फोटक पदार्थों का चट्टानों को तोड़ने के लिए उपयोग । सर्वेक्षण करने वाले इन विशेषज्ञों का कहना है कि इस क्षेत्र में हरे पेड़ों की कटाई पर कड़ाई से प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। साथ ही किसी भी तरह के विस्फोटक पदार्थों का कभी उपयोग न किया जाय । यदि इन बातों की उपेक्षा हुई तो महाविनाश की स्थिति कभी भी उत्पन्न हो सकती है ।

भू-वैज्ञानिकों का मत है कि भारत प्रतिवर्ष ८ हजार हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि गँवाता जा रहा है क्योंकि पहाड़ों पर जंगल कट जाने से तेजी से दौड़ता वर्षा का पानी खड्ड और दर्रे बनाता है । नदियों में रेत मिट्टी अधिक जम जाने से उनकी चौड़ाई और प्रवाह का क्षेत्र बढ़ता जा रहा है । पिछले तीस वर्षों में वनों की कटाई अत्यधिक हुई है एक आँकड़े के अनुसार छः हजार टन उपजाऊ मिट्टी प्रतिवर्ष बहकर नदियों में चली जाती है । गंगा क्षेत्र में लगभग ४ करोड़ ५० लाख एकड़ भूमि को अधिक उपजाऊ बनाने जितनी उर्वरा मिट्टी का प्रतिवर्ष ह्रास हो रहा है । अब तक पूरे देश से ४२ करोड़ ५० लाख एकड़ भूमि भूक्षरण से बर्बाद हो चुकी है । १ करोड़ ७५ लाख एकड़ भूमि अम्ल एवं क्षार की मात्रा बढ़ने से बेकार पड़ी है । नदियों की सतह ऊपर उठ आने से प्रतिवर्ष ५ करोड़ एकड़ जमीन बाढ़ की चपेट में आती है और पानी के निकास की व्यवस्था न बन पाने से बेकार पड़ी रहती है । कृषि योग्य मिट्टी की सतह लगभग २० से०मी० तक होती है । इसमें पोषक तत्वों—नाइट्रोजन, पोटैशियम, फॉस्फोरस की बहुलता होती है । १३ अन्य प्रकार के पोषक तत्व तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऐसे जीवाणु पाये जाते हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं । भूक्षरण से उपजाऊ परत नष्ट हो जाती है जिसकी आपूर्ति किसी भी कृत्रिम खाद से नहीं हो सकती है ।

भूगर्भशास्त्रियों का मत है कि वन सम्पदा को विनष्ट होने से रोका न गया तो देश को कुछ ही वर्षों में उपजाऊ योग्य भूमि का एक बड़ा भाग गँवाना पड़ेगा । प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ें मानसून की नहीं प्रकृति विक्षोभ की परिचायक हैं । मानसून तो प्रकृति की वह देन है जिस पर फसलें जीवित रहती हैं । वृक्षों के कटने से बाढ़ों में भी वृद्धि हुई है । फलतः प्रतिवर्ष कृषि योग्य भूपरतों को बाढ़ें बहा ले जातीं तथा अपनी विनाश लीला रच जातीं हैं । पर्यावरण सन्तुलन के लिये भूभाग के एक तिहाई हिस्से में वृक्षों का होना अनिवार्य माना गया है। जबकि भारत में एक-चौथाई से भी कम-लगभग २२ प्रतिशत भू-भाग में वन हैं । प्रकृति के प्रकोपों बाढ़, सूखा, भूस्खलन, भूक्षरण, भूकम्प, ज्वालामुखी की घटनाओं में इसी कारण वृद्धि होती जा रही है ।

भूगर्भीय उत्पातों की शृंखला अभी थमने वाली नहीं

यों तो भूकम्प की कहानी पृथ्वी के जन्म के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है । जापानी साहित्य में वहाँ की प्राचीन सभ्यता में भूकम्प देवता की पूजा-उपासना का सुविस्तृत उल्लेख मिलता है । उस मान्यता के अनुसार मनुष्य के उच्छृंखलतापूर्ण व्यवहार से कुपित होकर भूकम्प देवता अपना ध्वंसात्मक स्वरूप प्रकट करते और मनुष्य सहित समूचे प्राणि समुदाय को दंडित करते त्रास देते हैं । विश्व के भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में भी इस संबन्ध में अलग-अलग तरह की मान्यतायें एवं धारणायें प्रचलित हैं लेकिन उनके वैज्ञानिक कारण उपलब्ध न होने से उन्हें प्रामाणिक नहीं माना गया । प्रख्यात ग्रीक दार्शनिक अरस्तु का कहना है कि प्रकृति के साथ जब कभी मनुष्य का व्यवहार असहनीय हो जाता है तो वह पृथ्वी के भीतर भरी वाष्प को बाहर निकालकर दुर्बल स्थानों पर विस्फोट कर देती है ।

चीन की पौराणिक गाथाओं के अनुसार पृथ्वी भी मनुष्य की तरह सांस लेती है । मनुष्य की श्वांस-प्रश्वांस प्रक्रिया में व्यवधान पड़ने पर जिस प्रकार से उसका दम घुटने लगता है और प्राणों पर बन आती है ठीक उसी तरह धरती की श्वसन प्रक्रिया में भी व्यतिक्रम उत्पन्न होने पर भूकम्प आने लगते हैं । सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स एफ रिक्टर ने भूकम्पमापी यंत्र की खोज इसी आधार पर की है जिसे रिक्टर स्केल के नाम से जाना जाता है। पृथ्वी में प्रतिवर्ष १४ लाख कंपन होते हैं पर उनमें से मात्र ६ हजार कम्पनों को ही मापा जा सकता है । अब इन कंपनों की संख्या में तीव्रता आती जा रही है और हर वर्ष आने वाले कुल भूकम्पों की संख्या में अभिवृद्धि होती जा रही है । इनकी तीव्रता भी बढ़ रही है जो जन, धन की असाधारण हानि का कारण बनती है ।

पृथ्वी के निर्माण से अब तक करोड़ों भूकम्प आये हैं । अगले दिनों सूर्य के एक सीध में नौ ग्रहों के एक ओर इकट्ठे हो जाने की घटना सम्भवतः अब तक के इतिहास में अपने ढंग की एकमात्र ऐसी घटना है जो अन्य सौर घटनाओं के साथ घट रही है । यथा पूर्ण सूर्य ग्रहण सौर कलंकों की अभिवृद्धि का चरम वर्ष, चन्द्र ग्रहण' धूमकेतु का उदय आदि-आदि । इन सब घटनाओं का प्रभाव पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र को असामान्य रूप से प्रभावित करेगा । इसलिए ऐसे भूकम्पों के आने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है जो अब तक कभी नहीं आये होंगे ।

आने वाले भूकम्पों की विध्वंसकता का अनुमान लगाने के लिए अब तक आए उन भूकम्पों का विवरण जान लेना उपयुक्त रहेगा । जिन्होंने सर्वाधिक विनाश किया है और जहाँ वे आए हैं वहाँ प्रलय का सा दृश्य उपस्थित किया है । प्राकृतिक विपदाओं में यदि सबसे अधिक विनाशकारी और सर्वाधिक हानि पहुँचाने वाली विपत्ति यदि कोई है तो वह भूकम्प ही है । किन्ही भी प्राकृतिक विपत्तियों ने उतनी हानि नहीं पहुँचाई न उतना विनाश किया जितना कि भूकम्पों के कारण हुआ है । भूकम्प क्यों आते हैं ? उनके रोकथाम का क्या उपाय है ? आदि बातें जानने के लिए वर्षों से प्रयास किये जा रहे हैं परन्तु अभी तक भूकम्प के किसी एक निश्चित कारण का पता नहीं चला है । जब कारण का ही पता

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं चला है तो उनकी रोकथाम का तो प्रश्न ही नहीं उठता । अधिक से अधिक इतना सम्भव है कि भूकम्प आने के कुछ क्षणों पहले पता चल जाए कि धरती काँपने वाली है । परन्तु वह पता इतने थोड़े से समय पहले चल पाता है कि बचाव के जहाँ भूकम्प आने वाला है वहाँ से जान-माल हटा कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिए कोई समय नहीं मिल पाता । इस स्थिति में भूकम्प की सम्भावना का पता लग जाना और नहीं लगना बराबर ही है ।

पृथ्वी पर कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ प्रायः भूकम्प आते रहते हैं । इनमें जापान द्वीप समूह, चीन, एण्डीज पर्वतमाला, पूर्वी अनातोलिया तथा अमेरिका का पश्चिमी तट प्रमुख है । वैसे भूकम्प को किसी सीमा विशेष में बाँध पाना सम्भव नहीं है । वह कभी भी और कहीं भी आ सकता है । फिर भी उक्त क्षेत्रों में भूकम्प की सम्भावना और स्थानों की अपेक्षा अधिक रहती है ।

पिछले दिनों महाराष्ट्र, नेपाल, बिहार में आये भूकम्प अब तक आए सभी भूकम्पों का रिकार्ड तोड़ चुकें । उनकी विभीषिका का अनुमान लगाने के लिए अब तक आये भूकम्पों की विभीषिका को आधार बनाया जा सकता है । एक अनुमान के अनुसार प्रति वर्ष १५००० व्यक्ति भूकम्पों के कारण मृत्यु का ग्रास बनते हैं । धन सम्पत्ति की होने वाली क्षति का अनुमान लगाना तो लगभग असम्भव है । सन् १९६० में मोरक्को, ईरान तथा चिली में भूकम्पों के कारण १७००० लोग मर गये थे और करीब ५ अरब रुपयों की सम्पत्ति नष्ट हुई थी ।

जुलाई १९७६ में चीन के तंगशान इलाके में आया भूकम्प इस शताब्दी का सबसे भयंकर भूकम्प माना जाता है । उस भूकम्प में अकेले तंगशान नगर में ८ लाख व्यक्ति मारे गये थे जबकि इस नगर की जनसंख्या कुल १० लाख है । जो लोग बच सके थे वे भी कोई पूरी तरह सुरक्षित नहीं थे । उनमें से भी अधिकांश को शारीरिक क्षति पहुँची । किसी का हाथ टूट गया, किसी का पैर टूट गया । किसी की आँखें फूट गईं तो कोई इमारतों के ढह जाने से गिरने वाले मलवे की चोट के कारण अपना चेहरा ही विकृत कर बैठा । प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार भूकम्प आने के पूर्व इस क्षेत्र के ऊपर आकाश में एक तेज चौंधिया देने वाला प्रकाश फैल गया था । इस प्रकाश को २०० मील दूर रहने वाले उन लोगों ने भी देखा, जहाँ भूकम्प नहीं आया था । कुछ सेकण्डों तक थरथरा उठी धरती के कारण होने वाला धमाका इतना जोर का था कि कई एकड़ क्षेत्र में लगी हुई फसल अपनी सतह के साथ उखड़ कर इस प्रकार दूर जा गिरी जैसे किसी ने दूध पर से मलाई उतार कर दूसरे बरतन में बिछा दी हो । तंगशान नगर इस भूकम्प का केन्द्र था और वहाँ के नगर के बीचों बीच की जमीन फट गई तथा बहुत चौड़ी और मीलों लम्बी दरार बन गई । इस दरार में लाखों मनुष्य, मकान, इमारतें, सड़कें और सड़कों पर चलते हुए लोग समा गये । भूकम्प के धक्के से राह चलते, बैठे और सोये लेटे हुए लोग भी कई फुट ऊँचे उड़ गये । इस स्थिति में पेड़ों का उखड़ कर दूर जा गिरना तो स्वाभाविक था । रेल की पटरियाँ और जमीन के भीतर लगाये गये पाइप भी इस प्रकार मुड़ तुड़ गये जैसे किसी ने धागे को गुड़ी-मुड़ी करके लपेट दिया हो ।

सितम्बर १९२३ में जापान के तोकियो याकोहामा क्षेत्र में भी ऐसा विनाशकारी भूकम्प आया था कि पूरे क्षेत्र की जमीन एक दिशा में इस प्रकार झुक गई जैसे किसी ने तराश दिया हो । इस भूकम्प में ५ लाख मकान गिर गए थे और करीब १२ लाख व्यक्ति मारे गये थे । निकटवर्ती संगामी खाड़ी में ३६ फुट चौड़ी दरार उत्पन्न हो गई तथा आबादी वाले क्षेत्रों में ऐसी भयंकर आग लगी कि उस क्षेत्र में तीन दिन तक मकान, इमारतें और वृक्ष, वनस्पति धू-धू करके जलते रहे, इसके तीन वर्ष पहले चीन और तिब्बत की सीमा पर स्थित कन्सू क्षेत्र में भी ऐसा ही भूकम्प आया था, जिसमें कुछ ही सेकण्डों के भीतर लगभग २ लाख व्यक्ति मारे गये । इसी क्षेत्र में दिसम्बर १९३२ में आए भूकम्प की विनाशलीला देखने वाले कई लोग तो अभी भी जीवित हैं, जिसमें करीब ७०,००० व्यक्ति मारे गए थे ।

सन् १९०८ में इटली के मोसीना नगर में आए भूकम्प से करीब १ लाख व्यक्ति तो मरे ही पूरा का पूरा शहर इस तरह बर्बाद हो गया कि अब उसका कहीं भी नाम-निशान नहीं है । इस भूकम्प के झटके इटली के कुछ अन्य नगरों में भी महसूस किए गए थे और उन क्षेत्रों में भी करीब ५० हजार लोग मर गए थे । दक्षिण अमेरिका के पेरू क्षेत्र में तो मई १९७० में भूकम्प के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

साथ-साथ भारी वर्षा भी हुई । बर्फ की चट्टानें पर्वत शिखरों से टूट-टूट कर इमारतों और लोगों को पीसती हुई आगे निकल गई । इसी तरह का एक विचित्र भूकम्प जून १६९२ में जमैका के समुद्र तटीय इलाकों में आया था । उस समय समुद्र की लहरें उफनते हुए पानी की तरह बढ़ी और शहर के भीतर तक घुस आईं । पोर्टरायल बन्दरगाह पर मरम्मत के लिए खड़ा एक जहाज पानी के इस तेज बहाव में बहता हुआ नगर के भीतर तक चला गया और मकानों, इमारतों सहित सैकड़ों लोगों को पीसता हुआ नगर के दूसरे छोर पर जा टिका, जन-धन की इस क्षति के साथ वहाँ की भौगोलिक संरचना में भी कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ कि शहर का दो-तिहाई हिस्सा सागर बन गया । वहाँ की जमीन पर समुद्र की लहरें कई फीट ऊँचाई तक लहराने लगीं । दो-ढाई सौ वर्ष बाद तक उस नगर की इमारतों का ऊपरी भाग समुद्री क्षेत्र में पानी की सतह के ऊपर दिखाई देता रहा यह विनाश कुछ ही मिनटों में हो गया ।

ऐसा ही एक भूकम्प सन् १७५५ में पुर्तगाल के लिस्बन क्षेत्र में आया जिसके पहले ही झटके में शहर के ८५ प्रतिशत मकान धराशायी हो गए तथा हजारों लोग मारे गए । चालीस मिनट बाद भूकम्प का दूसरा झटका आया और उसने बाकी के मकानों को भी ध्वस्त कर दिया । मकानों और इमारतों के मलवे में आग लग गई। यह आग किन्हीं मानवी प्रयत्नों से नहीं बुझी बल्कि उस समय बुझी जब तीसरे झटके के साथ ही समुद्र की लहरें १६ से २० फीट की ऊँचाई पर लहराती हुई नगर में घुस पड़ीं । इस भूकम्प के कारण १३ लाख वर्ग मील क्षेत्र प्रभावित हुआ । मोरक्को, स्पेन तथा वेस्ट इन्डीज में भी उसी तरह का विनाश दृश्य उपस्थित हुआ । वही झटके और उसके बाद समुद्री लहरों का वही उत्पात । स्पेन में तो ६० फीट ऊँचाई तक समुद्र उफनने लगा ।

सन् १९८२ में प्रकृति प्रकोप

१० अक्टूबर १९८० को अल्जीरिया में आया भूकम्प भी ऐसा ही बताया जाता है । समाचार पत्र पढ़ने वालों को उस भूकम्प के बारे में अच्छी तरह याद होगा जो उक्त तिथि को अल्जीरिया में आया था और जिसके परिणामस्वरूप २५००० व्यक्ति मृत्यु के ग्रास बन गए थे । तथा करीब २ लाख व्यक्ति बेघरबार और घायल हो गए । इस भूकम्प की खबर मिलते ही विभिन्न देशों के चिकित्सा दल, राहत दल और बचाव आदि कार्यों के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं ने अपने कार्यकर्त्ता, चिकित्सा तथा राहत सामग्रि भूकम्प पीड़ितों के लिए भेजी, परन्तु भूकम्प के कारण अल असनाम शहर तथा उसके आस-पास का क्षेत्र का क्षेत्र बुरी तरह तबाह हो गया कि परिवहन और संचार साधनों से भी कोई सम्पर्क नहीं हो सका । २४ घण्टे में यह क्षेत्र दुनिया के मध्य में स्थित होते हुऐ भी दुनिया से अलग-थलग पड़ गया ।

यह भूकम्प १५-२० सेकण्डों तक सर्वाधिक तीव्र रहा। भूकम्प मापी यन्त्रों ने इसकी तीव्रता ७-५ रिचर स्केल दर्ज की । रिचर स्केल भूकम्प की तीव्रता मापने का एक स्केल है । १२ डिग्री रिचर स्केल सबसे तीव्र होता है जिसमें सर्वनष्ट का सा दृश्य उपस्थित हो जाता है । बड़ी-बड़ी चट्टानें और टेकरियाँ हवा में उड़ने सी लगती हैं तथा तमाम भारी से भारी चीजें भी उछल कर कहीं की कहीं जा गिरती हैं । नदी नाले अपना रास्ता बदल देते हैं । बहुत बार तो खाइयाँ मुँद जाती है और जहाँ चट्टानें होती हैं वहाँ बड़े-बड़े खड्ड हो जाते हैं।

अल्जीरिया में आया भूकम्प तो एक मिसाल है । सूर्य की एक ओर एक सीध में नौ ग्रहों के इकट्ठा हो जाने पर इससे भी तीव्र भूकम्प के झटके आने की आशंका व्यक्त की गई है । उस समय सम्भावित भूकम्पों के कारण होने वाले विनाश का पूर्वाभास पूर्वकल्पना करने के लिए भूकम्पों के सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक है कि ये क्यों आते हैं ? कैसे आते हैं ? और क्या कोई ऐसी विधि है जिनके द्वारा भूकम्पों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सके कि अमुक समय पर भूकम्प आने वाला है ? ताकि लोग पहले से ही सुरक्षित स्थान पर पहुँच सकें ।

वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी पृथ्वी पहले कभी सूर्य का ही एक हिस्सा थी जो करोड़ों वर्ष तक सूर्य के समान ही जलती हुई गैसों का पिण्ड रही । गैस ठण्डी होकर ठोस रूप धारण करती गई तो ऊपर का धरातल सिकुड़ता गया और उसका भीतरी भाग बाद में ठण्डा हुआ । इस सिकुड़न के आन्तरिक दबावों के कारण पृथ्वी के भीतर दो बहुत बड़ी दरारें पड़ीं । एक दर्रा हिन्दूकुश और कराकोरम पर्वत मालाओं से शुरू होती हुई

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिमालय की तलहटी के नीचे होकर सुदूर पूर्व तक जाती है तथा दूसरी दरार यूरोप के आल्प्स पर्वत से आरम्भ होकर आग्नेय एशिया के अधिकांश देशों के नीचे से होकर गुजरती है ।

इन दरारों के ऊपर धरातल सहित भूमि का असीम दबाव पड़ता है । पृथ्वी के भीतर अभी भी हलचलें होती रहती हैं और जब कोई छोटी-सी हलचल भी इन दरारों के इर्द-गिर्द होती है पृथ्वी की सतह काँपने लगती है । इसे ही भूकम्प कहते हैं । जब समुद्री क्षेत्रों में भूकम्प आता है तो जल प्रलय का सा दृश्य उत्पन्न हो जाता है । ९० से लेकर १०० फुट ऊँची तक लहरें उठने लगती हैं और यदि उस क्षेत्र के समीप ही कहीं जमीन हुई तो किनारे की लाखों एकड़ उपजाऊ जमीन खारे पानी में डूब जाती है ।

भूकम्पों की भयावहता का एक छोटा-सा उदाहरण तो हाल ही में पिछले दिनों आया अल्जीरिया का भूचाल है । इससे भयंकर भूकम्प भी आ सकते हैं । जिस यन्त्र के द्वारा भूचाल को मापा जाता है तथा इसके सम्बन्ध में थोड़ा बहुत पूर्वानुमान लगाया जा सकता है उसे सिस्मोग्राफ कहते हैं । यह यन्त्र धरती के हलके से हलके कम्पन को भी पकड़ लेता है । इसकी सूक्ष्मग्राह्यता इतनी पैनी है कि भारत, चीन या जापान में कहीं अणु विस्फोट किया जाए तो उससे होने वाले कम्पन को अमेरिका में नोट किया जा सकता है और बताया जा सकता है कि अमुक स्थान पर अणु विस्फोट हुआ । किन्तु इस यन्त्र से भूकम्प का अनुमान दो चार सेकण्ड पहले ही लगाया जा सकता है जो व्यर्थ है क्योंकि इतने कम समय में किसी भी तरह के सुरक्षा उपाय सम्भव नहीं हो पाते और भूकम्प इतनी तेजी से आते हैं कि मात्र एक सेकण्ड में वह लाखों वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को पत्ते की तरह थर-थर कँपा कर रख सकता है ।

भूकम्प की विनाशकारी शक्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि रिक्टर स्केल यन्त्र पर नोट किये जाने योग्य भूकम्प की शक्ति करीब २०० परमाणु बमों के विस्फोट से होने वाले कम्पन के बराबर होती है । चूँकि इतने सामान्य से दिखाई देने वाले भूकम्प के कारण पृथ्वी में सैकड़ों मील भीतर होते हैं इसलिए सतह तक उनका प्रभाव नहीं ही दिखाई देता । १ डिग्री रिक्टर स्केल वाले भूकम्प के कारण धरती की सतह पर होने वाले कम्पन को बहुत कम लोग अनुभव कर पाते है । अधिकांश को तो इसका पता ही नहीं चलता । सामान्य भूकम्प की शक्ति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उतनी शक्ति द्वारा तीस किलोमीटर व्यास वाले करीब १२०० मीटर ऊँचे पर्वत को साढ़े तीन किलोमीटर ऊँचाई तक आसानी से उठाया जा सकता है ।

कब कहाँ भूकम्प आ जाएगा ? इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता । हालाँकि अब तक आये भूकम्पों के आधार पर वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे क्षेत्र अवश्य निर्धारित किये हैं जहाँ उनकी अधिक सम्भावना है । चीन और जापान साहित हिमालय तथा आल्प्स पर्वत श्रेणियों की तलहटी में बसे क्षेत्रों में अधिक भूकम्प आते हैं, परन्तु यह कहने का कोई आधार नहीं है कि अमुक क्षेत्र में भूकम्प नहीं आएगा । वह कभी भी और कहीं भी आ सकता है और देखा गया है कि जिन क्षेत्रों में भूकम्प प्रायः नहीं आते वहाँ जब कभी आते हैं तो अपेक्षाकृत बहुत उग्र होते हैं । किसी क्षेत्र में यदि भूकम्प आना बन्द हो गए हों और हजारों साल से उस क्षेत्र में भूकम्प नहीं आया हो तो भी नहीं कहा जा सकता कि अमुक स्थान पर भूकम्प आने की सम्भावना नहीं है वैसे क्षेत्रों में कभी भी भूकम्प के रूप में विनाशलीला का ताण्डव उठ खड़ा हो सकता है । अर्थात् पृथ्वी का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसे पूरी तरह भूकम्प से मुक्त कहा जा सके । हाल ही में अल्जीरिया में आये भूकम्प ने १२० किलोमीटर व्यास के क्षेत्र में भयंकर तबाही मचा दी थी ।

भूकम्प कहाँ आ सकते है और कहाँ नहीं आते ? इसका उत्तर जिस प्रकार निश्चित रूप से नहीं दिया जा सकता उसी प्रकार यह भी नहीं कहा जा सकता कि किस क्षेत्र में कब भूकम्प आ जाएगा ? यद्यपि विश्व के किसी भी क्षेत्र में कभी-कभी भूकम्प आ जाता है किन्तु चीन और जापान यह दो देश ऐसे हैं जहाँ का प्रत्येक नागरिक अपने जीवन काल में सैकड़ों बार काँपती हुई धरती के झटके सहते हैं । सबसे अधिक भूकम्प इन्हीं क्षेत्रों में आने के कारण वहाँ के वैज्ञानिकों ने भूकम्प का पूर्वानुमान लगाने के लिए कोई कारगर विधि खोजने के अथक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रयास किये परन्तु उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिली ।

इस तरह के प्रयोगों, अनुसन्धानों और अन्वेषणों से केवल इतना ही जाना जा सका कि पृथ्वी में निरन्तर प्रतिक्षण एक कम्पन होता रहता है जिसे धरती का साँस लेना कहा जा सकता है । अध्ययन केन्द्रों से यह पता लगाया गया कि भूचाल आने के पूर्व यह कम्पन बीस गुना अधिक बढ़ जाता है । किन्तु कम्पन के बढ़ने और भूकम्प के आने से उतनी भी देर नहीं लगती जितनी कि रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर रेल का इजिन दिखाई देने और उसके तुरन्त बाद गाड़ी के डिब्बे दिखाई पड़ने में लगती है । फिर भी वैज्ञानिक निराश नहीं हुए और उन्होंने अपना शोध कार्य जारी रखा । अगले चरणों में यह जाना जा सका कि पृथ्वी की सतह पर एक विशिष्ट प्रकार की सूक्ष्म विद्युत् तरंग हर समय नाचती रहती है। भूकम्प आने के पहले वह अचानक बढ़ती है और तेजी से घटती है । उसके तुरन्त बाद भूकम्प आता है । किन्तु इन तरंगों के बढ़ने, घटने और भूकम्प आने में भी उतना अन्तर नहीं निकल सका कि इस बीच कोई सुरक्षा प्रबन्ध किये जा सकें । यह तभी सम्भव है जब पहले से जान लिया जाए कि अमुक समय तरंगें बढ़ेंगी और इस अधिकतम बढ़ते रहने के बाद घटेंगी ।

अभी तक वैज्ञानिक इस दिशा में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके हैं । अलबत्ता कुछ जीव जन्तुओं के व्यवहार को देखकर यह अनुमान अवश्य लगाया जा सका है कि उन्हें विद्युत् तरंगों के बढ़ने और घटने का ज्ञान पर्याप्त समय रहते हो जाता है तथा वे अपना बचाव करने के लिए इधर-उधर भागने लगते हैं। १९६६ में चीन सरकार द्वारा भूकम्प की सम्भावना का पता लगाने के लिए बनाये गये कार्यक्रम में जनता से भी सहयोग लिया गया था और कहा गया था कि वे अपने क्षेत्र में कोई भी प्राकृतिक परिवर्तन कभी भी देखें तो उसे नोट करायें । लोगों द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर यह पता चला कि भूकम्प आने के पहले साँप और चूहे अपने बिलों से निकल कर इस कदर हड़बड़ा कर भागने लगते है कि न चूहों को साँप का ध्यान आता है न साँप की चूहों पर दृष्टि जाती है भले ही वे साथ-साथ ही क्यों न भाग रहे हों या हड़बड़ी में एक दूसरे से टकरा ही क्यों न रहे हों ।

पृथ्वी के भीतर पड़ी दो प्रमुख दरारों का ही ऊपर जिक्र किया गया है । छोटी-मोटी दरारें तो अनेकों पड़ी हुई हैं जिनमें किन्ही अज्ञात कारणों से कोई न कोई परिवर्तन होता रहता है और उसका परिणाम विनाशकारी भूकम्प के रूप में सामने आता है । ग्रिविन और प्लेमैग ने अपनी पुस्तक 'जूपिटर इफेक्ट' में लिखा है कि भूकम्प लाने वाली पृथ्वी की दरारों में हरकत का एक प्रमुख कारण प्रथ्वी की चुम्बकीय धाराओं में होने वाले परिवर्तन भी है । सन् १९८२ में जब सौर मण्डल के ग्रह सूर्य के एक ही ओर एक ही सीध में आये तब पृथ्वी का चुम्बकीय बल तथा उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति असाधारण रूप से प्रभावित हुयी । इन प्रभावों के कारण पृथ्वी की दरारों मे विचित्र प्रक्रियाएँ परिवर्तन हुए जिनकी प्रतिक्रिया विनाशकारी भूकम्पों के रूप में अब भी सामने आ रही है ।

भूमिगत उत्पातों में भूकम्प के बाद दूसरा नम्बर ज्वालामुखियों का है ।

ज्वालामुखी जब प्रचण्ड वेग से फटते हैं, तब गजब ढाते हैं । कोलम्बिया का एक मुद्दत से सोया हुआ ज्वालामुखी पर्वत नेवादोडेन रूईज गत वर्ष फटा तो जमीन फाड़कर प्रचण्ड ज्वाला निकली । उस आग ने म्यूरिल, करावियंका, लिबोनो आदि को अपने अंचल में लपेट लिया और कहते हैं कि २० से ५० हजार तक की आबादी लुप्त हो गयी । बर्फीले पहाड़ पिघल कर आग और पानी का विचित्र संयोग बनाने लगे ।

ज्वालामुखियों का अधिक प्रकोप इण्डोनेशिया क्षेत्र में होता रहा है। उस क्षेत्र में १६७ ज्वालामुखी विद्यमान हैं जिनमें से ८० तो अभी भी आग की नदी बहा रहे हैं।

गत शताब्दी में इण्डोनेशिया के सुवावा द्वीप का तवेरा पर्वत फटा था । उसके कारण ५६ हजार व्यक्ति एक ही झटके में समाप्त हो गये । दूसरा विस्फोट जावा सुमात्रा के बीच क्रोकातोआ में हुआ था जिसकी गर्जना ३००० मील तक सुनी गयी । साथ ही समुद्री तूफान भी आया । इसमें ३६ हजार लोगों की देखते-देखते खपच्चियाँ उड़ गयी । समझा जाता है कि उसमें २६

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हाइड्रोजन बमों जितनी शक्ति का विकिरण हुआ था । इसका गहरा धुआँ मोंतान और ब्योकिंग राज्यों पर मुद्दतों छाया रहा ।

विस्फोट होने पर यदि गैस मिश्रित धुआँ धरती के समीपवर्ती बायोस्फीयर और ट्रोपोस्फीयर तक बना रहता है तो बादलों के साथ बरस कर जमीन पर आ जाता है और उसका प्रभाव जल्दी ही धरती पर दीख पड़ता है । किन्तु यदि वह २० किलोमीटर से ऊपर जा पहुँचता है तो वह धूलि आकाश में ही कई सालों तक छाई रहती है और पृथ्वी पर सूर्य ताप को आने से रोकती है । इससे पृथ्वी के मौसम पर असर पड़ता है। गर्मी कम हो जाती है। असमय वर्षा होने लगती है और घुटन अनुभव होती है।

वाशिंगटन राज्य के सेण्ट हेलेना क्षेत्र में फटे ज्वालामुखी की धूलि लम्बे समय तक आकाश में उड़ती देखी गयी और सबेरे-शाम पूर्व पश्चिम में लालिमा दीखती रहीं । इन गैसों में गन्धक की मात्रा अधिक होती है । गन्धक एक जहर है । जब धरती पर हवा या पानी के साथ नीचे उतरता है तो प्राणियों और वनस्पतियों को निश्चित रूप से हानि पहुँचाता है ।

१३ नवम्बर को उजमेरो नगर में ज्वालामुखी फूटा। इस २५ हजार आबादी वाले कस्बे में तत्काल २० हजार लोग आग उगलते लावें में जल भुन गये ।

जब-जब संसार में बड़े ज्वालामुखी फटे हैं तब-तब उनसे प्रभावित क्षेत्रों में मौसम सम्बन्धी भारी उथल-पुथल हुई है । लोग आश्चर्यचकित रह गये हैं कि ऋतुओं ने अपनी परम्परा एकदम कैसे बदल दी ?

भूकम्प के झटके दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका में विशेष रूप से आये । वैसे उन्होंने धरती का कोई कोना ऐसा नहीं छोड़ा जो प्रकम्पित न हुआ हो और जहाँ जान माल की भारी क्षति न उठानी पड़ी हो । कैलीफोर्निया, पेरू, निकारागुआ आदि के झटकों को इस शताब्दी का बड़ा हादसा माना जाता है ।

पेरू में करीब ६० हजार मरे थे । निकारागुआ में ७ हजार, ग्वाटेमाला में २३ हजार, दक्षिण चीन में २० हजार, बीजिंग के भूकम्प में ८ लाख, तुर्की में ३ हजार इटली में ३ हजार व्यक्ति मरे । इसके अतिरिक्त जापान, इण्डोनेशिया, चिली आदि के भूकम्पों में भी भारी जान-माल की क्षति हुई ।

साइंस पत्रिका के अनुसार पृथ्वी के वातावरण में जहरीला कार्बन मोनोक्साइड प्रतिवर्ष औसतन ६ प्रतिशत बढ़ रहा है । उसके प्रभाव से पृथ्वी पर सूर्य की किरणें बरसने से रोकने वाली गैस घटती है । इस घट-बढ़ के प्रभाव से पृथ्वी की ध्रुवों की बर्फ पिघल सकती है और समुद्री तूफान से धरातल का बड़ा अंश विशाल जलराशि के उदर में समा सकता है ।

प्रख्यात वैज्ञानिक रेने ड्यूमा तथा वर्नाडे रोडियार की एक संयुक्त भविष्यवाणी 'साइंस' पत्रिका में छपी है। इस आशंका का समर्थन उपर्युक्त पत्रिका के सम्पादक जॉन ग्रिबिन ने अपने अलग तर्कों के आधार पर किया है । वे कहते हैं कि ग्रहों की स्थिति आने वाले वर्षों में ऐसी रहेगी जिनका सूक्ष्म प्रभाव धरती को उसके निवासियों को अनेक प्रकार की क्षति पहुँचा सकते हैं । महामारी, युद्ध, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि से लेकर ऐसा घटनाक्रम घटित हो सकता है, जिसमें तूफानों, चक्रवातों की भरमार रहेगी और साधारण जनों का मानसिक संतुलन गड़बड़ाने से विपत्तियों का सिलसिला चल पड़ेगा । अपराध और विलगाव की असंख्यों अप्रिय घटनायें घटेंगी ।

सूर्य कलंक, ग्रहण, ग्रहों की एक सीध में उपस्थिति, धूमकेतु आदि ऐसे कितने ही कारण हैं, जो इस अवधि में अशान्ति, विग्रह और विक्षोभ भरे रह सकते हैं ।

बीसवीं सदी का अन्तिम दशक किस भयावह घटनाचक्र को साथ लेकर धरती वासियों को अशुभ सूचना देने आ रहा है । इसका उल्लेख संसार के मान्य खगोल शास्त्रियों ने किया है । पंडित, ज्योतिषी, बाबाजी अनेक भविष्यवाणियाँ करते रहते हैं, उनमें से कदाचित् कभी कुछ सही उतरती है पर वैज्ञानिकों की स्थिति दूसरी है । उनका अनुमान आधारों और प्रमाणों पर अवलम्बित होता है । उन्हें अपनी प्रतिभा का भी ध्यान रहता है कि उनका कथन असत्य निकलने पर उपहास न हो ।

अमेरिकी पत्रिका 'डेनोवियर' ने भी ऐसी ही आशंका प्रकट की है कि बीसवीं सदी का अन्त असुखकर और अप्रिय घटनाओं से घिरा रहेगा ।

इस प्रकार के भयावह उत्पातों में प्रकृति की अनगढ़ता और अव्यवस्था नहीं खोजनी चाहिए । वरन् यह देखना चाहिए कि कहीं अपनी ही कुछ उच्छृंखलतायें पृथ्वी को कुपित तो नहीं कर रही हैं ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुर्मतिजन्य दुर्गति-मौसम के असंतुलन के रूप में

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि पृथ्वी का अस्तित्व एवं वैभव सौर जगत पर अन्यान्य ग्रहों के पारस्परिक सहयोग पर निर्भर है । एक चक्र में जुड़ी होने के कारण वह मात्र दूसरे ग्रहों से प्रभावित ही नहीं होती, उन्हें अपनी स्थिति से प्रभावित भी करती है । आज उसकी जो स्थिति है, एक सदी पूर्व में नहीं थी । हरीतिमा की चादर में वह लिपटी थी । अनगढ़ होते हुए भी सर्वत्र सौन्दर्य बिखरा था । औद्योगीकरण के अभिशाप ने उसका सौन्दर्य, उसकी सुषमा को छीनकर उसे अनगढ़ बना दिया है । बढ़ी हुई प्रदूषण की विषाक्तता भूतल तक सीमित नहीं रही, उसके आचरण को चीरते हुए अन्तरिक्ष में जा पहुँची । सौर परिकर के अन्य ग्रह भी परोक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं । उनकी गति एवं स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है । अन्तर्ग्रही सम्बन्ध से जो इकॉलाजिकल चक्र प्रचलित रूप से काम करते रह सकते हैं वह बिगड़ता चला गया है । इस असन्तुलन की ही परिणिति आज सर्वत्र प्रकृति प्रकोपों-विक्षोभों के रूप में देखी एवं अनुभव की जा रही है ।

'प्लेनट्रथ' (अप्रैल ८३) के सम्पादक डा० हर्बर्ट आर्मस्ट्रांग ने इस शताब्दी के मौसम परिवर्तनों का अपनी पत्रिका में विस्तार से उल्लेख किया है । विद्वान् लेखक डॉन टेलर इसमें लिखते हैं कि संसार में औद्योगीकरण बढ़ने से पृथ्वी के वायुमण्डल का तापक्रम तेजी से बढ़ता जा रहा है । यह बढ़ोत्तरी ही प्राकृतिक प्रकोपों, अप्रत्याशित मौसम परिवर्तनों का प्रमुख कारण है । मौसम विज्ञानी भी मानते है कि पृथ्वी के सौर चक्र में जो परिवर्तन गत दशाब्दियों में हुए हैं, वे पहले कभी नहीं देखे गये । सौर कलंक भी इन्हीं दिनों अधिक दृष्टिगोचर हो रहे हैं । पृथ्वी पर बढ़ते तापक्रम का सीधा सम्बन्ध भूकम्पों, ज्वालामुखी विस्फोटों से है । उल्लेखनीय तथ्य यह है कि विगत दस वर्षों में तो उनमें असामान्य रूप से बढ़ोत्तरी हुई है ।

डॉन टेलर का कहना है कि १९८० के बाद दो वर्षों में जितने अभूतपूर्व परिवर्तन संसार के मौसम में देखे गये हैं, उतने पहले कभी, किसी समय नहीं हुए । वर्ष १९८२ महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है । विद्वान लेखक ने संसार के विभिन्न क्षेत्रों में प्रकट हुए प्रकृति विक्षोभों का विस्तृत अध्ययन कर उसका सार संक्षेप इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

आस्ट्रेलिया में पूरे वर्ष भर सूखे का प्रकोप रहा । अपने उत्पादन का यह देश ४५ प्रतिशत सदा निर्यात कर रहा है, पर उस वर्ष उसे बाहरी राष्ट्रों से मदद मांगनी पड़ी, भारी मात्रा में खाद्यान्न आयात करना पड़ा।

दक्षिण महासागर स्पिल टोंगा द्वीप में मार्च माह में १७२ प्रति घण्टे की रफ्तार से तूफान आया । नब्बे प्रतिशत फसल नष्ट हो गयी तथा ९५ प्रतिशत अचल सम्पत्ति, मकान, भूमि आदि समुद्र के गर्भ में समा गये ।

चीन के सबसे बड़े प्रान्त होबाई एवं लाओनिग में इस सदी का सबसे भयंकर सूखा पड़ा । ठीक समय साथ-साथ के लगे एक-दूसरे प्रान्त-शांघजींग में बाढ़ के प्रकोप से हजारों व्यक्ति अकाल मृत्यु के मुँह में समा गये, लाखों बेघर हुए, खरबों की सम्पत्ति नष्ट हुयी ।

दक्षिणी चीन में वर्ष के उत्तरार्ध में पीली नदी में आयी भयंकर बाढ़ ने पिछले सभी रिकार्ड चीन के तोड़ दिए । हजारों व्यक्ति काल के ग्रास बने, लाखों बेघर हुए।

इन्डोनेशिया के एक करोड़ पचास लाख व्यक्ति सूखे के दुर्भिक्ष के कोप बने । ऐसा सूखा वहाँ पिछले दो सौ वर्षों में कभी नहीं पड़ा था ।

फ्रांस का दक्षिणी क्षेत्र अंगूर की फसल के लिए प्रख्यात है । विश्व भर की पैदावार का अस्सी प्रतिशत अंगूर यहीं होता है । सूखे के भयंकर प्रकोप से समूची फसल मारी गयी जबकि उत्तरी फ्रांस में उन्हीं दिनों वर्ष की सर्वाधिक बर्फ पड़ी ।

इटली का मौसम का असाधारण व्यतिरेक देखा गया। ठण्ड के मौसम में भयंकर गर्मी तथा रात्रि में ओलों की वर्षा से सारी फसलें नष्ट हो गयीं । सिसली प्रांत की राजधानी पलेंरमों तथा उसके आसपास के इलाकों में बयालीस डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान रिकार्ड किया गया जो वहाँ के लिए एक अनहोनी घटना है । ऐसी स्थिति मात्र ट्रॉपिक्स में ही होती है । जापान की नागाशाकी नदी में गतवर्ष ऐतिहासिक बाढ़ आयी । हिरोशिमा पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बमबारी से हुई क्षति के बाद पहली बार इतनी अधिक जन शक्ति तथा धन शक्ति नष्ट हुई ।

न्यूजीलैण्ड के अधिकांश प्रान्तों को सूखे का शिकार होना पड़ा । देश को अकाल के दुर्भिक्ष से सामना करना पड़ा । जिम्बाब्वे, साउथ अफ्रीका में इस सदी का भीषण-तम सूखा पड़ा । खाद्यान्न संकट से हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हुयी । कितने ही नये प्रकार के रोग फैले ।

सोवियत रूप का उत्तरी भाग जो उत्तरी ध्रुव के निकट पड़ता है, तुलनात्मक दृष्टि से अधिक ठंडा है, पर इस बार वह अत्यधिक गर्म रहा । जबकि दक्षिणी भाग में भयंकर ठण्ड पड़ी । बरसात एवं ओलों के कारण करोड़ों हैक्टेयर की फसलें नष्ट हो गयीं । कितनी ही नदियों में बाढ़ आयी ।

दक्षिण पूर्व एशिया के थायलैंड, मलेशिया आदि देशों में भी इस वर्ष मौसम का असन्तुलन विषेष रूप से देखा गया । मात्र १०-२० मील के फासले पर कहीं सूखा तो कहीं अतिवृष्टि जैसे व्यतिक्रम देखे गये ।

अमरीका में बसन्त के मौसम में ओलों की वर्षा से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा । उत्तरी भाग की सभी नदियों में आयी बाढ़ से फसलों को भारी क्षति पहुँची, असंख्यों के मकान वह गये । समुद्र किनारे बसे फ्लोरिडा, सॉन फ्रांसिसको, वाशिंगटन डी०सी० न्यूयार्क, लासबेगास नगरों में बाढ़ का पानी तटों को पार कर शहरी क्षेत्र से फैल गया । बरसाती पानी की सड़न-दुर्गन्ध से उन नगरों में महामारी फैली । हजारों की जानें गयी ।

इसी वर्ष ३० मई के दिन पश्चिम जर्मनी में इतनी मूसलाधार वर्षा हुई कि बाढ़ की स्थिति आ गई । पश्चिमी जर्मनी के अधिकांश इलाकों के बाजारों में सड़कों पर बतखें तैर रही थीं । डाक नावों से बाँटी गयी । अधिकारियों का कहना था कि गत ३६ सालों में इतनी भयंकर बाढ़ कभी नहीं आयी । सैकड़ों के मरने तथा असंख्यों के बह जाने की यह खबर सुर्खियों के साथ अनेकों समाचार पत्रों ने छापी । इसी वर्ष तेईस मई के हिन्दुस्तान टाइम्स में छपी एक खबर के अनुसार लन्दन में लगातार ३५ दिनों तक मूसलाधार वर्षा होती रही है । १९४० के बाद झड़ी लगी सतत् वर्षा का यह नया कीर्तिमान है । केन्द्रीय मौसम पूर्वानुमान कार्यालय के अनुसार इस घटना की इसी वर्ष फिर पुनरावृत्ति होने की सम्भावना है । इस वर्ष के साथ ही साढ़े छः किलोमीटर क्षेत्र में ८ सेण्टीमीटर बर्फ की परतें कई दिनों तक जमी रहीं । आवागमन, यातायात, पूर्णतः अवरुद्ध रहा । सरकारी प्रयत्नों से बर्फ काट-काटकर हटायी गयी तो भी यातायात शुरू न हो सका । मौसम के सामान्य होने, वर्षा बन्द होने के कुछ दिनों बाद सामान्य क्रम कुछ-कुछ पटरी पर आया है ।

भारत भी इस पर्यावरण असन्तुलन से अछूता नहीं रहा है । विगत कुछ वर्षों से भारत का मौसम भी बहुत तेजी से बदला है । प्रकृति प्रकोपों के अतिवाद की बहुलता देखी गयी है । १९७९ में चमोली जनपद के कोथा गाँव में १६ अगस्त की रात्रि को घनघोर वर्षा हुयी । दूसरे दिन भू-स्खलन हुआ । पूरा गाँव पृथ्वी के भीतर समा गया । हिमाँचल प्रदेश में हुए भूस्खलन से १३ सौ व्यक्तियों की जानें गयीं कितने ही घायल हुए । शिमला व निकटवर्ती क्षेत्रों में मई माह तक बर्फ गिरती रही है । पिथौरागढ़ जिले के शिसनागाँव के लोगों पर १९८१ की मध्यरात्रि को प्रकृति की एक भयंकर कालीसाया मँडरायी और वहाँ के सम्पूर्ण जन-जीवन को समाप्त करके तिरोहित हो गयी । यह एक तूफानी बवण्डर था ।

१५ अगस्त १९७७ को ताबा घाट प्रभाग (तराई) में जमीन के धँसने से हजारों लोग मृत्यु की गोद में चले गये । भूस्खलनों के कारणों के बार में वैज्ञानिकों का कहना है कि हिमालय क्षेत्र में वृक्ष वनस्पतियों की अंधाधुन्ध कटाई के कारण उस क्षेत्र की जमीन की जल रोकने की क्षमता में निरन्तर ह्रास आ रहा है । वृक्षों के कारण ही मिट्टी का कटाव नहीं हो पाता किन्तु पेड़ों के कटते ही उनकी जड़ों से चिपकी मिट्टी का कटाव आरम्भ हो जाता है तथा अनेकानेक गड्ढे नाले बनना आरम्भ हो जाते हैं ।

पिछले वर्षों में उड़ीसा में आया तूफान अत्यन्त विध्वंसक रहा उसके बवण्डर से तत्काल पाँच सौ व्यक्ति काल के ग्रास बने, १००० घायल हुए । दो लाख व्यक्तियों को गृहहीन करने का श्रेय इस चक्रवात को ही मिला था । कटक, बालासोर, पुरी,क्योंझर, धेनुकनाल के पाँचों जिले उस तूफान से बुरी तरह प्रभावित हुए । जून १९८२ का वह तूफान वस्तुतः भयावह एवं अविस्मरणीय घटना के रूप में हमेशा याद किया जाता रहेगा । २२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किमी० प्रति घण्टा की भयंकर गति से चलने वाले इस तूफान ने पाराद्वीप बन्दरगाह को १२ घण्टे की विनाशलीला के बाद श्मशान में परिणत कर दिया । ३५ हजार निवासियों की करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हुयी । बन्दरगाह पर खड़े ३२ से ३५ फीट लम्बे ट्रेलर्स एक दूसरे के ऊपर ऐसे चढ़ गये जैसे लकड़ी के अनेकों खोखे एक पर एक जमा दिए गये हों । १०० से अधिक नावों को क्रेन से पानी के बाहर निकाला गया। ८० फीट ऊँचे तीन चट्टान जैसे प्रकाश स्तम्भ टूटकर गिर पड़े ।

सन् १९८२ वस्तुतः भारत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण रहा । देश के दस करोड़ व्यक्ति सूखे की चपेट में आये । आंध्र, गुजरात, कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों पर आए तूफान ने सहस्रों व्यक्तियों की जान ले ली । संचार तन्त्र अव्यवस्थित हुआ । अरबों की सम्पत्ति नष्ट हुयी । उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र तो मौसम के झंझावातों से और भी अधिक प्रभावित रहा । एक ही दिन में, तेज सर्दी, अधिक गर्मी, भयंकर वर्षा के तीनों ही मौसम समय के थोड़े-थोड़े अन्तरों पर दिखायी पड़े ।

पिछले दिनों आर्मीनिया गणराज्य, मैक्सिको, कोलम्बिया का ज्वालामुखी विस्फोट एवं बांग्लादेश में आई बाढ़ से लाखों लोगों को असमय ही जीवन से हाथ धोना पड़ा । कोलम्बिया एवं फिलीपीन्स के बड़े-बड़े शहरों की पूरी आबादी गर्म लावे में बदल कर रह गयी । अमेरिका के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जेम्स कार्नेल ने अपनी पुस्तक "द ग्रेट इण्टरनेशनल डिजास्टर बुक" में इस तरह की विश्व भर में घटित होने वाली प्राकृतिक आपदाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया हैं । उनका कहना है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ एवं धरती के दुरुपयोग के कारण ही प्रायः ऐसी घटनायें घटती हैं । उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया है कि किस प्रकार भूतकाल में बढ़ती आबादी के दबाव के कारण जंगलों का सफाया हुआ और प्राकृतिक विक्षुब्धता का सामना न कर पाने के कारण समुन्नतमय सभ्यता को अपना अस्तित्व गँवाना पड़ा । इसी तरह सुमेरियन सभ्यता, एटलांटिस सभ्यता, बेबिलोनिया, मेसोपोटामिया, एवं सिन्धु घाटी की उन्नत मानव सभ्यतायें भी अपने बौद्धिक उन्माद और प्रकृति की रुष्टता के कारण अतीत के गर्भ में विलीन हो गयीं ।

विशेषज्ञों का कहना है कि प्राकृतिक पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान करने वाली वृक्ष-वनस्पतियों वायुमण्डल को नम बनाये रखने में महती भूमिका निभाती हैं । हरीतिमा के अभाव में मानसून बिखर जाता है और असामान्य वर्षा को जन्म देता है । इससे कहीं भारी वर्षा, कह कम और कहीं बिल्कुल वर्षा न होने की स्थिति पैदा हो जाती है। पेड़ों की चुम्बकीय शक्ति ही बादलों को धरती के करीब खीचतीं और उन्हें वर्षा करने के लिये बाध्य करती है। पेड़-पौधों की वजह से पृथ्वी की जलशोषण क्षमता बनी रहती है । इनके अभाव में भू-क्षरण की वृद्धि होती और वर्षा का सम्पूर्ण पानी मैदानी भागों में फैल जाता और बाढ़ का रूप धारण कर लेता है । यही कारण है कि प्रति दूसरे वर्ष प्रत्येक नदी में पानी चढ़ जाता है और पाँच-दस वर्ष के क्रम से एक भयावह बाढ़ आती है । इस बाढ़ से न केवल जान-माल की अपूरणीय क्षति होती है वरन् संचार माध्यमों एवं परिवहन व्यवस्था में गड़बड़ी, पीने के पानी की कमी, आर्थिक-सामाजिक क्षति और भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास भी इसमें सम्मिलित हैं । प्रतिवर्ष २५-३० हजार लोगों को बाढ़ के कारण अपनी जान गँवानी पड़ती है ।

अपने देश के उत्तरी राज्यों में बाढ़ और भू-स्खलन एक सामान्य बात हो गयी है । जिस तीव्रता के साथ वनों की कटाई हो रही है, बाढ़ की दर भी उसी अनुपात से बढ़ी है । हर साल ३२.८ करोड़ एकड़ भूमि में से १४ करोड़ एकड़ भूमि बाढ़ या भू-स्खलन से प्रभावित होती है, साथ ही ६००० करोड़ टन उपजाऊ मिट्टी इस क्षेत्र से वर्षा के साथ बहकर नदियों में चली जाती है। हजारों वर्षों में उपजाऊ-उर्वर बनाया गया क्षेत्र एक ही मौसम में अनुत्पादक बन जाता है ।

विश्वव्यापी मौसम में सुव्याप्त इस हेर-फेर का कारण क्या है ? मूर्धन्य मौसम विज्ञानियों का मत है कि सूक्ष्म अन्तरिक्ष में एक जेट-स्ट्रीम लॉकिंग व्यवस्था सतत् चल रही है । पृथ्वी की सतह के ऊपर वातावरण अधिक गरम है जबकि ध्रुवों पर अपेक्षाकृत अधिक ठंडा है । ऐसे में जहाँ ये दोनों मिलते हैं ६ से १० मील लम्बी बादलों की सघन श्रृंखला बनती चली जाती है । ये बादल सामान्य नहीं अपितु अत्यन्त ठंडे कृत्रिम तथा विज्ञात वायु घटकों के घनीभूत रूप हैं । सामान्यतया ये बादल बनकर कुछ ही समय में समाप्त हो जाते थे किन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विगत बीस वर्षों में हुए पृथ्वी के वातावरण में परिवर्तन के फलस्वरूप इन बादलों की परस्पर लॉकिंग होने से एक ही स्थान पर कई माहों से वे स्थिर से हो गये हैं। ऐसे एक नहीं करोड़ों "जेट स्ट्रीम" हैं । ध्रुवों पर होने वाले ये परिवर्तन सारे पृथ्वी के बदलते मौसम का मूल कारण हैं ।

आखिर अचानक ऐसी स्थिति कैसे बनी ? ध्रुवों पर परिवर्तन तथा अन्तरिक्ष में घातक गैसों की मात्रा में वृद्धि इस सीमा तक कैसे पहुँची ? वैज्ञानिकों का मत है कि पृथ्वी का तापमान बढ़ते औद्योगीकरण संसाधन दोहन, हरीतिमा उन्मूलन जैसे मानवी दुष्कृयों के कारण सतत् बढ़ता जा रहा है । उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों पर असामान्य स्थिति उत्पन्न करने में मानवी दुर्बुद्धि ने प्रमुख भूमिका निभाई है। सारा विश्व जिस इकॉलॉजिकल साइकल से चलता हो, ध्रुवीय व्यवस्था से सुनियोजित होता हो उसे ही यदि अव्यवस्थित कर दिया गया तो मौसम के दुष्प्रभावों से कोई भी अछूता नहीं रह सकता । विक्षोभों के बादल सतत् विश्व समुदाय पर मँडरा रहे हैं और ये आगे भी उग्र स्वरूप लेंगे, इसमें सन्देह नहीं ।

"वर्ल्ड वाच इन्स्टीट्यूट" के अध्यक्ष विख्यात वैज्ञानिक लेस्टर ब्राउन ने अपने अध्ययन में बताया है कि जिस अनुपात में इन दिनों मनुष्य की जनसंख्या बढ़ी है, उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव वर्षा पर पड़ा है, क्योंकि अधिक लोगों के लिये अधिक जगह चाहिये, जिसके लिये पेड़-पौधों की, वनों की कटाई करनी पड़ती है और इसका दूरगामी प्रभाव वर्षा पर पड़ता है । बाढ़ एवं दुर्भिक्ष उसी की देन हैं । इतना ही नहीं वातावरण में भरती जा रही विषाक्तता वायुमण्डलीय ताप में भारी पवितर्न लाकर समुद्री तूफानों एवं चक्रवातों के रूप में सामने आती है । प्रकृति का यह सबसे भयंकर रूप है जो सबसे अधिक तबाही मचाता है ।

सन् १९८२ में प्रकृति प्रकोप संसार के मौसम विशेषज्ञों के अनुसार धरती के विभिन्न भागों में स्थिति असाधारण रूप से अनिश्चित रही । सामान्यतया ऐसा होता नहीं । मौसम की विभिन्न क्षेत्रों में एक निर्धारणा है । उसी के अनुसार यथासमय सर्दी-गर्मी-वर्षा जैसे परिवर्तन होते रहते हैं । यों अनिश्चित और अप्रत्याशित परिवर्तन भी कभी-कभी हो जाते हैं पर वे अपवाद ही माने जाते हैं । इस साल भी यह अपवाद सर्वत्र छाया रहा ।

ऐसी अनिश्चित स्थिति वैज्ञानिकों के अनुसार तब होती है जब धरती को हिमयुग जैसे संकटों में से गुजरना होता है । भूतकाल में ऐसी खण्ड प्रलय अनेक बार हुई है जब मौसम के असन्तुलन से विभिन्न क्षेत्रों में प्राणियों और वनस्पतियों के लिए जीवन-संकट उत्पन्न हुआ और चहल-पहल वाले क्षेत्र निस्तब्ध वीरान हो गए ।

ऐसे खण्ड प्रलय वाले समय हजारों वर्ष लम्बे होते हैं । इस अवधि में मात्र प्राणियों और वनस्पतियों पर ही संकट नहीं आता वरन् धरती और समुद्र के मध्यवर्ती क्षेत्र भी बदल जाते हैं । धरती पर महाद्वीपों की जो स्थिति अब है भूतकाल में वैसी नहीं थी । समुद्री क्षेत्रों में द्वीप उभर आए और धरातल के बीच में दरारें बनाकर समुद्र बहने लगा । जब भी ऐसे परिवर्तन हुए है उसका आभास मौसम के विचित्र परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत होता रहा है । ऐसी ही कुछ अनगढ़ परिस्थितियाँ इन दिनों भी बन रही हैं जिसे देखते हुए भावी विपत्तियों का अनुमान लगता है । यदि वैसा ही कुछ होने जा रहा हो तो यह आशंका उत्पन्न होगी कि धरातल के किस भाग का क्या हश्र होगा और न जाने कहाँ क्या कहर बरसने लगे ।

विगत मई माह में भारत के उतरी भाग में सर्वाधिक ठंडक रही । ऐसा मौसम सौ वर्षों से इधर कभी नहीं आया । जून में अत्यधिक गरमी रही । जून के अन्त में इतनी अधिक ठंडक पड़ने लगी कि ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करना पड़ा । जुलाई में फिर से गरमी पड़ने लगी । इस प्रकार के असामान्य मौसमीय परिवर्तन का गहराई से अध्ययन करने पर पता लगता है कि मौसम में कोई विशेष परिवर्तन होने वाला है ।

पृथ्वी पर तापमान को देखकर लगता था कि सूर्य द्वारा चालित कोई हीट इन्जन ही धरती पर उतर आया है । कहीं ठंडक कहीं गरमी का कारण वेजिटेशन और समुद्र का होना है । समुद्र और वनस्पतियाँ सूर्य की गर्मी को अपने में अवशोषित कर लेते हैं । जिसके कारण उन स्थानों का तापमान अन्य स्थानों की तुलना में कम रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आसमान का ऐसा अनिश्चित तापमान लाखों वर्षों बाद देखा गया । हिमयुग और हाट पीरियड्स (गरम काल) के बीच की स्थिति को वार्म इन्टरग्लैशियल पीरियड कहते हैं । वैसा ही कुछ समय अब आ रहा है । विश्व की जलवायु का इतिहास गरमी और बर्फानी पीरियड्स से भरा पड़ा है । लाखों वर्षों से अब तक वातावरण में छोटे-बड़े अनेकों परिवर्तन होते रहे हैं । इस समय की जलवायु गरमी से इन्टरग्लैशियल पीरियड की ओर अग्रसर हो रही है । जनवरी १९८२ में संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्यवर्ती पश्चिमी भाग में शीतलहर से २४६ लोग काल के ग्रास बन गये । भयंकरता के ही कारण इसका नाम 'साइवेरियन एक्सप्रेस' पड़ गया क्योंकि यह बर्फानी तूफान साइबेरिया के ध्रुव प्रदेश से आया हुआ बताया गया । परिणामस्वरूप पारा शून्य से भी ५९ अंश नीचे गिर गया था ।

इस शीतलहर ने नया कीर्तिमान स्थापित किया । ऋतु विज्ञानियों की दृष्टि में अब तक उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी का सबसे प्रचण्डतम शीत मध्य अमेरिका का यह था ।

हिमानी वर्षा के कारण उत्तरी जार्जिया के बहुत से राजमार्ग अवरुद्ध रहे तथा मध्य एवं उत्तरी इण्डियाना ओहियो एवं मिशीगन में बहुत सी दुर्घटनायें घटीं ।

ऐसे अप्रत्याशित एवं आकस्मिक ऋतु परिवर्तन क्यों होते हैं ? अन्तरिक्षीय स्थिति में आने वाले क्या उतार-चढ़ाव इसके लिए उत्तरदायी हैं । इसकी खोजबीन वैज्ञानिक क्षेत्रों में इन दिनों गम्भीरतापूर्वक की जा रही है और यह जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि यह सब प्रकृति विपर्यय है या इसके साथ किसी भावी अनिष्ट की आशंका के सूत्र जुड़ते है ।

साधारण ऋतु विज्ञान ने इस वर्ष की प्रस्तुत उथल पुथल के कारणों को समझने-समझाने का प्रयत्न किया तो वे सामान्य अन्तरिक्षीय परम्परा के आधार पर ही कुछ कारण ढूँढ़ने बनाने की स्थिति तक पहुँचे हैं । उनके प्रतिपादनों का सार-संक्षेप इस प्रकार प्रकाश में आया है

''ऊँची उठती हुई पर्वत श्रृंखलायें'' भूक्षरण आदि कारणों से वायुमण्डलीय परिवर्तन होते हैं । जलवायु और समुद्र इस वातावरण से प्रभावित होते जा रहे हैं। सूर्य के चारों ओर, पृथ्वी की कक्षा में परिवर्तन गोलाकार से वृत्ताकार में होते है जिसका प्रभाव मौसम पर पड़ता है । पृथ्वी अपना अक्ष भी बदल रही है । इन सभी परितर्वनों के कारण पृथ्वी की सतह पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों का—गरमी का असमान वितरण होना है ।

ज्वालामुखीय धूल से चारों ओर से सूर्य के ढँक जाने पर भी वायुमण्डल में परिवर्तन हो जाता है । वायु मण्डल की ऊपरी परत स्टैटोस्फियर के धूल से ढँक जाने पर पृथ्वी की सतह तक सूर्य की विकसित किरणें नहीं पहुँच पातीं जिससे वह ठंडी हो जाती है । ज्वालामुखीय धूल कभी-कभी एक वर्ष से सात वर्ष तक वायुमण्डल में बादल की तरह छाई रहती है । इस तरह के उदाहरण में इसी वर्ष अप्रैल माह में हुए मेक्सिको के इलचियोन ज्वालामुखी विस्फोट को लिया जा सकता है । इस ज्वालामुखी से निकली धूल कई महीने तक वायुमण्डल में छायी रही । १० प्रतिशत विकिरण को धूल ने रोक लिया ।

ज्वालामुखी धूल के अतिरिक्त मनुष्य द्वारा विनिर्मित औद्योगिक प्रदूषणों से अपने चारों ओर के वातावरण की पारदर्शिता समाप्त होती जा रही है जिसका प्रभाव लम्बे समय तक बने रहने की सम्भावना है । पृथ्वी की सतह पर गर्मी के अवशोषण और वितरण का सन्तुलन वनस्पति जगत और पानी के स्रोतों पर निर्भर है । जिसके आधार पर ही बर्फ जमती और हिमपात होता है । वन-प्रदेशों—जंगलों के कटते जाने, नष्ट करते जाने से यह संतुलन दिनों-दिन बिगड़ता चला जा रहा है और जलवायु शुष्क होती है ।

सूर्य धब्बों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है । इन धब्बों की अधिकतम संख्या ११ वें वर्ष, २० से २४ वें वर्ष में सर्वाधिक होती है । कई बार तो ८० और ९० वर्ष तक की अवधि इन धब्बों के बनने में लग जाती है । कुछ समय विशेष ऐसे होते हैं जिनका सम्बन्ध सनस्पाट साइकिल्स और मौसम परिवर्तन से होता है । सौर कलंकों की अधिकता वाले समय में सूखा पड़ता है । इसके ठीक विपरीत इस बार एक अनौखी बात सामने आई । उन्हीं दिनों भारत के तमिलनाडु प्रान्त में अत्यधिक वर्षा हुई । जिसका कोई कारण समझा नहीं जा सका ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असन्तुलित पर्यावरण से व्यापक उथल-पुथल सम्भावित

पिछले दिनों नवग्रही योग की काफी चर्चा ''जुपिटर इफेक्ट'' पर परस्पर विरोधी मत दिए गए । नौ ग्रहों की एक ही सीध में आ जाने—इस युतिचक्र के कारण कितनी विभीषिकाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, इस पर ग्रन्थ लिख दिए गए । तीन वैज्ञानिकों द्वारा लिखित इसी नाम से एक पुस्तक पर काफी विवाद उठ खड़ा हुआ और अन्त में निराश हो दोनों ने अपने को इस मसले से अलग कर लिया । एक वैज्ञानिक डा० ग्रिबिन अपनी बात पर अड़े रहे । उनका कहना था कि ''इसके प्रभाव तुरन्त नहीं, दूरगामी होंगे ।'' सारे विश्व का मौसम बदलेगा । कहीं भूकम्प फूट पड़ेंगे तो कहीं अकाल व महामारी का दौर आरम्भ होगा । विनाशकारी बाढ़ों से कहीं-कहीं जल प्रलय का खतरा है । ग्लेशियारों की स्थिति पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा तथा हो सकता है कि पृथ्वी का बहुसंख्य भाग हिम से ढँक जाय । मार्च की नवग्रह-युति लीला का प्रसंग समाप्त हुआ तथा सभी ने कहना आरम्भ कर दिया कि अष्टग्रही योग की तरह मात्र मानव जाति को डराने के लिए इस प्रकार की बातें कही जाती हैं । दूसरी और कुछ परिवर्तनों को दृष्टिगत रख विश्लेषणकर्त्ता कहते हैं कि ''जुपिटर इफेक्ट'' से प्रलय तो नहीं हुई परन्तु पर्यावरण बहुत तेजी से बदला है व डा० ग्रिबिन द्वारा कही गयी कई बातें सत्य हुई हैं । आगे भी अन्तरिक्षीय उपग्रहों के मापन यही बताते हैं कि विभीषिकाओं का दौर जारी रहने वाला है ।

यदि हम थोड़ी पीछे की ओर दृष्टि डालें व पर्यावरण सम्बन्धी समाचारों का एक विहंगावलोकन करें तो कुछ विस्मयकारी अपवाद रूप घटनाक्रम दृष्टिगोचर होते हैं । इस वर्ष मई माह में जहाँ भारत जैसे देश में भयंकर गर्मी पड़नी चाहिए थी वहाँ तीन-चौथाई भू-भाग में अप्रत्याशित मौसम देखा गया । अधिकांश स्थानों पर गर्मी में उग्रता नहीं थी । जहाँ शीत ऋतु लम्बी खिंची तथा हिमाचल, हिमालय के निचले इलाकों में मार्च अप्रैल तक हिमपात होता रहा, वहाँ सारे उत्तर भारत में कभी वर्षा, कभी ओले, कभी झंझावात तथा कभी तेज हवा के साथ आँधी-तूफान का दौर चलता रहा । पिछले दो सौ वर्षों में अप्रैल में इतनी वर्षा नहीं हुई, न हिमपात, जितना १९८२ की अप्रैल में हुआ है ।

प्रकृति जिस मदमस्त हाथी की तरह क्रुद्ध हो अब दौड़ी चली आ रही है, इसका पूर्वाभास मई-जून १९८२ में ही हो गया था जब मौसम विशेषज्ञों ने समय से पूर्व मानसून, अतिवृष्टि तथा अधिक समय तक वर्षा ऋतु के खिंचने (नवम्बर तक) की संभावना बताई है । अपने अन्तरिक्षीय उपग्रहों से लिए गए चित्रों व गत ७० वर्ष के आँकड़ों के आधार पर मौसम विभाग के डायरेक्टर जनरल डा० पी० के० दास ने आने वाले समय को और भी अधिक भयावह सम्भावनाओं से पूर्ण बताया है । उनका कहना है कि "१९७९ में मानसून की भारत में पूर्ण विफलता, १९८० में गर्मी में यूरोप व अमरीका में हिमपात तथा १९८१-८२ में ओलों की वर्षा से फसल की सारे विश्व भर में हानि पहुँचने के घटनाक्रमों को एक दुर्घटना मात्र कहकर नहीं टाला जा सकता है । पृथ्वी का अपनी धुरी पर गति का क्रम व उसकी ग्रहों से तथा अन्तरिक्षीय किरणों से प्रभावित होने की स्थिति अब बदलती जा रही है । वातावरण में संव्याप्त धूलि कणों की मात्रा, कार्बन डाइऑक्साइड ओजोन की परतों पर जमाव तथा ज्वालामुखी विस्फोटों की श्रृंखला से पर्यावरण सन्तुलन बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है । पृथ्वी का विकिरण सन्तुलन इससे अव्यवस्थित हुआ है तथा ओजोनोस्फीयर—आयनोस्फीयर की परतों में ''गैप्स'' आ जाने से अन्तरिक्षीय किरणों—घातक विकिरणों के पृथ्वी पर आने की सम्भावनाएं बढ़ गयी हैं । एक आँकड़ा देते हुए वे बताते हैं कि उत्तरी भारत पर किए गए एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि प्रति वर्ग मील क्षेत्र में पाँच टन घातक प्रदूषण कारक तत्व पाए गए हैं । यदि इसकी मात्रा कम की जा सके तो मौसम को अनुकूल बनाया जा सकता है ।

पिछले दिनों आकाश में पश्चिम दिशा में नित्य रात्रि को नौ बजे तक रक्त लालिमा दिखाई देती थी । ऊषा के पूर्व भी इसी प्रकार सारा आकाश विचित्र प्रकार से रक्त रंजित-सा हो उठता है । इसका विश्लेषण व्यक्तियों ने अपने-अपने ढंग से किया है । ज्योतिषियों ने ऐतिहासिक प्राच्य घटनाचक्र गोष्ठी में इसका हवाला देते हुए कहा था कि इससे पूर्व रामायण काल में लंका दहन के समय भी ऐसी ही लालिमा दिखाई दी थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार यह एक युगान्तरकारी घटना—व्यापक विनाश की सूचक है । इसी घटना का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए प्रसिद्ध एस्टोफिजिसिस्ट बताते हैं कि उन दिनों दो मासों में पृथ्वी के विभिन्न भागों में चार स्थानों पर ज्वालामुखी फटने से तेजाब का एक विशालकाय बादल वायुमण्डल में पहुँच गया । मैक्सिको, इण्डोनेशिया, ईरान व कनाडा के शतकों से प्रसुप्त पड़े इन ज्वालामुखियों में हुए भीषण विस्फोटों से निकली राख तथा सल्फ्यूरिक एसिड (गन्धक का तेजाब) पृथ्वी से २६ किलोमीटर ऊपर एक विशाल बादल के रूप में फैल गया तथा इससे जापान, एशिया, यूरोप व हवाई द्वीपसमूह के एक बहुत बड़े हिस्से में सूर्य का प्रकाश पहुँचने में बाधा पहुँची । एक करोड़ टन राख व तेजाब धरती के वातावरण को किस प्रकार प्रभावित करेगा, इस पर वैज्ञानिकों का कथन है कि यह सारे विश्व के मौसम को बदल सकने में, भयंकर बाढ़ें तथा महामारियाँ लाने में सहायक हो सकता है । ऐसा ही सन् १८१५ में हुआ था, जब इण्डोनेशिया के तम्बोरा ज्वालामुखी से १२ हजार लोग मारे गए थे तथा अमरीका के न्यू इंग्लैण्ड क्षेत्र में गर्मी में ठंड जैसा मौसम देखा गया व लन्दन की टेम्स नदी बर्फ से ढक गयी थी ।

आकाश लालिमा को ज्वालामुखी विस्फोटों से जोड़ते हुए वैज्ञानिक बताते हैं कि सौर किरण के तेजाबी बादल जो मीलों चौड़ा तथा दो किलोमीटर मोटा है से गुजरने से आकाश का ऐसा दिखाई पड़ना स्वाभाविक था तथा यह प्रकृति का एक स्वाभाविक सहज घटनाक्रम है । इससे कहीं-कहीं अम्ल वर्षा हो सकती है जो कि पहले भी कई बार हुई है । जेम्स पोलॉक जो 'नासा' के एमीस रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष है, कहते हैं कि ऐसा ही बादल सन् १९८२ में ४ अप्रैल को दक्षिण पूर्व मेक्सिको के सिन्कोनल वाल्केनो में विस्फोट के फलस्वरूप बना था तथा कई दिनों तक पृथ्वी की परिधि में चक्कर काटता रहा । भारतीय महाद्वीप, दक्षिण पूर्व एशिया तथा उत्तरी अमेरिका में अप्रत्याशित मौसम परिवर्तन के लिए इसे उत्तरदायी माना जा सकता है ।

ढाई सौ ग्राम भार के ओले, ठंडी मई, आकाश लालिमा तथा भयंकर मानसून की चर्चा के बाद अब कुछ और वैज्ञानिक अध्ययनों पर भी दृष्टि डालना जरूरी है। सूर्य की एक सौवीं सतह को घेरे हुए सौ कलंकों की एक श्रृंखला पिछले दिनों वैज्ञानिकों ने अपने दूरदर्शी यन्त्रों से देखी है । एरिजोना की कीटपिक ऑब्जवेटरी ने गत फरवरी-मार्च में एक सर्पिल आकार का धब्बा और सतह पर देखा जिसका व्यास अपनी पृथ्वी के व्यास से लगभग ६ गुना अधिक था । अन्तरिक्ष भौतिकी के जानकारों का अभिमत है कि ऐसे धब्बे जब भी दिखाई पड़ते हैं, उनकी संख्या व क्षेत्रफल अधिक होता है, तब सूर्य सतह से गर्म-गर्म ऊँची लपटें उठने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं जो पृथ्वी के वातावरण को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं, मौसम बदलती हैं तथा एक लम्बे समय तक यह असन्तुलन बना ही रहता है ।

वैज्ञानिक अपने-अपने मन्तव्य देते रह सकते हैं पर घटनाक्रम किसी स्पष्टीकरण के अनुसार नहीं चलते । वे तो एक सुनिश्चित विधि-व्यवस्थानुसार घटने वाले परिवर्तन हैं । यदि इन सभी को तथ्यों की कसौटी पर कसा जाय तो ज्ञात होता है कि ज्योतिर्विज्ञान-अन्तरिक्ष विज्ञान के निर्धारणों के अनुकूल ही सब कुछ घट रहा है । यह एक निर्विवाद सत्य है कि सौर मण्डल से जो अदृश्य विकिरण प्रवाहित होते हैं, उन्हें अति सम्वेदनशील जीव निश्चित रूप से ग्रहण करते हैं । नवजात शिशु के व्यक्तित्व निर्माण में उस प्रभाव की भूमिका को झुठलाया नहीं जा सकता । मौसम,तूफान, ज्वारभाटा, विकिरण जैसे प्रभाव अन्तरिक्ष विद्या के अन्तर्गत आते हैं। ग्रहों का गतिचक्र किस प्रकार वातावरण को प्रभावित करता है, इसका आधुनिकतम स्वरूप सेटेलाइट्स हैं जो विश्व के किसी भी भू-भाग में तूफान की सम्भावना का पूर्वानुमान लगाकर सचेत कर देते हैं । यह एक अन्धविश्वास नहीं उच्चस्तरीय विज्ञान है जिस पर सारी ''एस्ट्रोफिजिक्स'' टिकी हुई । फिर क्या कारण है कि ज्योतिर्विज्ञान व अन्तरिक्ष विज्ञान का परस्पर तालमेल नहीं बैठ पाता । एक ने सूक्ष्म जगत् पर तथा दूसरे ने पर्यावरण-मौसम पर अपना मन्तव्य प्रकट किया तो यह भी एक सत्य है कि सूक्ष्म प्रभाव तथा पर्यावरण असन्तुलन परस्पर सम्बद्ध हैं ।

जॉन ग्रिबिन ने जिन भीषण परिवर्तनों की चर्चा की है उनका कारण बताते हुए लिखा है कि अगले तीन वर्षों में हमारी पृथ्वी पर वृहस्पति ग्रह का बुरी तरह प्रकोप

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होगा । यह अन्य ग्रहों के जीवन रक्षक प्रभाव को नष्ट कर देगा । वृहस्पति का प्रभाव अभी भी पृथ्वी पर पड़ता है किन्तु वह समुद्री ज्वार-भाटे को अनियंत्रित करने में सफल नहीं होता किन्तु अगले तीन वर्षों में पृथ्वी के आयनो स्फीयर से आक्सीजन की मात्रा इतनी घट जायेगी कि अन्य ग्रह अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भी वृहस्पति की सर्जना रश्मियों को प्रभावहीन नहीं कर पायेंगे फलस्वरूप समुद्र बुरी तरह उबलने लगेगा, अति वृष्टि, समुद्री तूफान इस परिस्थिति की ही परिणति होंगे । इसी असन्तुलन के कारण पृथ्वी के अन्दर भीषण ताप उत्पन्न होगा जो भूकम्पों और ज्वालामुखियों को जला देगा । विनाश का प्रारम्भ पर्यावरण प्रदूषण से होता है । अन्त सर्वनाश में यदि यह चाहते हैं कि सर्वनाश की स्थिति न आये तो क्यों ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करें जिससे वातावरण असंतुलित हो । वाण अभी छूटने वाला है पूरी तरह छूटा नहीं । यदि उसका कोण बदल जाये तो प्राकृतिक प्रकोप के शिकार से बच सकना उतना ही सम्भव हो सकता है जितनी सत्य सम्भावना भावी संकटों की है ।

अच्छे बुरे वातावरण से अच्छी बुरी परिस्थितियाँ जन्म लेती हैं और वातावरण का निर्माण पूरी तरह मनुष्य के हाथ में है वह चाहे उसे स्वच्छ, स्वस्थ और सुन्दर बनाकर स्वर्गीय परिस्थितियों का आनन्द ले अथवा उसे विषाक्त बनाकर स्वयं अपना दम घोटे ।

प्राकृतिक असन्तुलन से उत्पन्न विभीषिका का एक स्वस्थ उदाहरण २० मार्च १९७९ के नवभारत टाइम्स में छपा है । मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के प्रति लोगों में असीम श्रद्धा भावना है । लोगों का विश्वास है कि जिस समय नर्मदा सूखने लगेगी उस समय प्रलय की स्थिति आ जायेगी। इसे भले ही तथाकथित बुद्धिवादी अंध श्रद्धा कहें किन्तु उस मान्यता के पीछे पूर्ववर्ती विवेक दृष्टि ही कार्य करती है । रीवाँ सम्भाग के इंजीनियरों और विशेषज्ञों ने भी यह आशंका प्रकट की है कि नर्मदा विन्ध्याचल में अमरकंटक की पहाड़ियों के एक कुंड से निकलती है । पिछले १० वर्षों में कुंड का जलस्तर का ९१ से०मी० नीचे चला गया है । इस स्थिति में नर्मदा १५ वर्ष में पूरी तरह सूख सकती है । जलस्तर घटना वृक्षों के तेजी से कटाव और बॉक्साइट के लिए होने वाली खुदाई के कारण पैदा हुआ पर्यावरण सम्बन्धी असन्तुलन ही एक मात्र उत्तरदायी है । यदि पृथ्वी के एक छोटे से क्षेत्र का असन्तुलन इतनी गड़बड़ी पैदा कर सकता है तो जब सारा संसार ही अपने दूषित आचरण से प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ रहा हो तो विनाश की सम्भावना को ईश्वरीय विधान की अनिवार्यता क्यों कहा जाये ?

सोवियत संघ के जल मौसम विज्ञान केन्द्र के निर्देशक प्रो० मिखाइल पेत्रोत्यात्स ने भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है पिछले कुछ वर्षों से पृथ्वी के तापमान में निरन्तर वृद्धि हो रही है । वायुमंडल में धूल के कणों की घट-बढ़ के कारण तापमान में उथल-पुथल पैदा होती है, उस समय उष्ण प्रदेश में गरम हवायें आर्कटिक प्रदेश की ओर बढ़ने लगती हैं ओर आर्कटिक प्रदेश की बर्फीली हवायें उसका स्थान लेने लगती हैं। इस असाधारण प्रकृति परिवर्तन से असाधारण संकटों का उठ खड़ा होना सम्भव है ।

सुरसा के मुँह की तरह बढ़ी हुई कामनाओं के कारण खड़े हुए कल-कारखानों से उगलता हुआ धुँआ, मोटर गाड़ियों द्वारा छोड़ी विषैली गैसें एटम बमों के विकिरण का विष जल, थल, नभ, सभी को विषाक्त, बना रहा है। नदियों का जल पीने योग्य नहीं रहा । अंधाधुन्ध प्रजनन के कारण बढ़ती हुई शहरों की संख्या, वातावरण में बढ़ रहे शोर तथा भयानक गति से बढ़ रही अपराधी प्रवृत्तियों के आँकड़े इस बात के प्रतीक हैं कि मानवीय बुद्धि में अनास्था का असुर बुरी तरह अपना साम्राज्य जमा चुका है । नैतिक अवमूल्यन, बौद्धिक दुश्चिन्तन एवं विकृत वातावरण का समन्वय यदि भयंकर संकट खड़े करे तो इसमें दोष न तो प्रकृति का है न परमात्मा का ।

युग निर्माण योजना के वर्तमान क्रियाकलाप मानवता के इसी मर्म का स्पर्श करते हैं । पर्यावरण प्रदूषण के परिष्कार के लिए यज्ञायोजनों का व्यापक विस्तार सामूहिक अभियान साधना द्वारा प्रकृति में घुस पड़े विजातीय तत्वों का प्रच्छालन और भविष्य के लिए प्रकाश पूर्ण प्रेरणाओं के अविरल प्रवाह के लिए गायत्री शक्ति पीठों को स्थापना, तीनों सामयिक कार्यक्रम ऐसे हैं जिन पर पूरी जन शक्ति लगाई जा सके तो विद्यमान संकटपूर्ण परिस्थितियों से बहुत अधिक बचाव हो सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जॉन ग्रिबिन ने सन् १९८२ में बुध, शुक्र, मंगल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस, वरुण तथा प्लूटो के एक पंक्ति में आजाने और पृथ्वी के सूर्य के विपरीत दिशा में पड़ जाने के कारण उत्पन्न उत्पात और प्राकृतिक असन्तुलन की जो चर्चा की है उसका समाधान भारतीय ज्योतिष ग्रन्थि यामल तंत्र में किया गया है और बताया गया है । कि पंक्तिबद्ध ग्रहों के वक्र प्रभाव को क्षीण करने के लिए एक मात्र मंत्र विज्ञान ही सक्षम है ।

ध्वनि को ब्रह्म शक्ति बताते हुये तंत्र-मनीषियों ने यही प्रतिपादित करते हुए कहा है कि मंत्रों, तन्मात्राओं और मयूलाओं द्वारा ध्वनित तथा लय तथा एकभाव-प्रवाह को यदि क्रमबद्ध रूप से ब्रह्माण्ड में पहुँचाया जाय तो न केवल वातावरण में व्याप्त असन्तुलन को कम किया जा सकता है अपितु आपत्तियों को भी बहुत बड़ी मात्रा में निरस्त किया जा सकता है ।

सामूहिक अनुष्ठानों के साथ यज्ञायोजनों का अनुसंधान इसी तथ्य को ध्यान में रखकर किया गया है । प्राचीन काल में ऐसे वाजपेय यज्ञों के संचालक केन्द्र और आरण्यक स्थान-स्थान पर हुआ करते थे । इन दिनों इसी तथ्य की पुनरावृत्ति होने जा रही है ।

दिल्ली से प्रकाशित दैनिक नवभारत टाइम्स के सम्पादक और विद्वान सम्पादक श्री अक्षय कुमार जैन ने अपने जीवन का एक मार्मिक संस्मरण मासिक 'प्रकाशित मन' के मई १९७९ अंक में दिया है । सुप्रसिद्ध भारतीय तंत्र विद्या विशारद कविराज श्री गोपीनाथ से हुई भेंट को अपनी अलौकिक अनुभूति बताते हुए उन्होंने लिखा है कि कविराज की सूक्ष्म दृष्टि ने यह देख लिया है कि देश में समर्थ सत्तायें अस्तित्व में हैं उनके क्रिया-कलाप अलौकिक हैं और उनके प्रयत्नों से सन् १९७१ के बाद से सतयुगी परिस्थितियों का आविर्भाव चल पड़ेगा पर साथ-साथ ध्वंस भी जारी रहेगा । भविष्य में भारत के गौरव की असाधारण रूप से वृद्धि होगी । यहाँ की प्रगति अप्रतिम होगी और यहाँ के धर्म-संस्कृति का प्रभाव सारे विश्व में होगा ।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने एक ऐसी कालातीत अवस्था का वर्णन अपने महान् सिद्धान्त थ्योरी आफ रिलेविटी में किया है जहाँ पहुँचकर समय, दिशायें और ब्रह्माण्ड शून्य हो जाते हैं अर्थात् उनका अस्तित्व नहीं रहता । उस समय ज्ञान ही एक मात्र सक्रिय और सर्वव्यापी चेतन तत्व शेष रहता है । उस अवस्था में पहुँची हुई उच्च आत्मायें तथा योगीजन भविष्य को देखते हों और सम्भावित संकटों की चेतावनी देते हों तो उसे अत्युक्ति नहीं समझा जाना चाहिये । महाभारत, सूरसागर के रचयिताओं ने जो भविष्यवाणियाँ कीं वे सत्य होती दिखाई दे रही हैं । कुरान शरीफ की चौदहवीं सदी का यही समय है । बाइबिल के "इपीस्टल" नामक प्रथम अध्याय के आठवें सूक्त में महाप्रभु ईसामसीह ने ऐसी ही अनुभूति का वर्णन करते हुए लिखा है "धरती पर पत्थरों की आग्नेय वर्षा होने लगी उस समय पृथ्वी पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा ।" यह भविष्यवाणी पैथुअल के पुत्र जोल के मुख से कहलवाई गई है जो साई धर्म के महान् साधक संत माने जाते हैं । स्मरण रहे स्काईलैब जैसे अन्तरिक्ष यानों के मलवों के टुकड़े पृथ्वी पर गिरने का क्रम पिछले दिनों प्रारम्भ हुआ है । लोग मन में भले ही मान लें कि यान संकट टल गया किन्तु विवेक कहता है कि यह तो बड़े संकट का श्रीगणेश भर है अन्त नहीं ।

बाइबिल में संकट के संकेत

बाइबिल की 'सेवन टाइम' नाम से विख्यात भविष्यवाणियों में भी विभीषिकाओं का ऐसा ही उल्लेख मिलता है ।

इन्हे लेकर कई पुस्तकें लिखी गई । इनकी विवेचनाओं के लिए सैकड़ों विद्वानों ने अपना समय और श्रम खपाया है । बाइबिल की यह भविष्यवाणियाँ 'डैनियल तथा रिवेलेशन' अध्यायों में दी गई हैं । यद्यपि इन सबकी भाषा काफी गूढ़ है और इन्हें मुख्यतः रूपक शैली में ही लिखा गया है । इन भविष्यवाणियों में कहा गया है कि जब यह 'सात समय' का जमाना आएगा और नये युग की शुरूआत होगी उस समय तमाम दुनिया में लड़ाई-झगड़े फैल जाएंगे और प्रकृति इतनी क्रुद्ध हो उठेगी कि उसके कारण बड़ी संख्या में लोग मरने लगेंगे। बाइबिल के ''मैथ्यू'' अध्याय २४ में इस समय की विभीषिकाओं का चित्रण इन शब्दों में किया गया है— ''उस वक्त चारों तरफ लड़ाइयाँ होने लगेंगी और लड़ाई की अफवाहें सुनाई देने लगेंगी । एक मुल्क

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरे मुल्क के खिलाफ खड़ा होगा और एक सल्तनत दूसरी सल्तनत के । उस समय अकाल पड़ेंगे, महामारी फैलेगी और जगह-जगह भूकम्प आयेंगे । यह हालत तो शुरू में होगी और इसके बाद इससे कहीं ज्यादा कष्ट भोगने पड़ेंगे ।"

बाइबिल के "रिवेलेशन" अध्याय में महात्मा ज्ञान की निम्नलिखित भविष्यवाणियाँ उल्लेखनीय हैं-"जब उसने दूसरी मुहर को तोड़ा तो उसमें से दूसरा जानवर निकला । यह लाल रंग का घोड़ा था । जो उस पर बैठा था, उसे इस बात की शक्ति दी गई थी कि संसार की शान्ति को भंग कर दे और युद्ध आरम्भ करा दे । उस सवार के हाथ में एक बहुत बड़ी तलवार दी गई थी । (रिवेलेशन अ० ६)

लाल रंग का आशय युद्ध से लगाया गया है । यद्यपि इन दिनों प्रकट तौर पर किन्ही देशों में युद्ध नहीं चल रहा, परन्तु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि विभिन्न देशों में जो आपसी तनातनी, गुटबन्दी और शीत युद्ध की सी स्थिति बनी हुई है, वह कभी भी युद्ध का विस्फोट कर सकती है । कब किस बात को लेकर कौन-सा देश युद्ध की घोषणा कर देगा ? इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता ।

बाइबिल के रिवेलेशन 'अध्याय छः' में कहा है—"जब उसने तीसरी मुहर को तोड़ा तो उसमें से तीसरा जानवर निकला । वह एक काले रंग का घोड़ा था और उसके ऊपर बैठे हुए सवार के हाथ में एक तराजू दी गई थी । मैंने यह आवाज सुनी कि एक सिक्के का एक पैमाना गेहूँ मिलेगा और तीन पैमाने जौ का दाम एक सिक्का होगा ।"

यों महँगाई और वस्तुओं का अभाव तो पिछले कई वर्षों से चला आ रहा है किन्तु इन दिनों वस्तुओं के मूल्य जिस तेजी से बढ़ रहे हैं, उस वृद्धि ने निश्चित ही अब तक हुए मूल्यों की वृद्धि को पीछे छोड़ दिया है । मूल्य वृद्धि का एक कारण वस्तुओं का अभाव भी है । जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे अन्न संकट और भयंकर होता जायेगा ।

बाइबिल की "लैमेनटेशन" नामक पुस्तक में इसका वर्णन करते हुए लिखा है—"लोगों के चेहरे कोयले की तरह काले हो जायेंगे। वे गालियों में मारे-मारे फिरेंगे । जो लोग तलवार से मारे जाते है वे उन भूख से मरने वालों की अपेक्षा सुख में रहेंगे ।"

अकाल के अतिरिक्त विनाश की परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाले दूसरे कारणों की ओर संकेत करते हुए रिवेलेशन अध्याय ६ में लिखा गया है—"जब उसने चौथी मोहर को तोड़ा तो उसमें से चौथा जानवर निकला । वह एक पीले रंग का घोड़ा था । उस पर मृत्यु का देवता बैठा था । इस देवता को इस बात की ताकत दी गई थी कि वह पृथ्वी के चौथाई भाग में तलवार, प्लेग, अकाल और जंगली जानवरों आदि के द्वारा मनुष्यों का नाश करे ।"

जब उसने छठी मोहर को तोड़ा तो मैंने एक भयंकर भूकम्प देखा । उस समय सूर्य काले कपड़े की तरह लाल पड़ गया । आसमान के तारे इस तरह टूटने लगे जिस प्रकार किसी पेड़ को हिलाने से पके फल गिरने लगते हैं । हर एक पहाड़ और टापू हटने लगा । राजा बादशाह से लेकर गरीब आदमी तक ईश्वर के इस भयंकर कोप से घबराकर पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में जा छुपे।

बाइबिल में उल्लेख आता है कि यह वृत्तान्त लिखते हुए वह स्वयं चौंक पड़े और अपने आप से पूछ बैठे 'हाऊ लाँग शैल इट बी टू द एण्ड आफ दीज वन्डर्स' अर्थात् 'ये आश्चर्यजनक बातें कितने समय बाद दिखाई पड़ सकेंगी ।'

तब एक देवदूत प्रकट होता है और डैनियल को बताता है जब पवित्र जाति वालों का अर्थात् सदाचारी सत्कर्म परायण लोगों का ह्रास होने लगेगा तब ये सब घटनाएँ सही सिद्ध होंगी । डेनियल ने कहा—मैं आपकी बात सुन रहा हूँ पर मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है । कृपा कर बताइए कि संसार का अन्तिम परिणाम क्या होगा और मनुष्य जाति को आगे चलकर क्या-क्या सहना पड़ेगा ?

उस समय डेनियल को चुप रहने के लिए कहते हुए देवदूत ने कहा—हे डेनियल ! तुम अपने रास्ते पर चलते चले जाओ, क्योंकि भविष्यवाणी के शब्दों का अर्थ गुप्त रखा गया है और उस पर मुहर लगा दी गई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है तब तक के लिए जबकि इस समय का अन्तर आ जाए । जो बुद्धिमान होंगे वे अन्तिम दिनों इसका अर्थ समझ सकेंगे ।

सन् १८६४ में डा० जॉन गांमीग तथा ६६ में जेम्स ग्राण्ट ने इन भविष्यवाणियों का अर्थ निकाला और यहूदियों को उनके पुनर्वास का समय आखिरी समय बताया । स्मरणीय है इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक यहूदियों के मूल निवास स्थान पर दूसरे देशों का अधिकार था । पैलेस्टाइन पर तुर्की का राज्य था । सन् १९४८ में उन्हें पैलेस्टाइन में फिर से बसाया गया तथा इजराइल संसार के नक्शे पर एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में उभरा ।

प्रसिद्ध पुरातत्ववेता और यहूदियों की प्राचीन भाषा के विद्वान डा० विलियम अलब्राइट ने इस घटना का सन्दर्भ बाइबिल की भविष्यवाणियों से जोड़ते हुए लिखा है कि अब तक सभी भविष्य कथन सही सिद्ध होते आए हैं । इसमें तुर्की का पतन, हिटलर का उदय, तानाशाही शासकों का वर्चस्व आदि कई भविष्यवाणियाँ हैं जो सात समय बात जाने का लक्षण बताई गई हैं ।

ट्रम्पेट्स या विगुलों से आशय युद्ध के उद्घोषों का निकाला गया है । इन दिनों जिस तरह के शास्त्रीय और युद्ध में काम आने वाले उपकरण खोज निकाले गए हैं उनमें से ज्ञात शस्त्रास्त्रों की संहारक क्षमता पढ़-सुनकर ही रोमांच हो उठता है । स्मरणीय है कि युद्ध विज्ञान के क्षेत्र में जितनी भी खोजें हो रही हैं उनमें से नब्बे प्रतिशत गोपनीय रखी जाती हैं । जो कुछ जानकारियाँ सामने आती हैं वे भी दूसरे देशों द्वारा की गई गुप्तचरी के परिणामस्वरूप प्रकाश में आती हैं अन्यथा अधिकांश तो गुप्त ही रहती हैं फिर भी जितनी जानकारियाँ प्रकाश में आई हैं उससे उपर्युक्त विभीषिकाओं का शब्दशः चित्र प्रस्तुत होता है ।

बाइबिल के भविष्य वर्णन का अन्त नीचे लिखी भविष्यवाणी से होता है । भविष्यदर्शी महात्मा जॉन ने ध्यानावस्था में देखा—

"मैने एक फरिश्ते को आसमान से आते देखा । उसने शैतान को बाँधकर अथाह गड्ढे में फेंक दिया और उसे बन्द कर दिया । इसके बाद एक हजार वर्ष तक पृथ्वी पर सतयुग (मिलैनियम) रहेगा ।"

उपर्युक्त भविष्यवाणियों के समय निर्धारण के सम्बन्ध में जेम्स ग्राण्ट ने लिखा है कि बाइबिल में उल्लेखित सात समय का अर्थ २५२० वर्ष बताया है अर्थात् एक समय को ३६० वर्ष का माना है । स्मरणीय है ये भविष्यवाणियाँ ईसा से करीब ५००-६०० वर्ष पूर्व की गई थीं । जेम्स ग्राण्ट ने हिसाब लगाकर बताया है यह भविष्यवाणियाँ १९८० के आसपास वाले समय से सम्बन्ध रखती हैं । प्रख्यात ज्योतिषी काउण्ड लुईस हैमन ने भी यही वह समय बताया है जब रोग बीमारियों तथा युद्धों के कारण मनुष्य जाति बुरी तरह त्रस्त अर्थात् विनाश की चरम सीमा पर पहुँचेगी ।

ज्ञातव्य है कि सृष्टि के आरम्भ से ही ऐसे विनाशकारी परिवर्तन होते रहे हैं । मानव जाति के इतिहास में ऐसे तीव्र परिवर्तनों से सदा नये मोड़ आये हैं ।

इस परिवर्तनों के स्वरूप बहुत तरह के होते हैं । सौर-मण्डल की गतिविधियों की एक-दूसरे ग्रह पर भी पारस्परिक प्रतिक्रिया होती है व प्रभाव पड़ता है । ज्वालामुखियों के विस्फोट,तूफान, भूकम्प, ऊपरी वातावरण, विषमता से उत्पन्न हलचलें अथवा सौर-मण्डल की कोई भी असामान्य गतिविधि ऐसे तीव्र परिवर्तनों का कारण बन जाती हैं । अन्तरिक्ष में आवारागर्दी करने वाली कुछ उल्काएँ भी अपनी दुस्साहसिकता के कारण स्वयं को तो क्षति पहुँचाती ही हैं, पृथ्वी या कि अन्य ग्रहों को भी उथल-पुथल से भर देती हैं । इन उद्दण्ड उल्काओं की आवारगर्दी की गाथाएँ दुनिया भर के पौराणिक साहित्य में रोचक ढंग से वर्णित हैं ।

यूनान की पौराणिक गाथाओं में "इकोरस" नाम के एक युवक की कथा है । यह सूर्य से मिलने की महत्वाकांक्षा रख, नकली पंख लगाकर चल पड़ा । पंख उसने मोम से चिपका लिए थे ।

अधिक ऊँचे जाने पर उसके पंख को जोड़ने वाली मोम गर्मी के कारण पिघल गई और पंख नीचे गिर पड़े, इकोरस भी ओंधे मुँह नीचे समुद्र में आ गिरा तथा मर गया ।

पिछले दिनों इसी युवक की तरह का एक दुस्साहसी उल्का-पिंड भी देखा गया । इसका नाम भी इकोरस ही रखा गया । यह इकोरस उल्का पिंड़ कभी सूर्य के अधिक निकट जा पहुँचता है इतना कि बस थोड़ा और

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पास जाए तो भाप ही बन जाए । कभी लगता है वह बुध से कभी मंगल और कभी शुक्र से अब टकराया, तब टकराया । सूर्य के अति निकट पहुँचकर वह आग का गोला ही बन जाता है । तो कभी सूर्य से इतनी दूर जा पहुँचता है कि शीत की अति ही हो जाती है । जून १९६८ में इस उद्दण्ड क्षुद्र ग्रह के पृथ्वी के ध्रुवप्रदेश से आ टकराने की सम्भावना बढ़ गई थी । यदि खगोल-शास्त्रियों की यह आशंका सत्य सिद्ध होती तो पृथ्वी में भीषण हिम तूफान आते, समुद्र उफनकर दुनिया का थल-भाग अपनी चपेट में ले लेता, साथ ही लाखों वर्ग मील भूमि में गहरा गड्ढा हो जाने की सम्भावना थी जहाँ यह उफनता समुद्री जल भर जाता तथा कुल मिलाकर करोड़ों मनुष्यों का सफाया हो जाता । सन् १९०८ में मात्र हजार फुट व्यास की एक उल्का साइबेरिया के जंगल में गिरी थी तो वहाँ अणुबम विस्फोट जैसे दृश्य उपस्थित हो गये थे । इकोरस तो उस उल्का से हजारों गुना बड़ा है, अतः परिणाम का अनुमान किया जा सकता है ।

सौभाग्यवश इकोरस पृथ्वी के समीप होकर गुजर गया और एक भीषण दुर्घटना टल गई । सौर-मण्डल में ऐसे अनेक क्षुद्र ग्रह हिडालगो, इरोस, अलवर्ट, अलिण्डा, एयोर, अपोलो,एडोरस, हर्मेस आदि चक्कर काट रहे हैं, जो सहसा टकराकर कभी भी धरती के जीवन में उथल-पुथल मचा सकते हैं ।

वैज्ञानिकों ने अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि सूर्य पर जो हर ११ वें वर्ष कुछ धब्बे से बन जाते हैं, उनका कारण सौरमण्डल के ग्रहों की गतिविधियाँ ही है । स्पष्ट है कि सौर-मण्डलीय ग्रहों की प्रत्येक गतिविधि का सूर्य पर प्रभाव पड़ता है । जिस तरह सूर्य की हर गतिविधि से सौर-मण्डलीय ग्रह प्रभावित होते हैं । सभी ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर सूर्य की परिक्रमा करते है, और पृथ्वी की ही भाँति अपनी धुरी पर भी घूमते हैं। इस परिभ्रमण काल में जो अगणित प्रकार की उथल-पुथल होती है उनसे पृथ्वी सहित सभी ग्रह-उपग्रह प्रभावित होते हैं ।

ऐसी उथल-पुथल की स्मृतियाँ मानवीय इतिहास में सुरक्षित है । पुराण-कथाओं में इनका रोचक वर्णन मिलता है । मात्र क्षुद्र नक्षत्रों के टकराने अथवा सूर्य या किसी बड़े नक्षत्र में व्यापक परिवर्तन होने, उथल-पुथल मचने से ही धरती में जलप्लावन आदि की घटनाएँ नहीं घटतीं । बल्कि धरती के भीतर की हलचलें और उसके सिकुड़ने-फैलने की विभिन्न प्रक्रियाएँ भी जल प्रलय आदि के दृश्य उपस्थित करती हैं ।

सभी जानते हैं कि कभी भू-मण्डल के सभी महाद्वीप एक-दूसरे से जुड़े थे । ग्रहों की हलचलों और आकुंचन प्रसार की प्रक्रियाओं से वे एक-दूसरों से दूर हटते गए । हिमालय अभी भी लगातार उत्तर की ओर खिसक रहा है और भू-वैज्ञानिकों का कथन है कि ५ करोड़ वर्ष बाद सम्पूर्ण उत्तरी भारत का अधिकांश इलाका हिमालय के पेट में समा जायेगा । इसी तरह सन् १९६६ में मास्को में सम्पन्न द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन में प्रो० डा० ब्रूस सी हीजेन और डा० नील यू० डाइक ने घोषणा की थी कि आज से लगभग २ हजार ३२ वर्ष बाद पृथ्वी के चुम्बकीय बल क्षेत्र अपना स्थान बदल देंगे। साथ ही पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति घटेगी । इसमें मनुष्यों का आकार व जीवन भी प्रभावित होगा । वृक्ष-वनस्पति, कीट-पतंग आदि पर भी व्यापक प्रभाव पड़ेगा । प्रशांत महासागर की तलहटी से निकाली गई मिटटी और रेडियो सक्रियता एवं ''लारिया'' नामक एककोशीय जीव में हो रहे क्रमिक परिवर्तन से पता चलता है कि सन् चार हजार तक चुम्बकीय क्षेत्र में परिवर्तन होगा, जिससे ध्रुवों का स्थान भी परिवर्तित होगा । परिणामस्वरूप धरती में खण्डप्रलय की स्थिति हो जायेगी । बर्फीले तूफान चारों ओर उठेंगे । धरती में बेहद गर्मी और बेहद ठंडक की स्थितियाँ पैदा हुआ करेंगी । समुद्र तल भी लगातार ऊपर उठ रहा है । इसका भी परिणाम अवश्यंभावी है । ऐसी ही विशिष्ट प्राकृतिक उथल-पुथल अतीत में भी जल प्रलय जैसी घटनाओं का कारण बनती रही हैं ।

हम प्रलय की ओर तो नहीं बढ़ रहे हैं

विश्व की अधिकांश प्राचीन सभ्यताओं के साहित्य में जलप्लावन तथा उसके बाद सृष्टि के नवीन क्रम का वर्णन मिलता है । इसे धार्मिक पुट दिया गया हैं । लेकिन भूगर्भ शास्त्रियों का भी अनुमान है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समय-समय पर पृथ्वी के विशेष खण्ड टूट जाते थे और धरती पर जल ही जल हो जाता था ।

भू-गर्भवेत्ता डा० ट्रिकलर के अनुसार हिमालय के आस-पास प्राप्त ध्वंसावशेषों से ज्ञात होता है कि जल प्रलय की घटना सत्य है ।

यूनानी साहित्य में भी जलप्लावन की चर्चा है । एक कथा के अनुसार अटिका जलमय हो गई थी । दूसरी कथा के अनुसार जीयस ने अपने पिता की इच्छापूर्ति के लिए 'ड्यूकालियन' का विनाश करना चाहा । जब डयूकालियन अपनी पत्नी पैरहा के साथ जलयात्रा कर रहा था, जीयस ने भीषण जल-वृष्टि द्वारा पृथ्वी को डुबा दिया । नौ दिन तक ड्यूकालियन और पैरहा पानी में ही अपनी नाव द्वारा तैरते रहे । जब वे पैरासस पहुँचे तो जलप्लावन कुछ कम हुआ । तब उन दोनों ने अपने अंग रक्षक की देवताओं को बलि दे दी । इससे जीयस प्रसन्न हो गया और उनको सन्तान का वरदान दिया । ड्यूकालियन और पैरहा ने वरदान पाकर जीयस पर पत्थरों की वर्षा की । जो पत्थर ड्यूकालियन ने फेंके वे पुरुष हो गये और जो पैरहा ने फेंके वे नारी हो गए ।

बेबीलोनिया में भी ऐसी ही एक दन्त कथा है । तीन सौ ईस्वी पूर्व वहाँ वेरासस नामक पुरोहित था । उसने लिखा है—आरडेट्स की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ने १८ 'सर' तक राज्य किया । एक सर ३६ सौ वर्षों का होता है । इसी अवधि में एक बार भीषण बाढ़ आई । इसकी सूचना राजा को स्वप्न द्वारा पहले ही मिल चुकी थी । अतः उसने अपने लिए एक नाव बनवा ली थी । नाव में बैठकर वह जलप्लावन देखता घूमता रहा । जब जलप्लावन का वेग कम हो गया तो उसने नाव में ही बैठे-बैठे तीन बार पक्षी उड़ाए । अन्तिम बार जब पक्षी लौट कर नहीं आये तो उसने देवताओं को बलि दी । इससे देवता प्रसन्न हुए और शन्ति का वातावरण बना ।

बाइबिल के अनुसार—जल देवता 'नूह' को खबर मिली कि धरती पर जल-प्रलय होगी । फिर ऐसा ही हुआ । चराचर इस भीषण जल-प्रलय में समाहित हो गये । जल देवता 'नूह' तथा उनके कुछ साथी नौका में बच निकले । नौका द्वारा आराकान पर्वत पहुँचे । वहाँ दसवें महीने के पहले दिन जल कम होना शुरू हुआ । धीरे-धीर पर्वत श्रेणियाँ दीखने लगीं । फिर अन्य हिस्से भी । हजरत 'नूर' ने ही मानवता का विकास किया । सुमेरियन ग्रन्थों में भी जलप्लावन का संकेत है । चीनी पुराण-साहित्य में भी जल-प्लावन की कथाएँ विद्यमान हैं ।

भारत में तो शतपथ ब्राह्मण से लेकर महाभारत और विविध पुराणों तक जल-प्रलय का वर्णन मिलता है । महाभारत के वन-पर्व में मत्स्योपाख्यान के अन्तर्गत यह कथा है कि विवस्वान मनु ने दस हजार वर्ष हिमालय पर तपस्या की । उस समय एक मछली की प्रार्थना पर उन्होंने उसकी जीवन रक्षा की । तब मछली ने उनको आगामी भीषण जलप्लावन की अग्रिम जानकारी दी । साथ ही यह कहा कि तुम सप्त ऋषियों के साथ नौका में मेरी प्रतीक्षा करना । अन्य पर्वों में भी इस जलप्लावन का सुविस्तृत वर्णन है ।

सम्पूर्ण प्राचीन विश्व-साहित्य में जल-प्रलय की ये कथाएँ निश्चय ही किसी घटित घटना की ही स्मृतियाँ हैं । अभिव्यक्ति की शैली भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के परिवेश और सांस्कृतिक चेतना के अनुरूप अलग-अलग हैं । किन्तु उनमें एक आन्तरिक अविच्छिन्नता है ।

हाल के अध्ययनों से भी इस बात को बल मिला है कि समय रहते यदि हम चेते नहीं तो इसकी पुनरावृत्ति हो सकती है ।

ऐसा अनुमान है कि वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में ३० प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है । इससे विश्व का औसत तापमान २ डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ा है । जिस अनुपात में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है उसे देखते हुए वैज्ञानिकों ने सम्भावना व्यक्त की है कि इस सदी के अन्त तक विश्व का तापमान ४ डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ जायेगा, जिससे ध्रुवों की बर्फ पिघलने तथा जल प्रलय की विभीषिका उत्पन्न हो सकती है ।

मौसम विशेषज्ञों ने विगत एक दशक में विश्व भर में ठण्ड बढ़ने का निष्कर्ष निकाला है । ठंण्ड के मौसम में पहले ठण्डे इलाकों में जितनी बर्फ गिरती थी उसका तीस प्रतिशत अधिक रिकार्ड किया गया । ग्री लैण्ड में तापमान गिरने का १०० वर्षों का रिकार्ड टूट गया । विशेषज्ञों का मत है कि समस्त संसार का मौसम क्रमशः ठंडा होता जा रहा है । भूतल को ढँकने वाली बर्फ ९० प्रतिशत सौर प्रकाश को परावर्तित कर देती है । जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लम्बी ठण्ड की ऋतुएं होने लगेंगी तो प्राणी जगत् तथा वनस्पति समुदाय जीवनदायी सौर ऊर्जा से वंचित हो जायेंगे । प्रकाश किरणों के और अधिक परावर्तित हो जाने से नम हवा सघन होकर अधिक बर्फ में बदलने की सम्भावना बढ़ेगी । इस प्रकार कोई आश्चर्य नहीं कि अगले ही दशक में हिमयुग की विभीषिका प्रस्तुत हो जाय ।

अहमदाबाद भौतिकी अनुसंधानशाला के प्रो० अग्रवाल का मत है कि ''पृथ्वी पर नये हिमयुग की शुरूआत होने वाली है । जिसके कारण आधी पृथ्वी वर्फ की मोटी चादर से ढँक जायेगी । नार्वे, स्वीडन,डेनमार्क, फिनलैड, उत्तरी मंचूरिया, स्विट्जरलैड, नेपाल, सिक्किम, भूटान, इंग्लैड आदि का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है । सोवियत संघ, मैक्सिको, चीन, अमरीका, आस्ट्रेलिया के बड़े भू-भाग हिमनदों की चपेट में आ जायेंगे । बर्फानी तूफान चलेंगे जिनके कारण गुआना, अर्जेन्टाइना, उरुग्वे, मेरिटाइना, दक्षिण मैक्सिको, केनिया, तंजानिया, जाम्बिया, पाकिस्तान, भारत, अफगानिस्तान तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप के उत्तरी भागों में भयंकर सूखा पड़ने की अगले वर्षों में सम्भावना है । ''

यूगोस्लाविया के एक एस्ट्रोफिजीसिस्ट का कहना है कि ''हमारी पृथ्वी की ध्रुवीय धुरी अपनी कक्षा के बाहर की ओर झुकी हुई है । जिससे सर्दी, गर्मी के मौसम सूर्य की गति के अनुरूप बनते हैं । जब यह झुकाव अत्यधिक होता है तो हिमयुग आरम्भ होता है । कुछ ही समय बाद ऐसी स्थिति आने वाली है क्योंकि यह झुकाव अविज्ञात कारणों से बढ़ता जा रहा है ।

सौर गतिविधियों का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों का अभिमत है कि सूर्य का सतही तापक्रम निरन्तर कम होता जा रहा है । तापक्रम में दो सेल्सियस तक की गिरावट विशेष प्रभाव नहीं डालती पर इससे अधिक होने पर पृथ्वी के वातावरण पर गम्भीर प्रभाव पड़ सकता है । प्रख्यात अमरीकी भूगर्भ शास्त्री सिजार एमिलियानी का मत है कि ''सूर्य के सतही तापक्रम मे आने वाली क्रमिक गिरावट आने वाले हिमयुग का परिचायक है । इस तरह की परिस्थितियाँ पहले भी चार बार आ चुकी हैं । पहला हिमयुग सबसे अधिक भयंकर था जो सत्तर करोड़ वर्ष पूर्व आया था । इसमें भारत, चीन, यूरोप, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका का एक व्यापक क्षेत्र बर्फ से ढँक गया था । अन्तिम हिमयुग पच्चीस लाख वर्ष तक रहा । उसे समाप्त हुए मात्र सत्रह हजार वर्ष बीते हैं । अब पाँचवे हिमयुग की बारी है ।

मूर्धन्यों का कथन है कि यदि हिमयुग की विभीषिका किसी प्रकार टल भी गई तो भी आगामी संकट इतने गंभीर होंगे, जिन्हें हिमयुगीन परिस्थितियों से किसी भी प्रकार कम नहीं आंका जाना चाहिए ।

विभीषिका का अन्त नहीं

इन दिनों प्रगति और चमक-दमक का माहौल है पर उसकी पन्नी उघड़ते ही सड़न भरा विष घट प्रकट होता है । विज्ञान, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र की प्रगति सभी के सामने अपना चकाचौंध प्रस्तुत करती है । आशा कि जानी चाहिये कि इस उपलब्धि के आधार पर मनुष्य को अधिक सुखी, समुन्नत, प्रगतिशील, सुसम्पन्न, सभ्य, सुसंस्कृत बनने का अवसर मिलेगा । हुआ ठीक उलटा। मनुष्य के दृष्टिकोण, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता घुस पड़ने से संकीर्ण स्वार्थपरता और मत्स्य-न्याय जैसी अतिक्रमणता का प्रवाह चल पड़ा । मानवी गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट आदर्शवादिता की उपेक्षा, अवमानना हुई और विलास, संचय, पक्षपात तथा अहंकार का दौर चल पड़ा । जिस लोभ, मोह और अहंकार को कभी शत्रु मानने, बचने, छोड़ने की शालीनता अपनाई जाती थी अब उसका अता-पता नहीं दीखता और हर व्यक्ति उन्हीं के लिए मरता दीखता है । परम्परा उलटी तो परिणति भी विघातक होनी चाहिये थी । हो भी रही है शक्ति सम्पन्नता एक ओर--विनाश-विभीषिका दूसरी ओर । देखकर हैरानी तो अवश्य होती है पर यह समझने में भी देर नहीं लगती कि भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण अपनाने पर भौतिक समृद्धि से अपना ही गला कटता है, अपनी ही माचिस से आत्मदाह जैसा उपक्रम बनता है ।

चौंधियाने वाली परत का पर्दा उघाड़ते ही प्रतीत होता है कि सब कुछ खोखला हो चला और घुना हुआ शहतीर किसी भी क्षण धराशायी होने की स्थिति में पहुँच गया । जन-जन का स्वास्थ्य खोखला होता जा रहा है । दुर्बलता और रुग्णता से हर काया जर्जर हो रही है । लोग आधी अधूरी आयुष पूरी होते-होते मौत के मुँह में घुस पड़ते हैं । मानसिक सन्तुलन के क्षेत्र में हर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

किसी को चिन्तित, भयभीत, आशंकित, खिन्न, विपन्न, असन्तुष्ट एवं उद्विग्न देखा जाता हैं ।

तनावग्रस्त मस्तिष्क न किसी को रात में चैन से सोने देता है और न दिन में सन्तोष उल्लास का अनुभव होने देता है । उद्विग्नता एक प्रकार की विक्षिप्तता हैं । जिससे मनुष्य मात्र अशुभ ही सोचता और अनुचित ही करता है । इस स्थिति की व्यापकता को अपनी या पड़ोसियों की मनःस्थिति का पर्यवेक्षण करके भली प्रकार जाना जा सकता हे ।

लिप्सा, अपव्यय, दुर्व्यसन, आलस्य, प्रमाद, अहंकार, ठाठ-बाट और कुरीतियों के माहौल में हर किसी की आर्थिक व्यवस्था असन्तोषजनक स्थिति में रह रही है । जो हस्तगत होता है, कम पड़ता है । फलतः लोग भ्रष्टाचार पर उतरते हैं । न करने योगय भी बहुत कुछ करते हैं । अपराधी प्रवृत्ति स्वभाव, अभ्यास में सम्मिलित होती जा रही है । आक्रमण न सही छल या शोषण सही, येन-केन प्रकारेण मनुष्य भ्रष्ट उपार्जन में संलग्न है । फिर भी अपव्यय की खाई सुरसा का मुख बनकर चौड़ी ही होती जाती है । पाटने से पटती ही नहीं ।

परिवार में न सुख है, न चैन, न स्नेह, न सहयोग, न सामंजस्य । हर सदस्य को अपनी पड़ी है । जेलखानों, सरायों, मुसाफिरखानों में भी भीड़ एक साथ रहती है । भेड़ें भी एक बाड़े में बन्द रहती हैं । परिवारों की स्थिति प्रायः ऐसी ही है । लोग अन्धाधुन्ध प्रजनन पर उतारू और अपनों को विलासी बनाने के लिए उनकी प्रसन्नता खरीदने के लिए श्रम, समय और धन पानी की तरह बहाते, होली की तरह जलाते हुए देखे जाते हैं । फिर भी उस क्षेत्र में दुष्प्रवृत्तियों का अनुपात ही बढ़ता जाता है । जिन घर घरोंदों में कभी स्वर्ग का दर्शन होता था उनमें आज विग्रह और असन्तोष के अतिरिक्त और कहीं कुछ ढूँढे नहीं मिलता ।

इस समय आर्थिक क्षेत्र का भ्रष्टाचार और नैतिक क्षेत्र का अनाचार समाज व्यवस्था की कमर तोड़े दे रहा है । सामाजिक कुरीतियों के कारण होने वाली बर्बादी को समझते सभी हैं पर उन्हें छोड़ता कोई नहीं । उनके लाभदायक पक्ष को जब छोड़ा नहीं जायेगा तो हानिकारक पक्ष से भी छुटकारा न मिलेगा । बेटी के विवाह में सुधारवादी और बेटे के विवाह में परम्परावादी बनने वाले कुचक्र से छूटते ही नहीं । दुरंगी चाल, दोगली नीति अपनाने वाले कोल्हू के बैल की तरह ही पिलेंगे। समाज के हर क्षेत्र में अवांछनीयताओं का माहौल संव्याप्त है ।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में सर्वग्राही जनसंख्या वृद्धि, जन-जन के स्वभाव में सम्मिलित अपराधी प्रवृत्ति, वर्ग-विद्वेष, संचय और विलास का, कूटनीतिक कुचक्रों का कुछ ऐसा माहौल बन गया है कि विग्रह और आक्रमण के अतिरिक्त और किसी को कुछ सूझता ही नहीं। संकीर्णता की बढ़ोत्तरी, भाषा, क्षेत्र, सम्प्रदाय, वर्ग आदि की आड़ में कुछ को लाभ कमाने के लिए उत्तेजित करती और दूसरों को बर्बाद कर देने पर उतारू दीखती है । एकता समता, न्याय, औचित्य और दूरगामी परिणामों की मानो किसी को कोई चिन्ता ही न रह गई हो । ऐसी स्थिति में समस्याओं का समाधान निकले तो कैसे ? निकाले तो कौन निकाले ? पुलिस, कानून, जेल, कचहरी की सीमा नगण्य है । वह हजारों अपराधियों में से एक दो को दण्डित कर पाती है । जो जेल जाते हैं वे सुधरने के स्थान पर अधिक ढीठ और प्रशिक्षित होकर लौटते हैं । गृहयुद्ध, क्षेत्रीय युद्ध और विश्व युद्ध इसी माहौन की देन है ।

पिछले दो महायुद्ध हो चुके हैं । अणु आयुधों की खनखनाहट पग-पग पर विश्व विनाश की महाप्रलय की चुनौती देती है । बढ़ती हुई दुष्प्रवृत्तियों ने अदृश्य वातावरण को विषाक्तता से भर दिया है और रुष्ट प्रकृति आये दिन दैवी प्रकोप के रूप में अपना कोप बरसाती है ।

वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति ने वायु प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण, रेडियो विकिरण की मात्रा इतनी बढ़ा दी है कि दम घुटने, पीढ़ियाँ अपंग होने से लेकर ध्रुवों के पिघलने, समुद्र उमड़ने और हिमयुग आ धमकने तक की ऐसी विभीषिकायें सामने हैं जो इस ब्रह्मांड की स्रष्टा की इस सर्वोत्तम कलाकृति धरती को चुटकी बजाते इस अन्तरिक्ष में धूलि बनाकर उड़ा सकती है । संकट काल्पनिक नहीं वास्तविक है । शतुर्मुगों को तो अपनी मौत भी दिखाई नहीं पड़ती । पर जिन्हें वस्तुस्थिति के पर्यवेक्षण की सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है वे जानते हैं कि संकट

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कितना गहरा है और किस प्रकार मानवी अस्तित्व जीवन-मरण के झूले में इस समय झूल रहा है ।

जनसंख्या-वृद्धि स्वयं में एक संकट

पर्यवेक्षक और समीक्षक अनेक संकटों में आबादी वृद्धि की भी गणना करते हैं और कहते हैं कि यदि जन्म-दर ऐसी ही बनी रही तो अतिशय बढ़े हुए खरगोशों और चूहों की तरह मनुष्य को भी जल में डूब कर सहमरण की तैयारी करनी पड़ेगी ।

नृतत्ववेत्ता बताते हैं कि वर्तमान में शिशु जन्म दर प्रति मिनट तीन है । इस हिसाब से एक सप्ताह में उनकी संख्या बीस लाख बढ़ जाती है । इससे अन्दाज लगाया जा सकता है कि आबादी किस तूफानी गति से वृद्धि कर रही है । इस सदी के प्रारभ से लेकर अब तक उसमें किस रफ्तार से बढ़ोत्तरी हुई, उसकी एक बानगी द्रष्टव्य है ।

सन् १९०१ की जनगणना में समस्त विश्व में २३८ करोड़ मनुष्य रहते थे । वे सन् १९११ में २५२ करोड़ हो गये और आबादी वृद्धि का औसत १३ प्रतिशत रहा । सन् २१ में यह आबादी लगभग उतनी ही रही । जर्मन युद्ध ने तथा उन्ही दिनों फैली महामारियों ने संख्या बढ़ने नहीं दी । सन् ३१ में शान्ति का समय आते ही यह संख्या २७८ करोड़ हो गई, वृद्धि का औसत २७ हजार बढ़ा । सन् ४१ में ३१८ करोड़ तक पहुँची और वृद्धि दर ३८ प्रति हजार पहुँची । आगे इस क्रम में और तेजी आई । सन् ५१ में ३६० करोड़ हुई, वृद्धि दर ४२ प्रति हजार पहुँची । ६१ में संख्या ४३९ करोड़, दर ७८ प्रति हजार । सन् ६६ में ५०० करोड़ संख्या और वृद्धि दर ६१ प्रतिशत । इसी चक्रवृद्धि क्रम से बढ़ती हुई गति से अनुमान है कि अगले ७२ के बाद ८२ में होने वाली जनगणना में यह संख्या एक हजार करोड़ हो जायेगी, इसका अर्थ यह हुआ कि अब की अपेक्षा अगले बीस वर्ष में विश्व की जनसंख्या दूनी होगी । अगले दिनों विश्व की आबादी कहाँ तक पहुँच जायेगी और उस जनसंकुलता का क्या परिणाम होगा इसका पता लगाने के प्रयास भी हुए हैं ।

कहा जा चुका है कि पृथ्वी के पास सीमित प्राणियों के लिए ही स्थान और साधन उपलब्ध हैं । अन्य प्राणियों की तरह यह नियम मनुष्यों पर भी लागू होता है । मनुष्येतर प्राणियों के सम्बन्ध में देखा गया है कि जब उनकी संख्या बढ़ने लगती है और सीमा रेखा को लाँघ जाती है तो प्रकृति उनका सफाया करने लगती है । यह स्वाभाविक भी है । प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले सुविधा साधन संख्या में प्राणियों के लिए कम पड़ने लगते हैं । कम साधन और अधिक उपभोक्ताओं के कारण निश्चित ही संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । शक्तिशाली दुर्बल को दबाता है और उसके हिस्से का भाग छीनता है । इस प्रकार के संघर्ष में जो सशक्त होते हैं, वही बचते हैं और दुर्बल मारे जाते हैं, संघर्ष की यह स्थिति अन्ततः पूरे में जो सशक्त होते हैं, वही पूरे वर्ग को ही नष्ट करके रख देती है । नृतत्व शास्त्रियों को प्राचीनकाल में विद्यमान रहे ऐसे कई प्राणियों के अवशेष मिले हैं जो उन दिनों काफी शक्तिशाली विशालकाय थे किन्तु उनकी संख्या इतनी बढ़ गई कि प्रकृति के पास उपलब्ध साधन स्रोत कम पड़ने लगे, संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई और फलतः वह पूरा का पूरा प्राणी वर्ग ही अपना अस्तित्व नष्ट कर बैठा ।

क्या मनुष्य के लिए भी प्रकृति यही न्याय नीति बरतने वाली है ? उसके विधान में किसी से भी पक्षपात करने या किसी को भी छूट देने की गुंजाइश नहीं है, इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि मनुष्य के लिए संघर्ष और अन्ततः विनाश का चक्र घूमने को तैयार बैठा है । इस आधार पर संसार भर के विचारशील और बुद्धिजीवी व्यक्ति लोगों को तरह-तरह से सीमित सन्तानोत्पादन के लिए समझाते, बड़े परिवारों की हानियों और जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों की विवेचना करते रहे हैं । इन बातों का कोई प्रभावशाली परिणाम उत्पन्न हुआ हो ऐसा देखने में नहीं आता, आखिर प्रकृति को ही अपना कुल्हाड़ा तेज करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है ।

इन दिनों संसार में हिंसा की आग बड़ी तेजी से फैल रही है । हत्या-मारपीट, उपद्रव, दंगे, लूटमार और अपराधों में बड़ी तेजी से बाढ़ आ रही है । मनोवैज्ञानिकों और प्रकृति विज्ञानियों की दृष्टि में इसका एक बड़ा कारण जनसंख्या का बहुत अधिक बढ़ जाना है । पिछले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दिनों ब्रिटेन के दो प्रसिद्ध समाज शास्त्री क्लेअर रसेल और डब्ल्यू० एस० रसेल, ने कई मामलों का अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त किये, उनसे यही सिद्ध होता है कि इस तरह की घटनाओं के मूल में वस्तुतः प्रकृति प्रेरणा ही काम कर रही है । इन दिनों छुट-पुट कारणों से उत्पनन हुए मनमुटाव भी भयंकर हिंसावृत्ति के रूप में उभरते हैं और उनकी चपेट में प्रतिद्वन्द्वियों के निरीह बाल-बच्चे भी आ जाते है । धन के लालच में चोरी ठगी की अपेक्षा सफाया करके निश्चिन्ततापूर्वक लाभान्वित होने की आपराधिक प्रवृत्तियाँ पिछले दिनों तेजी से बढ़ी हैं । क्योंकि हिंसावृत्ति इतनी उग्र होती जा रही है, इस पर विभिन्न दृष्टियों से विचार और कई परीक्षण करने के बाद यही सिद्ध हुआ कि जनसंख्या का दबाब मनुष्य को उथला, असहिष्णु और असन्तुलित बना देता है, इसी प्रकार लोग जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं अथवा हत्या और हिंसा करने में जरा भी नहीं झिझकते।

जनसंख्या के दबाब का मनौवैज्ञानिक प्रभाव जाँचने के लिए किये गए प्रयोगों में देखा गया कि छोटे-छोटे जानवर जब छिरछिरे, खुले और शान्त वातावरण में रहते थे, तब उनकी प्रकृति बहुत शान्त थी किन्तु जब उन्हें भी भीड़ में रखा गया तो वे उत्तेजित और थके मांदे रहने लगे तथा उनमें एक-दूसरे पर आक्रमण करने की प्रवृत्ति भी पनपती देखी गई । सर्वविदित है कि भीड-भाड़ के कारण मल-मूत्र पसीना तथा रद्दी चीजों की गन्दगी भी बढ़ती है और शरीर से निकलने वाली ऊष्मा अपने निकटवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है । मन-शास्त्रियों ने अनुसार यह विकृतियाँ ही प्राणियों तथा मनुष्यों को उत्तेजित करती एवं उन्हें अशान्त बनाती है। यही कारण है कि छोटे गांवों की अपेक्षा कस्बों और शहरों में अधिक अपराध होते हैं ।

अमेरिकी जनसंख्या अध्ययन ब्यूरो द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि विश्व की जनसंख्या प्रति वर्ष ६ करोड़ ५०लाख बढ़ रही है । १९८० तक ४ अरब, ३० करोड़ और सन् २००० तक वह ६ अरब अर्थात् १९६० से दूनी हो जायेगी । अकेले चीन की संख्या तब एक अरब ५० करोड़ होगी और यदि महामारी, युद्ध जैसी विभीषिका न आई और भरण-पोषण के साधन उपलब्ध होते रहे तो भारतवर्ष की ही जनसंख्या एक अरब हो जायेगी ।

ईसा से आठ हजार वर्ष पूर्व सारे संसार में कुल लगभग २५ लाख लोग थे । उस समय न कोई अकाल का भय था न महामारी का । पृथ्वी का वातावरण शुद्ध था । खाने को प्रकृति ही इतना दे देती थी कि कृषि आदि में व्यर्थ परिश्रम नहीं करना पड़ता था । लोग देशाटन और ज्ञानार्जन का आनन्द लेते थे । जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी, जटिलता बढ़ती गई और उसी अनुपात से स्वास्थ्य, आरोग्य, आजीविका, संरक्षण, खाद्य पदार्थ, निवास-स्थान, शिक्षा, सामाजिकता, अपराध आदि समस्यायें भी बढ़ती गई । आज तो जनसंख्या वृद्धि के कारण सारा संसार ही एक समस्या बन गया है ।

क्या धरती खिसक जायगी

ईसा जन्मे तब लगभग ३० करोड़ जनसंख्या थी । १७५० में दुगनी से भी अधिक ७५ करोड़ के लगभग हो गई । १८५० में ११० करोड़ लोग इस पृथ्वी पर आ चुके थे, १९०० ई० में १६० करोड़ की जनसंख्या थी । १९२० में १८१ करोड़, ९० लाख और १९४० में २२४ करोड़ ६० लाख । १९६१ में यह संख्या बढ़कर ३०६ करोड़, ९० लाख हो गई । जनसंख्या की यह बढ़ोत्तरी कम होने का नाम नहीं लेती, पृथ्वी में अधिक से अधिक १६०० करोड़ जनसंख्या का भार उठाने की क्षमता है । इससे एक छटाँक वजन भी बढ़ा तो पृथ्वी रसातल को चली जायेगी अर्थात् प्रलय हो जायेगी ।

संयम न बरता गया तो स्थिति अधिक विस्फोटक होने में अब देर नहीं । '१०९' यह संख्या लिखने में जितना समय लगा, उतनी देर में १०९ नये बच्चों ने जन्म लिया। एक मिनट में २२५ बच्चे जन्म लेते हैं, एक घण्टे में उनकी संख्या २२५ x ६० = १३५०० हो जाती है । उस हिसाब से एक दिन में १३५०० x२४ = ३३४००० होनी चाहिए पर बढ़ोत्तरी इससे भी अधिक होगी, क्योकि अधिक से अधिक २० वर्ष में यह बच्चे भी बच्चे पैदा करने लगते हैं अर्थात् वृद्धि का क्रम चक्रवृद्धि ब्याज की दर से बढ़ता है । पहले प्रतिदिन वृद्धि का औसत १ लाख ३६ हजार ९८६ था । १घण्टे में ५ हजार ७०८ और १ मिनट में ९५ आदमी बढ़ते थे, उस हिसाब से १९७५ में ३८२ करोड़, ८० लाख, सन् २००० में ६८० करोड़, २०५० ई० में

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१३०० करोड़ एवं २०६४ में १६०० करोड़ हो जाने को थी पर अब २२५ बच्चे प्रति मिनट पैदा होते हैं, यह पहले औसत के दो गुने से भी अधिक है, अर्थात् जन संख्या में जो विस्फोट सौ वर्ष बाद होने वाला था, वह अब इसी शताब्दी के अन्त में हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं ।

जनसंख्या की इस तीव्रता और अभिवृद्धि के दुष्परिणामों को स्पष्ट करते हुए ऐलिनाय विश्वविद्यालय के भौतिकशास्त्री प्रोफेसर हीजबान फोस्टेक ने लिखा है—"२०२६ ई० में अर्थात् अब से लगभग ५० वर्ष बाद मनुष्य जाति का अन्त हो जायेगा, क्योंकि उस समय विश्व जनसंख्या चरम सीमा तक पहुँच जायेगी ।" केलीफोर्निया औद्योगिक संस्थान के डा० जेम्स बोनर के अनुसार-विश्व की जनसंख्या ढाई करोड़ प्रति वर्ष के अनुपात से बढ़ रही है, यदि यह ऐसी ही बढ़ती रही तो अगली शताब्दी में इतनी हो जायेगी कि प्रति व्यक्ति एक फुट पृथ्वी से अधिक न मिलेगी । इसका सोना, जागना, काम करना, खाना-पीना, टट्टी-पेशाब करना सब कुछ इतने में ही होगा स्पष्ट है कि स्थिति आने से पूर्व विस्फोट हो और मनुष्य, मनुष्य को ही खा जायें।

लन्दन के प्रसिद्ध स्वास्थ्य विशेषज्ञ ने ब्लैकपूल में स्वास्थ्य काँग्रेस की रायल सोसायटी में एक निबन्ध पढ़ा जिसमें उन्होंने बताया "सन् २०५० अर्थात् अगले अस्सी वर्षों में संसार की दशा महाप्रलय जैसी हो जायेगी । उस समय अब की तीन अरब की जनसंख्या बढ़कर नौ अरब हो जायेगी ।" भारतवर्ष में प्रति घण्टा ग्यारह सौ की जनसंख्या वृद्धि होती है । प्रतिवर्ष एक करोड़ बीस लाख लोग बढ़ जाते हैं, केरल जैसे प्रान्त में १९७६ तक २४३४७००० हो गई है, यहाँ प्रतिदिन पन्द्रह सौ नये शिशु जन्म लेते हैं ।"

ऊपर उल्लेखित आंकड़ों से जनसंख्या का प्रलयकारी विस्फोट इन्हीं दिनों होने की बात कही गयी है और बताया गया है कि पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था । इसका क्या कारण है ? सन्तानें पहले भी जन्म लेती थीं पर प्रकृति से जूझने के उतने समर्थ साधन हाथ में न होने से मृत्यु-संख्या भी अधिक थी । दुर्भिक्षों, महामारियों तथा अन्य प्रकृति-प्रकोपों से असंख्य मनुष्य मरते थे । वासनात्मक प्रवृत्तियाँ उग्र न होने से सन्तान भी सीमित ही होती थी । विधुर और विधवाएँ निवृत्त-जीवन जीते थे । अब किशोरावस्था आने से पूर्व ही मस्तिष्क गृहस्थ धर्म का उपभोग करने के लिए प्रशिक्षित हो जाता है । वासना भड़काने वाली फिल्में, पुस्तकें तथा तस्वीरें बेहिसाब बढ़ रही हैं । कानाफूँसी में प्रायः वही चर्चाएँ रहती हैं जो देखा-सुना जाता है, उसमें भावुकता भड़काने वाली प्रेरणाओं की भरमार होती है । इन परिस्थितियों में प्रजनन का अनुपात बढ़ना स्वाभाविक है । दूसरी ओर विज्ञान की प्रगति ने ऐसी व्यवस्था बना दी है कि भूखों मरने अथवा प्रकृति-प्रकोप से दम तोड़ने की सम्भावनाएँ कम ही रह गई हैं । बीमारियाँ सताती बहुत हैं पर उन्होंने भी मारने का उत्साह ढीला कर दिया है । दूसरी ओर बढ़ी हुई जनसंख्या द्वारा नई पीढ़ियों का उत्पादन-चक्रवृद्धि दर से हो रहा है । एक के ३, ३ के ९, ९ के २७, २७ के ८१ के २४३, २४३ के ७२९, ७२९ के २१८७, २१८७ के ६५३१ ।

एक व्यक्ति की तीन सन्तानें होती चलें तो सातवीं पीढ़ी पर ६५६१ बच्चे हो जायेंगे । यही क्रम आगे बढ़ता रहा तो संख्या न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचेगी इस क्रम में कुछ रोक-थाम भी होती है, पर बढ़ोत्तरी का अनुपात इतना तीव्र है कि निकट भविष्य में मनुष्यों के निवास, आहार के लिए जमीन खाली न बचेगी । पानी की कमी पड़ेगी और शिक्षा, व्यवसाय, यातायात आदि के लिए जगह न रहेगी । ऐसी दशा में स्वभावतः वर्तमान धरती के अपर्याप्त होने पर नये स्थान तैयार करने होंगे ।

इस बेतहाशा वृद्धि को देखकर ही माल्थस को चिन्ता हुई थी और उन्होंने जनसंख्या पर एक सुविख्यात शोध कार्य किया जो आज सारे विश्व में माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त (माल्थस थ्यौरी) के नाम से प्रसिद्ध है। माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि की गम्भीरता का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है—"जनसंख्या गुणोत्तर क्रम (ज्योमेट्रिकल प्रोग्रेशन) की दर से अर्थात् १ से २ । २ से ४ । ४ से ८ । ८ से १६ । १६ से ३२ । ३२ से ६४ । ६४ से १२८ के हिसाब से बढ़ती है, जब कि उत्पादन समान्तर क्रम (अरिथमेटिकल प्रोग्रेशन) अर्थात् १, २, ३, ४, ५, ६, ७ के हिसाब से बढ़ता है । इस हिसाब से पहले वर्ष १ व्यक्ति था तब उसके लिये १ यूनिट अन्न की आवश्यकता थी जो उसके उदर-पोषण के लिये पर्याप्त था । तीसरे वर्ष व्यक्ति हो गये ८ पर अन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पादन की यूनिट ३ ही रही । पाँच व्यक्तियों के लिये अन्न का जो दबाब पड़ेगा उसके लिये शिक्षा, स्वास्थ्य, वस्त्र, मकान और मनोरंजन आदि के साधनों में कटौती करके भरण-पोषण की समस्या पूरी करनी पड़ेगी । प्रत्येक अगले वर्ष यह जटिलता बढ़ती ही जायेगी । ७ वर्ष बाद जहाँ खाने के लिये जनसंख्या १२८ होगी वहाँ उत्पादन कुल ७ ही यूनिट होगा । तात्पर्य यह है कि १२१ व्यक्ति बेरोजगारी, भुखमरी और निरक्षरता की समस्या से जन्मजात पीड़ित होंगे । उत्पादन का यह अनुपात अन्न के क्षेत्र में ही नहीं, वस्त्र आदि आत्म-सुरक्षा और आत्म-विकास के क्षेत्र में भी होगा । इस तरह संकट प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ेंगे । बेरोजगारी, भुखमरी, अशिक्षा और अनुशासनहीनता का वह स्वरूप आज स्पष्ट देखा जा सकता है ।

सम्भवतः इन आँकड़ों के आधार पर ही डा० आर० सेन (जो पहले भारत के खाद्य मन्त्रालय के सचिव थे सन् १९६६ में जो संयुक्त राष्ट्रीय खाद्य एवम् कृषि संगठन के महानिदेशक नियुक्त हुए थे) ने कहा था—"यह माना गया है कि संसार में तब तक स्थायी शान्ति और सुरक्षा कायम नहीं हो सकती जब तक भुखमरी और अभाव को खत्म न कर दिया जाये । वस्तुतः व्यक्तियों का स्वास्थ्य और सुख ही नहीं, वरन् स्वतन्त्र एवम् लोकतन्त्री समाज का अस्तित्व भी खतरे में है । अगले १४ वर्ष मानवीय इतिहास में अत्यधिक नाजुक होंगे । या तो हम उत्पादकता बढ़ाने और जनसंख्या न बढ़ने देने के लिये सब सम्भव प्रयत्न कर लें अन्यथा हमें अभूतपूर्व रूप से विशाल विपत्ति का सामना करना होगा ।"

यह कथन शेखचिल्ली के विवाह की कल्पना नहीं वरन् एक सत्य है जो हमें अगामी दिनों किसी भयंकर विस्फोट के लिये तैयार रहने को सावधान करता है । प्रकृति के कोष में सीमित सामग्री है । वह असीमित लोगों के पेट नहीं भर सकती । इसलिए उसने एक सिद्धान्त बना लिया है कि जो भी जातियाँ दीवाली में आतिशबाजी के साँप की तरह बढ़ती हैं उनको नष्ट किया जाता रहे, मक्खी और मछलियाँ संसार में सबसे अधिक बच्चे पैदा करती हैं । यदि प्रकृति भी उनका संहार तेजी से न करती तो आज इन मक्खियों और मछलियों के रहने के लिये १० करोड़ ऐसी ही धरतियों की आवश्यकता पड़ती जैसी अपनी पृथ्वी है ।

माल्थस ने इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही यह चेतावनी दे दी थी कि जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान दर पर अविलम्ब रोक लगाई जानी चाहिए अन्यथा मानवता भयंकर प्राकृतिक दुष्परिणामों के लिए तैयार रहे । जनसंख्या वृद्धि ज्यामितीय गणना के अनुसार अर्थात् ७७ में १, २, ७९ में ४ और ८० में ८ की दर से बढ़ती है तो अन्न उत्पादन तमाम सिंचाई साधनों के विकास रासायनिक खाद की मात्रा बढ़ाकर अधिकतम भूमि कृषि योग्य बनाकर भी यदि बढ़ाया जाता है तो उत्पादन गणितीय गणना से अर्थात् ७७ में १, ७८ में २, ७९ में ३ तथा ८० में ४ मात्र इसी गति से बढ़ेगा । एक स्थिति वह आयेगी जब वह विराम तक भी पहुँच जायेगा, उस समय क्या होगा ?

तब प्रकृति का "संहारक सिद्धान्त" प्रारम्भ होगा। माल्थस ने बताया यदि मनुष्य जनसंख्या रोकने के लिए विवेक से काम नहीं लेगा तो फिर प्रकृति अर्थात्-स्वयं संभूत समस्यायें स्वतः ही सर्वनाश पर उतारू हो जायेंगी । अच्छा तो यह है कि लोग संयमशील जीवन जियें पर यदि वैसा सम्भव नहीं तो जन्म निरोध के कृत्रिम साधन भी बुरे नहीं—इतने पर भी यदि मनुष्य अपनी जिद पर अड़ा रहता है तो उसे अभी से युद्ध पूर्व से युद्धाभ्यास की तरह विनाश के लिए तैयार हो जाना चाहिए ।

लोम्बोक इण्डोनेशिया का एक द्वीप है । वहाँ १९६६ में अकाल पड़ गया । वहाँ के निवासियों ने पौधों की छाल, घोंघे, घास, शैवाल आदि खाकर जीवन रक्षा के बहुतेरे प्रयत्न किये तथापि ६ माह में दस हजार आदमी विकराल भूख की ज्वाला में जलकर नष्ट हो गये। यह तब हुआ जब समस्त पृथ्वी के सम्पर्क साधन बहु-विकसित हैं और एक देश को दूसरे देशों से सम्वेदना, सहायता मिल जाती है । पर जब हर कोई उसी समस्या से पीड़ित होगा तो कोई किसी की सहायता नहीं करेगा। उलटे माल्थस सिद्धान्त के अनुसार तब लोग एक किलो मक्की का आटा प्राप्त करने के लिए दस आदमियों की हत्या करने में भी नहीं हिचकेंगे ।

भूख की समस्या पर प्रकाश डालते हुये इसी वर्ष १९६६ में विश्व संगठन (यू०एन०ओ०) के सेक्रेटरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनरल यू थान्ट ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया था कि भारतवर्ष में प्रतिवर्ष २ लाख बच्चे केवल इसलिए मर जाते हैं कि उन्हें पोषण की प्रारम्भिक सुविधाएँ ही नहीं उपलब्ध हो पातीं अन्न का उत्पादन सीमित हो और खाने वालों की संख्या बढ़ रही हो तो यह स्थिति और भी भयंकर रूप धारण कर सकती है ।

अन्न में अकेले आदमी ही हकदार नहीं है, डकैत भी उसे लूटते हैं, यह डकैत हैं, चूहे । १९६६ की जनगणना के समय भारतवर्ष में १ अरब ६० करोड़ चूहे थे । प्रति चूहा प्रतिवर्ष दस पौण्ड भी अनाज चोरी करता हो तो ८ अरब कुण्टल के लगभग अनाज तो यही खाये बिना न मानेंगे तब फिर स्वभावतः मनुष्य इन पर गुस्सा उतारेगा और जंगली जानवर खाना शुरू करेगा । यों भी जंगल समाप्त होते ही जीव वैसे ही अस्तित्व-हीन हो जायेंगे तब फिर आदमी, आदमी को खायेगा चाहे वह प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष । अराजकता के रूप में उसके प्रारम्भिक चरण (१) भुखमरी, (२) बेरोजगारी, (३) आवास समस्या और (४) अराजकता के लक्षण अभी से उभरने लगे हैं । सूर्योदय से पूर्व की ऊषा जिस तरह सूर्यागमन का बोध कराती है, उसी तरह यह समस्यायें आगामी जनसंख्या विस्फोट के ही पूर्व अध्याय हैं, यदि मनुष्य अभी भी विवेक से काम नहीं लेता तो फिर प्रकृति ही कब तक चुपचाप बैठेगी ?

जनसंख्या वृद्धि और वैज्ञानिक प्रगति के वर्तमान उत्साह पर अधिक नियन्त्रण अगले दिनों न हो सकेगा । हाँ इतना प्रयत्न अवश्य किया जायेगा कि कम से कम सौ वर्ष तक मानव जाति को जीवित रहने के लिये मार्ग निकाल लिया जाय । इसके लिये अभी से प्रयास चल पड़े हैं और सन् दो हजार से सन् इक्कीस सौ तक की अवधि में जो किया जाना है, जो होना है, जो बनना है—आज उसकी रूपरेखा सबके सामने स्पष्ट रहे और उसे पूरा करने के लिये आवश्यक प्रयास समय रहते आरम्भ कर दिये जायें ।

अर्थशास्त्री आर्थर सी० क्लार्क और प्रो० वक्र मिस्टर फुलर ने अगली शताब्दी के लिए जो विश्व-योजना बनाई है उसमें जनसंख्या वृद्धि को प्रथम स्थान दिया गया है और उसके अनुरूप की उपलब्धि में वर्तमान तथा भावी वैज्ञानिक उपलब्धियों को पूरी तरह नियोजित करने का कार्यक्रम बनाया है । उनके कथनानुसार अगली शताब्दी में माँस का उत्पादन बन्द हो जायेगा क्योंकि वह बहुत महँगा है । एक पौंड माँस तैयार करने में प्रायः २० पौण्ड चारा खर्च होता है । इतनी वनस्पति खर्च करके इतना कम माँस उत्पन्न करना सरासर घाटे का सौदा है । इसके लिए उपजाऊ जमीन की इतनी शक्ति बर्बाद नहीं की जा सकती । जो चारा, भूसा, इमारती लकड़ी अथवा कागज, गत्ता जैसी चीजें बनाने के लिये काम आकर जरूरी आवश्यकताओं को पूरी करेगी, उन्हें जानवरों को खिलाना और फिर माँस उत्पन्न करना सरासर फिजूलखर्ची है । गिनी-चुनी बहुत दूध देने वाली गायों के लिये जगह और खुराक बचाई जा सके यही क्या कम है ? यह भी तब हो सकेगा, जब मनुष्यों को स्थान तथा खुराक सम्बन्धी कटौती के लिये तैयार किया जा सके । दूध दही तो सोयाबीन जैसी वनस्पतियाँ आसानी से बना दिया करेंगी । घी तो तेल की ही एक किस्म है । चिकनाई की जरूरत तेल से ही पूरी हो सकती है, फिर घी की क्या जरूरत ? तेल में प्रोटीन यथा बैक्टीरिया से कृत्रिम माँस आसानी से तैयार हो सकता है फिर पशु-माँस के जंजाल में उलझने की लम्बी और महँगी प्रक्रिया अपनाने की कोई आवश्यकता ही न रहेगी । फ्रांस में कृत्रिम माँस मनाने में अभी भी सफलता प्राप्त कर ली गई है । आगे तो यह विधि और भी सरल तथा समुन्नत हो जायेगी ।

सड़कें बहुत जमीन घेरती हैं और वे जहाँ भी पक्की हो जाती हैं, जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट कर देती हैं। इन दिनों सड़कों ने जितनी जमीन घेर रखी है और भविष्य में घेरने जा रही है । उस भूमि विनाश पर गम्भीरता से विचार करना होगा । सड़कें या तो जमीन के नीचे चलेंगी या फिर सस्ते वायुयान, यातायात तथा परिवहन की आवश्यकता पूरी करेंगे । सड़कों से घिरी जमीन पर पौष्टिक किस्म की बड़ी फसलें देने वाली और साल में जल्दी-जल्दी कई बार पकने वाली घासें लगाई जायेंगी । वनस्पति को पूरा ही आहार प्रयोजन के लिये काम में लाना पड़ेगा, तभी आदमी का पेट भरेगा । इन दिनों अन्न खाने की जो आदत है वह उस समय छोड़नी पड़ेगी । अनाज के पौधे का आकार-विस्तार जितना होता है, उसकी तुलना में बीज का अनुपात बहुत थोड़ा रहता हे । फसलों का अधिकांश भाग भूसे के रूप में चला जाता है । अभी तो भूसे-चारे को पशु भी खा लेते हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आगे पशु रहेंगे ही नहीं तो चारे की उपयोगिता भी नही रहेगी । ऐसी दशा में पूरी घास खाने की आदत डालनी पड़ेगी । आखिर अन्य शाकाहारी प्राणी भी तो घास खाकर ही रहते हैं, फिर मनुष्य को ही इसमें क्या ऐतराज होना चाहिये? घास में प्रोटीन तथा दूसरे जीवनोपयोगी तत्त्व पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं । घास का चूरा आटे का काम दे सकता है । जरूरत के अनुसार उसमें दूसरी चीजें भी मिलाई जा सकती हैं, पर आटा बनेगा घास का ही । अनाज का प्रचलन भी अगले दिनों पशु-मांस की तरह ही बहिष्कृत करना पड़ेगा । नकली दही, घी, नकली माँस जब सभी खाद्य पदार्थ कृत्रिम बनने लगेंगे तो अनाज का आटा खाने के लिये ही कोई क्यों आग्रह करेगा ? कुछ दिन में लोग घास का आटा खाने के लिये तैयार हो ही जायेंगे । न होंगे तो वैसा मजबूरी करा लेगी ।

मनुष्यों को स्वच्छ साँस मिलती रहे, इसके लिये वृक्ष आवश्यक हैं । २५ वर्ग फुट जमीन में एक आदमी को साँस ले सकने के उपयुक्त वायु मिलती है । इसलिये खुली जगह में वृक्ष-उद्यानों का प्रबन्ध अधिक करना पड़ेगा । तब सड़कों का ही सफाया नहीं करना पड़ेगा, मकान भी कई-कई मंजिल ऊँचे बना करेंगे । एक मंजिल मकान नहीं पड़ेंगे । निवास-आवास में घिरने वाली जमीन तो बचानी ही पड़ेगी । वनस्पति उगाने के लिये, यह आवश्यक होगा कि मकानों में उसे अधिक न घेरा जाय । यह समस्या अनेक मंजिल ऊँचे मकान बनने के प्रचलन से ही सम्भव हो सकेगी ।

घास के आहार को अधिक पौष्टिक बनाने के लिए उसमें प्रोटीन के नये स्रोत सम्मिलित करने पड़ेंगे । एक कोशीय यीस्ट-जीवाणु (बैक्टीरिया), कवक (फफूँद), शैवाल इनमें प्रमुख होंगे । प्रचलित तेल प्रधान वनस्पतियों में मूँगफली, सोयाबीन, नारियल और बिनौले का सम्मिश्रण खाद्य पदार्थों में मिला दिया जाय तो घास का आटा प्रचलित गेहूँ के आटे से कही अधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट बना जायेगा । गेहूं में १०-१२ प्रतिशत, चावल में ८-९ प्रतिशत और माँस-मछली में २०-२२ प्रतिशत प्रोटीन होता है । इस दकियानूसी आहार को हटा कर प्रोटीन के नये स्रोतों का उपयोग करने से सहज ही कहीं अधिक पौष्टिकता मिल जायेगी । यीस्ट में ५५ प्रतिशत, बैक्टीरिया में ८० प्रतिशत, फफूँद में ४० प्रतिशत और शैवालों में २५ प्रतिशत प्रोटीन होता है। ऐसी दशा में उनका उपयोग करने से समस्या का समाधान निकलेगा ।

पेट्रोलियम के कारखानों से उप-उत्पादन के रूप में मिलने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं से अच्छा प्रोटीन विनिर्मित करने में फ्रांसीसी विज्ञानी चेम्पेटन ने आशाजनक सफलता प्राप्त की है । एक कोषीय प्रोटीन मांस उत्पादन पर आने वाली लागत की तुलना में ढाई हजार गुना सस्ता पड़ता है और कम समय लेता है, ऐसी दशा में उसका आश्रय मनुष्य को लेना ही पड़ेगा । समुद्री वनस्पति क्लोरिला का जापान में खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग करने का प्रचलन है । इंग्लैंड घास से प्रोटीन बनाने में लगा हुआ है । सोयाबीन का दूध गो-दूध की आवश्यकता पूरी कर सकेगा, यह विश्वास खाद्य-शोधकों में अभिनव आशा का संचार कर रहा है । एक किलो सोयाबीन में १० लीटर दूध बनने की सम्भावना में सस्तेपन का आकर्षण भी बहुत है । गुणों में तो उसे समान ही बताया जा रहा है ।

भोजन पकाने की प्रणाली में भारी हेर-फेर करना पड़ेगा । कच्चा राशन रखने, पकाने के लिए चौका चूल्हा बनाने, पकी हुई वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए जितने स्थान की अब जरूरत पड़ती है, भविष्य में उतनी जगह की बरबादी नहीं की जा सकेगी । अन्न, शाक आदि को उत्पन्न होते ही बड़े कारखानों में तैयार भोजन के रूप में तैयार किया जायेगा और उस सूखे सार तत्व को पैकिटों में बंद कर दिया जायेगा । चूँकि भोजन में नब्बे प्रतिशत पानी होता है, इसलिए सूखे सार भोजन में आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर अंगीठी पर गरम कर लिया जाया करेगा। बस दस मिनट में भोजन तैयार है, इससे स्थान की ही नहीं, बनाने और पकाने के समय की भी बचत होगी।

पहाड़ समतल बनाने पड़ेंगे । पथरीली जमीन जो कृषि योग्य नहीं बन सकेगी, वह निवास और कल कारखानों के काम में ली जायेगी शहर गाँव उसी पर बसेंगे । पहाड़ों का चूरा करके इमारती ईट पत्थर, सीमेन्ट आदि बनेगा, ताकि इन कार्यों में उपजाऊ जमीन का एक चप्पा भी बर्बाद न किया जाय । लकड़ी की जगह प्लास्टिक अथवा कृत्रिम धातुओं का उपयोग करके मकानों की आवश्यकता पूरी की जायेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमेरिका के विज्ञान लेखक आइजक आसिमोव ने आँकड़ों सहित बताया है कि बढ़ती हुई आबादी के कारण अगले बीस वर्षों में जो संकट उत्पन्न होंगे उनमें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में कमी पड़ने का संकट मुख्य है । वायु, जल और आहार यह तीनों ही वस्तुयें ऐसी हैं, जिनके आधार पर मनुष्य जीवित रहता है । बढ़ती हुई आबादी के लिये अगले दिनों यह तीनों ही न तो शुद्ध मिलेंगी और न पर्याप्त मात्रा में ।

इतने पर भी जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान नहीं हो सकेगा । जनसंख्या वृद्धि का एक भयंकर दुष्परिणाम खाद्य समाप्ति के अभाव के रूप में तो सामने आयेगा ही, पीने योग्य पानी की भी कमी होने लगेगी । क्योंकि एक ओर तो जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, दूसरी ओर कल-कारखाने भी बढ़ते रहेंगे ।

जब हमें प्यासे रहना होगा

संसार में एक ओर जनसंख्या की वृद्धि हो रही है दूसरी ओर कल-कारखाने और उद्योग-धन्धे बढ़ रहे हैं। इन दोनों ही अभिवृद्धियों के लिये पेय जल की आवश्यकता भी बढ़ती चली जा रही है । पीने के लिये, नहाने के लिये, कपड़े धोने के लिये, रसोई एवं सफाई के लिये हर व्यक्ति को, हर परिवार को पानी चाहिये । जैसे-जैसे स्तर ऊँचा उठता जाता है उसी अनुपात से यह पानी की आवश्यकता भी बढ़ती है । खाते-पीते आदमी अपने निवास में पेड़-पौधे, फल-फूल, घास-पात लगाते हैं, पशु पालते हैं । इस सबके लिये पानी की माँग और बढ़ती है । गर्मी के दिनों में तरावट और छिड़काव के लिये पानी चाहिये ।

कल-कारखाने निरन्तर पानी माँगते हैं । जितना बड़ा कारखाना, उतनी बड़ी पानी की माँग । भाप से चलने वाली रेलगाड़ियाँ तथा दूसरी मशीनें पानी की अपेक्षा करती है । शोधन संशोधन ढेरों पानी लेता है । शहरों में फ्लेश के पखाने, सीवर लाइनें तथा नाली आदि की सफाई के लिए अतिरिक्त पानी की आवश्यकता पड़ती है । कृषि और बागवानी का सारा दारोमदार ही पानी पर ठहरा हुआ । हरियाली एवं वन सम्पदा पानी पर ही जीवित है । पशु पालन में चारा पानी अनिवार्य रूप से चाहिए। और भी न जाने कितने ज्ञात अज्ञात आधार हैं जिनके लिये पानी की निरन्तर जरूरत पड़ती रहती है।

यह सारा पानी बादलों से मिलता है । पहाड़ों पर जमने वाली बर्फ जिसके पिघलने से नदियाँ बहती हैं वस्तुतः बादलों का ही अनुदान है । सूर्य की गर्मी से समुद्र द्वारा उड़ने वाली भाप बादलों के रूप में भ्रमण करती है । उनकी वर्षा से नदी नाने, कुएँ, तलाब, झरने सोते बनते हैं । उन्हीं से उपर्युक्त आवश्यकताएँ पूरी होती हैं । जनसंख्या के साथ-साथ वृक्ष वनस्पतियों की अन्न, शाक, पशु वंश की, कल कारखानों की, जो वृद्धि होती चली जा रही है उसने पानी की माँग को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ा दिया है । यह माँग दिन-दिन अधिकाधिक उग्र होती जा रही है । बादलों के अनुदान से ही अब तक सारा काम चलता रहा है । सिंचाई के साधन नदी, तालाब, कुओं से ही पूरे किये जाते हैं । इनके पास जो कुछ है बादलों की ही देन है । स्पष्ट है कि बादलों के द्वारा जो कुछ दिया जा रहा है वह आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कम पड़ता है । संसार भर में पेयजल अधिक मात्रा में प्राप्त करने की चिन्ता व्याप्त है ताकि मनुष्यों की, पशुओं की, वनस्पति की, कारखानों की आवश्यकता को पूरा करते रहना सम्भव बना रहे ।

बादलों पर किसी का नियन्त्रण नहीं, वे जब चाहें जितना पानी बरसायें उन्हें आवश्यकता पूरी करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है । वे बरसते भी हैं तो अन्धाधुन्ध बेहिसाब । वर्षा में वे इतना पानी फैला देते हैं कि पृथ्वी पर उसका संग्रह कर सकना सम्भव नहीं होता और वह बहकर बड़ी मात्रा में समुद्र में जा पहुँचता है । इसके बाद शेष आठ महीने आसमान साफ रहता हे । गर्मी के दिनों में तो बूँद-बूँद पानी के लिए तरसना पड़ता है । इन परिस्थितियों में मनुष्य को जल के अन्य साधन स्रोत तलाश करने के लिए विवश होना पड़ रहा है अन्यथा कुछ ही दिनों में जल संकट के कारण जीवन दुर्लभ हो जायेगा । गन्दगी बहाने, हरियाली उगाने और स्नान रसोई के लिए भी जब पानी कम पड़ जायेगा तो काम कैसे चलेगा ? कल-कारखाने किसके सहारे अपनी हलचल जारी रखेंगे ?

अमेरिका की आबादी बीस करोड़ है । वहाँ कृषि एवं पशु पालन में खर्च होने वाले पानी का खर्च प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य पीछे प्रतिदिन तेरह जहार गैलन आता है । घरेलू कामों में तथा उद्योगों में खर्च होने वाला पानी भी लगभग इतना ही बैठता है । इस प्रकार वहाँ हर व्यक्ति पीछे २६ हजार गैलन पानी की नित्य जरूरत पड़ती है । यहाँ की आबादी विरल और जल स्रोत बहुत हैं, तो भी चिन्ता की जा रही कि आगामी शताब्दी में पानी की आवश्यकता एक संकट के रूप में सामने प्रस्तुत होगी ।

भारत की आबादी अमेरिका की तुलना में ढाई गुनी अधिक है किन्तु जल साधन कहीं कम हैं । बड़े शहरों में अकेले बम्बई को ही लें तो वहाँ की जरूरत ३५ करोड़ गैलन हो जाती है । वही दुर्दशा न्यूनाधिक मात्रा में अन्य शहरों की है । देहाती क्षेत्र में अधिकांश कृषि उत्पादन वर्षा पर निर्भर है । जिस साल वर्षा कम होती है, उस साल भयंकर दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ता है । मनुष्यों और पशुओं की जान पर बन आती है । यदि इन क्षेत्रों में मानव उपार्जित जल की व्यवस्था हो सके तो खाद्य समस्या का समाधान हो सकता है ।

नये जल आधार तलाश करने में दृष्टि समुद्र की ओर ही जाती है । धरती का दो-तिहाई से भी अधिक भाग समुद्र में डूबा पड़ा है । किन्तु वह है खारी । जिसका उपयोग आवश्यकताओं में से किसी की भी पूर्ति नहीं कर सकता । इस खारी जल को पेय किस प्रकार बनाया जाय इसी केन्द्र पर भविष्य में मनुष्य जीवन की आशा इन दिनों केन्द्रीभूत हो रही है ।

इस सन्दर्भ में राष्ट्रसंघ ने एक आयोग नियुक्त किया था जिसने संसार के ४६ प्रमुख देशों में दौरा करके जल समस्या और उसके समाधान के सम्बन्ध में विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की है । इस रिपोर्ट का सारांश राष्ट्रसंघ ने प्रगतिशील देशों में खारी पानी का शुद्धीकरण नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसमें प्रमुख सुझाव यही है कि समुद्री जल के शुद्धीकरण पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाना चाहिए । यों वर्षा के जल को समुद्र में जाने से रोकने के लिए तथा जमीन की गहराई में बहने वाली अदृश्य नदियों का पानी ऊपर खींच लाने को भी महत्त्व दिया गया है और कहा गया है कि बादलों के अनुदान तथा पर्वतीय बर्फ के रूप में जो जल मिलता है उसका भी अधिक सावधानी के साथ सुदपयोग किया जाना चाहिए ।

उत्तर और दक्षिण ध्रुव प्रदेशों के निकटवर्ती देशों के लिए एक योजना यह है कि उधर समुद्र में सैर करते फिरने वाले हिम पर्वतों को पकड़ कर पेय जल की आवश्यकता पूरी की जाय तो यह अपेक्षाकृत सस्ता पड़ेगा और सुगम रहेगा । संसार भर में जितना पेय जल है उसका ८० प्रतिशत भाग ध्रुव प्रदेश ऐन्टार्कटिक के हिमावरण, आइस कैप में बँधा पड़ा है । इस क्षेत्र में बर्फ के विशालकाय खण्ड अलग होकर समुद्र में तैरने लगते है और अपना आकार हिम द्वीप जैसा बना लेते हैं । वे समुद्री लहरों और हवा के दवाब से इधर-उधर सैर-सपाटे करते रहते है । दक्षिणी ध्रुव के हिम पर्वतों को गिरफ्तार करके दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका में पानी की आवश्यकता पूरी करने के लिए खींच लाया जा सकता है । इसी प्रकार उत्तरी ध्रुव के हिम पर्वत एक बड़े क्षेत्र की आवश्यकता पूरी कर सकते हैं । यद्यपि उनमें संख्या कम मिलेगी ।

अमेरिका के हिम विज्ञानी डा० विलियम कैम्बेल और डा० विल्फर्ड ने इसी प्रयोजन के लिए कैम्ब्रिज (इंग्लैण्ड) में बुलाई गई एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी ''इण्टर नेशनल सिम्पोजियम आन दि हाइड्रोलाजी आफ ग्लेशियर्स'' में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा था - हिम पर्वतों को पकड़ने की योजना को महत्त्व दिया जाना चाहिए ताकि पेय जल की समस्या को एक हद तक सस्ता समाधान मिल सके ।

भू-उपग्रहों की सहायाता से फोटो लेकर यह पता लगाया जा सकता है कि किस क्षेत्र में कैसे और कितने हिम पर्वत भ्रमण कर रहे हैं । इन पर्वतों का ८३ प्रतिशत भाग पानी में डूबा रहता है और शेष १७ प्रतिशत सतह से ऊपर दिखाई पड़ता है । इन्हें पाँच हजार मील तक घसीट कर लाया जा सकता है । इतना सफर करने में उन्हें चार पाँच महीने लग सकते हैं ।

ढुलाई का खर्चा और सफर की अवधि में अपेक्षाकृत गर्म वातावरण में बर्फ पिघलने लगना यह दो कारण यद्यपि चिन्ताजनक हैं तो भी कुल मिलाकर वह पानी उससे सस्ता ही पड़ेगा जितना कि हम जमीन पर रहने वालों को औसत हिसाब से उपलब्ध होता है ।

हिसाब लगाया गया है कि ऐमेरी से आस्ट्रेलिया तक ढोकर लाया गया हिमपर्वत दो-तिहाई गल जायगा और एक-तिहाई शेष रहेगा । रास से दक्षिण अमेरिका तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घसीटा गया हिम पर्वत १४ प्रतिशत ही शेष रहेगा । धीमी चाल से घसीटना अधिक लाभदायक समझा गया है ताकि लहरों का प्रतिरोध कम पड़ने से बर्फ की बर्बादी अधिक न होने पाये । ७-८ हजार हॉर्सपावर का एक टग जलयान आधा नाट की चाल से उसे आसानी के साथ घसीट सकता है । अपने बन्दरगाह से चलकर हिमपर्वत तक पहुँचने और वापस आने में जो खर्च आवेगा और फिर उस बर्फ को पिघलाकर पेयजल बनाने में जो लागत लगेगी, वह उसकी सस्ती ही पड़ेगी जो म्युनिसपेलिटियाँ अपने परम्परागत साधनों से जल प्राप्त करने में खर्च करती हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि बर्फ का जल, डिस्टिल्डवाटर स्तर का होने के कारण स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी, स्वच्छ और हानिकारक तत्वों से सर्वथा रहित होगा । उसके स्तर को देखते हुए यदि लागत कुछ अधिक हो तो भी उसे प्रसन्नतापूर्वक सहन किया जा सकता है ।

दूसरा उपाय यह सोचा गया है कि समुद्र किनारे अत्यन्त विशालकाय अणु भट्टियाँ लगाई जायें । उनकी गर्मी से कृत्रिम बादल उत्पन्न किये जायें उन्हें ठण्डा करके कृत्रिम नदियाँ बहाई जायें । उन्हें रोक बांधकर पेयजल की समस्या हल की जाय ।

तीसरा उपाय यह है कि वर्षा का जल नदियों से होकर समुद्र में पहुँचता है । उसे बांधों द्वारा रोक लिया जाय और फिर उनसे पेयजल की समस्या हल की जाय ।

दूसरे और तीसरे नम्बर के उपाय जोखिम भरे हैं । अत्यधिक गर्मी पाकर समुद्री जलचर मर जायेंगे, तटवर्ती क्षेत्रों का मौसम गरम हो उठेगा और ध्रुव प्रदेशों तक उस गर्मी का अवसर पहुँचने से जल प्रलय उत्पन्न होगी और धरती का बहुत बड़ा भाग जलमग्न हो जायगा । इतनी बड़ी अणु भट्टियाँ अपने विकिरण से और भी न जाने क्या-क्या उपद्रव खड़े करेंगी । तीसरे उपाय से यह खतरा है कि जब समुद्रों में नदियों का पानी पहुँचेगा ही नहीं तो वे सूखने लगेंगे । खारीपन बढ़ेगा और उस भारी पानी से बादल उठने ही बन्द हो जायेंगे तब नदियों का पानी रोकने से भी क्या काम चला । ध्रुवों के घुमक्कड़ हिम द्वीप भी बहुत दूर तक नहीं जा सकते उनका लाभ वे ही देश उठा सकेंगे जो वहाँ से बहुत ज्यादा दूर नहीं है ।

उपर्युक्त सभी उपाय अनिश्चित एवं अधूरे हैं । पर इससे क्या । पेयजल की बढ़ती हुई मांग तो पूरी करनी ही पड़ेगी अन्यथा पीने के लिए कृषि के लिए कारखानों के लिए सफाई के लिए, भारी कमी पड़ेगी और उस अवरोध के कारण उत्पादन और सफाई की समस्या जटिल हो जाने से मनुष्य भूख, गन्दगी और बीमारी से त्रसित होकर बेमौत मरेंगे ।

यह सारी समस्याएँ बढ़ती हुई आबादी पैदा कर रही हैं । मनुष्य में यदि दूरदर्शिता होती तो वह जनसंख्या बढ़ाने की विभीषिका को अनुभव करता और उससे अपना हाथ पीछे खींच लेता पर आज तो न यह होता दीखता है और न पेयजल का प्रश्न सुलझता प्रतीत होता है । मनुष्य को अपनी वज्र मूर्खता का सर्वनाशी दण्ड आज नहीं तो कल भुगतना ही पड़ेगा । अनुमान है कि यह विषम परिस्थिति अगली शताब्दी के अन्त तक संसार के सामने आ उपस्थित होगी ।

जब साँस लेने पर बीमार होना पड़ेगा

मनुष्य को स्वस्थ और सुखी रहने के लिए जो दो वस्तुएँ सबसे ज्यादा आवश्यक हैं, वे हैं शुद्ध हवा और साफ पानी । और सब साधन सुविधाएँ बाद में हैं । आवश्यकताओं के क्रम में भी इनका स्थान प्रथम और द्वितीय है । भोजन का क्रम तीसरे स्थान पर आता है । कुछ दिनों तक भोजन न मिले तो रहा जा सकता है, पानी के बिना उससे कम समय तक ही गुजारा किया जा सकता है, किन्तु हवा तो इतनी आवश्यक है कि उसके बिना कुछ मिनट भी जीवित नहीं रहा जा सकता । और यदि गन्दी हवा में साँस लेना पड़े तो तरह-तरह की बीमारियों, रोगों का ग्रास बनना पड़ता है ।

स्वस्थ रहने के लिए हवा में साँस लेना ही पर्याप्त नहीं है, उससे भी ज्यादा हवा का स्वच्छ होना आवश्यक है । किन्तु इन दिनों कारखानों के धुएँ, चिमनियों के द्वारा उगले जा रहे कार्बन, भट्टियों की धमक और दूसरे दूषित पदार्थों के कारण इस हद तक विषाक्त हो चला है कि विचारशील लोगों का चिन्तित होना स्वाभाविक है । पिछले दिनों कई देशों में इस समस्या को लेकर चिन्ता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्त की जाती रही है और सार्वजनिक प्रदर्शन भी हुए हैं ।

वायु प्रदूषण के परिणामों की एक झाँकी कुछ घटनाओं से समझी जा सकती है—१९५२ में पूरे लन्दन में चार दिन तक धुएँ की धुन्ध छाई रही । इससे प्रायः ४ हजार व्यक्तियों का प्राणान्त हो गया । १९४५ में अमरीका के डनोरा शहर में इसी तरह की धुएँ की धुन्ध (स्मॉग) छाई रही, सैकड़ों लोग श्वसनतन्त्र के रोगों से ग्रस्त हो गए । दोनों जगह कारण एक ही था—कोयले के उपयोग से—कारखानों से—निकली सल्फर-डाइ-आक्साइड गैस ।

जापान की राजधानी टोकियो मे पुलिस को हर आधे घण्टे बाद ऑक्सीजन-टैकों से ऑक्सीजन का सेवन करना पड़ता है क्योंकि मोटरों के धूम-धमाके से कार्बन-मोनो-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है ।

जापान की राजधानी टोकियो में सड़कों पर चलने वाले वाहनों की संख्या कभी-कभी बढ़ जाती है तो वहाँ धुआँ इतनी बुरी तरह से छा जाता है कि सरकारी तौर पर उसकी घोषण करनी पड़ती है । सरकारी कर्मचारी उसकी घुटन से बचने के लिए गैस मास्क (एक प्रकार का यन्त्र जो हवा का प्रदूषण छानकर शुद्ध हवा को श्वांस नली में जाने देता है) पहनना पड़ता है ।१९६६ में टोकियो में ६५ बार इस तरह की चेतावनी दी गई। ट्रैफिक पुलिस को आधे-आधे घण्टे बाद अपनी ड्यूटी छोड़कर चौराहों की बगल में बनी ऑक्सीजन टंकियों में जाकर आक्सीजन लेनी पड़ती थी । कई बार ऐसा हुआ जब सिपाहियों ने भूल की, वे आक्सीजन लेने नहीं गए तो कई-कई सिपाही एक साथ मूर्छित होकर गिरे ।

जापान में सौ व्यक्तियों के पीछे एक व्यक्ति अनिवार्य रूप से ब्रांकाइटिस (श्वांस नली में सूजन की बीमारी) का रोगी है । उसका कारण और कुछ नहीं यह धुआँ ही है जिसे कल कारखाने व यातायात के वाहन उगलते रहते हैं । यहाँ के अमेरिकन सैनिकों में इन दिनों एक नया रोग चमक रहा है जिसका नाम ''तौक्यो योकोहामा डिसीज'' रखा गया है, उसका कारण भी डाक्टर वायु की इस गन्दगी को ही बताते हैं । इस बीमारी में सांस लेने में घुटन, खाँसी और अपच आदि लक्षण होते हैं ।

अमेरिका के ब्राजील राज्य में साओपालो और रायो डि जेनेरो दो पड़ौसी नगर हैं । १९१४ के आस-पास साओपालो की जितनी जनसख्या थी अब आबादी उससे दो गुनी अधिक (पचास लाख) हो गई है, जनसंख्या वृद्धि के समानान्तर ही वहाँ कल-कारखाने और फैक्टरियाँ बढ़ी हैं । अनुमान है कि उक्त अवधि में साओपालो में पाँच हजार नये कल-कारखाने स्थापित हुए हैं । इसके विपरीत रायो डि जेनेरो की नगर-कारपोरेशन ने सन् १८७३ में दी गई पत्रिकाओं की ''आर्गेनिक डस्ट'' चेतावनी (इस चेतावनी में पहले ही यह कहा गया था कि यदि कल-कारखाने बढ़े तो उनका धुआँ मनुष्य जाति के लिए भयंकर खतरा बन जाएगा) को ध्यान में रखकर औद्योगिक प्रगति को बढ़ने नहीं दिया । अब स्थिति यह है कि साओपालो के आकाश में प्रतिदिन दस टन हाइड्रोफ्लूओरिक एसिड और लगभग एक हजार टन सल्फ्यूरिक एनहाइड्राइड वायु में घुल रहा है और उससे नगर मे ब्रांकियल (श्वांस नली सम्बन्धी बीमारी) से मरने वालों की संख्या भी दुगुनी हो गई है । प्रातःकाल लोग घरों से खाँसते हुए निकलते हैं—इस स्थिति की भयंकर अनुभूति करने वाले मेड्रिड के लोग कहते हैं ''हम प्रातःकाल की साँस के साथ इतना दूषित तत्व पी लेते हैं जितने से कोई एक डीजल इन्जन दिन भर सुविधापूर्वक चलाया जा सकता है । एक ओर साओपालो धुँये से घुट रहा है दूसरी ओर रायो डि जेनेरो के लोग अभी भी इस दुर्दशा से बचे हुए हैं ।

पेनसिल वीनिया (अमेरिका) में मोनोनग सेला नामक नदी के किनारे डोनोरा नामक एक छोटी-सी औद्योगिक बस्ती है यहाँ कल-कारखाने बहुत हैं । यों यहाँ इन फैक्टरियों का धुँआ आमतौर से छाया रहता है और उसे सहन करने में लोग अभ्यस्त भी हो गए हैं, पर २८ अक्टूबर १९७१ को तो वहाँ स्थिति ही विचित्र हो गई । धुएँ और धूल भरी धुन्ध ऐसी छाई कि चार दिन तक बरसाती घटाओं जैसी अँधियारी छाई रही । किसी ने यह जाना ही नहीं की दिन निकल आया । दिन में भी रात लगती रही । कालोंच इतनी बरसी कि सड़कों पर उसकी परतें जम गई और निकलने वालों के पैर उस पर स्पष्ट रूप से छपने-उभरने लगे । सड़क पर कारें चलना बन्द हो गया । बीमारों से अस्पताल खचाखच

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भरे थे । डाक्टर अपनी जान बचाने के लिए कहीं दूर चले जाने के लिये पलायन करने लगे ।

गले की खराबी, सिर में चक्कर, उल्टी, आँखों की सूजन आदि रोगों से उस १८ हजार आबादी की छोटी-सी बस्ती में ६ हजार बीमार पड़े । इनमें से कितनों को ही मौत के मुँह में जाना पड़ा ।

कारखानों और दूसरी भट्टियों का धुँआ निकल कर आकाश में छाने लगता है । अवसर पाते ही वह धरती की ओर झुक जाता है । 'थर्मल इन्वर्शन' (ताप व्युत्क्रमण) का अवसर पाते ही धुन्ध के रूप में बरसने लगता है । जब तक वायु गर्मी से प्रभावित रहती है, तब तक धुएँ-धुन्ध के कण हवा के साथ ऊपर उठते हैं, पर जब शीतलता के कारण वायु नम होती है तो धूलि का उठाव रुक जाता है तो वह वायु प्रदूषण नीचे की ओर ही गिरने लगता है । हवा का बहाव बन्द हो जाने पर तो यह विपत्ति और भी बढ़ जाती है ।

आज अमेरिका के वायुमण्डल में प्रतिदिन हाइड्रो कार्बन, नाइट्रोजन, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर आक्साइड, सीसे के कण आदि विषैले तत्वों की २००००००० टन मात्रा भर जाती है । कई बार तापमान गिर जाने से मौसम में ठंडक आ जाती है जिससे यह धुआँ ऊपर नहीं उठ पाता, ऐसी स्थिति में सघन बस्तियों वाले लोग जहाँ पेड़-पौधों का अभाव होता है ऐसे घुटने लगते हैं, जैसे किसी को कमरे में बन्द करके भीतर धुआँ सुलगा दिया गया हो । यह धुन्ध इतना ही नहीं करती उसमें रासायनिक प्रतिक्रियायें भी होती है । इसके फलस्वरूप, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड, ओजोन और पऔक्सि आक्ल नाइट्रेट नामक विषैली गैस पैदा हो जाती है । उससे फेफड़ों के रोग, आँखों की बीमारियाँ और खाँसी, गले के रोग असाधारण रूप से बढ़ते हैं । अमेरिका में इन बीमारियों में हवा के दूषण का ६० प्रतिशत हिस्सा मोटरों का और ३० प्रतिशत उद्योगों का है । अन्तरिक्ष यात्रियों ने पृथ्वी से ७० मील ऊपर जाकर धरती को देखा तो लाँस ऐजल्स सरीखे औद्योगिक नगर गन्दी धुन्ध से बेतरह ढँके दिखाई पड़े।

इस दृष्टि से ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम जहाँ औद्योगीकरण देर से चल रहा है, स्थिति बहुत ही बुरी हैं । जर्मनी में सल्फर डाईऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ जाने से १,३०,००० एकड़ वन सम्पदा नष्ट हो रही है और उससे २१०००००० वार्षिक की क्षति हो रही है । स्विट्जरलैंड में इन दिनों कपड़ा मिलों की संख्या चौगुनी हो गई है । फलस्वरूप स्विस झीलों की स्थिति भयावह बन गई है । इन बीस वर्षों में उनमे फॉस्फेट १० गुना और प्लवक ३० गुना बढ़ गया है ।

जर्मनी के फेडरल रिपब्लिक में हिसाब लगाया गया है कि उस देश के उद्योग हर साल २ करोड़ टन विषाक्त द्रव्य हवा में उड़ाते हैं । इनमें कोयले की गैस, तेल की गैस तथा जमीन खोदकर इन पदार्थों को निकालते समय उड़ने वाली गैसें मुख्य हैं । कार्बन मोनोक्साइड २० लाख टन, सल्फ्यूरिक ऑक्साइड २५ लाख टन और हाइड्रोकार्बन की २५ लाख टन मात्रा धूलि बनकर आसमान में उड़ती है और उसकी प्रतिक्रिया प्राणियों के लिये विघातक होती है ।

भारत की केन्द्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य इन्जीनियरिंग अनुसन्धान संस्था के निर्देशक प्रो० एस०जे० आरसी वीना के अनुसार भारत में पश्चिमी देशों की तुलना में मोटरों की संख्या तो कम है, पर धुएँ की मात्रा लगभग एकसमान है । कलकत्ता के सर्वेक्षण से पता चला कि यहाँ के वायुमंडल में कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस की मात्रा ३५ है जब कि न्यूयार्क में २७ है । इसका कारण पुरानी और भोंड़ी बनावट की मोटरों द्वारा अधिक धुआँ फेंकना है । कारखाने की चिमनियाँ भी घटिया कोयला जलाती हैं और सफाई के संयन्त्र न लगाकर वायु विषाक्त के अनुपात में और भी अधिक वृद्धि करती हैं ।

''ड्राइव मैगजीन'' के फरवरी ६७ अंक में दिये आँकड़ो के अनुसार एक कार सात साल में इतना धुआँ उगल डालती है कि उसके कार्बन डाईऑक्साइड से ईसाइयों के प्रसिद्ध गिरजाघर सेंटपाल का गुम्बद दो बार, मोनो ऑक्साइड से तीन कमरों वाले बँगले को नौ बार, नाइट्रोजन से एक डबल डैकर बस दो बार भरा जा सकता है । इस सात वर्ष की गैस को छानकर यदि उसका सीसा (लैड) काढ़ा (एक्स्ट्रेक्ट) कर लिया जाये तो वह एक गोताखोर के सीने को ढँकने के लिये पर्याप्त होगा ।

यह नाप-तौल तो एक कार से उत्पन्न विषवर्द्धक धुयें की है । जबकि अकेले इँग्लैण्ड में डेढ़ करोड़ मोटर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गाड़ियाँ हैं । १९८० तक इनकी संख्या साढ़े चार करोड़ तक हो जाने का अनुमान था । अमरीका के पास कारों की संख्या इँग्लैण्ड से बहुत अधिक है । कहते हैं १२ सेकण्ड में अमरीका में एक बच्चा पैदा हो जाता है जबकि यहाँ कारों का उत्पादन इतना अधिक है कि एक कार हर पाँच सेकण्ड बाद तैयार हो जाती है । अपने संगठन परिवार के एक सदस्य श्री आनन्द प्रकाश इन दिनों अमरीका के टैक्सास राज्य में ह्यूस्टन नगर (यही नासा स्पेस रिसर्च सेन्टर है जहाँ से अन्तरिक्ष के लिये केप कैनेडी से अन्तरिक्ष यान उड़ते हैं) के एक मस्तिष्क एवं तन्तुज्ञान प्रयोगशाला में शोध-कार्य कर रहे हैं । अमेरिका सम्बन्धी तथ्यों की उनसे सदैव जानकारी मिलती रहती है । २६-१२-६९ के पत्र में उन्होंने लिखा है—यहाँ कारों की संख्या बहुत अधिक है और उनकी संख्या इस गति से बढ़ रही है कि प्रत्येक २० कारों में एक नई कार अवश्य होगी । यातायात की इस वृद्धि पर चिन्ता करते हुए २६ जनवरी ६९ के "सण्डे स्टैन्डर्ड ने लिखा है कि पिछले वर्ष केवल अमरीका के न्यूयार्क शहर में गैर जहाजों के धुयें में ३६००००० टन की वृद्धि हुई है ।

२७ जुलाई १९६७ के एक प्रसारण में बी०बी०सी० लन्दन ने बताया कि लन्दन में यातायात की वृद्धि यहाँ तक हो गई है कि कई बार ट्रेफिक रुक जाने से १७-१७ मील की सड़कें जाम हो जाती हैं । यहां के सिपाहियों को जो ट्रेफिक पर नियन्त्रण करते हैं अन्य वस्त्रों के साथ मुँह पर एक विशेष प्रकार का नकाब (मास्क) भी पहनना पड़ता है, यदि वे ऐसा न करें तो उन सड़कों पर उड़ रहे मोटरों के धुयें में ५ घण्टे खड़ा रहना कठिन हो जाये । इन क्षेत्रों में स्थायी निवास करने वालों के स्वास्थ्य मनोदशा और स्नायविक दुर्बलता के बारे में तो कहा ही क्या जा सकता है । आज सारे इंग्लैण्ड में इतना अधिक धुआँ छा गया है कि वहाँ की प्रतिवर्ग मीटर भूमि पर प्रति वर्ष एक किलोग्राम राख जमा हो जाती है ।

मोटरें, इंजन मिल और फैक्टरियाँ अकेले इंग्लैण्ड और अमरीका में ही नहीं सारी दुनिया में हैं और बढ़ रही हैं । सन् १९०० की जाँच के अनुसार सारे संसार में पहले ही २६०००००००००० टन कार्बन गैस छा गई थी अब उसकी मात्रा बीस गुने से भी अधिक है । रेडियो विकिरण का दुष्प्रभाव उससे अतिरिक्त है । धुयें का यह उमड़ता हुआ बादल एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब सारी पृथ्वी को ही मृत्यु घाटी की तरह गर्म और ऐसा बना दे कि यहाँ किसी के भी रहने योग्य वातावरण न रह जाये । बहुत होगा तो पेड़-पौधे खड़े उस धुयें की पी रहे होंगे, मनुष्य तो लुप्त-जीवी की श्रेणी में पहुँच चुका होगा ।

कल-कारखाने रेलवे इन्जन, ताप बिजलीघर, मोटरें, वायुयान इनकी संख्या द्रुतगति से बढ़ती जा रही है । इनमें जलने वाले पेट्रोल, डीजल,कोयले से निकलने वाली कार्बन मोनो ऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड जैसी भयंकर गैसें वायुमंडल को दिन-दिन अधिक विषाक्त करती जा रही हैं । नगरों की बढ़ती हुई जनसंख्या, वहनों की धमाचौकड़ी, कारखानों की कमी आदि कारणों से हवा में हानिकारक तत्वों का परिमाण बढ़ता ही चला जा रहा है । धूलि एवं धुयें में इनका बाहुल्य रहता है। साँस के साथ वे शरीर में प्रवेश करते हैं और उन्हें दुर्बल एवं रुग्ण बनाते चले जाते हैं ।

अकेले दिल्ली नगर की रिपोर्ट यह है कि वहाँ ट्रक, बस, मोटर आदि के साइलेन्सर प्रतिदिन २० हजार पौंड से भी ज्यादा सल्फर डाइ ऑक्साइड गैस हवा में फेंकते हैं । अकेला ताप बिजलीघर ९५ पौंड ऐसी गैस नित्य पैदा करता है जो शरीर के लिये ही नहीं इमारतों और लोहे के पुलों के लिये भी हानिकारक है । आगरे का ताजमहल उस नगर की गैसों के कारण गलता चला जा रहा है । उसे देर तक सुरक्षित रखने के लिये ऐसे घोल पोतने की बात सोची जा रही है जिससे उस सुन्दर संगमरमर का क्षरण रोका जा सके ।

कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस यदि हवा में सात सौवें भाग में होगी तो उसमें साँस लेने वाला मर जायगा । यदि उसका लाखवाँ भाग होगा तो उस क्षेत्र के प्राणी बीमार पड़ जायेंगे ।

औद्योगिक शहरों के ऊपर छाई धुन्ध कभी भी देखी जा सकती है । उसमें कार्बन, सल्फेट, नाइट्रेट, सीसा हाइड्रोकार्बन के योगिकों की भरमार रहती है । धूलि और धुआँ मिलकर एक ऐसी स्मॉग चादर तानते हैं जिसके नीचे रहने वाले न केवल मनुष्यों का वरन् पेड-पौधों का

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी दम घुटने लगता है । उनका स्वाभाविक विकास बुरी तरह अवरुद्ध हो जाता है ।

औद्योगिक कारखाने निरन्तर कार्बन डाइ ऑक्साइड, सल्फ्र ऑक्साइड, क्लोरीन, जली हुई रबड़ जैसे लगभग ३००० प्रकार के विष उत्पन्न करते हैं । यह हवा में छा जाते हैं और उस प्रदेश में साँस लेने वालों को उसी हवा में साँस लेने के लिए विवश रहना पड़ता है । बेचारों को यथार्थता का पता भी नही चलता कि इन शहरों में दीखने वाली चमक-दमक के अतिरिक्त यहाँ वायु में विषाक्तता भी है जो उनके स्वास्थ्य की जड़ें निरन्तर खोखली करती चली जाती है ।

कारखानों से निकलकर हवा में सल्फर डाइ ऑक्साइड कार्बन मोनॉक्साइड, स्मॉग रिएक्टैन्ट कार्बनडाइ ऑक्साइड, ओजोन और बारीक कण मिलते हैं । साथ ही कार्बन कण, सीसे के कण, धातुओं वाले कारखानों से धातु कण आदि भी शमिल होते रहते हैं ।

सल्फर डाइ ऑक्साइड गैस से एम्फीसिमा, हृदय रोग आदि हो जाते हैं । हवा नम हुई तो इसी गैस से सल्फ्यूरिक अम्ल बन जाता है जो भवनों और वनस्पतियों को क्षति पहुँचाता है तथा फौलाद को भी बरबाद कर देता है ।

कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस रक्त के हीमोग्लोबो में मिलकर रक्त की ऑक्सीजन धारण क्षमता में कमी ला देती है । इससे मोटर चलाते समय थकान आ जाती है । दुर्बलता बढ़ती और सिर चकराने की घटनाएँ भी इससे बढ़ जाती हैं ।

फिर इन जहरीली गैसों से धुएँ के धुन्ध बनते हैं, जिससे कैंसर, श्वसन तन्त्र के विभिन्न रोग, हृदय रोग आदि फैलते हैं । ओजोन से वनस्पति क्षतिग्रस्त होती हैं । बारीक कणों से वस्तुएँ मैली हो जाती हैं, आँखों की देखने की शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और श्वसन-तन्त्र में विकार आता है । इंजनों में धक्के करने के लिए पैट्रोल में सीसा-मिलाया जाता है किन्तु उसके कारण जो जहरीला धुँआ उत्पन्न होता है, उससे वायु-मण्डल की विषाक्तता दिन-दिन बढ़ती जा रही है ।

वायु में धुएँ के बढ़ने का अर्थ होता है उसकी कीटाणुनाशक शक्ति का नाश । स्पष्ट है वायु में कीटाणुओं को मारने वाली क्षमता नष्ट होगी तो कीटाणु भारी मात्रा में बढ़ेंगे और कृषि नष्ट करेंगे । अमेरिका के सबसे अधिक वायु प्रदूषण वाले इन क्षेत्रों में कृषि कीटाणुओं की यहाँ तक भरमार पाई जाती है कि कभी किसी खेत में कीटाणुनाशक औषधि न पहुँचे तो उससे एक दाना भी बचकर न आये । डी०डी०टी० जैसी कीटाणुनाशक दवाओं का प्रयोग से अन्न विषैला बनता है, दोनों ही समस्यायें भयंकर हैं उनसे बचाव का एक ही उपाय है धुआँ बढ़ाने वाले उद्योगों का स्थान लघुकुटीर उद्योग और हस्तशिल्प ले लें तथा यज्ञों का विस्तार न केवल भारतवर्ष वरन् सारे विश्व में किया जाये ।

कैलीफोर्निया में धुएँ के कुहरे से १५ मिलियन (१ करोड़ ५० लाख रुपये) डालर्स की फसलों को प्रत्यक्ष नुकसान पहुँचता है, अप्रत्यक्ष क्षति १३२ मिलियन डालर आँकी गई है यही समस्या अन्य राज्यों में भी है ।

जान टी० मिडिल्टन, डाइरेक्टर यूनिवर्सिटी स्टेटवाइड एअर पोलूजन रिसर्च सेन्टर) का कहना है कि फोटो केमिकल्स वाले वायु दूषण से सभी २७ स्टेट्स प्रभावित हुई है, पर कोलम्बिया के कुछ जिले सर्वाधिक । इनकी फसलें तो पिछले दिनों नष्ट होते-होते बचीं । इसके अतिरिक्त डस्ट पार्टीकल्स, ठोस और द्रव केमिकल्स जिनमें तेल और कोयला मिला होता है उनसे सम्मिश्रित कोहरा भी फसलों को प्रभावित करता है । गैसों से हुआ वायु प्रदूषण जिनमें हाइड्रोकार्बन्स नाइट्रोजन ऑक्साइड, फ्लोरिड्स सल्फर डाइऑक्साइड शमिल हैं वह भी फसलों को नष्ट करता है । सूडान घास शकर के कणों, दालें पान अलफाफा ओट्स, मूँगफली, एप्रिकाट, सिटरस, अंगूर प्लम्बस अर्चिट्रस पेटू नियस, स्पैन ड्रेगन्स लार्कस और रे ग्रास की जाँच करने पर पता चला है कि वे वायु प्रदूषण से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं । यदि इनको इससे न बचाया जा सका तो एक दिन वह आ सकता है कि जब ये पूरी तरह विषाक्त होने लगेंगे और इनको अन्य कडुये जंगली फलों के समान अखाद्य मान लिया जायेगा ।

कारखानों और वाहनों में जितना ईंधन इन दिनों जलाया जा रहा है और उसमें जितनी अतिरिक्त गर्मी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न हो रही है उसका संकट कम करके नहीं आँका जाना चाहिए । वर्तमान क्रम चलता रहा तो आगामी २५ वर्षों में वातावरण में कार्बन डाइ ऑक्साइड की मात्रा अत्यधिक बढ़ जायेगी और उसकी गर्मी से ध्रुव प्रदेशों की बर्फ तेजी से पिघलने लग जायगी । इसका प्रभाव समुद्र तल ऊँचा उठने के रूप में सामने आता जायगा और वह क्रम यथावत चला तो सारी बर्फ गल जाने पर समुद्र का जल लगभग ४०० फुट ऊँचा उठ जायगा और वह संकट धरती का प्रायः आधा भाग पानी में डुबा कर रख देगा । यह आज के क्रम से बढ़ते हुए समुद्री संकट को २५ वर्ष बाद ही उत्पन्न करना आरम्भ कर देगा और ४०० वर्षों में वह संकट उत्पन्न हो जायगा, जिसके कारण आज के वैज्ञानिक उत्साह को मानवी विनाश के लिए उदय हुआ अभिशाप ही माना जाने लगेगा ।

शहरों में सड़कों पर दौड़ने वाले द्रुतगामी वाहन, बिजली का प्रयोग, थोड़ी जगह में अधिक मात्रा में जलने वाली आग, घिच-पिच में श्वाँस तथा शरीरों की गर्मी, कल-कारखाने आदि कारणों से तापमान ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ा रहता है । बिजली के पंखे तापमान नहीं गिराते केवल हवा को इधर से उधर घुमाते हैं, चुस्त एवं एक के ऊपर एक कपड़े लादने के फैशन ने शरीरों के इर्द-गिर्द की गर्मी और भी अधिक बढ़ा दी है । सड़कों और बसों की धमस से गर्मी बढ़ी-चढ़ी रहती है । पक्के मकान और पत्थर की सड़कों में तपन रहती ही है । इस बढ़े हुए तापमान में शहरों के निवासी अपनी स्वाभाविक शरीरिक क्षमता को गँवाते चले जा रहे हैं ।

बढ़ते हुए वायु प्रदूषण का परिणाम यह हो सकता है कि पिछले हिम युग की तरह फिर एक हिम युग सामने आ खड़ा हो और लम्बी अवधि के लिए धरती का एक बड़ा भाग प्राणियों के रहने योग्य न रहे । उस पर प्रचण्ड शीत की सत्ता स्थापित हुई दीखने लगे ।

इस तरह से अनेकानेक सम्भावनायें कूती जा रही हैं पता नही कौन सी सच हो ? पर इतना निश्चित है कि यह प्रदूषण मानवीय स्वास्थ्य को बर्बाद करके ही रहेगा। जब स्वच्छ हवा नहीं मिलेगी तो हर श्वाँस के साथ गन्दगी ही नही विष शरीर में जाएगा तो स्वास्थ्य कहाँ से बचेगा ? जीवन कैसे सुरक्षित रह सकेगा ?

कैसे बुझेगी प्यास ? पानी तो मिलेगा नहीं

वायु प्रदूषण के समान ही जल प्रदूषण भी आधुनिक युग की देन है । कहा जा चुका है कि जीवन निर्वाह के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं के क्रम में जल का स्थान दूसरे नम्बर पर आता है । वेदों में जल को अमृत कहा गया है ।

जल के महत्त्व को भारत ही नहीं विश्व के सभी देश और वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं । फिनलैण्ड में हजारों वर्ष में शनिवार के दिन सामूहिक स्नान करने की प्रथा है । बड़े घरों में लोग गृह वाटिकाओं में तालाब रखते हैं । जर्मन में कटि स्नान और जल चिकित्सा को व्यापक महत्त्व दिया गया है । वहाँ के वैज्ञानिक ब्राण्ड लीभर मीस्टर तथा जीम सीन ने जल चिकित्सा पर शोध की और उसे बहुत लाभकारी बताया जिससे वहाँ जल-चिकित्सा का सर्वत्र प्रसार हुआ। कुछ तो गाँव के गाँव ऐसे हैं जहाँ घर-घर जल चिकित्सा होती है । अमेरिका के फिलाडेलिफिया न्यूयार्क, वर्जीनिया विन्टरनीज ने अपने यहाँ जल-चिकित्सा के क्लास चलाये । रोम, जापान, चेकोस्लोवाकिया में प्राकृतिक झरनों आदि में स्नान का प्रचलन है । वहाँ स्नान पर वैज्ञानिक खोजें हुई हैं । भारतवर्ष में तीर्थों के महत्त्व के साथ वहाँ स्नान का महत्त्व अनिवार्य रूप से जुड़ा है । गंगाजी का जल तो अमृत की तरह पूज्य माना गया है । यह सब देखते हुए उसे प्राणियों का प्राण कहा जाये तो उसमें जरा भी अत्युक्ति नहीं । आयुर्वेद का कथन है—प्रातः काल सोकर उठते ही एक गिलास शीतल जल पीने वाला सदैव नीरोग रहता है, मस्तिष्क शीतल, पेट का पाचन संस्थान मजबूत, आँखों में चमक रहती है । शुद्ध जल मनुष्य का जीवन है, उसके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता है ।

खेद है कि जल को इतना अधिक महत्त्व देते और उसकी शुद्धता को अनिवार्य मानने वाली मनुष्य जाति ही आज उसे गन्दा करके स्वयं भी नष्ट होने, बीमार और चिररोगी होने के सरंजाम जुटा रही है । अमेरिका के प्रसिद्ध विचारक भी आर्थर गाडफ्रे एक स्मरण में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिखते हैं— मैं उन दिनों हेसब्राडक हाइट्स में पढ़ने जाता था । उन दिनों न्यूजर्सी में सैडिल नदी के तट पर पहला कारखाना लगा था, कारखाने की कीचड़ बदबू इस तरह से उस पर गिरती थी कि हम लोग स्नान नहीं कर सकते थे । स्वार्थी और पेटार्थी लोगों ने हमारे निवेदन को नहीं सुना था और अब तो पैसाइक, हैकेनसैक खाड़ी, हडसन सारी नदियाँ नरक कुण्ड बन गई हैं, सारा जल दूषित हो गया । मनुष्य जाति जल को दूषित कर आत्मघात की तरह स्वयं रोगी बनने जा रही है, इसे उसकी भूल नहीं मूर्खता ही कहा जा सकता है ।

वायु प्रदूषण के समान आज जल प्रदूषण भी संसार के सामने एक महगी समस्या बन गया है । अधिकांश शहर नदियों के तट पर बसे होते हैं । भारी उद्योग शहरों में ही होते हैं । कनाडा आदि देशों में तो हाइपीरिन जैसे टैंक भी बनाये गये हैं जो शहरों का मल और गन्दगी को साफ कर देते हैं । केवल शुद्ध किया हुआ जल ही नदियों में गिरने देते हैं किन्तु भारतवर्ष में तो शहरों के लाखों लोगों का मल-मूत्र भी नदियों में ही गिराया जाता है । गंगा आदिकाल से हमारी संस्कृति का अंग है । वर्ष की १२ अमावस्याओं के स्नान तो निश्चित ही हैं, पर्व और त्यौहार अलग रहे जिनमें आज भी करोड़ों लोग स्नान करते और बर्तनों में जल भर ले जाते है, वे आज अधिकांश मल-मूत्र का प्रवाह हो गई हैं । ऋषिकेश के एण्टीबायोटिक कारखाने से लेकर कलकत्ते तक उसमें कितना मैला, कूड़ा-कचरा गिरता है उसकी याद करने मात्र से जी सिहर उठता है और लगता है आज सचमुच ही गन्दगी की दृष्टि से दुनिया नरक हो गई है ।

किसी समय अमेरिका के सुन्दर झरने जो अपनी प्राकृतिक छटा के कारण प्रकृति प्रेमियों का मन ललचाते थे और लोग वहाँ कुछ समय बिताकर शान्ति प्राप्त करने के लिए जाया करते थे , अब उनके किनारों पर बड़े-बड़े सूचना बोर्ड लगे हैं—डेन्जर,पोल्यूटेड वाटर ? नो स्वीमिंग, खबरदार पानी जहरीला है, इसमें तैरिये मत! औद्योगिक नगरों के निकटवर्ती सरोवर एक प्रकार से मृतक संज्ञा में गिने जाते हैं । उनका पानी किसी के उपयोग में नहीं आता । नदियाँ अब गन्दगी बहाने वाली गटरें भर रह गई हैं । राइन नदी को यूरोप का गटर कहा जाता है ।

रसायन विशेषज्ञ नारवल्ड डफिमराइट ने नॉर्वे की सेन्ट पलेयर झील से पकड़ी गई मछलियों का रासायनिक विश्लेषण किया तो पारे की खतरनाक मात्रा पाई गई । मछलियों मे पारा कहाँ से आया ? अधिक बारीकी से पता लगाया तो मालूम हुआ कि औद्यागिक रसायनों में पारे की भी एक बड़ी मात्रा होती है और वह गन्दगी के रूप में बहती हुई झीलों में पहुँचती है । सोचा यह गया था कि पारा भारी होने के कारण जल की तली में बैठ जायेगा । कुछ मछलियाँ यदि पारे से मर भी गई तो कुछ विशेष हानि न होगी, पर वह अनुमान गलत निकला ।

शोधों ने बताया कि जल में पहुँच कर पारे की रासायनिक प्रतिक्रिया होती है । उसकी सूक्ष्म मात्रा जीवकणों में प्रवेश कर जाती है । इन्हें छोटे कीड़े खाते हैं और वे मछलियों की खुराक बनते हैं, इस प्रकार पारे की रासायनिक प्रतिक्रिया मछली के माँस में एक इकाई बन कर बस जाती है । विश्लेषण कर्त्ताओं ने बताया है कि इस प्रकार की पारा प्रभावित मछलियों को खाने वाले मनुष्य अन्धे या पागल हो सकते हैं और विशेष परिस्थितियों में तो वे मर भी सकते हैं ।

पारे की भाँति कुछ और भी ऐसे ही रसायन हैं जिनका खतरा कम नहीं कुछ ज्यादा ही है । उन्हें भी उद्योगों में भरपूर मात्रा में प्रयोग किया जाता है और उनका कचरा भी जल प्रदूषण में अग्रणी ही रहता है । डार्ट माउथ मेडीकल कालेज के डाक्टर हेनरी श्रुडर ने अमेरिकी प्रशासन को चेतावनी दी है कि सीसा, कैडमियम, निकिल कार्बोनिल जैसे पदार्थ भी कम घातक नहीं हैं । इनका प्रयोग इन दिनों बहुत चल पड़ा है । इनकी अति सूक्ष्म मात्रा भी रक्तचाप एवं फेफड़े का केन्सर उत्पन्न कर सकती है ।

अमेरिका में कचरा वृद्धि का एक और कारण है । वहाँ ४८ अरब डिब्बे, २८ अरब बोतलें, १० करोड़ टायर, ७० लाख मोटर गाड़ियाँ हर साल कचरा बन जाती हैं। इसी तरह की और भी बहुत सी चीजें हैं जिनको रद्दी हो जाने के बाद कचरा ही बनना पड़ता है और फिर उसे समुद्र में पटक दिया जाता है । फलतः यह कूड़ा समुद्र तट के किनारे को खतरा बनता जा रहा है। इस कचरे में गन्दगी जड़ जमाती है और फिर समीपवर्ती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र के लिए विपत्ति खड़ी करती है । थोडा इस्तेमाल करों। फेंक दो और नया खरीदो का नारा उस देश को विलासिता और समृद्धि बढ़ाने में कितना सहायक सिद्ध हुआ यह तो समय ही बतायेगा, पर उससे कचरे में असाधारण वृद्धि हुई है । लोग अपनी पुरानी मोटरों के प्लेट उतार कर कही यों ही छोड़ जाते है । कारों के कब्रिस्तान हर जगह मौजूद मिलेंगे, डिब्बे और बोतलों को कोई उठाता तक नहीं । इस समस्या से क्षुब्ध जनता ने अर्थ डे मनाया और यह कचरा उनके बनाने वाली फैक्ट्रियों के दरवाजे पर पटक कर पहाड़ लगा दिये और माँग की कि बनाने के साथ-साथ इनके रद्दी होने पर उनका कचरा उठाने की जिम्मेदारी भी वे ही लें।

पानी में ऑक्सीजन की मात्रा घट जाने पर विषाक्त तत्वों के बढ़ जाने से वहाँ वृक्ष-वनस्पति विषैले होकर मर रहे हैं । बादलों में भी यह विष मिल जाता है और फिर जहरीली वर्षा के रूप में बरसता है, उससे पक्षी और पौधे दोनों ही झुलसते देखे गये हैं । मछलियाँ मरती, घटती जा रही है । जो उन्हें खाते है वे बीमार पड़ते हैं । अब वहाँ जहरीली मछलियों की एक नई जाति विकसित हो रही है जिसे कार्प कहते हैं । इसने जहर भरे पानी में रहना और जीना तो सीख लिया है, पर मच्छीमारों के लिए तो ये किसी काम की नहीं रहीं ।

अमेरिका में हर साल ७० लाख मोटरें तथा १० करोड़ टायर कचरा बन जाते है । वहाँ बीस करोड़ लोगों के पीछे ८॥ करोड़ मोटर हैं । अकेले लॉस ऐंजलिस नगर में ही २० लाख आबादी में १० लाख मोटरें हैं । वहाँ नई मोटर ३०० डालर की मिल जाती है । ऐसी दशा में पुरानी गाड़ियों की मरम्मत महँगी पड़ती है । पुरानी होते ही उन्हें कूड़े में फेंक दिया जाता है । यही हाल मोटर साइकिलों तथा दूसरी मशीनों का है । यह कचरा कहाँ फेंका जाता रहेगा यह प्रश्न उस देश की सरकार के लिए सिरदर्द बना हुआ है । फिलहाल तो यह कबाड़ समुद्र में गिराया जा रहा है, पर वह भी तो यह पहाड़ गिरते-गिरते पटने ही लगेगा । समुद्र तटों का तो अभी भी बुरा हाल है । वहाँ इस कचरे की सढ़ाध निकट भविष्य में किसी बड़े स्वास्थ्य संकट का कारण बन सकती है ।

सागर अन्तराल के शोधकर्ता जेक्वीस वाइवस ने समुद्र में बढ़ती हुई अशुद्धता को शोचनीय स्थिति में पाया है और जल दूषण से समुद्रों की उपायोगिता नष्ट होने की आशंका व्यक्त की है । उन्होंने तेल कणों तथा दूसरे विषाक्त रासयनों की मात्रा बढ़ जाने के फलस्वरूप विगत २० वर्षों में ४० प्रतिशत जल जन्तुओं के मर जाने का हिसाब लगाया है । उनका कथन है कि मछलियाँ ही नहीं, वनस्पतियाँ भी समुद्र तल से गायब होती चली जा रही हैं ।

कीटाणु नाशक दवाओं में क्लोरीन जैसे पदार्थों का उत्पादन इन दिनों ५० लाख टन से अधिक है । उसकी स्वल्प मात्रा से ही चूहे जैसे छोटे जीव तत्काल मर जाते हैं । वह विष पदार्थ जलवायु में मिलकर इतना व्यापक होता जा रहा है कि ध्रुव प्रदेश के निवासी मनुष्यों और पक्षियों तक के शरीर में वह तत्व पाया गया है ।

कारखानों की गन्दगी घूम-फिर कर नदी-नालों में होती हुई अन्ततः समुद्र में जा पहुँचती हैं । वृक्ष वनस्पतियों पर छिड़के जाने वाले कृमिनाशक विष भी वर्षा जल के साथ समुद्र में ही जा पहुँचते हैं । अणु भट्टियों की राख को भी समुद्र में ही प्रश्रय मिलता है । समुद्र विशाल भले ही हो, असीम नहीं है । विष को पचाने की उसकी भी एक सीमा है । वह मात्रा जब बढ़ रही हो तो समुद्र का विषाक्त होना स्वाभाविक है । जमीन की तरह उस जल राशि में भी वनस्पतियाँ हैं, इन तैरने वाली वनस्पतियों से जल जगत् के लिए आवश्यक प्राण वायु उपलब्ध होती है । पृथ्वी पर फैली पड़ी प्राण वायु का एक बहुत बड़ा अंश इन जल वनस्पतियों—फिटो प्लैंकटीन—से ही मिलता है, समुद्र का जल जैसे-जैसे विषाक्त होता जाता है इन वनस्पतियों का नाश होता जाता है और फलस्वरूप जल जन्तुओं के लिए ही नहीं धरती पर रहने वालों के लिए भी प्राण संकट उत्पन्न हो रहा है ।

समुद्र का जल ही बादल बनकर सर्वत्र बरसता है। बादलों में वह विष घुला रहता है और विषैली वर्षा का जल पीकर उगी हुई वनस्पति भी वैसी ही बनती जाती है । उस घास पर पलने वाले पशुओं का दूध और माँस दोनों ही अभक्ष स्तर के बनने लगे हैं । अन्न और शाक, फलों में वे अवांछनीय तत्व बढ़ कर मानव शरीरों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी वे आरोग्य नष्ट करने वाली परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रहे है ।

फिनलैंड के हेलसिंकी क्षेत्र का समीपवर्ती पानी, पीने के लायक नहीं रहा इसलिए १६० मील दूर से अच्छा पानी लाने का प्रबन्ध करना पड़ा है । साइप्रस के समीपवर्ती समुद्र जल में प्रदूषण भर जाने से उसका पर्यटन उद्योग ठप्प होता चला जा रहा है । नीदरलैण्ड भी इसी मुश्किल में फँसता चला जा रहा है । उन्होंने सुझाव दिया है कि जहाँ भी बड़े कारखाने खड़े किये जायें वहाँ प्रदूषण की शुद्धि के लिए कम से कम तीन प्रतिशत पूँजी अलग से रखी जाय अन्यथा आज की औद्योगिक प्रगति कल एक भयंकर संकट बनकर सामने आयेगी ।

''शौ डाउन फार वाटर'' नामक जल प्रदूषण (वाटर पोलूशन) पुस्तिका में अमेरिका ने इस समस्या को अत्यन्त जटिल, परेशान करने वाली और वर्तमान अस्त्र-शस्त्रों से भी भयंकर बताया है और लिखा है कि उस समस्या के लिए किये जा रहे प्रयत्नों से कई गुना वह और भी जटिल होती जा रही है ।

अमेरिका ने १९६५ और १९६६ में ऐसे कानून भी बनाये है, पर विज्ञान और भारी उद्योगों के विकास के पागलपन के आगे लाखों को मारने और करोड़ों को बीमार बनाने वाली इस मामूली (?) सी समस्या पर कौन ध्यान दे कौन सोचे ?

इंग्लैण्ड में साबुन, फिनाइल, डी०डी०टी० और केवल कीटाणुनाशक औषाधियों के निर्माण से ४५ करोड़ गैलन पानी दूषित होता है जो बाद में घरों में इस्तेमाल किया जाता है । यही जल जब समुद्र में पहुँचता है तो उसमें से झाग उठने लगते हैं, उसे देखकर कोई भी अनुमान कर सकता है कि यह जल या केवल मात्र गन्दगी बहकर आई । अमेरिका में इंग्लैण्ड से चार गुना अधिक जल नागरिक प्रयोग में आता है । कम-ज्यादा संसार के सभी देश ऐसी गन्दगी निकालते हैं यह सारी ही समुद्र में जाती है । अमेरिका अपने यहाँ की रद्दी समुद्र में झोंक रहा है, अभी कुछ ही दिन पूर्व उसने १४४० प्राण घातक नर्व गैसों के रैकेट भर-कर फ्लोरिडा के पास समुद्र में फेंके हैं । यह दूषण जहाँ जल का ऑक्सीजन नष्ट करता है वहाँ समुद्र का सन्तुलन बनाये रखने वाले जीव-जन्तुओं और पौधों को भी मारता है । उससे समुद्र की शोभा नष्ट होने की हानि उतनी गम्भीर नहीं जितनी उसके अमर्यादित होने की । अगले दिनों समुद्र के भीषण उत्पात मनुष्य जाति को तंग कर सकते हैं । गन्दगी मिले जल की भाप भी दूषित होगी, मेघ दूषित होंगे, तब फिर जो वर्षा होगी वह रोगों की वर्षा होगी । उसका प्रभाव सीधे भी मनुष्य जाति के स्वास्थ्य पर पड़ेगा और फसलों के द्वारा भी ।

जल प्रदूषण के कुछ भयंकर दुष्परिणाम

टोरीकेन्यन नामक एक तेल वाहक समुद्री जहाज ब्रिटेन के पास से गुजर रहा था, १८ मार्च १९६७ के दिन जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उसका ३०००० टन तेल समुद्र में गिर गया और देखते-देखते १८ मील क्षेत्र में फैल गया । हवा के झोकों और समुद्री तरंगों के कारण शीघ्र ही वह १०० वर्ग मील क्षेत्र को प्रभावित करने लगा । वही दूषित जल कुछ दिन बाद फ्रांस के तट तक जा पहुँचा । अब मौतें प्रारम्भ होती हैं— अप्रैल १९७० में अलास्का तट अमेरिका के पास जल प्रदूषण से हजारों पक्षी, समुद्री सिंह और हेल मछलियाँ मरी पाई गई । ४०० सीलों का झुण्ड इस तेल दूषण की चपेट में आकर जान गँवा बैठा । हजारों समुद्री वृक्ष नष्ट हो गये ।

दिल्ली में दस से भी अधिक गन्दे नाले यमुना नदी में गिरते हैं । कुछ दिन पूर्व बजीराबाद और ओखला के बीच हजारों मछलियाँ इस गन्दगी से मरी पाई गई । इन मछलियों का व्यावसायिक मूल्य ६ लाख रुपया आँका गया । १९५६ में जल की समस्या गंभार हो गई, सारी दिल्ली में पीलिया रोग ने भयंकर रूप धारण कर लिया । सन् १९७० में भयंकर पीलिया होते-होते बचा उसके बाद माडल टाउन के पीछे झील में हजारों मछलियाँ मरी पाई गई । उनकी सड़न एक समस्या बन गई ।

गंगाजी के तट पर बसे मुंगेर (बिहार) में पेट्रोल के गंगा नदी में बह जाने के कारण गंगाजी के जल में ५० मील दूर तक आग लग गई । पानी में आग की लपटें उठने लगीं, लोग आश्चर्य और भय से इस काण्ड को देखते रहे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह सब इस बात के प्रमाण हैं कि मानवीय सभ्यता ने अपने जीवन के आधार जल को किस-किस तरह दूषित किया है उसके क्या दुष्परिणाम अब तक आगे आ गये हैं और भविष्य कितना अन्धकारपूर्ण है । विनाश की इस काली घटा को मात्र दर्शन के रूप में नहीं देखना चाहिए । अपितु दुर्बुद्धि रावण की काली पाटी से बँधे वरुण देव की मुक्ति (शुद्धि) के उपायों पर भी विचार करना चाहिए अन्यथा उसके घातक दुष्परिणाम प्रस्तुत हो सकते हैं ।

ओहियो अनुसन्धान परिषद ने फ्लोराइड मिश्रित जल की खामियों को जन-साधारण के सामने प्रस्तुत किया है और अपने शोध निष्कर्षों को डेलीमेल-सण्डे डिस्पैच आदि पत्रों में छपवाया है जिसमें उसे प्रयुक्त न करने का परामर्श दिया गया है ।

अमेरिका की कितनी ही स्वास्थ्य संस्थाओं का एक संयुक्त विरोध सरकार के तथा जनता के सामने प्रस्तुत किया गया था जिसमें उस संयुक्त मोर्चे के अध्यक्ष जे० मेककारलेल फोर्ब्स ने 'स्काट्समैन' आदि पत्रों में विस्तारपूर्वक मिश्रित जल की खामियाँ गिनाई थीं और कहा गया था कि शोधन के नाम पर विषाक्तता का समावेश होता है ।

न्यूवर्ग में फ्लोराइड सहित और किंग्स्टन में उससे रहित पानी देकर उसके परिणामों की जाँच की गई । उसका विवरण ''पेनग्विन साइन्स न्यूज'' पत्रिका में छपा। जिसमें बताया गया कि रासायनिक जल से दाँतों की खराबियों ओर जोड़ों के दर्द की शिकायत उत्पन्न होती है ।

वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन के जिनेवा कार्यालय से प्रकाशित एक बुलेटिन में फ्लोरीन युक्त पानी के सम्बन्ध में कई ख्यातिनाम, स्वास्थ्य विशेषज्ञों के लेख छपे हैं । जिनमें प्रायः सभी ने इस रासायनिक सम्मिश्रण का विरोध किया है ।

पक्ष समर्थन में तो केवल एक ही लेख है—फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के रसायन प्रमुख ए०पी. ब्लैक का ।

जलशोधन के लिए नगरपालिकायें अक्सर पानी में फ्लोरीन मिलाती हैं । पानी में घोला हुआ यह सोडियम फ्लोराइड एक तीव्र रासायन है जो जल में पाये जाने वाले स्वाभाविक कैल्सियम फ्लोराइड की तुलना में ८५ गुना अधिक तीक्ष्ण है । शोधन के लिए प्रयुक्त किया गया यह रसायन एक मन्द विष के रूप में पीने वालों के शरीर में प्रवेश करता और जमता चला जाता है । आरम्भ में तो उसकी उतनी हानि प्रतीत नहीं होती, पर तीस चालीस वर्ष बाद उसके दुष्परिणाम कई मन्द और तीव्र रोगों के रूप में फूटने लगते हैं । इस तथ्य को समझते हुए स्वीडन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, आस्ट्रेलिया, स्विटजरलैंड आदि ने इस सम्मिश्रण को बन्द कर दिया है । अमेरिका के ५८० नगरों में भी इसे बन्द कर दिया है ।

वैज्ञानिक सफलतायें भी अन्य सफलताओं की तरह तब दुर्भाग्यपूर्ण बन जाती हैं, जब वे अत्युत्साह एवं अहंकार उत्पन्न करती हैं । कुछ के सफलताओं के कारण अपनी सर्वांगपूर्ण बुद्धिमत्ता का अभियान किया जाने लगता है और यह भुला दिया जाता है कि कुछ काम की कुछ सीमा तक मिली सफलता का अर्थ यह नहीं है कि अपना हर चिन्तन और हर प्रयास सही या सफल ही होगा । सफलता के लिए क्रिया ही काफी नहीं सर्तकता भी आवश्यक है । भूल न होने पाये—इस पक्ष को ध्यान में रखकर फूँक-फूँक कर कदम बढ़ाने की नीति यदि छोड़ दी जाय और जल्दी बाजी में कुछ भी कर गुजरा जाय तो ऐसे ही दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं जैसे कि जलशोधन सम्बन्धी प्रयास की त्रुटि के सन्दर्भ में सामने आ रहे हैं ।

यह विषाक्त भोजन मारे बिना नहीं छोड़ेगा

हवा और पानी के बाद यदि कुछ शुद्ध बचा था तो वह था अन्न, किन्तु अब अन्न भी कहाँ पौष्टिक और भरपूर शक्ति देने वाला रहा है । दुर्बुद्धि ग्रस्त प्राणी केवल दूसरों का अहित करे, ऐसा आज तक दुनियाँ में कहीं हुआ नहीं। अधिक उत्पादन की बात, जीवन की सामान्य आवश्यकताओं तक ही सीमित नहीं रही, अन्न तो और सब वस्तुओं से ज्यादा आवश्यक है इसलिये इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए भी बिना आगा-पीछा देखे ऐसे तरीके अपनाये जा रहे हैं जो अन्ततः हानिकर ही सिद्ध हैं । रासायनिक खादों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमि को उत्तेजित करके उससे अधिक कमाई करने की रीति-नीति अपनाई जा रही है । सोचा जा रहा है इस तरह अधिक पैदावार का लाभ उठाया जा सकेगा ।

जो प्रयोग हम आज करने चले हैं, उसे अमेरिका में बहुत पहले आजमाया जा चुका है । " जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक लाभ उठाने की नीति अपनाकर उन्होंने रासायनिक खादों का अन्धाधुन्ध उपयोग किया, कुछ समय तक उसके लाभ भी मिले पर अन्त में उस भूमि का अधिकांश भाग अपनी उर्वरा शक्ति खोकर बेकार हो गया ।

अमेरिका के कृषि विभाग की भूमि संरक्षक संस्था ने 'हमारी बची हुई भूमि' नामक एक पुस्तक छापकर उसमें रासायनिक खादों के द्वारा भूमि पर पड़ने वाले कुप्रभावों का विस्तृत वर्णन किया था । उसमें बहुत भयंकर आँकड़े थे । लगता है रासायनिक खादों के उत्पादनकर्त्ताओं के दवाब या अन्य किसी कारण से उस पुस्तक के दुबारा छपने का अवसर नहीं आया ।

उपर्युक्त पुस्तकों के तथ्यों की भयंकरता को घटाते हुए उस पुस्तक का एक सरल संस्करण 'हमारी उपजाऊ भूमि' के नाम से छपाया । यह पुस्तक एग्रीकल्चर इन्फार्मेशन बुलेटिन संख्या १०६ के क्रम से प्रकाशित है और १० सेन्ट मूल्य के गवर्मेंट प्रिंटिंग ऑफिस २५ ड० सी० से खरीद कर पढ़ी जा सकती है ।

इस पुस्तक में लिखित उद्धरणों से विदित होता है कि रासायनिक खादों के प्रभाव से अमेरिका की २८ करोड़ एकड़ जमीन बर्बाद हो गई । जो कि देश के इलीनाय, आइयोवा, मिसूरी, कन्यास, नेब्रास्का और वायोमिंग राज्यों की कुल जमीन के बराबर होती है । इसके अतिरिक्त कृषि योग्य चरागाह तथा जंगली ७७ करोड़ ५० लाख एकड़ भूमि और ऐसी है जिसका बहुत कुछ अंश बर्बाद हो चुका है, पुस्तिका में वर्णन है कि केवल ४६ करोड़ एकड़ उपयोगी जमीन अमेरिका के पास बची है । पेट भरने के लिए तो इतनी भी काफी है पर यदि इसे सँभालकर नहीं रखा गया और पिछली गलतियाँ दुहराई जाती रहीं तो हर साल आगे भी ५० लाख एकड़ जमीन बर्बाद होती चली जायेगी ।

फसलों पर कीटाणुनाशक घोलों के छिड़के जाने से कीटाणुओं तथा पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों से होने वाली हानि को बचाने की बात सोची जाती है और यह अनुमान किया जाता कि उससे फसल की बर्बादी बचेगी । इस प्रयोजन के लिए ऐसे विषाक्त कीटाणु नाशक रसायनों का उत्पादन भी तेजी से किया जा रहा है । डी०डी०टी० तथा दूसरे रसायनों की वृद्धि तेजी से हो भी रही है । पाराशियन सरीखे विष इसी प्रयोजन के लिए उत्पन्न किये जा रहे हैं । इनमें से कुछ औषाधियाँ तो 'नर्व गैस' सरीखी युद्ध में काम आने वाली भयंकर गैसों जैसी घातक होती हैं । पर हम भूल जाते हैं कि फसल, अन्न, आदि खाद्य पदार्थों पर छिड़के हुए यह विष उन खाद्यों में ही जा पहुँचते हैं । यह विषैलापन मात्रा में कितना ही न्यून क्यों न हो आखिर कुछ तो असर डालता ही है और थोड़ा-थोड़ा करके भी इतना अधिक हो जाता है कि उससे सामान्य स्वास्थ्य पर असर पड़ना नितांत स्वाभाविक है ।

अमेरिकन कृषि विभाग के अन्तर्गत 'एन्टोमोलोजी रिसर्च' शाखा ने इन कीटाणु नाशक विषों की प्रतिक्रिया की जाँच कराई तो मालूम हुआ कि दस साल के लगातार इस विष सेवन से ६ इन्च गहराई तक की भूमि में डी०डी०टी०, बी०एच०सी० और लिन्डेन तथा आरोलीन के अंश खतरनाक मात्रा में मिले हुए थे । इलीनाय, जार्जिया, न्यूजर्सी राज्यों की जमीनें भी ऐसी ही विषाक्त पाई गईं विचारशील लोग यह अनुमान लगा रहे हैं कि भूमि में बढ़ती हुई विषाक्तता की यह अभिवृद्धि अन्ततः मानवीय आहार को भी विषाक्त ही बनाकर रहेगी और उसके परिणाम उसे भुगतने पड़ेंगे ।

फल, फूल, दूध, शक्कर, साग' अन्न हम जो कुछ भी खाते हैं उनमें अधिकांश कार्बन तत्व होता है । कार्बन हवा और मिट्टी में पाया जाता है । अन्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अकार्बनिक तत्व और खजिन, पौधों को पृथ्वी से मिलते हैं । रासायनिक खादें इतनी उत्तेजित होती हैं कि वह खनिज तत्वों को भारी मात्रा में निकाल देती हैं जिससे उपज बहुत अधिक बढ़ जाती है । साधारण आलू का वजन १०० ग्राम से अधिक नहीं होता । एस्तोनियाईसों वियत समाजवादी जनतन्त्र के 'वीयदूतेये' सामूहिक कृषि फार्म में खुदाई करते समय वहाँ के मैनेजर को एक आलू इतना बड़ा मिला जिसका बजन १ किलो २५० ग्राम था। यह अत्यधिक विकास रासायनिक खाद की कृपा से हुआ पर मिटटी की जाँच करने से पता चला कि उसमें खनिज तत्व क्रमशः घटते चले जा रहे हैं । एक बार में १२ तक खनिज तत्व निकाल देने से भूमि का जीवन तत्व कितनी तेजी से नष्ट होता होगा इसे आसानी से समझा जा सकता है, पर आज के लोगों का ध्यान तो सवा किलो के आलू की तरफ अधिक है । भूमि के जीवन तत्व नष्ट हो रहे हैं यह कोई नहीं देखता ।

लेडी ईव बैलफर ने अपनी पुस्तक ''लिविंग सोइल'' में स्पष्ट कर दिया है कि यदि मनुष्य यह समझता है कि धरती निष्प्राण है तो यह उसकी भूल है । जिस तरह शरीर में जीवन है पृथ्वी में भी ठीक वैसा ही जीवन विद्यमान है । खनिज द्रव्यों की चट्टान सोन्द्रिय खाद तत्व तथा अति सूक्ष्म कीटाणुओं के सम्मिश्रण से मिटटी बनी है । मनुष्य और प्राणी जगत् का जो मलमूत्र निकलता है तथा वनस्पति जो जमीन पर गिर जाती है उन्हें पृथ्वी के सूक्ष्म जीवाणु उसी प्रकार सेन्द्रिय खाद तत्व या प्राण में बदलते हैं जिस प्रकार शरी के जीवाणु खाद्य से शरीर को पोषण प्रदान करते हैं हमारी जीवन व्यवस्था और पृथ्वी के जीवन में कोई अन्तर नहीं है इसलिए यह समझा जा सकता है कि उत्तेजक पदार्थो से जो निष्क्रियता मनुष्य शरीर पर आती है ठीक वैसी ही पृथ्वी में उत्तेजक खादों से आती हैं । अतएव विज्ञान को अपनी इस उपलब्धि को महत्त्व न देकर उसे एक नशा ही समझना चाहिए जो धरती के लिए कभी भी उपयुक्त नहीं हो सकती।

दूध और घी, मक्खन तथा छाछ से मिले जीवन तत्व की तुलना शराब और निकोटीन नहीं कर सकती उसी प्रकार कम्पोस्ट खाद, हरी खाद मलमूत्र की स्वाभाविक खादों से पृथ्वी को कही अधिक शक्तिशाली और दीर्घजीवी बनाया जा सकता है तो शराब पिलाना ही क्या आवश्यक हो सकता है । हमारी धरती के संस्कारों का भी तो महत्त्व है । यदि उनकी इस उत्तेजना को रोका न गया तो यह कुसंस्कारी अन्न मनुष्य में दुर्बुद्धि के रूप में फूटेगा और अपने देश को भी योरोप की तरह उद्दण्ड, स्वेच्छाचारी कामुक, शोषक एवम् उपयोगितावादी प्रवृत्ति का बना देगा । यह हानि पृथ्वी के बाँझ होने से भी अधिक कटु है ।

फसलों की सुरक्षा के लिए कीटनाशक दवाइयों के उपयोग के रूप में एक ऐसा प्रचलन चल पड़ा है कि वह केवल कीटों को ही नहीं खाता वरन् खाने वाले को हानि पहुँचाता है । फसलों की रक्षा के लिए कीड़ों को ही नहीं मारता वरन् मारने वाले को भी हानि पहुँचाता है । फसलों की रक्षा के लिए तरह-तरह के कीटनाशक तैयार किए गए, पर उनके उपयोग में सावधानी न बरतने का दुष्परिणाम यह है कि यह कीटनाशक भी एक अलग समस्या बन गए हैं ।

कीटनाशक उपायों में अब तक एक ही कारगर उपाय सोचा जा सका है कि विषैले रासायनिक घोल छिड़ककर कर जहाँ भी ये कीड़े हों वहाँ ही उन्हें मार डाला जाय। डी०डी०टी० प्रभृत औषधियों का प्रयोग इसी दृष्टि से उत्साहपूर्वक हुआ है । पर उससे भी कुछ हल निकला नहीं। उन्हें हर कोई न तो खरीद सकता और न उसका सही प्रयोग जानता है । अवांछनीय मात्रा में असावधानी से उनका प्रयोग किया जाय तो पौधों के नष्ट होने और उनके फल, बीज खाने वालों में विषाक्तता बढ़ जाने का खतरा स्पष्ट रहता है ।

इन दवाओं के मन्द उपयोग का भी जो दुष्परिणाम सामने आया है उसने विचारशील वर्ग को चिन्ता में डाल दिया है । कीटनाशक औषाधियाँ छिड़की तो उनका प्रभाव पौधों पर ही नहीं अन्न, शाक, फल आदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर भी रहता है और वे पेट में पहुंचकर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न करते हैं । गोदामों में अन्न को सुरक्षित रखने के लिए जो रसायन छिड़के जाते हैं वे घूम-फिर कर खाने वालों के पेट में पहुँचते हैं.और वह मन्द विष भी कालान्तर में विघातक परिणाम उत्पन्न करता है । छिड़काव से प्रभावित घास-फूस खाने वाले पशुओं का दूध, घी और मांस भी अखाद्य बनने लगता है .। इस प्रकार वह कीटनाशक रासायनिक उपचार कीड़ों को मारने में भले ही असफल रहे पर मनुष्यों पर अपना प्रभाव जरूर डालता है ।

रेकल कार्सन ने अपनी पुस्तक 'साइलेन्ट स्प्रिंग' में अमेरिकी जनता की शारीरिक स्थिति की चर्चा करते हुए लिखा है कि यहाँ हर मनुष्य के शरीर में डी०डी०टी० एवम आर्गेक्लोरीन समूह के विषैले रसायनों की मात्रा बढ़ती ही जा रही है । अभी यह परिणाम दस लाख पीछे १२ भाग है, पर यह क्रमशः बढ़ता ही जायगा और फिर विविध-विधि स्वास्थ्य संकट उत्पन्न करेगा । कीटनाशक दवाएँ बनाने वाले कारखानों के कर्मचारियों में तो यह मात्रा ६४८ भाग तक पहुँच गई है । ब्रिटेन के स्वास्थ्य विज्ञानी का चिन्तन है कि कीटनाशक रासायनिक प्रभाव से मानवी आहार को किस प्रकार बचाया जाय । यह चिन्ता एक देश की नहीं, वरन् समस्त विश्व की समस्या है ।

यहाँ एक और विचित्र समस्या है कि यह कीड़े जल्दी ही विषाक्त घोलों से अपनी रक्षा कर सकने योग्य क्षमता अपने में विकसित कर लेते हैं और उनकी नई पीढ़ियाँ ऐसी ढीठ उत्पन्न होती हैं जिन पर इन रसायनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । वे इन छिड़कावों को अगूँठा दिखाते हुए अपना विनाश कार्य प्रसन्नतापूर्वक करते रहते हैं ।

खाद्यान्न सुरक्षित रखने के लिए रेडिएशन-विकिरण का प्रयोग किया जा रहा है । रासायनिक खादों की भरमार के आधार पर खेतों में अधिक अन्न उपजाने की बातें सोची गई है । कीड़ों से खाद्य पदार्थों की रक्षा करने के लिए डी०डी०टी०, क्लोरेडेन, डेलड्रिन, एनड्रिन सरीखी औषधियों के छिड़काव का प्रचलन बढ़ रहा है । खेतों में भी कृमि नाशक घोल छिड़के जा रहे हैं । इनसे तात्कालिक समाधान मिलता है पर दूरगामी परिणामों की उपेक्षा करते रहें तो फिर जिस मानव प्राणी के लिए यह खाद्य बढ़ाने और सुरक्षित रखे जाने का प्रयत्न हो रहा है वह इस योग्य ही न रह जायेगा कि कुछ खा या पचा सके तो आज की सफलता को असफलता से कम दुर्भाग्यपूर्ण न माना जायगा ।

डी०डी०टी० जैसे रसायन छिड़कने से कुछ कीड़े मरे, कुछ जहरीले बनकर जिन्दा रह गए । उन्हें खाकर पक्षी मरे । चिड़ियों की चहचहाहट से जो वन-उपवन गूजँते थे, वे सब सुनसान हो गए । कारसन ने 'दि साइलेण्ट स्प्रिग' गूँगा बसन्त पुस्तक में पक्षियों के विनाश का दर्दनाक चित्र खींचा है और लिखा है रासायनिक खादों और कृमिनाशक रसायनों ने प्रकृति का सन्तुलन ही बिगाड़ दिया है । कीड़े मरें या न मरें यह गौण बात है, उन रासायनों से सनी घास खाकर पशु और बीज एवं कीड़े खाकर पक्षी विषैले बने । उनका माँस खाकर मनुष्यों के शरीरों में विषाक्तता घुस गई और अब उनकी प्रतिक्रिया तरह-तरह की चित्र-विचित्र बीमारियों के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है ।

अमेरिका तथा योरोप के कतिपय देशों में पशु-पक्षियों की प्रजनन क्षमता में भारी कमी आई है । अमरीकी कृषि विभाग ने अपने रोग निरोधक कार्यक्रम में डी०डी०टी० आदि प्रभावी कीटनाशकों पर अस्थाई रोक लगा दी है और उस हानि से बचने का उपाय खोजा जा रहा है जो इन रसायनों के प्रयोग से उठानी पड़ती हैं ।

लॉरेल (मेरीलेण्ड) स्थित ब्यूरो आफ स्पोर्ट फिशरीज एण्ड वाइल्ड लाइफ संस्थान के तत्वावधान में दो वैज्ञानिकों ने इस सम्बन्ध में विशेष खोज की है। इनके नाम है आर०डी०पोर्टर और एस०एन०बायमेयन, उन्होंने कुछ पक्षियों पर परीक्षण किए । उनके भोजन में इतनी अल्प मात्रा इन कृमिनाशक रसायनों की मिलाई जिससे प्रत्यक्षतः उन पर कोई घातक प्रभाव न पड़े । लगातार दो वर्ष तक उस परीक्षण के तीन परिणाम निकले (१) घोंसलों में से उनके अण्डे गुम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होने लगे (२) स्वयं पक्षी अपने अण्डों का नाश करने लगे (३) अण्डों के ऊपर का खोल बहुत पतला पड़ गया । यह पतलापन १० प्रतिशत तक हो गया । फलस्वरूप वे अण्डे तनिक से आघात से टूटने लगे । यहाँ तक कि मादा जब उन्हें सेने के लिए उठती-बैठती या करवट बदलती तो उतने में ही वे फूट पड़ते ।

आश्चर्य यह था कि पक्षी अपने अण्डे खाने लगे। आमतौर से ऐसा कही अपवाद स्वरूप ही होता है कि कोई मादा अपने अण्डों को खाती है । नासमझी या आपत्तिकाल की बात अलग है, सामान्यता क्रूर या हिंसक समझे जाने वाले पशु-पक्षी भी अपने अण्डे बच्चों को प्यार करते हैं और उनकी रखवाली पर पूरा ध्यान देते हैं । पर यह पक्षी इतने भावनाशून्य और आलसी हो गए कि खुराक ढूँढ़ने जाने का कष्ट उठाने की अपेक्षा घर में रखे इस भोजन से ही काम चलाने लगे । मातृत्व की प्रकृति प्रदत्त भावना और प्रेरणा को भी उठाकर उन्होंने ताक पर रख दिया ।

यह प्रभाव था जो वर्ष के अन्दर ही पक्षियों पर देखा गया और वह भी तब जबकि आहार में मिलावट की मात्रा १.३ पी०पी०एम० (एक पी०पी०एम० बराबर है दस लाखवें भाग के) जितनी स्वल्प थी । अण्डों की संख्या का घटना, उनका छोटा ओर हलका होना तो प्रत्यक्ष ही था । कई ऋतु सेवन करने के बाद भी गर्भ धारण करने से वंचित रहे जबकि आमतौर से पक्षियों का ऋतु सेवन शत-प्रतिशत प्रजनन में ही परिणत होता ।

उनके स्वास्थ्य पर अथवा पीढ़ियों पर स्वल्प विष सेवन का क्या प्रभाव पड़ेगा यह जानना अभी शेष है। फिर आशंका यह की जा सकती है कि आगे चलकर उनके स्वास्थ्य में अवांछनीय दुष्परिणाम देखे जा सकते हैं और पीढ़ियों पर बुरा असर पड़ सकता है ।

हम जब अन्धानुकरण कर रहे हैं तब अमेरिका के विचार इस दिशा में गम्भीरता से पीछे लौटने को सोच रहे हैं । जेम्स एण्ड व्हाइट ने अपनी पुस्तक 'रीप आफ दि अर्थ' (धरती पर अत्याचार) पुस्तक में लिखा है ''अमरीका में धरती पर अत्याचार हो रहे हैं । हजारों एकड़ भूमि रेगिस्तान बन गई है'' एड्रेनवेल ने अपनी पुस्तक 'खेत के लोग' (मैन आफ दी फील्ड्स) में लिखा है-''रासायनिक खाद देकर पैदा की हुई चीजें देखने में चाहे कितनी सुन्दर और आकर्षक लगें उनमें प्राकृतिक खाद के समान ओज, स्वत्व और जीवन शक्ति नहीं है पर गरीब किसान के अनुभव को कौन पूछता है । आज तो विज्ञान के अभियान में पड़े तथाकथित बुद्धिजीवी लोग अपने उद्योग और कारखानों को चलाये रखने के लिए रासायनिक खादों का धुँआधार प्रचार कर रहे हैं । गरीब किसान, भोला किसान उनकी चतुरतापूर्ण, छलप्रपंच से सनी बातों को समझ नहीं पाता और तो और जनता के कर्णधार जो कृषि विशेषज्ञ या कृषि शिक्षक हैं वे तक अपनी नौकरियों पर टिके रहने के लिए न तो ग्रामीण जनता के हित की बात सोचते हैं, न आने वाली पीढ़ी और अपने ही दीर्घकालीन जीवन तत्व के रक्षण की बात ।''

इंग्लैण्ड के विचारशील लोगों ने सोइल एसोसिएशन नामक एक संस्था गठित की है । वह तथाकथित सुधारवादियों से मोर्चा लेने को तत्पर है । इस संस्था में कई बड़े वैज्ञानिक, डाक्टर और कृषि विशेषज्ञ हैं । संस्था के घोषणा पत्र में कहा है—''हम एटम बम के खतरे को जानते हैं पर आज धरती का जो शोषण हो रहा है उससे बेखबर हैं । इसलिए जनता को इसके प्रति जाग्रत करना जरूरी है । क्या हम चाहते हैं कि इतिहास हमारे बारे में यह लिखे कि यह एक ऐसी पीढ़ी थी जो मृत्यु के कार्य में इतनी व्यस्त थी कि जीवन के मूल स्रोत ढूँढ़ने के लिए उसे कभी अवकाश ही नहीं मिला या हमारे बारे में यह लिखा जाये कि यही पहली पीढ़ी थी जिसने धरती को क्षीण होने से बचाया और मानव जीवन का मूलाधार-धरती, की उर्वरा शक्ति को बनाये रखा ।''

यह निर्णय इन्ही क्षणों में, इन्हीं दिनों करना है । कहीं ऐसा हमारी दुर्बुद्धि सर्वग्राही विग्रह की तरह सम्पूर्ण मनुष्य समेत इस सुन्दर ग्रह-गोलक को भी सदा-सर्वदा के लिए ले डूबे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवरोध क्यों आते हैं ? प्रयास क्यों असफल होते हैं ?

इन दिनों हम बीसवीं सदी के अन्तिम चरण में रह रहे हैं । सन् २००० में यह शताब्दी समाप्त हो जायगी । यह सन् १९९५ है । मात्र पाँच वर्ष का समय बीतते-बीतते इक्कीसवीं सदी आ धमकेगी । शताब्दियों के अन्त में पिछले दिनों भी आश्चर्य भरे परिवर्तन होते रहे हैं । इस बार तो इस मध्यान्तर में कुछ ऐसा होने जा रहा है, जिसे अनुपम, अद्‌भुत, और अभूतपूर्व कहा जा सके ।

बीसवीं सदी को प्रगति की अवधि भी कह सकते हैं और साथ ही भयानक अवगति भी । पिछले दिनों विज्ञान और बुद्धि के दो देवताओं ने अपने चमत्कार दिखाये हैं, वे सशक्त भी रहे हैं और भयानक भी । दिन का अधिपति सूर्य और रात्रि का स्वामी चन्द्रमा कहा जाता है । पर राहु केतु अपने दाँव पर इनसे भी बलिष्ठ सिद्ध होते हैं । ग्रहण काल में वे इन दोनों को ग्रस लेते हैं । सम्पन्नता और शक्ति सभी को अभीष्ट है । इन्हें देने और छीनने में शताब्दी की उपर्युक्त उपलब्धियों का बढ़ा-चढ़ा हाथ है । विज्ञान ने वे सुविधा साधन प्रदान किये हैं, जिनकी पूर्वजों ने कभी कल्पना तक न की होगी । प्रत्यक्षवाद ने मान्यताओं के धुर्रे उड़ा दिये और चिन्तन को नये सिरे से सोचने की सामग्री दी । यह दोनों ही उत्साहवर्धक रहे और आश्चर्यचकित करने वाले भी। किन्तु जिस प्रकार दीपक तले अँधेरा और उसके धुएँ में कालिख पाई जाती है उसी प्रकार आधुनिक उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ ऐसा भी घुला रहा जिसे अवांछनीय एवं अनुपयुक्त भी कहा जा सके ।

विज्ञान ने हमें जल-थल-नभ पर द्रुतगति से गमन करने की क्षमता दी । तार, रेडियो, टेलीविजन जैसे संचार साधन भी । साथ ही उसने बिजली, बारूद, वैभव और विनाश के परस्पर विरोधी सरंजाम भी जुटाये । कल-कारखाने खड़े किये । कम्प्यूटर और यंत्र-मानव बनाये । इन उपलब्धियों पर गर्व किया जा सकता है, क्योंकि इनके पीछे इतना अध्यवसाय और शक्ति साधन है, कि उसकी पुरातन काल के देव-दानवों के साथ तुलना की जा सकती है ।

दर्शन, अन्वेषण, प्रतिपादन के संदर्भ में भी यही हुआ है । चिर पुरातन मान्यताओं में से कितनी ही हवा में उड़ा दी गईं, कितनी ही संदिग्ध बना दी गईं । कितनों को नये सिरे से नये ढाँचे में ढाला गया और सोचने का अभिनव आधार खड़ा किया गया । यों अशिक्षितों और पिछड़े क्षेत्रों में अन्धविश्वास अभी भी है, पर उसकी जड़ें खोखली होने लगी हैं । लोग समझने लगे हैं कि "बाबा वाक्यं प्रमाण" ही सब कुछ नहीं है । लकीर के फकीर बनकर सदा सर्वदा नहीं रहा जा सकता । तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण को साक्षी रखकर हर प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ा जाने लगा । इसे प्रत्यक्षवाद भी कह सकते हैं और बुद्धिवाद भी । शिक्षा के साथ ऐसे तथ्यों का समावेश हुआ, जिनसे विश्व प्रवाह के संबंध में अभिनव आधारों का समावेश होता चला गया ।

यह सब प्रशंसनीय है । सृष्टि के आदिकाल से लेकर प्रगतिक्रम जिस गति से चला उसकी तुलना में इन दिनों की गति को चमत्कारी जादुई-कल्पनातीत ही कहा जा सकता है । यह सभी बातें ऐसी हैं जिनके कारण मानवी प्रतिभा के ज्वालामुखी फटने जैसे विकास का यशगान ही किया जा सकता है और अभिनन्दन भी ।

यदि इन उपलब्धियों के सदुपयोग की वेला में श्रद्धा सद्‌भावना का नीति और औचित्य का समावेश रहा होता तो प्रस्तुत साधनों से समूचा जन समुदाय अपेक्षाकृत अधिक सुखी और समुन्नत स्थिति में पहुँच चुका होता । जब पूर्वज स्वल्प साधनों में सुखी और समुन्नत जीवन जीते रहे तो कोई कारण नहीं कि इन शताब्दियों की उपलब्धियाँ उसे हर क्षेत्र में अधिक सुविकसित न बना सकी होतीं ।

दुरुपयोग से अमृत भी विष बन जाता है । रसोई-घर में काम आने वाले चाकू, हँसिया जैसे छोटे से उपकरण किसी का सहज ही प्राण हरण कर सकते हैं । इस बुद्धि के दुरुपयोग का तो कहना ही क्या, वह न केवल स्वयं उल्टा सोचती है, वरन समूचे प्रभाव क्षेत्र को भी उसी अनौचित्य के मार्ग पर घसीट ले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती है । हस्तगत सुविधा सामग्री का ऐसा दुरुपयोग करती है कि उससे लाभदायक परिस्थिति एवं सामग्री उलट कर ऐसे प्रहार करती है, जिससे शरीर अशक्त बने,मन बौराये, बुद्धि अनौचित्य का समर्थन करे कुकर्मों में रुचि बढ़े । इसका प्रतिफल भी सुनिश्चित रूप से ऐसा ही होना चाहिए, जिससे विग्रह खड़े हों, दुर्व्यसन पीछे पड़ें और संकटों उद्वेगों के पर्वत सामने आ खड़े हों । समस्यायें उत्पन्न हों, उलझनें इस प्रकार उलझें कि सँभालने में ही न आवें ।

इन दिनों जिधर भी नजर पसार कर देखा जाय उधर ही सुविधाओं की तुलना में संकटों की भारी भरमार दीख पड़ने लगी । संतुष्ट लोगों की तुलना में असन्तुष्टों का वर्ग कहीं अधिक विस्तृत है । सुखिया की तुलना में दुखिया कई गुने अधिक हैं । यह आश्चर्य की ही बात है । विज्ञान और बुद्धिवाद अपनी चमत्कारी सामर्थ्य के बावजूद मनुष्य जाति की ऐसी सेवा न कर सके जबकि उनमें से प्रत्येक अकेले ही बहुत कुछ कर सकता था ।

शारीरिक रुग्णता, मानसिक उद्विग्नता, आर्थिक दरिद्रता, पारिवारिक विशृंखलता, सामाजिक अराजकता धार्मिक विडम्बना का ऐसा दैत्य सर्वत्र व्याप्त है जितना कि इससे पूर्व आदिमकाल से लेकर अब तक कभी देखने को नहीं मिला । जिनके हाथ में नेतृत्व और साधन हैं वे अपनी समझ-बूझ के अनुसार निराकरण के उपाय भी करते हैं पर परिस्थिति काबू में नहीं आती । सुलझने के स्थान पर उलझनें और भी अधिक उलझ जाती हैं ।

ऐसा क्यों होता है ? इसका कारण समझने वाले समझते हैं कि पदार्थों की कमी पड़ गई है, व्यवस्था लड़खड़ा गई है । कूटनीति या कानूनों में कमी पड़ रही है आवश्यकताओं की तुलना में उपकरण या अवसर कम हैं आदि-आदि । इस समझ के अनुसार अधिक धन की आवश्यकता समझी जाती है । अधिक टैक्स लगते हैं । विशालकाय योजनाएँ बनती हैं । महँगाई और बढ़ा हुआ टैक्सेशन दोनों परस्पर सम्बद्ध हैं। आजीविका बढ़ती है तो महँगाई उसके प्रभाव को समाप्त कर देती है। जिधर मैत्री और सहयोग के हाथ बढ़ाये जाते हैं उधर से ही वे झटक दिये जाते हैं । भीतरी और बाहरी-राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय, वैयक्तिक और सामाजिक कठिनाईयों का अभाव नहीं दीखता । यद्यपि उनके निराकरण का उपाय सोचने और प्रयास करने में किसी प्रकार की कमी नहीं दीख पड़ती ।

इन असमंजस भरे भटकावों का कारण एक ही है-साधनों और परिस्थितियों को ही सब कुछ मानना । उन्हीं की पूर्ति और व्यवस्था में लगे रहना । इससे सामर्थ्य तो जुटती रहती है, पर वह क्षेत्र छूट जाता है जिसके कारण उलझनें उभरती हैं । संकट गहराते हैं । पुरुषार्थ तो चलता रहता है, पर सफलता के दर्शन नहीं होते । वह विस्मृत एवं उपेक्षित पक्ष, विचारणा का परिशोधन जन मानस का परिष्कार ।

इन दिनों विचार भी गड़बड़ाये हुए हैं और वातावरण भी बिगड़ा हुआ है । पर देखना यह है कि इन दोनों के बीच कोई प्रत्यक्ष संबंध तो काम नहीं कर रहा है । गंभीरता को साथ लेकर निरीक्षण ,परीक्षण करने पर एक ही निष्कर्ष हाथ आता है कि मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदाता है । चिन्तन प्रधान है । चरित्र उसी आधार पर बनता है । व्यक्तित्व का गया गुजरा स्तर ही ऐसी रीति-नीति अपनाता है, जिसमें बोये हुए विषवृक्ष के कड़ुए फल खाने पड़ें, उगाई हुई नागफनी के काँट पैरों में गड़ने लगें ।

समझा जाना चाहिए कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है । उसके पास ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ और मस्तिष्कीय विभूतियों का इतना बड़ा भण्डार है कि उसी के सहारे वह बहुत कुछ कर सकता है । बहुत कुछ बन और बदल सकता है । किन्तु यदि सद्विचारों का अभाव हो तो सम्पदा और समर्थता का बढ़ा-चढ़ा अम्बार भी ऐसे प्रयास करेगा, जिसमें समाधान हाथ आना तो दूर उल्टे संकटों का प्रकोप ही बढ़ता चले । इतिहास साक्षी है कि विचारवानों ने स्वल्प साधनों और विषम परिस्थितियों के रहते हुए भी स्वयं ऊँचे उठे और दूसरों को बढ़ाने में सफल हुए हैं । बुद्ध, गान्धी जैसे व्यक्तित्वों ने अपने आपको धन्य बनाया और विषमता से भरे वातावरण को आश्चर्यजनक रीति से बदल दिया । संसार की महान क्रान्तियाँ विचारों की प्रचण्डता के साथ व्यापक हुई हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सफल बनी हैं । तोप-तलवारों की ताकत मात्र रक्तपात कर सकती है पर उसमें इतनी क्षमता नहीं कि न्याय माँगने वाले साहसी संकल्प के बढ़ते कदमों को पीछे मोड़ सकें । पिछली दो शताब्दियों में हुई राजक्रान्तियों का विश्वव्यापी सुविस्तृत इतिहास है । इन सफलताओं के पीछे संकल्प शक्ति ही काम करती दृष्टिगोचर हाती है । कितनी ही सामाजिक क्रान्तियाँ भी इसी अवधि में हुई हैं । राजतंत्रों के दुर्ग ढह गये । जमींदार, साहूकारों की सामन्ती शान धूलि चाटने लगी । दास-दासी पकड़े जाने और हाट बाजारों में पशुओं की तरह बिकने की प्रथा भी अब संसार भर में मिट गई । यद्यपि उन असहाय लोगों के पास अपने मालिकों से लड़-झगड़ कर त्राण पा सकने की सामर्थ्य नहीं थी । पर विश्व के लोकमत ने उस प्रचलन को सहन नहीं किया। फलतः लम्बे समय से चली आने वाली उस प्रथा को अपने आप अपनी मौत मरते देखा गया । यह विचार शक्ति के कुछ उदाहरण हैं । यदि इस धारा को विनाशकारी बाढ़ न बनने दिया जाय और उसे सिंचाई के लिए अनुबंधित किया जाय तो परिणाम निश्चित रूप से वैसा ही सुखद होगा जैसा कि सिंचाई वाले क्षेत्र में अच्छी उपज के रूप में हस्तगत होता है ।

बुद्धिवाद और नीति-निष्ठा का समन्वय युग की परम आवश्यकता

आदिम मनुष्य सचमुच बन्दर की औलाद या उसकी बिरादरी का रहा होगा । सभी प्राणियों को प्रकृति ने इतना सहज ज्ञान दिया है कि वे उसके सहारे अपनी शरीर यात्रा भर चलाते रह सकें । यों उसके अन्तराल में विभूतियों की कमी नहीं । वह इस दृष्टि से सम्पन्न सामर्थ्यवान है । पर पात्रता के अभाव में दुरुपयोग के लिये कोई क्यों अपना वैभव लुटाये ? प्रकृति को कृपण तो नहीं कहेंगे, पर वह अदूरदर्शी भी नहीं है । जो जितना सँभाल सके उसे उतना ही दिया जाय इस सन्दर्भ में उसने सदा व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया है । इस परीक्षा में मनुष्य ने सदा से ही आगे रहने की चेष्टा की और तदनुरूप प्रकृति का आँचल उठाकर एक के बाद एक बहुमूल्य विभूतियाँ हस्तगत करने में सफलता पाई ।

वायु प्रदूषण आणिवक विकिरण, जल-प्रदूषण, ऊर्जा-स्रोतों का अत्यधिक दोहन, विलास के साधनों का अमर्यादित उपयोग, प्रलयंकर शस्त्रों का निर्माण और उनकी अधिसंख्य देशों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा जैसे संकट भरे कदम महाप्रलय जैसी चुनौती सामने लेकर खड़े हैं । एक ओर विज्ञान क्षेत्र के मनीषी मूर्धन्यों के सामने यह समस्या है कि इस दुरुपयोग को कैसे रोका जाय और उनके कारण उत्पन्न हो रहे अनेकानेक विग्रहों, संकटों से कैसे उबरा जाय ? दूसरी ओर एक और प्रश्न भी उनके सामने है कि मनुष्य को अधिक सुखी समुन्नत बना सकने का प्रयोजन पूरा करने के लिऐ किन नये शोध क्षेत्रों में प्रवेश किया जाय ? इनकी नीति क्या हो व इनकी मर्यादा को कहाँ किस प्रकार बाँधा जाय? दोनों ही प्रश्न मानवी बुद्धिमत्ता के समक्ष एक प्रश्न चिह्न बनकर खड़े है और कहते हैं कि सही समाधान न निकला तो विज्ञान अपना पोषण धर्मी रूप त्यागकर महारुद्र बनेगा और प्रलय का ताण्डव नृत्य आरम्भ करेगा । आखिर नियति ही है । मनुष्य को सीमित सुविधा छूट ही दे सकती है । औचित्य का अतिक्रमण सहन नहीं कर सकती । इसीलिये मूर्धन्य विचारकों के अनुसार विनाश और विकास के मध्य झूलने वाले हलके से धागे को सही दिशा देना ही वह कार्य है जिस पर वर्तमान का समाधान तथा भविष्य का निर्धारण पूर्णतया अवलम्बित है ।

आज की सबसे बड़ी समस्या है दुरुपयोगी को रोकना और उपयोगी को अपनाना । इसका समाधान पाने हेतु समुद्र जितनी गहराई में उतरने तथा अन्तरिक्ष को मथ डालने वाली मनीषा का समग्र मन्थन करने पर एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि निर्धारण की कसौटी "उत्कृष्ट आदर्शवादिता" को अपनाकर चला जाय और उसकी छत्र छाया में हर स्तर का निर्णय किया जाय । मानवी सत्ता की उच्चस्तरीय विशिष्टता एक ही है-

"आदर्शों के प्रति आस्था" । इसी ने उसे चिन्तन के क्षेत्र में उत्कृष्टता और व्यवहार के क्षेत्र में उदार सहकारिता जैसी सत्प्रवृत्तियों प्रदान की है और उसकी गौरव गरिमा को बढ़ाया है । इस विशिष्टता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की जितनी उपेक्षा की जायेगी उतनी ही विपत्ति उभरेगी और विनाश की विभीषिका बढ़ेगी । इस सत्प्रवृत्ति को पुरातन भाषा में ''आध्यात्मिकता' कहा जाता है । यह शब्द किसी को अटपटा लगता हो तो ''दूरदर्शी आदर्शवादिता'' जैसा कोई शब्द देने में किसी को कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये । यही है वह कसौटी जिस पर अद्यावधि प्रगति के उपयोग में हुई भूलों को सुधारना और जो उपलब्ध है, उसका सर्वहित में सदुपयोग कर सकना सम्भव हो सकता हैं । साथ ही इसी आधार को अपनाकर विज्ञान की भावी दिशाधारा का उपयुक्त निर्धारण हो सकता है ।

विज्ञान ने पदार्थ जगत् में असीम चमत्कार उत्पन्न किये हैं । अब उसका काम है कि मानवी चिन्तन चरित्र और लोक परम्पराओं को प्रभावित करे । इन क्षेत्रों में घुसी हुई भ्रान्तियों एवं अवांछनीयताओं को उसी प्रकार निरस्त करे जिस प्रकार उसने पिछले दिनों भौतिक जगत् की वस्तुस्थिति के सम्बन्ध में यथार्थता की जानकारी रखते हुये सत्य की शोध का अधिष्ठाता कहलाने का क्षेत्र सम्मान पाया और अपना महान उत्तरदायित्व निभाया है । उसकी यह सेवा पिछली सहस्राब्दियों में प्रस्तुत किये गये अनुदानों की तुलना में अकेली ही अत्यधिक भारी भरकम सिद्ध होगी । स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''जो धर्म वैज्ञानिक अनुशासन पर सही न ठहराया जा सके उसे नष्ट कर देना चाहिए । जितनी जल्दी ये अनावश्यक अन्धपरम्परायें ब मूढ़ मान्यताएँ धर्म से निकाल दी जायें, उतना ही लोक है । जब यह सब हो चुकेगा तो जो कुछ भी बच रहेगा, वह बहुत उज्ज्वल , शाश्वत् व अपनाने योग्य होगा । '' वस्तुतः विज्ञान और अध्यात्म का, सम्पदा और उत्कृष्टता का, शक्ति और शालीनता का, बुद्धि और नीति-निष्ठा का समन्वय अपने युग का सबसे बड़ा चमत्कार समझा जायगा । विज्ञान क्षेत्र पर छाई हुई मनीषा को यह युग धर्म निभाना ही चाहिये ।

विज्ञान युग के प्रारम्भिक दिनों में पदार्थ की ही सत्ता मानी गयी थी और कहा गया था कि चेतना का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है । मान्यता यह थी कि विश्व पदार्थमय है । जड़ चेतन के नाम से जाने जाने वाले सभी घटक मात्र पदार्थ हैं । अस्तु उनकी नियति भी पदार्थ जैसी ही है । पर अब उस मान्यता में सुधार परिवर्तन करने का समय आ गया । पिछली दो शताब्दियों की खोजों ने यह मान्यता विकसित की है कि चेतना का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है । वह प्राणियों में पृथक-पृथक इकाईयों के रूप में दृष्टिगोचर होती है, किन्तु उसका समग्र रूप ब्रह्मव्यापी है । प्रकृति की तरह ही चेतना की सीमा एवं क्षमता अनन्त है । इतना ही नहीं, चेतना के वरिष्ठ होने के कारण उस क्षेत्र की उपलब्धियाँ भी तुलनात्मक दृष्टि से अत्यधिक हैं । इन्जन कितना ही सशक्त क्यों न हो, उसे चलाने के लिये चेतन ड्रइवर भी चाहिए । 'आटोमेटिक' कहलाने वाली मशीनें भी किसी न किसी रूप में संचालक का निर्देश प्राप्त करती ही रहती है । ठीक उसी प्रकार कार्य संचालन से लेकर विश्व-व्यवस्था में एक अदृश्य चेतना शक्ति काम करती है ।

विज्ञान की इकॉलाजी धारा ने इन दिनों पूरे जोर-शोर और साहस विश्वास के साथ यह सिद्ध करना आरम्भ कर दिया है कि प्रकृति के साथ मात्र शक्ति एवं क्रिया ही जुड़ी नहीं है, एक और विभिन्न क्रिया भी आच्छादित है । जिसे दूरदर्शी— सन्तुलन बिठाने-औचित्य अपनाने से लेकर सुखद सम्भावनाएँ अपनाने तक की विशेषताओं से सुसम्पन्न कहा जा सकता है । यह विशिष्टता जड़ पदार्थों में स्वभावतः नहीं पाई जाती । फिर भी उस प्रक्रिया का अस्तित्व ही नहीं सुदृढ़ अनुशासन भी प्रामाणित हो रहा है । इस दिशा में परामनोविज्ञान, पराभौतिकी आदि अन्य विज्ञान धाराओं ने भी अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर समर्थन आरम्भ कर दिया है । स्थिति बदलती जा रही है और चेतना का स्वतन्त्र अस्तित्व मानने की विवशता बढ़ती जा रही है । मनीषी आइन्स्टीन ने अपने अन्तिम दिनों में प्रायः अर्धआस्तिकता स्वीकार कर ली थी और वे चेतना की सत्ता एवं वरिष्ठता मानने लगे थे । तब से लेकर अब तक और भी बहुत कुछ हुआ है । वह सभी ऐसा है जो चेतना की सामर्थ्य को पदार्थ में सन्निहित क्षमता से भी अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामर्थ्यवान एवं उपयोगी सिद्ध करता है । पुरातन भाषा में ब्रह्माण्डीय चेतना को परब्रह्म के नाम से और उसके वैयक्तिक अस्तित्व को आत्मा कहा जाता था । अब विज्ञान के लिये विश्व चेतना एवं व्यक्ति चेतना के अस्तित्व से इन्कार करना उतना आसान नहीं रह गया जितना कि एक शताब्दी पूर्व था ।

चेतना का क्षेत्र निस्सन्देह उससे भी कहीं अधिक समर्थता से भरा-पूरा है जितना कि अब तक पदार्थ जगत् को जाना-पाया गया है । पदार्थ में मात्र शक्ति एवं क्रिया है, जबकि चेतना में कहीं अधिक ऊँचे स्तर की ऐसी क्षमता विद्यमान है जो पदार्थ को सदुपयोग में नियोजित कर सके । इतना ही नहीं, उसमें कुछ ऐसी विशेषताएँ भी हैं जो व्यक्ति की विचारणा, भावना, आस्था, आकांक्षा को पाशविक प्रवृत्तियों से विरत करके उस उच्चस्तरीय भाव-भूमिका में पहुँचा सके, जिसमें सज्जन, महामानव, सन्त-सुधारक, ऋषि, देवदूत एवं भगवान निवास करते हैं । कहना न होगा कि ऐसे व्यक्तित्व ही अपने समय एवं संसार की सर्वोच्च विभूति कहलाते हैं । उनके आदर्शों का अनुकरण करके अनेकों को 'महान' बनने का उत्साह, प्रकाश एवं श्रेय प्राप्त होता है । स्पष्ट है कि धन, शस्त्र, शिक्षा-बल, कला आदि समस्त वैभव एक तराजू के एक पलड़े पर और महामानवों के व्यक्तित्व को दूसरे पलड़े पर रखा जाय तो गरिमा सम्पदा की नहीं, सज्जनता, श्रेष्ठता की ही सिद्ध होगी । संसार के इतिहास में से ईसा, जरथु, मेजिनी, बुद्ध, गाँधी, लिंकन, कन्फ्यूशियस, अरस्तू, कागाबा, विवेकानन्द को निकाल दिया जाय तो फिर वह मात्र अनाथ असहाय भोंडी भीड़ का झुण्ड भर रह जाता है । समय आ गया कि अब हम विशालकाय संयन्त्रों तथ्यों तक सीमित न रहें, उच्चस्तरीय प्रतिभाएं उत्पन्न करने के लिये प्रयास करें । उसके लिये विज्ञान के सहकार की नितान्त आवश्यकता है । प्रकारान्तर से यह तथ्य होता है कि विश्व वसुधा में श्रेष्ठता सम्वर्धन के लिए अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय सम्भव किया जाय । उत्कृष्टता की पक्षधर मान्यताओं, आकांक्षाओं, उमँगों का उत्पादन कभी अध्यात्म तत्वज्ञान अकेला ही कर लेता है । उन दिनों साहित्य, संगीत कला आदि के सम्वेदनात्मक माध्यम पूरी तरह अध्यात्म का समर्थन सहयोग करते थे । आज जब पदार्थ ही सब कुछ है तो चिन्तन और चरित्र की पक्षधर आस्थाओं को अपनाने की पृष्ठभूमि कैसै बने ? वह न बने तो फिर महामानवों का उद्भव कैसे हो ? ये न उपजें तो विश्व व्यवस्था का सदाशयता सम्पन्न नवनिर्माण किस प्रकार सम्भव हो ?

इन प्रश्नों का उत्तर भी विज्ञान को ही देना होगा क्योंकि पुरातन अध्यात्म अपनी निजी दुर्बलताओं और अनास्थापरक प्रत्यक्षवादी प्रतिपादनों के कारण जराजीर्ण हो चुका । इससे वर्तमान परिस्थितियों में किसी चमत्कार की आशा नहीं की जा सकती । इसका उपयोग तो इतना भर है कि वर्तमान खण्डहर को हटाकर पुरानी मजबूत नींव पर नये भवन का निर्माण कर दिखाया जाय । मरणासन्न धर्म को अमृत संजीवनी पिलाने का काम भी विज्ञान के हनुमान को करना होगा। यह उत्तरदायित्व उसी का है कि प्रस्तुत साधनों का उपयोग करके न केवल प्रशिक्षण प्रतिपादन के लिये उत्कृष्टता समर्थक वातावरण बनायें-साधन जुटायें वरन् ऐसे उपाय भी खोजें जिनसे काय कलेवर एवं मन संस्थान की रहस्यमय क्षमताओं को उभार कर सामान्यों को असामान्य बनाया जा सकना सम्भव हो सके ।

वर्तमान उपेक्षा, असहकारिता-विग्रह की वृत्ति को हटाकर जब विज्ञान और अध्यात्म के मध्य सहयोग भरी रीति-नीति निर्धारित होती तो फिर समुद्र मन्थन जैसे सत्परिणाम की सम्भावना पुनः अपनी इसी धरती पर अवतरित होगी । ठण्डे और गरम तार के मिलने से बिजली का प्रवाह सभी ने देखा है । इन दो महाशक्तियों के मिलन और सम्मिलित प्रयासों की परिणति अपनी इस धरती को सुन्दर सुव्यवस्थित, समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाने में जो योगदान देगी उसकी परिणति की कल्पना भर से देवयुग के दृश्य आँखों के सामने आ खड़े होते हैं और आशा भरी पुलकन उत्पन्न होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आसन्न विभीषिकाएँ व उनके पीछे छिपी यथार्थता

वैभव को कमाया तो असीम मात्रा में भी जा सकता है, पर उसे एकाकी पचाया नहीं जा सकता । मनुष्य के पेट का विस्तार थोड़ा-सा ही है । उसमें सीमित मात्रा में ही आहार भरा जा सकता है । यदि बहुत कमा लिया गया है तो उस सबको उदरस्थ कर जाने, उपयोग में लगाने की ललक लिप्सा कितनी ही प्रबल क्यों न हो, पर वह संभव हो नहीं सकेगी । नियत मात्रा से अधिक जो भी खाया गया है वह दस्त, उलटी, उदर शूल, जैसे संकट खड़े करेगा, भले ही वह कितना ही स्वादिष्ट क्यों न लगे ।

शारीरिक और मानसिक दोनों ही क्षेत्र भौतिक पदार्थ संरचना के आधार पर विनिर्मित हुए हैं । उनकी भी अन्य पदार्थों की तरह एक सीमा और परिधि है । जीवित रहने और अभीष्ट कृत्यों में निरत रहने के लिए सीमित ऊर्जा, सक्रियता एवं साधन, सामग्री ही अभीष्ट है । इसका उल्लंघन करके असीम संचय और उपभोग की ललक जगे, तो समझना चाहिए कि तट बंधों को तोड़कर बहने वाली बाढ़ अपनी उच्छृंखलता के कारण अनर्थ ही अनर्थ करेगी । बिखरा हुआ पानी तो व्यर्थ जायेगा ही, उस उन्माद के कारण कितने ही खेत, खलिहान, बस्ती, झोंपड़ी तथा उपयोगी पदार्थ भी उसी प्रवाह में बहते और पड़ते,गलते दीख पड़ेंगे ।

उपभोग की दृष्टि से थोड़े साधनों में भी भली प्रकार काम चल सकता है । पर अपव्यय की कोई सीमा-मर्यादा नहीं । कोई चाहे तो लाखों के नोट इकट्ठे करके उनमें माचिस लगाकर होली जलाने जैसा कौतूहल करते हुए प्रसन्नता भी व्यक्त कर सकता है । पर इस अपव्यय को कोई भी समझदार न तो सराहेगा और उसका समर्थन करेगा । बेहद चाटुकार तो कुल्हाड़ियों से अपना पैर काटने के लिए उद्यत अतिवादी की भी हाँ-में-हाँ मिला सकते हैं ।

मन के छुपे रुस्तम का तो कहना ही क्या ? वह पीपल पर निवास करने वाले यक्ष-राक्षस की तरह अदृश्य तो रहता है, पर कौतुक कौतूहलें इतने बनाता-दिखाता रहता है कि उस व्यामोह में फँसा मनुष्य दिग्भ्रान्त होकर भूल-भुलैयों में भटकने वाले वनजारे की तरह इधर-उधर मारे-मारे फिरने में ही अपनी समूची चिन्तन क्षमता गवाँ-गुमा दे । तृष्णा तो समुद्र की चौड़ाई और गहराई से भी बढ़कर है । उसे तो भस्मासुर, वृत्रासुर,महिषासुर जैसे महादैत्य भी पूरी न कर सके । फिर बेचारे मनुष्य की तो विसात ही क्या है जो संतोष की अभिव्यक्ति के लिए कहीं कोई आश्रय कर सके?

दिगभ्रान्त मनुष्य आज अपने आपे को शरीर तक सीमित मान बैठा है, क्योंकि प्रत्यक्ष तो इतना ही कुछ दीख पड़ता है । मन यद्यपि अदृश्य है पर वह भी शरीर का ही एक अवयव है । इसे ग्यारहवीं इन्द्रिय भी कहा जाता है । वासना, तृष्णा, इन्हीं दोनों का मिला-जुला खेल है जो अनन्त काल तक चलते रहने पर भी कभी समाप्त नहीं हो सकता है । इसी उलझन के भव बंधनों में बँधा हुआ जीव चित्र-विचित्र प्रकार के अभाव अनुभव करता, असंतुष्ट रहता और उद्विग्नता-चिन्ता, आशंका के त्रास सहता रहता है । कोल्हू के बैल की तरह पिसते-पीसते रहने पर भी उसके पल्ले थकान और निराशा के अतिरिक्त और कुछ नहीं पड़ता । आश्चर्य इस बात का है कि अवांछनीय जाल-जंजालों से अपने को उबारने के लिए कुछ करना तो दूर, सोचने तक अवसर नहीं देता । उलटे अनाचारों पर उतारू होकर कुछ भी करते रहने के लिए स्वयं सनकता, औरों को उकसाता रहता है भले ही वह घृणित एवं अनर्थ स्तर का ही क्यों न हो ?

यही है अपने समय के मनुष्य का तात्विक पर्यवेक्षण । मूर्खता को कहने-सुनने में तो उपहासास्पद बताया जाता है, पर वस्तुतः वह इतनी प्रबल, आतुर, एवं आवेश-ग्रस्त होती है कि उसके आवेग को रोक सकना अच्छे-अच्छों तक के लिए कठिन हो जाता है । यह उन्माद जब सामूहिकता के साथ जुड़ जाता है तो फिर स्थिति विशालकाय 'पागलखाने' जैसी हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती है, जिसमें उस क्षेत्र के रोगी एक-दूसरे को उकसाने, भड़काने, गिराने, सताने जैसी विडम्बनाओं में ही लगे रहते हैं । वे सभी मात्र हानि ही हानि उठाते हैं ।

गीताकार ने सच ही कहा है कि जब दुनिया सोती है तब योगी जागते हैं । यह अनबूझ पहेली तभी प्रामाणिक सिद्ध हो सकती है, जब यह सोचा जाय कि असंख्यों अवांछनीयताओं की लहरें उठाते चलने वाले प्रस्तुत प्रवाह के साथ बहते रहने की अपेक्षा कोई आश्रय दे सकने वाला किनारा खोज सकने का मन उभरे । प्रचलनों को एक किनारे पर रखकर नये तौर तरीके अपना कर यथार्थता का आश्रय लेने वाली उमंगें उमगें, अन्यथा अच्छे-भले नदी नाले वाली जल सम्पदा खारे समुद्र में गिरकर अपेय ही बनती चली जायगी ।

वर्तमान में सर्वत्र कुहासा छाया दीखता है । पतझड़ की तरह सर्वत्र ठूँठ ही ठूँठों का जमघट दीख पड़ता है । पतन और पराभव का नगाड़ा बजता सुनाई देता है । भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होता और लगता है कि मनुष्य समुदाय अब सामूहिक आत्महत्या करने पर ही उतारु होने के आवेश से बुरी तरह ग्रासित हो रहा है । चूहों और खरगोशों की संख्या जब असाधारण रूप से बढ़ जाती है और उनके लिए खाने, पीने, रहने के लिए सहारा शेष नहीं रहता तो वे किसी बड़े जलाशय में स्केण्डिनेवियन लेमार्क की तरह डूब मरने के लिए बेतहाशा दौड़ लगाते देखे जाते हैं । चल रही गतिविधियों का प्रभाव परिणाम समझने के लिए जो भी समझदार प्रयत्न करते हैं उन्हें ऐसी ही विनाशकारी विभीषिका पूर्व की दिशा में उठने वाले घटाटोपों की तरह बढ़ती चलती आ रही प्रतीत होती है साथ में चला आ रहा तूफान अपनी भविष्यवाणी अलग से करता है कि मानवी सत्ता, महत्ता, सम्पदा और प्रगति जैसे संचय में से कुछ भी उसकी चपेट से बचकर रह नहीं सकेगा ।

अहंकारी यदुवंशी आपस में ही लड़-मर कर खप गये थे । उन पर बाहर से कोई बज्रपात नहीं टूटा था । आग सबसे पहले उसी स्थान को जलाती है जहाँ से वह प्रकट होती है । बाहर फैलने और अन्यान्य वस्तुओं को जलाते चलने की प्रक्रिया तो बाद में आरंभ होती है । उद्दीप्त वासना, अनियंत्रित तृष्णा और उन्माद जैसी अहंकारिता का त्रिदोष जब महाग्राह की तरह मानवी गरिमा को निगलता, गटकता चला जा रहा हो तो बच सकने की आशा यत्किंचित ही शेष रह जाती है । वर्तमान में उफनते तूफानी अनाचार को देखते हुए औसत आदमी भावी संभावनाओं के सम्बन्ध में आशंकित और आतंकित ही हो सकता है । सचमुच हम महाविनाश की प्रलय प्रक्रिया की ओर सरपट चाल से दौड़े जा रहे हैं ।

प्रचण्ड प्रवाह को रोक सकने वाला बाँध विर्निमित करने, जलधारा को नहरों के माध्यम से खेत-बगीचे तक पहुँचाने का काम तो निश्चय ही बड़ा कष्ट साध्य और श्रम साध्य है । पर करने वाले जब प्राणपण से अपने पुरुषार्थ को सृजन की सदाशयता के साथ सम्बद्ध करते हैं तो उनकी संसाधना भी कम चमत्कारी परिणाम उत्पन्न नहीं करती । फरहाद शीरी को पाने के लिए पहाड़ खोदकर लम्बी नहर निकाल सकने में एकाकी प्रयत्नों के बलबूते ही सफल हो गया था । गंगा को स्वर्ग से घसीट कर जमीन पर बहने के लिए बाधित करने में भगीरथ अकेले ही सफल हो गये थे । व्यापक अन्धकार पर छोटा दीखने वाला सूरज ही विजय प्राप्त कर लेता है, फिर यह आशा भी की जा सकती है कि मनुष्य में उत्कृष्टता का उदय होगा तो यह वातावरण भी बदल जायेगा, जो हर दृष्टि से भयंकर-ही भयंकर दीख पड़ रहा है । यह आशावाद ही उज्ज्वल भविष्य का प्राण है ।

यह कुचक्र देर तक टिकेगा नहीं

विगत शताब्दियों में विज्ञान और बुद्धिवाद ने असाधारण प्रगति की है । इनके सहारे बहुमुखी प्रगति की आशा की जानी चाहिए थी और सतगुणी वातावरण फिर से वापस लौटना चाहिए था, पर दुर्भाग्य से वह आशा पूरी नहीं हुई, वरन् उलटे ही दृश्य दृष्टिगोचर हो रहे हैं । असमानताएँ बढ़ी हैं । द्वेष-दुर्भाव में बढ़ोत्तरी हुई है । स्वार्थपरता अधिकाधिक सघन होती गई है । करुणा और शालीनता के स्रोत मानो सूखने ही लगे हैं । हर कोई अधिकारों के लिये अपनी माँग बढ़ाने में निरत है, कर्तव्यों की ओर से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपेक्षा की प्रवृति ही बढ़ रही है । चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की दृष्टि से स्थिति दिन-दिन पतन पराभव की ओर गिरते जाने का परिणाम यह हुआ है कि चेतनात्मक वातावरण का हर क्षेत्र प्रदूषण से भर गया है । वायु, जल, मिट्टी, आकाश आदि में बढ़ते जा रहे प्रदूषण इसके अतिरिक्त हैं । आशंका और अविश्वास बढ़ते-बढ़ते आगामी संभावित महायुद्ध की तैयारियों में जुट गये हैं । वैज्ञानिक आयुधों के ऐसे आविर्भाव हुए हैं. जो यदि चल पड़े तो इस सुन्दर दुनिया का और उसकी प्राणि सम्पदा का अस्तित्व भी शेष रहने देंगें या नहीं, इसमें सन्देह है । साधारण क्रम से भी विषाक्तता जिस तेजी बढ़ रही है उसे देखते हुये लगता है कि कहीं दुनिया धीमी आत्महत्या की ओर तो नहीं बढ़ रही है । बढ़ती हुई नशेबाजी और अन्धाधुन्ध जनसंख्या वृद्धि ऐसे दो उदाहरण हैं जो प्रगति और शान्ति की संभावनाओं को धूमिल करके रख देते हैं । गरीब-अमीर के, नर और नारी के, जाति-पाँति के, अशिक्षित-शिक्षित के, बढ़ते हुये अन्तर भी निराशाजनक संभावनाओं के घटाटोप समेट कर ही सामने खड़े कर देते हैं । असंतोष, आशंका, उद्विग्नता और असहयोग की बढ़ती हुई मानसिकता हर किसी को तनावग्रस्त किये हुये है ।

अवांछनीय वातावरण से न शरीर स्वस्थ रहता है, न मन सन्तुलित । देखा जाता है कि अधिकाधिक शरीर दुर्बलता और अस्वस्थता से ग्रस्त हैं । जिन्हें पूर्ण स्वस्थ कहा जा सके, उनके दर्शन दुर्लभ हो रहे हैं । ईर्ष्या, द्वेष से जलती हुई मानसिकता ने घर-धर में श्मशान जैसे वीभत्स दृश्य उपस्थित कर दिये हैं । सहयोग तो स्वार्थ भर के लिए शेष रह गया है । उस आत्मीयता की अभिवृद्धि हो ही नहीं रहीं हैं, जिसके कारण एक और एक मिलकर ग्यारह बनने की उक्ति सार्थक होती है ।

पिछली दो-तीन शताब्दियों में प्रगति के नाम पर जो कुछ सुविधा साधन बन पड़े हैं, उन्हें मोटी दृष्टि से देखने पर प्रतीत होता है कि धरती पर देवताओं ने नया स्वर्ग लोक बसा लिया है । पाँच सौ वर्ष पुराने व्यक्ति कहीं जीवित हों और पुराने जमाने तथा आज के युग की वह आज तुलना करें, तो उन्हें इस प्रगतिशीलता पर आश्चर्यचकित होकर रहना पड़ेगा। किन्तु ऊपर की सुसज्जा वाली परत उघाड़ते ही जो अनुभव होता है, उसे नरक से भी गया गुजरा कहा जा सकता है । दुष्ट चिन्तन ने आचरण को भ्रष्ट करके रख दिया है । शालीनता का स्थान निष्ठुरता ने ग्रहण कर लिया है । वासना, तृष्णा और अहंता की कभी न पूरी होने वाली खाई, को पाटने में लोग अहर्निश इस प्रकार लगे हैं, मानों कुबेर के साधन और इन्द्र के वैभव से उन्हें कम नहीं, अधिक ही चाहिए । इस व्यामोह, के कुचक्र से मनुष्य इतने गहरे दलदल में धँसता ही चला गया है कि उबरने की बात सोचना तक संभव नहीं बन पड़ रहा है, फिर छुटकारा मिले भी तो कैसे ?

बाहर से बन-ठन कर निकलने की विडम्बना में भीतर ही भीतर मनुष्य कितना खोखला हो गया है, इसे देखकर आश्चर्य होता है । परिणित सामने है । समृद्धि भले ही बढ़ी हो, पर मनुष्य भीतर से इतना खोखला होता चला गया है मानों घुन समुदाय ने किसी खम्भे को पूरी तरह जराजीर्ण करके रख दिया हो और वह अब-तब धराशायी होने की बाट जोह रहा है ।

वैभव का बाहुल्य और उद्विग्नता का विस्फोट साथ साथ कैसे बैठ रह सकते हैं ? यह लगता तो आश्चर्यजनक है, पर विश्लेषण इसी यथार्थता के निष्कर्ष पर पहुँचता है । परिस्थितियों पर और भी अधिक ऊहापोह करने पर पता चलता है कि हम सब किसी महाअशुभ के महागर्त्त में गिरने जा रहे हैं । वैभव का दुरुपयोग प्रयोक्ता के लिए ही नहीं, सर्व साधारण के लिए ही भी विपत्ति लाता है । कला, समृद्धि चतुरता, सम्पदा आदि के सभी पक्ष यदि नीतिमत्ता की राह छोड़ दें तो फिर ईश्वर ही मालिक है ।

मनःस्थिति के गड़बड़ा जाने पर परिस्थितियों की विपन्नता स्वाभाविक है । जिधर से भी पर्दा उठाया जाता है, उधर ही चमकीले खोखले की आड़ में एक विषैला सर्प बैठा दीखता है । प्रगतिशीलता ने मनुष्य को जिस स्तर का बना दिया है, उसे देखते हुए लगता है कि वर्जनाओं को उदरस्थ करने से पूर्व निकटवर्तियों और समीपस्थों का भक्षण कर जाने की नीति अब अपवाद नहीं रही वरन् उसने सार्वजनिक प्रचलन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मान्यता प्राप्त कर ली है । इस बीच मानवी गरिमा की सत्ता की दूँढ़ निकालना सुनिश्चित हो रहा है । जहाँ दीखता भी है वहाँ उपजने वाली आशा भीतरी छद्म को देखकर निराशा में बदल जाती है ।

दुरुपयोग से तो अमृत भी विष बन जाता है । उसने वर्तमान प्रगति के पक्षधर दर्शन, कौशल, स्वभाव रुझान, प्रयास आदि को सहचर बना लिया है । ऐसी दिशा में अनर्थ का ही पोषण हुआ है । विकृत मानसिकता ने तो विभिन्न परिस्थितियों को ही जन्म दिया है और विषधरों का एक अच्छा खासा समुदाय फन फैलाये हुए दसों दिशाओं में कोलाहल मचाता दिखता है । लगता है कि सब चलता रहा तो आदिम काल से अब तक संचित की गयी मानवी संस्कृति और प्रगति का अन्त होकर रहेगा ।

स्थिति से सभी विचारशील निश्चिंत हो उसके हल खोजते भी हैं और सुझाते भी हैं, पर कार्यान्वयन का अवसर आते ही उसके लिए साहस का अंत हो गया प्रतीत होता है । अभ्यस्त विचार ही स्वभाव में सम्मिलित होकर एक से एक बड़े कौतूहल और कुकृत्य कर दिखाते हैं । जो इस कुचक्र से बच रहे हों उनकी गणना अपवाद रूप में ऊँगलियों पर करनी पड़ेगी ।

साधारण बुद्धि वैभव की चमकदार पिटारी में बैठ विनाश के महाविषधर का आभास न पा सके, यह संभव है । किन्तु उस मदारी को तो वास्तविकता का ज्ञान होना ही चाहिए, जिसके इशारे पर यह सब भला-बुरा विस्तार होता रहता है । सृष्टा ने मनुष्य एवं इस धरती को अपनी सर्वोत्तम कलाकृति के रूप में बनाया है । मनुष्य की संरचना प्रायः उन्हीं तत्वों से की है जिसके द्वारा कि उसका अपना अस्तित्व विनिर्मित हुआ है । नियन्ता की इच्छा यही रही है कि बड़े अरमानों के साथ बनाई गई उसकी इस कलाकृति का विकास हो । वह न इस धरित्री का अन्त चाहता है और न उसे यह सुहाता है कि मनुष्य आत्महत्या के मार्ग पर चलकर अपना विनाश अपने आप कर ले । इसलिए उसने इस आड़े वक्त में डूबती नाव को बचाने के लिए कुशल मल्लाह जैसा पराक्रम कर दिखाने का निश्चय किया है । ''हारे को हरि नाम'' ही एक मात्र सम्बल रह जाता है । गज और द्रोपदी जैसे अनेक उदाहरण भी इसके प्रमाण हैं । बालकों को कारण बताने का कौतूहल अभिभावक एक सीमा तक ही देखते हैं । जब वे माचिस का खेल खेलने पर उतारु होते हैं तो उनकी इस हरकत को रोक भी दिया जाता है ।

क्या मानवी प्रतिभा ध्वंस में ही लगनी चाहिये ?

परमात्मा ने मनुष्य को ध्वंस और सृजन की दोनों सम्भावनाओं को समाहित कर इस संसार में भेजा है । उसमें सृजन की शक्ति भी है और ध्वंस की शक्ति भी । शक्ति मात्र दोनों सम्भावनाओं को लिए रहती है । आग से मकान जलाया भी जा सकता है और लोहे को तपा-गला कर उसे इस्पात भी बनाया जा सकता है । पानी जीवन रक्षा के लिए आवश्यक है, प्यास बुझाने से लेकर खेतों में सिंचाई करने, फसल उगाने तक उससे कई काम उपयोगी हो सकते हैं किन्तु वही पानी आदमी को डुबो सकता है, फसलों को चौपट कर सकता है और कई तरह के विनाश विध्वंस खड़े कर सकता है । हवा प्राणियों को स्वस्थ प्राण वायु प्रदान करती है और सुगन्ध को इधर से उधर बहा कर ले आती है, किन्तु अन्धड़, चक्रवात और तूफान के रूप में वह भयंकर विनाशकारी दृश्य भी प्रस्तुत कर सकती है । कहने का आशय यह है कि शक्ति जिस किसी भी दिशा में नियोजित हो जाय उसी दिशा में सृजन के सत्परिणाम और विध्वंस की विनाश लीला प्रस्तुत कर सकती है । मनुष्य को परमात्मा ने अपना श्रेष्ठ प्रतिनिधि बनाकर इस सृष्टि पर भेजा है, स्वाभाविक ही है कि उसे अनेकानेक विभूतियों और शक्तियों के अनुदान दिये । यह मनुष्य ऊपर निर्भर है कि वह अपनी शक्ति का सृजनात्मक उपयोग करता है कि विध्वंस के लिए ।

दुर्भाग्य से इन दिनों मानवीय प्रतिभा सृजन की अपेक्षा विध्वंस के उपाय रचने में ही अधिक संलग्न है । उदाहरण के लिए युद्धों को ही लें । युद्ध और महायुद्धों में कितने लोग अकाल मृत्यु के गाल में जा समाते हैं और कितनी सम्पत्ति का विनाश होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है यह मुद्दतों से देखा और सुना जाता रहा है । जिन नगरों , बाँधों और पुलों को अगणित मनुष्यों ने अपने स्वेद सरोवर से बनाया, जिनके निर्माण में प्रचुर साधन उपादान झोंके गये थे, जो जनसाधारण की आशा और आकांक्षाओं के केन्द्र थे और जिनके बारे में समझा जाता था कि उनकी छाया में अनेक व्यक्ति चिरकाल तक सुखद आश्रय प्राप्त करते हुए चैन के दिन गुजार सकेंगे, पर वह सारी आशा धूमिल हो गई या हो जाती है । उस समय, जब युद्ध हुए अथवा होते हैं । एक-एक टोकरी बारुद के कचरे से बनाये गये बम उन संस्थानों पर गिरते ही वे देखते-देखते धूरिसात हो जाते हैं और असंख्य मनुष्य काल कवलित हो जाते हैं ।

युद्धों से होने वाले विनाश का केवल इतने मात्र से अनुमान नहीं लगाया जा सकता । इन दिनों युद्ध को अपना पक्ष अधिकाधिक प्रबल सिद्ध करने के लिए विभिन्न देशों में जो उपाय किये जा रहे हैं, उन्हें देखकर लगता है कि मनुष्य अपना आत्मघात करने के लिए जैसे उधार खाये बैठा है। युद्ध अभ्यास में इस समय पूरे संसार में करीब दो करोड़ आदमी लगे हैं । इनका एक ही काम है अस्त्र-शस्त्रों के चलाने, नये हथियार बनाने, मनुष्यों की हत्या और सम्पत्ति को नष्ट करने के नये-नये उपाय रचना । यही इनका कला-कौशल है । इनके व्यक्तित्व की सारी विशेषताएँ जैसे इसी प्रयोजन के लिए समर्पित हैं । इसके अतिरिक्त कोई सात करोड़ व्यक्ति शस्त्रास्त्रों के निर्माण और सेना सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने में लगे हुए हैं । वे मूर्धन्य मस्तिष्क इन लोगों से अलग हैं जो अपने बुद्धि कौशल से ऐसी शोधें करने, ऐसी विधियाँ निर्मित करने में लगे हुए हैं जिनकी सहायता से अधिकाधिक विनाश सम्भव हो सके । धन-जन की अधिकाधिक हानि के लिए शक्तिशाली, प्रभावपूर्ण और सस्ते उपाय ढूँढ़ निकालना ही उनकी प्रतिभा की सफलता और सार्थकता समझी जाती है ।

आइये, देखें इन दिनों युद्ध में किस प्रकार के विनाशकारी उपाय रचे जा रहे हैं । इन दिनों जीवाणु युद्ध, मौसम युद्ध जैसे उपाय तो खोज ही लिए गये हैं । उपायों के द्वारा किसी भी देश को बिना प्रकट युद्ध हानि पहुँचाई जा सकती है । युद्ध के ये तरीके प्रयोग में लाये जायें तो पता ही नहीं चलता कि कौन-सा देश यह सब कर रहा है ? प्रथम तो यही निश्चय नहीं हो पाता कि इन प्राकृतिक विपदाओं के पीछे किसी देश का हाथ है अथवा ये अपने स्वाभाविक क्रम से उत्पन्न हुई हैं ? जीवाणु युद्ध और मौसम युद्ध के अलावा समुद्र की जल धाराओं को प्रभावित करके भी प्रतिपक्षी देश को हानि पहुँचाने के उपाय खोज लिए गये हैं ।

पृथ्वी के दो तिहाई भाग में फैले हुए समुद्र में विभिन्न तापक्रम की कई जल धाराएँ प्रवाहित होती हैं । मोटे तौर पर इन्हें ठण्डी और गर्म जल धाराओं के रूप में ही जाना जाता है । इन धाराओं के कारण समुद्र के तापक्रम पर तथा उससे आसपास के भू-भागों के मौसम पर प्रभाव पड़ता है । कारण कि सागर के तापमान का प्रभाव वायु के दबाव और वेग पर, मौसम में नमी पर और बादलों के बनने पर भी पड़ता है । ऐसे स्थानों पर जहाँ बर्फ की अधिकता है गर्म धाराओं को प्रवाहित कर वह बर्फ पिघलाया जा सकता है और उसके द्वारा सम्बन्धित क्षेत्रों में जलप्लावन की स्थिति बनाई जा सकती है । हिमखण्डों को पिघलाकर समुद्र तल में अन्तर पैदा कर तटवर्ती क्षेत्रों को पानी में डुबोया जा सकता ।

वायुमण्डल की संरचना में साधारण-सा परिवर्तन कर उस क्षेत्र के निवासियों के लिए जीवन संकट उत्पन्न करने के उपाय भी खोज लिए गये हैं । उदाहरण के लिए वायु मंण्डल में यदि कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा काफी ज्यादा बढ़ा दी जाय तो उस क्षेत्र के निवासियों का बचना लगभग असम्भव ही हो जाय । हालांकि औद्योगीकरण के कारण शहरों और महानगरों में कारखानों की चिमनियों और रेल-मोटरों से निकलने वाले धुएँ के कारण वहाँ के वायुमंडल में काफी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड गैस घुल गई है । इस कारण उत्पन्न होने वाले वायु-प्रदूषण की चर्चा आमतौर पर कही, सुनी और लिखी जाती है । वायु प्रदूषण के कारण होने वाली जन स्वास्थ्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की हानि से थोड़े बहुत प्रायः सभी लोग परिचित हैं । लेकिन युद्ध विज्ञानियों ने ऐसे उपाय खोज लिये हैं, जिनके कारण वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड अत्यन्तिक मात्रा में बढ़ाई जा सके ।

इसी प्रकार प्रतिपक्षी देशों में चुम्बकीय असन्तुलन पैदा करके, अयन-मण्डल की ओजोन परतों में छेद करके सूर्य की रेडियोधर्मी, पराबैंगनी विकिरण पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में मनचाहे केन्द्रों पर केन्द्रित की जा सकती है । इस प्रकार की विधियाँ खोजकर युद्ध विज्ञानियों ने किसी भी क्षेत्र में बिना धूम-धड़ाका किये जन-जीवन का नामोनिशान मिटा देने के सरंजाम जुटा लिए हैं ।

कृत्रिम वर्षा के लिए विकसित की गई वैज्ञानिक विधियों का भी युद्ध प्रयोजनों के लिए उपयोग करने की सम्भावनाएँ हैं । बादलों में बर्फ का अथवा सिलवर आयोडाइड का छिड़काव करके किसी दुश्मन देश की ओर उड़ने वाले बादलों को अपने देश की सीमा में अथवा मित्र देशों में अथवा उसी देश की सीमा पर रोककर बरसात कराई जा सकती है और शत्रु राष्ट्र में सूखे की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है । इतना ही नहीं दूसरे देश के क्षेत्रों में भूकम्प लाने व विनाशकारी समुद्री तूफान पैदा करने के वैज्ञानिक तरीके खोज लिए गये हैं ।

कृत्रिम भूकम्प लाने के कई सफल प्रयोग पिछले दिनों रूस और अमेरिका के युद्ध विज्ञानियों ने किये । सर्वविदित है कि अपनी यह पृथ्वी आरम्भ में सूर्य की तरह ही आग का एक जलता हुआ पिंड थी । धीरे-धीरे यह ठण्डी होती गई और इस पर जीवन का अवतरण तथा अस्तित्व सम्भव हो सका । चूँकि पृथ्वी धीरे-धीरे तप्त पिंड से ठण्डी होती गई इसलिए उसकी कई परतें बनीं । पृथ्वी की ऊपर वाली परत को 'भूकवच' कहते हैं । इसमें मिट्टी, पत्थर, कोयला, धातु आदि चीजें हैं । धरती की यह ऊपरी परत केवल ४० मील मोटी है । इस परत के नीचे तरल परत है । इसका नाम भूरस है । इस भूरस के ऊपर धरती तैरती रहती है । धरती की ऊपरी परत का दबाव घटने-बढ़ने के कारण जब इस तरल परत में कोई खलल पैदा होता है तब भूकम्प आते हैं ।

वैज्ञानिकों ने इस तरल-परत से भी नीचे वाली परत जिसका नाम शिलावरण है और जो ७०० मील मोटी है, प्रभावित करने के उपाय खोज लिए हैं । नियन्त्रित भूमिगत परमाणु परीक्षणों द्वारा भूकवच के नीचे वाली तरल परत को प्रभावित कर कृत्रिम भूकम्प आसानी से पैदा किये जा सकते हैं । इसी प्रकार नियंत्रित परमाणु विस्फोटों से भी बड़ी-बड़ी समुद्री लहरें पैदा की जा सकती है और तटीय क्षेत्रों के लिए विनाशकारी जल-प्रलय पैदा किया जा सकता है । इस प्रकार की समुद्रीय लहरें उत्पन्न करने के प्रयोग द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ही किये जाने लगे थे । उस समय योजना बेहद खर्चीली होने के कारण यह विचार त्याग दिया गया, किन्तु अब इस योजना पर अन्वेषण और शोधों द्वारा कृत्रिम भूकम्प तथा समुद्री लहरें पैदा करना बेहद आसान और बहुत सस्ता हो गया है ।

मानवी प्रतिभा और पुरुषार्थ के ध्वंस में लगने की तस्वीर का यह एक पक्ष है, जो आँखों से दिखाई देता है और इसके प्रत्यक्ष परिणाम भी देखे जा सकते हैं । किन्तु स्थिति के और भी पहलू हैं, जिसमें प्रत्यक्ष परिणाम भले ही न दिखाई दें, पर वह अपनी विभीषिका के संहारी परिणाम तो प्रस्तुत करती ही रहती है । उदाहरण के लिए नशों को ही लें । नशेबाजी और मादक पदार्थों के उत्पादन, खपत तथा सेवन में भी उतनी ही जन शक्ति और धनशक्ति लगी हुई है कि जितनी कि युद्ध उपकरणों के उत्पादन, विकास और अभ्यास में । मनुष्य की औसत आयु यदि साठ वर्ष मानी जाय और अब तक युद्ध में मारे गये आबाल, वृद्ध, नागरिकों की आयु का हिसाब लगाकर उसके बाद औसत आयु निकाली जाय तो वह ३५ वर्ष से अधिक नहीं बैठती। अर्थात् औसतन २५ वर्ष की आयु में युद्ध की बलिवेदी पर होम दिये गये । होम दिये कहना भी 'होम' जैसे पवित्र शब्द का अपमान होगा । कहा जाना चाहिए इतने वर्ष नष्ट कर दिये गये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

युद्ध के समान ही नशेबाजी भी मनुष्य की आयु और स्वास्थ्य को प्रभावित करती है । सम्भवतः दुनिया की आधी आबादी अनेक तरह के नशों और मादक द्रव्यों का सेवन करती है । उनसे कितनी हानि होती है, कितने लोगों का जीवनकाल कितना घटता है ? यह अभी तक जाँचा,देखा नहीं गया । पर यह स्पष्ट है कि नशों के कारण युद्ध से कम नहीं अधिक ही विनाश उत्पन्न होता है । इन साधनों को तैयार करने, बनाने और खपाने में जो श्रम एवं धन लगता है उस पूँजी की यदि युद्ध पूँजी और युद्ध श्रम से तुलना की जाय तो प्रतीत होगा कि नशा आगे है युद्ध-पीछे । बारूद जल जाती है, युद्ध उपकरण नष्ट हो जाते हैं और अपने साथ मानवीय जीवन तथा धन को भी नष्ट कर देते हैं । उनका कोई उत्पादक परिणाम नहीं होता । नशे के उपकरण भी इस्तेमाल के साथ ही नष्ट हो जाते हैं, उनका प्रभाव होता है तो वह भी अशुभ ही, जीवन और धन दोनों का नाश होता है। इस प्रकार युद्ध और नशों को विनाश करने वाले तत्वों को एक ही वर्ग में रखा जा सकता है ।

युद्ध और नशों की ही भाँति कला, साहित्य, संगीत आदि क्षेत्रों में भी सृजन कक्ष विकृत वीभत्स प्रवृत्तियाँ ही ज्यादा चलती हैं । ये प्रवृत्तियों नैतिकता को नष्ट-भ्रष्ट कर मनुष्य जीवन को नहीं तो, मानवता को अवश्य ही नष्ट करती हैं। इस स्थिति में यही कहा जायगा कि मानवी क्षमता का अधिकांश भाग ध्वंस में लगे हुए हैं । क्या ध्वंस में लगी हुई इस मानवीय क्षमता को मोड़ा नहीं जा सकता ? उसे सृजन की दिशा नहीं दी जा सकती ? क्या विनाश और विध्वंस इतना आकर्षक है कि उसका प्रलोभन छोड़ा नहीं जा सकता ? क्या विकास इतना निरर्थक है कि उसके लिए कुछ सोचा समझा नहीं जाना चाहिए ? क्या उसकी आवश्यकता भी अनुभव नहीं की जानी चाहिए ? आदि ऐसे प्रश्न हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए और अपनी रीति-नीति का पुनर्निर्धारण करना चाहिए ।

प्रस्तुत प्रचलन बदल कर रहेगा

हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डैनियल वैल ने उद्योगोत्तर समाज के विषय पर गम्भीर चिन्तन किया है । उनके लेखों और ग्रन्थों में सर्वसाधारण का ध्यान इस ओर खींचा गया है कि बदलते समय की ओर से आँखें बन्द न की जायँ । जो हो चुका उसका प्रभाव वर्तमान पर पड़ा है और वर्तमान की प्रक्रिया भविष्य को प्रभावित किये बिना रहेगी नहीं । इसलिए हमें वर्तमान की ही तरह भूत और भविष्य का भी पर्यवेक्षण करना चाहिए । डैनियल बैल की दृष्टि में अगले दिनों इतने बड़े परिवर्तन होंगे जिन्हें विगत एक हजार वर्ष की प्रगति की तुलना में कहीं अधिक आश्चर्यजनक ठहराया जा सकता है ।

भौतिक विज्ञान की प्रगति का उत्साह और सिलसिला तो धीमी गति से पिछले हजार वर्ष से चलता आ रहा है पर उसमें योजनाबद्ध और सामूहिक विकास आरम्भ हुए तीन सौ वर्षों से अधिक नहीं हुए। विज्ञान ने बिजली, भाप, तेल जैसे माध्यमों से शक्ति उत्पन्न करने के तरीके खोजे । बड़े उत्पादन यन्त्र बने । उनके लिए यातायात, पानी, खपत आदि की दृष्टि से शहर सुविधाजनक प्रतीत हुए । वे बढ़े, देहात खाली हुए । पूँजी ने पूँजी को समेटा । धनियों को अधिक धन कमाने का अवसर मिला । यह कमाई निर्धनों का शोषण किए बिना और किस प्रकार होती । संक्षेप में यही है वह औद्योगिक क्रान्ति जिसने संसार का एक प्रकार से नक्शा ही बदल दिया । पाँच सौ वर्ष पूर्व का कोई व्यक्ति कहीं जीवित हो और वह तब की तथा अब की स्थिति की तुलना करने लगे तो आश्चर्यचकित हुए बिना न रहेगा । परिस्थितियों और प्रचलनों में जमीन-आसमान जैसा अन्तर दिखाई देगा । लगेगा जादूगरों ने कोई तिलस्म खड़ा कर दिया हो । अकल्पनीय सुविधा-साधन जुट गये हैं । जलयान,वायुयान, रेल, मोटर टेलीफोन,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रेडियो, टेलीविजन जैसे साधनों से सर्वसाधारण को लाभ उठाते देखा जाता है। पूँजीपतियों ने बड़े मिल कारखाने खड़े कर लिए हैं । सरकारों के पास प्रक्षेपास्त्रों और अणु आयुधों के भण्डार भर चले हैं।

पर्यवेक्षकों का मत है कि यह औद्योगिक क्रान्ति के नाम से जानी जाने वाली भूत विद्या की चरम परिणति है । उसके अभ्युदय के दिन लद गये । ढलान का बुढ़ापा लद चला है । मरण का दिन तेजी से समीप आ रहा है । जिन साधनों से यह तिलस्म बढ़ा था, अब उसके साधन चुकते जा रहे हैं । तेल, कोयला समाप्त होने जा रहा है । विद्युत् उत्पादन के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है वे भी जबाव दे रहे हैं । लोहा जैसी धातुओं का भण्डार खाली कर लिया गया । बड़ी हुई आबादी के लिए जमीन की उर्वरता एवं परिधि जबाव देती जा रही है । पीने का पानी कम पड़ रहा है । बढ़ते हुए प्रदूषण ने बीमार रहने और बेमौत मरने की स्थिति बना दी है । सुविधा की आड़ में खड़ी विभीषिकाओं का नग्न नर्तन अट्टहास अब प्रत्यक्ष होता जा रहा है ।

अधिक वैभव उपार्जित करने के लिए समर्थ देशों ने उपनिवेशवाद की नीति अपनाई । मण्डियाँ हथियाने के लिए समर्थों में परस्पर विग्रह खड़े हुए । पिछली दशाब्दियों में ही दो विश्व-युद्ध होकर चुके हैं । छुटपुट क्षेत्रीय लड़ाइयाँ तो इस बीच सहस्रों की संख्या में हो चुकीं । इनके पीछे अन्य कारण गौण मण्डियाँ हथियाने की ललक प्रमुख रूप से काम कर रही है । तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ हैं । कोई एक सिरफिरा बारूद में आग लगाकर इस धरती को धूल बनाकर उड़ा सकता है ।

वैयक्तिक और सामाजिक क्षेत्रों में प्रस्तुत औद्योगिक क्रान्ति ने कम विष बीज नहीं बोये हैं । नशेबाजी के दुर्व्यसन, यौन मर्यादाओं का समापन, अभक्ष्य भक्षण, अपराधों की भरमार जैसे प्रचलनों ने स्थिति विषम से विषमतर बना दी है । उद्योगपतियों और श्रमिकों के बीच चलने वाली 'टसल' विग्रह बनकर खड़ी हो गई है । लगता है उच्छृंखलता की अव्यवस्था की खुली छूट मिल चली है । सरकारें और लोकसेवी संस्थाएँ अपना विश्वास खोती जा रही हैं । इनकी नेकनीयती पर उँगलियाँ उठने लगी हैं । आतंक, अविश्वास, आशंका, असुरक्षा और अनिश्चितता की स्थिति में हर कोई उद्विग्न-सा दीख पड़ता है । शारीरिक और मानसिक रोगों की तूफानी बाढ़, लगता है मनुष्य की विशिष्टता को उदरस्थ करने ही जा रही है ।

यह सब कैसे हुआ ? क्यों हो रहा है ? इसका कारण तलाशने पर एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि जिस औद्योगिक क्रान्ति को उसके आरम्भ काल में वरदान समझा जा रहा था वही अभिशाप सिद्ध हो रही है । पुनर्विचार के लिए परिस्थितियों ने लोक मानस को बाधित किया है। पर्यवेक्षण से अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है कि यह स्थिर देर तक नहीं चल सकेगी । उसका अन्त होकर रहेगा। मनुष्य की मूर्खता कितनी ही बढ़ी-पढ़ी क्यों न हो, उसकी समझदारी भी समाप्त नहीं हो सकती । छप्पर में आग लगा देने का आदेश देर तक नहीं ठहरता । बुझाने के लिए भी वही दौड़ता है। सर्वनाश से पहले समझदारी का उदय भी होता रहा है । अब भी उसकी पुनरावृत्ति होगी ।

क्रान्तियों की प्रतिक्रान्तियाँ भी होती हैं । पेण्डुलम घण्टा आगे जाने के साथ-साथ पीछे भी लौटता है । नशे का सदा उभार ही नहीं रहता, समयानुसार उतार भी आता है । औद्योगिक क्रान्ति ने सब्जबाग दिखाकर जो विनाश विग्रह खड़े किये हैं उसे देखते हुए विश्वमनीषा के मन में उसके प्रति अश्रद्धा ही नहीं जगी वरन् विरोध भावना भी उभरी है । बदलने की, बदले जाने की परिस्थितियाँ बन रही हैं । इस दिशा में प्रकृति भी काम कर रही है और मानवी प्रवृत्ति का रुख पहचान कर बदलाव की परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रही हैं ।

उत्पादन के सामने संकट है कि कहाँ खपायें ? उपभोक्ताओं के सामने संकट है कि खरीदने के साधन कहाँ से जुटायें ? दोनों के सामने अपने-अपने ढंग के अवरोध अड़ गये हैं । जुगुत्सुओं के लिये न लड़ना बन पड़ रहा है न पीछे हटना । मिलें, तेल-कोयले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

और खनिज की सम्पदा चुक जाने पर चलेंगी कैसे ? पर्वतों जितना उत्पादन , निर्धन समुदाय द्वारा खरीदा कैसे जायगा ? सम्पन्नता के विरुद्ध निर्धनता ही नहीं ईर्ष्या-प्रतिद्वन्द्विता भी खम ठोंक सामने आ गई है । इस मल्लयुद्ध का समापन दो ही प्रकार होगा या तो योद्धा लड़ मरेंगे या बहादुरी समझदारी के साथ पीछे हटेंगे । दोनों ही परिस्थितियों में औद्योगिक क्रान्ति के चमत्कारों का अन्त सुनिश्चित है ।

वैज्ञानिक आविष्कार के साथ-साथ सम्पन्न हुई औद्योगिक क्रान्ति ने जहाँ एक ओर सुविधा साधनों को बढ़ाया वहाँ उसने समर्थों को अधिक सम्पन्न बनाने के साथ-साथ असंख्यों को बेकारी,भुखमरी और बदकारी के गर्त में भी धकेल दिया । इसकी प्रतिक्रिया समाजवाद,के रूप में सामने आई । यह क्रान्ति की प्रतिक्रान्ति है । शोषक आपस में भी लड़ते-मरते रहे हैं । यह प्रतिक्रिया भी औद्योगिक प्रतिस्पर्धा और ठण्डे-गरम युद्धों के रूप में आये दिन फूटती रहती है ।

युद्ध, विद्रोह,अपराध, बिखराव, प्रकृति प्रवाह जैसे अनेक कारण सामने हैं जिनसे यह आभास मिल रहा है कि औद्योगिक क्रान्ति के रूप में जो सभ्यता और प्रगतिशीलता का ढिंढोरा पीटने वाला बबूला जोर-शोर के साथ उगा था वह अब चूल्हे की आग घटने पर बैठने वाला झाग की तरह तली में बैठने ही जा रहा है ।

बुखार के उतरने, खुमारी के घटने के लक्षण स्पष्ट हैं । प्रश्न एक ही है कि भविष्य में क्या होगा ? 'उद्योगोत्तर समाज' की स्थापना कैसी होगी । इस सन्दर्भ में डैनियल वैल जैसे मूर्धन्य समाजशास्त्रियों का मत है कि लोगों ने इन दो शताब्दियों में जो अनुभव एकत्रित किए हैं वे मूल्यवान हैं । उनके सहारे क्रिया और प्रतिक्रिया के जो परिणाम सामने आये हैं उसे भुलाया नहीं जायेगा । गलती तभी तक चलती है जब तक उसके दुष्परिणाम सामने नहीं आते । जलने के उपरान्त आग से खेलने का प्रमाद प्रायः बन्द ही हो जाता है । मर्यादाओं का व्यतिक्रम करते रहने पर समाजक्रम चल नहीं सकेगा और बिना सुनियोजित समाज के उच्छृंखलता पर उतारु मनुष्य जीवित न रह सकेगा । इस तथ्य को इन दो शताब्दियों में मनुष्य ने पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझ लिया है ।

सर्वनाश से पूर्व ही मनुष्य संभल जाता है । इतिहास के पृष्ठों पर इसके अगणित प्रमाण विद्यमान हैं । इस बार भी ऐसा ही होना है । अणुयुद्ध, प्रदूषण, प्रजनन विस्फोट पूँजी का एकत्रीकरण, अपराधों का अभिवर्धन, प्रमाद और विलास का विस्तार जैसी अनेकों समस्याएँ औद्योगिक क्रान्ति की देन हैं । इसे इस रूप में नहीं चलना है जैसे अब तक चलती रही है । कटु अनुभव को बार-बार दुहराते नहीं रहा जा सकता ।

अगले दिनों महान परिवर्तन की प्रक्रिया प्रचण्ड होगी । उसे दैवी निर्धारण, साँस्कृतिक पुनरुत्थान विचार क्रान्ति आदि भी कहा जा सकता है, पर वह होगी वस्तुतः समाजक्रान्ति ही । समाज, जन समुदाय को एकसूत्र में बाँधे रहने वाली व्यवस्था को कहते हैं । यह व्यवस्था बदलेगी तो प्रचलन और स्वभावों में समान रूप से एक साथ परिवर्तन प्रस्तुत होंगे ।

व्यक्ति सादगी सीखेगा । सरल बनेगा और सन्तोषी रहेगा । श्रमशीलता गौरवास्पद बनेगी । हिलमिलकर रहने की सहकारिता और मिल बाँट कर खाने की उदारता बदले हुए स्वभाव की विशेषता होगी । महत्वाकाक्षाएँ उद्विग्न न करेंगी । उद्धत प्रदर्शन का अहंकार तब बड़प्पन का नहीं पिछड़ेपन का चिह्न समझा जायेगा । विलासी और संग्रही भी अपराधियों की पंक्ति में खड़े किए ज़ायेंगे और उन्हें सराहा नहीं दबाया जायगा । कुटिलता अपनाने की गुंजायश जाग्रत एवं परिवर्तित समाज में रहेगी ही नहीं । छद्म आवरणों को उघाड़ने में ऐसा ही उत्साह उभरेगा जैसा कि इन दिनों विनोद मंचों के निमित्त पाया जाता है ।

औद्योगोत्तर समाज की संरचना ग्राम्य जीवन प्रधान होगी। पूँजी की तरह शहरी आबादी को भी दूर-दूर तक बिखेर दिया जायगा । ग्राम और शहर के बीच कस्बों का प्रचलन होगा । बड़े कारखाने छोटे कुटीर उद्योगों में बदल जायेंगें। हर गाँव आत्मनिर्भर

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनने के प्रयास में होगा और हर हाथ को काम मिलेगा । परिवार-वृद्धि के दुष्परिणामों को लोग सहज बुद्धि से समझेंगे और छोटे परिवार सहकारिता की नीति अपनाकर बृहत्तर परिवारों के रूप में रहने के अभ्यस्त होंगे । स्वतन्त्रता और संयुक्तता की मिली-जुली पद्धति सस्ती भी पड़ेगी और सरल सुखद भी रहेगी ।

इन दिनों अधिक कमाने, अधिक उड़ाने और ठाटबाट दिखाने की जिस दुष्प्रवृति का बोलबाला है उसे भविष्य में अमान्य ही नही, हेय भी ठहरा दिया जायेगा । थोड़े में निर्वाह होने से कम समय में उपार्जन के साधन जुट जायेंगे । बचा हुआ समय तब आलस्य-प्रमाद में नहीं वरन् सत्प्रवृत्तियों के आवर्धन में लगान करेगा । सार्वजनिक सुव्यवस्था और मानवी गरिमा को बढ़ाने वाले तब ऐसे अनेकानेक कार्य सामने होंगे जिनमें व्यस्त रहते हुए व्यक्ति हर घड़ी प्रसन्नता, प्रगति और सुसम्पन्नता का अनुभव करता रहे ।

सभ्यता की उपेक्षा करना- अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

मनुष्य मशीन नहीं है जिसे ईंधन, चिकनाई और सफाई की आवश्यकता पूरी करके सन्तुष्ट किया जा सके । रोटी, कपड़ा और मकान होने से ही उसका काम नहीं चल सकता । आहार, निद्रा का प्रबन्ध कर देने से जिन्दा तो रहा जा सकता है, पर जीवन को पल्लवित नहीं किया जा सकता है । इसके लिए कुछ और भी चाहिए । निर्वाह साधनों में उसे निश्चिन्तता का आश्वासन और आक्रान्ताओं से बचे रहने का संरक्षण चाहिए। उसे यश, सम्मान एवं वर्चस्व के प्रकटीकरण का अवसर चाहिए । सामाजिक शान्ति और सद्व्यवहार की उसे अपेक्षा है । कला और सौन्दर्य के स्पर्श से जो गुदगुदी उत्पन्न होती है- प्रेम सम्वेदनाओं से जो उल्लास उभरता है वह भी उसकी आन्तरिक आवश्यकताओं का एक अंग है । उत्पादन के लिए श्रम– न केवल शारीरिक व्यायाम की आवश्यकता पूरी करता है– क्षुधा निवारण के साधन जुटाता है और बुद्धि की प्रखरता के अनेकों आधार खड़े करता है । ममत्व का विस्तार व्यक्तियों तथा वस्तुओं में करने से उसे आत्मविस्तार की अनुभूति होती है । इस प्रकार के अवसर न मिलें और किसी प्रकार गुजारा हो सके तो उसे बन्दी जीवन के अतिरिक्त और कुछ न कहा जा सकेगा । जीने को तो लोग एकान्त कारावासों में भी लम्बी उम्र गुजार देते हैं । पर नीरस और निरानन्द, मूर्छित और एकाकी परिस्थितियों में रहने वाली चेतना ऊब, खीज और बेचैनी ही अनुभव करती रहेगी । भूखा पेट शरीर को बेचैन करता है और भूखा अन्तस् ऐसे विद्रोह पर उतारू हो जाता है जिसे आत्म-हत्या के समतुल्य स्थिति का आँका जा सके ।

प्रगति की लम्बी मंजिल पार करते हुए मनुष्य ने जो बहुमूल्य उपलब्धि अर्जित की है उसे एक शब्द में 'सभ्यता' कहना उचित होगा । उसे प्राप्त करने में उसने समुचित मूल्य चुकाया है । प्राणधारी को सामान्य प्रवृत्तियाँ - इन्सटिन्क्टस्– उसके साथ ही जन्म-जात रूप में मिली थीं । उनके यथावत् बनी रहने पर वह पशु वर्ग से ऊँचा नहीं उठ सकता । वे उसे सामाजिक सहयोग और चिन्तन के परिष्कार का अवसर ही नहीं मिलने दे सकती थीं । सभ्यता ही है जिसने उसे आदर्श अपनाने और मर्यादा पालन के लिए प्रोत्साहित किया । यही था वह सभ्यता का अवलम्बन जिसके सहारे आदिमकाल के नर-वानर को आज के समुन्नत मानव के स्तर तक पहुँचने का श्रेय प्राप्त हुआ है ।

भीतर से क्रोध उठने पर भी उसे पी जाना, यौन स्वेच्छाचार को दाम्पत्य मर्यादा में सीमाबद्ध करना, लाभदायक अवसर आने पर भी उन्हें नीति अनीति का विश्लेषण करने के उपरान्त ही स्वीकार करना, अधिकारों का कर्त्तव्यों के पक्ष में त्याग करना, स्वयं भूखे रहकर दूसरों को खिला देना–जैसे अनेकों विशिष्ट आचरण सभ्यता की देन हैं । नर-वानर के लिए इतनी शालीनता प्रस्तुत कर सकना सम्भव न था । वह आत्म-निरीक्षण और आत्म-निर्माण की स्थिति में था ही नहीं । आदिम काल में नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ ही उस पर छाई रहती थीं । सभ्यता ने उसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इतना विवेक और साहस दिया है कि उन जन्म-जात प्रवृत्तियों की न केवल समीक्षा ही कर सके वरन् उन्हें बदलने, सुधारने और परिष्कृत करने का साहस दिखा सके ।

यह तो प्रवृत्ति परक नियन्त्रण और परिष्कार की बात हुई । सभ्यता ने चिन्तन को सीमाबद्ध क्रमबद्ध एवं दिशाबद्ध भी किया है । कल्पना शक्ति, संकल्प शक्ति, तुलनात्मक समीक्षा दृष्टि, दूरगामी परिणामों की अनुभूति समाज-निष्ठा, चरित्र-निष्ठा जैसी विशेषताओं को अति मानस का विकास कह सकते हैं । विकास का यही वह केन्द्र बिन्दु है जहाँ से पशु और मनुष्य के बीच मौलिक अन्तर आरम्भ होता है। व्यक्तित्व की अनुभूति को ही आत्मा कहते हैं । निकृष्ट स्तर के जीव क्रिया तो बहुत करते हैं, पर अपने आप के सम्बन्ध में निजी तौर से कुछ सोच नहीं पाते। प्रकृति प्रेरणा ही उनकी निजी इच्छा होती है । इसमें उनका अपना कोई हाथ नहीं होता । मनुष्य की स्थिति इससे भिन्न है वह शरीर के अतिरिक्त एक पृथक चेतना के रूप में न केवल आत्मानुभूति करता है, वरन् उसके विकसित करने में भी यत्नपूर्वक प्रयास करता है । दर्शनशास्त्र और आत्म-विद्या का विशालकाय कलेवर आत्म-विश्लेषण एवं आत्मोत्कर्ष की दिशा धारा निर्धारित करने के लिए ही विनिर्मित हुआ है । आग जलाने–पहिये का उपयोग जानने-नोंकदार उपकरणों का प्रयोग समझने से मानवी प्रगति में असाधारण योगदान मिला समझा जाता है, पर वास्तविकता यह है कि वह श्रेय सभ्यता की कल्पना और उसका स्वरुप निर्धारित करने की सफलता को ही दिया जा सकता है । बोलना, लिखना और हँसना जैसे दिव्य अनुदान उसने सभ्यता की साधना करके ही प्राप्त किये हैं । कृषि, पशु पालन, वस्त्र, वाहन, वस्तु विनिमय, परिवार, शासन, शिक्षा, चिकित्सा, स्वच्छता जैसी उपलब्धियाँ शारीरिक अथवा पदार्थ परक नहीं–विशुद्ध रूप से सुविकसित चिन्तन की ही प्रतिक्रिया हैं । इन्हें सभ्यता की प्रगति के अतिरिक्त और कोई नाम नहीं दिया जा सकता ।

शरीर निर्वाह एवं मनः तोष ही अब जीवनयापन के आधार नहीं रह गये हैं । व्यक्तित्व इन सबसे बड़ी इकाई बन चला है । अब 'अहं' का भी एक तथ्य है और उसकी तुष्टि के लिए इतना करना पड़ता है जितना शरीर और मन दोनों को सन्तोष देने के लिए किया जाता है । आत्म-परितोष के लिए विकृत रीति नीति अपनाई गई या परिष्कृत आधार अपनाया गया यह आगे का प्रश्न है । बात वहाँ से आरम्भ होती है जहाँ शरीर और मन को भी पीछे धकेल कर- दोनों पर कष्टसाध्य अंकुश रखकर आत्म-गौरव के लिए कुछ किया जाता है । यह आत्म-सत्ता का परिचय है । इसी को आत्मा कहा गया है । शरीर शास्त्र, मनः शास्त्र का अपना विस्तार और अपना उपयोग है । आत्म-शास्त्र अपना वर्चस्व इन दोनों से ऊपर सिद्ध कर रहा है । कर्म और ज्ञान की क्षमता सर्वविदित है पर इच्छाएँ, भावनाएँ अपनी सामर्थ्य उन दोनों से ऊपर सिद्ध कर रही हैं । यह नैसर्गिक प्रवृत्तियों की प्रेरणा की ओर नहीं भाव सम्वेदनाओं की ओर इंगित किया जा रहा है । आत्मा का स्वरुप और कार्य क्षेत्र कितना अधिक बढ़ गया है इसे हम स्पष्ट देखते हैं अहं को विकृत अथवा परिष्कृत आधार पर पूरा करने के लिए जन-साधरण को कितना कठिन प्रयास करना पड़ता है, इसे कौन नहीं जानता? आत्म-चेतना का स्वरुप निर्धारण करना और उसकी पूर्ति के नये आधार खड़े करना वस्तुतः प्रकृत प्रवृत्तियों के समानान्तर एक नया विज्ञान खड़ा कर देने के समान है । अविकसित जीवधारी इन उपलब्धियों से सर्वथा अपरिचित ही होते हैं । मानवी उपलब्धियों में भौतिक साधनों की लम्बी शृंखला सामने है, पर सभ्यता के विकास ने उसे जो आत्मा दी है और उसका सुविस्तृत ढाँचा वरदान रूप में दिया उसने वस्तुतः मनुष्य को कृतकृत्य कर दिया है । किसी दिव्यलोक का निवासी बना दिया है। दुनिया यही है जिसमें कृमि-कीटक निवास निर्वाह करते हैं । पर मनुष्य कला, सम्वेदना, व्यवस्था, सम्पदा और वर्चस्व से भरे पूरे जिस लोक में रहता है वह अनौखा है। अविकसित जीवधारी भी यों इसी धरती पर रहते हैं पर उनके और मनुष्यक लोक को भिन्न माना जाय तो इसमें अत्योक्ति जैसी कोई बात नहीं है ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर और मन के सुविधा साधनों के उपार्जन, संग्रह एवं उपभोग में जो उत्साह रहता है उसी ने अपने युग में व्यस्तता के चक्र घुमाने में अतिशय तीव्रता उत्पन्न की है । पर यदि गम्भीरता से देखा जाय तो नैतिक एवं अनैतिक दुस्साहसों के पीछे 'अहं' के पोषण की दुर्दान्त लालसा काम करती दिखाई देगी । यदि यह न हो तो खाओ, पीओ, मौज करो के पशु प्रयोजन तो अति सरलतापूर्वक सम्पन्न होते रह सकते हैं । 'अहं' की सामर्थ्य जितनी बढ़ी-चढ़ी है उतनी ही भयंकर उसकी विकृति भी है । इस तथ्य को तत्वदर्शियों ने भुलाया नहीं है और उन्होने सोते साँप को जगाने के साथ-साथ उसके विषैले दाँतों को कीलित करने के लिए कीलन मन्त्र के भी आविष्कार में उपेक्षा नहीं बरती है ।

चेतना की प्रौढ़ता–आत्मानुभूति के रूप में देखी जाती है, उसका परितोष आत्म-गौरव में होता है । विकृत चिन्तन उसका परितोष ध्वंस में देखता है । वह अपेक्षाकृत सरल है । एक बालक भी माचिस की तीली लेकर आग लगा सकता है और पूरे घर, गाँव को भस्म कर सकता है । आतंकवादी आये दिन ऐसे ही उत्पात करते रहते हैं और ध्वंस के द्वारा अपनी विशिष्टता सिद्ध करते रहते हैं । आततायी अपराध प्रायः अभाव पूर्ति के लिए नहीं अपने वर्चस्व और कौशल द्वारा दूसरों को आतंकित कर देने के लिए होते हैं । किसी इमारत को गिरा देना स्वल्प श्रम से ही संभव हो सकता है उसे कोई मूर्ख भी कर सकता है, पर निर्माण अति कठिन है । उसके लिए भावना, सूझ-बूझ, योग्यता एवं साधन जुटाने की आवश्यकता पड़ती है । यह कठिन है । इसलिए सृजनात्मक गतिविधियाँ अपनाकर आत्म-गौरव का परिचय देना किसी-किसी से ही बन पड़ता है । आतंकवाद अपनाकर ओछी सफलता प्राप्त करने के लालच पर अंकुश करना भी प्रखर आदर्शवादिता अपनाने वाले के लिए ही सम्भव हो सकता है । सभ्यता का लक्ष्य असुरता का–विकृतियों का अभिवर्धन नहीं, वरन् उस उत्कृष्टता का अनवरत अभिवर्धन है जिसे अपनाकर प्रगति की इतनी मंजिल पूरी हो सकी है ।

आत्मानुभूति से लेकर आत्म-गौरव तक का अनुदान देकर सभ्यता का लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता वरन् वह अपूर्णता को पूर्णता में–अणु को विभु में परिणत करने लिए अनवरत प्रयास के लिए सतत् संलग्न रही । उसने मनुष्य के सामने चरम उत्कृष्टता का लक्ष्य प्रस्तुत किया है । वह है- परमात्मा । परमात्मा का विश्वास–उसके अनुग्रह का उपार्जन–और अन्ततः उसी के समतुल्य बनने की उत्कण्ठा का उत्पादन । यही है ईश्वर भक्ति और उसी प्राप्ति का वह चरम लक्ष्य जिसकी पूर्ति के लिए उपासना एवं साधना के अनेकों विधि-विधान विनिर्मित हुए हैं ।

सृष्टि संचालक सत्ता का निरुपण, ब्रह्म, के रूप में किया गया है । उसकी मान्यता के सन्दर्भ में विज्ञानवादियों और आत्मवादियों में कोई मौलिक अन्तर नहीं है । सृष्टि सन्तुलन, इकालॉजी सिद्धान्त सिद्ध करते हैं कि प्रकृति जड़ नहीं वरन् अत्यन्त दूरदर्शी और सन्तुलन बनाये रखने में आश्चर्यजनक रीति से क्रिया-कुशल है । उसका ब्रह्माण्ड व्यापी कौशल इतना ही दूरदर्शितापूर्ण है जितना कि कोई बुद्धिमत्ता की चरम सीमा पर पहुँचा हुआ'अति मनुष्य' हो सकता है । 'परमाणु' संरचना और उसकी गतिविधियों का अति सूक्ष्म निरीक्षण करने पर भी यही प्रतीत होता है कि विज्ञान के छात्रों द्वारा कहीं जाने वाली प्रकृति की जड़ता वस्तुतः विवेकशील चेतना के भी कान काटती है । अणु जगत् में अन्धेरगर्दी नहीं चल रही है, वरन् आश्चर्यचकित करने वाली ऐसी सुव्यवस्था काम कर रही है जो उच्चस्तरीय विवेकशीलता के लिए ही सम्भव हो सकती है । "अणोरणीयां महतो महीयान्" की स्थिति में सर्वत्र संव्याप्त विवेकशीलता को जड़ मानें या चेतन इस विवाद में न पड़ा जाय तो उसका अस्तित्व आस्तिक और नास्तिक दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से मान्य हो सकता है । समष्टि ब्रह्म वर्चस्व को स्वीकार करने में शाब्दिक लड़ाई भले ही हो, पर उस विवाद में तथ्य कुछ नहीं । ब्रह्म की सत्ता को सर्वमान्य घोषित किया जाय यह स्थिति दिन-दिन निकट ही आती चली जा रही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभ्यता ने जो 'परमात्मा' मनुष्य जाति को दिया है वह ब्रह्म से सम्बद्ध भले ही कहा जाय, पर उसकी संरचना एक प्रकार से स्वतन्त्र कहने में भी कोई संकोच नहीं माना जाना चाहिए । प्राणि मात्र में संव्याप्त चेतना के साथ आत्मिक एकता-''आत्मवत् सर्व भूतेषु'' की मान्यता करुणा, ममता, सहकारिता, उदारता, सेवा जैसी परमार्थ प्रवृत्तियों को जगाती है । ईश्वरवाद का यह ऐसा अनुदान है जो विकृत अहं के द्वारा उत्पन्न होने वाले आततायी उत्पातों पर बहुत हद तक अंकुश लगाता है । पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक, ईश्वरीय न्याय,कर्मफल की देर-सवेर में सुनिश्चितता जैसे सिद्धान्त ईश्वरवाद के अविच्छिन्न अंग हैं । ईश्वर का स्वरूप निर्धारण करते हुए उसे सर्वव्यापी, घट-घट वासी, सर्वदर्शी और साथ ही न्यायनिष्ठ माना गया है । मनुष्य के ऊपर ईश्वरीय अनुशासन होने और उच्छृंखलता बरतने पर अदृश्य सत्ता द्वारा दंडित किये जाने की मान्यता ही आस्तिकता का मूलभूत सिद्धान्त है । सभ्यता ने इस प्रकार के ईश्वर का सृजन करके मनुष्य समाज का भारी उपकार किया है । अदृश्य अंकुश की मान्यता हटा देने पर विकृत अहं के उत्पातों का चरम सीमा तक जा पहुँचने का खतरा है । समाज व्यवस्था में अपराध की न्यूनतम सजा बोली हो तो बात दूसरी है अन्यथा सुधारवादी उदारता की न्याय व्यवस्था से दुष्टता की बहुत ही स्वल्प मात्रा में रोकथाम की जा सकती है अदृश्य अंकुश की मान्यता का प्रतिफल शासकीय अपराध नियंत्रण व्यवस्था से भी असंख्य गुना प्रयोजन पूरा करता है । इस मान्यता के रहते हुए भी जब सामाजिक सुव्यवस्था और शान्ति में इतना व्यवधान खड़ा है तब उसके सर्वथा अभाव में तो स्थिति एक प्रकार से असह्य ही हो जायगी ।

भक्ति भावना में प्रेम तत्व की अभिवृद्धि मनोवैज्ञानिक साधना है । यह सद्भावना जितनी मात्रा में उपार्जित की जा सकेगी उतना ही मनुष्य सज्जन, सहृदय, उदार सेवा-भावी बनता चला जायगा और न केवल स्वयं आन्तरिक उल्लास का अनुभव करेगा वरन् सम्पर्क क्षेत्र में भी शालीनता की प्रभावी शक्ति से स्वर्गीय वातावरण उत्पन्न करेगा । तत्काल कर्मफल न मिलने से अधीर होकर लोग दुष्कर्म करने पर उतारू होते और सत्कर्मों में निराश होते देखे गये हैं । इस विलम्ब के कारण आस्तिक को अधीर नहीं होना पड़ता और सज्जनता की नीति शान्तिपूर्वक अपनाये रहता है ।

ऐसे-ऐसे अगणित लाभ आस्तिकता के हैं । एकाकी आदर्शवादिता अपनाये रहने से ईश्वर विश्वास के कारण असाधारण साहस प्राप्त होता है । सर्वत्र परमेश्वर की सत्ता संव्याप्त है, इस मान्यता से चिन्तन को सत्यं शिवं सुन्दरं की अनेकों कलात्मक भाव-सम्वेदना के रसास्वादन का अवसर मिलता है ।

आज सभ्यता के प्रति अनास्था उत्पन्न हो रही है । अवज्ञा और उच्छृंखलता को शौर्य-साहस एवं प्रगतिशीलता का चिह्न माना जाने लगा है । नैतिक मर्यादाएँ उपहासास्पद और सामाजिक मर्यादाएँ अव्यावहारिक कही जाने लगी हैं । फलतः उद्धत आचरण और विकृत चिन्तन के प्रति रोष प्रकट करने के स्थान पर उन्हें सहन करने तथा कभी-कभी तो प्रोत्साहन करने तक की प्रवृत्ति देखी जाती है । यह सब थोड़ी ही मात्रा में क्यों न हो, है भयंकर ? छोटी चिनगारी भी कभी व्यापक विध्वंस खड़ा कर सकती है । सभ्यता के प्रति अनास्था बढ़ती गई और उस खतरे को न समझा गया तो इसकी प्रतिक्रिया वैसी ही होगी जैसी कि अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारने की ।

खोखली पाश्चात्य सभ्यता

दूर के ढोल सुहावने वाली बात बहुत करके सही सिद्ध होती है । चन्द्रमा रात्रि के समय कितना सुन्दर लगता है, कविगण उसका बखान करते नहीं थकते । पर उस तक पहुँचने वालों ने उसकी कुरुपता का भयानक वर्णन किया है । गड्ढे और टीले वाली जमीन, कहीं अतिशय गर्मी, कहीं चरम शीत, न हवा, न पानी । सुरक्षा उपकरणों के बिना कोई एक क्षण के लिए भी नहीं ठहर सकता ।

सर्प कितना सुन्दर लगता है । धूप में उसकी चाल चमक और आकृति देखते ही बनती है । जिन्हें उनकी असलियत मालूम नहीं वे बच्चे उसे पकड़ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दौड़ते हैं । गलती से उनमें से कोई पकड़ बैठ तो वह खिलौना क्षण भर में डस लेगा और प्राणों का अन्त कर देगा । प्राचीन काल में ऐसी विष कन्यायें होती थीं जिनका रूप यौवन देखते ही मनुष्य मोहित हो जाता था किन्तु उनके सत्संग में आते ही प्राण घातक रोगों में फँस जाता था ऐसी ही विष कन्या आजकल पाश्चात्य सभ्यता के रूप में देखी जा सकती है ।

अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड जैसे देशों की खाली भूमि पर कब्जा कर लेने के उपरान्त गोरे लोगों को वहाँ प्रकृति सम्पदा का आधिपत्य करने का अवसर मिला और देखते देखते थोड़े ही दिनों में माला-माल हो गये । विज्ञान के विकास का भी यही युग था । अधिक कमाई करने वाले यंत्रों का निर्माण उसी पैसे से हुआ । उपनिवेशों में माल खपाने का अवसर मिला । इस प्रकार कुछ ही शताब्दियों में छप्पर फाड़कर दौलत उन पर बरसी ।

इस उपलब्ध सम्पन्नता का उपयोग कहाँ हो इसके लिए संकीर्ण मनोवृत्ति को सुविधा सम्पादन और विलासिता के बढ़ते हुए साधन यह दो ही काम दृष्टिगोचर हुए । वे भारत के अनुयायी थोड़े ही थे जो अपनी बुद्धि वैभव से संसार के कोने-कोने में बिखर कर वहाँ के निवासियों को सुविकसित और सुसंस्कृत बनाने का प्रयास करते और इसके लिए स्वयं कष्ट सहते ।

पाश्चात्य देशों के हाथ में पहुँची विपुल सम्पदा ने जहाँ शिक्षा, चिकित्सा जैसे उपयोगी साधन बढ़ाये वहाँ विलासिता की सामग्री जुटाने में भी कमी न रखी । यह लम्बे समय का इतिहास नहीं है । अभी दो शताब्दियाँ मुश्किल से बीती हैं कि वे क्षेत्र विलासिता की चरम सीमा को छूने लगे । उनकी रुचि के व्यंजन पकवान और स्वच्छन्द यौनाचार, आकर्षक सज-धज उन क्षेत्रों के सर्व साधारण को उपलब्ध हो गई । वाहन के लिए मोटर, परस्पर वार्ता के लिए टैलीफोन, घर बैठ सिनेमा देखने लिए टेलीविजन जैसे अनेकानेक उपकरण हर किसी को उपलब्ध हुए । अन्धाधुन्ध आमदनी का आखिर उपयोग भी और किन कामों में होता ।

यह उमंग भरी लहर थोड़े ही दिनों में अपना प्रभाव दिखाने लगी । परिवार टूटे । विलासं की स्वच्छन्दता में पति-पत्नी का साथ रहना ही पर्याप्त था । न अभिभावकों को सन्तान से कुछ आशा और न सन्तान के लिए अभिभावकों का कोई बड़ा त्याग । बूढ़ों के लिए सम्पन्न देशों में मवेशीखाने बन गये और बच्चों के लिए अनाथालय । सन्तान और अभिभावक के बीच रहने वाली आत्मीयता ही एक प्रकार से समाप्त हो गई ।

यौन स्वेच्छाचार में हर किसी को नवीनता की ललक रहने लगी । फलतः तलाकों का एक खिलवाड़ जैसा प्रचलन हो गया । विवाह एक चिह्न पूजा है जिसे करने के उपरान्त दोनों साझीदारों में से कोई नहीं जानता कि यह समझौता कितने दिन चल सकता है और कितने दिन बाद वह टूट जायेगा । उठती उम्र की लड़कियों को पुरानी मित्रता छोड़कर उनके साथ नया सम्बन्ध जोड़ने के लिए फुसलाने वाले अनेकों होते हैं, और वे लड़कियाँ भी देखती हैं कि अधिक लाभदायक सौदा कौन-सा है ? स्त्री की भाँति पुरुष भी इसी फिराक में रहते हैं । नया सो सुहावना के फेर में आज विवाह–कल तलाक का मखौल बनता रहता है । पर कुछ ही साल में स्थिति उलट जाती है । स्त्रियों की ढलती आयु आते ही उन्हें अपने लिए घोंसला ढूंढना पड़ता है । उन्हें कोई मुश्किल में ही कुछ दिन अपनी डाल पर बैठने देता है । दोनों ओर से जब मजबूरियाँ सामने आ जाती हैं तभी कुछ ऐसा भरोसा बनता है कि शायद टिकाऊपन बना रहे । दाम्पत्य जीवन में हर घड़ी उसी तरह चौकन्ना रहना पड़ता है मानों किसी ठग-जालसाज के साथ दिन गुजारने पड़ रहे हों । सन्तान और अभिभावकों का रिश्ता तभी तक है जब तक पंख नहीं उगते । लड़के हों या लड़कियाँ जब कुछ कमाने लायक हो जाते हैं, अपना अलग घोंसला बनाते हैं, ऐसी दशा में मुसीबतों के समय कोई किसी से आशा अपेक्षा नहीं करता । आजीविका को ही सब कुछ मानकर चलना पड़ता है । ऐसी दशा में अनिश्चितता और उद्विग्नता की मनःस्थिति बनी रहती है । इस तनाव को हल्का करने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नशेबाजी ही एक मात्र अवलम्बन रह जाती है । सिगरेट, शराब और मादक औषधियाँ दोनों ही जीवन की आवश्यकता बन जाती हैं । आधी रात नाटक, कैब्रे देखने में बीत जाती है, शेष आधा समय नींद की नशीली गोलियाँ लेकर झपकियाँ लेते हुए बितानी पड़ती है । भोजन के लिए आधी पारियाँ होटलों में बितानी पड़ती हैं । घर पर खाने वाले या तो बहुत गरीब या बहुत अमीर होते हैं ।

अब नौजवानों का एक नया शौक बना है– किसी की भी जान लेना, पिस्तौल तानकर जेब खाली करा लेना या दो तीन का गिरोह बनाकर किसी अकेले या दुकेले की गरदन मरोड़ देना । यह धन्धा अच्छी आमदनी का भी है और अपनी चतुरता का रौब दिखाने का भी । नई पीढ़ी के आवारा लोगों के लिए दादागीरी सुलभ सी बनती जा रही है और अच्छे खासे नफे की भी । जो लड़के माँ बाप से पटरी नहीं बैठाते और पढ़ाई में मन न लगने के कारण अधकचरे रह जाते हैं उन्हें बड़े लोगों जैसा काम तो मिलता नहीं। हल्की नौकरी में शानदार ढंग से गुजारा कैसे चले इस समस्या का हल उन्हीं की बिरादरी के आवारा लोग आसानी से सिखा देते हैं । गिरोह बनते देर नहीं लगती है । पहले कमजोर लोगों पर हाथ साफ करते हैं, बाद में जिनकी भारी जेब देखते हैं, उनका पीछा करते हैं ।

वे भले आदमी जिनका पैसों से वास्ता है और लफंगों की करतूतें सुनते रहते हैं, उन्हें हर समय भयभीत और चौकन्ना रहना पड़ता है । आगे पीछे, दांयें-बाँयें देखकर चलते हैं, कहीं कोई दादा तो पीछे नहीं लग रहा है । इन गिरोहों में लड़कियाँ आसानी से साझीदार हो जाती हैं । वे सेक्स प्रलोभन से किसी को इधर से उधर ले जाती हैं और गिरोह के दूसरे लोभ मौका देखते ही शिकार दबोच लेते हैं । ऐसी घटनायें जिन्होनें सुन रखी है, वे फूँक-फूँक कर पैर रखते हैं, उन्हें हर घड़ी खैर मनाते, जान बचाते हुए जहाँ जाना है, वहाँ पहुँचते हैं । घर पहुँचते ही भीतर से ताला बन्द कर लेते हैं और किसी के आवाज देने पर तब तक नहीं खोलते जब तक कि आवाज को पहचानी हुई और विश्वस्त होने की सम्भावना न हो जाय ।

अखबारों में चोरी डकैती की घटनायें बड़े अक्षरों मे छपती रहती हैं । तीसरे युद्ध के लिए बने हथियारों और अन्तरिक्ष में टूट पड़ने वाले कहर के सम्बन्ध में सुविस्तृत लेखों को पढ़कर कमजोर तवियत के लोग सोचने लगते हैं कि मानो वह सभी मुसीबत उन्हीं के लिए रची गई है और कल नहीं तो परसों उन्हीं के सिर पर गिरेगी । यह स्थिति अपने देश के बड़े शहरों में भी देखी जा सकती है ।

ऐसी स्थिति में प्रगति भौतिक दृष्टि से कितनी ही क्यों न हो गयी हो, ये व्यक्ति आदिम युग में जीते हुए कहे जायेंगे। जहाँ गति व मति का समुचित समन्वय नहीं होता वहाँ यही स्थिति होती है । अच्छा हो सभ्यता के विकास के साथ संस्कृति का भी विकास हो । अन्त में सुसंस्कारिता पनपे । तब ही वास्तविक प्रगति मानी जा सकती है । आज की खोखली पाश्चात्य सभ्यता हम सब के लिए एक सबक है ।

असंतुलन का असमंजस एवं इक्कीसवीं सदी

पिछले दिनों सुविधा सम्वर्धन की दिशा में बहुत काम हुआ है । आर्थिक, बौद्धिक और वैज्ञानिक, प्रयासों में जो प्रगति हुई है, उसे देखते हुए यह परिणति होनी चाहिए थी कि सर्वत्र सुख-शान्ति के आधार विकसित हुए दीख पड़ते और प्रगति का लाभ सर्वसाधारण को मिलने से उल्लास और उत्साह बिखरता दीख पड़ता । पर लगता है कहीं कुछ अपूर्णता रह गई है । भूलों का सिलसिला भी चलता रहा है । जिसके कारण बढ़ती हुई कठिनाइयों पर ही सहज नजर जाती है और सोच उभरता है कि कहीं हम प्रगति के साथ-साथ अवगति को तो अधिक उत्साह पूर्वक नहीं अपना रहे हैं ? कहीं कमाने से अधिक गँवाने वाला पलड़ा भारी तो नहीं कर रहे हैं ?

दृष्टि पसारकर देखने पर डरावनी विभीषिकायें प्रमुखता से सामने आ खड़ी होती हैं । औद्योगीकरण

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के साथ-साथ बढ़ता प्रदूषण, वायु और जल में विष घोल रहा है । ऊर्जा के अधिक उपयोग से अन्तरिक्ष का बढ़ता तापमान ध्रुव पिघलाने, समुद्र में ज्वार आने, ओजोन परत फटने जैसी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है । बढ़ी हुई आवश्यकतायें भूतल की खनिज सम्पदा का दोहन कर रही हैं और संकेत कर रही हैं कि संचय के चुक जाने पर जो शून्य सामने आएगा उसकी पूर्ति न हो सकेगी । तब क्या होगा ? बढ़ते युद्धोन्माद के निमित्त जो अणु आयुध बन रहे हैं, उनके विकिरण और कचरे से कैसे निपटा जाएगा ? तेजी से कटते जंगलों ने जो भूक्षरण बढ़ाया उसकी भरपाई कैसे संभव होगी ? इन सबसे बड़ी समस्या दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ती हुई जनसंख्या की हैं । जिसके कारण प्रगति को पीछे धकेल कर अवगति आगे बढ़ जाती है । इस अभिवृद्धि के कारण बढ़ती हुई हर स्तर की माँग को पूरा करने के लिए कितने साधन किस प्रकार कहाँ से जुट सकेंगे ? यदि संतुलन न बैठा तो अभाव और असंतुलन इतने बढ़ेंगे, जिन पर काबू पाने के लिए कदाचित् प्रस्तुत प्रयास पर्याप्त न हो सकें । आशय यह भी है कि प्रस्तुत प्रगति प्रयास बढ़ती समस्याओं की तुलना में कहीं पिछड़ न जायें और अगले दिन अधिक कठिनाइयों से भरे न हों ?

यह आर्थिक राजनैतिक क्षेत्रों की बात हुई । शिक्षा बढ़ रही है, पर साथ ही बेकारी, बेरोजगारी उसे लाँघ कर आगे पहुँच रही है । शहरों की घिचपिच बढ़ रही है । गाँवों से प्रतिभा पलायन हो रहा है । नीति शिक्षण के लिए धार्मिक -सामाजिक-राजनैतिक मंच आदर्शवाद के पक्ष में कुछ कम नहीं कहते । साहित्य भी कहने को तो अपने सृजन का उद्देश्य यही बताता है । कला भी अपने को इसी प्रयास में निरत बताती है । धर्म क्षेत्र के प्रवक्ता तो मानो इसी सबके लिए जीवित और समर्पित मानते हैं । इतना सब होते हुए भी कहीं कुछ ऐसी भूल रह जाती है, जिसकी तुलना फूटे घड़े में से पानी बह जाने के तुल्य है ।

अवांछनीयताओं पर नियन्त्रण करने के लिए बड़े कानून, नियन्त्रक, निरीक्षक, पुलिस, अदालत, जेलें आदि की कमी नहीं, फिर भी अपराध तेजी से बढ़ते जा रहे हैं । अस्पताल खुलते हैं, डॉक्टर नियुक्त होते हैं, नई दवाओं के आविष्कार सामने आते हैं, पर बीमारियाँ इस तेजी से बढ़ रही हैं, मानों उन्होंने नियन्त्रण व्यवस्था को चुनौती देने की ठान-ठानी है ।

अब तो लगता है कि सर्वशक्तिमान समझा जाने वाला प्रचार तन्त्र भी विचारशील वर्ग पर से अपना प्रभाव समाप्त करता जा रहा है । अखबार, रेडियो, टी०वी०, सभा-सम्मेलन, जुलूस, रैलियाँ आदि जनता को प्रचारकों का पक्षधर बनाने के उद्देश्य से किये जाते हैं, पर विचित्रता यह है कि श्रोता और वक्ता पक्षों में से एक-दूसरे को मूर्ख और धूर्त मानकर परस्पर विश्वास खोते चले जा रहे हैं । यह स्थिति एक प्रकार से नास्तिकता जैसी है । इसे अनास्था भी कह सकते हैं । उच्छृंखलता, उद्दण्डता, ठगी, बेईमानी आदि के बढ़ते हुए चित्र-विचित्र रूप यह बताते हैं कि मानवी गरिमा के अनुरूप जिन मर्यादाओं का पालन होना चाहिए था, जिन वर्जनाओं को रोका जाना चाहिए था, उनकी ओर से उपेक्षा और अवज्ञा बरती जा रही है । संक्षेप में इसे मानवी चिन्तन और चरित्र का, स्तर का अवमूल्यन कहा जा सकता है ।

दुरुपयोग से अमृत भी विष बन जाता है । साधनों का प्रयोक्ता मनुष्य है । यदि वह उपयुक्तता से विरत हो, तो फिर जो कुछ भी उसके हाथ में होगा उसका दुरुपयोग करेगा । अधिक साधन, अधिक कौशल हाथ में रहने पर तो अनगढ़ता की स्थिति में अधिक अनर्थ होने की ही आशंका रहेगी । यह सैद्धान्तिक प्रतिपादन नहीं है । ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसे किसी भी दिशा में दृष्टि डालकर घटित होते हुए देखा जा सकता है ।

प्रस्तुत असमंजस का केन्द्र बिन्दु यही है । विज्ञान, बुद्धिवाद, कौशल, अर्थसाधन, विकास प्रयोजन आदि बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य का स्तर, दायित्व बढ़ना चाहिए था । दृष्टिकोण में आदर्शवादिता और चरित्र में उत्कृष्टता बढ़नी चाहिए थी । महान् प्रयोजन सम्पन्न करने वालों से अधिक उत्तरदायी जागरूक और उत्कृष्ट होने की अपेक्षा की जाती है, ताकि वे उपलब्ध साधनों का अधिक सही उपयोग कर और करा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सकें । प्रगति की व्याख्या समृद्धि तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, वरन् उसके साथ उपलब्धियों के अधिक सही रीति से प्रयुक्त करने और कराने की जिम्मेदारी भी जुड़नी चाहिए ।

लगता है इसी बिन्दु पर भूल या उपेक्षा होती रही है । यही कारण है कि पिछले दिनों जहाँ साधन-सुविधाओं की, कुशलता और प्रवीणता की असाधारण वृद्धि हुई है, वहीं उद्धत अहंकार की मान्यता और आचरण में स्वच्छन्दता का समावेश करने के लिए लोग अपने को स्वतंत्र मानने लगे हैं । ऐसी दशा में उपलब्धियों के दुरुपयोग के अतिरिक्त और बन ही क्या पड़ेगा ? इसी महाव्याधि से लोक मानस क्रमशः जकड़ता जा रहा है । प्रयोक्ता के दिग्भ्रान्त होने की दशा में प्रयोगों में गड़बड़ी रहेगी ही । उन्मत्त विक्षिप्त ड्राईवर के हाथ में बहुमूल्य मोटर सौंप दी जाय, तो वह निर्दिष्ट मंजिल तक पहुँचना तो दूर, रास्ते में ही कहीं दुर्घटना कर बैठेगा । अनाड़ी चिकित्सक बीमार को अधिक कष्ट में धकेलेगा । अनाड़ी सेनापति मोर्चा हारेगा । सेना का, सैन्य सज्जा का विनाश ही करेगा । यह अनाड़ी एवं अनगढ़ शब्द, कुशलता की कमी के अर्थ में प्रयुक्त नहीं किया जा रहा है, वरन् उनकी ओर किया जा रहा है, जो समझदार कहलाते हुए भी नासमझ हैं । जिनमें चतुरता की तो कमी नहीं पर दूरदर्शी विवेकशीलता को जिन्होंने उपेक्षित उपहासास्पद बना रखा है । जो साधनों को तो सब कुछ मानते हैं, उनके प्रयोग में भी चतुरता का परिचय देते हैं, पर नीतिनिष्ठा की कमी रहने पर अपना आत्मबल, साथियों का सहयोग और जनसाधारण का विश्वास गँवा बैठते हैं । ऐसे लोग वस्तुतः व्यक्तित्व की दृष्टि से दीन-दुर्बल ही होते हैं । प्रामाणिकता के अभाव में व्यक्तित्व की प्रखरता लगभग समाप्त हो जाती है । दबंग मन आतंक तो उत्पन्न कर सकता है और विवशता उत्पन्न करके किसी से मनमर्जी के अनुरुप चलने के लिए बाधित भी कर सकता है, पर यह संभव नहीं कि किसी का हृदय जीत सके, उसे सच्चा साथी सहयोगी बना सके । नीति पर चलने वाले व्यक्ति ही अपने प्रभाव क्षेत्र को सभ्य-सुसंस्कृत बना सकते हैं, ऐसे काम करा सकते हैं, जिनमें शालीनता भरी हो और सदुपयोग की रीति-नीति सही रूप से पनपती हो ।

प्रस्तुत विसंगतियों के बीच भारी विसंगति का कारण एक ही है कि साधन बढ़ाये गए, कौशल को उभारा गया और मान लिया गया कि प्रगति का सरंजाम जुट गया । अक्सर भूल यही होती रही कि व्यक्तित्व को शालीनता, प्रामाणिकता, दूरदर्शिता से सम्पन्न बनाने के लिए उस स्तर के प्रयत्न नहीं किये गए, जितने कि संसाधन उपार्जन के क्षेत्र में होते रहे । असंतुलन ऐसा ही बन गया । जमीन खरीदी गई, पर किसान नहीं बुलाये गए । बन्दूकें बनाने की फैक्ट्री खड़ी हुई , पर निशानेबाजी की आवश्यकता नहीं समझी गई ।

स्वल्प या साधारण साधनों की रखवाली तो छोटे लोग भी कर लेते हैं, पर बड़ी सम्पदा उपलब्ध करने पर तो सुरक्षा से लेकर उसके सदुपयोग तक के अनेक प्रयत्न करने पड़ते हैं, अन्यथा वे उपलब्धियाँ चोर डकुओं के आक्रमण से लेकर दुर्व्यसन बढ़ाने जैसे अनेकों अनर्थ खड़े कर सकती हैं । ठीक यही भूल इन दिनों हुई है । भौतिक प्रगति तो हर किसी के ध्यान में रही है । कुशलता बढ़ाने वाली शिक्षा भी इसी वर्ग में आती है । मूल आवश्यकता समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार और बहादुर स्तर के व्यक्तित्वों की पहले भी थी और अब भी है । उस ओर समुचित ध्यान न दिये जाने के कारण ही वह संतुलन उत्पन्न हुआ है, जिसे आज हर क्षेत्र में संव्याप्त समस्याओं, विपत्तियों के रूप में देखा जा रहा है । आज की सबसे बड़ी आवश्यकता इस भूल का परिमार्जन किया जाना है । एकांगी प्रगति को बहुमुखी करने के लिए उतनी ही तेजी से प्रयत्न करने है, जितने कि पिछले दिनों सुविधा सम्पन्नता बढ़ाने से लिए किये गये। सम्पन्नता के समतुल्य शालीनता का अभिवर्धन करने से ऐसा संतुलन बन पड़ेगा, जिसे सच्ची और चिरस्थायी प्रगति का आधार कहा जा सके ।

पिछले दिनों कितने ही क्षेत्रों में अनेकानेक अवांछनीयताओं ने गहरी जड़ें जमा ली हैं । उनका उखाड़ा जाना आवश्यक है । जिनके निहित स्वार्थ उनके साथ जुड़े हैं, वे अपनी हानि क्यों सहेंगे ?

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निश्चित रूप से सुधारकों पर वे आघात आक्रमण करेंगे । इतने पर भी जिन्हें औचित्य को प्रतिष्ठापित करना है, वे किसी भी प्रकार विचलित न होंगे । चोटें सहेंगे और हानि उठायेंगे । देवासुर संग्रामों में यही होता भी रहा है । इस बार भी होगा ।

युग-सन्धि के दिनों कितनी ही विपत्तियाँ टूटनें विग्रह खड़े होने की भविष्यवाणियाँ सुनी जाती रही हैं । कहीं-कहीं तो इन्हें असाधारण रूप से भयावह भी बताया जाता रहा है । जो हो इतना निश्चित है कि महान् परिवर्तनों के अवसरों पर असाधारण उथल-पुथल होती है और उनमें किन्हीं को तो कष्ट सहना ही पड़ता है । इस दृष्टि से उन भविष्य कथनों की भी संगति बैठ ही जाती है ।

सहस्राब्दियों का परिवर्तन उथल-पुथल भरा हो और उसमें असाधारण स्तर का घटना-क्रम घटित हो, तो उसमें आश्चर्य नहीं माना जाना चाहिए । प्रसवकाल में, बीज के अंकुरित होने में, पतझड़ और बसन्त के मध्यकाल में बहुत कुछ ऐसा देखा जाता है जिसे सामान्य नहीं कह सकते हैं, बीसवीं सदी का अन्त और इक्कीसवीं सदी का उद्‌भव भी सहज सरल रूप से कदाचित् नहीं ही बन पड़ेगा । इसे असामान्य अवश्य कह सकते हैं । निराशा भरी मनःस्थिति से नहीं, विधेयात्मक दृष्टिकोण से यह परिवर्तन गंभीरतापूर्वक देखा जाना चाहिए । सामान्यतया विभीषिका की भवितव्यता ही आशंका, भय व मनोबल की कमी को जन्म देती है किन्तु सृष्टा की संतुलन व्यवस्था पर यदि विश्वास किया जा सके तो यह भी सोचा जाना चाहिए कि जो दूरदर्शी विवेकशीलता का अवलम्बन लेगा, वह इक्कीसवीं सदी का अरुणोदय अपने इन्ही चर्मचक्षुओं से देख सकेगा । फिर उसे असंतुलन का असमंजस नहीं होगा ।

महाविनाश पर उतारू मानव समुदाय

इन दिनों पर्यावरण असन्तुलन के कारण मौसम बड़ी तीव्र गति से विश्व के प्रायः हर हिस्से में अपना रंग बदलता दिखाई पड़ रहा है और असंतुलन जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है । वैज्ञानिक , शिक्षाशास्त्री, पर्यावरण प्रेमी सभी ने मनुष्य और वर्तमान समाज-व्यवस्था को इसके लिए दोषी ठहराया और कहा है कि इनकी गलत नीतियों का ही यह दुष्परिणाम है । उन सभी ने एक स्वर से इसे स्वीकारा है कि अब यदि आगे भी इस स्थिति को और अधिक गम्भीर बनने से रोका नहीं गया, तो मानवी विनाश सुनिश्चित है ।

इस संदर्भ में लार्ड रिची काल्डर ''फारेन एफेयर्स'' पत्रिका(भाग ४८ नं २, १९७०, पे. २०७-२२०) में लिखते हैं कि- पुरातन काल में अति विकसित सभ्यतायें अपनी ही गलतियों के कारण बर्बाद हो गईं । उन्होंने या तो लालच या लापरवाही दिखाई अथवा अशक्तता अपनायी । इस प्रकार उनकी स्वयं की कमजोरियाँ ही उन्हें ले डूबीं ।

उनका कहना है कि यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य (पर्यावरण असंतुलन) में वही भूलें दुहरायी गईं, तो हमारी इस सभ्यता का भी परिणाम पूर्व जैसा ही होगा । इसलिय वे इस सन्दर्भ में सावधान करते हुए पहले से ही किसी उपयुक्त रोकथाम पर विचार करने की सलाह देते हैं ।

ऐसे ही विचार स्विस वैज्ञानिक जीन, डोर्स्ट के हैं । वे कहते हैं कि ''इस धरती पर मनुष्य के अवतरण के साथ ही प्रकृति का संतुलन बिगड़ना आरम्भ हो गया । सुदूर भूत के अपने पूर्वजों ने इसका श्री गणेश अपनी ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों के साथ किया । उनकी यह प्रवृत्तियाँ बढ़ी तो तरह-तरह के संकट खड़े होने लगे । भूक्षरण और भूस्खलन की घटनायें आरम्भ हुईं । प्रकृति धीरे-धीरे अप्राकृतिक बनने लगी किन्तु इन सब के लिए आदिम मानवों को दोषी ठहराना और यह कहना कि उन्होंने यह सब जानबूझ कर अपने और अपनी संतानों के अस्तित्व के लिए किया है, उचित न होगा । निश्चय ही उन्होंने प्रकृति को क्षति पहुँचायी है, पर इसमें उनकी अज्ञानता और अव्यवस्था की ही प्रमुख भूमिका रही है ।''

उनका कहना है कि ''आदिम काल में इसी शुरुआत हुई, तो आज तक यह चलती आ रही है। अन्तर बस इतना है कि उन दिनों यह पूर्वजों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अज्ञानता का परिणाम था, किन्तु अब जानबूझ कर किया जा रहा है ।''

ब्रेर्स्ट कहते हैं कि ''उन दिनों आदि मानवों ने प्रकृति को इतना नुकसान पहुँचाया कि आज हम जन्तुओं की कई महत्वपूर्ण प्रजापतियों से वंचित बने हुए हैं । विनाश के वही बीज मनुष्य आज भी अपने साथ लिए चल रहा है, और इससे न सिर्फ प्रकृति का विनाश वरन् स्वयं अपने विनाश की भी परिस्थितियाँ जुटा रहा है ।''

मूर्धन्य इतिहासवेत्ता आर्नोल्ड टायनबी ने इण्टरनेशनल जनरल ऑफ एनवायरनमेण्टल स्टडीज (१९७२,खण्ड-३ पे. १४१) नामक पत्रिका के ''दि रिलिजियस बैक-ग्राउण्ड ऑफ दि प्रजेण्ट एनवायरनमेण्टल क्राइसिस'' नामक निबन्ध में वर्तमान पर्यावरण असंतुलन का मुख्य कारण धार्मिक बताते हुए कहा है कि प्राकृतिक वातावरण के प्रति मनुष्य की अभिरुचि धर्म ने ही जगायी है । उनके अनुसार पौर्वात्य देशों, ग्रीस और रोम के सर्वेश्वरवाद ने प्राचीन काल में मनुष्य और प्रकृति के बीच के सम्बन्ध को समझा था, एवं उनके बीच सामंजस्य स्थापित किया था, यह मानकर कि दोनों एक-दूसरे के लिए समान रूप से आवश्यक है, किन्तु एकेश्वरवाद की मान्यता ने सर्वेश्वरवाद की अवधारणा और व्यवस्था पर तुषारापात कर दिया । एकेश्वरवाद के अनुसार मनुष्य प्रकृति का स्वामी है । भगवान द्वारा उसे यह अनुदान इसलिए प्रदान किया गया है, ताकि वह इसका निरन्तर उपभोग करे और समृद्ध बने । टायनबी कहते हैं कि एकेश्वरवादी मतावलम्बियों का उक्त अवधारण एवं विश्व में उनका द्रुत विकास व विस्तार ही आज के पर्यावरण संकट के प्रमुख कारण हैं ।

जे० डब्ल्यू० फोरेस्टर, डी०एच० मिडोज, एम० मेजारोविक एवं अन्य अनेक शोधकर्त्ताओं का विश्वास है कि प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव का मूल कारण मनुष्य की वह मूलभूत इच्छा है, जिसके अन्तर्गत वह अपने विकास और विस्तार की बात सोचता है । एक ऐसा विकास जो अनन्त हो, ऐसा विस्तार जो अपरिमित हो । उसकी इसी इच्छा का परिणाम है कि आज वस्तुओं का उत्पादन और उपभोग आकाश चूम रहा है तथा जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण-असंतुलन की भयंकरता प्रत्यक्ष है । शोधकर्त्ताओं का कहना है कि यदि विकास का यह तरीका बदला नहीं गया, तो यह सम्पूर्ण मानव जाति के लिये सर्वनाश उपस्थित कर सकता है ।

अमेरिका के बैरी कॉम्नर इस संकट को सामाजिक बताते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''दि क्लोजिंग सर्कल'' (१९७९, पृ० १७८) में लिखते हैं कि ''वर्तमान संकट न तो किसी प्राकृतिक विपत्ति का परिणाम है , न मनुष्य के गलत क्रियाकलाप का । पर्यावरण प्रदूषण इसलिए नहीं फैला कि मनुष्य गन्दगी-पसन्द जीव है, न इस कारण कि आबादी की इन दिनों असाधारणा वृद्धि हुई है, वरन् इसका मूल कारण मानवी समाज में सन्निहित है । जिस ढंग से समाज ने इस धरती के संसाधनों से उपलब्ध सम्पदा पर अधिकार जमाना चाहा, उनका वितरण और उपयोग किया वही आज की पर्यावरण समस्या के प्रधान कारण हैं । ''

आखिर यह समस्या इतनी तीव्र गति से क्यों बढ़ी और इस खतरनाक स्तर तक क्यों आ पहुँची ? इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन बैरी काम्नर ने अमेरिका में किया और इसके माध्यम से उन कारकों को जानना चाहा, जिनके कारण पिछले २०-३० वर्षों मे वहाँ का प्राकृतिक वातावरण अप्राकृतिक और अस्वस्थ बना । उपर्युक्त पुस्तक (पृ०१४४,१४५,१४६) में उन्होंने लिखा है, कि ''सन् १९४६ के बाद अमेरिकी अर्थव्यवस्था में जो वृद्धि हुई, आश्चर्य की बात है कि उसका अत्यन्त न्यून प्रभाव लोगों की मौलिक आवश्यकताओं के परिमाण पर पड़ा । तब लोगों को प्रोटीन और अन्य भोजन की जितनी कैलोरी की आवश्यकता थी आज भी वे उन्हें उसी परिमाण में ले रहे हैं, प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष तब जितने कपड़े की आवश्यकता पड़ती थी, आज वह यथावत् है, सन् १९४६ में आवास के लिए जितनी जमीन अभीष्ट समझी जाती थी, वर्तमान में भी उसकी उतनी ही माँग है, जितना माल-परिवहन उस समय प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष होता था, उसकी मात्रा इन दिनों भी लगभग वही है । हाँ, इतना जरूर है कि तब और अब की वस्तुओं के स्तर

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में परिवर्तन आ गया है । अब खेतों में रासायनिक खादों और दवाइयों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक हो रहा है । आज के वस्त्र सूती और ऊनी के स्थान पर कृत्रिम धागों के बनने लगे हैं । कपड़े धोने में सामान्य साबुन की तुलना में वर्तमान समय में कृत्रिम डिटर्जेण्टें का प्रयोग किया जा रहा है । परिवहन गाड़ी के रूप में रेल की अपेक्षा ट्रकों का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है । अब हर कार्यालय वातानुकूलित होता है और नौकरी करने वाले प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे ही वातावरण में काम करना पड़ता है । आज के लोग ड्राइविंग भी १९४६ की तुलना में दुगुनी कर रहे हैं, इसमें प्रतिमील गैसोलीन की खपत भी अधिक हो रही है, जिसमें सीसे की मात्रा पहले की तुलना में अधिक पायी जाती है । ''

इन आरम्भिक परिवर्तनों के प्रभाव दूसरे क्षेत्रों में भी दिखाई पड़े । कॉम्नर कहते हैं कि जनसंख्या में ४० प्रतिशत और प्रति व्यक्ति इन नई वस्तुओं के उपभोग में ६ प्रतिशत की वृद्धि अमेरिका में कुल प्रदूषण में लगभग १० प्रतिशत और प्रति व्यक्ति प्रदूषण में सात प्रतिशत की वृद्धि होती है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि पर्यावरण असंतुलन बढ़ाने में मुख्य भूमिका जनसंख्या वृद्धि की नहीं, वरन् उत्पादन तकनीक में परिवर्तन की रही है, जिसे अधिक लाभ कमाने की दृष्टि से अपनाया गया था ।

उपर्युक्त पुस्तक में कॉम्नर आगे लिखते हैं कि जब एक बार पर्यावरण असंतुलन का आधारभूत कारण ज्ञात हो गया, तो इस सामाजिक प्रवृत्ति में आवश्यक सुधार-संशोधन कर हम इसका निवारण भी कर सकते हैं, पर साथ ही चेतावनी भी देते हैं, कि यदि ऐसा नहीं हो सका, तो मानवी अस्तित्व खतरे में पड़ जायगा ।

संयुक्त राष्ट्र के भूतपूर्व सेक्रेटरी जेनरल यूथाण्ट ने संयुक्त राष्ट्र में अपने कार्यकाल के दौरान इस गम्भीर समस्या पर काफी विचार किया था । उन्होंने सन् १९६९ में एक रिपोर्ट में कहा था कि''वर्तमान पर्यावरण असंतुलन के तीन आधारभूत कारण हैं- जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और टैक्नॉलॉजी में अभिनव परिवर्तन । इनमें वृद्धि हुई तो इनके साथ-साथ इनसे सम्बद्ध आवश्यकताओं यथास्थान भोजन,और प्राकृतिक संसाधनों की माँग भी बढ़ी । इनमें से कोई भी आवश्यकता ऐसी नहीं थी, जिससे पर्यावरण को क्षति पहुँचने का खतरा हो, पर आबादी को बसाने में औद्योगीकरण और शहरीकरण की योजना व नियन्त्रण में, भूमि एवं संसाधनों के उपयोग में वह सतर्कता और दक्षता नहीं दिखाई गई, जो अभीष्ट थी परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में आज यह खतरा गम्भीर रूप धारण करता जा रहा है । यदि आगे स्थिति यही बनी रही तो नतीजा दुखःदायी होगा'' (रिपोर्ट प्रौब्लम्स ऑफ दि ह्यूमन एनवायरनमेंण्ट इकोनॉमिक एण्ड सोसल काउन्सिल ''२६-५-१९६९,पृ०८)

कहीं हम आत्मघाती संकट की ओर तो नहीं बढ़ रहे ?

जुस्टस लिविंग यूनिवर्सिटी ऑफ गिसेन के प्रोफेसर डॉ एच.सी बर्नहार्ड ग्रीमेक कक के मतानुसार-''प्राकृतिक पर्यावरण की संकटावस्था की शुरुआत जब से मनुष्य ने जन्म लिया, तब से है । इसका एक सशक्त कारण जनसंख्या में लगातार वृद्धि है, जिसके कारण प्राकृतिक भू-दृश्यों का विनाश हो रहा है और पर्यावरण संकट उपस्थित हो रहा है ।''

वुल्फगेंग क्लाजविस ''एन्वायरनमैण्ट क्राइसिस'' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि पैल्योलिथीक रिवोल्यूशन'' के समय से, जब से कृषक समाज अपने अस्तित्व में आया, वन कृषि योग्य भूमि में अधिक से अधिक परिवर्तन हुए हैं । जब से वनों की उपयोगिता निर्माण कार्यों के लिए समझी गई, तब से वनों को काटना एवं जलाना बड़ी निर्दयता और अदूरदर्शितापूर्वक तथा तीव्र गति से हुआ है । इस कारण विस्तृत प्राकृतिक क्षेत्र परिवर्तित हो गये हैं एवं पर्यावरण के असंतुलन का संकट सामने आ रहा है ।

मनुष्य के द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण कैसे बदल दिया जाता है ? यदि यह देखना है तो ''मेडीटेरेनियन-रिजन'' (भूमध्य सागरीय क्षेत्र) को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

देखा जा सकता है । यहाँ तराइयों की नैसर्गिक रूपाकृति इसका प्रमुख शिकार है । एक समय वहाँ पर विशाल वन क्षेत्र था । यह वन पश्चिमी अफ्रीका के समुद्री तट से सुदूर पूर्व दक्षिणी यूरोप के तीन प्रायद्वीपों तक विस्तृत था । जब मानवी सभ्यता भूमध्य सागरीय क्षेत्र में सर्वत्र फैल गई, तब मनुष्य ने लापरवाही पूर्वक वनों को काट डाला और उन्हें झाड़ियों में बदल दिया एवं इस क्षेत्र को मरुभूमि के रूप में बदलकर लाइम-स्टोन की बंजर भूमि बना दिया । यह आश्चर्यजनक सत्य है कि ४ हजार वर्ष पूर्व सहारा-मरुस्थल अपने वर्तमान स्वरुप में नहीं था । २ हजार वर्ष से कम वर्ष पूर्व लीबिया की वर्तमान मरुभूमि रोम का अन्नागार थी ।

विशेषज्ञों के अनुसार आज जहाँ सिंध और राजस्थान के रेगिस्तान हैं, वहाँ कभी घनी आबादी थी, किन्तु मोहन जोदड़ो के सभ्यता-काल में कृषि संबंधी गलत नीतियों के कारण अब वह क्षेत्र मरुस्थल में परिवर्तित हो गया । मनुष्य तथा पशुओं की संख्या में लगातार वृद्धि के कारण उन प्रदेशों की जमीन पर दबाव बढ़ने लगा । निरन्तर कृषि द्वारा भूमिगत जल का दोहन होता रहा, किन्तु उस जल भण्डार को संरक्षित रखने के लिए वृक्षारोपण जैसे किसी उपाय पर कभी विचार नहीं किया गया । परिणामतः वहाँ की मिट्टी लगातार सूखती चली गई । जैसे-जैसे वह सूखती गई, तदनुरूप हल्की भी होती गई। हल्की होने के कारण मिट्टी हवा में उड़-उड़कर वातावरण में संव्याप्त होने लगी । वातावरण में धूल की अधिकता के कारण वर्षा कम होने लगी, जिससे वे क्षेत्र रेगिस्तान में परिवर्तित हो गये । इसी भय से जापान में अब कृषि और वनीकरण की मिश्रित व्यवस्था अपनाई गई है । वहाँ जिन क्षेत्रों में कृषि की जाती है, वहाँ पेड़ भी बड़े परिमाण में लगाये जाते हैं, ताकि खेती एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूमिगत जल की आपूर्ति होती रहे ।

इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्रान्ति ने मानवी पर्यावरण और स्वास्थ्य को अपार क्षति पहुँचाई है । इस संबंध में सुप्रसिद्ध पर्यावरण विशेषज्ञ कोनर्रोड लॉरेंज कहते हैं कि ''मनुष्य जाति यह लगभग भूल गई है कि जीवित निकायों से किस प्रकार बरताव किया जाय । मनुष्य जीवित निकायों के लिए विचार और क्रिया पद्धति का तकनीकी व्यवहार ही अपनाता है । इस प्रकार की नीति एवं क्रिया पद्धति अकथनीय क्षति का कारण बनती है ।

आजकल पृथ्वी में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जो मनुष्य के द्वारा किसी न किसी प्रकार प्रदूषित न हो रहा हो । डब्ल्यू क्लाजविज लिखते हैं कि १०० से १५० वर्ष से मध्य यूरोप और नॉर्थ अमेरिका के स्वरूप बदल गये हैं । वहाँ न केवल मेट्रोपोलिटन नगर और औद्योगिक क्षेत्रों का व्यापक विस्तार हो रहा है, बल्कि भूमि, नालों और नदियों के रूप में व्यापक रूप से विस्तृत हो रही है । औद्योगीकरण का व्यापक विस्तार पठारी प्रदेश की ओर निरन्तर होता जा रहा है । दक्षिणी अमेरिका का 'आमेजिन रिजन' 'जोन्स ऑफ वर्जिन फॉरिस्ट्स' के नाम से जाना जाता है । वह वन क्षेत्र अभी भी बड़े भू-भाग में विस्तृत रूप से फैला है । पर्यावरण विशेषज्ञों का अनुमान है कि अगले दस या बीस वर्षों में अमेजन के वन क्षेत्र विराट कृषि भूमि में बदल जायें और वन काट डाले जायेंगे । लगभग सौ वर्ष के अन्त में ये वन-भूमि मरुभूमि में बदल सकते हैं । पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि ''आधुनिक मानव अपनी तकनीकी उपलब्धियों के प्रलोभन के कारण वही करता है, जिससे उसकी प्रकृति से खुशी मिले और कुछ प्राप्त करे । इससे वह अपने नैसर्गिक पर्यावरण को पूर्णतया बदल देता है । जल, वन और भूमि के स्रोतों का दोहन करता है तथा क्रमशः कृत्रिम मशीनी दुनियाँ का निर्माण करता है ।

पर्यावरण को मनुष्य मात्र ही नहीं बदलता, वायु, जल, मिट्टी और पृथ्वी में पाये जाने वाले सभी जैविक प्राणी भी पर्यावरण को बदलने वाले घटक हैं । ये सभी घटक आधुनिक मानवी सभ्यता की प्रगति के कारण, दूषित हो गये हैं । औद्योगीकरण के कारण ठोस, गैस और तरल पदार्थों के रूप में जो भी गन्दे पदार्थ निःसृत होते हैं, उनमें से कुछ जहरीले होते हैं । ये पदार्थ पर्यावरण के प्रदूषक तत्व कहे जाते हैं । जर्मनी के रेनहार्ड डेयोल का कहना है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

''पर्यावरण को सुरक्षित ररखकर ही मनुष्य अपने आपको बचा सकता है । ''

अमेरिकी राकेल कार्सन नामक महिला को ''इनवाइरनमेन्टल जोन ऑफ आर्क'' की उपाधि से अलंकृत किया गया है । वह पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली आधुनिक सभ्यता को मानवी सभ्यता और जीवन के लिए घातक समझती है । उनके अनुसार पर्यावरण सम्बन्धी जो वर्तमान संकट चहुँ ओर दिखाई पड़ता है, वह विभिन्न क्षेत्रों में इस सभ्यता की गलत नीतियों का ही दुष्परिणाम है । वे कहतीं हैं कि यदि आगे इन नीतियों में परिवर्तन नहीं हुआ, तो अन्य सभ्यताओं की भाँति वर्तमान सभ्यता का सर्वनाश समुपस्थित होना असम्भव भी नहीं ।

परस्पर जुड़े हुए हैं अन्तःकरण एवं पर्यावरण

मनुष्य और प्रकृति दोनों ही शब्दों में निहित गूढ़ भाव प्रारम्भ से ही मनीषियों के लिए चिन्तन का विषय रहे हैं । पूर्व तथा पश्चिम दोनों ही क्षेत्रों में उस पर व्यापक शोधात्मक चिन्तन हुआ है । पूर्व विशेषतया भारत में जहाँ ये अध्येता ऋचाओं व श्रुतियों के दृष्टा ऋषि तथा दर्शनकार मनीषी रहे हैं, वहाँ इस क्षेत्र में पश्चिम में प्लेटो, एपीक्यूरस, हेगल, ब्रैड्ले, बर्गसां, लाइब्नित्ज, बोन्साके, स्पेन्सर जैसे चिन्तकों का विश्वविख्यात समूह रहा है ।

वर्तमान समय में इस शोध की एक अन्य धारा निःसृत हुई है, जिसे वैज्ञानिक चिन्तन की धारा कहा जा सकता है । गम्भीरता से अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है, कि इसके अध्ययन का विषय भी मनुष्य और प्रकृति ही है । विज्ञानविदों ने अपनी शोध को मानवी काया तथा इसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति के विभिन्न घटकों पर केन्द्रित किया है ।

इन त्रिविध शोधात्मक स्वरूपों का तुलनात्मक विवेचन करने पर उद्घाटित तथ्य स्पष्ट करता है कि प्राच्य ऋषियों अध्ययन में मनुष्य की परा-प्रकृति (जीवसत्ता) एवं अपरा प्रकृति के सूक्ष्म एवं स्थूल सम्बन्धों पर व्यापक चिन्तन करके प्रकृति के विकास क्रम को पूर्ण करके इससे ऊर्ध्व स्तरों पर आरोहण का निर्देश दिया गया है । पश्चिम का दार्शनिक चिन्तन ऊर्ध्व स्तरों की चर्चा न कर मात्र मानव तथा प्रकृति के सम्बंधों को सूक्ष्म व स्थूल स्तर पर लेता है जबकि आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन में इन सम्बन्धों का दायरा केवल स्थूल स्तर तक ही सिमट जाता है ।

अध्ययन के इस क्रम में प्राप्त लक्ष्यों पर विचार करने पर स्पष्ट होता है, कि प्राच्य ऋषियों का उद्देश्य बाह्य प्रकृति से अन्तः प्रकृति में प्रवेश कर तथा उसे पारकर आनन्द पाना था । पश्चिमी दार्शनिकों में से अधिकांश का लक्ष्य बाह्य प्रकृति के साथ अन्तः प्रकृति का सम्बन्ध स्थापित कर अन्तरण में रमण कर सुख की प्राप्ति था । जबकि आज वैज्ञानिक चिन्तन में यह लक्ष्य वाह्य प्रकृति से अधिकाधिक उपलब्ध कर मात्र उसका उपभोग करना रह गया है ।

भोग की इसी प्रवृत्ति ने शोषण का क्रम प्रारम्भ किया । इस क्रम के अनुसार प्रकृति के प्रत्येक घटक को जिस किसी तरह निचोड़ लेना ही एक मात्र उद्देश्य रह गया है । विज्ञानविद् जो अन्य प्राणियों का अध्ययन करते समय सहजीवन प्रणाली की सराहना करते हैं, स्वयं परजीवीं बनने की प्रेरणा देने लगे हैं । इसमें दोषी कोई व्यक्ति अथवा समाज का अंग विशेष नहीं है, अपितु चिन्तन की अपूर्णता तथा मानव व प्रकृति के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को न समझ पाने की विवशता है ।

निर्वनीकरण, औद्योगीकरण, भूगर्भ के साधनों का उत्खनन, भूक्षरण, जनजीवन में अस्तव्यस्तता, आधुनिकता की दौड़ ने जहाँ अचिन्त्य चिन्तन को बढ़ावा दिया है, वहाँ मनुष्य को प्रकृति से पृथक् कर एक व्यापक असंतुलन भी पैदा कर दिया है । इससे प्रदूषण जन्य शारीरिक रोगों में तो बढ़ोत्तरी हुई ही है, अप्रत्यक्ष रूप से मनोविकार ग्रस्त रोगियों की संख्या में करोड़ों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है । ''द स्ट्रक्चर ऑफ साइंटिफिक रिवॉल्युशन'' एवं ''सायकिएट्री एण्ड इट्स क्रिटिक्स'' जैसे शोध ग्रंथों के विद्वान लेखक एम० रुथ ने बढ़ती हुई मनोरोगों की दर के लिए पर्यावरण की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गड़बड़ियों को जिम्मेदार माना है । इन अध्येताओं के साथ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मनःशास्त्री ड्र० इग्लेवी की भी यह मान्यता है कि पर्यावरण के साथ मनुष्य का प्रगाढ़ भावनात्मक सम्बंध है । दोनों ही एक-दूसरे से सूक्ष्म रूप से जुड़े हुए हैं ।

पर्यावरण में विघटन का तात्पर्य है अन्तःकरण में विघटन । इस विघटन को मनोविद् फ्रस्ट्रेशन का नाम देते हैं । ''इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन '' के प्रवक्ता मनोविद् ड्र० बी० आर० शर्मा उपर्युक्त तथ्य का स्पष्टतया समर्थन करते हुए अपनी कृति ''फ्रस्ट्रेशन - रिएक्शनस ऑफ गवर्नमेण्ट एक्जीक्यूटीव्स'' में कहते हैं कि फ्रस्ट्रेशन अर्थात आशाभग्नता का स्पष्ट कारण पर्यावरण सम्बन्धी विकृति है । इसको और अधिक सुस्पष्ट करते हुए येले विश्वविद्यालय के प्राध्यापक जे० डोलार्ड, एल० डब्लू० डोस, एन० इ० मिलर एवं ओरमोरर अपने संयुक्त अध्ययन फ्रस्ट्रेशन एण्ड एक्शन में कहा है कि यह भग्नता व्यक्ति को आक्रामक बनाती है । यह आक्रामकता ही हिंसा में वृद्धि करती है ।

मनोवैज्ञानिक इस तथ्य पर अपने मन्तव्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि पर्यावरण के विघटन के कारण हुआ अंतःकरण के अन्तःकरण का विघटन अपनी अभिव्यक्ति द्विविध रूपों में कर सकता है । प्रथम तो यह कि अन्तःकरण विघटन का ज्वालामुखी व्यक्ति के अन्तःकरण को नष्ट करने के साथ बाहर उभर कर दूसरों को चपेट में ले ले । हिंसा आदि की अधिकांश घटनाएँ प्रायः उपर्युक्त कारण की उपज होती हैं । द्वितीय यह कि इस विघटन में व्यक्ति अन्दर ही अन्दर घुटता हुआ अपने को नष्ट करता रहे । व्यवहार विज्ञानियों का मानना है कि ऐसा व्यक्ति हिंसा भले न करे किन्तु वह पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर टूटने के साथ स्वयं अपने से भी टूट जाता है । इन दोनों में कौन प्रकार किस व्यक्ति में कैसे व कब घटित होगा वह व्यक्ति की अन्तःकरण की संरचना तथा निकटस्थ पर्यावरण के विघटन की स्थिति पर निर्भर करता है ।

विघटन की इस स्थिति को ड्र० इशप्रोग्राफ तथा अन्य मनःशास्त्रियों ने एक नाम और दिया है ''डिसइन्टेग्रेशन ऑफ पर्सनालिटी'' अर्थात् व्यक्तित्व का विघटन । ड्र० हाइसेनबर्ग ने ''इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ वर्ल्ड कल्चर'' से प्रकाशित अपनी कृति ''साइकोलॉजिकल इन सिक्यूरिटी इन माडर्न मैन'' में इस स्थिति की गंभीरता स्पष्ट करते हुए कहा है कि यह विघटन ही मनुष्य के मानवी समाज में व्याप्त अनिश्चितता एवं अनास्था के माहौल का कारण है ।

इन मनोवैज्ञानिकों ने बताया है कि संक्रामक रोग की तरह जनमानस में फैल रहा विघटन फ्रायड द्वारा बतायी गई कामुक वासनाओं के दमन के कारण नहीं अपितु पर्यावरण तथा अन्तःकरण के सम्बन्धों को विस्मृत करने तथा पर्यावरण में विघटन उत्पन्न करने के ही कारण है । इस विघटन के कारण में मनोविद् मनुष्य की संकीर्ण स्वार्थपरता की भावना को मुख्य मानते हैं । इस तरह की समाजगत, समूह स्तर पर पायी जाने वाली भावना को डब्ल्यू०एलन० वाट्स साइकोथैरेपी ईस्ट एण्ड वेस्ट में मोशियोसेस्ट्रिक अर्थात् मनुष्य समाज का अपने ही दायरे में संकुचन नाम देते हैं ।

इस स्थिति पर गंभीरता से विचार करते हुए मनीषी चिन्तक पाल टिलिच कहते हैं कि वर्तमान समय में मनुष्य जीवन के मूल्यों को भुला बैठा है । उसने उथलेपन के चक्कर में गहराई के आयाम को गँवा दिया है । आज मनुष्य चिन्तन के इस एकांगीपन के कारण ही संव्याप्त रिक्तता को उथले साइंटिज्म के द्वारा भरने का प्रयास कर रहा है । किन्तु यह प्रयास पूर्णता के स्थान पर रिक्तता को ही बढ़ाते जा रहे हैं । इस रिक्तता में तनाव, विघटन अनिश्चितता जिन्हें मनोविज्ञान की भाषा में 'एन्क्जायटी काम्पलेक्स'भी कह सकते हैं, डेरा जमाए है । किसी स्थिति में ये निकलने का नाम नहीं लेते ।

इटेलियन मनोअद्येता फ्रांको वासाग्लिया अपनी कृति ल इंस्ट्रीयूजीएने ने गेटा मे स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान में मनोरोगों की नैदानिक पद्धति तब तक असफल व व्यर्थ सिद्ध होगी जब तक प्रज्ञापराध नाम से जानी जाने वाली इस व्याधि के मूल कारण का निवारण नहीं किया जाता । आयुर्वेद का ऋषि कहता

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है– निवारण व उपचार एक ही है–पर्यावरण व अन्तःकरण के संबंधों की पुर्नस्थापना ।

मनुष्य अपने आस-पास के वातावरण से बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है । इसमें किसी तरह के परिवर्तन उसे प्रभावित किए बिना नहीं रहते । बदलते मौसम में खाँसी-जुकाम-बुखार आदि की बातों से हम सभी परिचित हैं । पर वर्तमान मनोविज्ञान ने अपने अध्ययन के द्वारा एक और चीज प्रमाणित की है वह है पर्यावरण की हलचलें जो न केवल हमारे शरीर को प्रभावित करती हैं बल्कि हमारा मन भी उससे बड़ी नजदीकता से जुड़ा हुआ है । इस सम्बन्ध में अध्ययनकर्ताओं का मत है कि पर्यावरण और अन्तःकरण दोनों को एक-दूसरे से बड़ा घनिष्ट संबंध मानना होगा ।

प्रकृति से छेड़छाड़ हमें बड़ी महँगी पड़ेगी.

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के मनो विशेषज्ञ ई.ब्रुन्सविक ने ''सिस्टेमेटिक एण्ड रिप्रेजेन्टेटिव डिजाइन ऑफ साइकोलॉजिकल एक्सपेरीमेण्टस'' में पहले-पहल इस चीज का विवरण प्रस्तुत किया । उनके अनुसार प्राकृतिक वातावरण की अच्छाई-बुराई हमारे व्यवहार को बहुत हद तक प्रभावित करती है । किसी न किसी रूप में सभी इससे प्रभावित होते हैं भले कुछ कम हों और कुछ ज्यादा ।

पिछले दिनों मनुष्य ने विकास की दौड़ में प्रकृति के साथ बड़ी नोच-खसोट की है । इस तरह के बर्ताव ने समूचे पर्यावरण को चरमरा दिया है । ड्ब्लू.के.इर्स्टेस ने ''सोशल इकोलॉजी एण्ड ह्यूमन बिहेवियर'' में इसके प्रभावों की चर्चा करते हुए कहा कि ''इससे मनुष्य की मानसिकता विकृत हई है, जिसके परिणाम हिंसा, अपराध, विघटन आदि के रूप में दिखाई पड़ रहे हैं ।''

विकसित अथवा विकासशील देशों में जहाँ भी वातावरण गड़बड़ाया है, किया गया अध्ययन उपर्युक्त बात को सही साबित करता है । अमेरिका को दुनिया का सबसे अधिक विकसित देश माननना जाता है । यहाँ के न्यूयार्क, वाशिंग्टन, न्यूजर्सी जैसे बड़े शहरों के साथ कस्बे भी ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि से ग्रसित हैं । यहाँ का अध्ययन करके अपराध मनोविज्ञानियों ने एक ब्यौरा प्रस्तुत किया है । इसके अनुसार हर पाँचवे सेकण्ड में एक डकैती होती है । हर छठवें मिनट में किसी नारी के साथ बलात्कार की घटना होती है। हर पच्चीसवें मिनट में एक हत्या हो जाती है, हर अड़तीसवें सेकण्ड में एक व्यक्ति पर प्राणघातक हमला होता है । हर तीसरे सेकण्ड में एक आर्थिक गड़बड़ी का अपराध दर्ज हो जाता है । हर दसवें सेकण्ड में सेंधमारी होती है, जबकि औसत अमरीकी की आय बीस हजार डलर से अधिक है । हर चौथे सेकण्ड में तस्करी का एक मामला दर्ज होता है । हर छब्बीसवें सेकण्ड में एक मोटर गाड़ी चोरी हो जाती है । यही नहीं सर्वेक्षणकर्ताओं के अनुसार वहाँ के मैनहट्टन क्षेत्र में स्थिति यहाँ तक है कि कुछ सड़कों में रात सात बजे के बाद निकलना बाहरी व्यक्ति के लिए जान हथेली पर ले निकलने जैसा है । यह स्थिति सबके लिए समान है चाहे वे विदेशी हों अथवा अमरीकी ।

पर्यावरण की गड़बड़ी से मनःस्थिति को गड़बड़ाने की व्याख्या सोशल साइन्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट, सदर्न कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के प्राध्यापक सरनॉफ मेडनिक ने की है । उनके अनुसार वातावरण की विकृति मन के चेतन स्तर पर तनाव पैदा करती है । साथ ही अवचेतन स्तर के पाशविक संस्कारों को उद्दीपित भी करती है । तदनुरूप ही दुर्भावनाएँ-दुर्विचार पनपते हैं ।

इसकी प्रक्रिया बतलाते हुए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ.जे.जेड यंग का ''प्रोग्राम्स आफ दि ब्रेन'' ग्रन्थ में कहना है कि पशु संस्कारों का उभार चेतन मन पर प्रतिक्रिया करता है । इन दोनों की मिली-जुली क्रिया स्नायुतंत्र एवम् अन्तःस्रावी तंत्र में परिवर्तन लाने वाली होती है । डॉ मेडनिक ने डेनमार्क के अपराधी मानसिकता वाले युवकों का अध्ययन करने पर पाया कि ऐसे लोगों में मस्तिष्क की अल्फा तरंगों की क्रियाशीलता कम होती चली जाती है । डॉ.यंग का कहना है कि इसके साथ तंत्रिकाएँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उद्दीपित हो एड्रीनल ग्रन्थि को एड्रीनेलिन निकालने हेतु उत्तेजित करती हैं, जिससे व्यक्ति आक्रामक बनता है ।

इन वैज्ञानिक अध्ययनों की गहराई भले न समझ में आने वाली हो पर एक बात तो स्पष्ट हो ही जाती है, कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना कितना खतरनाक है । इस काम को जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काटने की संज्ञा दी जा सकती है । इसके प्रभाव का क्षेत्र बहुत लम्बा चौड़ा और गहरा है ।

वैज्ञानिक अनुसंधानों से जो नतीजे सामने आए हैं उनसे यह भी पता चलता है कि पर्यावरण की प्रदूषित स्थित मन में गड़बड़ी पैदा करने, प्राणों में उत्तेजना लाने तथा व्यवहार को हिंसक बनाने तक सीमित नहीं है । जेनेटिक्स के विशेषज्ञों ने बताया है कि अपराध की प्रवृत्ति व्यक्ति के गुणसूत्रों तथा जीन्स में परिवर्तन लाने वाली सिद्ध होती है । जे. लायन तथा एम. पेना ने अपने संयुक्त अध्ययन "द स्टडी ऑफ ह्यूमन एग्रेशन" में बताया है कि अपराधी व्यक्तियों के गुणसूत्र असामान्य हो जाते हैं । यह असामान्यता एक अतिरिक्त वाई गुणसूत्र के रूप में दिखाई देती है । इससे लिपटे जीन्स अपराध का सन्देश एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने वाले होते हैं ।

सम्भव है अपराधी के लड़के में अपराध प्रवृत्ति न दिखाई दे । पर इसका कारण यह नहीं है कि उसमें यह जीन्स नहीं पहुँचे । अपराधी व्यवहार के दिखाई न देने का कारण इन जीन्स का अप्रभावी होना है जो आनुवंशिकी के नियमानुसार किसी भी अगली पीढ़ी में अपने गुण धर्म को प्रकट कर सकते हैं ।

कितना गहरा है वातावरण का हमारे ऊपर प्रभाव! इसको बेडौल और कुरूप करने का मतलब है अपने को बेढौल और कुरूप बना लेना । प्रकृति से लूट-खसोट का मतलब है अपने आधार को समाप्त कर लेना । मनुष्य जाति के वर्तमान क्रियाकलापों को सरल ढंग से समझाते हुए विख्यात दार्शनिक बेट्रण्ड रसेल का "इम्पैक्ट ऑफ साइन्स आन सोसाइटी" में कहना है कि हम एक ऐसे जीवन प्रवाह के बीच हैं–जिसका साधन है मानवीय दक्षता और साध्य है मानवीय मूर्खता । अगर मूर्खता ही लक्ष्य हो तो उसको पाने के लिए उठाया गया हर कदम बुराई की ओर ले जाता है । रसेल की बात कड़वी होने पर भी पूरी तरह सही है । विकसित बनने के फेर में सही गलत का अन्तर मिटा दिया है । ऐसी दशा में परिणाम बुरे हों तो अस्वाभाविक नहीं है ।

बिगड़ी हुई स्थिति को बनाने के लिए जरूरी है उल्टे को सीधा करना । प्रकृति सीधी सौम्य गाय भी है और रुष्ट सिंहनी भी । यदि उसके साथ अनर्गल और अनौचित्यपूर्ण व्यवहार न किया जाय तो अनन्त काल तक अपने दूध रूपी अनेक तरह की सम्पदाओं से हमारा पालन पोषण करती रह सकती है । पर यदि नोच-खसोट, छीना-झपटी का दुर्व्यवहार किया तो क्रुद्ध सिंहनी की तरह अंग-भंग करने, चीरने-फाड़ने में भी वह कोई कसर नहीं छोड़ेगी ।

अच्छा यही है कि हम उसकी गोद में फलें फूलें। इसके लिए ध्यान रखना होगा कि हम अपने आस-पास के वातावरण को सुरम्य और सौम्य बनाएँ । मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन से स्पष्ट किया है कि जो स्थान प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर हैं, जहाँ हरियाली, नदी-तालाब हैं, प्रदूषण से मुक्त हैं, वहां जाने पर अपने व्यवहार में सौम्यता एवं मन में प्रसन्नता का अनुभव किया जा सकता है । ऐसे स्थानों पर स्वास्थ्यवर्धक ऋण आयन्स भी प्रचुर मात्रा में पाये गए हैं ।

इससे सिद्ध होता है कि यदि प्रकृति को संरक्षण दिया जाय तो वह हमें भी सरंक्षण प्रदान करेगी । सोशल इकोलॉजी के विद्वान ए. एम. शू ने सामाजिक परिवेश के उन्नत और अपराध मुक्त होने के उपायों को अपनी रचना "सोसाइटी एण्ड इनवायरन्मेण्ट" में सुझाया है । उनके अनुसार यह "जिम्मेदारी विश्व वसुधा पर रहने वाले हममें से प्रत्येक की है कि वह आचरण और व्यवहार में नैतिक मूल्यों का समावेश करें । इसका पहला कदम यही है कि स्थान और परिस्थिति के अनुसार प्रकृति का संरक्षण करें, उसे प्रदूषित होने, नष्ट होने से रोक कर उसे बढ़ाने में सहायक बनें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समृद्धि के नाम पर बढ़ता जहर

कल-कारखानों की वृद्धि करते समय यह सोचा जाता है कि इससे आर्थिक लाभ बढ़ेगा, किन्तु यह लाभ अन्ततः बहुत महँगा पड़ता है । कारखाने जो धुआँ छोड़ते हैं, उससे वायु में विषाक्तता बढ़ती है और वह सांस के द्वारा शरीर में पहुँचकर न केवल उनमें काम करने वाले श्रमिकों तथा उस क्षेत्र में रहने वाले निवासियों को हानि पहुँचाती है वरन् दूर-दूर तक हवा के साथ उसका प्रभाव पहुँचता है और उससे जन साधारण के स्वास्थ्य को असीम हानि पहुँचती है ।

कारखानों के अतिरिक्त रेल, मोटर आदि वाहन भी विषैला धुआँ छोड़ते हैं । इससे यात्रा करने वालों को कुछ सुविधा भले ही होती हो , पर सर्व साधारण को इस विषैले धुएँ से हानि ही होती है ।

कारखानों के निर्माण प्रयोजनों में प्रायःविषैले रसायनों का प्रयोग होता है । वे अन्ततः किसी जलाशय में बहाने पड़ते हैं । जिनमें वे पहुँचते हैं उनका जल उपयोग के योग्य नहीं रहता ।

औद्योगीकरण के कारण इन दिनों समूचे विश्व में पर्यावरण बड़ी तेजी से प्रदूषित होता जा रहा है। इसका सबसे प्रमुख कारण है-औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धूलिकण, धुआँ और अवशिष्ट पदार्थ या कचरा । इस विषाक्तता का सर्वाधिक बुरा प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ता है । पिछलें दिनों सन् १९६८ में ब्रिटेन का समूचा वायुमण्डल धूलिकणों से लाल हो उठा था । इसी प्रकार अफ्रीका में युद्धकालीन दिनों में बड़ी मात्रा में धूलिकण उड़कर कैरिबियन सागर तक पहुँच गये थे । वायुमण्डल में धूलकणों की बहुलता से लोगों को श्वॉस लेने में कठिनाई होती है तथा उसके दुष्प्रभाव फेंफड़ों की अनेक बीमारियों के रूप में परिलक्षित होते हैं । स्विट्जरलैण्ड के वायुमण्डल में पिछले दिनों ८० प्रतिशत तक धूलिकणों की अभिवृद्धि पाई गई थी । इसी प्रकार हवाई टापू में जब से औद्योगीकरण आरम्भ हुआ वहाँ के वातावरण में इसके अतिरिक्त कारखानों से उठने वाले धुएँ और कार्बन डाइऑक्साइड गैस भी वातावरण को विषाक्त बनाते रहते हैं । इस कारण भी अनेकानेक बीमारियाँ उत्पन्न होती रहती हैं ।

औद्योगिक क्षेत्र में सबसे अग्रणी देश जापान का टोकियो शहर आज विश्व का सबसे अधिक प्रदूषित क्षेत्र बन गया है । उस क्षेत्र की विषाक्तता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि दिन में चार घण्टे तक वहाँ की सड़कों पर परेड करने वाली ट्रैफिक पुलिस के लिए स्थान-स्थान पर ऑक्सीजन टंकियों की व्यवस्था की गई है, जिससे घुटन महसूस होने पर जब तब वे ऑक्सीजन लेते रहें और जीवन रक्षा कर सकें । शोधकर्त्ताओं का कहना है कि वहाँ हर व्यक्ति के फेफड़ों में प्रतिदिन इतनी कार्बन डाईऑक्साइड भर जाती है, जितनी १०५ सिगरेट पीने से भरती है। जिन दिनों टोकियो में घना कुहरा छाया होता है, उन दिनों वहाँ के विद्यार्थी अपने मुँह में एक विशेष प्रकार की छन्नी पहने रहते है और छनी हवा ही सांस द्वारा खींचते हैं । किन्तु इतनी सावधानी बरतने के बाद भी वे उस विषाक्तता की मार से बच नहीं पाते । वहाँ प्रायः हर छात्र आँख, नाक और गले की किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त पाया जाता है ।

जापान में एक मात्र पर्वत फ्यूजियामा है । वहाँ के लोग इसकी अपने देश के गोवर्धन पहाड़ की तरह ही पूजा करते हैं, किन्तु प्रदूषण की चपेट से यह पवित्र पहाड़ भी नहीं बच पाया । अब इस हिम-मण्डित पहाड़ के वर्ष में मात्र चालीस दिन ही दर्शन हो पाते हैं, शेष दिनों में यह औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न धूल और धुएँ से आच्छादित रहता है । कुछ वर्ष पूर्व इस विष वर्षा के कारण टोकियो शहर की औसत मृत्यु संख्या १६० से बढ़कर १७० हो गई थी । जब कारखानों को कुछ दिन के लिए बन्द कर दिया गया, तब कहीं जाकर मृत्यु दर घटकर ११९ हुई । द्वितीय महायुद्ध से पूर्व अमेरिका का पिट्सबर्ग शहर धुएँ के कारण उत्पन्न विषाक्तता के लिए विख्यात था। इसके कारण वहाँ के निवासियों ने सफेद वस्त्र पहनना छोड़ ही दिया था, कारण श्वेत कपड़े पहनने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के कुछ ही क्षणों बाद उस पर कालिख की एक मोटी परत जम जाती थी और कपड़ा काला पड़ जाता था । उन्हें धोकर बाहर सुखाया जाता तब भी यही स्थिति सामने आती । उन दिनों वहाँ की स्थिति इतनी खराब थी कि धुएँ के सघन अम्बार के कारण पास पड़ोस के मकान भी दिखाई नहीं पड़ते थे । किन्तु जैसे ही मूर्च्छना हटी, उस धूम्र प्रदूषण पर धीरे-धीरे नियंत्रण स्थापित किया गया और आज पिट्सबर्ग अमेरिका के सबसे अधिक साफ-सुथरे शहरों में गिना जाता है । द्वितीय महायुद्ध के बाद वहाँ धुआँ और धूल में ८४ प्रतिशत की कमी आई । यदि मनुष्य सामूहिक रूप से मिल-जुलकर प्रयास करे तो कोई भी ऐसी समस्या नहीं जिसका समाधान न निकाला जा सके ।

सर्वेक्षणकर्त्ताओं के अनुसार औद्योगिक प्रगति के नाम पर अमेरिका विश्व का सबसे अधिक विषाक्तता उत्पन्न करने वाला देश है । संसार की सबसे अधिक अंग्रेजी दवाइयाँ भी यहीं बनती और बिकती हैं । वातावरण में बढ़ रहा विषाक्तता के कारण मनोरोगियों, सनकियों एवं अध-विक्षिप्तों की संख्या भी सबसे अधिक उसी देश में हैं । इसी तरह कुछ वर्ष तक ब्रिटेन में ७० अरब पौण्ड वार्षिक खर्च ऐसे रोगों पर किया जाता रहा जो प्रदूषण के कारण पैदा हुए थे । विकासशील देशों की अपेक्षा विकसित देश जल एवं वायु को दूषित बनाने में भी आगे निकल गये हैं। इसका दुष्परिणाम उन्हें तो भुगतना ही पड़ रहा है, पर उसकी चपेट में आने से अन्य देश भी अछूते नहीं बचे हैं ।

विश्व के अधिकांश जलागार आज कारखानों-औद्योगिक इकाइयों से उत्पन्न कचरों से प्रदूषित हो रहे हैं । समुद्र तो विकसित देशों के कबाड़ खाने बन गये हैं । प्लास्टिक, रंग, रबर, विभिन्न प्रकार के विषैले रसायनों एवं रेडियोधर्मी पदार्थों के अवशेषों को इन्ही को समर्पित कर दिया जाता है । इससे जल प्रदूषण तो होता ही है, समुद्री जीव-जन्तु भी बड़ी तेजी से मारे जा रहे हैं । जो किसी प्रकार बच जाते हैं, उनके शरीर में भी इनका प्रवेश हो जाता है । मछली एवं अन्य जलीय जीवों के माध्यम से ये घातक रसायन मनुष्य शरीर में प्रविष्ट होकर तरह-तरह की जानलेवा बीमारियाँ पैदा करते हैं । विशेषज्ञों का कहना है कि कुछ वर्ष पूर्व तक विभिन्न प्रकार के रासायनिक उत्पादनों के पाँच लाख टन कचरे समुद्र में बहाये जाते थे, किन्तु वर्तमान समय में यह मात्रा अब दस गुनी अधिक हो गई है । इन कचरों में विभिन्न प्रकार के रसायन, धातु, रेडियोधर्मी अवशेष, गैसें, दवाइयाँ आदि सम्मिलित हैं । आँकड़े बताते हैं कि प्रति वर्ष ५० लाख टन से लेकर एक करोड़ टन खनिज तेल एवं उसके अन्याय उत्पाद नदियों में बहकर समुद्र में पहुँचते हैं । २०-३० लाख टन के करीब मोटर-वाहनों का धुआँ प्रतिवर्ष वातावरण में मिलकर पुन; वारिश के साथ समुद्री सतह पर अवक्षेपित हो जाता है । तेल वाहक जहाजों से १०-१५ लाख टन तेल बहकर जल में मिलता है । इसके अतिरिक्त बडे शहरों का मल-मूत्र अन्यान्य गन्दगी भी नदी नालों के माध्यम से इसमें मिलते रहते हैं नदी जैसे छोटे जलाशयों के पानी का तो नवीनीकरण भी होता रहता है, पर समुद्री जल को इस प्रक्रिया में युग बीत जाते हैं । इसी कारण इनके प्रदूषण का प्रभाव भी लम्बे समय तक बना रहता है और स्वास्थ्य संकट उत्पन्न करता रहता है ।

फाइटोप्लेंकटन-जलीय वनस्पतियाँ समुद्री सतह पर सदा तैरते रहते हैं । गंदगी और प्रदूषण के लिए ये एक प्रकार से छन्नी का काम करते हैं । इनकी समाप्ति समुद्री जीवों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है । सन् १९०० में एक लिटर समुद्री जल में २.२५ घन से. से.मी. ऑक्सीजन घुली रहती थी, किन्तु प्रदूषण के कारण धीरे-धीरे इसकी मात्रा में कमी आती गई । सन् १९४० में घटकर यह ०.४५ घन से. मी. रह गई, जबकि वर्तमान समय में इसकी यह मात्रा मात्र ०.१ घन सेमी, से भी कम रह गई है । समुद्री जीवों के लिए भी प्राणवायु उतनी ही आवश्यक है जितनी हमारे लिए । यदि इसकी मात्रा इसी प्रकार निरन्तर घटती गई तो कुछ ही दिनों में न केवल समुद्री जीवों का सफाया हो जायगा, वरन् मानवी अस्तित्व के लिए भी विनाशकारी सिद्ध होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकृति के साथ खिलवाड़--याने सामूहिक आत्महत्या

सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों की बढ़ती मात्रा के कारण धरती बीरान और बंजर हो सकती है । तापमान असाधारण रूप से बढ़ सकता है, जिससे बर्फ पिघलने से जल प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है । आगामी पीढियों को गंभीर आनुवंशिक क्षति का सामना करना पड़ सकता है । म्युटेशन जैसी विरल जेनेटिक घटनायें सामान्य स्वाभाविक बन सकती हैं, जिससे समस्त मनुष्य जाति में विलक्षण, विचित्र परन्तु घातक परिवर्तन हो सकते हैं । इससे पेड़-पौधे भी सर्वथा अप्रभावित नहीं रह पायेगें । रोग-प्रतिरोधी क्षमता के नष्ट हो जाने से ८० प्रतिशत वृक्ष वनस्पतियाँ समाप्त हो सकती हैं । फसल उत्पादन में भी इसका घातक असर पड़े बिना न रह सकेगा ।

उपरोक्त संभावना व्यक्त की है-कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय इरविन के मूर्धन्य रसायन शास्त्री शेरब्रुड राऊलैण्ड ने । उल्लेखनीय है कि उन्होंने ही सर्वप्रथम क्लोरोफ्लोरो कार्बन नामक रसायन की खोज की थी और यह पता लगाया था कि ओजोन जैसे धरती के रक्षा कवच को सर्वाधिक हानि पहुँचाने वाला पदार्थ यही है । इतना सब जानते समझते हुए भी अमरीका ने ही सबसे पहले इस रसायन का प्रयोग एयरकण्डीशनरों, रेफ्रीजरेटरों जैसे विलासिता के अत्यानुधिक यंत्रों के निर्माण में करना शुरु किया । धीरे-धीरे इस अनुकरण को पश्चिम के अन्यान्य देशों ने भी अपनाना प्रारंभ किया और औद्योगिक स्तर पर इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस जैसे विकसित राष्ट्रों में भी इसके उत्पादन आरम्भ हुये । प्रतिस्पर्द्धा बड़ी तो एक प्रकार की श्रृंखला प्रतिक्रिया इस क्षेत्र में शुरू हुई और इन दिनों लगभग समस्त विश्व में यह साधन-सामग्री बरसात की मखमली चादर की तरह छा गई है ।

खतरे की घण्टी तब बजी, जब रसायन की खोज के ४४ वर्ष बाद इस संदर्भ में दी गई चेतावनी सन् १९८५ में पुष्ट होती नजर आयी और पहले-पहल यह साबित हुआ कि ओजोन पर्त में एक बड़ा भारी सूराख हो गया है । इससे उत्पादक देशों में हलचल मच गई । सबसे अधिक चिन्ता इसकी अमेरिका को हुई, अतः उसने इसके दो वर्ष बाद इस संबंध में विस्तृत अध्ययन और जानकारी उपलब्ध करने के लिए एक विशेष प्रकार का यान यू-२ अंतरिक्ष के उक्त क्षेत्र में भेजा । उससे उपलब्ध आँकड़े चौंकाने वाले थे । अध्ययन से सूराख की सुनिश्चित जानकारी तो मिल गई, पर साथ-साथ एक अन्य तथ्य का भी पता चला, जिससे अमेरिकी प्रशासन और वैज्ञानिक सकते में आ गये । ज्ञात हुआ कि उक्त रसायन से उत्तरी ध्रुव के ओजोन कवच में जो छिद्र बना है, उसका क्षेत्रफल अमरीका के कुल भू-भाग का तीन गुना है और उसके आकार-विस्तार में लगातार वृद्धि होती जा रही है एवं आने वाले कुछ वर्षों में इस विस्तार में दुगुनी अभिवृद्धि की संभावना है ।

इन आँकड़ों ने सम्पूर्ण विश्व में खलवली मचा दी, पर इससे सबसे ज्यादा बेचैन अमरीका, ब्रिटेन एवम् यूरोप के वे धनी देश ही हुए हैं, जहाँ क्लोरोफ्ल्युरौ कार्बन्स का सर्वाधिक उत्पादन और उपयोग होता है । पिछले दिनों तक ब्रिटेन यूरोप में सी. एफ. एस. का मुख्य निर्यातक देश रहा है । सन् १९८० के दशक में उसने अकेले एक वर्ष में लगभग सवा सौ देशों को आधा लाख टन उक्त रसायन का निर्यात किया । विश्व भर में सी.एफ.सी- गैस के निर्माण एवं खपत संबंधी किये गये अध्ययन बताते हैं कि संसार भर में हर वर्ष इसका लगभग ८ लाख मीट्रिक टन उत्पादन होता है । इसमें से अकेले अमेरिका १४ प्रतिशत का निर्माण करता है । जबकि शेष ८६ प्रतिशत में विश्व के सभी गरीब-अमीर देश सम्मिलित हैं, किन्तु इस सब की औसत खपत अमरीका से कम ही है । जनसंख्या की दृष्टि से यदि इसके उत्पादन पर विचार किया जाय तो विश्व पटल पर चीन और भारत ही ऐसे दो देश हैं, जो सबसे धनी आबादी वाले राष्ट्र हैं, जिनमें विश्व की एक तिहाई जनसंख्या निवास करती है, किन्तु यहाँ सी.

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

एफ. सी. की खपत कुल मिलाकर ५ प्रतिशत ही होती है, जबकि ब्रिटेन की आबादी इन दोनों देशों की तुलना में नगण्य जितनी है । इसी से अन्दाज लगाया जा सकता है कि औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में इस रसायन का उपयोग और उत्पादन कितने खतरनाक स्तर पर होता है, जबकि तीसरी दुनिया के अनेक ऐसे गरीब देश हैं, जहाँ अभी-अभी ही इस तकनीक का विकास हो पाया है । अत; वहाँ विलासिता के उत्पादों में खपने वाले इस रसायन का निर्माण कितने न्यून स्तर पर हो रहा होगा, इसका अनुमान लगाया जा सकता है ।

आरम्भ में अमेरिकी यान ने आर्कटिक पोल का निरीक्षण कर मात्र यही बताया कि ओजोन पर्त में नुकसान सिर्फ इसी क्षेत्र तक सीमित है, पर जल्द ही यह पता चल गया कि ऐसे ही सूराख की निर्माण प्रक्रिया दक्षिणी ध्रुव के रक्षा कवच में भी चल पड़ी है और आने वाले कुछ वर्षों में उससे भी बड़ा विवर हिन्द महासागर के ऊपर अण्टार्कटिक के आकाश में बनने जा रहा है । विशेषज्ञों के अनुसार यह विवर इस सदी के अन्त तक अस्तित्व में आ जायेगा । अध्ययनवेत्ता बताते हैं कि दक्षिणी गोलार्द्ध में ओजोन पर्त की क्षति ५२ प्रतिशत के आसपास पहुँच चुकी है, जबकि पिछले वर्ष के अन्त तक उत्तरी गोलार्द्ध में यह हानि ५५ प्रतिशत के करीब आँकी गई थी ।

इन हानियों को देखते हुए इस संदर्भ में समय-समय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित होते रहे हैं, जिनमें इस बात पर अधिकाधिक बल दिया जाता रहा है कि ओजोन छतरी को क्षति पहुँचाने वाली इस गैस के निर्माण पर पूर्ण पाबन्दी सम्पूर्ण विश्व में लगा दी जाय, पर इस संबंध में अब तक के प्रयास कोई उत्साहवर्धक नहीं रहे हैं । हाँ, पहले की तुलना में इसके उत्पादन में वर्तमान में कुछ सीमा तक कमी तो आई है, पर शून्य उत्पादन की आशा अब भी दुराशा बनी हुई है । यों संयुक्त राष्ट्र ने इसकी अन्तिम समय सीमा सन् १९९७ निर्धारित की है । देखना यह है कि इस निर्धारित अवधि में विश्व विनाश की ओर बढ़ते चरण को रोका जा सकता है क्या ? अपने इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है क्या ? जिसकी दुहाई सन् १९८७ के प्रथम मांट्रियल सम्मेलन, सन् १९८९ के द्वितीय हेलिंस्की एवं १९९० के तृतीय लंदन सम्मेलनों तथा हाल ही के रियोडीजेनिरो सम्मेलन में दी जाती रही है ।

यहाँ उस घातक रासायनिक प्रतिक्रिया की चर्चा कर देना अप्रासंगिक न होगा जो सी. एफ. सी. नामक उस विषैले व विनाशकारी रसायन समूह के ओजोन से मिलने पर होती है । जानने योग्य तथ्य है कि ओजोन गैस में आक्सीजन के तीन परमाणु होते हैं । जब इसका समागम सी.एफ.सी. नामक कार्बनिक यौगिक से होता है, तो यह यौगिक ओजोन के ऑक्सीजन परमाणुओं से प्रतिक्रिया कर एक नया यौगिक क्लोरीन मोनाक्साइड का निर्माण करता है । यह प्रतिक्रिया जब लगातार लम्बे समय तक चलती रहती है, तो उक्त क्षेत्र में ओजोन का स्तर घटते जाने के कारण अन्ततः उसकी सुरक्षा छतरी में छेद हो जाता है, जिससे सूर्य की पराबैंगनी जैसी विघातक विकिरणें धरती तक निर्विघ्न पहुँचने और वहाँ के पादप व प्राणियों को असाधारण हानि पहुँचाने लगती हैं । कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के रसायनज्ञों शेरब्रुड रोलैण्ड एवं सहयोगी मारियोमार्लिस का कहना है कि क्लोरीन का एक परमाणु ओजोन के लक्षाधिक परमाणुओं को एक-साथ एक समय में विनिष्ट कर सकता है । क्लोरीन गैस का यह स्रोत लगभग सौ वर्ष तक अपना अस्तित्व बनाये रखने में सक्षम है और ओजोन विनाश की उक्त प्रक्रिया को लम्बे समय तक जारी रख सकता है ।

आखिर पराबैंगनी किरणों में ऐसी क्या बात है, जो भयावह भूत की तरह सम्पूर्ण संसार को भयभीत किए हुए है ? इस संबंध में विशेषज्ञों का कहना है कि सूर्य से आने वाली यह विकिरण वर्षा वृक्ष वनस्पतियों से लेकर जीव-जन्तुओं तक को समान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से हानि पहुँचाती हैं । उनके अनुसार मनुष्य में इससे आँख की बीमारियों व असाध्य कैंसर से लेकर अन्धेपन तक की परेशानी पैदा हो सकती है । अन्नोत्पादन में इसका बुरा असर पड़ सकता है । पशुओं पर किये गये परीक्षणें से यह कैंसर जधन्य भी साबित हुई है । इस आधार पर जीव विज्ञानियों का अनुमान है कि इससे सीधे सम्पर्क में आने से मनुष्यों में त्वचा कैंसर की सम्भावना बढ़ सकती है। उनके अनुसार ओजोन में एक से डेढ़ प्रतिशत की कमी से परबैंगनी किरणों की मात्रा में बढ़ोत्तरी होगी उससे दुनिया में त्वचा कैंसर के ६५,००० प्रतिवर्ष पैदा हो सकते है ।

ओजोन में १० प्रतिशत की कमी से २५ प्रतिशत कैंसर मरीज पैदा होने का खतरा है । इस किरण की वेधक क्षमता कितनी अपार है, इसका अन्दाज इसी से लगता है कि यह समुद्र तल के वनस्पतियों को भी अप्रभावित नहीं रहने देती और उन्हें भी हानि उठानी पड़ती है ।

मौसम विज्ञानियों का कहना है कि इससे वायुमण्डलीय तापमान बढ़ने के कारण बर्फ पिघलने से समुद्र जलस्तर के बढ़ने की सम्भावना बलवती होने लगती है । यूनेप नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण संस्थान का इस बारे में कहना है कि बढ़ते तापमान का खद्यान्न उत्पादन पर सबसे बुरा असर पड़ेगा और इससे सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हुये बिना नहीं रहेगा ।

जिन क्षेत्रों में इसका सबसे अधिक खराब प्रभाव पड़ेगा वह हैं दक्षिण पूर्व संयुक्त राष्ट्र अमेरिका । संस्थान के अनुसार इससे फ्रांस, कनाडा एवं संयुक्तराज्य अमेरिका जो अनाज का तीन चौथाई का भाग विश्व के दूसरे देशों को निर्यात करते हैं के आन्दोलन सबसे घातक असर पड़ेगा । एक अन्य अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन दल का कहना है कि पिछले दशक से समस्त विश्व में हिमपात में महत्वपूर्ण गिरावट आते देखी जा रही है । इस अध्ययन दल के अनुसार भारत का गंगोत्री ग्लेशियर पिछले दो दशाब्दियों में सिकुड़कर अत्यन्त संकीर्ण हो गया है । वह सिकुड़न को २५० मीटर से भी ज्यादा बताते है । इस संकुचन का कारण अध्येता परबैंगनी किरणों के परिमाण में होने वाली वृद्धि को बताते है ।

इसके भयावह परिणामों को देखते हुए देश-विदेश में इससे बचने के तरह-तरह के उपाय-उपचार अपनाते देखे जा रहे हैं । न्यूजीलैंड के स्वास्थ्य विभाग में स्कूली बच्चों को धूप के सीधे संपर्क में आने से बचने की सलाह दी है इसके लिए उनके साथ टोपी पहनने की अनिवार्य शर्त जोड़ दी गई है । चिली में बच्चों को प्रातः दस बजे से तीन बजे तक धूप में बाहर न निकलने का सुझाव दिया गया है । वहाँ दोपहर में होने वाले विभिन्न प्रकार के खेलों पर रोक लगा दी गई है । आस्ट्रेलिया सरकार "सन-बाथ" से बाज आने की चेतावनी बार-बार अपने प्रचार माध्यमों से देशवासियों को दे रही है । डेनमार्क में लोगों को हैट व गोगल्स-चश्में लगाकर ही धूप में निकलने की अपील की जा रही है ।

इसी प्रकार के कितने ही तरीके न जाने कितने देशों में अपनाये जा रहे हैं, पर फिर भी मस्तिष्क में बार-बार एक ही प्रश्न उभरता है कि इतने भर से इस धरती को सुरक्षित रखा जा सकता है क्या ? इनसे मनुष्य तो कुछ हद तक अपनी सुरक्षा कर लेगा, पर "इण्टरडिपेण्डेन्स" पर आधारित इस पर्यावरण का क्या होगा ? अन्य प्राणियों, पादपों, ऋतुओं एवं बढ़ते तापमान व ऊँचे समुदी जल स्तर से बचाव किस भाँति हो सकेगा ? यह सवाल अनुत्तरित रह जाते हैं । प्रकृति की हानि कर हम सुरक्षित कदापि नहीं रह सकते-इस बात पर हजार बार सोचा और विचार किया जाना चाहिए एवं विश्व स्तर पर ऐसा मानस बनाया जाना चाहिए जो प्रकृति की अक्षुण्णता की महत्ता को समझ सके व वैसी ही रीति-नीति अपना सके। सम्पूर्ण विश्व का कल्याण इसी में है । यही आज की सर्वोपरि आवश्यकता है ।

दूरदर्शिता को अपनाना ही श्रेयस्कर

मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है । उससे हर प्रकार की समझदारी की अपेक्षा की जाती है । वह यथासंभव इसका निर्वाह भी करता रहता है, पर समझदारी के साथ जहाँ स्वार्थ और उतावलापन जुड़ जाते हैं, वहाँ वह नासमझी जैसी हानिकारक बन जाती और कर्त्ता समेत अनेकों को-पूरे समाज को अपना शिकार बनाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के संदर्भ में ऐसी ही उतावली बरती जा रही है । जब रोज सोने का अण्डा देने वाली एक मुर्गी का पेट चीरकर सारे अण्डे एक ही दिन निकाल लेने की बात सोची जाय, तो इसे क्या कहा जाय-समझदारी या नासमझी ? इसकी चर्चा करना अनावश्क होगा । कर्त्ता को इसमें अपनी बुद्धिमानी नजर आ सकती है । उसे लाभ मिलता भी प्रतीत हो सकता है, पर इसका दुसह्य दुष्परिणाम जब समाज और समुदाय को भोगना पड़ता है,तब समझ में आता है कि जल्दबाजी में जो निर्णय लिया और कार्य किया गया,उससे लाभ तो मिला,पर वह लाभ उस नुकसान की तुलना में नगण्य जितना ही था, जो समूचे पर्यावरण, प्रकृति एवं उसमें रहने वाले प्राणियों को उठाना पड़ा ।

मूर्धन्य प्रकृति विज्ञानी डेक्डिसन का कहना है कि जब तक व्यक्ति को पर्यावरण संतुलन का मूल्य और महत्त्व मालूम नहीं होगा, तब तक इस प्रकार की स्वार्थपरता बरती ही जाती रहेगी, जिसमें एक की सम्पदा तो बढ़ेगी, पर उस समृद्धि की कीमत पर समस्त विश्व का, प्रकृति व प्राणी का कितना अहित होगा, इसका मूल्यांकन कर सकना संभव नहीं । इस दिशा में सही सोच उभरने पर ही सही कदम उठ सकेंगे । अब यह दायित्व तथाकथित विकसित व विकासशील देशों के कन्धों पर है कि वे ऐसे विनाशकारी विज्ञान की ओर न बढ़ कर सन्तुलन शास्त्र के सिद्धान्तों का सही अर्थों में पालन करते हुए नयी समाज संरचना का विकास करें ।

निसर्ग का अपना एक स्वतंत्र तंत्र है, जिसके माध्यम से वह अपना संतुलन-समीकरण बराबर बनाये रहता है, हर जीव की आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है । इससे उन प्राणि समुदायों में भी संतुलन बना रहता है और प्रकृति भी साम्यावस्था में बनी रहती है । उदाहरण के लिए किसी वन के शाकाहारी जन्तुओं की संख्या में असाधारण वृद्धि हो गई हो, तो ऐसी स्थिति में वे वन के वृक्ष-वनस्पतियों का सफाया करेंगे । आहार की कमी पड़ने से कुछ की भूख से असामयिक मृत्यु होगी । फिर भी यदि संख्या अनियंत्रित रही, तो हिंसक पशुओं की बढ़ोत्तरी होगी, वे अहिंसक जीवों का आहार कर उनकी संख्या नियंत्रित करेंगे । इस बीच यदि हिंसक प्राणियों में अभिवृद्धि हुई, तो भोजन की कमी से उनकी अकाल मौत होगी और उनकी बढ़ोत्तरी में कमी आयेगी । इस प्रकार प्रकृति-तंत्र अपना संतुलन सदा बनाये रखता है ।

फ्रायड हाउल ने अपनी पुस्तक "नेचर एण्ड इक्विलिब्रियम" में इसी आशय का एक उदाहरण प्रस्तुत कर यह समझाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार प्रकृति की स्वसंचालित प्रक्रिया के माध्यम से उसका नियमन-नियंत्रण होता रहता है । वे एक अध्ययन के आधार पर लिखते है कि सन् १८९० के आस-पास अमेरिका में वन्य क्षेत्र ७ लाख एकड़ के विस्तृत भू-भाग पर फैला हुआ था । उसमें ३५ हजार हिरनों को आहार उपलब्ध था । सन् १९०५ में जब हिरनों की गणना हुई, तो उसमें सिर्फ ४ हजार हिरण शेष पाये गये । इस बीच शिकारियों ने शेर, चीते,बाघ जैसे हिंसक पशुओं का भी वध किया । सन् १९०८ से १९११ के तीन वर्षों में आठ सौ के करीब हिंसक जन्तुओं का शिकार किया गया । इन मांसाहारी प्राणियों की संख्या में हुई कमी से अगले कुछ सालों में हिरनों की संख्या में पुनः द्रुत गति से वृद्धि देखी गई । सन् १९२० में इनकी संख्या बढ़कर ४० हजार हो गई । अगले दशक में इनकी तादाद और बढ़ी एवं संख्या १ लाख तक जा पहुँची । इस बीच वनस्पतियों के कम पड़ने से उनका चारा अपर्याप्त हो गया ।

जंगल भी बड़े पैमाने पर नष्ट हुए । इससे हिरन बड़ी संख्या में भूख से दम तोड़ने लगे । सन् १९४० के आस-पास इनकी संख्या मात्र दस हजार रह गई । इतने पर भी वे अपना भोजन बड़ी कठिनाई से ही जुटा पाते थे ।

इससे स्पष्ट है कि प्रकृति अपने सुनियोजित तंत्र द्वारा अपनी सुव्यवस्था करने में सक्षम है । अक्षमता व अव्यवस्था तब उत्पन्न होती है, जब मनुष्य अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु उससे अनावश्यक छेड़छाड़ करता है । किसी सीमा तक तो इस छेड़खानी के कारण तंत्र अपने को ज्यों-त्यों किसी तरह बनाये रहता है, पर जब वह हद से ज्यादा बढ़ जाती है, तो उसकी वह सुव्यवस्थित प्रणाली टूट जाती है, जिससे मनुष्य समेत सभी को उसका खामियाजा भुगतना पड़ता है । इटली इसका ज्वलंत उदाहरण है कि प्रकृति से छेड़छाड़ का कितना दुःखद दुष्परिणाम सामने आता है । कभी इटली में आर्नो नदी की घाटी पर एक सघन वन था । लगातार पेड़ों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की कटाई तथा भेड़-बकरियों, गाय-बैलों के चरने से जंगल अब झाड़-झंखाड़ मात्र रह गया । वृक्षों की निरंतर कटाई का दुष्परिणाम पहली बार उस क्षेत्र को सन् १९३६ में देखने को मिला, जब भयंकर बाढ़ से वहां का नक्शा बदल गया । वन के उजड़ने से उस जमीन के पानी धारण करने की क्षमता जाती रही । फलतः कुएँ, बावड़ी सभी सूख गये और बाढ़ के प्रकोप का प्रारंभ हुआ । इसके बाद से उस क्षेत्र में हर चार वर्ष में एक बार प्रायः भयंकर सैलाब आता है और प्रलयलीला उपस्थित कर जाता है । फसलों का उत्पादन भी वहाँ अब पहले जैसा नहीं रहा ।

प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने अपनी पुस्तक "नेचर" में जंगल कटने के कारण एथिका में हुई क्षति का विशद वर्णन किया है । चीन में पहाड़ गंजे हो जाने के कारण प्रति वर्ष वहाँ फसलों को कितना नुकसान पहुँचता है, यह कोई छुपा तथ्य नहीं है । इसी प्रकार की विनाश लीला भारत की अनेक नदियों द्वारा वनों की कटाई के कारण उनकी सतह की ऊँचाई में हुई बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप प्रति वर्ष रची जाती है ।

रोम साम्राज्य जब विकसित था, उन दिनों कोगों से खारतूम तक विस्तृत वन-क्षेत्र था, पर अब वह प्रदेश मरुभूमि बना हुआ है । समीपवर्ती पीली नदी से अब तक २५ लाख टन मिट्टी बह चुकी है । सन् १९३५ में बाढ़ के दौरान ओहियो नदी की जल-सतह ४० फुट ऊँची उठ गई थी । १९३७ में इसमें और अभिवृद्धि देखी गई। उस वर्ष इतनी ही वर्षा में इसकी सतह ६५ फुट ऊँची हो गयी थी ।

एक रिपोर्ट के अनुसार ब्राजील का ओकररिअस वन प्रति वर्ष ढाई लाख हेक्टयर छोटा होता जा रहा है । अनुमान है कि यदि कटने की गति यही रही, तो ४० वर्षों के अन्दर वहाँ का मानचित्र ही बदल जायेगा और वन के स्थान पर गंजे पहाड़ शेष रह जायेगे । कुछ ऐसा ही दृश्य अमेरिकी जंगल भी उपस्थित करते दिखाई पड़ते है । वहाँ "न्यूयार्क टाइम्स" के सिर्फ रविवासरीय संस्करण के लिए ७७ हेक्टेयर जितने भू-भाग पर स्थित वृक्षों की आवश्यकता पड़ती है ।

उल्लेखनीय है कि वन कटने से न केवल वृक्षों का सफाया होता है, अपितु समग्र पर्यावरण इससे प्रभावित होता है । मौसम धीरे-धीरे गर्म होता जाता है और उस क्षेत्र में वर्षा कम होती जाती है । जब बादल आकर्षित करने वाले साधन ही नही रहे, तो वारिश कैसे हो ? मिट्टी की जल-धारण क्षमता भी सर्वथा अप्रभावित नहीं रहती । इससे भूस्खलन की संभावना अधिक बलवती हो जाती है । आज भूस्खलन और बाढ़ की समस्या विश्वस्तरीय हो चुकी है । इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रकृति का एक तंत्र दूसरे से कितनी घनिष्ठतापूर्वक अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है । जब इसकी एक प्रणाली भी लड़खड़ाती है, तो उसका असर दूसरे पर पड़े बिना नहीं रहता और इस प्रकार श्रृंखला-प्रतिक्रिया की तरह सारा ढाँचा तहस-नहस हो जाता है ।

मनुष्य बुद्धिमान अवश्य है, पर जब वह बुद्धि स्वार्थ-साधनों में लगती है, तो संकट खड़े करती है और ऐसा दृश्य उपस्थित करती है, जैसा इन दिनों प्रकृति-असंतुलन, पर्यावरण प्रदूषण के रूप में समस्त विश्व में दृश्यमान हो रहा है । समझदारी इसी में है कि जिस डाल पर खड़े हैं, उसी को काट गिराने का आत्मघाती कदम न उठाकर विवेकशीलता का परिचय दें । अपना और समाज का इसी में भला है, इस तथ्य को भली-भाँति समझा जाना चाहिए ।

खण्ड प्रलय को निमंत्रण तो न दें

प्रकृति मनुष्य के हाथ की घड़ी नहीं है जिसे चाहे जिस तरह घुमाते रहा जाय और फिर चाहे जिस कोने में पटक दिया जाय । वस्तुतः इस विश्व ब्रह्माण्ड की सभी गतिविधियाँ एक सुनिश्चित अनुशासन के अन्तर्गत क्रमबद्ध रूप से चल रही हैं । ग्रह-उपग्रह एक दूसरे के बन्धन में हैं और उसकी गतिविधियों से प्रभावित होते हैं । अनभ्यस्त उथल-पुथल चलती है तो उससे समूचा वातावरण प्रभावित होता है । पृथ्वी को अन्तरिक्षीय घातक किरणों से बचाने के लिए कई परत थोड़ी ऊँचाई पर स्थित हैं । उन परतों में मनुष्य जब छेद करने पर उतारू होता है तो उसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि सुरक्षा ढाल टूटने या झीनी पड़ने पर ऐसे परिणाम खड़ी कर दे जिसके कारण लेने के देने पड़ने लगें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पृथ्वी पर कई बार हिमयुग आये हैं । सर्वत्र बर्फ ही बर्फ छाई है । इतना अधिक शीत न सह पाने वाले प्राणी उसी में अपना दम तोड़ गये फिर दस-पन्द्रह फुट तक हिम सतह जम जाने पर खाद्य संकट भी आता है और भूखों मरने की दूसरी विभीषिका खड़ी हो जाती है । ऊँचे स्थान पर जो प्राणी किसी प्रकार बचे रहते हैं वे हजारों वर्षों का हिमयुग समाप्त होने पर नये सिरे से वंश-वृद्धि करते और नई दुनिया बसाते हैं ।

हिमयुग वातावरण के विपर्यय से आते हैं । उनका आगमन भी भयावह है और विदाई भी रोमांचकारी । जब तापमान बढ़ता है, बर्फ पिघलती है तो समुद्र की सतह ऊँची उठ जाती है । महाद्वीप टूट-फूट कर कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं । समुद्र में से कुछ भूखण्ड ऊपर निकलते हैं और कुछ ऊपर वाले उसके गर्भ में समा जाते हैं । हिमयुग को एक प्रकार से खण्ड-प्रलय ही माना जाता है ।

अपने क्रम से जब हिमयुग आये, तब उसे विधि-विधान कह सकते हैं,पर मनुष्य वातावरण को छेड़ कर उसे अत्यधिक जल्दी भी बुला सकता है । ध्रुवों का संतुलन बिगाड़ सकता है । उस पर जमी बर्फ पिघल पड़ने और समुद्री तूफान आने का संकट बुला सकता है । पर्यावरण की छेड़छाड़ करने से इस प्रकार के अनेकों संकट आ सकते हैं । मनुष्य आज उद्धत बालक की तरह कुछ ऐसी ही छेड़छाड़ कर प्रलय को आमंत्रित कर रहा है ।

इसी संदर्भ में पिछले दिनों अमेरिका के न्यूयार्क स्थित "लेमण्ड डी जियोलॉजिकल आब्जरवेटरी पेलीसीड्स" में एक सम्मेलन आयोजित हुआ जिससे संसार भर के मूर्धन्य भू-वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों, मौसम विज्ञानियों आदि ने भाग लिया । इस सम्मेलन में बहुचर्चित विषय "मिलटिन मिलेन कोविच" की हिमयुग श्रृंखला का विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया जिसमें वैज्ञानिक मिलेन कोविच ने कहा है कि पृथ्वी पर पड़ने वाले सूर्य के कुल प्रकाश में प्रतिवर्ष ०.१ प्रतिशत की कमी होती जाती है । इसी कारण प्रति एक लाख वर्ष के बाद इस धरती पर हिमयुग आ जाता है ।

इस तथ्य की पुष्टि करते हुए अनुसंधानकर्ताओं ने कहा है कि फ्रांस में नार्मन डी समुद्र तट पर नौ करोड़ वर्ष पूर्व की ऐसी चट्टानें मिली है जिनमें प्रत्येक २० हजार वर्ष में एक परत स्पष्ट दीखती है । इसी प्रकार पैन्सिलवानिया राज्य के न्यूयार्क बेसिन में २० करोड़ वर्ष पुराने पहाड़ों के पर्यवेक्षण से भी यह तथ्य उजागर हुआ है कि एक लाख एक हजार वर्षों में हिमयुग का आवर्तन होता है । इसमें १९ हजार से २३ हजार वर्षों में अलग-अलग प्रकार की परतें पाई गई हैं जो इस बात की द्योतक है कि किन्हीं कारणोंवश प्रकृति संतुलन गड़बड़ाया होगा और पृथ्वी सामान्य से तीन गुना बर्फ से ढक गई होगी कुछ इसी तरह के लक्षण इन दिनों भी प्रकट हो रहे हैं ।

इस सम्बन्ध में मिनिसोटा विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्त्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि धरती के गर्भ में छिपे प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन एवं पर्यावरण के साथ की गई खिलवाड़ के कारण पृथ्वी के चुम्बकीय ध्रुवों में परिवर्तन होने लगा है । उत्तरी ध्रुव में दक्षिणी ध्रुव की प्रकृति विकसित हो रही है तथा दक्षिणी ध्रुव में उत्तरी ध्रुव की । ध्रुव विपर्यय की इस घटना को अप्रत्याशित मानकर इसकी उपेक्षा करना मनुष्य जाति को बहुत मँहगा पड़ सकता है । ध्रुव विपर्यय के कारण मनुष्य सहित सभी जीवधारियों को स्थान परिवर्तन के लिए विवश होना पड़ेगा, अन्यथा बदली हुई परिस्थिति के अनुरूप स्वयं में अनुकूलन न ला पाने के कारण मृत्यु वरण ही उनके लिए एक मात्र विकल्प होगा । इस प्रक्रिया से बैक्टीरिया जैसे छोटे प्राणियों से लेकर पशु-पक्षी एवं मनुष्य सभी को गुजरना पड़ेगा । ध्रुवों के बदल जाने पर अंतरिक्ष से आने वाली ब्रह्माण्डीय किरणें उनकी ओर विक्षेपित होंगी, फलस्वरूप जलवायु भी प्रभावित-परिवर्तित हो जायेगी और प्रागैतिहासिक काल में जिस तरह बड़ी संख्या में जीवधारियों का विलुप्तीकरण हुआ था, मौसम परिवर्तन के कारण उसी की पुनरावृत्ति हो सकती है ।

वातावरण में क्लोरो फ्लुओरोकार्बन एवं कार्बनडाई आक्साइड जैसी जहरीली गैसों की बढ़ती मात्रा को देखते हुए वैज्ञानिकों ने यह आशंका व्यक्त की है कि आगामी दस वर्षों में जलवायु प्रलयंकारी स्वरूप धारण कर सकता है । सामाजिक अपराधों, मानसिक विकृतियों के अतिरिक्त हृदय रोग, त्वचा के कैंसर एवं मधुमेह जैसी बीमारियों की अप्रत्याशित वृद्धि के मूल में उन्होंने

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्यावरण में भरी विषाक्तता को ही प्रमुख माना है । इस सम्बन्ध में हवाई उपमहाद्वीप स्थित मोनालोआ वेधशाला के वैज्ञानिकों ने गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है । आँकड़े प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया है कि इन दिनों वातावरण में प्रतिवर्ष एक पी० पी० एम० की दर से कार्बन डाइऑक्साइड भरती जा रही है । इस मात्रा में ३० प्रतिशत की अभिवृद्धि पृथ्वी के तापक्रम को एक से चार डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ा देती है । इस तरह तापमान में यह बढ़ोत्तरी प्रतिवर्ष "ग्रीन हाउस प्रभाव" को जन्म देती है । औद्योगिक चिमनियों एवं वाहनों से निकलने वाला धुँआ इसमें घृताहुति का काम करता है ।

तापमान की इस अभिवृद्धि का सर्वाधिक प्रभाव ध्रुवीय बर्फ पर पड़ेगा । आइस कैप, के पिघलने से समुद्र की सतह ऊँची उठेगी और तटवर्ती प्रदेशों को जलमग्न कर देगी । बम्बई, कलकत्ता, न्यूयार्क, टोकियो, साउथ हैम्पटन (ब्रिटेन), सैन फ्रांसिस्को तथा केलिफोर्निया जैसे महानगर समुद्र के गर्भ में विलीन हो जायेंगे । ध्रुवीय असंतुलन भूचुम्बकत्व पर भी अपना प्रभाव डालेगा तथा सन् १९९३ से सन् २००० के बीच कहीं भी कभी भी भयावह भूकम्प आ सकते हैं, ज्वालामुखी फट सकते हैं । वायुमण्डल में जमी ज्वालामुखी धूल अभी भी इतनी ज्यादा है कि सौर ऊष्मा को पृथ्वी तक पहुँचने नहीं देती जो कि जीवधारियों की जीवनीशक्ति के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्व है ।

अनुसंधानकर्त्ता विशेषज्ञों के अनुसार पिछले चालीस वर्षों से सूरज क्रमशः सिकुड़ता जा रहा है ।

इसके फैलने का क्रम अब से दस वर्ष बाद आरंभ होगा । सिकुड़ने फैलने का यह सूर्यचक्र ७६ वर्ष का होता है । एक ओर जहाँ सूर्य के सिकुड़ने से पृथ्वी ठण्डी होती जा रही है वहीं दूसरी तरफ मानवी कृत्यों से वातावरण गरम होता जा रहा है । यह विरोधाभास तब प्रलय के रूप में फट सकता है जब सूर्य के फैलने का क्रम आरंभ होगा । वायुमण्डल का बढ़ता तापमान तथा पृथ्वी का गरम होना--दोनों मिलकर भयावह विभीषिकाओं को जन्म दे सकते हैं ।

वैज्ञानिक कहते हैं कि वातावरण में जो व्यतिक्रम आ रहा है, उससे योरोप, अमेरिका और रूस अब की अपेक्षा अधिक गरम व सूखे हो जायेंगे । वहाँ बर्फ गिरनी बन्द हो जायेगी लेकिन उत्तरपूर्व अफ्रीका, भारत, मध्यपूर्व एशिया, मेक्सिको तथा पश्चिम आस्ट्रेलिया अधिक आर्द्र व गीले हो जायेंगे । इसके साथ ही साथ समूचे विश्व में समुद्र तल १५-२० मीटर ऊँचा उठ जायेगा । ग्लेशियर पिघलने से नदियों में बाढ़ आ जायेगी । मौसम में आमूल-चूल परिवर्तन हो जाने से उपजाऊ भूमि बंजर हो जायेगी एवं जहाँ अभी बर्फ है, वहाँ रेगिस्तान नजर आयेंगे । संसार की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था चरमरा जायेगी और यह सब परिवर्तन इस सदी के अंत तक मात्र २ डिग्री सेंटीग्रेड तापमान बढ़ जाने पर ही दृष्टिगोचर होने लगेंगे ।

मौसम बदलने का मोटा अर्थ सर्दी, गर्मी, वर्षा का साधारण गति चक्र समझा जाता है, पर वैज्ञानिक भाषा में पृथ्वी पर छाये वातावरण में उथल-पुथल होने के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । मनुष्य की गतिविधियाँ इन दिनों ऐसी चल रही हैं कि उसे तात्कालिक लाभ किसी भी मूल्य पर मिले । इस उद्देश्य के लिए की गई वातावरण के साथ खिलवाड़ उसी के लिए भयावह संकट की भूमिका बनेगी । महाकाल की प्रत्यावर्तन प्रक्रिया उसे दण्डित करे, इससे पूर्व ही वह अपनी चाल बदल ले, इसी में उसका, सारी मानव जाति का कल्याण है ।

प्रकृति पर बलात्कार को उतारू विज्ञान

प्रकृति की प्रत्यक्ष पदार्थ सम्पदा और अदृश्य शक्तियों की अधिकाधिक उपलब्धि से ही मनुष्य इतना साधन सम्पन्न और समर्थ बन सकता है कि उसे सर्व-समर्थ कहा जाने लगा है । विश्वास किया जाना चाहिए कि यह प्रगतिक्रम दिन-दिन आगे ही चलेगा । जो लाभदायक पक्ष हाथ लगा है, उसे छोड़ते नहीं बनता । धरती से खाद्य उत्पादन और पशु पालन के लाभ जब तक विदित न रहे होंगे, तब तक आदिकाल के मनुष्य का काम किसी अन्य प्रकारों के सहारे भी चल जाता होगा, पर अब जबकि वे विधाएँ उपलब्ध हो गई है, यह सम्भव नहीं रहा कि उनका परित्याग कर दिया जाय । आग से लेकर बिजली तक का प्रयोग जब से व्यवहार में आने लगा है, तब से यह निश्चित हो गया है कि भविष्य में कभी भी इनसे विमुख नहीं हुआ जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकेगा । इसी आधार पर यह भी मानकर चलना चाहिए कि प्रकृति के रहस्यों का अन्वेषण और दोहन भविष्य में और भी द्रुत गति से चलेगा ।

न सम्पदा को पर्याप्त माना जा सकता है, और न सुविधा सम्वर्धन की ललक घट सकती है । यह क्रम पीछे नहीं हटेगा, वरन् आगे ही बढ़ेगा । भावी पीढ़ियाँ अब की अपेक्षा और भी अधिक साधन सम्पन्न होंगी । ऐसी दशा में यह खतरा और भी अधिक बढ़ेगा कि यदि कहीं उनका दुरुपयोग होने लगा तो उपलब्धियाँ अनर्थ का कारण बनेंगी । जब तक लाठी हाथ में है, तब तक उसके दुरुपयोग का बचाव भी हो सकता है, पर जब मशीनगन चलने लगे और बम बरसने लगें तो फिर सुरक्षा का प्रश्न कठिन हो जाता है । असाधारण उपलब्धियाँ यदि कभी नियन्त्रण से बाहर होने लगें और मनुष्य की उद्दण्डता पर अनुशासन न लगे तो परिणति कितनी भयंकर होती है, इसका परिचय भूतकाल में भी मनुष्य जाति अनेक बार प्राप्त कर चुकी है ।

वृत्रासुर, हिरण्यकश्यप, महिषासुर, भस्मासुर, रावण, कंस, दुर्योधन से लेकर मध्यकालीन आक्रान्ताओं के दिल दहलाने वाले कृत्य अभी भी सामने हैं । जिन्होंने कत्लेआम की शृंखला चलाई थी और निरीहों को गाजर-मूली की तरह काट कर रख दिया था । यह सामर्थ्य ही है जो अनियंत्रित होने पर प्रेत-पिशाच का रूप धर लेती है और उपलब्धियों के अंहकार में कुछ भी कर बैठती है । यह अनर्थ अगले दिनों और भी अधिक तेजी से दुहराया जा सकता है । मदान्ध जो भी कर बैठे वह कम है । अणु बम बने ही नहीं हैं, प्रयुक्त भी हुए हैं, और सारे संसार पर आतंक की छाप छोड़ गये हैं । ऐसा ही दुरुपयोग भविष्य का शक्ति-सम्पन्न मनुष्य न करेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं । ऐसी दशा में उपलब्धियों का हर्ष आशंकाओं के विवाद से घिर कर ऐसा बन जायेगा जिसे वरदान नहीं अभिशाप ही गिना जाएगा ।

उपार्जन सरल है, उसे तो लुटेरे भी बड़ी मात्रा में कर लेते हैं । पर सदुपयोग के लिए बढ़ी-चढ़ी विवेकशीलता और दूरदर्शिता चाहिए । इसके बिना खतरा ही खतरा बना रहेगा । किसी उद्दण्ड के हाथ में पहुँची माचिस की एक तीली-सारे गाँव को भी देखते-देखते जलाकर भस्म कर सकती है । फिर महाविनाशकारी अस्त्रों के ढेर में किसी पागल द्वारा एक चिनगारी फेंक देने पर इस सुन्दर पृथ्वी का, प्राणि जगत का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है । बात उस स्थिति तक न पहुँचे तो भी सामान्य जीवन में शक्ति का दुरुपयोग कितना भयंकर हो सकता है, इसका अनुमान उन आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कुचक्रों को देखते हुए लगाया जा सकता है जिसके कारण मानवी कुटिलता ने हर दिशा में अनाचारों के आडम्बर खड़े कर दिए हैं ।

आश्चर्य इस बात का है कि सुविधा साधनों की इतनी अभिवृद्धि होते हुए भी मनुष्य विलास, अनाचार और आक्रमण पर इस कदर क्यों उतारू है और यह ढीठता दिन-दिन क्यों अधिक बढ़ती जा रही है । कानून कचहरी क्यों काम नहीं आ रही हैं ? धर्मोपदेश और नीति नियमन के लिए किए जा रहे अनेकों प्रस्तुतीकरण क्यों अप्रभावी सिद्ध हो रहे हैं ? साहित्य, संगीत कला, का परम्परागत रुझान अपना परम्परागत राजमार्ग छोड़कर किस कारण पतन और पराभव का वातावरण बनाने को जुट गया है ? यह सभी प्रश्न जितने अनसुलझे हैं, उतने ही कष्ट कारक भी हैं । साथ ही यह सोचा जा सकता है कि जब अगले दिनों मानव अधिक चतुर और समर्थ होगा तो वह सार्वजनिक शान्ति के लिए कितना खतरनाक सिद्ध होगा ? ऐसी दशा में अगले दिनों जिस प्रगति की आशा की जाती और सम्भावना देखी जाती है उसका लाभ मनुष्य को मिलेगा या वह और भी अधिक गहरे दलदल में फँस जाएगा, यह एक प्रश्न चिन्ह है ।

इस अनबूझ पहेली की जड़, उस वैज्ञानिक प्रगति के साथ जुड़ी देखी जा सकती है जिसने आज हमें अपेक्षाकृत अधिक साधन सम्पन्न बनाया है । आश्चर्य यह है कि ऐसी उलटी गंगा कैसे बहने लगी ? जिससे अधिक सुविधाओं की अपेक्षा की गई थी, पर अधिक भारी पड़ रही है । नैतिकता, सामाजिकता, चरित्रनिष्ठा जैसे मानवी गरिमा के आधारभूत तथ्यों का एक प्रकार से दिवाला निकलता चला जा रहा है । एक ओर प्रगति, दूसरी ओर उससे भी अधिक अवगति ? एक ओर आँख से लाभ ही लाभ दीखता है तो दूसरी से हानि और अनर्थ की विभीषिका उपजती जा रही है । इस असमंजस को क्या कहा जाए ? और इस दुर्गति के लिए किसे दोषी ठहराया जाय ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनीषियों का मत है कि आज की समस्याएँ बुद्धिवाद की उपज हैं । बुद्धि ने ही अविज्ञात के अन्तराल को खोजा, टटोला एवं फिर उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गई । प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन इसी दुर्गति की परिणति है । अब जब चारों ओर उनके अकाल का हाहाकार मचने लगा है तो विज्ञान की सभी विधाएँ एक-दूसरे को, सत्ताधीशों को, सम्पन्नों को दोष देती देखी जाती हैं । क्या इसका कोई समाधान नहीं है । यह सब इसी प्रकार चलता रहेगा जब तक कि महाविनाश सामने न आ पहुँचे ?

अध्यात्मवेत्ता कहते हैं कि परोक्ष सत्ता इन समस्याओं से अनभिज्ञ नहीं है । अध्यात्म तंत्र इन विभीषिकाओं से जूझने हेतु अपनी तैयारी कर रहा है । वे चाहे दिखाई पड़ें अथवा न दिखाई पड़ें किन्तु दृश्य समस्याओं के प्रतिरोध में अगले ही दिनों ऐसे बुद्धिपरक समाधान प्रस्तुत किये जायेंगे जिन्हें देखकर स्वयं उत्पत्ति को जन्म देने वाले वैज्ञानिक भी हतप्रभ होकर रह जायेंगे । जिन स्रोतों से ये समस्याएँ चालू हुई हैं, वहीं से उनका उपचार होगा, ऐसा दिव्यदर्शी मनीषियों का कहना है ।

विज्ञान ने साधन सम्वर्धन के लिए जो अधिक परिश्रम किया है, उसकी सराहना ही की जाएगी । तथ्यों का पता लगाने में उसने पूर्वाग्रहों से तनिक भी लगाव नहीं रखा है, यह उसकी सत्यनिष्ठा है । अन्वेषणों में योगी स्तर की एकाग्रता का जो उपयोग हुआ है उसने तथाकथित ध्यान योगियों को एक कोने में बिठा दिया है । समूची मनुष्य जाति उसके सुई, माचिस जैसे छोटे साधनों से लेकर माइक्रोचिप्स कम्प्यूटरों से-विविधता से लाभान्वित हुई है । शल्य चिकित्सा ने वरदान की भूमिका निभायी है । द्रुतगामी वाहनों और संचार साधनों से असाधारण सुविधा हाथ लगी है । ऐसे ऐसे अनेक कारण गिनाए जा सकते हैं, जिनके आधार पर विज्ञान की मुक्तकंठ से सराहना की जा सकती है । पर बात एक ही जगह अटक जाती है कि उसने मानवी आदर्शवादिता के तत्वदर्शन को अमान्य ठहरा कर पशु और पिशाच की श्रेणी तक बढ़ चलने की छूट दे दी है । पशु के लिए कोई मर्यादा नहीं । पिशाच के लिए कोई कुकृत्य नहीं। मांसाहार और पशु शरीरों की परीक्षण के नाम पर चीरफाड़ फैशन के लिए प्राणियों की चमड़ी उखाड़ना, वैज्ञानिक दृष्टि से अनुचित नहीं ठहरता । जब भावनात्मक करुणा का बोध टूटा तो फिर वह आगे ही बढ़ेगा । आज नहीं तो कल वैसा ही व्यवहार मनुष्य-मनुष्य के साथ करने में भी कोई संकोच न करेगा ? दार्शनिक छूट मिल जाने पर मनुष्य कुछ भी कुकृत्य कर सकता है । उसकी चतुरता समाज की आँखों में धूल झोंकने और कानून को चकमा देने में सहज सफल हो सकती है ।

नास्तिकवादी मनोभूमि चाहे विज्ञान द्वारा समर्थित हो या किसी अन्य कारण उपजी हो, संसार के लिए विघातक ही साबित हुई है । मनुष्य से लेकर अन्य प्राणियों के कत्लेआम उसी निष्ठुरता की देन है, जो भावनातंत्र को मृत नहीं तो मूर्छित करके अदृश्य कर देती है । नृशंसता का लम्बा इतिहास है, उसका व्यवहार भी चित्र विचित्र रीति से व्यापक क्षेत्र में होता है । यों यह कुसंस्कार पाए तो अनायास भी जाते हैं । पर जब उन्हें विज्ञान जैसे प्रामाणिक समझे जाने वाले तंत्र का समर्थन मिल जाता है तो फिर "करेला नीम चढ़ा" की उक्ति चरितार्थ होती है । कामुकता की अति और तद् विषयक मर्यादाओं का समापन याक्त् जीवेत् सुखं "जीवेत्" का ही एक रूप कहा जाएगा । इसी प्रकार अनेकानेक अनाचार जो इन दिनों बरसाती उद्भिजों की तरह उभर पड़े हैं, यदि उन्हें प्रत्यक्षवादी भौतिक दर्शन की देन कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

तात्कालिक लाभ के लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रत्यक्षवादी देन भौतिक विज्ञान ने दी है । जीव जन्तुओं की गतिविधियों का उल्लेख वे इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए करते हैं । मनुष्य की विशेष जिम्मेदारी की बात तो अध्यात्ममार्ग में आती है, उसे मान्यता क्यों मिले ?

औद्योगीकरण के विस्तार का श्रेय विज्ञान को है । साथ ही पर्यावरण को प्रदूषण से भर देने का दोष भी उसे देना होगा । द्रुतगामी वाहनों और विशालकाय कारखानों के लिए जो ईंधन प्रयुक्त होता है उससे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, आकाश के तापमान की अभिवृद्धि, ईंधन के लिए लकड़ी का अतिशय प्रयोग होने से तापमान की अभिवृद्धि और वनों का विनाश जैसे अनेकों संकट खड़े होते हैं । उसकी प्रतिक्रिया जब प्रौढ़ता के स्तर पर पहुँचेगी तो उसका प्रतिफल समुद्रों के उफनने, हिम भण्डारों के गलने के रूप में अपनी भयंकरता प्रकट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

किए बिना न रहेगा । अणु ईंधन के प्रयोग से फैलने वाला विकिरण प्राणियों की जीवनीशक्ति को भारी आघात पहुँचाए बिना नहीं रह सकता । ओजोन परत-फटने से ब्रह्माण्ड किरणें सौर लपटें धरती पर बरसने लगने और जो उपयोगी है, उसे जला डालने की चेतावनी अभी से मिल रही है ।

उपर्युक्त सभी कथन से सहमत होते हुए भी यह कहना होगा कि प्रकृति का दोहन व विज्ञान की प्रगति एक सीमा तक ही संभव है । वैसे अति उत्साह में बरता गया अतिवाद जो भी कर गुजरे कम है । पर यह मानकर चलना चाहिए कि जैसे शरीर में घुसे जीवाणु-विषाणु से जूझने के लिए शरीर तुरन्त एण्टीबॉडीज तैयार करता है, उसी प्रकार प्रकृति की व्यवस्था में हस्तक्षेप करने वाले इस तंत्र में भी विज्ञान के अतिवाद से जूझने के लिए अपनी एण्टीबॉडीज तैयार कर रखी हैं । ये दुर्बुद्धि से लड़ेगीं एवं जिस प्रकार "स्टारवार" का कार्यक्रम बनाने वाले वैज्ञानिकों का मानस बदलकर रचनात्मक चिंतन हेतु विवश करने में समर्थ हुई, अगले दिनों सारे बुद्धिजगत से मोर्चा लेगी ।

सर्प विष का इलाज सर्प विष द्वारा उत्पन्न वैक्सीन से ही होता है । प्राकृतिक चिकित्सा के संस्थापक पितामह लुई कुने का सिद्धान्त है "कूलर इज बेटर" प्रतिघात द्वारा ही प्रतिक्रिया जन्म लेती है व उलटे को उलट कर ठीक कर देती है । ठण्डे पानी का स्पर्श ही खून के दौरे को तीव्र कर देता है व विजातीय द्रव्यों को निकाल फेंकता है । जब दंगे फसाद हो जाते हैं तो चारों ओर कर्फ्यू लग जाता है, मिलिट्री को फ्लैग मार्च करना पड़ता है तथा दंगाई आतंकवादियों को खोजबीन कर जेल में बन्द कर देते हैं । अगले दिनों विज्ञान में छाए अराजकतावाद से जूझने के लिए मानवतावादी, उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखने वाले मनीषीगण ऐसा मोर्चा खड़ा करेंगे कि विज्ञान अपनी अतिवादी बलात्कारी प्रवृत्ति से मानवता का और बिगाड़ न करे । जिस प्रकार वैज्ञानिकों ने घातक एड्स रोग का उपचार खोज लिया है, उसी प्रकार विज्ञानवादियों के मन में घुसे एड्स का उपचार अब अध्यात्मवेत्ता करेंगे एवं असंतुलन को संतुलन में बदलेंगे । यह स्रष्टा मानव जाति के लिए आश्वासन जो है ।

प्रकृति संतुलन बिगाड़ने का प्रतिफल

प्रकृति संतुलन का एक सुसम्बद्ध चक्र है । मनुष्य और पशु वनस्पतियाँ खाकर जीते हैं । वनस्पतियों में कीड़े लगते और अपना गुजारा करते हैं । कीड़ों को पक्षी खाते हैं । पक्षियों की संख्या बढ़ती है, तो उन्हें बाज आदि अपना शिकार बना लेते हैं । पशु बढ़ते हैं, तो उन्हें सिंह, व्याघ्र आदि ठिकाने लगा देते हैं । इस प्रकार एक तरह की सुसम्बद्ध श्रृंखला चलती रहती है ।

मनुष्य इस श्रृंखला को तोड़ने पर उतारू होता है तो उसकी समस्याएँ भी उलझती जाती हैं । पक्षियों को मार कर खाना,अनुसंधान के नाम पर जीव हत्या करना और वनस्पतियों में लगने वाले कीड़ों से परेशान होकर उन्हें मारने के लिए विषैली औषधियों का छिड़काव करना, यह बुद्धिमान मनुष्य की मूर्खता है । इससे गुत्थियाँ सुलझने के स्थान पर उल्टी उलझती ही जाती हैं । प्रकृति संतुलन बिगड़ता है, सो अलग ।

वैज्ञानिक सर्वेक्षणों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में अब तक जीव-जन्तुओं एवं वृक्ष-वनस्पतियों की एक करोड़ ६० लाख से अधिक जातियाँ ज्ञात की जा चुकी हैं, जब कि इनकी कुल अनुमानित संख्या पाँच करोड़ से भी अधिक है । प्रकृति चक्र के संतुलन के लिए वैक्टीरिया, वायरस एवं अमीबा जैसे एककोशीय जीवों से लेकर मनुष्य तक तथा एल्गी, फन्जाई से लेकर पेड़-पौधों तक का अपना महत्त्व है । वनों के कटते रहने, आग लगाकर जंगलों की सफाई करने और उससे जमीन छीनकर कृषि कार्यों में प्रयुक्त करते जाने से प्रतिवर्ष इनमें से असंख्य जीवधारी एवं वनस्पतियाँ नष्ट हो जाती हैं । मानवी दुर्बुद्धि के कारण सील, ह्वेल, वालरस, सीलायन्स, सी एलीफैण्ट जैसी समुद्री प्रजातियों, हाथी, गैंडे, कस्तूरी मृग, शुतुरमुर्ग जैसे प्राणियों की संख्या अँगुलियों पर गिनने योग्य शेष बची है । मनुष्य अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए प्रतिवर्ष अगणित प्राणियों का शिकार करता है और प्रकृति चक्र को बिगाड़ता है ।

इन दिनों गैंडों की संख्या तेजी से घटती जा रही है । अब लगभग बीस हजार की गणना में ही इनकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संख्या बची है । सींग, चमड़ी आदि के लिए विश्व भर में इन्हें विनष्ट किया जा रहा है । जावा, सुमात्रा एवं अफ्रीका में लगभग ९५ प्रतिशत गैंडे मारे जा चुके हैं । भारत में भी एक हजार से कुछ ही अधिक संख्या में ये बचे हैं । लोरिस नामक बन्दरों एवं बिज्जू नामक जानवरों को सौन्दर्य प्रसाधन एवं सुगंधित तेलों के निर्माण के लिए मार दिया जाता है । खरगोश प्रयोगशालाओं में गिनीपिग के रूप में प्रतिवर्ष करोड़ों की संख्या में आहत होते रहते हैं । सर्वेक्षणकर्त्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि इस तरह १३० प्रजाति के पशु-पक्षी इस संसार से अब तक सदा के लिए विलुप्त हो चुके हैं । जीवों को विनष्ट करने का क्रम यदि इसी प्रकार चलता रहा, तो अगले २५ वर्षों में विभिन्न किस्म के पशु-पक्षियों की २४० से अधिक प्रजातियों के विलुप्त हो जाने की आशंका है ।

विशेषज्ञों का कहना है कि यदि ऐसा हुआ तो विश्व भर में प्राकृतिक वातावरण ही असंतुलित हो जायेगा, जिसके गंभीर दुष्परिणाम भुगतने ही होंगे । कभी चीन में यही गलती ग़ौरैया नामक चिड़ियों को बड़े पैमाने पर मार कर की गई थी, जिसका हाथों-हाथ दुष्परिणाम उन्हें कीड़ों द्वारा फसलों की क्षति के रूप में भुगतना पड़ा था । इसे देखते हुए वहाँ की सरकार ने पुनः विदेशों से बड़ी संख्या में उसे आयात किया था । ऐसी ही एक घटना का वर्णन फ्रेड हायल ने "एनअकाउण्ट विद दि फ्यूचर" नामक पुस्तक में किया है । उन्होंने अफ्रीका के एक स्थान विशेष के वन का उल्लेख करते हुए लिखा है कि जब वहाँ शेर का शिकार बड़े पैमाने पर किया जाने लगा तो शेरों की संख्या कुछ ही वर्षों में अप्रत्याशित रूप से घट गई । इनके घटने से हिरनों की संख्या असाधारण रूप से कुछ वर्षों में बढ़ी । इनके बढ़ने से उस क्षेत्र की कृषि पर बुरा असर पड़ा । वे फसलों को चट करने लगे, जिससे किसानों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा । बाद में पुनः शेरों को अन्यत्र से लाकर वहाँ के वन में छोड़ा गया, तभी किसानों को इस विपदा से मुक्ति मिल सकी और हिरनों की संख्या नियंत्रित हो सकी ।

वस्तुतः जीव जगत् वनस्पति जगत् और मनुष्य का आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है । ये एक-दूसरे के पूरक एवं सहयोगी हैं । इन्हें नष्ट कर लाभ उठाने के फेर में मनुष्य ने समाधान तो एक भी समस्या का नहीं किया, उल्टे अनेकों संकट खड़े कर लिए । बुद्धिमानी इसी में है कि लाभवाद की मनोवृत्ति पर नियंत्रण कर पारस्परिक सहयोग को ही बढ़ावा दिया जाय ।

प्रकृति का गला न घोंट दिया जाय

असन्तुलन प्रत्येक क्षेत्र में घातक सिद्ध होता है । प्रकृति की सुव्यवस्था भी सन्तुलन पर ही टिकी हुई है। पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि प्रकृति के प्रत्येक घटक जीव-जन्तु, वनस्पति, वायु एवं जल का एक दूसरे से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । एक की विकृति जुड़े हुए अन्य घटकों को प्रभावित करती है । इनमें आपसी सन्तुलन से ही प्रकृति का गतिचक्र ठीक प्रकार चलता तथा उसके अनुदानों का लाभ समुचित मात्रा में मिल पाता है ।

इन दिनों पर्यावरण में भारी असन्तुलन पैदा हुआ है । फलस्वरूप प्रकृति प्रकोपों की बहुलता देखी जा रही है । इसे समझा तो दैवीय अभिशाप के रूप में जा रहा है, पर है वस्तुतः मानव द्वारा रचित । क्रिया की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है । प्रकृति विपदाएँ मनुष्य की स्वयं के क्रिया कृत्य की परिणिति हैं । उत्पादन के नाम पर औद्योगीकरण के प्रति जो उत्साह चल रहा है उससे तात्कालिक लाभ तो दिखाई पड़ रहा है, पर जब दूरगामी परिणामों पर ध्यान देते हैं तो पता चलता है कि अति उत्साह का क्रम अन्ततः हानिकारक ही सिद्ध हुआ ।

पर्यावरण के सन्तुलन में वृक्षों का भारी योगदान है। पौधे प्राणि जगत् के जीवन का स्रोत हैं। एक ओर जहाँ प्राणियों के लिए आहार जुटाते, जीवन प्रदान करते हैं। वहीं दूसरी ओर वायु मण्डल की विषाक्त गैस कार्बनडाइ आक्साइड को वायु मण्डल से खींच लेते हैं । प्राणि समुदाय के लिए वे सच्चे हित चिन्तक हैं । इसमें पाया जाने वाला क्लोरोफिल जीवन का स्रोत है । मांसाहारी अथवा शाकाहारी सभी मूलतः आहार हरे पौधों, वनस्पतियों से प्राप्त करते हैं । इन दिनों औद्योगिक विकास एवं अन्य कार्यों के लिए तेजी से वन सम्पदा को नष्ट किया जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि पर्यावरण सन्तुलन को बनाये रखने के लिए किसी देश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का एक तिहाई भाग पेड़ पौधों से भरा-पूरा होना चाहिए । प्राप्त आँकड़ों के अनुसार भारत में २५.७ प्रतिशत भाग वनों से आच्छादित है जो पर्यावरण सन्तुलन सीमा रेखा से दस प्रतिशत कम है । अन्य देशों की स्थिति और भी बुरी है । प्राकृतिक वन सम्पदा में कमी होने से जो विभीषिकाएँ उत्पन्न हुई हैं उनकी रोकथाम के लिए पिछले दिनों दिल्ली में विश्व के प्रमुख ७०० वैज्ञानिकों की गोष्ठी हुई जिसमें उपस्थित विशेषज्ञों ने प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण के लिए एक विश्व नीति तैयार की है । सम्मेलन में उपस्थित प्रकृति तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण सम्बन्धी— अन्तर्राष्ट्रीय संघ के महानिर्देशक डा० डेविडमनरी ने कहा कि—"आने वाली हजारों पीढ़ियों के कल्याण के लिए प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए ।

एक ओर वन सम्पदा में भारी कमी आई है । दूसरी ओर औद्योगीकरण बढ़ता जा रहा है । इससे उत्पादन तो बढ़ रहा है, किन्तु पर्यावरण सन्तुलन के आवश्यक घटक वायु एवं जल में विषाक्तता भरती जा रही है । परिवर्धन के प्रति उत्साह एवं परिशोधन की उपेक्षा से प्रदूषण एक विभीषिका के रूप में प्रस्तुत हुआ है । एक आँकड़े के अनुसार अमेरिका में मोटरें हर दिन ढाई लाख टन विषैला धुँआ उगलती हैं । फ्रान्स के पावर स्टेशनों से प्रति वर्ष २००,००० टन सल्फर डाई आक्साइड वायु में मिल रही है । न्यूयार्क में हर साल १५ लाख टन सल्फरडाई ऑक्साइड हवा को विषाक्त बना रही है । एक व्यक्ति को प्रतिदिन १४,००० लीटर शुद्ध हवा चाहिए । जो इन स्थानों पर अप्राप्त है ।

प्राप्त आँकड़े के अनुसार संसार में लगभग २० करोड़ मोटर वाहन सड़कों पर हैं । १००० किलो मीटर चलने के लिए एक कार को जितनी ऑक्सीजन चाहिए उतनी एक मनुष्य को एक वर्ष तक सांस लेने के लिए पर्याप्त है । प्रकृति का स्रोत सीमित है । मोटर वाहनों द्वारा ऑक्सीजन के इतने बड़े भाग के खपत से वायु में इसकी मात्रा की कमी हो जाना स्वाभाविक है । प्राणियों एवं वनस्पतियों के लिए उपलब्ध प्रकृति गत ऑक्सीजन का एक बड़ा भाग यों ही बेकार चला जा रहा है । उल्टे इन वाहनों से विषाक्तता और बढ़ रही है । जिसके परिशोधन के लिए कोई प्रयास नहीं चल रहा है । करोड़ों टन विष गैस के रूप में प्रति वर्ष वायु मण्डल में मिल रही है । जल की भी यही स्थिति है । उद्योगों, कल-कारखानों से निकलने वाला कचरा नदी के जल स्रोतों को इस योग्य नहीं छोड़ रहे हैं कि उनका उपयोग कर स्वस्थ रहा जा सके ।

तीसरा असन्तुलन जनसंख्या का है । अब तक विश्व की जनसंख्या ४५० करोड़ के निकट जा पहुँची है । सन् १९६५ में विश्व की जनसंख्या ३५० करोड़ थी । प्रत्येक १४ वर्षों में १०० करोड़ की वृद्धि हो रही है । इस प्रकार ५० वर्षों में यह संख्या दुगुनी हो जायेगी । प्रकृति साधन सीमित हैं और उपभोगकर्ताओं की संख्या दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ती जा रही है । अधिक उत्पादन के लिए अदूरदर्शी रीति-नीति अपनाई जा रही है अन्न प्राप्त करने के लिए कृत्रिम रासायनिक खादों से लेकर अन्य भौतिक साधन बढ़ाने के लिए बड़े उद्योगों के निर्माण से तात्कालिक लक्ष्य की आपूर्ति तो सम्भव है, पर अन्ततः इसका प्रभाव प्रकृति सन्तुलन पर पड़ रहा है । एक ओर वन सम्पदा को काटा जा रहा है । दूसरी ओर उद्योगों से निकलने वाली विषाक्तता से स्वच्छ वायु एवं जल अप्राप्त हो गया है ।

छेड़छाड़ का यह उपक्रम प्रकृति के स्थूल पक्षों तक ही सीमित नहीं है, वरन् सूक्ष्म परतों में भी घुस कर किया जा रहा है । परीक्षण से निकलने वाला विकिरण मानव जाति के लिए संकट सिद्ध हुआ है । दूसरा संकट नवीन प्रयोगों से उभर रहा है । जीवन का स्रोत है कोशिकाओं के केन्द्रक में मौजूद डी०एन०ए०। डी०एन०ए० के हेर-फेर से ही प्राणियों की एवं वनस्पतियों की आकृति एवं प्रकृति नियन्त्रित होती है । इनके गुण धर्मों में भिन्नता का कारण डी०एन०ए० है । जीव विज्ञान की नई शोधों द्वारा यह सम्भव हो गया है कि दो सूक्ष्म जीवों के डी०एन०ए० को मिलाकर एक तीसरे किस्म का जीव तैयार करना । नवीन प्रयोगों के प्रति उत्साह होना स्वाभाविक है । पर आशंका यह है कि कहीं प्रयोग से कोई ऐसा जीव न पैदा हो जाय जो भयानक रोगाणु हो । इस सम्भावना से पूर्णतया इन्कार नहीं किया जा सकता । इन दिनों जेनेटिक इन्जीनियरिंग द्वारा महामानवों, अतिमानवों की नई सन्तति तैयार करने की कल्पना भी चल रही है इस प्रकार के प्रयोग प्रकृति व्यवस्था के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिकूल हैं । जीव प्रकृति पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा ।

इन सबका सम्मिलित प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है । प्रकृति का इकॉलॉजिकल बैलेन्स डगमगा गया है फलतः इसकी प्रतिक्रिया प्रकृति विक्षोभों, प्रकोपों के रूप में परिलक्षित हो रही है । स्वीडिशसेस मोलाजिस्ट प्रो० मारकस भट्ट के अनुसार पर्यावरण के असन्तुलन से बाढ़ एवं भूकम्प की घटनाओं में वृद्धि हुई है । प्राप्त आँकड़ों के अनुसार भूस्खलन से पिछली दशाब्दी में ४ लाख व्यक्तियों की मृत्यु हुई । सन् १९७६ में चाइना के तागसेन में हुए भूस्खलन से दो लाख ४२ हजार व्यक्तियों की जानें गईं । ३१ मई १९७० को पेरू में हुए भू-स्खलन से ७० हजार व्यक्ति मृत्यु की गोद में समा गये । टर्की में सन् १९७० में ११ हजार व्यक्ति मरे । १२ अगस्त १९७९ को मोरवी में आयी बाढ़ से २५ हजार व्यक्ति मात्र ७५ मिनट में काल के गर्भ में समा गये । यह प्रकृति विक्षोभ पर्यावरण असन्तुलन का ही अभिशाप है ।

सन्तुलन बनाये रखने के लिए मनुष्य को प्रकृति से छेड़छाड़ बन्द करनी होगी । वातावरण में भरी विषाक्तता को परिशोधन के लिए हर सम्भव प्रयास करना होगा । वन सम्पदा के कटाव को रोकना होगा । अन्यथा क्रुद्ध प्रकृति का आक्रोश अगले दिनों और भी भयंकर रूप से बरसेगा । समय रहते भूतकाल की भूल से प्रेरणा लेकर मनुष्य जाति को अपनी गतिविधियों में हेर-फेर करना अभीष्ट हो गया है ।

प्रकृति से छेड़छाड़ अब बन्द की जाय

प्रकृति की सुरम्य वाटिका में चित्र-विचित्र जीव-धारियों का जमघट है । प्रत्येक विश्व उपवन की शोभा बढ़ाते तथा सौन्दर्य को निखारते हैं । उसमें मानवी प्रगति में प्रत्यक्ष योगदान देने वाले जीवधारी भी हैं और ऐसे प्राणी भी जो मनुष्य के लिए तो अनुपयोगी हैं पर चैतन्य चक्र के अनिवार्य घटक होने के कारण उनकी भी महत्ता है। सृष्टा ने कुछ भी ऐसा नहीं बनाया है जिसे निरर्थक कहा जा सके । मनुष्य अपने सीमित स्वार्थ की कसौटियों पर किसी भी वस्तु अथवा जीवधारी की उपयोगिता-अनुपयोगिता को कसता है और उन्हें सार्थक अथवा निरर्थक ठहराता है पर यह तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि पृथ्वी एक मात्र मनुष्य के लिए नहीं बनायी गयी है । यह तो अन्य प्राणी समुदाय और व्यापक सृष्टि की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विनिर्मित हुई है । किस जीव को इस विशाल उपवन में किस प्रकार की जरूरत है यह निर्णय करना मनुष्य का काम नहीं है । कोई और सत्ता है, जो अपनी स्वसंचालित व्यवस्था द्वारा समस्त सृष्टि प्रक्रिया तथा इकॉलॉजिकल चक्र का संचालन एवं नियंत्रण करती है । पैदा करना और मारना उसकी व्यवस्था के अन्तर्गत आता है मनुष्य इस प्रक्रिया में यदि अनावश्यक हस्तक्षेप करता है तो यह उसकी धृष्टता ही कही जायेगी ।

जड़ और चेतन की युग्म इस मनोरम सृष्टि में जड़ प्रकृति का अपना महत्त्व है और चेतनाधारी जीवों का अपना । जड़ का सौन्दर्य चेतना की चैतन्यता की अभिव्यक्ति है जो दोनों के अभिन्न और अन्योन्याश्रित सम्बन्धों को व्यक्त करता है । मानवी हस्तक्षेप प्रकृति को सुरम्य और चेतना को सुविकसित करने तक ही उचित है । इस सीमा रेखा का उल्लंघन करने से और अदूरदर्शी कदम उठाने से इकॉलॉजिकल चक्र में व्यतिरेक उत्पन्न होता है, जिसकी परिणति विविध प्रकार की समस्याओं के रूप में दृष्टिगोचर होती है ।

जड़ प्रकृति को ही लें तथा उसकी स्थिति का विश्लेषण करें तो मालूम होगा कि तथाकथित प्रगति के नाम पर मनुष्य ने उसकी जितनी छेड़छाड़ की उससे लाभ कम और हानि अधिक हुई है । दुर्भाग्यवश समृद्धि का मापदण्ड भी प्रत्यक्ष सीमित भौतिक उपलब्धियों के आधार पर ही आँका जाता है । सन्तुलित पर्यावरण के असीम होते हुए भी परोक्ष वातावरण सम्बन्धी दैवी उपलब्धियों को भौतिक लाभों के रूप में मानने की परम्परा नहीं है । मनुष्य ने उन परोक्ष अनुदानों का महत्त्व समझा होता और उसका सही मूल्यांकन किया होता तो कभी भी प्रकृति को इतना अधिक छेड़ने का दुस्साहस नहीं होता पर उसे दुर्बुद्धि ही कहना चाहिए कि मनुष्य जाति ने तात्कालिक लाभों के समक्ष विपुल दूरगामी लाभों को ठुकरा दिया । पर प्रकृति के दोहन के अदूरदर्शी प्रयासों के दुष्परिणामों से स्वयं बचा न रह सका । समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत होने वाली अनेकानेक प्रकार की प्रकृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विभीषिकाएँ वस्तुतः मानवी दुष्कृत्यों और अदूरदर्शी प्रयासों की ही प्रतिफल है ।

यह तो रहा जड़ प्रकृति में अनावश्यक छेड़छाड़ का प्रतिफल जो मौसमी व्यतिरेकों बाढ़, सूखा, भूकम्प, भूस्खलन और उनकी प्रतिक्रिया फलस्वरूप फैलने वाली अनेकों तरह की आधि-व्याधियों के रूप में समूचे विश्व में दृष्टिगोचर हो रहा है । जड़ तो जड़ है पर चेतना जीव संवेदनाओं से युक्त है । मनुष्य चैतन्य जीवों में क्षमताओं की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है । बुद्धिबल के बलबूते उसका प्राणि जगत पर आधिपत्य है । अन्य जीवों को भी अपनी ही भाँति सृष्टि का एक आवश्यक और अभिन्न घटक मानकर यदि जीने का अधिकार मनुष्य ने दिया होता अथवा उन्हें स्वच्छन्द जीने के लिए छोड़ दिया होता तो यह विश्व कहीं अधिक सौन्दर्य से युक्त दिखायी पड़ता । पर मनुष्य की आन्तरिक क्रूरता का शिकार बनने लगे निरीह वन्य प्राणी । कुछ जातियाँ शिकार के मनोरंजन के लिए मारी गयीं तो कुछ विकृत मांसाहार के स्वाद के कारण मनुष्य के पेट में जा पहुँचीं । कुछ को आधुनिकता की बढ़ती हुई मांग के कृत्रिम संसाधनों के निर्माण में तड़प-तड़प कर अपने प्राण गँवाने पड़े । इस निष्ठुर प्रक्रिया के कारण विश्व-वाटिका से विभिन्न जीवों की कितनी ही जातियाँ-प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं ।

जीव विशेषज्ञों के अनुसार अपने देश में पाँच सौ से भी अधिक प्रजाति के जानवर, तीन हजार से भी अधिक पक्षी तथा तीन हजार से भी अधिक किस्म के नन्हें कीड़े-मकोड़े पाये जाते थे । जानवरों में ३५ प्रजातियों का तो वर्षों पूर्व से अस्तित्व समाप्त हो चुका है । कुछ वर्षों पूर्व तक हिमालय के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में भूरे रंग के बटेर पक्षी की बहुलता थी पर इस क्षेत्र में भी शिकारियों की घुसपैठ होने से उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया । लम्बी पूँछ और लाल चोंच वाली इस जाति के पक्षियों की सुन्दरता देखते बनती थी । हिमालय के तराई क्षेत्र में गुलाबी सिर वाले दुर्लभ बत्तख पाये जाते थे जो विश्व के अन्य किसी भी स्थान पर नहीं मिलते । अभी तीन दशक पूर्व तक ये हिमालय के अंचल में निर्द्वन्द विचरते दिखायी भी पड़ते थे पर अब इनका नामोनिशान नहीं मिलता । राष्ट्रीय संग्रहालयों में मात्र इनके अवशेष देखे जा सकते हैं । आन्ध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों तथा गोदावरी तट पर इस सदी के आरम्भ में कोर्स नामक पक्षी मिलते थे पर अब उस जाति का एक भी पक्षी नहीं दिखायी पड़ता ।

पक्षियों के अतिरिक्त जंगलों में रहने वाले शेरों, चीतों, बाघों, बारहसिंघों, हिरनों आदि की संख्या भी तेजी से घटती जा रही है । मध्य प्रदेश के बीहड़ जंगल शेरों के लिए विख्यात थे । उनकी संख्या अभी एक दशक पूर्व हजारों में थी पर एक रिपोर्ट के अनुसार अब मात्र चार सौ के लगभग रह गयी हैं । बारहसिंघों का तो मात्र नामोनिशान रह गया है । सरकारी कानूनों द्वारा जंगली जानवरों का शिकार करना यों तो अब अवैध घोषित कर दिया गया है, पर चोरी-छिपे उनके शिकार का क्रम अभी बना हुआ है । नागालैंड में औसतन प्रतिदिन पाँच शेर मारे जाते हैं । खरगोश, लोमड़ी, सियार, हिरण तो प्रतिदिन हजारों की संख्या में मारे जाते हैं। वन्य विशेषज्ञों का मत है कि तीव्रता से वन्य जीवों की संख्या में ह्रास का एक प्रधान कारण यह है कि प्रकृति सौन्दर्य को बढ़ाने वाले ये सुन्दर जीव अब मानवी क्रूरता के शिकार होकर धनोपार्जन के साधन बन गये हैं । जापान, स्वीडन, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया, अमेरिका आदि देशों में इनका बड़ी संख्या में लुक-छिप कर निर्यात हो रहा है । लंगूर बन्दरों की संख्या भी अब तेजी से देश में घटती जा रही है । ऐसा अनुमान है कि विकासक्रम में मनुष्य के अधिक नजदीक होने के कारण वैज्ञानिकों को मानवी प्रकृति एवं शरीर संस्थान के सूक्ष्मतम परिवर्तनों को समझने एवं अंगों के प्रत्यारोपण में इनके माध्यम से अधिक सुगमता होती है ।

इकॉलॉजी विशारदों का निष्कर्ष है कि प्रकृति सन्तुलन की प्रक्रिया सृष्टि के समर्पण परिसर तथा जीवों के परस्पर सघन अनुबंधों पर निर्भर करती है । जड़-चेतन के प्रत्येक पेड़-पौधे वनस्पतियाँ ऑक्सीजन जल, प्रकाश तथा पशु-पक्षी, जीव-जन्तु-मनुष्य सभी एक विराट जीवन चक्र के अभिन्न अंग हैं । परस्पर सबका एक-दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है । जड़ और चेतन के संयोग से ही पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व है । पौधे मिट्टी से अपनी जड़ों द्वारा सान्द्रता खींचते हैं । हवा और रोशनी मुक्त हस्त से पौधे को अपना अनुदान देते हैं । जिसे पीकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पौधे परिपोषित और विकसित होते हैं । पशु और मनुष्य का वह आहार बनते है । गन्दगी के रूप में विजातीय तत्व अन्ततः मिट्टी में मिलकर उसे उर्वरा बनाते है । पौधे के सूखे बीज, फूल-पत्तियाँ भी झड़कर मिट्टी में गिरते रहते हैं । एक निश्चित समयावधि के उपरान्त प्राणी और पौधे दोनों ही जराजीर्ण होकर मिट्टी में मिल जाते है । मिट्टी में नन्हें जीव जन्तु और बैक्टीरिया उन अवशेष पदार्थों को खाते हैं तथा अन्ततः पौधों के लिए अपने मल मूत्र एवं मृत शरीर द्वारा खुराक तैयार करते हैं । मांसाहारी जीवों का भी एक स्वसंचालित चक्र चलता रहता है । जिन जीवों का बाहुल्य होता है, वे दूसरों का आहार बनते हैं । उनकी अभिवृद्धि का नियंत्रण इकॉलॉजिकल चक्र के घटक जीव स्वयं करते है । चिड़ियाएँ कीड़े-मकोड़े खाती रहती हैं तथा उनकी बेशुमार वृद्धि पर नियन्त्रण रखती हैं । मेंढक, मच्छर जैसे नन्हे कीड़ों को खाता है और अन्ततः स्वयं भी साँप का ग्रास बन जाता है । चूहों की वृद्धि बाज रोकता है । मोर का आहार साँप है । शेर, हिरन, सूअर, खरगोश आदि जंगली जीवों का भक्षण करता है । यह एक मांसाहारी जीवों का चक्र है जिसमें एक मारता और अन्तः स्वयं भी मारा जाता है । मनुष्य इस जैविक चक्र के बाहर आता है । उसका जीव समुदाय के स्वसंचालित चक्र में कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए ।

पर मनुष्य द्वारा इस सन्तुलित चक्र को निरन्तर भंग किये जाने के कारण कितने ही प्रकार के संकट प्रस्तुत होने की सम्भावना बन गयी है । पक्षियों का यदि शिकार इसी प्रकार होता रहा तो कुछ ही वर्षों में वनस्पतियों के लिए हानिकारक कीड-मकोड़ों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि होगी । सम्भव है उनसे वृक्ष वनस्पतियों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाय । कितने ही पक्षी ऐसे भी होते हैं जो बीजों के वितरण में सहायक होते हैं । सर्पों को नष्ट कर देने से चूहों की मात्रा बढ़ जायेगी जो फसलों के लिए अत्यन्त ही हानिकारक हैं । हिंसक जीवों में शेर, बाघ, आदि को भी मारना इसलिए उचित नहीं है कि वे भी सन्तुलन क्रम में अपने स्तर का सहयोग देते हैं । स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की दृष्टि से भी कितने ही जीवों की प्रकृति के परिसर में महत्त्वपूर्ण भूमिका है । गिद्ध, चील, गीदड़ आदि मृत जीवों को खाकर गन्दगी एवं महामारी फैलने से बचाते हैं । श्रमजीवी प्राणियों में तो गाय, बैल, भैंस, घोड़े, खच्चर आदि का असाधारण महत्त्व है । वे जितना खाते हैं, उसका हजार गुना अधिक मनुष्य जाति को लाभ पहुँचाते हैं । जीवित हालत में उन्हें मांस एवं चमड़े के लिए बूचड़खाने में भेज देना मानवी क्रूरता का ही परिचायक है ।

थोड़े से भौतिक लाभों के लिए जीव-जन्तुओं का हनन मानवीय गरिमा के भी विरुद्ध है । उपयोगितावाद की बौद्धिक कसौटी पर उपर्युक्त प्रतिपादन गले न उतरे तो भी एक पक्ष ऐसा है जो हर मनुष्य की अन्तः संवेदनाओं को झकझोरता है । इस तथ्य से कोई विशेषज्ञ इन्कार नहीं कर सकता कि भाव संवेदनाओं की दृष्टि से मनुष्य जाति शुष्क एवं अन्तरंग की दृष्टि से निष्ठुर होती जा रही है । सूक्ष्मदर्शियों का मत है कि प्राणियों के हनन से परोक्ष वातावरण विक्षुब्ध होता जा रहा है, जिसकी प्रतिक्रिया मनुष्य की घटती अन्तः भाव संवेदनाओं के रूप में दिखायी पड़ रही है । उजड़ती हुई मूक प्रकृति बुद्धिमान कहलाने वाले मनुष्य से बिलखती हुई माँग कर रही है कि उसे अब और न उजाड़ा जाय ।

क्यों इस चक्र को तोड़ें जिसमें बंधे हैं हम सब !

प्रकृति एक विराट शरीर की तरह है । जीव-जन्तु, वृक्ष-वनस्पति, नदी-पहाड़ आदि उसके अंग-प्रत्यंग है । इनके परस्पर सहयोग से वह वृहत् शरीर स्वस्थ और सन्तुलित रहता है । काया का अपना स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं होता । कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों तथा विभिन्न स्थूल अवयवों का वह समन्वित रूप है । परस्पर एक-दूसरे के सहकार द्वारा शरीर के क्रियाकलाप चलते है । सन्तुलित स्वास्थ्य और आरोग्य का लाभ मिलता रहता है । गरिमा किसी भी अंग अवयव की कम नहीं है ।

मस्तिष्क शरीर के मूर्धन्य भाग पर अवस्थित होता है । विचार करने निर्णय लेने का काम वही संभालता है पर मात्र इसी कारण उसे सर्वाधिक उपयोगी नहीं ठहराया जा सकता । अन्य शारीरिक घटक भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । आँख, नाक, कान, जिह्वा से उनकी उपयोगिता भी कम नहीं है जो श्रमिक, भंगी की तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

निरन्तर कार्यरत रहने, विभिन्न अंगों के लिए पोषण जुटाने, विजातीय द्रव्यों का परिशोधन करने में सतत संलग्न रहते हैं । फेफड़े एवं गुर्दे सबसे निकृष्ट काम सफाई का संभालते हैं । यदि उनका सहयोग मिलना बंद हो जाय तो स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए खतरा उत्पन्न हो सकता है । तब शरीर अपना व्यापार चलाने में अधिक दिनों तक समर्थ नहीं बना रह सकेगा । इसलिए स्वास्थ्य एवं आरोग्य अक्षुण्य रखने के लिए काया के प्रत्येक घटक पर समुचित ध्यान देना पड़ता है ।

विराट प्रकृति के साथ भी यही नियम लागू होता है । उसके प्रत्येक घटक परस्पर एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित रूप से जुड़े हुए हैं । सभी अपने में महत्त्वपूर्ण और उपयोगी हैं तथा प्रकृति के व्यापार में उनकी एक अहम् भूमिका है । सम्भव है उनकी उपयोगिता स्थूल दृष्टि से जान न पड़े और वे अनावश्यक प्रतीत हों । पर सम्पूर्ण सृष्टि सन्तुलन की दृष्टि से वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं । अपनी ही उपयोगिता की कसौटी पर कसने की मानवी दृष्टि एकांगी और अदूरदर्शितापूर्ण है । यही कारण है कि वह कितने ही प्रकृति घटकों को अनावश्यक समझता अपने स्वार्थ के लिए नष्ट करता रहता है । उसका यह प्रयास प्रकारान्तर से समूचे इकॉलॉजिकल चक्र को प्रभावित करता है । प्रकृति की व्यवस्था में असन्तुलन उत्पन्न होता है जिसकी दुखद प्रतिक्रिया अनेकों प्रकार की प्राकृतिक विपदाओं के रूप में सामने आती है ।

प्रकृति विज्ञान की ही एक शाखा इकॉलॉजी शास्त्र के विशेषज्ञों का कहना है कि यदि मनुष्य अनावश्यक छेड़छाड़ न करे तो प्रकृति का गतिचक्र सुव्यवस्थित और सन्तुलित रूप से चलता रह सकता है । इसमें व्यतिरेक मनुष्य के हस्तक्षेप द्वारा पैदा होता है । समृद्धि बढ़ाने के लिए दूरदर्शी स्थायी नीति अपनाने की अपेक्षा प्रकृति शोषण की अदूरदर्शी नीतियों के कारण सम्पूर्ण प्रकृति परिकर असन्तुलन का शिकार हुआ है । वे चक्र टूटते जा रहे हैं जो प्रकृति में विविध रूपों में विभिन्न जड़ चेतन घटकों के सहयोग से गतिशील रहते हैं । इकॉलॉजिस्टों के अनुसार इकॉलॉजी विज्ञान की बुनियादी धारणा यह है कि प्रकृति के प्रत्येक घटक सन्तुलन की दृष्टि से उपयोगी हैं, यह एक-दूसरे पर परावलम्बी हैं । दुर्भाग्यवश मनुष्य इस सिद्धान्त को नहीं समझता तात्कालिक लाभ की दृष्टि से स्वयं के लिए उपयोगी मानकर वह कितने ही जीव-जन्तुओं, वृक्ष-वनस्पतियों को अपने स्वार्थवश सतत् नष्ट करता रहता है ।

सर जूलियन हक्सले ने एक बार कहा था कि गतिशीलता सन्तुलन की माँग करती है जिसमें विरोधी लगने वाले प्रकृति घटकों का सहयोग अति आवश्यक है । यह तभी सम्भव है जब दीखने में परस्पर विरोधी लगने वाले जड़ चेतन घटकों के अस्तित्व को सुरक्षित रखा जाय ।

विद्वान पॉलपियर्स का मत है कि यदि सभ्यता को सुरक्षित रखना है तो इकॉलॉजी शास्त्र के अध्ययन-अध्यापन को अन्य उपयोगी विषयों की भांति ही महत्त्व देना होगा । जीव-जन्तुओं, वृक्ष-वनस्पतियों तथा अन्य घटकों की महत्ता समझे बिना मनुष्य उनको संरक्षण नहीं देता । प्रकृति चक्र की अन्य कड़ियां नष्ट होंगी तो मनुष्य भी अपना अस्तित्व सुरक्षित बनाये रखने में असमर्थ ही सिद्ध होगा ।

इन कथनों को और भी अच्छी तरह समझना हो तो सम्बद्ध विषय की गहराई में प्रवेश करके अध्ययन करना होगा । इकॉलाजी विज्ञान सृष्टि के समग्र परिसर तथा जीवों एवं वनस्पतियों के परस्पर निकटवर्ती अनुबंधों पर प्रकाश डालता है और इस तथ्य को भली-भांति स्पष्ट करता है कि क्यों क्षुद्र से क्षुद्र जीवों, वनस्पतियों तथा अन्य घटकों का संरक्षण आवश्यक है । पानी,हवा, रोशनी पेड़-पौधे, पशु-पक्षी तथा मनुष्य सभी एक व्यवस्थित जीवन तंत्र के अविछिन्न अंग हैं, जिनका अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर है । यह सोचना भयंकर भूल होगी कि जीवधारियों की अलग स्वतंत्र इकाई है, वृक्ष, वनस्पतियों की अलग और पानी, वायु और प्रकाश की अपनी अलग । वस्तुतः ये सब एक जीवन चक्र के अंग हैं ।

जीव-जन्तुओं, वृक्ष-वनस्पतियों का सहअस्तित्व परस्पर एक-दूसरे के सहयोग पर टिका हुआ है । एक मरेगा, तो दूसरा भी अपना अस्तित्व सुरक्षित न रख सकेगा । सहअस्तित्व का यह उदाहरण सर्वत्र देखा जा सकता है । मनुष्य तथा मनुष्येतर जीव वृक्ष-वनस्पतियों से पोषण प्राप्त करते हैं । जो मांसाहारी जीव हैं, उन्हें भी परोक्ष रूप से वनस्पतियों से ही जीवन तत्व उपलब्ध होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । जिन पशु-पक्षियों का वे भक्षण करते है उनको पोषण तो शाकाहारी तत्त्वों से ही मिलता है । वृक्ष-वनस्पति मात्र स्थूल आहार ही नहीं देते जीवन के लिए अन्य आवश्यक तत्व भी जुटाते हैं । प्राण के बिना कुछ घण्टे भी जीवित रहना सम्भव नहीं है । यह तत्व भोजन से भी अधिक जरूरी है । ऑक्सीजन से मिलने वाला प्राण वृक्षों से ही मिलता है । एक ओर जीव समुदाय को वे पोषण देते हैं और दूसरी ओर उस गरल का पान भी करते हैं जो मनुष्य तथा अन्य प्राणी श्वांस के माध्यम से छोड़ते हैं । कैसी अद्भुत व्यवस्था है प्रकृति की यह ! एक का विष दूसरे को जीवन प्रदान करता है । प्राणियों द्वारा श्वांस से निस्सृत किया गया विष कार्बन डाइऑक्साइड वृक्ष-वनस्पति जगत् के लिए जीवनदायी होता है ।

इस शृंखला की अन्य कितनी ही कड़ियाँ हैं जो जीवनचक्र को सतत गतिशील बनाये रखने में मदद करती हैं । वनस्पतियों को पोषण जमीन से मिलता है । मिट्टी में मौजूद अनेकों प्रकार के अगणित क्षुद्र जीव पूरी तत्परता से वृक्ष-वनस्पतियों की खुराक तैयार करने में संलग्न रहते है । असंख्यों की संख्या में विद्यमान बैक्टीरिया मिट्टी के केन्द्रीय कार्बनिक पदार्थों से अपना पालन पोषण करते और वंशवृद्धि करते रहते हैं । जितना मिट्टी से लेते हैं उसका कई गुना वापस लौटाते हैं । उनका मलमूत्र एवं मृतक शरीर भूमि की उर्वरता बढ़ाने के काम आ जाता है । कुछ वर्ग फुट जमीन में ही अरबों की संख्या में विद्यमान ये सब जीवन के पूरक घटक बनकर रहते है । पौधे की सूखी पत्तियाँ और अन्ततः स्वयं पौधा भी उन नन्हें जीवों का खुराक बनते हैं जिनके सहारे वह स्वयं पल रहा था ।

जीवन के महाचक्र का अन्त यहीं नहीं हो जाता । नये पौधे जन्मते और पुनः वह स्वचालित क्रम चल पड़ता है । मिट्टी में अन्य प्रकार के अनेकों जीव-जन्तु भी इस चक्र के सहभागी हैं । भूमि की उर्वरता बढ़ाने में केंचुए की भूमिका प्रख्यात है । बैक्टीरिया मिट्टी के जिन जीवित तत्वों को खाता है उसका निर्माण केंचुए ही करते है । एक केंचुआ छः माह की अवधि में बीस पौण्ड पोषक कार्बनिक पदार्थ तैयार करके मिट्टी में मिला देता है । इनकी जातियाँ यदि नष्ट न हों तो दस वर्ष में वे मिट्टी की एक इंच सतह को बढ़ा सकते हैं जो अत्यन्त उपजाऊ होती है । इनका सहयोग न मिले तो प्रकृति को मात्र एक इंच परत बनाने में पाँच सौ वर्षों का समय लग सकता है । मिट्टी की सड़न को रोकने तथा उत्पादन क्षमता को दीर्घ काल तक सुरक्षित रखने में भी ये केंचुए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । मिट्टी के अन्दर घर बनाकर स्थायी रूप से निवास करने वाले कीट-दीमक चींटे भी भूमि की उर्वरता तथा सान्द्रता बढ़ाने में केंचुए की तरह ही सहयोग देते हैं ।

पदार्थों के सड़ने से गन्दगी फैलती है । इसकी रोकथाम की व्यवस्था भी प्रकृति ही करती है । कितनी ही वनस्पतियाँ और जीव-जन्तु ऐसे हैं जो शोधन का कार्य सफाई कर्मचारी की भाँति सतत करते रहते हैं । सड़े गले पदार्थ मृतोपजीवी पौधों का भोजन है । वनस्पतियों तथा प्राणियों के मृत शरीरों के जटिल कार्बनिक पदार्थों को अपघटित करने का दायित्व मृतोपजीवी पौधे सँभालते है । अपघटन के उपरान्त वे नाइट्रोजन कार्बन, फॉस्फोरस, पौटेशियम आदि विमुक्त करते हैं जो मृदा में मिलकर उसकी उर्वरा शक्ति में अभिवृद्धि करते हैं । इस तरह वे प्रकृति में कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैशियम आदि के चक्र को संतुलित बनाये रखते हैं । इस परिशोधन व्यवस्था में श्रृगाल, लोमड़ी, गिद्ध, कौवा तथा कुत्ते जैसे प्राणियों का भी योगदान है । ये मल मूत्र, मृतक जीव-जन्तु, सड़ती हुई कार्बनिक वस्तुओं आदि को स्वयं खाकर प्रकृति में प्रदूषण फैलाने से बचाते हैं ।

अनेकों जीव-जन्तु ऐसे हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से न केवल मनुष्य के लिए वरन् समूचे पारिस्थितिकी तन्त्र को संतुलित बनाये रखने के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं । पर मनुष्य उन्हें अनुपयोगी मानकर मार देता है । शेर एक मांसाहारी जीव है जो अनेकों प्रकार के जंगली जीवों हिरन, खरगोश आदि को खाता है, उनकी असीम वृद्धि पर नियंत्रण रखता है । उसकी माँसाहारी एवं खूंखार प्रकृति के कारण उसे नष्ट कर देने से संकट उत्पन्न हो सकता है इसे कोई समझता नहीं । एक समय ऐसा आ सकता है जब शाकाहारी जीव विभिन्न प्रकार के पौधों की प्रजातियों को समाप्त कर देंगे इससे वातावरण में हानिकर परिवर्तन हो सकता है । अतएव इन माँसाहारी जीवों का संरक्षण भी आवश्यक है । मोर तथा अन्य प्रकार के अनेकों कीटभक्षी चिड़ियाँ विभिन्न तरह के हानिकारक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कीड़ों को खा जाती है । यदि इन्हें नष्ट कर दिया जाय तो पौधों में रोग लगने जैसी कितनी ही समस्याएँ पैदा हो सकती हैं ।

वृक्ष वनस्पतियों से युक्त जंगलों का सफाया करने से भी भयंकर परिणाम प्रस्तुत हो सकते हैं । वृक्षों की जड़ें भूमि की गहराई तक जाती है और मिट्टी के कणों को मजबूती से जकड़े रहती हैं । फलस्वरूप भूमि का कटाव नहीं होता । जड़ों से विभिन्न प्रकार के कार्बनिक पदार्थ तथा जाइम्स निकलते रहते हैं जो चट्टानों को तोड़कर मिट्टी के कणों में बदलते हैं तथा मृदा में पाये जाने वाले अनेकों प्रकार के सूक्ष्मजीवों बैक्टीरिया आदि को आवास प्रदान करते हैं । चिड़ियों तथा अनेकों जन्तुओं का निवास भी वृक्षों पर होता है । पौधों की सतह से श्वसन द्वारा जल का उत्स्वेद होता रहता है जिससे वातावरण में नमी बनी रहती है और वर्षा अच्छी तरह होती है । यदि जंगलों को संरक्षण न दिया गया तो समूचा इकॉलॉजिकल चक्र परिवर्तित होकर मानव जीवन के लिए प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा कर सकता है ।

इकॉलॉजिकल चक्र में प्रकृति के छोटे-बड़े प्रत्येक जीव-जन्तु पेड़-पौधों का योगदान है प्रकृति ने लाखों करोड़ों वर्षों के प्रयासों के बाद इस चक्र को सुव्यवस्थित बनाया है । पृथ्वी पर जीवन का प्रादुर्भाव उन अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है । अधिक अच्छा हो यदि मनुष्य भी उस विराट प्रकृति तंत्र का एक सहयोगी घटक बनकर रहे और अनावश्यक छेड़छाड़ हस्तक्षेप को बन्द करे । तभी वह प्रकृति से चिरकाल तक लाभ उठाता रह सकता है ।

प्रकृति की पुकार जियो और जीने दो

सतत परिभ्रमणशील जीवन चक्र के अनेकों सहयोगी घटक हैं । जीव, जन्तु, वृक्ष, वनस्पति, पृथ्वी, नदियाँ समुद्र पर्वत आदि का सहअस्तित्व परस्पर एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है । नन्हें कीड़े-मकोड़े तथा हरीतिमा वृद्धि करने वाले क्षुद्र घास बेल निरर्थक और अनुपयोगी जान पड़ते हैं पर वे भी जीवन चक्र के अनिवार्य घटक हैं । आवश्यक नहीं है कि वे मनुष्य की उपयोगिता की कसौटी पर खरे उतरें पर इकॉलॉजिकल सन्तुलन की दृष्टि से प्रकृति के नगण्य से नगण्य घटकों का भी विशेष महत्त्व है । जीवन चक्र को गतिशील रखने तथा प्रकृति का संतुलन बनाये रखने में उनकी एक सुनिश्चित भूमिका है । सितार के तारों की भाँति छोटे-बड़े सभी जड़-चेतन घटक एक-दूसरे से अविछिन्न रूप से जुड़कर जीवन के विभिन्न सरगम छेड़ते हैं । जिस तरह सितार की एक कड़ी भी टूटी होने पर उससे सुमधुर स्वर लहरी निकल पाना कठिन है उसी प्रकार प्रकृति की जीवन श्रृंखला से जीवों वनस्पतियों की किसी भी कड़ी का टूटना हानिकारक है जो समूचे चक्र को प्रभावित करता है ।

इकॉलॉजी शास्त्र के मर्मज्ञों का निष्कर्ष अब उपर्युक्त सिद्धान्त के निकट पहुँच रहा है । यह तथ्य सभी विशेषज्ञों द्वारा स्वीकारा जा रहा है कि अनगढ़ होते हुए भी प्रकृति के आँगन में कोई भी वस्तु निरर्थक नहीं है । हर संरचना कुछ विशेषता लिए हुए है । सम्भव है एक प्रकार के जीव समुदाय के लिए वह हानिकारक हो पर वही दूसरे के लिए अति उपयोगी हो सकती है । अस्तु उपयोगिता अनुपयोगिता का निर्धारण करना मनुष्य का काम नहीं, स्वसंचालित व्यवस्था द्वारा नियंत्रण कार्य सँभालने वाली प्रकृति का है । मनुष्य जब इस संचालन व्यवस्था में अनावश्यक हस्तक्षेप करता है तभी समस्या खड़ी होती है और सम्पूर्ण व्यवस्था लड़खड़ाती है । सौन्दर्य, सुषमा और सुगढ़ता बढ़ाने तक वह अपनी चेष्टाएँ सीमित रखे तो ही अच्छा है अन्यथा तो सृष्टि चक्र की व्यवस्थित गतिशीलता में व्यतिरेक ही उत्पन्न होता है जो अनेकों प्रकार की असन्तुलन जन्य विभीषिकाओं को जन्म देता है ।

इनसाइक्लोपीडिया आफ इकॉलॉजी के संपादक हैं डा० एच०सी० वेर्नहार्ड ग्रिजमेक । पुस्तक के प्राक्कथन में वे लिखते हैं कि इकॉलॉजी शास्त्र के दीर्घकालीन अध्ययन के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आज सबसे अधिक आवश्यकता ज्ञान के विस्तृत ज्ञान भंडार में तालमेल एवं संतुलन बिठाने की है विशेषकर पारिस्थितिकी सन्तुलन स्थापित करने की है । वे लिखते हैं कि हम सभी विराट सृष्टि के अभिन्न अंग हैं । जीव सृष्टि वनस्पतियों विशाल सागर अंतरिक्ष उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव आदि सभी परस्पर एक-दूसरे से बँधे हुए हैं जिसके फलस्वरूप पृथ्वी पर जीवन का प्रादुर्भाव सम्भव हो सका तथा गतिशील है । जीवन श्रृंखला की अनेकों कड़ियाँ हैं । अविच्छिन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन प्रवाह के लिए यह आवश्यक है कि समस्त कड़ियाँ अपना अस्तित्व बनाये रहें । विश्व व्यवस्था के सुसंचालन के लिए पृथ्वी की विभिन्न जातियों—वनस्पति एवं जीव सृष्टि का यथावत बना रहना आवश्यक है । अज्ञानवश मनुष्य ने विश्व श्रृंखला की कितनी ही कड़ियों को तोड़ डाला । परिणाम-स्वरूप अनेकों प्रकार के प्राकृतिक असंतुलन पैदा हुए है ।

इकॉलॉजिकल कन्जर्वेशन थ्यौरी के विशारदों का कहना है कि प्रकृति सन्तुलन के लिए यह अनिवार्य है कि उसके प्रत्येक छोटे-बड़े घटकों को महत्त्व दिया जाय तथा उनकी सुरक्षा की जाय । प्रकृति की कोई वस्तु निरुपयोगी नहीं है । मृत शरीर के मल मूत्र निरर्थक मालूम पड़ते हैं पर उनका भी प्रकृति सुनियोजन करके पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में काम ले लेती है । कंजर्वेशन सिद्धान्त के समर्थकों ने लीव फार लेट लीव—का नारा दिया है तथा कहा है कि सुव्यवस्था एवं सुसंतुलन के लिए सर्वाधिक ध्यान कन्जर्वेशन-संरक्षण की ओर दिया जाना चाहिए । इससे बढ़ते हुए प्रदूषण के रोकथाम में भी मदद मिलेगी । कितने ही नन्हें जीवों की जातियाँ ऐसी हैं जो प्रदूषण निवारक का कार्य बड़ी ही कुशलता से करती है । उनके विषय में विशद् अध्ययन करने की जरूरत है ताकि उनके समुचित लाभ उठाया जा सके । 'दी इंटरनेशनल यूनियन फार दि कंजर्वेशन ऑफ-नेचर' जिसका कार्य विश्व के वनस्पति एवं प्राणि सृष्टि को संरक्षण देना है, ने दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं—"रेड डेटा बुक" और "ब्लैक बुक" । ब्लैक बुक में उन जातियों के विवरण दिए गये हैं जिन्हें सोलहवीं शताब्दी के बाद निर्मूल कर दिया गया । सोलहवीं सदी में स्तनपायी प्राणियों की ४२२६ जातियाँ थीं जिनमें से सैकड़ों निर्मूल हो गयीं तथा १२० जातियों का शीघ्र ही अस्तित्व समाप्त होने वाला है । १६वीं सदी में पक्षियों की ८६८४ जातियाँ थीं जिनमें ११० नष्ट हो गयीं तथा १८७ का मात्र नामोनिशान बाकी रह गया है । कुछ ही दिनों में वे विलुप्त हो जायेंगी । रेड डेटा बुक के अनुसार ऐसी २५ जातियों की सूची बनायी गयी है जिन्हें थोड़े प्रयत्नों द्वारा विलुप्त हो जाने से बचाया जा सकता है ।

आई.यू.सी. एन. संस्था के शोधार्थियों ने मनुष्य और प्रकृति के परस्पर अवलंबन पर विशेष जोर दिया है । उनका मत है कि प्रकृति ने लाखों वर्षों के अनुभव के बाद विभिन्न जटिल परिस्थितियों में टिकने की क्षमता प्राप्त करने के लिए विशेष प्रकार के जीन्स से बने जीव सृष्टि की रचना की थी । मनुष्य ने अपनी नासमझी के कारण निर्भयता से प्रकृति की बहुमूल्य सम्पदा एवं जीव सृष्टि को विनष्ट कर दिया है । असन्तुलन इसी अदूरदर्शिता की दुष्परिणति है । नन्हें जीव जन्तुओं तथा अन्य जीवों की सुरक्षा के लिए अमेरिकी फेडरल गवर्नमेंट की सहायता से आई.यू.सी. एन. जैसी संस्था ने ३ करोड़ २० लाख एकड़ भूमि में एक अभयारण्य का निर्माण किया है जिसमें जीव सृष्टि की सुरक्षा, उपयोगिता एवं उपादेयता पर विशद अध्ययन किया जाता है । ऐसे अभयारण्य अन्य स्थानों में भी बनाये जा रहे हैं । रूस में ८०, ग्रेट ब्रिटेन तथा आस्ट्रेलिया में ७०, फ्रांस में १७, अमेरिका तथा कनाडा में ३४० की संख्या में बन रहे हैं ।

सम्बद्ध शोध संस्थान में इकॉलॉजी पर शोधरत वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि अधिक खाद्यान्न उत्पादन के लिए आधुनिक रासायनिक खादों का उपयोग करने की अपेक्षा विभिन्न जीव सृष्टि-बैक्टीरिया कीट पतंग आदि की सहायता ली जानी चाहिए । वनस्पतियों को रोगों से बचाने के लिए जन्तुनाशक दवाओं के उपयोग के स्थान पर ऐसी जीव सृष्टि का विकास करना चाहिए जो इन रोग कीटाणुओं को स्वयं नष्ट कर देते हों । ऐसा करने से रासायनिक खादों और जन्तु नाशक दवाओं पर होने वाले अत्यधिक व्यय तथा वायु जल प्रदूषण आदि के रूप में पैदा होने वाली विभीषिकाओं से सहज ही बचाव सम्भव है । दुर्भाग्यवश मनुष्य की दृष्टि अपने सजातीयों के संरक्षण तक सीमित रह गयी है जब कि जंगली जीवों, वनस्पतियों, जल, वायु के संरक्षण को भी मानवी संरक्षण का एक अभिन्न अंग माना जाना चाहिए ।

जीव एवं वनस्पति सृष्टि का अस्तित्व परस्पर एक दूसरे के ऊपर टिका हुआ है । एक के नष्ट होने से दूसरा भी प्रभावित होगा । पौधों के उगने, बढ़ने, प्रजनन एवं विस्तार के लिए वातावरण के अनेकों घटकों पर निर्भर रहना पड़ता है । उनके विकास एवं परिपोषण में छोटे-बड़े जीव-जन्तुओं का भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहयोग जुड़ा हुआ है । दोनों मिल-जुल कर एक अभिन्न इकॉलॉजिकल सिस्टम—पारिस्थितिकी तन्त्र की संरचना करते हैं । तन्त्र के किसी भी भाग में परिवर्तन उस समस्त तंत्र पर प्रभाव डालता है । पौधों जानवरों तथा वातावरण के युग्म से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विनिर्मित होने वाले इकॉलॉजिकल सिस्टम के अनेकों स्वरूप हो सकते हैं । यह अत्यन्त छोटा हो सकता है और बड़ा भी । उदाहरणार्थ वृक्ष सूर्य के प्रकाश से ऊर्जा ग्रहण करता है तथा हवा तथा मिट्टी से लिए गये अकार्बनिक तत्वों को मिलाकर ऊर्जा से परिपूर्ण रासायनिक पदार्थ बनाता है । इस वृक्ष पर रहने वाले अनेकों पक्षी उसकी छाया में बसेरा पाते है तथा फलों को खाकर अपने शरीर की रक्षा करते है । कुछ अन्य जन्तुओं का आहार चिड़ियाएँ हैं । उस तरह शाकाहारी, मांसाहारी जीवों का परिपोषण तथा उनके मृत शरीर से वनस्पतियों का विकास तथा उस श्रृंखला में पृथ्वी, वायु जल एवं प्रकाश का योगदान एक अविछिन्न चक्र का परिचय देता है । लकड़ी आदि के लिए कोई एक वृक्ष भी काटता है तो उपर्युक्त प्रक्रिया के अनुसार एक समग्र श्रृंखला को तोड़-मरोड़ देता है ।

इकोसिस्टम के अन्य स्वरूप भी प्रकृति में सतत चलते रहते हैं । वनों में हरे पौधों को हिरण चरते है । उनका शिकार बाघ, शेर, चीते करते हैं । चीतों, बाघों को मार दिया जाय तो हिरणों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि होगी और वनों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है । हिरणों को मार देने से मांसाहारी जीव अपने जीवन की रक्षा नहीं कर सकेंगे और असमय दम तोड़ देंगे । इसी प्रकार किसी घास के मैदान में घास को खाने वाली टिड्डी, टिड्डी को खाने वाले मेंढक, मेंढक को खाने वाले सर्प और सर्प का भक्षण करने वाले पक्षी—चील, मोर अथवा बाज की भी एक श्रृंखला है । बाज को भी अन्य बड़े जीव उदरस्थ कर जाते हैं । जो मारे नहीं जाते उनके शरीर मृत अवस्था में भूमि में मिलकर उसकी उर्वरता को बढ़ाते हैं ।

प्राणी पौधों में परागकण, फल तथा बीजों के प्रकीर्ण मृदा की उर्वरता वृद्धि, सहजीविता, प्राकृतिक स्वच्छता तथा जैवी नियंत्रण आदि रूपों में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं । विविध प्रकार कीट विभिन्न जाति के पौधों के पुष्पों से भोजन परागकण आदि के रूप में प्राप्त करते तथा परागण की क्रिया सम्पन्न करते हैं जो फल एवं बीजों के लिए अनिवार्य है । फलों तथा बीजों के सुदूर क्षेत्रों में विस्तार करने में प्राणियों का बहुत बड़ा हाथ है । पक्षी, बन्दर, गिलहरी, पशु आदि विविध प्रकार के रसीले अथवा सूखे फलों को खाने के बाद उनके अपच बीजों को अपने मल के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते रहते हैं । चरते हुए पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि के शरीर पर चिपक कर बीज अनेकों स्थानों पर विस्तृत होते रहते हैं। लाखों की संख्या में छोटे-बड़े प्राणी मरकर भूमि की उर्वरशक्ति बढ़ाते हैं । मिट्टी के अन्दर घर बनाकर रहने वाले प्राणी जैसे कीट, दीमक, चींटे, केंचुए आदि मिट्टी को ऊपर नीचे पोला बनाकर उसकी उर्वरता में अभिवृद्धि करते हैं । इससे बीजों के अंकुरण में सहयोग मिलता है ।

प्रकृति ने लाखों करोड़ों वर्षों से इस भूमण्डल को सँजोया है । अधिक अच्छा यह होगा कि उसे अपना कार्य स्व-संचालित व्यवस्था द्वारा करने दिया जाय । उस चक्र को न भंग किया जाय जिस पर प्राणियों एवं वनस्पतियों का अस्तित्व टिका हुआ है । अच्छा तो यह होता कि मनुष्य प्रकृति की सुषमा सौन्दर्य बढ़ाने में मदद देकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देता और बदले में प्रकृति के अनेकानेक अनुदानों का लाभ उठाता । यदि यह नहीं कर सकता तो कम से कम प्रकृति सन्तुलन की दृष्टि से यह अनिवार्य है कि वह प्रकृति की अनावश्यक छेड़छाड़ को अविलम्ब बन्द करे । अन्यथा प्रस्तुत वर्तमान प्रकृति संकटों की तुलना में उसे कई गुनी भयंकर विभीषिकाओं का सामना करना पड़ सकता है ।

प्रकृति संतुलन बिगाड़ने से हानि ही हानि है

बुद्धिमत्ता अच्छी चीज है पर अति हर चीज की हानिकारक है । प्रकृति की गोद में पलकर उसका माँ की तरह दूध पीना उपयुक्त है पर सोने का एक अण्डा रोज देने वाली मुर्गी का पेट चीरकर सारे अण्डे एक साथ ही निकालने का लालच लाभ के स्थान पर हानिकर ही अधिक सिद्ध होता है ।

प्रकृति सन्तुलन बिगाड़ने वाली बुद्धिमत्ता इन दिनों जोरों से चल रही है और उससे मनुष्य को लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक हो रही है ।

पाल पियर्स का कहना है कि, "सन्तुलन शास्त्र ऐसा विज्ञान है जो पश्चिमी दुनिया के विचारों, दर्शनों और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मान्यताओं की जड़ें खोद रहा है ।" सच्चा विज्ञान बढ़ने से ही आध्यात्मिकता बढ़ सकेगी । अब यह दायित्व तथाकथित विकसित व विकासशील देशों के कन्धों पर है, कि वे विनाशकारी विज्ञान की दिशा में न बढ़कर सन्तुलन शास्त्र के सिद्धान्तों का समुचित पालन कर नयी समाज रचना का विकास करें ।

प्रकृति की स्वसंचालित व्यवस्था ऐसी है कि वह हर प्रकार के जीव-जन्तुओं के समूह की आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहती है, साथ-ही प्रकृति में उनका सन्तुलन भी निरन्तर बनाये रहती है । उदाहरण के लिए किसी जंगल में किसी शाकाहारी जन्तु की संख्या आवश्यकता से अधिक बढ़ गई हो तो ऐसी स्थिति में वे उस वन के वृक्ष-वनस्पतियों का मुण्डन-संस्कार तो करेंगे ही, भोजन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होने के कारण बड़ी संख्या में उनकी मृत्यु भी होगी । इसी प्रकार हिंस्र पशु अहिंसक जन्तुओं की संख्या को संतुलित-नियंत्रित करते हैं । इस तरह प्रकृति में सन्तुलित-नियन्त्रण का यह क्रम सदा जारी रहता है ।

एक रिपोर्ट के अनुसार १९ वीं सदी के अन्तिम वर्षों में अमेरिका में ७ लाख एकड़ भू-भाग पर फैला एक विस्तृत जंगल था, उसमें ३० हजार हिरनों को पोषण देने की सामर्थ्य थी । सन् १९०५ में जब हिरनों का लेखा-जोखा लिया गया, तो उसमें सिर्फ ४ हजार हिरन शेष पाये गये । इस बीच जंगल के हिंस्र पशुओं का भी वध हुआ । सन् १९०७ से १९०९ के बीच ७६७ बाघों व सात हजार कोयोटों का शिकार किया गया । बाघों की संख्या में घटोत्तरी से अगले कुछ वर्षों में हिरनों की संख्या में पुनः द्रुत अभिवृद्धि देखी गयी । सन् १९१८ में इनकी संख्या बढ़कर ४० हजार हो गई । अगले छः वर्ष के दौरान इनकी तादाद और बढ़ी और संख्या एक लाख तक जा पहुँची । इस बीच उनका भोजन अपर्याप्त पड़ने लगा तथा जंगल के भी विनष्ट होने की आशंका उठ खड़ी हुई । हिरन तेजी से काल के गाल में समाने लगे । सन् १९३९ में इनकी संख्या मात्र दस हजार रह गई। इतने पर भी वे अपना भोजन बड़ी मुश्किल से उपलब्ध कर पाते थे ।

कार्टर का कहना है कि, "यदि एशिया और अफ्रीका के तथाकथित विकासशील राष्ट्र विकास के नाम पर बढ़ रहे असन्तुलन को खत्म न करें और सन्तुलन को न बनाये रख सकें, तो यह न सिर्फ उनके लिए, वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरनाक सिद्ध होगा ।"

विभिन्न क्षेत्रों को सँभालने के लिए दुनिया में अनेक प्रकार के निगम बने । आरम्भ में ये निगम सिर्फ कृषि तक सीमित थे । पर धीरे-धीरे इनका क्षेत्र व्यापक बनता गया । अब ये अपनी निगाहें पशु-पालन पर केन्द्रित किये हुए हैं ।

पशु एक मानवेत्तर जीव है, उनका अपना स्वभाव और भावनायें हैं; पर हम पैसे के लोभी, उन पर भी विजय पाना चाहते हैं और उन्हें अस्वाभाविक जिन्दगी जीने पर मजबूर कर उनसे अपनी जेबें गर्म करते हैं । पशुपालन के नाम पर ये निगमें आज यही पद्धति अपनाये हुए हैं । गायों, सूअरों, मुर्गियों को तंग कोठरी में बन्द कर उन्हें अस्वाभाविक रूप से रखना और असामान्य खुराक देकर दूध, माँस, अण्डे का उत्पादन बढ़ाना—यही है इन निगमों का उद्देश्य । इसे पशुपालन की अपेक्षा कारखानेदार कृषि कहना अधिक समीचीन होगा । स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाये, तो इससे पशुओं को हानि ही हानि पहुँचती है । इस तथाकथित पशुपालन में एक पशु के रोगी होने से सारे पशु उसकी गिरफ्त में आ जाते हैं, फलतः आरम्भ से ही उन्हें दवाइयों और सुइयों पर जिन्दा रखकर कृत्रिम जिन्दगी जीने पर मजबूर किया जाता है ।

सन् १९१० में चीन के एक वर्गमील के देहाती क्षेत्र में १७८३ व्यक्ति, २१२ घोड़े-गधे व ४०० सूअर निवास करते थे, जबकि अमरीका के इतने ही बड़े क्षेत्र में उस समय मात्र ६१ व्यक्ति, ३० घोड़े एवं खच्चर आश्रित थे । तत्कालीन समय में ४० एकड़ भूमि एक परिवार के लिए अमरीका में अपर्याप्त मानी जाती थी; जबकि इतने बड़े फार्म में चीन में २४० व्यक्ति, २४ गधे व २४ सूअर पलते थे । उन दिनों वहाँ के रेशम की कीमत अमरीका के गेहूँ की फसल की कीमत के बराबर होती थी ।

पशुओं को अप्राकृतिक ढंग से अधिक लाभदायक बनाने में उनका रासायनिक अभिवर्धन या अन्धाधुन्ध वध ऐसा ही है जिससे तुरन्त लाभ उठाकर बाद में हानि ही हानि उठानी पड़ती है । अमेरिका आदि देशों ने यही किया है, अति उत्साह में अपनी जमीन भी खराब कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ली । लोगों का स्वास्थ्य बिगाड़ लिया और पशु पक्षी जिस स्वाभाविक क्रम में बढ़ते थे और फसल की पैदावार ठीक रखते थे उस सबमें व्यतिक्रम खड़ा कर लिया है ।

भौतिक विज्ञान के अभिशाप और वरदान

विगत एक दो शताब्दियों में भौतिक विज्ञान की क्रमिक उन्नति हुई है । विशेषतया पिछले ५० वर्षों प्रकृति के रहस्यों को खोज निकालने में आश्चर्यजनक सफलता हस्तगत हुई है । उस उत्साह में जो कदम वैज्ञानिकों राजनेताओं और अर्थशास्त्रियों के तालमेल से उठे उन्हें प्रारम्भिक दिनों में अत्यन्त उत्साहवर्धक माना गया था और समझा गया था कि इस आधार पर प्रगति के नये द्वार खुलने जा रहे हैं । किन्तु दूरदर्शी विवेकशीलता का समन्वय न होने से उस प्रगति की ऐसी खामियाँ सामने आ रही हैं जिनसे प्रतीत होता है कि उपलब्धियों का प्रयोग करने की दिशा में कहीं कोई भारी चूक हो गई है । अन्यथा चन्द दिनों में ही इतने संकट क्यों आ खड़े होते जिनका समाधान समझ से बाहर होता चला जा रहा है । विज्ञान का प्रथम चरण औद्योगीकरण की दिशा में उठा । कम लागत में, अधिक मात्रा में अधिक साफ-सुथरी चीजें बनाते समय सोचा यह गया था कि सर्वसाधारण को सस्ते मोल में सुविधाएँ उपलब्ध होंगी और निर्माताओ को अधिक लाभ कमाने का अवसर मिलेगा । इस मान्यता पर उन दिनों आम सहमति थी । उत्साह भी पूरा था । धन का विनियोग भी खुले हाथों हुआ । उत्पादन भी वैसा ही साफ-सुथरा और सुन्दर सामने आया जैसा कि सोचा गया था । किन्तु उतावली में उठाये गये कदम नई समस्यायें अविलम्ब उत्पन्न करने लगे । उलझनें ऐसी हैं जो सुलझने में नहीं आ रही और लगता है आरम्भ करते समय भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर अनुचित विचार नहीं किया गया । बड़ी मशीनों में थोड़े आदमी बहुत उत्पादन करते हैं । इसका परिणाम यह हुआ कि जिन उत्पादनों में बहुसंख्यक श्रमिकों की आवश्कता होती थी, वह थोड़े ही लोगों द्वारा विनिर्मित होने लगा । फलतः बेकारी बेतहाशा बढ़ी और खाली बैठे लोगों ने उचित-अनुचित उपद्रव खड़े करने आरम्भ किये । आन्दलनों ने—अपराधों ने गति पकड़ी और सार्वजनिक शान्ति में विक्षेप पड़ना आरम्भ हुआ ।

बड़ी मशीनों ने अपने-देशों की खपत को ध्यान में न रखते हुए अत्यधिक माल बनाया । इसे खपाने के लिये मण्डियों की आवश्यकता पड़ी । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये नये किस्म का आर्थिक उपनिवेशवाद खड़ा हुआ राजनैतिक उपनिवेशवाद तो समर्थों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता के कारण हलका पड़ा, पर उसके स्थान पर नया आर्थिक उपनिवेशवाद खड़ा हुआ । इसके लिए शीत युद्धों का आश्रय लिया गया और कृत्रिम अभाव का सृजन किया गया । फलत.: देशों की स्वाभाविक सुख-शान्ति में भारी व्यवधान खड़ा हो गया ।

बडे कारखानों से उत्पन्न होने वाला कचरा एक समस्या बना । कुछ को नदियो में बहाया गया, कुछ हवा में उड़ा, कुछ ने जमीन घेरी । चूँकि यह कचरा विषैला होता है इसलिए उसमें जलाशयों की विषाक्तता बढ़ी । साँस लेने की हवा में जहर घुला और ईंधन के लिए फर्नीचर के लिए पेड़ कटे और जल प्लावन आवश्यकताओं के लिए सर्वप्रथम पेड़ों पर हाथ साफ हुआ ।

यह विषाक्तता कितनी अधिक हानि पहुँच रही है इसका अनुमान बढ़ती हुई बीमारियों की व्यथा और उनके इलाज पर होने वाले बढ़ते खर्च से लगाया जा सकता है ।

बड़ी मशीनों ने अधिक मात्रा में ईंधन की माँग की । इसके लिए खनिज तेल और कोयले का सहारा लिया गया। यह भण्डार जमीन में एक सीमित मात्रा में ही है । गणितज्ञों ने बताया है कि जिस अनुपात में यह खर्च हो रहा है वही गति रही तो पचास वर्ष के भीतर तेल और कोयले का भण्डार चुक जायगा । बिजली उत्पादन के लिए भी ईंधन चाहिए । उसके बिना बिजली भी न बन सकेगी। अणु भट्टियों के सम्बन्ध में भी यही संकट है । यूरेनियम प्लूटोनियम जैसे पदार्थ भी थोड़ी ही मात्रा में है । इसलिए अणु भट्टियाँ भी अधिक दिन काम न दे सकेंगी । इनसे निकलने वाला कचरा और भी भयावह है, उसे कहाँ पटका जाय यह प्रश्न अभी अनिर्णीत ही पड़ा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पिछले पचास वर्षों में दो विश्व युद्ध हो चुके । तीसरे के लिए मुहूर्त ही टल रहा है । युद्ध के कारणों में उत्पादनों को खपाने के लिए क्षेत्रों की आवश्यकता ही प्रमुख कारण है । जो देश युद्ध सामग्री बनाते हैं उनकी बिक्री तभी हो सकती है जब युद्ध हो । अन्यथा वे कारखाने बन्द होंगे । पूँजी जाम होगी और बेकारी फैलेगी । इसलिए युद्ध भले ही अणु बमों से हो या रासायनिक आयुधों से, समय की एक आवश्यकता बन गया है ।

इतनी सारी समस्याओं का एकमात्र कारण विज्ञान का वह चरण है जिसने बड़ी मशीनें लगानें का निश्चय किया । यह साँप-छछून्दर जैसी गति है जो न निगलते बनती है न उगलते ।

विज्ञान ने राजनेताओं को भड़काया है कि वे थोड़ा सा प्रयास करके चक्रवर्ती बन सकते हैं, युद्ध की तैयारी में जनता को अधिकाधिक टैक्स देने पड़ रहे हैं फलतः महँगाई बढ़ रही है और मध्यवर्ती व्यक्ति का जीवन दुर्लभ हो रहा है । फिर हथियारों के जो पहाड़ बीसियों देशों ने खड़े कर लिये हैं उनका क्या हो ? वे खाने-पहनने के काम तो आते नहीं, इस उत्पादन का उपयोग जन-संहार में ही होता है और उसका कष्ट मरने वालों से भी अधिक उन्हें भुगतना है जो अनाथ अपंग बनकर किसी प्रकार जीवित बच रहेंगे ।

यदि विज्ञान ने सही कदम उठाया होता, बड़ी मशीनों का निर्माणा न किया होता तो निश्चय ही उपर्युक्त समस्याओं में से एक भी मुसीबत खड़ी न होती । नदियों में गिराया हुआ कचरा घुमा फिरा कर मनुष्य के ही पीने के काम आता है । जहरीली गैस जहाँ साँस द्वारा शरीर में जाती है वहाँ अब तेजाबी वर्षा का क्रम चल पड़ा है । उसके सहारे जो खाद्य उपजेगा वह भी जहरीला होगा । तीव्र विषों से कुछ ही समय में मृत्यु हो जाती है पर जहरीले अन्न जल में वायु के कारण बढ़ने वाली रुग्णता से मनुष्य को चित्र-विचित्र बीमारियों को शिकार बनना, तड़पते हुए अकाल मृत्यु मरना पड़ता है । बढ़ते हुए विज्ञान के चरण भले ही अमीरों की अमीरी बढ़ा सकें पर सर्वसाधारण का उससे सब प्रकार अहित ही होगा ।

उदीयमान विज्ञान ने एक और बौद्धिक एवं भावनात्मक संकट खड़ा किया है । चेतना को जड़ की उत्पत्ति बताया है । फलतः नैतिक आचरणों का कोई मूल्य नहीं रह गया । नास्तिकता ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्, के सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है । उसने जहाँ मांसाहार का समर्थन किया है वहाँ सामाजिक-नैतिक वर्जनाओं को व्यर्थ बताकर अपनी सुवधिा को प्रधानता देने के लिए उकसाया है । इस दशा में त्याग, बलिदान, उदारता, पुण्य, परमार्थ का कोई महत्त्व नहीं रह जाता । जब मनुष्य चलता-फिरता पेड़-पौधा बताया गया तो एक-दूसरे को लाभ या हानि पहुँचाने के लिए गणितीय सिद्धान्त ही काम करेंगे । जब बूढ़े बैल को, न कमाने वाले बकरे को कसाई के यहाँ भेजा जा सकता है तो वृद्धों को बीमारों को अपंगों को भी मौत के घाट उतार देने में क्या झिझक होनी चाहिए ? जब पशु-पक्षियों में नर-मादा भर का रिश्ता होता है । जब मनुष्य को जड़ पदार्थों की—पेड़-पौधों की पशु पक्षियों की श्रेणी में गिन लिया गया तो फिर माँ, बहिन, बेटी आदि के पवित्र रिश्ते भी बेकार हो जाते हैं । इस ओर प्रवृत्तियाँ अब बढ़ ही गई हैं । घर, मुहल्ले, पड़ौस परिवार में ही व्यभिचार का प्रवाह बढ़ रहा है । विवाह व्यापार हो गया है । छोटे वर्गों में लड़की से पैसा वसूल किया जाता है । न देने या कम देने पर जला देने, निकाल देने आदि की घटनाएँ दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं । यह परोक्ष रूप से भौतिकवादी चिन्तन का ही प्रतिफल है । बच्चों को अपहरण और माँगी रकम न देने पर उनका कत्ल यह अब अनहोनी घटना नहीं रही । कुछ समय पूर्व चोर-डाकू भी स्त्री-बच्चों पर हाथ नहीं उठाते थे पर अब स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, लोक-परलोक,आत्मा-परमात्मा की मान्यताओं ने—भौतिकवादी दर्शन ने समाप्त कर दिया तो मनुष्य को और मछली को मारने खाने में अन्तर ही क्या रह गया । नागरिकता और समाज व्यवस्था के नाम पर मनुष्य की पशुता को दबाया नहीं जा सकता । उसके लिए दार्शनिक निष्ठा की आवश्यकता होती है । विज्ञान की बौद्धिक छलाँगों ने जब उसे समाप्त कर दिया तो मनुष्य को संयमी, सदाचारी बनाने का कोई ठोस आधार रह ही नहीं गया । आदर्शवाद की जब जड़ ही कट गई तो दिखावटी ढिंढोरा पीटने भर से बात कुछ बनती नहीं है ।

आर्थिक क्षेत्र में बेकारी, बीमारी, गरीबी, विषाक्तता और अगले दिनों ईंधन की समाप्ति से तथाकथित प्रगति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बंटाढार, यह विज्ञान के वे अनुदान हैं जिन्हें सर्वसाधारण को उपहार में दिया है । महायुद्ध की विभीषिका का नंगी तलवार की तरह संसार की गरदन पर लटकाने का श्रेय भी उन ऐटमी हथियारों को है जिन्हें विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जाता है । शहरों की अन्धाधुन्ध बढोत्तरी और देहातों से भगदड़ का कारण भी इसी वैज्ञानिक प्रगति का है । इसी ने हजारों को लखपति, करोड़पति बनाया है और लाखों करोड़ों को एक तरफ रूखा-सूखा खाने के लिए विवश किया है। डॉक्टर बढ़े हैं । पर उनके अनुपात में मरीजों की अत्यधिक वृद्धि हुई है । लोग जिन्दा तो हैं पर मुर्दों से गई-गुजरी परिस्थितियों में ।

नैतिकता के आधार पर जब धर्म और अध्यात्म रहे तब तक बाँध का पानी इस प्रकार नहीं टूटा था जिसमें खेत खलिहान सभी डूब जायें । बुद्धिवाद नये युग का दर्शन है । दूसरे शब्दों में इसे विज्ञान का दर्शन कह सकते हैं । इसमें सुविधा संकलन करने के तर्कों की प्रमुखता है । फल यह हुआ है कि हम मछली निगलने वाले बगुले अपने ही परिवार में कामोपयोग की छूट पाने वले कुत्ते और अपनी बिरादरी को ही फाड़-चीरकर रख देने वाले भेड़ियों की बिरादरी में सम्मिलित हो गये हैं। हम अर्थ प्रधान हैं, विलास और सुविधा के अतिरिक्त हमें और कुछ नहीं चाहिए । इन्ही आकाँक्षाओं की जब जरूरत होती है समाज निष्ठा जैसी चादर उढ़ा देते हैं । विज्ञान ने जब मनुष्य को चलता-फिरता पौधा कहा हैं तो उसे क्यों न माना जाय । धर्म जब अफीम की गोली और ईश्वर अन्धविश्वास उसी मन्च से घोषणापूर्वक कहा गया है तो उस मान्यता से क्योंकर इन्कार किया जाय ?

इन अभिशापों से उद्विग्न मनुष्य तो नहीं चाहता पर जीने की भी उसकी कोई इच्छा नहीं है । इसलिए नशेबाजी का आश्रय लिया गया है । बच्चे,बूढ़े, नर नारी, 'येन केन प्रकारेण' उन्ही का आश्रय ले रहे हैं । तम्बाकू चाय का फैशन पुराना हो गया अब मझोले लोग शराब और बड़े लोग हीरोइन का सेवन करते हैं । जितनी देर उनमें डूबे रहते हैं उतनी देर गम गलत कर लेते हैं अन्यथा विज्ञान का अभिशाप उन्हें दशों दिशाओं से नोंच-नोंचकर खाता है ।

कोलाहल एक भयावह जीवन संकट

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए जहाँ अवांछनीय आहार-विहार से गन्दगी और रोग कृमियों से बचना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक कोलाहाल से बचना भी है । इस तथ्य को भारत में चिरकाल से जाना जाता रहा है । शान्त मनःस्थिति के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण अपनाने पर हमारे पूर्वज जोर देते रहे हैं और साथ ही यह भी कहते रहे हैं कि सुविकसित जीवन के लिए शान्त वातावरण भी नितान्त आवश्यक है ।

प्राचीन काल में बड़े नगर नहीं थे । जो थे वे भी सघन बसे हुए नहीं थे, उनमें काफी छिरछिरापन था । सटाकर घर बनाना, कई-कई मंजिल की इमारतें खड़ी करना न कलात्मक समझा जाता था न सुखद । स्वच्छ वायु-खुला सूर्य प्रकाश और शान्त वातावरण इन तीनों को अन्न-जल और वस्त्रों की तरह ही आवश्यक माना जाता था । यह इसलिये था कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ठीक बनाये रखने की आरम्भिक आवश्यकता को पहले पूरा किया जाना चाहिये । धन, वैभव, ऐश्वर्य, यश पद, विलास आदि तो पीछे की चीजें हैं, यदि शरीर और मन रुग्ण रहे तो फिर अन्य सफलतायें और उपलब्धियाँ दुर्बल काया से किस प्रकार प्राप्त की जा सकेंगी ? यदि प्राप्त भी कर ली गई तो उनका संरक्षण या उपयोग कैसे सम्भव होगा ? स्वस्थ और समर्थ व्यक्ति स्वल्प साधनों से भी सुखी रह सकता है जबकि दुर्बल एंव रुग्ण व्यक्ति के लिए विपुल सम्पदा भी निरर्थक कष्टकारक और भार रूप ही सिद्ध होती है ।

तथाकथित बुद्धि, विलास, वैज्ञानिक विकास, सभयता वृद्धि और सम्पदा बाहुल्य ने इन दिनों बड़े शहरों की भारी बढ़ोत्तरी की है । देखते-देखते विगत दस वर्षों में बम्बई, दिल्ली, कानपुर, अहमदाबाद जैसे नगरों की आबादी दूनी हो गई और द्रुत गति से उसमें वृद्धि होती चली जा रही है । सघन वस्तुओं में गगनचुम्बी अनेक मंजिलों के मकान बनते चले जा रहे हैं । रोशनी और हवा की भारी कमी पड़ती चली जा रही है । आधे से अधिक मकान ऐसे होते हैं जिनमें सूर्य की किरणों का कभी भी प्रवेश नहीं होता । स्वच्छ हवा की तो गुंजायश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही कहाँ ? बिजली की बत्तियाँ और पंखे ही सूर्य भगवान् और पवन देवता का प्रतिनिधित्व करते हैं । इस पर भी कोलाहल की भरमार, जो वायु और प्रकाश के अभाव की अपेक्षा कुछ कम नहीं अधिक ही भयावह होता है ।

शहरी सभ्यता, बढ़े शहरों में रहने की प्रवृत्ति गरीब और मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए एक प्रकार से प्राण-घातक ही है । अमीर लोग तो साधनों के बल पर अपना बहुत कुछ बचाव कर भी लेते हैं पर गरीबों के लिए तो यह चमकीले-भड़कीले बड़े नगर सड़-सड़कर मरने के लिये एक प्रकार के नरक ही हैं । नई पीढ़ी के युवक इस बाहरी चकाचौंध से आकर्षित होकर शहरों में छुट-पुट नौकरी या धन्धा करने भागते हैं और अपने शान्त सरल देहाती जीवन का तिरस्कार करते हैं इस मनोवृत्ति को दुर्भाग्य के अतिरिक्त और क्या कहा जाय ?

नगरों में बढ़ता हुआ कोलाहल धीरे-धीरे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अभिशाप ही बनता जा रहा है । कल कारखाने, मोटरें, लाउडस्पीकर, रेलें भगदड़, वार्तालाप, आदि अनेक कारण से कोलाहल की मात्रा बढ़ती जा रही है और वह प्रचलित बीमारियों में सबसे बड़ी सिद्ध हो रही है ।

ध्वनि का माप करने की इकाई 'बेल' कहलाती है । बेल के दशांश को डेसीबेल कहते हैं । अन्तरिक्ष में २५ डेसीबेल कोलाहल ही मनुष्य के लिए पर्याप्त हैं । यह बढ़ने लगे तो संकट उत्पन्न होगा । १२० से १३० तक यह कोलाहल बढ़ जाय तो कुछ ही देर सुनने वाला कुछ समय के लिये बहरा ही हो जाता है ।

रूस के ध्वनिवेत्ता ब्लादीमिर चदनोव का कथन है कुछ समय पूर्व बडे नगरों की सड़कों पर भी ६० डेसीबेल से ज्यादा शोर नही होता था पर अब तो उसका औसत १०० से भी आगे बढ़ने लगा है । रात को भी वह ७२ से नीचे नहीं घटती । जबकि स्वाभाविक निद्रा आने के लिए २५-३० से अधिक शोर नहीं होना चाहिये । बढ़े हुये शोर में रहने से उसका उत्तेजक प्रभाव नाड़ी संस्थान को धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त करता रहता है । फलतः स्नायु संस्थान, रक्त वाहिनियाँ, हृदय, मस्तिष्क सभी का संतुलन गड़बड़ाता है और उन प्रमुख अवयवों में कितने प्रकार के रोग उठ खड़े होते हैं ।

आस्ट्रिया के शब्दवेत्ता डा० ग्रिफिथ ने बड़े शहरों का स्वास्थ्य सर्वेक्षण करके यह पाया कि यहाँ के ३० प्रतिशत लोगों को असमय मे ही बुढ़ापा आ घेरता है । यहाँ के निवासियों की आयु औसतन आठ वर्ष घट जाती है । इस समय से पूर्व की अकाल मृत्यु का कारण शहरी वातावरण में बढ़ा कोलाहल ही होता है । श्रमिकों की क्षमता ४० प्रतिशत कम हो जाती है । वे थके हुये रहते है और साधारण स्वस्थ मनुष्य की तुलना में ६० प्रतिशत ही काम कर पाते हैं । उनके काम में गलतियों की संख्या अनुभव एवं अभ्यास से घटते चलने की अपेक्षा बढ़ती ही जाती है और पुराने श्रमिक अपेक्षाकृत अधिक गलती करते हैं । वह जानबूझकर नहीं होता, शोर के कारण उत्पन्न हुई उनकी स्नायविक दुर्बलता से ही ऐसा होता है ।

अमेरिका में यान्त्रिक विकास सबसे अधिक है । वहाँ के ४५ लाख कारखाना मजदूरों में से दस लाख के कान खराब पाये गये । इंग्लैण्ड में बड़े नगरों के सर्वेक्षण की रिपोर्ट है कि वहाँ एक-तिहाई स्त्रियाँ और एक-चौथाई पुरुष (अर्धविक्षिप्तता) के शिकार बने हुए हैं । फ्रांस की औद्योगिक बस्तियों के पागलखाने बताते हैं कि हर पाँच के पीछे एक पागल कोलाहल की उत्तेजना से अपना दिमाग खो बैठा है । पूरी निद्रा न ले सकने वाले जब तेज सवारियाँ चलाते हैं तो सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में बेतरह अभिवृद्धि होती है ।

साइन्स डायजेस्ट के एक लेख में कुछ समय पूर्व बताया गया था कि कनाडा के मान्ट्रियल विश्वविद्यालय में शोर के प्रभाव का चूहों पर परीक्षण किया गया । कोलाहल में रहने के कारण उन सभी के स्नायु संस्थान गडबड़ा गये । शोधकर्त्ताओं का कथन है कि ऐसे उत्तेजित वातावरण के कारण मनुष्यों को अक्सर, ग्रन्थि-क्षय' गुर्दे की खराबी, हृदय की धड़कन जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं । कोलाहल से प्रवाहित रोगियों की चिकित्सा में संलग्न डाक्टर सेम्युएल रोजेन का कथन है हम कोलाहल को क्षमा कर सकते हैं पर कोलाहल हमें कभी क्षमा नही करता । उसके सम्पर्क में आकर हमें बहुत कुछ खोना पड़ता है ।

शोर विशेषज्ञ उस रोजेन ने अपने विषय के शोध के सिलसिले में सूडान (अफ्रीका) का भी दौरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया और वे ''मावान'' कबीले के ऐसे लोगों के साथ रहे जिन्हें गाजे-बाजे तक का शौक नहीं था और शान्ति-प्रिय वातावरण में रहने के आदी थे । उनमें से एक भी रक्त-चाप, हृदय रोग, अनिद्रा सरीखी बीमारियों का मरीज नहीं था । रूस के ८५ वर्षीय नागरिकों की इतनी श्रवण-शक्ति पाई गई जितनी कि औसत ६५ वर्ष के अमेरिकी की होती है । इसका कारण वातावरण में शोर की न्यूनाधिकता ही है । डा० रोजेन के प्रयोगों से शोर में रहने वाली चुहिया के बच्चे अधूरे और अस्त-व्यस्त जन्मे और चूहे में से ८० प्रतिशत नसों की ऐंठन के शिकार हो गये ।

संसार में आजकल लगभग २० करोड़ से अधिक मोटरें दौड़ती हैं । ब्रिटेन के अर्थशास्त्री बार्बरा वार्ड का कथन है कि शहरों की असली निवासिनी यह कारें ही हैं और वे परमाणु बमों जितनी ही भयावह हैं । अन्तर इतना ही है कि बम तुरन्त मार डालते हैं और ये रगड़-रगड़ कर मारती हैं ।

हवाई जहाज इस संकट को बढ़ाने में सबसे आगे हैं । अमेरिका के सुपर मगनक सैनिक जैट जहाज से उठने वाली ध्वनि तरंगो से केन्योन की कुछ प्राचीन गुफायें दरार देकर मुँह फाड़ गई । उन विमानों की ध्वनि तरंगें ५० मील का क्षेत्र प्रभावित करती चलती हैं । प्रभाव लगभग बिजली गिरने जैसी प्रतिक्रिया पैदा करता है । ब्रिटेन और फ्रांस के सहयोग से बने कनवार्ड जैट की ध्वनि तरंगों से लन्दन के सेन्ट पाल गिरजे को तथा पार्लियामेंट भवन को खतरा उत्पन्न हो गया तो उसकी उड़ानें रोकी गई । वैज्ञानिकों ने आगाह किया था कि इस विभाग के रास्ते में १०० मील तक के दोनों ओर हृदय रोगियों का जीवन संकट में पड़ जायगा । समय-समय पर कोलाहल की वृद्धि के खतरे के संबंध में अन्य विशेषज्ञ भी चेतावनी देते रहे हैं । कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के विज्ञान अधिकारी डाक्टर वर्न नुडसन ने कहा है कि—जिस गति से आकाश में शोर बढ़ रहा है उसी तरह बढ़ता रहा तो कुछ ही समय में संक्रामक और संघातमक रोग के कारणों में एक और नया आधार 'शोर' जुड़ जायगा । वह विषाक्त वायु की तरह ही प्राणघातक सिद्ध होगा । अमेरिका के चिकित्सक संघ के अधिकारी डॉक्टर गेराल्ड डोर मेंन ने चेतावनी दी है कि—जहरीली गैसों की तरह ही कोलाहल हमारे वातावरण को विषाक्त करता चला जा रहा है । इससे जल, वायु, वनस्पति, जमीन और प्राणियों का बुरी तरह विनाश होगा । जीवाणुवेत्ता नौबेल पुरस्कार विजेता डा० राबर्ट क्रोच ने कहा है कि—अगले दिनों हमें स्वास्थ्य के निर्मम शत्रु 'कोलाहल' से भी जूझना पड़ेगा । उसे परास्त किये बिना मनुष्य का जीवन संकट में पड़ जायगा । डॉक्टर रोस युएन, डॉक्टर मार्क्सजान्सन, डॉक्टर लीस्टर सोन्टांग प्रभृति वैज्ञानिकों ने भी ऐसी ही चेतावनियाँ दी हैं । मेम्फिक विश्वविद्यालय के शोधकर्मी जेम्स फ्लूगार्थ ने तो यहाँ तक कहा है कि शोर की वर्तमान अभिवृद्धि अगले दिनों बधिरों की ऐसी पीढ़ी पैदा करेगी जो तीस वर्ष के होते-होते आधी श्रवण शक्ति खो बैठेगी ।

इस बढ़ते हुए कोलाहल के विरुद्ध सजग जनसमाज द्वारा आवाज भी उठाई जा रही है । अमेरिका में जन स्तर पर इसके लिए आन्दोलन भी खड़ा हुआ है । न्यूयार्क के कोलाहल निवारक आन्दोलन के अध्यक्ष श्री एलेक्स वैरन का कथन है कि—जनता को कोलाहल से होने वाली हानियों की यदि पूरी जानकारी मिल जाय तो वह सरकार पर वैसा ही दवाब डालेगी जैसा कि बुरे से बुरे संकट के निवारण के लिए डाला जाता है ।

इस संकट से सरकारें भी परिचित हैं और वे उससे बचने के लिए कुछ उपकरण बनाने की—कुछ बंधन प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर रही हैं । कई देशों में ऐसा कुछ-कुछ हो भी रहा है । कितने ही देशों में जन-स्तर पर इसके लिए आन्दोलन खड़े किये गये हैं और शोर करने वालों पर प्रतिबन्ध लगाने तथा सर्वसाधारण को इस संदर्भ में प्रशिक्षित करने में यह आन्दोलन अपने ढंग से कुछ-कुछ कर भी रहे हैं ।

सरकारी स्तर पर, जन-स्तर पर कोलाहल के समाधान के लिए प्रयत्न होने ही चाहिए । पर साथ ही व्यक्तिगत रूप से भी इस सन्दर्भ में ध्यान दिया जाना चाहिए । हमें यह समझ कर चलना चाहिए कि औद्योगिक प्रगति के नाम पर, अन्धाधुन्ध बढ़ते चले जा रहे कल-कारखानों की आगे वृद्धि ही होगी । सम्पन्नता के साथ-साथ मोटरें,रेलें भी बढ़ेंगी । छोटी मोटर बनने वाली है । अनुमान है कि इसके बनते ही मोटरों की संख्या में भारी वृद्धि होगी । सिनेमा, लाउडस्पीकर अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गतिविधियाँ कब कम करने वाले है । जनसंख्या की वृद्धि रुक नहीं रही है । फलतः कारखाने यातायात के साथ यह भाग-दौड़ का बढ़ना भी स्वाभाविक है । अब उसका परिणाम कोलाहलों की अधिकाधिक वृद्धि के रूप में ही सामने आयेगा और आज के बड़े नगर कल सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए संकट बनकर उभरेंगे ।

परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए शहरों से पीछे हट कर देहातों में बसने की बात सोचनी चाहिए । अधिक कमाई—अधिक चमकीले चकाचोंध के आकर्षण में अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य गँवा बैठना न बुद्धिमानी है न दूरदर्शिता ।

प्राचीन काल में इस संकट को भली-भाँति समझा गया था इसलिए उस जमाने में शिक्षण संस्थाएँ, शोध संस्थान, चिकित्सा केन्द्र, साधना स्थल, सुदूर देहातों में एकान्त एवं वन्य प्रदेशों में बनाये गये थे । जिसमें कोलाहल रहित वातावरण में शान्त संतुलित, स्वस्थ, सुखी और सुन्दर जीवन जिया जा सके, हमारे लिए भी उसी राह को अपनाना श्रेयस्कर होगा ।

यह समृद्धि बहुत महँगी पड़ रही है

शब्द शक्ति का असाधारण महत्त्व है । इसी शक्ति के आधार पर मन्त्र विज्ञान की सृष्टि हुई है । इसी विज्ञान को विकसित कर आर्षकालीन महामानवों ने विश्व को ज्ञान का भण्डार दिया है । सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में ध्वनि को ही गतिशील माना गया है जिसके स्पन्दनों से ऊर्जा की तरंग श्रंखलाएँ उत्पन्न होती हैं । शास्त्रकारों और साधकों ने मन्त्र की गरिमा का सुविस्तृत प्रतिपादन किया है । मन्त्र द्वारा न केवल शरीर की मलीनताओं को धो सकना अपितु मन की शक्ति को जगाना एवं आत्मा की अनन्त शक्ति को विकसित कर सकना भी संभव है ।

आज विज्ञान ने औद्योगीकरण की चरम सीमा पर मनुष्य को वे सभी साधन उपलब्ध करा दिए हैं जिन्हें पाकर वह अपने आपको सौभाग्यशाली मान सकता है । पर यह शीघ्र प्रगतिवाली महत्त्वाकांक्षा अन्ततः हानिकारक ही सिद्ध हुई । ध्वनि का दुरुपयोग एवं शोर के रूप में उसका प्रदूषण विज्ञान द्वारा मानव जाति को दिया गया आज का अभिशाप है जिसका विवेचन वैभव देने वाली प्रगति के साथ किया जाना आवश्यक है । इस अदूरदर्शिता ने जिसे अनैतिकता की संज्ञा ही दिया जाना चाहिए, मनुष्य को पागलपन के नजदीक लाकर रख छोड़ा है ।

एक सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका के पागलखानों में उन पागलों की संख्या अधिक है जो कि औद्योगिक इकाइयों में कर्मचारी थे तथा वहाँ मशीनों के शोर के कारण अपना मानसिक सन्तुलन खो चुके हैं । शोर वस्तुतः शब्द शक्ति का विकृत स्वरूप है । उसी का परिष्कृत स्वरूप मन्त्र शक्ति, संगीत आदि के रूप में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर सुखद प्रभाव डालता है । शोर वातावरण में जो ध्वनि तरंगें उत्पन्न करता है उन्हें दोलनदर्शी यन्त्र (ऑसिलोस्कोप) से देखने पर असमान एवं कुरूप दिखाई देती हैं जबकि संगीत स्वर लहरियों की ध्वनि तरंगें प्रवाहपूर्ण एवं समान होती है । शोर विचारों की श्रृंखला को तोड़ देता है तो संगीत एकाग्र, तन्मय होने में सहायक होता है ।

पन्द्रह वर्ष पूर्व नोबेल पुरस्कार विजेता जीवाणु शास्त्री रॉबर्ट कॉक ने यह भविष्यवाणी की थी कि "एक दिन ऐसा आयेगा, जबकि मनुष्य को अपने स्वास्थ्य के दुष्टतम शत्रु शोर से ही लड़ना होगा । वह समय वस्तुतः आ चुका है ।

वैज्ञानिक भाषा में वायु अथवा द्रव के अणुओं के बीच की दूरी के घटने-बढ़ने से ध्वनि पैदा होती है । अणुओं के बीच की औसत दूरी के कम होने को विरलन कहते हैं । इन दोनों के युग्म को ध्वनि युग्म कहते हैं । इस ध्वनि के कम-अधिक होने पर शोर उत्पन्न होता है । शोर अथवा ध्वनि की व्यापक इकाई को डेसीबल नाम दिया गया है । इस पैमाने के आधार पर शून्य ध्वनि तीव्रता का वह स्तर है जहाँ से ध्वनि सुनाई देना आरम्भ होती है । पेड़ों की पत्तियों की ध्वनि चालीस डेसीबल का शोर उत्पन्न करती है । टेलीफोन पर वार्तालाप करने से सत्तर डेसीबल तथा सामान्य वार्तालाप से चालीस डेसीबल का शोर उत्पन्न होता है । सड़क पर भारी वाहनों के आवागमन से अस्सी डेसीबल तथा रेल की पहियों की धड़-धड़ाहट से नब्बे डेसिबल का शोर पैदा होता है । हड़ताल, जुलूस आदि से सौ डेसीबल तथा कारखानों में मशीनों की आवाज से १२० डेसिबल का शोर होते देखा गया है । जेट यान के उड़ने से १५०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

एवं विस्फोट के समय राकेट के छूटने से १७० डेसीबल का शोर होता है ।

ज्ञातव्य है कि कानों में मात्र ८० से ८५ डेसीबल तक की ध्वनियों को ही सुनने की क्षमता होती है । इससे ऊपर की क्षमता की ध्वनि घातक होती है । शोर सम्बन्धी उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि हम आज ऐसे वातावरण में रह रहे हैं जिससे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है एवं मानसिक क्षमताओं पर भी ।

आज द्रुतगामी वायुयानों (सुपरसोनिक ट्रान्सपोर्ट) ने विश्व को एक छोटा महाद्वीप बना दिया है जहाँ कुछ ही घन्टों में कोई भी व्यक्ति इस कोने से उस कोने में पहुँच सकता है । समय की इतनी बचत विश्व को किस कीमत पर मिल रही है, इसका भी अनुमान सबको होना चाहिए । तेज विमानों की पराध्वनि गति वायुमण्डल की 'ओजोन' परत को क्षति पहुँचाती है । यही कारण है कि हानिकारक पराबैंगनी किरणों का आगमन धरती पर अधिक होने लगा है । सामान्यतया इन किरणों को जो जीवधारियों के शरीर पर हानिकारक प्रभाव डालती हैं, ओजोन की परत रोक लेती है । त्वचा के कैंसर से लेकर आनुवांशिक रोग इन्हीं के कारण अधिक होते हैं और चिकित्सकों के अनुसार आज इन्हीं रोगों की बहुलता है ।

शोर का कारण ये विमान ही नहीं, आज की शहरी सभ्यता के प्रधान अंग कल-कारखाने एवं सड़कों पर दौड़ने वाले द्रुतगामी वाहन भी हैं । ग्रामीण सभ्यता की शान्ति को भूल हर व्यक्ति शहर को ही भागता दृष्टिगोचर हो रहा है । शहरों की परिधियाँ बढ़ती चली जा रही हैं एवं यही वातावरण भारतीय गाँवों को भी अपने चंगुल में ले रहा है ।

मात्र तुरन्त लाभ की दृष्टि से उठाया गया हर कदम हानिकारक होता है । इसके प्रमाण रूप में हम वैयक्तिक जीवन में मनुष्य को स्वार्थी एवं विलासी तथा सामाजिक जीवन में निष्ठुर एवं अपराधी बनता देख ही रहे हैं । फिर भी इन प्रदूषण जन्य समस्याओं का कहीं कोई हल करता अथवा विरोध करता दिखाई नहीं देता ।

शोर का सीधा प्रभाव अनुकम्पी तन्त्रिका तन्त्र से नियन्त्रित होने वाले अंगों पर पड़ता है । इससे इन अंगों में तनाव बढ़ता है । रक्तचाप बढ़ने से लेकर धमनियों में रक्त के थक्के जमने तक की गम्भीरतम प्रक्रिया शोर के प्रभाव से होती पाई गई है । हमारी अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से होने वाले स्राव की मात्रा शोर बढ़ने से असन्तुलित हो जाती है फलतः शारीरिक रोग तथा मनोविकार उत्पन्न होते हैं । शोर के प्रभाव से मस्तिष्कीय विद्युत् तरंगों में कई असामान्य परिवर्तन देखे गए हैं । एक प्रयोग से अमेरिकी वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि १२० डेसीबल से तीव्र ध्वनि का प्रतिकूल प्रभाव गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य एवं आने वाली नयी सन्तति के विकास पर पड़ता है । पचासी डेसीबल शोर से व्यक्ति क्रोधित हो उठता है एवं १४० डेसीबल पर कम सुनाई देने लगता है । १७५ डेसीबल के ऊपर शोर पर प्रयोगिक जन्तु मर जाते हैं, मनुष्य के कान का परदा फटने से हमेशा के लिए बहरापन आ जाता है । शहरों में ५० वर्ष से अधिक की आयु के अधिकांश व्यक्तियों की सुनने की क्षमता में भारी कमी पायी गयी है, जबकि दक्षिण अफ्रीका में आज भी शोर प्रदूषण से दूर रहने वाले अधिकांश व्यक्ति एक-दूसरे से काफी दूर होने पर भी बिना तेज बोले बातचीत कर लेते हैं ।

न्यूयार्क के डा० सैमुअल रोजेन का कथन है कि "शहरों में होने वाले ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव से आँखों की पुतलियाँ फैलने लगती हैं, त्वचा पीली पड़ जाती है, आँतों में ऐंठन होने लगती है तथा श्लेष्म झिल्लियाँ निचुड़ने लगती हैं ।" फ्रांस में एक प्रयोग के उपरान्त यह देखा गया कि कार्यालय में होने वाले शोर में २० डेसीबल की कमी से नौ प्रतिशत काम अधिक होने लगा है ।

आज जिस अनुपात में निदान एवं चिकित्सा की सुविधाएँ बढ़ी हैं, उसी अनुपात में व्याधियां भी बढ़ी हैं । जिस तरह फीस के पैसे सस्ते मनोरंजन में देकर विद्यार्थी तुरन्त तो प्रसन्न हो लेता है पर भविष्य में उसे इसके बदले पढ़ाई का एक वर्ष गँवाना पड़ता है । इससे वह अपना भविष्य अन्धकारमय बना लेता है । यही हाल आज विकसित बुद्धि कौशल एवं विज्ञान का हुआ है । सुविधा सम्वर्धन की दृष्टि से हमने ऐसे कदम उठाये जो शोर उत्पन्न करके प्रकारान्तर से भारी अहित उत्पन्न करते हैं । इसी अदूरदर्शिता का मानसिक विक्षिप्तता, बहरापन,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुस्वास्थ्य के रूप में हमें प्रकृति ने यह दण्ड दिया है । यदि समय रहते चेता न गया तो छोटी सी उपेक्षा के द्वारा मिलने वाले घातक परिणामों से सारी मानव जाति विनाश के गर्त में चली जायेगी ।

राष्ट्रपिता बापू ने हमेशा गाँवों को ही भारत का प्रतीक माना था । छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों को ही उन्होंने महत्ता दी थी । यदि इसी तरह हमने भी ग्राम्य सभ्यता को प्रश्रय दिया होता, उद्योगों एवं निवासों को घनीभूत न किया होता तो प्रदूषण के वर्तमान दुष्परिणाम नहीं भोगने पड़ते । विकास ग्राम्य-जीवन की ओर होना चाहिए एवं उद्योगों का विकेन्द्रीयकरण होना चाहिए ताकि स्वास्थ्य पर हो रहे दूषित प्रभाव से मुक्त रहा जा सके ।

बुद्धिमत्ता इसी में है कि ध्वनि का वरदायक पक्ष ही उपयोग में लाया जाय । सन्तुलित, दूरदर्शिता पूर्ण नीति यही कहती है कि विज्ञान का उपयोग अभिशाप न हो । जिन्हें धन ही प्यारा है, वे व्यक्ति भले ही शहरों में रहें पर जिन्हें जीवन की समस्वरूपता पसन्द है वे अपना निवास प्रकृति के सान्निध्य में बनायें । इसी से सर्वत्र आनन्द, उल्लास का संचार हो सकता है । जीवन की गरिमा अहित होने से पूर्व ही रक्षा की व्यवस्था करने में है । यदि आज मानव-जाति का भविष्य सुख-शान्तिमय बनाना है, विक्षिप्त समाज की विभीषिका से विश्व को बचाना है तो वातावरण में व्याप्त कोलाहल से सुरक्षा का प्रबन्ध कर लिया जाना चाहिए । मानवी सभ्यता का विकास दूरदर्शी, शालीन, बुद्धिमान व्यक्तियों पर ही टिका हुआ है । यदि ये ही व्यक्ति समय पर नहीं चेते तो विनाश सुनिश्चित है । प्रकृति के सौन्दर्य एवं वातावरण की शान्ति को बनाये रखने के लिए जितने भी प्रयत्न किए जायें, कम हैं ।

भारत के वायुमंडल में बढ़ती विषाक्तता

बड़े उद्योगों का विस्तार इस दृष्टि से किया गया कि स्वसंचालित यंत्रों के माध्यम से बढ़िया सस्ता माल बनाया, विदेशों को भेजा और वहाँ से दुर्लभ विदेशी मुद्रा का अर्जन किया जायगा । इस पूँजी से आवश्यक उपकरण मँगाने और प्रगति चक्र अधिक तेजी से घुमाने में अधिक मदद मिलेगी ।

बात एक दृष्टि से सही है किन्तु उसके साथ-साथ जो अन्य अनेक व्यवधान एवं असमंजस जुड़े हुए हैं वे भी ऐसे नहीं जिनकी उपेक्षा की जा सके । एक हाथ से कमाने और दूसरे हाथ से गँवा देने में व्यर्थ की थकान और निराशा उत्पन्न होती है । यदि कहीं उपार्जन की तुलना में उसी प्रयास से संकट अधिक उत्पन्न होता है, तब तो उन तथाकथित प्रगति प्रयासों को अदूरदर्शिता पूर्ण ही कहा जायगा और निर्धारण कर्त्ताओं पर एकांगी चिन्तन का दोष भी लगाया जायगा ।

देश में बड़े-बड़े उद्योग नगरों में लगे हैं । यह लिससिला औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भिक दिनों में पाश्चात्य देशों से आरम्भ हुआ । उन परिस्थितियों में उनके लिए यही सम्भव भी था । यातायात के साधन, विद्युत् उत्पादन, जलाशय आदि की दृष्टि से बड़े शहर ही उन दिनों सुव्यवस्थित थे । फिर उद्योग विस्तार में निरत व्यक्ति एवं तन्त्र भी वहीं रहते थे और अपनी पहुँच के अन्तर्गत समीपवर्ती क्षेत्र में ही उन प्रयत्नों को लगाना एवं चलाना चाहते थे ताकि वे अधिक अच्छी तरह संचालन कर सकें ।

पिछली शताब्दियों में औद्योगिक विकास का क्रम इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, जापान, फ्रांस जैसे कुछेक इस क्षेत्र के अग्रणी देशों से आरम्भ हुआ । उनकी सफलता देखते हुए अन्य देशों ने भी अनुकरण किया और अपने-अपने यहाँ उसी ढाँचे ढर्रे को अपनाते हुए वैसा ही कदम बढ़ाया । भारत भी उनमें से एक है । अनुकरण में बड़े उद्योग लगाने और शहरों में खड़े करने की बात इस देश की परिस्थितियों के उतने अनुकूल नहीं थी जितनी कि पाश्चात्य देशों की । वहाँ आबादी थोड़ी थी । मजदूरों का अभाव था । देहाती क्षेत्रों में खुशहाली की कमी नहीं थी । इसलिए उनके लिए कम मजदूरों वाले स्वसंचालित कारखानों की आवश्यकता थी । साथ ही निर्यात के लिए बन्दरगाहों की भी । इसलिए उन्होंने यदि इस विस्तार के लिए वैसी अनुकूलता वाले स्थान चुने तो उन दिनों का उनका निर्णय उचित ही कहा जायगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत की स्थिति भिन्न है । इस देश का ७८ प्रतिशत जनसमुदाय छोटे देहातों में बसा हुआ है । शहरों में मात्र २२ प्रतिशत जनता रहती है । केन्द्र स्थान होने से शहरी सुविधा एवं विकास प्रक्रिया सहज ही बढ़ी-चढ़ी रहती है अस्तु वहाँ का विकासक्रम अपने साथ ही अपनी गति से चलता रहता है । आवश्यकता इस बात की थी कि देहातों की ओर ध्यान दिया जाय । वहाँ की गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी एवं पिछड़ेपन को देखते हुए असली भारत की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखा जाना चाहिए था और उद्योगों को लगाते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए था कि विदेशी मुद्रा कमाने के लालच को गौण और देश के सुविस्तृत क्षेत्र में फैले हुए जनसमुदाय को गरीबी की रेखा से भी नीची स्थिति से ऊँचा उठाने के लिए उन क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना को प्राथमिकता देने का दृष्टिकोण अपनाया गया होता ।

उत्पादन की खपत विदेशों में हो और विदेशी मुद्रा मिले । इस निर्धारण की तुलना में यह चिन्तन भी बुरा नहीं है कि विभुक्षित देशवासियों को काम मिले । उनका स्तर ऊँचा उठे और नये उत्पादन को उन्हीं की आवश्यकता पूरी करने में खप जाने का अवसर मिले । विदेशी मुद्रा के अभाव में भी किसी प्रकार काम चल सकता है पर देशवासियों के दोनों हाथों को काम देने की आवश्यकता को उपेक्षित नहीं रखा जा सकता । भारत में औद्योगीकरण की नीति वही होनी चाहिए थी । आरम्भिक अनुकरण से समुन्नत देशों की नकल की गई तो हर्ज नहीं, बाद में उस क्रम को चलने नहीं दिया जाना चाहिए और छोटे कस्बे बसाकर वहाँ छोटे-छोटे ऐसे उद्योग लगाये जाने चाहिए थे जिनकी उपज उन्हीं क्षेत्रों में खप जाती । अनावश्यक उत्पादन होता तो उसका एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में परिवर्तन विनिमय का क्रम चलता रहता । इस आधार पर परिवहन का विस्तार होता और सड़कें बनाने का ऐसा ढर्रा चल पड़ता जिनके आधार पर देहात उतने पिछड़े न रहते जितने अब है ।

इस उपक्रम में शहरों की आबादी उतनी न बढ़ती जितनी इन दिनों बेहिसाब बढ़ रही है और निवास, सफाई आदि के साधन न मिल सकने के कारण कष्ट सहने,स्वास्थ्य गँवाने के अतिरिक्त अनेकानेक प्रकार की विकृतियाँ भी उत्पन्न कर रही है । बड़े उद्योगों के क्षेत्र में काम मिलने की आशा से बेरोजगारी से संत्रस्त देहाती क्षेत्र के लोगों का शहरों की ओर दौड़ना स्वाभाविक है । जहाँ उद्योग बढ़ेंगे वहीं काम मिलेगा ही । इस चिन्ता में बड़े औद्योगिक शहरों की आबादी इतनी बढ़ी, जिसने वहाँ की प्रगति में सहायक होने के स्थान पर अनेकानेक प्रकार के ऐसे संकट खड़े कर दिए जिनसे निपटना अब अत्यधिक कठिन हो रहा है ।

भारत के वायुमण्डल में संसार के अन्य स्थानों की अपेक्षा ऑक्सीजन की मात्रा बहुत अधिक है । प्राणवायु की बहुलता के कारण भारतीयों की जीवनीशक्ति, विचारणाएँ सर्वोत्कृष्ट मानी गई हैं । जीवनीशक्ति की वजह से ही कभी भारत विश्व गुरु के पद पर आसीन था । ऑक्सीजन और मीथेन की अधिकता को वैज्ञानिकों ने प्रमाणित करके यह सिद्ध किया है कि धरती पर जीवन की शुरूआत भारत से हुई है । ऑक्सीजन की अधिकता भी जीवन के प्रारम्भ का प्रमाण है । हर्पीन जो पौधों द्वारा विसर्जित होती है—इस ओर संकेत करती है कि जीवन की शुरूआत जंगलों से हुई न कि रेगिस्तान से ।

ऐसे प्राणवायु युक्त भारतीय वायुमण्डल—वातावरण में अब क्रमशः अधिक विषाक्तता की मात्रा बढ़ती जा रही है और निकट भविष्य में उसके कष्टकारक प्रतिफल उत्पन्न करने वाला माहौल बन रहा है ।

पिछले दिनों भारतीय विज्ञान सम्मेलन में सम्मिलित भारतीय वैज्ञानिकों ने इस तथ्य का उल्लेख किया कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का पर्यावरण पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ रहा है । डा० ए० के० चौधरी ने बताया कि अनुसन्धानों से पता चला है कि पुरुषों में प्रजनन क्षमता समाप्त होने का आंशिक कारण दूषणकारी रसायनों द्वारा मानव कोशिकाओं में पैदा किए जाने वाले असामान्य परिवर्तन है ।

डॉ० सुभाषदत्त और जे० जे० घोष ने बताया कि कलकत्ता के पर्यावरण में सीसे से उत्पन्न दूषण भयावह स्थिति तक पहुँच गया है । सड़कों के किनारे के पेड़-पौधों में पर्याप्त मात्रा में सीसा उपलब्ध है । यह स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है । सब्जियों में बढ़ी हुई मात्रा में नाइट्रेट अधिक मात्रा में आमाशय में विघटित हो जाते हैं और रासायनिक यौगिकों का रूप धारण करके कैंसर पैदा करते हैं । खाद्यान्नों की सुरक्षा में जो रसायनों का प्रयोग होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है वे उबालने पर विघटित होकर विषाक्त हो जाते है ।

कलकत्ता के डॉक्टर वनीगजरा ने डी०डी०टी० आदि रसायनों से उत्पन्न हानियों के संदर्भ में कहा है कि जो चिकनाई खाने में प्रयोग होती है उसमें प्रयुक्त डी०डी०टी० रसायन बहुत खतरनाक हो जाता है । इसका प्रभाव कोशिकाओं पर होने लगता है ।

वैज्ञानिकों के अनुसार औद्योगिक प्रदूषण के कारण गंगा और अन्य नदियों का जल विषाक्त हो रहा है । जिन कारखानों में पावर अल्कोहल तैयार होता है वे अपने समीपवर्ती कुओं तक के जल को दूषित कर देते है ।

वनस्पति वैज्ञानिकों ने उल्लेख किया कि अवांछित वृक्षों के आरोपण का भी सार्वजनिक स्वास्थ्य पर बहुत खतरनाक प्रभाव पड़ेगा यदि इसी तरह क्रम चलता रहा । पौधों के पराग से वायुमण्डल विषाक्त हो जाता है और एलर्जी से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ पैदा करता है । गत दिनों कई ऐसी बीमारियाँ प्रकाश में आई है जो पौधों की गन्ध पराग, पुष्प, त्वचा आदि की एलर्जी से ही हुई हैं । वैज्ञानिकों का कथन है कि इसके मूल में भी धरती का रासायनिक प्रदूषण है ।

विश्व में जिस क्रम से जनसंख्या वृद्धि हो रही है उससे अनेक गुनी समस्या पर्यावरण प्रदूषण की, सभी राष्ट्रों के सामने सुरसा की तरह बढ़ रही है । मनुष्य ने अपनी बुद्धि, वैभव, प्रतिभा के सहारे अनेकों कल-कारखाने लगाए है जिनसे लाभ तो हुआ ही साथ ही मानव सभ्यता भी रोगग्रस्त होने लगी है ।

भारत के कई महानगरों में वायु प्रदूषण खतरे की सीमा से भी ऊपर जा पहुँचा है । नागपुर स्थित केन्द्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य इन्जीनियरिंग संस्थान के सर्वेक्षणानुसार दिल्ली के वायुमण्डल में सल्फर डाईऑक्साइड की मात्रा ०.२२३ माइक्रोग्राम प्रति वर्ग मीटर है और कलकत्ता में ०.७१ माइक्रोग्राम । जबकि इसकी मात्रा ०.१ माइक्रोग्राम से अधिक किसी भी स्थिति में नहीं होनी चाहिए । अति विकसित और औद्योगिक क्षेत्र में अग्रणी अमेरिका जैसे देश में इसकी मात्रा ०.१ माइक्रोग्राम, सोवियत संघ और पश्चिमी जर्मनी में ०.०५ माइक्रोग्राम निर्धारित की गई है ।

दिल्ली के कारखानों और तापघरों से निकलने वाली धूल की मात्रा सन् १९७१ में ८११ टन प्रति वर्गमील और कलकत्ता में ५९० टन प्रति वर्गमील पाई गई थी, जबकि योरोपीय देशों में धूल की यह मात्रा १५० से २०० टन प्रति वर्गमील होती है । यही वह कारण है जिससे औद्योगिक नगरों में निवास करने वाले लोगों को श्वांस, फेफड़े और गले के रोगों से अधिकांशतः ग्रस्त पाया जाता है । औद्योगिक शहरों में सबसे ज्यादा धुआँ आँख, फेफड़ों और त्वचा के लिए बहुत ही नुकसानदायक होता है । मौलाना आजाद मेडीकल कालेज के डॉक्टर वी०पी० सिन्हा और डॉ० एस० पाण्डे ने इस सम्बन्ध में एक प्रयोग परीक्षण किया है । उन्होंने एक कुत्ते को प्रति दिन १५ मिनट तक डीजल का धुंआँ सुंघाया । परिणाम यह निकला कि कुछ सप्ताह बाद ही उसकी आँखों, फेफड़ों में गहरे घाव हो गये और छठे सप्ताह में उसकी मृत्यु हो गई । इसी प्रकार एक दूसरे कुत्ते को मिट्टी के तेल का धुआँ १५ मिनट प्रतिदिन सुंघाया गया । इसका भी वही हाल हुआ और वह दस सप्ताह में मर गया ।

कोयला और खनिज तेलों के जलने से उत्पन्न वायु प्रदूषण ऑक्सीजन को भी अपने में समाहित करता जा रहा है । भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने अपने एक अध्ययन में कहा है कि १९१० से लेकर अब तक वायु मण्डल की ऑक्सीजन में .००५ प्रतिशत की कमी आई है । साथ ही कार्बन डाईऑक्साइड में सन् १९०० से लेकर अब तक १३ प्रतिशत की वृद्धि हुई है । ऑक्सीजन की कमी और कार्बन डाईऑक्साइड की बढ़ोत्तरी से पृथ्वी के तापमान में १.५ डिग्री सेंटीग्रेड की वृद्धि हुई है ।

कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाईऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन औद्योगिक उत्पादनों से उत्पन्न धूल व धुएँ ने वातावरण को इतना विषाक्त बना दिया है जिसमें प्राणिसमुदाय क्या, जड़ वस्तुएँ भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहीं । ये जहरीली गैसें जहाँ आदमी को मारती हैं वहीं फसलें भी इसके प्रभाव से नष्ट हो जाती हैं, कपड़ा कमजोर और फीका पड़ जाता है, चमड़ा और कागज भुरभुरा जाता है, रबर लचीलापन खोकर चटक जाती है, कंक्रीट व इमारती पत्थर को क्षय रोग लग जाता है । योरोप की कई सुन्दर संगमरमर की प्रतिमाएँ इन गैसों के प्रभाव से अपने अनुपम सौन्दर्य को खो चुकी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रदूषण का प्रभाव पशु-पक्षियों से लेकर लोहा, लकड़ी और पत्थर तथा मनुष्यों पर भी होता है और जिस धीमी गति से होता है उसे आँखें नहीं देख पातीं । समग्र कलाकृति के नष्ट होने पर ध्यान जाता है कि इसे किसने नष्ट कर दिया ।

जयपुर के संस्थापक सवाई माधोसिंह द्वितीय (१६९९-१७४३) की छतरी प्रस्तर शिल्प की दृष्टि से उत्तम मानी जाती है । ऐसा कहा जाता है कि ३०० शिल्पकारों द्वारा १८ वर्षों तक नियमित कार्य करने पर इतना भव्य निर्माण सम्भव हो सका । इसमें विभिन्न मुद्राओं नर्तकी, ऊँट, हाथी, मेले-दशहरों के जुलूस, देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ और जयपुर राजघराने के आठ अन्य राजाओं की समाधियाँ भी हैं । किन्तु प्रदूषण की मार से अब क्षय रोग के रोगी की तरह इनका भी अन्त हो रहा है । कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि वर्ष १९५७ तक प्रदूषण इतना तीव्र स्पष्ट नहीं होता था । तब उन समाधियों के चारों ओर घने वृक्ष, घास के लॉन, फूलों की क्यारियाँ सजी रहती थीं किन्तु १९५७ में राज्य सरकार के संरक्षण में आने के बाद न अब वहाँ पेड़ हैं न बगीचे न फूल न क्यारियाँ । जयपुर की जनसंख्या भी दूने से अधिक हुई है और कल-कारखानों का विकास हुआ है । अतः ३०० वर्षों के अन्तराल में प्रदूषण का प्रभाव इन छतरियों, स्मारकों पर स्पष्ट देखा जा सकता है ।

पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ाने में जो भी अग्रणी रहे हों पर उसका दुष्परिणाम सभी को भुगतना पड़ेगा । विश्व विवेक की दृष्टि से विशालकाय कल-कारखानों को लगाने वालों को दोषी ठहराया जाएगा भले ही उनको लगाते समय वैसा इरादा न रहा हो । हो सकता है कि आगे ऐसी विकट विभीषिकाएँ आने की बात इन दिनों न सोच सके हों । इसलिए उनकी तत्कालीन मनःस्थिति और परिस्थितियों को देखते हुए दोष दूर किया जा सके पर आज जो संकट विद्यमान है उसका समाधान तो खोजना ही होगा । विशेषतया इस सन्दर्भ में हम भारतवासियों को अपनी स्थिति का पर्यवेक्षण करना ही चाहिए और समय रहते संकट से उबारने वाली जागरूकता का परिचय देना चाहिए ।

अब तो साँस लेना भी दूभर हो जाएगा

मानव जीवन सफल और समुन्नत हो, इसके लिए प्रकृति ने अनेक साधन उपलब्ध किये हैं । उनका सदुपयोग करने पर जीवन निर्वाह में आसानी एवं दुरुपयोग करने पर जीवन संकट आ खड़ा होता है । वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण जानलेवा स्थिति में आ पहुँचा है ।

रसायन प्रदूषण के सम्बन्ध में पश्चिम जर्मनी के एक सर्वेक्षण संगठन ने जानकारी दी है कि डी०डी०टी० जैसी कीटनाशक दवाओं का उपयोग करने से कीड़े तो मरते ही हैं इसके साथ ही चार सौ कृषि उपयोगी कीट भी मर जाते हैं । २७० प्राकृतिक जड़ी-बूटियों में से १४ जड़ी-बूटियाँ इसी के दुष्प्रभाव से नष्ट हो गयी हैं । विश्व में आज ३५० से १५०० के लगभग ऐसे ही विषैले पदार्थों का उत्पादन हो रहा है जिनका उपयोग भी कष्टकारक सिद्ध हुआ है ।

लेड (सीसा) शरीर में मुँह और साँस के द्वारा जाता है । साँस के रूप में शरीर में पहुँचा लेड सीधे रक्त में पहुँचता है जिसके कारण अर्धविकसित बच्चों की संख्या बढ़ रही है । बच्चों में पेट दर्द, मिचली की शिकायत और अधिक विषाक्तता बढ़ने पर गुर्दे एवं स्नायुतंत्र को क्षति पहुँचती है । अंत में वे "एनसेफेलाइटिस" जैसे भयंकर रोग के शिकार हो जाते हैं । बड़ों में पेट दर्द, कब्ज, एकाग्रता में कमी, स्मरण शक्ति की दुर्बलता, अनिद्रा, बेचैनी और चिड़चिड़ाहट, तनाव जैसे दुष्प्रभाव सामने आये हैं । रूसी विशेषज्ञ कोबा पातेरिया के अनुसार बढ़ता "हार्ट अटैक" भी लेड विषाक्तता का ही परिणाम है ।

वायु प्रदूषण भी कम घातक नहीं है । वायुमण्डल में विद्यमान गैसों के अनुपातों में गड़बड़ी हो जाने के कारण ही यह संकट सामने आ खड़ा हुआ है । उनका प्रभाव अलग-अलग दुष्प्रभावों के रूप में सामने आ रहा है । उदाहरणस्वरूप वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा ०.३२ प्रतिशत है । इसकी अधिकता से सूर्य का प्रकाश और विद्यमान विकिरण पृथ्वी तक नहीं पहुँच

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाते तथा पृथ्वी की गर्मी अन्तरिक्ष में नहीं जा पाती । जिसके कारण पृथ्वी का तापक्रम बढ़ता जा रहा है । अगले दस वर्षों में विश्व का तापक्रम चार डिग्री फैरनहाइट अधिक बढ़ जाने का भय है । कार्बन मोनोक्साइड भी कम हानिकारक नहीं है । इसकी अधिकता मनुष्य के रक्त में विद्यमान हीमोग्लोबिन की मात्रा को कम कर देती है जिसके कारण ऑक्सीजन कम मात्रा में पहुँच पाती है । परिणाम स्वरूप शारीरिक, मानसिक, शिथिलता, श्वाँस और स्नायु संबंधी क्रॉनिक रोग सामने आते हैं । इसी तरह वातावरण में बढ़ती जा रही सल्फर डाइऑक्साइड श्वसन तंत्र में उत्तेजना और नाइट्रस आक्साइड रक्त विकार के अलावा बच्चों में इन्फ्लुएन्जा जैसे रोग उत्पन्न करती है ।

एक सर्वेक्षण के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका अकेले ही प्रत्येक वर्ष १४ करोड़ ७० लाख टन कार्बन मोनो ऑक्साइड, २ करोड़ ५० लाख टन धूल के कण, ३ करोड़ ४० लाख टन सल्फर डाइऑक्साइड और ३ करोड़ ४० लाख टन हाइड्रोकार्बन फेंक कर वायु विषाक्तता को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है । जापान भी इसमें पीछे नहीं है । पिछले दिनों व्यू शू द्वीप के पूर्व में मीनीमाता खाड़ी में फैक्ट्री द्वारा फैलाये गये प्रदूषण से एक भयंकर महामारी फैली जिसका प्रमुख कारण शरीर में पारे की मात्रा का अधिक हो जाना था । इस बीमारी के प्रारम्भ में शरीर के अंग तथा ओठ सुन्न हो जाते हैं । कुछ दिन बाद स्पर्श बोध,बोलने,सुनने की सामर्थ्य कम होने लगती है, रोगी नेत्र ज्योति को खो बैठता है और अन्त में उसे मृत्यु के मुख में जाना पड़ता है । उसका कोई उपचार चिकित्सकों को सूझ नहीं पड़ता है । ऐसी कितनी ही फैक्ट्रियाँ विष उगलती और उसे वायुमण्डल में फैलाती चली जा रही हैं । क्या वायुमण्डल को परिशोधित करने के लिए वैज्ञानिकों के सामने कोई विकल्प है ? इस पर वे निरुत्तर हो जाते हैं । कुछ मात्रा में प्रकृति पेड़-पौधों,वृक्षों के द्वारा पर्यावरण परिशोधन में मदद कर सकती थी लेकिन मानवी दुर्बुद्धि ने उसको भी विनष्ट कर प्रकृति को पंगु बना दिया ।

भारत भी इस क्षेत्र में किसी से पीछे नहीं है । यहाँ प्रति वर्ष ३ लाख २० हजार टन तम्बाकू को सुखाने के लिए १२ लाख ८६ हजार एकड़ भूमि में लगे वृक्षों का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है । अपने देश में प्रतिदिन १० करोड़ सिगरेट तथा ४४ करोड़ बीड़ी बनायी जाती हैं । जबकि दस हजार सिगरेटों की तम्बाकू पकाने, तैयार करने के लिए १०० टन लकड़ी की आवश्यकता होती है । इस प्रकार विषाक्तता और खपत को देखते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने भारत, पाकिस्तान, चीन, पश्चिम एशिया अमेरिका एवं कनाडा आदि देशों को चेतावनी दी है कि पाँच वर्षों के भीतर इन देशों का एक तिहाई क्षेत्र कृषि की दृष्टि से बंजर हो जायगा । उनका कहना है कि यूरोप की लगभग ४ प्रतिशत, फ्रांस की १ करोड़ एकड़ जमीन तथा संसार का ३० हजार एकड़ भूखण्ड प्रतिवर्ष रेगिस्तान के रूप में बदलता जा रहा है । ये सभी मनुष्यकृत विषाक्तता के दुष्परिणाम है ।

मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक कार्यक्षमता की कमी का कारण खोजने की दृष्टि से डॉ० हॉकिन्स ने एक प्रयोग किया । इसके लिए उन्होंने उन ऑफिसों को चुना जिनके कर्मचारी सिर दर्द और थकान की शिकायत थोड़ा-सा कार्य करने के बाद करने लगते थे । उनमें उन्होंने एक आयनीकरण यंत्र लगाया और तीन माह तक अवलोकन करते रहे । अन्त में निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि जो कर्मचारी कम काम करने में समर्थ थे, वे भी शिफ्ट के रूप में २४ घण्टे काम करने लगे, साथ ही उनकी चुस्ती स्फूर्ति यथावत बनी रही । उनका विचार है कि गैसों को आयन के रूप में बदलने के लिए ब्रह्माण्डीय किरणें ही समर्थ हैं, लेकिन पर्यावरण प्रदूषण के कारण विषैली गैसों की एक मोटी पर्त आकाश में छायी हुई है जिसके परिणामस्वरूप वे किरणें पृथ्वी तक कुछ ही मात्रा में पहुँच पाती हैं और गैसों को आयनों के रूप में बदलने का काम करती हैं । कार्यक्षमता की कमी और सिर दर्द के कारण बताते हुए उन्होंने जानकारी दी कि ऋण आयनों की कमी से सिर दर्द, दमा, बुखार और साँस के अन्य रोगों से मनुष्य ग्रसित हो जाता है ।

इस प्रकार के वायु प्रदूषण यदि कम न किये गये, तो अगले कुछ वर्षों बाद मनुष्य को साँस लेना और जीवित रहना भी मुश्किल हो जायेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रदूषण रूपी महा व्याधि से बचाव कैसे करें ?

मनुष्य की गतिविधियाँ आजकल ऐसी चल रही हैं कि वह तात्कालिक लाभ के लिए वातावरण एवं प्रकृति के साथ किसी भी मूल्य पर खिलवाड़ करने पर उतारू है । वह प्रतिवर्ष विषाक्तता उत्पन्न करने वाले अनेकों तत्व बहुत अधिक मात्रा में पर्यावरण में भरता जा रहा है । वायु, जल, मिट्टी आदि सभी विषैले पदार्थों से संतृप्त प्रायः हो चुके है । वायुमण्डल में बढ़ता हुआ धुआँ जहाँ एक ओर मानवी स्वास्थ्य को क्षीण कर रहा है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक संतुलन भी बिगाड़ रहा है । तात्कालिक लाभ के उद्देश्य से की गयी वातावरण के साथ खिलवाड़ भयावह संकट की भूमिका ही बना रही है ।

सर्वेक्षणकर्त्ताओं के अनुसार प्रदूषण फैलाने में औद्योगिक इकाइयाँ सबसे आगे हैं । चिमनियों से निकलने वाले धुएँ में रेडियोधर्मी तत्व, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड आदि ऐसे तत्व मिले होते हैं, जिनका सीधा प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता और अनेकानेक शारीरिक, मानसिक बीमारियाँ पैदा करता है । गरीब एवं पिछड़े राष्ट्रों की अपेक्षा धनी एवं विकसित देश इस तरह के उत्पादनों में अग्रणी हैं । अकेला अमेरिका प्रतिवर्ष १६०८ मिलियन टन सल्फर डाइऑक्साइड, ४ मिलियन टन नाइट्रस ऑक्साइड एवं ५०६ मिलियन टन अन्य विषाक्त तत्व वायुमण्डल में विसर्जित करता है । न्यूक्लियर पावर प्लाण्टों द्वारा छोड़े गये प्रदूषण का अनुपात अमेरिका में १० गुना है तो ब्रिटेन में २० गुना। इसी तरह कारखानों से निकलने वाली विषाक्तता के अतिरिक्त रसोई का धुआँ भी पर्याप्त मात्रा में वातावरण में भरता जाता है । वनस्पतियाँ भी धीरे-धीरे सड़ती और मीथेन गैस उत्पन्न करती है । इनका असर जनस्वास्थ्य पर पड़े बिना नहीं रहता ।

अनुसंधानकर्त्ता स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि वायुमण्डल में बढ़ती हुई विषाक्तता का प्रतिफल पिछले दिनों मानवी स्वास्थ्य और वनस्पतियों पर बुरे प्रभाव के रूप में सामने आया है । इस दुष्प्रभाव से दोनों ही वर्ग कई प्रकार के रोगों से ग्रसित होकर अनुपयोगी बन गये हैं । उनका जीवन काल घटा है और कार्यक्षमता में भारी कमी आयी है ।

देखा गया है कि औद्योगिक संयंत्र जो धुआँ निकालते हैं, वह समीपवर्ती क्षेत्रों पर अधिक मात्रा में असर तो डालते ही हैं, हवा के प्रवाह के अनुरूप उनका हल्का प्रभाव दो-सौ मील की दूरी तक पड़ता है । यह असर शरीर के अवयवों में सबसे अधिक फेंफड़ों को प्रभावित करता है । खाँसी, दमा, घुटन जैसी बीमारियाँ उत्पन्न करने में फैक्ट्रियों से निकलने वाली गैसें असाधारण रूप से असर छोड़ती पायी गयी हैं । पेड़ों पर रहने वाले पक्षी समूह तक इस धुएँ से घुट कर बीमार रहने लगे हैं । वर्षा के साथ यह गैस धरती पर आती हैं, तो उनका जहरीला अंश उगने वाली घास एवं फसलों में समा जाता है । इस घास को खाने वाले पशुओं को भी कई प्रकार की बीमारियाँ लग जाती हैं । इनका दूध पीने या माँस खाने वाले भी विषाक्तता से प्रभावित होते हैं ।

चिकित्सा मनोविज्ञानियों ने गंभीर खोजों के बाद पाया है कि शारीरिक अवयवों को रक्त-माँस को क्षति पहुँचाने के अतिरिक्त मनुष्य के चिन्तन एवं स्वभाव पर भी इस प्रदूषण का बुरा प्रभाव पड़ता है । मनुष्य जो सोचता है, उसमें अनैतिकता का बाहुल्य होता है । ऐसे काम करने को मन चलता है, ऐसी बातें मस्तिष्क में परिभ्रमण करती है, जो नैतिक मर्यादाओं के अन्तर्गत नहीं आतीं । अन्वेषण से ज्ञात हुआ है कि प्रदूषण से प्रभावित लोगों में अनीति अपनाने की, कुकर्म करने की, चोरी-बेईमानी, छल करने की इच्छायें उठती और योजनायें बनती रहती हैं । भले ही वे अवसर या साहस के अभाव में कार्यान्वित न हो सकें । ऐसी कुकल्पनायें उठती रहती हैं, जिन्हें यदि व्यवहार में लाया जा सके, तो भयंकर विग्रह उठ खड़े हों और भेद खुल जाने पर जेल जाने से लेकर सामाजिक प्रताड़ना सहने की यातना भुगतनी पड़े ।

अनुसंधानकर्त्ताओं ने पाया है कि जिन क्षेत्रों में अत्यधिक प्रदूषण छाया चला जा रहा है, उनमें उत्तेजना अन्य विग्रहों की भरमार रहती है । लोग आपस में लड़ते-झगड़ते रहते है और वर्ग विद्वेष अन्य उपद्रव खड़े करते हैं । तनिक-सी बात पर भड़क उठना और मरने-मारने पर उतारू हो जाना उन क्षेत्रों में बहुलता से देखा जाता है, जिनमें प्रदूषण की अधिकता रहती है। कारखानों में हड़तालें, चोरियाँ और तोड़-फोड़ की घटनायें प्रायः ऐसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्रों में अधिक मात्रा में घटित होती हैं । वाहनों की दुर्घटनायें भी इन्हीं क्षेत्रों में अधिकतर मानसिक संतुलन के कारण होती देखी जाती हैं । अनायास बुढ़ापे का आ धमकना, निराशा, उदासी, उच्च रक्तचाप जैसी मनोकायिक बीमारियाँ ऐसी हैं, जो दूषित वातावरण में सर्वाधिक अनुपात में पनपती हैं ।

अच्छा हो, प्रगति के लिए आधुनिकतम यंत्रों का प्रयोग जहाँ तक जरूरी हो तभी किया जाय एवं प्रदूषण करने वाले बड़े यंत्रों पर रोक लगा दी जाय । जरूरत भर का उत्पादन विकेन्द्रीकृत गृह-उद्योगों द्वारा भी होता रह सकता है । यही प्रदूषण रूपी महाव्याधि का एकमेव उपचार है ।

वातावरण प्रदूषण का क्या कोई समाधान है ?

ईंधन जलने, औद्योगिक कल-कारखानों से धुआँ निकलने और विभिन्न कारणों से वातावरण-प्रदूषण की आजकल बड़ी चर्चा है । सामान्य कारणों से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण यो तो प्रकृति अपने आप ही शुद्ध करती है, पर उस शुद्धि चक्र में मानव निर्मित एक व्यवधान उत्पन्न हो गया है । इसके कई कारण गिनाये जाते है, जिनमें तीन प्रमुख हैं । पहला तो यह कि आजकल रेल, मोटरों और कल-कारखानों में ज्वलनशील ईंधन जलाया जाता है जैसे पेट्रोल, मोबिल आयल, डीजल आयल और मिट्टी का तेल । इन रासायनिक ईंधन के जलने से कई तरह की गैसें निकलती हैं जो वायुमण्डल में घुलकर वातावरण को दूषित करती हैं ।

दूसरा कारण रासायनिक मिश्रणों का उपयोग है । दवायें, कीटाणुनाशक रसायन, रासायनिक खाद जैसी वस्तुओं का इस्तेमाल तत्काल भले ही कोई लाभ दर्शाता हो पर वे उपभोग के बाद सम्पर्क में आने वाली वस्तुओं का प्रत्येक कण विषाक्त कर देती है । यह विषाक्तता भी अपना प्रभाव वातावरण पर डालती है ।

तीसरा बड़ा कारण जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है जनसंख्या की वृद्धि । न्यूक्लियर रिएक्टर बढ़ी हुई जनसंख्या उनके द्वारा श्वांस-प्रश्वांस में छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड तथा परमाणु परीक्षणों के कारण वातावरण में उत्पन्न हुई हलचल पर्यावरण को दूषित करती है । इन कारणों के साथ और भी अनेक कारण हैं जो वातावरण को दूषित करते हैं । यह समस्या इतनी चिन्तनीय हो गई हैं कि वैज्ञानिकों के लिए कुछ समय बाद प्राणवायु कहाँ से मिलेगी यह विकट पहेली बन गई है ।

विशुद्ध प्राणवायु का अभाव ही एकमात्र हानि नहीं है । वातावरण प्रदूषण से होने वाली हानियों में से कई को तो अभी भी प्रत्यक्ष होते देखा जाने लगा है । एक छोटा सा दुष्प्रभाव इस तथ्य के प्रकाश में देखा जा सकता हैं कि आजकल 'सरदर्द'' की शिकायत बहुत बढ़ती जा रही है । दूसरे रोगों की औषधियाँ जितनी मात्रा में बिकती हैं उन सबको मिलाकर भी उनसे भी ज्यादा सरदर्द मिटाने वाली गोलियों की बिक्री होती है । विज्ञान के शोधकर्त्ता सरदर्द की बढ़ती शिकायत के कारणों की खोज करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि यह शिकायत मात्र वातावरण के दूषित होने से बढ़ी है । सामान्य रूप से यों भी समझा जा सकता है कि शहर में रहने वाले लोगों को जहाँ हर शाम सरदर्द मिटाने वाली गोलियाँ निगलनी पड़ती हैं वहीं ग्रामीण जनता को सरदर्द इतना नहीं सताता क्योंकि नगरों में दिन भर ट्रक,बस और मोटरों की दौड़ में निकलने वाली गैसें परिवेश की ऑक्सीजन को दूषित कर डालती है और प्रत्येक नागरिक को आवश्यकतानुसार ऑक्सीजन नहीं मिल पाती और वह दूषित वायु उसके फेंफड़ों, मस्तिष्क तथा शरीर के अन्य अंगों को तनावग्रस्त बना देती है । एक विज्ञान शास्त्री के अनुसार ''परिवेश प्रदूषण प्रत्येक नागरिक की रक्त संचार प्रणाली पर अपना दुष्प्रभाव डालता है और उसमें थका हुआ स्नायुमंडल अपनी व्यथा 'सिरदर्द' के संकेत सूचित करने लगता हैं ।

परिवेश प्रदूषण केवल पृथ्वी पर ही होता हो ऐसी बात नहीं हैं । नदियों, तालाबों, झीलों और समुद्रों का पानी भी अशुद्ध होता जा रहा है । जलपोतों द्वारा समुद्र में विसर्जित किया हुआ गन्दा तेल, नदियों में बहायी गयी कल-कारखानों से निकली व्यर्थ चीजें और गन्दगी नदियों और समुद्र के पानी को बड़े भीषण रूप में दूषित कर देती है और बड़े शहरों और महानगरों में लगे औद्योगिक प्रतिष्ठानों को तो अपनी गन्दगी बहाने का सर्वोत्तम स्थान पास बहने वाली नदियाँ ही दीख पड़ती हैं । उनकी गन्दगी नदियों के पानी को इस तरह खराब कर देती है कि वह पानी उपयोग में आने जैसा रह ही नहीं जाता । कुछ दूर बहकर गन्दगी पानी के साथ मिलकर बहुत कुछ वैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही हो जाती है जैसा कि नदी का जल रहता है और आगे नदी के किनारे पर बसने वाले गाँवों या नगरों के निवासी उसी जल का प्रयोग करते हैं ।

समुद्रों की स्थिति भी ऐसी ही है । बम्बई, मद्रास, कलकत्ता जैसे महानगरों में लगे सैकड़ों बड़े-बड़े उद्योग ही अपनी गन्दगी समुद्र में फैंकते हैं और शहरों की गन्दगी भी उधर ही बहा दी जाती हैं । नदियों के किनारे बसे नगरों में भी बाहर की गन्दगी बहा दी जाती है । इस प्रकार आधुनिक शताब्दी में रहने वाले मनुष्य को न साफ हवा मिल पाती हैऔर न स्वच्छ पानी, अनाज और खाद्य पदार्थों की तो बात दूर है । वे भी दूषित हवा, पानी द्वारा ही तैयार होते हैं तो उनकी शुद्धता भी कल्पना मात्र है । स्पष्ट ही इस प्रदूषण का प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ता हैं ।

प्रदूषण जलवायु को भी असामान्य रूप से प्रभावित करता है । ऋतु वैज्ञानिकों का मत है कि इन दिनों मौसम में जो गम्भीर परिवर्तन अनुभव किये जा रहे हैं परिवेश का दूषण उसका एक बहुत बड़ा कारण है । जन सामान्य भी मौसम को अस्थायी और अनिश्चित अनुभव करता है । कब बारिश हो जाय कुछ ठीक पता नहीं । निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि गर्मी का मौसम गर्मी की तरह ही बीतेगा और यह भी निश्चित नहीं है कि वर्षा ऋतु में पानी गिरेगा ही । कभी गर्मी के दिन भी बारिश की तरह लगते हैं तो कभी वर्षा भी गर्मी की भाँति ही बीत जाती है, प्रकृति अपना चक्र बदल रही है, यह कहने की अपेक्षा यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि हम प्रकृति को अपनी नियति बदलने के लिए बाध्य कर रहे है ।

अनिश्चित वर्षा की भाँति ही जमीन की उर्वरा शक्ति और बीजों की अंकुरण चेतना में भी गम्भीर ह्रास हो रहा है । कभी टिड्डियों से ही फसल को खतरा रहता था । कुछ सामान्य से रोग भी थे जिनसे बचाव का प्रबन्ध भी आसानी से कर लिया जाता था । पर आज ऐसे-ऐसे नये रोग पैदा होते जा रहे हैं जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव तो नहीं दीखता, पर अनाज की पैदावार पर उनका गम्भीर असर पड़ता है । कृषि शास्त्रियों के अनुसार वातावरण के प्रदूषण का अनाज की पैदावार पर इतना गम्भीर असर पड़ रहा है २००० तक विश्व की आबादी के भरण-पोषण की समस्या बहुत विकराल हो उठेगी । रासायनिक खादों और अन्य उपायों द्वारा अनाज का उत्पादन बढ़ाने में कुछ सफलता भले ही मिल रही हो लेकिन तब भयानक घटने लगेगी । जमीन की उर्वरा शक्ति को उत्तेजित कर बाहर निकालने का दुष्परिणाम यह होगा कि एक स्थिति ऐसी आ सकती है जबकि उर्वरा शक्ति चुक जायगी ।

शहरों का ही वातावरण दूषित हो रहा हो और ग्रामीण परिवेश उससे बचा हो यह सोचना भी कल्पना है । वातावरण का प्रभाव हर स्थान पर पड़ता है । अणु परीक्षणों के लिए एकान्त और निर्जन स्थान चुने जाते हैं, वहाँ उत्पन्न हुई विकृतियाँ अन्य क्षेत्रों में भी बड़ी सरलता से संचरण कर जाती हैं और आजकल तो बढ़ता हुआ औद्योगीकरण ग्रामीण आबादी को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है । गाँव के लोग बड़ी तेजी से अपने गाँव छोड़कर शहरों में आ रहे हैं और इस प्रकार गाँवों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ता जा रहा है । श्री स्ट्रांग के मतानुसार तो ग्रामीण जनसंख्या जिस तेजी से शहरों की ओर भाग रही है वह विश्व स्तर की एक समस्या बनती जा रही है ।

जल सम्पदा की सुरक्षा और शुद्धता बनाये रखने के लिए कहा गया है कि आवश्यक होने पर ही उनमें गन्दगी का विसर्जन किया जाय और जो गन्दगी छोड़ी जाय उसके नष्ट होने का भी उपाय किया जाय । इस दिशा में पहला कदम यह उठाने की आवश्यकता अनुभव की गई है कि मछलियों को पकड़ने पर रोक लगा दी जाय । स्मरणीय है मछलियाँ जल की गन्दगी को साफ करती है । कीटाणु और गन्दगी ही उनका मुख्य आहार हैं । ऐसी मछलियाँ भी होती हैं जो मनुष्य की आँख से न दिखाई देने वाले कीटाणुओं को भी खा जाती हैं । उनके विकास को भी जल प्रदूषण रोकने के प्रयासों का एक कार्यक्रम बनाया जा सकता है ।

मिलों, कारखानों का दूषित जल तालाबों और नदियों में न बहाने का भी सुझाव दिया गया है । यदि बहाने की मजबूरी ही हो तो आधुनिक विज्ञान उनके दोषों को नष्ट कर न्यूनतम मात्रा कर देने में समर्थ है । नदियों और तालाबों के जल का समय-समय पर परीक्षण करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहकर उसे हानिकारक सीमा तक न पहुँचने देने की सर्तकता भी बरती जा सकती है ।

वातावरण में व्याप्त होने वाली दूषित वायु को सोखने के लिए वृक्ष-वनस्पति उगाये जा सकते है । विज्ञान के छात्र जानते है कि वृक्ष-वनस्पतियाँ कार्बन डाइऑक्साइड गैस से जीते हैं और जिस प्रकार मनुष्य उच्छिष्ट वायु को प्रश्वांस रूप में कार्बन डाइऑक्साइड गैस छोड़ते है, उसी प्रकार वृक्ष-वनस्पति उच्छ्वास के रूप में ओषजन छोड़ते है । प्राचीन काल में आश्रम और धार्मिक संस्थान-उपासना गृह वन्य स्थलों में इसी कारण रखे जाते थे कि वहाँ ओषजन पर्याप्त मात्रा में मिलती है और ध्यान की एकाग्रता अधिक सम्भव हो जाती है । प्राकृतिक स्थानों पर रोगियों को रहने की आज भी सलाह दी जाती है ।

मानते हैं कि वनस्पति सम्वर्धन और जल जन्तुओं की सुरक्षा ही वातावरण प्रदूषण का एकमात्र उपचार नहीं है । इसके लिए अन्य उपाय भी खोजे जाने चाहिए और परिवेश को स्वच्छ, शुद्ध बनाने का प्रबन्ध करना चाहिए । जब तक हम उस स्थिति में पहुँचें कि परिवेश प्रदूषण की समस्या का हल खोजें—सम्भावित उपायों को तो काम में लाना ही चाहिए ।

प्रदूषण घटाने वाली दूरदर्शिता

दुर्गुणों में दीर्घसूत्रता भी किसी से कम नहीं । समय रहते हानि-लाभों पर विचार न करना, दूरगामी परिणामों पर नजर न डालना ऐसा ही मानसिक प्रमाद है, जिसके कारण मात्र तात्कालिक लाभ ही सब कुछ दीखता है । भले ही उसे अपनाने पर कुछ दिन बाद ही भयंकर त्रास सहना पड़े ।

उदाहरण के लिये नशेबाजी के बहुप्रचलन को देखा जा सकता है । गम-गलत करने के लिये फुरफुरी जैसी क्षणिक उत्तेजना की शक्ति प्राप्ति करने जैसा लाभ सोचकर लोग शराब, तम्बाकू गाँजा, भांग, अफीम उदरस्थ करते रहते हैं । हानि तब समझ में आती है जब शरीर और मस्तिष्क खोखला हो गया होता है । क्षय, कैंसर सरीखे रोग घेर लेते हैं । पैसा चुक जाता है और परिवार बिखर जाता है । समय बीत जाने पर फिर पछतावा भी कुछ काम नहीं आता । आरंभ में मनुष्य नशा पीता है पीछे नशा ही मनुष्य को पीकर चूसे गये नीबू की तरह छूँछ बना देता है । पर दीर्घसूत्रता तो दीर्घसूत्रता जो ठहरी । वह परिणामों के बारे में सोचने नहीं देती । भविष्य का अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं समझने देती । ऐसे ही लोग हैं जो दुष्परिणाम जब चरम सीमा पर पहुँच जाते है तब हाथ-पैर पीटने पर भी कुछ कारगर उपाय निकाल नहीं पाते ।

ऐसे ही विकट प्रश्नों में एक है पर्यावरण प्रदूषण । हवा, पानी, अन्न की शुद्धता को बचाये रहने की बात को ध्यान में रखते हुए मनुष्य को प्रदूषण उगलने वाले कारखाने लगाने और वाहन चलाने चाहिए । पर इस शताब्दी में उस संदर्भ में चरम स्तर की मूर्खता अपनायी गयी है । उद्योगपतियों का अधिक लाभ और सम्पन्नों की सुविधा को ध्यान में रखा गया है पर यह भुला दिया गया है कि इस संदर्भ में बरती जाने वाली अति का वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? प्रदूषण किस अनुपात में बढ़ेगा और कितनी विषाक्तता से अपने शरीर साधनों को भर लेना होगा ? तीव्र विष तुरन्त प्राणहरण कर लेते हैं, इसलिये उनकी भयंकरता ध्यान में रहती है, पर मन्द विषों का प्रभाव किस प्रकार रुग्णता की विपत्ति में धकेलता और आधा आयुष्य कम कर देता है, इसका किसी को ध्यान ही नहीं आता ।

वायु में विद्यमान ऑक्सीजन ही मनुष्य का प्रधान आहार है । उसे धुआँ उगलने वाले दैत्य सटासट उदरस्थ करते चले जाते हैं । हवा में विषैली कार्बन बढ़ती है इसका परिणाम मनुष्य को दीन-दुर्बल ही नहीं बनाता, प्रकृति का संतुलन भी लड़खडा देता है । हर सांस लेने वाला प्राणी विपत्ति में फँसता है । आकाश का संतुलन गड़बड़ा जाता है । बढ़ते हुए तापमान से ध्रुव देशों की बर्फ पिघलती है और धरती के काम आने वाला पानी सरपट दौड़ता हुआ समुद्र में जा पहुँचता है । धरती की उर्वरता भी बाढ़ के साथ ही बह जाती है ।

मनुष्य की असावधानी के कारण उत्पन्न किया गया कारखानों का कचरा नदियों में बहाये जाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं सूझता । विषैले जलाशयों का पानी उसके सभी उपभोक्ताओं के लिये स्वास्थ्य संकट ही नहीं वरन् प्राण संकट भी खड़ा करता है । ऊर्जा और पानी का उपयोग करने में मनुष्य अपना कौशल और बड़प्पन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दिखाता है, फलस्वरूप भण्डारण स्वल्प और खर्च अधिक होने की प्रक्रिया जल संकट खड़ा करती है । भूमिगत जल की असाधारण रूप से खिंचाई करने पर धरती का जल स्रोत धीरे-धीरे नीचे उतरता जाता है और खिंचाई करने पर अधिक परिश्रम से थोड़ी मात्रा में शुद्ध जल हाथ लगता है । ऐसे ही कारणों से वायु प्रदूषण के साथ-साथ जल प्रदूषण भी बढ़ता जाता है । यह अगले दिनों प्यासे मरने की पूर्व तैयारी ही तो है ।

खाद्य संकट का प्रथम कारण तो बढ़ी हुई जनसंख्या के लिये आहार उत्पादन की बढ़ी-चढ़ी आवश्यकता है ही । इस पर भी तुर्रा यह है कि लोगों के स्वाद में गेहूँ, चावल जैसी बहुत पानी पीने वाली और एक वर्ष की मेहनत से हाथ आने वाली फसलें ही भोजन का प्रधान आहार बनती जाती हैं । कन्द और शाकों की मात्रा बढ़ाने की अपेक्षा नकदी देने वाली गन्ना, तम्बाकू आदि फसलों का उत्पादन अधिक होता है । उत्पादन कम और उपयोग अधिक होने की स्थिति में महँगाई बढ़ना स्वाभाविक है । अधिक उत्पादन की ललक में रासायनिक खादों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है । फलतः धरती की उर्वरता और हस्तगत हुए धान्य की पौष्टिकता घटती जा रही है । जनसंख्या वृद्धि और अपव्यय के लिये उभरा उत्साह मूल पूँजी की जड़ पर कुठाराघात ही करेगा और आज नहीं तो कल खाद्य संकट का सामना करना ही पड़ेगा, पर दीर्घसूत्रता भी समय रहते सोचने कहाँ देती है ? मुसीबत आने से पहले उपाय सुझाने वाली विवेकशीलता भी तो घटती ही जा रही है ।

संतुलन को स्थिर रखने में वनों की विशेष भूमिका है प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिये एक-तिहाई भूमि पर वृक्ष रहने चाहिये ताकि वे विषाक्तता का अवशोषण करते रहें । पर हुआ इस सम्बन्ध में भी अनर्थ ही । जलावन, फर्नीचर, आवास आदि के लिये पेड़ इस कदर कटे हैं कि उनकी अनिवार्य संख्या प्रायः आधी से भी कम हो गई है । जंगल कट रहे हैं और उनकी भूमि निवास या कारखाने के लिये काम आ रही है । यह सिलसिला इसी प्रकार चलता रहा तो वन क्षेत्र आगे और भी अधिक घटेगा, फलस्वरूप वर्षा में कमी पड़ेगी । भू-क्षरण होगा । रेगिस्तान पैर पसारते जायेंगे । वन सम्पदा के विनाश के साथ ही भूमि की उर्वरता और जल भण्डारण का अनुपात भी निरन्तर घटेगा । इस प्रकार जीवन के प्रमुख घटक घटते जाने पर अगले दिनों जीवित रह सकना कितना कठिन हो जायगा, यह परिकल्पना कर सकना किसी विचारशील के लिये कठिन नही होनी चाहिए । पर हम हैं, जो आज से आगे बढ़कर कल की सोचने में दीर्घसूत्रता ही बरतते रहते हैं ।

यों आग लगाने वाले को ही उसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिये और उन्हें ही विसंगतियों को प्रोत्साहन देने के लिये दण्ड भुगतना चाहिये । फिर भी प्रश्न तात्कालिक उपाय खोजने का है । इसमें से कम से कम एक पक्ष तो सरकार को अपने कंधे पर उठाना चाहिये । वह प्रदूषण को अति मात्रा में फैलाने वाले कारखानों पर अंकुश लगाये और उन्हें सीमा के अन्तर्गत रहने के लिये भी बाधित करे । पर उस सुयोग के आने तक की प्रतीक्षा में भी तो नहीं बैठा जा सकता । सार्वजनिक क्षति को देखते हुए सर्वसाधारण का भी यह कर्तव्य बन जाता है कि इस विपत्ति की रोकथाम में अपने ढंग से अपने हिस्से का काम करें ।

उपभोक्ता यदि चाहे तो अपने प्रभाव क्षेत्र में यथासंभव रोकथाम तो कर ही सकते हैं । प्रदूषण के केन्द्र बड़े शहरों से आबादी घटाकर उसे कस्बे की दिशा में मोड़ा जाय । ग्रामों को सुविकसित बनाया जा सके, उनमें उद्योगों की व्यवस्था हो सके तो इन दिनों जो आबादी का प्रवाह शहरों की ओर चल रहा है वह उलटकर गाँव की ओर चलेगा, फलतः दोनों क्षेत्रों में बढ़ता अन्तर और सन्तुलन मध्य केन्द्र पर लाया जा सकेगा ।

निर्धूम चूल्हे और सौर ऊर्जा का उपयोग भी ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकता पूरी कर सकता है । वर्षा का पानी बेकार न जाये इसके लिय छोटे-छोटे बाँध या तालाब बनाये जा सकते हैं । इस सस्ते संचय से स्वच्छ पानी की पूर्ति व विद्युत् आपूर्ति का प्रयोजन भी पूरा हो सकता हैं । लकड़ी के स्थान पर लोहे, सीमेण्ट, जिप्सम व फाइबर ग्लास की समन्वित रूप से फर्नीचर व भवन निर्माण में मदद ली जा सकती है । कुटीर उद्योग बड़े कारखानों का स्थान जिस हद तक ले सकें उतना ही प्रदूषण घटेगा । ईंधन कम जलाने व पानी कम खर्च करने का क्रम भी यदि जन स्वभाव में समाविष्ट जो जाय तो समझना चाहिये कि हम दीर्घसूत्रता छोड़कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वच्छन्दता के उस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं जो अपने लिये लाभदायक ही लाभदायक होगा ।

अब पर्जन्य नहीं, अम्ल बरसेगा

क्रिया की प्रतिक्रिया का नियम प्रकृति का अकाट्य सिद्धान्त है । इसे सर्वत्र देखा एवं अनुभव किया जा सकता है । प्रकृति के गर्भ में जिन तत्वों का बीजारोपण होगा उन्हीं के अनुरूप प्रतिफल भी सामने आयेंगे । प्रकृति की यह अद्भुत विषेषता है कि उसे जितना दिया जाता है, उसका कई गुना बनाकर लौटाती है मिट्टी में थोड़े से बीज पड़ते हैं जो पेड़ पादप के रूप में गलकर बढ़ते हैं, पर असंख्य गुना होकर वापस लौटते हैं । अपनी मौलिक विशिष्टता को अक्षुण्ण रखते हुए भी बीज परिमाण की दृष्टि से अपने सादृश्य एक बड़ी बिरादरी को साथ लिये लौटते हैं । बीज चाहे आम का हो अथवा मादकता युक्त विषाक्तता भरी अफीम का, उपर्युक्त नियम सबके ही साथ एक जैसा लागू होता है । देने में प्रकृति बनिये जैसी नापतौल नहीं करती, अत्यन्त उदारता बरतती हैं। एक से अनेक, सीमित को असीम बनाने में उसकी क्षमता बेमिसाल है । पर यह विशेषता अनिवार्य रूप से जुड़ी हुयी है कि जैसा बीजारोपण होगा प्रतिफल उन्हीं विशेषताओं के अनुरूप मिलेगा ।

प्राचीन काल में इस तथ्य को भली-भाँति ध्यान में रखा जाता था कि प्रकृति से समस्त जीव समुदाय को अगणित अनुदान मिलते हैं । उसे स्वस्थ एवं सन्तुलित न रखा गया तो भारी संकटों का सामना करना पड़ सकता है । इसी कारण प्रकृतिगत सन्तुलन व परिशोधन हेतु घर-घर यज्ञ किये जाते थे । वातावरण में दैनन्दिन जीवन के कृत्यों से जो गन्दगी घुलती रहती थी उसकी सफाई हो जाया करती थी । त्यौहारों, पर्वों तथा अन्य अवसरों पर सामूहिक विशाल यज्ञ भी किये जाते थे । ताकि वातावरण की विषाक्तता धुलती चले । साथ ही प्रकृति चक्र सुदृढ़ बना रहे । फलतः प्रतिक्रिया स्वरूप प्रकृति से जो कुछ भी मिलता था, मनुष्य जाति के लिए लाभप्रद रहता था । तब सूक्ष्म अन्तरिक्ष से प्राणवान पर्जन्य की वर्षा होती थी जिसमें प्रचुर परिमाण में जीवनदायी प्राण तत्व होते थे । वृक्ष वनस्पतियाँ, जीव जन्तु सभी उसका पान करके स्वस्थ एवं नीरोग बने रहते थे ।

यज्ञों की यह परम्परा तो लुप्त हो गयी जो प्रकृति का शोधन करती एवं पोषण देती थी । अन्धाधुन्ध औद्योगीकरण की अदूरदर्शिता से वातावरण में विषाक्तता असीम परिमाण में भरती चली गयी । प्रकृति चक्र चरमरा उठा । अब वह स्थिति अत्यन्त भयावह हो चली है । प्रकृति उस गरल को अब वर्षा के विषाक्त जल के रूप में उगल रही है । प्रकोपों की शृंखला में एक सर्वाधिक गम्भीर कड़ी जुड़ी है—अम्ल वर्षा की । अगणित शोध निष्कर्षों का मत है कि वर्षा जल में तेजाब की मात्रा तेजी से बढ़ती जा रही है । पर्जन्य बरसाने वाली प्रकृति जब तेजाब की वर्षा करेगी तो उपस्थित होने वाले संकटों की सहज ही कल्पना की जा सकती है ।

शुद्ध जल का पी०एच० दर (हाइड्रोजन आयनों का जमाव) ७ होता है । इससे कम होने पर पानी में अम्लीयता बढ़ती है । दर अधिक होना पानी में क्षारीय तत्वों के बढ़ने की परिचायक होती है । वर्षा के सामान्य जल का पी०एच० दर प्रायः ५०७ होता है । ऐसी वर्षा फसलों एव जीवधारियों के लिए उपयोगी, पोषक मानी जाती है । वर्षा जल में पी०एच० का मान कम होना यह दर्शाता है कि उसमें प्रदूषक तत्व न्यूनाधिक मात्रा में मौजूद हैं । ऐसे निष्कर्ष अनेकों खोजों से प्रकाश में आये हैं कि पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में अब अम्लीय वर्षा होने लगी है जो मानव द्वारा वायुमण्डल में छोड़े गये प्रदूषण का ही परिणाम है ।

अम्ल वर्षा में सल्फ्यूरिक एसिड तथा नाइट्रिक एसिड का प्रमुख योगदान होता है । ये दोनों ही अम्ल औद्योगिक उत्पादनों में छोड़े गये सल्फर डाइऑक्साइड तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड की वाष्प कणों से हुई प्रतिक्रिया के फलस्वरूप बनते हैं । वे ही जल में घुलकर बरसते है ।

'साइन्स टुडे' मासिक पत्रिका में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार सन् १९६६ में टोरन्टो विश्वविद्यालय कनाडा के जीव विज्ञानियों ने लक्सडन सरोवर में ४ हजार से भी ऊपर की संख्या में युवा सॉलयन मछलियों की गणना की थी किन्तु एक वर्ष बाद ही उनमें से एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी जीवित नहीं बची जबकि उनकी देख-रेख, सुरक्षा में किसी प्रकार की कमी न रखी गयी । सन्देह होने पर सरोवर के जल का परीक्षण करने पर उसकी अम्लीयता अत्यधिक पायी गयी । १९६१ से १९७१ के एक दशक के अन्तर में अम्लीयता में १५० गुनी वृद्धि पायी गयी । उस आधार पर होने वाले वर्षा जल का परीक्षण किया गया । वैज्ञानिकों को यह देखकर आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उस जल में भी पी०एच० की दर सरोवर जितना ही थी । उस सरोवर को विषाक्त घोषित कर दिया गया ।

कनाडा में किये गये एक अध्ययन के अनुसार ओन्टेरियो क्षेत्र के ढाई लाख सरोवरों में से लगभग पचास हजार अम्ल वर्षा के कारण बुरी तरह से दूषित हो चुके हैं । उनमे से अधिकांश मृतप्रायः हैं । पूर्वी उत्तरी अमरीका में किये गये परीक्षणों में भी अम्ल वर्षा के प्रमाण मिले हैं । अनुमान है कि वहाँ नाइट्रोजन ऑक्साइड की ६० प्रतिशत मात्रा आटोमोबाइल्स से, १० प्रतिशत जीवाष्म ईंधन ऊर्जा प्लान्ट से तथा ३० प्रतिशत अन्य उद्योगों से उत्पन्न होती है । कुल ३० प्रतिशत अम्ब वर्षा का कारण यह उत्पादन पूर्वी उत्तरी अमरीका में होता है । शेष ७० प्रतिशत सल्फ्यूरिक एसिड के कारण अभिप्रेरित है, जो सल्फाइड जैसी कच्ची धातु के गलने से, अन्य धातुओं के परिशोधन प्रक्रिया से तथा जीवावशेष ईंधन को उपयोग में ला रहे थर्मल पावर प्लान्ट से उत्पन्न होती है । यूनाइटेड स्टेट्स में प्रति वर्ष २ करोड़ ८० लाख टन सल्फर डाइऑक्साइड वायु मण्डल में फेंका जाता है जो जलवाष्प से सौर किरणों के उत्प्रेरण में क्रिया करके सल्फ्यूरिक एवं नाइट्रिक एसिड में बदल जाते हैं और अम्ल वर्षा का कारण बनते हैं । उत्तरी अमरीका के कितने ही क्षेत्रों में अम्ल होने से कितनी ही नदियाँ तथा सरोवर विषाक्त हो चुके हैं । तलाबों, सरोवरों से जलचर जीवन बड़ी तेजी से नष्ट होते जा रहे हैं ।

टोरन्टो—कनाडा से ४०० किलोमीटर दूरी पर स्थित एक सदव्युटी क्षेत्र है । यह क्षेत्र विश्व का प्रमुख निकिल उत्पादक है । यहाँ कच्चे पदार्थों के रूप में लोहा, कॉपर और निकिल सल्फाइड उपलब्ध है जिनके दहन क्रिया के फलस्वरूप सल्फर डाइऑक्साइड का बादल उस क्षेत्र में सदा छाया रहता है । फलतः होने वाली वर्षा में अम्लीयता अत्यधिक रहती है । उस क्षेत्र की उर्वरा भूमि इस कारण तेजी से अपनी उर्वरता गँवाती जा रही है । एसिड एवं ठोस धातुओं के कारण मिट्टी विषैली हो चुकी है यहाँ प्रतिदिन २५०० टन सल्फर डाइऑक्साइड वायुमण्डल में फेंकी जाती है । परीक्षण करने वाले विशेषज्ञों का कथन है कि अगले दिनों उस क्षेत्र में होने वाली वर्षा में अम्ल की मात्रा इतनी बढ़ जायेगी कि वृक्ष वनस्पतियों तथा जीवधारियों का जीवन दूभर हो जायेगा ।

उत्तरी वरमाउन्ट के पहाड़ पर कैमेल हम्प नामक एक सदाबहार जंगल है । बीस वर्षों पूर्व लाल रंग के स्प्रूस वृक्ष तथा सौ फीट से भी ऊँचे देवदारु के सुन्दर वृक्ष पाये जाते थे । इनमें कुछ की आयु तो सैकड़ों वर्ष से भी ऊपर की थी । पर उनमें से अधिकांश अब मर चुके हैं तथा जो बचे हैं वे भी नष्ट होने वाले हैं । अब यह क्षेत्र सुनसान-सा दीखता है । पश्चिम जर्मनी, यू०एस०ए० के कितने ही क्षेत्रों की स्थिति भी यही है । केन्द्रीय यूरोप में लगभग २१ लाख से लेकर ५० लाख एकड़ तक वन क्षेत्र नष्ट हो चुके हैं । उल्लेखनीय यह है कि इनका विनाश कटाई से नहीं अम्ल मिश्रित वर्षा जल के कारण हुआ है जो अब अनेकानेक सम्भावित खतरे की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहा है । उपरोक्त तथ्यों का रहस्योद्घाटन 'हवर्ट डब्ल्यू बोगेलमन' नामक वनस्पति शास्त्री ने किया जो यूनिवर्सिटी आफ वरमाउण्ड-कनाडा में प्रोफेसर हैं ।

एक पर्ववेक्षण रिपोर्टानुसार मथुरा में नव स्थापित तेल शोधक कारखाने से उत्पन्न धुँए के कारण आगरा के ताजमहल के सौन्दर्य के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है । उस क्षेत्र का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि शोधक कारखाने से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण से अगले दिनों आस-पास के सारे क्षेत्र में अम्ल वर्षा की सम्भावना बढ़ गयी है ।

अम्ल वर्षा से अनेकानेक खतरनाक सम्भावनाएँ जुड़ी हुयी हैं । अम्ल वर्षा में सनाहित नाइट्रोजन ऑक्साइड सल्फर डाइऑक्साइड व सल्फेट ऑयल के लम्बी अवधि तक अन्तःश्वसन से एम्फीसेमा तथा इसके समरूप अन्य दमें समकक्ष— श्वसन रोग उत्पन्न होते हैं । १९५१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में लन्दन में छायी धुन्ध में इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा गया। उसके दुष्प्रभाव से मात्र दो दिन में पाँच हजार व्यक्ति काल कलवित हो गये । अम्ल वर्षा का जल पीने से अनेकों प्रकार के पाचन सम्बन्धी तथा रक्त सम्बन्धी विकार पैदा होते हैं ।

वह वर्षा भूमि की उर्वरता को नष्ट कर देती—ऊसर बना देती है । मिट्टी के आवश्यक पोषक तत्व-कैल्शियम, मैग्नेशियम, फास्फोरस आदि नष्ट हो जाते हैं । यदि पी०एच० दर अत्यन्त न्यून हो जाय तो नाइट्रोजन, पोटेशियम सल्फर जैसे तत्व भी मिटटी से समाप्त हो जाते है । ऐसी भूमि में पैदावार की जाय तो भी इसमें विषाक्तता आ जायेगी जो अगणित रोगों को जन्म देगी । जर्मनी में हुए एक अध्ययन का निष्कर्ष है कि अम्ल वर्षा से उत्पन्न एल्यूमिनियम की विषाक्तता पौधे के विकास में अत्यन्त हानिकर है ।

अम्ल वर्षा से प्रभावित क्षेत्रों में अमरीका तथा कनाडा सबसे आगे हैं । दोनों ने एक दूसरे के ऊपर यह आरोप लगाया है कि अम्लीय वर्षा के कारक प्रदूषक तत्वों को वायुमण्डल के माध्यम से वे एक दूसरे के देश में फैला रहे हैं । वास्तविकता की जाँच पड़ताल के लिए दोनों ही देशों ने एक संयुक्त कमेटी विशेषज्ञों की बनायी है । वैज्ञानिकों का वह ग्रुप वायु से नमूना एकत्रित करेगा तथा दूसरे देश में होने वाली अम्ल वर्षा में उसकी भूमिका मालूम करेगा । विषाक्त वर्षा से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र वरमोन्ट, न्यू हैम्पशायर, एडीरोन्डैक पर्वत न्यूयार्क तथा कनाडा के उत्तरी क्षेत्र—प्रीकैम्ब्रियन शील्ड भाग के सबसे बड़े झील में प्राकृतिक पोषक तत्व समाप्त हो चुके हैं । जिसमें फसलें जंगल तथा उनमें रहने वाले जलचर, भलचर जीव तेजी से मर रहे हैं । एक रिर्पोट के अनुसार का इन क्षेत्रों में अम्ल वर्षा से उपरोक्त हानियों के लिए जिम्मेदार है । जबकि अमरीका की तुलना में पाँच गुना कम अम्ल वर्षा के लिए कारक प्रदूषक तत्व कनाडा द्वारा अमरीकी क्षेत्र मे फैलाये जाते है ।

कुछ दिनों पूर्व दिल्ली क्षेत्र में हुयी वर्षा में भी अम्ल की मात्रा पायी गयी । कानपुर के निकट गंगाजल में अम्ल की मात्रा का पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि अब अपने देश के वायुमण्डल की स्थिति दूसरे यूरोपीय देशों जैसी ही विषाक्त बनती जा रही हैं । आसन्न यह संकट अगले दिनों और भी अधिक गम्भीर होने की सम्भावना कितने ही मौसम विज्ञानियों ने व्यक्त की है ।

अम्ल वर्षा के रूप में दिखायी पड़ने वाली विभीषिका मानवी अदूरदर्शी क्रिया की ही प्रतिक्रिया है । प्रकृति के गर्भ में बीजारोपण विष बीजों का किया जा रहा है, प्रतिफल भी उसी के अनुरूप दृष्टिगोचर हो रहा है । जो क्रम चल रहा है यथावत् चलता रहा तो वे प्रकोप और भी तीव्र होंगे । यह सोचना अविवेकपूर्ण है कि उससे सीमित क्षेत्र अथवा देश विशेष प्रभावित होंगे । कारण कि वायुमण्डल को देश की भौगोलिक सीमा से बाँध सकना तथा उसके भले बुरे प्रभावों से अछूता रखना सर्वथा असम्भव है । समस्त संसार एक प्रकृति चक्र से बँधे होने के कारण देर-सबेर में प्रभावित होगा । गड़बड़ाये सन्तुलन को सुधारने, वातावरण में भरे विष का परिशोधन करने तथा आगे के लिए रोकथाम की अविलम्ब व्यवस्था न बनायी गयी तो वरदायी प्रकृति का दूसरा क्रुद्ध रूप महाकाल के रूप में प्रकट होकर समस्त मानव जाति को घुट-घुटकर मरने को विवश करेगा ।

सूखा आसमान भी बरस सकता है

क्या शुष्क वायुमण्डल में आर्द्रता उत्पन्न की जा सकती है ? क्या सूखे आसमान से वर्षा हो सकती है ? यह प्रश्न ऐसे ही है, जैसे कि यह पूछना कि -क्या कठोर प्रकृति को मेल बनाई जा सकती है ? क्या संकीर्ण स्वार्थपरता को उदार आत्म-विस्तार में परिणत किया जा सकता है ?

मोटेतौर से यह प्रतीत होता है कि आधार न हो तो परिणाम कैसे उत्पन्न हो सकता है ? पर बात ऐसी है नहीं प्रकृति के अन्तराल का थोड़ा गहना अध्ययन करें तो प्रतीत होगा कि सर्वत्र बीज-रूप से सभी पदार्थ और सभी परिस्थितियाँ मौजूद हैं । किसी वस्तु का कहीं पूर्णतया अभाव नहीं । बीज-रूप से हर वस्तु हर जगह विद्यमान है । जो नहीं है, उसे भी प्रयत्न करने पर उगाया और बढ़ाया जा सकता है ।

कृत्रिम वर्षा के प्रयोग अब क्रमशः अधिक सफल होते जा रहे है और जहाँ बादल नहीं हैं, वहाँ बादल लाने तथा जिन बादलों में पानी नहीं हैं, उनमें बरसने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वाली घटा उत्पन्न करना अब शक्य और प्रत्यक्ष होता जा रहा है।

सोडियम क्लोराइड भरे गुब्बारे आकाश में उड़ाये जाते हैं, वे एक निश्चित ऊँचाई पर जाकर अपने आप फट जाते हैं और वह नमक उस क्षेत्र में उड़ने वाले बादलों पर छिड़क जाता है; फलस्वरूप वर्षा होने लगती है ।

कृत्रिम वर्षा की दूसरी विधि है, रासायनिक पदार्थों के संयोग से कृत्रिम बादल बनाना । हवा में जो नमी होती है उसे एक जगह एकत्रित करने वाले रसायन यदि बिखेर दिये जायँ तो समुद्र से उठने वाले मानसून की प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी, वरन् स्थानीय वायु में भराहुआ जल अंश ही सघन होकर बादलों के रूप में प्रकट होगा।

कार्बन डाइऑक्साइड को घनीभूत करके सूखी बर्फ की तरह जमा लिया जाता है और उसका बुरादा बादलों पर छिड़का जाता है , इससे वे वर्षा करने की स्थिति में आ जाते हैं । सिल्वर ऑक्साइड का धुआँ छोड़ने से भी यही प्रयोजन पूरा हो सकता है । छोटे जल-कणों को परस्पर एकत्रित होकर बड़े जल-कणों को रूप बना लेने और बूँद बनकर बरसने लगने की पृष्ठभूमि उपर्युक्त रसायनों द्वारा बनाई जा सकती है ।

एक प्रयोग यह है कि जलता हुआ तेल आकाश में छोड़कर उस धुएँ से बादलों को आकर्षित किया जाय । यह प्रयोग अमेरिका मे पूर्ण सफल रहा है । यज्ञ द्वारा वर्षा होने की बात भी इसी आधार पर सिद्ध होती है । प्राचीन भारत के विज्ञानी इस रहस्य से परिचित थे । इसलिए उन्होंने धार्मिक और आध्यात्मिक प्रयोजन के साथ-साथ उपयुक्त वर्षा कराने वाली प्रक्रिया का यज्ञ रूप में विकास किया ।

कृत्रिम वर्षा का शोध-कार्य भारत में भी चल रहा है । 'कोन्सिल आफ साइटिफिक एण्ड इण्डिस्ट्रियल रिसर्च' ने इसके लिए एक विशेष व्यवस्था की है । उसका नाम है 'रेन एण्ड क्लाइस रिसर्च यूनिट' । अन्य देशों में भी इस प्रकार के प्रयोग चल रहे हैं कि वर्षा कराने या रोकने का अधिकार अकेले इन्द्र देवता के हाथों में ही न रहे वरन् मनुष्य भी उसका अधिकारी, हिस्सेदार बन जाय ।

मनुष्य की प्रकृति जन्म-जात होती है और वह बदली नहीं जा सकती । समाज की परिस्थितियाँ युग का परिपाक है, हम उसमें क्या कर सकते है ? यह दोनों ही विचार निरर्थक और निराशावादी हैं । कृत्रिम वर्षा के सफल प्रयोगों पर दृष्टिपात करें तो यह आशा सहज ही बँध सकती है कि मानवी-प्रकृति और समाज की परिस्थितियों को अभीष्ट दिशा में मोड़ा-मरोड़ा जा सकना—श्रम-साध्य भर है—असम्भव नहीं ।

***

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग परिवर्तन और उसकी पृष्ठभूमि

प्रगति की बेलगाम दौड़ पर दूरदर्शिता का अंकुश लगाया जाय

मनुष्य जितना समझदार है उतना ही अदूरदर्शी भी । समझदार इसलिए कि प्रगति के लिए उसकी बुद्धि नित नये सरंजाम जुटा रही है । सुख-सुविधाओं एवं साधनों के आविष्कार में वह पूरी तत्परता से लगी हुई है और इस प्रयास में उसे निरन्तर सफलता मिलती जा रही है । इसके लिए बुद्धि की जितनी प्रशंसा की जाय, कम ही होगी । मानवीय बुद्धि का चमत्कार आज चारों ओर बिखरी अनेकानेक उपलब्धियों के रूप में देखा जा सकता है । आदिम पत्थर युग से वर्तमान परमाणु-युग में प्रगति क्रम को ला पटकने में बुद्धि की प्रखरता एवं तेजस्विता का ही योगदान है तथा उसी का वर्चस्व प्रगति के दर्पण में प्रतिबिम्बित होता दिखायी पड़ता है ।.

मनुष्य अदूरदर्शी भी कम नहीं है । अदूरदर्शी इसलिए कि प्रगति की अंधी दौड़ में बुद्धि के बेलगाम घोड़े पर चढ़कर वह सरपट दौड़ता चला जा रहा है । वह कहाँ ले जाकर पटक दे, इसका कोई ठिकाना नहीं । प्रगति की दौड़ के दूरवर्ती परिणामों की उपेक्षा अदूरदर्शिता का ही परिचायक है जिसके कारण कितनी ही समस्याओं-संकटों का सामना करना पड़ता है । पर्यावरण का असन्तुलन वातावरण की विषाक्तता की प्रस्तुत विभीषिकाएँ मनुष्य की स्वयं की विनिर्मित हैं । इसमें एक सर्वाधिक खतरनाक कड़ी जुड़ी है रेडियो ऐक्टिव पदार्थों से सतत होते रहने वाले विकिरण की । शक्ति के प्रचण्ड स्रोत माने जाने वाले इन पदार्थों के संचय एवं उपयोग का प्रचलन विश्व में तेजी से बढ़ रहा है । फलस्वरूप उनसे निसृत होने वाले विकिरण की विषाक्तता ने नये प्रकार के गम्भीर संकटों को जन्म दिया है । पहले परमाणु विस्फोटों से होने वाले विकिरण को ही घातक माना गया था । अब जो तथ्य सामने आये हैं वे बताते हैं रेडियोधर्मी पदार्थों का उपयोग सृजनात्मक समझे जाने वाले कार्यों में भी निरापद नहीं है ।

अमेरिका के केलीफोर्निया राज्य के सॉन जॉकिन नामक गाँव में होने वाली एक घटना ने उपर्युक्त तथ्य की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया। पाँच सौ की आबादी का यह गाँव एक ऐसी फैक्टरी द्वारा बसाया गया है जिसमें 'पेस्टिसाइड' 'एक प्रकार की कीटनाशक दवा जो वनस्पतियों पर छिड़कने के काम आती है' बनाने का काम होता है । 'आक्सीडेण्टल केमिकल्स' नामक इस कम्पनी को स्थापित हुए लगभग दस वर्ष हुए । सन् १९७७ में अचानक गाँव के निवासियों का ध्यान इस तथ्य की ओर गया कि क्या कारण है कि पिछले सात वर्षों में गाँव के किसी भी व्यक्ति के घर एक भी सन्तान की उत्पत्ति नहीं हुई। इस चर्चा ने जोर पकड़ा तथा विज्ञजनों का ध्यान आकर्षित किया । महिलाएँ सन्तान न पैदा होने से अधिक परेशान थीं । उन्होंने पुरुषों को जाँच करवाने के लिए उकसाया । चिकित्सकों के एक दल ने गाँव के प्रत्येक व्यक्ति की डॉक्टरी परीक्षा की । परीक्षण के उपरान्त जो निष्कर्ष सामने आया वह चौंकने वाला था । रिपोर्ट के अनुसार कम्पनी में काम करने वाले पुरुषों में प्रजनन के लिए आवश्यक अंग से शुक्राणु उत्पत्ति का क्रम ही समाप्त हो गया था । इसका कारण विशेषज्ञों के दूसरे दल ने यह बताया कि पेस्टीसाइड के निर्माण के समय एक विशिष्ट प्रकार के होने वाले विकिरण की विषाक्तता है जिसके दुष्प्रभाव से स्पर्म का बनना ही बन्द हो गया ।

डॉ० हेराल्ड एल० गॉर्डन 'मेडिकल डायरेक्टर ऑफ डोव केमिकल कॉर्पोरेशन' अमेरिका के अनुसार अमेरिका में महिलाओं के गर्भपात तथा गर्भस्राव की घटनाओं में ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई है । साथ ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकलांगता की दर तेजी से बढ़ी है । इसका कारण उन्होंने यह बताया कि वातावरण में रेडियो विकिरण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है जिसकी विषाक्तता सबसे अधिक गर्भस्थ शिशुओं को प्रभावित कर रही है । सामान्यतः गर्भस्राव और गर्भपात को विशेष चिन्ता की बात नहीं माना जाता । पर इन घटनाओं में तीव्रतम वृद्धि को आनुवांशिकी विशेषज्ञ गहरी चिन्ता का विषय मानने लगे हैं क्योंकि अनुसंधान के उपरान्त यह मालूम हुआ है कि उपर्युक्त प्रकार की घटनाओं में बढ़ोत्तरी का प्रमुख कारण जेनेटिक असन्तुलन है । इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपों की सहायता से यह देखा गया है कि गर्भस्राव अथवा गर्भपात के प्रसंगों के समय किये गये परीक्षणों में कुल संख्या के ५० प्रतिशत मामलों में क्रोमोसोम (गुणसूत्र) अथवा जीन्स का म्यूटेशन ही उपर्युक्त घटनाओं का प्रमुख कारण है । यह भी मालूम हुआ है कि जेनेटिक म्यूटेशन का स्थायी दुष्प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर बना रहता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आनुवांशिक रोगों के रूप में चलता रहता है ।

आनुवांशिकी विशेषज्ञों के अनुसार जीन्स में ही मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव की विशेषताएँ सूक्ष्म रूप में सन्निहित होती हैं । सामान्यतया जीन की संरचना में हेर-फेर करना कठिन पड़ता है । अब तक परिवर्तन के लिए जो प्रयास किए भी गये हैं वे सफल होते हुए भी अन्ततः मनुष्य के लिए हानिकारक सिद्ध हुए हैं । विशेषज्ञों का मत है कि रेडियो विकिरण जीन्स पर सर्वाधिक दुष्प्रभाव डालते हैं । यह कुप्रभाव विभिन्न प्रकार के गम्भीर रोगों को जन्म देता है जो वंश परम्परा के अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं । हिरोशिमा तथा नागासाकी में परमाणु बम का विस्फोट हुए लगभग चार दशक पूरे होने को हैं । भीषण नर-संहार से जो गिने-चुने व्यक्ति बचे, उनमें विकिरण के दुष्प्रभाव से हुए 'जेनेटिक' पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहे हैं । आज भी जो बच्चे पैदा होते हैं उनमें से अधिकांश विकलांगता, अपंगता अथवा मानसिक विक्षिप्तता से ग्रस्त रहते हैं ।

यू० एस० नेशनल एकेडमी साइन्सेज द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट 'बायोलॉजिकल इफेक्ट्स ऑफ एटॉमिक रेडिऐशन' तथा 'यू० के० मेडिकल रिसर्च कौंसिल' लन्दन की पत्रिका में प्रकाशित शोध निबन्ध 'दि हेजार्ड्स टू मेन ऑफ न्यूक्लियर एण्ड एलाइड रेडिएशन' के अनुसार प्रत्येक जीवित प्राणी की कोशिकाओं में अवशोषित रेडियो विकिरणों के फलस्वरूप जीन्स में म्यूटेशन होते हैं । यह म्यूटेशन वयस्क 'जर्म सेल' की अपेक्षा अविकसित जर्म सेल में दस गुना अधिक होता है तथा वयस्क व्यक्ति की तुलना में गर्भस्थ शिशु पर यह कुप्रभाव १५ गुना अधिक होता है ।

चिकित्सा प्रयोगों के लिए निरापद समझे जाने वाले रेडियो विकिरणों का भी घातक पक्ष इन दिनों सामने आया है । 'जर्नल ऑफ अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन' की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में ८२ हजार डॉक्टरों की आयु मर्यादा का सर्वेक्षण किया गया । इनकी औसत आयु ६५.७ वर्ष पायी गयी । इसके विपरीत उन डॉक्टरों की, जो एक्स-रे लेने (रेडियोलाजिस्ट) का काम करते हैं, औसत आयु ६०.५ वर्ष आयी जो कि सामान्य की अपेक्षा ५.२ वर्ष कम थी अर्थात् एक्स-रे के निरन्तर सम्पर्क में रहने वाले डॉक्टर उसके घातक प्रभाव से अपनी पाँच वर्ष से भी अधिक आयु गंवा बैठते हैं । अमेरिका की ही 'मेडिकल रिसर्च काउंसिल' द्वारा ल्यूकेमिया रोग की रोक-थाम के लिए गहन शोधकार्य किया गया है । अनुसंधान के दौरान विशेषज्ञों की एक टीम ने १४ हजार ऐसे रोगियों का परीक्षण किया जिनको उपचार के लिए 'एक्स रे' की अधिक मात्रा दी गयी थी। अध्ययन से पता चला कि सामान्य व्यक्तियों की तुलना में उन व्यक्तियों में 'ल्यूकेमिया' रोग की दर १० प्रतिशत अधिक थी । रिपोर्ट में बताया गया कि चिकित्सा के लिए एक्स-रे के प्रयोग से ल्यूकेमिया रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है ।

एक अन्य अध्ययन से यह मालूम हुआ कि किसी व्यक्ति को यदि एक्स-रे का १७० रोएन्जेन (विकिरण नापने की इकाई) की मात्रा दी जाय तो वह ३० साल की ही आयु में ल्यूकेमिया के कारण मर जायेगा । यदि सारी आबादी को मात्र ३० रोएन्जेन से युक्त वातावरण में रखा जाय तो ल्यूकेमिया से मरने वालों की दर दुगुनी हो जायेगी ।

यू० एस० ए० ई० सी० द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार 'जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी ऑफ पब्लिक हेल्थ' में बन्दरों पर किये गये प्रयोगों से पता चला है कि वर्षों पूर्व स्वस्थ हो गये टाइफाइड के रोगी, रेडियो विकिरणों के हल्के सम्पर्क में आने पर भी उसके कीटाणुओं के पुनः सक्रिय हो जाने से फिर अस्वस्थ हो जाते हैं । इस निष्कर्ष के आधार पर यह बताया गया कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्वी यूरोप से आकर अमेरिका के बाल्टीमोर प्रदेश में बसे हुए प्रवासियों की एक-तिहाई जनसंख्या जो पूर्वी यूरोप के जीवन काल में एक बार टाइफाइड से ग्रस्त हो चुकी थी किसी अन्य रोग के लिए रेडियो ऐक्टिव तत्वों युक्त दवा लेने पर पुनः टाइफाइड से ग्रस्त हो गयी । रेडियो सक्रिय तत्वों वाली दवाएँ मनुष्य की प्रजनन क्षमता के लिए उत्तरदायी, गोनाड्स ग्रन्थियों को बुरी तरह प्रभावित करती हैं । उपर्युक्त रिपोर्ट में ही यह बताया गया कि १००० या इससे अधिक रोएन्जेन इकाई वाली दवाओं से प्रजनन क्षमता के स्थायी रूप से समाप्त होने का भय बराबर बना रहता है ।

रेडियो थेरेपी के अनुसार कैंसर रोग के उपचार में विभिन्न मात्रा के विकिरणों का तुरन्त लाभ रोगी पर दीखता है । पर वास्तविकता यह है कि यह खतरनाक उपचार अन्ततः रोगी के लिए घातक सिद्ध होता है । बहुत ही त्वरित गति से संख्या बढ़ाने वाली कैंसर कोशिकाएँ शरीर की अन्य कोशिकाओं की अपेक्षा विकिरणों से अधिक प्रभावित होती हैं । फलतः स्वस्थ कोशिकाओं की तुलना में कैंसर कोशिकाएँ अधिक संख्या में मरती हैं । तुरन्त ऐसा लगता है कि उपचार अत्यन्त कारगर रहा । पर कुछ ही समय बाद कैंसर कोशिकाएँ पुनः बढ़ने लगती हैं । साथ ही जिन स्वस्थ कोशिकाओं पर विकिरण का प्रभाव पड़ता है उससे अन्य कितनी ही प्रकार की बीमारियाँ जन्म लेती हैं । कुल का लेखा-जोखा लिया जाय तो स्पष्ट होगा कि रेडियो थेरेपी दूरवर्ती परिणामों की दृष्टि से घातक है ।

डॉ० एफ० नोवेल जोन्स, लॉस एंजेल्स स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ केलीफोर्निया (यू० सी० एल० ए०) में मनोविज्ञानी हैं । उन्होंने लॉस एंजेल्स के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के निकटवर्ती क्षेत्र में १९७८ के पूर्व तीन वर्ष के भीतर पैदा हुए २ लाख १५ हजार बच्चों का अध्ययन किया । इस सर्वेक्षण में उन्होंने पाया कि वहाँ रहने वाले प्रति हजार बच्चों में से ५० विकलांग थे जब कि अन्य स्थानों पर विकलांगता की दर प्रति हजार पीछे सात थी । विकलांगता शारीरिक और मानसिक दोनों ही प्रकार की थी । अप्रत्याशित विकलांगता की दर बढ़ने का कारण मालूम करने के लिए वैज्ञानिकों की एक टोली बुलायी गयी । खोजबीन करने पर पता चला कि माइक्रोवेव रेडियेशन विकलांगता बढ़ाने के लिए जिम्मेदार था । लन्दन के हीथ्रो एयापोर्ट तथा जापान के ओसाका एयरपोर्ट के समीपवर्ती क्षेत्र में पैदा होने वाले बच्चों पर भी इसी प्रकार का दुष्प्रभाव देखा गया । एक अन्य सर्वेक्षण में यह पाया गया कि यूरेनियम खदानों में काम करने वाले व्यक्तियों में फेफड़ों का कैंसर अधिक होता है । अन्य खदानों में काम करने वालों की अपेक्षा कैंसर का रोग यूरेनियम खदान में काम करने वालों को ५० प्रतिशत अधिक होता है ।

रेडियोधर्मी पदार्थों के विकिरण से होने वाले ये ऐसे संकट हैं जिनकी ओर सामान्य व्यक्ति का ध्यान भी नहीं जाता । परमाणु परीक्षणों से फैलने वाले अदृश्य विषाक्त विकिरण की हानियों की चर्चा कुछ वर्षों से सर्वत्र हो रही है । प्रगतिशीलता की अंधी दौड़ में यदि तात्कालिक लाभों को ही प्रमुख माना जाता रहा, दूरवर्ती परिणामों की उपेक्षा होती रही, तो वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य की अपनी ही वैज्ञानिक उपलब्धियाँ भस्मासुर की भाँति उसे भस्मीभूत करने के लिए चढ़ दौड़ेंगी । समय रहते ही विवेक का अवलम्बन ले नीति निर्धारण कर लिया जाय यही श्रेयस्कर है ।

बुद्धिमान मनुष्य की मूर्खतापूर्ण प्रगति

बढ़ती हुई आबादी अब बड़े शहरों की ओर भाग रही है । देखने में चुहल-चपाटा, मनोरंजन के साधन तथा सुविधा सामग्री गाँवों की अपेक्षा शहरों में अधिक है । वहाँ पैसा भी आसानी से और अधिक कमाया जा सकता है, उपभोग की आकर्षक वस्तुएँ भी यहाँ अधिक मिल जाती हैं । ऐसी सुविधाओं का गाँवों में अभाव अनुभव किया जाता है । अस्तु, शहरों की उनके आस-पास के इलाकों की आबादी हर जगह तेजी से बढ़ रही है । छोटे गाँव कस्बे बन रहे हैं और कस्बे शहरों में परिणत हो चले हैं । शहरों में खचाखच भरी हुई आबादी के निर्वाह एवं यातायात के लिए स्वभावतः कितने ही छोटे-बड़े कारखाने बनते हैं । बड़े उद्योगों की स्थापना भी उसी क्षेत्र में अधिक होती है । इस घचापच से कितनी ही ऐसी व्यवस्थाएँ चल पड़ती हैं जो हवा और पानी जैसे जीवन-धारण के लिए आवश्यक तत्वों को विषाक्त करती हैं । कोलाहल भी कम घातक नहीं है । इन सबका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सम्मिश्रित परिणाम मनुष्य जाति के सामने भयंकर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न करता चला जा रहा है । स्थिति यही बनी रही तो दम घुटने से एवं विषाक्त अन्न-जल के कारण दुर्बलता तथा रुग्णताजन्य विभीषिकाएँ मनुष्य को अकाल मृत्यु के मुख में धकेल देंगी।।

कल-कारखाने, रेलवेइंजन, तापबिजलीघर, मोटरें, वायुयान इनकी संख्या द्रुत गति से बढ़ती जा रही है। इनमें जलने वाले पेट्रोल डीजल, कोयले आदि से निकलने वाली कार्बन मोनोऑक्साइड और सल्फर डाई-ऑक्साइड जैसी भयंकर गैसें वायुमण्डल को दिन-दिन अधिक विषाक्त करती जा रही हैं । नगरों की बढ़ती हुई जनसंख्या, वाहनों की धमाचौकड़ी, कारखानों की रेल-पेल, घरों में ईंधन का अधिक खर्च, हरियाली की कमी आदि कारणों से हवा में हानिकारक तत्वों का परिमाण बढ़ता ही चला जा रहा है । धूल एवं धुएँ में इनका बाहुल्य रहता है । साँस के साथ ये शरीर में प्रवेश करती हैं और उन्हें दुर्बल एवं रुग्ण बनाती चली जाती हैं ।

अकेले दिल्ली नगर की रिपोर्ट यह है कि वहाँ ट्रक, बस, मोटर आदि के साइलेंसर प्रतिदिन २० हजार पौण्ड से भी ज्यादा सल्फर डाई-आक्साइड गैस हवा में फेंकते हैं । अकेला ताप बिजली घर ९५ पौण्ड ऐसी गैसें नित्य पैदा करता है जो शरीर के लिए ही नहीं इमारतों और लोहे के पुलों के लिए भी हानिकारक हैं । आगरा का ताजमहल उस नगर की गैसों के कारण गलता चला जा रहा है । उसे देर तक सुरक्षित रखने के लिए ऐसे घोल पोतने की बात सोची जा रही है जिससे उस सुन्दर संगमरमर का क्षरण रोका जा सके ।

कार्बन मोनो-ऑक्साइड गैस यदि हवा में सातसौवें भाग में होगी तो उसमें साँस लेने वाला मर जायेगा । यदि उसका लाखवाँ भाग होगा तो उस क्षेत्र के प्राणी बीमार पड़ जायेंगे ।

औद्योगिक शहरों के ऊपर छाई धुन्ध कभी भी देखी जा सकती है । उसमें कार्बन, सल्फेट, नाइट्रेट, सीसा, हाइड्रो-कार्बन के यौगिकों की भरमार रहती है । धूल और धुआँ मिलकर एक ऐसी 'स्मॉग' चादर तानते हैं जिसके नीचे रहने वाले न केवल मनुष्यों का वरन् पेड़-पौधों का भी दम घुटने लगता है । उनका स्वाभाविक विकास बुरी तरह अवरुद्ध हो जाता है ।

पानी के जहाज जिधर से निकलते हैं उधर ही समुद्र को गन्दा करते हैं । कुछ समय पूर्व टोरीकेन्यन नामक जलयान ने गलती से इतना तेल बिखेर दिया कि इंग्लैण्ड की नौसेना को उसमें भारी तादाद में बारूद गिराकर आग लगानी पड़ी । तेल निथारने के लिए जो डिटरजेण्ट प्रयोग किया गया वह भी कम घातक सिद्ध नहीं हुआ । इस उपद्रव ने उस क्षेत्र का जल ही दूषित नहीं किया वरन् जलचरों का भी सफाया कर दिया ।

फसल की रक्षा के लिए छिड़के गये कीटरसायन कितने कीड़ों को मारते हैं और कितना अनाज बचाते हैं, यह अन्वेषण का विषय है, पर यह सही है कि उस छिड़काव क्षेत्र के पक्षी, वहाँ के कीड़े-मकोड़ों अथवा दानों को खाने के बाद बेमौत मरते हैं । स्पष्ट है कि पक्षियों से बढ़कर फसल का रक्षक और कोई नहीं, छोटे-मोटे पक्षी उन कीड़ों का सफाया करने में निरन्तर लगे रहते हैं जो पौधों को क्षति पहुँचाते हैं । पक्षियों के मर जाने से इन कीड़ों को स्वच्छन्द वंशवृद्धि का अवसर मिलता है । फलतः विष छिड़काव से जितने कुछ कीड़े बच रहते हैं वे ही कुछ समय में मृतकों की तुलना से कहीं अधिक बढ़कर हमारी बुद्धिमत्ता को धूल में मिला देते हैं ।

नदियों के किनारे बसे हुए शहर तो उनके जल का लाभ उठाते हैं, पर नदियों को इन शहरों से गन्दगी ही प्राप्त होती है जिससे वे अपनी उपयोगिता खोती चली जाती हैं । बरौनी का तेल बहकर गंगा में जा पहुँचने और मुंगेर के पास पानी में आग लगने का समाचार अभी बहुत पुराना नहीं हुआ है । 'आल-इंडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ हाइजीन एण्ड पब्लिक हेल्थ' द्वारा किये गये सर्वेक्षण में दिल्ली और आगरा के बीच बहने वाला यमुना का पानी बहुत गन्दा पाया गया । बिहार की दहा और सोन नदियों में अब मछलियों का वंश नष्ट होता जा रहा है, गुजरात जिले की महिसागर नदी का पानी कुछ समय पूर्व हरा हो गया था, जिसे देखकर उस क्षेत्र के लोग बुरी तरह घबरा गये थे । गंगा, यमुना, काली, हुगली आदि नदियाँ कभी भीतरी और बाहरी पवित्रता प्रदान करने वाली मानी जाती थीं, अब वे गन्दगी को ढोने वाली निराशाजनक नहरें मात्र बनती जा रही हैं ।

इन दिनों समुद्रतटीय जल में नदियों द्वारा ५००० टन दूषित तत्व प्रतिवर्ष जा पहुँचता है । अन्य कई विषैले रसायन भी उसके साथ रहते हैं । अनुमान है कि पिछले

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२० वर्षों में इस विष को खाकर चालीस प्रतिशत जलचर बेमौत मर गये हैं । एसिड, सल्फेट, क्लोराइड, फीनॉल साइनाइड आदि रसायन समुद्री पानी की स्वाभाविक ऑक्सीजन को नष्ट कर रहे हैं जिसके कारण जलचरों का जीवन निर्वाह होता है ।

सर्वविदित है कि जलाशयों की भीतरी सफाई का सारा उत्तरदायित्व मछली जैसे छोटे जलचरों का है । वे अपनी खुराक उस गन्दगी को ही बनाते हैं जो पानी में इधर-उधर से जमा होती है । मछलियाँ न हों तो पानी बहुत जल्दी सड़ जायेगा । कीटनाशक दवाएँ वर्षा के साथ घुलकर नदियों में पहुँचती हैं और वहाँ जाकर मछलियों के प्राण लेती हैं । ऐसी दशा में जलाशयों की गन्दगी बढ़ती चली जाती है । इन दूरवर्ती दुष्परिणामों को देखते हुए हंगरी, स्वीडन और डेनमार्क आदि देशों ने डी० डी० टी० पर प्रतिबन्ध लगा दिया है । रूस में एल्ड्रिन और डाइएल्ड्रिन पर रोक है । ये दवाएँ फसल के कीड़े तो मारती हैं, पर दूसरे ऐसे उपद्रव खड़े करती हैं जो कीड़ों से भी अधिक हानिकारक होते हैं । जापान में माताओं के दूध में शिशुघाती जहरीला डाइएल्ड्रिन पाया गया । निश्चित रूप से यह फसलों पर छिड़के जाने के बाद अन्न, शाक, फल अथवा पशु-पक्षियों के माँस द्वारा माताओं के पेट एवं दूध में पहुँचा था ।

ऐल्फैल्फा, निकोटिन, मेटसिस स्टोक्स आदि रसायनों के बारे में यह अनुमान लगाया गया था कि वे शत्रुपक्षी कीटकों को मारती हैं और मित्रपक्ष को बचा लेती हैं, पर यह अनुमान गलत साबित हुआ । विनाश कार्य से शत्रु और मित्र पक्ष को लगभग समान क्षति पहुँची और वे सुरक्षात्मक परिणाम नहीं निकले जिनकी कि आशा की गई थी ।

शहरों में सड़कों पर दौड़ने वाले द्रुतगामी वाहन, बिजली का प्रयोग, थोड़ी जगह में अधिक मात्रा में जलने वाली आग, घिच-पिच में श्वांस तथा शरीर की गर्मी, कल-कारखाने आदि कारणों से तापमान ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ा रहता है । बिजली के पंखे तापमान नहीं गिराते केवल हवा को इधर से उधर घुमाते हैं, चुस्त एवं एक के ऊपर एक कपड़े लादने के फैशन ने शरीर के इर्द-गिर्द की गर्मी और भी अधिक बढ़ा दी है । सड़कों और बसों की घमस से गर्मी बढ़ी-चढ़ी रहती है । पक्के मकान और पत्थर की सड़कों में तपन रहती ही है । इस बढ़े हुए तापमान में शहरों के निवासी अपनी स्वाभाविक शारीरिक क्षमता को गँवाते ही चले जाते हैं ।

कोलाहल का अन्य प्राणियों पर क्या असर होता है इसका पता लगाने के लिए किये गये अनेक प्रयोगों में से एक कैलीफोर्निया की जीवन अनुसंधान संस्था द्वारा शार्क मछलियों पर किया गया था । संस्था के निर्देशक थियोब्राउन ने बताया कि पानी में लाउडस्पीकरों के द्वारा तेज आवाजें दौड़ाई गईं तो मछलियाँ उसे सुनकर आतंकित और विक्षिप्त हो उठीं । वे एक-दूसरे को इसका कारण समझकर आपस में हमला करने लगीं और जब ध्वनि उन्हें असह्य हो गई तो चट्टानों से सिर पटककर आत्म-हत्या कर बैठीं । ऐसे ही प्रयोग फ्रांसीसी कौलीनीशिया केरिगिरोजा एटौस में भी किये गये । उनका भी निष्कर्ष यही था कि जल-जीव असाधारण कोलाहल के बीच सामान्य जीवन नहीं बिता सकते ।

मोटरों की, कारखानों की, लाउडस्पीकरों की चिल्लियाँ शहरों को ऐसे शोर-गुल से भरती जा रही हैं जिसके परिणामस्वरूप, इण्डियन कौन्सिल ऑफ मैडीकल रिसर्च के कथनानुसार, लोग धीरे-धीरे बहरे होते चले जायेंगे । उनके मानसिक स्नायुविक और हृदय सम्बन्धी रोग बढ़ सकते हैं ।

अँग्रेज लेखिका श्रीमती एल्सपैथ हक्सले ने डॉ० डी० टी० प्रभृति कीटनाशक विषाक्त औषधियों के प्रयोग के खतरे से जन-साधारण को सावधान किया है, उनका कथन है कि पौधों पर छिड़के हुए रसायन अन्न, शाक एवं माँस के माध्यम से अन्ततः मनुष्य के शरीर में जा पहुँचते हैं और ऐसी हानि की जड़ जमाते हैं जो आरम्भ में तो थोड़ी दीखती है पर पीछे भयानक सम्भावनाओं को जन्म दे सकती है । यह विषाक्त रसायन वर्षा के साथ घुलकर नदी, तालाबों और कुओं से पहुँचते हैं । तटवर्ती समुद्र के निकट यह जल पहुँचता है तो उस क्षेत्र की मछलियों में भी वह विष उत्पन्न हो जाता है । इन्हें खाने वाले लोग उस दुष्प्रभाव से बच नहीं सकते । श्रीमती हक्सले ने अपनी बात को प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए पानी के, माँस के तथा अन्य प्रकार के सबूत संग्रह करके अपनी पुस्तकों में प्रकाशित किये हैं । वे एक कृषि फार्म चलाती हैं, पर कभी भी कीटनाशक दवाओं का प्रयोग नहीं करतीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राष्ट्र-संघ के तत्वावधान में वातावरण को जीवन योग्य बनाये रहने की समस्या पर विचार करने के लिए जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन स्टाकहोम में हुआ था उसका सम्मिलित स्वर यही था— "हमारे पास एक ही पृथ्वी है । इसे जीने लायक बनाये रखना चाहिए ।" सम्मेलन का सुझाव था— प्राकृतिक भण्डारों का मितव्ययता के साथ उपयोग किया जाय, प्रयोग की हुई वस्तुओं को पुनः काम के लायक बनाया जाय, बढ़ते हुए शोर को रोका जाय और वायु व जल के प्रदूषण को रोका जाये ।

जिस क्रम से हमारी तथाकथित 'प्रगति' प्राकृतिक सन्तुलन को बिगाड़ रही है, उसे दूरदृष्टि से देखा जाय तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि तात्कालिक लाभ में अन्धे होकर हम भविष्य को घोर अन्धकारमय बनाने के लिए आतुर हो रहे हैं ।

मनुष्य की बुद्धिमत्ता शहरों की वृद्धि— साधनों की तथा आबादी की वृद्धि— में इस तरह अविवेकपूर्वक लगी हुई है कि इस तथाकथित प्रगति का अन्त रोमांचकारी संकट के रूप में सामने आता दिखाई पड़ता है । आज प्रकृति को विषाक्त करके जो प्रगति खरीदी जा रही है वह कल कितनी महँगी पड़ेगी इसका अनुमान न जाने क्यों नहीं लगाया जा रहा है । बुद्धिमान मानव जाने क्यों इतनी अदूरदर्शिता का परिचय दे रहा है ।

हम अन्तरिक्ष को ही नहीं अन्तर को भी खोजें

विज्ञान की महिमा कितनी ही बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो, उसकी सार्थकता तभी है जब वह विकृतियों और विभीषिकाओं के जाल-जंजाल में उलझी हुई मानवता के परित्राण में सहायक सिद्ध हो सके ।

विज्ञानी शोधकर्ताओं और उनकी आश्रयदात्री सरकारों तथा संस्थाओं को इस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि संसार की दृष्टि से जितनी खोज हो चुकी है वह पर्याप्त है । इस पृथ्वी को भून डालने के लिए और प्राणियों का अस्तित्व सदा के लिए मिटा देने वाले साधन अब पर्याप्त है । यदि समस्त ब्रह्माण्ड को नष्ट करना हो तो बात दूसरी है, यदि पृथ्वी ही अपना कार्यक्षेत्र हो तो जितना धन और श्रम विघातक शोधकार्यों पर लग चुका वही पर्याप्त है । अब सृजन की दिशा में ही वैज्ञानिक अन्वेषणों और प्रयोगों का क्रम चलना चाहिए ।

युग की समस्याओं पर दूरगामी तत्व-दृष्टि से विचार करने वाले चिन्तक डॉ० वेस्टलेक ने अपने निष्कर्ष *'लाइफ थ्रेटण्ड' —जीवन संकट—* नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराये हैं । उन्होंने अपनी चिन्ता और वेदना व्यक्त करते हुए कहा— "पुराना युग जा तो रहा है पर नया आ नहीं रहा । उत्क्रान्ति के मोड़ पर खड़ा हुआ मानव अब सर्वनाश की ओर बढ़ेगा या आत्मिक प्रगति की ओर मुड़ेगा यह धूमिल है । यही घड़ियाँ हैं जिनमें उसे अपने जीवन और मरण में से एक का चयनवरण करना पड़ेगा ।"

विज्ञान क्रमशः जड़ पदार्थों की उस मूलशक्ति को पकड़ने और उँगली के इशारे पर चलाने के लिए आतुर होता जा रहा है जहाँ पहुँचने पर पदार्थों का ही सर्वनाश हो जायेगा और फिर विज्ञान के लिए कुछ करना ही शेष न रह जायेगा ।

विज्ञान की दिशा अब मानवीय अस्तित्व, चिन्तन, आस्था, दृष्टि एवं आकांक्षा के द्वारा उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया को खोजना चाहिए । जड़ पदार्थों को जिस उत्साह से खोजा जा रहा है उसी उत्साह से चेतना की भावसत्ता का अन्वेषण किया जाना चाहिए और ऐसे तथ्य सामने लाने चाहिए जिसे मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक सत्ता का सही प्रयोग कर सके साथ ही जो भौतिक पदार्थ उपलब्ध हैं उनका श्रेष्ठतम उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है इसकी रीति-नीति निर्धारित करने वाले विज्ञान के प्रामाणिक तथ्य विज्ञान को ही प्रस्तुत करने चाहिए । सदाचरण के प्रति डगमगाती जा रही निष्ठा इस प्रकार के शोधकार्यों से पुनः स्थापित की जा सकती है । परस्पर मिलजुल कर रहने और स्नेह-सौहार्द्र भरा उदार व्यवहार करने में घाटा नहीं वरन् लाभ है । यह तथ्य थोड़े से प्रयत्नों से भौतिक विज्ञान के आधार पर भी प्रतिष्ठापित किया जा सकता है और अध्यात्म की उच्चस्तरीय दार्शनिक मान्यताओं को विज्ञान का ठोस समर्थन मिल सकता है । इस लक्ष्य को सामने रखकर यदि विज्ञानी अपना शोधकार्य आरम्भ करें तो उससे इस पाप का प्रायश्चित हो सकता है जिसके कारण मानवीय सभ्यता के विनाश का खतरा उत्पन्न हो गया है आदर्शवादी आस्थाएँ लड़खड़ाने लगी हैं ।

स्वास्थ्य संरक्षण से लेकर इस संसार की हर समस्या का कारण और निवारण मनुष्य की आन्तरिक स्थिति से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुड़ा हुआ है । अब उसी क्षेत्र में शोध अन्वेषण के लिए हमारा उत्साह मोड़ा-मरोड़ा जाना चाहिए ।

होम्योपैथी के आविष्कर्ता उसे हानीमन कहते थे—रोग का नहीं रोगी का इलाज किया जाना चाहिए ।

डॉ० वाच इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि जब तक भौतिक और आत्मिक संतुलन बना रहेगा तब तक मनुष्य निरोग रहेगा, जब इस संतुलन में गड़बड़ी पैदा होगी तो बीमारियों का अड्डा शरीर में जमने लगेगा । एक के बाद दूसरे रोग का क्रम चलता रहेगा ।

डॉ० होप ने कहा है— ''पाप और बीमारी में कोई अन्तर नहीं है । सच्चा चिकित्सक रोगी को दवा देकर छुटकारा नहीं पा सकता, वरन् उसे रोगी की आन्तरिक विकृतियों को भी समझना देखना होगा. । इसके बिना अधूरी चिकित्सा के आधार पर रुग्णता का उन्मूलन नहीं किया जा सकेगा ।''

मनुष्य को रासायनिक उत्पादन मानकर चलने से काम नहीं चलेगा। एनाटोमी, फिजियोलॉजी, पैथोलोजी, मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, साइकोलॉजी आदि विज्ञान की धाराएँ हमें भौतिक शरीर की संरचना की जानकारी दे सकती हैं और उसके उतार-चढावों सम्बन्धी मार्गदर्शन कर सकती हैं, पर मनुष्य इतना ही तो नहीं है । उसका अस्तित्व अधिक ऊँचा है । आस्थाएँ और आकांक्षाएँ ही उसे दिशा देती हैं और इसी रीति-नीति पर व्यक्तित्व का स्तर निर्भर रहता है । हमें उस आत्मा का विज्ञान भी समझना चाहिए जिसका चेतनास्तर और शारीरिक क्रिया-कलाप पर पूरी तरह नियंत्रण है ।

सिद्धान्तरहित वैज्ञानिक शोधें और उनका प्रयोग हमें विपत्ति में ही फँसाता चला जायेगा । कला-कला के लिए की तरह यदि विज्ञान-विज्ञान के लिए ही सीमाबद्ध कर दिया गया और उसके पीछे कोई आदर्श न रहे तो फिर इस प्रगति से मनुष्य की विपत्तियाँ ही बढ़ेंगी ।

वेल्स यूनिवर्सिटी के डॉ० होलमन ने कहा है— ''आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की एक देन है— कैन्सर । नशेबाजी का बढ़ता हुआ व्यसन मनुष्य की जीवनी शक्ति का बेतरह क्षय कर रहा है, भीतर से खोखले बने हुए मनुष्य तनिक सी प्रतिकूलता में उलटे हो जाते हैं और विषाक्त वातावरण की विभीषिका उन्हें सहज ही अल्सर, रक्तचाप, अनिद्रा, धड़कन, गैस, अपच, मधुमेह, सनक, आवेश आदि शारीरिक-मानसिक रोगों से ग्रसित कर लेती है । अब तो कैन्सर जैसा प्राणघातक और तड़पा-तड़पा कर मारने वाला रोग भी इस सभ्यता प्रदत्त अनुदानों में से ही एक बन गया है । इस शारीरिक-मानसिक रुग्णता की अभिवृद्धि का प्रभाव सामाजिक रुग्णता के रूप में भी सामने आ रहा है । आक्रमण, अपहरण, बलात्कार, व्यभिचार, छल और विविध-विधि दुष्टता की बढ़ती हुई घटनाएँ बताती हैं कि वैयक्तिक विकृति बढ़ने से सारा समाज उससे किस प्रकार प्रभावित होता है ।

प्रगतिशील समझे जाने वाले देशों में शुद्ध अन्न, शुद्ध जल और शुद्ध वायु का मिलना दिन-दिन कठिन से कठिनतर होता चला जा रहा है । इस तथ्य को ध्यान में रखकर स्वास्थ्य विज्ञानी बेतरह चिन्तित हो रहे हैं । इन दिनों बन्द डिब्बों में, यन्त्र निर्मित, सुरक्षित रह सकने योग्य भोजन की भरमार है । रसायनों और मशीनों द्वारा बनाया गया सिन्थैटिक फूड 'सारूप भोजन' उत्साहपूर्वक बनाया और खाया जा रहा है । पर प्राकृतिक उत्पादन की तुलना में इसे 'मृतक' ही ठहरना पड़ रहा है । विज्ञापन और पैकिंग की तड़क-भड़क से लोगों को बहकाया-फुसलाया जा सकता है पर तथ्य तो जहाँ के तहाँ रहेंगे । फैक्टरी फॉर्मिंग से स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिरता और सुविधा का स्वप्न तथ्यों की कसौटी पर निरर्थक ही सिद्ध हो रहा है ।

कारखानों और वाहनों में जितना ईंधन इन दिनों जलाया जा रहा है और उससे जितनी अतिरिक्त गर्मी उत्पन्न हो रही है उसका संकट कम करके नहीं आँका जाना चाहिए । वर्तमान क्रम चलता रहा तो आगामी २५ वर्षों में वातावरण में कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा अत्यधिक बढ़ जायेगी और उसकी गर्मी से ध्रुव प्रदेशों की वर्फ तेजी से पिघलने लग जायेगी । इसका प्रभाव समुद्र तल ऊँचा उठने के रूप में सामने आता जायेगा और यदि यह क्रम यथावत चला तो सारी वर्फ गल जाने पर समुद्र का जल लगभग ४०० फुट ऊँचा उठ जायगा । और वह संकट धरती का प्रायः आधा भाग पानी में डुबोकर रख देगा । वह आज के क्रम से बढ़ते हुये समुद्री संकट को २५ वर्ष बाद ही उत्पन्न करना आरम्भ कर देगा और ४०० वर्षों में वह संकट उत्पन्न हो जायगा, जिसके कारण आज के वैज्ञानिक उत्साह को मानवीय विनाश के लिए उदय हुआ अभिशाप ही माना जाने लगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इंजनों में धक्के कम करने के लिए पैट्रोल में शीशा मिलाया जाता है किन्तु उसके कारण जो जहरीला धुआँ उत्पन्न होता है उससे वायुमण्डल की विषाक्तता दिन-दिन बढ़ती जा रही है ।

अमेरिका के कल-कारखानों के विषैले अवशेष, इन दिनों जलाशयों में गिराये जा रहे हैं । इसके कारण वह जल मानवीय प्रयोजनों के लिए अनुपयुक्त बनता चला जा रहा है । नदी-तालाबों के जल जीव बेतरह मर रहे हैं । अनुमान है कि वर्तमान क्रम से आगामी पच्चीस वर्षों में उस देश में शुद्ध जलाशयों के दर्शन दुर्लभ हो जायेंगे । कारखानों से, तेल वाहनों से निकलने वाला धुआँ आसमान में एक प्रकार का कुहरा बनकर छाया रहता है और वह श्वांस सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ पैदा करता है ।

'डेली टेलीग्राफ' के सम्पादक ने सत्ताधारियों से पूँछा है कि कुछ लोग कम समय में जेट विमान द्वारा जल्दी अटलांटिक पार करलें इस सुविधा के लिए करोड़ों लोगों की नींद जेट की भयंकर ध्वनि के कारण क्यों बिगाड़ी जा रही है ?

आदमी के कान साधारणतया ६० डेसिबल की आवाज सहन कर सकता है जबकि रेलें, मोटरें, कारखाने, लाउडस्पीकर आदि के कारण १२० डेसिबल तक की आवाज पैदा होती है । यह शोर आदमी के मानसिक सन्तुलन को बिगाड़कर ऐसी अर्ध-विक्षिप्तता उत्पन्न करता है जिससे आत्म-हत्या की, अपराधों की, सनक, उद्दण्डता और गैर-जिम्मेदारी की प्रवृत्ति बनाये । चन्दलोग अधिक सुख-सुविधा उपार्जन कर सकें इसलिए शरीर उत्पन्न करने वाले माध्यमों का बढ़ते जाना-समग्र मानव जीवन के लिए संकट उत्पन्न करना ही तो है ।

अधिकाधिक लाभ कमाने के लोभ ने अधिकाधिक उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित किया है । मानवीय रुचि में अधिकाधिक उपयोग की ललक उत्पन्न की जा रही है ताकि अनावश्यक किन्तु आकर्षक वस्तुओं की खपत बढ़े और उससे निहित स्वार्थों को अधिकाधिक लाभ कमाने का अवसर मिलता चला जाय । इस एकांकी घुड़दौड़ ने यह भुला दिया है कि इस तथाकथित प्रगति और तथाकथित प्रगति और सभ्यता का सृष्टि सन्तुलन पर क्या असर पड़ेगा । इकॉलोजिकल बेलेन्स गवांकर मनुष्य सुविधा और लाभ प्राप्त करने के स्थान पर ऐसी सर्प-विभीषिका को गले में लपेट लेगा जो उसके लिए विनाश का सन्देश ही सिद्ध होगी । एकांकी भौतिकवाद अनियन्त्रित उच्छृंखल दानव की तरह अपने पालने वाले का ही भक्षण करेगा । यदि विज्ञान रूपी दैत्य से कुछ उपयोगी लाभ उठाना हो तो उस पर आत्मवाद का नियन्त्रण अनिवार्य रूप से करना ही पड़ेगा ।

हमारा धर्म 'आत्मा के राज्य में प्रवेश' करने पर जोर देता रहा है । उपनिषदकार ने अपने को जानने और परिष्कृत स्थिति प्राप्त करने को कल्याण साधन बताया है । हम अन्तरिक्ष में उड़ते हैं पर यह भूल जाते हैं कि अन्त की खोज उससे भी अधिक आवश्यक है ।

सौर ऊर्जा का अथाह सिन्धु काश ! उसे धारण कर पायें

न्यूमैक्सिको में अलबुकर्क के अनुसंधानकर्त्ताओं ने एक ऐसा यन्त्र बनाया है जो सौर ऊर्जा को एकत्र करता है । शोधकर्मियों ने अपने प्रथम प्रयोग में ही ४.५ मीटर लम्बी व १.८ मीटर चौड़ी इस्पात की चादर को गलाकर रख दिया । यह चादर १/४ इंच मोटी थी और प्रयोग संडिया की प्रयोगशाला में किया गया । किन्तु सबसे अच्छी प्रयोगशाला मनुष्य का अपना शरीर ही है, यदि इसमें प्रसुप्त पड़ी शक्तियों को पहचाना और विकसित किया जा सके तो बिना किसी यान्त्रिकी या भौतिकी के भी अपार शक्ति संचय और उसके द्वारा विलक्षण चमत्कार तक दिखाये जा सकते हैं ।

समुद्र से आकाश तक गत सितम्बर १९७७ में एवरेस्ट विजेता एडमण्ड हिलेरी ने एक अभियान प्रारम्भ किया जिसमें उन्होंने कलकत्ता से गंगा मार्ग द्वारा गंगोत्री तक की यात्रा सम्पन्न की । जिस समय एडमण्ड हिलेरी की मोटर वोट इलाहाबाद पहुँची उस समय एक ६८ वर्षीय वृद्ध हठयोगी ने उनकी नाव को एक स्थान पर ही १० मिनट तक रोके रखा । इस प्रयोग को हजारों व्यक्तियों ने देखा । १४ सितम्बर के दैनिक हिन्दुस्तान में यह समाचार छपा भी था और बताया गया था कि २०० हॉर्सपावर की मोटर ने पूरा जोर लगाया, बोट बुलबुले छोड़ती रही, पर टस से मस न हो सकी । सूर्य किरणों को केन्द्रित करने के लिए तो कम्प्यूटर नियन्त्रित दर्पण प्लेटें (हैलिपोस्टैट्स) प्रयुक्त की गई थीं जिससे दो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिनट में ३००० डिग्री फारेनहाइट ताप १.८ मेगावाट विद्युत के बराबर ऊर्जा उत्पन्न हुई और उसने इस्पात की चद्दर को गला दिया पर आत्म-शक्तियों को केन्द्रित करने और उनका लाभ उठाने के लिए न ऐसे किसी जटिल उपकरण की आवश्यकता होती है न साधनों की । जिस तरह आतिशी शीशे में किरणों को एकाग्र कर उन्हें अकूत बना लिया जाता है उसी प्रकार प्राण-शक्ति के संलयन से वह अद्‌भुत शक्ति मनुष्य शरीर में ही प्राप्त कर ली जाती है । जिस तरह हाईड्रोजन सर्वत्र बिखरा पड़ा है और किसी स्थान विशेष में १० करोड़ सैण्टीग्रेड ताप पैदा कर दें तो इस हाइड्रोजन की संलयन (फ्यूजन) प्रक्रिया वहाँ स्वयमेव प्रारम्भ हो जायेगी और उस स्थान पर कृत्रिम सूर्य पैदा हो जायेगा । वैज्ञानिक फिलहाल इतनी गर्मी पैदा करने की प्रक्रिया का विकास नहीं कर पाये, इसीलिए अभी ऊर्जा का यह अकूत भण्डार हमारे आसपास बिखरा होने पर भी उसका उपयोग नहीं हो पाता। मनुष्य में से प्रत्येक के पास भी परमात्मा ने इस तरह की शक्तियाँ दी हैं, पर इतनी प्रचण्ड गर्मी वाला मनोबल या संकल्प बल किन्हीं विरलों में ही जागृत हो पाता है, जो कर लेते हैं वे योग साधनाओं, विचारों आदि के मूर्तिमान शक्ति पुँज चलते-फिरते बिजलीघर बन जाते हैं और उससे वे सैकड़ों लोगों का भला कर सकते हैं। मात्र विचारों की ही एकाग्रता मनुष्य को कुशाग्र बुद्धि साहित्यकार, इंजीनियर, वैज्ञानिक और न जाने क्या बना देती है । आत्म-शक्ति संचय के सत्परिणामों की तो कल्पना भी नहीं हो सकती ।

प्रकारान्तर से प्राप्त ऊर्जा शक्ति चाहे वह प्राकृतिक रूप में हो या उसे साधन रूप में प्रयुक्त किया गया हो सूर्य की ही चिर संगृहीत शक्ति होती है । सम्भाल कर रखे गये पदार्थ कभी भी काम में आ जाते हैं इस तथ्य में यही सिद्धान्त कार्य करता प्रतीत होता है ।

भू-ताप विशेषज्ञ सी० गुलेमीन ने कुछ दिनों पूर्व पेरिस में आयोजित एक ऊर्जा सम्मेलन में अपने निबन्ध में बताया कि अकेले पेरिस के इलाके में १५०० से २००० मीटर गहरे कुएँ खोदे जायें तो वहाँ उपलब्ध गर्म जल से इतना अधिक ताप मिल जायेगा जितने के लिए १ करोड़ ८० लाख टन ईंधन जलाना पड़ेगा । पेरिस में मेलन नामक इस स्थान में १०० क्यूबिक मीटर प्रति घण्टे की गति से ७० अंश से० ग्रे० गर्म पानी निकाल कर लगभग १९०० घरों को पहुँचाया जाता है ।

हिमालय के अत्यन्त शीत वाले प्रदेश में स्थान-स्थान पर ऐसे कुण्ड उपलब्ध हैं जिनमें ३५० से० ग्रे० तक गर्म जल उपलब्ध है । रूस के उत्तरी ध्रुव क्षेत्रों में भी पृथ्वी के भीतर के गर्म जल का उपयोग करके २ करोड़ टन ईंधन की बचत की जाती है । टस्केनी के लॉर्ड रेल्लो में एक ऐसा कारखाना चलाया जा रहा है जिसमें इस भू-ताप से ही ३९० मेगावाट शक्ति की भू-ताप बिजली तैयार की जाती है । केलीफोर्निया में पहले से ही ६ भू-ताप बिजलीघर हैं, ४ और तैयार हो रहे हैं । यह सब १००० मेगावाट बिजली तैयार करेंगे । जापान, मैक्सिको, आइसलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, फिलीपाइन्स आदि में भी ऐसे भूताप कारखाने हैं । यह समग्र शक्ति और कुछ नहीं सूर्य द्वारा वर्षों से धरती के सघन अन्तराल में संचित की हुई पूँजी है, उसका लाभ आज का मनुष्य समाज पूर्वजों द्वारा संगृहीत सम्पत्ति के रूप में लेता है ।

फ्रांस ने रांस नदी पर समुद्री ज्वार से २४० मेगावाट बिजली बनाने का कारखाना खड़ा किया है । यह भी सूर्य की ही उधार दी हुई सामर्थ्य है ।

अपने देश की धरती में अनुमानतः १४० अरब टन कोयला है, उससे अगले २०० वर्षों से भी अधिक तक ६२.५ करोड़ टन प्रति वर्ष की दर से ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है, यह भी सूर्य की ही चिर संचित पूँजी है । अनुमान है कि यह कुछ करोड़ वर्षों से संगृहीत शक्ति है जो कोयलों में विद्यमान रहती है । इस तरह सारी धरती के कोयले में प्रसुप्त सौर-शक्ति की माप भी असम्भव है ।

बरसात के दिनों में बादल अपने आप हवाई समुद्र बन जाते हैं और सारी पृथ्वी को जल से सरावोर कर देते हैं । यह बादल उस भाप का परिणाम हैं जिसे सूर्य अपनी गर्मी से प्रति सैकिण्ड १ करोड़ ६० लाख टन पानी को पकाकर भाप में बदलता रहता है । सूर्य से पृथ्वी को मिलने वाली कुल ऊर्जा शक्ति का दो-तिहाई भाग इसी कार्य में प्रयुक्त होता है । नैसर्गिक शक्तियाँ विश्व व्यवस्था का भार कितने विवेकपूर्वक चलाती हैं यह इसी तथ्य से प्रकट है । यदि सृष्टि में वृष्टि की प्रक्रिया किसी एक वर्ष ही रुक जाये तो न केवल मनुष्य जाति अपितु उससे पड़ने वाले अकाल से सारा जीवन जगत समाप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो सकता है। कहाँ तुरन्त कितनी आवश्यकता है, कहाँ भविष्य के लिए संग्रह की आवश्यकता है, पृथ्वी में शीत-ताप का सन्तुलन किस प्रकार रखने का है, इस सम्बन्ध में प्रकृति की चिन्तन दृष्टि विवेकपूर्ण, सूक्ष्म और दूरदृष्टि न रहे तो यहाँ जो कुछ भी सौन्दर्य और जीवन व्यवस्था दिखाई देती है कुछ भी न रहे । जो लोग अपने जीवन में भी यह दृष्टि और दूरदर्शिता बनाये रखते हैं वे न केवल स्वयं सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करते है अपितु अपने परिवार-परिजनों को भी प्रगति पथ पर अग्रसर करने में सफल होते हैं ।

सूर्य-शक्ति का यह विशाल परिमाण और उसकी सर्वव्यापक सक्रियता न केवल जगत के शक्तिमय होने की झाँकी प्रस्तुत करती है अपितु उससे भौतिक लाभ भी लिये जा सकते हैं । सूर्य हमारे जीवन का आधार, हमारा आरोग्य प्रदाता पिता है, हमें उसको भौतिक ही नहीं आत्मिक दृष्टि से पहचानना चाहिए ।

ब्रिटेन के टेलीफोन इन्जीनियरों ने एक ऐसे टेलीफोन का विकास किया है जिसमें तार बिछाने की न तो कोई समस्या रहेगी न खर्च । उससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी संचार व्यवस्था स्थापित हो जायेगी, जहाँ वर्तमान साधनों से भी पहुँचना सम्भव न था । ब्रिटेन की दूर संचार प्रणाली का संचालन करने वाले डाकघर के एक प्रवक्ता ने बताया कि नारफोक के निकट ब्रिटेन के पूर्वी तट पर एक निगरानी चौकी बनी है जिससे उस क्षेत्र में कोई पक्षियों का शिकार न कर पाये उसकी निगरानी की जाती है । उपर्युक्त टेलीफोन का परीक्षण इसी स्थल पर किया गया ।

यह एक प्रकार से विशालकाय सूर्य की अनन्त शक्ति की एक फुलझड़ी मात्र हुई । आये दिन ऐसे अनेक लोगों के चमत्कार के वर्णन सुनने को मिलते रहते हैं कि उन्होंने जो भविष्यवाणी की वह सच निकली, उन्होंने तन्त्र विद्या से कोई वस्तु प्रकट कर दी, उन्होंने शाप देकर किसी का अनिष्ट कर दिया, उन्होंने किसी को सम्मोहित कर दूरवर्ती अदृश्य तथ्य को भी जान लिया । यथार्थ चमत्कार तो वह है जो किन्हीं महापुरुषों, सन्तों और अवतारों द्वारा युग की दिशायें मोड़ने में प्रयुक्त होता है और जन-जीवन के प्रकाश के रूप में चमत्कार दिखाता है । विनाश की दिशा में चल रही मानवीय प्रवृत्तियों को उलटकर उन्हें रचनात्मक दिशायें देते और संसार में सुख-शान्ति की परिस्थितियाँ लाते हैं, इसके लिए कितनी विशाल शक्ति की आवश्यकता होगी उसकी कल्पना करना भी कठिन है ।

परमात्मा के इस विशाल जगत में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है यदि कुछ है तो वह मात्र मनुष्य का अज्ञान है, उसकी जड़ता है । अज्ञान और जड़तायें आगे बढ़ने ही नहीं देतीं, संकीर्णता में ही उलझाये रहती हैं । ऊर्जा के लिए ईंधन और कोयला स्थूल साधन हैं। बड़े परिमाण में मिलें तो भी थोड़ी शक्ति मिलती है । उससे आगे भू-ताप है, उससे भी बढ़कर विद्युत शक्ति । इससे भी यदि आवश्यकतायें पूर्ण न हों तब फिर सूर्य शक्ति का अजस्र भंडार । शक्तियों के एक से एक बुद्धि को चकरा देने वाले साधन प्रकृति के अन्तराल में भरे पड़े हैं । उन्हें प्राप्त करना एक क्लिष्ट प्रणाली हो सकती है किन्तु वैज्ञानिकों ने वह तथ्य सम्मुख ला दिये हैं जिनसे शक्ति चुक जाने की आशंका का पूर्ण निराकरण हो गया है ।

सूर्य पृथ्वी से १४९०००००० किलोमीटर दूर है । इतनी दूरी और पृथ्वी के क्षेत्रफल के अनुपात से वह अपनी कुल ऊर्जा का मात्र ०.०००००००५वाँ अंश ही पृथ्वी को देता है किन्तु यह शक्ति भी इतनी विशाल है कि उसकी बराबरी २ अरब अणु विद्युतघरों से प्राप्त बिजली ही कर सकती है । उसे यदि विद्युत शक्ति में बदला जा सके तो १ खरब ७३ अरब मेगावाट विद्युत भार के बराबर होती है । अनुमान है कि प्रति वर्गमीटर एक किलोवाट विद्युत भार के बराबर ताप पृथ्वी को मिलता है । समूची धरती का हिसाब लगायें तो उसे सूर्य से प्रति वर्ष १३११ करोड़ खरब कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है । इस विशाल परिमाण का अनुमान करना भी कठिन है । हमें यह अनुदान अजस्र रूप से मिलता रहता है फिर कितना दुर्भाग्य है कि हम शक्ति-शक्ति चिल्लाते रहते हैं । जल में मीन पियासी वाली कहावत है ।

सूर्य की यह अजस्र ऊर्जा हमारा प्राण है । समस्त जीव जगत और वृक्ष-वनस्पति उसी से जीवन धारण करते हैं । शैवाल से लेकर सभी पौधे सूरज की ऊर्जा सोख कर फोटोसिन्थेसिस क्रिया करते हैं और कार्बन डाई-ऑक्साइड तथा पानी से हमारे लिए शाकाहार तैयार करते हैं । अकेले भारतवर्ष में २३ करोड़ पशु कृषि उपयोग में आते हैं । इनका मुख्य आहार यह प्रकृति ही है । फिर पृथ्वी के ३ अरब लोग और इनसे करोड़ों गुना अन्य जीव-जन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सब सूर्य-शक्ति के सहारे ही जीवित हैं । यह सब बातें भारतीय तत्व दर्शन की इस मान्यता का ही प्रतिपादन करती हैं कि सूर्य हमारी आत्मा है । तात्विक दृष्टि से हम उसी दिव्य ज्योति के प्रकाश कण हैं अतएव हमें उनकी ओर उन्मुख रहना, उन्हें धारण किये रहना चाहिए । उनके न रहने पर फूल खिलना बन्द हो जाता है, रोगाणु पनपने लगते हैं । हमारे जीवन में व्याप्त कषाय-कल्मषों का निवारण और प्रसन्नता का विकास इसी आधार पर सम्भव है कि हम उस आत्मतत्व को विस्मृत न करें ।

किसी समय लोग इसे कल्पनातीत मानते थे कि सूर्य शक्ति को पकड़ा, बाँधा और बड़े कार्यों में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता । इसी तरह आज लोग आत्मशक्तियों पर विश्वास नहीं करते किन्तु जब नेशनल फिजिकल लैबोरेटरी की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष एन० पी० एल० तथा डा० भिंड़े हैं और उसने सूर्य ऊर्जा को बिजली में बदलने वाला सोलर-सेल बनाकर सिलीनियम, कैडमियम, सल्फाइड आदि से उसे सम्भव बना दिया । माउंट लुई तथा ओडिलो (फ्रांस) में परावलमी शीशों से सौर भट्टियाँ बनाई गई इनमें एक कालरोगन पुता रहता है जो शक्ति को सोख लेता है । पानी गर्म करने के यन्त्र, आलू भूनने के यन्त्र आदि इसी आधार पर बने हैं । अरविन्द आश्रम में चाय बनाने, सामान सुखाने तथा पानी व कमरे गर्म करने के लिए छोटे-छोटे सौर ऊर्जा यन्त्र बनाये गये हैं । इजराइल में खारे पानी को इसी तरह शुद्ध किया जाता है । भविष्य में तो वैज्ञानिकों की योजना सारे समुद्री जल को मीठा बनाकर जल समस्या के निवारण की है । शक्ति एक ही है उसका जहाँ भी उपयोग करें वहीं चमत्कारी सत्परिणाम उपस्थित हो सकते हैं ।

दुनिया भर में यह प्रयोग चल रहे हैं । रूस ने आर्मेनिया घाटी में बिजलीघर बनाया है जिसमें १३०० दर्पण ऊर्जा संग्रह करते हैं । यह बिजलीघर पाँच एकड़ में है । १३० फुट ऊँची बुर्जी पर रखे बायलर पर सूर्य किरणें डालकर २५ लाख किलोवाट प्रति घण्टा बिजली पैदा की जाती है । मिस्र ने एक सूर्य कुकर, भारत ने अल्यूमिनियम के शीशे वाला प्रेशर कुकर बनाने में सफलता पा ली है । अब तक लोहे से २८०० अंश, टंगस्टन से ६१०० अंश तथा किसी भी अच्छी से अच्छी ताप निरोधक धातु से ६९०० अंश पर भाप बनकर उड़ जाती है किन्तु अब सूर्य से ८००० अंश तक की ताप शक्ति मिल जाने से सर्वत्र औद्योगिक क्रान्ति की सम्भावनाएँ बढ़ गई हैं । अमेरिका में इस दिशा में व्यापक खोजें चल रही हैं ।

सर्वोपरि आवश्यकता, अन्तःशक्तियों पर विश्वास नहीं, उनके विकास की जटिलता से सिद्धि पाने तक जूझते रहने के साहस की होती है । बड़ी बारीकी से आत्म निरीक्षण करना पड़ता है, सौर ऊर्जा संग्रह के लिए दर्पण वाले यन्त्र लगते हैं । अपने मन को भी दर्पण बनाकर उसमें झाँककर मलिनताओं को निकालना पड़ता है । अन्यथा प्रकाश के साथ अँधकार भी छनकर जाता रहे और शक्ति संचय का प्रयोजन ही पूरा न हो । आत्म सुधार के बाद आत्म-निर्माण अर्थात् बुराइयों के स्थान पर अच्छे विचार, अच्छा चिन्तन और आदर्श कर्त्तत्व अपनाना पड़ता है; इतना करने के बांद ही आत्मा का विकास या आत्मानुभूति का दिव्य लाभ मिल पाता है ।

ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों पर अब ध्यान दिया ही जाना चाहिये

विश्व मानस में आज एक भ्रांति व्याप्त है कि उत्पादन की समस्त समस्याओं का निवारण हो चुका है । यह विश्वास उनका है जो विश्व के जाने-माने उद्योगपति, आर्थिक प्रबन्धक एवं अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ कहे जाते हैं । उनके अनुसार अब मात्र एक ही काम शेष रह गया है, वह है निर्धन देशों के लिए प्रौद्योगिकी को सुव्यवस्थित स्वरूप देना एवं उत्पादन तन्त्र का मशीनीकरण कर देना ।

वस्तुतः स्थिति इतनी सरल नहीं है, जितनी बतायी जा रही है । मानवीय चिंतन की विकृति ने उपभोग व्यवस्था को इतना अस्त-व्यस्त कर दिया है कि ऊपर से समृद्ध नजर आने वाले राष्ट्र भी अब दिशाहीन, अनियन्त्रित प्रक्रिया से गुजर रहे हैं । उपभोग की सीमा-मर्यादा क्या हो, क्या प्रकृति पर पूरी तरह मानव का निरंकुश शासन हो, दोहन के लिए स्त्रष्टा से इसको क्या पूरी छूट मिली हुई है ? इस पर कई विचारकों ने अपने मन्तव्य प्रकट किये हैं । विशेषतः वर्तमान संकट के संदर्भ में ये कथन और भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं, जबकि प्रकृति के विपुल साधन चाहे वे हरे-भरे जंगल हों, अथवा पेट्रोलियम के कुएँ, तेजी से समाप्त होते चले जा रहे हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं ऊर्जा संकट बहुत दूर नहीं, १९८१ से २००० के बीच अपने विकराल स्वरूप में आता दृष्टिगोचर हो रहा है ।

प्रख्यात अर्थविद एवं गाँधीवादी विचारक 'ई० एफ० शूमाकर' का कथन है कि इन सबका कारण पिछली चार-पाँच शताब्दियों में प्रकृति एवं उपलब्ध संसाधनों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण में आया दार्शनिक परिवर्तन है । मनुष्य का चिन्तन स्थूल एवं भौतिकवादी मात्र होकर रह गया है । पाश्चात्यीकरण की चरम उपलब्धियाँ एक ऐसा आकर्षण बन गयी हैं, जिस ओर हर राष्ट्र की दृष्टि है । मनुष्य स्वयं को प्रकृति का अंग न मानकर अब उसे बाहर की एक सामर्थ्यवान् शक्ति मानता है, जिस पर आधिपत्य करने के लिए ही धरती पर उसे भेजा गया है ।

एक व्यापारी अपनी पूँजी में आय एवं व्यय का एक यथोचित अनुपात रखकर एक संतुलित अर्थव्यवस्था बनाता है तभी लाभ की बात बन पाती है । उसी प्रकार पृथ्वी भी एक वृहद स्वरूप वाली 'फर्म' है । यहाँ अर्थव्यवस्था आय-पूँजी व खर्च के परस्पर सम्बन्ध की बात को कैसे भूला जा सकता है । स्थूल दृष्टि से ही पृथ्वी को यदि 'केपीटल' मान लिया जाय तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि इसका दोहन एक सीमा तक ही किया जा सकता है । सामयिक समृद्धि की बात अदूरदर्शितायुक्त है, यह सभी अच्छी तरह जानते-समझते हैं । फिर एकांकी उपभोग क्यों कर लिया जाय ?

स्थिति जब हाथ से बाहर होने लगती है तो वैकल्पिक व्यवस्था की बात दूरदर्शी व्यक्ति समय रहते सोच लेते हैं । कुछ ऐसा ही चिन्तन इन दिनों नीति-निर्माताओं, वैज्ञानिकों, विचारकों का चल रहा है । जीवाश्मी ईंधन आज ऊर्जा की प्राथमिक आवश्यकता है । इसमें मुख्यतः कोयला, जलाऊ लकड़ी, पेट्रोलियम पदार्थ आते हैं । सन् २००० में अनुमान के अनुसार कोई दो हजार करोड़ टन ईंधन की आवश्यकता विश्व को होगी। उस समय विश्व की आबादी अनुमानतः ६ अरब ५० करोड़ होगी । आज खपत की जो दर है, उसे देखकर लगता है कि यह भण्डार भी शीघ्र ही समाप्त होने जा रहा है । इस खपत को कम करना, कल-कारखानों के स्वरूप में परिवर्तन लाना, उपभोग करने वाली जनसंख्या में चिन्ताजनक अभिवृद्धि को कुछ हद तक नियंत्रित करना तथा वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोतों को ढूँढ़ना इस चार सूत्री कार्यक्रम पर जनमानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम-विचार दिये जा रहे है ।

सारे यूरोप में जितनी ऊर्जा व्यय होती है, उसका ५४ प्रतिशत अरब देशों से तेल के रूप में आयात करना होता है । इन राष्ट्रों ने, जिनके पास तेल सम्पदा का नियन्त्रण है, १९७९ के प्रारम्भ से १९८१ के प्रारम्भ तक तेल के भाव में १२० प्रतिशत वृद्धि की है । भारत जैसा गरीब राष्ट्र ५० अरब रुपये का तेल आयात कर रहा है । यह स्थिति अगले दिनों और भी विस्फोटक होने जा रही है, जब तेल का भण्डार चुकता चला जायेगा एवं भाव बढ़ते चले जायेंगे । ऐसे में विश्वभर में वैकल्पिक ऊर्जा की बात बड़ी गम्भीरता से सोची जा रही है । सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस, कूड़े से ऊर्जा, समुद्र से ऊर्जा, ज्वालामुखी से टर्बाइन चला सकना, इन सभी पर विशाल पैमाने पर प्रयोग किये जा रहे हैं । आण्विक शक्ति के सदुपयोग की बात भी अब खटाई में पड़ती जा रही है क्योंकि सबसे बड़ी समस्या अणु भट्टियों की राख को विसर्जित करने की एवं उससे संभावित घातक प्रदूषण की है । प्रदूषण रहित ऊर्जा के कई विकल्प सोच लिये गये हैं, कई स्थानों पर इनको व्यवहार में भी उतार लिया गया है ।

अब वैज्ञानिक सोचते हैं कि क्यों नहीं उन साधनों का उपयोग किया जाय जो अपने आसपास ही उपलब्ध हैं । कहावत है कि कभी तो घूरे के दिन फिरते हैं । कूड़ा आज की सबसे बड़ी समस्या है । एक अनुमान के अनुसार भारत की शहरी आबादी, जो १९८१ की जनगणना के अनुसार १४ करोड़ ३१ लाख है, द्वारा नित्य साढ़े चार टन कचरा दैनंदिन जीवन में काम आने वाली वस्तुओं के उपयोग के बाद फेंक दिया जाता है । अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, जर्मनी, जापान जैसे सम्पन्न राष्ट्रों में यह औसत तो प्रति व्यक्ति ५ टन प्रति वर्ष आता है । सोचा यह गया है कि अब इस कूड़े के ढेर से ऊर्जा प्राप्त की जाये । ब्रिटेन की एक फर्म 'फ्लेमलेस फर्नेसेज' ने एक ऐसा संयन्त्र विकसित किया है जिसमें कूड़े-कचरे को डालकर उसे ९०० डिग्री सेण्टीग्रेड पर जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है । इसे संचित कर विभिन्न उपयोगों में लिया जा सकता है । यह अन्य ऊर्जा की तुलना में सस्ती व करीब १७ प्रतिशत अधिक है । घर्षण द्वारा पूरी तरह जलने के बाद जो अवषिष्ट राख बचती है, उसे न्यूमेटिक वाहक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वारा अलग कर दिया जाता है। इस प्रकार वायु प्रदूषण भी नहीं होता । स्वीडन ने 'ब्रिनी' नामक संयन्त्र विकसित किया है जिसमें कूड़े की छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर उन्हें जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है । यहाँ प्रति वर्ष सारे कूड़े का एक-चौथाई भाग जलाकर उससे ऊर्जा सम्बन्धी एक-तिहाई आवश्यकता पूरी कर ली गई है । विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि सारे विश्व के कूड़े को जलाया जाय तो उससे प्राप्त ऊर्जा ४ लाख घन मीटर तेल से प्राप्त ऊर्जा के बराबर होगी । वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार किसी भी ज्वलनशील द्रव्य की १० पौण्ड मात्रा से सारी दुनिया की एक महीने की विद्युत आवश्यकता पूरी की जा सकती है अगर १ पौंड कोयले को पूर्णतया ऊर्जा में बदल सकना सम्भव हो तो १० अरब किलोवाट घण्टों से भी अधिक की ऊर्जा प्राप्त होगी । आइंसटीन के इसी सिद्धान्त (ऊर्जा सूत्र = एम सी स्क्वेयर) के आधार पर परमाणु उर्जा को प्राप्त किया जाता है । पर उसी सिद्धान्त को कूड़े पर भी यदि आरोपित किया जाय तो परिणाम फलदायी ही है । कूड़ा दहन प्रदूषणरहित ऊर्जा प्राप्ति के अतिरिक्त इसके निष्कासन व सफाई में भी सहायक होगा, यद्यपि अभी यह प्रारम्भ ही है ।

लकड़ी की छीलन या बुरादे का प्रयोग भारत में कई स्थानों पर होता रहा है, पर उसके परम्परागत उपयोग से अधिक लकड़ी का क्षय होता है एवं ऊर्जा सीमित मात्रा में प्राप्त होती है । न्यूजीलैण्ड में लकड़ी की छीलन के परिष्कृत प्रयोग से ईंधन के खर्च में अस्सी प्रतिशत कमी आई है । वहाँ की कोऑपरेटिव डेयरी अपने बर्नर इसी माध्यम से चलाती हैं ।

'भू-गर्मी' ऊर्जा प्राप्त करने के लिए ज्वालामुखियों के आसपास के क्षेत्र में पृथ्वी में छेद करके, उबलते पानी से जो आसपास के क्षेत्र में, जमीन की तलहटी में १५० से ३०० डिग्री सेण्टीग्रेड के तापमान पर विद्यमान रहता है, टर्बाइन चलाकर विद्युत पैदा की जाने लगी है । ज्वालामुखियों की संख्या सारे विश्व में ८५० है, जिनमें से ६१५ सक्रिय एवं शेष प्रसुप्त हैं । तथापि इन सभी के आसपास मीलों तक १००० मीटर की तलहटी तक गर्म खौलता पानी उपलब्ध रहता है । हवाई द्वीप के इंजीनियरों ने किलोओए ज्वालामुखी के पास तीन मेंगावाट का एक विद्युत संयन्त्र लगाया है जो वर्तमान में तो प्रायोगिक स्तर पर है पर इसके विस्तार की असीम संभावनायें हैं । विद्युतीय जैनरेटर का सम्बन्ध यहाँ खौलते पानी से कर दिया गया है । ताप के दबाव से जैनरेटर चल पड़ता है और यह कभी न समाप्त होने वाली भाप बिना किसी वायु प्रदूषण के सतत विद्युत उत्पन्न करती रह सकती है । वैज्ञानिकों ने भू-गर्भीय जल का अधिकतम तापमान ३५८ डिग्री सेण्टीग्रेड पाया है जो भविष्य में संभवतः ५९० मेगावाट की विद्युत शक्ति का उत्पादन कर सकेगा । अमेरिका, इटली, जापान, जर्मनी, फ्रांस में इस दिशा में प्रयोग हो रहे है ।

कैमबॉर्न स्कूल ऑफ माइन्स ने पृथ्वी से हजारों फुट नीचे गर्म चट्टानों की ऊष्मा को एकत्रित कर उससे विद्युत उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है । पृथ्वी के भीतर ग्रेनाइट की जो परत विद्यमान है उसके विषय में ज्ञात हुआ है कि यह एक-तिहाई पृथ्वी के अन्दर है । यदि इसकी ऊष्मा को प्रयुक्त किया जा सके तो ऊर्जा की पूर्ति आगामी ५० वर्षों के लिए मात्र इसी स्रोत से होती रह सकती है ।

पवन चक्की से विद्युत उत्पादन यूरोपवासियों के लिए कोई नयी चीज नहीं है । ग्रामीण क्षेत्रों में खपत की जाने वाली ऊर्जा में से अधिकांश भाग हॉलैंड-इंग्लैण्ड जैसे राष्ट्रों में इसी माध्यम से मिलता रहा है । वायु प्रवाह की ग्रिड के अनुसार बड़े पंखों वाली कई पवन चक्कियों से विद्युत का बड़े पैमाने पर उत्पादन अमेरिका में प्रयोग स्तर पर चल रहा है । मैसाचुसेस्ट्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वि० ई० हीटोनीमस के अनुसार एक बड़े खुले मैदान में ८५० फीट ऊँची ३ लाख पवन चक्कियाँ लगाकर उनसे टर्बाइन्स चलाकर २ लाख मेगावाट तक ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है, पर यह तो बहुत बड़े पैमाने की बात हुई । हॉलैण्ड में १ मेगावाट तक की क्षमता वाली कई पवन चक्कियाँ लगी हैं, जिनसे छोटे-छोटे उद्योग चलाये जाते हैं ।

भारत में भी विशेषज्ञों ने उस पर बड़ा विशद अध्ययन किया है । उनका कहना है कि इस विशाल राष्ट्र में किसी भी समय, कहीं न कहीं हवा तीव्रगति से चलायमान रहती है । इन सभी क्षेत्रों को एक पावर ग्रिड से जोड़कर २४ घण्टे उस एक अकेले स्रोत से ऊर्जा प्राप्त कर सारे देश के औद्योगिक शहरों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुद्र ऊर्जा भी पवन ऊर्जा की तरह ऐसी है, जिसे 'रिन्यू' किया जा सकता है । ब्रिटेन के आसपास अटलांटिक महासागर है । मात्र उसकी ब्रिटेन के तट को छूने वाली सागर लहरों में औसतन ८० किलोवाट प्रति मीटर अर्थात् १२० हजार मेगावाट की ऊर्जा उत्पादक क्षमता है । यदि इसमें से एक-तिहाई नष्ट हुई भी मान ली जाय तो शेष से सारे ब्रिटेन की ऊर्जा पूर्ति हो सकती है । फिर भारत का सागर तट तो और भी सुविस्तृत है । ज्वार-भाटों से ऊर्जा उपलब्ध करने के प्रयास फ्रांस में लारेंस नामक स्थान पर तथा रूस में किसलाया ग्यूबा में चल रहे हैं । दोनों ही स्थानों पर २४० मेगावाट के संयन्त्र सफलतापूर्वक चल रहे हैं ।

कहते है कि समुद्र मन्थन से १४ रत्न निकले थे । आज वैज्ञानिक ऊर्जा रूपी रत्नों की प्राप्ति के लिए समुद्र मन्थन कर रहे हैं । धरती के सम्पूर्ण भू-भाग का दो-तिहाई हिस्सा पानी से ढका है । यदि इस सारी शक्ति का सदुपयोग सम्भव हो सके तो ऊर्जा संसाधनों के अपरिमित स्रोतों का नया द्वार खुलता है । थर्मोसायफन पद्धति एवं पानी की शक्ति उद्जन को अलग कर उससे ऊर्जा प्राप्ति के प्रयोगात्मक प्रयास तो अब कई राष्ट्रों में चल रहे हैं ।

जल विद्युत की कुल क्षमता का मात्र ५ प्रतिशत भारत प्रयुक्त कर पाया है । प्रति वर्ष लगभग ८६० घन मीटर बर्फ पिघलकर हिमालय से नीचे आती है । अधिकांश सागर में जाकर व्यर्थ हो जाती है । विशाल नहरों व जल भण्डारों के माध्यम से उत्तरी व दक्षिणी भू-भाग से ९५०० लाख एकड़ फुट जल एकत्र कर उससे जल विद्युत प्राप्ति की योजना का प्रस्ताव 'गारलैण्ड नहर योजना' के रूप में काफी समय से है, पर आधुनिक तकनीकी क्षमता का अभाव, भूस्खलन का भय, जलवायु में विषम परिवर्तन जैसे दुष्प्रभाव इस योजना को कार्यान्वित नहीं होने दे रहे हैं । अभी भारत में ४० हजार मेगावाट विद्युत जल से निकाली जाती है। यह अभी भी काफी खर्चीली, अधिक समय लेने वाली तकनीक है ।

ऊर्जा के विषय में सर्वाधिक चर्चा सौर ऊर्जा के सम्बन्ध में हुई है । ऐसा अनुमान है कि सूर्य पाँच सप्ताह की अवधि में इस पृथ्वी को इतनी ऊर्जा प्रदान कर देता है कि यदि उसे हम संचित कर प्रयोग कर सकें तो सदियों तक पर्याप्त है । हमारा देश सूर्य चमकने वाला देश 'ट्रॉपिकल' कहलाता है । प्रति वर्ग मिलीमीटर भू-भाग पर सूर्य की विकिरण शक्ति लगभग दस लाख किलोवाट पड़ती है । यह मात्रा दिल्ली की कुल बिजली शक्ति से लगभग तीन गुनी के बराबर है । यदि एक वर्ग किलोमीटर पर ६ घण्टे सूर्य का प्रकाश लिया जाय तो ऊर्जा ६ x १० किलोवाट घण्टे होती है जो कि ६००० टन कोयले (३०० वैगन) के समतुल्य है । सूर्य आधे समय चमकता है, २ माह वर्षा के कारण प्रकाश नहीं उपलब्ध हो पाता एवं इस प्रकाश की तीव्रता परिवर्तित होती रहती है तो भी औसतन २५० वाट प्रति वर्गमीटर ऊर्जा का औसत आता है । भारत की १ लाख मेगावाट ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ति हेतु मात्र ४००० वर्ग किलोवाट क्षेत्र पर सौर किरणें चाहिए, पर इसका संचयन एवं उसका ऊर्जा में परिवर्तन इतने अधिक तकनीकी जंजालों से घिरा है कि यह महँगी पड़ती है । अभी हमारे यहाँ यह प्रायोगिक स्तर पर ही है । तो भी अनाज सुखाने, गर्म पानी आदि के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में इसे प्रयुक्त किया जा रहा है व सफलतायें भी मिली हैं । सूरज से वाटर पम्प, रेफ्रिजरेशन, एयरकण्डिशनिंग, विद्युत उत्पादन (फोटो वोल्टिक सोलर सेल्स से) प्रयोग रूप में तो सम्भव हो सका है, व्यवहार में उतरने में अभी देर है । बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय बन्धनों से भी ऊपर विश्व स्तर पर जब इन संयन्त्रों के निर्माण की बात सम्भव हो पायेगी, तब शायद यह वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत सस्ता पड़े ।

भारत में अव्यावसायिक ऊर्जा साधन देश की खपत की आधी से भी अधिक शक्ति प्रदान करते हैं । उनका उपयोग मुख्यतया भारत की ग्रामीण जनता में होता है जो देश की ६८ करोड़ जनता लकड़ी, कृषि अवशेष तथा पशुगोबर को जलाकर ऊर्जा उत्पन्न व प्रयोग करती है । यद्यपि ये साधन अपर्याप्त हैं, पर इन पर ग्रामीण समूह की निर्भरता भविष्य में बनी रहेगी । इसे दृष्टिगत रख कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कई ऐसे विकल्प सुझाये गये जिनसे उपलब्ध साधनों में ही कम से कम खर्च पर अधिक ऊर्जा प्राप्त कर ली जाये । पूसा इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों का कथन है कि ग्रामीण क्षेत्र में पशुओं का गोबर और कृषि का कचरा जो सामान्यतः गन्दगी एवं प्रदूषण पैदा करता है, 'मीथेन' गैस में परिवर्तित किया जा सकता है । इससे प्राप्त ऊर्जा प्राकृतिक तेल से प्राप्त ऊर्जा की ११ प्रतिशत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता पूरी कर सकती है । अब ये प्रयोग अमेरिका व कनाडा के ऊर्जा एवं पर्यावरण विभाग ने भी करने आरम्भ कर दिये हैं । जब विकसित कहे जाने वाले देश भी गोबर व पशुधन की ओर वापस लौट सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि भारत में भी इस विषय में प्रगति न की जाये, जबकि पशुधन की दृष्टि से भारत धनी है व अधिकांश जनता ग्रामीण परिसर में रहती है ।

१ लाख पशु १५ लाख टन गोबर प्रति वर्ष देते हैं । एक पौंड गोबर से १० घन फुट मीथेन गैस बनती है । इस प्रकार इतने गोबर से ३ अरब घन फुट मीथेन गैस बनेगी जिसकी कीमत लगभग ४५ लाख से ९० लाख रुपये होगी। इलाहाबाद में हाल ही में सम्पन्न विश्व स्तर के मूर्धन्य वैज्ञानिकों की गोष्ठी में यही निश्चय किया गया कि ऊर्जा संकट की वर्तमान स्थिति को हल करने के लिए सरलतम तरीका विकासशील देशों के लिए यही हो सकता है कि 'बायोगैस' का उत्पादन बढ़ाया जाय । कृषियन्त्रों, सिंचाई की मशीनों आदि के लिए बायोगैस का उपयोग कर इसे डीजल पम्पों, विद्युत पम्पों के स्थान पर प्रतिष्ठित किया जा सकता है ।

अपने देश की परिस्थितियाँ अन्य राष्ट्रों से अलग हैं । न तो आर्थिक दृष्टि से, न तकनीकी दृष्टि से अभी विकसित राष्ट्रों का मुकाबला ऊर्जा के क्षेत्र में किया जा सकता है, पर वह सब तो सम्भव है जो हमारे लिए सहज सुलभ है । यदि उपलब्ध मवेशियों के गोबर को नष्ट होने से बचाकर बायोगैस प्लाण्ट लगा दिये जायें तो देश की ऊर्जा सम्बन्धी अधिकांश समस्या हल हो सकती है । दिमाग तो खुला रखा जाय । यदि और भी परिष्कृत विधि से कोई सुलभ मार्ग मिल सके तो वहाँ उसे अपनाने में कोई कठिनाई नहीं, पर जो इस राष्ट्र की सम्पदा है- नित्य क्षरित हो रही है, उसे सही विधि से प्रयुक्त कर वैकल्पिक ऊर्जा की समस्या हल कर ली जाय तो प्रगति का पथ प्रशस्त हो सकता है ।

कचरे के संकट से कैसे निपटें ?

पेट भरने, तन ढकने और सिर छिपाने लायक आच्छादन बनाने की समस्या अभी हल नहीं हो पायी थी कि बड़ी मात्रा में उत्पन्न होने वाले कचरे को ठिकाने लगाने की नयी समस्या सामने आ गयी । प्रकृति अपने उत्पादित कचरे को ठिकाने लगाती और उपयोगी बनाती रहती है । पशुओं के मल-मूत्र, पेड़ों से गिरे पत्ते आदि सड़-गल कर उपयोगी खाद बन जाते हैं और वनस्पति उत्पादन में काम आते हैं । मनुष्य का मल-मूत्र भी उतना ही उपयोगी है, पर इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिये कि उससे खाद न बनाकर नदी-नालों में बहा दिया जाता है और पेय जल को दूषित किया जाता है । इसमें दुहरी हानि है— खाद से वंचित रहना और नदियों में फेंककर बीमारियाँ आमन्त्रित करना । आशा की जानी चाहिये कि मनुष्य को सद्बुद्धि आयेगी और कचरे तथा वर्ज्य पदार्थों का भी खाद रूप में प्रयोग करने का प्रचलन चल पड़ेगा ।

किन्तु इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिये कि अनेक उपायों के बाद भी इन दिनों कचरे में भयानक वृद्धि हुई है । हर वस्तु कागज, प्लास्टिक के थैलों, पत्तल, दोना, डिब्बा आदि में बन्द करके बेची जाती है, वस्तु का उपयोग होते ही वह पैकिंग कचरा बन जाती है और उसे जहाँ-तहाँ सड़कों-गलियों में फैंक दिया जाता है । इसकी सफाई में ढेरों खर्च तो होता ही है, विशेष समस्या यह है कि उसे डाला कहाँ जाय ? शहरों के नजदीक जो ऊबड़-खाबड़ जमीनें होती हैं वे इस कचरे से भर जाती हैं । देहातों में ऐसी जगहें नहीं के बराबर है । जो पोखर, तालाब हैं वे बरसाती पानी एकत्रित करने के काम आते है, उन्हें भी भर दिया जाय तो अन्यान्य उपयोगी कामों में बाधा पड़ेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घुमा-फिराकर सबसे बड़ा गड्ढा समुद्र रह जाता है । नदियों के रास्ते उसमें पहुँचाया गया कचरा सड़ता है और अपने साथ मिली हुई विषाक्तता से जल-जन्तुओं के प्राणहरण करता है । यह भी एक बड़ी क्षति है ।

सुविख्यात पर्यावरण शास्त्री पॉल एरलीश का कहना है कि जीवन को बचाये रखने के लिए पृथ्वी पर आवश्यक तत्वों का ह्रास एवं पर्यावरण की हानि जितनी अमेरिकावासियों के द्वारा होती है, अन्य देशों के लोगों की वजह से उतनी नहीं होती । औद्योगिक कचरे के अतिरिक्त घरेलू कचरा भी वहाँ सर्वाधिक उत्पन्न होता है । वहाँ प्रतिवर्ष १० करोड़ टायर, २८ अरब बोतलें, ४८ अरब डिब्बे एवं ७० लाख गाड़ियाँ कूड़े के ढेरों में चली जाती हैं । इसी तरह पेरिस की गलियों में नित्य-प्रति २० लाख टन कूड़ा एकत्रित हो जाता है, जिसे ठिकाने लगाने पर ढाई करोड़ डालर प्रतिदिन खर्च होते हैं । ब्रिटेन में प्रतिदिन २ करोड़ कागज के थैले कचरे के रूप में बाहर फैंक दिये जाते हैं ।

किन्तु अब कचरा उत्पादन में भारत इनसे भी आगे है । यहाँ प्रतिदिन २० करोड़ कागज के थैले इधर-उधर सड़कों, गलियों, पार्कों में बिखेर दिये जाते हैं। अकेले दिल्ली में हर रोज ३८४ टन जूठन फैंकी जाती है । संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि दिल्ली कलकत्ता, काहिरा, इस्तांबुल जैसे बड़े महानगरों में इस तरह के जूठन से जितना अधिक वातावरण दूषित होता है, उतना और किसी से नहीं । विशेषज्ञों ने अपने अध्ययन में बताया है कि सन् २००० में सर्वाधिक कचरा कागज तथा प्लास्टिक के रूप में होगा । इसमें ७५ प्रतिशत की वृद्धि की संभावना की गयी है और कहा गया है कि तब इसे दबाने के लिए जमीन भी न मिलेगी, मात्र जलाना ही एकमात्र उपाय रह जायेगा, जिससे उठते जहरीले धुएँ एवं उड़ती विषैली धूलों से जन स्वास्थ्य को भारी क्षति उठानी पड़ेगी ।

जनसंख्या वृद्धि के साथ ही गाँव, नगर, हाट, बाजार बढ़ रहे हैं साथ ही कचरे का अनुपात भी ।

इस समस्या को हल करने के लिए सर्वसाधारण को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि कम से कम कचरा उत्पन्न करें । कूड़े को छाँटकर उसमें से कागज बनाने लायक कचरा अलग कर दिया जाय, जिसे गलाकर नया सस्ता कागज बनाया जाय । खाने-पीने के सम्बन्ध में जूठन न छोड़ने की आदत डाली जाय तथा जूठन के रूप में शेष कचरे को मछलियों तथा पक्षियों के लिए चारे के रूप में प्रयुक्त किया जाय । बचे हुए शेष कचरे को जलाकर उसकी राख खेतों में डालने के लिये खाद रूप में प्रयुक्त किया जाय । घरेलू कचरे को दूसरे सम्मिश्रणों के साथ ईंधन के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है । ऐसे उपाय-उपचार अपनाकर बहुत हद तक इस समस्या से निपटा जा सकता है ।

अस्वच्छता से आत्म-रक्षा करें

लाभदायक उत्पाद की उपयोगिता से सभी परिचित हैं, पर यह भूल जाते है कि उसे प्रयोग में लाने के बाद जो कचरा बचता है उसे काम में किस प्रकार लाया जाय ? किस प्रकार ठिकाने लगाया जाय । कचरे की उपेक्षा होती रहती है । अतएव वह पड़ा-पड़ा सड़ने लगता है । सड़न में दुर्गन्ध आती है, जिसका अर्थ है कि उसमें विषैलापन बढ़ना आरम्भ हो गया है । उसे हटाया या मिटाया जाय अन्यथा वह जिसके भी सम्पर्क में आयेगा उसे अपने जैसा विषाक्त बनायेगा ।

यह स्थिति उत्पन्न होने देने से पहले यह ध्यान रखा जाय कि उपयोगी सार तत्व ग्रहण करने के उपरान्त जो कचरा बचेगा उसको किस प्रकार ठिकाने लगाया जाय । एकांगी प्रयास उत्पादन करते समय तो अच्छे लगते हैं पर जब दूसरा पक्ष सामने आता है, कचरे का ढेर बनकर सामने खड़ा होता है, तो सूझ नहीं पड़ता कि इसका क्या किया जाय ? कुछ भी न करने—कचरे का ढेर लगाते चलने पर न केवल जगह घिरती है, कुरूपता बढ़ती है वरन् निरर्थक वस्तु की सुनिश्चित नियति जब सड़न के रूप में सामने आती है तो उससे रोग फैलते हैं और सम्पर्क में आने वाले पदार्थ बर्बाद होते हैं । उत्पादन में हुआ लाभ कचरे की दुर्गति के कारण हानि में बदल जाता है । यह हानि तब और भी बढ़ जाती है जब ठिकाने लगाने की बात उपेक्षा में डाली जाती है । सड़न का संकट गहराने लगता है ।

पेड़ों का पतझड़ होता है । आवश्यक है कि उन पत्तों को समेट कर गड्ढे में गाढ़ा जाय और खाद बनाया जाय अन्यथा सूखे पत्तों में आग की चिनगारी लगकर दूर-दूर तक फैले हुए जंगलों और खेतों को जला सकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । पशु चारा खाते हैं । उनका गोबर खाद बना लिया जाय तो बुद्धिमानी है अन्यथा सड़ने वाला गोबर मक्खी, मच्छर और बिच्छू आदि हानिकारक जन्तु उत्पन्न करेगा और बदबू से सारा वातावरण बिगाड़ देगा ।

अनाज के साथ उसके डण्ठल-पत्ते भी होते है । उनका भूसा बनाकर चारे में प्रयुक्त कर लिया जाय तो ठीक अन्यथा उसके ढेर लग जायेंगे । वर्षा में गलेगा, गर्मी में उड़ेगा और आग आ पहुँची तो जलकर अपना और सम्पर्क की वस्तुओं का सफाया करेगा । तेल निकलने के बाद तिलहन से जो खल बनती है उसे जानवरों को खिला देते हैं अन्यथा वह भी एक समस्या बन जाय ।

शरीर में से मल-मूत्र और पसीना निकलता है । यह जल के रूप में लिये गये आहार का अवशेष है । स्नान करने, कपड़े धोने से पसीने की सफाई हो जाती है । पर मल-मूत्र को शौचालय तक छोड़ने भर का ध्यान रहता है, यह व्यवस्था नहीं बनाई जाती है कि इस कचरे का गोबर की तरह खाद बनाकर खेती में उपयोग कर लिया जाय । इस अव्यवस्था का ही परिणाम है कि नालियाँ सड़ती हैं और बिखरी हुई गन्दगी हैजा जैसे रोगों का कारण बनती है । यदि उसका सदुपयोग किया जा सका होता तो जापान की तरह यहाँ भी मानवीय मल-मूत्र से खाद बनता और खेती, बागवानी में असाधारण रूप से सहायक होता ।

कचरा गन्दगी फैलाता है । घर-आँगन में झाड़ू लगाकर जो कूड़ा निकलता है उसे कहाँ डाला जाय, इसकी निश्चित योजना नहीं होती । शहरों में तो इसका आधा-अधूरा भाग म्यूनिसिपैलिटी वाले कहीं ले जाते हैं, पर जिन देहातों में वैसी व्यवस्था नहीं है वहाँ वह गलियों में छितराता रहता है । वर्षा-आँधी में पोखर-तालाबों में जा पहुँचता है और उन्हें बीमारियों का घर बनाता है । उलट-पुलट कर वह गन्दगी वहाँ के निवासियों के शरीर से ही जा चिपकती है और अनेक प्रकार के स्वास्थ्य संकट खड़े करती है ।

घने शहरों में यह समस्या और भी बढ़ी-चढ़ी है । कचरा तो निकलता ही है । उसे कहाँ पहुँचाया जाय यह योजना स्पष्ट नहीं रहती फलतः वह इधर-उधर होकर नालियों में पहुँचता है । नालियाँ सड़ती हैं । गली-कूचों में बिखरती हैं और यह सौगात अन्ततः वहाँ के रहने वालों के सामान में ही खप जाती है ।

बड़े कारखानों की समस्या और भी भयावह है, उनमें विषैले रासायनिक पदार्थों का उपयोग होता है । गन्दगी समीपवर्ती नदी-नालों में बहाई जाती है । इससे जलाशय गन्दे होते हैं । जो पशु-पक्षी, जलचर उसे पीते हैं, वे मरते है । उस पानी में कपड़े धोये जायें तो उन्हें पहनने वाले उस विषाक्तता से आक्रांत होते हैं । समुद्र तट वाले बड़े-बड़े महानगरों की गन्दगी समुद्र में गिराई जाती है । इससे मछलियाँ मरती है या बीमार होने पर खाने वालों के लिए विपत्ति बनती हैं । यह गन्दगी समुद्र तल तक पहुँच गई तो वहाँ परत बनकर जम जाती है और धरती के साँस लेने में बाधक बनती है । भू-गर्भ की घुटन ज्वालामुखी, भूकम्प आदि के रूप में फूटती है । समुद्री तूफानों का भी एक कारण उस जल में गन्दगी का भर जाना है । वह कुछ मात्रा में बादलों के साथ भी उड़ जाती है और जहाँ बरसती है वहाँ रहने वालों के लिए विपत्ति खड़ी करती है । तेल, कोयले से चलने वाले वाहन, संयन्त्र जो धुआँ छोड़ते हैं, उनसे वायु प्रदूषण बढ़ता है और उस हवा में साँस लेना जीवन को मरण की ओर धकेलता है ।

मनुष्यों के तथा पशुओं के शरीर से गन्दगी निकलती है । चूल्हे से लेकर छोटे-बड़े कारखानों तक से हानिकारक गर्मी निकलती है । धुएँ से हानि और भी अधिक हैं । इससे बचाव कैसे किया जाय, इसके दो ही उपाय है, एक तो आबादी की बसावट दूर-दूर रहे, दूसरे कारखाने इतने छोटे लगाये जायें जिनसे प्रदूषण सीमित मात्रा में निकले और गन्दगी आसपास ही खप सके । इसे प्राचीन सभ्यता की ओर लौटना भी कहा जा सकता है, जिसमें ग्राम्य जीवन की ही प्राधानता थी । न घने और बड़े शहर बसते थे और न विशालकाय कारखाने ही खड़े होते थे । द्रुतगामी वहनों के स्थान पर मन्दगामी सवारियों से काम लिया जाता था । समय तो इसमें अवश्य कुछ अधिक लगता था, पर उतनी ही अवधि जीवन काल की भी बढ़ जाती थी । साथ ही वातावरण की स्वच्छता भी बनी रहती थी ।

ग्रामीण जीवन में निवास-आवास की आधी व्यवस्था पेड़ संभाल लेते हैं । पशु उनके नीचे हर मौसम में विश्राम कर लेते हैं । मनुष्यों को भी दोपहरी बिताने में सुविधा रहती है । कम इमारतें बनाकर भी काम चल जाता है । वृक्षों को पशुओं की तरह लाभदायक बनाया जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता है । वे फल-फूल, छाया, प्राणवायु आदि तो देते ही हैं; पत्ते आवश्यकतानुसार चारे का काम भी दे जाते हैं । मनुष्यों और पशुओं द्वारा छोड़ी गयी दूषित वायु को भी सोखते हैं और वातावरण का संतुलन बनाये रहते हैं ।

आहार-विहार की तरह समुन्नत जीवन के लिए स्वच्छता भी आवश्यक है । उसे जीवन-शक्ति का पर्यायवाची मानना चाहिए । गन्दगी को स्वनियंत्रित मृत्यु रूप में देखा-समझा जा सकता है । अपने सम्पर्क और प्रगति क्षेत्र को जितना-अधिक स्वच्छ रखा जा सके रखना चाहिए । इसे सभ्यता का प्रतिनिधि मानकर पूरे मन से अपनाना चाहिए ।

यांत्रिक सभ्यता उत्पादक और शोभायमान तो लगती है पर उसने जल और थल को ही नहीं बल्कि नभ को भी प्रदूषण से भर दिया है । वायुयानों, रॉकेटों, उपग्रहों ने आकाश को और भी दूषित बना दिया है । धुएँ की घुटन और ऊर्जा की बढ़ोत्तरी ने वायुमण्डल में जो विषाक्तता भरी है, उसमें कमी नहीं हो रही वरन् बढ़ोत्तरी ही होती जा रही है । यह सामूहिक आत्म-हत्या का सुलभ निमंत्रण है । अच्छा हो, हम समय रहते चेतें । ग्राम्य जीवन की पुरातन सभ्यता की ओर लौटें और स्वच्छता पर आधारित शान्त जीवन जियें ।

इस कचरे को समेटेगा कौन?

गन्दगी फैलाना, वस्तुओं को कचरा बनाकर जहाँ-तहाँ बिखेर देना तो अनपढ़ बालकों के लिए भी सरल है, पर समस्या यह है कि उसकी सफाई कौन करे ? सफाई न करने पर कचरा हर किसी के लिए विपत्ति खड़ी कर सकता है । यह सोचते हुए ही कार्यक्रमों की रूपरेखा बननी चाहिए अन्यथा अनर्थ की ही आशंका बनी रहेगी ।

जितना जोश बच्चों को पतंगबाजी तथा गुब्बारे उड़ाने की विद्या उपलब्ध हो जाने पर उभरा था, उतना ही इन दिनों अन्तरिक्षीय उड़ानों के सम्बन्ध में उमड़ रहा है । हेलीकॉप्टर, ग्लाइडर, वायुयान, एयर बसें तो अब मोटर साइकिलों की तरह प्रयुक्त होने लगे हैं । उनकी गणना परिवहन साधनों में होने लगी है । यह उत्साह उभरने का पहला चरण तो अब पुराना ही हो चला है और आकर्षण विहीन भी ।

इन दिनों परीक्षणों के नाम पर बहुत ऊँचे उड़ने वाले, पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले तथा अन्तर्ग्रही उड़ानों पर निकलने वाले रॉकेटों की भरमार है । प्रक्षेपास्त्र के नाम से जानी जाने वाली मिसाइलें तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण सीमा में ही रहती हैं और टूटने पर जमीन पर भी आ गिरती हैं । प्रश्न उनका है जो अन्तरिक्ष के ऐसे क्षेत्र में उड़ती हैं जिन पर पूरी तरह रेडियो नियंत्रण भी काम नहीं करता ।

सन् १९६८ के जुलाई माह में एक अमेरिकी उपग्रह का मलवा क्यूबा पर गिरा था । इन्हीं दिनों एक टुकड़ा मैनिटोक नगर के चौराहे पर गिरा । एक रूसी उपग्रह का टुकड़ा जापानी जलयान पर गिरा । चन्द्रयान रॉकेट का मलवा जर्मनी के जलयान पर गिरा । सन् १९८३ के सितम्बर माह में रूसी और अमेरिकी यान टकराने से बाल-बाल बचे थे ।

अन्तरिक्ष बस्ती बसाने और प्लेटफार्म जमाने की चर्चा होती रहती है, पर कोई यह नहीं बताता कि उनके मलवे और कचरे का क्या होगा ? यदि वह इसी प्रकार बढ़ता गया तो अन्तरिक्ष यात्रायें पूरी तरह खतरे से भर जायेंगी ।

सन् १९७९ में अमेरिका की एक अन्तरिक्ष प्रयोगशाला स्काईलैब बेकाबू हो गयी थी । स्काईलैब के कहीं भी गिरने के खतरे से संसार भर में आतंक था । संयोगवश वह आस्ट्रेलिया के तटवर्ती क्षेत्र में गिरी और लोगों की जान में जान आयी ।

इसी प्रकार सन् १९७८ में एक रूसी यान कनाडा में गिरा, उसमें १०० पौण्ड यूरेनियम था । संयोगवश वह आकाश में ही जलकर ऊपर उड़ गया । मात्र यान का मलवा ही जमीन पर एक निर्जन क्षेत्र में गिरा । यदि ऐसा सुयोग न बनता तो उससे भी भयानक दुर्घटना हो सकती थी । इसी प्रकार अमेरिकी रॉकेट का यूरेनियम भी आकाश में ही जल गया था ।

दूरवर्ती अन्तरिक्ष उड़ानों से पृथ्वी के वायुमण्डल की अयन पट्टी भी प्रभावित हुई है । उसकी गड़बड़ी से मौसम में व्यतिरेक हुआ है । रेडियो तरंगों में भी हेर-फेर हुआ है । पराबैंगनी प्रकाश किरणें भी पृथ्वी पर अधिक मात्रा में आ रही हैं । इन सबका मिला-जुला प्रभाव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धरती और उसके निवासियों के जीवन में विचित्र-विचित्र संकट खड़े कर सकता है ।

अमेरिका ने प्रजातांत्रिक देश के नाते आधी-अधूरी जानकारी सर्वसाधारण के सम्मुख प्रकट की है । उसके अनुसार अब तक प्रायः २५०० उपकरण अन्तरिक्ष में फेंके गये । उनके १४०००९ टुकड़े हुए जिनमें से ४ हजार टुकड़े पृथ्वी के वायुमण्डल में आकर चले गये फिर भी १० हजार के करीब अभी त्रिशंकु की तरह अनियंत्रित उड़ानें ही भर रहे हैं । यह मलवा पृथ्वी से ८५० किलोमीटर की ऊँचाई पर है । इन टुकड़ों का भार छः टन के आस-पास आंका गया है । इस मलवे में इलैक्ट्रॉनिक उपकरण भी हैं । सूर्य ऊर्जा बैटरी भी और परमाणु ईंधन भी । जिस गति से यह चल रहे हैं, उसमें कक्षा का व्यतिक्रम होना सम्भव है और वे परस्पर टकरा भी सकते हैं । इसमें मानव सहित गये यानों का अंतरिक्ष में छोड़ा कचरा भी शामिल है ।

यह मलवा अन्तरिक्ष में बिखरा हुआ है जिसके साथ-साथ परमाणु उपकरण भी हैं । वे अपना विकिरण अपने मार्ग में बिखेर रहे हैं जो किसी प्रकार जमीन पर गिर पड़ें तो वे यहाँ भयंकर संकट उत्पन्न करेंगे। प्रश्न यह है कि अब इस कचरे को समेटेगा कौन ? यदि मनुष्य को आसन्न-विपत्ति से स्वयं को उबारना है तो उसे सबसे पहले विज्ञान की इस तीव्र गति पर अंकुश लगाकर अपने द्वारा फैलाये कचरे की सुव्यवस्था करनी होगी नहीं तो महाकाल का त्रास झेलना होगा ।

डिस्पोजिबल कल्चर नासमझी की प्रतीक

कागज की महत्ता एवं उपयोगिता सर्वविदित है । ज्ञानार्जन की प्रक्रिया जितने बड़े स्तर पर इसके द्वारा सम्पन्न और सम्भव होती है, उतनी दूसरे माध्यमों द्वारा शायद ही शक्य हो । पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं की उपादेयता इसी कारण इन दिनों सर्वोपरि सिद्ध हुई है ।

यह कागज का एक पक्ष हुआ । इसे इसका उत्तम और उत्कृष्ट पहलू भी कह सकते हैं, पर इसका एक अन्य पहलू भी है, जो इन दिनों बहुतायत में प्रचलित है और हानिकारक है । यह है कागज के बने हुए दैनिक काम में आने वाले सामान, जैसे– वायुयानों एवं अधिकांश पश्चिमी देशों में प्रयुक्त होने वाले ट्वायलेट पेपर, चाय-फिल्टर, रूमाल, तौलिए, बच्चों के नेकर-डायर्स आदि । यह प्रयोग एवं कीमत की दृष्टि से सुविधाजनक एवं सस्ते तो होते हैं, पर बिल्कुल निरापद भी नहीं हैं। इनके स्तेमाल सम्बन्धी जानकारी देते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अन्तर्राष्ट्रीय ग्रीनपीस संस्थाओं ने यह अपील जारी की है कि हर एक को इन कागजी वस्तुओं के उपयोग सम्बन्धी नियंत्रण पर सदा ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा उन्हें इनके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं । उक्त संस्थाओं की यह चेतावनी निराधार भी नहीं है । जानवरों पर किये गये परीक्षण बताते हैं कि इन चीजों के निर्माण के समय आपसी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप बनने वाला डायऑक्सीन नामक पदार्थ उनमें गर्भपात, नपुंसकता एवं प्रजनन सम्बन्धी अनेक अन्य प्रकार के दोषों को जन्म देता है ।

ऐसे ही इन दिनों महिलाओं में कृत्रिम सेनेटरी टावेलों का प्रचलन बढ़ चला है । इन कागज के सेनेटरी टावेलों को जीवाणु मुक्त करने के लिए इनमें आर्गेनोक्लोराइड नामक एक रसायन मिला दिया जाता है, जो परीक्षण के दौरान घातक पाया गया है । वैज्ञानिकों का कहना है कि इससे महिलाओं में गर्भाशय (सर्वीक्स) कैंसर पनपने की संभावना बढ़ जाती है । मासिक चक्र सम्बन्धी अनियमितताएँ तो इससे जन्मती ही हैं, गुप्तांगों एवं गर्भाशय से सम्बन्धित अन्यान्य आम शिकायतें भी इसकी प्रयोक्ता महिलाओं में पायी जाने लगती हैं ।

कुल मिलाकर कृत्रिम कागजी वस्त्रों का प्रयोग सुविधा, साधन और मूल्य की दृष्टि से सरल-सहज होते हुए भी इनसे जिस स्तर की जितनी स्वास्थ्य हानि होती है, उसकी भरपाई इनसे बचे समय और पैसे से किसी भी प्रकार नहीं की जा सकती है । कहा भी गया है–"हैल्थ इज वैल्थ" अर्थात स्वास्थ्य ही धन है । यदि इसे गँवा दिया गया, तो किसी प्रकार की सम्पदा और उपलब्धि कभी भी नहीं कमाई जा सकती । अतः समझदारी इसी में है कि हम कृत्रिम और सस्ते आकर्षणों की ओर न भागें, उन वस्तुओं की ओर ध्यान केन्द्रित रखें, जो प्राकृतिक है । अक्षुण्ण स्वास्थ्य का राज यही है । अपनाया भी इसे ही जाना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पृथ्वी का गिरता जल स्तर संकट का सूचक

जल, भूमि एवं हरितमा का आपस में एक सन्तुलन है । इस सन्तुलन पर प्रभाव पड़ते ही भूमि की उत्पादकता पर असर पड़ता है और जल का स्तर मनुष्य की पहुँच से दूर हो जाता है । इस आपसी निर्भरता को ध्यान में रखते हुए नदी के प्रवाह क्षेत्र में पेड़ों के विस्तार पर जोर दिया जाना चाहिए । भारत जैसे भूभाग के लिए जहाँ कुछ महीने की मानसूनी वर्षा एवं हिमालय, विंध्य एवं पश्चिमी घाट की नदियों के जल पर यहाँ के प्राणियों का जीवन निर्भर करता है, वहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि मानसूनी वर्षा की जलराशि को पौधे, जानवर और मनुष्यों के लिए सुरक्षित रखा जाय । वर्षा का जल पर्याप्त मात्रा में स्थिर बनाये रखने के लिए दो ही रास्ते हैं— पहला नदियों में आये अतिरिक्त जल को समुद्र में तीव्र गति से जाने से रोकना एवं दूसरा अन्तः स्रोत वाले कूप और रिसन की दर को बढ़ाना । इन दोनों ही कार्यों के लिए घने जंगलों की वृद्धि आवश्यक है । इस समय भारत में ४८ प्रतिशत जलराशि वाष्प के रूप में उत्सर्जित हो जाती है एवं ५२ प्रतिशत जल ही कृषि, उद्योग एवं घरेलू कार्यों में प्रयुक्त हो पाता है ।

शीतोष्ण कटिबन्ध में उष्णकटिबन्ध के समान जल को सुरक्षित रखने की समस्या ज्यादा नहीं है, वरन् शीतोष्ण क्षेत्र में नदी प्रवाह को सामान्य रखने के लिए लोग जंगलों को काटने लगते हैं । भारत में जंगलों को काटा जाना जलराशि में वृद्धि नहीं कर सका उल्टे मानसून के दिनों में बाढ़ की अभिवृद्धि अवश्य हुई और सूखे के दिनों में पानी का अभाव होता गया । जलीय संसाधन के अव्यवस्थित रूप का ही परिणाम है कि सन् १९७२ तक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र २० मिलियन हेक्टेयर भूमि थी जो १९९२ में बढ़कर ५० मिलियन हेक्टेयर से अधिक हो गई । सूखे से प्रभावित क्षेत्र का भी विस्तार होकर ५९ मिलियन हेक्टेयर हो गया है । नेउरा घाटी, दार्जिलिंग के जंगलों की कुछ वर्षों में हुई कटाई ने जल के सारे स्रोत सुखा डाले हैं ।

यू० एन० की एक रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख है कि "अधिकांशतः पौधों के लिए जल की आवश्यकता को लोग समझते हैं, लेकिन जल के संग्राहक के रूप में यही वृक्ष कार्य करते हैं, इस ओर कम ही ध्यान दिया जाता है । भूमिगत जल की संग्राहकता इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ पर हरियाली कैसी है ? मिट्टी की संरचना कैसी है ?" यू० एन० की इस रिपोर्ट पर ध्यान रखकर सूखे से प्रभावित क्षेत्रों में जल संग्राहक की क्षमता को बढ़ाने के लिए मिट्टी में रासायनिक पदार्थों को मिलाने का प्रयोग भी किया गया है किन्तु वांछित परिणाम नहीं मिले । वैज्ञानिकों का कहना है कि कृत्रिम उपाय की अपेक्षा सूखा प्रभावित क्षेत्रों में उन वृक्षों को लगाया जाना चाहिए जो कार्बनिक उर्वरक भूमि को प्रदान करने की क्षमता रखते हैं, साथ ही जानवरों के माध्यम से खेती करने की पद्धति को इसके लिए उपयोगी बताया गया है । उनका कहना है कि जहाँ एक ओर जंगलों की कटाई से भूमिगत जल का स्तर प्रभावित हुआ वहीं गलत किस्म के पेड़ों का विस्तार किया जाना भी इस तल को प्रभावित करने वाला सिद्ध होता है । अपने देश में यूक्लिप्टस का विस्तार भूमिगत जल को सुखाने वाला सिद्ध हो रहा है । यह वृक्ष ज्यादा जल सोखने वाला होता है एवं बहुत ही अल्प मात्रा में खाद मिट्टी का उत्पादन करता है । भारतीय मूल के वृक्ष इस क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुकूल अच्छे जल संग्राहक होते हैं । रोपण उन्हीं का ही किया जाना चाहिए।

भूमि तल की जलराशि का कम होते जाना मानवीय अदूरदर्शिता का दुष्परिणाम ही दिखाई देता है । अन्न उत्पादन के क्षेत्र में जल की सीमित व्यवस्था का ध्यान नहीं रखते हुए अधिक जल लेने वाले अन्नों का उत्पादन समस्या का कारण बनता है । चावल के उत्पादन में जल की बहुत ज्यादा आवश्यकता होती है । कृषकों द्वारा भूमिगत जल का प्रयोग इस अनाज के उत्पादन के लिए किया जाना कैसी समस्या खड़ी कर रहा है, इसका उदाहरण तमिलनाडु के कोयम्बटूर एवं उसके आसपास के जिलों में देखने में आ रहा है । इस क्षेत्र में भूमि के अन्दर जल के रिसने की दर से कहीं ज्यादा जल खेती के लिए निकाला जाता है । फलस्वरूप दस साल के अन्दर जल सतह ३० मीटर नीचे हो गई है ।

महाराष्ट्र में स्थिति और भी गम्भीर है । इस क्षेत्र में जल का जमाव एवं रिसने की दर बहुत ही कम है । पथरीली भूमि का भाग ज्यादा होने से जल की सतह काफी नीचे है । गहरे कुओं की संख्या में अभिवृद्धि के साथ ही कृषि लायक भूमि का क्षेत्र भी बढ़ा है । चूँकि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महाराष्ट्र का ज्यादा भाग सूखा प्रभावित क्षेत्र में आता है अतः यहाँ ऐसे उत्पादन की ओर ज्यादा ध्यान दिया जा सकता है जिसमें कम जल की आवश्यकता पड़ती है । प्राकृतिक संतुलन की ओर ध्यान न रखकर व्यापारिक दृष्टिकोण से लाभकारी गन्ने का उत्पादन सबसे ज्यादा जल की माँग करता है, इस कारण जल की सतह सतत् नीचे होती जाती है । उदाहरणार्थ, सन् १९८१ में उस क्षेत्र के तासगांव ताल्लुका में गहरे कुएँ खोदे गये थे जो एक साल के पश्चात् सूख गये, पुनः ६० मीटर की और खुदाई करके जल स्रोत प्राप्त करने की कोशिश की गई तो वह योजना भी एक साल पश्चात् असफल हो गई। इस क्षेत्र के २००० निजी कुएँ भी सूख चुके हैं । कितने ही गाँव पीने के पानी की कठिनाई से जूझ रहे हैं । गर्मियों में ज्यादातर क्षेत्र में टैंकर से पानी की व्यवस्था की जाती है । भू-वैज्ञानिकों के अनुसार सामान्य मान्यता यह है कि वर्षा के अभाव में जल स्तर नीचे चला जाता है लेकिन यह पूर्णतः सत्य नहीं है । भूमि के अन्दर यह जल के रिसने की प्रक्रिया लम्बे समय से चलती रहती है । जैसे सहारा के रेगिस्तान में चार घन किलोमीटर प्रतिवर्ष पानी जमा हो रहा है, यदि पानी का जमाव इसी गति से होता रहा तो ४००० वर्षों में सहारा का क्षेत्र हरियाली के योग्य बन सकेगा । दूसरी तरफ वर्षा वाले क्षेत्रों में भी भूमिगत जल को निकालने की दर यदि ज्यादा बनी रहे तो उस क्षेत्र के मरुस्थल बन जाने की संभावना अधिक रहती है। रोमन साम्राज्य एवं अफ्रीका के बड़े भू-भाग का मरुस्थल में परिवर्तित होना हजार साल पहले का इतिहास है । रेगिस्तान से लगी भूमि का ही सिर्फ परिवर्तन मरुस्थल में नहीं होता, बल्कि मनुष्यों द्वारा ज्यादा जल संसाधन एवं वृक्षों का दोहन भी भूमि को मरुस्थल में परिवर्तित कर देता है । अमेरिका के ग्रेट प्लेन क्षेत्र का रेगिस्तान में परिवर्तन होना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

जल चक्र के असंतुलन में जहाँ जल राशि का भूमि से अधिक निकाला जाना एक कारण है, वहीं दूसरी ओर अधिक पानी का जमाव भी इसे असंतुलित कर देता है। यह स्थिति नहर परियोजना एवं अत्यधिक जल जमाव वाले क्षेत्र में उत्पन्न होती है । अमेरिका में करीब २५ प्रतिशत कृषि भूमि लवणीयता एवं पानी के जमाव से बेकार हो गई है । अपने देश में १० मिलियन हेक्टेयर नहर से कृषित क्षेत्र पानी के अतिरिक्त जमाव का शिकार है एवं आने वाले वर्षों में २५ मिलियन हेक्टेयर भूमि लवणीयता से प्रभावित हो जायेगी । वह भूमि जिसके सतह से मात्र डेढ़ मीटर से दो मीटर के अन्दर जल मिल जाय, पानी के जमाव से प्रभावित कहलाती है ।

जहाँ महाराष्ट्र, तमिलनाडु जैसे राज्य जल सतह के नीचे जाने की समस्या से जूझ रहे हैं, वहीं पंजाब, हरियाणा जैसे राज्य में अति जल राशि मुसीबत का कारण बनी हुई है । आवश्यकता इस बात की है कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पौधे, भूमि एवं जल के बीच की अन्योन्याश्रित क्रिया को सही रूप में समझा जाय एवं प्राकृतिक संतुलन की ओर ज्यादा ध्यान रखकर आर्थिक विकास की परियोजनाएँ बनायी जायँ । वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देकर ही इस समस्या का सही समाधान ढूँढ़ा जा सकेगा ।

प्रगति के नाम पर अवगति तो न अपनायें

कई बार प्रगति के नाम पर अवगति अपनाने की मूर्खता वे लोग भी अपनाते देखे गये हैं जिन्हें आमतौर से समझदार माना और कहा जाता है । पिछले दिनों केन्द्रित उद्योगों के सहारे अर्थ प्रगति का स्वप्न देखा गया और ऐसे कारखाने बनाये गये जहाँ थोड़े समय में थोड़े व्यक्तियों द्वारा अधिक उत्पादन हो सके और अधिक सुविधा एवं अधिक लाभ मिल सके ।

यही आकांक्षा थोड़े समय तक, थोड़े लोग, थोड़ी मात्रा में ही पूरी कर सके । उत्साह तभी तक रहा जब तक कि असंतुलन के दुष्परिणाम सामने नहीं आये ।

विशालकाय कारखाने जिस अनुपात से वस्तुयें विनिर्मित करते हैं उससे कहीं अधिक उनसे विष बनने का क्रम भी चलता है । चिमनियों से निकलने वाला जहरीला धुआँ वायुमण्डल में ऐसे तत्वों को बढ़ाता है जिससे न केवल सांस लेने वालों का स्वास्थ्य बिगड़ता है वरन् मानसिक स्थिति पर भी बुरा असर पड़ता है ।

द्रुतगामी वाहनों के लिए भी ऐसे ही ईंधन का प्रयोग किया जाता है जो जलने पर कारखानों जैसी गैस उत्पन्न करता है । इसकी मात्रा बढ़ते जाने पर वैसा ही संकट उत्पन्न होता है जैसा कि विषैले पानी में जलजीवों का निर्वाह सम्भव नहीं रहता । औद्योगीकरण के कारण बढ़ते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रदूषण ने न केवल जनजीवन के लिए स्वास्थ्य संकट खड़ा किया है वरन् भावी पीढ़ियों को अपंग-अविकसित स्तर का भी बनाना आरम्भ कर दिया है ।

कोढ़ में खाज की तरह अणु परीक्षणों द्वारा बढ़ता विकिरण भी इस संकट को गहरा करता चला जा रहा है। वन सम्पदा कटते जाने के कारण वह मार्ग भी अवरुद्ध होता है जिसके सहारे इस प्रदूषण के संशोधन की आशा की जाती है । इस संदर्भ में विश्लेषणकर्ताओं ने तथ्यों को उजागर किया और जनसाधारण को सचेत किया है कि अन्तरिक्ष में बढ़ती विषाक्तता को रोकने के लिए उत्पादनकर्ताओं को सहमत करना सम्भव न हो सके तो उन्हें बाधित भी किया जाय ।

हिरोशिमा व नागाशाकी पर आधी सदी पूर्व परमाणु बम का विस्फोट हुआ परन्तु वहाँ का वातावरण अब भी विषाक्त बना हुआ है । जो भी बच्चे वहाँ पैदा होते हैं वे अधिकांशतः अपंग-अपाहिज तथा विक्षिप्त होते हैं ।

अमेरिका के शहरी क्षेत्रों में सामान्य की तुलना में १० से २० करोड़ गुना सघन रेडियो तरंगें विद्यमान पाई गयीं ।

'एट हाईएस्ट रिस्क' की लेखिका श्रीमती क्रीस्टोफर नारवुड ने कहा है कि—आज गर्भपातों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है । कुछ जो बच जाते हैं वे भी अस्वस्थ व अविकसित ही होते हैं । अधिकांश विकलांग जन्मते हैं। इन सबके लिए उनने वातावरण की विषाक्तता को दोषी ठहराया है ।

अमरीकी ड्रग मेडिकल कॉर्पोरेशन के भूतपूर्व मेडिकल डाइरेक्टर हेराल्ड गौर्जन ने बताया कि—अमेरिका में ३० से ४० प्रतिशत बच्चे भ्रूण के रूप में ही दम तोड़ते हैं । जो पैदा होते हैं उनमें से एक-तिहाई शारीरिक अथवा मानसिक रोगों से ग्रस्त होते हैं । उन्होंने इसका प्रमुख कारण रेडियो विकिरण से उत्पन्न विषाक्तता को बताया ।

जापान के मिनीमैय खाड़ी के निकट रहने वाली महिलाओं के जितने बच्चे पैदा हुए उनमें से अधिकांश अपंग और अपाहिज थे । इसका कारण एक कम्पनी ने खाड़ी में मरक्यूरी के कूड़े-कचरे को डाला जाना बताया ।

संसार भर में ऐसे रोगों की भरमार हो रही है जिनका कुछ समय पूर्व तक कोई अस्तित्व नहीं था और नाम तक नहीं सुना गया था । इनके उपचारों पर नये अनुसंधान चलते रहते हैं पर गुत्थी सुलझने के आसार नजर नहीं आते । इसी प्रकार मानसिक रोगों की एक प्रकार से बाढ़ आती दीखती है । हर दस आदमियों में से एक सनकी या अर्ध-विक्षिप्त की स्थिति में रहने लगा है । अनिद्रा, तनाव, आक्रोश एवं निराशाग्रस्त मनुष्य चाहते हुए भी कुछ कहने योग्य पुरुषार्थ नहीं कर पाते। वे कुछ न कुछ करते तो रहते हैं पर होता ऐसा है जिससे कुछ बनने की तुलना में बिगाड़ अधिक होता रहे । इस दृष्टि से वे क्षेत्र अधिक घाटे में हैं जो औद्योगीकरण के क्षेत्र में अपनी हाँकते रहते हैं । इतनी हानि उत्पन्न करने के मूल्य पर यदि थोड़े लोगों की सम्पदा बढ़ती हो तो उसका उपार्जन किसी भी प्रकार दूरदर्शितापूर्ण नहीं कहा जा सकता ।

औद्योगीकरण से उत्पन्न प्रदूषण—वायु विस्फोटों के विकिरण के साथ-साथ मशीनी हलचलों, प्रसारणों से कोलाहल भी वातावरण में इतना बढ़ रहा है कि उससे मानवीय श्रवण शक्ति अनुपयुक्त दबाव अनुभव करती है और जनसाधारण के मानसिक संतुलन को बिगाड़ती देखी जाती है ।

मानवीय श्रवण शक्ति की एक मर्यादा है । एक सीमा के ध्वनि दबाव ही कान सुन सकते हैं । अस्पष्ट ध्वनियों को समझने में मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है किन्तु सहन शक्ति से अधिक का शोर तो मानसिक संतुलन ही गड़बड़ा देता है और अनेक प्रकार की हानियाँ पहुँचाता है ।

तेज विमानों की पराध्वनि गति वायु-मण्डल की 'ओजोन' परत को क्षतिग्रस्त करती है । इसी कारण हानिकारक पराबैंगनी किरणों का आगमन धरती पर अधिक होने लगा है और समस्त मानव समाज के लिए एक विशेष प्रकार का खतरा उत्पन्न हो गया है । फ्रांस में एक प्रयोग के दौरान यह देखा गया कि कार्यालय में होने वाले शोर में २० डेसीबल की कमी से ९ प्रतिशत काम अधिक होने लगा है ।

अच्छा हो इस तथाकथित प्रगति का लोभ संवरण समय रहते कर लिया जाय । कोयला और तेल की भू-गर्भीय सम्पदा अगली एक शताब्दी पूरी होने से पूर्व ही पूरी तरह चुक जाने का हिसाब जोड़ा जा चुका है। इस स्थिति में भी इस अदूरदर्शी उत्साह को रोकना पड़ेगा जो इन दिनों तथाकथित प्रगति के नाम पर अति उत्साह के साथ अपनाया जा रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य गँवाकर समूचे मनुष्य समुदाय को कुछ उत्साही लोगों की लिप्सा के लिए बलि का बकरा बनना पड़े यह हर दृष्टि से अनुचित है । हमें इस विकास के पीछे अट्टहास करते विनाश की भी बात सुननी चाहिए और कुटीर उद्योगों की तरह ग्राम्य जीवन की ओर वापस लौटना चाहिए ।

अभिवर्धन ही नहीं परिशोधन भी

परिशोधन एवं अभिवर्धन के सन्तुलित प्रयास से ही प्रगति को टिकाऊ और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है । इन दोनों में से एक को भी नहीं छोड़ा जा सकता है । अभिवर्धन के लिए प्रयास भौतिक समृद्धि साधनों को साथ लेकर आता है, पर साथ ही अनुपयोग एवं हानिकारक तत्वों को भी छोड़ जाता है । उनके परिशोधन की व्यवस्था न बनाई जाय, उपेक्षा कर दी जाय तो अनेकों प्रकार के संकट उठ खड़े होते हैं । शरीर की समर्थता के लिए शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए पौष्टिक आहारों की व्यवस्था बनायी जानी चाहिए । पर साथ ही विजातीय तत्वों के निष्कासन एवं रोगों से सुरक्षा की भी व्यवस्था होनी चाहिए । तभी शरीर समर्थ एवं निरोग बना रह सकता है । प्रयास एकाकी हो, सामर्थ्य सम्पादन के लिए पौष्टिक आहार ही जुटाए जायें । रोग से बचाव का प्रबन्ध न हो तो पौष्टिक तत्वों द्वारा स्वास्थ्य सम्बर्धन का लाभ नहीं मिल सकता । न ही शरीर निरोग बना रह सकता है । सन्तुलित स्वस्थ जीवन क्रम के लिए दोनों ही तरह के प्रयास आवश्यक है ।

प्रकृति की दौड़ में सुख-स्मृद्धि की अभिवृद्धि के लिए मानवीय पुरुषार्थ एवं उत्साह भरा प्रयास प्रशंसनीय है पर साधन सम्पन्नता के लिए किये जा रहे प्रयत्नों के दूरगामी परिणामों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए । रोग को दूर करने में दी जाने वाली दवाओं से उत्पन्न 'साइडएफेक्ट' के समान उत्पन्न हो रही प्रदूषण विभीषिका पर भी ध्यान जाना चाहिए । अन्यथा उनसे नये रोग उठ खड़े होंगे तथा रोग निवारण का प्रयास असफल ही सिद्ध होगा और निराशा ही हाथ लगेगी । पिछड़े दिनों सम्पन्नता अभिवर्धन के लिए उत्साह उमड़ा तथा प्रयास भी चला । इस प्रयास में सफलता भी मिली । समृद्धि बढ़ी । पर इस उत्साह में दूरगामी परिणामों पर ध्यान न दिया गया । अभिवर्धन के प्रयास में परिशोधन के अनिवार्य क्रम को भुला दिया गया । फलस्वरूप अनेकों प्रकार की समस्याएँ उठ खड़ी हुई । बड़े उद्योगों, कल-कारखानों की निरन्तर अभिवृद्धि एवं उनसे पैदा होने वाला प्रदूषण नई परमाणु विभीषिका लेकर सामने प्रस्तुत है । वातावरण में विषाक्तता इस तेजी से बढ़ती जा रही है कि अनुमान है कि मनुष्य को अगले दिनों वायु एवं जल की विषाक्तता से घुट-घुट कर मरना होगा । प्राकृतिक प्रकोपों एवं विश्व युद्धों से ही भयंकर क्षति होने की प्रचलित मान्यता थी पर उनसे कम हानि मनुष्य जाति को बढ़ते हुए प्रदूषण से नहीं उठानी होगी । यदि अभिवृद्धि का क्रम यही बना रहा, उसे रोका नहीं गया तो प्राकृतिक प्रकोपों अथवा विश्व युद्ध से मानव जाति मरे या नहीं पर वातावरण की विषाक्तता ही उसे नष्ट कर देने के लिए पर्याप्त होगी ।

उत्पादन क्षमता ही नहीं प्रदूषण को रोकने के लिए भी प्रबन्ध किया जाना चाहिए । भौतिक प्रगति की दौड़ में अनेकों राष्ट्र आगे बढ़े हैं । अनुमान किया जाता है विगत २५ वर्षों में जापान की राष्ट्रीय उत्पादन क्षमता चार गुनी जर्मनी की दुगुनी तथा अमेरिका की आठ गुढ़ी बढ़ी है । इस अभिवृद्धि से इन देशों की सरकारें एक ओर तो प्रसन्न हैं । पर दूसरी ओर बढ़ती हुई विषाक्तता से चिन्तित हैं । नित्य नई बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। फेफड़े, सिर, आँख, गले के अनेकों ऐसे रोग उत्पन्न हो रहे हैं जिनका निदान कर सकना भी मुश्किल पड़ रहा है । पशु-पक्षियों की संख्या निरन्तर घटती जा रही है । खाद्यान्न में पौष्टिक तत्व नष्ट होते जा रहे हैं । जापान का माउण्ट फिगी पर्वत विभिन्न प्रकार के पक्षियों की चहचहाट से भरा रहता था, वहाँ उनकी संख्या में भारी कमी आई है ।

मनोरोगों की तो दिनोदिन वृद्धि हो रही है । अनिद्रा, तनाव, सिरदर्द, थकान, उत्तेजना, पागलपन के शिकार तो अधिकांश व्यक्ति हैं । नदियों-समुद्रों में रहने वाले जल चर भी पानी में मिली विषाक्तता के कारण दम तोड़ रहे हैं । औद्योगीकरण के कारण जापान के टोकियो जैसे शहर में वाहनों (कार, ट्रक, बस आदि) की संख्या आठ गुनी हो गई है । स्थिति यहाँ तक पहुँची है कि दमे, लक्वे,पागलपन से ग्रस्त रोगी बच्चे पैदा हो रहे हैं। टोक्यो स्वास्थ्य विभाग की सूचना के अनुसार 'सूमीनामी' नगर के कीशो हाईस्कूल के ६००० बच्चे आँखों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जलन, सिरदर्द, हाथ-पैरों में अकड़न जैसे रोगों से ग्रस्त हैं । पूरे शहर में १३००० व्यक्ति विभिन्न प्रकार के रोगों के शिकार हैं । इसका कारण वैज्ञानिकों ने वायु में कार्बन मोनोऑक्साइड का सामान्य से दस गुना बढ़ जाना बताया है । कारखानों से निकली सल्फर डाईऑक्साइड भी कम घातक नहीं है । टोकियो मेट्रोपालीटन एनवायरनमेंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर मिचीटाका कैमो का कहना है कि 'सल्फर डाईऑक्साइड बच्चों के विकास में घातक है ।

वातावरण में फैलती हुई इस विषाक्तता को रोकने के लिए कई राष्ट्रों ने कार्यक्रम बनाये एवं प्रयास भी आरम्भ कर दिये हैं । टोकि में समाज कल्याण द्वारा प्रदूषण उन्मूलन विभाग खोला गया है । इसके कार्यक्रमों को सख्ती से लागू करने के लिए स्थानीय सरकार ने कठोर कानून भी बनाये हैं । 'काबासाकी' नगर के मेयर ईटो ने पाँच मंजिला प्रदूषण नियन्त्रण केन्द्र की स्थापना कराई । कल-कारखानों के मालिकों एवं सम्बन्धित अधिकारियों की प्रयोग की जाने वाली सल्फर की मात्रा जो तीस प्रतिशत रहती थी, उसको एक प्रतिशत रखने का आदेश दिया है । बड़े उद्योगों को जिनसे अधिक प्रदूषण पैदा होता है उन पर भी पाबन्दी लगा दी है ।

इस प्रकार के प्रयास अन्य स्थानों पर भी चल रहे हैं । स्वीडन में सबसे बड़ा उद्योग कागज बनाने का है जिसमें कुल सामग्री का दो-तिहाई भाग पानी की आवश्यकता होती है । प्रति टन कागज तैयार होने के बाद उतने ही वजन के लकड़ी के टुकड़े, रसायन एवं गन्दा पानी भी पैदा होता था जिसको नदी या सरोवर में बहा दिया जाता था । नवीन पद्धति के अनुसार ऐसी व्यवस्था बनाई गई है कि एक टन निकलने वाले मलवे के स्थान पर मात्र एक किलोग्राम ही मलवा निकले । लकड़ी के टुकड़े, छिलके आदि को अलग करके 'रफ पेपर' बना दिया जाता है तथा शेष भाग वायलर की भट्टी में जला दिया जाता है । स्वीडन की राजधानी 'स्टॉकहोम' में यूरोप का सबसे बड़ा अस्पताल है । अस्पताल में बनी 'हीटिंग सिस्टम' की व्यवस्था के कारण चिमनियों के धुएँ से प्रतिवर्ष २० टन कालिख एवं ३०० टन सल्फर डाईऑक्साइड निकलती थी । अब उसमें ऐसी व्यवस्था वैज्ञानिकों द्वारा की गई है जिससे कालिख की मात्रा ९० प्रतिशत और सल्फर डाईऑक्साइड की मात्रा ९८ प्रतिशत कम हो जाय ।

स्वीडन की पार्लियामेण्ट ने कानूनी संरक्षण भी दिया है जिसके अनुसार प्रत्येक छोटे और बड़े कारखानों को प्रदूषण रोकने के लिए निर्धारित प्लाण्ट लगाना पड़ता है । इसका कड़ाई से पालन करवाने के लिए कृषि मंत्रालय के आधीन राष्ट्रीय वातावरण संरक्षण बोर्ड की स्थापना की गई है । इस बोर्ड ने समाज के विभिन्न अंग जैसे शिक्षा विभाग, उद्योगों से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति, सरकारी कर्मचारी गण प्रत्येक को प्रदूषण रोकने में सहयोग करने की एक समग्र प्रशिक्षण व्यवस्था बनाई है । प्रदूषण को रोकने व दूर करने सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण भी समय-समय पर रेडियो एवं टेलीविजन पर किया जाता है । स्कूलों में बच्चों एवं कारखानों में काम करने वाले कर्मचारियों को 'वातावरण संरक्षण कोर्स' अनिवार्य रूप से सिखाया जाता है । युद्ध स्तर पर अनेकों क्षेत्रों में चल रहे इन प्रयासों से प्रदूषण को रोकने में विशेष सफलता मिली है ।

सुरसा की तरह मुँह फाड़े आ रही इस विभीषिका से बचने के लिए छोटे-बड़े प्रयास सभी स्थानों पर चलने चाहिए । प्रदूषण से होने वाली हानियों से राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को अवगत कराया जाना चाहिए । समझाने प्रशिक्षण की व्यवस्था बनाने तथा बड़े उद्योगों की स्थापना पर अंकुश लगाया जाना चाहिए । राजतंत्र को भी ऐसे कठोर कानून बनाने चाहिए, जिनका उल्लंघन कोई व्यक्ति न कर सके । बड़े उद्योगों की जगह ऐसे छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए जिनमें प्रदूषण उत्पन्न होने की कम से कम गुंजाइश हो ।

वातावरण में व्याप्त विषाक्तता की भावी विभीषिकाओं से बचा जा सकता है । इसको दूर करने के लिए यज्ञीय पुरातन परम्पराओं का भी प्रचलन किया जाना चाहिए । अनेकों वैज्ञानिक शोधों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि अग्निहोत्र वातावरण को परिशोधित करने की एक समर्थ पद्धति है । उसमें वायु में घुले-मिले विषाणुओं-जीवाणुओं को मारने की अद्भुत क्षमता है ।

परिशोधन के लिए कई स्तर पर प्रयास करने होंगे तथा अभिवर्धन के लिए किये जा रहे विभिन्न प्रकार के भौतिक प्रयासों में दूरदर्शिता का समावेश करना एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूरगामी परिणामों पर ध्यान देना होगा । तभी भौतिक प्रगति मनुष्य जाति के लिए सहायक सिद्ध हो सकती है ।

वायुमण्डल में संव्याप्त प्रदूषण की ही तरह आदतों में, चिन्तन में, चरित्र में घुसा हुआ प्रदूषण भी कम हानिकारक नहीं है । विषाक्तता शरीर का नाश करती है । दृष्टता एवं भ्रष्टता के फलस्वरूप व्यक्ति तथा समाज का सर्वनाश होता है । प्रकृति के लिए सुविधा सम्वर्धन के लिए हमारे प्रयत्न चलें पर यह न भुला दिया जाय कि बढ़ती हुई निकृष्टता को रोके बिना बढ़ा हुआ वैभव आत्मघात के लिए ही प्रयुक्त होगा । उस रोक-थाम को प्रगति प्रयासों के समतुल्य ही महत्त्व मिलना चाहिए ।

सावधान ! पृथ्वी का सुरक्षा कवच क्षीण हो रहा है

पृथ्वी की सतह से १० से १५ मिलोमीटर की ऊँचाई पर ओजोन का एक सघन रक्षा कवच है । यह सूर्य की घातक पराबैंगनी किरणों को रोककर पृथ्वी की रक्षा करता है । सूर्य की किरणें इसके स्तर तक पहुँचकर ओजोन में बदल जाती हैं और अपना घातक रूप खो देती हैं । ओजोन वास्तव में ऑक्सीजन अथवा प्राणप्रद वायु का बड़ा संघनित और क्रियाशील रूप है । इसमें एक विशेष गंध होती है जिससे ताजगी भर जाती है ।

पृथ्वी से ऊपर की ऊँचाइयों भूमि-सतह की अपेक्षा सूर्य किरणें अधिके ज्वलनशील होती हैं । सूर्य प्रकाश में पराबैंगनी किरणें अधिक होती हैं । इनके अधिकांश भाग को ऑक्सीजन सोखकर ओजोन में बदल देती है और पृथ्वी को हानि से बचा लेती है ।

इन दिनों यह ओजोन परत विभिन्न कारणों से क्षीण होती जा रही है । वैज्ञानिकों के अनुसार इसका कारण एक तो सी० एफ० सी० का बड़ी तीव्र गति से ऊपर की ओर जाना है । यह वातावरण में पहुँचकर विशेष ओजोन परत को प्रभावित करता है । सी० एफ० सी० ११ एवं १२, जो कि कल-कारखानों के बाई प्रोडक्ट हैं वातावरण में जाने पर ओजोन के कवच में १८ प्रतिशत की क्षति कर देते हैं । साथ ही वायुयानों, वातानुकूलकों और संश्लेषित फोम का बढ़ता उपभोग भी चिन्ता का विषय है । इसके अतिरिक्त सुपर-सोनिक विमानों और कन्कार्ड विमानों द्वारा होने वाला शोर रूपी प्रदूषण ओजोन को निष्क्रिय ऑक्सीजन में बदल देता है और ओजोन कवच क्षीण होता जाता है । एक कारण कीटनाशकों के कारण होने वाला प्रदूषण है । इनमें उपस्थित सल्फर डाईऑक्साइड ओजोन की सघनता को कम करती है । रेडियो-धार्मिता में वृद्धि होना भी इसका प्रभावशाली कारण है ।

वैज्ञानिक इस बात से अत्यधिक चिन्तित हैं कि हमारी पृथ्वी ग्रीन हाउस इफेक्ट के कारण धीरे-धीरे गर्म होती जा रही है । कलकारखानों से निकलने वाले दूषक तत्व इसके प्रमुख कारण हैं । एक रिपोर्ट के अनुसार सन् २०३० तक पृथ्वी का तापमान २ से ९ डिग्री सेण्टीग्रेड बढ़ जायेगा । इसका व्यापक प्रभाव आल्पस और हिमालय पर्वतों के भीमकाय हिमखण्डों पर पड़ेगा । ग्लेशियर अब पिघलते जा रहे हैं, जिससे शहरों की ऊँचाई समुद्र तल से क्रमशः कम होती जा रही है ।

अगले बीस वर्षों में ही ध्रुवों पर जमी बर्फ धीरे-धीरे पिघलने से महासागरों का तल ऊपर उठता जायेगा और उनके तट पर स्थित शहरों के अस्तित्व को खतरा हो जायेगा, जहाँ की जनसंख्या अच्छीखासी है ।

क्षीण होते सुरक्षा कवच को मजबूत बनाने के लिए ध्रुवों के बलक्षेत्र के दिशाभिमुखीकरण की अवधि में पृथ्वी के चारों ओर कृत्रिम चुम्बकीय बल स्थापित करना चाहिए । इससे अन्तरिक्ष से आने वाली घातक किरणों से बचाव संभव होगा । वृक्षों को काटने पर अन्तर्राष्ट्रीय वैधानिक नियन्त्रण लगा कर भू-रक्षण और हर वर्ष की बाढ़ की विभीषिका से बचा जा सकता है । बड़े-बड़े कल-कारखानों की अपेक्षा छोटे-छोटे कारखानों से काम चलाया जाय । कीटनाशक दवाइयों का कम से कम प्रयोग किया जाना ही हितकर होगा । अधिक ऊँचाइयों पर उड़ने वाले विमानों की अपेक्षा कम ऊँचाई पर उड़ने वाले विमानों से काम चलाया जाय ।

पिछले दशक के प्रारम्भ से ही ओजोन की परत क्षीण होने का पता पड़ते ही वैज्ञानिकों ने वातावरण पर रासायनिक द्रव्यों को छोड़ने और सी० एफ० सी० के प्रयोग में अंकुश लगाकर इससे उत्पन्न होने वाले भय को कम करने का प्रयास किया था । परन्तु ये प्रयास अधूरे ही रहे । एक ओर बढ़ती रेडियो-धार्मिता एवं उपग्रहों का अन्तरिक्षीय कबाड़ा तथा दूसरी ओर बढ़ते सीमेण्ट, कंकरीट के जंगल एवं घटती हरीतिमा एक डेन्जरस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिग्नल दे रही है । यह प्रकृति की व्यवस्था के साथ किया जा रहा ऐसा हस्तक्षेप है जिसका प्रतिकार वह दण्ड देकर ही पूरा करेगी । यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि ''औरों की भूल से हमें क्या मतलब'' वाली भाषा प्रकृति की पाठशाला में नहीं सुनी जाती ।

महामरण की एक व्यापक तैयारी

पृथ्वी, जल एवं वायु के अगणित अनुदानों से भू-लोक पर जीवन गतिशील है । सौर मण्डल के अन्यान्य ग्रहों का भी इसमें महत्त्वपूर्ण सहयोग है । उनके अनुदान न मिलें तो मनुष्य का पुरुषार्थ भी कुछ काम न कर सकेगा और असमय मरने की स्थिति आ जायेगी । मनुष्य ने जो कुछ भी भौतिक क्षेत्र में उपलब्ध किया है उसमें उसके स्वयं के पुरुषार्थ का कम, प्रकृति की अनुकूलता का अधिक योगदान है, पर ऐसा लगता है कि मानव उस सत्य को भुला बैठा है कि सन्तुलन की हालत में ही प्रकृति से लाभ उठाया जा सकता है । प्रगति की अन्धी दौड़ से समस्त वातावरण ही विषाक्त हो उठा है, प्रकृति चक्र का असन्तुलन बढ़ता जा रहा है । बढ़ती विषाक्तता से वायुमण्डल की पोषक विशेषता समाप्त होती जा रही है। अगणित प्रकार के संकट उभर रहे हैं ।

पृथ्वी के वायुमण्डल में २१ प्रतिशत ऑक्सीजन तथा .०३२ प्रतिशत कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा का सन्तुलन माना गया है । यह अनुपात ६५० तथा १ का पड़ता है । पर मनुष्य की अदूरदर्शिता के कारण अब कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा वायुमण्डल में निरन्तर बढ़ती जा रही है । यह सूर्य के प्रकाश तथा विद्यमान विकिरण को अपने में शोषित कर लेती है । पृथ्वी की गर्मी को अन्तरिक्ष में जाने से रोकती है । फलस्वरूप विश्व का तापक्रम निरन्तर बढ़ता जा रहा है । अनुमानतः सारे संसार में वार्षिक ईंधन की खपत में ५ प्रतिशत की वृद्धि होने से आगामी दस वर्षों में विश्व के तापक्रम में ४ डिग्री फारेनहाइट की बढ़ोत्तरी हो जायेगी ।

१९७९ में किये गये एक पर्यवेक्षण के अनुसार अकेले संयुक्त राज्य अमरीका में १४ करोड़ ७० लाख टन कार्बन मोनोऑक्साइड, २ करोड़ ५० लाख टन धूलिकण, ३ करोड़ ४० लाख टन सल्फर डाईऑक्साइड, २ करोड़ ३० लाख टन नाइट्रोजन ऑक्साइड और ३ करोड़ ५० लाख टन हाइड्रोकार्बन वायुमण्डल में फेंके गये । ये विजातीय पदार्थ विभिन्न माध्यमों से विपुल परिमाण में निकलते हैं । उद्योगों की बाढ़ ने गत तीन वर्षों में यह स्थिति और भी विकट बना दी है ।

कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन डाईऑक्साइड जैसी अनेकों गैसें वायुमण्डल में मिलकर विषाक्तता पैदा करती हैं । कार्बन मोनोऑक्साइड एक रंगहीन, गंधहीन पर विषैली गैस है जो दहन प्रक्रिया के अन्तर्गत ईंधन में कार्बन के पूर्णतः जलने की स्थिति में ऑक्सीकृत होकर पैदा होती है । सल्फर डाइऑक्साइड की उत्पत्ति तेल व कोयला जलाने से होती है । ६० प्रतिशत सल्फर डाइऑक्साइड का उत्पादन कोयला जलाने से ही होता है । हाइड्रोकार्बन अधजले अवशिष्ट ईंधन से पैदा होता है , ऑटोमोबाइल्स इसके प्रमुख स्रोत हैं । इसी प्रकार विषैली गैस नाइट्रोजन आक्साइड की उत्पत्ति जीवाश्म ईंधन को अत्यधिक तापमान पर जलाने से होती है । यातायात साधनों तथा भारी उद्योगों से यह पैदा होती है ।

कार्बन मोनोऑक्साइड को एक धीमा विष कहा जाता है जो शरीर में प्रवेश करके ऊतकों में विद्यमान जीवन दायी ऑक्सीजन की मात्रा में ह्रास उत्पन्न करती है । इससे शारीरिक शिथिलता तथा मानसिक अवसाद की अनुभूति होती है । स्वस्थ व्यक्ति की भी कार्यक्षमता घट जाती है । मानसिक विक्षोभ के कारण दुर्घटनाग्रस्त होने की सम्भावना बढ़ती है । श्वास तथा स्नायु सम्बन्धी क्रानिक रोगों को बढ़ावा देने में इस गैस की प्रमुख भूमिका होती है ।

सल्फर डाइऑक्साइड श्वसन तन्त्र को उत्तेजित करता है तथा उसके सामान्य क्रम में व्यतिरेक उत्पन्न करता है । नाइट्रोजन ऑक्साइड रक्त विकारों तथा बच्चों में इन्फ्यूऐन्जा समान रोग उत्पन्न करता है । प्रमुख बात तो यह है कि इन सभी विषैली गैसों की भूमिका मनोविकारों को जन्म देने हेतु जितनी उत्तरदायी है, उतनी पर्यावरण सम्बन्धी अन्य कोई परिस्थिति नहीं ।

कुछ विशेषज्ञों का निष्कर्ष है कि सन् १९५० के बाद संसार का तापक्रम घटने लगा है । इसका कारण वे वायुमण्डल में बढ़ते कोहरे को बता रहे हैं । बढ़ते इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सघन कुहासे के अनेकों कारण हैं—कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि, कारखानों की चिमनियों से धूम-कोहरे (स्मॉग) का बढ़ना, भू-गर्भ में आण्विक परीक्षण, ईंधन का विपुल परिमाण में दहन आदि ।

मौसम विज्ञानियों का मत है कि वायुमण्डल में धूलि कणों तथा एयरोसॉल्स का यदि पचास अरब टन जमाव हो जाय तो वायुमण्डल का तापक्रम ४ डिग्री घट जायेगा। ऐसी हालत में हिमयुग की शुरूआत हो सकती है ।

वायुमण्डल के अतिरिक्त भू-मण्डल पर विषाक्त रासायनिक तत्वों के मिलते-घुलते रहने से उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही है । रासायनिक तत्वों से फैलते प्रदूषण के कारण यूरोप की लगभग चालीस प्रतिशत जमीन अब कृषि योग्य नहीं रही । फ्रांस में एक करोड़ एकड़ जमीन बर्बाद हो चुकी है । अनुमानतः रेगिस्तान का क्षेत्रफल हर वर्ष संसार में तीस हजार एकड़ बढ़ता जा रहा है । एक ओर संसार की बढ़ती आबादी के लिए अधिक कृषि-योग्य भूमि चाहिए, दूसरी ओर कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा भाग प्रदूषण की विषाक्तता के कारण उत्पादन क्षमता गँवाता जा रहा है। ऐसी स्थिति में अन्न का संकट अगले दिनों और भी गम्भीर रूप में प्रस्तुत हो सकता है ।

जल स्रोतों की स्वच्छता एवं विशेषता अब नष्ट होती जा रही है । झीलों, नदियों में भी वह विष निरन्तर घुलता जा रहा है । अछूते समझे जाने वाले सौन्दर्य स्थल उनकी चपेट में आ गये हैं । पर्यावरण मन्त्रालय के अध्ययन की रिपोर्टानुसार "नैनीताल का प्रख्यात झरना अब पूर्णतः प्रदूषित हो चुका है ।" अब तक यह झरना लाखों पर्यटकों के मनोरम केन्द्र के रूप विख्यात था । झरने के जल का अध्ययन करने वाले डॉ० एस० एम० दास तथा अन्य विशेषज्ञों की आम राय है कि उसमें कॉपर, कोबाल्ट, शीशा, मैंगनीज, जस्ता, सोडियम तथा कैल्सियम जैसी धातुओं का प्राचुर्य है । इसके अतिरिक्त जल में अनेकों विषाक्त रासायनिक तत्व तथा जीवाणु पाये गये हैं । प्रदूषण बढ़ने से झील की अधिकांश मछलियों की प्रजातियाँ अब दम तोड़ रही हैं । जो जीवित बची हैं, वे विषाक्त हैं ।

मछली को आहार रूप में प्रयुक्त करने वालों के लिए नदियों में बढ़ती विषाक्तता के कारण गम्भीर संकट आ खड़ा हुआ है । जापान के क्यूशू द्वीप के पूर्व में 'मीनीमाता' नामक एक नगर है । उस नगर में एक विशाल फैक्टरी विनाइल क्लोराइड तथा एसीटिल डी-हाइड्रेट नामक रसायनों का निर्माण करती है । कुछ वर्षों पूर्व वहाँ एक भयंकर महामारी फैली । एक जैसे रोग से ग्रसित होकर बहुत से लोग मरने लगे । आरम्भ में रोगी के अंग तथा ओंठ शून्य हो जाते थे तथा एक सप्ताह बाद स्पर्श बोध की, बोलने तथा सुनने की क्षमता समाप्त हो जाती थी । नेत्र ज्योति भी कुछ ही दिनों बाद नष्ट हो जाती । गम्भीर यन्त्रणा सहते हुए अन्ततः रोगी मृत्यु का शिकार बन जाता । इस अविज्ञात रोग से सैकड़ों व्यक्ति मरे, हजारों रुग्ण होकर अपाहिज बन गये ।

कारण की खोजबीन करने पर मालूम हुआ कि "मीनीमाता' खाड़ी की मछलियाँ फैक्टरी द्वारा फैलाये गये प्रदूषण के कारण विषाक्त हो गयी हैं । उनमें पारे की मात्रा अत्यधिक पायी गयी । तब से खाड़ी में मछली पकड़ना पूर्णतः निषिद्ध कर दिया गया ।

स्वीडन के ४० क्षेत्रों, फिनलैंड के ५ तथा यूनाइटेड स्टेट के १७ राज्यों में मछली पकड़ने को कानूनी जुर्म घोषित कर दिया गया है । ऐसा मछलियों के भीतर बढ़ती विषाक्तता को देखते हुए करना पड़ा है ।

लॉस एन्जेल्स के निकट यू० एस० ए० की सबसे बड़ी डी० डी० टी० उत्पादक फैक्टरी है । फैक्ट्री से निकले कचरे को निकटवर्ती सान्तामोनिका नामक खाड़ी में वर्षों से बहाया जाता रहा है । विगत वर्षों में कितने ही व्यक्तियों की अकस्मात मृत्यु हो गयी । उनके शवों का परीक्षण करने पर मालूम हुआ कि डी० डी० टी० विषाक्तता युक्त मछलियाँ खाने के कारण उनकी अकाल मृत्यु हुयी ।

पौलैंड की सबसे बड़ी नदी, जो ६६४ मील लम्बी है, जिसका जल संचार क्षेत्र ७५,०२२ वर्गमील है, में इतना अधिक प्रदूषण भर गया है कि उसके तटों पर रहने वालों को विभिन्न रोगों का संकट आ खड़ा हुआ है। खनिज उद्योग तथा कागज उद्योग के कारण अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात ओण्टोरियो-कनाडा की 'एकीलेक' अब अपनी सौन्दर्य विशेषता गँवा चुकी है । इसी प्रकार अवकाश मनाने वालों द्वारा प्रयुक्त पैसिफिक समुद्र तट का निकटवर्ती क्षेत्र अब तेजी से मरुस्थल में बदलता जा रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपनी सुन्दरता के लिए प्रख्यात टोकियो अब संसार का सबसे अधिक प्रदूषित नगर है । यहाँ सुरक्षा चौकियों पर ऑक्सीजन के सिलैण्डर टंगे रहते हैं ताकि श्वास के लिए शुद्ध वायु की कमी पड़ते ही तैनात सिपाही ऑक्सीजन ग्रहण कर सकें ।

एक सर्वेक्षण अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार लन्दन में चार घण्टे ट्रैफिक की ड्यूटी सम्भालने वाले पुलिस कर्मियों के फेंफड़े में इतना विष भर जाता है, मानो उनने १०५ सिगरेट पी ली हों । लन्दन के सत्तर प्रतिशत विद्यार्थियों की आम शिकायत आँख, नाक एवं गले के रोगों की है। जब टोकियो में लोगों से १९७९ के चुनाव में पूछा गया कि आप लोगों को सबसे अधिक किस चीज की जरूरत है, तो चारों ओर से एक ही उत्तर मिला—''शुद्ध हवा और साफ आकाश की ।''

कृषि विज्ञानियों का मत है कि पृथ्वी का लगभग एक-तिहाई कृषि क्षेत्र पाँच वर्षों के अन्दर ही बेकार हो जायेगा । प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में भारत, पाकिस्तान, चीन, पश्चिम एशिया, यू० एस० ए० तथा कनाडा प्रमुख हैं । एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी का पाँचवाँ हिस्सा अर्थात् तीन करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पूर्णतः सूखने की स्थिति में पहुँच गया है । अनुमानतः २ लाख वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र प्रतिवर्ष कृषि कार्य हेतु अनुपयुक्त होता जा रहा है । इससे १३० अरब रुपयों की फसल के रूप में क्षति हो रही है ।

इसका कारण विशेषज्ञ वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई को मानते हैं । हरीतिमा बादलों को बरसने के लिए आकर्षित करती है । उसके उन्मूलन के कारण पृथ्वी की उर्वरता नष्ट हो रही है । दूसरी ओर वृक्ष प्रदूषण रूपी गरल का पान करके वायुमण्डल को दूषित होने से बचाते हैं। उनकी बड़ी संख्या प्रति वर्ष तम्बाकू रूपी विष के उत्पादन में आहुति स्वरूप दी जा रही है ।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका १९८२ के अनुसार ३ लाख ६३ हजार टन तम्बाकू के उत्पादन के लिए भारत में मात्र एक वर्ष में १२ लाख ८६ हजार एकड़ भूमि में विद्यमान जंगलों को वृक्ष विहीन कर दिया गया। खेत से काटी गयी तम्बाकू की कच्ची पत्तियाँ सुखाने के लिए वृक्षों के ईंधन का ताप देना पड़ता है । विशेषज्ञों का मत है कि ''१००० सिगरेटों की तम्बाकू पकाने के लिए लगभग १०० टन लकड़ी की जरूरत पड़ती है जो औसतन २ बड़े पेडों से प्राप्त होती है । प्रतिदिन भारत में १७ करोड़ सिगरेटें तथा ४४ करोड़ बीड़ियाँ बनती हैं। ५०० बीड़ी अथवा सिगरेट के तम्बाकू को पकाने में एक पूरा वृक्ष खप जाता है । प्रतिदिन देश में बनने वाली सिगरेट-बीड़ियों को पकाने के लिए अनुमानतः १२ लाख २० हजार पेड़ों के ईंधन की जरूरत होगी । यह तो मात्र भारत के आँकड़े हैं । समस्त विश्व में तम्बाकू उत्पादन के लिए प्रतिवर्ष एक बड़े भू-भाग की हरीतिमा नष्ट की जा रही है ।

प्रदूषण का विषपान करने वाले पेड़-पादपों के घटने तथा निरन्तर वायुमण्डल में विषाक्तता भरने से अब गम्भीर संकट की स्थिति आ खड़ी हुई है । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अब से १३ वर्षों बाद सन् २००८ तक वायुमण्डल में बढ़ती कार्बन डाईऑक्साइड गैस की मात्रा के कारण भू-मण्डल का औसत तापक्रम ५ डिग्री सेंण्टीग्रेड से भी अधिक बढ़ जायेगा और ऐसी विनाशकारी परिस्थितियाँ पैदा हो जायेंगी जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

अगणित प्रकार के उभरते संकट इस बात का संकेत देते हैं कि यदि मनुष्य ने अपनी अदूरदर्शिता न छोड़ी तो प्रस्तुत संकट और भी गम्भीर होगा तथा महाविभीषिका के रूप में प्रस्तुत होकर समस्त मानव जाति को घुट-घुटकर मरने को विवश करेगा । वस्तुतः यह मनुष्य की स्वयं की आमंत्रित की हुई सामूहिक आत्महत्या होगी ।

ध्रुव केन्द्रों पर छेड़छाड़ अविलम्ब रोकी जाय

इकोलॉजी के विशेषज्ञों का मत है कि पृथ्वी को अन्यान्य ग्रहों से जो अनुदान मिलते हैं वे उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव के माध्यम से अवतरित होते हैं । अदृश्य जगत से, अन्य ग्रह नक्षत्रों से, ध्रुव प्रदेशों का किस तरह का सम्बन्ध है, यह रहस्य तो अभी अविज्ञात है । पर विश्व के मूर्धन्य वैज्ञानिक यह स्वीकार करने लगे हैं कि भू-मण्डल पर उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव का महत्त्व सर्वाधिक है तथा वे अपने में कितने ही ऐसे रहस्यों को छिपाये हुए हैं जिनका रहस्योद्घाटन सम्भव हो सके तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानव जाति की भौतिक परिस्थितियाँ अनुकूल बनाने में असाधारण सहयोग मिल सकता है ।

ऐसा अनुमान है कि पृथ्वी के मौसम एवं वातावरण का स्वसंचालित नियंत्रण इन केन्द्रों से होता है । मौसम में होने वाला गतिरोध उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव के सन्तुलन व्यतिरेक का ही परिचायक है । ये क्षेत्र जितने विलक्षण, भौतिक दृष्टि से समृद्ध एवं रहस्यमय हैं उतने ही संवेदनशील भी । शरीर संस्थान में मस्तिष्क और मूलाधार जनन केन्द्र जितने अधिक सामर्थ्यवान होते हैं उतने ही सुकोमल भी । इन केन्द्रों पर यदि व्यतिरेक उत्पन्न हो जाय तो शरीर से स्वस्थ दीखते हुए भी मनुष्य पागल तथा विक्षिप्त बनते देखे जाते हैं । अस्तु, सर्वाधिक ध्यान इन केन्द्रों को स्वस्थ और संतुलित रखने के लिए देना पड़ता है । लगभग यही स्थिति पृथ्वी रूपी विराट शरीर में उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव की है ।

इनकी कोमलता के विषय में एक विचित्र अविश्वसनीय पर रहस्यमय सत्य यह है कि "यदि उत्तरी ध्रुव के मध्यबिन्दु पर एक घूँसा कस कर मार दिया जाय तो समस्त पृथ्वी का सन्तुलन डगमगा सकता है ।" एक विशेषज्ञ का यह निष्कर्ष प्रयोगों की कसौटी पर भले ही न कसा जा सका हो पर इन केन्द्रों की असामान्य कोमलता पर प्रकाश डालता है तथा यह संकेत देता है कि इनके साथ थोड़ी भी छेड़छाड़ की गई तो भयंकर परिणाम निकलने की संभावना होगी ।

पिछले कुछ दशकों से वैज्ञानिकों का ध्यान उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों की ओर अधिक आकर्षित हुआ है । ध्रुव प्रदेशों में पहुँचने एवं सम्बन्धित जानकारियों को प्राप्त करने के लिए कितनी ही दुस्साहसिक यात्राएँ भी सम्पन्न हुई हैं । अनेकों प्रकार की दुर्लभ जानकारियाँ भी प्राप्त हुई हैं । अभी-अभी पिछले दिनों भारत ने भी अपने कदम दक्षिणी ध्रुव पर रख दिये हैं । इसके लिए उन दुस्साहसियों की प्रशंसा करनी होगी जिन्होंने प्रकृति की प्रतिकूलताओं से लोहा लेते हुए सघन हिमाच्छादित प्रदेशों की यात्राएँ कीं तथा उपयोगी तथ्यों का रहस्योद्घाटन किया । परन्तु अन्य क्षेत्रों की भाँति यदि यह क्षेत्र भी ऐसे वैज्ञानिक प्रयोग परीक्षणों का केन्द्र बनता है जो निरापद नहीं हैं तो उससे समूचे भू-मण्डल के प्रभावित होने की आशंका है

दक्षिणी ध्रुव पर विश्व की कुल बर्फ का ९० प्रतिशत है । यह बर्फीला प्रदेश १३५ लाख वर्ग किमी० के सुविस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है जबकि उत्तरी ध्रुव के बर्फीले महासागर का क्षेत्रफल १४ लाख वर्ग किमी० है। उनकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए तीन बार अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष मनाये गये हैं । इंटरनेशलन जियोफिजिकल ईयर के नाम से विख्यात ये वर्ष थे १८८२-८३, १९३२-३३, १९५७-५८ । पोलर रिसर्च बोर्ड के चेयरमैन, नेशनल रिसर्च कौसिंल, वाशिंगटन के डी० टी० वाटमैन तथा वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेन्ट ऑफ जियोलाजिकल साइंस एण्ड क्वार्टरनरी रिसर्च सेण्टर के प्रोफेसर ए० एल० बासवोर्न ने विस्तृत शोध निष्कर्ष के आधार पर घोषण की है कि ध्रुव प्रदेशों का पृथ्वी के सन्तुलन-असन्तुलन में भारी योगदान है क्योंकि प्रायः देखा यह गया है कि सूर्य फलकों के माध्यम से आने वाले चुम्बकीय तूफानों का सबसे अधिक प्रभाव ध्रुव प्रदेशों पर पड़ता है । ऐसी स्थिति में उसकी प्रतिक्रिया सारे विश्व पर होती है ।

इन विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव केन्द्रों पर किसी भी प्रकार का विस्फोटक परीक्षण नहीं किया जाना चाहिए, अन्यथा समूची मानव जाति को प्राकृतिक विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है । एंटार्कटिक ग्लेशियर हिस्ट्री एंड वर्ल्ड पेलियो एनवायरनमेण्ट पुस्तक के लेखक हैं जे० डी० हेस और ई० एम० वान जिडरेन बेकर । इनके अनुसार अगले दशकों में दक्षिणी ध्रुव के वायुमण्डल का सारे विश्व के पर्यावरण पर विस्मयकारी प्रभाव पड़ने वाला है । इसका कारण उन्होंने यह बताया कि विभिन्न प्रकार के प्रदूषण एवं आण्विक परीक्षणों के विकिरण के फलस्वरूप पृथ्वी के पर्यावरण में अप्रत्याशित परिवर्तन के कारण दक्षिणी ध्रुव का तापमान क्रमशः बढ़ता जा रहा है ।

'नेचर' पत्रिका के एक लेख में प्रो० ए० टी० विल्सन ने एक चौंकाने वाला तथ्य प्रकाशित किया है कि बहुत बड़ी मात्रा में हिम प्रखण्ड दक्षिणी महासागर की ओर दक्षिणी ध्रुव की ओर से धीरे-धीरे सरक रहा है । फलस्वरूप विश्व का तापक्रम गिर रहा है और उत्तरार्द्ध गोलार्द्ध में बर्फ का जमाव अधिक हो रहा है । इस तरह दक्षिणी एवं उत्तरी ध्रुव प्रदेशों के तापक्रम में अप्रत्याशित हेरफेर सारे विश्व के वातावरण को प्रभावित कर रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'वर्ल्ड क्लाइमेट कांफ्रेंस डिक्लेरेशन एण्ड सपोर्टिंग डॉक्युमेण्ट्स के अनुसार प्रौद्योगिकी के व्यापक विस्तार के कारण हवा में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा तेजी से बढ़ रही है । ऐसी सम्भावना है कि यदि वृद्धि की रफ्तार यही रही तो ध्रुवों का तामपान भी २ डिग्री से लेकर ७ डिग्री तक कुछ ही दशकों में बढ़ जायेगा । इस तापमान वृद्धि के कारण अत्यधिक गर्मी पाकर ध्रुव प्रदेशों में लाखों मील तक फैली बर्फ पिघलकर बड़ी मात्रा में समुद्र में आने लगेगी । फलतः समुद्र की सारी पृथ्वी पर सतह छः मीटर से लेकर दस मीटर तक ऊपर उठ जायेगी । ऐसी स्थिति में जल-प्रलय की विभीषिका भी उत्पन्न हो सकती है । उपर्युक्त अनुसंधानकर्त्ताओं ने आगाह किया कि वायु में बढ़ती हुई कार्बन डाईऑक्साइड तथा परमाणु विस्फोटों से होने वाले विकिरण के उच्चतम तापक्रम की रोकथाम की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र होनी चाहिए ।

कहा जा चुका है कि ध्रुव प्रदेश जितने रहस्यमय एवं सम्पदा सम्पन्न हैं, उतने ही संवेदनशील भी । इन केन्द्रों पर छेड़छाड़ का अर्थ होगा अकल्पनीय प्राकृतिक विपदाओं को आमंत्रित करना । दुर्भाग्यवश इन क्षेत्रों को तकनीकी दृष्टि से सुसम्पन्न प्रगतिशील राष्ट्रों ने अपने शोध का केन्द्र बनाया है । बात जानकारियाँ एकत्रित करने भर तक सीमित रहती तो कोई खतरा नहीं था, पर सामरिक दृष्टि से वर्चस्व प्राप्त करने के लिए विस्फोटक प्रयोग परीक्षणों का परोक्ष क्रम भी इन देशों द्वारा चलाया जा रहा है । आर्कटिक आइस डायनेमिक्स ज्वाइण्ट एक्सपेरिमेण्ट इंटरनेशलन कमीशन ऑन स्नो एण्ड आइस सिम्पोजियम ग्रंथ के लेखक आर० एस० प्रिचार्ड के अनुसार, ''उत्तरी ध्रुव पर समुद्र और अटलांटिक महासागर के बीच ग्रीनलैण्ड और फ्रांस स्टेट में शीत प्रवाह का १९७० से अध्ययन हो रहा है । इसमें कनाडा, नार्वे, स्वीडेन, फ्रांस, और अमेरिका के मूर्धन्य वैज्ञानिक लगे हुये है । पुस्तक के लेखक का कहना है कि इन देशों के वैज्ञानिकों ने यहाँ परमाणु संयन्त्र से संचालित यंत्रों के माध्यम से प्रयोग आरम्भ कर दिये हैं जो खतरनाक सिद्ध हो सकते है । उल्लेखनीय है कि इंटरनेशल जियोफिजिकल ईयर में यह घोषणा की गई थी कि ध्रुव प्रदेशों को कभी भी सामरिक प्रयोगों का निमित्त नहीं बनाया जायेगा तथा किसी भी परमाणुशक्ति चालित यंत्रों का प्रयोग नहीं किया जायेगा । उपर्युक्त देशों द्वारा उठाया गया कदम सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है ।

सन् १९७९ में प्रकाशित पुस्तक ग्रीनलैंड एण्ड दि आर्कटिक रिजन के लेखक एच० सी० वाख और जे० टागोल्ड का कथन है कि आर्कटिक समुद्र का सामरिक दृष्टि से भी अधिक महत्त्व है । उत्तरी समुद्र की सतह पर जमी बर्फ के नीचे से अणु संचालित पनडुब्बियाँ आसानी से चल सकती हैं । इसी प्रकार दक्षिण ध्रुव में एण्टार्कटिक सरकम्पोलर करेण्ट जिसे वेस्टविण्ड ड्रिफ्ट कहते हैं, दुनिया का सबसे बड़ा समुद्री प्रवाह है । इसकी धारा को मोड़कर किसी भी प्रदेश में विप्लव की स्थिति लायी जा सकती है । उपर्युक्त विशेषज्ञों ने यह सम्भावना व्यक्त की है कि अमेरिका तथा रूस की परमाणु चालित पनडुब्बियाँ इन क्षेत्रों में चलने लगी हैं तथा ये दोनों ही देश इन केन्द्रों पर ऐसे प्रयोग परीक्षण कर रहे हैं जिससे मौसम पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकेगा । ऐसा भी अनुमान है कि अगले युद्धों में इन केन्द्रों से मौसम में व्यतिरेक उत्पन्न करके किसी भी देश के वातावरण में अभीष्ट प्रकार का परिवर्तन उत्पन्न कर सकना सम्भव होगा ।

ब्रिटेन के भौतिक विज्ञानी आर्थर मेकिंग का मत है कि सारे विश्व में प्राकृतिक विपदाओं में भारी वृद्धि हुई है । इसके लिए मनुष्य ही उत्तरदायी है । उनके अनुसार अदूरदर्शी समृद्धि एवं प्रगति के प्रयासों एवं आण्विक परीक्षणों से पूरे विश्व का 'इकोलॉजिकल सन्तुलन' डगमगा गया है । उसमें सबसे दुर्भाग्यपूर्ण कड़ी जुड़ी है ध्रुव प्रदेशों को सामरिक केन्द्र बनाया जाना । भू-मण्डल के इन नाजुक स्थलों पर परमाण्विक गतिविधियों को बढ़ावा देना अत्यन्त खतरनाक सिद्ध हो सकता है । अभी हाल में भारतीय वैज्ञानिकों का एक दल तैंतीस दिन की लम्बी यात्रा के बाद जानकारियाँ प्राप्त करने दक्षिणी ध्रुव स्थित अंटार्कटिका पहुँचा । यह देखकर उन्हें भारी अचरज हुआ कि उस दुर्गम प्रदेश में विभिन्न देशों के खेमे पूर्व से गढ़े हुए हैं । कितने ही रहस्यमय यंत्रों से सुसज्जित छोटी-छोटी सामरिक प्रयोगशालाएँ भी वहाँ स्थापित हैं ।

उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव की परिस्थितियों का ऐसा अध्ययन उपयोगी हो सकता है जो निरापद हो । पृथ्वी के वातावरण को ये ध्रुव केन्द्र किस तरह प्रभावित करते हैं ये जानकारियाँ महत्त्वपूर्ण हो सकती हैं पर इन्हें यदि सामरिक गतिविधियों का केन्द्र बनाया गया तो समस्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानव जाति को अनेकों प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ सकता है । कनाडा के एक वैज्ञानिक ने आशंका व्यक्त की है कि इन दिनों सम्पूर्ण विश्व के वातावरण में भारी व्यतिरेक उत्पन्न हुआ है । एक ही दिन में प्रचण्ड ठंड, गर्मी तथा बरसात तीनों ही प्रकार के मौसमों का क्रमिक रूप से आना असाधारण पर्यावरण असन्तुलन का परिचय देता है । इसके लिए बढ़ता हुआ विभिन्न प्रकार का प्रदूषण का दुष्प्रभाव तो जिम्मेदार है ही, उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव पर किये जाने वाले खतरनाक प्रयोग-परीक्षणों का भी योगदान है ।

निस्संदेह पृथ्वी के इन मर्मस्थलों को छेड़ा गया तो ठीक उसी तरह के संकटों का सामना करना पड़ सकता है जैसा कि पगलाये मस्तिष्क द्वारा पूरे शरीर को करना पड़ता है । विचारशीलता की माँग है कि ऐसे अदूरदर्शिता-पूर्ण प्रयासों की, जो समस्त मानव जाति के लिए विभीषिकाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं, अविलम्ब रोकथाम होनी चाहिए । इन केन्द्रों पर छेड़छाड़ रोकने के लिए कठोर अन्तर्राष्ट्रीय अंकुश लगाये जाने की आवश्यकता है ।

मौसम बदला, तो हम संकट में पड़ेंगे

धरती अपनी धुरी और कक्षा पर अपने जन्म काल से नियत और नियमित रूप से घूम रही है । उसी अनुपात से मौसम का एक क्रम चल पड़ा है । वनस्पतियों और प्राणियों ने उसे अपने निर्वाहक्रम में सम्मिलित कर लिया है । यह ढर्रा जैसा भी कुछ है अभ्यास में आ गया है और उसी ढाँचे में सब ढल गये हैं ।

अब प्रकृति विज्ञान की थोड़ी सी कड़ियाँ हाथ लगने से मनुष्य की लिप्सा, आतुरता और उद्दंडता अत्यधिक बढ़ गयी है । उसके फलस्वरूप पदार्थों में ही व्यतिरेक उत्पन्न नहीं हो रहा समूचा वातावरण बुरी तरह प्रभावित हो रहा है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मौसम में उलट-पुलट के रूप में हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं ।

इसके अनेकानेक कुप्रभाव सामने आते जा रहे हैं । उनमें से एक अत्यधिक बुरा प्रभाव यह है कि मानवीय स्वास्थ्य की रक्षा कठिन हो गयी है । आहार-विहार के व्यतिरेक को खोजी हुई चिकित्सा पद्धतियों से किसी प्रकार संभाल लिया जाता था पर मौसम की उथल-पुथल से उत्पन्न होने वाले दुष्प्रभावों की रोकथाम करने की बात चिकित्सकों की समझ में भी नहीं आ रही है क्योंकि ऐसा व्यतिरेक इससे पहले कभी हुआ नहीं था और ऐसा संकट भी सामने नहीं आया था ।

अगले दिनों संभवतः मौसम विज्ञान पर आधारित मेडीकल बुलेटिन जारी होने लगें जिनमें लिखा हो कि "आज अमुक उपनगर में सिरदर्द, निराशा, आम बेचैनी, निद्रा में गड़बड़ी की सम्भावना है तथा कल के मौसम को देखते हुए अनुमान है कि तनावग्रस्त लोगों में हृदय की गड़बड़ी हो, दिल का दौरा पड़े तथा उदरशूल अधिकांश लोगों में होता देखा जायेगा ।"

हाँ ! यह सच है, यूटोपिया नहीं । ऐसा मेडीकल बुलेटिन प्रतिदिन जर्मन वेदर ब्यूरो जारी[करता है जो म्यूनिख से लेकर फ्रेंकफुर्त तक ६ सेण्टर्स के नागरिक नियमित रूप से पढ़ते हैं ।

नित बनते-बिगड़ते उच्च और न्यून दबाव केन्द्रों और गर्म ठण्डी-हवा की चाल के आधार पर जर्मन पूर्वानुमान तंत्र मौसम को ६ चरणों में विभाजित करता है । मौसम विज्ञानियों के अनुसार प्रत्येक चरण स्वास्थ्य की भिन्न-भिन्न स्थितियों के बारे में संकेत करता है । आमतौर पर उच्च वायुदाब (बैरोमेट्रिक प्रेशर) स्वास्थ्य के अच्छे होने की संभावना की ओर जबकि न्यून वायुदाब और गर्मी की स्थिति स्वास्थ्य में आने वाली खराबी की ओर इंगित करती है ।

जॉन एबॉट कॉलेज क्यूबेक के बायोमेटिरियोलॉजिस्ट साइमन केवॉन का कहना है कि अभी भी जर्मनी के अधिकांश डॉक्टर मौसम के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में शंका व्यक्त करते देखे जाते हैं । किन्तु उनका कहना है कि अब क्रमशः चिकित्सकों ने मौसम विज्ञान पर आधारित बुलेटिन का प्रयोग अपने मरीजों पर करना आरम्भ कर दिया है । इससे अनेकों रोगियों में लक्षण नजर आते ही उपचार कर रोगों की दर कम कर पाने में उन्हें मदद मिली है ।

कैनेडियन क्लाइमेट सेन्टर के डॉक्टर ग्रिफीथ द्वारा किये गये अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि जिस दिन हवा तेज हो, आर्द्रता निरन्तर बढ़ रही हो, वायुदाब घट रहा हो और तापमान में तेजी से उतार-चढ़ाव आ रहा हो तो उस दिन आधासीसी (माइग्रेन), दमा (अस्थमा), हृदयावरोध जैसे रोगों के रोगी अधिक संख्या में अस्पताल में भरती होते हैं । उन्होंने १९७० से १९८० तक के आँकड़े एकत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कर मौसम विज्ञान एवं स्वास्थ्य सांख्यिकी विभागों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है । वे कहते हैं कि उत्तरी अमेरिका व कनाडा में जब भी घना कोहरा होता है, ठण्डक के साथ आर्द्रता बढ़ जाती है, आत्महत्या के मामले पुलिस विभाग के पास अधिक संख्या में आते हैं । इनमें महिलाओं की संख्या ज्यादा होती है । वे अपने शोध अध्ययन के आधार पर लिखते हैं कि मनुष्य ने ही गत दो दशकों में मौसम बिगाड़ा है एवं स्वयं वही उसका फल भुगत रहा है ।

इलिनॉय मेडीकल सेण्टर यूनिवर्सिटी की डॉ० अनिता बेकर ने ह्यूस्टन शहर में एक अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि जिन दिनों असमय की वर्षा हुई व ओले गिरे, उन दिनों मायोकॉर्डियल इनफार्शन (दिल के दौरे से स्थायी क्षति) से मरने वाले रोगियों की संख्या में बीस प्रतिशत वृद्धि हो गयी ।

इन दिनों अम्ल वर्षा वैज्ञानिकों के लिए चिन्ता का कारण बनी हुई है । तेजाब की इस वर्षा का मुख्य कारण है पर्यावरण में घुले हुए रासायनिक पदार्थ । सल्फर और नाइट्रोजन जैसे विषाक्त रासायनिक पदार्थ उद्योगों में जल रहे ईंधन के परिणामस्वरूप ही निकलते हैं ।

नेशनल एटमॉस्फीयरिक डिपोजीशन प्रोग्राम के संचालक ऐलिस बी० काउलिंग की रिपोर्ट के अनुसार पूर्वी अमेरिका का दो-तिहाई शहरी व वन्य भाग अन्धाधुन्ध तेजाबी वर्षा से ढँकता चला जा रहा है । इसमें एल्युमीनियम जैसी जहरीली धातु भी सम्मिश्रित है, जिसने मछलियों को तो बुरी तरह मारा ही है, साथ ही साथ कृषि फसल को भी अपार क्षति पहुँचाई है ।

बॉक्स में मैनहट्टन कॉलेज के प्रवक्ता लेंस एस० ऐवांस ने अपने नवीनतम शोध प्रयासों से यह सिद्ध कर दिखाया है कि इसके लिए औद्योगीकरण पर नियंत्रण तो अनिवार्य है ही, सोयाबीन जैसी फसल उगाने से भी तेजाब की वर्षा को रोकने में काफी सहायता मिलती है ।

पेन्सिलवानिया यूनिवर्सिटी के आर्थर एच० जॉन्सन का कहना है कि प्रदूषित पर्यावरण के कारण पिछले कुछ दशकों से पौधों की वृद्धि दर काफी घट चुकी है । गत पंद्रह वर्ष का लेखा-जोखा देखा जाय तो दक्षिण न्यूजर्सी में पिचपाइन और शौर्टलीफ पाइन तथा उत्तरी वरमोंट में रैडस्प्रूस नामक पौधों के विकास की दर में ५० प्रतिशत का ह्रास हुआ है । नाइट्रेट की वातावरण में विषाक्तता को इसका प्रमुख कारण माना जा रहा है ।

मौसम के बदलने से वातावरण में जो विकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं, उन्हें क्रिया की प्रतिक्रिया सिद्धान्त पर समझा जा सकता है । यह सब मनुष्य का किया हुआ है जिसकी प्रतिक्रिया वातावरण में बढ़ती विषाक्तता, अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा असाध्य रोगों के महामारी प्रकोपों के रूप में देखी जा सकती है । दैवी विभीषिकाएँ और कुछ नहीं, मनुष्य की बढ़ती ललकलिप्सा, भोगवादी प्रवृत्ति तथा अनुशासन की अवज्ञा का ही प्रतिफल होती है । समय रहते चेता जाय एवं औद्योगीकरण, शहरीकरण पर रोकथाम लगा इस प्रक्रिया का विकेन्द्रीकरण कर छोटे-छोटे उद्योगों को पनपाया जाय । कूड़ा-कचरा चाहे वह विकिरण-जन्य हो अथवा उद्योगों के बाइप्रोडक्ट के रूप में, हर कहीं नहीं फेंका जाना चाहिए । अंतरिक्ष, समुद्र या अफ्रीका-एशिया के जंगल कूड़े की टोकरी नहीं हैं, इस तथ्य को समझा जाना चाहिए । पर्यावरण संतुलन को क्षेत्रीय नहीं, ग्लोबल स्तर पर देखा-समझा जाना चाहिए व उसी स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिए । विपत्तियों के बादल मिटाने के लिए, मौसम की विभीषिका से बचने के लिए, हमें प्रकृतिमाता के निर्देशों को मानना ही होगा ।

पृथ्वी से भार सहन नहीं हो रहा

घोड़े पर उसकी सामर्थ्य से बाहर वजन लादा जाये तो उसकी कमर टूटेगी। बैलगाड़ी में अत्यधिक वजन भर दिया जाये तो उसे खींचने वाले बैल पैर पसार देंगे और गाड़ी को निश्चित स्थान तक पहुँचाने में समर्थ न रहेंगे ।

एक मनुष्य जन्मता है, तो उसके शरीर का ही नहीं, उपकरण, प्रसाधनों का भी बोझ बढ़ता जाता है । फिर उसके लिए अन्न, ईंधन, साधन, सामान, आवास की जरूरत पड़ती है, जिसे नये सिरे से उपार्जित करना पड़ता है । उसके लिए उद्योग चाहिए, वह भी वजन बढ़ाते हैं । इस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या पृथ्वी पर निरन्तर वजन बढ़ा रही है जिसका परिणाम उसकी भ्रमण कक्षा में अन्तर के रूप में सामने आता है । उसकी निर्धारित धुरी इधर से उधर खिसकती और उसकी अनेकानेक अनुपयुक्त प्रतिक्रियाएँ होती हैं जिनमें भूकम्प और भूस्खलन प्रमुख

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । ऐसे प्राकृतिक प्रकोप पहले कम देखने में आते थे, पर अब उनकी संख्या ही नहीं, भयंकरता भी अत्यधिक बढ़ रही है । बढ़ती प्राकृतिक आपदायें यह संकेत देती हैं कि समय रहे मनुष्य का बुद्धि विपर्यय सही दिशा में मुड़े, तभी उज्ज्वल भविष्य का सही निर्धारण हो सकेगा ।

प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता कामिल मिरझेव का कहना है कि भूकम्प को प्रकृतिगत विपदा भी मान लिया जाये तो भी पृथ्वी के मौसम को बिगाड़ने और पर्यावरण को दूषित करने से लेकर धरती को खोखली बनाने तक का काम हमने स्वयं किया है । जंगलों की हरियाली समाप्त कर प्रकृति-संतुलन को गड़बड़ाया है । पर्यावरण विशेषज्ञों द्वारा पिछले दिनों किये गये एक अध्ययन के अनुसार हिमालय और उसके तराई वाले क्षेत्रों में भूस्खलन की घटनायें निरन्तर बढ़ती जा रही हैं, जिससे सम्पदा एवं जन-जीवन को भारी क्षति उठानी पड़ती है । इससे प्रति वर्ष सैकड़ों लोगों को जीवन से हाथ धोना पड़ता है । इन घटनाओं के पीछे जिन कारणों को उत्तरदायी माना गया है उनमें प्रमुख हैं— जनसंख्या का बढ़ता दबाव एवं उसी बढ़ी हुई आबादी हेतु वनों का कटते जाना, विकास बनाम विनाश एवं विस्फोटकों का अन्धाधुन्ध प्रयोग । उनका कहना है कि वनों की कटाई का काम यद्यपि ब्रिटिश शासन में ही प्रारम्भ हो गया था, उसने रेलवे स्लीपरों के लिए मोटे-मोटे पेड़ों का सफाया करना शुरू कर दिया था । तब से अब तक जंगल कटते-कटते छोटे दायरे में सिमट कर रह गये हैं । आज चीड़, देवदार, अखरोट जैसे फलदायी पेड़ जिनकी भूस्खलन रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, बहुत कम रह गये हैं । फलतः पहाड़ धँसने की गति तीव्र हो गयी है ।

पर्वतीय क्षेत्रों में चल रहे तथाकथित विकास ने भी भूस्खलन को गति प्रदान की है । कहने को तो विकास के नाम पर इन क्षेत्रों में यातायात की सुविधायें जुटाने के नाम पर प्रतिवर्ष नयी सड़कें बनतीं और बिजली जैसी सुविधायें जुटायी जाती हैं, परन्तु वास्तविक रूप में देखा जाय तो उसके पीछे अदृश्य विनाश लीला ही रची जा रही है । सड़क, भवन एवं बाँध जैसे निर्माणों की ओट में होने वाली जमीन से छेड़छाड़ और वनों की कटाई से वर्षों से जमी मिट्टी ढीली पड़ जाती है, जिससे यह वर्षा के जल की बौछारों को नहीं झेल पाती और देखते-देखते धराशायी होकर न केवल मार्गों को अवरुद्ध कर देती है, वरन् तराई के गाँवों एवं लगी फसलों को भी तबाह कर देती है ।

पुराणों में कथायें आती हैं कि धरती असुरों के पाप का भार सहन करने में समर्थ न रही तो प्रजापति के पास जाकर रोने-कलपने लगी और अपने उद्धार का मार्ग पूछने लगी । लगता है वैसी ही परिस्थिति हम फिर पैदा कर रहे हैं और संकटों को आमंत्रित कर रहे हैं । समय रहते इस भूल को सुधारना होगा । उज्ज्वल भविष्य के निर्धारण के लिए आबादी पर नियंत्रण पाना एवं प्रकृति-संतुलन को बनाये रखना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है ।

मनुष्य जीवन का अन्त कितना निकट

२२ अप्रैल को अमेरिका के नवयुवकों ने सामूहिक रूप से पृथ्वी दिवस (अर्थ-डे) मनाया । उस दिन के लिए व्यापक तैयारी और कार्यक्रमों के प्रचार के लिए एक अखबार अर्थ-टाइम्स निकाला गया जिसमें उस दिन सामूहिक रूप से मोटर कार आदि यातायात के यांत्रिक साधन छोड़ कर पैदल या ताँगे-इक्कों में चलने की अपील की गई । यों घेराव, हड़ताल नक्सलपन्थी आन्दोलनों के इस युग में आन्दोलन और प्रदर्शन मनुष्य समाज की सामान्य घटनाओं के रूप में गिने जाने लगे है पर यह आयोजन अपने आप में इतना महत्त्वपूर्ण एवं चौंकाने वाला है कि एक बार तो आधुनिक सभ्यता का अहर्निश गुणगान करने वालों को भी चक्कर आ गया । सारी दुनिया की पत्र-पत्रिकाओं ने इस अभूतपूर्व आयोजन और उससे सम्बन्धित भयंकर समस्या पर लेख और समाचार छापकर दुनिया का ध्यान इस प्रश्न पर विचार करने के लिए झकझोर कर आकर्षित किया—''आया आज की यान्त्रिक सभ्यता से उत्पन्न धुयें नहीं-नहीं जहर को रोका जाना चाहिए अथवा मनुष्य को उस दिशा में बढ़ने ही देना चाहिए जिधर रोग, शोक और भयंकर बीमारियों में घुट-घुट कर प्राण देने के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता ।''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह समस्या क्या है ? इसे समझ लेना आवश्यक है । आजकल शहर, शहरों में कारखानों, मोटरों, कारों, रेलों, भट्टियों, चिमनियों आदि की संख्या तेजी से बढ़ रही है । इनसे जो धुआँ निकलता है, वह इतना सघन होता जा रहा है कि बम छोड़े जायें या न छोड़े जायें यह धुआँ ही एक दिन मनुष्य को घोंट कर मार देगा । अभी-अभी वैज्ञानिकों ने शोध करके बताया है कि धुयें की घुटन बर्दाश्त न कर सकने वाले कई पक्षियों की जातियाँ नष्ट हो गईं और वे कुछ ही समय में लुप्त जन्तुओं की श्रेणी में चली गई । अभी यह स्थिति जीव-जन्तुओं के प्राणों पर आ बनी है, कल मनुष्यों पर भी पड़ेगी इसमें संदेह नहीं है ।

जापान की राजधानी टोकियो में सड़कों पर चलने वाले वाहनों की संख्या कभी-कभी बढ़ जाती है तो वहाँ धुआँ इतनी बुरी तरह से छा जाता है कि सरकारी तौर पर उसकी घोषणा करानी पड़ती है । सरकारी कर्मचारी को उसकी घुटन से बचने के लिए गैस मास्क (एक प्रकार का यन्त्र जो हवा का दूषण छानकर शुद्ध हवा ही श्वास नली में जाने देता है) पहनना पड़ता है । १९६६ में टोकियो में ६५ बार इस तरह की चेतावनी दी गई । ट्रैफिक पुलिस को आध-आध घण्टे बाद अपनी ड्यूटी छोड़कर चौराहों की बगल में बनी ऑक्सीजन टंकियों में जाकर ऑक्सीजन लेनी पड़ती थी । कई बार ऐसा हुआ कि जब सिपाहियों ने भूल की और वे ऑक्सीजन लेने नहीं गये तो कई-कई सिपाही एक साथ मूर्छित होकर गिरे ।

जापान में सौ व्यक्तियों के पीछे एक व्यक्ति अनिवार्य रूप से ब्रांकाइटिस (श्वास नली में सूजन की बीमारी) का रोगी है । उसका कारण और कुछ नहीं यह धुआँ ही है जिसे कल-कारखाने व यातायात के वाहन उगलते रहते हैं। यहाँ के अमेरिकन सैनिकों में इन दिनों एक नया रोग चमक रहा है जिसका नाम टोकियो-योकोहामा डिसीज रखा गया है । उसका कारण भी डॉक्टर वायु की इस गन्दगी को ही बताते हैं । इस बीमारी में सांस लेने में घुटन, खाँसी और अपच आदि लक्षण होते हैं ।

अमेरिका के ब्राजील राज्य में साओपालो और रायो डि-जेनेरो दो पड़ोसी नगर हैं । १९१४ के आस-पास साओपालो की जितनी जनसंख्या थी अब आबादी उससे दो गुनी अधिक (पचास लाख) हो गई है । जनसंख्या वृद्धि के समानान्तर ही वहाँ कल-कारखाने और फैक्टरियाँ भी बढ़ी हैं । अनुमान है कि उक्त अवधि में साओपालो में पाँच हजार नये कल-कारखाने स्थापित हुए हैं । इसके विपरीत रायो डि-जेनेरो की नगर कॉरपोरेशन ने सन् १८७३ में दी गई पत्रिकाओं की आर्गेनिक डस्ट चेतावनी (इस चेतावनी में पहले ही यह कहा गया था कि यदि कल-कारखाने बढ़े तो उनका धुआँ मनुष्य जाति के लिए भयंकर खतरा बन जायेगा) को ध्यान में रखकर औद्योगिक प्रगति को बढ़ने नहीं दिया । अब स्थिति यह है कि साओपालो के आकाश में प्रतिदिन दस टन हाइड्रोफ्लूओरिक एसिड और लगभग एक हजार टन सल्फ्यूरिक एनहाइड्राइड वायु में घुल रहा है और उससे नगर में ब्रॉकियल (श्वास नली सम्बन्धी बीमारी) से मरने वालों की संख्या भी दुगुनी हो गई है । प्रातःकाल लोग घरों से खाँसते हुए निकलते हैं। इस स्थिति की भयंकर अनुभूति करने वाले मेड्रिड के लोग कहते हैं— "हम प्रातःकाल की साँस के साथ उतना दूषित तत्व पी लेते हैं जितने से कोई एक डीजल इंजन दिन भर सुविधापूर्वक चलाया जा सकता है । एक ओर साओपालो धुयें में घुट रहा है तो दूसरी ओर रायो-डि-जिनेरो के लोग अभी भी इस दुर्दशा से बचे हुए हैं ।

जो बात अमरीकी युवकों की समझ में अब आ रही है उस बात को भारतीय ऋषियों ने करोड़ों वर्ष पूर्व अनुभव कर लिया था । वे जानते थे कि पृथ्वी के निवासियों का स्वास्थ्य और आरोग्य आकाश और वायु की शुद्धि पर आधारित है, इसीलिए यज्ञ जैसे विधान का आविर्भाव किया गया था । अग्नि में पदार्थ को हजारों लाखों गुना सूक्ष्म बनाकर आकाश में फैला देने की अद्भुत शक्ति होती है । उसके साथ मन्त्रों का उच्चारण शब्द विज्ञान की सामर्थ्य से सन्धि करा कर उस सूक्ष्म हुए तत्व को और भी दूर आकाश तक निक्षेपित कर सुगन्धित औषधियों के प्रभाव को फैला देता था, उसका फल यह होता था कि सारा आकाश शुद्ध बना रहता था। आकाश की शुद्धि स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। साथ ही उससे जलवायु का नियन्त्रण, बीमारी के कृमियों का संहार आदि लाभ भी मिलते थे, इसलिए यज्ञ सदैव से अति पवित्र और आवश्यक धर्म कर्त्तव्य माना गया था। उसके प्रभाव आज भी इस देश के आकाश में विद्यमान हैं और धर्म, सदाचार, सद्गुण, परायणता आदि को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थिरता के साथ वायु की शुद्धता को भी सुरक्षित किये हुए हैं । आज जो संसार में वायु प्रदूषण एक विकराल समस्या बन गया है उससे मुक्ति के लिए भी आगे यज्ञ ही मूलभूत आधार होंगे ।

आज अमेरिका के वायुमण्डल में प्रतिदिन हाइड्रोकार्बन, नाइट्रोजन, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर ऑक्साइड, सीसे के कण आदि विषैले तत्वों की २०,००,००,००० टन मात्रा भर जाती है । कई बार तापमान गिर जाने से मौसम में ठंडक आ जाती है जिससे यह धुआँ ऊपर नहीं उठा पाता, ऐसी स्थिति में सघन बस्तियों वाले लोग, जहाँ पेड़-पौधों का अभाव होता है, ऐसे घुटने लगते हैं जैसे किसी को कमरे में बन्द करके भीतर धुआँ सुलगा दिया गया हो । यह धुन्ध इतना ही नहीं करती, उसमें रासायनिक प्रतिक्रियायें भी होती हैं । इसके फलस्वरूप, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड, ओजोन और फओक्सि आक्ल नाइट्रेट नामक विषैली गैस पैदा हो जाती है उससे फेफड़ों के रोग, आँखों की बीमारियाँ और खांसी, गले के रोग असाधारण रूप से बढ़ते हैं । अमेरिका में इन बीमारियों से मरने वालों की संख्या कुल मरने वालों में एक-तिहाई से कम नहीं है ।

हमारे ऋषि महान् वैज्ञानिक थे । उन्होंने आत्मा और ब्रह्म जैसी अत्यन्त सूक्ष्म सत्ता को खोज निकाला था । यन्त्र-विद्या उनकी चुटकी का खेल था पर वह बुराइयों को जानते थे इसलिए देश को मशीनों से दूर रखा था और लोगों को अधिक से अधिक प्रकृतिस्थ जीवनयापन की प्रेरणा दी तभी यह देश शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं आत्मिक दृष्टि से सभी देशों का सिरमौर रहा है। यहाँ जैसे दीर्घजीवी और इच्छानुसार मृत्यु वरण करने वाले व्यक्ति विश्व में और कहीं नहीं होते । हमारा दुर्भाग्य है कि उन्हीं की सन्तान हम भारतीय अपनी संस्कृति को न धारण कर आज उस यान्त्रिक सभ्यता के पीछे अंधी दौड़ लगा रहे हैं । यूरोप आज जिससे सांस लेने और पिण्ड छुड़ाने के लिए अर्थ डे जैसे आयोजन कर रहा है ।

आने वाले समय में यह धुआँ पृथ्वी में अनेक अप्रत्याशित भयंकर परिवर्तनों के लिए वातावरण तैयार कर रहा है ।

इटली का पदुआ नगर कला की दृष्टि से सारे संसार में प्रसिद्ध है । गिओटी के बनाये भित्ति चित्रों को, पिटी पैलेस, पांटी वेकिओ तथा दि वैसेलिका ऑफ सान लोरेंजो (यह सब वहाँ की प्रसिद्ध इमारतें हैं) आदि नष्ट होते जा रहे हैं । वैज्ञानिक सर्वेक्षण बताते हैं कि यह सब वायु की अशुद्धि के कारण है । इन ऐतिहासिक स्थानों के रखरखाव में काफी धन और परिश्रम खर्च होता है तब भी वायु की गन्दगी से वे अपने आपको बचा नहीं पाते तो खुले स्थानों की सुरक्षा की तो कोई बात ही नहीं उठती । इन स्थानों में यह विषैली रासायनिक प्रक्रियाएँ वायु दुर्घटनाओं, बीमारियों का ही कारण न होंगी वरन् भूकम्प, पृथ्वी-विस्फोट, समुद्र में तूफान आदि का कारण भी होंगी। नई सन्तान पर उसका असर गर्भ से ही होगा । अमेरिका में अभी से विकलांग, कुरूप और टेढ़े-मेढ़े बच्चों की पैदाइशें प्रारम्भ हो गई हैं । कुछ दिनों में खरदूषण, त्रिशिरा, मारीच जैसी टेढ़ी, कूबड़ी, भयंकर सन्तानें उत्पन्न हों तो कुछ आश्चर्य न होगा । वायु की अशुद्धि से मनुष्य जीवन का अन्त बहुत निकट दिखाई देने लगा है उससे कैसे बचा जाये अब इस प्रश्न को उपेक्षित नहीं किया जा सकता ।

क्या रेगिस्तानों को उद्यानों में बदला जा सकेगा?

पृथ्वी का दो-तिहाई भाग जल है और एक-तिहाई भाग थल है । इसी एक-तिहाई हिस्से में ५०० करोड़ जनसंख्या निवास करती है और इसी से रोटी, कपड़ा और मकान की अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है । किन्तु पिछली कुछ शताब्दियों में इस भाग की सम्पदा का इस बुरी तरह दोहन हुआ है कि न सिर्फ सम्पदा-भण्डार चुकता आ रहा है, वरन् इसका प्रतिकूल प्रभाव जमीन पर भी पड़ रहा है ।

बात यहीं तक सीमित होती, तो किसी प्रकार संतोष कर लिया जाता, पर जब रेगिस्तानी भूमि का प्रसार-विस्तार होता नजर आये, तो इसे चिन्ताजनक ही कहा जा सकता है । इतिहास साक्षी है, जहाँ तात्कालिक लाभ के लिए भूमि सम्बन्धी गलत नीतियों को अपनाया गया, वहाँ उन्हें उनका दूरगामी दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ा है । कभी अफ्रीका की सहारा एवं भारत की थार मरुभूमि आबाद थी, पर जब वहाँ के निवासियों ने मुर्गी का पेट चीरकर सोने के सभी अण्डे एक ही दिन में बाहर निकाल लेने जैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कदम उठाया, तभी से उन्हें अपना दुर्भाग्य सामने झाँकने लगा था, पर फिर भी वे अपनी प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगा सके और उस क्षेत्र के वनों की कटाई के साथ-ही-साथ भूमि पर कृषि सम्बन्धी दबाव बढ़ने लगा, तो मिट्टी की उपजाऊ एवं लोचकता बनाये रखने वाला अंश वृक्षों की आड़ समाप्त होने के कारण हवा में उड़कर एवं बढ़ती बाढ़ की विभीषिका के कारण पानी में बह-बहकर समाप्त होने लगा और कालक्रम में वह क्षेत्र विशाल मरुस्थल का रूप धारण कर गया ।

कभी भारत में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसी विकसित सभ्यतायें थीं, पर वे सब सिर्फ इस कारण समाप्त होती चली गयीं, क्योंकि उन्होंने भूमि सम्बन्धी गलत प्रबन्ध अपनाया था । एक खेत में बार-बार एक ही प्रकार की फसल लगाने से जमीन अपनी उर्वरता खोती चली गयी और बंजर-ऊसर बन गयी । उपजाऊ क्षेत्र अनुर्वर होने लगे, तो वहाँ के निवासियों ने कृषि सम्बन्धी रणनीति में परिवर्तन कर खेतों में बदल-बदल कर फसलें लगाने के बजाय उस भूमि को ही त्याग दिया और वन्य क्षेत्र में झाड़-झंझाड़ों को साफ कर खेती करने लगे । कुछ वर्ष पश्चात् जब उस क्षेत्र की भी अनुर्वरता बढ़ी, तो वे पुनः दूसरे वन्य क्षेत्र में कृषि करने लगे । इस प्रकार उर्वरता का घटना उसी के साथ वनों का कटना उनके लिए एक प्रकार से कोढ़ में खाज की तरह साबित हुआ। इससे उनके लिए अस्तित्व सम्बन्धी समस्या उत्पन्न हुई, जिससे वे बच न सके और अपना अस्तित्व ही मिटा डाला।

आज हम न्यूनाधिक पूर्व विलुप्त सभ्यताओं के ही नक्शे कदम पर चल रहे हैं, अतः यदि वैसी ही परिस्थितियाँ हमारे समक्ष भी उपस्थित हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं समझनी चाहिए । हम आज न तो कृषि सम्बन्धी नीति में परिवर्तन ला पा रहे हैं और न वनों को संरक्षण दे पा रहे हैं ।

मरुभूमि के अस्तित्व में आने के ये दो प्रमुख कारण रहे हैं । और यही कारण प्राचीन सभ्यताओं के विलोप के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं । जापान ने इसकी गंभीरता को समझा है, अतः उसने गलत कृषि से होने वाली बंजरता को टालने का प्रयास किया है । इसके लिए जापानियों ने एक ही प्रकार की फसल बार-बार एक खेत में लगाने के बजाय मिश्रित खेती का तरीका अपनाया है । बीच-बीच में एक-दो वर्ष के लिए जमीन को परती भी छोड़ दिया जाता है, ताकि खेत खोई हुई उर्वरता पुनः प्राप्त कर सके । इस नीति के परिपालन से मरुभूमि विस्तार के एक कारण से तो बचा ही जा सकता है । इसका दूसरा कारण अधिक व्यापक और विकट है, पर मरुस्थल सहित इसके दुष्परिणामों को बताते हुए लोगों को यह समझाया जा सकता है कि वन-उन्मूलन हर प्रकार से हानिकारक है और इस प्रकार लोगों में इसके प्रति जन-चेतना जगायी जा सकती है ।

इन दो प्रवृत्तियों पर अंकुश लग जाने पर मरुभूमि के विस्तार को निस्संदेह रोका जा सकता है । इसके बाद ही इसके तीसरे चरण पर विचार किया जा सकता है कि अस्तित्व में आये मरुस्थलों को आबाद कैसे किया जाय ? यह देखने-सुनने में असंभव जैसा लगता भर है, पर यदि मनुष्य संकल्पपूर्वक अपने कार्य में जुट पड़े, तो अपने पराक्रम का परिचय दिये बिना नहीं रहता । नेपोलियन का संकल्प बल जब उभरा, तो उसने आल्पस जैसे विशालकाय पर्वत को भी पार कर डाला, जबकि इसके पूर्व यह कार्य असंभव जैसा बना हुआ था । नेपोलियन ने दृढ़ निश्चय किया, तो असंभव संभव बन गया, अगम्य गम्य बन गया।

बात सिर्फ मनोबल की है । आधी सफलता तो मनुष्य को दृढ़ मनोबल से मिल जाती है, और शेष आधी उसकी सूझबूझ, कार्यकुशलता एवं कर्तव्यनिष्ठा पर आधारित होती है । चूँकि रेगिस्तान को नखलिस्तान बनाने के गिने-चुने उदाहरण ही सामने हैं, अतः इस कार्य को असंभव स्तर का मान लेते हैं । पर वस्तुतः उनकी इस मान्यता के पीछे कार्य की, परिस्थितियों की, साधनों की कठिनता कम और उनका मानसिक दिवालियापन अधिक झाँकता है । यह कहा जाना कि रेगिस्तानों के नीचे जल स्रोत होता ही नहीं, सर्वथा निराधार है । जल तो सर्वत्र है, नदियाँ सर्वत्र बह रही हैं, कहीं वे जमीन फोड़कर बाहर आ जाती हैं तो कहीं अन्दर ही अन्दर बहती रहती हैं । वे रेगिस्तानी क्षेत्र में भी बह रही हैं । समुद्रों के नीचे भी और पर्वतीय इलाकों के नीचे भी । गंगा का वास्तविक उद्गम स्रोत मानसरोवर है । वहाँ से गोमुख तक गंगा की जल-धारा हिमालय के नीचे भूमिगत बहती है । अलकनंदा मणा गाँव से नौ किलोमीटर आगे जमीन से प्रकट होती है । स्रोत से यहाँ तक की धारा हिमालय के नीचे है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसे ही स्रोत चम्बल और अमरकंटक नदियों के हैं ! बहुत दूर तक वे भूमिगत बहती हैं । फिर एकाएक फब्बारे के रूप में प्रकट होती हैं । गया स्थित फल्गू नदी की धारा भी भूमिगत है । ऊपर से वह बिल्कुल सूखी नजर आती है, पर जब थोड़ी-सी रेत हटायी जाती है, तो गड्ढे में पानी जमा हो जाता है ।

यहाँ चर्चा जमीन के नीचे जल की उपलब्धता के सम्बन्ध में चल रही है कि वह हर जगह उपलब्ध है । अन्तर सिर्फ इतना ही है कि कहीं उसका स्तर कुछ ऊपर होता है और कहीं काफी नीचे । अस्तु, कहीं जमीन में बोरिंग करने से जल तुरन्त निकल आता है और कहीं गहराई तक नहीं निकल पाता । इसी आधार पर लोग यह अनुमान लगा लेते हैं कि इस क्षेत्र में जल है ही नहीं, पर बात वस्तुतः ऐसी है नहीं । ऐसे रेगिस्तान में गहराई तक बोरिंग कर जल उपलब्ध किया जा सकता है । इससे न सिर्फ लोगों की जल की आवश्यकता पूरी हो सकती है वरन् कृषि के लिए भी सिंचाई का आवश्यक प्रबन्ध हो सकता है ।

अमेरिका के सुप्रसिद्ध लेखक नॉर्मन विंसेण्ट पिल ने अपनी पुस्तक 'ट्रेजडी ऑफ करेज एण्ड कन्फीडेन्स' में एक ऐसी ही सत्य घटना का वर्णन किया है, जिसमें एक अरब निवासी युवक के पुरुषार्थ ने एक रेगिस्तान को सरसब्ज नखलिस्तान के रूप में बदल डाला था। यह युवक फिलिस्तीन के जूडियो क्षेत्र का निवासी मूसा अलामी था । जब वह कैम्ब्रिज से उच्च शिक्षा प्राप्त कर वापस लौटा, तो उस क्षेत्र में भारी उपद्रव मचा हुआ था। घर-परिवार नष्ट हो चुके थे । जमीन भी हाथ से जाती रही थी । अन्त में अन्य कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ा, तो उसने जॉर्डन घाटी में स्वयं बसने और अन्यों को बसाने की योजना बनायी, पर वह रेगिस्तानी क्षेत्र था। वहाँ पानी का सर्वथा अभाव था, किन्तु वह निराश नहीं हुआ । उसने कैलीफोर्निया रेगिस्तान की सुधार योजना सुन रखी थी, कुछ सहयोगियों को लेकर उस क्षेत्र में उसने कुएँ की खुदाई आरम्भ की और आश्चर्य कि उसे सफलता भी मिली । छः महीने में उसने पानी के १५ कुएँ खोद डाले। इसी से वहाँ शाक-शब्जी उपजाई जाने लगी और कभी रेगिस्तान कहलाने वाला वह क्षेत्र आबाद हो गया ।

ऐसे पुरुषार्थ का परिचय यदि दिया जा सके, तो आज भी कितने ही जनहीन व बेकार पड़े रेगिस्तानों को आबाद किया जा सकता है । इससे बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न होने वाले भूमि संकट से न केवल निपटा जा सकेगा, वरन् बेकार भूमि का सदुपयोग कर कुछ सीमा तक खाद्य संकट से भी निपटा जा सकेगा ।

रेगिस्तानों को उपजाऊ बनाना पड़ेगा

पृथ्वी का ७० प्रतिशत भाग पानी से डूबा है । मात्र ३० प्रतिशत ही थल है । उसमें भी पर्वतों, चट्टानों और रेगिस्तानों के इलाके ऐसे हैं जिनमें उर्वरता नहीं है । पानी वहाँ टिकता नहीं । रेतीली या पथरीली जमीन में न तो खाद्य पदार्थ उगते हैं और न वहाँ कारखाने खड़े हो सकते हैं । जहाँ पानी नहीं है वहाँ समझना चाहिए कुछ भी नहीं है ।

पहाड़ों को काट कर समतल बनाने में पानी का प्रश्न तो वहाँ की नदियों द्वारा किसी प्रकार हल हो जाता है, पर जिन तेज हवाओं को पर्वतों द्वारा रोका जाता है उनके दौड़ पड़ने का नया खतरा उत्पन्न होता है । इसके अतिरिक्त समुद्रों से उठने वाले मानसून भी बिना रुके दूसरी दिशा पकड़ सकते हैं । इससे वर्षा कम हो जाने का खतरा है । साथ ही देश की नदियों को बर्फ पिघलने से जो पानी मिलता है उसका भी स्रोत सूख जाता है । ऐसी दशा में पर्वतीय क्षेत्र में जो जल का विपुल भण्डार है, वह भी समाप्त हो जाता है । ऊँचाई पर उगने वाले मजबूत पेड़ भी समाप्त हो जाते हैं । ऐसी दशा में पर्वतों को समतल बनाने की बात गले नहीं उतरती । भले ही बड़ी जनसंख्या के लिए खाद्य और निवास की कमी बनी रहे । इसके लिए दौड़ती हवाओं को बुलाने का, बादलों को भगा देने का, हिम सम्पदा से नदी समाप्त करने का संकट कैसे बुलाया जाय ।

छुट-पुट पथरीली जमीनें साफ की जा सकती हैं । पर वहाँ जल स्रोतों का पता लगाना होगा । वे कहीं सौभाग्यवश मिल सकें, तो टाटानगर जैसे कुछ क्षेत्र आबाद हो सकते हैं । पर इतने महँगे मोल पर जमीन साफ करने के उपरान्त कोई सोना डालने वाली योजना चल सके तो ही उस खर्चीले प्रयत्न की सार्थकता है । अन्यथा खेती और बसावट के लिए पानी की हल्की-फुल्की व्यवस्था कारगर नहीं हो सकती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न रेगिस्तानों का है । एशिया का एक-चौथाई भाग रेगिस्तान घेरे पड़ा है । अफ्रीका में मिस्र का समीपवर्ती इलाका सहारा रेगिस्तान से पटा है । वहाँ मिट्टी रेतीली है । पर्वतों की रोकथाम न होने से हवायें तेज चलती हैं । फलतः जो वर्षा का जल थोड़ी बहुत नमी लाता है वह कुछ ही दिनों में भाप बनकर उड़ जाता है, यह वाष्पीकरण इतनी तेजी से होता है कि साधारण सिंचाई योजना भी कारगर नहीं हो सकती ।

फिर भी इस प्रश्न को छोड़ा नहीं गया है । सोचने वाले यह सोच रहे है कि जब मनुष्य वनों के विनाश पर उतारू होकर सरसब्ज क्षेत्र को रेगिस्तान बना सकता है, तो उस भूल का परिमार्जन करके उन क्षेत्रों को उर्वर क्यों नहीं किया जा सकता ।

अँग्रेज भू-वैज्ञानिक रिची केण्डर ने यूनेस्को की प्रार्थना पर संसार के रेगिस्तानों के सम्बन्ध में खोज करने का दीर्घकालीन प्रयास किया था । उनका शोध निष्कर्ष 'मैन अगेन्स्ट दि डेजर्ट' ग्रन्थ में लिखा है । उन्होंने पाया कि जहाँ अब रेगिस्तान है वहाँ पूर्वकाल में खेती भी होती थी। वन भी थे और नदियाँ भी बहती थीं । पर लोगों ने लकड़ी के लालच में पेड़ों को काट डाला । फलतः एक सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी के सारे अण्डे एक साथ निकाल लेने के लिए मुर्गी का पेट चीर डालने की उक्ति चरितार्थ हो गयी । जंगल बर्बाद हुए तो भूमि की उर्वरता भी साथ छोड़ गयी और नदियों का पानी भी भाप बनकर आसमान में इस प्रकार उड़ा कि उसके वापस लौटने की सम्भावना नहीं रही । उधर से भूले-भटके बादल गुजरते भी है तो महज तरसाने के लिए और की गई भूल के बदले भर्त्सना और प्रताड़ना की परिणति को दिखाने।

रेगिस्तानों को खेती तथा निवास के योग्य बनाने के लिए वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्रयास चल भी रहे हैं । पर वे सफल नही हुए । मध्य पूर्व के तेल देशों में गेहूँ उगाने का प्रयत्न किया गया पर वह आयातित अन्न की तुलना में चार गुना अधिक महँगा पड़ा । फलतः उस प्रयास को आगे चालू न रखा जा सका ।

इस संदर्भ में कुछ विशेष प्रयोग प्रयास विश्व की कुछ प्रमुख संस्थायें अनेक प्रकार के प्रयोग कर रही हैं । उन्हें आशा है कि कल नहीं तो परसों ऐसे उपाय हस्तगत हो सकेंगे जिनके सहारे उजाड़ को हरा-भरा बनाया जा सके ।

इस स्तर के प्रयासकर्त्ताओं में लन्दन की हन्टिंग टैक्नीकल सर्विसेज लि०, मिस्र की कैमीकल डिस्कवरीज लि०, यूरोप की डी० एल० मेकेंजी लि०, ईस्ट एंग्लिया का मौसम अनुसन्धान विभाग आदि के प्रयास कार्य तथा प्रतिवेदन ध्यान देने योग्य हैं । उनसे निराशा की इस बेला में भी उज्ज्वल भविष्य की आशा बँधती है ।

बबूल कैटेस स्तर के कंटीले पेड़ इन क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम परिश्रम से उगा सकते हैं । ऐसे ही कुछ और पेड़-पौधे ढूँढ़ निकाले गये है जो रेगिस्तानी वातावरण को सहन कर लेते है और वहाँ की विकट परिस्थितियों में भी अपना अस्तित्व बनाये रहते हैं । इनका उन क्षेत्रों में आरोपण हो सकता है जहाँ रेगिस्तान के बढ़ने की सम्भावना है । इस प्रकार पेड़ों की बाड़ लग जाने पर बचे हुए क्षेत्र को उजड़ने से बचाया जा सकता है ।

मोर्चा खड़ा करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता यह समझी गई कि द्रुत गति से विस्तार करते जा रहे रेगिस्तान को उसकी वर्तमान परिधि में ही कैद कर दिया जाय, उसे आगे न बढ़ने दिया जाय । भले ही इस बाड़ के बनाने में झाड़-झंखाड़ स्तर की हरियाली ही प्राप्त न हो । इनमें कुछ उपयोगी झाड़ियाँ भी हो सकती हैं जो मनुष्यों, पशुओं के लिए आंशिक रूप से खाद्य की तरह प्रयुक्त हो सकें ।

रेगिस्तानों के नीचे गहराई पर जलधारायें विद्यमान हैं, पर उन्हें एकदम ऊपर लाने में तो उस सम्पदा के भी भाप बनकर उड़ जाने का खतरा है । ऐसी दशा में यही हो सकता है कि रेगिस्तान के किनारों पर जहाँ जल है, उसका बूँद-बूँद उपयोग करते हुए रेगिस्तान को पीछे धकेला जाय ।

इसके लिए तीन काम एक साथ करने होंगे । जमीन में आठ फुट की गहराई पर एक मोटी पथरीली परत बिछाई जाय । उस पर जो पौधे उगें उन्हें पाइप से छेद कर बूँद-बूँद करके सींचा जाय । इन तीन कार्यों के अतिरिक्त चौथा प्रयत्न तेज हवा का दबाव हल्का करने वाली एक कठोर प्लास्टिक स्तर की दीवार खड़ी की जाय। जब हवा का रुख बदले तब इस दीवार को भी उसकी रोधक दिशा में मोड़ दिया जाय ।

यह सारे काम ऐसे है जिन्हें करते रहने पर यह आशा की जा सकती है कि धीरे-धीरे रेगिस्तान समाप्त किया जा सकेगा । इस प्रयास में उतना खर्च आयेगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जितना उस इलाके पर सोने की परत बिछाने में आता। बढ़ती हुई जनसंख्या, खाद्य और निवास की आवश्यकता को देखते हुए यह महँगे प्रयास भी करने ही पड़ेंगे ।

यह सोचना उन लोगों का है जो वन सम्पदा पर कुल्हाड़ी चलाकर अपने हाथों अपने पैर काटते हैं और कट जाने पर उसकी क्षतिपूर्ति के लिए खर्चीले उपचार की व्यवस्था बनाते हैं जिससे किसी सम्पन्न देश का भी अर्थ सन्तुलन गड़बड़ा जाय ।

उभरता एक संकट समाधान चाहता है !

पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग समुद्र में डूबा हुआ है । एक-चौथाई हिस्सा ही थलचर जीवों के रहने योग्य है । अन्न, जल, ईंधन, खनिज पदार्थ तथा आवास की अनेकानेक सुविधाएँ मनुष्य ही नहीं अन्य जीवधारियों को भी पृथ्वी से प्राप्त होती हैं । तीन-चौथाई भाग समुद्र के गर्भ में समाये होने के कारण वह मनुष्य के काम नहीं आ पाता । उपयोगी भूभाग का एक-चौथाई भाग वर्तमान विश्व आबादी की आवश्यकता के अनुपात में कम पड़ रहा है। खाद्यान्न, आवास एवं जल की समस्याएँ संसार के समक्ष मुँह फाड़े खड़ी हैं । प्रतिवर्ष करोड़ों की जनसंख्या वृद्धि इस समस्या को और भी अधिक दुष्कर बनाती जा रही है । ऐसी विषम परिस्थिति में उपजाऊ और अधिक उपयोगी भूमि का एक बड़ा भाग अपनी उत्पादक क्षमता और उपयोगिता गवाँ बैठे तो निश्चित ही विशेष चिन्ता की बात होगी तथा प्रस्तुत प्राकृतिक विपदाओं तथा मानव विनिर्मित प्रदूषण तथा परमाणु विभीषिकाओं की श्रृंखला में एक भयंकर कड़ी और भी जुड़ जायेगी ।

इन पंक्तियों में जिस खतरे की ओर संकेत किया जा रहा है वह है पृथ्वी के कितने ही भागों में रेगिस्तानी क्षेत्र का द्रुत गति से विस्तार होना । भूगर्भशास्त्रियों का मत है कि वृक्ष वनस्पतियों के उन्मूलन के कारण भूमि अपनी उर्वरता गँवाती जा रही है तथा मरुस्थल बढ़ते जा रहे हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि सृष्टि के आरम्भ में मरुस्थलों का अस्तित्व नहीं था । प्रकृति हरीतिमा की सुषमा से दुल्हन की भाँति सजी हुई थी जिसे मनुष्य के अदूरदर्शी प्रयासों ने नष्ट कर डाला । मरुस्थल प्रकृति के आक्रोश का प्रतिफल है जिसे मानवीय दुष्कृत्यों ने ही आमंत्रित किया है । पुरातत्ववेत्ताओं को सहारा के दक्षिण में लीबिया और उत्तर में चाउ क्षेत्र के रेगिस्तानी प्रदेश में ऐसे अनेकों प्रमाण मिले हैं जो यह बताते हैं कि किसी समय वहाँ विकसित जीवों का निवास था । जीव-जन्तु उस वातावरण में ही निवास कर सकते हैं जहाँ आहार एवं निवास योग्य भूमि, जल तथा हरीतिमा की सुविधा हो । विशेषतः बड़ी आकृति के जिराफ, गेंडा, शेर जैसे प्राणी तो ऐसे वातावरण के अभाव में जिन्दा ही नहीं रह सकते । माइक्रोस्कोपिक जीवों, बैक्टीरिया तथा वाइरस की बात अलग है । जिन विशालकाय जीवों के चित्र इन क्षेत्रों में पाये गये हैं उनके आधार पर पुरातत्ववेत्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि वे क्षेत्र कभी हरे-भरे थे । हरियाली के विलुप्त होते ही वे मरुभूमि में बदलने लगे । चाउ कुछ समय पूर्व फ्रांस के चंगुल से आजाद हुआ है तथा अफ्रीकी महाद्वीप में भूमध्य रेखा के निकट स्थित है । उसकी राजधानी फोर्टलैमी चार दशकों पूर्व हरे-भरे जंगलों से घिरी हुई थी पर अब उसके चारों ओर रेगिस्तान फैला हुआ है । सहारा रेगिस्तान के दक्षिणी किनारे पर स्थित नाइजर प्रदेश में भी कभी हरीतिमा का विस्तार था पर यह क्षेत्र भी अब रेगिस्तान की चपेट में आ गया है । इथोपिया और केन्या के सीमा की निकटवर्ती झील के इर्द-गिर्द घास एवं वृक्षों का मैदान था, अब रेगिस्तान में परिवर्तित हो गया है ।

रेगिस्तानी क्षेत्र के उद्भव एवं विस्तार का कारण स्पष्ट करते हुए प्रख्यात इकोलॉजिस्ट जॉन लियोनार्ड क्लाउडस्ली टामसन तथा जर्मन इकोलॉजिस्ट प्रो० हाइनरिश वाल्टर का कहना है कि वर्षा के स्रोत वृक्ष वनस्पतियाँ हैं उनकी कमी हो जाने से वर्षा कम होती है । जिन क्षेत्रों में १० इंच से भी कम वर्षा होती है वहाँ की भूमि मरुस्थल में बदलने लगती है । हरीतिमा का अभाव उस क्षेत्र के समूचे पर्यावरण चक्र को प्रभावित करता है । आस्ट्रेलिया के परिस्थितिविज्ञ अल्फोन्स ग्रैवियल ने ईरानी रेगिस्तान की जाँच-पड़ताल करने पर यह निष्कर्ष निकाला है कि भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्षिण में ३० तथा ३५ अक्षांश रेखाओं के बीच बहने वाली शुष्क हवाएँ ही उस क्षेत्र के रेगिस्तानी फैलाव की प्रमुख कारण हैं। ग्रैविल का मत है कि हवाओं की प्रकृति क्षेत्रीय वाताघरण के अनुसार बनती है । वृक्ष-वनस्पतियों के अभाव के कारण ही ऐसी शुष्क हवाएँ बहती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रकाशित हाल की एक रिपोर्टानुसार सहारा रेगिस्तान का फैलाव अब तीव्र गति से हो रहा है । विभिन्न दिशाओं में इसकी गति दो किलो मीटर से लेकर दस किलोमीटर तक है । अनुमानतः इस फैलाव से प्रतिवर्ष दस लाख वर्ग किलोमीटर कृषि योग्य भूमि रेगिस्तान की चपेट में आ रही है । विश्व के अन्य रेगिस्तानी क्षेत्रों का विस्तार भी तेजी से हो रहा है । रूस के दक्षिण-पश्चिम में स्थित तुर्किस्तान, आस्ट्रेलिया का रेगिस्तान, अरेबियन रेगिस्तान, अर्जेन्टाइना का पोटागोनियन रेगिस्तान, दक्षिण अफ्रीका का कालाहारी रेगिस्तान, पश्चिम चीन के सिक्यांग प्रांत में फैला टकलामकन रेगिस्तान, चीली और पेरू का अटाकामा पैरूवियन रेगिस्तान, अमेरिका के दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्र में विस्तृत रेगिस्तान, भारत-पाक का थार रेगिस्तान आदि का भी विस्तार होना एक गम्भीर संकट के रूप में मनुष्य जाति के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है ।

पर्यावरण विशेषज्ञ प्रो० गेव्रियन का निष्कर्ष है कि हरीतिमा को अन्धाधुन्ध नष्ट करने से उपजाऊ भूमि भी बंजर बन जाती है । यही बंजर स्थान धीरे-धीरे रेगिस्तान में बदल जाते हैं । ऐसे स्थानों में वनस्पतियाँ भी नहीं उगतीं तथा जलवायु में ऐसा परिवर्तन होता है कि मरुक्षेत्र का विस्तार होता जाता है । प्राप्त आँकड़ों के अनुसार भारत में थार का रेगिस्तान लगभग १,८२,००० वर्ग मील में फैला हुआ है । वृक्ष-वनस्पतियों की अन्धाधुन्ध कटाई के कारण भारत में प्रतिवर्ष एक प्रतिशत कृषि योग्य भूमि रेगिस्तान में बदल जाती है । ऐसी सम्भावना है कि यदि क्रम इसी प्रकार चलता रहा तो भारत की उपजाऊ भूमि का एक बड़ा भाग कुछ ही वर्षों में गवाँ देना पड़ेगा। जो देश के रेगिस्तानी क्षेत्र हैं उनका भी विस्तार हो रहा है । पश्चिमी अरावली की पहाड़ियाँ, सौराष्ट्र, उत्तरी गुजरात, पंजाब और पश्चिमी तथा उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र बढ़ रहे हैं । राजस्थान, हरियाणा तथा दिल्ली की उपजाऊ भूमि का एक बड़ा हिस्सा पिछले कुछ वर्षों में रेगिस्तान की चपेट में आ गया है । हरियाणा सीमा के निकट नजफगढ़ की १०० किमी० कृषि-योग्य भूमि रेगिस्तान में बदल गयी है तथा एक बड़े क्षेत्र के अभी भी प्रभावित होने की सम्भावना है ।

सुप्रसिद्ध इकोलॉजिस्ट टामडेल और वर्नन गिलकार्टर 'टॉप सॉइल एण्ड सिविलाइजेशन' पुस्तक में मनुष्य की उच्छृंखल प्रवृत्ति पर आक्रोश व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि "मनुष्य सभ्य हो या बर्बर, प्रकृति की संतान है, उसका स्वामी नहीं । यदि उसे सभ्यता को जीवित रखना है तो प्रकृति के अनुरूप चलना होगा । पिछले दिनों मनुष्य ने प्रकृति के नियमों को बुरी तरह तोड़ा-मरोड़ा है । सभ्य कहा जाने वाला मानव पृथ्वी के एक छोर से चलकर दूसरे छोर पर पहुँच गया है पर जहाँ से भी गुजरा वहीं भूमि मरुस्थल हो गयी. जहाँ भी वह लम्बे समय तक रहा वहाँ की भूमि बर्बाद कर दी । सम्भवतः यही कारण रहा होगा कि प्रगामी सभ्यताएँ स्थान परिवर्तन करती रही हैं ।"

अब तक की गई भूल का सुधार करना विचारशीलता का तकाजा है । भूमिशास्त्रियों का मत है कि रेगिस्तानों के बढ़ाव को रोकने में हरीतिमा की वृद्धि विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो सकती है । वृक्ष-वनस्पतियों में जलवायु तथा वातावरण की प्रकृति को बदलने तक की सामर्थ्य है । इस प्रयास से न केवल मरुभूमि के विस्तार को रोका जाना सम्भव होगा वरन् रेगिस्तान के रूप में मौजूद एक विशाल भू-भाग की प्रकृति भी बदली जा सकेगी। सोवियत संघ में मरुस्थल का क्षेत्र लगभग ३० करोड़ हेक्टर में फैला हुआ है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के सहयोग से वृक्षारोपण की व्यापक योजना आरम्भ की गयी है । लाखों एकड़ भूमि को जो कभी रेगिस्तान था अब तक कृषि-योग्य भूमि में बदला जा सका है ।

सोवियत रूस के अनुमान से यह सिद्ध होता है कि कुशल और वैज्ञानिक ढंग से योजनाबद्ध प्रयास किया जाय तो मरुस्थल भी राष्ट्रीय अर्थ तंत्र के लिए अनेकों उपयोगी प्राकृतिक संसाधनों के स्रोत बन सकते हैं । सोवियत मध्य एशिया और कजाखस्तान का क्षेत्र प्राणियों के जीवित रहने योग्य नहीं था पर उस क्षेत्र में अथक् प्रयत्न किया गया । सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों ही तन्त्रों का योगदान मिला । उल्लेखनीय है कि कम्युनिस्ट रूस में श्रमदान की परम्परा को देशभक्ति तथा राष्ट्रधर्म का प्रतीक माना गया है । वहाँ शनिवारीय श्रमदान की पुनीत परम्परा है । हर व्यक्ति स्वेच्छा से शनिवार को बिना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पारिश्रमिक लिए राष्ट्र के लिए श्रम करता है । उस श्रम से प्राप्त होने वाले धन का उपयोग देश एवं समाज के विविध विकास कार्यों में किया जाता है ।

मरुस्थलों को कृषि-योग्य भूमि में परिवर्तित करने की योजना जब सामने आयी तो अधिकांश व्यक्तियों के श्रम का समुचित योगदान मिला । सचमुच ही जो कार्य सरकार अपने एकाकी बलबूते भी नहीं कर सकती है उसे जनशक्ति का सम्मिलित सहयोग मिल जाने पर आसानी से पूरा किया जा सकता है, इस सत्य को वहाँ प्रत्यक्ष देखा गया। सरकार ने धन एवं यांत्रिक साधन जुटाए । साथ में विपुल जनशक्ति का सहयोग मिल जाने से सफलता का मार्ग प्रशस्त होता चला गया । हरीतिमा विस्तार का आरम्भिक चरण रेगिस्तानी इलाकों में चरागाहों आदि का विस्तार करने के रूप में पूरा किया गया । अब उस क्षेत्र में एक करोड़ पचास लाख मवेशी, पाँच करोड़ बकरियाँ तथा ३० लाख घोड़े पल रहे हैं । दस लाख हेक्टर क्षेत्र को अब तक कृषि के योग्य बनाया जा सका है । विकसित रेगिस्तानी इलाके में प्रतिवर्ष १५ लाख टन कपास, ५ लाख टन चावल, ३ लाख ३० हजार टन मक्का, ७ लाख ७० हजार टन दूध तथा लाखों टन साग-सब्जी और फल का उत्पादन हो रहा है ।

जिन विशेषज्ञों ने रूस की मरुस्थलीय प्रकृति को बदलने में हाथ बँटाया उनका कहना है कि रेगिस्तान को रोककर मरुभूमि को कृषि-योग्य बनाने में लगभग तीन या चार साल लगते हैं । इस अवधि में आर्थिक दृष्टि से कुछ भी लाभ नहीं होता है पर बाद में लाभ ही लाभ है । रेगिस्तानी प्रदेश में खनिज एवं तेल सम्पदा के कितने ही भण्डार उन्हें इस प्रयास में अनायास ही हाथ लगे हैं। रूस के रेगिस्तानों से अब नयी सभ्यता जन्म ले रही है, कितने ही नगर वहाँ हाल में ही बसाये जा चुके हैं आधुनिक परमाणु शक्ति चालित आसवन यंत्रों द्वारा बालू की तह से मीठा पानी निकालने की पद्धति भी विकसित करली गयी है । कुछ समय पूर्व वहाँ पानी सुदूर क्षेत्रों से पीने के लिए मँगाना पड़ता था जो अत्यन्त खर्चीला था, पर अब जो पानी नयी विधि द्वारा उपलब्ध हुआ है वह ९० प्रतिशत दूसरे स्थानों से लाये जाने वाले पानी से सस्ता है ।

उल्लेखनीय है कि सौर ऊर्जा का सबसे अधिक भण्डार मरुभूमि में होता है, वैज्ञानिकों एवं टैक्नीशियनों के सहयोग से विपुल परिमाण में सतत् प्राप्त होने वाली सौर ऊर्जा के व्यापक स्तर पर उपयोग का कार्य भी आरम्भ कर दिया गया है । ऐसा इसलिए भी किया जा रहा है ताकि ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ति के लिए वनों का दोहन फिर न करना पड़े जिसके कारण रेगिस्तान की विभीषिका प्रस्तुत होती है ।

इस तरह के प्रेरणास्पद प्रयास अपने देश में भी किये जा सकते हैं । लाखों वर्ग मील के क्षेत्र में रेगिस्तान अपने देश में फैला हुआ है । हरीतिमा के विस्तार से यदि उसे कृषि-योग्य बनाया जा सके तो करोड़ों व्यक्तियों के लिए खाद्यान्न का उत्पादन सम्भव है । देश के विकास के लिए इस सामान्य किन्तु असामान्य परिणामदायी प्रयास में हर व्यक्ति का सहयोग अपेक्षित है ।

वृक्ष न रहेंगे तो मनुष्य भी न रहेगा

कुछ समय पूर्व इण्डोनेशिया में यूनेस्को के तत्वावधान में १५० वन विशेषज्ञों की एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी हुई थी, जिसमें विश्व की घटती हुई वन सम्पदा पर चिन्ता प्रकट की गई थी । आमतौर से लोग वृक्षों का महत्त्व नहीं समझते । लकड़ी का लोभ और खेती के लिए अधिक जगह मिलने के लालच में पेड़ों को काटते चले जाते है, वे यह भूल जाते है कि इन तुच्छ लाभों की तुलना में वृक्ष विनाश से होने वाली हानि कितनी अधिक भयंकर है । उपर्युक्त प्री-पैसिफिक साइन्स काँफ्रेंस ने संसार को चेतावनी दी कि यदि वृक्ष सम्पदा विनाश का वर्तमान क्रम चलता रहा तो उसके भयानक परिणाम भुगतने पडेंगे ।

उपर्युक्त गोष्ठी में जापान, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, नीदरलैण्ड, भारत आदि २० देशों के वन विज्ञानी उपस्थित थे । गोष्ठी में कनाडा के प्रतिनिधि डॉ० व्लादीमीर क्रजीना ने कहा—मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता सांस लेने के लिए शुद्ध वायु मिलना है । वृक्ष हमारी इस आवश्यकता को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करते हैं । संसार में बढ़ते हुए वायु प्रदूषण का समाधान करने के लिए वृक्षों की रक्षा की जानी चाहिए । यदि हम वन सम्पदा को गँवा बैठेंगे तो फिर शुद्ध सांस का अभाव इतना जटिल हो जायेगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि उसका समाधान अन्य किसी उपाय से सम्भव न हो सकेगा ।''

अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने भी जो विचार व्यक्त किये उनसे स्पष्ट था कि वृक्ष एवं अभिवर्धन का प्रश्न उतना उपेक्षणीय नहीं है जितना कि उसे समझा जा रहा है । उसे पशु पालन के स्तर पर रखा जाना चाहिए । सच तो यह है कि इससे भी अधिक महत्त्व उसे दिया जाना चाहिए । पशुओं को गँवाकर उनके द्वारा मिलने वाले श्रम, दूध, मांस, चमड़े से एवं गोबर से वंचित होना पड़ता है । वृक्षों को गँवाने की हानि उनसे भी अधिक है। वायु शोधन, वर्षा का सन्तुलन और पत्तों से मिलने वाली खाद, धरती के कटाव का बचाव, कीड़े खाकर फसल की रक्षा करने वाले पक्षियों के आश्रय के अभाव में सफाया आदि कितने ही ऐसे संकट हैं जो वृक्षों के घटने के साथ-साथ बढ़ते ही चले जायेंगे ।

पिछले दिनों कल-कारखानों की वृद्धि को विकास का आधार माना जाता रहा है । खाद्य उत्पादन के लिए कृषि तथा सिंचाई पर भी जोर दिया जाता रहा है । बहुत हुआ तो यातायात के साधनों को बढ़ाने की बात भी आर्थिक प्रगति के लिए जोड़ दी गई । वन सम्पदा की महत्ता समझने की ओर जितना ध्यान देना आवश्यक था उतना दिया ही नहीं । सच तो यह है वनों को जमीन घेरने वाला माना जाता रहा और उन्हें काटकर कृषि करने की बात सोची जाती रही । जलाऊ लकड़ी तथा इमारती आवश्यकता के लिए भी वृक्षों को अन्धाधुन्ध काटा जाता रहा और उनके स्थान पर नये वृक्ष लगाने की ओर उपेक्षा बरती जाती रही । आज हम वन सम्पदा की दृष्टि से निर्धन होते चले जा रहे हैं और उसके कितने ही परोक्ष दुष्परिणामों को प्रत्यक्ष हानि के रूप में सामने खड़ा देख रहे हैं ।

'सहारा कॉन्क्वेस्ट' ग्रन्थ के लेखक सेन्टवार्व वेकर ने सहारा रेगिस्तान की २० लाख वर्ग मील भूमि के सम्बन्ध में लम्बा और गहरा सर्वेक्षण करके लिखा है— यह क्षेत्र किसी समय बहुत ही हरा-भरा था, पर लोगों ने नासमझी से उसे उजाड़ दिया । इससे क्रुद्ध हुई प्रकृति ने पूरा प्रतिशोध चुकाया । तेज हवा, सूर्य की सीधी धूप और पाले ने अच्छी खासी उपजाऊ मिट्टी को रेत बना दिया । तेज हवाएँ उस धूल को भी इधर से उधर उड़ाने लगीं, सिर्फ ऊसर और पथरीली जमीन ही टिकी हुई है । यह रेगिस्तानी विशाल भूखण्ड अब निकटवर्ती हरी-भरी जमीन को भी महासर्प की तरह निगलता चला जा रहा है । हर साल तीस वर्ग मील हरी-भरी जमीन उस रेगिस्तान की चपेट में आकर सदासर्वदा के लिए मृतक बन जाती है ।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् एक बार अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट हवाई जहाज से मिस्र की भूमि से गुजरे, उन्होंने लेबनान के इतिहास प्रसिद्ध सिडार वृक्षों के वन्य प्रदेश की बड़ी प्रशंसा पढ़ी थी । पर जब उन्होंने नीचे झाँक कर देखा कि वहाँ नंगे पहाड़ खड़े हैं और जहाँ-तहाँ दस बीस वृक्ष दीख रहे हैं, तब उन्हें इसका बड़ा दुःख हुआ । संसार में अन्यत्र भी ऐसी ही मूर्खता बरती जा रही है, इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करके उन्हें और भी अधिक वेदना हुई, उनके आदेश पर राष्ट्र संघ पर अमेरिकी प्रतिनिधियों ने दबाव डाला कि विश्व खाद्य और कृषि संगठन में वन सम्पदा के संरक्षण को भी महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए । वैसा हुआ भी । राष्ट्र संघ के तत्वावधान में संसार में वन सम्पदा बढ़ाने के लिए जो प्रयत्न चल रहे हैं उन्हीं के अन्तर्गत एक बड़ी आर्थिक सहायता देकर लेबनान में नये सिरे से सिडार वन लगाये गये हैं और हजारों एकड़ जमीन फिर से हरी-भरी बनाई गई है । ऐसे ही प्रयास अन्यत्र भी हुए हैं ।

इस्राइल में हरा-भरा क्षेत्र एक-तिहाई और सूखा रेगिस्तानी दो-तिहाई है । उन लोगों ने इस सूखे भू-खण्ड को हरा-भरा बनाने का संकल्प किया है और इन दिनों इस दिशा में अथक् परिश्रम किया जा रहा है । पिछले दिनों ही १० करोड़ नये पौधे उन लोगों ने लगाये हैं ।

आइसलैण्ड वाले बहुत दिनों से अपनी वन सम्पदा उजाड़ते चले आ रहे थे । फलस्वरूप वे अपनी उपजाऊ भूमि से हाथ धो बैठे । सन् १९४६ के बाद उनकी आँखें खुलीं और योजनाबद्ध रूप से २० लाख नये पेड़ लगाये। टस्मानिया का भी यही हाल हुआ । उन लोगों ने वृक्ष सम्पदा गँवाई, फलस्वरूप रेतीली आँधियों का सर्वनाशी सिलसिला आरम्भ हो गया । घास-पात तक को उनने अपने पेट में निगल लिया । जब जीवन-मरण का सवाल पैदा हुआ तो उन्होंने ऊँचे चीड़ और देवदार के पेड़ लगाकर रेतीली हवाओं से रोकथाम की है और १,५०० एकड़ जमीन रेगिस्तान के मुँह में से उगलवाई है। स्कॉटलैण्ड में कुल्विन सेन्ड्स नामक छः मील लम्बा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और दो मील चौड़ा एक छोटा-सा रेगिस्तान था । उन लोगों ने इस अजगर का मुँह कुचल कर रख दिया है और अब वहाँ हरे-भरे उद्यान लहलहा रहे हैं । लीबिया ने अपने रेगिस्तानों को छोटी झाड़ियों से पाट देने का निश्चय किया है और वे उस प्रयास में भली प्रकार सफल हो रहे हैं । आस्ट्रेलिया ने अपने ७ इंच जितनी स्वल्प वर्षा वाले क्षेत्र में संसार भर से ८३ जाति के ऐसे पौधे मँगाकर वहाँ रोपे हैं जो सूखी आवहवा में भी पनप सकते हैं । आग की तरह तपने वाले बूमेटा रेगिस्तान का एक बड़ा भाग अब वृक्षारोपण के अभिनव प्रयासों से हरा-भरा बनाया जा चुका है । उस क्षेत्र के एक किसान डेस्मांड फाइलिस ने अपने एकाकी प्रयत्न से ६,००० वृक्ष लगाये हैं जो अब २० फुट से भी ऊँचे हो गये हैं । इन वृक्षों ने उस क्षेत्र की भयंकर खुश्की को मनुष्यों और पशुओं के रहने योग्य बना दिया है ।

मोरक्को ने अपनी कुम्भकर्णी नींद त्यागकर अपनी नष्ट होती वन सम्पदा को सम्भाला है । इन्हीं दिनों उन लोगों ने ६५ हजार जैतून के, २,७०० बादाम के और १३,१०० सदाबहार के बड़े वृक्ष लगाये हैं । इस कार्य के लिए उसे राष्ट्र संघ से भी अनुदान मिला है ।

चीन अपनी उत्तरी-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित रखने के लिए फ्रांस की प्रसिद्ध लौह प्राचीर की तरह वृक्षों की हरी दीवार खड़ी कर रहा है । यह दीवार ६,००० मील लम्बी और कई मील चौड़ी होगी । वहाँ बंजर प्रदेशों को वृक्षों से पाट देने का कार्यक्रम चल रहा है ।

अब संसार का हर देश समझ गया है कि मनुष्य जीवन के लिए पशु सम्पदा से भी बढ़कर वन सम्पदा का महत्त्व है, इसलिए उसे राष्ट्रीय सम्पत्ति में उच्च स्थान दिया जा रहा है और इसे बढ़ाने के प्रयास को खाद्य उत्पादन स्तर का महत्त्व दिया जा रहा है ।

स्कॉटलैण्ड के वनस्पति विज्ञानी रॉबर्ट चेम्बर्स ने लिखा है—वन नष्ट होंगे तो पानी का अकाल पड़ेगा । भूमि की उर्वरा शक्ति घटेगी और फसलों की पैदावार कम होती चलेगी । पशु नष्ट होंगे । पक्षी घटेंगे और मछली प्राप्त करना कठिन हो जायेगा । वन विनाश का अभिशाप जिन प्राँच पुराने प्रेतों की भयंकर विभीषिका बनाकर सामने खड़ा कर देगा वे हैं बाढ़, सूखा, गर्मी, अकाल और बीमारी । हम जाने और अनजाने में वन सम्पदा नष्ट करते हैं और उससे जो पाते हैं उसकी तुलना में कहीं अधिक गँवाते हैं ।

धर्मशास्त्रों में वट, पीपल, आंवला आदि वृक्षों को देव संज्ञा में गिना गया है । उनके प्रति किसी समय कितनी गहरी श्रद्धा रही है इसका परिचय इस बात से मिलता है कि अभी भी वृक्षों के साथ लड़कियों का विवाह होने की प्रथा जहाँ-तहाँ पाई जाती है ।

तिरहुत में मंगली लड़की का विवाह पीपल के पेड़ के साथ कर दिया जाता है ताकि नक्षत्र दोष का अनष्टि पीपल पर पड़े और मनुष्य वर को किसी विपत्ति का सामना न करना पड़े ।

आन्ध्र के कुडप वंशी ग्रामीणों में कन्या का विवाह बारह वर्ष तक कर देने का रिवाज था, पर यदि किसी कारणवश विवाह न हो सका तो किसी फलदार पेड़ से उसका विवाह कर देते हैं और उसे सुहाग के सभी प्रतीक धारण करा देते हैं । इसके पश्चात् उसका 'पुनर्विवाह' किसी भी आयु में हो सकता है । यदि विवाह न हो तो भी उसे सुहागिन के सभी सामाजिक अधिकार मिल जाते हैं और विरादरी के लोग विवाह न होने का लांछन नहीं लगाते ।

नेपाल की नेवार जाति के लोग अपनी लड़कियों का विवाह विल्व वृक्ष के साथ करते हैं । इसके पश्चात् जब किसी पुरुष के साथ विवाह होता है तो वह उपपति कहलाता है । उपपति को कोई स्त्री कभी भी बहिष्कृत कर देती है, उसे भृत्य जितने ही अधिकार प्राप्त होते हैं ।

हिसार जिले की घुमकूड बावरिया जाति में और सरगुजा के भीलों में यह प्रथा है कि विवाह की अनिच्छुक लड़कियों का विवाह पीपल के वृक्ष से कर देते हैं और यह मान लेते हैं कि उसका कुमारी रहने का 'दोष' निपट गया ।

हरियाली को मनुष्य जीवन सहचरी का स्थान मिलना चाहिए और उसके परिपोषण के लिए प्रत्येक नागरिक में व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी उत्पन्न की जानी चाहिए।

महाकवि अलेग्जेण्डर स्मिथ प्रकृति को असीम प्यार करते थे और विचारशील लोगों को सम्बोधन करके कहते थे—अपनी स्मृति पीछे के लिए छोड़ जाना चाहते हो तो भवन बनाने और पदक प्राप्त करने की अपेक्षा वृक्ष लगाने पर ध्यान दो, वे इन दोनों की अपेक्षा अधिक चिरस्थायी होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसार में सबसे पुराना वट वृक्ष ताइवान में ढूँढ़ निकाला गया है । ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर अब उसकी आयु ४,१२८ वर्ष है । वह ४८ मीटर ऊँचा है । तने की मोटाई का व्यास ४० फीट से अधिक है । चिजायी प्रान्त के मिएन युएह ग्राम के पास की पहाड़ी पर यह उगा हुआ है । वहाँ के निवासियों ने उस महावृक्ष का नाम 'चेनी पौरिस' रखा है ।

यह वृक्ष वृद्ध होने पर भी अभी सैकड़ों वर्षों तक मजे में अपना अस्तित्व बनाये रहने योग्य सुदृढ़ है ।

इससे अधिक सस्ता, अच्छा, ऊँचा, चिरस्थायी एवं अतीव उपयोगी स्मारक और क्या हो सकता है । मनुष्य अपना नाम चाहने की दृष्टि से ही सही वृक्षारोपण को महत्त्व दे तो भी उससे बहुत हित साधन हो सकता है। बिहार के हजारीबाग जिले का नामकरण इसी आधार पर हुआ है कि उस क्षेत्र के हजारी किसान ने अनवरत श्रम करके उस क्षेत्र में हजार बाग लगवाने में सफलता प्राप्त की थी ।

वृक्ष मनुष्य परिवार के ही अंग हैं । वे हमें प्राणवायु प्रदान करके जीवित रखते हैं । इतने अधिक मार्गों से हमारी सहायता करते हैं जिनका मूल्यांकन करना कठिन है। यह तथ्य स्मरण रखने योग्य है कि यदि वृक्ष न रहेंगे तो मनुष्य का अस्तित्व भी इस पृथ्वी पर शेष न रहेगा।

यंत्र मानवों की गुलामी के लिए तैयार रहें

विज्ञान ने मनुष्य को अगणित सुविधा-साधनों से सम्पन्न बनाया है । पूर्वकाल में जीवन जितना जटिल था, उतनी जटिलताएँ अब नहीं रहीं और वर्षों में सम्पन्न होने वाले काम अब मिनटों, सैकिण्डों में होने लगे हैं। यात्रा, यातायात, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्पर्क और ऐसे ही अन्यान्य क्षेत्रों में विज्ञान ने मनुष्य को ऐसे-ऐसे अवदान दिए हैं कि उसकी दुनिया सिमट कर न केवल एक मुहल्ले जैसी बन गई है, बल्कि जिन सुविधाओं की पहले कल्पना भर की जाती थी, वे अब सत्य साकार होने लगी है ।

यान्त्रिक प्रगति ने मनुष्य जीवन की जटिलता को हल किया है और उसके श्रम को सरल बनाया है । प्रगति का यह एक पहलू है । इसका एक दूसरा पहलू भी है । पहला पक्ष जितना उज्ज्वल है, दूसरा पक्ष उतना ही अन्धकारपूर्ण है । दूसरा पहलू यह है कि मशीनें निरन्तर मनुष्य का श्रम छीनती जा रही हैं और एक तरह से मनुष्य को बेकार बनाती चली जा रही हैं । इसका एक छोटा-सा उदाहरण तो यही है कि अब से पच्चीस-तीस साल पहले लोग दो-चार मील की यात्रा यों ही पैदल चलते हुए ही पूरी कर लेते थे । वाहनों की सुविधा जब सरलता से उपलब्ध होने लगी तो मनुष्य चलने के मामलों में इतना आलसी होता गया कि अब एकाध किलोमीटर दूर जाना हो तो भी रिक्शा, ताँगा, बस या स्कूटर का इन्तजार किया जाता है ।

पिछले दिनों सुविधा साधनों की श्रृंखला में एक और कड़ी जुड़ी है, वह है यन्त्र-मानव की । अब तक कम्प्यूटर से हिसाब-किताब का काम लिया जाता था, लिखने-पढ़ने के लिए भी विविध उपकरण तैयार किये जा चुके हैं, परन्तु जब से यन्त्र-मानव का निर्माण हुआ है तब से मानव सभ्यता के भविष्य को लेकर अनेक प्रश्न चिन्ह उठाये जाने लगे हैं । प्रसिद्ध अँग्रेज समाजशास्त्री पी० क्लिएटर ने तो इन यन्त्र-मानवों के विकास को परमाणु संकट से भी अधिक गम्भीर बताया है । नोर्वट वाइनेर ने लिखा है कि परमाणु बमों और आण्विक अस्त्रों के खतरों के प्रति लोगों के जागरूक होने से भी ज्यादा हमें इस बात के लिए सतर्क हो जाना चाहिए कि मनुष्य को बुरी तरह प्रभावित करने वाली एक और शक्ति गम्भीर चुनौती के रूप में सामने प्रस्तुत हो रही है ।

क्या हैं यन्त्र-मानव ? उनसे मनुष्य को किस प्रकार के खतरे है ? यह विचारणीय है । पिछले तीस वर्षों में कम्प्यूटरों का तेजी से विकास हुआ है । इन्हें दिमागी यन्त्र या बौद्धिक मशीनें कहा जा सकता है । इस तकनीक का विकास मुख्य रूप से दूसरे महायुद्ध के बाद से हुआ है और विज्ञान की एक नई शाखा अस्तित्व में आई है । विज्ञान की इस शाखा को 'साइबरनेटिक्स' कहते हैं । इसी शाखा के वैज्ञानिकों ने यन्त्र-मानवों का निर्माण किया है । दूसरे महायुद्ध के समय से ही इस प्रकार के यन्त्र-मानवों की आवश्यकता समझी जाने लगी थी । उस समय सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हार्वर्ड के प्रोफेसर होवोर्ड ऐकेन ने 'मार्कवन' नामक कम्प्यूटर का निर्माण किया था । इस कम्प्यूटर का भार लगभग साढ़े चार मैट्रिक टन था और इसमें करीब ८० यन्त्रों को ८००

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किलोमीटर लम्बे तारों से जोड़ा गया था । यह कम्प्यूटर एक-चौथाई सैकण्ड में असंख्य संख्याओं को जोड़ देता था और इतनी बड़ी संख्या का गुणा छः सैकण्ड में कर देता था ।

आरम्भ में इसी तरह के भारी भरकम कम्प्यूटर बनाये गये । परन्तु पाँचवें और छठवें दशक में न केवल छोटे कम्प्यूटर बना पाना सम्भव हो गया वरन् उनकी कार्यक्षमता भी कई गुना बढ़ गई । पहली बार जो कम्प्यूटर बने वे आकार में बहुत बड़े और संरचना की दृष्टि से अब की अपेक्षा बहुत जटिल थे । अब जबकि उनकी निर्माण विधि में काफी सुधार हुआ है तो पहले की अपेक्षा वे काफी सुविधाजनक और सरल हो गये हैं । अब तो ऐसे कम्प्यूटर बनाये जाने लगे हैं जो एक सैकण्ड में कई अरब संख्याओं का हिसाब-किताब लगा सकते हैं । किन्तु अभी भी यह नहीं कहा जा सकता कि कम्प्यूटरों का विकास चरम स्थिति में पहुँच गया है, इन दिनों इलैक्ट्रॉनिक पद्धति से कम्प्यूटर बनाये जाते हैं । आगे चलकर लेसर किरणों का उपयोग कम्प्यूटरों के निर्माण में किये जाने की बात सोची जा रही है । अब तो ऐसे कम्प्यूटर बनने लगे है, जिन्हें रेडियो और ट्रान्जिस्टर सेट की तरह आसानी से कहीं भी लाया ले जाया जा सकता है । उनकी कार्यक्षमता में भविष्य में और भी अधिक प्रगति होने की सम्भावना है ।

जिन यन्त्र-मानवों की चर्चा ऊपर की पंक्तियों में की गई है वे और कुछ नहीं कम्प्यूटर चालित मशीन ही हैं जो वे सारे काम कर सकेंगे जिन्हें मनुष्य करता है । कम्प्यूटरों का विकास मानव मस्तिष्क के अनुकरण करने की दिशा में होगा । इनमें स्मृति कोशों में अधिक जानकारी संचित रखने में और अधिक तेजी से सोचने में, जटिलतम गणनाएँ करने में समर्थ होंगे । इनमें अब तक विकसित समाज, ज्ञान-विज्ञान का समावेश करना भी सम्भव हो जायेगा । अब तक ऐसे कम्प्यूटर भी अस्तित्व में आ चुके हैं जो एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद कर लेते हैं । पिछले दिनों डेनमार्क में विश्व भर के कम्प्यूटर विशेषज्ञों का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें इन बौद्धिक यन्त्रों की भावी संवेदनाओं के बारे में पूर्वानुमान प्रस्तुत किये गये । विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत पूर्वानुमानों के अनुसार सन् २००० तक सभी प्रमुख उद्योग कम्प्यूटर की नियन्त्रण प्रक्रिया द्वारा संचालित होंगे । बैंकों और दफ्तरों का सारा काम-काज कम्प्यूटरों द्वारा ही सम्पन्न किया जायगा । तब अधिकांश चिकित्सक रोग निदान के लिए भी कम्प्यूटरों की मदद लेंगे । फिर मनुष्य को उतना श्रम करने की आवश्यकता नहीं रहेगी, जितना कि वह आज करता है ।

यन्त्र-मानव जिन्हें 'रोबोट' कहा जाता है, इन्हीं कम्प्यूटरों की अगली कड़ी है । कुछ समय पहले अमेरिका के एक कम्प्यूटर वैज्ञानिक बेनस्कोर ने ऐसा रोबोट बनाया है जो मनुष्यों की तरह काम करता है । बेनस्कोर ने इन यन्त्र-मानवों का नाम अरॉक रखा है । अरॉक क्या-क्या काम कर सकते हैं इसकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है कि वे एक बटन दबाने पर रसोईघर में जाते हैं और वहाँ से खाना उठा-उठा कर एक ट्रे में रखते हैं और उस ट्रे को लेकर धीरे-धीरे खाने की मेज तक जाते हैं । खाने की मेज पर ये रोबोट फिर तरतीब से मेहमानों के लिए खाना सजा देते हैं । यही नहीं, आदेश देने पर वह कूड़ेदान तक जाता है, उसे उठाता है और बाहर जाकर कूड़ा ले जाने वाली गाड़ी में फेंक आता है। यही नहीं, अरॉक कुत्तों को घुमाने, पालतू जानवरों को खिलाने का काम भी करते हैं ।

उल्लेखनीय है कि चन्द्रतल पर पहली बार जो चन्द्रयान उतरा था, मनुष्य के वहाँ पहुँचने से पहले उसका संचालन रोबोट ने ही किया था और मनुष्य के स्थान पर उन्हें ही चन्द्रतल पर उतारा गया था । अब रोबोटों के निर्माण में जिस तेजी से विकास हो रहा है और वे जो-जो काम सम्पन्न कर सकते हैं, उन्हें लेकर तरह-तरह के प्रश्न उठाये जा रहे हैं । कुछ समय पहले एक लेखक कारेल चापेक ने एक पुस्तक लिखी थी 'रोस्सुम के रोबोट' । उस समय तक रोबोटों का निर्माण न हुआ था और न वैसी कल्पना ही की जा रही थी । परन्तु पुस्तक में जो तथ्य दिये गये हैं, रोबोटों की जो विशेषताएँ बताई गई हैं वे अब तैयार किये जा रहे रोबोटों से अक्षरशः मेल खाती है ।

पुस्तक कहानी शैली में लिखी गई है । उसके कथानक का नायक है रोस्सुम नामक वैज्ञानिक जो अपने इन्जीनियर पुत्र की सहायता से यन्त्र-मानवों के निर्माण की एक फैक्टरी खोलता है । ये रोबोट मनुष्यों के समान बुद्धि सम्पन्न, बलशाली और स्मरण शक्ति सम्पन्न होते हैं । दस वर्षों के भीतर रोस्सुम के सार्वभौमिक रोबोट इतना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनाज पैदा कर लेते हैं, इतने कपड़े तैयार कर लेते हैं, सब कुछ इतना अधिक उत्पन्न करते हैं कि चीजें लगभग मुफ्त मिलने लगती हैं । सारा काम यन्त्र-मानव करते हैं और प्रत्येक व्यक्ति चिन्ता मुक्त होकर बेफिक्र जीवन व्यतीत करेगा, किसी को अधिक श्रम नहीं करना पड़ेगा । इन रोबोटों का उत्पादन इतने व्यापक पैमाने पर होने लगेगा कि चारों ओर उन्हीं का साम्राज्य व्याप्त दिखाई देगा । कारेल चापेक ने कल्पना की है कि कुछ ऐसे यन्त्र-मानव भी उत्पन्न हो सकते हैं जिनमें अतिरिक्त मानव विशेषताएँ होंगी, जैसे पीड़ा को अनुभव करने की, सोचने-समझने की । इन विशेषताओं से सम्पन्न यन्त्र-मानव सभी रोबोटों को मनुष्य के विरुद्ध संगठित करेंगे और यह घोषणा करेंगे कि हम मनुष्य से अधिक विकसित हैं, अधिक बलशाली हैं, अधिक बुद्धिमान हैं और मनुष्य हम पर निर्भर हैं ।

रोबोटों में जब यह धारणा उत्पन्न होगी कि वे मनुष्य से अधिक उन्नत हैं और वास्तव में ऐसा होगा भी सही तो मनुष्य उनका गुलाम हो जायगा । मनुष्य की श्रम करने की आदत तो रहेगी नहीं, वह आलसी हो जायगा। इसलिए स्वाभाविक होगा कि वह रोबोटों को नियन्त्रण में नहीं रख सकेगा और अन्ततः रोबोट विद्रोह कर देंगे। वे धरती पर मनुष्य के अस्तित्व को आवश्यक नहीं समझेंगे और अपने निर्माताओं को या तो नष्ट कर डालेंगे या उसे अपना गुलाम बना लेंगे ।

प्रसिद्ध विज्ञान कथा लेखक ब्रियान आलिस ने भी इसी प्रकार की कल्पना की है । उनकी कहानी में सभी आवश्यक काम रोबोटों द्वारा सम्पन्न होते हैं । खेती-बाड़ी का काम भी इन्हीं यन्त्र-मानवों के जिम्मे है । रोबोटों द्वारा मनुष्य के विरुद्ध किये गये विद्रोह के परिणामस्वरूप जमीन उपजाऊ बन गई है । उन्हें खाने-पीने की आवश्यकता तो है नहीं इसलिए वे अनाज पैदा न कर मनुष्य को निराश और बलहीन कर देते हैं ।

यन्त्र-मानवों के सम्बन्ध में ये कल्पनाएँ भले ही अतिरंजित हों किन्तु आज जो अतिरंजना लगती है, वह कल सम्भव हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है । यहाँ तक तो सोचा जाने ही लगा है कि युद्ध में सैनिकों के स्थान पर रोबोटों का ही प्रयोग किया जाये । इन यन्त्र-मानवों में ऐसी कोई विशेषता तो पैदा की ही जायगी जिससे वे सामयिक मोर्चों पर परिस्थितियों के अनुसार निर्णय ले सकें और उन्हें क्रियान्वित कर सकें ।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि यन्त्र-मानव कितने ही विकसित हो जाएँ, अन्ततः वे रहेंगे मनुष्य पर ही निर्भर । आइजक एसिमोव नामक एक अमेरिकी विज्ञान कथा लेखक के अनुसार यह सम्भव नहीं है कि कोई रोबोट किसी आदमी को क्षति पहुँचाये या बिगड़ कर कोई नुकसान करे । ऐसी सम्भावना लगभग नहीं के बराबर है । वे किसी भी स्थिति में अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करेंगे । इतना अवश्य हो सकता है कि वे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करने लगें ।

यदि ऐसा भी सम्भव हो जाए तो भी उससे मनुष्य जाति पर संकट की सम्भावनाएँ कम नहीं होतीं । यह बात और है कि संकट का स्वरूप बदल जाये । वह संकट किस प्रकार का हो सकता है ? इस सम्बन्ध में निश्चित और स्पष्ट कल्पना कुछ नहीं की जा सकती। अणु बम का आविष्कार करते समय किसने यह सोचा होगा कि यह निर्माण मनुष्य जाति के लिए अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर देगा ? यन्त्र-मानवों अथवा रोबोटों का निर्माण भले ही सुविधा साधनों के विकास को दृष्टिगत रखते हुए किया जा रहा हो, परन्तु इस बात की क्या गारण्टी है कि इनका दुरुपयोग नहीं होगा ? उदाहरण के लिए, यन्त्र-मानवों का सैनिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग युद्ध की विभीषिका को बढ़ाने वाला ही सिद्ध होगा । अभी तो युद्ध में लड़ने वाले सैनिक अपने बचाव को ध्यान में रखते हुए आक्रमण और प्रत्याक्रमण करते हैं । यन्त्र-मानव तो अपने मालिक की इच्छाओं, आदेशों का पालन करेंगे । उन्हें न अपने बचाव की चिन्ता होगी और न अपनी सुरक्षा की ।

सैनिक प्रयोजनों के लिए, बलहीनों पर नियन्त्रण रखने के लिए यन्त्र-मानवों का उपयोग अन्ततः थोड़े से लोगों के हाथों में समूची मानव जाति का भविष्य सौंप देंगे । यह तो निश्चित है । जैसी कि कई वैज्ञानिक कल्पना करते हैं, यन्त्र-मानवों में सोचने-समझने की क्षमता विकसित हो सकती है और वे आजाद होकर मनुष्य को अपना दास बना सकते हैं, यह कल्पना यदि साकार हो गई तब तो मनुष्य जाति स्वयं ही अपनी सामूहिक दासता को निमन्त्रित कर रही है, यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य का प्रतिद्वन्द्वी-यंत्र-मानव

अब से कुछ वर्ष पूर्व यंत्र-मानव (रोबोट) केवल वैज्ञानिक चमत्कारों के रूप में प्रदर्शन हेतु बनाये गये थे। उनकी शरीर संरचना न्यूनाधिक मनुष्य शरीर से मिलती-जुलती बनाई गयी थी । हाथ-पैर मनुष्य की तरह ही चलते और काम करने के काम आते थे । आश्चर्य का तो उन्हें निर्माण के आरम्भ काल में भी बहुत माना गया था । पर अब प्रगति पथ पर चलते हुए उनमें वाणी और मस्तिष्क के दो विभाग और जोड़े गये हैं । यंत्र-मानव पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर देता है । इतना ही नहीं, निर्धारित समय पर बताई गई घोषणाएँ करता है । यह कार्य लाउडस्पीकर या टेपरिकॉर्डर की तरह नहीं होता वरन् उस कार्य में कुछ सीमा तक मस्तिष्कीय बौद्धिक समावेश भी रहता है । किस प्रश्न का क्या उत्तर देना चाहिए, किस निर्देश का किस प्रकार पालन करना चाहिए, इसका निर्णय कर लेना उसकी बौद्धिक विशेषता है । यों वह मनुष्य की तरह हर समस्या पर सोचने और हर आज्ञा का पालन करने में तो समर्थ नहीं है, पर जिस प्रयोजन के लिए उसे बनाया गया है और जो काम करने के लिए उसे प्रशिक्षित किया गया है उसे सीमित परिधि में भली प्रकार सम्पन्न कर लेता है ।

आरम्भ में यह वैज्ञानिक चमत्कार था । इसमें अत्यधिक कल-पुर्जे लगाये गये थे । बिजली के तारों की उसके भीतर भरमार थी । लेकिन अब इलेक्ट्रॉनिक्स का उपयोग होने से उसके वजन तथा पेचीदगी में कमी हुई है और वह अपेक्षाकृत अनेकों प्रकार के काम अधिक अच्छी तरह करने लगा है । जो काम मनुष्य के लिए कठिन पड़ते हैं उन्हें करने में यह हिचकता नहीं । जैसे अधिक या न्यून तापमान में या विकिरण भरे क्षेत्र में मनुष्य लगातार बहुत देर काम नहीं कर सकता पर यंत्र-मानव यह काम बिना कठिनाई के कर सकता है । ऑटोमैटिक मशीनों के चलाने में मनुष्य की भूल से बड़ा नुकसान हो सकता है । पर यह आमतौर से वैसी भूलें नहीं करता और जिस पेचीदा मशीन को चलाने में इसे नियुक्त किया गया है, उसे बिना थके लम्बे समय तक चलाता रहता है । जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, उसकी विशेषताओं में अभिवृद्धि हो रही है । कम्प्यूटर स्तर के विभाग इसमें जुड़ जाने से इसमें और बौद्धिक विशेषताएँ भी पैदा हो रही हैं और यह अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी सिद्ध हो रहा है । आरम्भिक दिनों में यह बहुत भारी था और एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने में कठिनाई पड़ती थी पर अब वैसी बात नहीं रही । जिस प्रकार कम्प्यूटर विज्ञान में और उसकी विशेषताओं में वृद्धि हुई है वैसे ही यन्त्र-मानव भी प्रगति कर रहा है ।

निर्माताओं का लक्ष्य इसे मनुष्य के समानान्तर श्रमजीवी बनाने का है । कम्प्यूटर इससे पहले ही बुद्धिजीवी क्षेत्र में मनुष्य से बाजी मारने लगा है । अन्तर इतना ही है कि इन्हें जिस कार्य में लगाया जाता है उसी काम को कर पाते हैं । मनुष्य की तरह बहुमुखी प्रतिभा इनमें नहीं है । एक क्षण एक काम कर रहे थे तो बदली हुई परिस्थितियों का आकलन करते हुए यह भी अपनी गतिविधियों में परिवर्तन कर सकें, ऐसा नहीं हो पाता इसलिए इनके संचालन के लिए किसी मार्गदर्शक बुद्धिजीवी की आवश्यकता अभी भी पड़ती है । शायद इस आवश्यकता का अन्त कभी भी न हो सकेगा । संचालन तो मनुष्य के हाथ में ही रहेगा ।

इतने पर भी यंत्र-मानव की उपयोगिता में कोई संदेह नहीं है । अधिक काम, बिना थके काम, भारी काम कर सकना इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं । एक और भी खास बात है अनुशासन का उल्लंघन न करना और भूख तथा थकान मिटाने के लिए जल्दी सुविधा साधन न माँगना । इस दृष्टि से वह मानव श्रमजीवी की तुलना में श्रेष्ठ भी बैठता है, सुविधाजनक भी और दूरगामी दृष्टि से सस्ता भी ।

अमेरिका और जापान प्रौद्योगिकी विज्ञान में अन्य देशों से आगे हैं इसलिए उन्हें कुशल, अनुशासनप्रिय श्रमिकों की आवश्यकता भी अधिक पड़ती है । इसलिए दोनों ही देशों ने यंत्र-मानवों (रोबोटों) का निर्माण, बड़े पैमाने पर औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, करना आरम्भ कर दिया है । इन दोनों में जापान और भी आगे है । वह न केवल अपनी आवश्यकता पूरी कर रहा है वरन् अमेरिका को बड़ी संख्या में सप्लाई भी कर रहा है ।

बढ़ती हुई स्वचालित औद्योगिकी ने संचालक स्तर के थोड़े से काम करने वालों की आवश्यकता कम कर दी है और छोटी मशीनों के लिए बड़ी संख्या में जो मध्यवर्ती कौशल की आवश्यकता पड़ती थी उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छँटनी कर दी है । जापान के इस कदम का औचित्य भी है कि उसके पास जमीन कम है और बड़े उद्योग बड़ी मात्रा में चलाने की महत्त्वाकांक्षा भी अधिक है । श्रमिकों के निवास में जगह बहुत घिरती है इसलिए वह यंत्र-मानवों को प्रमुखता दे रहा है । पर अन्य देशों की स्थिति अलग है । यदि यंत्र-मानव संचालन के लिए और ऑटोमैटिक बड़ी मशीनें उत्पादन के लिए बड़े परिमाण में बनने लगीं तो बेकारी की समस्या अब की अपेक्षा कई गुनी बढ़ जाएगी। छोटी मशीनों पर या हाथ-पैर से काम करने वाले श्रमिकों को अभी भी बेकारी का कष्ट भुगतना पड़ता है । आगे चलकर यंत्र-मानवों की प्रतिद्वन्द्विता में वह कठिनाई और भी अधिक बढ़ जाएगी और आदमी एक तरह से बेकार हो जाएगा । जानवरों की बेकारी का हल उनका अन्त कर देना आधुनिक परिप्रेक्ष्य में निकाला गया है । बकरा, बैल, भैंस आदि जानवर काम कम करते हैं, जगह ज्यादा घेरते हैं । इसलिए उनका वध तो एक प्रकार से नीति-निर्माताओं की दृष्टि में अनिवार्य हो गया है । मनुष्यों के बारे में अभी यह प्रश्न विचाराधीन है कि जब सारे उद्योग बड़े उद्योगपतियों के हाथ में चले जायेंगे तो कम योग्यता वाले, आए दिन माँगों का झंझट खड़ा करने वाले श्रमिकों का क्या होगा ?

इससे भी बड़ी चिंता की बात यह है कि मनुष्य अपने आचरण की प्रामाणिकता खोता जा रहा है । अपराधों की ओर उसकी प्रवृत्ति बढ़ रही है । हरामखोरी और कामचोरी की आदत बढ़ रही है, साथ-साथ जिस सदाशयता के कारण मनुष्य की गौरव गरिमा स्थिर थी उसे भी गंवाते चलने के कारण मनुष्य के प्रति सहानुभूति भी और कितनी रहेगी। मानवीय श्रम महँगा पड़ने की एक ही समस्या नहीं थी, दूसरी समस्या मनुष्य द्वारा अनाचरण अपनाकर अनेकों विग्रह खड़े करते रहने की भी है । इसका हल निकालने की दृष्टि से भी यंत्र-मानव मनुष्य के प्रतिद्वन्द्वी बन सकते हैं ।

वैज्ञानिक औद्योगिकी मनुष्य के लिए कटौती प्रस्तुत कर रही है । अपराधी प्रवृत्तियाँ अपनाकर वह और भी सिरदर्द सिद्ध हो रहा है । हो सकता है कि अगले दिनों इस क्षेत्र में भी मनुष्य का प्रतिद्वन्द्वी विकसित हो और अभागा मनुष्य अपनी उपयोगिता गंवाकर मारा-मारा फिरे।

यह तो समय बताएगा कि प्रौद्योगिकी की यह यंत्रीकरण नीति कहाँ तक उचित है ? फिर भी यह तथ्य तो भली-भाँति समझा जाना चाहिए कि विकेन्द्रीकृत औद्योगीकरण व छोटे-छोटे उद्योगों का प्रचलन हर दृष्टि से समाजवादी समुदाय के लिए श्रेयस्कर है । पूँजीवादी उद्योग-परक मान्यता जिन राष्ट्रों की है, उन्हें संभवतः यंत्र-मानव निर्माण एक सस्ता सौदा लगे । पर समष्टिगत व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाय तो यह अन्ततः महँगा ही पड़ेगा । सीमित यांत्रिकी व्यवस्थापकों के हाथ में यदि यंत्र-मानवों के माध्यम से संचालन तंत्र सौंप दिया गया तो इसका तानाशाही जैसे दुष्परिणाम दिखाने वाला दुरुपयोग भी होने की संभावना है । इससे अच्छा है, हम मानव की गुणवत्ता ही बढ़ायें उसकी क्षमता व समझदारी को और विकसित करें ।

दुर्बुद्धि के रहते उपलब्धियाँ विघातक

मानवीय बुद्धि कौशल की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है । उसने इस शताब्दी में जो वैज्ञानिक सफलताएँ प्राप्त की हैं उससे अतीत का सारा प्रगति इतिहास पीछे छूट गया है । उपलब्धियों पर दृष्टिपात करते हैं तो प्रतीत होता है कि उपनिषदकारों का यह कथन सच ही है कि मनुष्य से बढ़कर और कुछ नहीं। वह सर्व शक्तिमान का पुत्र होने के कारण स्वयं भी शक्तियों के अजस्र स्रोत का अधिपति है ।

पिछले दिनों अणु शक्ति करतल गत की गई और उसके ध्वंसात्मक एवं रचनात्मक स्वरूपों को समझा गया। अब उससे भी बड़ी शक्ति लेजर किरणों की हाथ लगी है। यों अभी यह शोध बाल्यकाल में से ही गुजर रही है, पर सम्भावना यही दीखती है कि जब प्रौढ़ावस्था तक उसकी जानकारी पहुँचेगी तो विश्व के मूर्धन्य शक्ति स्रोतों में उसी का नाम प्रथम पंक्ति में होगा ।

परमाणु शक्ति की महत्ता बहुत पहले जानी जा चुकी है, पर उसका उपयोग बड़ी स्वल्प मात्रा में ही सम्भव हो सका है । कारण यह है कि परमाणु अपनी किरणें अस्त-व्यस्त ढंग से सभी दिशाओं में बिखेरते रहते हैं । जब इस विकिरण को एक ही दिशा में केन्द्रित किया जाता है तो यह नियन्त्रित विकिरण प्रवाह 'लेजर' कहलाता है। लेजर एक संक्षिप्त शब्द है, उसका पूरा नाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है—'लाइट ऐप्लिफिकेशन बाइ स्टिम्युलेटेड एमिशन ऑफ रेडियेशन।'

अलादीन के जादुई चिराग की चर्चा कथा गाथा की किम्बदन्ती रही है, पर आज लेजर का उपयोग ऐसा अद्भुत है जिसे सचमुच जादुई चिराग ही कह सकते हैं ।

बोस्टन के निकट लेक्सिंगटन की वेधशाला में पिछले दिनों एक प्रयोग प्रो० लुई स्मलिन के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ । लेजर यन्त्र का बटन दबाया गया और लाल रंग की प्रकाश किरणों पतले तीर की तरह छूटीं और अन्तरिक्ष को चीरती हुई १.३ सैकण्ड में चन्द्रमा से जा टकराईं । वहाँ उन्होंने अल्वाटेनियम ज्वालामुखी के क्रेटर के इर्द-गिर्द दो मील क्षेत्र में जगमगाता हुआ प्रकाश उत्पन्न किया । तदुपरान्त वे २.५ लाख मील की यात्रा करके शब्दवेधी बाण की तरह अपने उद्गम स्थान पर लौट आईं । इस प्रकार धरती पर बैठे किसी अन्य ग्रह को प्रकाशित करने का पहला प्रयोग सफल हुआ । अब इन किरणों के विविध-विधि उपयोग ढूँढ़ निकालने के प्रयत्न में ४०० प्रयोगशालाओं में २,००० वैज्ञानिक अकेले अमेरिका में लगे हुए हैं । अमेरिका का प्रधान प्रतिद्वन्द्वी रूस, भी इस दिशा में चुप नहीं बैठा है, उसने भी इस महाशक्ति को हस्तगत करने के लिए अपने वैज्ञानिक साधनों को बड़ी मात्रा में झोंक दिया है ।

युद्ध प्रयोजनों में अगली बार लेजर किरणों की भूमिका सर्वोपरि रहेगी, ऐसा समझा जाता है । जनरल कर्टिस ई० लीयो का विश्वास है अन्तर्महाद्वीपीय प्रक्षेपणास्त्रों के नष्ट करने में लेजर किरणों द्वारा आत्मरक्षा का एक बहुत बड़ा प्रयोजन पूरा किया जा सकेगा । अगले दिनों विमानभेदी तोपें पिछले युग की स्मृतियाँ भर रह जायेंगी । हलकी सी लेजर बन्दूक ही अपने अचूक निशाने से किसी भी विमान को क्षण भर में धराशायी बना दिया करेगी । जिन देशों के पास यह बन्दूकें होंगी उनके लिए हवाई हमले से डरने का कोई कारण न रहेगा । फ्रेंकफोर्ट शस्त्रागार में जो लेजर बन्दूक बनी है उससे एक सैकण्ड में धरती के इस छोर पर बैठकर उस छोर का सही निशाना साध सकना सम्भव हो जायेगा ।

मृत्यु किरण की चर्चा पिछले बहुत वर्षों से विज्ञान जगत में चल रही थी । उसके झंझट भरे प्रयोगों की अब आवश्यकता न रहेगी । लेजर किरणों का ही दूसरा नाम मृत्यु किरण होगा । इस आधार पर कितने ही बड़े क्षेत्र को बात की बात में भस्म करके रख दिया जायेगा, सैनिकों और नागरिकों की तो बात ही क्या, घास-पात तक जल-भुनकर खाक हो जायेंगे । अणु युद्ध से लेजर युद्ध सरल और सस्ता पड़ेगा । उसमें विस्फोट जल विकिरण से होने वाली हानि की भी आशंका कम ही है। अणुबम से उसकी लागत तो कम है ही ।

लेजर किरणों का रचनात्मक उपयोग भी है । उन्हें चिकित्सा तथा दूसरे उपयोगी कार्यों में भी प्रयुक्त किया जा सकेगा । न्यूयार्क के अस्पताल में एक रोगी की आँख की पुतली पर उगा हुआ ट्यूमर लेजर किरण द्वारा एक सैकण्ड के हजारवें भाग में ऑपरेशन करके अलग कर दिया गया । केन्सर सरीखे जो दुष्ट रोग दवा-दारू तथा साधारण उपचार के काबू में नहीं आते लेजर किरणों द्वारा आसानी से ठिकाने लगाये जा सकेंगे ।

अन्तरिक्षीय उड्डयन क्षेत्र में लेजर विज्ञान क्रान्तिकारी परिवर्तन करने जा रहा है । रॉकेटों से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से ऊँचा उछालने में शक्तिशाली ईंधन की और उसे रखने के स्थान की जरूरत पड़ती है; इस प्रयोजन की पूर्ति में ही रॉकेट संरचना का बहुत बड़ा भाग लगा और बना होता है । लेजर किरणें आसानी से राकेट को इच्छित ऊँचाई पर उछाल दिया करेंगी । तब हलके और सस्ते रॉकेटों से काम चल जायगा । ईंधन की आवश्यकता न रहेगी तो उस वाहन में आवश्यक शोध यन्त्रों अथवा प्रयोग यन्त्रों के फिट करने से ही काम चल जायगा । इन अन्तरिक्षीय यानों को बिजली धरती से ही पहुँचाई जा सकेगी । तब उनकी यात्रा न केवल सस्ती ही हो जायेगी वरन् सुरक्षित, सरल और सुखद भी रहेगी। इस विज्ञान का अधिक विकास होने पर वायुयान—खचड़ा गाड़ी जैसे पुरानखण्डी प्रतीत होंगे । इतना तेल, पैट्रोल, इतने विद्युत उपकरण—इतनी कम चाल के इन हवाई जहाजों को लेजर वायुयानों की तुलना में कोई भी पसन्द न करेगा ।

यदि तीसरा महायुद्ध छिड़ा तो परमाणु अस्त्र तो केवल धमकी भर का काम करेंगे । असली मार लेजर किरणों की होगी । वे मृत्यु किरण बनकर जिस क्षेत्र को चाहेंगी देखते-देखते भस्म करके रख देंगी । अणुबम विस्फोट से जो रेडियो-धर्मी धूल उड़ने का संकट रहता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह भी न होगा और घातकता की दृष्टि से वह उससे कहीं आगे भी रहेंगी ।

मानवीय बुद्धि-कौशल और शोधपरक तन्मय एकाग्रता का अद्भुत प्रतिफल है 'लेजर' । इस उपलब्धि के लिए उसे बधाई ही दी जा सकती है । किन्तु साथ ही एक असमंजस भी सामने आ खड़ा होता है कि जिस तरह मानवीय प्रवृत्ति आदर्शों के क्षेत्र में दिन-दिन पतनोन्मुख होती चली जा रही है उसे देखते हुए किसी भी वस्तु, परिस्थिति, उपलब्धि एवं सफलता का सदुपयोग संदिग्ध हो गया है । जो कुछ हाथ लगता है उसी का दुरुपयोग करने में आज की दुर्बुद्धि जुट पड़ती है । चेतना के क्षेत्र में जिस प्रकार वैज्ञानिक आविष्कारों के अभिवर्धन में प्रगति हुई है उसी प्रकार क्या पिछड़े हुए और क्या मूर्धन्य सभी में दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों का गगनचुम्बी उत्पादन, विकास, विस्तार हुआ है ।

दुर्बुद्धि के रहते सम्पदाओं का बढ़ते जाना खतरे से खाली नहीं है । दोनों का संयोग बारूद और चिनगारी के समन्वय जैसा उपद्रव खड़ा कर सकता है । वर्तमान समय में बारूद भी बढ़ रही है, और चिनगारियाँ भी अन्धड़ के साथ उड़ रही हैं आशंका यही रहती है कि आश्चर्यचकित करने वाली वैज्ञानिक उपलब्धियाँ चिरसंचित मानव सभ्यता का अन्त न कर दें । मानवीय अस्तित्व को ही इस धरती पर से समाप्त न कर दें ।

इस असमंजस का हल दो ही प्रकार से हो सकता है कि या तो दुर्बुद्धि रहने तक विघातक साधनों पर पूर्णतया रोक लगादी जाय या फिर दुर्बुद्धि पर तीखे प्रहार करके उसे सद्बुद्धि में परिणत किया जाय ताकि उपलब्धियों का सदुपयोग हो सके और उन्हें सुख-शांति के लिए प्रयुक्त किया जा सके । दूसरा मार्ग ही श्रेयस्कर है ।

क्या अगली पीढ़ी अपाहिजों की होगी ?

औद्योगिक और रेडियो विकिरण से उत्पन्न प्रदूषण की विभीषिकाएँ विगत दो दशकों से बहुचर्चित हुई हैं। समस्त पर्यावरण इनसे प्रभावित हुआ है । असन्तुलन से प्राकृतिक प्रकोपों में भी भारी अभिवृद्धि हुई है । 'इकोलॉजिकल' असन्तुलन की प्रतिक्रियाएँ अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूस्खलन, भूकम्प जैसे प्रकृति विक्षोभों से लेकर शरीरगत और मनःक्षेत्र की अनेकानेक नई बीमारियों के रूप में प्रकट हुई हैं । भौतिक प्रगति की अन्धी और एकाकी दौड़ अपने ही लिए इतनी खतरनाक और महँगी हो सकती है, यह मनुष्य ने पहली बार अनुभव किया है।

प्रदूषण से उत्पन्न संकटों की श्रृंखला में एक सर्वाधिक गम्भीर कड़ी जुड़ी है आनुवांशिक रोगों की । यह सर्वविदित है कि गर्भावस्था में बच्चे के शारीरिक और मस्तिष्कीय कारणों का नव-निर्धारण होता है । शरीर के सभी अवयवों का निर्माण इसी अवधि में होता है । जन्म के बाद तो विकास की प्रक्रिया चलती है निर्माण की नहीं। भ्रूण का विकास ठीक प्रकार हो इसके लिए गर्भिणी के आहार-बिहार एवं अनुकूल वातावरण पर समुचित ध्यान देने का निर्देश सभी चिकित्साशास्त्री देते हैं । क्योंकि अनुकूल और प्रतिकूल वातावरण भ्रूण के विकास में तदनुरूप प्रभाव डालते हैं । इस अवधि में जैसा भी आधार तैयार होगा उसी के अनुरूप भविष्य में शारीरिक और मानसिक गठन होगा । भ्रूणावस्था की रुग्णता जीवन पर्यन्त के लिए अभिशाप छोड़ जाती है ।

इन दिनों औद्योगीकरण और नाभिकीय परीक्षणों से वातावरण में घुलते हुए जहर ने अनेकानेक संकट खड़े किए हैं । शारीरिक और मानसिक आधि-व्याधियों की बाढ़ सी आई है । विश्व के मूर्धन्य चिकित्साशास्त्रियों का मत है कि इस विषाक्तता से सर्वाधिक प्रभावित वे बच्चे हो रहे हैं जो जन्म तो नहीं ले सके हैं पर भ्रूण के रूप में माँ के गर्भ में पल रहे हैं ।

श्रीमती क्रीस्टोफर नारवुड ने एक पुस्तक लिखी है 'एट हाईएस्ट रिस्क' जिसमें उन्होंने अनेकानेक भावी संकटों की ओर संकेत किया है । साथ ही चेतावनी भी दी है कि ''यदि प्रदूषण इसी तरह बढ़ता रहा तो अगली पीढ़ी अपंगों और अपाहिजों की पैदा होगी ।'' उनका कहना है कि इन दिनों विश्व भर में आनुवांशिक गड़बड़ी के कारण गर्भपातों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है । इनमें से यदि किसी प्रकार कुछ भ्रूण गर्भपात के प्रकोपों से बच भी जाते हैं तो वे पूर्ण स्वस्थ और निर्विकार शिशु के रूप में नहीं विकसित हो पाते । किसी न किसी रोग से ग्रसित पैदा होते हैं । उनमें से अधिकांश विकलांग अथवा अपाहिज हो जाते हैं । यदि जन्म के समय विकलांगता के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते तो भी बाद में विकलांग होने की पूरी-पूरी सम्भावना बनी रहती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमेरिकी ड्रग मेडिकल कॉर्पोरेशन के भूतपूर्व मेडिकल डायरेक्टर हेराल्ड गोर्डन ने अपने एक सर्वेक्षण के उपरान्त घोषणा की है कि प्रगतिशीलता के क्षेत्र में अमेरिका जितना आगे है उसी अनुपात में वहाँ प्रदूषण भी बढ़ा है जिसकी चपेट में सबसे अधिक वे मासूम आ रहे है जो गर्भावस्था में हैं । अनुमानतः तीस से लेकर चालीस प्रतिशत बच्चे भ्रूण के रूप में ही दम तोड़ते हैं। जो पैदा होते हैं उनमें से एक-तिहाई शारीरिक अथवा मानसिक स्थायी विकारों से ग्रस्त होते हैं । उन्होंने इसका प्रमुख कारण रेडियो विकिरण से उत्पन्न विषाक्तता को बताया है । गोर्डन का मत है कि वातावरण में घुले विषाक्त एजेण्ट न केवल गर्भस्थ शिशुओं को विकलांग बनाते हैं बल्कि उन पर स्थायी रूप से आनुवांशिक कुप्रभाव छोड़ जाते हैं जो प्रत्यक्ष न दिखाई पड़ते हुए भी विकलांगता से भी अधिक हानिकारक साबित होते हैं ।

जल, वायु और खाद्यान्नों में घुल-मिलकर विषाक्त तत्व शरीर के भीतर पहुँचते हैं और भ्रूण को क्षति पहुँचाते हैं । उत्पन्न होने वाली विकलांगता और आनुवांशिक रोगों का सम्बन्ध प्रदूषणजन्य विषाक्तता से है, इसकी सर्वप्रथम जानकारी जापान की एक घटना से मिली । जापान की मिनीमेटा खाड़ी के निकट रहने वाली महिलाओं से जितने बच्चे पैदा हुए उनमें से अधिकांश अपंग और अपाहिज थे । खोज करने पर मालूम हुआ कि एक कम्पनी मरक्यूरी के कूड़े-कचरे को निकटवर्ती खाड़ी में डाल गई थी । मछलियों ने उसे ग्रहण किया । बाद में गर्भवती महिलाओं ने आहार के रूप में उन मछलियों का सेवन किया । फलतः प्रतिक्रिया पैदा होने वाले बच्चों पर हुई, इससे होने वाली विकलांगता को 'मिनीमेटा डीसिज' नाम दिया गया है ।

एक अमेरिकी सर्वेक्षण के अनुसार प्रदूषण वृद्धि के साथ-साथ विश्व में विकलांगता भी बढ़ी है । प्रगतिशील देशों में इन विकलांग बच्चों का प्रतिशत ४ से लेकर ७ प्रतिशत तक पाया गया है । अन्वेषणकर्ताओं का निष्कर्ष है कि विगत दो दशकों में विकलांगता की दर में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है ।

आनुवांशिक रोगों का बाहुल्य अमेरिका में अन्य देशों की तुलना में अधिक है । पिछले दिनों विशेषज्ञों ने वातावरण की स्थिति जानने के लिए गहन खोज की, जिसके फलस्वरूप चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आये । यह पाया गया कि अमेरिका के शहरी क्षेत्रों में सामान्य की तुलना में वातावरण में रेडियो तरंगे दस से बीस करोड़ गुना सघन पायी गयीं । श्रीमती क्रीस्टोफर का मत है कि वातावरण में घुली रेडियोधर्मिता की विषाक्तता का प्रभाव मासूमों के ऊपर अधिक पड़ता है अपेक्षाकृत वयस्कों के। रेडियो विकिरण माँ के शरीर में पहुँचकर भ्रूण के कोमल तन्तुओं को विनष्ट कर देता है । शरीर और मस्तिष्क की भ्रूणावस्था में क्षतिग्रस्त आनुवांशिक कोशाओं की पूर्ति जन्म धारण करने के बाद भी नहीं हो पाती ।

नाभिकीय परीक्षणों का सिलसिला द्रुतगति से आरम्भ हो जाने से यह संकट और भी बढ़ता ही जा रहा है । इस अदूरदर्शी आवेश की रोकथाम के लिए अविलम्ब कदम उठाया जाना चाहिए । विकिरण की प्रतिक्रियाएँ कितनी भयंकर हो सकती है यह अब किसी से छिपी नहीं है । हिरोशिमा और नागाशाकी पर परमाणु विस्फोट लगभग आधी सदी पूर्व हुआ पर अभी भी वहाँ का वातावरण इस योग्य नहीं है कि स्वस्थ और निरोग रहा जा सके । अभी भी इस वातावरण में रेडियो विकिरण की विषाक्तता बनी हुई है तथा जो बच्चे पैदा होते हैं उनमें से अधिकतर अपंग, अपाहिज और विक्षिप्त होते है ।

भौतिक प्रगति के लिए विशाल स्तर के औद्योगीकरण और शक्ति संचय की प्रतिस्पर्द्धा में चलने वाले परमाणु परीक्षणों की अविलम्ब रोकथाम करने के लिए अब कारगर कदम उठाया जाना चाहिए अन्यथा भस्मासुर की भाँति अपनी ही प्रगति हमें भस्मीभूत करने के लिए चढ़ दौड़ेगी ।

विज्ञान की अंधी दौड़ कहाँ तक उचित ?

वैज्ञानिक उपलब्धियों के सम्बन्ध में वह पक्ष तो सराहनीय है, जिसमें उसने विश्व-वसुधा के लिए साधन-सुविधायें जुटाई हैं, प्रगति-समृद्धि के क्षेत्र में चार चांद लगाये हैं, चिकित्सा के क्षेत्र में अनेकानेक रोगों के निदान ढूँढ़ निकाले हैं, ओपन हार्ट सर्जरी से लेकर मस्तिष्कीय संरचना का विच्छेदन करने में सफलता पाई है। कम समय एवं साधनों में ही अधिक उपयोगी कार्य कर सकने वाले उपकरणों को आविष्कृत कर हतप्रभ कर दिया है। किन्तु इन उपलब्धियों के पीछे हानिकारक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिणामों को यदि छोड़ भी दिया जाय, तो भी एक पक्ष ऐसा है, जो विज्ञान को नासमझ समझने का संकेत देता है । उसके प्रयास अँधेरे में तीर मारने के समान हैं । बुद्धि, मेधा एवं प्रतिभा को उसने भौतिकता से सम्बन्धित मानकर ऐसे टेबलेट एवं रसायन खोज निकाले हैं, जिनके द्वारा बुद्धि बढ़ने, प्रतिभा विकसित होने एवं सुख-शांति मिलने का ढिंढोरा पीट रहा है । किन्तु यह सब कितने निरापद साबित हुए हैं, यह कोई छिपा तथ्य नहीं है ?

पिछले दो वर्षों में अमेरिका के न्यूयार्क, बोस्टन, न्यूजर्सी एवं कैलीफोर्निया जैसे शहरों में रहने वाले लोग और पश्चिमी यूरोप के कुछ देश बड़ी मात्रा में ब्रिटेन, स्विट्जरलैण्ड से स्मार्टपिल की माँग कर रहे हैं । अमेरिकी औषधि एवं खाद्य प्रशासन ने जब इसकी खोज-बीन की तो पता चला कि अवसाद, हृदय रोग और संधिवात् जैसे रोगों के उपचार में दी जाने वाली दवाओं का दुष्प्रभाव (साइडइफेक्ट) मानसिक योग्यता के लिए लाभकारी है। इनका सेवन करने वाले की याददाश्त (स्मरण शक्ति), मानसिक क्षमता और बुद्धिमत्ता निर्धारित समय तक के लिए बढ़ जाती है । तथाकथित सभ्यजन इन दवाओं का सेवन रोगों के निदान के लिए नहीं, अपितु दिमागी क्षमता बढ़ाने के लिए करते हैं । किन्तु क्या सही अर्थों में लोगों की दिमागी क्षमता, स्मरण शक्ति बढ़ जाती है। यदि ऐसा है तो लोग मेधा-प्रतिभा को बढ़ाने के लिए संयम-नियम जनित कष्टसाध्य प्रक्रियाओं को फिर क्यों अपनायेंगे ? -

कैलीफोर्निया में सांताक्रूज स्थित 'बी एण्ड जे' नामक एक कम्पनी ने ७० प्रकार की दवाओं और खाद्य सामग्रियों की सूची जारी की है, जो दिमागी क्षमता, बुद्धिमत्ता और स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली बताई गई हैं । अवसाद एवं निराशा के निदान के लिए प्रयुक्त दवा 'डिप्रेनिल' परीक्षणकर्त्ताओं द्वारा स्मरण शक्तिवर्धक स्वीकारी गयी है। इसी तरह 'एसीटल कारनाइटिन' नामक दवा का आविष्कार अतझीमर रोग के लिए उपयोगी मानी जाती है, जो मस्तिष्क में रक्त संचार बढ़ाती है । ठीक ऐसी ही दावा कैनेडा के चिकित्सक एम. मैथ्यू आरनाल्ड एवं फ्लोरिडा पेन्सकोला के एक चिकित्सक बार्डजीन ने किया है ।

अमेरिका एवं अन्य देशों के विशेषज्ञ इस बात को लेकर अत्यन्त चिंतित हैं, क्योंकि लम्बे समय तक इन औषधियों का सेवन करने वाले स्वाभाविक मस्तिष्कीय क्षमताओं को खोते चले जा रहे हैं । मस्तिष्कीय एवं रक्त संचार प्रक्रिया में तेजी आने से नस-नाड़ियाँ धीरे-धीरे शिथिल पड़ जाती हैं । फलस्वरूप ऐसे तथाकथित बुद्धिमान लोग अपनी स्वाभाविक स्मरण शक्ति को विस्मृत करते जाते हैं । चूहों एवं बन्दरों में प्रयोग करने पर वैज्ञानिकों ने पाया कि इनके मस्तिष्क में विशेष रसायन श्रावित होने के कारण दूसरे चूहों से फुर्तीले एवं अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं किन्तु उनकी प्रवृत्ति दूसरों को नोंचने-खसोटने की होती है । फलतः ये सभी जानवर आक्रामक एवं क्रूर स्वभाव के बन जाते हैं ।

मनुष्य के सम्बन्ध में भी यही बात सत्य दिखाई देती है । तथाकथित स्मार्ट पिल के रूप में प्रयुक्त 'डिप्रेनिल' एवं 'एसीटल कारनाइटीन,' लम्बे समय तक अधिक मात्रा में सेवन करने वाले व्यक्ति के रक्त से रोग प्रतिरोधक शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है, जिसके कारण श्वेत रक्त कणिकायें निष्क्रिय जैसी स्थिति में पहुँच जाती हैं । हीमोग्लोबीन ऑक्सीजन खींचने की प्रक्रिया को सही ढंग से सम्पादित नहीं करता, अतः ऐसे लोग अनेकानेक आधि-व्याधियों से ग्रसित हो जाते हैं ।

इससे मिलती-जुलती मान्यता 'प्लेजर पिल' के रूप में 'अनविण्ड टेबलेट' के बारे में बनती जा रही है । कहा जाता है कि इसके सेवन से लोग अत्यन्त सुखद अनुभूति करने लगते हैं । पश्चिमी देशों में इनके सेवन का प्रचलन भी बढ़ता जा रहा है किन्तु यह आनन्द मात्र कुछ ही मिनटों के लिए होता है । इसके बाद पुनः गोली खाने की आवश्यकता पड़ती है जिसका असर अगले कुछ मिनट तक होता है । अवसादग्रस्त लोगों के लिए यह नशा इतना सुखद होता है, जिससे वंचित वे रहना ही नहीं चाहते, अतः सतत् उन्हें इन गोलियों का सेवन करना पड़ता है । चूहों में जब यह स्थिति एक विद्युत इलेक्ट्रोड को दबा कर उत्पन्न की गई, तो वे खाना-पीना, आराम करना भूल कर इलेक्ट्रोड को दबाने में ही मस्त रहने लगे, जिससे धीरे-धीरे १५ दिनों में ही उनकी मृत्यु हो गई । ठीक ऐसी ही है 'अनविण्ड टेबलेट' जिसका नशा ऐसा छाता है कि भूख, प्यास एवं निद्रा तक सभी गायब हो जाती हैं किन्तु प्रयोक्ता को स्थिति अत्यन्त सुखद जान पड़ती है । वास्तव में यह प्रक्रिया उस कुत्ते के समान है, जो सूखी हड्डियाँ चबाता है, जिसके कारण उसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जबड़ा छिल जाता है और उसका रक्त हड्डी में लगने से वह सोचता है कि रक्त सूखी हड्डी से निकल रहा है । ऐसा ही व्यक्ति भी अनुभव करता है । जीवनी शक्ति चुक जाने से अन्ततः उसकी मृत्यु हो जाती है ।

प्रतिभा, मेधा, स्मरण शक्ति, सुख शांति बाह्य जगत से प्राप्त होने वाली वस्तुयें नहीं हैं । यदि सचमुच इन्हें प्राप्त करना हो, तो अन्तस् में गोता लगाना अति आवश्यक है । आध्यात्मिक जीवन एवं उपासना, साधनात्मक जीवन पक्ष हमारी बुद्धि बढ़ाने, याद करने की क्षमता बढ़ाने के लिए कारगर उपाय है । ध्यान की प्रक्रिया मस्तिष्क में कुछ ऐसे रस स्रावों को उभारती हैं, जिसके कारण प्रभाव सीधा बुद्धि पर पड़ता है । फिर साधक धीरे-धीरे प्रखर बनता चला जाता है । कुछ ध्वन्यात्मक प्रयोग भी मानसिक शक्ति के विकास में सहायक हैं । विभिन्न मंत्रों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि तरंगे मस्तिष्कीय विद्युत तरंगों को उद्दीप्त उत्तेजित कर यही कार्य करती हैं। ब्राह्मी एवं सरस्वती पंचक जैसी अद्भुत वनौषधियाँ भी इस कार्य में सहायक सिद्ध हुई हैं, पर यह सब एक सीमा तक ही अपना प्रभाव दिखा सकती हैं । सम्पूर्ण शक्ति तो अन्दर की वस्तु है । उसे बाह्य उपादानों द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता ।

वैज्ञानिक खोजें यदि ऐसी रचनात्मक क्षेत्र में हो जायें तो सचमुच अध्यात्म एवं विज्ञान की समग्रता से ऐसी चिकित्सा पद्धति विकसित हो जाय जिससे विज्ञान नासमझ न बनकर समझादार कहलाये और वह उपलब्धियाँ दे सके, जिसे पाकर हम निश्चय ही सुख अनुभव करने लगें ।

मानवकृत विभीषिकाओं के मंडराते बादल

प्रगति का अर्थ मात्र उत्पादन बढ़ाने तथा सुविधा साधन अधिक परिमाण में जुटा लेने से नहीं है, वरन् उस दूरदर्शिता से है जो दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखती तथा तदनुरूप व्यवस्था बनाती है । इस कसौटी पर कसकर ही प्रगति का निर्धारण किया जा सकता है । पिछले दिनों औद्योगीकरण की होड़ में इस तथ्य की भारी उपेक्षा हुई। तात्कालिक लाभ ही देखा और सोचा गया । समूचे वातावरण पर उस अदूरदर्शी नीति का क्या प्रभाव पड़ेगा, यह न सोचे जाने का परिणाम प्रदूषण की भारी विषाक्तता के रूप में सामने आया जिसके दुष्प्रभाव से वायु, जल, एवं खाद्यान्नों की जीवनी शक्ति मारी गयी । समूचा पर्यावरण चक्र ही चरमरा उठा । उस विषाक्तता से समस्त जीव समुदाय के घुट-घुट कर मरने जैसे विभीषिका उत्पन्न होने जा रही है ।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के एक दल ने चेतावनी दी है कि "बढ़ते प्रदूषण की रोकथाम की अविलम्ब व्यवस्था न बनायी गयी तो मानव जाति को अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है ।" उनका मत है कि 'हानिरहित समझी जाने वाली कितनी ही गैसों का छिड़काव कीड़ों को मारने आदि के लिए धड़ल्ले से किया जाता है । पर वे उद्योगों से भी कहीं अधिक प्रदूषण पैदा करती हैं । त्वचा कैंसर जैसे रोगों को जन्म देने में उनकी प्रमुख भूमिका होती है । फ्लूरोकार्बन प्रोपेलेण्ट वायुमण्डल की उच्चस्तरीय परतों में पहुँचकर सूर्य से पृथ्वी पर पहुँचने वाले अल्ट्रावायलेट किरणों को रोकने वाली ओजोन रक्षा कवच की परत को विनष्ट कर देता है। यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल एकेडमी में शोधरत वैज्ञानिकों का अभिमत है कि "ओजोन की सतह में पाँच प्रतिशत गिरावट आ जाने से अकेले अमरीका में प्रतिवर्ष ८,००० से अधिक व्यक्ति त्वचा कैन्सर से ग्रस्त हो जाते हैं । उपर्युक्त विजातीय तत्व का प्रयोग यदि इसी प्रकार बढ़ता गया तो सन् २००० तक यह रोग महामारी का रूप ले सकता है ।"

पेट्रोलियम, कोयला के बिना कोई उद्योग नहीं चलता। भारी परिमाण में उनके जलने से इतनी अधिक कार्बन डाईऑक्साइड पैदा होती है कि समस्त वातावरण गरम होता जा रहा है । ऐसा अनुमान है कि वायुमण्डलीय रक्षा कवच के स्ट्रैटोस्फेयर परत का तापमान जिस द्रुतगति से बढ़ रहा है, यदि वह रुका नहीं तो कुछ ही दशकों में इतनी गर्मी बढ़ेगी कि हरीतिमा का दर्शन तक कठिन हो जायेगा । तब समस्त भू-मण्डल का नक्शा ही बदल जायेगा । कुछ वर्षों पूर्व सहारा के दक्षिणी भाग में भयंकर सूखा पड़ा था, लाखों की जानें गयी थीं । अमरीका के पश्चिमी भाग में, भीषण बाढ़ का आना, बांगला देश में आये तूफान में हजारों का काल कवलित होना आदि घटनाएँ, उस प्रदूषण का ही परिणाम हैं जो क्रुद्ध प्रकृति की विभीषिका के रूप में दिखायी पड़ी थीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुप्रसिद्ध इकोलॉजिस्ट रैचल-कार्सल ने 'साइलेंट स्प्रिग' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें लेखक ने पेस्टीसाइड्स डी० डी० टी० जैसे कीटनाशक दवाइयों के उपयोग से होने वाले प्रदूषण तथा उनसे उत्पन्न होने वाली बीमारियों का उल्लेख कर समस्त विश्व को इनके खतरे से बचने की चेतावनी दी है । उनका कहना है कि प्रत्येक जीवधारी का अस्तित्व परस्पर एक-दूसरे से सम्बन्धित तथा स्वस्थ वातावरण पर अवलम्बित है । इसके प्रमाण में उन्होंने मिशीगन के ईस्ट लासिंग शहर का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि एल्म-चिरावेल के पौधों को वीटल नामक कीड़ों से सुरक्षित रखने के लिए पूरे शहर में पौधों पर डी० डी० टी० का छिड़काव कराया गया । शरद काल में इन पौधों की सभी पत्तियों को कीड़ों ने खाया । वंसत आते-आते उन कीड़ों को रॉबिन्स नामक एक जानवर ने अपना शिकार बनाया । फलतः एक सप्ताह के भीतर पूरे शहर में रॉबिन्स मरे पाये गये ।

सारे संसार में कीड़ों, मच्छरों को मारने का अभियान छिड़ा हुआ है । जिन कीटनाशक दवाओं, रसायनों का प्रयोग होता है, उनमें अनेकों प्रकार के घातक विषैले तत्व मौजूद रहते हैं, यही विषैले पदार्थ पानी के साथ घुलकर मिट्टी में अवशोषित हो जाते हैं जो वृक्ष वनस्पतियों की खुराक बनते हैं । उनमें विषैली तह के रूप में एकत्रित रहते हैं । ऐसे पौधों, वनस्पतियों तथा उनके फलों का उपयोग जब मनुष्य करता है तो वही विषाक्तता उसके भीतर भी पहुँच जाती है जिससे प्रायः अधिकांश व्यक्ति अनभिज्ञ रहते हैं । वह विष धीरे-धीरे मनुष्य के स्वास्थ्य की जीवनी-शक्ति की जड़ें खोखली करता है तथा विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देता है ।

कार्सन का कहना है कि ''कीटनाशक दवाइयों का अंधाधुंध प्रयोग अदूरदर्शितापूर्ण है । कीड़ों से वृक्ष-वनस्पतियों तथा फसलों की सुरक्षा के लिए बायलॉजिकल कण्ट्रोल की प्राकृतिक पद्धति प्रयोग होनी चाहिए । फंजाई बैक्टीरिया जैसे कीड़े, जो पौधों के कीड़ों को बिना किसी प्रकार की क्षति पहुँचाये खा जाते हैं, का प्रयोग किया जाना चाहिए । पानी में घुले रसायनों की विषक्तता सुदूर क्षेत्रों को भी कितना अधिक प्रभावित करती है, इसका एक प्रमाण पिछले दिनों मिला । एण्टार्कटिक ध्रुव प्रदेश औद्योगिक क्षेत्रों से सैकड़ों हजारों मील दूर है । पर एक परीक्षण में वहाँ निवास करने वाले भालुओं तथा पेन्गुइन पक्षियों के शरीरों में कीटाणुनाशक ससायनिक तत्वों का बाहुल्य पाया गया ।

प्रदूषण सभ्य मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गयी एक ऐसी विभीषिका है जो सारे विश्व पर इन दिनों मंडरा रही है। कुछ वर्षों पूर्व जर्मनी के औद्योगिक नगर संहर एरिया से निकलने वाली प्रदूषित गैसों से नार्वे की पर्वत चोटियों पर बर्फ की एक विचित्र भूरी परत जम गयी जिससे कितने ही नये प्रकार के रोग पैदा हुए । प्रायः समुद्री मार्ग से गुजरने वाले बड़े-बड़े तेल टैंकरों के फट जाने से पानी पूरी तरह तेल से घिर जाता है । ऐसी स्थिति में जीवधारियों का समुद्री पानी में जीवित रहना कठिन हो जाता है । जलचरों की कितनी ही प्रजातियाँ उस विषाक्तता से सदा-सर्वदा के लिए नष्ट हो चुकी हैं तथा कितनी ही अपना अस्तित्व गवाँने वाली हैं । बड़े औद्योगिक शहरों के ऑटोमोबाइल्स द्वारा हजारों टन कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड हवा में छोड़े जाते हैं । विशेषज्ञों का मत है कि ये गैसें कुहरे तथा सूर्य के प्रकाश में उपस्थित आल्ट्रावायलेट किरणों से मिलकर एक खतरनाक गहरे रंग के दुर्गन्धयुक्त बादलों अथवा स्वास्थ्य के लिए हानिकर कुहासों के रूप में वातावरण में फैलकर अगणित प्रकार के रोगों को जन्म देती हैं ।

अत्यधिक कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से उत्पन्न होने वाला खतरा भारत के सिर पर भी मंडरा रहा है। नेशनल डेरी रिसर्च इंस्टीट्यूट करनाल के वैज्ञानिक एन० रामकृष्णन तथा एन० के० राय ने दूध उद्योग के विभिन्न प्रमुख शहरों के मार्केट सैम्पलों का परीक्षण किया। परीक्षण में उन्होंने बम्बई, कलकत्ता, करनाल के दूध सैम्पलों में डी० डी० टी०, बी० एच० सी० की मात्रा बहुत अधिक पायी है । विश्व स्वास्थ्य संगठन ने डी० डी० टी० तथा वी० एच० सी० की अधिकतम क्षम्य मात्रा क्रमशः १.२५ पी० पी० एम० तथा; ५० पी० पी० एम० निर्धारित की है । दूध के सैम्पल परीक्षणों में करनाल क्षेत्र के दूध में १५ पी० पी० एम०, बम्बई में ७ पी० पी० एम० तथा कलकत्ता में ७ पी० पी० एम०, डी० डी० टी० तथा बी० एच० सी० की मात्रा का मिलना निश्चित है । यह इस बात का संकेत है कि; जल, वायु तथा मिट्टी में इन रसायनों की एक बड़ी मात्रा घुलती जा रही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दैनिक पत्र 'इत्तफाक' के अनुसार बंगला देश में पिछले सात महीनों में गंदे जल तथा विषाक्त खाद्यान्न के सेवन से १५ हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है । फरवरी के मध्य में वैरिसाल तथा पटु आवाली क्षेत्रान्तर्गत हजारों व्यक्ति कॉलरा की महामारी में मारे गये । खोजबीन करने पर कारण गंदा जल तथा विषाक्त मछली का सेवन पाया गया । महामारी के उन्मूलन के लिए सरकार को सेना बुलानी पड़ी तब कहीं जाकर स्थिति थोड़ी सुधरी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सन् १९५५ में सारे संसार से मलेरिया को खदेड़ भगाने का बीड़ा उठाया था पर २८ वर्षों बाद भी उसे इस कार्य में सफलता नहीं मिल सकी। संसार में बढ़ता प्रदूषण मच्छरों के पोषण में सहायक है। डी० डी० टी० का अरबों टन छिड़काव कोई खास कारगर नहीं सिद्ध हो सका । उससे लड़ने की प्रतिरोधिनी शक्ति मच्छरों ने स्वयं अर्जित करली है। क्लोरोक्वीन जैसी एण्टीबायटिक तेज दवाओं से भी मलेरिया कीटाणु नहीं मरते । सामान्य समझे जाने वाले इस रोग से प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति विश्व भर में मरते हैं। एशिया एवं योरोप की अपेक्षा अफ्रीका में इसका प्रकोप तो और भी अधिक है । आँकड़ों के अनुसार अफ्रीका में प्रतिवर्ष १० करोड़ केस अंकित किये जाते हैं तथा प्रतिदिन तीन हजार बच्चे मरते हैं ।

अनेकों प्रकार के बढ़ते प्रदूषणों से प्रकृति का पर्यावरण चक्र लड़खड़ा गया है जिसकी प्रतिक्रिया अनेकों प्रकार के विक्षोभों-विभीषिकाओं के रूप में पिछले दशकों में झेलनी पड़ी है । वर्ष १९७० में वैज्ञानिकों के एक दल ने खोजबीन करने पर पाया कि समस्त विश्व में बर्फ की मात्रा में १५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिसका कारण बढ़ता प्रदूषण बताया गया । उसी आधार पर अनुमान लगाया गया कि यदि यह स्थिति बनी रही तो अगले कुछ दशकों में ही एक हिमयुग की विभीषिका का सामना मनुष्य जाति को करना पड़ सकता है । ग्रीनलैंड में सौ वर्षों के ठंड का रिकॉर्ड टूटा— सर्वाधिक निम्न तापमान अंकित किया गया । मास्को, सेण्ट्रल अमरीका, दक्षिण एशिया, चीन, आस्ट्रेलिया तथा उप-सहारा के अनेकों क्षेत्रों में प्राकृतिक प्रकोप से भीषड़ अकाल पड़ा जिसमें करोड़ों व्यक्ति मरे ।

यू० एस० सेण्ट्रल इण्टेलीजेन्स एजेन्सी के विशेषज्ञों का अभिमत है कि "अगले दिनों प्रकृति की विभीषिकाएँ और भी उग्र होंगी जिसमें विश्व की एक बड़ी आबादी को अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है । राष्ट्र संघ की पर्यावरण समिति ने भी ऐसी ही संभावना व्यक्त करते हुए कहा है कि "विगत वर्षों में उत्तरी भारत के मौसमी व्यतिरेक यह बताते हैं कि चार माह की ऋतु की मर्यादा रेखा अब लगभग समाप्त होती जा रही है, यह समूचे वातावरण पर अपना दुष्प्रभाव छोड़ रही है । इसका एक मात्र कारण है कार्बन डाईऑक्साइड गैस का विशाल परिमाण में वातावरण में केन्द्रित होते जाना ।" समिति ने यह भी कहा है कि "इक्कीसवीं सदी के मध्य तक यह मात्रा द्विगुणित हो उठेगी तथा क्लोरोफ्लूरो कार्बन, अमोनिया जैसी गैसें भी विपुल मात्रा में वातावरण में घुलकर मौसम के व्यतिरेकों को और भी बढ़ावा देंगी।"

परमाणु परीक्षणों की अंधी दौड़ ने विकिरण की एक और भी सर्वाधिक खतरनाक कड़ी प्रदूषण में जोड़ दी है जिससे प्रकृति असन्तुलनों को और भी बढ़ावा मिला है । राष्ट्र संघ की समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि "१९७० के दशक में संसार भर में विज्ञात ४६९ नाभिकीय परीक्षण किये गये, अविज्ञात परीक्षणों की संख्या भी इससे कम नहीं है । उनकी विषाक्तता को अंतरिक्ष पीता तो जा रहा है पर उसी अनुपात में मानव जाति पर भी प्राकृतिक प्रकोपों के रूप में कहर बरसायेगा ।

बेलगाम प्रगति की सरपट दौड़ निश्चित ही मनुष्य जाति को मृत्यु के खंदक में ले जा पटकेगी । अविछिन्न रूप से सभी प्रकृति चक्र से जुड़े हुए हैं । कोई अप्रभावित रहे, ऐसा संभव नहीं है । जीवित रहने अथवा मरने का उपक्रम सभी का एक साथ बनेगा । विचारशीलता की माँग है कि उस सरपट दौड़ पर अंकुश लगाया जाय। वह दूरदर्शी रीति-नीति अपनायी जाय जिसमें सबका दूरवर्ती स्थायी लाभ जुड़ा हो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पृथ्वी के पिंजड़े से निकल भागने की महत्त्वाकांक्षी योजना

एक समय रहा होगा जब मनुष्य को नदियों, पहाड़ों, दलदलों, जंगलों, रेगिस्तानों, समुद्रों को पार करके दूर क्षेत्रों में जा सकना सम्भव नहीं था । तब उसे एक सीमित दायरे की भली-बुरी परिस्थितियों में ही गुजारा करना पड़ता होगा । उस सीमा से बाहर की जानकारी न होने से आज की तुलना में वह स्थिति कुएँ में मेंढक या गूलर के भुनगे जैसी मानी जायेगी ।

अब रेल, मोटर, जलयान, वायुयान, पुल आदि की भरमार है और धरती के एक कोने से दूसरे तक पहुँचना, साधनों को यहाँ से वहाँ पहुँचाना, ज्ञान का आदान-प्रदान करना सरल हो गया है । सीमा बन्धन से इस प्रकार मुक्ति पा लेने के फलस्वरूप आज का मनुष्य, आदिम काल के सीमा बन्धनों में जकड़े मनुष्य की तुलना में कितना सुखी और समुन्नत है इसे सभी जानते हैं ।

अगला कदम लोक-लोकान्तरों के बुद्धिमान प्राणियों के साथ सम्पर्क साधने और आदान-प्रदान का द्वार खोलने का है । इसके लिए छुट-पुट प्रयत्न तो बहुत समय से किये जा रहे थे, पर अब एक बड़ा कदम अन्तरिक्ष बस्ती बसाने का है, जहाँ से अन्य ग्रह-उपग्रहों के साथ सम्पर्क साधना सरल पड़ेगा । पृथ्वी के चारों ओर गुरुत्वाकर्षण, वायुमण्डल एवं पर्यावरण का एक अति कठोर कवच है । इसे बेधकर इधर से उधर जाना या उधर से इधर आना कठिन पड़ता है । अन्तरिक्ष नगर बन या बस जाने पर यह सभी अड़चनें दूर हो जायेंगी और यानों से सूर्य परिवार का घेरा लाँघकर अन्यत्र जाना तथा वापस लौटना सरल हो जायेगा । इसलिए अब इस दिशा में साहसिक कदम उठाये जा रहे हैं ।

ब्रिटिश अन्तर्ग्रही यान संस्था ने एक 'डेडेलस' यान का डिजायन बनाया है जो अणुशक्ति से चलेगा और दूरवर्ती ग्रहों की खोज-खबर लेगा । अन्तरिक्ष विज्ञानी गेराई नील की योजना अन्तरिक्ष नगर बसाने की है जहाँ से अन्तर्ग्रही यातायात में अपेक्षाकृत अधिक सुविधा रहेगी। सम्भवतः ये आने वाले दस वर्षों में बनकर तैयार भी हो जायेंगे व मध्य के अन्तर्वर्त्ती जंक्शनों के माध्यम से मनुष्य की अन्तरिक्ष यात्रा बड़ी सुगम हो जायेगी । अमेरिका में तो यात्रियों का आरक्षण भी अभी से आरम्भ हो गया है ।

अन्तरिक्ष नगर अपनी धुरी पर एक मिनट में दो बार घूमा करेगा जिसमें उस उपग्रह में ठीक पृथ्वी जैसी गुरुत्वाकर्षण शक्ति उत्पन्न हो जायेगी । वहाँ का तापमान सदा २० डिग्री सेण्टीग्रेड रहा करेगा और मौसम सदा सुहावना । इस योजना पर एकमुश्त ६० खरब डॉलर खर्च होंगे । निर्माताओं ने सोचा है कि इतने महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए इतनी पूँजी लगाने का साहस करना ही चाहिए । ऊर्जा व्यवस्था पर इन दिनों भी अकेले अमेरिका को १० खरब डॉलर पैट्रोल जैसे साधनों पर ही व्यय करना पड़ता है । तब छः वर्ष की उस राशि को लगाकर क्यों न सारे संसार के लिए पर्याप्त मात्रा में सौर ऊर्जा उपलब्ध करने का विचार किया जाये । इन दिनों पृथ्वी पर बिजली उत्पादन में जो लागत आती है, उसकी तुलना में दस प्रतिशत पर उपभोक्ताओं को वह अन्तरिक्षीय बिजली बेची जा सकेगी । उससे सभी लाभान्वित होंगे और वर्तमान में ऊर्जा की कमी से जो अनेकों योजनाएँ रुकी पड़ी हैं तथा सर्वसाधारण के सामने कठिनाई रहती है उसका निराकरण इस अन्तरिक्षीय उपलब्धि के सहारे सहज ही सम्भव हो जायेगा ।

संक्षेप में यह एक दूसरी पृथ्वी बनाने का प्रयत्न है। आकार में छोटी, किन्तु साधनों की दृष्टि से ठीक अपनी जैसी । इस नये लोक का निर्माण करने वाले यह आशा कर रहे हैं कि उस छत पर बैठकर सौर मण्डल तथा अन्तरिक्ष के अन्यान्य ग्रहों के साथ सम्बन्ध जोड़ने और आदान-प्रदान करने का नया मार्ग खुलेगा ।

अन्तरिक्ष में वायुमण्डल और गुरुत्वाकर्षणों के अभाव में पृथ्वी के जीवधारियों के लिए वहाँ रह सकना सम्भव नहीं होता । अन्तरिक्ष यात्रियों को ऐसे यान में बिठाकर भेजा जाता है जिसमें निर्वाह के सभी साधन उपलब्ध रहें। अन्न, जल और वायु पर जीवन निर्भर है । इन तीनों की बड़े उपग्रहों में इतनी व्यवस्था रखनी पड़ती है, जिसके सहारे यात्रा की अवधि में यह आवश्यकताएँ पूरी होती रहें । प्रस्तावित नगर में इतने साधन धरती से तो न भेजे जा सकेंगे पर प्रबन्ध ऐसा रहेगा कि अनिवार्य सुविधाओं में से अधिकांश का उत्पादन उस नगर में ही होता रहे । इसलिए भोजन, वस्त्र, कारखाने, दफ्तर, शिक्षा, चिकित्सा, विनोद आदि के सभी साधनों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवस्था की जायेगी । सबसे बड़ी बात है उस नगर के इर्द-गिर्द पृथ्वी जैसा गुरुत्वाकर्षण और वातावरण का कवच होगा। इसी आधार पर उस नवनिर्मित लोक का अन्तरिक्षीय विपन्नताओं और दुर्घटनाओं से बचाव सम्पन्न हो सकेगा।

अन्तरिक्ष पर आधिपत्य करने की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं ने यह लक्ष्य बनाया है कि सन् २०१० तक एक नया अन्तरिक्ष जगत बस जाय। यह पृथ्वी के सघन गुरुत्वाकर्षण और वातावरण से कहीं अधिक ऊँचा प्रायः १,२५,००० मील की ऊँचाई पर अवस्थित होगा । इसके लिए आवश्यक सामान्य सामान भेजने का सिलसिला एक या दो वर्ष में चल पड़ेगा । नगर में जीवनोपयोगी सभी आवश्यक सामग्री उपलब्ध रहेगी । वह या तो वहाँ उत्पादित होगी या फिर पृथ्वी से ढो-ढोकर पहुँचायी जाया करेगी। इस कार्य का उत्तरदायित्व अमेरिका के प्रिंसटन विश्वविद्यालय के दो मूर्धन्य अन्तरिक्ष विज्ञानियों ने उठाया है जिनके नाम हैं— के० ओ० नील और पीटर डलेजर । प्रत्येक प्रस्तावित नगर की जनसंख्या १० हजार होगी ।

कहा गया है कि यह नगर अन्तर्ग्रही परिस्थितियों की उन महत्त्वपूर्ण जानकारियों को प्राप्त करने के लिए विनिर्मित किया जा रहा है जो पृथ्वी के इर्द-गिर्द फैले हुए जटिल आवरण को भेदकर नीचे आ नहीं पाती और धरती के निवासियों को उस सन्दर्भ में अँधेरे में भटकना पड़ता है । दूसरा उद्देश्य यह बताया गया है कि सौर ऊर्जा को अभीष्ट परिमाण में एकत्रित करके अन्तरिक्ष निवासी वहाँ भेजा करेंगे जहाँ उसकी जितने परिमाण में आवश्यकता है । इसके लिए लैसर किरणों को माध्यम बनाया जायेगा ।

परमाणु परीक्षण, जीवाणु परीक्षण, जीन्स परीक्षण, जैसे कार्य वहाँ अधिक सुविधापूर्वक हो सकेंगे । सूर्य की गर्मी को बिजली में परिवर्तित करके पृथ्वी वासियों के लिये भेजा जा सकेगा । यहाँ से अन्तर्ग्रही यात्राएँ भी सरल पड़ेंगी और ब्रह्माण्डव्यापी आदान-प्रदान भी सरल हो जायेगा । लागत के सम्बन्ध में अभी १,००० अरब डॉलर का खर्च पड़ने का अनुमान लगाया गया है । सोचा जा रहा है कि आने वाले बीस वर्षों में यह निर्माण कार्य हाथ में लिया जा सकेगा और उसे बन कर तैयार हो जाने में बीस वर्ष और लगेंगे ताकि बाकायदा रहना व आना-जाना सम्भव हो सके ।

आशंका करने वालों ने यह भी कहा है कि इस बस्ती पर कब्जा करने के लिए प्रतिद्वन्द्वी देशों के बीच अन्तरिक्ष युद्ध भी हो सकता है । यदि वह हुआ तो इस धरती पर रहने वालों की खैर नहीं, जिस पर रहने वाले इस महत्त्वाकांक्षी निर्माण की योजना बना रहे हैं । स्कायलैब की तरह घूमते अनेकानेक उपग्रहों की तरह ये विशाल कॉलोनियाँ यदि ध्वस्त होकर धरती पर आ गिरीं तो यहाँ के निवासियों का क्या हाल होगा, इसकी कल्पना मात्र की जा सकती है । सुखद सम्भावनाओं का एक कालिमा से भरा यह पक्ष भी ऐसा है जिस पर मानवतावादी वैज्ञानिकों ने ध्यान देने के लिए काफी जोर दिया है । पर्यावरण विशेषज्ञों का मत है कि ऐसी कई बस्तियाँ बस जाने से वातावरण में असन्तुलन जन्म ले सकता है जिसकी परिणति सम्भवतः प्राकृतिक प्रकोपों के रूप में हो ।

यह बस्ती कहाँ बसेगी ? इसके लिए डॉ० नील ने एक कल्पित स्थान चुना है— 'एल-यू ।' यह चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच है । इस स्थान पर पृथ्वी से भेजे संकेत और साधन आसानी से ग्रहण किए जा सकते हैं । यह पृथ्वी की तुलना में चन्द्रमा के अधिक समीप होगा ।

चन्द्रमा की मिट्टी खोदने और वहीं ईंटें बनाने का काम पहले भेजे गये उपकरण करेंगे । ईंटों को अन्तरिक्ष यान की ओर फेंकेंगे । इसमें फेंकने का खर्चा नहीं पड़ेगा। मात्र सामग्री पकड़ने और उसे विधिवत् जमाने की अतिरिक्त व्यवस्था बनानी होगी ।

विनिर्मित नगर ऐसा होगा जिस पर अन्तर्ग्रही प्रभावों का असर न पड़े । उल्काएँ क्षत-विक्षत न करने पाएँ। इस खोखले में पृथ्वी जैसा वातावरण बना दिया जायेगा जहाँ खेती हो सकेगी और आहार तथा निर्वाह के सभी साधन उत्पन्न होते रहेंगे । समग्र योजना बनाने का कार्य प्रिंस्टन विश्वविद्यालय के जिन अन्तरिक्ष विज्ञानी डॉ० नील ने अपने जिम्मे लिया है, उन्होंने अपनी योजना 'फिजिक्स टूडे' पत्रिका में विस्तारपूर्वक छपाई है । इसके अतिरिक्त अन्यान्य वैज्ञानिकों के परामर्श से इस सम्बन्ध में एक विशद् प्रतिवेदन ग्रन्थ मेसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी (एम० आई० टी०) ने प्रकाशित किया है । इसमें अन्तरिक्ष बस्ती के सचित्र मॉडल छपे हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तावित बस्ती का आकार एक खोखले बेलन जैसा होगा । उसकी लम्बाई एक किलोमीटर और व्यास सौ मीटर का होगा । प्राथमिक परीक्षण सफल होने पर इससे कई गुने बड़े आकार की बस्तियाँ बनने लगेंगी ।

अब सोचा जा रहा है कि रॉकेट, सेटेलाइट्स जैसे छुटपुट प्रयासों और झंझटों से बचने के लिए क्यों न अन्तरिक्ष में बस्तियों की श्रृंखला बसा दी जाय । जिन कार्यों के लिए रॉकेट भेजे जाते हैं, उन सबको उन अन्तरिक्ष बस्तियों से ही क्यों न सम्पन्न किया जाये । बनने में पूँजी तो जरूर लगेगी पर बाद में इन दिनों अन्तरिक्ष शोध पर जो खर्च आ रहा है, उसमें भारी कटौती हो जायगी । कभी अन्तरिक्ष बस्ती बसाने की बात कल्पना मात्र थी पर अब उसका व्यावहारिक ढाँचा खड़ा करने के लिए एक सुनिश्चित योजना में हाथ डाला गया है ।

इन दिनों अन्तरिक्ष यानों, रॉकेटों, उपग्रहों का इतना अधिक कबाड़खाना पृथ्वी के इर्द-गिर्द जमा होता जा रहा है कि उनसे जो लाभ सोचे गये हैं उनके स्थान पर समेटने की चिन्ता बढ़ने लगी है । वे अनन्त काल तक इसी स्थिति में नहीं रह सकते । मानव निर्मित होने के कारण उनमें ऐसी त्रुटियाँ हैं जिनके कारण वे भीतरी ऊर्जा गँवा बैठेंगे, गिरेंगे और वृद्धतामस्त होकर जमीन पर देर सबेर में आ गिरेंगे । जहाँ गिरेंगे वहाँ विपत्ति खड़ी करेंगे । स्काइलैब अन्तरिक्ष यान के गिरने से संसार भर में जो तहलका मचा था उसका अभी विस्मरण नहीं हुआ है । भविष्य में यह मलवा और भी बढ़ेगा और नई समस्याएँ पैदा करेगा । इसका समाधान भी अन्तरिक्ष नगर के माध्यम से सोचा जा रहा है कि वहाँ के सशक्त साधनों द्वारा इस कबाड़े को समेट कर अन्तरिक्ष की पोल में कहीं अन्यत्र के लिए धकेल दिया जायेगा और धरती वासियों को उससे चिन्तित होने की आवश्यकता न रहेगी ।

पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को चीर कर ऊपर उड़ने के लिए कितनी शक्ति चाहिए ? इसका उत्तर वैज्ञानिकों ने ११.२ किलोमीटर प्रति सैकण्ड बताया है । इससे कम गति होने पर वस्तुएँ धरती के प्रभाव में ही बनी रहेंगी और नीचे की दिशा में खिंचती रहेंगी । इस व्यवधान को पार करने के लिए इन दिनों रॉकेट ऊपर फेंकने और पर्यावरण कवच से बाहर ले जाने में बहुत खर्च करना पड़ता है । अन्तरिक्ष बस्ती के बाहर वैसा कवच नहीं होगा, फलतः वहाँ से अन्तर्ग्रही यात्रा उतनी कठिन न रहेगी जैसी कि धरती से उसे आरम्भ करने पर इन दिनों उठानी पड़ती है ।

बन्धनों से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य चिरकाल से प्रयास करता रहा है कितने ही बंधन उसने काट भी लिये हैं । धरती के पिंजड़े में कैद रहने का बन्धन भी यदि वह काट सका तो विश्व परिवार की बात सोचने की अपेक्षा उसे ब्रह्माण्ड परिवार का सदस्य होने और तदनुरूप योजनाएँ बनाने—सुविधाएँ पाने का सुयोग भी मिलेगा ।

प्रगति के जोश में अवगति की ओर बढ़ते हुए कदम !

विश्व की आबादी तीव्रगति से बढ़ रही है । यह बढ़ोत्तरी उसी अनुपात में जीवन-यापन के साधनों की मांग करती है । आवश्यकता और उसकी पूर्ति का सन्तुलन न बन पाने से असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न होती है जो विविध प्रकार की समस्याओं को जन्म देती है । साधन सीमित और माँग अधिक । ऐसे में यह जरूरी है कि उत्पादन बढ़ा कर बढ़ी हुई माँग की पूर्ति की जाय। उत्पादन बढ़ाने के तरीके क्या हों ? दोहन या सुनियोजन, यह प्रश्न स्थायी हल चाहता है । एक तरीका तो यह हो सकता है कि पृथ्वी को कृत्रिम रासायनिक खादों की शराब पिलाकर उसका अधिकाधिक दोहन कर लिया जाय और कुछ समय बाद उसे बंजर स्थिति में पहुँचा दिया जाय । दूसरा तरीका यह है कि उन निरापद संकटों से रहित उर्वरकों का अधिक परिमाण में प्रयोग करके उत्पादन में वृद्धि की जाय । साथ ही निरर्थक पड़ी लाखों एकड़ भूमि में थोड़ा सुधार करके खेती के काम में लाया जाय । हर विचारशील व्यक्ति दूसरे सुझाव का ही समर्थन करेगा । कारण यह है कि कृत्रिम खादों के प्रयोग से तत्काल उत्पादन तो बढ़ जाता है पर दूरगामी परिणामों की दृष्टि से यह अदूरदर्शी प्रयत्न अत्यन्त हानिकारक है । कृषि विशारदों के नवीनतम निष्कर्ष बताते है कि पृथ्वी अपनी उर्वराशक्ति रासायनिक खादों के प्रयोग से तीव्रगति से खोती जा रही है तथा सारे विश्व में इस अंधाधुन्ध प्रयास से बंजर भूमि का विस्तार होता जा रहा है ।

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ० माइकेल मैकलौरी हारवर्ड विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं । पेरिस में हुई एक पर्यावरण संगोष्ठी में उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वायुमण्डल की महत्त्वपूर्ण परत स्ट्रेटोस्फीयर, जो पृथ्वी को अल्ट्रावायलेट रेडिएशन के दुष्प्रभाव से बचाती है, निरन्तर कमजोर पड़ती जा रही है । अल्ट्रावायलेट विकिरण से सुरक्षा करने वाली स्ट्रेटोस्फीयर की ओजोन परत तीव्रगति से कमजोर पड़ती जा रही है । ऐसी सम्भावना है कि ओजोन परत की दस प्रतिशत क्षमता इस सदी के अन्त तक नष्ट हो जायेगी । इसका कारण प्रो० माइकेल ने रासायनिक खादों से होने वाले विषाक्त प्रदूषण को बताया तथा सम्भावना व्यक्त की है कि इस रक्षा कवच के कमजोर पड़ जाने से अंतरिक्षीय हानिकारक विकिरणों से पृथ्वी अपनी रक्षा कर पाने में अक्षम सिद्ध होगी जिसका पहला प्रभाव वृक्ष-वनस्पतियों के अंकुरण और विकास पर पड़ेगा । पृथ्वी की उर्वरा शक्ति भी इस घातक रेडिएशन से प्रभावित होगी और अपनी उत्पादक क्षमता गवाँ देगी ।

वैज्ञानिक तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि रासायनिक कृत्रिम खादों की अन्तिम परिणति गैसीय अवस्था में नाइट्रोजन ऑक्साइड के रूप में होती है जो वायुमण्डल की ओजोन परत को नष्ट करती है आज सम्पूर्ण विश्व में लगभग नाइट्रोजन युक्त विभिन्न रासायनिक खादों की खपत पाँच करोड़ टन है । ऐसा अनुमान है कि सन् २००० तक यह खपत बढ़कर २० करोड़ टन तक हो जायेगी । एक आश्चर्यजनक तथ्य का रहस्योद्घाटन किया है कनाडा के एक वैज्ञानिक मैरिक एलिस ने । उनका कहना है कि इकोलॉजिक चक्र के कितने ही पदार्थ घटक हैं । उनका उपयोग खादों में किया जाना संकटों से रहित है तथा पृथ्वी की उर्वरता को भी स्थायी रूप से बढ़ाते हैं । उदाहरणार्थ, पशुओं के गोबर, मलमूत्र एवं पत्ते, कचड़े से बनी खाद के प्रयोग से किसी प्रकार का खतरा नहीं है । अपने प्रतिपादन के समर्थन में वे कहते हैं कि आदिकाल से ही कृषि कार्य में इन खादों का उपयोग होता रहा है पर कभी भी इस प्रकार के संकट का सामना नहीं करना पड़ा जैसा कि वर्तमान समय में प्रस्तुत हुआ है । ओजोन लेयर के क्षति-ग्रस्त होने से न केवल पृथ्वी की उर्वरता नष्ट होगी वरन् प्राणियों का जीवन भी खतरे में पड़ जायेगा ।

फसलों की कीड़ों से सुरक्षा के लिए जिन जीवनाशक दवाइयों का प्रयोग धड़ल्ले से किया जा रहा है वे कितने ही संकटों को लेकर प्रस्तुत हुई हैं । अपने देश में ४४ प्रकार की मारक औषधियों की लगभग ८० हजार टन मात्रा प्रतिवर्ष प्रयोग होती है । जीवनाशी मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं एक ऑर्गेनोक्लोरीन और दूसरा ऑर्गेनोफॉस्फोरस। ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशी जल में अघुलनशील तथा वसा में घुलने वाले होते हैं । इस वर्ग में डी० डी० टी०,वी० एस० सी०, ऐन्ड्रिन, ऐल्ड्रिन, डाईऐल्ड्रिन और एन्डोसल्फान आदि आती हैं। उनका छिड़काव कीड़े-मकोड़ों से फसलों की रक्षा के लिए देश के कोने-कोने पर किया जाता है ।

इनमें से अधिकांश का विघटन शीघ्रता से नहीं हो पाता और वे ठोस रूप में विद्यमान रहकर पौधों की कीड़ों से रक्षा करते हैं । वसा में घुलनशील होने के कारण खाद्यन्नों में अवशोषित होकर आहार के माध्यम से मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के शरीर में पहुँचकर शरीरगत वसा में एकत्रित होते रहते हैं । इनका निष्कासन शरीर से आसानी से नहीं हो पाता । संचित रहने पर से रक्ताल्पता, अनेकों प्रकार के उदर रोगों को जन्म देते हैं । इनसे यकृत को क्षति पहुँचने का भय बना रहता है । ऑर्गेनोफॉस्फोरस ग्रुप के यौगिक अधिक समय तक तो प्रभावकारी नहीं रहते पर जितनी देर रहते हैं अधिक विषाक्त प्रभाव छोड़ते हैं ।

एक आँकडे के अनुसार अपने देश में कीड़ों से सुरक्षा के लिए डी० डी० टी० का छिड़काव इतना अधिक हुआ है कि उसका दीर्घकालीन प्रभाव अभी भी बना हुआ है । अनुमान है प्रत्येक भारतीय के आहार में २७ मि० ग्रा० डी० डी० टी० की मात्रा घुली हुई है।

एक शोध निष्कर्ष में कहा गया है कि एक भारतीय के शरीर में डी० डी० टी० जैसे भयानक रसायन की मात्रा लगभग १३ से लेकर ३१ पी. पी. एम. (पी. पी. एम. डी० डी० टी० की विषाक्तता के नापने की इकाई) तक है जो कि अन्य देशों में १.८ से लेकर १९.२ पी. पी. एम. तक हैं । आस्ट्रेलिया में यह औसत प्रति व्यक्ति १.८, पश्चिम जर्मनी में २.३, इंग्लैण्ड में ३.३, कनाडा में ४.८, डेनमार्क में ३.३, इटली में ५, हंगरी में १२.४, फ्रांस में ५.२, तथा इजरायल में १९.२ पी. पी. एम. है ।

कीटनाशी दवाओं का छिड़काव मात्र स्वास्थ्य के लिए ही हानिकारक नहीं है वह समस्त इकोलॉजिकल चक्र को भी नष्ट करता है । प्रकृति अपनी स्वसंचालित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवस्था द्वारा जीवधारियों को पैदा करती और मारती है। सृजन और ध्वंस की इस दुहरी प्रक्रिया में अनावश्यक रूप से मानवीय हस्तक्षेप अनुचित है । कितनी बार तो इससे ऐसे व्यतिरेक उठ खड़े होते हैं जिनका हल निकाल पाना मनुष्य के बलबूते सम्भव नहीं हो पाता । उदाहरणार्थ बोनियों नामक प्रदेश में, जो अमेरिका में स्थित है, मच्छरों के उपद्रव को दूर करने के लिए डी० डी० टी० का भारी परिमाण में छिड़काव किया गया तो स्थानीय जन-समुदाय को एक दुस्तर समस्या का सामना करना पड़ा ।

डी० डी० टी० के छिड़काव से एक विशिष्ट प्रकार के कीड़े कैटर-पीलर का उपद्रव बढ़ गया । सामान्यतः वे कीड़े बर्रों का आहार होते हैं जो कि डी० डी० टी० के विषाक्त प्रभाव से मर गये । इन कीड़ों को अपनी वंश वृद्धि असामान्य रूप से करने का सुअवसर मिला। मारक दवाओं की चपेट में मक्खियाँ भी आयीं । मक्खियों के मर जाने से छिपकलियों का आहार स्रोत कम पड़ गया । छिपकलियों को बिल्लियां खाने लगीं पर उनकी विषाक्तता के कारण शीघ्र ही दम तोड़ने लगीं। बिल्लियों के मर जाने के कारण चूहों की संख्या बढ़ने लगी । वे इतनी अधिक तादाद में हो गये कि स्थानीय क्षेत्र में भारी तबाही मचाने लगे । अन्ततः स्थिति विस्फोटक होते देखकर अमेरिका सरकार द्वारा अधिक संख्या में चूहों की नस्ल समाप्त करने के लिए बाहर से बिल्लियों का आयात करना पड़ा । तब कहीं जाकर स्थिति पर नियन्त्रण कर पाना सम्भव हो सका ।

इसी प्रकार की परिस्थितियों का सामना एक बार मलेशिया में करना पड़ा । वहाँ एक प्रकार के नशीले पदार्थ कोको की खेती आरम्भ की गयी । इन फसलों में कीड़े लग गये । उन्हें मारने के लिए एक विशिष्ट तरह की कीटनाशी दवा का प्रयोग किया गया । दवा के छिड़काव के तुरन्त बाद आश्चर्यजनक परिवर्तन यह देखा गया कि विषैले कीड़ों की कितनी ही ऐसी प्रजातियाँ पैदा हो गयीं जो वहाँ पहले कभी नहीं देखी गयी थीं । अन्ततः वेग वर्म नामक एक ऐसा हानिकारक कीड़ा पैदा हुआ जो किसी भी दवा से नहीं मरता था । उसे मारने के लिए विषैली दवाओं की सान्द्रता अत्यधिक बढ़ा दी गयी । परिणाम यह हुआ कि कीड़े तो नहीं मरे, उल्टे पौधे अवश्य विषैले हो गये । संयोगवश बर्रों का विशाल झुंड वहाँ पहुँच गया तथा उन हानिकारक कीड़ों को खाने लगा । आसन्न पौधों पर संकट तब कहीं जाकर दूर हुआ ।

प्रचलित मान्यता यह है कि मिट्टी निर्जीव है तथा प्रायः उसमें जो कीड़े पाये जाते हैं वे फसलों को क्षति ही पहुँचाते हैं। अंशतः तो यह बात सही है, पर कृषिविज्ञान के नवीनतम शोध निष्कर्षों के अनुसार हानि पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़ों की अपेक्षा मिट्टी में उन कीड़ों की अधिकता होती है जो फसलों के लिए लाभकारी हैं तथा मिट्टी को उर्वरा बनाते हैं । बीटल्स टरमाइट, कीटर्स आदि विभिन्न प्रकार के कीड़े कृषि कार्य में असाधारण सहयोग करते हैं । कृषि कार्य में प्रयोग की जाने वाली आधुनिक मारक दवाएँ इन कीड़ों को लाभकारी तथा हानिकारक में बिना भेदभाव किये नष्ट कर डालती हैं । फलस्वरूप कृषि में सहयोग देने वाले उपयोगी कीड़े-मकोड़ों के अमूल्य योगदान से भी वंचित रह जाना पड़ता है । यह हानि इतनी बड़ी है कि जिसकी आपूर्ति अन्य किसी भी कृत्रिम तरीके से नहीं हो सकती।

'दी साइलेन्ट स्प्रिंग' नामक पुस्तक के लेखक रिचार्ड कास्टसन इकोलॉजीशास्त्र के प्रख्यात विद्वान हैं। पुस्तक में वे लिखते हैं कि दवाओं के छिड़काव से नन्हें कीड़े-मकोड़ों की सृष्टि तेजी से विलुप्त हो रही है । फलस्वरूप उन पर निर्भर रहने वाले पक्षियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है । कितने ही ऐसे पक्षी हैं जिनका वनस्पतियों, फलों के परागण में परोक्ष किन्तु महत्त्वपूर्ण योगदान है, पक्षियों के नष्ट होने से वनस्पतियों का जीवन भी संकट में पड़ सकता है ।

उल्लेखनीय है कि जो देश जितने पिछड़े हैं उन्होंने उतना ही अधिक विषैले रसायनों का प्रयोग किया है । फलस्वरूप उसी अनुपात में वह विष मानवीय शरीर में घुलता-मिलता गया है तथा कितने ही शारीरिक एवं मानसिक रोगों को जन्म दे रहा है । बौद्धिक पिछड़ेपन एवं अशिक्षा के कारण पिछड़े देशों के कृषक उतने जागरूक भी नहीं हैं कि मारक औषधियों के दूरगामी दुष्परिणामों से सतर्क हो सकें ।

अपना देश कृषि प्रधान है । पशुपालन को कृषि का सदा से अभिन्न अंग समझा जाता रहा है । पशुओं के बहुमुखी उपयोग के कारण उन्हें भौतिक समृद्धि में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटक माना जाता रहा है । उनके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूध, श्रम जैसे अनुदानों के अतिरिक्त प्राप्त होने वाले गोबर की खाद खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने में विशेष रूप से सहायक रही है । पशुपालन को पुनः प्रश्रय मिलना चाहिए । कृत्रिम खादों एवं मारक रसायानों के उपयोग से आसन्न स्वास्थ्य विभीषिकाओं तथा प्रस्तुत होने वाले प्रकृति असन्तुलनों से रोकथाम तभी सम्भव है । उत्पादन बढ़ाने के लिए मल, कचरे, कूड़ा, करकट का सुनियोजन भी आवश्यक है । इन निरर्थक समझी जाने वाली वस्तुओं के सदुपयोग की परम्परा चल पड़े तथा निरर्थक बेकार पड़ी भूमि के उपयोग की व्यवस्था बन सके तो खाद्यान्न संकट का हल सम्भव है ।

तब हमें भी अपना अस्तित्व गँवाना पड़ेगा

विश्व के मूर्धन्य खगोलशास्त्रियों का मत है कि विगत कुछ दशकों से पर्यावरण असंतुलन बढ़ता जा रहा है । इसी की प्रक्रिया स्वरूप अनेकों प्रकार के व्यतिक्रम आ रहे हैं । यही स्थिति यथावत् बनी रही तो इस शताब्दी के आखीर तक प्राकृतिक विपदाओं-विक्षोभों की भयावह विभीषिका उत्पन्न हो सकती है । सारा संसार इसी चपेट में आ सकता है तथा मानव जाति को त्रास भुगतते-भुगतते अपना अस्तित्व गँवाना पड़ सकता है । प्राणि समुदाय के कितने ही जीव पिछले दिनों इसी कारण विलुप्त हुए हैं । मनुष्य भी अपनी अदूरदर्शिता के कारण वही गति अगले दिनों प्राप्त कर ले तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र कृषि एवं खाद्य संगठन के वैज्ञानिकों ने गहन अध्ययन एवं अनुसंधान किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत निष्कर्षों के अनुसार विश्व में हर चार दिन बाद न्यूयार्क शहर के बराबर वन सम्पदा नष्ट होती जा रही है । पशु-पक्षी तथा जीव-जन्तु, जिनका मानव जीवन से अति घनिष्ठतम सम्बन्ध है, की लगभग आधी प्रजातियाँ जंगलों में ही पाई जाती हैं । जंगल कटेंगे तो उनमें निवासरत प्राणियों की जीवन-लीला भी समाप्त होगी । प्रतिवर्ष जीव-जन्तुओं की एक हजार प्रजातियाँ तो वैसे भी लुप्त होती जा रही हैं । यही क्रम आगे भी वना रहा तो अगले बारह वर्षों में एक-चौथाई वन्य प्राणी, जीव-जन्तु पूरी तरह नष्ट हो जायेंगे । प्राकृतिक प्रजातियाँ मनुष्य के लिए बड़ी ही उपयोगी हैं। वैज्ञानिक अभी तक उसमें से मात्र ६ प्रतिशत की ही खोज कर पाये हैं। हमारी कृषि उपज और पशुधन जंगली प्रजातियों की ही देन हैं । खाद्यान्नों का ७५ प्रतिशत भाग केवल आठ प्रकार की प्रजातियों से ही उपलब्ध होता है । जंगली पौधे औषधियों का एक बड़ा स्रोत हैं । ऋतुओं को स्थायित्व देने की क्षमता भी वनों में हैं । कुछ समय पूर्व चिकित्सकों द्वारा किये गये परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि घोड़े के खुर के आकार के जंगली केकड़े के शरीर से एक विशेष प्रकार का रस स्रावित होता है, जो शरीर में पनपने वाले रोगाणुओं को नष्ट कर डालता है । समुद्र में पाये जाने वाले ब्रायोजोआ जीव के रसों से कैंसर प्रतिरोधक विनिर्मित किया जा सकता है । मैक्सीको में जंगली मक्के की एक विशिष्ट प्रजाति पर किये गये शोध-परीक्षणों से इस बात का पता चलता है कि इसमें रोग-निरोधक क्षमता होती है । लेकिन अब सारे विश्व में उसे कहीं नहीं देखा जा सकता है । वनों के कटते चले जाने से उसकी प्रजाति भी लुप्त होती चली गयी ।

विज्ञान की नव विकसित परिस्थिति के विशेषज्ञों के कथनानुसार प्रकृति में गतिमान जीवन (मनुष्य, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी), स्थिर जीवन (पेड़-पौधे) और जीवन के सहयोगी घटकों (भूमि, जल, वायु) तीनों के मध्य एक विशेष प्रकार का साम्य-सहयोग एवं संतुलन बना हुआ है । तीनों एक ही जंजीर में कसी हुई कड़ियों की भाँति अपनी सामर्थ्य एवं अस्तित्व का परिचय देते हैं । इसी सूत्र के आधार पर समूची विश्व व्यवस्था सुसंचालित होती दृष्टिगोचर हो रही है । यदि इनमें से एक भी कड़ी टूट जाय तो समूचा धरातल ही अस्त-व्यस्त होकर अपना अस्तित्व गंवा बैठेगा ।

कभी मारीशस के जंगलों में केल्वेरिया पेड़ पर बत्तख की आकृति का डोडो नाम का एक पक्षी रहता था । वह अन्य पक्षियों की तरह उड़ नहीं पाता था । इस मजबूरी का फायदा उठाकर यूरोप के आक्रान्ताओं ने उनका शिकार करना आरम्भ कर दिया । आज से लगभग ३०० वर्ष पूर्व जब आखिरी डोडो की जीवन लीला समाप्त हो गयी तो अंग्रेजी में 'डैड एज डोडो' वाली कहावत बहुत चर्चित हो गया । फलतः केल्वेरिया की संख्या में अप्रत्याशित कमी आती चली गयी । पेड़ों के निरन्तर घटते-घटते स्थिति यहाँ तक आ पहुँची कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९७० में इस प्रजाति के मात्र १४ पेड़ ही दुनियाँ में शेष रह गये। केल्वेरिया की वंश वृद्धि में डोडो पक्षी का विशेष योगदान रहता था । विस्कांसिन यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक प्रो० ए० स्टेनले के अनुसार केल्वेरिया के बीजों के ऊपर एक कड़े छिलके का कवच चढ़ा होता है जो नमी को अन्दर की ओर जाने से रोकता है, इसलिए अंकुरण की क्रिया सम्पन्न नहीं हो पाती । डोडो पक्षी की शारीरिक संरचना ही कुछ विचित्र तरीके की होती हैं । उस की अंतड़ियों में कुछ पत्थर मिले रहते हैं, जो डोडो द्वारा इन बीजों के खाये जाने पर पेट में पत्थर और अम्ल की संयुक्त क्रिया से घिस कर छिलके को पतला कर देते हैं । बाहर आकर अंकुरित होने में बीजों को आसनी होती है । प्रो० स्टेनले ने डोडो को कैल्वेरिया के बीज खिलाकर न केवल उस पेड़ की वंशावली को जीवित रखा है वरन् अभिवृद्धि का अभियान भी बड़ी तेजी से चलाया है । इस पक्षी की उपयोगिता एवं महत्ता को देखते हुए अब डोडो को मारीशस का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है ।

इण्टरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन ऑफ नेचर, स्विटजरलैण्ड के डाइरेक्टर जनरल कैनटन आर० मिलर ने पृथ्वी की जैवीय सम्पदा का अध्ययन बड़ी गहनता के साथ किया है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु, पशु-पक्षी और वृक्ष-वनस्पतियों की विविध प्रकार की जातियाँ-प्रजातियाँ आती हैं । संसार में इस समय कुल मिलाकर एक करोड़ शेष हैं । इनका विनाश भी बड़ी तीव्रगति के साथ होता चला जा रहा है । विनाश के इस गतिक्रम को समय रहते नहीं रोका गया तो बीसवीं शताब्दी के आखीर तक १० लाख प्रजातियाँ इस धरती से सदासर्वदा के लिये विलुप्त हो जायेंगी, जिसके फलस्वरूप मानवीय अस्तित्व को विशेष प्रकार का खतरा उत्पन्न होगा, क्योंकि इन जातियों का प्रमुख कार्य खाद्य उत्पादन में सहयोग प्रदान करने का होता है । इन जातियों के नष्ट होने का मूल कारण धरती पर जनसंख्या का आधिक्य और वन-सम्पदा के ह्रास को माना गया है ।

आँकड़े बताते हैं कि विश्व की समस्त जातियों का ४० प्रतिशत भाग जंगलों में ही पाया जाता है, जो बड़ी द्रुतगति के साथ नष्ट होते चले जा रहे हैं । जंगलों का कुल क्षेत्र एक करोड़ वर्ग किलोमीटर का है जिसमें से ७५ हजार वर्ग किलोमीटर प्रतिवर्ष उजड़ता जा रहा है। लगभग साढ़े तीन अरब वर्ष पूर्व संसार की समस्त जातियों का प्रादुर्भाव हुआ था । उस समय प्रकृति की सभी जातियाँ अपने मूल रूप में विद्यमान थीं, लेकिन आज उनमें से ९० प्रतिशत जातियाँ अपनी जीवन लीला पूर्णतः समाप्त कर चुकी हैं । भारत के पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्टानुसार देश में १५,००० वृक्ष-वनस्पतियों की जातियों में से ३ से ४ हजार तक संख्या में अस्तित्वहीन हो गयीं हैं । इनमें ९० प्रतिशत तो चिकित्सा जगत में काम आने वाली जड़ी-बूटियों की जातियाँ सम्मिलित हैं।

कौर्नेल यूनिवर्सिटी के जीवविज्ञानी थॉमस ऐसनर के अनुसार एक जाति के विलुप्त होने का अभिप्राय होता है प्रकृति पुस्तकालय के एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के पृष्ठ का गायब हो जाना जिसकी अनुपस्थिति में ग्रन्थ के सम्पूर्ण अर्थ को समझ सकना असम्भव हो जाता है, सार-निष्कर्ष निकालना तो और भी कठिन है । चूँकि प्रकृति जगत की एक जाति का सम्बन्ध दूसरी जाति के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा होता है, इसलिये एक की अनुपस्थिति में दूसरी को भी देर-सवेर विलुप्त होना ही पड़ेगा । मनुष्य भी इसका अपवाद नहीं ।

निकट भविष्य में अध्यात्म युग आकर रहेगा

इतिहास मर्मज्ञ डॉ० टायनवी से एक पत्रकार ने पूछा कि निकट भविष्य में जब वैज्ञानिक प्रगति के कारण मनुष्य को सहज ही सस्ते मूल्य पर प्रचुर सुविधायें मिलने लगेंगी, तब वह बैठे ठाले अपना समय किस प्रकार बिताया करेगा ? इस प्रश्न के उत्तर में टायनवी ने कहा— 'उसके पास काम करने का इतना बड़ा और इतना महत्त्वपूर्ण क्षेत्र खाली है, वह क्षेत्र ऐसा है जिसमें प्रगति होते हुए भी भौतिक सुविधायें उसके लिये सुखद न रह कर दुःखद बनती जायेंगी । यह उपेक्षित क्षेत्र अध्यात्म का है । चिन्तन को परिष्कृत बनाने वाला क्षेत्र भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की अपेक्षा बड़ा भी है और व्यापक भी । सुविधाओं की अभिवृद्धि के कारण जो समय बचेगा, उसे आगामी पीढ़ियाँ अध्यात्म उत्पादन में लगाया करेंगी । संगीत, साहित्य कला के माध्यम से विचारों का परिष्कार करने की आवश्यकता अनुभव की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जायेगी और भावनात्मक सहयोग एक के द्वारा दूसरे को मिलता रहे, इसकी आवश्यकता अनुभव की जायेगी । इसलिए मानवीय अन्तरात्मा की भूख बुझाने के साधन जुटाने में अगली पीढ़ियों को लगना होगा । चैन करने और मौज उड़ाने की वर्तमान हविश की निरर्थकता सिद्ध होने पर मनुष्य को अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों के जागरण का अधिक उपयोगी प्रयास करने में जुटना पड़ेगा । बेकारी शून्यता उत्पन्न नहीं होने पायेगी ।

मनुष्य बुद्धिमान है । वह विनाशकारी परिस्थिति उत्पन्न होने से पूर्व ही सजग हो जाने और राह बदलने का अभ्यस्त है । आदिम काल से लेकर अब तक उसके सामने अगणित उतार-चढ़ाव आये हैं । उनमें से कितने ही तो जीवन-मरण की चुनौती जैसे अवसर थे । परिस्थितियाँ नहीं बदल सकतीं तो अपने को बदला जाय, इस निष्कर्ष पर पहुँचने में उसे देर तो लगती है पर विवशता उसे परिवर्तन स्वीकार करने के लिए बाध्य कर देती है तो वह अपना सन्तुलन बिठा लेना भी जानता है ।

आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति ने मानवीय इतिहास में एक नया और विचित्र अध्याय जोड़ा है । भौतिक सुविधा साधनों के विस्तार के साथ इस प्रगति में यह असुविधा भी जड़ी हुई है कि नियन्त्रण के अभाव में यह विकास उन्मुक्त हाथी की तरह सर्वभक्षी विनाश की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करेगा।

उदाहरण के लिए परिवार नियोजन के सुविधा-साधन चल पड़ने से जहाँ अनावश्यक वृद्धि रोकने का उपाय हाथ लगा है वहाँ एक नई समस्या यौन स्वेच्छाचार की और बढ़ गई है । अनावश्यक और अवांछनीय सन्तानोत्पादन से डर कर नर-नारी संयम बरतने के लिए विवश होते थे । पर अब वैसी सतर्कता बरतने की जरूरत नहीं रही और पर्दे के पीछे कुछ भी करते रहने की छूट मिल गई । इस नये पतन के मार्ग खुल जाने से सार्वजनिक स्वास्थ्य को क्षति पहुँचने और दाम्पत्य जीवन की पवित्रता एवं वफादारी घट जाने की विभीषिका सामने आने की बात स्पष्ट है । समय ही बतायेगा कि परिवार नियोजन के विकसित साधनों ने मानव जाति की सेवा अधिक की अथवा कुसेवा ?

चमत्कारी औषधियों से तत्काल पीड़ा शमन का तो पथ प्रशस्त हुआ पर उनके कारण रोग-निरोधक जीवनी शक्ति का भण्डार चुकने की हानि भी तो कम नहीं हुई। रासायनिक खादों ने अन्न उत्पादन बढ़ाया पर भूमि का बन्ध्यत्व और अखाद्य तत्वों के उदरस्थ होने की क्षति भी तो उपेक्षणीय नहीं है । आणुशक्ति से ऊर्जा की आवश्यकता सस्ते मूल्य और प्रचुर परिमाण में पूरी हो सकती है पर परमाणु भट्टियों की राख को कहाँ डाला जाय ? इस उलझी हुई समस्या का समाधान नहीं मिल रहा । अणु अस्त्रों ने तृतीय युद्ध को रोक रखा है, यह ठीक है, पर यह भी गलत नहीं कि कोई एक सनकी सारी दुनिया को जला देने वाली माचिस जलाकर बारूद के ढेर में फेंक सकता है । आक्रमण की शक्ति आधुनिक हथियारों ने बहुत बढ़ा दी है । उनके कारण बड़े देश छोटों को सहज ही उदरस्थ कर सकते हैं । शोषण और उत्पीड़न के पुराने ढर्रे के वीभत्स तरीके अब काम में नही लाये जाते पर कुचक्र ऐसा चल पड़ा है जिसमें स्वेच्छापूर्वक शोषण स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य चारा ही नहीं रह जाता । पुराने लोग नारी को भोग्य बनाये रहने के लिए अमानुषिक प्रतिबन्धों का प्रयोग करते थे, अब उसके सामने प्रलोभन इतने रख दिये गये हैं कि उसे स्वेच्छापूर्वक अवांछनीय समर्पण करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता सरल नहीं दीखता ।

मनुष्य की स्थिति उस भूखे चूहे जैसी है जो रोटी का टुकड़ा देख कर पिंजड़े में कैद होता है— उस मछली जैसी है जिसे आटे की गोली मरण निमन्त्रण स्वीकार करने के लिये बाध्य करती है । प्रचार तन्त्र इतना समर्थ हो गया है कि जन-मानस को उस दिशा में सहज ही घसीट कर ले जाया जा सकता है जिसमें निहित स्वार्थों की स्वार्थ लिप्सा पूरी होती है । लाखों-करोड़ों लोग मनुष्य द्वारा मनुष्य को मारे जाने की कला को उत्साहपूर्वक सीख रहे हैं और उसमें पारगंत बन रहे हैं। चित्रों और पुस्तकों में कुस्सित विषाक्तता की मात्रा दिन-दिन बढ़ती जा रही है । इस सफलता का कारण प्रकाशकों की वह धन-लिप्सा है जिसे भोली जनता की पशु प्रवृत्तियों भड़का कर सरलतापूर्वक पूरी कर लेते हैं । फिल्मों के क्षेत्र में 'प्रगति' इसी आधार पर हो रही है और भारतीय अभिनय पाश्चात्य नग्न निर्लज्जता को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने के लिए आतुर हो रहा है ।

वैज्ञानकि प्रगति ने निस्सन्देह सुविधा-साधनों का असाधारण विस्तार किया है । प्रतियोगिता के कारण वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक सस्ते और अधिक सुविधाजनक बनते जा रहे है। सहज ही उनका उपयोग उपभोग करने की ललक को भड़काना ही है । साथ ही यह भी निश्चित है कि इस प्रलोभन पथ पर अन्धी दौड़ लगाता हुआ मनुष्य औंधे मुँह गिरेगा और प्रत्यक्ष लाभ की अपेक्षा सहस्रों गुना अप्रत्यक्ष क्षति-ग्रस्त होगा ।

वैज्ञानिक उपलब्धियों के पीछे उनके अविवेक पूर्ण उपयोग की काली छाया भी जुड़ी हुई है। यदि ढर्रा वर्तमान धुरी पर ही घूमता रहा तो निकट भविष्य में ही इस प्रगति को विगति या विकृति ठहराना पड़ेगा । तब इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि मानव बुद्धिमत्ता ने विज्ञान क्षेत्र में जो प्रगति की थी उसकी सबसे बड़ी मूर्खता दुर्भाग्य भरी अभिशाप स्थिति सिद्ध हुई ।

किन्तु मानव की गरिमा पर विश्वास रखते हुए हमें आशा करनी चाहिए कि दूरदर्शिता का यह अभाव देर तक न बना रहेगा । विवेक से विमुखता सदा नहीं रही है। सुविधा-साधनों के चकाचौंध में आँखें अधखुली ही न बनी रहेंगी । समय के थपेड़े वस्तु-स्थिति समझने के लिए विवश करेंगे । यह तथ्य अनजाना न बना रहेगा कि निरंकुश शक्ति जब अवांछनीयता के पथ पर चढ़ दौड़ती है तो सर्वनाश किये बिना रुकती नहीं । उचित और अनुचित का भेद किये बिना, जो पाया सो खाया, जो भाया सो आया, वाली नीति अपनाकर यदि लक्ष्यविहीन अन्धी दौड़ लगाते रहेंगे तो यह तथाकथित प्रगति विघातक ही सिद्ध होगी । आज यह तथ्य उपहासास्पद भी लग सकता है पर कल जब वस्तु-स्थिति बन कर सामने आवेगी तो सर्वग्रासी विभीषिका से बचने का मार्ग सोचना ही पड़ेगा ।

शक्ति और साधनों का उच्छृंखल प्रयोग चन्द लोगों के लिए कुछ समय तक लाभदायक हो सकता है पर सर्वसाधारण को इससे अपार क्षति उठानी पड़ेगी । मानवीय स्नेह-सद्भाव के तार टूट जायेंगे और मर्यादाओं के उल्लंघन का उत्साह नीति और न्याय की चिर-संचित सभ्यता को मटियामेट करके रख देगा ।

क्या मनुष्य जाति अपने हाथों सामूहिक आत्महत्या करेगी ? आदिम कालीन नर-पशु को सृष्टि का मुकुटमणि बनाने वाली सद्भाव संस्कृति का अन्त इस प्रकार दुःखद दुर्भाग्य के साथ हो जायेगा ? समय-समय पर संकटों से बच निकलने वाली मानवीय सूझबूझ का क्या अब उपयोग होना सम्भव नहीं ? इन प्रश्नों पर विचार करते हुए यह सहज स्वीकार नहीं हो सकता कि संकट का सामना नहीं किया जा सकता या नहीं किया जाना चाहिए ।

निश्चित रूप से विज्ञान पर अंकुश स्थापित करने वाले अध्यात्म दर्शन का अगले दिनों उसी प्रकार विकास होगा जिस प्रकार इन दिनों वैज्ञानिक प्रगति के लिए—सुविधाओं के अनियन्त्रित उपभोग के लिए प्रयास किया जा रहा है । यह ठीक है कि हम प्रकृति पर विजय का लोभ नहीं छोड़ सकते हैं पर यह भी ठीक है कि उस विजय का स्वच्छन्द उपभोग बहुत महँगा पड़ेगा । सन्तुलन के बिना कोई गति नहीं । विज्ञान पर अध्यात्म का अंकुश स्थापित किये बिना तूफानी गति से उठने वाली समस्याओं का और कोई समाधान नहीं ।

एकांगी भौतिक प्रगति ने स्वच्छन्दतावाद के चंगुल में फँस कर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है जिसमें स्वस्थ समाज की सारी विशेषतायें एक-एक करके नष्ट होती चली जा रही हैं । बेशक, सुविधायें बढ़ रही हैं पर आन्तरिक क्षेत्र में ऐसी रिक्तता और शून्यता उत्पन्न हो रही है जिसने मानवीय अन्तरात्मा को विक्षिप्त और विद्रोही जैसा बना दिया है । हिप्पीवाद के रूप में यह प्रतिक्रिया फूट रही है । यदि उच्च आदर्श, मात्र प्रवंचना के रूप में ही जा सकते हैं तो उनका अन्त क्यों न कर दिया जाय ? हिप्पीवाद ऐसी ही निषेधात्मक निराशा की उपज है । मानवता के गिरते हुए मूल्यों का समाधान इस रूप में खोजा जा रहा है कि या तो इस छोर पर पहुँचाया जाय या उस छोर पर । जब निरंकुश स्वच्छन्दतावाद वरता ही जाना है तो पर्दे के पीछे आँख मिचौनी क्यों की जाय ? उसे नये युग की नई सभ्यता क्यों न मान लिया जाय । जब जंगली कानून को भीतर ही भीतर मान्यता मिल रही है तो उसका खुला प्रदर्शन करने में क्या हानि है ? इस माँग में और कुछ हो या न हो—ईमानदारी जरूर है । इस ईमानदारी के कारण मानवीय विवेक को विचार करना पड़ेगा कि क्या मनुष्य को निरुद्देश्य और निरंकुश गतिविधियाँ अपनाने से समाधान मिल सकेगा । निश्चित रूप से यह एक विघटित और दिशाहीन समाज की कल्पना है जिसके दुष्परिणामों का विवरण तैयार करने पर दिल दहलने लगता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि समय-समय पर सामने आने वाली समस्याओं और विभीषिकाओं का सामना करने के लिए आवश्यक सूझ-बूझ का परिचय दिया जाता रहा है । भविष्य में भी वैसा रहेगा । वैज्ञानिक प्रगति के चरण आगे बढ़ेंगे, उसके स्वछन्द उपयोग के कारण उत्पन्न हुआ सर्वग्रासी संकट भी सामने प्रस्तुत होगा ही, सभ्यता को खोकर पनपे हुए स्वेचछाचार के कारण जो विग्रह उत्पन्न होगा वह यथास्थिति नहीं बनी रहने देगा वरन् समाधान कारक निर्णय की माँग करेगा । उस माँग को पूरी किये बिना काम चलेगा ही नहीं ।

सदाशयता की प्रेरणा से न सही विवशता के दबाव से सही, आत्मरक्षा और चैन से रहने देने की दृष्टि से सही । निर्णायक समाधान यही सामने आयेगा कि अब जगत की सम्पदाओं और शक्तियों की तरह ही चेतनात्मक विभूतियों का भी अभिवर्धन किया जाय, सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों को विकसित किया जाय । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए अगले दिनों उसी स्तर पर प्रयत्न करने होंगे जिस पर कि आज वैज्ञानिक प्रगति के लिए मानवीय श्रम, कौशल, धन एवं मनोयोग नियोजित किया जा रहा है । एकाकी प्रगति को सन्तुलित बनाने के लिए निकट भविष्य में यदि आध्यात्मिक प्रगति का अभियान तूफानी द्रुत-गति से सामने आये तो इसमें किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए । समय की माँग पूरी करने वाली और मानवीय विवेक को जीवित रखने की यह एक सहज साक्षी और स्वाभाविक प्रतिक्रिया ही होगी ।

अदृश्य का अनुकूलन अध्यात्म प्रयोगों द्वारा

मानवीय चेतना ब्रह्माण्डीय चेतना का ही एक घटक है । ब्रह्माण्ड की प्रकृतिगत हलचलों एवं चेतनात्मक प्रवाहों से मानव ही नहीं, प्राणी समुदाय भी प्रभावित होते रहते हैं । सूक्ष्म में संव्याप्त इस शक्ति को अध्यात्मवादियों ने 'ब्रह्म' की संज्ञा दी और वैज्ञानिकों ने अपने गहन पुरुषार्थ से इस शक्ति में अन्तर्निहित सत्य को खोजने का प्रयास जारी रखा । दृष्टि थोड़ी भिन्न होते हुए भी मूर्धन्य वैज्ञानिकों का यही मत था कि दृश्य जगत का संचालन करने वाली कोई अदृश्य सत्ता अवश्य है। प्रकृति के प्रकोपों, दण्ड व्यवस्था के रूप में उसकी झाँकी हमें यदाकदा देखने को मिलती है । मानवीय स्वास्थ्य पर इनके सम्भावित प्रभावों पर भी वैज्ञानिक अब ध्यान दे रहे हैं । अपनी खोजों के प्रति अत्यधिक आशावान तर्क बुद्धि इन विभीषिकाओं का जब कारण खोजती है, तो स्वयं को असहाय पाती है । ऐसे में आवश्यक है कि भावी संकटों की पृष्ठभूमि जानकर स्वयं को सचेत रखा जाय ।

प्राणी पृथ्वी पर निवास करते हैं, उन पर अन्तरिक्ष में आने वाली किरणें, सौरमण्डल की ऊर्जा, अन्तर्ग्रही शक्तियों आदि का ही नहीं— पृथ्वी के अन्तराल में चल रही सूक्ष्मतम हलचलों का भी प्रभाव पड़ता है । जो सूक्ष्म तरंगें पृथ्वी के अन्दर निरन्तर सक्रिय रहती है, वे सर्केडियन रिडम के रूप में मानव मन की हलचलों, प्राणियों के व्यवहार तथा मौसम के सन्तुलन पर गहरा प्रभाव डालती हैं । इन सब वैज्ञानिक निष्कर्षों से यही तथ्य सत्यापित होता है कि मानव की विचार तरंगें, अन्तरिक्ष जगत के कम्पन एवं पृथ्वी सहित अन्य ग्रहों के भी सूक्ष्मतम परमाणु एक ही इकाई से विनिर्मित हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधानों से इस बात का पता चला है कि जब तूफान आने को होते हैं, मानवीय स्वभाव में आकस्मिक ऐसे परितर्वन होते हैं कि वह चिड़चिड़ा हो जाता है । स्वभाव में चंचलता आ जाती है । यदि रात हो तो भयावह सपने भी दिखाई देते हैं । हिस्टिरिया और मिरगी के रोगियों को इन दिनों रोगों के दौरे बढ़ने की सम्भावना अधिक हो जाती है । आत्महत्या की मनोवृत्ति वाले रोगी एवं निराश मनःस्थिति के व्यक्ति ऐसे समय अनायास ही अपनी इच्छा पूरी करने में प्रवृत्त होते देखे गए हैं । अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को नगर में एक पर्यवेक्षण के अनुसार गहरे कुहासे के छाने पर आत्महत्या करने वालों की संख्या उन दिनों एकाएक दस गुना बढ़ जाती है । मानवीय स्वभाव में निरंकुशता का प्रादुर्भाव होने लगता है । बलात्कार एवं अपराधों की संख्या में वृद्धि हो जाती है। जब बैरोमीटर का पारा निम्नतम बिन्दु पर होता है तब तूफान आने की सम्भावना बढ़ने लगती है एवं चोरी-डकैती आदि की घटनाओं में वृद्धि का क्रम आरम्भ हो जाता है।

मानव मस्तिष्क ही नहीं, प्राणी भी इन मौसम सम्बन्धी परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं । चिड़ियाएँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने घोंसलों को छोड़कर आकाश में मँड़राने लगती हैं । मछलियाँ अपने आप मछेरों के जाल में फँस जाती हैं । गायें अपने बन्धन तोड़कर भागने लगती हैं । प्रकृति की व्यवस्था में होने वाले इन असन्तुलनों का प्रभाव समान रूप से सभी पर पड़ता है । भले ही प्रभावित होने वाले जीवधारी इस अव्यवस्था के लिये सीधे उत्तरदायी न हों ।

वस्तुतः मानव इस पृथ्वी पर एकाकी नहीं है । अपने हर प्रयास के लिये वह परावलम्बी है । जड़-चेतन जगत के अन्तराल में असंख्यों ऐसी शक्तियाँ कार्य कर रही हैं, जिनमें से कुछ की ही जानकारी मनुष्य को है । जीवधारियों के हर क्रिया-कलाप का प्रभाव अन्य प्राणियों पर, वातावरण पर, मौसम पर तथा इस सृष्टि के सन्तुलन पर पड़ता है । इन सब परिवर्तनों का प्रभाव जब उलट कर हमले करता है तब प्रकृति की दण्ड-व्यवस्था अथवा अधिक जागरूकता, सहनशीलता एवं आत्मरक्षा की प्रबल पुरुषार्थ परायणता के रूप में सभी को इसे शिरोधार्य करना पड़ता है ।

प्रकृतिगत असन्तुलनों की चर्चा करते हुए डॉक्टर पीटर्सन लिखते हैं कि पुरातन युग के चिकित्सक रोग निदान और उपचार प्रक्रिया में मौसम के परिवर्तनों का पहले से ही अनुमान कर तदनुरूप व्यवस्था बनाते थे। उन्हें मौसम के कारण स्वास्थ्य और शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों की किसी न किसी रूप में जानकारी थी । उनके अनुसार, ''भारत में अन्तरिक्ष विज्ञान तथा मौसम विज्ञान के सन्दर्भ में मनुष्य के शारीरिक विकास एवं मानसिक सक्रियता को जिस प्रकार महत्ता दी जाती रही है, वह अकारण नहीं है । इसे अन्धश्रद्धा नहीं, वरन् विशुद्ध वैज्ञानिक तथ्य माना जाना चाहिये ।'' स्वयं डॉ० पीटर्सन इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि रोगियों पर मौसम परितर्वन की सुनिश्चित प्रतिक्रिया होती है ।

यूगोस्लाविया के भू-भौतिक विशेषज्ञों का मौसम में होने वाले असामान्य परिवर्तनों के सन्दर्भ में कहना है कि जब सौर-मण्डल और पृथ्वी के झुकाव में थोड़ा भी परिवर्तन होता है तो मौसम में भी भारी उथल-पुथल होती है । ससेक्स विश्वविद्यालय के डॉ० जॉन ग्रिविन का कथन है कि सौर धब्बों की स्थिति में बदलाव होने से वायुमण्डल में कई अप्रत्याशित परिवर्तन होते हैं । इस प्रकार की हलचलें सौर-जगत में इन दिनों स्पष्टतया दिखाई दे रही हैं ।

ब्रिटेन के मौसम विशेषज्ञ आर्थर मेन्किन्स परमाणु परीक्षणों को वातावरण के समस्त असन्तुलनों का कारण मानते हैं । अतिवृष्टि, सूखा, भूस्खलन एवं भूकम्प की बढ़ती घटनाओं के पीछे उनने रेडियो विकिरण को प्रमुख कारण बताया है । इन दिनों होने वाले मौसम परिवर्तन अप्रत्याशित से लगते हैं, पर जब परोक्ष पर दृष्टि डाली जाती है तो इनकी पृष्ठभूमि भी स्पष्ट समझ में आने लगती है ।

पिछले वर्ष अमेरिका के कई नगरों में वायुमण्डल का तापमान हिमबिन्दु से भी २० डिग्री सेण्टीग्रेड नीचे चला गया । मास्को में इतनी बर्फ पड़ी है कि विगत सौ वर्षों का रिकॉर्ड टूट गया । इस स्थिति को देखते हुए अमेरिका के प्रसिद्ध मौसम विज्ञानी डॉ० रॉबर्ट जेस्ट्रा का कथन है कि द्वितीय वर्फ युग के शीघ्र आने की सम्भावना है । प्राप्त इतिहास के अनुसार एक हजार वर्ष पूर्व अमेरिका को हिमयुग के मध्य होकर गुजरना पड़ा था । जहाँ इतनी अधिक ठण्ड इन देशों में पड़ी, वहीं पश्चिम आस्ट्रेलिया में तापक्रम एक सौ पच्चीस डिग्री सेण्टीग्रेड तक रिकॉर्ड किया गया ।

ये सारे वैज्ञानिक तथ्य चेतावनी देते हैं कि मनुष्य को यथाशीघ्र वस्तुस्थिति से अवगत हो जाना चाहिये । मौसम के बदलते परितर्वन एवं उनकी प्रतिक्रियास्वरूप शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की विकृतियाँ व्यक्ति को वैभव प्राप्ति हेतु किये जाने वाले पुरुषार्थ के लिये नया चिन्तन करने पर विवश करती हैं । उचित यह है कि अपने ऊपर आने वाले संकटों से बेखबर न रहा जाय । सम्भावित प्रतिकूलताओं को पहले से ही सोच कर यह निर्धारित किया जाय कि इनसे बचाव के लिए क्या किया जा सकता है । व्यक्ति को अच्छे से अच्छे की आशा करनी चाहिये, पर बुरे से बुरे के प्रति असावधान नहीं रहना चाहिए । विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करके आधुनिक मानव सफलताओं के प्रति आशान्वित तो रहता है, पर यह प्रयास एकांगी है, यदि वह अध्यात्म का दूसरा पक्ष अपनाने के लिये तैयार न हो ।

मनुष्य अपनी उत्कृष्टता, योग्यता बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील रहे । पराक्रम में कमी न आने दे । साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही यह भी ध्यान रखे कि सामाजिक परिस्थितियाँ तथा अदृश्य की गतिविधियाँ भी उसे प्रभावित करती हैं । सच तो यह है कि अदृश्य की हलचलें कर्म विपाक की तरह ही पृथ्वी के वातावरण तथा प्राणियों की स्थिति पर छाई रहती है ।

अदृश्य के सम्बन्ध में कुछ करने में आमतौर से मनुष्य अपने को असहाय पाते हैं, पर बात ऐसी है नहीं, अध्यात्म के प्रयोग विश्व चेतना के साथ मिलकर ऐसे परिवर्तन कर सकते हैं जिससे प्रकति की हलचलों को प्रतिकूलता से मोड़कर अनुकूलता में परिवर्तित किया जा सके ।

भविष्य इस प्रकार का उभरेगा

समतल भूमि पर मध्यम चाल से चलता हुआ मनुष्य मंजिल पार करने में आवश्यक समय तो लगा लेता है पर यात्रा बिना थकान वाली और सुरक्षित रहती है । यदि वह नीचे खाई खन्दक में गिरने पर उतारू हो, मिनटों में लुढ़कता-पुढ़कता सैकड़ों गज गहरे खड्ड की गहराई में पहुँच सकता है । मध्यम चाल स्वाभाविक है और बेतहाशा दौड़ अस्वाभाविक । ऐसी गति अपनाने वालों की थोड़ी सी देर में सांस फूलने लगती है और थक कर चूर हो जाते हैं । समय चक्र के सम्बन्ध में भी यही बात है, उसे क्रमबद्ध रूप से पार करना ही हितकर है ।

पिछली कुछ शताब्दियों में प्रगति के नाम पर हर क्षेत्र में भारी छलांगें लगाई गई हैं । आरम्भ में उस आधार पर बड़ी सफलता का भले ही अनुमान लगाया गया हो पर समय बीतते-बीतते परिणाम सामने आ गये और अतिवाद अपनाने की प्रतिक्रिया सामने आ उपस्थित होने लगी ।

जब बारूद का आविष्कार नहीं हुआ था तब थोड़े युद्ध होते रहते थे और उनका फैसला भी जल्दी ही हो जाता था । बारूद का परिष्कृत स्वरूप डाइनामाइट जब युद्ध प्रयोजनों में प्रयुक्त होने लगा तो द्वितीय विश्व युद्ध और तृतीय विश्व युद्ध की विभीषिका ने विकराल रूप धारण कर लिया । असीम धन-जन की हानि हुई । भीमकाय कारखानों का उत्पादन खपाने के लिए उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद के विस्तार का सिलसिला चल पड़ा और संसार भर में तनाव का, पिछड़ेपन का, अनाचार का बोलबाला दीख पड़ने लगा । वायु ,जल, भूमि, आकाश, पाताल ऐसे प्रदूषण से भरने लगे जो अन्ततः प्राणी समुदाय के लिए प्राणनाशक ही हो सकता था । ऊर्जा का अविराम उपयोग तापमान बढ़ाता जा रहा है । उसके आधार पर हिमखण्ड पिघल पड़ने, समुद्र में बाढ़ आने, हिमयुग लौट पड़ने, आकाश का 'ओजोन' व रक्षा कवच फट जाने जैसे अनेकों संकट अपनी पूर्व-सूचना देने लगे । यह समस्त कुचक्र तथा कथित प्रगतिशीलता की धुरी से बँधे हैं । इनका विस्तार पिछली कुछ ही शताब्दियों में हुआ है, कारण कि वैज्ञानिक आविष्कारों और उनके मनमाने उपयोग की धमा-चौकड़ी इसी बीच मची है ।

समय के पर्ववेक्षक से लेकर सामान्य बुद्धि वाले तक को यह अनुभव होता है कि तथाकथित प्रगति का उद्धत उपयोग नशा पीने की तरह अवांछनीयता अपनाने में हुआ है । फलतः शारीरिक अस्वस्थता, मानसिक उद्विग्नता, आर्थिक अभावग्रस्तता, परिवारिक अन्यमनस्कता और सामाजिक क्षेत्र में उद्दण्डता की बेतरह अभिवृद्धि हो चली है । फलतः जिस ओर भी नजर उठाकर देखा जाता है वर्तमान और भविष्य विपत्तियों से घिरा हुआ ही दीखता है । लगता है कि यही स्थिति देर तक चलती रही तो महाविनाश ही हाथ रह जायगा ।

स्मरण रखने योग्य यह तथ्य है कि इस सुन्दर सृष्टि का नियन्ता कोई असाधारण दूरदर्शी है । वह मनुष्य को एक सीमा तक उद्दण्डता अपनाने की भी छूट देता है ताकि उसके दुष्परिणामों को देखते हुए अपनी समझ में आवश्यक सुधार परिवर्तन कर सके, पर जब सभी मर्यादायें तोड़ फेंकी जाती है तो सुधारने के लिए वही शक्ति हस्तक्षेप करती है जिसने असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए शपथपूर्वक वचन दिया हुआ है ।

अगले दिनों यही होने जा रहा है । निकट भविष्य में एक ऐसा तूफान आ रहा है जो अनौचित्य के स्थान पर औचित्य की स्थापना कर सके । उलटे को उलट कर सीधा कर सके ।

यह भूल सुधार की बेला है । इसे प्रायश्चित के लिए पड़ने वाला दबाव भी कह सकते हैं, अपनायी गयी अवांछनीयता को छोड़ने के लिए बाधित करने वाला प्रतिकार भी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुत विकृतियों में से प्रत्येक को पतन की दिशा छोड़कर उत्थान का मार्ग अपनाना होगा । ध्वंस के निमित्त लगी हुई शक्ति का सृजन के लिए नये सिरे से निर्धारण करना होगा । इस परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया को समय का परिवर्तन या युग परिवर्तन कहा जा सकता है। त्रेता में रामराज्य के रूप में सतुयग की वापसी सम्भव हुई थी। द्वापर में अवांछनीय बिखराव को समेट कर सुव्यवस्थित विशाल भारत की संरचना हुई थी और सुख-शांति का समय फिर वापस लौटा था । इन दिनों भी प्रायः उसी की पुनरावृत्ति होने जा रही है । सूर्य सदा अस्त ही नहीं रहता । डरावनी और असुविधाओं से भरी रात अनन्त नहीं है, उसका समापन होकर ही रहता है। प्रभात का अरुणोदय भी अपने समय पर उगकर रहता है । इन दिनों इसी स्तर की संधिबेला है । ऊषाकाल की लालिमा को उभरने और ऊँची उठने का आभास इन्हीं क्षण में पूर्वांचल को शोभायमान करते देखा जा सकता है ।

परिवर्तन की बेला में सर्वप्रथम आबादी घटाने की आवश्यकता पड़ेगी । अन्यथा प्रगति प्रयास कितने ही बढ़े-चढ़े क्यों न हों वे आवश्यकता की तुलना में कम ही पड़ते जायेंगे । पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा में वे आपस में ही लड़ मर कर महाविनाश के गर्त में गिरेंगे । तरीके जो भी अपनाये जायें आबादी को नियन्त्रित किये बिना कोई गति नहीं । समस्याओं का कहीं समाधान नहीं । ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संयम, बचाव आदि जिससे जो बन पड़े, उसे यह सीखना और सिखाया जाना चाहिए कि शान्ति और प्रगति का समय वापस लाने के लिए प्रजनन को जिस प्रकार भी बन पड़े निरुत्साहित किया जाना चाहिए ।

अगले दिनों भीमकाय कारखाने छोटे कुटीर उद्योगों का रूप अपना कर गाँव कस्बों में बिखर जायेंगे । तभी प्रदूषण रुकेगा और तभी हर हाथ को काम और हर पेट को रोटी मिलने का सुयोग बनेगा ।

हर किसी को औसत नागरिक स्तर का निर्वाह स्वीकार करना पड़ेगा । अन्यथा विलास, दर्प, अपव्यय, प्रदर्शन की अंहकारिता के लिए नीति और अनीति से बहुत जोड़ने, जमा करने और खर्चने की हविश में जिन्दगियाँ खप जायेंगी । सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धान्त व्यवहार में उतरने पर ही यह सम्भव होगा कि ऊँचे टीले नीचे झुकें और नीचे खाई खन्दकों को भरकर समतल का सृजन करें । कृषि उद्यान और हरे मैदान और नगर, उद्योग आदि ऐसी ही भूमि की तो अपेक्षा करते हैं । अमीरों और गरीबों की बीच की दीवार टूटते-टूटते वे विसंगतियाँ भी मिटेंगी जिनके कारण जाति वंश के लिंग भेद के मनुष्य-मनुष्य के बीच भारी असमानता दीख पड़ रही है।

आधी आबादी नारी के रूप में मुद्दतों से क्रीत-दासी की तरह बंधुआ मजदूरों जैसा परावलम्बी जीवन जीती रही है । अगले दिनों वह पूर्ण मानवाधिकार सम्पन्न स्तर को उपलब्ध कर सकेगी । इसका शुभारंभ तो सूर्योदय के देश जापान से हो ही चुका है । एशिया, चीन, इजरायल, बलगारिया आदि में उसे पहले से ही अधिकार प्राप्त हैं । यदि यह हो गया तो कमाऊ हाथ दूने हो जायेंगे और किसी को किसी पर लदने और किसी को किसी का भार वहन करने की आवश्यकता न पड़ेगी । सभी एकता की स्थिति में रहते हुए स्नेह सहयोग का रसास्वादन कर सकेंगे । प्रगति भी देखते-देखते दूनी हो चलेगी ।

भाषा, क्षेत्र, सम्प्रदाय, प्रचलन की विभिन्नता ने सार्वभौम एकता में भारी व्यवधान खड़ा कर रखा है । अगले दिनों सभी विश्व नागरिक होंगे । विश्व मानव के रूप में विकसित हुए सार्वभौम सभ्यता की छत्रछाया में ही मनुष्य हिल-मिल कर रह सकेंगे । मिल बाँटकर खाते हुए हँसती-हँसाती जिन्दगी जी सकेंगे ।

युग की आवश्यकता के अनुरूप नागरिक और वातावरण विनिर्मित करने वाली शिक्षा एवं साहित्य का नये सिरे से निर्माण होगा । उससे प्रभावित हुए बिना मनुष्य समाज का एक भी सदस्य बाकी न रहेगा । विद्यालयों के समकक्ष ही पुस्तकालयों का भी महत्त्व होगा। अध्यापकों की तरह साहित्य सृजेता भी जन-मानस को उच्च स्तरीय बनाने में समान योगदान देंगे ।

प्रत्येक क्रिया-कलाप में सहकारिता आधारभूत व्यवस्था बनेगी । परिवार स्तर की निर्वाह पद्धति हर कहीं अपनाई जायेगी । उद्योग, मनोरंजन, उपभोग, विनिमय आदि में सहकारिता को अधिकाधिक स्थान दिया जायेगा । कोई अपने को एकाकी अनुभव न करेगा, 'हम सब के सब हमारे' का मंत्र हर किसी के मन मानस में गूंजता रहेगा। इसी आधार पर वर्तमान का अनावरण तथा भविष्य का निर्धारण ढल कर रहेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शासन को लोक जीवन में कम से कम हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ेगी । उसका वजन पंचायती और स्वेच्छा सेवी संस्थाएँ सहकारी समितियाँ पूरा कर देंगी। अवांछनीय तत्वों का नियन्त्रण और प्रगति का संतुलित मार्गदर्शन ही उसका प्रमुख कार्य रह जायेगा । चुनाव की पद्धति अति सरल और बिना खर्च वाली होगी । मौलिक अधिकारों के नाम पर किसी को असामाजिक कार्य करने की छूट न मिलेगी । दुर्बलों को न्याय मिलना कठिन न होगा । क्योंकि यथार्थता जाँचने की जिम्मेदारी पूरी तरह शासन संस्था वहन करेगी । अनुशासन को सर्वत्र मान्यता मिलने से भ्रष्टाचार की गुंजायश न अफसर के लिए रहेगी न जनसाधारण के लिए ।

वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, आर्चीटेक्ट, मनीषी, साहित्यकार, कलाकार, जैसी प्रतिभाएँ सार्वजनिक सम्पत्ति बन कर रहेंगी । वे अपनी विशेष योग्यता का विशेष मूल्य माँगने का दुस्साहस न करेंगी, कारण कि उन्हें अधिक समर्थ सुयोग्य बनाने में वर्तमान समाज एवं चिरकालीन संचित ज्ञान-सम्पदा का भी तो भरपूर लाभ मिलेगा । अकेला रह कर तो कोई व्यक्ति वनमानुष या नर वानर से अधिक कुछ बन ही नहीं सकता । जिसे अधिक मिला है उसे लोक सेवा का अधिक श्रेय लेकर ही संतोष करना चाहिए ।

व्यक्ति को समाज का एक अविच्छिन्न घटक बन कर रहना होगा । मर्यादाओं का पालन और वर्जनाओं का अनुशासन शिरोधार्य करना होगा । उच्छृंखलता बरतने का न कोई प्रयास करेगा और न समुदाय उसे वैसा करने देना सहन करेगा । अपना सुख बाँटना और दूसरों का दुःख बँटाना, सही रहना और सही रहने देना, इसी में जियो और जीने दो का सिद्धान्त पलता है । मानवीय गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने में ही मनुष्य का गौरव, सम्मान एवं स्तर बनता है । यह मान्यता अगले दिनों हर किसी को सच्चे मन से अपनानी होगी ।

इन सिद्धान्तों का कहाँ, किसे प्रकार, कौन कैसे क्रियान्वयन करेगा ? यह परिस्थितियों पर निर्भर रहेगा, समस्त संसार में उच्च सिद्धान्त तो एक तरह अपनाये जा सकते हैं, पर उनके क्रियान्वयन में समयानुसार ही निर्धारण हो सकता है । इसलिए क्रियाकलापों की अपनी अपनी स्थिति के अनुरूप ही व्यवस्था बन सकती है । यह सुनिश्चित है कि भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल एवं सुखद सम्भावनाओं से भरा पूरा होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तर्ग्रही हलचल और विश्वव्यापी उथल-पुथल

दृश्यमान संकट के मूल में सक्रिय परोक्ष हलचलें

ऋग्वेद १/११५/१ में सूर्य को विश्व की आत्मा बताते हुए कहा गया है -''सूर्य आत्मा जगत स्थुषश्च''। जिसका तात्पर्य है कि इस धरातल पर जो चेतना एवं हलचल है, उसका उद्‌गम स्रोत सूर्य है । उससे हमें मात्र ताप और प्रकाश ऊर्जा ही नहीं मिलते, वरन वह सब कुछ उपलब्ध होता है जो चेतना से सम्बन्धित हैं ।

सूर्य इस संसार को अपनी आभा और ऊर्जा से अनुप्राणित करता रहता है, यह उसकी उदारता है । जिस दिन वह अपनी रोशनी और ऊष्मा बिखेरना बन्द कर दे, उस दिन शायद यह सृष्टि भी बची न रहने पाय । सूर्य का एक नाम 'सविता' भी है । सविता अर्थात् जीवनाधार । इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सूर्य में सृष्टि को बनाये रखने की शक्ति है । वराहमिहिर ने अपने ज्योतिषशास्त्र में दिनमान का एक नाम ''कलात्मा'' रखा है । अर्थात् ''समय की आत्मा'' क्योंकि उनके अनुसार समय का अस्तित्व भौतिक जगत में सूर्य के कारण ही है । यदि प्रभाकर न होता, तो दिन रात सुबह शाम, पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह जैसी वेलाओं का ज्ञान भी मनुष्य को न होता । आप्त वचनों में दिवाकर को ''त्रयी तनु'' अर्थात तीन शरीरों वाला तीन गुणों वाला कहा गया है । इसमें सृष्टि, स्थिति और संहार की तीनों क्षमताएँ होती हैं । इसी बात का समर्थन करते हुए डा० गोपीनाथ कविराज अपने ''सूर्यविज्ञान रहस्य'' नामक निबन्ध में लिखते हैं कि सूर्य-रश्मियों से पदार्थों का सृजन, संहार और रक्षा तीनों सम्भव हैं । इसी के कारण सृष्टि-संरचना शक्य हो सकी है, वही इसे धारण किये हुए है और निरन्तर उस ऊर्जा को प्रवाहित करने में निरत है, जिससे यहाँ के जीव-जन्तु, वृक्ष-वनस्पति व पदार्थ अपनी सत्ता बनाये हुए हैं और चाहे तो वह अपनी प्रचण्ड ऊष्मा से संसार को उसके पदार्थ एवं प्राणियों को क्षण मात्र में भस्मसात् कर सकता है ।

वैज्ञानिक बताते हैं कि सूर्य वर्तमान में अपने अनुदान की तुलना में अभिशाप-वर्षा, अधिक कर रहा है । उनके अनुसार सौर-कलंकों की संख्या और प्रचण्डता आजकल जितनी उग्र व अधिक हुई है, उतनी पहले कदाचित् ही कभी रही हो । विशेषज्ञों के अध्ययनों से पता चला है कि सूर्य-धब्बों का अपना एक ग्यारह वर्षीय चक्र है । इसमें वे नियमित रूप से उगते और डूबते रहते हैं । इन धब्बों का धरती के पदार्थ और प्राणियों पर सुनिश्चित प्रभाव पड़ता है- इस बात का उल्लेख वराहमिहिर ने अपनी पुस्तक ''वृहत्संहिता'' में विस्तारपूर्वक किया है । इसे आज के विज्ञान विशारद भी स्वीकार करते हैं । वे यह मानते हैं कि इन दिनों यहाँ के मौसम और पर्यावरण में जो आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है उसमें इन सौर-कलंकों का महत्त्वपूर्ण हाथ है । डा० ए०जी० पीयर्स ने अपनी पुस्तक ''ए टैक्स्ट बुक ऑफ एस्ट्रोलॉजी'' में लिखा है कि अनेक वर्षों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि सौर-धब्बों की संख्या और गतिविधियाँ बढ़ने-घटने से वर्षा प्रभावित होती है । उनके अनुसार जब ये बढ़ते हैं तो अनावृष्टि की स्थिति पैदा होते देखी गई है और घटने पर अतिवृष्टि । पीयर्स के तथ्यान्वेषण का समर्थन इन दिनों की परिस्थितियाँ भी कर रही हैं। आजकल सूखे के कारण भुखमरी की जो विकट स्थिति विश्व के कुछ हिस्सों में पैदा हुई है, वह सर्वविदित है । विशेषकर सूडान एवं अन्य अफ्रीकी देशों में दशा अत्यन्त दयनीय है । लोग भूख के कारण या तो दम तोड़ रहे हैं अथवा अस्थिपिंजर बन कर जीवन की अन्तिम साँसें गिनने पर विवश हैं । एरिजोना यूनिवर्सिटी के डगलस राइस ने इसी बात को वृक्ष वलयों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर अध्ययन कर सिद्ध करने का प्रयास किया है । वे कहते हैं कि जिस भाग में वृक्ष-वलयों के बीच की दूरी कम हो वह यह दर्शाता है कि उन दिनों पेड़ को सूखे का सामना करना पड़ा, जबकि परस्पर की दूरी अधिक होने पर इस बात की सुनिश्चितता होती है कि उस दौरान वनस्पतियों को पर्याप्त वर्षा-जल प्राप्त हुआ । उनके अनुसार वनस्पति वलयों का सीधा सम्बन्ध अनावृष्टि और अतिवृष्टि से है और बरसात (सूर्य का वरुण से गहन सम्बन्ध होने के कारण) सौर-कलंकों से गहन तादात्म्य रखती है, अतएव रिंगों की पड़ताल के आधार पर सौर-गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है और लगभग विगत तीन हजार वर्षों का मौसम सम्बन्धी अनुमान लगाया जा सकता है ।

पिछले दिनों तक सूर्य एवं दूसरे खगोलीय पिण्डों का प्राणी एवं वनस्पतियों पर प्रभाव ज्योतिषशास्त्र तक सीमित था तथा उसी का विषय माना जाता था, पर अब उस पर विज्ञान ने भी अपनी मुहर लगा दी है ओर यह स्वीकार कर लिया है, कि उनका सुनिश्चित असर पदार्थ और प्राणियों पर पड़ता है । इसी आशय का मन्तव्य प्रकट करते हुए मूर्धन्य वैज्ञानिक एवं "ब्रिटिश एसोसिएशन फार दि एडवान्समेण्ट ऑफ साइन्स" के सदस्य अरनाल्ड डब्ल्यू० मेयर अपनी कृति "एस्ट्रोलॅजिज प्लेस इन दि-वर्ल्ड ऑफ साइन्स" में लिखते हैं कि हमारे शरीर में जो अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ हैं, वह पर्यावरण में हाने वाले रासायनिक परिवर्तनों के आधार पर स्वयं को समायोजित करती रहती हैं और छोटे-मोटे बदलावों से प्रायः अप्रभावित बनी रहती हैं, किन्तु जब कोई बड़ा परिवर्तन पर्यावरण में घटित होता है, तो वे प्रभावित हुए बिना नहीं रहती हैं । इनके प्रभावित होते ही व्यक्ति की इच्छा, आकांक्षा, भावना, सम्वेदना में भारी हेर-फेर दिखायी पड़ने लगता हैं । सौर-सक्रियता के दौरान चूँकि शरीर-विद्युत और पृथ्वी की चुम्बकीयता में बड़ी उथल-पुथल होने लगती है, अतः शरीर-ग्रन्थियों पर उसका निश्चित असर पड़ता है और व्यक्ति का व्यवहार असामान्य हो जाता है । विश्व के प्रख्यात भूगोलवेत्ता एवं येल यूनिवर्सिटी के प्रो० हण्टिंगटन भी दीर्घकाल के अपने अध्ययन के उपरान्त इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि सौर धब्बों की अवधि में मानवी व्यवहार असामान्य हो जाता है ।

प्रख्यात भारतीय ज्योतिर्विद बी०वी० रमण ने अपने ग्रन्थ "प्लैनेटरी इन्फ्लुएन्सेज ऑन ह्यूमन अफेयर्स" में कुछ इसी प्रकार के विचार प्रकट किये हैं । वे उक्त पुस्तक के "प्लैनेट्स एण्ड मैन" नामक अध्याय में लिखते हैं कि सन् १७८९, १८३०, १८४८, १८७० की फ्रांसीसी क्रान्ति-१९०६ एवं १९१७ की रूसी क्रांति-१९३७ की स्पेन क्रांति तथा १९५६ में हंगरी की देशव्यापी उथल-पुथल को सौर सक्रियता से जोड़कर आधुनिक वैज्ञानिकों ने वस्तुतः कोई नया अन्वेषण नहीं किया, वरन् वर्षों पूर्व वराहमिहिर द्वारा स्थापित तथ्य की ही पुनरुक्ति की है । आज की परिस्थितियाँ भी वराहमिहिर के अनुसंधान की पुष्टि करती हैं । वर्तमान में विश्वभर में जो भीषण मार-काट, उथल-पुथल और अराजकता मची हैं , उसे असाधारण और अभूतपूर्व ही कहा जा सकता है ।

सन् १९४७ के बाद सूर्य कलंकों के तीन परम वर्ष क्रमशः १९५८, १९६८/६९ एवं १९८० बीत चुके हैं । अन्तरिक्ष विज्ञानियों के अनुसार तब सौर कलंकों की संख्या १६० प्रतिवर्ष थी जो सन् ८०-८१ में २०० के करीब पहुँच गयी । बीच के वर्षों में इनकी संख्या प्रायः ६० से ८० के मध्य रही है । इसी अवधि में भारत चीन युद्ध, भारत पाक युद्ध, अरब इजराइल युद्ध व यूरोप व अमेरिका में व्यापक गृह युद्ध की स्थिति रही है ।

पिछले दिनों इन सूर्य धब्बों की संख्या तेजी से उभरी है और ऐसा अनुमान है कि अगले सात-आठ वर्षों में यह और बढ़ेगी व इनकी चरम स्थिति १९९८-९९ में देखी जाएगी । ऐसे अवसरों पर युद्धोन्माद भड़कने से लेकर कई प्रकार की दुर्घटनाओं में अभिवृद्धि की आशंका है, साथ ही कहीं-कहीं आश्चर्यजनक उलट-पुलट भरे परिवर्तनों की भी । अभी-अभी विगत दो वर्षों में हमने पूर्वी ब्लॉक में साम्यवाद के हटने व उदारवाद के आने, बर्लिन की दीवार टूटने व जर्मनी के एकीकरण के रूप में परिवर्तन देखे हैं । विगत तीन माह में एक भयावह खाड़ी युद्ध की विभीषिका से सारा विश्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुदाय गुजर चुका है । बात यहाँ थमी नहीं है । राष्ट्रों के मध्य तनाव से लगता है पता नहीं कब पुनः विश्व स्तर पर युद्ध भड़क उठे ।

ऐसी भयंकर स्थिति सम्पूर्ण धरा में पहले कभी रही हो इसका कोई उदाहरण और प्रमाण इतिहास में नही मिलता । विज्ञानवेत्ताओं का यह भी कथन है कि इन दिनों सौर धब्बों की जो प्रचण्डता हैं, वैसी उग्रता पिछले समय में कभी रही हो, इसके भी साक्ष्य उपलब्ध रिकार्डों से प्राप्त नहीं होते । ऐसी स्थिति में यह सुनिश्चित जान पड़ता है कि बढ़ी-चढ़ी सौर-लपटों का पृथ्वी के जनजीवन को अस्त व्यस्त और क्षतिग्रस्त करने में सीधा हाथ है ।

यह सूर्य का एक पहलू हुआ । इसके इस विनाशकारी पक्ष के कारण ही इसका नाम ''मार्तण्ड'' पड़ा । महर्षि गोबिल ने इसका अर्थ करते हुए कहा है कि मार्तण्ड वह है, जो ध्वंस में संलग्न हो । इस दृष्टि से सूर्य का उक्त नाम सार्थक है, किन्तु जो जगत की आत्मा हो वह ऐसी विनाशलीलाएँ करे, यह बात गले नहीं उतरती और यदि यह सत्य है तो इसके पीछे का तथ्य क्या हो सकता है? उत्तर विज्ञान का क्रिया-प्रतिक्रिया वाला सिद्धान्त देता है। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों तक और कुछ हद तक आज भी विज्ञान का बुद्धिवाद समस्त संसार को जड़ मानता रहा और किसी नियामक सत्ता एवं उसकी प्रतिक्रिया अथवा व्यवस्था से सर्वथा इन्कार करता रहा है ।

एकेश्वरवादियों की तो यह दृढ़ मान्यता है कि इस प्रकृति को मनुष्यों के भोग विलास के लिए ही भगवान ने विनिर्मित किया है बस फिर क्या था, ''ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्'' का लोकायत दर्शन चल पड़ा और जनमानस पर वह इस कदर छाया कि प्रकृति और संसाधनों का बेतरह दोहन आरम्भ हो गया । क्रिया जब एक सीमा को पार कर गई तो निसर्ग ने प्रतिक्रिया दिखाना आरम्भ किया। सूर्य समेत सभी ग्रह-नक्षत्र छेड़े गये भुजंग की तरह हुंकारने और फुसकारने लगे । दिनमान चूँकि सौरमण्डल का सबसे समर्थ और धरती से समीप का तारा है, अतः अन्यों की तुलना में उसकी प्रतिक्रिया भी अधिक दुर्द्धर्ष दिखायी पड़ी । प्रसिद्ध खगोलशास्त्री स्टीटसन के अनुसार आजकल सूर्य से पराबैंगनी किरणें पहले की तुलना में ३० प्रतिशत अधिक निःसृत हो रही हैं । वे कहते हैं कि इसका यह असाधारण परिमाण ही प्रस्तुत समय और समाज में व्यतिक्रम के लिए जिम्मेदार है । उनका कथन है कि यदि उक्त मात्रा में ५ प्रतिशत की भी कमी की जाय, तो मनुष्य मौसम के व्यवहार में सुधार की काफी सम्भावना हो सकती हैं ।

यह तो वैज्ञानिकों का अनुमान है । अध्यात्मवादियों की दृष्टि में यह अनुमान मूर्तिमान तब तक नहीं हो सकता, जब तक चिन्तन और कर्तव्य में बदलाव नहीं आ जाय । उनके अनुसार मनुष्य जब तक बुद्धिवाद और जड़वाद का पल्ला पकड़े रहेगा, तब तक उसे ऐसी ही विसंगतियों व विपदाओं का सामना करना पड़ेगा । उबार तो इनसे अध्यात्मवादी, दृष्टिकोण ही सकता है । ज्ञातव्य है कि भारतीय संस्कृति में, जड़ में भी चेतन की उपस्थिति की अवधारणा है । इस आधार पर प्राचीन समय में समस्त ग्रह-पिण्डों को देवता माना और पूजा जाता था । कालक्रम में विज्ञान का जैसे-जैसे विकास हुआ, उसने जनमानस की इस श्रद्धा को अन्धभक्ति कहकर तोड़ दिया । चन्द्रमा, मंगल, बुध व वृहस्पति पर उसने अपने यान एवं उपग्रह भेजे और प्रकारान्तर से यही सिद्ध किया कि वे कोई देवता नहीं, वरन् वीरान और बंजर भूखण्ड मात्र हैं । आस्था टूटी तो उन्हें उपास्य मानने की परम्परा भी धीरे-धीर समाप्त होती हुई लुप्त हो गई । फलतः प्रतिदिन जो अर्घ्य और यजन की आहुतियाँ श्रद्धासिक्त हृदय से वे पाते थे, वह मिलने बन्द हो गये । परिणाम हमारे सामने है । जिन उपक्रमों से वातावरण पुष्ट और देवता तुष्ट होते थे, जब वे ही पाखण्ड माने जाने लगे तो देवों से अनुदान की आशा कैसे की जाय ? स्थिति यहीं तक सीमित होती तो किसी कदर सन्तोष किया जा सकता था, किन्तु जड़वाद ने जनमानस की निष्ठा को इस हद तक नष्ट-भ्रष्ट किया कि प्रणेताओं और अनुयायियों की स्वयं की बुद्धि भी जड़ हो गई । वे यह भूल गये कि तथाकथित जड़ भी एक सीमा तक ही छेड़छाड़ बरदाश्त करते हैं । इसके उपरान्त अपनी प्रतिक्रिया दिखाना प्रारम्भ कर देते हैं । बस, इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्रुटि ने उन्हें प्रकृति से छेड़खानी के लिए प्रोत्साहित किया और आज वह चरमोत्कर्ष पर है। इसकी दुःखद परिणति भी निसर्ग के-खगोलीय पिण्डों के दुष्प्रभाव के रूप में हमारे सम्मुख है । वे अब अनुदान की जगह अभिशाप बरसाते अधिक देखे जा रहे है । विशेषकर सूर्य के सम्बन्ध में विशेषज्ञों की यह मान्यता दृढ़ हुई है कि इन दिनों वह ज्यादा कुपित हो गया है ।

खगोल-विज्ञानियों का कहना है कि पिछले ढाई सौ वर्षों में इतने तीव्रतम सौर कलंक कभी नहीं देखे गये, जितने कि इस सदी के उत्तरार्द्ध की अवधि में देखे जायेंगे । ''वाशिगंटन पोस्ट, में छपे इस समाचार का हवाला देते हुए हिन्दुस्तान टाइम्स के गत २९ अगस्त १९८८ के अंक में कहा गया है कि सौर कलंकों की इस प्रक्रिया में इतनी प्रचण्ड ऊर्जा निःसृत होगी, जो मौसम असन्तुलन से लेकर मानसिक विक्षोभ तक की व्यापक भूमिका सम्पन्न करेगी । इस दृष्टि से अब से लेकर आगामी ६ वर्षों के असाधारण घटनाक्रमों से भरा पूरा होने की आशा की जाती है ।

भू-चुम्बकत्व में गिरावट- एक अशुभ संकेत

भू-वैज्ञानिकों का मत है कि पृथ्वी के चुम्बकत्व में परिवर्तन से भी संसार में ऐतिहासिक उलट-पुलट हुए हैं । असम्भव जान पड़ते हुए भी जब उन्हें विदित हुआ कि पृथ्वी के उत्तरी तथा दक्षिणी चुम्बकीय ध्रुव भी आपस में बदलते-रहते हैं, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, कितनी ही बार उत्तरी चुम्बकीय ध्रुव दक्षिणी चुम्बकीय ध्रुव में तथा दक्षिणी उत्तरी चुम्बकीय ध्रुव में परिवर्तित होता रहा है, उनके साथ कितनी ही ऐतिहासिक घटनाएँ भी घटी हैं । शोध करने वाले विशेषज्ञों का मत है कि २५ हजार वर्ष पहले से आज की भू-चुम्बकत्व तीव्रता ५० प्रतिशत कम है । कम होने की रफ्तार बनी रही तो अगली कुछ सदियों में महाप्रलय का सामना करना पड़ सकता है ।

न्यूयार्क स्टेट यूनीवर्सिटी के प्रो० रिचर्ड यूफेन का विश्वास है कि ध्रुव परिवर्तन के समय चुम्बकीय बल क्षेत्र इतना कम हो जाता है कि उस समय अन्तरिक्ष में स्थित वात ऐलेन वेल्ट्स से सुरक्षा नही हो सकती । पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का गोलार्द्ध अन्तरिक्ष में बहुत दूर तक फैला हुआ है । यह चुम्बकीय क्षेत्र ब्रह्माण्डीय घातक किरणों को परवर्तित कर देता है । उस समय जीवधारी सौर आँधियों तथा ब्रह्माण्डीय किरणों की दशा पर निर्भर रहते हैं । ध्रुव परिवर्तन से जलवायु व मौसम में भी भयंकर परिवर्तन हो जाते हैं । उसकी चरम परिणति हिमयुगों जैसे संकटों के रूप में भी हो सकती हैं । भूगर्भ शास्त्रियों ने अपने शोध निष्कर्षों में पाया है, कि विगत कुछ दशकों से भू-चुम्बकत्व की तीव्रता में लगातार गिरावट आ रही है । ऐसा कहा जाने लगा कि आगामी २०० वर्षों में चुम्बकीय क्षेत्र पूरी तरह समाप्त भी हो सकता है । जिससे प्रलय अथवा महाप्रलय जैस संकट भी खड़े हो सकते हैं ।

इटली के मूर्धन्य भूगर्भ वैज्ञानिक ''जोसेफ'' के परीक्षणों की १९०७ में फ्राँस के वैज्ञानिक पी०एल० मरकैन्टन ने भी पुष्टि की । मरकेन्टन ने खोज की है कि ईसा पूर्व १००० वर्ष चुम्बकीय क्षेत्र सामान्य था । मरकेन्टन व फालाघिरेटर की शोध का १९४९में पुनः निरीक्षण किया गया, क्योंकि इतिहास में इतने ताजे चुम्बकीय उलट-पुलट पर वैज्ञानिकों ने विश्वास नहीं किया । इस पुनर्निरीक्षण से एक और प्रमाण मिला । इससे पता चला कि स्वीडन की चटट्ानों से मिले सबूतों के अनुसार ईसा पूर्व लगभग ८७० वर्ष पहले भी चुम्बकीय उलट-पुलट हुई थी । यह समय एसीरियन साम्राज्य के उदय एवं रोम की सभ्यता के पुष्पित-पल्लवित होने से केवल थोड़े पहले का था ।

एक चुम्बकीय परिवर्तन ईसा से लगभग ३,३०,००० वर्ष पूर्व हुआ होगा । यह समय बड़े विचित्र संयोग से वही समय था, जबकि आधुनिक मानव के उदय के प्रथम लक्षण दिखाई दिये थे । १,१०,००० वर्ष पूर्व पुनः अब ध्रुव परिवर्तन के प्रमाण मिल रहे हैं । स्वीडिश भू-गर्भवेत्ताओं ने अभी-अभी ध्रुव परिवर्तन व चुम्बकीय क्षेत्र में भयंकर उतार-चढ़ाव के सुनिश्चित सबूत खोजे हैं । उनके अनुसार ईसा से लगभग १०,००० वर्ष पूर्व या दूसरे शब्दों में अन्तिम हिम युग के ठीक अन्त में यह चुम्बकीय परिवर्तन हुआ था ।

पिछली दो शताब्दियों में यह बराबर स्पष्ट हुआ कि ध्रुव परिवर्तन (चुम्बकीय परिवर्तन) जीवधारियों के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विपत्तिकारी हो सकता है । भू-गर्भवेत्ताओं ने बड़े आश्चर्य के साथ पाया कि जब जब जीव-जातियों के विलुप्त होने की व्यापक लहर चली थी, तब तब ही चुम्बकीय ध्रुव-परिवर्तन का संयोग भी मिला । उदाहरणार्थ-प्रशान्त सागर के समुद्री जीवन की जिन आठ जीव-जातियों का लोप उन अवधियों में हुआ था, जिनमें या उनके ठीक आस पास ध्रुव परिवर्तन हुए थे ।

देखा गया है कि गर्जन-तर्जन से भरे तूफानों का आगमन पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र को एकाएक कम कर देता है । मनोविकृतियों से पीड़ित व्यक्तियों का अस्पतालों में दाखिला बढ़ जाता है और आत्म-हत्या की दर भी बढ़ जाती है । पशुओं को चुम्बकीय क्षेत्र में परिवर्तन से भूमिगत चट्टानों में उत्पन्न दाब की अनुभूति के भूकम्प के सन्निकट होने का पता चल जाता है । प्रयोग के तौर पर, दूसरे ग्रहों पर जीवन की परिस्थितियों की समानता यहाँ उत्पन्न करने व उसका प्रभाव अध्ययन करने के उद्देश्य से कुछ लोगों को दस दिन तक ऐसी प्रयोगशाला में रखा गया, जिसमें चुम्बकीय प्रभाव शून्य था । कुछ समय बाद वे लोग यह बताने में असमर्थ थे, कि बिजली का प्रकाश बल्ब टिमटिमा रहा है या नहीं ।

छोटे-छोटे जीव-जन्तु और पशु-पक्षी चुम्बकीय क्षेत्र के अनुभव से ही अपनी दिशा निर्धारण करते हैं । शान्त मौसम में तिलचिट्टे, मधु मक्खियाँ, झींगुर और बहुतसी मक्खियाँ एक विशेष दशा में ही उतर कर बैठती हैं । यदि चुम्बकीय क्षेत्र की तीव्रता बदल दी जाय तो शहद के छत्ते के ऊपर मधुमक्खियों के नृत्य का दिशा विन्यास भी बदला जा सकता है । डाक ले जाने वाले कबूतरों के साथ यदि अत्यन्त छोटे-छोटे चुम्बक के टुकड़े जोड़ दिये जायें तो वे भ्रमित होकर दिशाविहीन उड़ने लगते हैं और अपना रास्ता नहीं ढूँढ पाते । बहुत क्षीण चुम्बकीय क्षेत्र में भी प्रायोगिक तौर पर चिड़ियाओं को रखने पर वे आलसी हो जाती हैं, उनकी प्रजनन सामर्थ्य कम हो जाती है, बाल झड़ जाते हैं तथा वे जल्दी ही मर जाती हैं ।

जैसा कि तथ्यों से स्पष्ट है गत कुछ वर्षों से भू-चुम्बकत्व की तीव्रता में लगातार गिरावट आ रही है। कहा जाने लगा है कि चुम्बकीय क्षेत्र की गिरावट में तीव्रता की इस रफ्तार से आगामी दो सदी में इसका मूल्यमान शून्य के आस-पास पहुँच सकता है और जीवधारियों के लिए अस्तित्व संकट का खतरा पैदा हो सकता है ।

अमरीकी परमाणु ऊर्जा आयोग की अलबुकर्क स्थित प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने यह जानने के लिए कि सौर मण्डल की गतिविधियों का पृथ्वी पर क्या प्रभाव पड़ता है, विस्तृत अध्ययन किया । उन्होंने अपराधों एवं दुर्घटनाओं से सम्बन्धित बीस वर्षों के आँकड़े एकत्रित किए । ८८ पृष्ठों की एक लम्बी रिपोर्ट तैयार हुयी । इस रिपोर्ट का सार निष्कर्ष है कि सौर क्रियाएँ तथा चन्द्रमा की कलाएँ मानव व्यवहार तथा दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार हैं । इन वैज्ञानिकों ने सूर्य के घूमने के कारण पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में होने वाली २७ दिन के चक्र को गड़बड़ी से भी दुर्घटनाओं का सम्बन्ध जोड़ा है । गहन पर्यवेक्षण के उपरान्त मालूम हुआ कि, इस चक्र के प्रथम ७ दिन, १३वें १४वें, २०वें तथा २५वें दिन अधिक दुर्घटनाएँ होती हैं ।

मियामी यूनिवर्सिटी के दो मनोवैज्ञानिकों-आर्नोल्ड लीवर तथा कैकोलिन शेरिन ने अमेरिकन जरनल आफ साइकियाट्री में चन्द्रमा की कलाओं के मनुष्य के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन विस्तार से किया है । प्राप्त तथ्यों के अनुसार पूर्णिमा के तीन दिन पूर्व से हत्याओं आत्म-हत्याओं की घटनाओं में वृद्धि होने लगती है । पूर्णिमा के दिन वे चरम सीमा पर पहुँचती है ।

एक अन्य अध्ययन में पाया गया है कि चौदहवें महीने सूर्य और चन्द्रमा पृथ्वी पर सबसे अधिक गुरूत्वाकर्षण डालते हैं । उस अवसर पर अपराधों की संख्या बढ़ जाती है ।

अन्य ग्रहों की चुम्बकीय शक्ति के थोड़े हेर-फेर से पृथ्वी पर भारी विप्लव उत्पन्न हो जाता है । १९६० के बाद बंगाल की खाड़ी में आठ बार समुद्री तूफान आये, जिसके फलस्वरूप चार लाख व्यक्ति मारे गये । सन् १९६७ में महाराष्ट्र का कोयना नगर भूकम्प से नष्ट हो गया । १९ जनवरी, १९७५ को कांगला की घाटी किन्नौर में भीषण भूकम्प आया । उसी वर्ष चीन में आये भूकम्प से लाखों व्यक्ति मारे गये । सन् ७८ के आन्ध्र में आये साइक्लोन ने हजारों व्यक्तियों की जानें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लीं । इन सभी दुर्घटना स्थलियों का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों ने पाया कि उन स्थानों पर अन्तरिक्षीय रेडियो विकिरणों की बहुलता थी । इन स्थानों पर सूर्य ९० अंश तथा १८० अंश की राशि पर अवस्थित था। भौतिक-विद् जॉन एलसन के अनुसार सूर्य जब इन राशियों पर होता है, तो उसके सीध में पड़ने वाले भू-भाग पर तूफान, भूकम्प की घटनाएँ घटित होती हैं ।

अमेरिका के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जॉन हेनरी नेल्सन ने भी अध्ययनों द्वारा मिलता-जुलता निष्कर्ष निकाला है कि पृथ्वी अपने सौर परिवार के अन्य ग्रहों से, विशेषतः शुक्र, गुरू, शनि और मंगल पर होने वाले कम्पनों से प्रभावित होती है। जॉन हेनरी के अनुसार इन ग्रहों की विशिष्ट स्थितियाँ प्थ्वी पर चुम्बकीय तूफानों की श्रृंखला उत्पन्न कर देती हैं और मानवी चेतना को भी कुछ इस प्रकार प्रभावित करती हैं कि वह अनेकानेक कार्यों में अनजाने और अनचाहे ही प्रभावित होता है ।

सौर मण्डल की गतिविधियों का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों का निष्कर्ष है, सन् १९८० के बाद सूर्य के नाभिक में होने वाले परमाणु विखण्डन-स्फोटों की संख्या में असामान्य रूप से वृद्धि हुई है । विस्फोटों के समय उत्सर्जित होने वाले प्रकाश कण सामान्य कणों से भिन्न, बेधक तथा घातक होते हैं । कोलोरेडो-अमरीका की वेधशाला में पिछले दिनों सूर्य किरणों में से विस्फोट जन्य ऐसी तरंगें पकड़ी गयीं, जो सामान्य अल्ट्रावायलेट किरणों से भिन्न स्तर की थीं। उनमें एक्स किरणों जैसी तीव्रता एवं बेधकता थी । उसके अध्ययन से वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला कि सूर्य के जिस भाग में विस्फोट हुआ होगा, वहाँ का न्यूनतम तापक्रम एक करोड़ डिग्री सेण्टीग्रेड रहा होगा। इनका विकिरण प्रभाव वर्षों तक अन्तरिक्ष में बना रहता है । पृथ्वी के आयनोस्फियर में इन तरंगों के प्रवेश से जो खिड़कियाँ बनती हैं, वे घातक अन्तरिक्षीय कास्मिक किरणों को भूमण्डल के वातावरण में आने का मार्ग प्रशस्त करती हैं । इनसे महामारी फैलती है, कितने ही नये प्रकार के शारीरिक, मानसिक रोग पैदा होते हैं ।

सूर्य स्फोटों से अन्तरिक्ष क्षेत्र में चुम्बकीय तूफान उठ खड़े होते हैं । ये पृथ्वी के सामान्य धुरी पर चलने के क्रम में व्यतिक्रम भी पैदा करते हैं । भूगर्भ-शस्त्रियों का मत है कि सन् १९८० के बाद बढ़ती हुई भूकम्पों की श्रृंखलाओं का एक प्रमुख कारण भूगर्भ का तापक्रम बढ़ना, अन्तरिक्षीय चुम्बकीय तूफानों से प्रेरित है । जापान, चीन, मंगोलिया, हिमालय की तलहटी, ईरान, इराक, सऊदी अरब, अमरीका मध्य अमरीका, उत्तरी मध्य अफ्रीका, बांग्ला देश आदि क्षेत्रों में पिछले दशक में भयंकर तबाही मचाने वाले भूकम्पों का दौर देखा गया। २६ मई, ८३ को जापान के उत्तरी क्षेत्र में आये भूकम्प की घटना ताजी है, जहाँ हजारों की संख्या में लोगों के मरने तथा असंख्यों के घायल होने का अनुमान लगाया गया । भूकम्प विशेषज्ञों का अनुमान है, कि जितने भूकम्प १९८५ से २००० के बीच आयेंगे, उतने कभी एक शताब्दी में भी नहीं आये हैं ।

अमरीका द्वारा भेजे गये अन्तरिक्ष यानों ने शनि ग्रह के निकट से गुजरते समय वहाँ एक प्रलयकारी आँधी चलने का संकेत प्रेषित किया । नासा वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र के अनुसार शनि पर कुछ वर्षों से तेज चुम्बकीय आँधियाँ चल रही हैं । उनकी क्षमता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि ६४ हजार किलोमीटर क्षेत्र में फैली वे तीव्र तूफानी तरंगें पृथ्वी को डेढ़ से भी अधिक बार लपेट लेने तथा उसे तोड़-मरोड़कर महाप्रलय सी परिस्थितियाँ पैदा कर सकने में समर्थ है । उनका मत है कि शनि ग्रह का बढ़ता असन्तुलन प्रकृति विपदाओं का कारण बन रहा है

सूर्य स्फोटों का अपनी पृथ्वी पर प्रभाव

पिछले दिनों अन्तरिक्ष में तीन प्रक्रियाएँ ऐसी उभरी थीं जो घटना की दृष्टि से दूरवर्ती होने के कारण सामान्य कही जा सकती हैं, किन्तु, उनकी परोक्ष प्रतिक्रिया ऐसी है, जिससे जन-जीवन के बुरी तरह प्रभावित होने की आशंका है ।

इनमें एक है—इन्ही दिनों सूर्य पर उभरने वाले स्फोट (कलंक) । दूसरा-कई ग्रहों के एक पंक्ति में जा पहुँचने के कारण उत्पन्न हुआ 'युति' असन्तुलन । तीसरा है असाधारण विशेषताओं वाला ग्रहण चक्र सर्वविदित है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि पृथ्वी की जलवायु का नियन्त्रण सूर्य द्वारा होता है। इसलिए इन सौर कलंकों का भी पृथ्वी के जीवन पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिकों के अनुसार प्रति ११ वें वर्ष सूर्य के प्रभा मण्डल में सूर्य के तल पर बनने वाले इन धब्बों के कारण चुम्बकीय वैद्युतिक तरंगों का इतनी जल्दी निर्माण होता है कि वे पृथ्वी क परवर्ती मण्डल को बहुत अधिक प्रभावित करती हैं । इस प्रकार पृथ्वी का परवर्ती मण्डल प्रभावित होने से हवाएँ ज्यादा बहती हैं । ऋतुएँ ठण्डी पड़ जाती हैं, भयंकर हिमपात होते हैं, ओलों की वर्षा होती है, आँधी-तूफान और चक्रवात आते हैं तथा वायु-भार ऊँचा हो जाता है ।

सूर्य पर जब कलंकों अर्थात् धब्बों की संख्या बढ़ जाती है तो उस स्थिति में पृथ्वी के तापक्रम को बनाए रखने वाली ओजोन गैस के स्तर में कमी आ जाती है । ग्यारह वर्ष के क्रम से, सूर्य की सर्वोच्च क्रियाशीलता के समय चुम्बकीय तूफान, रेडियो सम्बन्धों में कटाव, आयानोस्फियर में जल-जलाशयों व ध्रुवी प्रकाश आदि का जन्म होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार पिछले ५० वर्षों में सन् १९३६, १९३७, १९४७-४८, १९५८ और १९६९ में सूर्य सर्वोच्च क्रियाशीलता में था । ११ वर्ष बाद पुनः १९८० में सूर्य सर्वोच्च क्रियाशीलता की स्थिति में आया । सन् १९८२ में जब नौ ग्रह सूर्य की एक सीध में आये तब भी यह क्रियाशीलता की स्थिति बनी रही । इन दिनों प्राकृतिक विपदाएँ तो कहर ढाती ही हैं, मनुष्य की प्रकृति को भी असाधारण रूप से प्रभावित करती हैं ।

खगोलविदों के अनुसार ये कलंक सूर्य सतह पर होने वाले विस्फोटों के कारण उत्पन्न होते हैं । २४ फरवरी, १९५२ को सूर्य की सतह पर हुए एक असामान्य विस्फोट का अध्ययन किया गया था और उसके बाद देखा गया कि पराबैंगनी किरणों की एक विराट् सेना पृथ्वी की ओर चल पड़ी है । इन किरणों के आक्रमण की वजह से ग्रीनलैण्ड, कनाडा, अटलांटिक तथा बर्लिन में दो सप्ताह तक तूफानों का गतिचक्र तेजी से घूमता रहा । सन् १९५५ में अमेरीकी वैज्ञानिक डा० वाल्टर तथा डा० राबर्टस ने भी एक सामान्य विस्फोट का अध्ययन किया और देखा कि इस विस्फोट के तेरहवें दिन ऋतु परिवर्तन का क्रम सामान्य से असामान्य हो गया । कुछ समय तक रेडियो प्रसारणों में व्यवधान उत्पन्न होता रहा, तेज वर्षा, अन्धड़ और तूफान आने लगे तथा कई दिनों तक छोटी प्रलय के से दृश्य उपस्थित होते रहे ।

सूर्य की सतह पर होने वाले विस्फोटों के कारण जो धब्बे बनते हैं, उनके बनने से प्रक्रिया में उत्पन्न हुआ रेडियो विकिरण तेज गति से पृथ्वी की ओर दौड़ पड़ता है । निश्चित ही यह अन्य ग्रहों को भी लक्ष्य करता होगा, पर उस सम्बन्ध में अभी कोई अध्ययन नहीं किया गया है । पृथ्वी के आयन मण्डल को बेधता हुआ यह विकिरण धरती के गर्भ में मीलों तक प्रवेश कर जाता है और उसकी चुम्बकीय व्यवस्था से छेड़छाड़ करता है, इसके अतिरिक्त सूर्य कलंकों के आसपास वाले क्षेत्रों में भी कई प्रकार के कण धीमें एवं तेज गति से निकलते हैं जो पृथ्वी के साथ छेड़छाड़ करते हैं ।

प्रसिद्ध रूसी वैज्ञानिक चिजोवस्की ने पिछले ४०० वर्षों में जितनी भी महामारियाँ फैली उन सबका अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि ये सौर कलंक उत्पन्न होने के तीन वर्ष बाद पूरी गति से उभरती हैं और प्रति ग्यारहवें वर्ष इनका उभार तीव्र होता है ।

वर्तमान में उभरने वाले

सूर्य-कलंकों पर इन दिनों विश्व भर के अन्तरिक्ष-विज्ञानी गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं, कि उनकी प्रतिक्रिया किस क्षेत्र पर क्या हो सकती है और उसके लिए सुरक्षात्मक तैयारी क्या की जानी चाहिए ?

इस सन्दर्भ में सर्वसाधारण की अधिक जिज्ञासा होना स्वाभाविक है । जिस संकट से मनुष्यों समेत समस्त जीवधारी और पदार्थ प्रभावित हो सकते हैं, उसके सम्बन्ध में अधिक जानने की अभिरुचि का बढ़ना सामान्य बात है। विस्तृत विवरण तो विज्ञानवेत्ता ही अपने प्रतिवेदनों में प्रस्तुत कर सकते हैं, पर सामान्य जानकारी के रूप में स्फोटों का सामान्य स्वरूप और इनका प्रभाव संक्षेप में यहाँ समझाया जा सकता है ।

सूर्य-पिण्ड पृथ्वी से ३३० हजार गुना अधिक बड़ा तथा कुल ग्रहों के पिण्डों के योग से ७५० गुना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अधिक बड़ा है । यही कारण है कि भारी सूर्य को उसके चारों और घूमने वाले ग्रह अपने आकर्षण से नहीं हटा पाते ।

विज्ञान की दृष्टि से सूर्य केवल वायु पदार्थों से बना एक ज्योति पिण्ड मात्र है और अन्य ग्रह घने तत्वों, प्रवाहशील और वायु-पदार्थों के बने आकाशीय-पिण्ड हैं । सूर्य पर जितनी गर्मी है, उस गर्मी के अनुपात में अन्य ग्रहों का तापमान और दबाव अत्यन्त कम है और इसी कारण ग्रहों के द्रव्य या तो स्थायी रूप से प्राप्त हुए परमाणुओं की या उनके घटकों की संरचना वाले हैं । ग्रहों पर भौतिक प्रक्रियाएँ और रासायनिक संयोजन चलते रहते हैं । सूर्य में परमाणुओं के आंशिक घटकों की एवं नाभियों की टूट फूट अथवा अति उष्ण तापमान पर सिद्ध हो सके । सूर्य के भीतर प्रबल वायु सघनता अन्य ग्रहों की भारी धातुओं से भी अधिक सघन होती है । इसका कारण उन ग्रहों की पारमाणिवक संरचना है । सूर्य के अन्तराल में परमाणु अपने स्थायित्व को बनाये नहीं रख सकते, प्रण्चड गर्मी व दबाव के कारण टूट जाते हैं । सूर्य की ऊपरी सतह का द्रव्य पृथ्वी की हवा के समान पतला है पर सूर्य के भीतर यही द्रव्य उत्तरोत्तर गाढ़ा होता जाता है''। सूर्य त्रिज्या के आधे भाग पर आऐ हुए द्रव्य का घनत्व पानी जितना गाढ़ापन बताते हैं, पर सूर्य के केन्द्र भाग में आऐ हुए द्रव्य का घनत्व पानी के घनत्व से ७५ गुना अधिक होता है । सूर्य के गर्भ पदार्थों का घनत्व शीशे के घनत्व से ११ गुना और पृथ्वी की सर्वाधिक भारी धातु ओसापियम के घनत्व से लगभग चार गुना अधिक होता है । सूर्य के केन्द्र भाग पर हवा का दबाव पृथ्वी के वायु दबाव से सौ अरब गुना अधिक है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि यह दबाव प्रति वर्ग सेंटीमीटर आठ करोड़ टन है । इसके अतिरिक्त सूर्य के गर्भ में जो प्रकाश का दबाव होता है वह दबाव बीस लाख टन वर्ग सेंटीमीटर भी होता है ।

सूर्य कलंक हैं क्या ? और उनसे पृथ्वी का किस तरह सम्बन्ध है । सूर्य से पृथ्वी में जो प्रकाश कण टकराते हैं उनकी गति से पता चलता है कि उनकी पहुँच सूर्य में १८ से २४ घण्टे पूर्व सूर्य में हुई किसी विस्फोट या प्रज्ज्वलन से होता है । सौर टेलीस्कोपों से अध्ययन करने पर पता चलता है कि प्रकाश की एक छोटी सी चमकदार बगूली सी उठती है । यह किसी काले धब्बे जैसे स्थान से उठती हैं और कुछ ही क्षणों में विराट् आकार अर्थात् लाखों मील व्यास का रूप धारण कर लेती है उसमें असाधारण दिव्यता परिलक्षित होती है । मानो आकाश में फुलझडियाँ छूट रही हों यह आधा घण्टे के लगभग ही जीवन धारण करने के बाद ही अदृश्य हो जाता है, पर इतनी ही देर में एक्स किरणों इन्फ्रारेड अल्ट्रा वायलेट तथा ब्रह्माण्ड किरणों की असीम मात्रा फैंक जाता है । अग्नि शिखाओं के इस उद्वेग का अभी तक भी वैज्ञानिक कोई निराकरण नहीं कर पाये । किन्तु इनको एक ऐसी खिड़की माना जा रहा है , जिससे ब्रह्माण्ड को बहुत अच्छी तरह देखा और समझा जा सकता है ।

सूर्य स्फोटों के समय के विकिरण का विस्तृत अध्ययन करने के बाद पता चला है कि उस समय उत्सर्जित प्रकाश कण सामान्य प्रकाश कणों से भिन्न और बेधक होते हैं । उदाहरणार्थ एक बार क्लाइमेक्स पर्वत कोलोरेडा (अमेरिका) स्थित वेधशाला की सूचना पर कोलोनिअल अमेरिकी जहाज ने जो तरंगें पकड़ीं, वह सामान्य पराबैंगनी (अल्ट्रा वायलेट) न होकर एक्स किरणें थी और वह भी इतनी तीव्र थीं कि उनका विस्फोट जहाँ हुआ होगा वहाँ का तापमान न्यूनतम १ करोड़ अंश सेन्टीग्रेट रहा होगा । सभी जानते हैं कि एक्स किरणों में अन्तःस्थिति के भी फोटो निकाल देने की क्षमता होती है ।

सूर्य पर होने वाली परमाणु विखण्डन की प्रक्रिया से जो कास्मिक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई वह पृथ्वी पर भी अपने सूक्ष्म प्रभाव छोडती है । वैज्ञानिक यंत्रों की पकड़ में केवल उनका स्थूल स्वरूप ही है, पर वह भी कम चौकाने वाला नहीं होता है । उदाहरण के लिए जुलाई १९५९ में सूरज पर देखे जाने वाले धब्बों के एक बड़े समूह वाले क्षेत्र क्रोमोस्फियर की विशाल चमक देखी गई । उसी समय पृथ्वी पर रेडियो सम्बन्धों में शिथिलता अंकित की गई तथा १५-१६ जुलाई के मध्य योरोप और अमेरिका के बीच रेडियो सम्बन्ध समाप्त हो गया, टेलिग्राफ के सम्बन्ध भी टूट गये और दूसरे भू-भौतिकीय सम्बन्ध भी समाप्त हो गये । फिर वायुमैण्डल की गहरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परतों में ६०-७० किलोमीटर की ऊँचाई पर परमाणु विकिरण ने प्रवेश किया जिसके, कारण आयोनाइजेशन में अनियमितताएँ तथा ह्रस्व तरंगों की कर्ण गोचरता में कटाव पैदा हो गया। लगभग प्रकाश की गति से दौड़ती हुई कास्मिक रश्मियों के, जो सूर्य में होने वाली विशाल विस्फोटों की उपज थी, निरन्तर होने वाले कास्मिक रेडियेशन में परिवर्तन कर दिया ।

सूर्य से पृथ्वी तक आने वाली पदार्थ कणों की धाराएँ पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में परिवर्तन करती रहती हैं, क्योंकि उस समय चुम्बकीय आंधियाँ आने लगती हैं । ऐसे अवसरों पर दिशा सूचक यन्त्र की सुई अपने स्वाभाविक स्थान से अनायास ही हटती हुई देखीं गई है । इन चुम्बकीय आंधियों के प्रभाव के कारण पृथ्वी और धातु पदार्थों पर विशेषतः तारों पर, जिन विद्युत धाराओं का प्रवाह रहता है, वे मनमाने ढंग से बदलती रहती हैं और इतनी अधिक तीव्र हो जाती हैं कि टेलिग्राफ, टेलीफोन के काम में बाधाएँ खड़ी कर देती हैं । कभी-कभी तो तार द्वारा विद्युत संचार तक असम्भव हो जाता है ।

यह चुम्बकीय आँधियाँ बार-बार आती रहती हैं और ध्रुव प्रदेशों में उनका वेग सबसे तीव्र होता है । भूमध्य रेखा से ध्रुव प्रदेशों की ओर बढ़ते समय चुम्बकीय आँधियों का सिलसिला बढ़ता ही चला जाता है । जिस समय चुम्बकीय आँधियाँ आती हैं, उस समय ध्रुव प्रकाश भी निश्चित रूप से दिखायी पड़ता है । उदाहरण के लिए सन् १९३८ के जनवरी माह में जब एक बार अत्यन्त तीव्र ध्रुव प्रकाश चमका था जो क्रीमिया और अफ्रीका तक दिखायी दिया, उस समय एक बहुत तेज चुम्बकीय आंधी भी उठी थी, जिसने करीब-करीब पूरी पृथ्वी को अपनी लपेट में ले लिया था ।

चुम्बकीय आँधियों के आने और ध्रुव प्रकाश के उत्पन्न होने का एक कारण है और है वह पृथ्वी के वायुमण्डल पर सौर कणों की तीव्रतर वर्षा । स्मरणीय है, सूर्य अपनी किरणों के माध्यम से जो कण उत्सर्जित करता है, वह वास्तव में विद्युत धारा होती है अर्थात सूर्य रश्मियों के माध्यम से पृथ्वी के प्रत्येक प्राणी का सूर्य के साथ विद्युतीय सम्पर्क रहता है । इस सम्बन्ध में किये गये कई प्रयोगों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सूर्य द्वारा उत्सर्जित कणों की धारा जो वास्तव में एक विद्युतधारा होती है, अपने चारों ओर की खाली जगह में चुम्बकीय क्षेत्र पैदा करती है । यह क्षेत्र पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र पर ऊपर से छा जाता है । परिणामस्वरूप चुम्बकीय आँधी पैदा हो जाती है ।

सूर्य स्फोटों का गतिचक्र प्रायः ११ वर्ष १ महीने एवं २२ वर्ष दो महीने में लौट-लौट कर वापस आता रहता है । फलस्वरूप उसी क्रम से कितनी ही उलट-पुलट धरती के वातावरण में भी होती रहती है । यह गति चक्र अन्य प्राणियों में एवं वृक्षों में भी पाया जाता है । सालमन मछली पर हर साढ़े नौवें वर्ष ऐसा उन्माद बढ़ता है कि वह मछुओं के जाल में दौड़-दौड़ कर कूदती है और बेमौत मरती हैं । कुछ पेड़ों की छाल भी ऐसी ही नियत अवधि पर साधारण की अपेक्षा अधिक मोटी होती देखी गई है ।

पृथ्वी का जीवन सौर मण्डल के परिवर्तनों से आबद्ध है । इस तथ्य को अति प्राचीन काल से स्वीकारा गया है । मिश्र में सिंचाई के समय एक त्यौहार मनाया जाता है यह उस दिन मनाया जाता है जिस दिन जुलाई माह में नील नदी में एकाएक बाढ़ आ जाती है । लम्बे समय तक के अध्ययन के बाद यह पाया गया कि बाढ़ ठीक उसी दिन आती है जिस दिन सूर्योदय के ठीक समय लुब्धक तारा दिखाई देता है । इसका अर्थ यह हुआ नील नदी का परिवर्तन किसी न किसी रूप में लुब्धक के जीवन से जुड़ा हुआ है, न केवल व्यक्तिगत वरन् समष्टिगत मानव समाज की प्रवृत्तियों पर भी इन अन्तर्ग्रही परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता है । अठाहरवीं शताब्दी से अब तक के विश्व इतिहास की गवेषणाओं से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्रान्तियाँ, रक्तपात, हिंसक उपद्रव आदि घटनाएँ सौर कलंक के वर्षों में हुई हैं । सन् १७८९ में फ्रांस की प्रसिद्ध ऐतिहासिक क्रान्ति हुई जिसमें न केवल फ्रांस ने वरन् पूरे विश्व समाज ने ही एक नये दौर में प्रवेश किया । इसी प्रकार ट्रैफलगर और वाटरलू की भयंकर लड़ाइयाँ इन सूर्य कलंकों के परम वर्षों में हुई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सन् १८५७ में जब भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम लड़ा गया, तब भी सौर कलंक अपने परम वर्षों में थे। इसके बाद अमेरिका में चला गृह युद्ध भी उस समय अपने पूरे उभार पर था, जब सौर कलंक परम वर्षों में थे। सन् १९०४-५ में जब रूस और जापान के बीच भयंकर लड़ाई लड़ी गई । प्रथम विश्व युद्ध भी सन् १९१४-१५ में आरम्भ हुआ, जबकि सूर्य अपने कलंक के परम वर्षों में थे। सन् १९४७ में भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति हुई, इसके पूर्व दूसरा विश्व युद्ध लड़ा ही जा चुका था, चीन में भी इन्ही दिनों कम्युनिस्ट क्रान्ति हुई ।

सन् १९४७ के बाद सूर्य कलंक के दो परम वर्ष क्रमशः १९५८ और १९६९ गुजर चुके हैं । उसके उपरान्त वर्तमान में हम पुनः सौर सक्रियता की अवधि से गुजर रहे हैं । अभी पिछले दिनों चीन और वियतनाम के बीच घमासान लड़ाई होकर चुकी है। ईरान में भी भयंकर क्रांन्ति हुई हैं, अभी भी वहाँ स्थिति सुधरी नहीं है, स्थिति तनावपूर्ण है । रक्तपात और हिसंक घटनाओं के दौर जारी हैं । अफगानिस्तान में रक्त की नदियाँ बह रही हैं । विश्व के और भी कई दूसरे देशों में तनाव पैदा हो रहे हैं । उनकी आन्तरिक और बाह्य स्थिति बेहद उलझी हुई है। विश्व पुनः संकटपूर्ण स्थिति में है ।

न्यूयार्क के मूर्धन्य खगोलवेत्ता डा० बेकर ने बताया कि ''तीव्र सौर क्रिया के दिनों में मानसिक रोगियों की संख्या में असाधारण रूप से वृद्धि होती है ।''

ज्योतिषियों के निष्कर्ष

भारतीय ज्योतिष खगोलीय तथा फलित दोनों ही पद्धतियाँ सूर्य मण्डल में होने वाले विस्फोटों का स्वरूप, कारण तथा पृथ्वी के चराचर पर उससे होने वाले प्रभाव पर विस्तृत वर्णन मिलता है । महर्षि गर्ग, पाराशर, देवल, कश्यप, नारद तथा वशिष्ठ आदि ने इन विस्फोटों के बारे में पर्याप्त अनुसन्धान किया है ।

इस पद्धति से विचार कर वर्तमान ज्योतिर्विद जो निष्कर्ष निकाल रहे हैं , उसके अनुसार सूर्य कलंकों का प्रभाव अनेक वर्षों तक रहेगा । इस प्रभाव के कारण भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, कश्मीर, चीन तथा मध्यपूर्व के देश विशेष रूप से प्रभावित होंगे। दुर्भिक्ष, सूखा, युद्धोन्माद बढ़ने, रोग, बाढ़, तूफान, भूकम्प आदि दैवी आपदाओं से जन-धन को क्षति होने की भी सम्भावना है ।

विश्व विख्यात अदृश्य दर्शी प्रो० कीरो ने पृथ्वी पर विद्यमान जीवन और उसके ग्रह-नक्षत्रों के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है-''हमारी पृथ्वी पर जो यह जीवन का प्रवाह दीखने में आता है, इसका नियन्त्रण सूर्य, ग्रहों और राशि चक्र द्वारा होता है । पृथ्वी पर ऋतुओं का परिवर्तन और विभिन्न देशों के जलवायु का बदल जाना मुख्यतः पृथ्वी की धुरी में अन्तर पड़ जाने से होता है। इस अन्तर के कारण सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में जाता दिखायी पड़ता है । एक राशि से दूसरी राशि में जाने का समय २१५ वर्ष है और १२ राशियों में २५८० वर्षों में यह पूरा चक्र लगाता है ।

२१५ वर्ष में पृथ्वी की धुरी में जो अन्तर पड़ता है, उसके कारण सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में पहुँच जाता है । इस संक्रमण के समय पृथ्वी पर भूकम्प, तूफान, आँधियाँ, चक्रवात, जल प्रलय आदि की अधिकता हो जाती है, क्योंकि पृथ्वी के भीतरी स्तर जब एक स्थिति से दूसरी में बदलते हैं, तो उनमें काफी टूट-फूट और उथल-पुथल होती है ।

ज्योतिर्विज्ञान की गणना से यह राशि चक्र का परिवर्तन सन् १७६२ में हुआ था । उस समय सूर्य मीन राशि से हटकर कुम्भ राशि में आया था, परिणामस्वरूप उन दिनों संसार में बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ, उथल-पुथल तथा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तनों का सूत्रपात हुआ था। उन्ही दिनों एक नये राष्ट्र अमेरिका का भी उदय हुआ जो संसार की राजनीति में दिनों-दिन प्रमुख पद ग्रहण करता जाता है । उसी समय फ्रांस भी राज्य क्रान्ति की ओर बढ़ा, जिसने राजतन्त्र को एक तरह से बीते हुए युग की बात ही सिद्ध कर दिया । कुम्भ राशि में पूरी तरह अवस्थित हुए सूर्य को १६५ वर्ष व्यतीत हुए (कीरो ने यह लेख १९७२ में लिखा था) और ६०-७० वर्ष बाद पुनः यह संक्रमण होने वाला है । इस संक्रमण काल में (१९८७ से १९९७) तक बहुत अधिक सामाजिक, राजनैतिक और प्राकृतिक परिवर्तन होंगे । इस अवधि में विश्व के कई देशों में भूकम्प आएँगे । ऐसे देश भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इन भूकम्पों के शिकार होंगे जो अब तक इनसे बचे हुए थे । जो ज्वालामुखी शान्त थे, वे फिर फूट पड़ेंगे, पृथ्वी पर समुद्री बाढ़ तथा तूफानों का जोर बढ़ जायगा । आगामी वर्षों में ऐसे गम्भीर प्राकृतिक परिवर्तन होने की भी सम्भावना है, जिससे वर्तमान नक्शे में काफी उलट-फेर हो जाए और जो देश आज पिछड़े तथा दबे हुए पड़े हैं, वे ही प्रमुख पदों पर पहुँच जाएँ ।

कीरो ने भी गोरी जातियों के विनाश तथा भौतिक सभ्यता के अन्त के साथ एक नई सभ्यता और नये धर्म के आने की बात को ग्रह गणितीय सत्य मानते हुए लिखा है, ''सूर्य कुम्भ राशि पर प्रवेश करता है तब बहुत तीव्र प्रभाव दिखाई देते हैं, क्योंकि उसके ग्रह यूरेनस और शनि हैं । गूढ़ विद्याओं के प्राचीन ज्ञाता इसे नये युग का शुभारम्भ मानते हैं । शनि एक ओर तोड़-फोड़ और विध्वंस करता है । यूरेनस के प्रभाव से पुराने नियम और कानून आमूल चूल बदलते हैं । सूर्य कुम्भ पर आता है तब बड़ी हलचल, बड़े परिवर्तन, बड़ी क्रान्तियाँ होती हैं, साथ ही नये युग का निर्माता भी ।

अन्तरिक्ष विद्या के दो स्वरूप हैं एक ग्रह नक्षत्रों की गतिविधि का निर्धारण और उसके प्रत्यक्ष प्रभावों का आकलन । मौसम, तूफान, ज्वारभाटा, चुम्बकीय विकिरण जैसे आकलन इसी प्रत्यक्ष अन्तरिक्ष विद्या के अंग हैं । परोक्ष खगोल विद्या वह है जिसमें ग्रह नक्षत्रों के विकिरण का मनुष्यों के व्यक्तित्वों और भविष्य पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाया जाता है । ग्रहों का गतिचक्र के वातावरण पर प्रभाव पड़ता है और प्राणियों की मनोदशा तथा गतिविधियों पर उसका दबाव अनुभव किया जाता है । अन्तरिक्ष के प्रत्यक्ष निर्धारण को ऐस्ट्रोनोमी और परोक्ष आकलन को एस्ट्रोलाजी कहते हैं ।

इन दोनों प्रसंगों पर बहुत समय से ऊहा पोह होता रहा है और प्रतिपादन तथा मतभेद का क्रम चलता रहा हैं । फिर भी दोनों का अपना-अपना पक्ष है । कटु आलोचना और विरोध भर्त्सना का प्रसंग वहाँ खड़ा होता है, जहाँ तीरतुक्का मिलाने वाले ज्योतिषी अनजान होते हुए भी उस विज्ञान का आवरण ओढ़ कर लोगों को डराते और पूजा पाठ के नाम पर जेब काटते हैं । अन्धविश्वास, भाग्यवाद और निहित स्वार्थों का दबाव यदि हटाया जा सके तो ज्योतिष-विज्ञान अपने आप में एक उच्च स्तरीय विज्ञान है । उसकी गणना अनादिकाल से एक मान्यता प्राप्त शास्त्र के रूप में होती रही है ।

आधुनिक शोधकर्त्ता और विज्ञानवेत्ता जैसे-जैसे तथ्यों की गहराई में उतरते जाते हैं वैसे-वैसे उन्हें यह स्वीकारना पड़ रहा है कि ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव प्राणियों की मनःस्थिति एवं परिस्थिति पर पड़ता है । साथ ही उसके दबाव से पृथ्वी के वातावरण तथा पदार्थों के स्तर में अनपेक्षित परिवर्तन आते हैं ।

जान एण्टनी वेस्ट और जान गेरहार्ड टुण्डा नामक दो पत्रकारों ने फलित ज्योतिष की वैज्ञानिकता प्रामाणित करने का एक अभिनव प्रयास किया है । उनकी नवीनतम पुस्तक ***''द केस फॉर एस्ट्रोलाजी''*** में यही प्रतिपादन है । उनके अनुसार तर्क और वैज्ञानिकता के उदयकाल से लेकर वर्तमान तक ज्योतिष विज्ञान के विरोध एवं पक्ष में लगभग एक सी बातें कहीं जाती रही हैं ।

लेखकों के अनुसार एक ही जगह, एक ही समय में जन्मे लोगों में बहुत कुछ साभ्य होता है । यहाँ तक कि थोड़े से अन्तर से पैदा हुए जुड़वाँ बच्चों का भी । सैमुअल हेमिंग और जार्ज तृतीय दोनों एक ही दिन जन्मे (४ जून, १७३८) । एक ही दिन उन्हें विरासत में राज मिला । (सैमुअल को लुहारी दुकान, जार्ज को इंग्लैण्ड की गद्दी) । दोनों देखने में और स्वभाव में एक से थे । दोनों का विवाह एक दिन हुआ एवं दोनों की सन्तानों की संख्या भी एक सी थी । दोनों एक ही समय बीमार पड़ते रहे और दोनों एक ही दिन (२१ जनवरी, १८२०) मरे ।

हाल ही के वर्षों में एक ही दिन, एक एक ही समय, एक ही जगह जन्मे वैज्ञानिक आइंस्टाइन और ओटोहान लेखक जेम्स स्टीफेन्स और जेम्स जायस जैसी कई जोड़ियों के जीवन में अद्‌भुत साम्य देखा, दिखाया गया है । आमतौर से एक ही समय जन्म लेने वाले अनेकों बालकों की मनःस्थिति एवं परिस्थिति में कोई साभ्य नहीं होता । लेखकों के अनुसार व्यक्ति का एकाकी भाग्य-पूर्णतया स्वतन्त्र नहीं है; वह समूह के भाग्य के साथ भी जुड़ा है। ऐसे कई वैज्ञानिक अनुसन्धानों की चर्चा लेखक करते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि प्रकृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के अनेकानेक कार्यकलाप कुछ सधे-बन्धे समय चक्रों में होते है ।

वैज्ञानिकता के इस दौर में फलित ज्योतिष जैसी विद्या के सम्बन्ध में यह प्रश्न स्वाभाविकतः उठता है कि क्या इस पुरातन विद्या में कोई वैज्ञानिक तत्व है ? कोपर निकस, कैपलर तथा गैलीलियों जैसे खगोलविदों ने सूर्य को सौर मण्डल का स्थिर केन्द्र सिद्ध करके प्राचीन ज्योतिष को ध्वस्त तो किया पर साथ ही वे स्वंय फलित ज्योतिष के परम भक्त भी रहे । स्वयं न्यूटन जिन्होंने आधुनिक भौतिक शास्त्र की रचना में भारी योगदान दिया । फलित ज्योतिष के आधार पर कितने ही निर्धारण किया करते थे । एक वैज्ञानिक प्रयोग में फ्रेंक ब्राउन ने यह सिद्ध किया है कि मटर के दाने हों, या आलू के कड़े हो या सीपियाँ, सभी की भीतरी घड़ियाँ (बायलॉजीकल क्लॉक) सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति से प्रभावित होती हैं । इस प्रभाव का रोशनी से कोई सम्बन्ध नहीं । यदि इन्हें अँधेरे में बन्द कर दिया जाय, तो भी इनका क्रम सूर्य चन्द्र की स्थिति के अनुसार चलता रहता है । पड़वा के चाँद में शिथिल और पूर्णिमा के चांद में सक्रिय गतिविधियाँ रहती हैं । सीपियाँ ज्वार भाटे से कोई सम्बन्ध न रख, चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार खुलती बन्द होती हैं । यह भी परीक्षणों द्वारा प्रमाणित किया जा चुका है ।

वैज्ञानिक जान नेलसन के अनुसार आयन मण्डल में तूफानों का, जो रेडियो प्रसारणों में बाधा डालते हैं, सूर्य के सन्दर्भ में ग्रहों की स्थिति से सीधा सम्बन्ध है । जब भी दो या दो से अधिक ग्रह, सूर्य की राशि में होते हैं या उससे १८०° अथवा ९०° दूर राशि में तब भी ऐसे ही तूफान आते हैं । जब भी बहुत से ग्रह सूर्य की राशि से ६०° या १२०° की दूरी पर होते हैं, अयन मण्डल शान्त रहता है । इस सन्दर्भ में यह याद रखने योग्य है कि पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार ९०° ओर १८०° का सम्बन्ध कठोर और ६०° या १२०° का सम्बन्ध कोमल माना जाता रहा है ।

इटली के रसानज्ञ विच्चार्दी के अनुसार रसायनों एवं विशेषकर पानी पर चुम्बकीय क्षेत्रों और तंरगों का बहुत असर पड़ता है ।

वैज्ञानिक द्वय ड्यूबी एवं इंटिग्टन के अनुसार प्रकृति के सधे -बँधे चक्रों के उदाहरण हमें हैरत में डाल देते हैं ।

प्रति ९-६ वर्ष बाद सालमन मछली बड़े पैमानों पर जाल में फँसती है । हर ९-६ वर्ष बाद पेड़ों पर छाल का छल्ला मोटा हो जाता है । सूर्य के धब्बों के भड़कने का ११-१ एवं २२-२ वर्ष का चक्र है और इस चक्र का सृष्टि के कई व्यापारों के चक्र से सीधा सम्बन्ध है । पैदावार, मन्दी, तेजी, सर्दी-गर्मी, सूखा बरसात सभी के ऐसे चक्र खोज डाले गये हैं ।

अस्पतालों में मानव शरीर और मन पर मौसम, चन्द्रकला, सूर्य की प्रखरता आदि के प्रभावों के बारे में एवं प्राणियों के शरीर की भीतरी विद्युत एवं आकाशीय विद्युत से उसके सम्बन्ध के बारे में भी इस पुस्तक में चर्चा ज्योतिषी द्वय ने की है । वे 'सायमेटिक्स' नामक एक नये विज्ञान का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि हर स्वर, हर नाद, हर कम्पन एक विशेष आकार को जन्म देता है । ग्रह नक्षत्रों का एक अपना वायु मण्डल है और उसका अपना इलेक्ट्रोनिक नाद है और यही नाद जातक को प्रभावित करता है । गर्भाधान के समय जब माता-पिता से मिले जीन नये शिशु की नींव रखते हैं, तब यही ब्रह्माण्ड व्यापी नाद जीनों के क्रम को वह विशिष्टता प्रदान करता है जो जातक के जीवन और भाग्य में परिलक्षित होती है ।

पहले कभी ज्योतिष को अटकल बाजियों के आधार पर भविष्य की गवेषणा करने वाला अन्धविश्वास कहा जाता था, किन्तु आज इसकी प्रामाणिकता सिद्ध करने वाले सैकड़ों पुष्ट आधार मिल गये हैं और विश्व के चोटी के वैज्ञानिकों ने इसे मान्यता दी है, यही नही विज्ञान की अन्य शाखाओं के समान, भौतिकी, रसायन, जैविकी आदि की तरह ज्योर्तिविज्ञान पर भी शोध की जा रही है ।

प्राचीनकाल से ही दुनियाँ के कई देशों में यह विज्ञान जितना उन्नत हो चुका है, उतना शायद ही कोई दूसरा विज्ञान हुआ होगा । इसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में भारतीयों को विशेष कुछ कहना बताना आवश्यक नहीं हैं । यद्यपि इस विज्ञान की आढ़ में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धूर्त लोग अपने अधूरे ज्ञान के आधार पर लोगों को छलते ठगते भी रहे हैं । दुर्भाग्य से ऐसे लोगों की संख्या काफी ज्यादा है और यही कारण है कि ज्योतिष की प्रामाणिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता रहा है । फिर भी तथ्य तो तथ्य है । आज भी इस विद्या के ऐसे मर्मज्ञ पर्याप्त संख्या में हैं जो ग्रह नक्षत्रों के आधार पर एकदम सही उतरने वाला भविष्य कथन करते हैं । सितम्बर १९७२ में कोरिया के स्थूत नगर में इस विद्या के मर्मज्ञ पण्डितों का एक सम्मेलन हुआ था, जिसमें विभिन्न देशों के १०८ ज्योतिषी सम्मिलित हुए थे। इन सभी ज्योतिषियों ने ग्रह स्थितियों का अध्ययन कर जो वक्तव्य दिया, उसके अनुसार, इन्ही दिनों विश्व युद्ध की संभावनाएँ प्रबलतर है ।

ज्योतिषियों का यह वक्तव्य संसार के लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रों में सम्मेलन के विवरण सहित प्रकाशित हुआ था । भारत में भी इण्डियन एक्सप्रेस ने १२ सितम्बर ७२ के अंक में यह वक्तव्य और सम्मेलन का समाचार सार रूप में प्रकाशित किया था । ज्योतिषियों ने अपने अध्ययन का निष्कर्ष व्यक्त करते हुए कहा था कि १९८० के बाद वाले वर्ष भारी उथल-पुथल के होंगे। इस बीच दुनिया में भयंकर अकाल पड़ेगा, तीन भयकर भूकम्प आयेंगे, जिसमें दूसरा तो इतना विनाश कारी होगा कि एशिया ही नही सारा संसार त्राहि-त्राहि कर उठेगा। इस बीच दुनियाँ के विभिन्न देशों में व्यापक उथल-पुथल मचेगी, रक्तपात, हिंसक क्रांन्तियाँ, उपद्रव, जातीय और साम्प्रदायिक दंगे, विभिन्न-विभिन्न देशों के बीच आपसी संघर्ष छिड़ने जैसी ग्रह स्थितियाँ भी इन्हीं दिनों हैं ।

लंका के प्रसिद्ध ज्योतिषी नटराजन ज्योतिष के आधार पर सफल भविष्य वाणियाँ करने के लिए विश्व विख्यात हैं। समय-समय पर उन्होंने विश्व के ऐतिहासिक घटनाक्रमों को लेकर जो भविष्य वाणियाँ की हैं वे पूरी तरह सही निकली हैं । भारत पाक विभाजन चीन के आक्रमण, गाँधीजी की हत्या, नेहरूजी की मृत्यु, वियतनाम की लड़ाई, क्यूबा की समस्या आदि के सम्बन्ध में उनकी भविष्य वाणियाँ अक्षरशः सही निकली हैं । सन् १९८० के बाद नटराजन ने युद्धों के साथ-साथ भयंकर तूफान आने, महामारी फैलने और दुनियाँ के अधिकांश भू-भाग के अकाल की चपेट में आने की भविष्यवाणी की थी, सो सब सत्य साबित हुई । खाड़ी युद्ध समाप्त हो चुके, पर अफगानिस्तान और चेकोस्लोवाकिया के गृहयुद्ध अभी भी जारी हैं ।

ज्योतिर्विज्ञान के सही स्वरूप का निर्धारण हो

प्राचीनकाल में लब्ध प्रतिष्ठित यह विज्ञान रूपी विधा कालान्तर में लुप्त हो गयी और उसका स्थान फलित ज्योतिष की मूढ़ मान्यताओं एवं भ्रांतियों ने ले लिया । निश्चित मुहूर्त में विवाह, शादियों का आयोजन, बच्चों के मंगले-मंगली होने में भेद, व्यक्ति पर शनि ग्रह का प्रकोप एवं उसके शान्ति हेतु विशिष्ट जप-तप, विशेष मणि-माणिक्य धारण करना, यात्रा करते समय दिशानुकूल तिथि देखना, विशेष तिथियों में शुभ कर्म न करना जैसी अनेकानेक मूढ़ मान्यताओं ने समाज को पंगु बना दिया है, जिसे देखकर विज्ञजनों ने इस विद्या की उपेक्षा ही की है । इस विद्या ने भाग्यवाद का स्थान ले लिया, जिससे ज्योतिर्विज्ञान अपने प्राचीन सच्चे स्वरूप से पदच्युत हो गया । क्योंकि वर्तमान के फलित ज्योतिष के इस स्वरूप ने व्यक्ति को भाग्य के भरोसे रहना सिखा दिया ।

पुरातनकाल में ज्योतिर्विज्ञान में सत्यता के समावेश के लिए ही गणितीय आकलन को स्थान दिया गया था । यही कारण था कि ज्योतिषशास्त्र के नाम पर भाग्य फल बताने वाले आज जैसे पोंगापंथियों के लिये उसमें कोई प्रावधान नहीं था । सभी शोधार्थी वैज्ञानिक थे । दिल्ली, जयपुर, बनारस जैसे भारत के प्रमुख शहरों में ऐसी वेधशालाओं की स्थापना हुई, जिसने अन्तर्ग्रहीय स्थिति एवं विभागों को देखा एवं समझा जा सके । विशेषज्ञों के सहयोग से सूर्य पंचांग बनवाये गये । पृथ्वी का आकार विभिन्न आयामों-कोणों से देखने के लिए उनके द्वारा कई प्रकार के चक्र विनिर्मित कराये गये । ज्योतिर्विज्ञान, खगोल विज्ञान कितना बढ़ा-चढ़ा था, इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि १२०० से १८०० ई० के बीच उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित लगभग दस हजार पुस्तकें संस्कृत, अरबी, फारसी आदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाषाओं में लिखी गई । मौलिक पुस्तकें ही नहीं पुरातन ग्रंथों की टीका में तथा अनुवाद के कार्य में भी तात्कालिक विद्वान गहरी अभिरुचि रखते थे ।

ज्योतिर्विज्ञान का एक और पक्ष है, अन्तर्ग्रही प्रभावों में हेर-फेर कर सकने की क्षमता का जन शक्ति द्वारा उपार्जन । चेतना की शक्ति का तत्वज्ञान जिन्हें विदित है वे यह भी समझते हैं कि जड़ पर नियमन करने की सामर्थ्य भी उसे प्राप्त है । शरीर के बहुमूल्य यन्त्र को प्राण की चेतना ही चलाती है, और जीवित रखती है । रेल, मोटर, जहाज स्वसंचालित यन्त्र उपग्रह आदि चलते भले स्वयं हों पर उनका संचालन विचारशील मनुष्य ही करते हैं । यन्त्रों में प्रचण्ड शक्ति विद्यमान तो है पर वे मात्र अपनी धुरी पर ही परिभ्रमण कर सकते हैं । यन्त्र को दिशा देनी हो अथवा उलट पुलट करनी हो तो उसमें चेतना को ही अपना पुरूषार्थ प्रकट करना होगा । ठीक इसी प्रकार अन्तर्ग्रही प्रवाहों में सामर्थ्यानुसार चेतना द्वारा अतिरिक्त अभीष्ट परिवर्तन लाया जाना सम्भव है । इसके लिए मनुष्य की प्रचण्ड चेतना शक्ति को नियोजित करना होगा । अन्तर्ग्रही शक्तियों की विशालता और प्रचण्डता अद्भुत और कल्पनातीत है, इतने पर भी यह तथ्य समझा जाना चाहिए कि चेतना की प्राण शक्ति का प्रभाव उस प्रवाह में सारे अभीष्ट परिवर्तन उत्पन्न कर सकता है । ऐसे परिवर्तन जो पृथ्वी के प्राणियों के लिए आसन्न अविज्ञात कठिनाइयों को रोकने और अदृश्य अनुदानों को बढ़ाने में समर्थ हो सकें । गृह विज्ञान की पूर्णता इसी में है कि वह स्थिति की जानकारी तक सीमित न रहकर अभीष्ट हेर-फेर कर सकने की सामर्थ्यवाला भी हो । ज्योतिर्विज्ञान न केवल ग्रह नक्षत्रों की स्थिति से अवगत कराता है, वरन् सूक्ष्म जगत में उनके अदृश्य प्रभावों प्रवाहों के अनुकूलन का भी प्रबन्ध करता है ।

ज्योतिष–एक विज्ञान सम्मत विधा

चिरपुरातन ज्योतिर्विद यह भली भाँति जानते थे कि ग्रह नक्षत्रों, सौर मण्डल की गतिविधियों, उनके आपसी सम्बन्धों और परस्पर एक दूसरे पर, पृथ्वी के वातावरण, वृक्ष, वनस्पति एवं जीवधारियों पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी देने के अतिरिक्त भी ज्योतिर्विज्ञान का एक पक्ष है–सूक्ष्म अन्तरिक्ष में चलने वाले चैतन्य प्रवाह और उनकी भली-बुरी प्रतिक्रियाओं से मानव को अवगत कराना । इसीलिए उस काल के ज्योतिर्विज्ञान के आचार्य न केवल अन्तर्ग्रही गतिविधियों के ज्ञाता होते थे वरन् आत्म विज्ञान-चेतना के क्षेत्र में भी उनकी पहुँच होती थी । फलतः सौर मण्डल की जानकारियाँ प्राप्त करने के साथ-साथ उनमें अभीष्ट उथल-पुथल करने के आध्यात्मिक उपचारों से परिचित होने से समय-समय पर इस प्रकार के प्रयोग-परीक्षण, अनुष्ठान-उपचार, सामूहिक आध्यात्मिक प्रयोग किये जाते थे ।

इस दिशा में प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विदों ने गहन अनुसंधान किये एवं निष्कर्ष निकाले हैं । आर्य भट्ट का ज्योतिष सिद्धान्त, काल क्रिया पाद गोलपाद, सूर्य सिद्धान्त और उस पर नारदेव, ब्रह्मगुप्त के संशोधन परिवर्धन, भास्कर स्वामी के महाभास्करीय आदि दुर्लभ और अमूल्य ग्रन्थ अनेकानेक रहस्यों एवं निष्कर्षों से भरे पड़े हैं । ज्योतिष सिद्धान्त पुस्तक के प्रथम पाद में गणित का सम्बन्ध ज्योतिर्विज्ञान से स्थापित किया गया है । काल क्रिया पाद में खगोलशास्त्र का विशद वर्णन है । इसी तरह उसका अन्तिम पाद पचास श्लोकों का अध्याय 'गोलपाद' अपने में ज्योतिष विज्ञान के महत्त्वपूर्ण रहस्यों पर प्रकाश डालता है । अपने ''पंच सिद्वान्तिक'' में वाराह-मिहिर ने पौलिश, रोपक, वाशिष्ठ, सौर और पितामह नामक पांच ज्योतिर्सिद्धान्तों का वर्णन किया है जो ज्योतिर्विज्ञान पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं ।

मौसम से लेकर राजनैतिक घटनाक्रमों तक का पूर्वानुमान लगाकर लोग अपनी योजनाओं का निर्धारण परिवर्तन करते रहते हैं । ग्रहों की स्थिति से उत्पन्न प्रभावों के सम्बन्ध में यह तथ्य कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । इसकी जानकारी देने वाला ज्योतिर्विज्ञान मात्र फलित ज्योतिष, ग्रह नक्षत्रों के प्रभावों को बताकर लोगों को भयभीत करने वाली प्रपंचविद्या नहीं है, वरन् गणितीय आधार पर अनुकूलताओं का, सम्भावनाओं का पूर्वानुमान लगाकर अपने क्रियाकलापों में हेर-फेर करने की सूचना देने वाली एक विज्ञान सम्मत विधा है ।

पिछले पचास वर्षों में होने वाले ग्रहों के मुख्य-मुख्य योगों पर अगर हम ध्यान दें तो मालूम होता है कि उनके प्रभाव से बराबर शान्ति में बाधा डालने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वाली शक्तियों की उत्पत्ति होती रही है । अभाग्यवश राजनीतिज्ञों ने करोड़ों व्यक्तियों के जीवन और स्वार्थों से सबन्ध रखने वाले प्रभावशाली निर्णय ऐसे अवसरों पर किये जब कि ग्रहों का प्रभाव बहुत विपरीत और हानिकारक था । इसी का परिणाम यह हुआ कि हमने इन ५० वर्षों में बड़ी-बड़ी आदर्श और आशापूर्ण योजनाओं को असफल और नष्ट-भ्रष्ट होते देखा है । अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन की निष्पक्षता की घोषणा उनके १४ सिद्वान्त, लीग आफ नेशंस का विधान, वाशिंगटन की निशस्त्रीकरण सन्धि और कीलाग पैक्ट, डावेस प्लान, यंगप्लान, हूवर की संसार को पुनर्निर्माण की योजना, स्टिमसन-योजना प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट की 'क्वारनाटाइन स्पीच' और चार स्वाधीनताओं की घोषणा, हुल के १७ सिद्वान्त, अटलांटिक चार्टर, याल्टा की घोषणा, राष्ट्र संघ (यू०एन०ओ०) की स्थापना, टुमन की घोषणा, भारतवर्ष का विभाजन, काश्मीर की समस्या, भारतवर्ष में भाषा के आधार पर प्रान्तों का निर्माण आइजनहोवर की घोषणा आदि सैकड़ों इसके उदाहरण सामने मौजूद हैं । इन असफलताओं का मुख्य कारण ग्रहों से ही सम्बन्धित है । इनका कारण भौतिक परिस्थितियाँ नहीं हैं, लेकिन हमारे मस्तिष्क, स्वभाव और विचार हैं और इनका आधार कान्फरेंसों में निर्माण करने वाले राजनीतिज्ञों के मुद्दों पर होता है । उदाहरण के लिये लीग आफ नेशन्स की कुण्डली को देखिये । इंग्लैण्ड के शासक ग्रह मंगल ने वर्सेलीज की संधि कॉनफ्रेन्स में उपस्थित समस्त राजनीतिज्ञों पर ऐसा प्रभाव डाला कि उसमें इंग्लैण्ड की बात को ही सफलता मिली और उसके प्रभाव से 'लीग ऑफ नेशंस' की नीति का विकास ऐसे मार्ग से हुआ, जिसका परिणाम द्वितीय विश्वव्यापी महायुद्ध के रूप में प्रकट हुआ । 'लीग' की उत्तराधिकारिणी यू०एन०ओ० की स्थिति भी कुछ अच्छी नहीं हैं, क्योंकि उसका जन्म भी ग्रहों के ऐसे ही प्रतिकूल प्रभाव में हुआ है ।

बड़े राष्ट्रों में युद्ध तभी होते हैं, जब कि ग्रह दशा बहुत खास तरह की हो । जब शनि, राहु और मंगल एक से केन्द्र में हों, और जिस राशि या नक्षत्र मण्डल में हों वह भी विशेष रूप से उत्तेजना पैदा करने वाला हो, तब ऐसी घटना सम्भव होती है । अगर प्रथम महायुद्ध के समय की ग्रह दशा पर विचार किया जाय तो मालूम होगा कि उस समय राहु, वृहस्पति और मंगल केतु द्विरद-दशा में थे, शनि और मंगल एक केन्द्र में थे और राहु-शनि एक से त्रिकोण में थे । इसी प्रकार अगर द्वितीय महासागर के समय की ग्रह दशा का निरीक्षण किया जाय तो उस अवसर पर भी ग्रहों की स्थिति बड़े भय की थी । प्रजातन्त्र का शक्तिशाली ग्रह शनि मेष राशि और आश्विनी नक्षत्र में केतु के साथ योग में था, जिस पर मंगल की पूर्ण दृष्टि पड़ रही थी । वृहस्पति और शनि द्विरद-दशा में थे और राहु-वृहस्पति षष्ठाष्टक (एक दूसरे से ६ और ८ अन्शों) पर थे । इस प्रकार संसार के प्रसिद्ध युद्ध प्रभावशाली ग्रह दशा में ही लड़े गये हैं । जिस समय शनि धनु राशि में प्रवेश करेगा रूस में बहुत से षड़यन्त्र और प्रमुख व्यक्तियों की हत्या की चेष्टायें होगी । लौह आवरण के पीछे बहुत से चौकाने वाले परिवर्तन होंगे जिससे रूस का आन्तरिक संगठन बहुत कुछ बदलेगा । इनके फल से उस देश में अशान्ति रहेगी और वह अमरीका से झगड़ा करने की चेष्टा न करेगा ।

सूर्य-ग्रहणों की असाधारण श्रृंखला और उनकी अवांछनीय प्रतिक्रिया

चन्द्र ग्रहण आमतौर से पड़ते रहते हैं । सूर्य ग्रहणों की संख्या कम होती है । पर उसका प्रभाव धरती के वातावरण पर अधिक पड़ता है । विशेषतया तब, जबकि वह अधिक ढके और खग्रास जैसी स्थिति उत्पन्न हो ।

युग सन्धि के बीस वर्षों में जो विशेष सूर्य ग्रहण श्रृंखला सन् १९८० से आरम्भ हो २००० तक चलने वाली है, वह असाधारण है । उसका प्रभाव अन्तरिक्ष विज्ञानी तथा ज्योतिर्विद समान रूप से अशुभ बता रहे हैं । १६ फरवरी, १९८० के बाद अगले बीस वर्षों में दो पूर्ण सूर्य ग्रहण और होंगे । एक २४ अक्टूबर, १९९५ में दूसरा ११ अगस्त, १९९९ में । दोनों ही भारत में भली प्रकार देखे जा सकेंगे। १६ फरवरी १९८० को पूर्ण सूर्य ग्रहण हुआ जो इस शताब्दी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना इस देश के लिए थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्योंकि ग्रहण की पूर्णता का पथ भारतीय महाद्वीप के ऊपर से गुजरता था। पिछला पूर्ण सूर्य ग्रहण जो स्पष्टतः भारत में देखा जा सका था, २२ जनवरी १८९८ को हुआ था ।

यह गोलार्द्ध के लांगीट्यूड ३०° पश्चिम से १२०° पूर्व तक एवं लैटीट्यूड ६०° उत्तर से लैटीट्यूड ३५° दक्षिण तक देखा गया । इस परिधि में पूरा अफ्रीका,सऊदी अरब, इराक, ईरान, बंगलादेश, श्रीलंका, बर्मा, मलाया, थाइलैण्ड,फिलिपीन्स, इण्डोनेशिया, चीन, मंगोलिया एवं रूस आ जाते हैं ।

भारतीय महाद्वीप में ग्रहण का आरम्भ पश्चिमी घाट के अकोला (कर्नाटक के) में ३ बजकर ३९ मिनट पर आरम्भ हुआ । चन्द्रमा की पृथ्वी पर पड़ने वाली छाया तब उत्तर-पूर्व दिशा में घूमती हुई आन्ध्र प्रदेश एवं उड़ीसा प्रान्त पर होती हुई पूर्वी समुद्री छोर पर पुरी के नजदीक ३ बजकर ५६ मिनट (भारतीय समयानुसार) पर छूती हुई निकल गई । इसके बाद एक छोटा सा हिस्सा मिजोरम का भी इसके प्रभाव क्षेत्र में आया ।

ग्रहण की पूर्णता की अवधि में अँधेरे आकाश में केवल चमकदार तारे एवं ग्रह (बुध एवं शुक्र) ही आँखों से दिखाई पड़े ।

इस अवधि में सूरज का प्रकाश सीधे न देख कर उसकी तेजी की १००,००० गुना कम करके देखा जाना चाहिए । सौर विकरण का अल्ट्रावायोलेट एवं इन्फारेड वाला हिस्सा दृष्टि में नहीं आये, इसकी व्यवस्था करने के लिए विशेष फिल्टर ग्लास उपयुक्त होते हैं । काली एक्सपोज की फोटोग्राफी की फिल्म को दुहरा कर ग्रहण को देखा जा सकता है । वेल्डर का डार्क-आर्क, लैन्स भी प्रयोग किया जा सकता है ।

फरवरी १९८० को जो खग्रास सूर्य ग्रहण पड़ा उसे ज्योतिषियों ने ही नहीं वैज्ञानिकों ने भी सारे संसार के लिए अनिष्टकारक बताया ''दैनिक हिन्दुस्तान के १४ जनवरी अंक में वैज्ञानिकों की इस मान्यता का उल्लेख है कि 'इस सूर्य ग्रहण के समय बड़ी मात्रा में गामा आदि किरणों का निर्माण होगा । इन किरणों से समस्त जीवधारियों के स्वास्थ्य पर कुछ न कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । इस समय मनुष्यों का रक्तचाप बढ़ जाने और प्राणियों में दहशत फैल जाने की सम्भावना व्यक्त की गई है । वैज्ञानिकों ने गर्भवती महिलाओं को विशेष रूप से सतर्क किया है कि ये सूर्य ग्रहण के समय बाहर न निकलें। क्योंकि ग्रहण के समय सूर्य से निकलने वाली विभिन्न किरणें गर्भस्थ शिशु को असाधारण रूप से प्रभावित कर सकती हैं ।

सन् १९८० में पूर्ण खग्रास सूर्य ग्रहण भी पड़ा इसके अतिरिक्त एक और महत्त्वपूर्ण घटना घटित हुई वह यह कि वह एक ऐसा वर्ष था जब कि सूर्य पर बनने वाले धब्बों का ग्यारह वर्षीय चक्र पूर्ण हुआ । इस वर्ष सूर्य पर इन धब्बों की संख्या वृद्धि पर थी, परिणामस्वरूप पृथ्वी पर जबर्दस्त चुम्बकीय तूफान उठेंगे, और साथ ही सौरवायु एवं सूर्य की ऊष्मा और घातक हो उठेगी । इन दिनों घातक पराबैंगनी रश्मियों की तीव्रता भी अधिक हो उठेगी, जिसके परिणामस्वरूप भू-मध्य रेखा के समीपवर्ती अक्षांश वाले (भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बर्मा आदि एशियाई) देशों में भयंकर गर्मी पड़ेगी, जोरदार आँधियाँ आयेंगी या मूसलाधार वर्षा होगी । भूकम्प आयेंगे, ज्वालामुखियाँ फटेंगी ।

सूर्य का पूर्ण ग्रहण प्रकृति की अनूठी छवियों में से एक होता है । यह मात्र नव चन्द्रोदय के समय सम्भव है । इसका अर्थ है कि जब चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच हो । चन्द्रमा जब धरती और सूर्य के बीच आ जाता है वह प्रकाश पथ को ढक लेता है और ग्रहण का कारण बनता है । चन्द्र ग्रहण अपने सम्पूर्ण तत्कालीन प्रकाश क्षेत्र में देखा जा सकता है किन्तु सूर्य ग्रहण अधिक से अधिक १० हजार किलोमीटर लम्बे और २५० किलोमीटर चौड़े क्षेत्र में ही देखा जा सकता है । सम्पूर्ण सूर्य ग्रहण की वास्तविक अवधि अधिक से अधिक ७॥ मिनट ही होती है ।

खगोल विज्ञानियों और भौतिकविदों की दृष्टि से भी पूर्ण सूर्य ग्रहण एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन के योग्य घटना है । क्योंकि इस समय सौर वातावरण का अत्युत्तम रीति से अध्ययन सम्भव होता है ।

खग्रास सूर्य ग्रहण के समय सूर्य की ऊपरी सतह पर क्रमशः ये परिवर्तन दिखायी पड़ते हैं सौर वर्ण पर्त में विभिन्न रासायनिक संयोगों के कारण काले धब्बे वाली रेखाएँ दिखायी पड़ती हैं । प्रारम्भ और अन्त में क्रोमोस्फियर रक्ताभ-सा दिखायी पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सर्वप्रथम चन्द्रमा की काली-सी छाया दीखती है, जो सूर्य के गोले के एक हिस्से को छूती सी दिखाई पड़ती है । धीरे-धीरे पूरा सूर्य ढकता जाता है, प्रकाश मद्धिम पड़ता जाता है । हवा में ठण्डक और सिहरन बढ़ने लगती है । जब सूर्य की संकटी सी आभा मात्र ही अवशिष्ट रहती है, उस समय पूरे आकाश में अँधेरा छाने लगता है । कभी-कभी सूर्य-मण्डल के चारों ओर एक हीरक-अँगूठी जैसी आभा दिखायी पड़ती है । इसके कुछ ही क्षणों बाद पूरा सूर्य मण्डल अदृश्य हो जाता है और एक हल्की सी सफेदी भर बच रहती है । कभी-कभी लाल-लपटें जैसी फैलती देखी जाती हैं । इसी समय जब राक्षसी अँधेरा अपनी भुजाएँ चारों ओर फैलाता है; जानवर उत्तेजित हो उठते हैं; पक्षी घोंसलों में दुबक जाते हैं और कई फूल अपनी पंखुड़ियाँ समेट लेते हैं। इस समय सिर्फ खगोलवेत्ता पूरी मुस्तदी के साथ चुपचाप अपने औजारों, उपकरणों के द्वारा अध्ययन में तल्लीन रहते हैं ।

खगोलविद् अधिक अच्छी तरह अध्ययन कर सकने की दृष्टि से ऐसे खग्रास सूर्य ग्रहण पृथ्वी के जिस हिस्से में कुछ अधिक क्षणों तक दिखाई पड़ सकें, वहाँ ही अपने अड्डे जमाते हैं। महीनों पहले से उसकी तैयारी की जाती है । वैज्ञानिक उपकरण तथा अन्य औजार हजारों किलोमीटर तक ढोकर ले जाये जाते हैं । फिर वह घने जंगल के बीच में स्थिति केन्द्र हो अथवा भले ही बीच समुद्र में अवस्थित द्वीप हो । जैसा कि २० जून १९५५ में श्रीलंका में दिखायी पड़ने वाले सूर्यग्रहण के लिए किया गया था ।

१९८२ में होने वाले अपूर्व अन्तरिक्षीय ग्रह संयोग के सदृश इस शताब्दी में पहले सिर्फ दो बार ही ग्रह सम्मिलित हुए हैं । यह है एक ही वर्ष में सात ग्रहण पड़ना । इस शताब्दी में पहली बार ऐसा १९१७ में हुआ था । उस वर्ष चार सूर्य ग्रहण तथा तीन चन्द्रग्रहण पड़े थे । इनमें से जनवरी, जुलाई तथा दिसम्बर में दो-दो तथा जून में एक ग्रहण पड़ा था । दूसरी बार १९३५ में सात ग्रहण पड़े, पाँच सूर्य ग्रहण तथा दो चन्द्र ग्रहण । जिनमें से जनवरी में दो, फरवरी में एक जुलाई में तीन तथा दिसम्बर में एक ग्रहण पड़े । इसके बाद १९८२ में भी सात ग्रहण पड़े इनकी श्रृंखला ठीक १९१७ जैसी ही थी यानी जनवरी में दो, जून में एक जुलाई में दो तथा दिसम्बर में दो ।

ग्रहणों की यह श्रृंखला धनु, मिथुन धुरी पर पड़ रही है। इसीलिए वे राष्ट्र तथा शहर जो इस धुरी के बीच में हैं या जिनकी भूमध्य रेखीय युति इस धुरी पर पड़ती है । वे इन ग्रहणों के प्रतिकूल प्रभाव की चपेट में विशेषकर आयेंगे । इस प्रकार संयुक्त राज्य अमरीका बेल्जियम, इंग्लैंड, तुर्की, वेस्टइंडीज, ब्राजील, मिश्र, स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, हंगरी, स्पेन, पुर्तगाल, लंकाशायर, सहारा का रेगिस्तानी क्षेत्र, नार्वे आदि इस संयोग श्रृंखला से बुरी तरह प्रभावित होंने की आशंका वैज्ञानिकों ने प्रकट की है । ग्रहों की युति तुला में हुई है । इसलिए चीन, हिन्दचीन, रूस तथा मुस्लिम देशों पर भी इनके हानिकर असर की उम्मीद है ।

१६ फरवरी, १९८० को होने वाला खग्रास सूर्य ग्रहण १९८२ की विभीषिकाओं की पूर्व सूचना ही समझा जाना चाहिए । लगभग ऐसे ही कुछ सूर्य ग्रहण २१ अगस्त, १९१४ को तथा २९ मई, १९३८ को हुए थे । ये दोनों ही क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व घटित हुए थे। १९८० का खग्रास सूर्य ग्रहण सन् १४ और ३८ से भी बड़ा था । इतना भयंकर खग्रास सूर्य ग्रहण इस शताब्दी में पहले कभी नहीं हुआ । वह इस शताब्दी के प्रारम्भ के दो वर्ष पूर्व सन् १८९८ में पड़ा था । उन दिनों लगभग ३० वर्ष लम्बे अकाल का दौर अपनी चरम सीमा पर था । उन दिनों भी ऐसे ही भयंकर दुर्भिक्ष की विपत्ति की सम्भावना सिर पर मँडरा रही थी ।

फरवरी १९८२ में सूर्य के जिस ओर पृथ्वी थी उससे विपरीत दिशा में शेष समस्त ग्रह एक सीधी पंक्ति में थे और उनका नेतृत्व कर रहा था-वृहस्पति ग्रह । लेकिन इन सभी ग्रहों के तल एवं स्तर भिन्न-भिन्न थे ।

नवम्बर १९८२ में सूर्य, शनि, गुरु और फ्लूटो की तुला में युति हुई । यह मानव समाज के लिए अशुभ संकट है । लेकिन इससे भी अधिक हानिकारक संयोग इसके पूर्व २१ अगस्त से ११ सितम्बर १९८२ के बीच सामने आया, जब छः ग्रहों राहु, शनि, गुरु, सूर्य, बुध एवं शुक्र की प्रचण्ड सिंह लग्न में युति हुई । ज्योतिर्विज्ञानियों के अनुसार निश्चय ही ऐसी युतियाँ सम्पूर्ण संसार के लिए विशेष हानिकारक हैं । किन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसका यह अर्थ नहीं समझ लेना चाहिए कि सम्पूर्ण मानव-जाति का समूलोच्छेद हो ही जायेगा ।

अब तक जिन सूर्य ग्रहणों के वितरण नोट किये जा सके हैं उनमें प्राचीनतम हैं ई० पूर्व २१३७ को २२ अक्टूबर को देखा गया सूर्य ग्रहण है इसका विवरण चीनी पत्र 'शू चिंग' में दर्ज है । उस समय के दोनों शाही ज्योतिषियों, 'सी' और 'हो' ने इतनी ज्यादा शराब पी ली कि वे लड़खड़ाने लगे और अध्ययन न कर सके । सम्राट ने उन्हें इस पर कठोर दण्ड दिया ।

आस्ट्रियन खगोलवेत्ता टी० अपोलजर ने १८८७ में एक शोध ग्रन्थ प्रकाशित किया, जिसका नाम था "केननडेर फिन्स्टरनिसें । इसमें उन्होंने ८ हजार सूर्य ग्रहणों तथा ५२०० चन्द्र ग्रहणों का विवरण दिया था । जो १२०७ ईस्वीं पूर्व से उन दिनों तक घटित हुए थे, और आगे सन् २१६१ तक होने वाले हैं ।

१९वीं सदी में कुल चार खग्रास सूर्य ग्रहण भारत में देखे गये । पहला २१ दिसम्बर, १८४३ को जिसे मुख्यतः दक्षिणी भारत में देखा गया, पर जिसका कोई रिकार्ड उपलब्ध नहीं है । दूसरा १८ अगस्त, १८६८ को देखा गया। इसका रिकार्ड अध्ययन मछलीपटनम् में खगोलविद् एन० आर० पागसन ने किया । महान फ्रेंच खगोलवेत्ता जे० जानसीन भी इस हेतु भारत आये थे । तीसरा खग्रास सूर्यग्रहण १२ दिसम्बर सन् १८७१ को पड़ा । मद्रास के खगोलवेत्ता अवनाशी ने कोयम्बतूर वेधशाला में इसका अध्ययन किया ।

१९वीं शताब्दी का अन्तिम खग्रास सूर्यग्रहण २२ जनवरी, १८९८ को पड़ा, जो मध्य भारत में देखा गया, इसे अनेक प्रख्यात अँग्रेज एवं अमरीकी खगोलविदों ने देखा जाँचा-परखा, विवरण नोट किये । सर जार्मन लाकेर तथा प्रो० ए० फाउलर ने विजय दुर्ग में खगोल वेत्ता सर विलियम क्रिस्टी तथा प्रोफेसर एच० एच० टर्नर ने शहडोल में अमरीकी ज्योतिर्विद् डब्लू० डब्लू० केम्पबेल ने जेबर में, तथा जान एवरशेड ने तालनी में इसका पर्यवेक्षण अध्ययन किया । इस बार उस्मानिया विश्व विद्यालय हैदराबाद में १६ फरवरी, १९८० के ग्रहण का पर्यवेक्षण किया गया । इसके लिए चार लाख मूल्य के विशेष उपकरण मँगाये गये। संसार भर के वैज्ञानिकों ने इस प्रभाव को जाँचने के लिए अपने-अपने ढंग से प्रयत्न किये ।

१६ फरवरी १९८० को घटित होने वाला खग्रास सूर्य ग्रहण भारतीय पेनिनसुला में देखा गया । यह दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका के दक्षिण में स्थिति अटलांटिक समुद्र में सूर्योदय से आरम्भ हुआ । इसके बाद मध्य अफ्रीका, हिन्दमहासागर होते हुए भारतीय उपमहाद्वीप में देखा गया । तदुपरान्त बर्मा होते हुए वह चीन में सूर्यास्त के समय समाप्त हो गया ।

भारत में यह ग्रहण पश्चिमी तट स्थिति करवाड़ में सर्वप्रथम दिखायी दिया । मानक समय के अनुसार दिन के २-१७ पर । तदुपरान्त गड़ग, रायपुर, दोरनाकल होते हुए पूर्वीतट स्थिति पुरी में समाप्त हुआ । रायपुर में यह २ बजकर २५ मिनट पर तथा पुरी में २ बजकर ४२ मिनट पर दिखायी देना शुरू हुआ । करवाड़ में कुल दो घण्टे ४० मिनट, गउग में २घण्ट४५मिनटे रायपुर में २ घण्टे ४० मिनट, दोरनाकल में २घण्टे ४५ मिनट और पुरी में २ घण्टे बीस मिनट तक दिखाई दिया, अन्य स्थान जहाँ से पूरा ग्रहण देखा गया । धारवाड़, हुवली, महबूबनगर, नालगौंडा, खम्माम, भद्राचलम, कोरापुट, वाविली और भुवनेश्वर ।

भारत के कुछ मुख्य शहरों में सूर्य ग्रहण दिखाई देना निम्नानुसार रहा—

हैदराबाद-२ बजकर २८ मिनट पर, बम्बई २ बजकर १९ मिनट पर, दिल्ली २ बजकर ३६ मिनट पर, कलकत्ता २ बजकर ४७ मिनट पर, अहमदाबाद में २ बजकर २० मिनट पर, भोपाल में २बज कर ३० मिनट से, लखनऊ में २ बजकर ४० मिनट पर ।

सन् १९८० में चार ग्रहण पड़े । पहला १६ फरवरी को पूर्ण सूर्यग्रहण, दूसरा १ मार्च को चन्द्र ग्रहण, तीसरा २७ जुलाई को चन्द्र ग्रहण तथा चौथा १० अगस्त को पुनः सूर्य ग्रहण । उल्लेखनीय है कि ये चारों ग्रहण क्रमशः सूर्य और चन्द्र तथा चन्द्र और सूर्य पन्द्रह दिन की अवधि के भीतर ही पड़े । इस्लाम धर्म की प्रसिद्ध पुस्तक "मौज जात मसीह" के पृष्ठ १४६ पर हजरत इमाम बाकर के सन्दर्भ से कहा गया है—"जब चाँद एवं सूर्य ग्रहण पन्द्रह दिन के फर्क में (अवधि) होंगे तो उससे यह साबित होगा कि कयामत का समय करीब आ गया है ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खग्रास ग्रहण से व्यापक उथल-पुथल सम्भावित

सर्व विदित है कि चन्द्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण के समय पर धरती के साथ जुड़े हुए सम्बन्ध सूत्र और प्रवाह क्रम में व्यतिरेक उत्पन्न होता है, व्यतिरेक से सामान्य प्रक्रिया में अन्तर पड़ता है । फलतः प्रतिक्रिया और परिस्थिति में अन्तर पड़ना भी स्वाभाविक है । ग्रहणों के प्रभाव को चिरकाल से अनुभव किया जाता रहा है और उनके सम्बन्ध में कितनी ही चित्र-विचित्र मान्यताएँ भी हैं, उनमें से कुछ अलंकारिक, कुछ वास्तविक और कुछ निरर्थक हैं । प्राचीन काल के अलंकारिक प्रतिपादनों में ऐसी रहस्यमय वास्तविकताओं का पता चलता है और जो सत्य के अत्यन्त समीप होती हैं । ग्रहणों का प्रभाव असामान्य होता है । इस मान्यता में कोई भ्रान्ति नहीं है । सूर्य का प्रभाव अधिक है, इसलिए उस पर लगने वाले ग्रहण को धरती पर अस्त व्यस्तता भी अधिक होती है । अस्त व्यस्तता से अस्वाभाविक ही नहीं अवांछनीय परिणित भी होती है, इसलिए ग्रहणों को सदा से चिन्ता का विषय माना जाता रहा है विशेषतया सूर्य ग्रहण को ।

सूर्य ग्रहणों की शोध का प्रामाणिक प्रयास २८ जुलाई, १८५१ के सूर्यग्रहण से आरम्भ हुआ है । स्पेन के पूर्वी प्रायःद्वीप से सैनी और वारेन नामक ज्योतिषियों ने उसके चित्र खींचे और ग्रहण के समय की वस्तुस्थिति का पता लगाया । इसके बाद नये उपकरणों की सहायता से विज्ञानी जानसन ने १८ अगस्त, १८६८ के सूर्य ग्रहण की तस्वीरें मलाया प्रायःद्वीप में जाकर उतारी । सन् १८७० में सिरूली ने और भी अधिक स्पष्ट चित्र खींचे । इनसे पता चला कि इस अवसर पर सूर्य पर कुछ चमकीली रेखाएँ दृष्टिगोचर होती हैं और इर्द-गिर्द खास किस्म की तेजोवलय छाया रहता है । सन् १८७१ में नया 'स्वक्टा स्कोप' यन्त्र बना और उसने नई गैसों के प्रवाह तथा वर्णमण्डल का अधिक परिचय दिया । पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय वर्ण मण्डल की गहराई १५००० किलोमीटर आँकी गई है । उससे लाल रंग की विलक्षण चिनगारियाँ छूटती देखी गई । १७ मई, १८८२ को सूर्य ग्रहण मिस्र में देखा गया था उसमें एक चमकीला पुच्छल तारा पकड़ में आया । २२ जनवरी, १८९८ के सूर्य ग्रहण ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने अतिरिक्त लाल लपटें उछलती देखीं । खण्ड ग्रहण तो समय-समय पर होते रहते हैं पर उनसे इतनी जानकारी नहीं मिलती, जितनी कि पूर्ण ग्रहण से ३० जून, १९५४ का सूर्य ग्रहण वाल्टिक सागर क्षेत्र में था और १२ जून, १९५८ का प्रशान्त महासागर में । इस अवसर पर डेजर द्वीप में एक विशेष वेधशाला फिट की गई और पाया गया कि ग्रहण काल में पराबैंगनी विकिरण घटता है किन्तु एक्स किरणों में कोई अन्तर नहीं आता ।

सन् १९८० से लेकर ८८ तक के आठ वर्षों में चलने वाली सूर्य ग्रहण शृंखला असाधारण कही जा सकती है । इस अवधि में १३ सूर्य ग्रहण पड़े । इनमें से ६ पूर्ण खग्रास ५ खण्ड ग्रास और दो कंकणाकृति थे ।

पूर्ण ग्रहणों में १६ फरवरी, ८० का अफ्रीका और भारत में । ३१ जुलाई, ८१ का सोवियत संघ में । ११ जून, ८३ का हिन्द महासागर में । २३ नवम्बर, १९८४ का न्यूगिनी दक्षिणी प्रशान्त में । १२ नवम्बर, ८५ का एण्टार्कटिका, दक्षिणी प्रशान्त में और १८ मार्च, ८५ का प्रशान्त, सुमात्रा, बोर्नियो में खग्रास दीखा । अन्यत्र उन्हें खण्ड खग्रास रूप में देखा गया ।

ग्रहण के समय ऐसी महत्त्वपूर्ण खोजें सम्भव होती हैं जो अन्य समयों पर नहीं की जा सकतीं । सन् १९६८ में लार्कयर और जानसन नामक वैज्ञानिकों ने सूर्य ग्रहण के अवसर पर की गई खोज के सहारे वर्ण मण्डल में हीलियम गैस की उपस्थिति का पता लगाया था । आइस्टीन का वह प्रतिपादन भी सूर्य ग्रहण के अवसर पर भी सही सिद्ध हो सका, जिससे उसने अन्य पिण्डों के गुरुत्वाकर्षण से प्रकाश के पड़ने की बात कही थी । अविज्ञात ग्रह उपग्रहों की खोज के लिए यह ग्रहण काल सर्वोत्तम सुविधाजनक रहता है ।

सूर्य ग्रहण के अवसर पर प्रकाश की तीव्रता ही कम नहीं होती वरन् उसके गुण भी बदल जाते हैं । जानवरों में बेचैनी पायी जाती है । और वे बुरी तरह डरे हुए चिल्लाते हुए देखे जाते हैं । खाना,सोना सभी को हराम हो जाता है। पक्षी अपने घौसलों की ओर भागते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खिले हुए फूल सिकुड़ने और बन्द होने लगते हैं । तापक्रम इतना गिर जाता है कि ओस पड़ने लगती है अचानक सर्दी बढ़ने लगती है और मौसम में आश्चर्यजनक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है । प्रकाश के मोती जैसे तैरते दिखाई पड़ते हैं । ग्रहण लगने से प्रायः पन्द्रह मिनट पहले धूप अनायास ही हल्की पड़ जाती है । १६ फरवरी, ८० के ग्रहण अवसर पर सूर्य मकर और कुम्भ राशि की सीमा रेखा पर था । अतएव उस समय बुध और शुक्र ग्रह आकाश में उगे हुए दिखाई दिये । भाद्र पद, उत्तर भाद्र पद पुनर्वसु तथा प्राश्व और व्याध निग्रह भी उगे हुए दीखे ।

२२ जनवरी, १८९८ में ठीक इन्हीं दिनों जैसा पूर्ण सूर्य ग्रहण भारत में देखा गया था । ८२ वर्ष पूर्व की घटनाओं का उल्लेख विजय दुर्ग (महाराष्ट्र) के परीक्षण कर्त्ताओं ने नोट किया था । उस समय सूर्य का रथ चक्र तेजी से पश्चिम की ओर भागता हुआ और चन्द्र पिण्ड को तेजी से उस पर झपटता हुआ देखा गया । भयानक अँधेरा छाया और सूर्य अस्त हो गया । दो बड़े और तीन छोटे धब्बे उभरे हुए दीखे । ग्रहण लाल वर्ण का था । चाँदनी सी निकल आयी । आकाश में तारे दीखने लगे। इन सब में मंगल अधिक स्पष्ट था । क्षितिज पर पहले कत्थई रंग की आभा देखी गई और फिर वह हल्के बैंगनी तथा सुनहरे रंग में बदलती देखी गई । ग्रहण जिस तेजी से लगा उसी तेजी से समाप्त भी हुआ ।

सूर्य के परिमण्डल (कोरोना) और वर्ण मण्डल (क्रोमोस्फियर) की संरचना, गर्मी तथा दबाव की जैसी सही जानकारी ग्रहण के समय मिल सकती है, वैसी और किसी समय नहीं । वैज्ञानिक इस अवसर पर जिन तथ्यों का पता लगाते हैं, उनमें रेडियो लहरों का उत्सृजन आयनोस्फियर में परिवर्तन, भू चुम्बकत्व का प्रभाव प्रमुख हैं ।

हैदराबाद के सेन्टर आफ एडवास स्टडी इन एस्टोनोमी ने क्रोना के ध्रुवीकरण वर्णक्रम का विश्लेषण अन्तर्ग्रही तरंगों के परिवर्तन की जाँच पड़ताल की और पता लगाया कि जलचरों और नभचरों को सूर्य ग्रहण किस सीमा तक और किस प्रकार प्रभावित करता है । इस शोध को अब 'क्रोनोवायोलाजी' के नाम से अब अतिरिक्त नाम दिया जाने लगा है ।

इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ ऐस्ट्रोफिजिक्स के अनुसार किसी विशिष्ट स्थान से ५० सालों में ४० चन्द्र ग्रहण और २० खण्ड सूर्य ग्रहण देखे जा सकते हैं । किन्तु पूर्ण ग्रहण देखने का अवसर ३६० वर्ष में एक बार ही आता है । चन्द्र ग्रहणों की तुलना में सूर्य ग्रहणों का अनुपात ३:२ होता है। ग्रहण पथ समूची पृथ्वी पर नहीं फैलता, उसका विस्तार मात्र २६२ कि० मी० रहता है ।

२२३ चन्द्रमासों अर्थात् ६५४५ दिनों के उपरान्त हर बार सूर्य और चन्द्रमा ऐसी स्थिति में लौट आते हैं कि ग्रहण चक्र की पहले की तरह पुनरावृत्ति होने लगे। इस आधार पर प्रायः १८ वर्ष १० दिन का ग्रहण क्रम जान लेने के उपरान्त बहुत समय तक के ग्रहणों की भविष्यवाणियाँ की जा सकती हैं । इतने पर भी चन्द्र पथ की विलक्षणता के कारण ठीक उसी स्थान पर इसी रूप में दीख पड़ने में हेर-फेर भी होता रहता है ।

भारत में १६ फरवरी, १९८० वाले सूर्य ग्रहण का पर्यवेक्षण करने के लिए विशेष रूप से तैयारियाँ की गई थीं । इसके लिए ६० बड़े और १२० छोटे निरीक्षण केन्द्र कर्नाटक, उड़ीसा और आन्ध्र के कितने ही स्थानों पर लगाये गये । कई वेधशालाओं से गुब्बारे छोड़े गये और आकाश में उस समय होने वाले परिवर्तनों का पता लगाया जायगा । आन्ध्र प्रदेश चल चित्र संस्थान ने इस अवसर पर ऐसी फिल्म बनायी है जिससे प्राणियों और पदार्थों पर होने वाले सूर्य ग्रहण का पता चल सके ।

इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ ऐस्ट्रोफिजिक्स ने रायपुर जिले के ज्वालाकन्टे गाँव में एक २१ मीटर ऊँचा लौह मंच बनाया था । उस पर 'सेलोस्टेट' रयेक्टोग्राफ जैसे बहुमूल्य यन्त्र लगाये गये थे । इनकी सहायता से ग्रहण के अवसर पर वर्ण मण्डल एवं प्रभा मण्डल की जानकारी देने वाले महत्त्वपूर्ण चित्र लिए गये ।

साधारण ज्ञान के अनुसार सूर्य ग्रहण की विद्या बड़ी जटिल और आश्चर्यजनक है । भूगोल के छात्र जानते हैं कि सूर्य का व्यास ८६४००० मील और चन्द्रमा का मात्र २१६० मील है । इसका अर्थ है सूर्य में ४०० चन्द्रमाओं का समावेश । सूर्य पृथ्वी से ९२९५७२०० मील की औसत दूरी पर है । चन्द्रमा की औसत दूरी २३८८४० मील है । इसका अर्थ भी यही होता है कि चन्द्रमा जितनी दूरी पर विराम देते हुए सूर्य तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पहुँचने का प्रयत्न किया जाय तो वैसे विराम ४०० होंगे । ऐसी दशा में पृथ्वी और सूर्य के बीच में आ जाने पर भी चन्द्रमा की छाया पूरी तरह सूर्य को ढक नहीं सकती । फिर भी पूर्ण सूर्य ग्रहण दीखता है । इस आश्चर्य का कारण पृथ्वी से चन्द्रमा की समीपता ही है । यदि वह अपेक्षाकृत दूर होता तो फिर सूर्य के एक भाग को ही उसकी छाया ढक पाती ।

पूर्ण ग्रहण दो मिनट पचासवा सैकिण्ड का ही था । इसका १२ बजकर ४२ मिनट पर दक्षिण अटलांटिक महासागर में दक्षिण अफ्रीका के मध्य भाग से प्रायः ढाई हजार मिलोमीटर दूरी से आरम्भ हुआ । इसके उपरान्त वह कांगो, जैरे, तंजानिया, केनिया होकर आगे बढ़ता हुआ अरब सागर में अफ्रीका के पूर्वी तट तक चला गया । इस स्थान पर वह चार मिनट १२ सैकिण्ड दिखाई दिया । धरती पर यह ग्रहण दर्शन की अधिकतम अवधि थी । भारत के कर्नाटक, आन्ध, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, मिजोरम प्रान्तों को पार करता हुआ वह बंगाल की खाड़ी में बढ़ा। बंगाल देश और बर्मा होते हुए अन्ततः वह चीन के चुंग किंन नगर से १०० कि० मीटर दूर पर समाप्त हुआ । देशों के साथ इस ग्रहण की संगति जोड़ी जाय तो उस परिधि में प्रायः पूरा अफ्रीका महाद्वीप, सऊदी अरब, ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नैपाल, भूटान, श्रीलंका, बंगलादेश, बर्मा, मलाया, थाइलैण्ड, फिलिपाइन्स, इण्डोनेशिया, चीन, मंगोलिया तथा सोवियत संघ के देश आते थे । अन्य देशों को इस अद्भुत दर्शन से वंचित रहना पड़ा । पूर्ण ग्रहण की पट्टी ११५ से १३० मिलोमीटर की सीमा में फैली थी । अन्यत्र वह खण्ड ग्रास दिखाई पड़ी ।

भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की भ्रमण गति प्रति घण्टा १७०० किलोमीटर पश्चिम से पूर्व की ओर होती है । जबकि चन्द्रमा की छाया पृथ्वी को काटते हुए प्रति घण्टा ३४३० किलोमीटर है । इस अन्तर को ध्यान में रखते हुए यदि पृथ्वी से अधिक समय तक यह ग्रहण देखना हो तो सामान्य अवधि ६ मिनट को बढ़ाकर ८० मिनट तक किया जा सकता है । सुपरसोनिक विमानों की जो गति है, उसे देखते हुए उनमें बैठे हुए अन्वेषणकर्त्ता अपना शोध काल इतना लम्बा बढ़ा सकते हैं । इस सन्दर्भ में प्रयत्न किये भी गये क्योंकि अभी जो थोड़ी सी अवधि है, वह अन्तरिक्ष की उथल-पुथल के पक्षों को जानने के लिए अपर्याप्त ही कही जा सकती है ।

सूर्य के चारों ओर फैले हुए प्रभा मण्डल में विद्यमान गैस की पर्त का तापमान १० लाख सेन्टीग्रेट पाया गया, जबकि सूर्य के धरातल का मात्र छः हजार सेन्टीग्रेट । यह अद्भुत अन्तर किस कारण है इसकी जानकारी ग्रहण के अवसर पर बनने वाली विशेष स्थिति से अपेक्षाकृत अधिक सरलता से मिल सकती है ।

कोणार्क के सूर्य मन्दिर पर ग्रहण की मध्य रेखा आती है, अस्तु वहाँ से यह अन्वेषण अधिक अच्छी तरह हो सकने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों के जत्थे वहाँ पहुँचे । यह मन्दिर ७०० वर्ष पूर्व ठीक ऐसे स्थान पर बना है जहाँ सूर्य ग्रहण का प्रभाव अधिक स्पष्ट और अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में देखा जा सकता है । भारत के विभिन्न केन्द्रों में प्रस्तुत सूर्य ग्रहण का पर्यवेक्षण करने के लिए संसार भर से प्रायः एक हजार वैज्ञानिक आये, जिन्होंने अपने-अपने शोध क्षेत्र पर होने वाली ग्रहण प्रतिक्रिया की बहुमूल्य यन्त्रों के आधार पर जाँच पड़ताल की ।

ज्योतिषी और विज्ञानी इस सम्बन्ध में एक मत हैं कि ग्रहण काल से अन्तरिक्षीय विकरण का मनुष्यों और पदार्थों पर अनुपयुक्त प्रभाव पड़ता है । इसलिए उस समय भोजन न करें, खुली आँख से ग्रहण को न देखने, गर्भवतियों को भीतर रहने, बीमारों और कमजोरों को खुली जगह की अपेक्षा भीतर रहने की चेतावनी दी गई और कहा गया कि उस विकरण के सम्पर्क में न आना उपयुक्त है । इससे सिद्ध होता है कि यह प्रभाव किसी न किसी रूप में अनुपयुक्त होता है ।

सूर्य ग्रहण होते यों हर साल हैं, पर वे खग्रास नहीं होते । साथ ही एक क्षेत्र में भी बार-बार नहीं दीखते। एक ही स्थान पर दुबारा खग्रास का दृश्य देखना हो तो उसके लिए ३६० वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । इस बार भी भारत में इस रूप में वह इसी रूप में इतनी ही लम्बी अवधि के बाद देखा जा रहा है ।

भूतकाल में जब-जब ऐसे सूर्य ग्रहण पड़े हैं उसके कुप्रभाव ही सामने आये हैं । इस बार भी यदि ऐसा हुआ तो समझना चाहिए कि आज की परिवर्तन प्रक्रिया को देखते हुए उससे अवांछनीय तत्वों का ही विनाश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होगा। हर विनाश के पीछे विकास की सम्भावना भी रहती है और वही सन्तुलन को बनाती है । इस आधार पर देर तक चलने वाले इस सूर्य ग्रहण का एक परिणाम सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धन भी होना चाहिए । इस प्रकार समूची प्रतिक्रिया के शुभ और अशुभ का सम्मिश्रण कह सकते हैं । संक्षेप में इसे युग परिवर्तन में सहायक ही समझा जाना चाहिए ।

अन्तरिक्ष विज्ञानी डा० श्रीवास्तव' के अनुसार—सूर्य की घातक किरणों से रक्षा करने वाली वायु मण्डल में उपस्थित गैस की पर्त दस प्रतिशत घट जाने के कारण ग्रहण के समय पृथ्वी पर अधिक विध्वंसक प्रभाव पड़ता है।

इन दिनों सूर्य में कम्पन चल रहा है । वह प्रतिवर्ष १३ किलोमीटर सिकुड़ रहा है । साथ में उसमें धब्बे भी असाधारण रीति से उभर रहे हैं जो अपने कुप्रभाव के लिए बहुत उत्तरदायी होंगे । इन सबके उतार-चढ़ाव स्वरूप अगले दिनों व्यापक उथल-पुथल की कल्पना निराधार नहीं कही जा सकती ।

आखिर यह हस्तक्षेप क्यों ?

अन्तरिक्ष विज्ञानियों में आजकल यह चिन्ता का विषय बना हुआ है कि अब अन्तरिक्ष जगत के अनुदान पृथ्वी को मिलते रहने का क्रम कम क्यों होता जा रहा है ? उसकी जगह उसके अभिशापों की वर्षा अधिक होने लगी है । ऐसा क्यों ?

गम्भीरता से विचार करने पर जिन तथ्यों की जानकारी मिलती है वह यह है कि इन दिनों विभिन्न देशों की अन्तरिक्ष में अपना-अपना कब्जा जमाने की होड़ असाधारण रूप से बढ़ी है । मनुष्य ने अब पृथ्वी के अतिरिक्त चन्द्रमा, मंगल, बुद्ध, वृहस्पति जैसे ग्रह-उपग्रहों तक यात्राक्रम चलाकर अंतरिक्ष में अपना हस्तक्षेप आरम्भ कर दिया है । चन्द्रमा पर तो बस्ती बसाने की भी योजना बन रही है । ऐसी दशा में इन ग्रह-पिण्डों के गति-प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न होता है, जिसकी प्रतिक्रिया विभिन्न प्रकार के विक्षोभों के रूप में सामने आती है ।

इसके अतिरिक्त विभिन्न उद्देश्यों को लेकर प्रति वर्ष न जाने कितने कृत्रिम भू-उपग्रह छोड़े जाते हैं । यह सभी पृथ्वी के रक्षा-कवच को भेदते हुए निकल जाते हैं । ओजोन से बने इस रक्षा-कवच पर लगातार होने वाले प्रहार से अब वह कमजोर पड़ता जा रहा है । उसमें जगह-जगह छिद्र बन गये हैं, जिससे विनाशकारी किरणें बेरोकटोक आने लगी हैं और पृथ्वी पर तरह-तरह के उपद्रव खड़े कर रही है । जब एक कवच क्षतिग्रस्त हो और अन्य सही हों, तो किसी प्रकार काम चल जाता है, पर जब सभी रक्षा-कवच क्षतिग्रस्त हो गये हों, तो निश्चय ही यह चिन्ता की बात है । अब तक तो हमें सिर्फ ओजोन पर्त के रूप में एकमात्र रक्षा-कवच की जानकारी थी, पर विशेषज्ञ बताते हैं कि पृथ्वी के चारों ओर इस प्रकार के अनेकानेक कवच हैं । रेडियो किरणें, ब्रह्माण्डीय किरणें, आइनोस्फीयर, स्ट्रेटोस्फीयर थमोस्फीयर आदि पर्तों को इन्हीं के समतुल्य समझा जा सकता है । अन्तरिक्ष से छेड़-छाड़ के दौरान यह सभी पर्तें न्यूनाधिक रूप में विनष्ट होती हैं । इसके अतिरिक्त इस क्रम में हम प्रकृति के उस स्वाभाविक क्रम में भी व्यतिक्रम उत्पन्न करते हैं, जिससे समस्त ग्रह-नक्षत्र सम्बद्ध हैं । आँकड़े बताते हैं कि प्रति वर्ष छोड़े जाने वाले सैकड़ों भू-उपग्रहों के क्षतिग्रस्त पुर्जे का कबाड़ा अन्तरिक्ष में अब तक इतने बड़े परिमाण में इकट्ठा हो गया है, जिसे टनों में आँका जा सकता है । दिन दिन इस मलवे में बढ़ोत्तरी ही हो रही है, जिससे अन्तरिक्ष जगत के प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न होता है । इन दिनों अन्तरिक्ष के बढ़ते दुष्प्रभाव के अनेक कारणों में यह एक प्रमुख कारण है कि उसे नगरपालिका का कूड़ा घर बना दिया गया है ।

साँप जब कुण्डली के भीतर रहता है तो वह हर प्रकार सुरक्षित होता है । पिंजरों में रहने वाले चूहों एवं अन्य पशु-पक्षियों के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है । मनुष्य के सम्बन्ध में यही बात सत्य है । उसकी सुरक्षा इसी में है कि वह पृथ्वी के रक्षा कवच की लक्ष्मण-रेखा के भीतर रहे । अन्तरिक्ष अन्वेषण के नाम पर उससे बाहर निकलने की अनावश्यक चेष्टा न करे, अन्यथा समस्त मानवता के लिए प्राण-हरण जैसी विपदा का सामना करना पड़ सकता है । समय-समय पर होने वाले परीक्षणों पर्यवेक्षणों से इसकी जानकारी भी मिल रही है, कि इन दिनों मनुष्य द्वारा उठाया गया कदम अन्ततः आत्मघाती सिद्ध हो सकता है, क्योंकि विभिन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्रों में पूर्व की और अब की परिस्थितियों में जब परस्पर तुलना की जाती है, तो पाया जाता है कि दोनों की स्थिति में जमीन-आसमान जैसा अन्तर आ गया है इन दिनों पृथ्वी की रक्षा कुण्डली के टूटने के कारण परिस्थितियाँ और खराब ही हुई हैं ।

जिन्होंने अन्तर्ग्रही परिस्थितियों और हलचलों का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है उनका मत है कि विगत कुछ दशकों में असन्तुलन इतना बढ़ गया है, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप सूर्य,चन्द्र और पृथ्वी की प्रकृति में विपरीतता का व्यवहार दृष्टिगोचर हो रहा है । इसका कारण बताते हुए खगोलवेत्ता कहते हैं कि इस विशाल ब्रह्माण्ड का हर घटक परोक्ष रूप से एक-दूसरे से सम्बद्ध है । यहाँ एक ही हलचल सदा दूसरे को प्रभावित करती है । अतः प्रत्यक्ष रूप से कोई अवांछनीय कार्य न करके भी परोक्ष रूप से हम वैसे कार्यों में संलग्न हो रहे हैं, जिनका दूरगामी दुष्परिणाम बाद में सामने आकर रहेगा ।

क्रिया की प्रतिक्रिया का सिद्धान्त सर्वविदित है । जब किसी को अनावश्यक रूप से छेड़ा जाता है, तो उसका परिणाम सदा बुरा होता है । पिंजरे में बन्द शेर, भालू बन्दर जैसे प्राणियों को छेड़ने पर वह कुपित होते और आक्रमण के प्रयास करते हैं । विषधर सर्प छोड़े जाने पर न फुँसकारता है, वरन् कई अवसरों पर तो वह छेड़खानी करने वाले के लिए प्राणघातक सिद्ध होता है । अन्तरिक्ष के सम्बध में हमारे वर्तमान क्रिया-कलाप भी इसी स्तर के हैं, फलतः उसके दुष्परिणाम भी भुगतने पड़ रहे हैं ।

चन्द्रमा को ही लें । वह पृथ्वी के समीप होने के कारण आकाश मण्डल में विद्यमान तारों की रश्मियों को हम तक पहुँचाने में संचार उपग्रह का काम करता है । पृथ्वी का मौसम बहुत कुछ इसी के सन्तुलन पर निर्भर करता है । इसमें थोड़ा सा भी व्यतिरेक भूकम्प, ज्वालामुखी, विस्फोट,उल्कापात, अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसे विनाशकारी परिवर्तनों को जन्म देता है । काफी पहले सन् १९३० में अमेरिका में पड़े दुर्भिक्ष का प्रमुख कारण चन्द्रमा की असन्तुलित गतिविधियों को बताया जाता हैं । स्कॉट एयरफोर्स बेस के विलियम कैम्पवेल ने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि पिछले दिनों भारत में पड़ने वाला असाधारण सूखा ऐसे ही अन्तर्ग्रही असन्तुलन का परिणाम था । वैज्ञानिकों के अनुसार चन्द्रमा के गति-चक्र सम्बन्धी ५०० वर्षों के रिकार्ड का जब अध्ययन किया गया तभी अनेक देशों में बार-बार आने वाले प्राकृतिक प्रकोपों का रहस्योद्घाटन हो सका । उनका कहना था, कि इसी अध्ययन के बाद यह जाना जा सका कि क्यों चीन का उत्तरी भाग बाढ़ और सूखे की चपेट में लम्बे समय से आता रहा है । जापान और दक्षिण अमेरिका में आने वाले प्राकृतिक प्रकोप भी अन्तर्ग्रही असन्तुलन के परिणाम बताये जाते हैं ।

अन्तर्ग्रही सम्बन्धों और प्रभावों का उल्लेख भारतीय मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही कर दिया था और कहा था कि हम सब ग्रह-नक्षत्रों से असंदिग्ध रूप से प्रभावित होते हैं । इसी आधार पर उन्होंने ज्योतिष का विकास किया था, ताकि ग्रहों का विशिष्ट लाभ, विशिष्ट परिमाण में हस्तगत करने के लिए विशिष्ट एवं उपयुक्त समय की जानकारी प्राप्त की जा सके । उसकी गणना और परिणामों की सत्यता के आधार पर ही उसे विज्ञान स्तर की मान्यता मिल सकी और उसकी एक स्वतन्त्र शाखा के रूप में उसे स्वीकार किया जा सका । इससे न सिर्फ इस विधा की प्रामाणिकता सिद्ध हो सकी वरन् अन्तर्ग्रही प्रभावों-परिणामों की भी सत्यता असंदिग्ध सिद्ध हुई । तब ज्योतिर्विज्ञान का विकास इसलिए किया गया था कि अन्तर्ग्रही अनुदानों से लाभान्वित हुआ जा सके, पर अन्तरिक्षीय प्रवाह के स्वाभाविक क्रम में छेड़छाड़ से अब स्थिति वैसी नहीं रही। कारण है कि अब उसकी गणनाएँ और भविष्यवाणियाँ प्रायः गलत सिद्ध होने लगी हैं तथा ग्रह-पिण्डों के दुष्परिणाम बढ़ने लगे हैं पर ऐसी बात नहीं है कि ग्रह-नक्षत्रों ने अपने अनुदान पूर्णतः बन्द कर दिये हों । सूर्य अब भी महासूर्य से ताप और तेजस्विता अर्जित करके पृथ्वी सहित अन्य अनेक ग्रहों को आभा और ऊर्जा प्रदान करता रहता है । उसी प्रकार चन्द्रमा शीतलता प्रदान करता है । यदि उसकी शीतलता पृथ्वी को प्राप्त होती नहीं रहती, तो यहाँ सब कुछ जल कर भस्मसात् हो गया होता ।

यह सब ग्रहों के धरती वासियों पर उपकार हैं, जो आगे भी बने रह सकते हैं, बशर्ते कि उपकार का बदला प्रत्युपकार से चुकाया जाय छेड़खानी न की जाय, अन्यथा माँ जैसी स्नेह-शीतलता का अनुदान-वरदान प्रदान करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले ग्रह गोलक काली दुर्गा, फुसकारती सर्पिणी, खूँखार शेरनी की भूमिका निभाने लगें, तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए । अच्छा हो हम पहले अपने गृह का, पृथ्वी का ध्यान रखें, अन्तरिक्ष में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें, तभी हम उनके बढ़े-चढ़े अनुदानों को हस्तगत करने में सफल हो सकते हैं।

मूर्धन्यों और मनीषियों के कथन

चार्ल्स बर्लिट्स की प्रसिद्ध पुस्तक "डुम्ज डे १९९९" में इस प्रकार की अनेकों संगतियों का संग्रह है, जिनमें इस सहस्राब्दी का अन्त डरावनी विचित्रताओं से भरा हुआ बताया गया है । इसमें रहस्यवादियों की भविष्य-वाणियाँ हैं, तो ज्योतिर्विज्ञानियों एव अन्यान्य विशेषज्ञों के अभिमत भी संकलित हैं ।

पुराणों में कल्कि अवतार का और युग बदलने का जो वर्णन है वह कब होगा ? इसका संकेत इसी अवधि के साथ तालमेल बिठाता है ।

बौद्ध धर्म में एक मान्यता है कि तथागत के २५०० वर्ष उपरान्त फिर अधर्म का अन्धकार छायेगा । उसके निवारण के लिए दूसरे बुद्ध मैत्रेय के रूप में आवेंगे ।

तिब्बतियों का विश्वास रहा है कि १३वें दलाईलामा अन्तिम अवतार होंगे । इसके बाद संसार का यह स्वरूप न रहेगा । नयी सृष्टि जैसा नया परिवर्तन होगा ।

प्रथम सहस्राब्दी के अन्तिम वर्ष भारी विपत्तियों से भरे और उथल-पुथल वाले रहे हैं । सन् ९९९ का अन्तिम दिन इस दृष्टि से आशंका भरा माना गया था कि सन् १००० न जाने क्या विपत्ति लाये । उसके प्रथम दिन से लेकर वर्ष के भीतर न जाने क्या दैवी संकट उतर आये ?

पोप सिल्वेस्टर द्वितीय की अध्यक्षता में सेन्टपीटर चर्च में एक बहुत बड़ी प्रार्थना सभा नियोजित की गई । जिसमें समीपवर्ती क्षेत्रों के अनेकों गण्यमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। सभी सामूहिक प्रार्थना करते रहे "भगवान तू सर्वशक्तिमान है तू चाहे तो विपत्ति भगा सकता है और हम सबको बचा सकता है ।" ऐसी प्रार्थना सभाएँ उस वर्ष अन्यत्र भी होती रहीं । सभी गिरजाघरों ने अपने-अपने ढंग से इस के निमित्त धर्मानुष्ठान सम्पन्न किये ।

वह समय टल गया और उसके एक हजार वर्ष बाद सन् १९९९ की बारी है । समझा जाता है कि सन् २००० भी ऐसी ही उथल-पुथल का होगा । अत्युक्ति और अलंकार की भाषा में इसे प्रलय भी कहा जा सकता है । उस कथन का अभिप्राय होता है ऐसा परिवर्तन जो भूतकाल की तुलना में असाधारण रूप से भिन्न हो । आवश्यक नहीं कि उसमें दैवी प्रकोप बरसें ही और धन-जन की हानि होकर ही रहे । उथल-पुथल का अर्थ होता है-क्रान्ति । राजनैतिक क्रान्तियों के समय होती रहने वाली मार-काट को भी इसका उदाहरण नहीं माना जा सकता । बिजली भाप और तेल की शक्ति हाथ लगने पर जो औद्योगिक क्रान्ति हुई, उसकी परिणति और भी अद्‌भुत हुई है । इस आर्थिक या वैज्ञानिक क्रान्ति को किसी बड़ी राज क्रान्ति से कम नहीं अधिक ही माना जायगा । सहस्राब्दी के अन्त में ऐसे ही किसी महान परिवर्तन की बात सोची जाय तो अधिक उपयुक्त है । दैवी प्रकोप और विनाश लीला को ही प्रलय कहना ठीक न होगा । यदि समग्र विश्व का विनाश न होना हो तो क्षेत्रीय विपत्तियाँ तो समय-समय पर आती भी रही हैं और भविष्य में भी आती रहेंगी । मनुष्य उनका अभ्यस्त हो चुका है । उसे विदित है कि घाव कैसे भरे जाते हैं ?

बाइबिल की एक भविष्यवाणी के अनुसार १९९९ के करीब इसराइल का सारी दुनिया के साथ युद्ध होगा । भारी विनाश होगा और इसके बाद एक नई दुनिया बसेगी। इस सम्भावना की संगति इस प्रकार बैठती है कि अरब इसराइल विग्रह का अन्त अभी निकट नहीं दीखता । गुत्थी उलझती ही जाती है और रूस अमेरिका के पृष्ठ पोषण से यह संकट विश्व युद्ध स्तर तक पहुँच सकता है ।

खगोल वेत्ताओं के अनुसार विश्व पंचांग २५८१७ वर्ष का होता है । इसके बाद भारी परिवर्तन होते हैं और प्रकृति प्रवाह तथा लोक प्रचलन में असाधारण परिवर्तन उत्पन्न होते हैं । इस स्थिति को नई दुनिया बसने का नाम दिया गया है । बेवीलोन ज्योतिषी किसी समय अपनी विद्वता और प्रामाणिकता के लिए विश्व विख्यात थे । उस समय इनके इस प्रतिपादन पर किसी ने उँगली नहीं उठाई थी और वह कथन एक मान्यता के रूप में चलता आ रहा था । अब नवीन अन्तरिक्ष विज्ञानी भी विश्व कलेण्डर सम्बन्धी उपरोक्त मान्यता का समर्थन करने लगे हैं । तारा मण्डल के क्रान्ति चक्र के साथ इसकी संगति बैठती है । यह २५८१७ वर्ष की गणना आगामी १७ सितम्बर २००१ को पूरी होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

चार शतक पूर्व के एक यहूदी भविष्य वक्ता नोस्त्रादामस के कथन उनके समय में तथा बाद में भी सही सिद्ध होते रहे हैं । उनके कथनानुसार सन् १९९९ के जुलाई मास में चीन द्वारा विश्व युद्ध खड़ा किया जाना चाहिए ।

एडगर से लेकर जोन डिक्सन तक के मूर्धन्य भविष्य वक्ताओं की कथन श्रृंखला में लगभग ऐसे ही संकेत हैं जिनसे प्रतीत होता है कि वर्तमान सहस्राब्दी का अन्तिम चरण ऐसा हो सकता है जिसमें अद्भुत प्रकृति-गत उखाड़-पछाड़ हों आश्चर्यचकित करने वाले घटनाक्रम घटें और लोक जीवन में ऐसे परिवर्तन हों जिन्हें विज्ञान इतिहास में प्रचलित रहें प्रचलनों की तुलना में असाधारण हेर-फेर दृष्टिगोचर होने लगे ।

ज्योतिर्विज्ञानियों का मत है कि युग परिवर्तन की इस बेला में प्रकृति में ऐसे कितने ही बाह्य चिन्ह प्रकट हो सकते हैं जो सामयिक रूप से अनिष्टकारी भी हो सकते हैं ।

नृतत्व विज्ञानी कहते हैं कि बढ़ती हुई जनसंख्या अपने समय की सबसे बड़ी समस्या है । कुछ ही दिनों में अनियन्त्रित प्रजनन पर भूख, प्यास बुद्ध और महामारी की गाज गिरेगी और फलतः यह अवाँछनीय प्रजनन स्वयं तो मरेगा ही, धरती की परिस्थितियों को भी इस योग्य न रहने देगा, जिसमें बचे खुचे लोगों को निर्वाह मिल सके।

शरीर शास्त्री कहते हैं, लोगों की आदतें इस प्रकार बिगड़ रही हैं कि अभक्ष्य भक्षण, अचिन्त्य चिन्तन, अकृत्यों का अनुसरण जो प्रतिक्रिया उत्पन्न कर रहा है उसके फलस्वरूप स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन वाले व्यक्ति कहीं ढूँढने पर भी नहीं मिल सकेंगे । दुर्बलता और विक्षिप्तता का दौर इस प्रकार बढ़ेगा कि चिकित्सकों से उस व्यापक पतन की रोकथाम सम्भव न हो सकेगी ।

समाज वेत्ता कहते हैं कि स्वार्थपरता, संग्रह, विलास और उपयोग की लिप्सा पारस्परिक स्नेह सहयोग की उन परम्पराओं को नष्ट करके रहेगी जिसके आधार पर मानवी विकासा सम्भव हुआ है अनुशासन की अवहेलना उच्छृंखलता में गर्व, अपराधों पर अनियन्त्रण की स्थिति जिस क्रम से बढ़ रही है उससे समाज संस्था में आदर्श नाम की कोई चीज बच नहीं पायेगी । लोग भूखे भेड़ियों की तरह एक दूसरे पर घात प्रतिघात लगाते और यादवी आत्मघात के शिकार बनते पाये जायेंगे ।

यह सभी सम्भावनाएँ उन मूर्धन्य लोगों ने व्यक्त की हैं जिनके निष्कर्ष तथ्यपूर्ण प्रामाणिक माने जाते हैं । इन समस्याओं के रहते भविष्य अंधकारमय लगता है । जिनके हाथ में संसार के भाग्य निर्धारण की शक्ति है वे पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में रह रहे हैं और ऐसा कुछ कर नहीं पा रहे है कि विनाश के प्रवाह को रोकने और विकास के ठोस आधार खड़े करने में सफल हो सकें । वे भी चिन्तित और निराश दीखते हैं । दो हाथ जोड़ने का प्रयत्न करने पर रस्सी चार हाथ अन्यत्र से टूटने लगे तो प्रयत्न कर्ताओं को भी हार मानते देखा जाता है ।

संसार में ऐसे अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न भविष्य वक्ता भी यदा-कदा देखने सुनने में आते है, जिनके कथन सुनिश्चित माने जाते हैं । जो कथन-अब तक सही सिद्ध हो चुके वे ही यह बताते हैं कि इनके द्वारा कहीं गई बातें भविष्य में भी सच हो सकती हैं । इस स्तर के सूक्ष्मदर्शियों की भविष्य-वाणियों में निकट भविष्य की कष्ट कारक माना गया। मनुष्य कृत उपद्रवों के अतिरिक्त दैवी प्रकोपों की सम्भावना भी व्यक्त की गई है ।

अध्यात्म वेत्ता कहते हैं कि समस्त मनुष्य समाज एक शरीर की तरह है और उसके घटकों को सुख-दुःख में सहयोगी रहना पड़ता है एक नाव में बैठने वाले साथ-साथ डूबते पार होते हैं । मानवी चिन्तन और चरित्र यदि निकृष्टता प्रवाह में बहेगा तो उसकी अवांछनीय प्रतिक्रिया सूक्ष्म जगत में विषाक्त विक्षोभ उत्पन्न करेगी और प्राकृतिक विपत्तियों के रूप में प्रकृति प्रताड़ना बरसेगी । चित्र विचित्र स्तर के दैवी प्रकोप संकटों और त्रासों से जन-जीवन को अस्त-व्यस्त करके रख देंगे । हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि अपनी सज्जनता तक ही सीमित न रहे वरन् आगे बढ़ कर सम्पर्क क्षेत्रों की अवांछनीयता से जूझे । जो इस समूह धर्म की अवहेलना करता है वह भी विश्व व्यवस्था की अदालत में अपराधी माना जाता है । सामूहिक कर दण्डों की तरह निर्दोषी समझे जाने वालों को भी त्रास सहना पड़ता है । गेहूँ के साथ घुन पिसता है,सूखे के साथ गीला जलता है-जैसी उक्तियाँ इस अर्थ में सच हैं कि सामूहिक उत्तरदायित्वों की अवहेलना व्यापक विपत्तियों का नियमित कारण बनती है ।

सूर्य का पृथ्वी से सीधा सम्बन्ध है और उसी का प्रभाव विशेष रूप से धरती के वातावरण को प्रभावित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है । पर इस बार वृहस्पति ग्रह से भी विलक्षण प्रकार की उत्तेजनाएँ उत्पन्न हो रही हैं और उनका सीधा प्रभाव अपनी धरती पर भी पहुँचने की सम्भावना है । सूर्य स्पॉट और वृहस्पति के विकरण का प्रभाव कोढ़ में खाज की तरह दुहरी विपत्ति का निमित्त बन सकता है ।

ऐसे ही अनेक कारणों को दृष्टि में रखते हुए सूक्ष्म दर्शियों ने सन् ८० से २००० के मध्यवर्ती २० वर्षों को अव्यवस्था, विक्षोभ और विपत्ति से भरे पूरे बताया है । इन प्रतिपादनों की एक संगति यह भी बैठती है कि युग परिवर्तन की सन्धि वेला आ गई । उसमें ऐसी उलट-पुलट होनी स्वाभाविक है । असुरता अपना स्थान छोड़ते-छोड़ते जीवन-मरण की लड़ाई लड़ेगी । देवत्य को भी इन्हीं दिनों सत्तारूढ़ होना है । इसलिए प्राचीन काल के देवासुर संग्राम की तरह इन दिनों भी व्यापक विग्रह दृष्टि गोचर हो और उससे सामान्य जन-जीवन में अस्त-व्यस्तता उत्पन्न हो तो उसे अप्रत्याशित नहीं माना जाना चाहिए ।

इस बीच प्रकट होने वाले अनिष्टकारी प्रकृति तत्वों में से इन दिनों धूमकेतु की चर्चा जोरों पर है ।

भौतिक विज्ञानी जे० एच० उर्टसे ने धूमकेतुओं की उत्पत्ति के बारे में परिकल्पना की है । उनका कहना है कि मंगल और वृहस्पति के बीच उल्का पट्टे के रूप में धूमकेतु बादल पैदा होते हैं, जो प्लूटों की परिभ्रमण कक्षा के पीछे स्थित होते हैं । ग्रह बनने से वंचित रहने वाले तथा नीहारिका वलय से अवशोषित पदार्थ के पिण्ड रूप में एकत्रीकृत ऊर्जा पुंज को वह क्षेत्र निरूपित करता रहता है । सूर्य से दूर रहने के कारण उसकी गैस जमा रहती है पर नजदीक आते ही वाष्पीभूत होने लगती है तथा विशालकाय पूँछ के रूप में बदल जाती है । धूमकेतुओं के विस्तृत अध्ययन ने ५ अरब वर्ष पूर्व अन्तर आकाशीय गैस वे धूल कणों से सौर मण्डल के जटिल निर्माण प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करने की सम्भावना भी कुछ वैज्ञानिक व्यक्त कर रहे हैं ।

धूमकेतु की प्रतिक्रियाओं के सम्बन्ध में तरह-तरह की अटकलें लगायी जाती रही हैं । प्रायः उसे अपशकुन सूचक माना जाता है । सन् १९८० में हैली का प्रसिद्ध धूमकेतु आकाश में उभरा । उसी वर्ष संसार में व्यापक स्तर पर इन्फ्लुएन्जा रोग फैला । ज्योतिर्विज्ञानियों ने विश्व भर में इस वर्ष आयी भंयकर बाढ़ का कारण धूमकेतु को ही बताया ।

वर्ष १९८० में खगोलविदों तथा जीव विज्ञानियों ने संयुक्त रूप से कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं . उनका कहना है कि धूमकेतु पृथ्वी पर अदृश्य हानिकारक रसायनों की वर्षा करते हैं एवं हवा के माध्यम से कुछ गम्भीर रोगों को फैलाने की भूमिका भी निभाते हैं । वे कितने ही नये प्रकार के रोगाणुओं को भी जन्म देते हैं ।

पिछले दिनों नवम्बर ८५ में हेली धूमकेतु पृथ्वी की अति निकट से गुजरा । खगोलविदों का कहना है कि वह अपने साथ लायी विषैली गैसों और धूलिकणों का एक जहरीला बादल पृथ्वी के वायुमण्डल में छोड़ा गया है, जिसका दुष्परिणाम भयंकर बीमारियाँ और प्रकृति प्रकोपों के रूप में इन दिनों दिखायी पड़ रहा है ।

इसी शताब्दी में ३० जून, १९०८ को पृथ्वी के हैली के पथ से गुजरने पर एक विचित्र घटना घटी थी । हैली द्वारा बिखेरा गया एक वृहद् मलवे का पिण्ड पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षणीय खिंचाव में आ गया था जो रूस के मध्य साइबेरिया प्रान्त के निकट गिरा । उसके दुष्प्रभाव से टून्गुस्का नदी के निकट का २००० किलोमीटर क्षेत्रफल का सफाया हो गया । ८०० किलोमीटर दूर से ही वह प्रकोप देखा तथा विकराल ध्वनि सुनी गयी ।

धूमकेतुओं के प्रगट होने के साथ-साथ कितनी ही ऐतिहासिक घटनाएँ जुड़ी हुई हैं । सन् ६६ ए० डी० में जब धूमकेतु प्रगट हुआ था तो येरूसलम पर प्रकृति प्रकोपों के पहाड़ टूट पड़े । १०६६ में हैस्टिंग के युद्ध में भयंकर नरसंहार हुआ, तब भी धूमकेतु प्रगट हुआ था ।

इन सब विभीषिकाओं के प्रगट होने की सम्भावना से यह नहीं सोचना चाहिए कि मानव जाति का अन्त निकट आ गया । वस्तुत प्रसव काल में कष्ट भी होता है और दौड़-धूप करके नये किस्म की नयी व्यवस्था भी बनानी पड़ती है । इसके उपरान्त ही शिशु जन्म का हर्षोल्लास बिखरने लगता है । युग सन्धि के इन बीस वर्षों को ऐसा ही माना जा सकता है, इसमें जंग खाये कबाड़ को गलाने और उस पिघले हुए लोहे से नये उपयोगी उपकरण ढालने की आशा की जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

युद्ध और अणु आयुध

दुर्बुद्धि अपनाने पर दुर्गति का त्रास भी सहना ही होगा

आदिकाल से लेकर अब तक के भौतिक प्रगति के इतिहास में तीन घटनाएँ सर्वाधिक क्रान्तिकारी, सबसे अधिक महत्वपूर्ण रही हैं । महत्वपूर्ण इस दृष्टि से कि उनने संसार की काया पलट करने की पृष्ठभूमि तैयार की । पहली घटना थी अग्नि के आविष्कार की, दूसरी डायनामाइट की खोज तथा तीसरी परमाणु के नाभिकीय विखण्डन की । पहली से मनुष्य ने यह आत्म-विश्वास अर्जित किया कि वह समर्थ है कि जीवन योग्य परिस्थितियाँ अर्जित कर सके । बुद्धि बल की महत्ता उस आविष्कार से सर्वप्रथम स्वीकारी गयी । इसके पूर्व तो आदिम मानव बाहुबल को ही सब कुछ मानता था । क्रमिक सोपानों में अपनी बुद्धि के उपयोग द्वारा मानव ने खेती करने, घर बसाने, छोटे-मोटे यंत्र निर्माण करने की कला सीख ली जिसके सहारे किसी प्रकार मनुष्य की गाड़ी लुढ़कने लगी । प्रकृति विभीषिकाओं तथा खूँखार वन्य पशुओं से सुरक्षा की बात बनी ।

दूसरी घटना थी डायनामाइट के आविष्कार की । जिसका पहली बार खुलकर प्रयोग प्रथम विश्व युद्ध में विध्वंश के लिए हुआ । पदार्थों की शक्ति का एक मोटा अंदाजा मिला । पदार्थ की सूक्ष्म शक्तियों को जान पाने के प्रति मनुष्य का उत्साह बढ़ा । उन्नीसवीं सदी के आरम्भ की वह प्रख्यात घटना थी, जिसमें डायनामाइट की शक्ति हाथ लगी । आविष्कार जितना महत्वपूर्ण नहीं था, उससे भी अधिक प्रमुख बात यह थी कि पदार्थ की सूक्ष्म शक्तियों के विषय में सोचने, खोजने तथा उन्हें करतल गत करने की पृष्ठभूमि तैयार हुयी ।

तीसरी तथा सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटना परमाणु के नाभिकीय विखण्डन के अविष्कार के रूप में सामने आयी । परमाणु युग में मनुष्य ने एक ऐसी जबरदस्त छलांग लगायी, जिके समक्ष सभी घटनाएँ फीकी पड़ गयीं । हजारों-लाखों वर्षों में जितनी शक्ति नहीं अर्जित की जा सकी उससे कई गुनी अधिक कुछ वर्षों में मनुष्य की झोली में आ गयी ।

पचाने की सामर्थ्य न रहने पर अच्छे, स्वादिष्ट, पौष्टिक भोजन भी हानिकर होते हैं, घृत जैसे पोषक पदार्थ भी विष का कार्य करते हैं । प्रयत्नों से शक्तियाँ तो मनुष्य को हाथ लगती गयीं पर उनके सदुपयोग की दूरदर्शिता विकसित न हो सकी । शक्ति जो अमृत का कार्य कर सकती थी विष बनकर रह गयी । परमाणु बम का एक ऐसा महादैत्य तैयार हुआ, जिसके समक्ष पौराणिक राक्षसों का पराक्रम भी तिनके जैसा प्रतीत होता है ।

निर्माणकर्त्ताओं की जितनी कल्पना थी उससे भी अधिक विध्वंशक वह महादैत्य साबित हुआ । राजनीति विशारदों का मत है कि जापान पर परमाणु बम द्वितीय विश्व युद्ध को रोकने के लिए गिराया गया । यह बात कहाँ तक सच है, विशद खोज का विषय है । औचित्य, अनौचित्य की खोज-बीन करना अपनी चर्चा का विषय नहीं, प्रकाश उसकी विध्वंशक शक्ति तथा उसकी निर्मात्री उस दुर्बुद्धि पर डाला जा रहा है, जिसके कारण असंख्यों मासूमों को अकाल तड़प-तड़प कर मरना पड़ा ।

द्वितीय विश्व युद्ध की भभकी आग दावानल का रूप लेकर एशिया के एक बड़े भू-भाग को अपनी चपेट में ले चुकी थी । एक छोटा राष्ट्र होते हुए भी अपने पराक्रम, शौर्य, साहस के कारण जापान दुर्जेय हो रहा था । ६ अगस्त १९४५ की प्रातः तक हिरोशिमा नगर सुरक्षित बचा हुआ था । जबकि टोकियो आदि शहर अमरीका के बी० २९ विमानों से गिराये गये बमों से तहस-नहस हो चुके थे । नगर के निवासियों को खतरा मंडराता इसलिए दिखायी पड़ रहा था क्योंकि वह नगर सैनिक केन्द्र तथा वितरण डिपो के रूप में प्रख्यात था । जिसकी सूचना अमरीकी गुप्तचरों को मिल चुकी थी । ठीक प्रातः आठ बजे जापानी रडार यंत्र से जानकारी मिली कि काफी ऊँचाई पर तीन विदेशी विमान मंडरा रहे हैं । युद्धकाल में जहाजों का आकाश में मंडराते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहना एक आम बात मानी जाती है । जापानी नागरिकों तथा सेना के अधिकारियों ने उसे विशेष महत्व नहीं दिया, नाहीं सुरक्षा की कुछ विशेष व्यवस्था बनायी । उन्हें जरा भी सुराग न मिल सका कि वे जहाज सामान्य नहीं साक्षात मृत्यु का कहर बरसाने वाले ऐसे वाहन हैं जिनसे कुछ ही पलों में समूचा नगर श्मशान बनने वाला है । कुछ ही क्षणों बाद वह ऐतिहासिक धमाका हुआ । ऐसा धमाका जैसे आसमान टूट कर गिर पड़ा हो । सारा वायुमंडल तीव्र प्रकाश से चकाचौंध हो उठा । भयंकर ताप तथा अग्नि की तेज लपटों से हजारों व्यक्ति तिनकों की तरह भस्मीभूत हो गये । पाँच वर्ग मील का क्षेत्र पांच सौ मील प्रति घंटे से चलने वाले गरम तूफान में जलकर राख बन गया । एक बहुत बड़ा नगर चिकित्सालय पृथ्वी के गर्भ में उसी प्रकार समा गया जैसा कि भयंकर भूकम्प के समय होता है । क्षण मात्र में नगर के सभी प्रासाद ध्वस्त हो गये। कोई ऐसा स्थान नहीं था जहाँ भागकर कोई अपनी सुरक्षा कर सके । विस्फोटक प्रचण्ड ऊर्जा सर्वत्र विद्यमान थी तथा बिना भेद भाव किये वस्तुओं एवं जीवधारियों सबको ही भस्म कर रही थी । ७८ हजार व्यक्तियों के तत्काल मरने की खबर मिली पर अनेकों दुंनिया के पत्रों ने मरने वालों की संख्या लाखों के ऊपर बतायी ।

अमरीका द्वारा दूसरा परमाणु बम उसी दिन मध्यान्ह में ११ बजकर २ मिनट पर जापान के दूसरे औद्योगिक नगर नागाशाकी पर गिराया गया । हिरोशिमा की तरह ही यह घटना भी प्रलंयकारी थी । ५ वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र तिनकों की भाँति कुछ ही मिनटों में जलकर समाप्त हो गया । तत्काल पचास हजार व्यक्ति मौत की गोद में सो गये । लगभग इतने ही गंभीर रूप से घायल हुए ।

हिरोशिमा और नागाशाकी पर ४२५०० गज ऊपर से गिराये गये बम को पृथ्वी तक पहुँचने में कुल ५२ सेकण्ड का समय लगा था । इन बर्मो ने आकाश में ही आग की विशाल गेंद का रूप धारण कर लिया था जिसका तापक्रम दस करोड़ डिग्री सेन्टीग्रेड था तथा एक मील दूर से वे सूर्य की अपेक्षा सौगुना प्रचण्ड दिखायी पड़ रहे थे ।

इन घटनाओं के एक दिन बाद जापान के शासक वर्ग ने जनरल सैजोअरीस को उन क्षेत्रों का निरीक्षण करने के लिए भेजा । लौटकर आने पर जनरल के उद्‌गार इस प्रकार थे- 'बम वर्षक' क्रूर अमरीकी विमानों के लौटने के बाद हिरोशिमा, नागाशाकी में गहरी कालिमा धारण किये हुए मात्र एकमृत काले वृक्ष का अस्तित्व विद्यमान था मानो इन शहरों में मात्र एक कौआ निवास करता हो । हवाई जहाज से जब हम अड्डे पर उतरे तो पेड़-पौधे, घास सभी लाल रंग के अंगारे के रूप में दिखायी पड़ रहे थे । सर्वत्र श्मशान जैसी नीरवता थी । लाशों के पहाड़ को देखकर मेरी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी । युद्ध से घृणा हो गयी । एक सैन्य अधिकारी होते हुए भी मेरी स्थिति उस समय उस बच्चे सी हो गयी जो अत्यन्त भयभीत हो गया हो ।

द्वितीय विश्व युद्ध में कुल मारे जाने वाले व्यक्तियों की संख्या ६ करोड़ तक आँकी गयी । रूस के एक लाख १० हजार योद्धा तथा ७० लाख नागरिक, पोलैंड के ५८ लाख व्यक्ति, जर्मनी के ३५ लाख योद्धा तथा ७ लाख ८० हजार नागरिक, चीन के १३ लाख १० हजार योद्धा तथा २ करोड़ २० लाख नागरिक, जापान के १३ लाख योद्धा तथा ६ लाख ७२ हजार नागरिक, यूगोस्लाविया के ३ लाख ५६ हजार सैनिक तथा १२ लाख असैनिक, यूनाइटेड किंगडम के २ लाख ६४ हजार सैनिक तथा एक लाख गैर सैनिक तथा यूनाइटेड स्टेट्स के २ लाख ९२ हजार व्यक्ति मारे गये ।

द्वितीय विश्व युद्ध तो समाप्त हो गया पर सदा के लिए एक स्थायी कलंक मानवता के मस्तक पर लग गया । परमाणु बम की विध्वंशक शक्ति का पहली बार अनुमान लगा । तब से लेकर अब तक इस महादैत्य को तैयार करने की होड़ अनेकों देशों में चल पड़ी । अनुमान है कि सारे विश्व में ५० हजार से भी ऊपर संख्या में परमाणु बम बन चुके हैं । जिनकी क्षमता भी असामान्य रूप से बढ़ी है । हिरोशिमा पर गिराये गये परमाणु बम की तुलना में ५० हजार गुने सामर्थ्य वाले बम तैयार हो चुके हैं । यदि उनमें से एक भी फूट पड़े तो प्रस्तुत होने वाले महामरण की कल्पना सहज ही की जा सकती है । विश्व में बढ़ता हुआ तनाव जाने-अनजाने महाशक्तियों को उस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विस्फोटक स्थिति की ओर ही घसीट कर ले जा रहा है । परिणाम क्या होगा ? यह कल्पनातीत है ।

ऐसी हालत में की गयी उस भूल की ओर सहज ही ध्यान जाता है कि शक्ति करतलगत करना ही पर्याप्त नहीं है, उस पर नियंत्रण एवं सुनियोजन की वह विवेक दृष्टि भी विकसित होनी चाहिए, जिससे मानव जाति का कल्याण जुड़ा हो । अन्यथा हिरोशिमा, नागाशाकी जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति भी सम्भव है ।

विनाश की दिशा में बढ़ते चरण

युद्ध सभ्यता का नहीं असभ्यता का परिचायक है । सभ्यता की समृद्धि के साथ-साथ युद्ध व शस्त्रों का मूल्य कम होना चाहिये । इसके विपरीत आज का सभ्य कहलाने वाला मनुष्य शस्त्रास्त्रों की होड़ लगा रहा है । यह होड़ दिनों दिन बढ़ रही है घटने का नाम नहीं लेती ।

पहले जब आमने-सामने युद्ध होते थे तो इसकी भयंकरता इतनी नहीं थी । जो बहुसंख्यक, बलवान, चतुर तथा साहसी होते थे वे ही जीतते थे । दूसरों को पराजय का मुँह देखना पड़ता था । आज तथ्य उससे विपरीत हो गये हैं । परमाणु बमों के द्वारा व्यक्ति एक स्थान पर ही बैठा हुआ विश्व के किसी भी स्थान पर बम गिरा सकता है । ये बम इतने विनाशकारी होते है कि थोड़े से बमों से सारी मनुष्य जाति समाप्त हो सकती है । यह सब विज्ञान की ही देन है ।

विज्ञान द्वारा प्राप्त हुई इस शक्ति का सदुपयोग करके मनुष्य ने पृथ्वी की ही नहीं ग्रह, उपग्रहों की दूरियाँ भी बहुत कम कर दी हैं । टेलीविजन जैसा महत्वपूर्ण आविष्कार विज्ञान ने ही दिया है । यह तो मनुष्य की विवेकशीलता पर निर्भर करता है कि वह विज्ञान द्वारा प्रदत्त शक्ति का उपयोग किस दिशा में करें ।

मानवता के विनाश की सामग्री तथा सैनिक व्यय पर इन दिनों खरबों रुपया व्यय होता है । अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति अनुसन्धान केन्द्र ने पिछले दिनों एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें विविध राष्ट्रों के सैनिक व्यय का ब्यौरा दिया गया है । यह ब्यौरा चौंका देने वाला है । इस पुस्तक के अनुसार १९७० में विश्व भर के देशों ने अपनी शस्त्रास्त्रों पर दो सौ अरब डालर खर्च किये हैं । इतनी ही राशि सारे विश्व के राष्ट्र, चिकित्सा तथा शिक्षा जैसे मानव कल्याण के कार्यों में लगाते हैं ।

इतनी राशि सेना तथा अफसरों पर व्यय की जाती है । इसका बीसवाँ भाग भी यदि विकासशील राष्ट्रों की सहायता करने पर व्यय किया जाता तो उनके लिये यह दस वर्ष तक पर्याप्त हो सकता था । यह राशि सारे विश्व की आय का ६ प्रतिशत है ।

शस्त्रास्त्रों पर होने वाला यह व्यय निरन्तर बढ़ ही रहा है । इस वृद्धि का कारण भयंकरतम अस्त्रों की होड़ ही है इनके अनुसन्धान तथा निर्माण पर ही सर्वाधिक खर्च बैठता है ।

मृत्यु का यह साज सामान बढ़ता ही जा रहा है । यह वृद्धि बड़े राष्ट्रों के कारण ही होती है । ये देश नये-नये शस्त्रास्त्रों का निर्माण करते हैं । अविकसित राष्ट्रों तथा विकासशील देशों को भी अपनी सुरक्षा के लिये शस्त्रास्त्र खरीदने पड़ते हैं । इसके लिये उन्हें अपने विकास तथा जन मंगल के कार्यों पर होने वाले व्यय में कमी करनी पड़ती है ।

अमेरिका की निरस्त्रीकरण तथा आयुध नियन्त्रण समिति रिपोर्ट के अनुसार १९६९ में सैन्य शक्ति की मद में विश्व के १२० राष्ट्रों में १८२ अरब डालर (९३६, ५०० करोड़ रुपये) तक पहुँच चुका था । १९७० में यह बढ़कर २०० अरब डालर हो गया । इसका अभिप्राय यही हुआ कि सभी पुरुष व बच्चे पर प्रति वर्ष शस्त्रास्त्रों की मद में ४२० रुपया व्यय होने लगा है । भारतवर्ष की प्रति व्यक्ति आय १९७० में इससे कम ही थी । केवल भारत ही नहीं २९ ऐसे विकासशील देश हैं जिनकी प्रति व्यक्ति आय इससे बहुत कम है ।

अस्त्र-शस्त्रों पर व्यय किया जाने वाला यह धन इसी गति से बढ़ता रहा तो अगले दस वर्षों में यह राशि तीन सौ खरब रुपये हो जायेगी । यह रकम इतनी बड़ी होगी कि हजार रुपये के नोटों की लड़ी को पृथ्वी से चन्द्रमा तक की दूरी को साढ़े सात बार तय करना पड़ेगा ।

जितनी राशि आर्थिक असमानता दूर करने में की जाती है उसका बीस गुना शस्त्रास्त्रों पर खर्च होती है । स्वास्थ्य पर होने वाले व्यय से यह तीन गुना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थी । १९७० में जितना व्यय इन पर सारे विश्व में हुआ उस धन को यदि मानव कल्याण में लगाया गया होता तो दो करोड़ व्यक्तियों को सुन्दर मकान उपलब्ध किये जा सकते थे। जिसकी आज विश्व को आवश्यकता है, युद्ध सामग्री की नहीं ।

इतना सारा धन इसलिये खर्च किया जाता है कि एक देश दूसरे देश पर आक्रमण कर दे तो अपनी सुरक्षा की जा सके । सभ्य होने का दावा करने वाली मनुष्य की सभ्यता का मान दण्ड क्या यही है कि वह एक दूसरे पर आधिपत्य जमाये ?

मौत का खेल निरन्तर महँगा होता जा रहा है । किसी जमाने में एक शत्रु सैनिक को मारने के लिये अत्यल्प व्यय आता था । प्रथम विश्व युद्ध में बढ़कर यह कई सौ गुना हो गया और अब तो उससे दस गुना व्यय सामान्य बात है । इसका कारण भयंकरतम और अत्यन्त व्यय साध्य शस्त्रास्त्रों का निर्माण ही है । कोई इस होड़ में पिछड़ न जाय इसलिये नये-नये भयंकरतम आयुधों का निर्माण हो रहा है नये-नये अनुसन्धान केन्द्र खुल रहे है । मिसाइल, एन्टी-मिसाइल, एन्टी-एन्टी-मिसाइल, एन्टी-पन्टी-ऐन्टी मिसाइल आदि ऐसे अस्त्र हैं जिनके द्वारा ये एक दूसरे को कई-कई बार नष्ट कर सकते हैं ।

हथियारों का यह व्यापार विकासशील देशों में भी परस्पर तनाव उत्पन्न करता है । इन देशों में से कुछ देश ऐसे हैं जो आर्थिक विकास की ओर ध्यान नहीं देकर केवल सैन्य शक्ति को बढ़ाने में ही अपनी भलाई समझते हैं । पाकिस्तान इसी प्रकार का देश है । ऐसे युद्ध प्रिय देश दूसरों के लिये भी सिरदर्द बनते हैं ।

सैनिक सन्धियों तथा शस्त्रास्त्र व्यापार का विकासशील देशों पर बड़ा कुप्रभाव पड़ता है । वे अपने देशवासियों की रोजी-रोटी की समस्या में उलझे हुए है, और उनकी पीठ पर युद्ध का अतिरिक्त भार पड़ जाता है । जो विकासशील देश स्वेच्छा से यह भार लाद लेते हैं उनकी पाकिस्तान की तरह दुर्गति होती है ।

शस्त्रास्त्र निर्माण की इस होड़ ने मानव जाति के विनाश की आशंका तो उत्पन्न की ही है, साथ ही साथ आणविक परीक्षणों तथा आणविक अविशिष्टों का विसर्जन एक समस्या बन गया है । अणु विकीरण के कारण नई-नई बीमारियाँ उत्पन्न होती है । सागर के गर्भ में किये जाने वाले आणविक परीक्षण तथा बम विस्फोट सामुद्रिक जल, वनस्पति तथा जीव जन्तुओं पर विषाक्त प्रभाव डालते हैं ।

समुद्र में परीक्षण तथा विस्फोट किये जाते हैं । अणु अवशिष्ट सागर में डाले जाते हैं। जल में परमाणु विकीरण का बुरा प्रभाव पड़ता है । ऐसे सागरों से उठने वाले मानसून उस दुष्प्रभाव को धरती पर बरसा देते हैं जो मनुष्य के स्वास्थ्य नाश का कारण बनता है ।

इस प्रकार के आयुधों के द्वारा होने वाली हानि नई नहीं है । उसे अलंकारिक भाषा व कथानक के माध्यम से महाभारत में मूसल चूर्ण के रूप में दर्शाया गया है । जिसने द्वापर में समस्त यादव वंश का ही सर्वनाश कर दिया था । यही कारण है कि भारत में इस प्रकार की वैज्ञानिक प्रगति पर अध्यात्म की विवेकीशीलता का अंकुश रहा था ।

विनाश के इस कगार पर खड़े हुए मानव को बचाने का एक ही मार्ग है वह यह है कि संकुचित राष्ट्रीय वृत्ति को भुलाकर विश्व-स्तर पर ऐसी सांस्कृतिक चेतना जगाई जाये जिससे शस्त्रास्त्रों की होड़ ही निरुत्साहित न हो वरन मनुष्य का हृदय इतना विशाल हो कि समस्त प्राणियों में एकात्म स्थापित किया जा सके । भारतीय संस्कृति ही विश्व मानव के इस विकास का सोपान बन सकती है । ऐसे समय में भारतवासी पीड़ित मानवता को यही अनुदान देने को कृत संकल्प हो जायँ तो अभीष्ट परिणाम दृष्टिगोचर हो सकेंगे ।

धन विनाश में नहीं, विकास में लगे

सम्पदा में रचनात्मक शक्ति है । उसके द्वारा कितने ही उपयोगी कार्य हो सकते हैं और सदुद्देश्यों की पूर्ति में सहायता मिल सकती है । पर साथ ही यह भी न भूल जाना चाहिए कि उसकी मारक शक्ति उससे भी बढ़ी-चढ़ी है ।

''इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका'' में दिये गये 'यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल साइन्टिफिक एण्ड कल्चरल आरगेनाइजेशन' के १९८० के रिर्पोटानुसार विश्व में प्रति वर्ष एक खरब बहत्तर अरब अठावन करोड़ बीस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लाख डालर सैन्य शक्ति एवं अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण में खर्च किया जाता है । यह राशि विश्व की समूची आय का ७.२ प्रतिशत है । प्रति वर्ष संसार में शिक्षा पर होने वाला व्यय एक खरब उन्नीस अरब है । यह कुल आय का पाँच प्रतिशत है । स्वास्थ्य रक्षा पर खर्च की जाने वाले प्रतिवर्ष की राशि ५८ अरब ७३ करोड़ ३५ लाख डालर है जो कुल आय का २.५ प्रतिशत पड़ता है ।

वर्ष १९७० में विभिन्न राष्ट्रों ने सुरक्षा के नाम पर सैन्य शक्ति एवं अस्त्रों के निर्माण में जो राशि व्यय की उनके आंकड़े इस प्रकार हैं । यू० एस० ए० ७४ अरब ४० करोड़ डालर, यू० एस० एस० आर० ३९ अरब ७७ करोड़ ८० लाख डालर, पश्चिम जर्मनी ६ अरब ११ करोड़ १० लाख डालर, फ्रांस ५ अरब ८७ करोड़ ४० लाख डालर, ब्रिटेन ५ अरब ७१ करोड़ २० लाख डालर, इटली २ अरब ४१ करोड़ ६० लाख डालर, पौलेण्ड २ अरब २२ करोड़ डालर, पूर्वी जर्मनी १ अरब ९९ करोड़ डालर, कनाडा १ अरब ७४ करोड़ १० लाख डालर, चेकोस्लाविया १ अरब ६३ करोड़ ५० लाख डालर, भारत १ अरब ४६ करोड़ ७० लाख डालर, आस्ट्रेलिया (वर्ष १९७९) १ अरब २७ करोड़ डालर, यू० ए० आर० १ अरब २७ करोड़ २० लाख डालर, स्वीडन १ अरब १२ करोड़ ९० लाख डालर और इसराइल १ अरब ७ करोड़ ५० लाख डालर । यह उन प्रमुख देशों के आंकड़े हैं जो प्राप्त हो सके हैं, अन्य राष्ट्रों के अप्राप्त हैं ।

यू० एन० सर्वे के अनुसार कुल शस्त्रों पर प्रतिवर्ष होने वाले खर्च का अस्सी प्रतिशत मात्र छः देश— यू० एस० ए०, सोवियत यूनियन, पश्चिम जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन मिलकर खर्च करते हैं । अर्थात् अस्त्रों के निर्माण में प्रतिवर्ष होने वाले व्यय में इन छः देशों का भाग तीन खरब इक्यावन अरब सतहत्तर करोड़ साठ लाख था शेष अन्य देशों का हिस्सा बासठ अरब चौरानवे करोड़ चालीस लाख रुपये है । सन् १९५१ से लेकर अब तक शस्त्रों पर होने वाले खर्च में १७३ गुनी वृद्धि हुई है । १९५१ में कुल तीस करोड़ डालर अर्थात् दो सौ चालीस करोड़ खर्च होते थे । १९७४ तक यह बढ़कर अठारह अरब डालर अर्थात एक खरब चौवालीस अरब रुपये तथा १९८० तक चार खरब चौदह अरब बहत्तर करोड़ रुपये तक जा पहुँचा ।

१८७० में जर्मनी का सैनिक सुरक्षा व्यय १ करोड़ ८ लाख पौण्ड था, १८८० में २ करोड़ ८८ लाख पौण्ड हो गया और १९१४ में यह बढ़कर ११ करोड़ ८ लाख पौण्ड हो गया । इन दिनों आस्ट्रिया-हंगरी का खर्च ८२ लाख पौण्ड, १ करोड़ ३२ लाख पौण्ड और ३ करोड़ ६४ लाख पौण्ड था । ब्रिटिश साम्राज्य का सैनिक खर्च क्रमशः २ करोड़ ३४ लाख पौण्ड, २ करोड़ ५३ लाख पौण्ड तथा ७ करोड़ ६८ लाख पौण्ड था । इस तरह यह व्यय १९१४ ई० में जर्मनी के ग्रांस नेशनल प्रोडक्टर का ४.६ प्रतिशत, अस्ट्रो हंगेरियन का ६.१ प्रतिशत और ब्रिटिश का ३.४ प्रतिशत था ।

प्रथम विश्व युद्ध के समय आरम्भ में प्रतिदिन १३,६०० कारतूसों का उपयोग किया गया । सन् १९१४ प्रतिदिन ५० हजार कारतूसों की माँग की गयी जिसे मार्च १९१५ तक पूरा कर दिया गया । परन्तु जनवरी १९१५ में ही प्रतिदिन (अस्सी) ८० हजार गोलियों की माँग की गई इसे भी सितम्बर १९१५ तक पूरा कर दिया गया । तब फिर से १ लाख ५० हजार की आवश्यकता अनुभव की गई जो प्रथम माँग से दस गुना ज्यादा थी ।

१९१७ में प्रथम विश्व युद्ध के समय १६ लाख फ्रैंच कामगारों को युद्ध सामग्री के निर्माण कार्य में संलग्न किया गया था ।

ब्रिटिश सेना के पास १९१४ में १०० मोटर ट्रक थे । १९१८ तक इन ट्रकों की संख्या ६० हजार तक हो चुकी थी ।

प्रथम विश्व युद्ध में करों से युद्ध खर्च की आपूर्ति का अनुपात-यूनाइटेड स्टेट्स में ३७ प्रतिशत, ब्रिटेन में ३० प्रतिशत और जर्मनी में १२ प्रतिशत था । द्वितीय विश्व युद्ध में यह अनुपात क्रमशः ४४ प्रतिशत और ५० प्रतिशत रहा । १९१३-१४ ई० में ब्रिटेन में डाइरेक्ट टैक्स से ९ करोड़ ४० लाख पौण्ड, १९१७-१८ में ५० करोड़ ४० लाख और १९१९-२० में ७२ करोड़ १० लाख की आमदनी थी । १९१४ में कुल प्राप्ति का ५७ प्रतिशत डायरेक्ट टैक्स से आता था, १९१७-१८ में यह बढ़कर ८० प्रतिशत हो चुका था । कागजी मुद्रा का

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वितरण १९१३ में ५ करोड़ ७० लाख पौण्ड से बढ़कर १९१९ में ४५ करोड़ ९० लाख पौण्ड हो गया था। १९२० में पौण्ड स्टर्लिंग की क्रय शक्ति १९१३ के मुकाबले तीन गुनी हो गई ।

प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व जर्मनी खाद्यान्न के क्षेत्र में ८० प्रतिशत स्वावलम्बी था। जबकि १९१८ में जर्मन लोगों के पास खाद्यान्न ६४ प्रतिशत, मांस १८ प्रतिशत और १२ प्रतिशत वसा उपयोग हेतु बचे थे। खाद्यान्न की कमी ही जर्मनी की पराजय का कारण बना ।

१९४० में यूनाइटेड स्टेट्स में राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया कि वह १ अरब ३० करोड़ डालर की रकम की युद्ध सामग्री को ऐसे देशों को पट्टे पर उधार दे जिनकी जमानत पहले से बनी हो। साथ ही उन्हें इस तरह की सामग्री को ७ अरब डालर के मूल्य का उत्पादन करने का भी अधिकार प्राप्त हुआ, यह बाद में बढ़कर १३ अरब डालर हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त तक पट्टेदार उधार पर वितरित युद्ध सामग्री का मूल्य १५ अरब डालर था ।

विश्व में युद्ध सामग्री की कुल आवश्यकता का ४० प्रतिशत और कुल युद्ध खर्च का ५५ प्रतिशत हिस्सा यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा पूरा किया जा रहा था। विश्व युद्ध के दौरान यूनाइटेड स्टेट्स ने अपने राष्ट्रीय आय को दुगना बढ़ा लिया और नागरिक उपभोग में भी ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

१९४० में यूनाइटेड स्टेट्स ने ७० लाख कामगारों को नियुक्त किया जिसमें ३० लाख सेना के रूप में नियुक्त हुए ।

जापान के ऊपर अणु-बम गिराये गए उसके निर्माण में लागत खर्च १ अरब डालर से अधिक पड़ा था ।

विश्व के गैर कम्युनिस्टिक देशों में १९६५-७४ के बीच मिलिट्री हार्डवेयर के ऊपर १ खरब डालर खर्च हुए जिसमें ३० अरब डालर का हार्डवेयर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अनुदान अथवा व्यापार के रूप में था ।

कम विकसित देशों में ६ अरब डालर वार्षिक खर्च मिलिट्री सामानों पर होता है। यूनाइटेड स्टेट्स ४० करोड़ डालर का सामान कम विकसित देशों को बिक्री करता है और कुछ तो बिना किसी रकम के हस्तान्तरित करता है ।

बिक्री का कुल मूल्य रूस का ६० करोड़ डालर, ब्रिटेन का ४० करोड़ डालर, फ्रांस का (१९६०) ५० से ७० करोड़ डालर तक था ।

१९५५ से १९६८ के बीच में कई विकासशील देशों ने ७ हजार कम्बैट वायुयान, १८०० ट्रान्सपोर्ट वायुयान, ३३०० ट्रेनर वायुयान, १५०० हेलीकाप्टर, ११९०० टैंक, १८० युद्धपोत और ८१० पेट्रोल बोट्स का खरीदा, अथवा विदेशी लाइसेंस के माध्यम से बनाया ।

हथियारों को अधिक मात्रा में वितरित करने वाले प्रमुख देश इस प्रकार हैं—यूनाइटेड स्टेट्स, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, चीन, इटली, स्विट्जरलैण्ड स्वीडेन, चेकोस्लोवाकिया, इजरायल, नीदरलैंड और कनाडा ।

बड़े देशों के अन्धानुकरण, भय और आतंक के कारण दुनिया के अन्य देश भी हथियारों की दौड़ में सम्मिलित हो गये हैं । विकसित देश बदलती परिस्थितियों, वैज्ञानिक प्रगति और आधुनिकतम खोजों के आधार पर नये-नये हथियारों का जखीरा अपने पास रखते हैं और पुराने आयुधों को अपने गुट के देशों को, अपने मत के देशों को उधार-नकद किसी न किसी शर्त पर बेच देते हैं । इस प्रकार विकासशील देश भी हथियार जुटाने में ९७०० करोड़ रुपये प्रतिवर्ष खर्च कर डालते हैं । इस तरह भुखमरी और गरीबी से त्रस्त जन मानस सुरक्षा के नाम पर हथियार खरीदने को बाध्य होता है और पूँजीवादी, समाजवादी, साम्राज्यवादी देश मूक दर्शक बनकर इस व्यापार को बढ़ावा देते प्रोत्साहित करते रहते हैं ।

युद्ध में आदमी को मारने की लागत अब दिन-दिन मँहगी होती चली जा रही है। सर्वेक्षणकर्त्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि जूलियस सीजर के जमाने में एक सैनिक को मारने में सिर्फ पाँच रुपये खर्च आते थे, नेपोलियन के जमाने में यह राशि बढ़कर दो हजार रुपये हो गयी थी। प्रथम विश्व युद्ध में अमेरिका ने शत्रु पक्ष के एक व्यक्ति को मारने पर डेढ़ लाख रुपये खर्च किये थे, जब कि दूसरे महायुद्ध में यह लागत दस गुनी बढ़ गयी। इसी तरह विगत दिनों वियतनाम युद्ध में हर गुरिल्ला सैनिक को मारने में १३ लाख रुपया खर्च का औसत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आया । अभी-अभी हुए खाड़ी युद्ध ने तो पिछले सभी रिकार्ड तोड़ दिये और अरबों-खरबों डालर की राशि जो मानवता के उत्थान में लगनी चाहिये, विनाश के सरंजाम जुटाने और उन्हें प्रयुक्त करने में खर्च हो गयी । यह सिलसिला अभी रुका नहीं वरन् तीव्रगामी ही बनता जा रहा है ।

प्रतिभा का सुनियोजन हो

युद्ध अभ्यास में आज प्रायः पौने दो करोड़ आदमी लगे हुए हैं । वे मारक अस्त्र-शस्त्रों के चलाने—मनुष्यों की हत्या करने और सम्पत्ति को नष्ट करने की कला में प्रवीणता प्राप्त कर रहे हैं । यही इनका कला कौशल है । इनके व्यक्तित्व की सारी विशेषताएँ प्रायः इसी प्रयोजन के लिए समर्पित हैं । इसके अतिरिक्त कोई सात करोड़ आदमी शस्त्रास्त्र निर्माण और सेना सम्बन्धी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चलाये जा रहे उद्योगों में लगे हुए हैं । वे मूर्धन्य मस्तिष्क इनसे अलग हैं जो अपने बुद्धि कौशल से ऐसी शोधें करने, ऐसी विधियाँ निर्मित करने में लगे हुए हैं जिनकी सहायता से अधिक आसानी से अधिक विनाश सम्भव हो सके । धन-जन की अधिक हानि के लिए अधिक प्रभावशाली और अधिक सस्ते उपाय ढूँढ़ निकालना ही उनकी प्रतिभा की सफलता है ।

संसार में १५० करोड़ से अधिक मनुष्य ऐसे हैं जिनकी आमदनी ५००) रु० वार्षिक से कम है । ४०) रु० मासिक से अपना निर्वाह करने वाली जनता में आधी ऐसी है जिनका औसत और भी गया-गुजरा है । उसे भरपेट रोटी और तन ढकने को कपड़ा जीवन में कभी-कभी ही मिल पाता है । अधिकतर तो वे आधा पेट कुछ खाकर ही किसी प्रकार सोते हैं और फटे-चिथड़ों से अपनी लाज ढकते हैं ।

इस दरिद्र जनता के लिए क्या कुछ नहीं किया जा सकता ? क्या सचमुच ही समर्थ लोग इस दिशा में असमर्थ हैं ? हिसाब लगाने वाले बताते हैं कि इस दिशा में सब न सही प्रगति और वर्चस्व का दावा करने वाले बड़े देश ही मिल-जुल कर कुछ काम करें तो बहुत कुछ हो सकता है । इन देशों की जितनी धन-शक्ति और जन-शक्ति युद्ध प्रयासों में लगी हुई है उसे हटा कर यदि पीड़ित मानवता को ऊँचा उठाने में लगा दिया जाय तो उन पौने दो करोड़ लोगों की आमदनी कुछ ही महीने के अन्दर ठीक दूनी हो सकती है। ५०० रुपये वार्षिक के स्थान पर वे १००० रुपये वार्षिक प्राप्त करने लगते हैं और अति दरिद्र स्थिति से ऊपर उठकर मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक सुविधाओं का जीवन में पहली बार दर्शन कर सकते हैं ।

इस धन को यदि दूसरे वर्ष मकान निर्माण में लगा दिया जाय तो प्रायः उन २० करोड़ मनुष्यों को रहने लायक नये मकान मिल सकते हैं जो आज वन्य-पशुओं की माँदों से भी बुरी स्थिति में गुजारा करते हैं । प्रथम वर्ष में सस्ते गृह-उद्योग, द्वितीय वर्ष में मकान, तीसरे वर्ष में शिक्षा, चौथे वर्ष में स्वास्थ्य, पाँचवे वर्ष में बिजली, बाँध, यातायात, संचार, स्खलन आदि की बड़ी व्यवस्थाएँ बनाई जायँ तो यह पंचवर्षीय योजना पौने दो अरब मनुष्यों का अर्थात् लगभग आधी दुनिया का भाग्य आमूल-चूल परिवर्तन कर सकती है । इतना तो रूस और अमेरिका दो बड़े देश ही कर सकते हैं । फिर यदि पूरे मन से न सही आधे मन से ही संसार के अन्य देश भी इसी दिशा में कदम बढ़ाने लगें तो फिर समझना चाहिए कि पिछड़ी हुई दुनिया का अन्त ही हो जायगा । फिर पीड़ा और पतन का वह ताण्डव नृत्य कहीं देखने को भी न मिलेगा जो आज सर्वत्र नारकीय जलन और दुर्गन्ध से सारा वातावरण ही वीभत्स बनाये हुए है ।

मनुष्य में संहारक शक्ति भी है और सृजन शक्ति भी । वह ध्वंस भी कर सकता है और निर्माण भी । शक्ति को जिस भी दिशा में नियोजित कर दिया जाय—जिस भी कार्य में लगा दिया जाय उसे ही पूरा करती चली जायगी ।

युद्धों और महायुद्धों में कितनी जनसंख्या और सम्पत्ति का विनाश होता है, यह दृश्य मुद्दतों से आँखें देखती रहीं हैं और कान सुनते रहे हैं । जिन नगरों, बाँधों और पुलों को अगणित मनुष्यों का 'स्वेद सरोवर' लगाकर बनाया गया था और जिनमें प्रचुर साधन उपादान झोंके गये थे, वे जन-साधारण की आशा के केन्द्र थे । समझा जाता था कि इनकी छाया में अनेक व्यक्ति चिरकाल तक सुखद आश्रय प्राप्त करते हुए चैन के दिन गुजार सकेंगे, पर वह सारी आशा धूमिल हो गई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक-एक टोकरी बारूद के कचरे से बनाये गये बम उन संस्थानों पर गिरे और देखते-देखते उन्हें धूलि में मिलाकर रख गये। इस प्रकार सृजन हारा और ध्वंस जीत गया ।

गरमागरम लड़ाइयों में धड़ाके होते हैं, बारूद फटती है और लाशें छितराती फिरती हैं । मरने वालों के बाल-बच्चे रुदन करते हैं । सम्पत्ति के भारी विनाश से उत्पन्न गरीबी, मँहगाई, भुखमरी और बीमारी तरह-तरह की विपत्तियाँ ला खड़ी करती है और मनुष्य यह समझ पाते हैं कि युद्धोन्माद सस्ता है किन्तु युद्ध वस्तुतः महँगा है ।

सोवियत अध्ययन का निष्कर्ष है कि मात्र नाभिकीय शस्त्रों के निर्माण में बीस हजार ऐसे वैज्ञानिक तथा तकनीशियन लगे हुए हैं, जिन्हें बौद्धिक प्रतिभा की दृष्टि से सर्वोपरि कहा जा सकता है । इसके सहायकों की संख्या लाखों में है । यू० एन० ओ० से प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार संसार के वैज्ञानिकों एवं तकनीशियनों में से पच्चीस प्रतिशत युद्ध आयुधों के निर्माण एवं आविष्कार कार्य में लगे हुए हैं । विज्ञान का पचास प्रतिशत व्यय सैनिक उपकरणों को विनिर्मित करने में होता है । अन्तरिक्ष में छोड़े जाने वाले अन्तर्ग्रहीय उपग्रहों में तीन चौथाई युद्ध गतिविधियों की टोह लेने तथा गुप्त जानकारी देने वाले होते हैं। आय० एल० ओ० के अनुसार पूरे विश्व में लगभग बीस करोड़ व्यक्ति सेना में हैं । उनकी संख्या हर वर्ष बढ़ती जा रही है । ऐसा अनुमान है कि विश्व श्रम शक्ति में चार हिस्सा सामाजिक कार्यों में निरत है तो तीन हिस्सा सैनिक क्षेत्र में नियोजित है । एक ओर इतनी अधिक धनशक्ति, जनशक्ति विध्वंशक कार्यों में लगी हुयी है जबकि दूसरी ओर धन के अभाव में संसार की अधिकांश आबादी को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।

विशेषज्ञों के अनुसार विश्व में औसतन एक मिनट में दस लाख डालर हथियारों पर खर्च होता है । जिससे न्यूनतम सौ नयी नौकरियों की व्यवस्था हो सकती है, अथवा सौ फ्लैट निर्मित हो सकते हैं । यदि छः मिनट तक हथियारों का निर्माण रुक जाये तो उस राशि से आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित एक आधुनिक अस्पताल निर्मित हो सकता है ।

विश्व में एक मिनट में हथियारों के निर्माण पर जितना व्यय होता है उससे चार हजार टन दूध खरीदा जा सकता है ।

विश्व के असंख्य लोग उदर पूर्ति में असमर्थ हैं यदि एक मिनट के लिए आयुध निर्माण स्थगित हो जाय तो उनके जीवन में नया प्राण संचार हो जाय । ऐसा विशेषज्ञों का विचार है ।

युद्ध साधनों पर खर्च की जाने वाली यह राशि मात्र मनुष्यों को रक्त बहाने के काम आती है । यह लड़ाइयाँ किन्हीं सिद्धान्तों या आदर्शों के लिए आरम्भ नहीं की जातीं वरन् आधिपत्य की लिप्सा ही प्रधान कारण होती हैं । जब किसी पर युद्ध थोप ही दिया जाय तो उसे भी आत्म-रक्षा के लिए हथियार उठाने पड़ते हैं। पथ किसका उचित किसका अनुचित था इसका फैसला आमतौर से इस आधार पर किया जाता है कि कौन हारा कौन जीता। जो जीतता है वह अपने पक्ष को सही सिद्ध करने में भी प्रचार तन्त्र के सहारे सफल होता देखा गया है ।

इस संदर्भ में असंख्यों के प्राण जाते और असंख्य परिवार बिलखते हैं । पिछले दो महा युद्धों में धन-जन की असीम हानि हुई उसकी कल्पना करने भर से रोमांच हो जाता है । वर्ष के लिए भी शस्त्रों का निर्माण रोक दिया जाय तो विश्व में संव्याप्त कितनी ही समस्याओं का हल उस बचे धन से निकाला जा सकता है । अशिक्षा के निवारण के लिए औसतन एक लाख की धनराशि प्रति स्कूल के हिसाब से इकतालीस लाख सैतालीस हजार दो सौ प्राइमरी स्कूल खोले जा सकते हैं । एक विद्यालय में यदि दो सौ बच्चे भी पढ़े तो कुल बयासी करोड़ चौरानवे लाख चालीस हजार बच्चों के आरम्भिक शिक्षा योग्य व्यवस्था बन जायेगी । उपरोक्त धनराशि से दस लाख रुपये की लागत से बनने वाले चार लाख चौदह हजार सात सौ बीस इण्टरमीडिएट कॉलेज खोले जा सकते हैं अथवा उच्च-शिक्षा के लिए विश्व-विद्यालय खोले जायँ तो एक अरब प्रति के हिसाब से चार सौ चौदह विश्व-विद्यालयों की स्थापना मात्र एक वर्ष में ही हो सकती है ।

यदि शिक्षा में प्रयुक्त न करके उस धनराशि को रोग निवारण एवं स्वास्थ्य सम्वर्धन जैसे प्रयोजन में लगा दिया जाय तो एक लाख की लागत से बनने वाले ४१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लाख ४६ हजार दौ सौ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा पाँच लाख की लागत से आधुनिक चिकित्सा यन्त्रों से एवं योग्य चिकित्सकों से सुसज्जित आठ लाख उन्नतीस हजार चार सौ चालीस अस्पताल खोले जा सकते हैं । एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से यदि पाँच सौ भी व्यक्ति चिकित्सा सुविधा प्राप्त करें तो कुल प्राथमिक केन्द्रों से दो अरब आठ करोड़ छत्तीस लाख व्यक्ति नियमित रूप से चिकित्सा सेवा से लाभान्वित होते रहे सकते हैं । शस्त्र निर्माण में लग रही धनराशि को यदि आहार की व्यवस्था उपलब्ध कराने में लगा दिया जाय तो बारह सौ रुपये प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति के हिसाब से लगभग चौंतीस हजार तीन सौ व्यक्तियों के लिए समुचित आहार जुटा सकता है ।

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं में आहार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के साधन प्रमुख हैं । प्रतिवर्ष आयुधों में लगने वाले विपुल धन को क्रमशः सुनियोजित ढंग से एक-एक समस्याओं के निवारण में लगा दिया जाय तो देखते ही देखते कुछ ही वर्षों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आहार जैसी समस्याओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है । द्वितीय चरण में मनुष्य जाति के समग्र विकास के लिए अन्यान्य कार्यक्रमों को हाथ में लिया जा सकता है ।

पर ऐसा तभी सम्भव है, जब मनुष्य में सद्बुद्धि का विकास हो दुर्मति के रहते उसकी दुर्गति की ही आशा की जा सकती है । देखा यह जा रहा है कि अभी भी उसके पाँव विनाश की दिशा में ही गतिशील हैं । विगत की लोमहर्षक घटनाओं से भी वह कुछ सीखना नहीं चाहता, जिसमें न जाने कितने जन-धन की हानि हुई, कुछ ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता । अनुमान है कि ९ मार्च १९४५ को यूनाइटेड स्टेट्स के जिस २७६ बी २९ विमान ने २००० टन का विस्फोटक पदार्थ टोकियो के ऊपर छोड़ा उससे १ लाख ८६ हजार नागरिक दुर्घटनाग्रस्त हो गए और नगर की १५८ स्क्वायर मील का क्षेत्र पूर्णतः जल गया, साथ ही १४ एयर क्राफ्ट नष्ट हुए ।

६ अगस्त १९४५ को इसी बी० २९ ने हिरोशिमा पर प्रथम अणु-बम छोड़ा और फिर इसी बी० २९ ने तीन दिन के बाद दूसरा अणु-बम नागाशाकी पर छोड़ा ।

उपर्युक्त दोनों बमों से लगभग २ लाख लोगों के मरने का अनुमान है । बमों का रेडियो ऐक्टिव प्रभाव अभी तक बना हुआ है ।

इन मृत्यु के मुँह में धकेले गये समर्थ व्यक्तित्वों से यदि अध्यापक, कृषि, उद्यान, शिल्पी, कलाकार जैसा काम लिया गया होता तो मानवी प्रगति में वे भारी सहायता कर सकते थे । पर युद्धोन्माद के राक्षस को क्या कहा जाय जो कर्णधारों के सिर पर सवार होकर असीम धन-जन को उदरस्थ करता रहता है ।

युद्ध में मनुष्य ने खोया बहुत कुछ, पाया कुछ नहीं

पाश्चात्य विचारक गिब्बन ने बहुत समय पूर्व कहा था कि मनुष्य को प्रकृति प्रकोपों एवं वन्य हिंसक पशुओं से उतना डरने की आवश्यकता नहीं जितना कि अपने सजातियों से । उनकी यह आशंका अकारण नहीं है । सुरक्षा के नाम पर बढ़ता हुआ खर्च और नित्य नये घातक शस्त्रों का निर्माण इस बात का परिचायक है कि मानवी स्नेह-सौहार्द्र की भावना किस तेजी से लुप्त होती जा रही है । मनुष्य दिन प्रतिदिन हिंसक बनता जा रहा है । शस्त्रों के निर्माण एवं संचय से विश्वव्यापी तनाव बढ़ता जा रहा है और तृतीय विश्वयुद्ध की आशंका और भी प्रबल होती जा रही है ।

पिछले युद्धों में मानव जाति ने क्या गँवाया और क्या पाया, इसका लेखा-जोखा लेने पर पता चलता है कि उसने गँवाया ही अधिक है पाया कुछ नहीं । इस सदी में हुए युद्धों एवं उनमें मारे जाने वाले व्यक्तियों के कुछ आँकड़े इस प्रकार हैं । वर्ष १९०४-५ में रूस और जापान के बीच हुए युद्ध में एक लाख तीस हजार व्यक्ति मारे गये। सन् १९१२-१३ में लड़े गये वाल्कन युद्ध में मरने वालों की संख्या दो लाख थी । स्पेन के गृह-युद्ध १९३२-३९ में चार लाख इक्तीस हजार सैनिक तथा दो लाख पच्चीस हजार गैर सैनिक हताहत हुए । १९५०-५३ के कोरिया युद्ध में पांच लाख ८१ हजार आठ सौ २३ सैनिक तथा चार लाख गैर सैनिक दिवंगत हुए । सन् १९१४ से १८ तक चलने वाले प्रथम विश्वयुद्ध में मरने वाले सैनिकों की संख्या ४४ लाख १८ हजार तथा गैर सैनिकों की संख्या १३ लाख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थी । सन् १९६२ से ७५ तक चले वियतनाम युद्ध में कुल मरने वालों की संख्या ४० लाख तक आंकी गई ।

मनुष्य ने भौतिक क्षेत्र में जैसे-जैसे प्रगति की है उसी के अनुरूप युद्धों में भी अभिवृद्धि हुई है । उपरोक्त आंकड़े प्रमुख युद्धों के हैं । इनके अतिरिक्त भी छोटे-छोटे अनेकों युद्ध हुए हैं । पिछले सात दशकों में जितने युद्ध हुये हैं उनकी संख्या इस प्रकार है -सन् १८९८ से १९०७ तक ९। १९०८ से १९१७ तक १५। १९१८ से १९२७ तक ११। सन् १९२८ से १९३७ तक ८। १९३८ से १९४७ तक १२ । सन् १९४८ से १९५७ तक २८। सन् १९५८ से १९६७ तक ४५। १९६७ के बाद के ठीक-ठीक आंकड़े प्राप्त नहीं, पर अनुमान है कि इनकी संख्या भी ७० से अधिक होगी ।

यह है अब तक हुए युद्धों में नष्ट हुई जनशक्ति और धनशक्ति का इतिहास जो विचारशील कहे जाने वाले मनुष्य को सबक देने के लिए पर्याप्त है । इन दिनों की परिस्थितियाँ तो और भी अधिक भयावह हैं । पिछले दिनों यन्त्रों की दुनिया में इतना विकास नहीं हुआ था । आज जैसे विनाशकारी परमाणु बम नहीं थे । यदि युद्ध छिड़ता है तो मनुष्य जाति अपना अस्तित्व सुरक्षित भी रख सकेगा अथवा नहीं, इसमें सन्देह है । सम्पूर्ण सभ्यता को रोंदने के लिए कुछ मिनट ही पर्याप्त होंगे ।

इन विषम परिस्थितियों में पिछले अनुभवों से शिक्षा और प्रेरणा लेनी होगी । जो सशक्त सम्पन्न एवं समर्थ राष्ट्र हैं, उन्हें भी यह सोचना होगा कि शक्ति संचय एवं आक्रमण नीति अपनाने से क्या वे अपनी सुरक्षा को अक्षुण्ण बनाये रख सकेंगे । इस परमाणु युग में यह सर्वथा असंभव है । जीवन और मरण के दो राहे पर खड़ी मनुष्य जाति को विश्व स्तर पर सोचना और तदनुरूप निर्णय लेना होगा । दो रास्ते हैं एक तो ध्वंस की ओर जाता है जिसका अनुगमन करने पर समस्त मानव जाति का समाप्त हो जाना सुनिश्चित है । दूसरा मार्ग है सृजन का । जिसके अवलम्बन से स्वर्गीय परिस्थितियों के नव निर्माण की सुखद कल्पना साकार होने की पूरी-पूरी गुंजाइस है । यह निर्णय विश्व मनीषा के ऊपर है कि वह किसे चुने ? विश्व हित की नीति को अपनाकर परिस्थितियों के नव निर्माण में योगदान दे अथवा ध्वंस पर उतारू होकर अपना अस्तित्व समाप्त कर ले । वर्तमान परिस्थितियों में उसे सोचना विश्व स्तर पर ही होगा । व्यक्तिगत स्वार्थ एवं सुरक्षा की बात सोचने से हल नहीं निकलेगा ।

इस दिशा में पहला कदम उठाने की आवश्यकता है-ध्वंशात्मक शस्त्रों के निर्माण के प्रति बढ़ते हुए उत्साह को रोकने एवं उसे सृजनात्मक दिशा में मोड़ने की रूमानिया सरकार द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में प्रति मिनट हथियारों के निर्माण पर जितना खर्च होता है उससे दो हजार टन गेहूँ खरीदा जा सकता है । यदि हथियार बनाने के सभी कारखाने दस मिनट के लिए बन्द कर दिये जायें तो उससे बचे धन द्वारा आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित एक अस्पताल बन सकता है । युद्ध में प्रयुक्त होने वाले एक एफ-१४ युद्धक विमान की कीमत से नौ स्कूल खुल सकते हैं । एक एयर क्राफ्ट की कीमत से एक जल विद्युत केन्द्र खोला जा सकता है । एक लियोपोर्ड टैंक से ५० फ्लैट बन सकते हैं । टैंक युद्धों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में जितना खर्च होता है उससे ७८ किण्डरगार्टन विद्यालय तथा एक पनडुब्बी की कीमत से एक करोड़ ६० लाख बच्चों को शिक्षा दी जा सकती है । एक प्रक्षेपास्त्र की लागत से दो अस्पताल खुल सकते हैं ।

दूसरा कदम उठना चाहिए मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना की दिशा में । हर कीमत पर मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पदा अन्तःसंवेदनायें हैं जिन्हें आर्थिक लाभों की तुलना में कहीं अधिक महत्व दिया जाना चाहिए । राष्ट्रीय, साम्प्रदायिक एवं मजहबी हितों की तुलना में मानवी आदर्शों एवं मूल्यों को सर्वोपरि महत्व देने से ही अन्तर्राष्ट्रीय तनावों एवं मतभेदों को समाप्त कर सकना सम्भव है ।

विज्ञान अपनी गरिमा समझे

विज्ञान की अपनी गरिमा है, प्रगति का अपना महत्व । इन दोनों की उपयोगिता-आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता । इतने पर भी इनका लाभ तभी है जब सृजन की दिशा में उन्हें प्रयुक्त किया जाता रहे । विनाश के लिये उपयोग की गई शक्ति सदा घातक ही होती है । सामर्थ्य जितनी अधिक होगी विकास या विनाश का उपक्रम भी उसी अनुपात में चलेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

यह प्रगति का युग है । विज्ञान क्षेत्र की प्रतिभाएँ इस क्षेत्र में विशेष रूप से अग्रणी है । शासन का सहयोग, प्रोत्साहन उनके साथ है । प्रचुर साधन उपलब्ध कराने में भी उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती । औद्योगिक उपार्जन कर्ता एवं व्यवसायी ऐसी उपलब्धियों की ताक में रहते हैं ताकि उन्हें समृद्ध बनने का कोई बड़ा अवसर हाथ लग सके । इसलिये शासन की तरह सम्पत्तिवान भी विज्ञानियों को चरम-पुरुषार्थ करने एवं उनके लिये लाभदायक आधार खड़े करने के लिये हर सम्भव सहयोग देते रहे हैं । इन्ही परिस्थितियों में विज्ञान की उन धाराओं को अधिक अग्रगामी बनने का अवसर मिला है, जो शासकों एवं औद्योगिकों को अधिक सामर्थ्य प्रदान कर सके । आयुध, भौतिकी एवं औद्योगिकी को इसी आधार पर प्रोत्साहन मिला है और वह प्रगति की चरम सीमा तक जा पहुँचा है ।

पिछले युद्धों और महायुद्धों के रोमांचकारी विवरण को पढ़कर भावी युद्धों की कल्पना भर से हृदय धड़कने लगता है । उनमें आक्रान्ता और आक्रांत समुदायों को ही क्षति नहीं पहुँचेगी वरन् मानव समाज को समूची प्रगति से हाथ धोना पड़ेगा । इतना ही नहीं मानवीय अस्तित्व तक का बने रहना कठिन हो जायेगा । आयुधों के स्तर पर और परिणाम पर दृष्टिपात करने से महाविनाश की विभीषिका सामने आ खड़ी होती है ।

पिछली शताब्दी से लेकर प्रथम विश्वयुद्ध तक, दूसरे विश्वयुद्ध से लेकर आज तक संहारक अस्त्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती ही जा रही है । न केवल नये प्रकार के अस्त्र विकसित हुए हैं, वरन परम्परागत अस्त्रों में भी आश्चर्यजनक सुधार किये गये हैं । यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो उसमें किस प्रकार के अस्त्र प्रयोग किये जा सकते हैं, इसका अनुमान लगाना कठिन है ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम दिनों में ही जर्मनी ने एक ऐसी राइफल निर्मित की थी जो एक के बाद एक लगातार फायर कर सकती थी । तब से लेकर अब तक इस प्रकार की राइफलों के नये-नये संस्करण एवं स्वरूप सामने आ चुके हैं । परम्परागत राइफल में एक बार में एक ही लक्ष्य पर गोली दागी जा सकती थी परन्तु इन नई राइफलों में धड़ाधड़ गोली दाग सकने की व्यवस्था है । इन नवीन प्रकार की राइफलों में भी अब सुधार किये जा रहे हैं । एक तो यह कि जब चाहें लगातार फायर कर सकें, जब चाहें एक-एक करके फायर किये जा सकें । दूसरा सुधार लक्ष्य पर ही सही निशाना लगा सकने की व्यवस्था में किया गया है, जिससे रात हो अथवा दिन, अचूक निशाना लगाया जा सकता है । इस तरह की राइफलें भी बनाई जा रही हैं जिनसे परम्परागत गोलियों के स्थान पर पेंसिल के सिरों की मोटाई वाले कंटीले वाणों की वर्षा हुआ करेगी । आगामी समय में यह भी सम्भावना है कि राइफल की जगह राकेट फेंकने वाले यन्त्रों की सहायता से प्रत्येक सैनिक छोटे-छोटे प्रक्षेपास्त्र दुश्मन पर फेंक सकेगा । एक सम्भावना यह भी है कि सिपाहियों को लेसर किरणें छोड़ने वाली बन्दूकें दी जायँ । अभी तक इन बन्दूकों के बारे में गल्प साहित्य में ही पढ़ा गया होगा परन्तु वास्तविकता यह है कि ऐसे अस्त्र बनाये जा चुके हैं ।

प्रचलित आयुधों में तोपखाने का विशेष महत्व रहा है । इधर पिछले एक दशक में अनेक देशों ने ऐसी हल्की एवं प्रभावशाली तोपें विकसित की हैं जिन्हें बन्दूक की तरह सुगमता से उठाकर ले जाना सर्वथा सम्भव हो गया है । जमीन पर लड़े जाने वाले युद्धों में प्रयुक्त होने वाले आयुधों में टैंकों का विशेष स्थान है । द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी ने उनका प्रयोग, प्रदर्शन करके उनकी उपयोगिता की सत्यता सिद्ध कर दी है । अब तो टैंकों का भी बहुत विकास हो चुका है । फ्रांस, ब्रिटेन, रूस, अमेरिका, स्वीडन, तथा जर्मनी ने टैंकों के विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है । सामान्यतः टैंक बहुत भारी हुआ करते थे और उनका इच्छानुसार उपयोग कठिनता से हो पाता था । जर्मनी ने ऐसे टैंक विकसित किये हैं जिनका वजन ४० टन से कम है । इस दिशा में फ्रांस और ब्रिटेन तो और भी आगे निकल गये हैं । इन देशों ने ऐसे टैंक निर्मित किये हैं जो अभी तक प्रकाश में आये टैंकों से सब दृष्टियों से बेहतर तो हैं ही वरन् उनका भार भी दस टन से कम है । अधिक विस्मित कर देने वाली बात तो यह है कि अब तक तो टैंकों पर लम्बी-लम्बी तोपें फिट रहती थीं किन्तु अब उनके अन्दर ही तोपें फिट करने की व्यवस्था की जा चुकी है । इसके साथ ही कम ऊँचाई के टैंक भी विकसित किये जा चुके हैं ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह तो लड़ाई में प्रयोग किये जाने वाले परम्परागत हथियारों की बात हुई । विगत तीन-चार दशकों में इस क्षेत्र में कल्पनातीत प्रगति हुई है । १९५० की मध्यावधि में आवागमन के क्षेत्र में एक तेज गति से चलने वाला वायुयान होवर क्राफ्ट अस्तित्व में आया । यह अत्यधिक शोर करने वाला अन्धाधुन्ध धुआँ छोड़ने वाला द्रुतगामी वाहन होता है । विश्व के कई देश वर्तमान होवर क्राफ्ट के ढाँचे का परिवर्धन संशोधन करने में लगे हुये हैं । जानकारों का अनुमान है कि गतवर्ष अमेरिका अपनी नौसेना के लिए १६० टन का ऐसा होवर क्राफ्ट तैयार कर चुका है जो ४०० सैनिकों अथवा अन्य युद्ध सामग्री को सैकड़ों, हजारों मीलों तक सुगमता से ढो लेता है ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जिन आयुधों में कल्पनातीत विकास हुआ है, उनमें प्रक्षेपणास्त्र प्रमुख हैं और आज तो प्रक्षेपणास्त्र किसी भी राष्ट्र के लिए प्रतिष्ठा के चिन्ह बन गये हैं । विश्व के बड़े देश ही नहीं बल्कि ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका जैसे छोटे देश भी प्रक्षेपणास्त्र बनाने में जुटे हुए हैं । १९४४ के बाद से अब तक प्रक्षेपणास्त्रों में चमत्कारिक विकास हुआ है ।

कुछ देश वर्षों से अनुसंधान करने के उद्देश्य से उपग्रह छोड़ रहे हैं । विशेषज्ञों का कहना है कि अब ऐसे भी उपग्रह विकसित किये जा चुके हैं जो अनुसंधान करने के बहाने इच्छानुसार बम गिरा देंगे ।

इन दिनों रासायनिक युद्धों की चर्चा जोरों पर है और विशेषकर वियतनाम में अमेरिका द्वारा नापाम बम बरसाये जाने के समय से सबका ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ । प्रथम विश्वयुद्ध में अश्रु गैस के अलावा, जहरीली गैस तथा नापाम बमों का भी प्रयोग किया गया था । उल्लेखनीय है कि प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी ने जिस ज्वलनशील प्रक्षेपास्त्र का प्रयोग किया था, नापाम बम उसी का परिवर्द्धित-संशोधित रूप है । इस प्रकार के ५ लाख टन नापाम बम अब तक विभिन्न देशों पर गिराये गये हैं । कोरिया युद्ध में ३ हजार टन तथा वियतनाम युद्ध में ४ लाख टन नापाम बम वर्षा कर अमेरिका ने संसार को हिला दिया ।

परम्परागत युद्ध का तो मानव जाति को पूरा अनुभव है परन्तु बीसवीं शताब्दी में विज्ञान की आशातीत प्रगति ने युद्ध को अब कई नये आयाम दिये हैं । विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने जहाँ मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के साधन प्रस्तुत किये हैं वहीं उसकी मौत का घातक सरंजाम भी इकट्ठा कर दिया है । एक किलोटन से लेकर ६० मेगाटन और अधिक तक की शक्ति के आणविक बमों का निर्माण हो चुका है और अनुमान है कि १९९४ के अन्त तक विश्व में १५००० से भी अधिक प्लूटोनियम बमों का निर्माण प्रतिवर्ष किया जाने लगेगा ।

कनाडा के अल्विन पोलपोण्ड नामक भौतिक विद् ने एक आंकड़ा प्रस्तुत किया है जिसमें अमरीका की अकेली परमाणविक शक्ति का उल्लेख किया गया है । उनका कहना है कि अनुमान करें कि एक बड़े हाल में एक लाख व्यक्ति एकत्रित हों और प्रत्येक के हाथ में तीन परमाणु बम हों । प्रत्येक बम की मारक क्षमता हिरोशिमा पर गिराये गये बम के बराबर हो इतनी परमाणविक शक्ति अकेले आज अमेरिका के पास है । अन्य राष्ट्रों की पूरी जानकारी नहीं मिल पाई है । पर अनुमान किया जाता है कि सारे विश्व में परमाणु बम अरबों टी० एन० टी० विनाशक क्षमता के बराबर है । यह मात्रा इतनी अधिक है कि संसार की जनसंख्या में से प्रत्येक व्यक्ति को ५० हजार बार मारा जा सकता है । इससे बढ़कर विचारशीलता का अभिशाप एवं बुद्धि पर लगा कलंक और क्या हो सकता है ? कि मनुष्य ने अपने को ही ५० हजार बार मारने की तैयारी कर ली है ।

जापान पर गिराये गये प्रथम परमाणु बम की शक्ति २० हजार टी०एन०टी० थी । २० हजार टी०एन०टी० को समझना भी कठिन है क्योंकि किसी ने एक स्थान पर एकत्रित इतनी शक्ति नहीं देखी है । यदि किसी मेले में ऊँचे टीले पर खड़े हो जायँ और २० हजार व्यक्तियों को एकत्रित देखें तो भी इतने वजन की आपूर्ति नहीं हो सकती । तब से लेकर अब तक और भी अधिक शक्तिशाली बमों का निर्माण हो चुका है । उनकी मारक क्षमता हिरोशिमा पर गिराये गये बम की तुलना में कई गुना अधिक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९५४ में पहले हाइड्रोजन बम का परीक्षण किया गया। जिसका पावर १५ मेगाटन टी०एन०टी० के बराबर था। इसकी शक्ति हिरोशिमा पर गिराये गये परमाणु बम की तुलना में ५० गुना अधिक थी । दुनिया के जो विशालतम बम हैं वे एक हजार मेगाटन टी०एन०टी० क्षमता तक के हैं । इनकी मारक क्षमता ५ हजार गुना अधिक है । अनुमानतः एक बम भी गलती से फूट जाय तो ४ करोड़ व्यक्तियों को मार सकता है। मिसाइलों द्वारा इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने, गिराने का कार्य किया जाता है ।

पिछले महायुद्ध के अनुभवी सेनाध्यक्षों ने मिलकर एक पुस्तक लिखी है 'द थर्ड वार' उसमें उन्होंने भावीयुद्ध के कारणों और प्रयुक्त होने वाले आयुधों पर प्रकाश डाला है । लेखकों का मत है कि महायुद्ध आरम्भ करने से पूर्व आक्रांता को यह सोचना होगा कि प्रहार के बाद की प्रतिक्रिया सहन कर सकना उसके लिए सम्भव है या नहीं। सम्भव है यह डर देर तक युद्ध की विभीषिका को आगे टालता रहे । फिर भी इतना तो निश्चित ही है कि अणु आयुधों के उत्पादन एवं जमा रखने से भी जो विकिरण उत्पन्न होता है उसकी क्रमिक विनाशलीला से मानव जाति को त्रास सहने से कैसे बचाया जा सकेगा ।

आयुधों के संदर्भ में विज्ञान की उपलब्धियों और प्रतिक्रियाओं पर विचार करने से इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि प्रगति दिशाविहीन नहीं होनी चाहिए न ही उसका लक्ष्य निकृष्ट स्वार्थपरता का परिपोषण होना चाहिए । प्रगति की दिशा में बुद्धि, श्रम एव साधनों का उपयोग तभी सार्थक हो सकता है जब उसमें पिछड़ों को उठाने एवं उठों को उत्कृष्ट बनाने में प्रयोग हो सके । विज्ञान की प्रगति यदि इसी दिशा में सम्भव हो सकी होती या भविष्य में हो सके तो ही उसकी सार्थकता है अन्यथा पुरुषार्थ विघातक भी हो सकता है जैसे कि इन दिनों ज्ञान-विज्ञान, धन, पुरुषार्थ, कला आदि के क्षेत्रों में हो रहा है ।

शक्ति को विनाश-विग्रह में लगने से रोका जाय

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का उपयोग दो रूपों में किया जा सकता है– सृजनात्मक अथवा विनाशात्मक । सृजनात्मक प्रवृत्ति जहाँ व्यक्ति एवं समाज की सुख-शान्ति एवं सुव्यवस्था बनाये रखने में योगदान देती है, वहीं विध्वंसात्मक प्रवृत्ति समाज को छिन्न-भिन्न कर देती एवं व्यक्ति को उच्छृखंल, उद्दण्ड एवं अपराधी बनाती है । शरीर बल, बुद्धि बल एवं सम्पत्ति अपने में बड़े समर्थ एवं शक्तिशाली हैं किन्तु इनकी महत्ता एवं उपयोगिता सदुपयोग पर ही आधारित है । महत्ता तो है, किन्तु तभी है जबकि दुःखी, पीड़ित, अक्षम व्यक्तियों का सहयोग, सहायता की जाय, यदि व्यक्तिगत स्वार्थ, संकीर्णता के पोषण और अनीति, अनाचार बरतने में ही इस शक्ति का अपव्यय हुआ तो इसकी गरिमा कहाँ रही । बुद्धिबल के सन्दर्भ में भी यही बात लागू होती है, रचनात्मक दिशा में सुदपयोग के कारण ही बुद्धि की पूजा, प्रतिष्ठा भारतीय संस्कृति में पंच देवों में गणेश के रूप में हुई।

सम्पत्ति, व्यक्तिगत और सामाजिक सुख-साधनों के विकास में कितना योगदान देती है, इससे हर कोई परिचित है किन्तु वहीं इसका दुरुपयोग मनुष्य को व्यसनी, उच्छृंखल अपराधी बना देता है । शक्ति किसी प्रकार की क्यों न हो उसकी महत्ता तभी है जब उसको सृजनात्मक कार्यों में लगाया जाय । विध्वंशकारी शक्ति प्रयोजन तो अनेकानेक समस्याएँ ही खड़ा करता है ।

सामर्थ्य तो किसी चीज की गहराई में है, इस तथ्य को सभी जानते हैं । मनुष्य देखने में एक चलता-फिरता श्रम करने वाला शरीर दिखाई पड़ता है । बहिरंग कलेवर से अन्तरंग में प्रवेश किया जाय तो उसके अन्दर बौद्धिक क्षमता से लेकर भाव-संवेदनाओं की सम्पदा छिपी पड़ी है । उसे जगाया जाय तो सामान्य दिखाई पड़ने वाले मनुष्य की महात्मा, महापुरुष बनने की पूरी-पूरी सम्भावना है ।

न केवल मनुष्य और प्राणियों के अन्तरंग में परमात्मा ने ये विशेषताएँ छिपाई है वरन् जड़ पदार्थों के अन्तराल में भी शक्ति का भण्डार छिपा रखा है । पदार्थ के छोटे से छोटे कण परमाणु के नाभिक में शक्ति का सागर लहरा रहा है । इसका प्रमाण परमाणु के नाभिकीय विखंडन में देखा गया । एक मार्च सन् १९५४ को प्रातः छह बजकर बारह मिनट पर प्रशान्त महासागर के निकट अमेरिका ने एक परमाणु परीक्षण किया । नाभिकीय विखण्डन के फलस्वरूप निकटवर्ती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक सुनसान द्वीप छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गया । विस्फोट से निकलने वाली रेडियोधर्मी किरणों ने सैकड़ों मील के क्षेत्र के जीव-जन्तु एवं फसलों को प्रभावित किया । परीक्षण स्थल से सत्तर मील दूर स्थित 'मार्शल द्वीप एवं बिकनी' के इलाके में छह मिनट बाद विस्फोट की आवाज सुनाई पड़ी । दो घण्टे के उपरान्त सफेद बर्फ जैसी राख उक्त इलाके में गिरने लगी । फलस्वरूप अनेकों व्यक्तियों की आँख की रोशनी सदा के लिए नष्ट हो गई । कितनों को चर्मरोग, शारीरिक जलन जैसी बीमारियाँ हो गईं । एक परीक्षण में पाया गया कि उनमें अधिकांश अर्ध-विक्षिप्त हो गये थे ।

इन विनाशकारी परिणामों को देखते हुए भी विश्व के अनेकों राष्ट्रों में विध्वंसात्मक शस्त्रों के निर्माण की होड़ चल रही है उसे देखकर लगता है कि बुद्धिमान कहा जाने वाला मनुष्य कही पागल तो नहीं होता जा रहा है। शक्ति संचय के लोभ में एक से एक विनाशक बमों का नित्य निर्माण होता चला जा रहा है । इस शृंखला में एक और विघातक कड़ी जुड़ी है । उद्जन बमों तथा लेसर बमों के निर्माण के रूप में । यद्यपि अभी इन बमों का प्रयोग किसी राष्ट्र विशेष के विरुद्ध में नहीं हुआ है फिर भी इसका परीक्षण मात्र ही इतना घातक प्रभाव उत्पन्न कर रहा है कि उसे देखकर कहा जा सकता है कि न केवल मनुष्य बल्कि सारे प्राणी समूह के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए ये परीक्षण पर्याप्त होंगे । एक मध्यम आकार का उद्जन बम एक लाख वर्ग मील क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखाता है । लम्बे समय तक उसके परीक्षण, वायुमण्डल की आक्सीजन, नाइट्रोजन एवं जल से संयुक्त होकर नाइट्रिक अम्ल बनाते हैं । वायुमण्डल में उपस्थित अम्ल की मात्रा आँखों एवं त्वचा में जलन उत्पन्न करती है। विस्फोट से उस क्षेत्र की फसलें पूर्णतया नष्ट हो जाती हैं । नाभिकीय विखण्डन से निकले न्यूट्रान कण वायुमण्डलीय नाइट्रोजन से मिलकर एक ऐसे रेडियो सक्रिय समस्थानिक (आइसोटोप) का निर्माण करती है जो हजारों वर्ष तक जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों पर अपना घातक प्रभाव पहुँचाते हैं । कार्बन-०४ नामक आइसोटोप पौधों के माध्यम से अवशोषित होकर फल-फूलों में बना रहता है जिसका उपयोग मनुष्य तथा अन्य प्राणी करते हैं और रेडियो-सक्रियता की विषाक्तता की चपेट में आते रहते हैं ।

रेडियो सक्रियता तत्वों का एक ऐसा गुण है जो ऊर्जा को उसी प्रकार विकसित कर देता है जैसे जलता कोयला राख में बदलते समय उष्मा को करता है । एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् १९५९ तक सुपर बमों के परीक्षण विस्फोट से वायुमण्डल की स्ट्रेटोस्फीयर परत में स्ट्रांशियम पदार्थ की चालीस पौण्ड मात्रा थी । यह मात्रा अमेरिका, रूस और इंग्लैण्ड में किये गये परीक्षणों के कारण हुई थी । तब से आज तक परमाणु परीक्षणों की होड़ तो और भी तेज हुई है । वायुमण्डल की विषाक्तता का अनुमान उपरोक्त आधार पर लगाया जा सकता है । यह स्ट्रांशियम पौधों के कैल्शियम को नष्ट करके उनका स्थान ग्रहण कर लेते हैं ।

सन् १९६९ में वैज्ञानिकों ने यह सम्भावना व्यक्त की थी कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में स्ट्रान्शियम की मात्रा बढ़ती जा रही है । उनका मत था कि वायुमण्डल की सारी स्ट्रान्शियम पृथ्वी के गर्भ तक पहुँच जाय तो अधिकांश व्यक्तियों को कैन्सर होने की सम्भावना होगी । आनुवांशिकी विशेषज्ञों का विचार है कि उक्त परिवर्तन की प्रक्रिया से मानव के आकार-प्रकार में भारी परिवर्तन होगा । राष्ट्रीय अकादमी के वैज्ञानिकों ने एक विचार गोष्ठी में चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि परमाणु परीक्षणों का उत्साह चलता रहा तो सन दो हजार तक परमाणु विस्फोट से प्रभावित पौधे क्रिप्टन-८५ गैस की इतनी मात्रा निकाल देंगे जो उत्तरी गोलार्द्ध के मध्य अक्षांश को पूर्णरूपेण सक्रिय बना दे । जिसका प्रभाव जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों के महाविनाश के रूप में परिलक्षित होगा ।

लगता है मनुष्य को सबसे अधिक द्वेष, घृणा एवं बैर अपने ही सजातीयों से है तभी तो वह परमाणु शक्ति का उपयोग सजातीय सृजनात्मक कार्यों में न करके, एक से बढ़कर एक भयानक यन्त्रों के निर्माण में कर रहा है । परमाणु बमों के प्रयोग से आक्रमणकारी राष्ट्र को भी कुछ हाथ नहीं लगता । यह प्राणियों को तो मारता ही है सम्पत्ति, मकान आदि को भी नष्ट कर देता है । यह बात लम्बे समय से वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में घूम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रही थी कि इस प्रकार के बमों का निर्माण किया जाना चाहिए जो मनुष्य को तो मारे किन्तु सम्पत्ति को क्षति न पहुँचे न्यूट्रान बमों के निर्माण से यह प्रयास भी सफल रहा। इस प्रकार के बम मनुष्य को तो मारेंगे किन्तु जमीन, मकान, यंत्र आदि को किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचेगी। इसके विस्फोट से ताप तरंगे कम निकलती हैं । जिससे मकानों एवं वस्तुओं पर हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता किन्तु न्यूट्रानों के अधिक संख्या में तेजी से निकलने से ऊर्जा का अस्सी प्रतिशत भाग निकलकर प्राणियों को मार डालता है ।

न्यूट्रान बम विस्फोट के बाद किस प्रकार मनुष्य को तड़प-तड़प कर मरने के लिए बाध्य करता है, उसे समझने के लिए इसके प्रभाव को तीन क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है । एक क्षेत्र तो वह है— जहाँ विस्फोट किया जाता है, इसके अन्तर्गत रहने वाले सारे जीव-जन्तु तत्काल मर जायेंगे । दूसरे इसके निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग कुछ घण्टों से लेकर कुछ दिनों में मृत्यु की गोद में पहुँच जायेंगे, तीसरा क्षेत्र विकिरण का है, इसमें विकिरण के प्रभावों से एक-दो वर्षों के अन्दर कैन्सर, टी०बी० जैसी बीमारियों से ७० प्रतिशत व्यक्तियों की मृत्यु हो जायेगी । जो बचेंगे उनमें अधिकांश विक्षिप्त, विकलांग स्थिति में मौत के बाकी दिन किसी प्रकार पूरे करेंगे ।

यदि सृजनात्मक दिशा में इस महाशक्ति का उपयोग नहीं किया गया तो विघातक परिणाम सामने प्रस्तुत होंगे सारी मानव सभ्यता विनाश के कगार पर खड़ी है । पता नहीं कि कब कोई सिरफिरा राष्ट्र इसका प्रयोग करने पर उतारू हो जाय और कुछ ही मिनटों में सारे विश्व में महाप्रलय का दृश्य उपस्थित कर दे ।

न केवल व्यक्ति और प्राणी वरन् परमाणु की शक्ति की भी उपयोगिता इनके सृजनात्मक प्रयोजनों में है । ध्वंस की असीम शक्ति का लोभ छोड़कर सृजन की सीमित शक्ति की बात सोची जाय तो यही परमाणु मानवीय सुख-सुविधा के अभिवर्धन में अपना अधिक योगदान दे सकता है । विज्ञान के जानकार इस तथ्य से परिचित हैं कि दो तत्वों के संयोग से तीसरी वस्तु बनती है । हाइड्रोजन, आक्सीजन के अणु मिलकर पानी का निर्माण करते हैं । एकाकी हाइड्रोजन एवं आक्सीजन के अणु उतने उपयोगी नहीं हो सकते थे जितना कि इनके परस्पर संयोग से उत्पन्न पानी । बिजली के दो पाजेटिव, निगेटिव तार अलग-अलग बिखरे पड़े रहते हैं किन्तु इन दोनों को परस्पर जोड़ा जाता है तो तारों के बीच विद्युत-धारा प्रवाहित होने लगती है जिसका अनेकानेक कार्यों में प्रयोग किया जाता है । शुक्राणु एवं डिम्बाणु का जब सहयोग कराया जाता है तो नये जीव की संरचना के रूप में चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत होता है । सहयोग के चमत्कारी सत्परिणामों से हर कोई परिचित होता है ।

ध्वंस का प्रयोग कितना खतरनाक होता है, यह इतिहास के पन्ने उलटने पर पता चलता है । छोटे-छोटे व्यक्तियों ने रक्त की नदियाँ बहा दीं । जयसिंह के विश्वासघात ने राष्ट्र को सदियों तक गुलामी की जंजीर पहनाये रखीं । एकाकी सिकन्दर ने शक्ति एवं सम्पत्ति के संचय के लिए कितना रक्तपात किया । हिटलर ने द्वितीय विश्व युद्ध खड़ा करके लाखों व्यक्तियों को मृत्यु के मुँह में ढकेल दिया । रावण, कंस के अत्याचारों ने महाविनाश जैसा दृश्य प्रस्तुत किया । जहाँ इन व्यक्तियों के ध्वंसात्मक कार्यों ने इतनी अधिक क्षति पहुँचाई वहीं छोटे-छोटे व्यक्तियों के सृजनात्मक कार्यों ने मानवीय संस्कृति को समुन्नत बनाने में कितना योगदान दिया, इसे सभी जानते हैं ।

बुद्ध ने करुणा, दया, सेवा का पाठ पढ़ाया । त्याग, बलिदान का वह आदर्श प्रस्तुत किया जिसे अपनाकर कोई भी मानव से महामानव की श्रेणी में पहुँच सकता है । ईसा, सुकरात के मानवता के लिये किये गये कार्यों के लिये पाश्चात्य जगत सदा ऋणी रहेगा । वैज्ञानिक क्षेत्र में मान्टेसरी, फ्लोरेंस नाइटेंगिल, जेनी आदि महिलाओं के कार्यों ने सुख-शान्ति के विकास में अपना अपूर्व योगदान दिया ।

परमाणु की प्रचण्ड शक्ति का प्रयोग सृजनात्मक कार्यों में भी हो सकता है । मस्तिष्क विध्वंसात्मक कार्यों में शक्ति के दुरुपयोग का एक पक्षीय विचार निकाल दे तथा सृजन की दिशा में मोड़ दे तो बहुत कुछ हो सकता है । इससे सभी परिचित हैं कि अगले दिनों ऊर्जा स्त्रोत के मुख्य आधार लकड़ी, कोयला, पेट्रोल आदि की भारी कमी पड़ेगी । सबकी दृष्टि ऊर्जा के शक्तिशाली स्त्रोत सूर्य पर लगी हैं । समुद्र का खारा पानी भी उर्जा की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रमशः बढ़ती ही रहेगी । अणु संस्थानों से प्रयोगोपरांत निकले हुए कचरे को कहाँ डाला जाय, यह एक विकट प्रश्न है । जलने के बाद भी उसमें भयानक रेडियेशन कायम रहता है और उसे जहाँ भी रखा जाय वहीं संकट उत्पन्न करता है ।

अमेरिका के कोलम्बियो विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला द्वारा किए गये परीक्षणों से पता चला है कि आज दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में विकिरणकारी स्ट्रान्शियम–९० पाया जाता है । अब धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ती जा रही है । जिस समय आणविक प्रायोगिक विस्फोट होता है उस समय स्ट्रान्शियम के सूक्ष्म कण ११ किलोमीटर ऊपर उछल जाते हैं जो धीरे-धीरे जमीन पर गिरते हैं । भूमि से ये पेड़-पौधों, जानवरों तथा मनुष्यों में पहुँच जाते हैं । डाक्टर जान लोरेस क्रुप के निर्देशन में किए गए परीक्षणों का जो निष्कर्ष निकला है उसके अनुसार सन् १९४५ से पहले किसी भी व्यक्ति में स्ट्रान्शियम ९० नहीं था, परन्तु अब यह प्रत्येक व्यक्ति में पाया जाता है । अमेरिका के बच्चों में यह सबसे अधिक पाया जाता है । यदि युद्ध नहीं भी हो तो भी केवल बमों के अनवरत परीक्षण प्रयास से ही स्ट्रान्शियम ९० की मात्रा बढ़ती जाएगी जिससे मानव जाति का विनाश हो जायेगा ।

परीक्षणों के अनुसार–स्ट्रान्शियम ९० हड्डियों को गलाता है तथा असाध्य बीमारियाँ उत्पन्न करता है । मानव शरीर में यह अधिकतर दूध के माध्यम से पहुँचता है । वैज्ञानिकों का कथन है कि यदि सन् २१०० तक परीक्षणों का यही क्रम बराबर चलता रहा तो पूरे विश्व में प्रत्येक मानव के शरीर में स्ट्रान्शियम की घातक मात्रा का पाँचवाँ भाग पहुँच जायेगा । वर्तमान स्थिति तो यही बताती है कि विश्व में आणविक बिजलीघरों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है । अकेले अमेरिका में ही अणु बिजलीघर और अणु भट्टियों की संख्या एक हजार से भी ऊपर इस दशक से अन्त तक हो जायेगी और तब बिजली का अधिकांश उत्पादन आणविक प्रक्रिया से हो रहा होगा ।

अणु बिजलीघरों ने पेट्रोलियम और कोयले जैसे खनिज ईंधनों की कमी की पूर्ति करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । जहाँ विश्व को इस साधन का लाभ ऊर्जा विकल्प के रूप में मिला है वहीं एक समस्या भी विभीषिका बनकर आ खड़ी है जिससे समस्त मानव जाति के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है । रेडियोधर्मी कचरे को भण्डारित रखना खतरनाक होने के साथ-साथ बहुत खर्चीला भी है । अमरीकी बिजली कम्पनियों को इस कचरे के रख-रखाव में इतना खर्च करना पड़ रहा है कि उनका दिवाला निकलने वाला है । आणविक विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में अमरीका सबसे आगे है और कचरे की समस्या भी उसी के सामने प्रमुख रूप से है । वह इस दूषित पदार्थ को तृतीय विश्व के निर्धन देशों की जमीन के अन्दर या सीलबन्द डिब्बों में किसी गहरे समुद्र में मीलों नीचे दफनाने का प्रयास कर रहा है ।

अमेरिका प्रशान्त महासागर में बेक और पामीरा नामक महाद्वीपों में रेडियोधर्मी कचरे को किसी तरह रफा-दफा करने की योजना बना रहा है । इन कचरा कब्रों का इस्तेमाल अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया और ताइवान के नाभिकीय रिऐक्टरों से बचे कचरे को गाड़ने के लिए किया जाएगा । इस योजना के क्रियान्वयन पर जापानी नागरिकों और हिरोशिमावासियों ने गहरा विरोध प्रकट किया है । योरोप के देशों एवं अमेरिका में भी इसके खिलाफ आन्दोलन छिड़ गया है । नाभिकीय कचरे को सीलबन्द डिब्बों तथा उन डिब्बों को कंक्रीट के खोल में बन्द कर गहरे समुद्र में उतार देना भी निरापद नहीं है । रेडियोधर्मिता वहाँ से फूटकर-मछलियों और समुद्री जल में समा जायेगी और उस माध्यम से मानव शरीर तक पहुँच जायेगी ।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की गवर्नमैण्ट का अनुमान है कि केवल अमेरिका में प्रतिवर्ष एक लाख घन फुट से अधिक उच्च व निम्न स्तर का 'न्यूक्लिअरवेस्ट' निकलता है जो 'न्यूक्लियर पावर-स्टेशन' न्यूक्लिअयर वैपन परीक्षण एवं चिकित्सकीय अनुसंधानों के कारण 'बाई-प्रोडक्ट' के रूप में बनता है और अत्यधिक विषैला भी होता है ।

अब तक जो आणविक प्रयोग परीक्षण चल रहे थे उनके 'न्यूक्लियर वेस्ट' को ऐसे स्थानों पर डाल दिया जाता था जहाँ से विकिरण का प्रभाव मानवीय समाज एवं स्वास्थ्य को नुकसान न पहुँचाए । वे स्थान अब भर चुके है और साथ ही कचरे की मात्रा प्रतिवर्ष अधिकाधिक बढ़ती जा रही है । और सन् २००० तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसकी मात्रा प्रतिवर्ष साढ़े छह लाख घनफुट हो जाने की सम्भावना है इसलिए 'नासा' ने बोइंग कम्पनी से कहा है कि इस **'न्यूक्लियर वेस्ट'** को अपने सूर्यमण्डल में या किसी अन्य सूर्यमण्डल अथवा अनन्त दूरी की किसी निहारिका में छोड़ देने के लिए अध्ययन अनुसंधान किया जाय ।

काश ! दिमाग ही नहीं दिल भी बड़ा होता

विश्व के राजनेताओं ने भौतिक और वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ अपने दिमाग भी बहुत बढ़ा दिये हैं । इसलिये उनकी कल्पना इस स्तर पर जा पहुँची है, जिनके आगे हिरण्यकश्यप, भस्मासुर और वृत्तासुर भी पीछे छूट गये हैं । विनाश के साधन इतने इकट्ठे किये जा रहे हैं कि शायद धरती पर कोई प्राणी जीवित न रह पाये ।

यदि नेताओं और विज्ञानवेत्ताओं के दिमाग के साथ-साथ दिल भी बड़े होते तो मानवीय प्रगति की कहानी आज कुछ और होती और जो धन बेकार की मदों में अब तक खर्चा जाती रहा, उसका मानवोत्थान में सदुपयोग बन पड़ा होता, पर ऐसा न होना था, न हुआ ।

विश्व के दो-तिहाई पिछड़ेपन की उपेक्षा कर अमेरिका अपनी सम्पदा कहाँ नियोजित कर रहा है इस संदर्भ में नासा के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हेंस मार्क का कहना हैं कि अमेरिका अपनी एक महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत सन् २००० तक अपने देश के अधिकांश निवासियों को स्थाई रूप से चन्द्रमा पर बसाने की योजना कार्यान्वित करने में संलग्न है । आरम्भ में वहाँ विशेष प्रकार की झोपड़ियाँ बनायी जायेंगी, जिन पर ब्रह्माण्डीय बौछारों से बचाने के लिये चन्द्रमा की मिट्टी का लेप चढ़ाया जायेगा । इन झोंपड़ियो में वैज्ञानिक प्रयोग परीक्षण करेंगे तथा चन्द्रमा के धरातल पर पाये जाने वाली खनिज सम्पदाओं का पता लगायेंगे, जिससे उसका दोहन धरतीवासियों के लिये किया जा सके । वैज्ञानिकों का विश्वास है कि वहाँ कुल पदार्थ का ४० प्रतिशत आक्सीजन विद्यमान है, जिसे बसे उपनिवेश के लिये खर्चा जा सकता है । पानी की समस्या का हल चन्द्रमा पर जमे बर्फ को पिघला कर किया जा सकेगा, साथ ही साथ हाइड्रोजन भी प्राप्त की जा सकेगी, जोकि अंतरिक्ष यान का मुख्य ईंधन है । यह तो अमेरिकी योजना है । इसी तरह के प्रयोग रूस में भी चल रहे हैं ।

यह लुभावनी योजना प्रथम दृष्टि में इस सन्दर्भ में लाभकारी लग सकती है कि चन्द्रमा की खनिज-सम्पदा का दोहन किया जा सकेगा और धरती की तरह उसे भी आबाद बनाया जा सकेगा, किन्तु क्या इस ओर भी कभी सोचा गया है कि हर पिण्ड की भार वहन की निश्चित सीमा होती है । धरती को भी सम्भवतः भगवान ने इसी दृष्टि से बनाया हो और इसी दृष्टि से चन्द्रमा को जनहीन बनाया हो कि उसकी सामर्थ्य इतनी नहीं है कि किसी आबादी के भार को वहन कर सके । ऐसी दशा में किसी ऐसी योजना के क्रियान्वयन से यदि चन्द्रमा अपनी कक्षा से हटकर स्वयं ही धराशायी हो और पृथ्वी को भी विस्मार कर दे, तो किसी को भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए ।

बुद्धि प्रगति की अनुगामिनी बने

निस्सन्देह इसे बुद्धि कौशल का चमत्कार ही कहना चाहिए कि मनुष्य अपने आदिम पूर्वजों की तुलना में कई गुना बेहतर स्थिति में पहुँच सका है और विज्ञान के सहारे नित्य नवीन जीवन साधनों का आविष्कार करता जा रहा है। इन चमत्कारी उपलब्धियों को देखते हुए यह मानने में संकोच नहीं किया जा सकता कि मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ सन्तान है, किन्तु इस श्रेष्ठता पर तब प्रश्न चिन्ह लग जाता है जब मानवीय बुद्धि अपने कौशल का उपयोग विनाशकारी प्रयोजनों में करती दिखाई देती है । इस विनाशकारी उपयोग को चित्रित करते हुए एक विद्वान ने लिखा है कि ''आदिकाल में कभी आदमी ने पहली बार एक पत्थर उठाकर अपने साथी पर वार किया और उसका सर फूट गया । शस्त्र की भाँति प्रयुक्त हुआ यही पत्थर युगों की यात्रा करते हुए सन् १९४५ में परमाणु बम बन गया है, और अब उसका संशोधित संस्करण विषाणु बमों के रूप में सामने आया है ।''

विषाणु ऐसे छोटे कीटाणु होते हैं जिन्हे सामान्य सूक्ष्मदर्शी से नहीं देखा जा सकता । इनकी मारक क्षमता अदभुत है । इनसे फैलने वाली बीमारियाँ पोलियो,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ट्रेकोमा, निमोनिया, कैन्सर रैवीज, कामनकोल्ड, इनके सेफ्लैटिस मनुष्य को घुट-घुट कर मरने को बाध्य करती हैं । ऐसे ही विषाणुओं से विषाणु बम का निर्माण होता है । जहाँ भी ये बम छोड़े जायेंगे उस वातावरण में विषाणु फैल जायेंगे तथा उपरोक्त बीमारियों को जन्म देंगे । उस वातावरण के एक एकड़ तक सम्पर्क में आने वाले इन बीमारियों से ग्रस्त हो जायेंगे ।

विषाणु बम व्यय की दृष्टि से कुछ सस्ते हैं और केवल जीवित व्यक्तियों और प्राणियों को ही अपना ग्रास बनाते हैं । ऐसे विषाणु बमों का भी निर्माण हो चुका है जो केवल मनुष्यों को मारें और अन्य प्राणियों को जीवित छोड़ दें । अब तक जो विषाणु बम तैयार हुए हैं उनके विस्फोट से होने वाली कुछ अन्य बीमारियाँ इस प्रकार है—

'क्लासट्रीडियम वाटुलिनम' नाम विषाणु ऐसा ही है जिसको विषाणु बम द्वारा अभीष्ट क्षेत्र में प्रसारित कर दिया जाता है । यह खाद्यान्नों को विषाक्त बना देता है । इसकी विषाक्तता सर्वाधिक विषाक्त पदार्थ फ्लोरोसोडियम एसीटेट से एक अरब पचास गुना तथा पोटेशियम सायनाइड से तीन अरब गुना अधिक है । पोटेशियम सायनाइड के विषय में इतना ही जानना पर्याप्त होगा कि शुद्ध अवस्था में इसका छोटे से छोटा अणु भी जीभ पर रखते ही तत्काल मृत्यु हो जाती है । जीभ पर रखने वाले को इसका स्वाद बता पाने का भी समय नहीं मिल पाता । इस विष से तीन अरब गुना क्लासट्रीडियम वोडुलिनम कितना भयंकर होगा इसका अनुमान लगा सकना भी कठिन है । ऐसा अनुमान है कि वोडुलिनम विष की एक औंस मात्रा बीस करोड़ व्यक्तियों को मारने में सक्षम है । इसके अतिरिक्त मेलियोडेसिस, सीटाकासिस, आक्सीडियो-माइकोसिस नामक बीमारियों को फैलाने वाले विषाणु बम भी आविष्कृत कर लिये गये हैं । इस बम की विनाश लीला भी कम घातक नहीं है । जहाँ कहीं भी इनका विस्फोट किया जायेगा वहाँ के निवासी तुरन्त १०७, १०८ डिगरी तापक्रम वाले बुखार में जलने लगेंगे। उनमें से कम ही जीवित बचेंगे । अधिकांश की जीवन लीला समाप्त हो जायेगी ।

रासायनिक शस्त्रों के आविष्कार में एक कड़ी और जुड़ी है—विषैली गैसों की । अब से कुछ वर्ष पूर्व तक 'फासजीन' और 'मस्टर्ड' गैस सबसे विषैली मानी जाती थी । लेकिन हाल ही में मस्टर्ड गैस से लगभग ७५ गुना अधिक विषैली गैस वी० एक्स गैस खोज ली गई है । इस गैस के हल्के से झोंके ने अमेरिका के एक चरागाह में चर रही पाँच हजार भेड़ों को क्षण भर में नष्ट कर दिया । नाइट्रोमस्टर्ड गैस का विस्फोट करने पर उस क्षेत्र के निवासियों की तुरन्त मृत्यु तो नहीं होती परन्तु मरने से पूर्व तक असह्य यन्त्रणा होती है । इस गैस के फैलते ही उस क्षेत्र सहित आसपास के मीलों क्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों की आखें तथा छाती में असह्य जलन होने लगती है । आँखें तथा फेफड़ों में दर्दनाक फफोले पड़ जाते हैं तथा घण्टों तक उनके कारण होने वाले दर्द से तड़पते हुए लोग चल बसते हैं ।

सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इन गैसों का तब तक पता नहीं चलता है, जब तक शरीर पर उनकी प्रतिक्रिया न दिखाई पड़ने लगे । फलस्वरूप उनसे बचाव के लिए पूर्व कोई तैयारी नहीं की जा सकती ।

घातक रासायनिक पदार्थों की श्रृंखला में आर्गेनोफास्फोरस श्रेणी के 'वाइनरी काम्पाउण्ड्स' जैसे आविष्कार की एक और कड़ी जुड़ी है जिसे सामान्यतः 'नर्व गैस' कहते हैं । अब तक विनिर्मित समस्त विषैले रसायनों में यह सर्वाधिक कष्ट देने वाली गैस है । यह स्नायु संस्थान को सेकिण्ड से भी कम समय में संज्ञा शून्य कर देती है । आर्गेनो फास्फोरस श्रेणी में अनेकों प्रकार की जहरीली गैसें आविष्कृत हो चुकी हैं । यह गैसें नाक अथवा त्वचा के रोमकूपों द्वारा अवशोषित करली जाती हैं और सेकिन्ड के अल्पांश में 'नर्व सिस्टम' को लड़खड़ा देती हैं । स्नायु संस्थान जिस एन्जाइम के माध्यम से कार्य करता है उसे ये गैसें निष्क्रिय बना देती हैं । इस गैस की एन्जाइम से क्रिया होने पर 'एसीटिल कोलिन' नामक जैविक पदार्थ एकत्रित होने लगता है जिसके कारण फेफड़ों में श्लेष्मा भरने लगता है और साँस लेना कठिन हो जाता है । शरीर में ऐठन होती और कुछ ही सेकिण्ड बाद दम-तोड़ देता है ।

रूस ने इससे भी अधिक घातक सोमैन नामक रसायन तैयार किया है जो अधिक समय तक सक्रिय रहता और अपना प्रभाव व्यापक क्षेत्र तक दिखाता है । उसे वी०आर० ५५ नामक युद्ध सामग्री के नाम से जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है । अनुमान है कि सन् १९५३ से १९५७ के बीच अमेरिका ने १५००० हजार टन सारिन और १९६१ से १९६७ के बीच ५००० हजार टन वी० एक्स नामक विषैले रसायनों का निर्माण किया था । रूस ने इससे भी अधिक परिमाण में सोमैन नामक रसायन का उत्पादन उस अवधि में किया था। रासायनिक शस्त्रों के नवीन आंकड़े अनुपलब्ध हैं । अब तो उनकी मात्रा कई गुनी अधिक बढ़ चुकी होगी ।

स्टेट्समैन २७ नवम्बर १९७९ अंक में प्रकाशित एक विवरण के अनुसार अमेरिकी सेना ने ७८०००० डालर की एक ऐसी योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत और भी अधिक मारक रसायनों का निर्माण किया जायेगा। इसका नाम तो अभी अविज्ञात है किन्तु इसकी मारक क्षमता का एक दर्दनाक प्रयोग विगत दिनों अमेरिका द्वारा किया गया । होक्सवर्ग की जेल में बन्दी बनाये गये काले व्यक्तियों पर रासायनिक गैस की ० दशमलव १ औंस से भी कम मात्रा छोड़ी गई । उनमें से ९० प्रतिशत तो तत्काल शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अपंग हो गये। परीक्षणकर्त्ताओं ने घोषित किया कि यह अभिशाप जीवन पर्यन्त के लिए उनके साथ जुड़ गया है ।

इस आविष्कार से यह सम्भावना बन चली है कि अगले दिनों विपक्षियों को मारना आवश्यक नहीं होगा । उन्हें शरीर और मस्तिष्क को सदा के लिये अक्षम बना देना पर्याप्त होगा । इस विभीषिका की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए एक विचारक का कहना है कि ''यदि इनका प्रयोग युद्धों में किया गया तो सभी सैनिकों के साथ अपंगता का श्राप सदा के लिये जुड़ जायेगा । रसायन से फैलने वाली विषाक्तता से जीव-जन्तुओं का अस्तित्व भी सुरक्षित नहीं रहेगा ।

जेनेटिक इन्जीनियरिंग के उत्साहवर्धक प्रयोगों की चर्चा इन दिनों सर्वत्र है । इसके घातक पक्ष ने मानवीय अस्तित्व को समाप्त करने की एक नई सम्भावना और भी जोड़ दी है । अमेरिका से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नेचर' में डॉ० जान कार्बन तथा बैरी टैक्सरिन नामक सूक्ष्म जैविकी लिखते हैं कि ''इस यांत्रिकी प्रक्रिया द्वारा मानव विनाश की सम्भावना भी प्रशस्त की जा सकती है । व्याधिग्रस्त जीवन से प्रत्यारोपित जीवाणुओं को किसी भी क्षेत्र अथवा राष्ट्र के विरुद्ध वातावरण में छोड़कर महामारी फैलाई जा सकती है। तब प्रभावित क्षेत्र के मनुष्य, जीव-जन्तु घुट-घुटकर मर जायेंगे और वह क्षेत्र इस योग्य नहीं रहेगा कि मनुष्य निवास कर सके । कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि अमेजन की घाटी में पाये जाने वाले विचित्र जीवाणु और विषाणु किसी अविज्ञात प्रयोग और परीक्षण के ही परिणाम हैं ।

मनुष्य के जीवन-व्यापार में सर्वाधिक सहायक मौसम में भी हेरफेर की बात सोची जा रही है ताकि अल्प समय में प्रकृति का यह शस्त्र अधिक व्यापक और विनाशक दृश्य प्रस्तुत कर सके । कभी कृत्रिम वर्षा से सूखाग्रस्त क्षेत्र में राहत पहुँचाने की बात सोची जा रही थी । पर यह प्रयास अब शिथिल हो गया । अब तो जलवायु पर नियन्त्रण करके शत्रु पक्ष को क्षति पहुँचाने की विधि खोजी जा रही है । बादलों में पानी की लघु आकार की असंख्य बूँदें होती हैं । उन पर यदि सिल्वर आयोडाइड अथवा शुष्क कार्बन डाइआक्साइड छिड़क दी जाय तो वे बर्फ कणों में बदल जाती हैं । इस विधि का प्रयोग करके किसी भी स्थान में भारी वर्षा एवं बाढ़ की स्थिति लाई जा सकती है । रसायनों के छिड़काव की प्रक्रिया वायुयान अथवा राकेट द्वारा सम्पन्न की जा सकती है । एक राष्ट्र दूसरे के विरुद्ध इस विधि द्वारा विप्लव उत्पन्न कर सकता है ।

वातावरण को असन्तुलित करने, विषाक्त बनाने के कृत्रिम प्रयोग कई राष्ट्रों द्वारा किये जा रहे हैं । विज्ञानवेत्ता जानते हैं कि पृथ्वी के वातावरण के 'आयनोस्फीयर' में ओजोन परत रक्षा कवच का काम करती है । सूर्य से तथा अन्तरिक्ष के अन्य ग्रहों से आने वाली अल्ट्रावायलेट तथा अन्य अनेकों ऐसी किरणें हैं जो पृथ्वी के वातावरण तथा सम्बद्ध जीव-जन्तुओं पर घातक प्रभाव डालती हैं । इनको रोकने में ओजोन परत की महत्वपूर्ण भूमिका है । ओजोन परत में ओजोन की मात्रा कम हो जाने पर अन्तरिक्ष से आने वाली घातक किरणें पृथ्वी के वातावरण में पहुँच जाती तथा अपना हानिकारक प्रभाव दिखाती हैं। विगत दो दशकों में हुए युद्धों में कई प्रगतिशील कहे जाने वाले देशों ने प्रतिपक्षी देशों पर इस प्रकार के प्रयोग भी किये हैं । पर्यवेक्षकों का कहना है कि वियतनाम का वायुमण्डल इतना विषाक्त हो चुका है कि वहाँ रहकर निरोग नहीं रहा जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता । विशेषज्ञों ने इसका कारण ओजोन की मात्रा का कम होना बताया है । एक गुप्त रिपोर्ट के अनुसार उक्त क्षेत्र में ओजोन परत को नष्ट करने के लिये प्रयोग किये गये हैं । नाइट्रोजन आक्साइड, हाइड्रोपराक्साइड जैसे यौगिकों के छिड़काव के प्रमाण भी उस स्थान पर पाये गये हैं । सन् १९७१ में प्रकाशित पेंटागन पेपर्स की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका ने वियतनाम के विरुद्ध इस प्रकार का प्रयोग किया था । दूसरा उल्लेख अमेरिकी सिनेट की १९ मई १९७४ की रिर्पोट के अनुसार अमेरिका ने हिन्दचीन के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर सिल्वर आयोडाइड के छिड़काव का प्रयोग किया था । जिसके फलस्वरूप भीषण वर्षा हुई और ओले पड़े ।

अपनी ही जाति को विनष्ट करने के लिये सन्नद्ध खड़ी मानवीय बुद्धि को इसके बाद भी क्या श्रेष्ठ और गौरवास्पद कहा जा सकता है ? निस्सन्देह वैज्ञानिक उपकरण जो मनुष्य की प्रगति में योगदान देने आये हैं मानवीय कौशल के परिणाम हैं । इसके लिये मनुष्य को बधाई दी जानी चाहिए किन्तु इसके साथ ही एक प्रश्न उठ खड़ा होता है कि मनुष्य ने अपने अस्तित्व के लिये जो संकट खड़ा कर लिया है उसे क्या कहा जाय ?

निश्चय ही इसे मानवीय दुर्बुद्धि कहना चाहिए इसी ने आज की सर्वनाशी विभीषिका उत्पन्न की है । उसका समाधान एक ही प्रकार सम्भव है कि अपनी खोदी खाई स्वयं ही पाटी जाय । संकीर्ण स्वार्थपरता के कुचक्र में फंसकर मनुष्य ने मरण और मारण के अनुष्ठान को अपनाने का उपक्रम किया है । उदारता और दूरदर्शिता का दृष्टिकोण अपनाकर ही उस रास्ते पर चला जा सकता है जिसमें छुटपुट मतभेदों को न्याय और सौजन्य का अवलम्बन लेकर निपटाया जा सके और युद्ध के स्थान पर सहयोग का आश्रय लेकर वर्तमान साधनों से ही सुख शान्ति का जीवन जिया जा सके । सम्मिलित प्रयासों का सिलसिला विज्ञान के क्षेत्र में विधेयात्मक रूप में ही अपनाया जा सके तो ऊर्जा भट्टी से लेकर अनेकानेक शान्तिपूर्वक प्रयासों में सुनियोजित हो सकता है ।

सभी बुद्धिजीवियों को मिल-बैठकर अब यह विचार करना ही होगा कि मानव जाति का अन्तिम लक्ष्य क्या है, विकास अथवा विनाश, एंकाकी रूप में महाद्वीप या राष्ट्रीय स्तर पर समृद्ध होने और शेष सारे संसार को नष्ट कर देने की कल्पना शेखचिल्ली के समान ही कही जाएगी । यह मानकर चलना ही होगा कि हम इस सुविधा पर अकेले नहीं 'सब एक साथ हैं मरेंगे तो सब एक साथ, जियेंगे तो भी एक ही साथ,' आवागमन की द्रुत सुविधाओं ने आज विश्व को 'जेट एज' में पहुँचा दिया है । यहाँ की व्याधि कुछ ही पलों में हजारों मील दूर समुद्र पार भी पहुँच सकती है । ऐसे में कैसे यह कल्पना की जाय कि हम उस विभीषिका से स्वयं को बचाए रखेंगे । इस चिन्तन को थोड़ा परिष्कृत किया जाय एवं आदिम मानव के स्तर पर नहीं विकसित मानव के स्तर पर विश्व सभ्यता के अभ्युदय की चर्चा ही नहीं, क्रियान्वयन भी हो, तभी महाप्रलय की आसन्न विभीषिका से मानवता को बचाया जा सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निराकरण और समाधान

मानवी दुर्बुद्धि से ही उपजी हैं आज की समस्यायें

कर्म करने में मनुष्य स्वतन्त्र है, किन्तु फल प्राप्त करने में वह सृष्टि के नियमों के बन्धनों से बँधा हुआ है । अन्य जीवधारी इस तथ्य को अपनी स्वाभाविक प्रेरणा से समझते हुए तद्नुरूप आचरण करते रहते है, पर मनुष्य है जो तुर्त-फुर्त परिणाम मिलने में विलम्ब होने के कारण प्रायः चूक करता रहता हैं । अदूरदर्शिता अपनाता है और यह भूल जाता है कि विवेकशीलता की उपेक्षा करने पर अगले ही दिनों किन दुष्परिणामों को भुगतने के लिए बाधित होना पड़ेगा । यह वह भूल है जिसके कारण मनुष्य अपेक्षाकृत अधिक गलतियाँ करता है, फलतः उलझनों,समस्याओं, विपत्तियों का सामना भी उसे ही अधिक करना पड़ता है। कोई समय था, जब मनुष्य अपनी गरिमा का अनुभव करता था एवं सृष्टा का युवराज होने के नाते, अपने चिन्तन और कर्तृत्व को ऐसा बनाये रहता था कि सुव्यवस्था बने और किसी को किसी प्रकार की प्रतिकूलताओं का सामना न करना पड़े ।

इस संसार में इतने साधन मौजूद है कि यदि उनका मिल-बाँटकर उपयोग किया जाय तो किसी को किसी प्रकार के संकटों का सामना न करना पड़े । प्राचीन काल में इसी प्रकार की सद्बुद्धि को अपनाया जाता रहा है। कोई कदम उठाने से पहले यह सोच लिया जाता था कि उसकी आज या कल-परसों क्या परिणति हो सकती है ? औचित्य को अपनाये भर रहने से वह सुयोग बना रह सकता है । जिसे पिछले दिनों सतयुग के नाम से जाना जाता था । सन्मार्ग का राजपथ छोड़कर उतावले लोग लम्बी छलांग लगाते और कँटीली झाड़ियों में भटकते हैं। स्वार्थ आपस में टकराते है और अनेकानेक समस्यायें पैदा होती है ।

दूरगामी परिणामों पर विचार न करके जिन्हें तात्कालिक लाभ ही सब कुछ लगता है वे चिड़ियों-मछलियों की तरह जाल में फँसते और चासनी पर आँखें बन्द करके टूट पड़ने वाली मक्खी की तरह पंख फँसाकर बेमौत मरते है । दुर्बुद्धि का यही कुचक्र जब असाधारण गति से तीव्र हो जाता है तब उलझनें भी ऐसी ही खड़ी होती है कि जन-जन को विपत्तियों के दल-दल से उबरने नही देती।

क्रिया की प्रतिक्रिया उत्पन होने में बहुधा विलम्ब लग जाता है, इसी कारण कितने ही लोगों में सन्देह उत्पन्न हो जाता है कि जो किया है उसकी तद्नुरूप परिणति होना आवश्यक नहीं । कई बार बुरे कार्य करने वाले भी उन पाप-दण्डों से बचे रहते है, कई बार अच्छे कर्म करने पर भी उनके सत्परिणाम दीख नहीं पड़ते। इससे सोचा जाता है कि सृष्टि में कोई नियमित कर्मफल व्यवस्था नहीं है, यहाँ ऐसा ही अन्धेर चलता है । ऐसी दशा में स्वेच्छाचार बरता जा सकता है, ऐसे लोग प्रतिक्रिया उत्पन्न होने में जो समय लगता है उसकी प्रतिक्षा नहीं करते और नास्तिक स्तर का अविश्वास अपनाकर जो भी सूझता है, उसे कर बैठते हैं। यह भुला दिया जाता कि बीज का वृक्ष बनना तो निश्चित है, पर उसमें देर लग जाती है । दूध को दही बनने में भी कुछ समय तो लग ही जाता है । असंयम बरतने वाले अपने अनाचार का दण्ड तो भुगतते हैं, पर उसमें भी समय लगता है। नशेबाज का स्वास्थ्य बिगड़ता और जीवनकाल घटता जाता है, पर वह सब कुछ तुरन्त ही दीख नहीं पड़ता।

यदि झूठ बोलते ही मुँह में छाले पड़ जाते, चोरी करते ही हाथ में लकवा मार जाता, व्यभिचारी नपुँसक हो जाते तो किसी को अनर्थ करने का साहस ही न होता, पर भगवान ने मनुष्य की समझदारी को जाँचने के लिए कदाचित इतना अवसर दिया है कि वह उचित-अनुचित का निर्णय कर सकने वाली अपनी विवेक बुद्धि को जागृत करें । उसका सही उपयोग करके औचित्य अपनाये और सही मार्ग पर चले। इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वालों को दण्ड तो मिलता है पर देर में वस्तुस्थिति के कारण ही पड़ता है, साथ ही अदूरदर्शिता अपनाने की आदत पड़ जाने से, पग-पग पर भूल करने और ठोकरें खाने की दुर्गति भी सहन करनी पड़ती है इसके विपरीत जो सोच समझ सकते है और परिणामों को ध्यान में रखते हुए अपनी वर्तमान गतिविधियों को सुनियोजित करते है वे जीवन सम्पदा का सदुपयोग करके स्वयं धन्य होते है और अपने अनुकरण का अवसर देकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनेकों का भला करते है । मनुष्य को ईश्वर ने जो अनकानेक विषेषतायें विभूतियाँ प्रदान की है उनमें से एक यह भी है कि वह क्रिया की प्रतिक्रिया का अनुमान लगा सके और अनिष्टों से बचते हुए सुख-शान्ति का जीवन जी सके ।

इन दिनों स्नेह-सद्भाव, सहकार-सदाचार की कमी पड़ने से मनुष्य का व्यवहार ऐसा विचित्र बन गया है जिसमें शोषण ही प्रधान दिखाई पड़ता है । सहयोग के आधार पर तो परस्पर हित साधन की प्रक्रिया चलती रह सकती है, किन्तु जहाँ व्यक्तिवाद की आपाधापी ही सब कुछ हो वहाँ यह समझ में नहीं आता कि संकीर्ण स्वार्थपरता अपना लेने पर दूसरों के अधिकारों को क्षति पहुँचती है या नहीं? यह स्थिति ऐसी है जिसमें दूसरों के कष्ट संकट और अहित की ओर ध्यान जाता ही नहीं, मात्र अपना ही लाभ सूझता है । अनाचार-अत्याचार, शोषण, अपहरण, उत्पीड़न के मूल में यही वृत्ति काम करती है। निःसंकोच जघन्य कृत्य करने वाले वे ही होते हैं जिन्हें दूसरों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं होती । अपने तनिक से लाभ के लिए वे दूसरों पर पहाड़ जितना संकट उड़ेल सकते हैं- इस अनर्थ मूलक प्रवृत्ति की, मानव धर्म के प्रतिपादकों ने भरपूर निन्दा की है और कहा है कि **'आत्मवत् सर्व भूतेषु'** वाली भाव संवेदना को सँजोये ही रहना चाहिए। जो व्यवहार हमें अपने लिए पसन्द नहीं, वह दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। सब में अपनी ही आत्मा को देखने का तात्पर्य है दूसरों के दुःख को अपना दुःख और दूसरों के सुख को अपना सुख माना जाय । मानवी स्तर की भाव संवेदनाओं का उद्गम इसी मान्यता के साथ जुड़ा हुआ है, इसे यदि हृदयंगम कर लिया जाय तो अनाचार बरत सकना सम्भव न होगा । सेवा-सहायता के लिए मन् चलेगा, दुःख बाँट लेने और सुख बाँट देने की उदारता बनी रहेगी ।

अपनत्व को सिकोड़ लेना क्षुद्रता है और उसे व्यापक बना कर चलना महानता । महामानव पुण्य-परमार्थ की बात सोचते योजना बनाते और गतिविधि अपनाते रहते हैं, यही आत्म-विकास है । विकसित व्यक्ति का अपनापन मनुष्य मात्र में, प्राणी मात्र में फैल जाता है । ऐसी दशा में जिस प्रकार अपने लिए सुख साधन जुटाने की इच्छा होती है, उसी प्रकार यह भी सूझता है कि दूसरों को सुखी रहते देखकर अपना भी मन हुलसे, दूसरों के दुःख में हिस्सा बँटाने के लिए, सेवा-सहायता हेतु दौड़ पड़ने की आतुरता उमगे । यदि इस मानवी मर्यादा का परिपालन होने लगे तो कोई किसी के साथ अनीति बरतने की कल्पना ही मन में न उठने दें ।

हर प्रकार के आचरण का मूल कारण है– अदूरदर्शिता, अविवेक । किस कृत्य का भविश्य में क्या परिणाम होगा? इसका दूरवर्ती अनुमान न लगा पाने पर तात्कालिक लाभ ही सब कुछ हो जाता है, भले ही उसके साथ अनीति ही क्यों न जुड़ी हो । जिस प्रकार दृष्टि-दोष होने पर मात्र नजदीक की वस्तु ही दीख पड़ती है और दूर पर रखी हुई वस्तुओं को पहचान सकना कठिन हो जाता है, उसी प्रकार अदूरदर्शी तुरन्त लाभ को सब कुछ मानते हुए उसे किसी भी कीमत पर पूरा करने के लिए जुट जाते हैं । इसके बाद इसकी परिणति क्या हो सकती है ? इसका अनुमान तक अदूरदर्शी लोग लगा नहीं पाते, आँखें रहते हुए भी यह अन्धे जैसी स्थिति है। जिनका स्वभाव ऐसा बन जाता है वे तत्काल भले ही कुछ लाभ उठा लें पर अपनी प्रामाणिकता खो बैठते हैं। हर किसी की दृष्टि में अविश्वस्त बन जाते है, कोई उनका सच्चा मित्र नहीं रहता, उन्हें परामर्श देने या लेने योग्य भी नहीं समझा जाता शंका दृष्टि बनी रहती है। सच्चे सहयोग के अभाव में, अविश्वस्त वातावरण में वे भीड़ के बीच रहते हुए भी अपने को एकाकी अनुभव करते है । एकाकीपन कितना नीरस, कितना निस्तब्ध और डरावना होता है, इसे हर भुक्तभोगी भली प्रकार जानता है । अविवेक के कारण स्वभाव में अनेकानेक अवाँछनीयतायें सम्मिलित हो जाती हैं, दुर्व्यसनों की आदत पड़ जाती है। आलस्य-प्रमाद, छल-प्रपंच, अतिवाद-अहंकार, लिप्सा-तृष्णा जैसे अनेकों औचित्य बिना बुलाये ही साथ हो जाते है । प्रामाणिकता चली जाने पर न तो प्रखरता शेष रहती है और न प्रतिभा ही व्यक्तित्व के साथ जुड़ी रह जाती है । चोर-चालाकों का मानस सदा भयभीत बना रहता है, अनिष्ट की आशंकायें बनी रहती हैं और संदेह करते, संदेहास्पद स्थिति में बने रहते ही समय गुजरता है इसके प्रतिफल प्रतिशोध के, घृणा-तिरस्कार के रूप में वापिस लौटते हैं संसार के दर्पण में अपनी ही कुरूप छाया दीख पड़ती है।

कुछ देर के लिए किसी को मूर्ख बनाया जा सकता है, पर सबको सदा के लिए गफलत में रखा जा सके यह समभव नहीं । अपने द्वारा किये गये दुर्व्यवहार किन्हीं अन्यों के द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने ऊपर प्रतिक्रिया बनकर टूटते है, जिसने औरों को ठगा वह किन्हीं अन्यों के द्वारा ठगा जाय, ऐसे घटनाक्रम आये दिन घटित होते देखे जाते है। असंयम बरतने वाले तत्काल न सही कल-परसों उसकी दुःखदाई प्रतिक्रिया से दण्डित हुए बिना नहीं रहते ।

मनुष्य-मनुष्य के बीच दीख पड़ने वाले दुर्व्यवहारों की परिणति इन दिनों हर क्षेत्र में समायी देखी जाती है। जब विश्वास ही नही जमता तो सहयोग किस बलबूते पर पनपे? टूटे हुए मनोबल का व्यक्ति किस प्रकार कोई उच्चस्तरीय साहस कर सकेगा ? उसके ऊँचे उठने है आगे बढ़ने का सुयोग कैसे बनेगा ?

मनुष्य-मनुष्य के बीच छाया हुआ छद्म, अविश्वास, असहयोग, अनाचार, चित्र-विचित्र प्रकार के उद्वेग, असन्तोष और दुर्व्यवहार उत्पन्न करते देखा जाता है । फलतः धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित सभी को अपने-अपने ढंग की कठिनाइयाँ त्रास देती दीख पड़ती है । अधिकांश लोगों को श्मशान के भूत-पलीतों की तरह जलते-जलाते, डरते-डराते, उद्विग्न और असंतुष्ट स्थिति में देखा जाता है । यदि सुविधा-साधनों का बाहुल्य रहा तो भी उससे क्या कुछ बनता है ? बाहर वालों को सुखी-सम्पन्न दीखना और बात है । कितने ही साधनों से सम्पन्न क्यों न हों, उनका अपनी दृष्टि में अपना मूल्य गई-गुजरी स्थिति में बना रहेगा असंख्य समस्यायें और चिन्तायें उन्हें घेरे रहेंगी ।

आज इसी स्थिति में जन साधारण को फँसा देखा जा सकता है । प्रगति के नाम पर सुविधा-साधनों की अभिवृद्धि होते हुए भी चिंतन, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता भर जाने के कारण जो कुछ चल रहा है वह ऐसा है जिसे निर्धनों, अशिक्षितों और पिछड़े स्तर के समझे जाने वालों की तुलना में भी अधिक हेय समझा जा सकता है । इसे प्रगति कहा जाता भले ही हो, पर वस्तुतः है अवगति ही ।

सृजन के साथ जुड़ी हुई ध्वंस की अनिवार्यता

कृषि कर्म का उद्देश्य फसल उगाना है । मनुष्यों के लिए अन्न, पशुओं के लिए चारा, पक्षियों के लिए दाना उसी से मिलता है । कृमि-कीटक भी उसी उत्पादन के सहारे जीवन-यापन करते हैं । यह कृत्य पूर्णतया सृजनात्मक है, उसमें किसी को हानि पहुँचाने, कष्ट देने जैसी इच्छा का रंच मात्र भी समावेश नहीं है । फिर भी उसका प्रारम्भ जिस प्रकार होता है, उसमें प्रत्यक्षतः कुछ और ही दिखाई पड़ता है और लगता है कि यहाँ सब कुछ तोड़-फोड़, उखाड़-पछाड़ जैसा ध्वंस कर्म रचा ही जा रहा है ।

पहले जमीन जोती जाती है । जोतना अर्थात् समतल को ऊबड़-खाबड़ बनाना । इस प्रयत्न के फलस्वरूप जो दृश्य उपस्थित होता है, उसे तोड़-फोड़ के अतिरिक्त और क्या कहा जाए । इसके बाद भूमि में दबी हुई पुराने पौधों की जड़ें, कंकड़, पत्थर जैसी कितनी ही वस्तुएँ बीन-बीन कर बाहर फेंक दी जाती है । इसमें भी मोटी बुद्धि यही कहती है कि चिरकाल से जो जमा हुआ था उसे बहिष्कृत किया जा रहा है और संचित सम्पदा को घर से बाहर धकेला जा रहा है । इतना होते हुए भी किसी दूरदर्शी को यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होती कि इस उखाड़-पछाड़ के पीछे कोई दुर्भावना नहीं है । इस प्रयास का उद्देश्य मात्र सृजन है । जो है वही बना रहे की नीति अपनाने से किसान का तो परिश्रम ही बचता पर वह जानता है कि इसके बिना जमीन पोली न हो सकेगी और उसमें नमी संजोये रहने तथा जड़ों को गहराई तक जाने की क्षमता न बढ़ सकेगी । संक्षेप में इसे हित के लिए किया गया अहित कह सकते है । इसमें कर्त्ता को दोष देने की आवश्यकता नहीं समझी जाती ।

युग परितर्वन की इस प्रभात बेला में भी कुछ ऐसा ही हो रहा है । युग सन्धि के आरम्भ में कष्ट कठिनाइयों की घटाएँ घुमड़ती दिखायी देती है । प्रकृति प्रकोप आकाश में बिजली की तरह तड़पते चमकते और उठते देखे जा सकते हैं । मनुष्य की अपनी दुर्बुद्धि का परिपाक दुष्प्रवृत्तियों में हो रहा है और उसके फलस्वरूप हो रही है । वे त्रास देते है, तो उनसे बचने और भागने के प्रयत्नों में भी कोई कमी नहीं रहने दी जाती । इतने पर भी उनका उपद्रव और आतंक यथावत बना रहता है । न मच्छर मरते हैं, न मक्खी पतंगों से छुटकारा मिलता है । हर क्षेत्र में बढ़ते हुए विग्रहों और संकटों को इसी रूप में देखा जा सकता है ।

नव सृजन की इस पुण्य वेला में इस कष्ट की प्रक्रिया को उभरते देखकर एक बार तो निराशा होती है कि कठिनाइयों के समाधान में राहत कार्य होने चाहिए थे। भगवान को सुख-सुविधाओं की वर्षा करनी चाहिए थी और अनुग्रह के साथ-साथ सुख-सुविधाएँ बढ़ानी चाहिए थी । पर हो ठीक उलटा रहा है । यह युग सृजन कैसा, जिसमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विपत्तियाँ बढ़ती चली जाएँ । इस असमंजस का समाधान पाने के लिए सृष्टा की कुशल कृषक जैसी सूझ-बूझ का अनुमान लगाना होगा और उसकी हल जोतने जैसी तोड़-फोड़ की पीछे उत्तम फसल उगाने की आकांक्षा एव चेष्टा को तनिक गहराई में जाने और दूर की सोचने के आधार पर समझना चाहिए ।

भवन बनाने का स्पष्ट उद्देश्य निवास के लिए सुखद आच्छादन उपलब्ध करना है । इमारतें जमीन से ऊँची उठती है फिर भी उनका शुभारम्भ कुछ ऐसा अटपटा होता हें कि प्रत्यक्षदर्शी को उल्टी क्रिया एवं नासमझी अपनाई गई प्रतीत होती है । नींव के खोदने से गहरा गड्ढा बढ़ता जाता है, जो मिट्टी जमी हुई थी उसे भी उखाड़ा और फेंका जाता है । जबकि आवश्यकता ठीक उल्टी थी । बाहर से ईट गारा लाकर जिस जमीन पर जमाने से ही भवन निर्माण की बात बनती पर यहाँ तो समतल भूमि को भी खोदने का उपक्रम चल रहा है। इसमें तो घाटा ही घाटा है । खोदने और फेंकने का श्रम तो बेकार जाना ही है, इस गड्ढे को पाटने के लिए, पहले जैसी समतल स्थिति तक पहुँचाने के लिए उस गड्ढे में व्यय साध्य सामान लगाना और जमाना पड़ेगा । यह दुहरी मूर्खता हुई । इससे तो यही अच्छा रहता कि नींव खोदने और उस पर नया जमाने जैसा व्यर्थ का झंझट मोल न लिया जाता और जैसी कुछ जमीन थी नींव उसी पर दीवार चुनना आरम्भ कर दिया जाय । सामान्य बुद्धि इतना ही सोच सकती हैं और नींव खोदने में निरत लोगों की बुद्धि पर तरस खा सकती है । जिसने यह योजना बनाई, सलाह दी और व्यवस्था कराई उसे भी सिर फिरा कहने में कोई झिझक नहीं हो सकती ।

इतने पर भी विज्ञजनों को वस्तु-स्थिति समझने में कोई कठिनाई नहीं होती । वे जानते है कि सुदृढ़ भवन को बनाने के लिए नींव मजबूत होनी चाहिए अन्यथा इमारत का बजन बढ़ते ही जमीन में धसने लगती । दीवारें फटने और गिरने लगेंगी । फलतः इस निमार्ण में जो श्रम और धन लगा था, वह निरर्थक चला जायेगा। अपयश और पश्चाताप सहना पड़ेगा सो अलग । जमीन के नीचे नींव में जितना सामान दबाया जाता है और श्रम किया जाता है उतने में एक कमरा बन सकता था, यह तथ्य सच है । किन्तु यह भी मिथ्या नहीं है कि अपव्यय जैसा दिखने वाला नींव भरने का काम नितान्त आवश्यक है । इस जोखिम को उठाये बिना चिर-स्थायी और भारी इमारत नहीं बन सकती है । एक वर्ष में सड़ गलकर नष्ट हो जाने वाली फूँस की झोपड़ी बनानी हो तो बात दूसरी है ।

भगवान एक नया भवन बना रहे हैं और युग सन्धि की इस वेला में नींव खोदने और उसमें मजबूत मसाला भरने का उपक्रम कर रहे हैं । भगवान इन दिनों बहुमूल्य फसल उगने के लिए सुविस्तृत योजना बना रहे हैं । उन्हें भूमि को जोतने का परिश्रम करना पड़ रहा है । समतल को ऊबड़-खाबड़ बनाना और संचित सम्पदा को बाहर फेंकने का उन्माद उन पर भी छाया है, पर किया क्या जाए ? कंकड़ पत्थरों और ठूठ डूँढ़ों के रहते नये पौधों को जड़ जमाने का अवसर कैसे मिले ? अतएव अप्रिय और अनावश्यक लगने वाली प्रक्रिया भी उन्हें अपनानी पड़ रही है । यों हर कोई सृजन में प्रसन्नता और ध्वंस में खिन्नता अनुभव करता है । भगवान् को भी प्रथमतः ऐसा ही लगता होगा पर कई बार प्रिय के लिए अप्रिय को अपनाना भी तो आवश्यक हो जाता है।

कष्ट से कराहता हुआ रोगी अस्पताल पहुँचता है, उसे अपेक्षा रहती है कि वहाँ पहुँचते-पहुँचते दयालु डाक्टर उसका कष्ट तत्काल दूर कर देंगे । पर भर्ती होने के उपरान्त कुछ दूसरा ही दृश्य उपस्थित होता है । ऑपरेशन की तैयारी होती है । फाड़चीर के सरंजाम किये जाते हैं । रोगी के शरीर में से चमड़ी और माँस काटे जाते हैं, रक्त बहता है और डॉक्टरों की क्रिया ऐसी दीखती है जैसी निर्दय हत्यारे अपनाया करते हैं । प्रत्यक्षदर्शी को तात्कालिक घटनाक्रम का अनुमान लगाने पर इतना ही प्रतीत होता है कि अस्पताल और डॉक्टर के सम्बन्ध में यह सोचना गलत है कि यहाँ राहत मिलती ओर दयालुता बरती जाती है । बेचारे कष्ट पीड़ित को राहत पहुँचना तो दूर यहाँ तो ठीक उल्टा व्यवहार किया गया। इस दृष्टि से देखने और इस बुद्धि से सोचने वालों को चिकित्सकों की, अस्पताल बनाने वालों की सदाशयता पर संदेह ही हो सकता है ।

यह संदेह उन्हें नहीं हो सकता है जो गहराई में उतर कर कारण ढूँढ़ते और इस अप्रिय उपचार के पीछे छिपी हुई दूरदर्शिता एवं सद्भावना को समझने का प्रयत्न करते हैं । वे जानते हैं कि फोड़े के भीतर जो मवाद भरा था, वही दर्द का प्रमुख कारण था । यदि उसे बाहर न निकाला जाता तो वह अपने क्षेत्र की अन्य माँसपेशियों को विषाक्त बनाकर गलाने लगता । यों फोड़े पर सुन्न करने की दवा चुपड़ कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तत्काल कुछ राहत भी दी जा सकती थी पर इससे समस्या का समाधान कहाँ होता । रोगी को चुप कर देना ही तो उपचार नहीं है । इस प्रकार चुपाने पर भी मवाद की अवयवों को सड़ाने वाली प्रक्रिया तो जारी ही रहती । फलस्वरूप खतरा बढ़ता ही जाता और प्राण संकट जैसी नौवत आ पहुँचती । इन परिस्थितियों में कुशल चिकित्सक का निर्णय आपरेशन की विवशता को अपनाने का ही हो सकता है । इसमें न निर्दयता है, न दुर्भावना अपने बच्चे की स्थिति भी यदि ऐसी होती तो भी डॉक्टर का निर्णय ऑपरेशन के पक्ष में ही होता । अप्रिय प्रसंगों में भी कई बार दूरवर्ती सुखद संभावनायें और स्नेह सिक्त सद्भावनाएँ छिपी रहती है ।

नव-निर्माण की इन आरम्भिक घड़ियों में भी विनाश लीलाओं का बाहुल्य देखा जाता है । समस्याएँ और विपत्तियाँ पहले से ही बहुत थीं । उनके हल निकलते और सरलता के साधन बनते तो बात भी थी, पर यहाँ तो कोढ़ में खाज की तरह उल्टी विपत्तियाँ बढ़ रही है। यह कैसा नव-निर्माण ? यह कैसा प्रभु अवतरण ? इस असमंजस का समाधान प्राप्त करने के लिए दर्द पीड़ित रोगी के लिए डॉक्टर द्वारा की गई ऑपरेशन व्यवस्था के साथ संगति बिठाते हुए सोचना पड़ेगा कि यह क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है ?

लम्बे अन्धकार युग में कचरा बहुत जमा हो गया है । हर क्षेत्र में गन्दगी चरम सीमा पर पहुँच गई है। उसे यथावत् बनी रहने दिया जाय और सुविधा सवर्धन का प्रयत्न चल पड़े तो इससे अभीष्ट परिणाम निकलेगा नहीं । संचित गन्दगी चुप नहीं बैठेगी और अपनी विषाक्तता से दूषण का विस्तार करती रहेगी । यह विनाश-क्रम इतना बढ़ा-चढ़ा होगा कि सृजन के लिए किये गये प्रयत्न व्यर्थ ही चले जायेंगे ।

रात्रि में कितनी विकृतियाँ उत्पन्न होती है यह सभी जानते है, फलतः उठते ही प्रथम कार्य गन्दगी को साफ करना होता है । उठते ही मल-मूत्र त्यागने के लिए दौड़ना पड़ता है । दाँत मांजने पड़ते हैं । स्नान किया जाता है, कपड़े धोते हैं, कमरे में झाड़ू लगती है । नालियों की सफाई होती है, प्रभात काल की प्रथम प्रक्रिया यही है । इसके बाद सुखद व्यवस्थाएँ बनती है । रसोई घर गरम किया जाता है और जल-पान से लेकर मध्याह्न आहार तक का बनना प्रारम्भ हो जाता है किन्तु इससे पहले चौका, चूल्हा, बर्तन आदि के धोने मांजने की व्यवस्था बनाई जाती है अन्यथा संचित गन्दगी के रहते बनाये हुए भोजन के विषाक्त होने का डर बना रहेगा। बिना मल-मूत्र त्यागे, बिना कुल्ला दातौन किये जो खाना खाने लगते है मुँवे भूल जाते है कि मुँह की गन्दगी पेट में पहुँच कर हानि पहुँचा सकती है ।

मोटी बुद्धि यही सोच सकती थी कि प्रभात होते ही भोजन, शृंगार, उपार्जन जैसे साधन तत्काल जुटने चाहिए थे । पर जब देखा जाता है कि सब लोग प्रथम काम गन्दगी हटाने का ही समझ रहे है और घर की चीजें बाहर पटक रहे है तो लगता है इन लोगों पर कहीं विक्षिप्तता तो नहीं चढ़ दौड़ी ? पेट का आहार मलरूप में विसर्जित करना, घर का कूड़ा घूरे पर फेंकना, बासी बुरा भोजन कुत्तों को डालना, घड़ों में भरा पानी नाली साफ करने में बहाना यह समस्त गतिविधियां ऐसी ही लगती है कि उठते ही फेंकने हटाने की प्रक्रिया आरम्भ हुई । जैसा सोचा गया था कि प्रभात के साथ सुखद दृश्य और उपहार उमड़ते चले आवेंगे पर यहाँ तो ठीक उल्टा हो रहा है । यहाँ तो घर के सब लोग गन्दगी में उलझने सुलझने को ही प्रथम कार्य मान बैठे है ।

युग परिवर्तन की सन्धि वेला का प्रभात काल होते ही गन्दगी समेटने की सर्वत्र चलने वाली प्रक्रिया के साथ ताल-मेल बिठाकर सोचा जाना चाहिए । सड़कों पर मेहतर झाड़ू लगाते, नालियाँ साफ करते और कचरा ढोते पाये जाते है । पहली धूम शौचालय और स्नानघरों में होती है शृंगार-सज्जा की बात इसके बाद बनती है ।

सहस्राब्दियों से चली आ रही तमिस्रा का अब अन्त हो रहा है । ऊषा की लालिमा स्पष्ट है । ऐसे समय में आसमान से फूल बरसने और इत्र छिड़कने की आशा करना अनचित नहीं है । पर जब दृश्य उल्टा दिखता है तो आश्चर्य होता है । सब जगह गन्दगी ही गन्दगी की धूम । उसे ही हटाना सबका पहल काम बन जाता है तो यह अनुमान लगाने में भी कठिनाई नहीं होनी चाहिये कि सृष्टा को सर्वप्रथम संचित कचरे को साफ करना उपयुक्त लगता होगा । इसमें उसकी प्रकृति में दुर्गन्ध उड़ाना नहीं वरन् स्वच्छता का सरुचिकर वातावरण बनाना ही उद्देश्य माना जा सकता है । प्रिय की स्थापना में अप्रिय का उन्मूलन होता है । यही युगसन्धि के प्रथम करण की बढ़ती हुई विभीषिकाओं के सम्बन्ध में भी समझा जा सकता है ।

माली का उद्देश्य उद्यान लगाना होता है, फल-फूलों से लदी सुरम्य वाटिका को विकसित करना ही उसका उद्देश्य है । इसी भावना से वह अपने प्रयास में निरत रहता है ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हरे-भरे गुल्म पादपों को सुन्दर सुसज्जित बनाना ही उसी आशा अपेक्षा और कल्पना का केन्द विन्दु रहता है । इसी में उसकी गरिमा है और सफलता भी। यह सब होते हुए भी उसकी दैनिक गतिविधियों को प्रत्यक्ष-वादी दृष्टि से देखने और निष्कर्ष निकालने पर क्रिया बिल्कुल उल्टी लगती है । उसी बगीचे की भूमि पर उगे हुए अगणित छोटे-मोटे पौधों को वह खरपतवार कहकर निरन्तर उखाड़ता रहता है । दयालु माली का यह निर्दय कृत्य क्यों ? विकास का लक्ष्य रखने वाले द्वारा अपनाई गई यह विनाश लीला-क्यों ? जब उगाना ही अभीष्ट है तो उखाड़ने का क्या काम ?

सरकार के द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवाहन, उत्पादन, सिचाई आदि के अनेकों उपयोगी कार्य हाथ में लिए जाते हैं पर साथ ही पुलिस जेल, फाँसी जैसे ध्वंस प्रयोजनों के लिये उसकी व्यवस्था ढीली नहीं रहती । इस दिशा में उपेक्षा वरती जाए तो दुष्टता के द्वारा इतना विनाश होने लगेगा जितना कि प्रगति के लिये प्रयत्नों से विकास की उपलब्धि भी प्रस्तुत न करे सकेगी ।

ऋषियों की जीवनचर्या सदुदेश्यों के लिये समर्पण भावना पर निर्धारित रहती थी, पर उन्हें भी सुनसान आरण्यकों में धूनी में अग्नि प्रज्वलित रखनी और फरसे पर धार रखनी पड़ती थी । हिंसक पशुओं के आक्रमण एवं सर्दी से निपटने, झाड़ियों के अवरोध को निरस्त करने के लिये आग का भी उपयोग होता था और शस्त्रों का भी । आस्तिकता और औचित्य की रक्षा के लिये ऋषियों तक को ध्वंस साधनों को प्रयुक्त करना अनिवार्य हो जाता है तो कोई कारण नहीं कि सृष्टा को अपने उद्यान में जो अनपेक्षित है, उसे हटाने के लिये उन उपायों को न अपनाना पड़े जो मोटी दृष्टि से ध्वंस एवं विनाश जैसे प्रतीत होते हैं । संसार शुभ-अशुभ के ताने-बाने से बुना है । इसका निर्माण देव और दानव के सम्मिश्रण से हुआ है । ऐसी दशा में एक को हटाने और दूसरे को बढ़ाने का उपक्रम भी अनिवार्य चलता ही रहेगा । सूर्य जहाँ इस जगत का प्राणाधार है, वहाँ अपनी ऊर्जा से सड़न और सीलन में पलने वाले कृमि कीटकों का ध्वंस विनाश भी हर दिन करता है । यदि उसकी यह ध्वंस लीला न चले तो विषाणुओं और कृमि कीटकों की चरम अभिवृद्धि से कुछ ही समय में प्राणियों एवं वनस्पतियों की सत्ता ही इस धरती पर से समाप्त हो जाए । सूर्य जहाँ जीवन देता है वहाँ उसकी विनाश-लीला भी कम नहीं वरन् अपेक्षाकृत भारी ही पड़ती है । आलोक और ऊर्जा का वितरणकर्त्ता अन्धकार और अवसाद का हरण दमन करने से भी तो नहीं चूकता ।

सूजन का अभिवर्धन तो निश्चित है पर साथ ही यह तथ्य भी समन्वित है कि यह देवत्व की श्रेष्ठता का ही उन्नयन अभिवर्धन है । जो अवांछनीय है उसका मिटना और मिटाया जाना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि श्रेष्ठता का बढ़ाना । भगवान के अवतारों का उद्देश्य सदा से स्पष्ट रहा है । वे अधर्म का नाश और धर्म का संस्थापन करने की दुहरी भूमिका सम्पन्न करते हैं। लंका की असुरता का विनाश और अयोध्या की सतयुगी संस्कृति का अभिवर्धन,यह दोनों ही पक्ष रामावतार में समान रूप से सम्पन्न हुये थे । कृष्णावतार में वही हुआ। महाभारत में धरती का बढ़ा हुआ भार उतरा । साथ ही वृज की रक्षा, गो सम्वर्धन, धर्म राज्य की स्थापना एवं सुदामापुरी का कायाकल्प जैसे सृजन प्रयोजन भी सम्पन्न हुये । बुद्ध के धर्म चक्र प्रवर्तन ने जहाँ तांत्रिक अनाचार का उन्मूलन किया वहाँ स्नेह सौजन्य की संस्कृति को विश्वव्यापी भी बनाया । गांधी ने जहाँ अंग्रेजों के आधिपत्य एवं शोषण को निरस्त किया वहाँ स्वतन्त्र भारत को सुखद सम्भावनाओं का अधिकारी भी बनाया । अवतारों की गतिविधियाँ उभयपक्षीय रही हैं उनकी आधी शक्ति अवांछनीयता से जूझने, उसे निरस्त करने में लगी है और शेष आधी से धर्म संस्थापन का प्रयोजन पूरा किया गया है ।

द्रोणाचार्य के हाथों में वेद और कंधे पर धनुष था। देवता जहाँ असुरों से लड़ते है वहाँ भक्त सज्जनों पर अनुग्रह बरसाने में भी निरत रहते हैं । सरकार पुरस्कार भी देती है और दण्ड व्यवस्था भी करती है । इस विश्व-व्यवस्था पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने से यह स्वाभाविक और आवश्यक लगता है कि श्रेष्ठता के सम्बर्धन का दूसरा पूरक पक्ष निकृष्टता का उन्मूलन भी चलता रहे । इन दिनों यही हो रहा है, युग सन्धि में विनाश की विभीषिकाएँ काली घटाओं की तरह आकाश में घुमड़ रही हैं । साथ ही उज्ज्वल भविष्य की सुखद सम्भावनाओं का सुनिश्चित आश्वासन भी मिल रहा है ।

आसन्न विभीषिकाओं से डरें नहीं, समाधान सोचें

मरण का दृश्य और प्रसंग बड़ा कटु, कर्कश लगता है, विछोह से रोते कलपते कुटुम्बी राह चलतों को दुखी करते है । एक चलती फिरती काया निर्जीव होती है और उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वीभत्स अन्त्येष्टि होती है । प्रियजन उसकी काया को जलाने, गाढ़ने, बहाने का ऐसा कृत्य करते है, जिसे छाती पर पत्थर बाँधकर ही किया जा सकता है । मृतक के चले जाने पर घर में उदासी और व्यथा छाई रहती है । स्मृति आँखों के सामने घूमती रहती हैं । दिवंगत व्यक्ति कुछ करता, उसके न होने से या तो काम रुकता है या दूसरों को उसे करना पड़ता है । इस समस्त घटना क्रम पर दृष्टिपात करने से लगता है, मरण का विधान दैवी अभिशाप है । ईश्वर को उसे नहीं रचना चाहिए था । अपने हाथों बनाये खिलौनों को बच्चा भी नहीं तोड़ेगा फिर भगवान् को यह कैसे रुचा कि मृत्यु की भयानक प्रक्रिया द्वारा अपनी सुन्दर संरचना को कुरूप और कष्टमय बनाकर रख दिया ?

यह चर्चा युग सन्धि के अवसर पर घटित होने वाले कटु घटनाक्रमों को ध्यान में रखते हुए की जा रही है, और विचारा जा रहा है क्या प्रस्तुत समस्याओं का समाधान बिना विनाशकारी उथल-पुथल किये सम्भव नहीं हो सकता था ? क्या भगवान अपनी शक्ति से अशुभ को शुभ बिना किसी अप्रिय घटना चक्र को अपनाये नहीं कर सकते थे ? क्या जादुई परिवर्तन सम्भव नहीं हो सकता था ?

इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए हमें विश्व विधान के साथ जुड़ी हुई व्यापक परिवर्तन प्रक्रिया को तनिक गहराई से समझना और अधिक दूरदर्शी दृष्टि से देखना होगा । प्रकृति चक्र में जन्म, अभिवर्धन, जीर्णता और मरण का एक नियत निर्धारित क्रम है । यह न होता तो उसका विकल्प स्थिरता रहती । सब पदार्थ और प्राणी सर्वदा एक ही स्थिति में रहते । मरण रुकता तो जन्म भी रूकता । अन्यथा जन्म जारी रहते और मरण का प्रबन्ध न होने पर धरती का विस्तार एक ही शताब्दी में मात्र मनुष्य प्राणी तक के लिए अपर्याप्त हो जाता । स्थिरता में सुविधा तो रह सकती है पर नवीन का सौन्दर्य और परिवर्तन का उत्साह एक प्रकार से समाप्त ही हो जाता । सर्वत्र नीरसता छाई रहती और निर्जीव पिण्डों की तरह प्राणी अपना समयक्षेप करते रहते । विनोदप्रिय हलचलों में रस लेने वाले परमेश्वर को कदाचित यह स्थिति अभीष्ट न रही होगी और उत्पादन, अभिवर्धन, अवसाद और समापन का गति चक्र निर्धारित किया होगा। जब यह चल ही पड़ा तो जन्म की तरह मरण भी नितान्त आवश्यक हो गया ।

काया भी एक मशीन है जो समयानुसार घिसती और अन्ततः निरर्थक बनती चलती जाती है । उपयोगिता समाप्त होने पर वस्तुओं को उसी स्थिति में बना नहीं रहने दिया जाता वरन् उन्हें गलाने, ढालने आदि का प्रबन्ध करना होता है । मानवी काया के सम्बन्ध में भी यही बात है । सारे पुर्जे घिस जाने के बाद न शरीर ठीक प्रकार अपना काम कर पाता है न उसमें रहने वाला प्राणी सुखी रहता है । इस कुरूपता और अवांछनीयता को हटाने, बदलने का एक ही उपाय है कि उसे नया जन्म दिया जाये ।

वृद्ध कुरूप और दुःखी होता है, बच्चा सुन्दर और सुखी । भगवान वृद्ध के प्रति निष्ठुर या रुष्ट हुये लगते भी हैं । पर वस्तुतः इसमें उनकी सद्भावना और दूरदर्शिता ही काम कर रही है । वे निरर्थकता को उपयोगिता में, कुरूपता को सुन्दरता में बदलने का अपना कौशल भर प्रकट करना चाहते हैं । उनकी प्रकृति सृजन है । उसे अनवरत जारी रखने के लिए कचरे को खाद बनने और उसके सहारे नये पौधे उत्पन्न करने की रचनात्मक विधि व्यवस्था ही कार्य करती है । युग परिवर्तन के अवसर पर होने वाली उथल-पुथल में तात्कालिक कर्कशता तो है पर उसे किसी दुष्ट दुर्बुद्धि से नहीं किया गया है । उसके पीछे भविष्य की सुखद सम्भावना का उपक्रम ही काम कर रहा होता है ।

प्रस्तुत परिस्थिति में उपयोगिता वेतरह घट गयी और अवांछनीयता का अप्रत्याशित विस्तार हुआ है । इन दिनों व्यक्ति और समाज का जो स्वरूप है, उसे जराजीर्ण काया वाले ऐसे वयोवृद्ध की तरह समझा जा सकता है जो न स्वयं सुखी रह रहा है और न दूसरों को सुखी रहने दे रहा है । भविष्य में सुधरने की भी कोई आशा नहीं है। घिसे पुर्जे और टूटे वर्तन आये दिन मरम्मत माँगते है फिर भी ठीक से काम करते नहीं । ऐसी दशा में बुद्धिमान उन्हें नये सिरे से गलाने और ढालने की बात सोचते हैं । जीते कराहते भारभूत वयोवृद्ध को यदि उछलते, हँसते, सुन्दर और आकर्षक बालक में बदलने के लिए कोई व्यवस्था बनती है तो उसके नियोजनकर्ता को सद्भाव सम्पन्न ही कहा जायेगा । गलाने ढालने वाले का क्रियाकलाप देखने में उन्मादियों जैसा लगता है उसमें ध्वसं और विनाश के दृश्य दीख पड़ते हैं, इतने पर भी बुद्धिमत्ता को यह स्वीकार करने में कठिनाई नहीं होती कि यह सारा प्रयत्न अभिनव और सुखद सृजन के निमित्त ही किया जा रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों घटित होने वाले प्रकृति प्रकोपों और मानवी विग्रहों को देखते हुए लगना तो अप्रिय और कष्टकर ही चाहिए । इतने पर भी निराश एवं अधीर होने की आवश्यकता नहीं है । झाड़ियां काटकर उद्यान लगाने और टीलों को विस्मार करके खेत बनाने के समय भी लगता तो अटपटा है पर उस के नियोजनकर्त्ता विश्वास पूर्वक यही कहते है कि यह सब कुछ सुखद संभावनाओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है । भले ही तत्काल उसे तोड़-फोड़ की संज्ञा दी जाए और कर्त्ता को विध्वसंक ठहराया जाय ।

दूरदर्शिता, क्रिया और सम्भावना का सहज अनुमान लगा लेती है कि अगले दिनों जिसका परिणाम कष्टकर होना है उस मार्ग पर कदम न बढ़ाने या लौटाने का काम समझदारी अपने आप करती रहती है । फलतः उसे भर्त्सना एवं प्रताड़ना सहने की आवश्यकता नहीं पड़ती है । यह सज्जनोचित गतिविधियाँ हुई जो सुखद भी रहती है और सराही भी जाती है । इसके विपरीत एक दूसरा वर्ग है अदूरदर्शी समुदाय का । इसे नर पशु कहा जाता है । पशुओं में तात्कालिक लाभ भर की समझ होती है वे परिणामों का अनुमान नहीं लगा पाते । नम्रता बरतने और समझाने से भी उन पर कोई असर नहीं पड़ता । वे प्रताड़ना की भाषा समझते है । फलतः ग्वाले को अपने झुण्ड से जो कहना होता है, वह लाठी के इशारे से ही कहता है । घुड़सवार को एड़, लगाम और चाबुक के सहारे ही अपना मन्तव्य घोड़े को समझाना पड़ता है । अनुरोध की भाषा वह समझ सका होता और दूरगामी हित अनहित का, औचित्य-अनौचित्य का अनुमान लगा सका होता तो शायद घुड़सवार को उन उपकरणों का उपयोग न करना पड़ता जो देखने और बरतने में अशोभनीय लगते है ।

मानवी, काया में भी पशु प्रवृत्तियों का अस्तित्व ही नहीं बाहुल्य भी रहता है । इस पर न परामर्श का प्रभाव पड़ता है और न अनुरोध आग्रह का; रास्ते पर लाने के लिए प्रताड़ना ही एक मात्र नीति रह जाती है। इसके बिना न पालतू पशुओं से काम लिया यजा सकता है और न वन्य पशुओं की विनाश लीला से बचाव सम्भव हो सकता है अंकुशों और अस्त्रों की आवश्यकता इसी वर्ग को मर्यादा में रखने के लिए पड़ी होगी । प्रताड़ना और दण्ड व्यवस्था का सारा उपक्रम बड़ा कटु कर्कश लगता है पर किया क्या जाए ? दुर्बुद्धि और दुष्टता से कैसे निपटा जाए ? दयार्द न्यायाधीशों तक को फाँसी की सजा सुनाने और प्रशासकों को जल्लाद बुलाने का प्रबन्ध करना पड़ता है । इसमें जहाँ आत्यन्तिक अनुपयोगी की स्थिति बदल देने का भाव है वहाँ एक दूसरा प्रयोजन यह भी है कि दूसरों को शिक्षा मिले । जो लोग दुष्कृति के परिणामों का अनुमान लगा सकने में असमर्थ हैं उन्हें दण्ड विधान को क्रियान्वित होते देखकर भयभीत होने और उस मार्ग पर न चलने की बात समझने का अवसर मिलता है ।

मनुष्य और पशु की काय संरचना आ अन्तर स्पष्ट है । इतने पर भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि मनुष्य प्राणियों में से अधिकांश का अंतरंग पशु प्रवृत्तियों के ढाँचे में ढला होता है । तात्कालिक लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थ ही उन्हें रुचता है । लिप्सा की पूर्ति में वे आचरण करते हैं । यह स्वेच्छाचार चलने दिया जाए तो अराजकता फैलेगी और लाठी का आतंक राज्य व्यवस्था और संस्कृति का सर्वनाश करके रख देगा । अतएव पशु प्रवृत्तियों का नियमन आवश्यक है धर्म की प्रकृति सद्भाव संवर्धन की है और शासन की नीति में नियन्त्रण प्रधान है । पुलिस, कचहरी, जेल एवं अस्त्र-शस्त्रों पर जो असाधारण व्यय करना पड़ता है, अनेकों की जो प्रताड़ना देनी होती है उसका और कोई विकल्प नहीं । पशु प्रवृत्तियों को सदाशयता का महत्व समझाने के लिए दण्ड व्यवस्था का आश्रय लिए बिना और कोई उपाय नहीं ।

प्राचीनकाल में रिवाज था कि फाँसी, अंग-भंग आदि का दण्ड क्रियान्वित किये जाते समय उस वीभत्स दृश्य को देखने के लिए जनसमुदाय को ढिंढोरा पीटकर आमन्त्रित किया जाता था । देखने को भारी भीड़ जमा हो, इसका प्रयत्न और प्रबन्ध होता था । उस दण्ड कृत्य को देखकर दर्शक आतंकित होते थे । चर्चा फैलती थी और अनेकों को यह अनुमान लगाने का अवसर मिलता था कि कुकृत्यों का दुष्परिणाम कितना भयानक होता है। मनुष्यों के कानूनों में इस प्रकार का खुला प्रदर्शन घट रहा है किन्तु प्रकृति व्यवस्था यथावत् बनी हुई है । व्यापक विनाश के दृश्य लोगों का दिल दहलाने और यह अनुमान लगाने के लिए विवश करते हैं कि यहाँ मनमानी नहीं चल सकती । किसी अदृश्य सत्ता का शासन मौजूद है और उसमें पुरस्कार ही नहीं, दण्ड व्यवस्था का भी पूरा-पूरा प्रावधान है । प्रकृति प्रकोपों से लेकर मानवी विग्रहों द्वारा उत्पन्न होने वाली विभीषिकाओं के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है कि जनसाधारण को नियन्ता के रोष का ध्यान बना रहे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

युग सन्धि के मध्यवर्ती बीस वर्षों में सन् १९८० से २००० तक की अवधि में जो महान् परिवर्तन होने हैं उनमें बहुत कुछ तो अदृश्य ही रहेगा । क्योंकि परिवर्तन पदार्थों का नहीं आस्थाओं का होना है । आस्थाएँ दीखती नहीं इसलिए इस क्षेत्र की उथल-पुथल का स्वरूप समझना और विवरण लिखना किसी के लिए भी शक्य न हो सकेगा । जो दृश्यमान है चर्चा उसी की होगी । दृश्य घटनाक्रमों में एक होगा अशुभ का निराकरण, उन्मूलन । दूसरा होगा शुभ का आरोपण, अभिवर्धन । एक के लिए अनावश्यक और अवांछनीय को हटाने की ध्वंसात्मक प्रक्रिया चलेगी और दूसरी ओर भावनात्मक नव-निर्माण के अनेकानेक आधार खड़े होंगे ।

ध्वंस और सृजन की दोनों ही प्रवृत्तियाँ अपने-अपने मोर्चे पर कमाल करती हुई दिखाई पड़ेंगी । इसे प्रसव पीड़ा के समतुल्य माना जा सकता है, जिसमें कष्ट और रक्तपात का रोमाँचकारी घटनाक्रम भी घटित होता है । साथ ही नवजात शिशु की उल्लास भरी प्रतिमा और उसके आगमन से बनती हुई दूरगामी सम्भावना से उमंगें भी उठती हैं । बालक के पोषण की योजनायें बनती और तैयारी चलती है । पीड़ा और प्रसन्नता का जैसा अद्भुत समन्वय प्रसव पीड़ा के अवसर पर देखा जाता है ठीक वैसा ही इन बीस वर्षों में चलता रहेगा । शिशु-जन्म की उथल-पुथल कुछ घण्टे में ही निपट जाती है । नवयुवक का जन्म होने में बीस वर्ष लगते हैं जो कार्य के वजन, महत्व और विस्तार को देखते हुए कुछ अधिक नहीं है ।

चर्चा ध्वंस की चल रही है । आवश्यक नहीं कि विनाश-लीला की चपेट में मात्र अवांछनीयता ही आये। सज्जनता को भी परिस्थिति के दबाव में त्रास सहना पड़ सकता है । गेहूँ के साथ चक्की में घुन भी पिस जाता है । सूखे के साथ गीला भी जलता है । रोग कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए खाई गई औषधि स्वस्थ कणों को भी हानि पहुँचाती है । यह अपवाद तो चलते ही रहते हैं किन्तु सामान्यतया होता यही है कि गेहूँ ही पिसता है, सूखा ही जलता है, विषाणु ही मरते हैं । उथल-पुथल की बेला में, प्रकृति की विनाश-लीला में अवांछनीयता का उन्मूलन ही उद्देश्य रहता है । चपेट में दूसरे भी आ जाएँ तो बात दूसरी है ।

चपेट में निर्दोष दिखने वालों के आने का भी एक कारण है । यह समूची सृष्टि आत्म-सत्ता के सूत्र में बंधी है । उसका संचालन संयुक्त जिम्मेदारी के आधार पर हो रहा है । सब पुर्जे मिलकर काम करते हैं तो घड़ी चलती है । संसार को समुन्नत, समाज को सुसंस्कृत रखना भी सबका सम्मिलित उत्तरदायित्व है । व्यक्तिगत सुख-शान्ति की तरह ही सामूहिक प्रगति और समृद्धि के लिए प्रयत्न होना चाहिए । मानवी सत्ता के साथ ईश्वर प्रदत्त यह जिम्मेदारी हर किसी पर लदी है कि वह जितना ध्यान अपनी निजी सुविधा बढ़ाने और भविष्य को बनाने पर देता है उतना ही विश्व-उद्यान को सुरम्य बनाने पर दे ।

माली अपना घर भी बुहारता है और बगीचे को भी साफ-सुथरा रखता है, अपने भोजन की व्यवस्था करता है और पेड़-पौधों को खाद पानी की । ठीक इसी तरह प्रत्येक मनुष्य को आत्म-कल्याण ही नहीं लोक-मंगल में निरत रहने का भी उत्तरदायित्व पूरा करना चाहिए। इसमें जो लोग प्रमाद करते है, वे भी एक प्रकार से अपराधी ही बनते हैं । आक्रमण ही मात्र अपराध नहीं है लापरवाही और गैर जिम्मेदारी का आचरण करने पर भी दण्ड मिलता है, भले ही उसमें किसी पर हमला न किया गया हो ।

संयुक्त जिम्मेदारी न निभाने पर भी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में दोषी बनता है और इसके फलस्वरूप वे सब भी अपराधी और दण्ड के भागी बनते हैं जो समाज को सुखी एवं समुन्नत बनाने में आलस्य और प्रमाद बरतते हैं । उदासीनता और उपेक्षा मनुष्य कृत कानूनों में भले ही दण्डनीय, अपराध न हो पर ईश्वर की दृष्टि में वह भी उसके आदेश की अवहेलना है । ऐसी दशा में जो प्रत्यक्ष निर्दोष दिखते हैं, वे भी अपराधियों की गणना में आते हैं ।

आक्रमण न करने तक ही कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती, उसे रोकने का प्रयत्न न करना भी मानवी शालीनता का उल्लंघन है । कोई आत्म-हत्या का प्रयत्न करे और दर्शक उसे चुपचाप देखते रहें, आँख के सामने हत्या, बलात्कार आदि के अपराध होते रहें और उसमें कोई हस्तक्षेप न किया जाए, अपराधों के षड़यन्त्र चलते रहें और जानकारी रहने पर भी उसे पुलिस को सूचित करने या विफल बनाने का प्रयत्न न किया जाए तो वह चुप रहने वाला मूक दर्शक भी अपराधी माना जायेगा, और भर्त्सना तथा दण्ड का पात्र बनेगा ।

इस दृष्टि से युग परिवर्तन की अवधि में कुछ अपवाद तो अकारण भी चपेट में आने वाले हो सकते हैं, पर अधिकांश पर यह आरोप लगता है कि, वे विश्व का विनाश-क्रम चलता रहा और उसमें हस्तक्षेप करने के स्थान पर मूक दर्शक बने बैठे रहे । ऐसी दशा में यदि उन्हें भी भगवान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का कोप भाजन बनना पड़ता है तो इसे निर्दोषों को मिला दण्ड नहीं कह सकते।

सरकारी कानून में संयुक्त जिम्मेदारी न निभाने पर दण्ड विधान की व्यवस्था है। अपराधी क्षेत्र के निवासियों पर संयुक्त जुमनि किये जाते हैं। इस दण्ड को भुगतने वालों में से अधिकांश ऐसे होते हैं जिन्होंने स्वयं कोई अपराध नहीं किया। फिर भी सामाजिक न्याय यह कहता है कि नागरिक कर्तव्यों के अनुसार हर किसी को अपने क्षेत्र में शान्ति बनाये रहने, अपराध रोकने, पीड़ितों की सहायता करने के लिए सतर्क एवं सक्रिय रहना चाहिए। इसमें उपेक्षा बरतने वाले भी प्रकारान्तर में अपराधी बनते हैं और दण्ड भुगतने के लिए सामूहिक जुर्माना चुकाने के लिए बाधित किये जाते हैं। युद्धकाल में देशभर में जवानों की भर्ती की जाती है, इससे इन्कार करने वालों को अपराधी माना जाता है और जेल भेजा जाता है।

संसार में विपन्नता बढ़ना भी एक प्रकार से आपत्तिकाल है। उसमें आपत्ति धर्म निवाहा जाना चाहिए और निजी लाभ के कामकाजों की उपेक्षा करके भी विश्व विनाश की सम्भावनाओं की रोकथाम में हिस्सा बटाना चाहिए। यह आपत्ति धर्म है। आत्म-रक्षा की तरह समूह-रक्षा हर नागरिक की जिम्मेदारी है। मात्र सरकार ही सब कुछ नहीं कर सकती। नागरिकों से भी अराजकता और अवांछनीयता की रोकथाम में सहायक होने की अपेक्षा की जाती है। यही कारण है कि जानकारियों की गवाही देने को किसी को भी बाधित किया जा सकता है और इन्कार करने पर जेल में डाला जा सकता है।

युग परिवर्तन की बेला में होने वाले ध्वंस को 'मरे को मारे शाह मदार' वाली उक्ति के अनुसार दैवी अव्यवस्था, निष्ठुरता, प्रतिशोध आदि समझा जा सकता है पर वस्तुतः वैसा है नहीं। नव सृजन ही परमेश्वर को अभीष्ट है, सन्तुलन बनाना ही उसको प्रिय है। धर्म की स्थापना के लिए ही भगवान के लिए अवतार होते हैं। उस प्रयोजन में अधर्म का उन्मूलन आवश्यक होता है। सफाई पुताई से लेकर आग जलाने तक में कुछ न कुछ जीव हिंसा होती है। फिर भी उद्देश्य स्वच्छता के कारण उसे अपरिहार्य माना जाता है। अवतारों का प्रमुख कार्य सृजन होता है। अधर्म का नाश उसी का एक अंग है, अतएव यह उपक्रम भी चलता है। अन्ततः यह सब कुछ सुसंन्तुलित बनाने और उज्वल भविष्य की संरचना के लिए ही किया जाता है। अस्तु आसन्न परिस्थितियों से घबराने की नहीं अपितु उनसे जूझने, उन्हें जन्म देने वाली दुष्प्रवृत्ति को मिटाने की आवश्यकता है।

प्रत्यक्ष ही नहीं परोक्ष भी समझें

यह जगत दो हिस्सों में बँटा है। एक प्रत्यक्ष और दूसरा परोक्ष। दृश्य पदार्थो के भीतर एक प्रेरक शक्ति काम करती है जिसे आँखों से नहीं देखा जाता, उसकी क्षमता एवं गति को देखकर अनुमान लगाया जाता है कि प्रकृति के अन्तराल में शब्द, ताप और प्रकाश की तरंगें काम करती हैं, उन्हें परोक्ष ही कहा जा सकता है। शरीर सारे काम करता है पर उसके भीतर चेतना की परोक्ष प्राण-शक्ति काम करती है। भूमण्डल के सम्बन्ध में भी यही बात है। वह जल-थल और नभ के तीन भागों में विभक्त है। किन्तु उसका थोड़ा-सा भाग ही दृष्टिगोचर होता है। भूगर्भ में क्या हलचलें चल रही हैं। समुद तल में क्या हो रहा ह ? आकाश में कितना पदार्थ वायुभूत होकर उड़ रहा है ? इसकी जानकारी सामान्य बुद्धि या साधनों से प्राप्त नहीं होती वह सभी एक प्रकार से परोक्ष या अदृश्य है।

प्रत्यक्ष के सम्बन्ध में ही हमें हल्की-फुलकी जानकारी होती है। इतने पर भी प्रत्यक्ष की तुलना में परोक्ष की क्षमता असंख्य गुनी है। एक चुटकी धूलि का कोई महत्त्व नहीं किन्तु एक परमाणु की परोक्ष शक्ति का विस्फोट गजब ढा देता है। समुद के खारे जल में ज्वारभाटे मात्र उठते है पर इसे बहुत कम लोग जानते है कि धरातल के कोने-कोने में जल पहुँचाने के लिए उसकी अदृश्य प्रकृति एवं हलचल ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही बात आकाश के सम्बन्ध में भी है। वह पोला, खाली दृष्टिगोचर होता है किन्तु पवन, पर्जन्य, प्राण जैसे अति महत्त्वपूर्ण तत्व प्रचुर परिणाम में उसी में भरे पड़े हैं। यदि उनका लाभ प्राणियों को न मिले तो किसी का भी जीवन शकट एक कदम आगे न बढ़े।

चर्चा परोक्ष जगत की हो रही है। प्रत्येक प्रयोजन के लिए यों हमें प्रत्यक्ष से ही पाला पड़ता है और उसी को सब कुछ मानने तथा बढ़ाने-बदलने का अभ्यास रहता है फिर भी विचारशील यह भी भूलते नहीं कि परोक्ष की सत्ता असाधारण है और उसकी उपेक्षा करके खिलौने से खेलने की तरह मात्र छोटे बच्चों जैसी स्थिति हमारी बनी रहती है। एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अविकसित बनवासी मात्र घास-पात की सम्पदा पर ही निर्भर रहता है किन्तु एक वैज्ञानिक प्रकृति पर आधिपत्य जमाता और असीम शक्ति का अधिष्ठाता बनता है । इसे परोक्ष सामर्थ्य की जानकारी एवं उपलब्धि का चमत्कार ही कह सकते है ।

यहाँ चर्चा अदृश्य जगत की हो रही है । धरातल के पदार्थों, प्राणियों की हलचलों, सम्पदाओं, सुविधाओं को हम देखते है । उस क्षेत्र की प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में बदलने के लिए प्रयत्न भी करते है पर यह भूल जाते है कि प्रत्यक्ष के पीछे परोक्ष कारण भी महत्त्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न कर रहे होते है और उन्हें समझने और निपटने के लिए भी कुछ किया जाना चाहिए । इस भूल का परिणाम है कि प्रयत्न करने पर भी समस्याएँ सुलझने में नहीं आतीं और श्रम निरर्थक चला जाता है । थकान, निराशा और खीज ही पल्ले पड़ती है । हमें गहराई में उतरने की आदत डालनी चाहिए और समझना चाहिए कि मोती बटोरने के लिए गहरी डुबकी लगाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं किनारे पर भटकते रहने से सीप और घोघें के अतिरिक्त और कुछ पल्ले नहीं पड़ सकता।

रोग प्रत्यक्ष है और औषधि भी; दोनों आपस में सुलझते समझते भी रहते है । एक दूसरे को चुनौती चिरकाल से देते आ रहे है किन्तु औषधियाँ हारतीं और बीमारी जीतती चली आ रही हैं । यह क्रम तब तक चलता ही रहेगा जब तक कि असंयम से शक्तियों के अपव्यय और विषाक्तता के उद्भव अदृश्य का कारण न समझा जाय और उसके निवारण के लिए चटोरेपन की आदत का परिमार्जन न किया जाय । यह बात अर्थ संकट मानसिक तनाव, परिवार विग्रह, समाज विक्षोभ जैसी समस्याओं के सम्बन्ध में भी लागू होती है । मनःस्थिति बदलने से परिस्थिति बदलती है, इस सूत्र की जब तक उपेक्षा होती रहेगी झंझट, संकट, अभाव एवं विग्रह अपने स्थान पर यथावत् जड़ जमाये रहेंगे । हटने का नाम नही लेंगे।

इन दिनों प्रत्यक्ष जगत में वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में पतन पराभव का माहौल है । पिछले दिनों आर्थिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में असाधारण प्रगति हुई है । उस आधार पर सुविधा साधनों की इतनी अभिवृद्धि हुयी है कि सृष्टि के इतिहास में अद्यावधि कभी भी नहीं हुई । इतने पर भी व्यक्ति हर दृष्टि से घटता और घुटता जा रहा है । समाज का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें गतिरोध न अड़ गये हों । संकटों के चक्रवात न मचल रहे हो । मिल-जुलकर समाधान खोजने की प्रवृत्ति को तिलाजंलि दी जा रही है, आस्तीनें ऊँची करने ताल ठोकने, घूँसा दिखाने के अतिरिक्त और किसी को कुछ सूझता ही नहीं । अपराधों का आश्रय लेने और अन्यान्यों को नीचा दिखाने के अतिरिक्त चिन्तन और प्रचलन में कही कोई तत्व दिखाई नहीं पड़ते जिसमें व्यक्ति को सुखी, सुसंस्कृत एवं समाज को समृद्ध समर्थ बनाने की आशा बँध सके । बुद्धिमान को कमी नहीं । मूर्धन्य प्रतिभायें भी हर क्षेत्र में विद्यमान और सक्रिय है फिर भी दो गज जुड़ने के साथ-साथ चार गज टूटने जैसी विपन्नता बढ़ती जा रही है । मनुष्य कृत उत्पातों का प्रतिफल किसी भी दिन विश्व विनाश की स्थिति उत्पन्न कर सकता है । युद्धोन्माद किसी भी दिन मनुष्य समुदाय को सामूहिक आत्म-हत्या के लिए विवश कर सकता है। जनसंख्या की अनियन्त्रित अभिवृद्धि, प्रदूषणों और विकिरणों के घटाटोप-अपराधों के तूफानी चक्रवात, सन्धिपात जैसा युद्धोन्माद ऐसा है, जिसके कारण सर्वनाश की घटायें घुमड़ती दीखती है ।

गुत्थियों को सुलझाने के लिए कड़ुये-मीठे प्रयत्न न हो रहे हों सो बात नहीं । विनाश से बचाव और उत्कर्ष के आधार ढूँढने के लिए अपने-अपने ढंग से सभी प्रयत्नशील है पर समाधान निकट आने के स्थान पर दूर ही हटते जा रहे है । इन परिस्थितियों में कई बार तो वह निराशा सिर पर सवार होती है कि मनुष्य नियति के सम्मुख असहाय जैसा है । पुरुषार्थो का माहात्म्य अतिश्योक्तिपूर्ण है ।

यहाँ सहज ही परोक्ष पर दृष्टि जाती है और लगता है कि कोई किसी मर्मस्थल में ऐसा काँटा तो नहीं घुसा बैठा है जो नासूर बनकर रिसते रहने की स्थिति बनाये रहे । किसी उपचार को सफल न होने दे । तत्वज्ञानी इस दृष्टि से सदैव भावनाशील रहे है पर प्रत्यक्ष को जड़ एवं आवरण मानते है । परोक्ष को उन्होंने चेतन प्रेरणा माना है और चेतना को ही वातावरण का, मनःस्थिति को ही परिस्थिति का जन्मदाता कहा है । तथ्यतः यह प्रतिपादन शत-प्रतिशत सच है । मानवी चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को प्रभावित करने वाली आस्था विकृत हो जाने से हर क्षेत्र में अनेकानेक संकट खड़े हुये है । आत्यंतिक समाधान के लिए तब तक प्रतीक्षा ही करती रहनी पड़ेगी जब तक कि आस्था संकट से निपटने के लिए कारगर प्रयत्न नहीं किये जाते । इस सम्बन्ध में एक छोटे से प्रयत्न अन्धेरे में टिमटिमाते दीपकों की तरह प्रज्ञा अभियान का मूल्यांकन भी किया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परोक्ष जगत की परिधि में मानवी आस्था को महत्त्व तो दिया जा सकता है । फिर भी वह समग्र नहीं है। दृश्य जगत की पीठ पर एक अदृश्य जगत भी है और उसमें चल रही हलचलों और गतिविधियों से प्रत्यक्ष जगत पूरी तरह प्रभावित होता है । देखना यह भी है कि अदृश्य जगत में कही अवांछनीय तत्व तो नहीं घुस पड़े हैं और उनके प्रभाव से प्रत्यक्ष जगत का वातावरण तो विषाक्त नहीं हो रहा है ।

ऋतुओं के प्रभाव को सर्दी, गर्मी, नमी के रूप में अनुभव किया जाता है किन्तु वस्तुतः वे सूर्य और पृथ्वी के परिभ्रमण से उत्पन्न होने वाली परिणितियाँ भर है । इसे समझे बिना ऋतु परिवर्तन के रहस्य से अपरिचित ही बने रहना पड़ता है । अन्तरिक्ष से इतना कुछ बरसता है जिसे जल और थल की संयुक्त उपलब्धियों की तुलना में भी कहीं अधिक कहा जा सके । अदृश्य की शक्ति पर कभी तथाकथित प्रत्यक्षवादी अविश्वास करते थे पर बढ़ते हुए विज्ञान का समूचा आधार ही अप्रत्यक्ष को समझने और हस्तगत करने में केन्द्रीभूत हो रहा है ।

पदार्थ विज्ञान के साथ अध्यात्म विज्ञान को जोड़ने से ही समग्र तत्व ज्ञान का सृजन होता है । उसी समन्वय के आधार पर जो जानने योग्य है उसे जाना जा सकता है और जो पाने योग्य है, उसे पाया जा सकता है। इन दिनों की विकट समस्याओं में यदि परोक्ष जगत की विकृतियों को समझने सुधारने का प्रयत्न किया जाय तो उसे दूरदर्शी विवेकशीलता ही कहा जायेगा । फुन्सियाँ अच्छी न हो रही हों तो रक्त विकार खोजने तक दृष्टि दौड़नी चाहिए । मच्छरों को भगाते न बन रहा हो तो सड़ी कीचड़ के खोजने और हटाने का प्रयत्न करना चाहिए । पतन और पराभव वस्तुतः भ्रान्तियों और विकृतियों को परोक्ष गड़बड़ का ही प्रतिफल होता है ।

जिनको परोक्ष पर, अदृश्य पर विश्वास कर सकने योग्य समझ मिल सकी है उन्हें वर्तमान की सुलझाने योग्य गुत्थियों के पीछे अदृश्य में संव्याप्त विषाक्तता खोजनी होगी। इसी का प्रभाव है कि लोक चिन्तन में अवांछनीयता बढ़ रही है और प्रकृति प्रकोपों का दौर चल पड़ा है । वर्षा होती है तो धरती पर हरी चादर बिछती है । जल-जंगल एक होते हैं । सर्दी का पतझड़ और गर्मी की जलन का सामना करते समय उसका कारण अदृश्य में ही खोजना पड़ता है । दृश्य के प्रत्यक्ष से निपटने की सामर्थ्य जब कुण्ठित हो चले तो परोक्ष की ओर दृष्टि डालनी चाहिए। रिसते नासूर के मूल में घुसे हुए काँटे को कुरेदना चाहिए। कठपुतली स्वयं कहाँ नाचती है । उनसे कौतूहल कराने में बाजीगर की उंगलियाँ ही चमत्कार दिखाती रहती है ।

इन दिनों के प्रकृति प्रकोप एवं पतन-पराभव विनाश-विग्रह के पीछे अदृश्य जगत की स्थिति को समझने का प्रयत्न होना चाहिए । साथ ही उसे सुधारने-सन्तुलित करने का भी व्यक्ति का स्तर और सृष्टि का भविष्य जिस प्रकार चिन्तनीय बनता जा रहा है उसे महामारी प्रवाह की तरह किसी अदृश्य विष वमन का परिणाम समझा जा सकता है । अच्छा हो प्रत्यक्ष को ही सब कुछ न समझकर परोक्ष की ओर भी दृष्टि दौड़ाई जाय और उस क्षेत्र में संव्याप्त अशुभ से निपटने तथा शुभ का परिपोषण करने के लिए उपाय सोचे और प्रयास किये जायँ । न सुलझने वाली गुत्थियों को सुलझाने के लिए हमारा ध्यान परोक्ष की ओर मुड़े और अदृश्य के सन्तुलन का प्रयास चले तो उसे यथार्थ का अवलम्बन ही कहा जायेगा ।

बुद्धिवाद नीतिनिष्ठा का पक्षधर बने

सभी प्राणियों को प्रकृति ने इतना सहज ज्ञान दिया है कि वे उसके सहारे अपने शरीर यात्रा भर चलाते रह सकें । यों उसके अन्तराल में विभूतियों की कमी नहीं। वह इस दृष्टि से सम्पन्न सामर्थ्यवान है । पर पात्रता के अभाव में दुरुपयोग के लिए कोई क्यों अपना वैभव लुटाये ? प्रकृति को कृपण तो नही कहेंगे परन्तु वह अदूरदर्शी भी नहीं है । जो जितना सम्भाल सके, उसे उतना ही दिया जाय, इस सन्दर्भ में उसने सदा व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया है । इस परीक्षा में मनुष्य ने सदा से ही आगे की चेष्टा की और तदनुरूप प्रकृति का आंचल उठाकर एक के बाद एक बहुमूल्य विभूतियाँ हस्तगत करने में सफलता पाई ।

वायु प्रदूषण, आणविक विकिरण, जल-प्रदूषण, ऊर्जा स्रोतों का अत्यधिक दोहन, विलास के साधनों का अमर्यादित उपयोग, प्रलंकर शस्त्रास्त्रों का निर्माण और उनकी अधिसंख्य देशों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा जैसे संकट भरे कदम महाप्रलय जैसी चुनौती सामने लेकर खड़े हैं । एक ओर विज्ञान क्षेत्र के मनीषी मूर्धन्यों के सामने यह समस्या है कि इस दुरुपयोग को कैसे रोका जाय और उनके कारण उत्पन्न हो रहे अनेकानेक विग्रहों, संकटों से कैसे उबारा जाय ? दूसरी ओर एक और प्रश्न भी उनके सामने है कि मनुष्य को अधिक सुखी समुन्नत बना सकने का प्रयोजन पूरा करने के लिए किसी नये शोध क्षेत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में प्रवेश किया जाय। इनकी नीति क्या हो व इनकी मर्यादा को कहाँ किस प्रकार बाँधा जाय ? दोनों ही प्रश्न मानवी बुद्धिमत्ता के समक्ष एक प्रश्न चिन्ह बनकर खड़े है और कहते है कि यही समाधान निकला तो विज्ञान अपना पोषणधर्मी रूप त्यागकर महारुद्र बनेगा और प्रलय का ताण्डव नृत्य आरम्भ करेगा । आखिर नियत ही है। मनुष्य को सीमित सुविधा छूट ही दे सकती है। औचित्य का अतिक्रमण सहन नहीं कर सकती। इसलिए मूर्धन्य विचारकों के अनुसार विनाश और विकास के मध्य झूलने वाले हल्के से धागे को सही दिशा देना ही वह कार्य है जिस पर वर्तमान का समाधान तथा भविष्य का निर्धारण पूर्णतया अवलम्बित है।

आज की सबसे बड़ी समस्या है दुरुपयोगी को रोकना और उपयोगी को अपनाना । इनका समाधान पाने हेतु समुद्र जितनी गहराई में उतरने तथा अन्तरिक्ष को मथ डालने वाली मनीही का समग्र मन्थन करने पर ही निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि निर्धारण की कसौटी 'उत्कृष्ट वादिता' को अपनाकर चला जाय और उसकी छत्र-छाया में हर स्तर का निर्णय किया जाय । मानवी सत्ता की उच्चस्तरीय विशिष्टता एक ही है ''आदर्शो के प्रति आस्था'' । इसी ने उसे चिंतन के क्षेत्र में उत्कृष्टता और व्यवहार के क्षेत्र में उदार सहकारिता जैसी सत्प्रवृत्तियाँ प्रदान की है और उसकी गौरव गरिमा को बढ़ाया है । इस विशिष्टता की जितनी उपेक्षा की जायेगी उतनी ही विपत्ति उभरेगी और विनाश की विभीषिका बढ़ेगी। इस सत्प्रवृत्ति को पुरातन भाषा में 'आध्यात्मिकता' कहा जाता है । यह शब्द किसी को अटपटा लगता हो तो 'दूरदर्शी आदर्शवादिता' जैसा कोई शब्द देने में किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए । यही है वह कसौटी जिस पर अद्यावधि प्रगति के उपयोग में हुई भूलों को सुधारना और जो उपलब्ध है उसका सर्वहित में सदुपयोग कर सकना सम्भव हो सकता है । साथ ही इसी आधार को अपनाकर विज्ञान की भाव दिशाधारा का उपयुक्त निर्धारण हो सकता है ।

विज्ञान ने पदार्थ जगत में असीम चमत्कार उत्पन्न किये हैं । अब उसका काम है कि मानवी चिन्तन, चरित्र और लोक परम्पराओं को प्रभावित करे । इन क्षेत्रों में घुसी हुई भ्रान्तियों एवं अवांछनीयताओं को उसी प्रकार निरस्त करें जिस प्रकार उसने पिछले दिनों भौतिक जगत को वस्तुस्थिति के सम्बन्ध में यथार्थता की जानकारी रखते हुए सत्य की शोध का अधिष्ठाता कहलाने का श्रेय सम्मान पाया और अपना महान उत्तरदायित्व निभाया है । उसकी यह सेवा पिछली सहस्राब्दियों में प्रस्तुत किये गये अनुदानों की तुलना में अकेली ही अत्यधिक भारी भरकम सिद्ध होगी। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि, '' जो धर्म वैज्ञानिक अनुशासन पर सही न ठहराया जा सके, उसे नष्ट कर देना चाहिए । जितनी जल्दी ये अनावश्यक अन्ध परम्परायें व मूढ़ मान्यतायें धर्म से निकाल दी जायें, उतना ही ठीक है । जब यह सब हो चुकेगा तो जो कुछ भी बच रहेगा, वह बहुत उज्ज्वल, शाश्वत व अपनाने योग्य होगा ।'' वस्तुतः विज्ञान और अध्यात्म का, सम्पदा और उत्कृष्टता का, शक्ति और शालीनता का, बुद्धि और नीति-निष्ठा का समन्वय अपने युग का सबसे बड़ा चमत्कार समझा जायगा । विज्ञान क्षेत्र पर छायी हुई मनीषा को यह युग-धर्म निभाना ही चाहिए।

विज्ञान युग के प्रारम्भिक दिनों में पदार्थ की ही सत्ता मानी गयी थी और कहा गया था कि चेतना का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है । मान्यता यह थी कि विश्व पदार्थमय है । जड़-चेतन के नाम से जाने वाले सभी घटक मात्र पदार्थ हैं । अस्तु उनकी नियति भी पदार्थ जैसी ही है । पर अब उस मान्यता में सुधार परिवर्तन करने का समय आ गया । पिछली दो शताब्दियों की खोजों ने यह मान्यता विकसित की है कि चेतना का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है । वह प्राणियों में पृथक-पृथक इकाइयों के रूप में दृष्टिगोचर होती है, किन्तु उसका समग्र रूप ब्रह्माण्ड व्यापी है । प्रकृति की तरह ही चेतना की सीमा एवं क्षमता अनन्त है । इतना ही नहीं, चेतना के वरिष्ठ होने के कारण उस क्षेत्र की उपलब्धियाँ भी तुलनात्मक दृष्टि से अत्यधिक हैं । इन्जन कितना ही सशक्त क्यों न हो, उसे चलाने के लिये चेतन ड्राईवर भी चाहिए । 'ऑटोमैटिक' कहलाने वाली मशीनें भी किसी न किसी रूप में संचालक का निर्देश प्राप्त करती ही रहती हैं । ठीक उसी प्रकार कार्य संचालन से लेकर विश्व-व्यवस्था में एक अदृश्य चेतना-शक्ति काम करती है ।

विज्ञान की 'इकॉलाजी' धारा ने इन दिनों पूरे जोर शोर और साहस विश्वास के साथ यह सिद्ध करना आरम्भ कर दिया है कि प्रकृति से मात्र शक्ति एवं क्रिया ही जुड़ी नहीं है, एक ओर भिन्न क्रिया भी आच्छादित है जिसे दूरदर्शी-सन्तुलन बिठाने-औचित्य अपनाने से लेकर सुखद सम्भावनायें अपनाने तक की विशेषताओं से सुसम्पन्न कहा जा सकता है । यह विशिष्टता जड़ पदार्थो में स्वभावतः नहीं पाई जाती । फिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी उस प्रक्रिया का अस्तित्व ही नहीं सुदृढ़ अनुशासन भी प्रमाणित हो रहा है। इस दिशा में परामनो विज्ञान, पराभौतिकी आदि अन्य विज्ञान धाराओं ने भी अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर समर्थन आरम्भ कर दिया है। स्थिति बदलती जा रही है। मनीषी आइन्स्टीन ने अपने अन्तिम दिनों में प्रायः अर्धआस्तिकता स्वीकार कर ली थी और वे चेतना की सत्ता एवं वरिष्ठता मानने लगे थे। तब से लेकर अब तक और भी बहुत कुछ हुआ है। वह सभी ऐसा है जो चेतना की सामर्थ्य को पदार्थ में सन्निहित क्षमता से भी अधिक सामर्थ्यवान एवं उपयोगी सिद्ध करता है। पुरातन भाषा में ब्रह्माण्डीय चेतना को परब्रह्म के नाम से और उसके वैयक्तिक अस्तित्व को आत्मा कहा जाता था। अब विज्ञान के लिये विश्व-चेतना एवं व्यक्ति-चेतना के अस्तित्व से इन्कार करना उतना आसान नहीं रह गया जितना कि एक शताब्दी पूर्व था।

चेतना का क्षेत्र निस्सन्देह उससे भी कहीं अधिक समर्थता से भरापूरा है जितना कि अब तक पदार्थ जगत को जाना पाया गया है। पदार्थ में मात्र शक्ति एवं क्रिया है, जबकि चेतना में कही अधिक ऊँचे स्तर की ऐसी क्षमता विद्यमान है जो पदार्थ को सदुपयोग में नियोजित कर सके। इतना ही नहीं, उसमें कुछ ऐसी विशेषतायें भी हैं जो व्यक्ति की विचारणा, भावना, आस्था आकाँक्षा को पाशविक प्रवृत्तियों से विरत करके उसे उच्चस्तरीय भाव-भूमिका में पहुँचा सके, जिसमें सज्जन, महामानव, सन्त-सुधारक, ऋषि, देवदूत एवं भगवान निवास करते हैं। कहना न होगा कि ऐसे व्यक्तित्व ही अपने समय एवं संसार की सर्वोच्च विभूति कहलाते हैं। उनके आदर्शों का अनुकरण करके अनेकों को 'महान' बनाने का उत्साह, प्रकाश एवं श्रेय प्राप्त होता है। स्पष्ट है कि धन, वस्त्र, शिक्षा-बल, कला आदि समस्त वैभव तराजू के एक पलड़े पर और महामानवों के व्यक्तित्वों को दूसरे पलड़े पर रखा जाय तो गरिमा सम्पदा की नहीं, सज्जनता, श्रेष्ठता की ही सिद्ध होगी। संसार के इतिहास में से ईशा, जरथुस्त्र, मेजिनी, बुद्ध, गांधी, लिंकन कन्फ्यूशियस, अरस्तू, कागाबा, विवेकानन्द को निकाल दिया जाय तो फिर वह मात्र अनाथ असाहय भोंड़ी भीड़ का झुण्ड-भर रह जाता है। समय आ गया है कि अब हम विशालकाय संयत्रों, तथ्य तक सीमित न रहें, उच्चस्तरीय प्रतिभाएं उत्पन्न करने के लिए प्रयास करें। उसके लिए विज्ञान के सहकार की नितान्त आवश्यकता है।

प्रकारान्तर से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि विश्व वसुधा में श्रेष्ठता सम्वर्धन के लिए अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय सम्भव किया जाय। उत्कृष्टता की पक्षधर मान्यताओं, आकांक्षाओं, उमंगों का उत्पादन कभी अध्यात्म तत्त्वज्ञान अकेला ही कर लेता था। उन दिनों साहित्य, सगीतकला आदि के सम्वेदनात्मक माध्यम पूरी तरह अध्यात्म का समर्थन सहयोग करते थे। आज जब पदार्थ ही सब कुछ है तो चिन्तन और चरित्र की पक्षधर आस्थाओं को अपनाने की पृष्ठभूमि कैसे बने ? वह न बने तो फिर महामानवों का उद्भव कैसे हो ? ये न उपजे तो विश्व-व्यवस्था का, सदाशयता का, नव-निर्माण किस प्रकार सम्भव हो ?

इन प्रश्नों का उत्तर भी विज्ञान को ही देना होगा क्योंकि पुरातन अध्यात्म अपनी निजी दुर्बलताओं और अनास्थापरक प्रत्यक्षवादी प्रतिपादनों के कारण जराजीर्ण हो चुका। इससे वर्तमान परिस्थितियों में किसी चमत्कार की आशा नहीं की जा सकती। इसका उपयोग तो इतना भर है कि वर्तमान खण्डहर को हटाकर पुरानी मजबूत नींव पर नये भवन का निर्माण कर दिखाया जाय। मरणासन्न धर्म को अमृत संजीवनी पिलाने का काम भी विज्ञान के हनुमान को करना होगा। यह उत्तरदायित्व उसी का है कि प्रस्तुत साधनों का उपयोग करके न केवल प्रशिक्षण प्रतिपादन के लिये उत्कृष्टता समर्थक वातावरण बनायें, साधन जुटायें, वरन् ऐसे उपाय भी खोजें जिनसे काय कलेवर एवं मनःसंस्थान की रहस्यमय क्षमताओं को उभार कर सामान्यों को असामान्य बनाया जा सकना सम्भव हो सके।

सदुपयोग बन पड़े, तो परिवर्तन सम्भव

मनुष्य अनन्त शक्तियों का भण्डार है।.उसमें से बहुत थोड़ा अंश ही शरीर व्यवसाय में खर्च हो पाता है। शेष शक्ति प्रसुप्त मूर्छित स्थिति में पड़ी रहती है। काम में न आने पर पैने औजारों को भी जंग खा जाती है। प्रतिभा के अंग-प्रत्यंगों का प्रयोग न होने पर, मनुष्य भी मात्र कोल्हू के बैल की तरह किसी प्रकार जिन्दगी के दिन काटता रहता है। पर जब भी उसका उत्साह उभरता है, तभी तत्परता, लगन, स्फूर्ति और गहराई तक उतरने, खोने-पाने की ललक, अपने जादू भरे चमत्कार दिखाने लगती है। व्यक्ति कहीं से कहीं जा पहुँचता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है और साधारण परिस्थितियों में भी ऐसा कुछ कर दिखाने लगता है जिनसे आश्चर्यचकित हुआ जा सके ।

पिछली तीन सदियों को आत्म जागृति का समय कहना चाहिए, भले ही वह भौतिक प्रयोजन के पक्ष में ही सीमित क्यों न रही हो । शक्ति का जहाँ भी प्रयोग होता है, वह अपना काम करती है । उसने किया भी । भौतिक प्रगति की दिशा में उसका रुझान जुड़ा, अन्वेषण चले और उसने प्रत्यक्षवाद के पुराने ढाँचे को एक नये दर्शन रूप में गढ़कर तैयार कर दिया । नयी स्फूर्ति के साथ जब नवीनता उभरती है तो उसका परिणाम भी असाधारण होता है । प्रगति के नाम पर बढ़ा-चढ़ा भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद संसार के सामने आया और उसने जन-जन को प्रभावित किया । अविष्कारों ने सुविधा-साधनों के अम्बार जमा किए । बुद्धिमत्ता के नाम पर इतनी अधिक जानकारियाँ एकत्रित कर ली गयी, जो किसी को भी अहंकारी बनाने के लिए पर्याप्त हो सकती थी हुई भी । वैसे जानकारियाँ बढ़ाना सराहना के योग्य कार्य हैं, इसलिए प्रगतिशीलता का श्रेय भी उन सबको मिला है, जिन्होंने यह उत्साह और पुरुषार्थ दिखाया ।

सदुपयोग बनाम दुरुपयोग

बात इतने पर ही समाप्त नहीं होती वरन् इससे भी बड़े रूप में सामने आती है । वह है सदुपयोग और दुरुपयोग में से एक के चयन की । स्वार्थपरता और अदूरदिर्शता का समन्वय जब भी होता है, तब एक ही बात सूझ पड़ती है कि जो कुछ, जितना जल्दी बटोरा और उससे जितना भी कुछ मजा-मौज उठा सकना संभव हो, वैसा कर लिया जाय । उतावले, बचकाने व्यक्ति यही करते हैं वे उपलब्धियों को धैर्यपूर्वक सत्प्रयोजनों में खर्च कर सकने की स्थिति में ही नहीं होते । ऐसा कुछ करते हैं जैसा कि सोने का एक अण्डा रोज देने वाली मुर्गी का पेट चीरकर सारे अण्डे एक ही दिन में निकाल लेने की दृष्टि से आतुर व्यक्ति ने किया था ।

सदुपयोग से, किसी भी वस्तु से अपना और दूसरों का हित-साधन किया जा सकता है, पर जब उसी का दुरुपयोग होने लगता है, तो एक माचिस की तीली से सारा गाँव जल जाने जैसा अनर्थ उत्पन्न होता है । प्रगतिशील शताब्दियों में पाया तो बहुत कुछ, पर दूरदर्शिता के अभाव में उसका सदुपयोग न बन पड़ा और उपयोग ऐसा हुआ, जिससे आज हर दिशा में संकटों के घटाटोप-घहरा रहे है ।

शासकों और धनाढ्यों के हित को प्राथमिकता न मिली होती तो वैज्ञानिक उपलब्धियों ने जन-साधारण का स्तर कहीं से कहीं पहुँचा दिया होता । जब मशीनें मनुष्य के काम-काज में हाथ बँटाने लगी थीं तो उन्हें छोटे आकार का बनाया गया होता । कम परिश्रम में, कम समय में निर्वाह साधन जुटा लेने का अवसर मिला होता और बचे समय को कला-कौशल में, व्यक्तियों को अधिक सुयोग्य, बनाने में लगाया गया होता । परिणाम यह होता कि हर कहीं खुशहाली होती । कोई बेकार न रहा होता और किसी को यह कहने का अवसर न मिला होता, कि निजी व्यक्तित्व के विकास एवं समाज के बहुमुखी उत्कर्ष में योगदान करने का अवसर नहीं मिला । पर दुरुपयोग तो दुरुपयोग है, उसके कारण अमृत भी विष बन जाता है ।

सुनियोजन की सही परिणति

बड़े शहर बसाने और बढ़ाने में लगी हुई बुद्धिमत्ता यदि अपनी योजनाओं को ग्रामोन्मुखी बना देने की दिशा में मुड़ गयी होती, तो अब तक सर्वत्र मात्र छोटे-छोटे स्वावलम्बी और फलते-फूलते कस्बे ही दिखाई पड़ते । न शहरों को घिचपिच, गंदगी तथा विकृतियों का भार वहन करना पड़ता और न गाँवों से प्रतिभा पलायन होते जाने के कारण, उन्हें गई गुजरी स्थिति में रहने के लिए वाध्य होना पड़ता ।

युद्धों को निजी या सार्वजनिक क्षेत्रों में समान रूप से अपराध घोषित किया जाता । छोटी पंचायतों की तरह अन्तर्राष्ट्रीय पंचायतें भी विवादों को सुलझाया करतीं। आयुध सीमित मात्रा में पुलिस या अन्तर्राष्ट्रीय पंचायतों के पास ही रहते और धनशक्ति तो युद्ध सामग्री बनाने में विशाल धनशक्ति और जनशक्ति लगाने के लिए वैसा कुछ न बन पड़ता, जैसा कि इन दिनों हो रहा है । यह जनशक्ति यदि शिक्षा सवंर्धन, उद्योगों के संचालन, वृक्षारोपण आदि उपयोगी कामों में लगी होती, तो युद्ध के निमित्त लगी हुई शक्ति को सृजन कार्य में नियोजित करके इतना कुछ प्राप्त कर लिया गया होता, जो अद्भुत और असाधारण होता ।

शिक्षा का प्रयोजन अफसर या क्लर्क बनना न रहा होता और उसे जन-जीवन तथा समाज व्यवस्था के व्यावहारिक पक्षों के समाधान में प्रयुक्त किया गया होता, तो सभी शिक्षित,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभ्य, सुसंस्कृत होते और अपनी समर्थता का ऐसा उपयोग करते, जिससे सर्वत्र विकास और उल्लास बिखरा-बिखरा फिरता । हर शिक्षित को दो अशिक्षितों को साक्षर बनाने के उपरान्त ही यदि किसी बड़ी नियुक्ति के योग्य होने का प्रमाण-पत्र मिलता, तो अब तक अशिक्षा की समस्या का समाधान कब का हो गया होता । उद्योगों का प्रशिक्षण भी विद्यालयों के साथ अनिवार्यतः जुड़ा होता तो बेकारी, गरीबी की कहीं किसी को शिकायत न करनी पड़ती ।

प्रेस और फिल्म, यह दो उद्योग जन-मानस को प्रभावित करने में असाधारण भूमिका निभाते हैं । विज्ञान की इन दो उपलब्धियों के लिए यह अनुशासन रहा होता, कि उनके द्वारा उपयोगी मान्यता प्राप्त विचारधारा को ही छापा या फिल्माया जायेगा, तो इनसे मनुष्य की बहुमुखी शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति होती जन साधारण को सुविज्ञ और सुसंस्कृत बना सकने में सफलता मिल गयी होती।

समाधान इस प्रकार भी संभव था

बुद्धि के धनी भी एक प्रकार के वैज्ञानिक हैं । शासन और समाज के विभिन्न तंत्र उन्हीं के संकेतों तथा दबाव से चलते हैं । यदि सामाजिक, कुरीतियों और वैयक्तिक अनाचारों के विरुद्ध ऐसी बाड़ बनायी गयी होती, जो इनके लिए अवसर ही न छोड़ती, तो जो शक्ति बरबादी में लगी हुई है, उसे सत्प्रयोजनों में नियोजित देखा जाता । अपराधों का, अनाचारों का कहीं दृश्य भी देखने को न मिलता । सर्वसाधारण को यदि औसत नागरिक स्तर का जीवन-यापन करने की ही छूट रही होती तो बढ़ी हुई गरीबी में से एक भी दृष्टिगोचर न होती । सब समानता और एकता का जीवन जी रहे होते । फिर न खाइयाँ खुदी दीखतीं और न टीले उठे होते । समतल भूमि में समुचित लाभ उठा सकने का अवसर हर किसी को मिला होता। तब इन शताब्दियों में हुई बौद्धिक और वैज्ञानिक प्रगति को हर कोई सराहता और उसके सदुपयोग से धरती का कण-कण धन्य हो गया होता ।

नशेबाजी दुर्व्यसनों के लिए छूट मिली होने के कारण ही लोग उन्हें अपनाते हैं । उनका उत्पादन ही निषिद्ध रहा होता, पीने वालों को प्रताड़ित किया जाता, तो आज धीमी आत्म-हत्या करने के लिए किसी को भी उत्साहित न देखा जाता । इस लानत से बच जाने पर लोग शारीरिक और मानसिक दृष्टि से संतुलित रहे होते और हर प्रकार की बरबादी-बदनामी से बच जाते । अन्यान्य दुर्व्यसनों से संबन्धित इसी प्रकार के और भी अनेकों ऐसे प्रचलन हैं, जो सामान्य जीवन में घुल-मिल गये हैं । कामुकता भड़काने वाली दुष्प्रवृत्तियाँ फैशन का अंग बन गई हैं । बनाव, शृंगार, सज-धज के अनेकों स्वरूप शान बनाने जैसे लगते हैं । आभूषणों में ढेरों धन बरबाद हो जाता है। बढ़ा हुआ बुद्धिवाद यदि इन अपव्ययों का विरोध करता, उनकी हानियाँ गले उतारता, तो खर्चीली शादियाँ जो हमें दरिद और बेईमान बनाने का प्रमुख कारण बनी हुई हैं, इस प्रकार अड़ी और खड़ी न रहतीं ।

ऊपर चढ़ना धीमी गति से ही संभव हो पाता है, पर यदि पतन के गर्त में गिरना हो तो कुछ ही क्षणों में बहुत नीचे पहुँचा जा सकता है । पिछले दिनों हुआ यही है । चतुरता के नाम पर मूर्खता अपनाई गई है । इसका प्रमाण यह है कि ठाट-बाट की चकाचौंध सब ओर दीखते हुए भी मनुष्य बेतरह खोखला हो गया है । चिन्ता, उद्विग्नता, आशंका, अशान्ति का माहौल भीतर और बाहर सब ओर बना हुआ है। किसी को चैन नहीं । कोई संतुष्ट नहीं दीखता । मानसिक दरिद्रता के रहते विस्तृत वैभव भी बेचैनी बढ़ने का निमित्त कारण बना हुआ है।

निराशा में आशा की झलक

सामयिक परिस्थितियों में से यह कुछ की चर्चा भर है । यहाँ रूह समीक्षा की गई है कि यदि भविष्य को सही बनाने की दिशा में प्रयास-पुरुषार्थ संभव होता, तो ही भला था । निराश मनःस्थिति ऐसे में बनना स्वाभाविक है, किन्तु निराशा की मानसिकता स्वयं में बड़ा संकट है । इससे मनोबल टूटता है, उत्साह में अवरोध आता है ।

सृजन प्रयास सर्वथा बन्द हो गये हों, यह बात नहीं। वर्तमान सुधारने व भविष्य को उज्ज्वल सम्भावनाओं से भरा बनाने हेतु किए जा रहे प्रयासों में शिथिलता भले ही हो, अभाव उनका भी नहीं है । यदि मनुष्य का हौसला बुलन्द हो, तो प्रतिकूलताएँ होते हुए भी ऐसा कुछ किया जा सकता है, जिसे देखकर आश्चर्य होता रह सके । मिश्र के पिरामिड, पनामा की नहर, स्वेज कैनाल, चीन की विशाल दीवार जैसे प्रबल प्रयास आशावादी साहस भरे वातावरण में ही सम्पन्न हुए हैं । जब कई व्यक्ति मिलकर एक साथ वजन धकेलते हैं तो उनकी संयुक्त शक्ति व मुंह से निकली ''हेईशा'' जैसी जादू भरी हुँकार वह उद्देश्य सम्पन्न कर दिखाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ब्रिटिश प्रधानमंत्री सर विंस्टन चर्चिल ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में हारते हुए ब्रिटेनवासियों का मनोबल बढ़ाने के लिए एक नारा दिया था वीफॉर विक्ट्री । अर्थात जीतना हमें ही है, चाहे शत्रु कितना ही प्रबल क्यों न हो ? इस संकेत सूत्र का इतना प्रचार हुआ कि यह सुनिश्चित विश्वास का, विजय का एक प्रतीक बन गया। इस हुंकार ने जादुई परिवर्तन कर दिखाया एवं युद्ध से बिस्मार हो रहा यूरोप जागकर उठ खड़ा हुआ । टूटा हुआ जापान हिरोशिमा की विभीषिका के बावजूद भी सृजन प्रयोजनों में निरत रहा, मनोबल नहीं टूटने दिया व आज आर्थिक मण्डी सारे विश्व की उसी के हाथ में है । यह सुनिश्चित है कि लोगों की आस्थाओं को युग के अनुरूप विचार-धारा को स्वीकारने हेतु उचित मोड़ दिया जा सके, तो कोई कारण नहीं कि सुखद भविष्य का,उज्ज्वल परिस्थितियों का प्रादर्भाव संभव न हो सके ? यह प्रवाह बदल कर उलटे को उलटकर सीधा बनाने की तरह का भागीरथी कार्य है, किन्तु असम्भव नहीं, पूर्णतः संभव है ।

निराशा हर स्थिति में हटे

अनाचार अपनाने पर प्रत्यक्ष व्यवस्था में तो अवरोध खड़ा होता ही है, साथ ही यह भी प्रतीत होता है कि नियतिक्रम के निरन्तर उल्लंघन से प्रकृति का अदृश्य वातावरण भी इन दिनों कम दूषित नहीं हो रहा है । भूकम्प, तूफान, बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, कलह, विद्रोह, विग्रह, अपराध, भयावह रोग, महामारियाँ जैसे त्रास इस तेजी से बढ़ रहे है कि इन पर नियन्त्रण पा सकना कैसे संभव होगा, यह समझ में नहीं आता । किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थिति में पहुँचा हुआ हतप्रभ व्यक्ति क्रमशः अधिक निराश ही होता है, विशेषतया तब,जब प्रगति के नाम पर विभिन्न क्षेत्रों में किये गये प्रयास खोखले लगते हों, महत्त्वपूर्ण सुधार हो सकने की संभावना पर से विश्वास क्रमशः उठता जाता हो ।

इतना साहस और पराक्रम तो विरलों में ही होता है, जो आँधी-तूफानों के बीच भी अपनी आशा का दीपक जलाये रह सकें । सृजन प्रयोजनों के लिए साथियों का सहयोग न जुट पाते हुए भी सुधार संभावना के लिए एकाकी साहस संजाये रह सकें, उल्टे को उलटकर सीधा कर देने की योजना बनाते और कार्य करते हुए अडिग बने रहें । गतिशीलता में कमी न आने दें, ऐसे व्यक्तियों को महामानव देवदूत कहा जाता है, पर वे यदा कदा ही प्रकट होते हैं । उनकी संख्या भी इतनी कम रहती है कि व्यापक निराशा को हटाने में उन प्रतिभाओं का जितना योगदान मिल सकता था उतना मिल नहीं पाता । आज जनसाधारण का मानस ऐसे ही दलदल में फँसा हुआ है । होना तो यह चाहिए था कि अनौचित्य के स्थान पर औचित्य को प्रतिष्ठित करने के लिए साहसिक पुरुषार्थ जगता, पर लोक मानस में घटियापन भर जाने से उस स्तर का उच्चस्तरीय उत्साह भी तो नही उभर रहा है । अवाँछनीयता को उलट देने वाले ईसा, बुद्ध, गांधी, लेनिन जैसी प्रतिभायें भी उभर नहीं रही हैं ।

इन परिस्थितियों में साधारण जनमानस का निराशाग्रस्त होना स्वाभाविक है । यहाँ समझ यह लेना चाहिए कि निराशा ही हल्के दर्जे की बीमारी नहीं है, वह जहाँ भी जड़ जमाती है, वहाँ घुन की तरह मजबूत शहतीर को भी खोखला करती जाती है । निराशा अपने साथ हार जैसी मान्यता संजोये रहती है, खीझ और थकान भी उसके साथ जुड़ती हैं । इतने दबावों से दबा हुआ आदमी स्वयं तो टूटता ही है अपने साथ वाले दूसरों को भी तोड़ता है । इससे शक्ति का अपहरण होता है, जीवनी-शक्ति जबाव दे जाती है, तनाव बढ़ते जाने से उद्विग्नता बनी रहती है और एसे रचनात्मक उपाय दीख नहीं पड़ते जिनका आश्रय लेकर तेल बहाव वाली नाव को खेकर पार लगाया जाता है । निराश व्यक्ति जीत की संभावना को नकारने के कारण जीती बाजी हारते हैं । निराशा न किसी गिरे को ऊँचा उठने देती है और न प्रगति की किसी योजना को क्रियान्वित होते देती है ।

अस्तु, आवश्यकता है कि निराशा को छोटी बात न मानकर उसके निराकरण का हर क्षेत्र में प्रयत्न करते रहा जाय । इसी में सब की सब प्रकार भलाई है । उत्साह और साहस जीवित बने रहें तभी यह संभव है कि प्रगति प्रयोजनों को कार्यान्वित कर सकना संभव हो सके। उज्ज्वल भविष्य की संरचना को ध्यान में रखते हुए जहाँ भी निराशा का माहौल हो, उसके निराकरण का हर संभव उपाय करना चाहिए । निराकरण तभी संभव है, जब उज्ज्वल भविष्य की आशा भरी कल्पनायें करते रहने का आधार खड़ा किया जाता रहे ।

समय की रीति-नीति में अवांछनीयता जुड़ी होने की बात बहुत हद तक सही है पर उसका उपचार यही है कि प्रतिरोध में समर्थ चिंतन और पुरुषार्थ के लिए जन-जन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचार-शक्ति को उत्तेजित किया जाय । उज्जवल भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान देने और उन्हें समर्थ बनाने के लिए जिस मनोवृत्ति को उत्साह पूर्ण प्रश्रय मिलना चाहिए, उसके लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की जाय । इस संबध में जन-जन को विश्वास दिलाने के लिए एक समर्थ और व्यापक प्रयास को समुचित विस्तार दिया जाय ।

समय-समय पर ऐसी परिस्थितियों में मूर्धन्य जनों ने ऐसे ही प्रयत्न किये हैं और जनमानस पर छाई हुई निराशा का निवारण पांचजन्य उद्घोष जैसे प्रयासों से सम्पन्न भी किया है, निराशा को आशा में, उपेक्षा को पुरुषार्थ में बदल देना नये आधारों को लेकर सृजनात्मक साहस को उत्तेजना देना युग मनीषियों का काम है । इसमें सहयोग विचारशील स्तर के हर व्यक्ति को देना चाहिए।

ऐसे अनेकानेक प्रकरण इतिहास में भरे पड़े हैं । हनुमान के नेतृत्व में रीछ-वानरों का समुदाय समुद सेतु बाँधने और लंकादमन की विजयश्री का विश्वास लेकर इस प्रकार उमगा कि उसने दुर्दान्त दानवों को चकित और परास्त कर दिया । गोवर्धन पर्वत उठा सकने का विश्वास मानव की गहराई तक जमा लेने के उपरान्त ही ग्वाल-बाल कृष्ण के असंभव लगने वाले प्रयास को परिपूर्ण करने में जुट गये । एक उंगली के इशारे पर ग्वाल-वालों द्वारा लाठियों के सहारे गोवर्धन पर्वत उठाये जाने की कथा आज भी हर किसी को प्रेरणा देती है, उसे ऐतिहासिक विश्वस्त घटना के रूप में ही मान्यता मिल गई है ।

फ्रांस की **"जोन ऑफ आर्क"** नामक एक किशोरी ने उस समूचे देश में स्वतन्त्रता की एक ऐसी ज्योति प्रज्ज्वलित कराई कि दमित जनता दीवानी होकर उठ खड़ी हुई और पराधीनता की जंजीरें टूट कर रहीं । लेनिन ने रूस के जन-मानस में अपने ढंग का उल्लास भरा प्राण ही फूंक दिया था, जिसमें सफलता के विश्वास का गहरा पुट था । अन्य क्रांतियाँ भी इसी आधार पर सफल होती रही हैं ।

बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन में तत्कालीन जनसमुदाय को उज्ज्वल भविष्य का एक मात्र आधार बताया गया। जिन्होंने उसे समझा वे लाखों की संख्या में भिभु-भिक्षुणियों के रूप में जीवनदानी बन कर साथ हो लिए और न केवल भारत-एशिया वरन् समूचे संसार में उस समय की चलती हवा को उलट कर सीधा कर देने में सफलता प्राप्त कर गये । गांधी का सत्याग्रह तो कल-परसों की घटना है । आन्दोलनों के दिनों में एक निश्चित माहौल बन गया था कि **'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और उसे लेकर रहेंगे '** इस विश्वास के आधार पर ही असंख्यों ने गोली, जेल और बर्बादी के लिए बढ़-चढ़कर आहुति दी ।

अर्जुन का मन हारा हुआ था वह युद्ध न लड़ने के लिए अनेकों तर्क प्रस्तुत कर रहा था । कृष्ण ने अनेक तर्क सुनने के बाद एक राम-वाण का प्रयोग किया, उन्होंने कहा-'कौरवों को तो मैंने पहले ही मार रखा है, वे तो मृतकवत हैं । तू तो निमित्त मात्र बनने की भूमिका निभा और विजयश्री का वरण कर ।' अजुर्न को कृष्ण के वचनों पर पूर्ण विश्वास था, वह सभी उलझनों का परित्याग करके, मोह-मुक्त होकर तत्काल ही युद्ध में प्रवृत्त हो गया।

सम्प्रदायों के जन्मदाता भी अपने प्रतिपादनों पर अनुयायियों का सुदृढ़ विश्वास जमाने के उपरान्त ही असंख्यों का असाधारण सहयोग एकत्रित करने में समर्थ हुए थे । अध्यात्म मार्ग के मूर्धन्य पुरुष अपने पवित्र चरित्र और कष्टसाध्य तप-साधाना की अग्नि-परीक्षा में उत्तीर्ण होकर ही इस स्थिति में पहुँचे थे कि उनके प्रतिपादनों को आप्त-वचन मानते हुए शिरोधार्य किया जा सके ।

आज ध्वंस को सृजन में बदलने के लिए अनौचित्य को औचित्य का अंकुश स्वीकार कराने के लिए इसी प्रकार का जनमानस विनिर्मित करना पड़ेगा जो भय, आतंक, अशुभ और विनाश की मानसिकता से उबारे और आवश्यक परिवर्तन कर सकने की शक्ति पर सबका विश्वास जमा सके । साथ ही भविष्य की संभावना के सम्बन्ध में असमंजस को छोड़कर इस विश्वास को पूरी तरह हृदयंगम कराये कि औचित्य-अनौचित्य पर विजय प्राप्त कर सके । ऐसा समय अब आ गया है इस विश्वास का आधार तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरणों की शृंखला ढूँढ़-ढूँढ़ कर नियोजित किया जा सकता है । साथ ही यदि उसमें ईश्वर की इच्छा, महाकाल की प्रेरणा एवं सुनिश्चित संभावना बताने वाली उच्चस्तरीय मान्यता का पुट लग सके तो इसे सोने के साथ सुगन्ध मिलने जैसे सुयोग की उपमा दी जा सकेगी ।

इस संदर्भ में इक्कीसवीं सदी के अधिक सुखी समुन्नत होने की किम्वदन्ती को सुनिश्चित संभावना का स्थान मिल सके तो इसका परिणाम इस रूप में सामने आकर रहेगा कि जो अवांछनीयतायें इन दिनों चल रही हैं उनके उलट जाने और सुखद सभावनाओं का पुण्य प्रभात उदय होने की बातें लोगों के मन में जमती चली जायेंगी । उसकी परिणति यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

होकर ही रहेगी कि लोग अनुचित को छोड़ने और उचित को अपनाने में बुद्धिमत्ता समझें और समय रहते श्रेय-संभावनाओं के भागीदार होने में अपनी अग्रगामी भूमिका निभाते हुए अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करने के लिए अधिक तत्परता के साथ कटिबद्ध होने पर अपने को गौरवान्वित अनुभव करने लगें ।

प्रस्तुत समस्यायें सुलझने ही जा रही हैं

कोई समय था जब घर-घर में अंधविश्वासों की भरमार थी । भूत-प्रेत, टोना-टोटका घर-घर में चर्चा के विषय बने रहते थे । कोई किसी पर जंत्र-मंत्र करा रहा है, किसी ने किसी पर जादू करा दिया है, यह चर्चा घरों में किसी न किसी के मुँह से सुनने को मिलती रहती थी । संदेह और आशंका का भय, पारस्परिक कलह और विद्वेष का कारण बना रहता था ।

कुछ धूर्तों ने इस विडम्बना को अपना व्यवसाय बना लिया था । छोटी बीमारियों को किसी भूत-पलीत की करतूत मान लिया जाता था और जिस-तिस पर आरोप लगा दिया जाता था कि उसने यह टोना-टोटका कराया है । भोले लोग इन बातों पर विश्वास भी कर लेते थे और तिल का ताड़, राई का पहाड़ बन जाता था । आये दिन परस्पर कलह, संदेह, अन्धविश्वास और विग्रह खड़े होते रहते थे । झाड़-फूक करने वाले इसी बहाने अपना अच्छा खासा धन्धा चला लेते थे । जहाँ शांतिपूर्वक रहना चाहिए था और कोई कारण न होने पर दुर्भाव का कोई आधार नहीं बनना चाहिए था, वहाँ भी, छोटे-मोटे गाँवों तक में भी संदेह, अविश्वास और दुर्भाव का वातावरण बन जाता था । आग में ईंधन पड़ने पर और भी बढ़ोत्तरी होती है । कौतुकी भी मनोरंजन हेतु किन्हीं किम्बदंतियों को तिल से ताड़ बना दिया करते थे और उसी बहाने किसी न किसी से कुछ न कुछ ठग लिया करते थे ।

यह अविश्वास कहाँ से उपजता था और अब न जाने कहाँ चला गया, इस पर आश्चर्य होता है । नासमझी ही बात का बतंगड़ बनाती थी । समझदारी का उद्भव होते ही वह सारा जाल-जंजाल इस तरह तिरोहित हो गया, मानो गधे के सिर कभी सींग उगे ही नहीं थे ।

ऐसी ही कुछ भ्रान्तियां मनुष्य को अपने सम्बन्ध में अभी भी होती हैं । शरीर में आये दिन बीमारियां होती रहती हैं और उनके इलाज उपचार के लिए नित्य नयी औषधियों का प्रयोग होता रहता है । इतने पर भी यह विवाद बना रहता है कि इनमें से कौन-सी लाभदायक सिद्ध हुई और कौन-सी हानिकारक । एक रोगी के लिए जो चिकित्सा उपयोगी, हुई वही दूसरे रोगी के उसी रोग में हानिकारक सिद्ध होती देखी जाती है । आये दिन चिकित्सकों एवं औषधियों की अदला बदली इसीलिए होती रहती है । यह सिलसिला मुद्दतों से चल रहा है पर अभी तक किसी एक निश्चय पर पहुँचना सम्भव न हो सका ।

इतने दिनों बाद अब एके सही निष्कर्ष हाथ लगा है कि मन का शरीर के प्रत्येक पुर्जे पर अधिकार है । यदि मन को नियंत्रित और सन्मार्गगामी बनाया जा सके, तो शरीर के सभी कल-पुर्जे अपना-अपना काम सही रीति से करने लगते हैं और बीमारियों की जड़ कट जाती है। इसके विपरीत यदि चिन्तन का क्रम उलटा चलता रहे, कुविचार मस्तिष्क पर छाये रहें, तो शरीर में कोई स्थानीय व्यथा न होने पर भी कल्पनाजन्य अनेकों अव्यवस्थाएँ उठ खड़ी होती हैं और दवाओं में सिर्फ वही थोड़ा-बहुत काम करती हैं, जिस पर कि विश्वास गहरा होता है । इससे प्रतीत होता है कि बीमारियों की जड़ तो मन के भीतर रहती है । शरीर में तो उनका आभास भर होता है । यदि सरल,सौम्य और सदभाव पूर्ण विचार बनें रहें, तो बीमारियों की जड़ तो मन के भीतर रहती है । शरीर में तो विचार बने रहें, तो बीमारियों का जो प्रकोप आये दिन बना रहता है, उनका अस्तित्व ही न रहे । यह तथ्य यदि समय रहते लोगों को पहले ही अवगत हो गया होता, तो हर कोई अपना इलाज आप कर लेता और उसके लिए जहाँ-तहाँ भटकने और निराश रहने की आवश्यकता न पड़ती ।

यही बात खिन्नता, उद्विग्नता के सम्बन्ध में भी है। लोग प्रतिकूल परिस्थितियों को चिन्ताओं, आशंकाओं और प्रतिकूलताओं का कारण मानते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि उन्हीं परिस्थितियों में, उतने ही साधनों में, अनेक लोग प्रसन्न रहते और सन्तोषपूर्वक जीवन-यापन करते हैं। प्रतिकूलताएँ अनुभव करने में चित्त की प्रवृतियां ही प्रधान भूमिका निभाती हैं । परिस्थितियों को बदलने के लिए भाग-दौड़ करने की अपेक्षा, यदि मन को वेतुकेपन की रीति-नीति को ही सुधार लिया गया होता, तो हर स्थिति को अपने अनुकूल बन जाने में कोई बड़ी कठिनाई न पड़ती । अपनी गलती को दूसरों के सिर इसीलिए मढ़ा जाता है । यदि कुटेव अभ्यास में न घुस पड़ी होती, तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सरलता और सज्जनता का सौम्य जीवन जीते हुए हर व्यक्ति अपनी वर्तमान परिस्थितियों को सुधार लेता है । गलती सुधर जाने पर, जो प्रतिकूलताएँ चारों ओर घिरी दीखती है, उनमें से एक भी घिरी न दीख पड़ती ।

इन्द्रियों का दुरुपयोग कठिनाइयों का निमित्त कारण बनता है, यदि इस मोटे तथ्य को लोगों ने हृदयंगम कर लिया होता, तो इच्छा-आकांक्षाओं को पूरा करने की दौड़-धूप न करनी पड़ती, मात्र संयम-साधना से ही अधिकांश समस्याएँ सुलझ गयी होतीं । यदि स्वादेन्द्रिय पर काबू रखा जाता, तो अनावश्यक अभक्ष्य खाने की ललक न उठती और पेट के संतुलित बने रहने पर पाचन-तंत्र में कोई व्यतिक्रम खड़ा न होता । कामुकता, मानसिक विकार है । लोग इसे शारीरिक मांग या आवश्यकता मानते है, जो कि सही नहीं है । यदि इस मोटे सिद्धान्त को समझ लिया जाय, तो फिर कामुकताजन्य जो अनेक अनाचार दीख पड़ते है, उनमें से एक भी कहीं दीख न पड़ता । नर-नारी मिल-जुलकर उन उपयोगी और महत्त्वपूर्ण कामों में लगे होते, जिससे सुविधाओं की कमी न रहती और जिन अनौचित्यों का आये दिन सामना करना पड़ता है, उनसे कोई भी किसी को हैरान-परेशान न कर रहा होता । आँख, कान, नाक, इन्द्रियों में से जिन्हें क्रियाशील कहा जाता है यदि उनके प्रयोग से पहले ही यह विचार कर लिया जाता कि औचित्य और अनौचित्य में क्या अन्तर होता है, और क्या अपनाने योग्य है, क्या अपनाने योग्य नहीं, तो मस्तिष्क द्वारा उलटी दिशा अपनाने और उसके फलस्वरूप कोई भी अहितकर प्रयास करने के लिए कदम न बढ़ता । फिर अच्छे-खासे सुख-शांति भरे जीवन को विद्रूप बनाने की किसी को भी आवश्यकता न पड़ती ।

उपलब्ध वस्तुओं को ठीक प्रकार प्रयुक्त करना मनुष्य की बुद्धिमानी का प्रथम चिन्ह है । जीवनचर्या के साथ जुड़े हुए मन को यदि सबसे अच्छा साधन माना गया होता और उसके सदुपयोग-दुरुपयोग का आरंभ से ही ध्यान रखा गया होता, तो सदा-सर्वदा हर किसी को हँसती-हँसाती जिन्दगी जीने का अवसर मिला होता । जिन विग्रहों और अनाचारों का आये दिन सामना करना पड़ता है, उनमें से एक भी हैरान करने के लिए सामने न आते। इस संसार में ऐसी एक भी कठिनाई नहीं है, जिसका बुद्धिमत्ता अपनाने पर समाधान न खोजा और निवारण-निराकरण का मार्ग न निकाला जा सके । यह संसार भगवान का सुरम्य उद्यान है । उसमें हर दिशा में, हर प्रकार की सुविधाएँ भी भरी पड़ हैं । जहाँ कहीं प्रतिकूलतायें दीख पड़ती हैं, वहाँ समझना चाहिए कि चिन्तन में कहीं कोई गड़बड़ी पड़ गयी है । यदि उसी खोट को ढूँढ़ लिया जाय तो वह कारण सहज ही समझ में आ सकता है, जो जीवन के सुख भरे पथ को कंटकमय बनाता है । अगले दिनों मनुष्य अपने चिन्तन को सही करने जा रहा है और साथ ही उन सभी समस्याओं से पीछा भी छुड़ाने की तैयारी कर रहा है, जो आज हैरानी का वातावरण बनाये हुए है ।

अन्य मनीषियों की तरह प्रस्तुत हैरानी और राजरोग (अनावृष्टि, अतिवृष्टि, युद्ध, भूकम्प, ज्वालामुखी, विस्फोट, महामारी) का मूल कारण भगवान आत्रेय ने भी चरक संहिता के 'जनपदो ध्वंसनीय विमान' शीर्षक विभाग में अर्ध बतलाया है उन्होंने लिखा है कि ऐसे रोगों एव उत्पातों का मूल कारण चार वस्तुएँ है - वायु, जल, देश और काल । ये जब बिगड़ खड़े होते है तो बड़े-बड़े उत्पात होने लगते हैं । ये क्यों बिगड़ उठते है इसके सम्बन्ध में भगवान आत्रेय अपने शिष्य अग्निवेश से कहते है

'हे अग्निवेश, ऊपर बताये हुये वायु आदि में जो विकार उत्पन्न होते हैं गड़बड़ मचती है उसका मूल कारण अधर्म है और उस अधर्म का कारण अपने पहले किये हुये कर्म हैं। इन दोनों का मूल कारण है प्रज्ञापराध अर्थात 'बुद्धि का बिगड़ जाना' । सारांश यह है कि जब कुशिक्षा से बुद्धि बिगड़ जाती है तब मनुष्य अधर्म पर उतर पड़ते हैं और अधर्म बढ़ने से ये उत्पात होते हैं । इसका विशेष विवरण यह है कि जनता अधिकांश में प्रधान पुरुषों का अनुसरण करती है, अतः ऐसे लोग जो देश, नगर, हाट-बाजार और देहात के प्रधान होते है, जब धर्म का उल्लंघन करके प्रजा को अधर्म में प्रवृत्त करने लगते है, तब उनके सहारे चलने वाले सभी छोटे-बड़े कर्मचारी, इतना ही नहीं शहरी और देहाती लोग और व्यपार धन्धे वाले सभी उस अधर्म को बढ़ाने लगते हैं । तब वह अधर्म इतना बढ़ जाता है कि बलात् धर्म को दवा देता है। जब धर्म लुप्त हो जाता है तब उन लोगों को देवता भी छोड़ देते है इस प्रकार जिनका धर्म लुप्त हो जाता है, जिनमें अधर्म प्रधान हो जाता है और देवता जिनकी सहायता नहीं करते, उनके यहाँ ऋतुएँ बिगड़ उठती हैं । परिणाम यह होता है कि वर्षा समयानुसार नहीं होती, वायु अच्छी तरह नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चलती, पानी सुख जाता है और औषधियाँ अपना स्वभाव छोड़कर विकारी हो जाती हैं । तब एक दूसरे के संन्सर्ग से, खान-पान के दोष से देश उजड़ते हैं ।'' इतना ही नहीं, वे आगे कहते हैं -

''शस्त्रों के द्वारा देश उजड़ने (युद्ध महायुद्ध) का कारण भी अधर्म ही है । जिन लोगों में रोष,मोह और अभिमान बहुत बढ़ जाते हैं, वे दुर्बलों का अपमान करके अपने-पराये सब के मारने को शस्त्र चलाते हैं, दूसरों पर चढ़ाई करते हैं । तब वे राक्षसों आदि द्वारा या किसी अन्य प्रकार से नष्ट हो जाते हैं । इसलिये यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि **''प्रागपि चाधर्माट्टते नाशुभात्पत्तिरभूत्''** अर्थात् पुराने समय में भी बिना अर्धम के कभी अशुभ की उत्पत्ति नहीं हुयी ।''

इसके बाद महर्षि ने बुद्धि के बिगड़ने के कारण बतला इस परिस्थिति के सुधारने का उपाय भी बतलाया है, क्योंकि एक चिकित्सक के नाते उनको सभी प्रकार के रोगों का इलाज बतलाना आवश्यक था । महर्षि चरक ने राष्ट्र के उद्धार के ये उपाय बतलाये हैं ।

सत्यम्, भूतेदया, दानं, बलयो देवतार्चनम् ।
सद्वृत्तरयानुवृत्तिश्च प्रशमो गुप्तिरात्मनः ॥
हितं जनपदानांच शिवानामुपसेवनम् ।
सेवनं ब्रह्मचर्यस्य तथैव ब्रह्मचारिणाम् ॥
संकथा धर्मशास्त्राणां महर्षीणां जितास्म्मनाम् ।
धार्मिकैः सात्त्विकैर्नित्यं सहास्या वृद्धसंमतैः ॥
इत्येतद् भषजं प्रोक्तमायुषः परिपालनम् ।
येषामनिवते मृत्युस्तस्मिन् काले सुदारुणे ॥

अर्थात् -(१) सत्य (२) प्राणियों पर दया (३) दान (४) देवताओं के लिए भेंट और उनका पूजन (५) सदाचार की प्रवृत्ति (६) शांति (७) अपनी रक्षा (८) देशवासियों का भला (९) उत्तम आचार-विचार तथा नीति से उपार्जित पदार्थों का सेवन (१०) ब्रह्मचर्य और ब्रह्मचार्यो का सेवन (११) धर्मशास्त्रों तथा मन को विजय करने वाले महर्षियों की कथा (१२) वृद्धों तथा सम्मानित सात्विक धर्मात्माओं के साथ सदा बैठना-उठना, ये सब बातें ऐसे दारुण समय में आयु (जीवन) की रक्षा करने वाली होती हैं ।

वर्तमान समय में यदि उपर्युक्त सद्वृत्तियाँ मानवीय जीवन का अंग बन सकें, तो निश्चय ही आज के संकट से छुटकारा पाया जा सकना सम्भव है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋषि सत्ता की भविष्यवाणी

सूर्योदय हो चला अब प्रकाश फैलना ही बाकी है

सूर्योदय पूर्व दिशा से होता है । उषा काल की लालिमा उसकी पूर्व सूचना लेकर आती है । कुक्कुट उस पुण्य वेला की अग्रिम सूचना देने लगते हैं । तारों की चमक और निशा कालिमा की सघनता कम हो जाती है । इन्हीं लक्षणों से जाना जाता है कि प्रभात काल समीप आ गया और अब सूर्योदय होने ही वाला है ।

नवजागरण का युग परिवर्तन का सूर्योदय भी इसी क्रम से होगा । यह सार्वभौम प्रश्न है, विश्व मानव से सम्बन्धित समस्या है । एक देश एक जाति की नहीं । फिर भी उदय का क्रम पूर्व से ही चलेगा । कुछ चिरन्तन विशेष परम्परा ऐसी चली आती है कि विश्व मानव ने जब भी करबट ली है तब उसका सूत्र संचालन सूर्योदय की भाँति ही पूर्व दिशा से हुआ है । यों पाश्चात्य देशवासी भारत को 'पूर्व' मानते हैं, पर जहाँ तक आध्यात्मिक चेतना का प्रश्न है निस्संदेह यह श्रेय सौभाग्य इसी देश को मिला है । वह विश्व की चेतनात्मक हलचलों का उत्तरदायित्व अग्रिम पंक्ति में खड़ा होकर वहन करे, इस बार भी ऐसा ही होने जा रहा है । युग परिवर्तन का प्रकाश इसी पुण्य भूमि से आरम्भ हो चुका, अब वह कुछ ही समय में विश्वव्यापी बनने जा रहा है ।

विश्व जड़ और चेतन दो भागों में विभक्त है । जड़ प्रकृति से सम्बन्धित प्रगति को सम्पदा के रूप में देखा जा सकता है और चेतन प्रकृति के विकास को विचरणा एवं भावना के रूप में समझा जायेगा । सुविधा और सम्पदा की अभिवृद्धि भौतिक प्रगति कहलाती है और चेतना की उत्कृष्टता को आत्मिक उत्कर्ष कहा जाता है । जहाँ तक भौतिक प्रगति का सम्बन्ध है, वहाँ तक उसके लिए राजतंत्र, अर्थतंत्र, विज्ञान तंत्र और शिक्षा तंत्र का उत्तरदायित्व है कि वे अधिकाधिक सुविधा एवं सम्पदा उत्पन्न करके सुख-साधनों को आगे बढ़ायें ।

आत्मिक प्रगति के लिए ज्ञान तंत्र उत्तरदायी है, इसे दूसरे शब्दों में दर्शन, धर्म, अध्यात्म एवं कला के नाम से जाना जा सकता है । चेतना की भूख इन्हीं से बुझती है, उसे इन्हीं से दिशा और प्रेरणा मिलती है । परिवर्तन एवं उत्कर्ष भी इन्हीं आधारों को लेकर सम्भव होता है । अस्तु, यह अनिवार्य है कि यह चेतनात्मक प्रगति आवश्यक हो तो ज्ञान तंत्र को प्रखर बनाना पड़ेगा । सच तो यह है कि जब कभी ज्ञान तंत्र शिथिल पड़ता है, विकृत होता है तभी व्यक्ति का स्तर लड़खड़ाता है और इस अस्त-व्यस्तता में भौतिक जगत की समस्त गतिविधियाँ उलझ जाती हैं । तत्वदर्शी सदा से यह कहते रहे हैं कि सम्पदा नहीं विचरणा प्रमुख है । यदि विचरणा सही रही तो सम्पदा छाया की तरह पीछे-पीछे फिरेगी पर यदि सम्पदा को ही सब कुछ माना गया और चेतना स्तर की उत्कृष्टता उपेक्षित की गई तो बढ़ी हुई सम्पदा दूध पीकर परिपुष्ट हुए सर्प की तरह सर्वनाश करने पर उतारू हो जायेगी । यह शाश्वत् तथ्य है, इसे इतिहास ने लाखों बार आजमाया है और करोड़ों बार आजमाया जा सकता है ।

युग परिवर्तन के जिस अभियान में हमें दिलचस्पी है वह चेतनात्मक उत्कर्ष ही है । इसके लिए ज्ञान तन्त्र को समर्थ और परिष्कृत करना पड़ेगा । इसका अर्थ यह नहीं कि भौतिक प्रगति व्यर्थ है । वह भी आवश्यक है, पर वह दूसरे लोगों का काम है, जिसे वे शक्ति भर सम्पन्न कर भी रहे हैं । सरकारें पंचवर्षीय योजनाएँ बनाती हैं । वैज्ञानिक शोध कार्यों में जुटे हुए हैं, अर्थशास्त्री व्यवसाय; उत्पादन और वितरण का तानाबाना बुन रहे हैं । सैन्य तंत्र आयुधों के निर्माण और योद्धाओं के प्रशिक्षण में लगा है । शिक्षाशास्त्री बौद्धिक क्षमता के अभिवर्धन में लगे हैं । उपेक्षित तो ज्ञात तंत्र ही पड़ा है । उस नाम पर जो खड़ा है, उसे तो विदूषकों जैसी विडम्बना ही कहा जा सकता है। धर्म के नाम पर जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कहा और किया जा रहा है, उसमें ऐसी आस्तिकता की अपेक्षा नास्तिकता भली प्रतीत होती है । ज्ञान तंत्र यदि मानवीय सद्भावनाओं और सत्यवृत्तियों के अभिवर्धन की उपेक्षा कर्मकाण्डों में ही उलझाये रहे और सातवें आसमान के सपने दिखाते रहे, कर्म को व्यर्थ और भक्ति को प्रधान कहता रहे तो उससे मानव समाज का, विश्व का कोई हित साधन न हो सकेगा । धर्म व्यवसायियों की आजीविका भले ही चलती रहे ।

नव-निर्माण के अवतरण की किरणें अगले दिनों प्रबुद्ध एवं जीवन्त आत्माओं पर बरसेंगी, वे व्यक्तिगत लाभ में संलग्न रहने की लिप्सा को लोक-मंगल के लिए उत्सर्ग करने की आन्तरिक पुकार सुनेंगे । यह पुकार इतनी तीव्र होगी कि चाहने पर भी वे संकीर्ण स्वार्थपरता भरा व्यक्तिवादी जीवन जी ही न सकेंगे । लोभ और मोह की जटिल जंजीरें वैसी ही टूटती दीखेंगी जैसे कृष्ण जन्म के समय बन्दी गृह के ताले अनायास ही खुल गये थे । यों मायाबद्ध नर कीटकों के लिए वासना और तृष्णा की परिधि तोड़ कर परमार्थ के क्षेत्र में कदम बढ़ाना लगभग असम्भव जैसा लगता है । पेट और प्रजनन की विडम्बनाओं के अतिरिक्त वे क्या आगे की ओर कुछ बात सोच या कर सकेंगे ? पर समय ही बतायेगा कि इसी जाल जंजाल में जकड़े हुए वर्गों में से कितनी प्रबुद्ध आत्माएँ उछल कर आगे आती हैं और सामान्य स्थिति में रहते हुए कितने ऐसे अद्भुत क्रिया-कलाप सम्पन्न करती हैं, जिन्हें देख कर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ेगा । जन्म जात रूप से तुच्छ स्थिति में जकड़े हुए व्यक्ति अगले दिनों जब महामानवों की भूमिका प्रस्तुत करते दिखाई पड़ें तो समझना चाहिए कि युग परिवर्तन का प्रकाश एवं चमत्कार सर्वसाधारण को प्रत्यक्ष हो चला ।

निस्संदेह युग परिवर्तन का प्रधान आधार भावनात्मक नव-निर्माण ही होगा । जन मानस में इन दिनों झूठी मान्यताओं की भरमार है । सोचने की सही पद्धति एक प्रकार से विस्मृत ही हो गयी है । स्थिति का सही मूल्यांकन कर सकने वाला दृष्टिकोण हाथ से चला गया है । उसके स्थान पर भ्रान्तियों की चमगादड़ें विचार भवन के गुम्बदों में उलटी लटकी पड़ी हैं । इस सारे कूड़े-करकट को एक बार झाड़-बुहार कर साफ करना होगा और चिन्तन की इस परिष्कृत प्रक्रिया को जन मानस में प्रतिष्ठापित करना पड़ेगा जो मानवीय गरिमा के अनुरूप है । किसी धर्म सम्प्रदाय, सन्त या ग्रन्थ को बुद्धि बेच कर किसी का भी अन्धानुकरण न करने की बात हर किसी के मन में घुसती चली जायेगी और जो न्याय, विवेक, सत्य एवं तथ्य की कसौटियों पर खरा सिद्ध होगा, उसी को स्वीकारने की प्रवृत्ति बढ़ेगी । इस आधार के प्रबल होते ही न अनैतिकताओं के लिए कोई स्थान रह जायेगा और न झूठी मान्यताओं के लिए । निर्मल और निष्पक्ष चिन्तन किसी भी देश, धर्म या वर्ग के व्यक्ति को उसी स्थान पर पहुँचा देगा जिसके लिए भारतीय अध्यात्म अनादि काल से अंगुलि निर्देश करता रहा है ।

यह हलचलें जन-जन में दृष्टिगोचर होंगी । समुन्नत आत्मा निजी सुख-सुविधाओं को तिलांजलि देकर विश्व के भावनात्मक नव-निर्माण को इस युग की सर्वोत्तम साधना, उपासना, तपश्चर्या एवं आवश्यकता समझते हुए इसी में सर्वतो भावेन संलग्न होंगी । साथ ही सामान्य स्तर के व्यक्तियों से इतना विवेक तो अनायास ही जागृत होगा कि वे अन्धकार और प्रकाश का अन्तर समझ सकें । अनुचित के लिए दुराग्रह छोड़ कर न्याय और विवेक के आधार पर प्रतिपादित उचित को स्वीकार कर सकें । इस प्रकार उभय पक्षीय सुयोग संयोग उस प्रयोजन को अग्रगामी बनाता चला जायेगा जो युग परिवर्तन का मूल-भूत आधार है ।

आज की स्थिति को देखते हुए यह दोनों ही कार्य कठिन दीखते हैं । धर्म-विडम्बना के सस्ते प्रलोभनों को तिरस्कृत कर धर्म प्रेमी लोग कष्ट साध्य परमार्थ में प्रवेश करेंगे यह कठिन है । बुद्धिजीवी अपनी अच्छी खासी सुविधाओं का परित्याग कर लोक-मंगल के लिए दर-दर ठोकरें खायेंगे यह भी कठिन ही दीखता है, पर समय यह भी कराके छोड़ेगा । रीछ, वानर अपने प्राण हथेली पर रख कर मौत से लड़ने गये थे । बुद्ध के ढाई लाख अनुयायी यौवन की उमंगों को कुचलते हुए भिक्षु भिक्षुणी बनने की जटिल प्रक्रिया स्वीकार करने को सहमत हुए थे । गान्धी की पुकार पर लाखों ने अपनी बर्बादी को स्वीकार किया था । उसी प्रकरण को यदि इतिहास फिर दुहराये तो इसे न कठिन मानना चाहिए और न असम्भव । जो भूत काल में होता रहा है उसकी पुनरावृत्ति को कठिन या जटिल मानने का कोई कारण नहीं । समय की पुकार इस की साध्य प्रक्रिया को भी पूरी करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहेगी । जीवन्त और जागृत आत्माओं का एक बड़ा वर्ग निकट भविष्य में आगे आवेगा और ज्ञान तंत्र का ऐसा विशालकाय शस्त्रागार खड़ा करेगा जिसकी सहायता से अनाचार की लंका को ध्वस्त किया जा सके ।

आज का जन मानस मूढ़ता और दुष्टता की असुर प्रवृत्तियों में बेतरह चिपका दीखता है । नैतिकता को उपहासास्पद मूर्खता माना जाता है । स्वेच्छाचार और अनाचार का बोलबाला है । नीति और न्याय की, धर्म और ईश्वर की बातें तो बहुत कही सुनी जाती हैं, पर व्यवहार में उन्हें उतारना असम्भव कहा जाता है । आज की यह कठोरता कल बदलेगी और सर्वसाधारण को सही सोचने और सही अपनाने की ललक उठेगी । यह उभार लोक मानस में आने ही वाला है । उस स्थिति में भावनात्मक नव-निर्माण उतना कठिन न रहेगा जितना कि आज दीखता है । ज्ञान तंत्र का उपहास नहीं उड़ाया जायेगा वरन् उसका स्वागत समर्थन आशातीत रूप में देखने को मिलेगा ।

धर्म अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होगा । उस के प्रसार प्रतिपादन का ठेका किसी वेश या वंश विशेष पर न रह जायेगा । सम्प्रदायवादियों के डेरे उखड़ जायेंगे, उन्हें मुफ्त के गुलछर्रे उड़ाने की सुविधा छिनती दीखेगी तो कोई उपयोगी धंधा अपना कर भले मानसों की तरह आजीविका उपार्जित करेंगे, तब उत्कृष्ट चरित्र, परिष्कृत ज्ञान एवं लोक-मंगल के लिए प्रस्तुत किया गया अनुदान ही किसी को सम्मानित या श्रद्धास्पद बना सकेगा । पाखण्ड पूजा के बल पर जीने वाले उलूक उस दिवा प्रकाश से भौचक्के होकर देखेंगे और किसी कोटर में बैठे दिन गुजारेंगे । अज्ञानान्धकार में जो पौ बाहर रहती थी उन अतीत की स्मृतियों को वे ललचाई दृष्टि से सोचते चाहते तो रहेंगे, पर फिर समय लौटकर कभी आ न सकेगा ।

अगले दिनों ज्ञान तंत्र ही धर्म तंत्र होगा । चरित्र-निर्माण और लोक-मंगल की गतिविधियाँ धार्मिक कर्मकाण्डों का स्थान ग्रहण करेंगी, तब लोग प्रतिमा पूजक देव मन्दिर बनाने की तुलना में पुस्तकालय, विद्यालय जैसे ज्ञान मन्दिर बनाने को महत्त्व देंगे । तीर्थ यात्राओं और ब्रह्मभोजों में लगने वाला धन लोक शिक्षण की भाव भरी सत्प्रवृत्तियों के लिए अर्पित किया जायेगा । कथा पुराणों की कहानियाँ तब उतनी आवश्यक न मानी जायेंगी, जितनी जीवन समस्याओं को सुलझाने वाली प्रेरणाप्रद अभिव्यंजनाएँ । धर्म अपने असली स्वरूप में निखर कर आयेगा और उसके ऊपर चढ़ी हुई सड़ी-गली केंचुली उतर कर कूड़े-करकट के ढेर में जा गिरेगी ।

ज्ञान तंत्र वाणी और लेखनी तक ही सीमित न रहेगा वरन् उसे प्रचारात्मक, रचनात्मक एवम् संघर्षात्मक कार्यक्रमों के साथ बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक क्रांति के लिए प्रयुक्त किया जायेगा । साहित्य, संगीत कला के विभिन्न पक्ष विविध प्रकार से लोक शिक्षण का उच्चस्तरीय प्रयोजन पूरा करेंगे । जिनके पास प्रतिभा है, जिनके पास सम्पदा है, वे उससे स्वयं लाभान्वित होने के स्थान पर समस्त समाज को समुन्नत करने के लिए समर्पित करेंगे ।

(१) एकता, (२) समता, (३) ममता और (४) शुचिता नव-निर्माण के चार भावनात्मक आधार होंगे ।

एक विश्व, एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक आचार, एक संस्कृति के आधार पर समस्त मानव प्राणी एकता के रूप में बधेंगे । विश्व बंधुत्व की भावना उभरेगी और वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श सामने रहेगा, तब देश, धर्म, भाषा, वर्ण आदि के नाम पर मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवार खड़ी न की जा सकेगी । अपने वर्ग के लिए नहीं समस्त विश्व के हित साधन की दृष्टि से समस्याओं पर विचार किया जायेगा ।

जाति या लिंग के कारण किसी को ऊँचा या किसी को नीचा न ठहरा सकेंगे । छूत-अछूत का प्रश्न न रहेगा । गोरी चमड़ी वाले काले लोगों से श्रेष्ठ होने का दावा न करेंगे और ब्राह्मण हरिजन से ऊँचा न कहलायेगा । गुण, कर्म, स्वभाव, सेवा एवं बलिदान ही किसी को सम्मानित होने के आधार बनेंगे, जाति या वंश नहीं । इसी प्रकार नारी से नर श्रेष्ठ है, उसे अधिक अधिकार प्राप्त हैं, ऐसी मान्यता हट जायेगी । दोनों के कर्त्तव्य और अधिकार एक होंगे । प्रतिबन्ध या मर्यादाएँ दोनों पर समान स्तर की लागू होंगी । प्राकृतिक सम्पदाओं पर सबका अधिकार होगा । पूँजी समाज की होगी । व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार उसमें से प्राप्त करेंगे और सामर्थ्यानुसार काम करेंगे । न कोई धनपति होगा न निर्धन । मृतक उत्तराधिकार में केवल परिवार के असमर्थ सदस्य ही गुजारा प्राप्त कर सकेंगे । हट्टे-कट्टे और कमाऊ बेटे बाप के उपार्जन के दावेदार न बन सकेंगे,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह बचत राष्ट्र की सम्पदा होगी । इस प्रकार धनी और निर्धन के बीच का भेद समाप्त करने वाली समाजवादी व्यवस्था समस्त विश्व में लागू होगी । हरामखोरी करते रहने पर भी गुजछरें उड़ाने की सुविधा किसी को न मिलेगी । व्यापार सहकारी समितियों के हाथ में होगा । ममता केवल कुटुम्ब तक सीमित न रहेगी, वरन् वह मानव मात्र की परिधि लांघते हुए प्राणी मात्र तक विकसित होगी । अपना और दूसरों का दुःख-सुख एक-सा अनुभव होगा, तब न तो मांसाहार की छूट रहेगी और न पशु, पक्षियों के साथ निर्दयता बरतने की । ममता और आत्मीयता के बन्धनों में बँधे हुए सब लोग एक दूसरों को प्यार और सहयोग प्रदान करेंगे ।

शरीर, मन, वस्त्र, उपकरण सभी को स्वच्छ रखने की प्रवृत्ति बढ़ेगी । शुचिता का सर्वांगीण विकास होगा । गन्दगी को मानवता का कलंक माना जायेगा । न किसी का शरीर मैला-कुचेला रहेगा न वस्त्र । घरों को गन्दा गलीज न रहने दिया जायेगा । मनुष्य और पशुओं के मल-मूत्र को पूरी तरह खाद के लिए प्रयुक्त किया जायेगा । वस्तुएँ यथा स्थान, यथा क्रम और स्वच्छ रखने की आदत डाली जायेगी । मन में कोई छल-कपट दुर्भाव जैसी मलीनता न रखेगा ।

एकता, समता, ममता और शुचिता इन चार मूल भूत सिद्धान्तों के आधार पर विभिन्न आचार संहिताएँ, रीति, नीति, विधि-व्यवस्थाएँ, मर्यादाएँ और परम्परायें बनाई जा सकती हैं । भौगोलिक अन्य परिस्थितियों को देखते हुए उनमें हेर-फेर भी यत्किंचित होते रह सकते हैं, पर आधार उनके यही रहेंगे ।

यह ध्यान रखने की बात है कि संसार की दो ही प्रमुख शक्तियाँ हैं—एक राजतंत्र, दूसरी धर्मतंत्र । राजसत्ता में भौतिक परिस्थितियों को प्रभावित करने की क्षमता है और धर्मसत्ता में अन्तःचेतना को । दोनों को कदम से कदम मिलाकर एक दूसरे की पूरक होकर रहना होगा । यह चारा थोथा है कि राजनीति से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं । सच्ची बात यह है कि एक के बिना दूसरा अपूर्ण है । कर्त्तव्यनिष्ठ और सदाचारी नागरिकों के बिना कोई राज्य समर्थ समुन्नत नहीं हो सकता और राज्यसत्ता यदि धर्मसत्ता को उखाड़ने की ठान ले तो फिर उसके लिए कुछ अधिक करना कठिन है । राम राज्य तभी सफल रह सका, जब उस पर वशिष्ठ का नियन्त्रण था । चन्द्रगुप्त की शासन गरिमा का श्रेय चाणक्य के मार्ग-दर्शन को ही दिया जा सकता है । प्राचीन काल की यह परम्परा आगे भी चलेगी । धर्मसत्ता का स्थान पहला है, इसलिए राजसत्ता को उसका समर्थक और सहायक ही बनकर रहना चाहिए ।

धर्मों के वर्तमान स्वरूप, प्रभाव और कलेवर की सहायता लेकर हमें वर्तमान जन-मानस को परिष्कृत करते चलना चाहिए । जमे हुए ढाँचे को न तो उखाड़ने की जरूरत है और न उसकी उपेक्षा करने की । चूँकि आधार आगे भी धर्म ही रहना है, इसलिए उपयुक्त यही है कि युग-निर्माण आन्दोलन की सृजन सेना धर्म तंत्र में प्रवेश करे और परम्परागत श्रद्धा को उन मूल-भूत आदर्शों को कार्यान्वित करने में प्रयुक्त करे जिनके लिए कि तत्वदर्शियों ने यह धर्म कलेवर खड़ा किया था । इस प्रकार धर्म तंत्र के साधनों के सृजनात्मक प्रयोजन में लगाकर उसे लोक-श्रद्धा का विषय बनाये रखा जा सकेगा ।

नव-निर्माण की पृष्ठभूमि धर्म मूलक 'ज्ञान' होगा । इसी के लिए ज्ञान तंत्र खड़ा किया गया है और ज्ञान यज्ञ का महान् अभियान चलाया गया है । स्वल्प साधनों से भी वह जिस द्रुत गति के साथ बढ़ता चला जा रहा है उसे देखते हुए पूर्व से सूर्योदय होने के और उसका प्रकाश सर्वत्र फैलने की बात पर सहज ही विश्वास किया जा सकता है ।

हमारी भविष्यवाणी सतयुग की वापसी

पुरातन काल में एक अपराजित हेय दुर्दान्त दैत्य कृतवीर्य के आतंक से दसों दिशा में हाहाकार मच गया था। वह महाप्रतापी और वरदानी था । देवता और मनुष्यों में से कोई उससे लोहा ले सकने की स्थिति में न था । सभी असहाय बने जहाँ-तहाँ अपनी जान बचाते फिरते थे । उपाय ब्रह्माजी ने सोचा । भगवान् शंकर को एक प्रतापी पुत्र उत्पन्न करने के लिए सहमत किया, वही इस प्रलय दूत से लड़ सकता था । कार्तिकेय जन्मे । अग्नि ने उन्हें गर्भ में रखा । कृतिकाओं ने पाला और इस योग्य बनाया कि वह अकेले ही चुनौती देकर कृतवीर्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को परास्त कर सके । ऐसा हुआ भी और संकट टलने का सुयोग आया था ।

इस पौराणिक उपाख्यान में कितना सत्य और कितना अलंकार है, यह कहना कठिन है, पर प्रस्तुत विभीषिकाएँ सचमुच ही ऐसी हैं, जिन्हें कृतवीर्य के आतंक तुल्य ठहराया जा सके । जो सामने है उसकी परिणति महाप्रलय होने जैसी मान्यता हर विचारशील की बनती जा रही है ।

अणु युद्ध की विभीषिका किसी भी दिन साकार हो सकती है और इस धरती पर विषाक्तता के अतिरिक्त और कुछ बचने के आसार नहीं है । बढ़ती जनसंख्या के लिए निर्वाह साधन अगले दिनों भी मिलते रहें, इसकी कोई सम्भावना नहीं है । अन्न, जल, खनिज ही नहीं, शुद्ध वायु तक मिलना सम्भव न रहेगा और लोग भूख-प्यास, घुटन से संत्रस्त होकर दम तोड़ेंगे । मर्यादाओं को तोड़-मरोड़ डालने, निरत व्यक्ति का स्वास्थ्य, सन्तोष, सुरक्षा, सम्पदा सभी से वंचित होना पड़ेगा । अनाचार की मान्यता देने वाले समाज में स्नेह, सहकार और न्याय के लिए क्या स्थान रहने वाला है । विश्रृंखलित और विग्रही समाज का कोई भी सदस्य चैन से न रह सकेगा । इन परिस्थितियों का विवेचन हर क्षेत्र के मूर्धन्य विचारशील कर रहे हैं और एक स्वर में इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं कि समय रहते न चेता गया तो मनुष्य जाति को सामूहिक आत्म-हत्या के लिए बाधित होना पड़ेगा । इस प्रसंग में शास्त्रकार, दिव्यदर्शी, ज्योतिषी, भविष्य वक्ता भी अपने-अपने तक प्रमाण प्रस्तुत करते हुए यह घोषित करते हैं कि दुर्दिनों की विपत्ति वेला अब कुछ ही दिनों में आ धमकने वाली है । बढ़ते तापमान से ध्रुव पिघलने, समुद्र उफनने और हिम युग वापस लौटने जैसी चर्चाएँ आये दिन सुनने को मिलती रहती हैं । कोई चाहे तो इन परिस्थितियों की कृतवीर्य महादैत्य के समय से तुलना कर सकता है, जो किसी के भी झुकाये न झुक पा रहा है ।

ऐसे समय में अध्यात्म शक्ति ही कारगर होती रही है। विश्वामित्र का यज्ञ, जिसकी रक्षा करने राम-लक्ष्मण गये थे, सामयिक आतंक को टालने की पृष्ठभूमि बनाने के लिए ही किया गया था । दधीचि के अस्थि दान के पीछे भी यही उद्देश्य था । कार्तिकेय जैसी अध्यात्म क्षमता उत्पादित करने के प्रयत्नों के साथ किसी प्रकार संगति बिठानी हो तो प्रज्ञा परिजनों द्वारा संचालित प्रज्ञा पुरश्चरण से बैठ सकती है, जिसमें चौबीस लाख व्यक्ति एक समय पर एक विधान से वातावरण संशोधन की साधना करते हैं । इसी की एक कड़ी इस अनुभव प्रयास के साथ जुड़ती है, जिसमें एकान्तवास के साथ उग्र तपश्चर्या करने का निर्धारण है । इसकी सुखद परिणति पर हमें उतना ही विश्वास है जितना अपनी आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व पर ।

दृश्य और प्रत्यक्ष परिस्थितियों का विश्लेषण करने वालों और निष्कर्ष निकालने वालों की तुलना में हमारे आभास इस दिनों सर्वथा भिन्न हैं । लगता है, एक-एक करके सभी संकट टल जायेंगे । अणु-युद्ध नहीं होगा और यह पृथ्वी भी वैसी बनी रहेगी, जैसी अब है । प्रदूषण को मनुष्य न सम्भाल सकेगा तो अन्तरिक्षीय प्रवाह उसका परिशोधन करेंगे । जनसंख्या जिस तेजी से अभी बढ़ रही है, एक दशाब्दी में वह दौड़ आधी घट जायेगी। रेगिस्तानों और ऊसरों को उपजाऊ बनाया जायेगा और नदियों को समुद्र तक पहुँचने से पूर्व इस प्रकार बाँध लिया जायेगा कि सिंचाई तथा अन्य प्रयोजनों के लिए पानी की कमी न पड़े ।

प्रजातन्त्र के नाम पर चलने वाली धाँधली में कटौती होगी । वोट उपयुक्त व्यक्ति ही दे सकेंगे । अफसरों के स्थान पर पंचायतें शासन सम्भालेंगी और जन सहयोग से ऐसे प्रयास चल पड़ेंगे जिनकी कि इन दिनों सरकार पर ही निर्भरता रहती है । नया नेतृत्व उभरेगा । इन दिनों धर्म क्षेत्र के और राजनीति के लोग ही समाज का नेतृत्व करते हैं । अगले दिनों मनीषियों की एक नई बिरादरी का उदय होगा जो देश, जाति, वर्ग आदि के नाम पर विभाजित वर्तमान समुदाय को विश्व नागरिक स्तर की मान्यता अपनाने तथा विश्व परिवार बनाकर रहने के लिए सहमत करेंगे, तब विग्रह नहीं, हर किसी पर सृजन और सहकार सवार होगा ।

विश्व परिवार की भावना दिन-दिन जोर पकड़ेगी और एक दिन वह समय आयेगा जब विश्व राष्ट्र, आबद्ध विश्व नागरिक बिना आपस में टकराये प्रेम पूर्वक रहेंगे । मिल-जुलकर आगे बढ़ेंगे और वह परिस्थितियाँ उत्पन्न करेंगे जिसे पुरातन सतयुग के समतुल्य कहा जा सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसके लिए नव सृजन का उत्साह उभरेगा । नये लोग नये परिवेश में आगे आयेंगे । ऐसे लोग जिनकी पिछले दिनों कोई चर्चा तक न थी, वे इस तत्परता से बागडोर सम्भालेंगे मानो वे इसी प्रयोजन के लिए कहीं ऊपर आसमान से उतरे हों या धरती फोड़ कर निकले हों ।

यह हमारे स्वप्नों का संसार है । इनके पीछे कल्पनाएँ अटकलें काम नहीं कर रही हैं, वरन् अदृश्य जगत में चल रही हलचलों को देखकर इस प्रकार का आभास मिलता है जिसे हम सत्य के अधिकतम निकट देख रहे हैं ।

मरणोन्मुख प्रवाह में इस प्रकार आमूल-चूल परिवर्तन होने के पीछे उन दैवी शक्तियों का हाथ है जो दृश्यमान न होते हुए भी वातावरण बदल रही हैं और लोक चिन्तन में अध्यात्म तत्वों का समावेश कर रही हैं । महान् कार्यों के लिए किसी जादुई कलेवर वाले लोग नहीं होते । अपने जैसे ही हाड़-मांस के लोग जब दृष्टिकोण, रुझान एवं पराक्रम की दिशा बदलते हैं तो वे कुछ से कुछ बन जाते हैं ।

रीछ, वानरों में न कोई विशेष योग्यता थी न क्षमता। दैवी प्रवाह के साथ-साथ चल पड़ने के कारण वे सब कुछ से कुछ हो गये थे । हनुमान, अंगद और नल, नील जैसों ने जो पुरुषार्थ किया उन पर सहज विश्वास ही नहीं होता । पर जो आत्मशक्ति की दिव्यचेतना की क्षमता को जानते हैं उन्हें यह विश्वास करने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती कि टिटिहरी का सत्संकल्प समुद्र को सुखाने में अगस्त का सहयोग आमन्त्रित कर सकता है और असम्भव लगने वाला अण्डे लौटने जैसा कार्य सम्भव हो सकता है ।

दूसरों को विनाश दीखता है सो ठीक है, परिस्थितियों का जायजा लेकर निष्कर्ष निकालने वाली बुद्धि को भी झुठलाया नहीं जा सकता । विनाश की भविष्यवाणियों में सत्य भी है और तथ्य भी, पर हम आभास और विश्वास को क्या कहें । जो कहता है कि समय बदलेगा । घटाटोप की तरह घुमड़ने वाले काले मेघ किसी प्रचण्ड तूफान की चपेट में आकर उड़ते हुए कहीं से कहीं चले जायेंगे ।

सघन तमिस्रा का अन्त होगा । उषाकाल के साथ उभारता हुआ अरुणोदय अपनी प्रखरता का परिचय देगा । जिन्हें तमिस्रा चिरस्थायी लगती हो वे अपने ढंग से सोचें, पर हमारा दिव्य दर्शन, उज्ज्वल भविष्य की झाँकी करता है । लगता है इस पुण्य प्रयास में सृजन की पक्षधर देवशक्तियाँ प्राण-प्रण से जुट गयी हैं । इसी सृजन प्रयास के एक अकिंचन घटक के रूप में हमें भी कुछ कारगर अनुदान प्रस्तुत करने का अवसर मिल रहा है । इस सुयोग्य सौभाग्य पर हमें अतीव सन्तोष है और असाधारण आनन्द ।

भारत का भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल है

स्वतंत्रता मिलने के समय से ही भारत को संत्रस्त करने और चिन्ता में डालने वाली समस्या वेष बदल-बदल कर सामने आती रही हैं । उन्होंने क्षति भी कम नहीं पहुँचाई और वातावरण को विषाक्त बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी । इतने पर भी भगवान् को धन्यवाद ही देना होगा कि किसी भी समय ऐसी स्थिति नहीं आई जो काबू से बाहर हो गई हो और जिसने जीवन भर का संकट खड़ा किया हो ।

अभी भी वे उलझनें कम नहीं हैं और यह नहीं कहा जा सकता कि विग्रहों से निवृत्त होकर अपनी सूझबूझ और साधन-सम्पदा को प्रगति प्रयासों में पूर्णरूपेण लगाया जा सकेगा । यह परिस्थितियाँ अभी कुछ दिन और विपन्न रहेंगी। पर इतना निश्चित है कि उपद्रवों और गुत्थियों का रूप ऐसा विकराल न हो सकेगा जिनसे ऋषियों के गौरव इस राष्ट्र की क्षमता और प्रतिष्ठा पर आँच आये ।

उलझनें आती और सुलझती रही हैं । यदि भीतरी और बाहरी विग्रहों की गणना करें तो वे बहुत हो जाती हैं और उस सब का भार इतना हो जाता है जिनसे लम्बी गुलामी से छूटी और अनुभवहीन जनता को असाधारण क्षति पहुँचती, पर ऐसा हुआ नहीं । घटाएँ आईं, गरजीं और तेज हवा के सामने पैर न टिका सकीं, अपने रास्ते चली गईं ।

यह भूतकाल की चर्चा हुई । वर्तमान भी कम विपन्न नहीं है । घर के साँप-बिच्छू और बाहर के बाघ, भेड़िये अपनी-अपनी घात लगाने में कमी नहीं छोड़ रहे हैं, पर महचेतना का यह विश्वास है कि ऐसा कोई अनिष्ट न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होने पावेगा जिसे नवोदित देश की सहनशक्ति से बाहर कहा जाय और जिसकी क्षतिपूर्ति न हो सके ।

इन बचावों में राष्ट्रीय क्षमताओं ने समय-समय पर उपयोगी योगदान दिया है । इसके साथ ही ऐसी दैवी कृपा भी रही है जो नाव को भँवरों में से उबारते हुए किनारे तक ले आई । डूबने का कोई हादसा नहीं हुआ ।

इन दिनों जो संकट एवं विग्रह सामने हैं, अलगाववाद एवं विखण्डन का खतरा ही सामने आ खड़ा हुआ है, उनके सम्बन्ध में मनीषियों को पूरा और पक्का विश्वास है कि ये सभी समस्याएँ हल हो जायेंगी । लड़ मरने को उतारू लोगों के मध्य रहकर भी राष्ट्र की एकता बीच-बचाव करने और साथ ही अपनी सुरक्षा बनाये रहने में भी समर्थ रहेगी । भयंकरतायें दीखती भर रहेंगी, पर राष्ट्र का बाल बाँका न कर सकेंगी ।

उस समय के आगमन में अब देर नहीं है जिसमें जनमानस में घट जमाए बैठीं भीतरी दुर्बलताएँ दूर हो जायेंगी । अधिकारी कर्त्तव्य पालन करने के लिए बाधित होंगे और लोकसेवियों की नई पीढ़ी इस प्रकार उभरेगी जो शोषक तत्वों से, उद्दंडताओं से, अपराधों से समाज को क्रमशः मुक्ति दिलाती चलेगी और सर्वसाधारण का ध्यान और प्रयास उस दिशा में जुटेगा जिससे संव्याप्त पिछड़ेपन से, आलस्य, प्रमाद और अनाचार से छुटकारा पाया जा सके ।

भारत का भविष्य उज्ज्वल है । उत्साह और उल्लासवर्धक समय आने में थोड़ी देर है, पर यह सुनिश्चित है कि भारत की गरिमा बढ़ेगी ही नहीं, स्थिर भी रहेगी । जबकि इन दिनों आसमान पर अन्धड़ की तरह छाये हुए लोग या देश-धूलि चाटते दृष्टिगोचर होंगे। समय की प्रतिकूलता उनके दर्प को चूर-चूर कर देगी, पर भारत इन कटीली झाड़ियों के बीच भी गिरेगा नहीं, उठता ही रहेगा । भले ही उस उठाव की गति धीमी रहे ।

भारत पर अभी उन ऋषि-तपस्वियों की छत्र-छाया है जिनके प्रयास से निष्ठुर पराधीनता से पीछा छूटा । इन दिनों वे भीतर से उद्भूत और बाहर के प्रहार से बचाने में अपनी शक्ति लगाये हुए हैं । अनर्थ तक स्थिति न पहुँच पावे, इसके निमित्त संरक्षण दे रही हैं । इन उपलब्धियों को भी कम नहीं माना जाना चाहिए ।

प्रगति पथ पर तेजी से अग्रसर होने और राष्ट्र के सुसम्पन्न और सुसंस्कृत होने का दौर कुछ ही दिनों में चल पड़ेगा । अभी जो कुछ हो रहा है, उसे भी उत्साह-वर्धक नहीं तो असंतोषजनक भी नहीं कहा जा सकता, इतने पर भी भारत का अभ्युदय सुनिश्चित है । यह महाकाल का स्रष्टा का स्वनिर्धारित सत्य है । इस तथ्य की पुष्टि करते हुए महर्षि रमण, योगी अरविंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द जैसे महा तपस्वियों ने भी समय-समय पर अपने-अपने उद्‌गार व्यक्त किये हैं । यह एक सर्वविदित तथ्य भी है कि इन महान् तपस्वियों की भारत को स्वतंत्र कराने और उसके पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है ।

महायोगी अरविंद ने अपने दिव्य दर्शन के आधार पर कहा है कि भारत अपनी महान् भूमिका में पुनः जागृत हो रहा है । प्रस्तुत समय उसके लिए पुराने युग की समाप्ति और नये युग का प्रारम्भ सूचित करता है । इसका महत्त्व अपने लिए ही नहीं, वरन् एशिया एवं सम्पूर्ण विश्व के लिए भी है, क्योंकि यह राष्ट्रों की बिरादरी में एक नवीन शक्ति के प्रवेश का द्योतक है जिसमें अवर्णनीय संभाव्य शक्तियाँ सन्निहित हैं । उसे मानव जाति के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक भविष्य के निर्धारण में एक महती भूमिका निभानी है ।

भारत केवल अपने भौतिक हितों की सिद्धि के लिए, विस्तार, महानता, शक्ति और समृद्धि पाने के लिए नहीं उठ रहा, यद्यपि इनकी भी उसे उपेक्षा नहीं करनी होगी और निश्चय ही वह दूसरों की तरह अन्य देशों पर आधिपत्य जमाने के लिए भी नहीं उठ रहा, वरन् वह उठ रहा है समूची मानव जाति के सहायक और नेता के रूप में परमेश्वर और जगत हितार्थाय जीने के लिए भारत अपनी महान् भूमिका में पुनः प्रतिष्ठित होगा । एशिया पुनरुत्थान तथा स्वातंत्र्य उसका मुख्य लक्ष्य होगा । इसके साथ ही साथ सम्पूर्ण मानव समुदाय के लिए एक नये, अधिक महान्, उज्ज्वल और श्रेष्ठ जीवन का उदय होगा जो अपनी सम्पूर्ण चरितार्थता के लिए बाहरी तौर पर राष्ट्रों की पृथक् सत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण पर आधारित होगा । भारत उन्हें सुरक्षा और सुदृढ़ता प्रदान करेगा साथ ही उन्हें एक दूसरे के सन्निकट लाकर एक सार्वभौमिक एकता प्रदान करेगा । वह अपने आध्यात्मिक ज्ञान का और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन को आध्यात्मिक बनाने के साधनों का सारे मनुष्य समुदाय को दान करेगा और इसी क्रम विकास में एक और नया कदम चेतना को उच्चस्तर पर उठा कर जीवन की उन अनेक समस्याओं का हल करना आरम्भ कर देगा । जिन्होंने मनुष्य जाति को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना और स्वप्न देखना शुरू किया था ।

श्री अरविंद के अनुसार मानव जाति का एकीकरण प्रगति के पथ पर है, चाहे वह अभी अधूरा आरम्भिक स्तर पर ही क्यों न हो, वह संगठित किया जा चुका है और भारी कठिनाइयों के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है, परन्तु उसमें बल और वेग है और यदि इतिहास के अनुभव को मार्ग-दर्शक माना जा सके तो, वह अनिवार्य रूप से बढ़ता चला जायेगा और अन्त में विजयी होगा । इस कार्य में भारतवर्ष की ऋषि-सत्ताओं ने सक्रिय रूप से प्रमुख भाग लेना प्रारम्भ कर दिया है । विश्व को उनका अजस्र आध्यात्मिक अनुदान मिलना प्रारम्भ हो ही चुका है । भारत की आध्यात्मिकता यूरोप और अमेरिका में नित्य बढ़ती हुई मात्रा में प्रवेश कर रही है । यह आन्दोलन बढ़ेगा । प्रस्तुत काल की विपन्नताओं-विपदाओं के बीच अधिकाधिक लोगों की आँखें आशा के साथ भारत की ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओं का, वरन् उसकी अन्तरात्मिक और आध्यात्मिक साधना का भी अधिकाधिक आश्रय लिया जा रहा है ।

उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण परम इच्छा-शक्ति का निर्धारण है और तदनुरूप ही उच्चस्तरीय आदर्शवादी विचारक्रान्ति का श्रीगणेश भी हो चुका है । इस महाअभियान ने भारत सहित समूचे पाश्चात्य जगत के दूरदर्शी विचारकों-मनीषियों को अपने वश में करना शुरू कर दिया है । इस मार्ग में यद्यपि अन्यान्य मार्गों की अपेक्षा जबर्दस्त कठिनाइयाँ हैं फिर भी समय रहते वे सभी निरस्त होंगी । अगले दिनों जो भी विकासक्रम घटित होने जा रहा है, वह आत्मा और अंतर्चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा । उसका शुभारम्भ भारतवर्ष करेगा और वही आन्दोलन का केन्द्र होगा, तथापि इसका कार्यक्षेत्र विश्वव्यापी होगा । भारत का भविष्य उज्ज्वल है इस सुनिश्चितता पर सबको विश्वास करना चाहिए ।

चौथी क्रान्ति
सर्वनाश नहीं ला रही

पिछली तीन शताब्दियों में तीन क्रान्तियाँ हो चुकीं अब चौथी की तैयारी है । यह सिलसिला क्रमशः इसी प्रकार से चलता नहीं रहेगा, वरन् इन उथल-पुथलों को विराम लेकर किसी निर्णयात्मक केन्द्र पर पहुँचना पड़ेगा ।

पहली श्रमिक क्रान्ति थी जिसे सामाजिक क्रान्ति भी कह सकते हैं, जिसमें दास-दासी, सेवक और स्वामी, राजा और प्रजा के मध्य चलते रहे जमीन-आसमान जैसे अन्तरों को समतल पर लाया गया । इसके लिए कोई संगठित सार्वभौम क्रान्ति नहीं हुई । जहाँ-तहाँ ज्वालामुखी फूटे वहाँ उन्होंने समय की गति से सबको अवगत कराया। इसमें मनुष्य को उसके मौलिक अधिकारों की मान्यता मिली । साम्राज्यवाद का शिकंजा ढीला हुआ और वह उपनिवेशवाद में बदला गया । इसे राजनैतिक क्रान्तियों का युग भी कह सकते हैं जिसने जनतन्त्रों की नींव रखी ।

दूसरी क्रान्ति को वैज्ञानिक क्रान्ति कह सकते हैं । यह आविष्कारों का युग रहा । इसमें सुविधा-साधनों का सम्वर्धन किया गया और व्यवसायी उनके आधार पर बड़े उद्योग खड़े करने लगे । इसे पूँजीवाद का युग भी कह सकते हैं । इसमें धनी वर्ग के हाथों अपार शक्ति आई । उसने इतना उत्पादन बढ़ाया, जिसने खपाने की आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं की वरन् खपाने की समस्या भी खड़ी कर दी । परिवहन के लिए रेल और जलयान भी आशातीत संख्या में बढ़े ताकि सुविधा-साधनों को दूसरे देशों तक ही नहीं छोटे देहातों तक भी पहुँचाया जा सके । यह पूँजीवादी जमाना रहा ।

तीसरी क्रान्ति प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के निमित्त राजनेताओं की आपा-धापी और प्रतिस्पर्धा चरमसीमा तक पहुँची । पिछले दो युद्ध उसी की देन हैं । उसने वायुयानों से लेकर डाइनामाइट तक के अनेकों उत्पादन किये । बम आयुध उसी की देन है । यह मण्डियों को कब्जे में करने का प्रच्छन्न साम्राज्यवाद था । यही माहौल विश्व युद्धों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के रुक जाने पर भी अभी तक बना हुआ है । अब तक १३४ के करीब क्षेत्रीय युद्ध हो चुके हैं । विज्ञान की प्रौढ़ता के साथ-साथ उसका लोभ संवरण शासक न कर सके और वह प्रगति अन्तरिक्षीय उपग्रहों, मिसाइलों और अणु आयुधों तक समय को घसीट लाया ।

इस बीच एक बड़ी घटना जापान पर अणु बम गिराने की थी । उसका मतलब था ''दबो या मरो'' । पर उसका भी एकाधिकार न रहा । रूस प्रतिद्वन्द्वी के रूप में उभरकर आया । समुन्नत जापान रूस के साथ मिलकर शक्ति सन्तुलन न बना ले, इसी प्रयोजन के लिए जापान को आतंकित किया गया था । इसे आतंकवाद के महादैत्य का जन्म कह सकते हैं, जिसके बाल-बच्चे छापामारों के रूप में अपने अस्तित्व का परिचय बेरुत से लेकर जापान, अमेरिका तक दे रहे हैं ।

चौथी क्रान्ति क्या अणु आयुधों की वर्षा से होगी ? क्या उसमें अन्तरिक्ष युद्ध छिड़ेगा और धरती का वातावरण मनुष्यों और प्राणियों के रहने लायक न रह जायेगा ?

इस सन्दर्भ में अनेक दृष्टिकोणों और तथ्यों को सामने रखकर विश्वदर्शी महा-मनीषी ऑरवेल एवं हक्सले कामा ने सुविस्तृत विवेचन किया है । उनकी पुस्तक है **''ब्रेव न्यू वर्ल्ड''** । इसी स्तर के दो ग्रन्थ पिछले दिनों सामने आये हैं एलविन टाफलर का ''दि वर्ल्ड ब्रेव'' एवं फ्रिटजॉफ काप्रा का ''दि टर्निंग पाइण्ट'' । इनमें बताया गया है कि चौथी क्रान्ति अति निकट है । वह आरम्भ भी हो गई है और अपना प्रभाव अगले दिनों चमत्कारी ढंग से प्रकट करने लगेगी ।

उपरोक्त तथ्यान्वेषी और क्रान्तिदर्शी कहते हैं कि मनुष्य की मूर्खता में कमी नहीं पर वह इतनी अधिक कभी भी नहीं बढ़ सकेगी कि विपक्षी के जीतने के लालच में अपना भी सर्वनाश कर बैठे । जो माहौल कभी जापान पर बम गिराकर उत्पन्न किया गया था, वही अब नये रूप में **''स्टार वार''** के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है । धमकी बरकरार है कि 'दबो या मरो', किन्तु स्पष्ट है कि प्रतिपक्ष भी समय रहते काट निकाल लेगा और स्थिति वही बनेगी जिसमें अणु आयुध बनते और जमा होते रहें, पर उनके प्रयोग का अवसर नहीं आए । जापान ने सिद्ध कर दिया कि एकाधिपत्य का प्रयास जो प्रथम बार हुआ वह अन्तिम भी था । अब उसकी पुनरावृत्ति नहीं हो सकती, भले ही धमकी के साधन कितने ही बड़े एवं बहुसंख्या में बनते रहें ।

चौथी क्रान्ति महाविनाश की दीखती भर है, पर वह होगी नहीं । उसका स्थान समझदारी ग्रहण करेगी और नव-सृजन की हवा चलेगी । यह सृजन कृत्य धीमी चाल से चल सकता है, पर सर्वतोन्मुखी एवं सफल होकर रहेगा। यह समता का युग होगा । सम्पन्नता और प्रभुता का उन्माद समय रहते उतर जायेगा और प्रयास वे चलेंगे जिसमें विषमता ही नहीं विलगता भी अपना अस्तित्व गवाँ दे ।

औसत आदमी सोचने लगा है कि अब समता और एकता की ओर बढ़ने से ही काम चलेगा । विषमता और विलगता से टकराव ही उत्पन्न होते रहेंगे और उनमें शक्ति का अपव्यय करने के अतिरिक्त और किसी प्रकार की उपलब्धि किसी के हाथ नहीं लगेगी ।

यह चिन्तन हवा के साथ उड़ रहा है और वास्तविकता से जन-जन को अवगत करा रहा है । वह समय बहुत पीछे रह गया, जब लोक चिन्तन का कोई महत्त्व न था, जब समर्थों की मनमानी चलती थी । अब लोक-मानस अपने आप में एक शक्ति बनकर उभरा है और अपनी सामर्थ्य को इस सीमा तक विकसित परिपुष्ट कर रहा है कि आज के सामर्थ्यवानों को कल अपना सिर नीचे झुकाना पड़ेगा । दुनिया में इतने साधन मौजूद हैं कि वर्तमान जन समुदाय का उससे भली-भाँति निर्वाह हो सके और सभी सुखपूर्वक जी सकें । महत्त्वाकाँक्षाएँ अगले दिनों आपा-धापी में नहीं लगेंगी, वरन् उनकी दिशाधारा होगी— न्याय और विवेक का कार्यान्वयन । प्रकारान्तर में यही आदर्शवादिता है, इसी के साथ मानवी गरिमा भी जुड़ी हुई है ।

पुरुषार्थ भरे चिन्तन और प्रयास का ही परिणाम है कि आदिम युग से अब तक कछुए की चाल चलता हुआ वन्य मनुष्यों जैसा जीवन जिया जा रहा था । धरती पर थोड़े से साधन थे और थोड़े से मनुष्य, परन्तु अब इन शताब्दियों में यह वैभव विस्तार इतना बढ़ गया है, मानो आसमान से उतरा हो । क्या यह प्रगतिक्रम भविष्य में रुक जायेगा ? क्या इस प्रगति क्रम की परिणति दुर्भाग्यपूर्ण होगी ? क्या रुदन ही मनुष्य के भाग्य में वदा है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकृति के अन्तराल में से आश्वासन उभरता है कि आशंकाएँ और सम्भावनाएँ कुछ भी क्यों न हों, अन्ततः मनुष्य की समझदारी और दूरदर्शिता जीतेगी । साथ ही न्याय निष्ठा भी जीवित रहेगी । चौथी क्रान्ति सर्वनाश की विभीषिकाओं से भरी-पूरी दीखती भर है, पर यह बन्दर घुड़की मात्र है । हमें उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना का स्वप्न देखना चाहिए और नव सृजन का ताना-बाना बुनना चाहिए ।

नव-युग की नई आचार संहिता

एक ही कैमरे से एक ही वस्तु के अनेक कोणों से फोटो खींचे जायें, तो वे सभी एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न होगें, किसी में पीठ आयेगी, तो किसी में चेहरा, किसी में बगल, इनमें से जो जिसे पंसद करेगा, वह उसे अंगीकार करेगा । धर्म के सम्बन्ध में यही बात है । उसका सही स्वरूप अध्यात्म है, इसी को उत्कृष्ट दृष्टिकोण कहते है । इस आधार पर जो देखा और जाना जाता है, उसी को सही कह सकते हैं, अन्यथा सम्प्रदाय पक्ष के साथ जुड़े हुए प्रचलन परस्पर एक-दूसरे से अत्यधिक भिन्न हैं । कई बात तो सत्यान्वेषी विवेक-बुद्धि से उनका निरीक्षण परीक्षण किया जाता है, कि यह सारा जंजाल कहीं अन्ध-विश्वासों का जमघट ही तो नहीं है ।

कभी यह मान्यता थी कि अमुक सम्प्रदाय के लोगों को ही ईश्वर पसन्द करता है और अन्य सम्प्रदाय वालों के बारे में सोचता है कि जैसे भी बने उन्हें अपने मत में सम्मिलित किया जाय । सहमत न हों तो उनके सिर कलम कर दिये जायें । मध्यकाल के सामन्तों को जहाँ लूट-खसोट, राज्य बढ़ाने की हविस थी वहाँ यह जुनून भी कम न था कि अपनी बात न मानने वाले काफिरों का कत्लेआम किया जाय । इस मान्यता ने कितने निरीहों का रक्तपात कराया । इसे इतिहास के विद्यार्थी भली प्रकार जान सकते हैं ।

सम्राटों-सामन्तों को दफनाते समय उनके साथ कब्र में कितनी औरतें, कितने नौकर, कितनी दौलत दफन की जाती थी, कि परलोक में यह सभी वस्तुएँ उन्हें उपलब्ध हो सकें । सद्गृहस्थों को पकड़ कर दास-दासी बना दिया जाता, उन्हें खरीदने-बेचने और पशुओं जैसा काम करने के लिए विवश करना किसी जमाने में आम रिवाज था ।

अमेरिका के रेड इण्डियनों और अफ्रीका के हब्शियों में पशुओं का ही नहीं मनुष्यों के भारी संख्या में बलिदान का भी भारी प्रचलन था । उसी कारण कितनी ही जातियाँ एक-दूसरे की बलि चढ़ाते-चढ़ाते नाम मात्र के लिए शेष रह गई । इन कृत्यों को करने वाले अपने को धर्मात्मा मानते थे और सोचते थे कि ईश्वर यही चाहता है और किस से प्रसन्न होता है ।

भारत में भी सती-प्रथा, विधवा-विवाह, बाल-विवाह अपहरण जैसे अत्याचार नारियों के साथ किए जाते थे, उन्हें पर्दे में कैद रखा जाता था । मनुष्यों में भी एक चौथाई को अछूत कहकर मनुष्योचित अधिकारों से वंचित किया जाता था । देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी प्रतिमाओं के सामने सहस्रों निरीह पशुओं का वध किया जाता था, आदि-आदि ऐसे अनेकों प्रचलन थे जिन्हें सही माना जाता था, और वैसा करने में शास्त्रकारों की आज्ञा का हवाला दिया जाता था । पिरामिड़ों के निर्माण में लाखों को मेहनत कराते-कराते उसी में पीस दिया गया । एक पुरुष सैकड़ों हजारों स्त्रियाँ हरम में रखता था । कभी लड़कियाँ बिकती थीं, अब लड़के बिकते है ।

ऐसी-ऐसी अनेक बातें हैं, जिन्हें धर्म परम्परा, शास्त्र-आज्ञा ईश्वर की इच्छा मानकर कहा जाता है और अनेकों भावुकों का शोषण किया जाता है । ऐसे धर्म व्यवसायी धन और सम्मान दोनों हाथों से बटोरते हैं और अपने को देवताओं का एजेण्ट कहकर उनका अनुग्रह दिलाने के लिए महँगी फीस वसूल करते है ।

मात्र हिन्दू समाज में ही नहीं, अन्य सम्प्रदायों में भी ऐसे बेतुके प्रचलनों की भरमार है, जिनका विवेक की कसौटी पर कोई औचित्य सिद्ध नहीं होता, फिर भी समुदायों को मानने वाले पुरातन मान्यताओं को ही सब कुछ मानते हैं और समीक्षा या सुधार की बात कहने तक को अधर्म मानते हैं ।

धर्म सबसे पुरानी परम्परा है । उनके साम्प्रदायिक खंड इतने अधिक हैं, कि उनकी गणना करते कठिनाई होती है, फिर उनके प्रचलन ऐसे हैं, जिनके स्वरूपों और सिद्धान्तों में जमीन-आसमान जैसा अन्तर है, फिर भी आश्चर्य इस बात का है कि उन सभी के अनुयायी अपनी-अपनी परम्पराओं पर इतने कट्टर हैं कि उनकी यथार्थता पर पुनर्विचार करने की तनिक भी गुंजायश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं । अभी भी दहेज न मिलने पर स्त्रियों को जला देने, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बच्चे चुराकर बलि चढ़ा देने जैसे नृशंस कृत्य आये दिन होते रहते हैं और उन्हें करने वाले अपने को अपराधी नहीं मानते वरन् परम्परा के निर्वाह के लिए अपनाया गया औचित्य ही मानते हैं ।

यह धर्म चर्चा का विषय हुआ । अपराधियों की दुराचारियों की, व्यसनियों की अपने बिरादरी है और वे अपने कृत्यों को शान दिखाने का प्रसंग मानते हैं, न लज्जित होते हैं और न उन कुमार्गों को छोड़ने की बात मानते हैं, । यह दृष्टिकोण ही है, जिसके कारण मनुष्य ऐसे ढाँचे में ढल जाते हैं, कि जो किया, अपनाया गया है, उस पर नये सिरे से विचार करने और उचित-अनुचित का विचार करने तथा ढर्रे में परिवर्तन करने तक की आवश्यकता नहीं समझते । वेश्याएँ अपनी सफलता और चतुरता की डीगें अपने समुदाय में बढ़-चढ़ कर मारती रहती हैं । यह बात सभी क्षेत्रों पर लागू होती है ।

एक और कठिनाई है कि जिसने जो ढर्रा अपना रखा है वह उसका औचित्य तर्कों के सहारे भी सिद्ध करने में पीछे नहीं रहता । यों तर्क में भी उचित-अनुचित का निर्णय करने का रिवाज है, पर बुद्धि के विकास के साथ-साथ बढ़े बुद्धिवाद-प्रत्यक्षवाद में, इस क्षेत्र को भी अप्रामाणिक बना दिया है और विश्व मानव के एकता तथा एक दिशा अपनाने की प्रगति में बाधक ही बना है । यह सुनिश्चित है कि मति भिन्नता के रहते प्रगति की किसी योजना को कार्यान्वित करना और सफलता के स्तर तक पहुँचना कभी भी सम्भव न हो सकेगा ।

भूतकाल के अनौचित्य, वर्तमान के दुराग्रह और भविष्य के अन्धकार को ध्यान में रखते हुए हमें ऐसे उपाय खोजने चाहिए जिनसे विग्रहों के आधार टलें और एकता के औचित्य के द्वार खुलें । दार्शनिक क्षेत्र की यह आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है ।

आवश्यकता है कि न्याय, औचित्य विवेक का आश्रय लिया जाय और पूर्वाग्रहों से अपने दृष्टिकोण को मुक्त रखा जाय । अपने आग्रहों को ईश्वर, देवता, पैगम्बर आदि की उक्ति बताने की दुहाई न दी जाय और न अपने मान्यजनों को चमत्कारी, दैवी शक्तियों से सम्पन्न सर्वज्ञ ठहराया जाय। इन आधारों को अपनाने से औचित्य के प्रति अन्याय ही होगा । हमें स्वतन्त्र चिन्तन का आश्रय लेना चाहिए और प्रचलित मत-मतान्तरों में से कौन ज्येष्ठ, और श्रेष्ठ ? के झंझट में न पड़ कर नई दृष्टि अपनानी चाहिए । क्या होता रहा है व कैसे वितण्डावाद बढ़ता रहा है ? इसका उदाहरण शास्त्रार्थों में भाषण प्रतियोगिताओं में ही नहीं अदालत-कचहरियों में भी देखा जा सकता है । झूठे मामले को सच्चा सिद्ध करने के लिए वकील जमीन-आसमान के कुलाबे एक करते हैं और उनमें कितने ही अपनी चतुरता को सफलता के स्तर तक पहुँचा देते हैं । फैशन, जेवर, खानपान, नशा, व्यसन आदि के सम्बन्ध में जो जिसे सुहाता है वह उसके लिए इतना दुराग्रही होता है कि सामने वाले पक्ष की उचित बात को भी सुनने के लिए तैयार नहीं होता । शादियों में होने वाली धूम-धाम, फिजूल खर्ची, प्रदर्शन, दहेज आदि के विरुद्ध मुद्दतों से आन्दोलन हो रहे हैं, पर नये तरीकों से वही बातें दूसरे रूप में सामने आ जाती हैं । कन्या और पुत्र के बीच बरता जाने वाला अन्तर ऐसा है, जिसे विचारशील लोगों के परिवारों में भी कार्यान्वित होते देखा गया है ।

अनौचित्य के प्रति कट्टरता अपनाये रहने के लिए प्रचलनों की दुहाई देते रहने की बात ऐसी है जो मनुष्य को यथार्थता से दूर पहुँचा देती है । प्रचलनों को किसी समय विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप गढ़ा हुआ मानना चाहिए । ग्राह्य और अग्राह्य का निर्णय तर्कों के सहारे नहीं, वरन् मानवी गरिमा के अनुरूप भावनाओं के सहारे करना चाहिए ।

अर्थशास्त्र बताता है कि नई पीढ़ी को स्थान देने के लिए पुरानों को बूचड़खानों, कसाई घरों में पहुँचाना चाहिए, यदि यह सिद्धान्त पशुओं के लिए सही है तो मनुष्यों के लिए गलत क्यों हो सकता है ? फिर बूढ़े माँ-बापों को कसाई खाने भिजवाना पड़ेगा । ''जिसकी लाठी तिसकी भैंस'' का जंगली कानून यदि सही ठहाया जाय तो ''बड़ी मछली छोटी को निगल लेती है'' का सिद्धांत मनुष्यों पर भी लागू करना होगा और इस संसार के सभी दुर्बलों का एक सिरे से सफाया करना होगा । देश भक्ति की दुहाई दी जाती रही तो क्षेत्र विशेष की सुविधा ही सब कुछ मानी जायेगी और किन्ही विशेषों के साथ अन्याय होने की बात पर विचार न हो सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हमें वास्तविक न्याय का निर्णय करने के लिए स्वयं सृष्टि का स्रष्टा बनकर सभी को सन्तान मानते हुए उचित अवसर प्रदान करना पड़ेगा, या फिर अगली शताब्दी की देहरी पर खड़े होकर आदि से अन्त तक नये कानूनों का इस आधार पर निर्धारण करना होगा, जिससे भविष्य में किसी अनुचित विग्रह के लिए गुंजाइश न रहे । मनुष्यों में से प्रत्येक को मानवी मौलिक अधिकारों का संरक्षण मिले, साथ ही सृष्टि के अन्य प्राणियों को भी इस धरती पर रह सकने की सुविधा मिले ।

दुर्जन मुट्ठी भर होते हैं पर वे संगठित गिरोह बनाकर आक्रमण करते हैं और तथाकथित सज्जन मिलजुल कर उनका विरोध नहीं करते, फलतः संसार में अनीति और अपराधों की बाढ़ आती है । होना यह चाहिए कि अनाचारियों का सामूहिक बहिष्कार और विरोध हो, साथ ही सज्जन मिलजुलकर उनके विरुद्ध संघर्ष करें । शासन को कहा जाये कि सुधार की आशा से दर गुजर करने वाले या हलका दंड देकर जमानत पर छोड़ देने की अपेक्षा अपराधी के साथ उतनी कड़ाई की जाय, जिसे देखकर दूसरों को वैसा करने का हौसला न पड़े । शासन को जहाँ सत्प्रवृत्तियों का समर्थन, अभिवर्धन करना चाहिए वहाँ यह भी नितान्त आवश्यक है कि आततायी को प्रताड़ना सहनी पड़े और पश्चाताप करना पड़े ।

सम्प्रदायों को अनुपयुक्त देखते हुए उनसे निरपेक्ष हो जाना और चाहे जिसको, चाहे जो करने देने की छूट नहीं दे देना चाहिए । ऐसी छूट प्रकारान्तर से अनीति का समर्थन एवं प्रोत्साहन है । हमें उपेक्षापूर्ण रिक्तता उत्पन्न नहीं करनी चाहिए, वरन् एक नवीन मानव धर्म की संरचना करनी चाहिए और उसका परिपालन करने के लिए लोगों से अनुरोध करते रहने की अपेक्षा, बाधित करने की कठोरता अपनानी चाहिए । राजनीतिक दल एवं व्यक्ति भी मात्र शासन की अर्थव्यवस्था को देखभाल करते हैं और मूर्खों के बहुमत का जिस-तिस प्रकार समर्थन प्राप्त करके अपनी मनमानी चलाते हैं, यह सब भी अपूर्ण है । हमें उतनी गहराई तक जाना होगा जिससे मानवी तत्व दर्शन का नवीन शिलान्यास हो । चिन्तन में उत्कृष्टता, चरित्र में आदर्शवादिता और व्यवहार में सज्जनता का समावेश हो । वस्तुतः इसी परिधि में मानव जीवन की समस्त समस्याएँ आती हैं । जिससे इस सुविस्तृत क्षेत्र का समाधान निकले, उसी को सच्चे अर्थों में तत्वदर्शन, समाज विज्ञान या शासन तंत्र कहना चाहिए । फिर उसका नाम कुछ भी क्यों न रखा जाय । मनुष्य को सत्प्रयोजन अपनाने की पूरी छूट मिलनी चाहिए, पर उसकी धूर्तता को इतने कड़े शिकंजे में कसना चाहिए कि पीछे हटने या आगे बढ़ने की कोई गुंजाइश न रहे ।

बढ़ते हुए विज्ञान और बुद्धिवाद ने दुनिया को सिकोड़कर एक बस्ती जैसी सीमित कर दिया है । इसमें एकता और समता की रीति-नीति ही चल सकती है । मनमौजी खींचतान चलाने और कलह के सर्वनाशी विष बीज बोने की छूट पिछले दिनों मिलती रही होगी अब उसकी तनिक भी गुंजायश नहीं है । हमें एक बिरादरी नहीं एक परिवार बना कर रहना होगा और एक भाषा, एक देश, एक धर्म, एक दर्शन अपनाकर ही शान्तिपूर्वक रहना होगा । इस प्रयास में प्रत्येक वर्ग को अपनी पूर्व मान्यताओं के प्रति दुराग्रह छोड़ना होगा और यह सोचना होगा कि अगले दिनों इस संसार को ऐसा सुन्दर सुसंस्कृत कैसे बनाया जा सकता है जिसमें अमीर गरीब सभी मिल बाँट कर खायें । शक्ति और बुद्धि के सत्परिणामों में सभी लोग मिलजुल कर लाभ उठायें और हँसती-हँसती जिन्दगी जियें । इसके लिए समुचित साधन भी मौजूद हैं और पर्याप्त अवसर भी । आवश्यकता इस बात की है कि दूरदर्शी विवेकशीलता के धनी अपने चिन्तन को इस केन्द्र बिन्दु पर एकाग्र करें कि मानवी गरिमा के अनुरूप चिन्तन क्या हो ? लोग उसे अपनाने और चरित्र में उतारने की प्रेरणा देने वाला शिक्षण किस प्रकार के विद्यालयों और किस स्तर के साहित्य के सत्संग स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करें ?

नये युग की आवश्यकता है कि यह निर्धारण किया जाय कि समाज का स्वरूप क्या हो और उसकी आचार संहिता अपनाने के लिए जन-जन को किस प्रकार सहमत किया जाय ? जिनकी नस-नस में धूर्तता भरी पड़ी है, उन्हें कड़ी प्रताड़नाएँ सहने के लिए बाधित किया जाय । अब इतना समय शेष नहीं रह गया है कि फिर पीछे कभी के लिए बात टाली जा सके । हम जीवन-मरण की विभीषिकाओं के बीच जूझ रहे हैं । उपाय एक ही शेष है आध्यात्मिक दृष्टिकोण का स्वरूप निर्धारण और उसका अनुशासनपूर्वक परिपालन । इतना सब कुछ करने पर ही नव-युग का नवोन्मेष सम्भव होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तरिक्ष में चल रही उच्चस्तरीय उथल-पुथल

प्रज्ञा का आलोक अब घर-घर पहुँचना है और जन-जन के अन्तराल को झकझोरना तथा प्रसुप्ति से विरत करना है। यह महाकाल का निर्धारण है । इतने उच्चस्तर पर हुए निर्धारणों के अनुकूल मनोभूमि भी सहज ही बनती जाती है और गतिविधियों का उपक्रम भी बनता जाता है । उसमें प्रत्यक्ष भूमिका तो अग्रगामी मनुष्यों की ही होती, किन्तु यदि कोई परोक्ष में झाँकना चाहे तो प्रतीत होगा कि ऐसे निर्धारण मानवी नहीं दैवी होते हैं ।

मनुष्य है तो सामर्थ्यवान पर उसकी समर्थता-प्रतिभा एक सीमित क्षेत्र तक ही गतिशील रहती है । व्यापक क्षेत्र पर छा जाना न उसकी शरीरिक क्षमता के अन्तर्गत आता है और न मानसिक बुद्धि वैभव के । पत्ते और धूलिकण जब आकाश में उड़ते दिखाई दें तो समझना चाहिए इसका सूत्र संचालन अन्तरिक्ष के किसी विशिष्ट केन्द्र से उद्भूत हो रहा है । तिनके और पत्ते हिलडुल तो सकते हैं, पर मीलों ऊपर उछल जाना और गरुड़ गिद्धों को चुनौती देने वाली द्रुत गामिता अपना कर आकाश में स्वच्छन्द विचरण कर सकना उनकी सामर्थ्य के अन्तर्गत किसी भी प्रकार आता नहीं है । प्रज्ञा अभियान की प्रस्तुत गतिविधियों के संदर्भ में भी ऐसा ही अनुमान लगाया जाना चाहिए । ऐसे ही निष्कर्ष पर पहुँचा जाना चाहिए ।

विगत वर्षों में लोक मानस को परिवर्तित, परिष्कृत करने की दिशा में जो अदृश्य भूमिका सम्पन्न हुई है वह असाधारण है, उसे अद्भुत और अनुपम कहा जाय तो भी अत्युक्ति नहीं है । पदार्थ से सम्बन्धित उपलब्धियाँ प्रत्यक्ष होती हैं । वे देखी सुनी और नापी तोली जा सकती हैं, पर परोक्ष जगत की संरचना विलक्षण है उस क्षेत्र की उपलब्धियों को इन्द्रियों और उपकरणों की सहायता से भी नाप तौल कर सकना शक्य है ।

आत्मीयता की सघनता को किस तराजू में तोला जाय ? श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा की विभूतियों का परिमाण बता सकना कठिन है । दृष्टिकोण की उत्कृष्टता, आस्थाओं की परिपक्वता का भार किस गज से नापा जाय ? किस बाँट से तोला जाय? अधिक से अधिक इतना ही हो सकता है कि भीतर की स्थिति के कारण जो प्रत्यक्ष प्रतिक्रियाएँ होती हैं उन्हें देख कर उसके मूल कारण का स्तर कितना होना चाहिए, इसकी कल्पना की जाय । युग संधि के पिछले दो वर्षों में लोक मानस में विचित्रता और हुई है । शताब्दियों से पेट प्रजनन की संकीर्ण स्वार्थ परता में बेतरह जकड़ा हुआ जनप्रवाह इन दिनों अपने में विचित्र परिवर्तन का परिचय दे रहा है ।

लोग सोचने लगे हैं कि उन्हें सीमा बन्धन में जकड़ा नहीं रहना चाहिए । व्यापकता के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए । अपने मतलब से मतलब रखने की पकड़ अब ढीली हो रही है और मनुष्य अपने दृष्टिकोण तथा जीवनक्रम में कुछ ऐसा अनुभव कर रहा है कि उसे अन्तरात्मा की दृष्टि से भी प्रखर होना चाहिए । उसे वासना रत ही नहीं रहना चाहिए, वरन् सन्तोष भी अर्जित करना चाहिए, वैभव के आधार पर सफलता नापने और गर्व-गौरव अनुभव करने का प्रचलन अब धीरे-धीरे घटता जा रहा है ।

बड़प्पन की अनुभूति का एक नया मापदण्ड विकसित हुआ है । जिसमें आदमी के अपने अभ्युदय और अधः पतन का लेखा-जोखा लेते समय उसके मन में यह प्रश्न भी उभरने लगा है कि उसने लोक-मंगल की दृष्टि से सराहनीय और सम्मानास्पद समझा जाने वाला कुछ किया है या नहीं? इसके पूर्व विलासी संग्रही अहंकारी कुचक्री, आक्रमणकारी ही सारा वर्चस्व अपने अंचल में समेटे रहते थे । वह सामन्ती मनः स्थिति और परिस्थिति जिस द्रुत गति से निरत हो रही है उसे देखते हुए लगता है कि भीतर ही भीतर कुछ बदला है । यदि ऐसा न होता तो लात का महत्त्व समझने वाले भूत बातों के प्रभाव से नरम होते क्यों दिखाई पड़ते ?

परिवर्तन अनाज के दानों की बनावट में, पशुओं के थन गले में, आदमी चार हाथों का होने में चीटियाँ, बकरी, जैसी बन जाने के रूप में कदाचित् ही कभी हो सके, पर आदमी के सोचने के ढंग बदलने लगें, उनमें घुसा हुआ घिनौना पन, कुछ आदर्शवादिता की दिशा में करवट लेने लगे तो समझना चाहिए कि दुर्दिनों के अन्त की सम्भावना बनने लगी । दुर्बुद्धि का बोझ किसी कदर उतरे और सम्पदा की तुलना में व्यक्ति की गरिमा का महत्त्व समझने की तुलनात्मक दृष्टि विकसित होने लगे तो समझना चाहिए कि तमिस्राका अन्तिम चरण समाप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो चला । औचित्य, अनौचित्य के बीच अन्तर करने वाली विवेकशीलता यदि पलक उघारे और अगले दिनों उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों को देख सकने वाली दूरदर्शिता अंगड़ाई लेती हुई उठ खड़ी हो तो समझना चाहिए कि वह बेला आ पहुँची जिसे ज्योतिषी भाग्योदय के नाम से बताते और कुण्डली देखकर आशा की चमक उभारते हैं ।

इन दिनों कुछ ऐसा ही हो रहा है । मानवी अन्तराल के उतार-चढ़ावों को जो नहीं परख सकते, जिनके लिए समृद्धि की घट बढ़ ही सब कुछ हो उनसे क्या कहा जाय जो विग्रह को समस्या और अवसाद के साथ जुड़े हुए यथावत् को शान्ति कहते हैं । उनसे भी कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पर जिन्हें व्यक्ति के अन्तराल में होने वाली उत्थान पतन की मूलभूत तथ्य 'चेतना' की परिणितियों को समझ सकने की क्षमता है । उन्हें यह जानना ही चाहिए कि भूत बदल रहा है । भविष्य उतर रहा है और उसके निमित्त वर्तमान अपनी प्रखर भाव भूमिका निभा रहा है ।

हमारे अतिरिक्त और कहीं कोई कुछ नहीं कर रहा यह कहना तो उद्दण्ड आत्म श्लाघा और गर्वोक्ति ही होगी, पर तथ्यों के प्रगट रहते हुए यदि यह कहना पड़े कि प्रज्ञा अभियान ने इस या उस प्रकार से लोक मानस को झक-झोरने, नये ढंग से सोचने, नया कुछ करने के लिए ब्रह्म मुहूर्त की तरह अपनी व्यापक भूमिका निभाई है तो उसे विनम्रता की रक्षा करते हुए भी एक प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन की तरह बिना किसी संकोच, असमंजस एवं झिझक के यथार्थ बोध की तरह जनसाधारण के सम्मुख प्रगट किया जा सकता है।

मात्र दृश्यों, घटनाओं, वस्तुओं के आधार पर ही जो उपलब्धियों का, सफलताओं का मूल्यांकन करते हैं, उन्हें कुछ समय ठहरना होगा । संकल्प और साहस किस स्तर का था यह जानने का मोटा मापदण्ड तो यही है कि उस आधार पर क्या पराक्रम बन पड़ा और क्या उपार्जन सम्भव हो सका । पराक्रम और उपार्जन जब तक प्रत्यक्ष न हो, तब तक यह कहना कठिन है कि संकल्प और साहस की ऊर्जा कितनी प्रचण्ड अथवा धूमिल थी । आज की परिस्थिति ऐसी ही है । इतने पर भी लोक मानस में उत्पन्न होने वाले ज्वार-भाटों की कोई परख सम्भव ही न हो ऐसी बात भी नहीं है ।

इन दिनों अदृश्य जगत में आशातीत परिवर्तन हो रहे हैं । उसका सबसे बड़ा प्रमाण एक है कि नव-सृजन की उमंग जन-जन के मन में उठ रही है । प्रज्ञा अभियान के समर्थकों और सहयोगियों की संख्या जितनी तेजी से बढ़ रही है उसे देखते हुए यह अनुमान लगाने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि प्रज्ञा उभर रही है । उसकी प्रखरता ओजस्विनी होती चली जा रही है । कहीं से कोई अदृश्य तेजस्व ऐसा उभर रहा है जिससे मुँदी कलियाँ अनायास ही खिलती चली जा रही हैं । प्रज्ञा परिजनों का प्रज्ञा पुत्रों का उभरता परमार्थ परक पौरुष यह बताता है कि अदृश्य लोक में कुछ ब्रह्म-मुहूर्त जैसी, उषा-काल जैसी अतिरिक्त ऊर्जा उभरी है । जागृत आत्माएँ नव-सृजन के लिए जिस स्तर की उमंगें तथा तत्परताएँ प्रदर्शित कर रही हैं उन्हें देखते हुए इस तथ्य का समझना सरल हो जाता है कि परिवर्तन की युगान्तरीय चेतना क्रमशः अपनी प्रखरता को प्रचण्ड ही करती चली जा रही है ।

चिन्तन-चेतना में उत्कृष्टता उभरे

साधन और सहायता मिलने की आवश्यकता को झुठलाया नहीं जा सकता, वे हों तो कार्य में फुर्ती भी होती है और उपलब्धियाँ भी अधिक बड़ी मात्रा में हाथ लगती हैं, इसलिए साधनों की व्यवस्था करने के प्रयास सदा से चलते है और सुविधा तथा समझ के अनुरूप ये आगे भी चलते रहेंगे, चलते रहने भी चाहिए, किन्तु उनकी सफलता के लिए यह आवश्यक है कि वस्तुस्थिति को समझा जाय । निदान के अनुरूप उपचार किया जाय । यह समझा जाय कि व्यक्तित्वों को प्रभावी प्रतिभावान बनाने के लिए उसकी चिन्तन क्षमता उत्कृष्ट स्तर की होनी चाहिए । समाज का ढाँचा सुसम्पन्नता और सुसंस्कारिता से भरा पूरा तभी हो सकता है कि उसके प्रचलन नीतिमत्ता पर अवलाम्बित हों । यह मूर्धन्यों का काम है कि चिन्तन का वातावरण वे समझाकर बदल सकते है या प्रताड़ना देकर अथवा दोनों के समन्वय से बात बनती है । उपाय जो भी कायान्वित किये जायें पर उनका लक्ष्य यह होना चाहिए कि मानवी आदर्शवादिता को नष्ट-भ्रष्ट होने से बचाया जाय और उसे फलने-फूलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का अवसर मिलने दिया जाय । यह जिस अनुपात में बन पड़ेगा उसी के अनुरूप प्रतिकूलताएँ अनुकूलता में बदल जायेंगी । संकट के शीतकालीन हिमखण्ड गलेंगे और उसके उपरान्त बसंत का ऐसा आगमन होगा जिसमें सर्वत्र वृक्ष वनस्पतियाँ फूलती, फलती और अपनी शोभा सुषमा का प्रदर्शन परिचय प्रस्तुत करती हुई दृष्टिगोचर होने लगें ।

साधनों का अपना महत्त्व है । सुविधा सामग्री की सहायता से बहुत कुछ उत्पादित-उपार्जित किया जाता है, पर बात इतने पर ही रुक जाती है । आदर्शवादी पुरुषों का समन्वय हुए बिना उसके अग्रगामी हो सकने का सुयोग ही नहीं आता ।

उदाहरण के लिए भारतीय कृषक समाज की आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण किया जा सकता है । खाद, पानी, बीज आदि के प्रबन्ध में सरकार ने बहुत कुछ किया है। फलतः उत्पादकों की आजीविका बढ़ी है । महँगाई का सबसे अधिक लाभ भी उन्हीं को मिला है । पचास वर्ष पूर्व वस्तुओं के जो भाव थे और अब बढ़कर वे कहाँ से कहाँ पहुँचे । इसका हिसाब लगाने से प्रतीत होगा कि महँगाई का सबसे अधिक लाभ कृषि उत्पादकों को मिला है । महँगाई के अंक उनके अधिक लाभान्वित होने का संकेत करते हैं । इतने पर भी उनकी स्थिति नाम मात्र को ही सुधरी है । गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ापन आदि के कुचक्र में वे पहले की तरह घिरे हुए हैं । उनमें से मुट्ठी भर लोग भी सुसम्पन्न कहला सकने की स्थिति में नहीं पहुँच पाये हैं ।

ऐसा क्यों हुआ ? क्यों होता है ? इसका कारण मिल पाने के लिए बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है । तथ्य अपने मुँह बोलते हैं और वस्तुस्थिति को अनायास ही खोलकर रख देते हैं । मूढ़ मान्यताओं ने रूढ़िवादिताओं ने उनकी गाढ़ी कमाई को हाथों हाथ छीन लिया और फुलझड़ी की तरह जलाकर स्वाहा कर दिया । विवाह शादियों के ठाटबाट, दान दहेज, प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा बढ़ी जो हाथ में आया था, दूसरे हाथ से बर्बाद हो गया । मृतक भोज जैसी प्रथाओं ने भी कम बर्बादी नहीं कराई । नशेबाजी की लत पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ी है और उपार्जन इन्हीं खाई खड्डों में गिरकर विलुप्त हो गया। फूट, पार्टीबाजी, मुकद्दमाबाजी के रूप में सर्वनाशी अहंकार फूटा । समर्थता ने आतंक का बाना पहना और चोरी उठाईगीरी, डकैती, हत्या का सिलसिला उन गाँवों में भी प्रारम्भ हुआ, जहाँ मुद्दतों से कभी कोई अवाँछनीय घटनाक्रम घटित नहीं हुआ था ।

अनियन्त्रित प्रजनन ने जनसंख्या में आश्चर्यजनक अनुपात से अभिवृद्धि की । फलतः छोटे कुटुम्ब बड़े हो गये। शान और शेखी में परिश्रम से जी चुराया गया । फैशन का खर्च बढ़ा । फलतः किसान की यह आमदनी जो सँभालकर रखी गई होती तो परिवार को अच्छी शिक्षा दिला सकती थी। उन्हें स्वस्थ रख सकती थी । ऐसे ही मसखरी में उड़कर बर्बाद हो गई और जो सुयोग मिला था वह बिना पानी बादल की तरह अपनी झलक झाँकी दिखाकर आँखों से ओझल हो गया । नई पीढ़ियाँ कड़े परिश्रम से बनती हैं । तनिक-सी पढ़ाई पढ़कर शहरों की ओर आराम की नौकरी तलाश करने भागती है । किसी प्रकार वे बच्चे जहाँ-तहाँ गुजारा तो कर लेते हैं, पर घर के सभी सदस्य मिल-जुलकर एक जुट परिश्रम करते और खेती का लाभ कई गुना बढ़ा कर सम्पन्नता, स्वच्छता और सम्मान अर्जित कर सकते थे । उस सभी से वंचित रह जाते हैं । इसे कहते हैं सुविधाओं के होते हुए भी दुर्बुद्धि के कारण उनका समुचित लाभ न उठा पाना ।

यही हर क्षेत्र में हो रहा है । कमाई की दृष्टि से अधिकांश क्षेत्रों की महँगाई होते हुए भी अधिक सुविधा साधन प्राप्त है । इतने पर भी फैशन और दुर्व्यसनों के फेर में इस कमाई का देखते-देखते पलायन हो जाता है और अच्छी आजीविका रहते हुए भी तंगी भुगतने और ऋणी रहते अधिकांश लोग देखे जाते हैं । बढ़ी हुई तृष्णाएँ और आवश्यकताएँ जब साधारण रीति से पूरी नहीं हो पातीं तो अपराधी दुष्प्रवृत्तियाँ अपनानी पड़ती है । शोषण, अपहरण, आक्रमण का सहारा लेना पड़ता है । छलछद्मों के जाल-जंजाल गढ़ने पड़ते हैं । सम्पन्न परिवारों के शिक्षित लोग भी जब डकैती जैसे अनाचारों में संलग्न पाये जाते हैं, तो यही सोचना पड़ता है कि साधन और नवीन प्रगति के लिए, शान्ति के लिए साधनों की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी सत्साहस की ।

देश के कर्णधारों का चिन्तन एक विषेश ढाँचे में ढल जाता है, कि प्रगति के लिए सम्पन्नता बढ़ाने भर से काम हो जायेगा । वे यह भूल जाते हैं कि बढ़ी हुई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पन्नता का उपयोग यदि अनर्थ कृत्यों में होने लगा तो वह दरिद्रता से महँगी पड़ेगी । इसलिए घोड़ा खरीदते समय उसकी लगाम और जीन का भी प्रबन्ध करना चाहिए अन्यथा वह उच्छृंखल होकर किसी भी दिशा में धर दौड़ेगा और किसी खाई खड्ड में सवार को ले गिरेगा ।

साधनों का संवर्धन करते समय इस तथ्य पर पूरा-पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए कि उपलब्धियों का सही उपयोग बन पड़े । ऐसे दूरदर्शी विवेक से भरा पूरा लक्षण जन-साधारण को मिल रहा है या नहीं ? कर्त्तृत्वों को परिष्कृत किया जा रहा है या नहीं ? चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की आदर्शवादिता के रंग में रहा जा रहा है या नहीं ? उपार्जन और चिन्तन का अविच्छिन्न युग्म है । यह दोनों जब साथ-साथ रहेंगे तभी प्रसन्नता का वातावरण बनेगा । जैसे एक हाथ से ताली नहीं बजती । एक पहिए की गाड़ी दूर तक नहीं चलती, उसी प्रकार इन दोनों में से किसी एक को लेकर चल पड़ने पर अभीष्ट की उपलब्धि नहीं हो सकती और न उज्ज्वल भविष्य का आधार खड़ा किया जा सकता है ।

इस तथ्य को यदि गम्भीरतापूर्वक समझा जा सके और उसकी पूर्ति का प्रयास किया जा सके तो ही यह आशा की जा सकती है कि अगली शताब्दी में जिस सम्पन्नता एवं प्रसन्नता की आशा की अपेक्षा की जाती है, उसकी पूर्ति हो सकेगी । अन्यथा आज के समृद्ध देशों की तरह दुर्व्यसन की जहाँ भी गुंजाइश होगी वहाँ चढ़ दौड़ेंगे और बाहरी चमक-दमक पर पालिस फेरते रहने के साथ-साथ भीतर ही भीतर खोखलापन उत्पन्न करते रहेंगे । द्वितीय महायुद्ध में फ्रांस, जर्मनी के आगे एक सप्ताह भी न टिक सका । इसका एक ही कारण था कि उसकी बाहरी चमक-दमक तो बढ़ी-चढ़ी थी पर भीतर ही भीतर वह खोखला हो चुका था । आक्रमण होते ही वहाँ की प्रजा को पलायन ही करना पड़ा, जबकि रूस ने अपनी एक-एक इंच भूमि की रक्षा के लिए अपने जवानों की लाशें बिछा दीं । अणुबमों का प्रहार सहकर भी छोटा-सा जापान इने गिने वर्षों में विश्व की बड़ी शक्ति बन गया है । यह उस देशवासियों के उत्कृष्ट चिन्तन और समर्थ पराक्रम का प्रतिफल है । इजराइल का उदाहरण सामने है । बेतुके रेगिस्तान में रहकर भी चारों ओर से विरोधियों के बीच रहता हुआ भी अपने अस्तित्व की रक्षा कर रहा है, इसे उसकी आन्तरिक दृढ़ता ही कहना चाहिए ।

प्राचीन भारत का इतिहास महानता से भरा हुआ है । उन दिनों जीवन-यापन जितने ही साधन थे । कुबेर भण्डारी ने घरों में स्वर्णघट गाढ़ नहीं रखे थे, किन्तु फिर भी उनकी चारित्रिक गरिमा इतनी बड़ी थी, दृष्टिकोण इतना सुधरा हुआ था कि यहाँ के नागरिकों को देव मानव कहा जाता था । उसी देवत्व ने न केवल अपनी धरित्री को 'स्वर्गादपि गरीयसी' बनाया था वरन् विश्व वसुन्धरा के हर कोने में सभ्यता सुसंस्कारिता के साथ-साथ भौतिक प्रगति का भी पथ-प्रशस्त किया था । तब विपुल साधनों के लिए लालायित नहीं रहा जाता था। ऋषि मनीषी तो भोज पत्र के वस्त्र पहनकर, कंद-मूल पर निर्वाह चलाकर, गुफा झोंपड़ियों में समय बिता लेते थे, पर पुरुषार्थ इस स्तर का करते जिसे मुक्त कंठ से सराहा जाता रहे । यह परीक्षित तथ्य है । खरे सोने को हजार बार परखा जा सकता है । विचारणा की उत्कृष्टता के समर्थन में विश्व के महामानवों का इतिहास भरा पड़ा है । मनुष्य भले ही सैनिक, व्यवसायी, शिल्पी, कलाकार, साहित्यकार, धर्मोपदेशक, ज्ञानी, तपस्वी, कुछ भी क्यों न रहा हो, उसकी वरीयता तभी निखरी और उभरी है, जब वह अन्तस् की दृष्टि से प्रखर, प्रतिभावान और प्रामाणिकता से सुसम्पन्न रहा हो ।

अगले दिनों जिस सर्वतोमुखी प्रगति की हम योजना बनाते और अपेक्षा करते हैं, उसके लिए साधनों के बलबूते ही लक्ष्य तक न पहुँच सकेंगे । उसको भावनात्मक विचारणा की भी अनिवार्य आवश्यकता पड़ेगी ।

अवरोधों से जूझने की सूझ-बूझ जगे

व्यक्ति और समाज के सम्मुख उपस्थित अगणित कठिनाइयाँ, अभावों और संकटों के समाधान किस प्रकार दूर किये जायें ? इस सन्दर्भ में दो प्रकार के चिन्तन हैं । एक ऊपर से थोपने के, दूसरे भीतर से उगाने के। दोनों में से पहला बेजड़ का है और दूसरा चिर-स्थायी ।

नाटक के पात्रों के ऊपर आवरण पहना कर इस प्रकार सजा दिया जाता है, मानो वे जो कुछ दीखते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वही हों। राजा मंत्री, सेनापति, संत, सेठ आदि क अलग-अलग परिधान होते है । उनको सजा देने पर वे वस्तुतः वैसे ही लगते हैं, जैसे कि सजाने वालों ने उन्हें दिखाने का प्रयत्न किया है । रामलीला में विभिन्न पात्रों के नकली मुखौटे लगाते हैं । उन्हें चेहरे पर लगाने से देवता, अवतार, संत, भक्त, दैत्य, दानव जैसे लगने लगते है, पर यदि मुखौटे को उतार लिया जाय, परिधान हटा दिये जायें तो सामान्य व्यक्ति जैसा असली रूप प्रकट हो जाता है तब उस कौतुक कौतूहल की भी समाप्ति हो जाती है ।

समाधान वास्तविक भी हो सकता है और अवास्तविक भी । अवास्तविक वे हैं जो बाहर से थोपे जाते हैं । वास्तविक वे है जो व्यक्तित्व में से उभरे और जीवन के साथ जुड़े हैं । कोई देश उधार के शस्त्र और सैनिक लेकर समर्थ नहीं हो सकता । भीतर से यदि देश पोला है तो बाहर की छत्र-छाया कितने समय तक टिकेगी । कलई बहुत दिन नहीं चलती । बालू की दीवार अधिक देर नहीं खड़ी रहती । काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती । दूसरे के कंधों पर लदकर न तो लम्बी यात्रा की जा सकती है और न जिन्दगी कट सकती है । बल तो वही काम देता है जो अपनी छाती और भुजाओं में उभरा हो । समाधान भी ऐसे ही ढूँढे जाने चाहिए । किसी को भिक्षा देकर न तो सम्पन्न बनाया जा सकता है न और स्वावलम्बी । मनुष्य अपनी ही कमाई से सम्मानपूर्वक जिन्दगी काट सकता है ।

दरिद्रता मिटाने के लिए मनुष्य का आलस्य, प्रमाद मिटाना चाहिए और उसमें तत्परता तन्मयता के साथ उपार्जन करने की ललक उत्पन्न की जानी चाहिए । इसके अभाव में दूसरों की दी हुई भिक्षा या सहायता से टिकाऊ हल नहीं निकल सकता । जो मेहनत से कमाता है वह समझ से खर्च भी करता है । जिसे मुफ्त में सम्पदा हाथ लगी है, वह उसका न तो महत्त्व समझ सकेगा और न उसका सदुपयोग कर सकेगा । अपव्यय दुर्व्यसन उसकी पोटली जल्दी ही खाली कर देंगे । इसलिए अच्छा हो कि मनुष्य स्वावलम्बी सुसंस्कारी बने और किसी की ओर सहायता पाने की दृष्टि से न तके ।

उपार्जन कला में प्रवीण मारवाड़ी, पंजाबी कहीं हाथ पसारते नहीं देखे गये । इसके विपरीत भिक्षुकों के समुदाय आए दिन जिस-तिस प्रकार जहाँ-तहाँ से भटकते रहने पर भी मन से हीन परिस्थिति से दीन बने रहते है । समाधान वही कारगर होते है, जिनकी निजी जड़ें होती हैं । अमर बेल जिस पेड़ पर छाई होती है, उसे चूसने के उपरान्त स्वयं भी सूख जाती है ।

कानूनों के द्वारा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयत्न करना अच्छी बात है । पर वह ऊपर से थोपी होने के कारण सफल नहीं हो पा रही है । न तो बाल-विवाह बन्द होते दीख रहे हैं और न दहेज की माँग बन्द हो रही है । रिश्वत और व्यभिचार दोनों के विरुद्ध कड़े कानून हैं, पर दोनों पक्ष अपनी पटरी निकाल लेते हैं और सहयोगपूर्वक वे कुकर्म यथावत् चलते रहते हैं । कानून अपना काम पूरा तब करे जब इन अनाचारों के विरुद्ध लोक मानस विनिर्मित हो और घृणा उभरे ।

जाति-पाँति के आधार पर ऊँच-नीच मानने का संविधान में विरोध है । पर ब्राह्मण ब्राह्मणों में, कायस्थ कायस्थों में, अछूत-अछूतों में जो आपसी ऊँच-नीच की मान्यता है, उसका क्या किया जाय ? सवर्ण और असवर्णों के बीच पाये जाने वाले भेदभाव पर तो मुकदमा भी चल सकता है, पर एक ही जाति की उपजातियों में जो भेदभाव है । एक जाति का अछूत दूसरी जाति के अछूत से रोटी-बेटी व्यवहार नहीं करना चाहता, उसका क्या उपाय किया जाय ? ऐसा ही भेदभाव गरीब-अमीर और शिक्षित-अशिक्षित के बीच भी देखा जाता है । अपने घरों की महिलाओं तक को लोग गई गुजरी ठहराते हैं । उनसे अपमानजनक व्यवहार करते हैं तो उसके लिए क्या किया जाय ?

कानून का भय दिखाना आवश्यक है । राष्ट्रीय मान्यता के रूप में संविधान में भी सभ्यता सूचक निर्धारणों का उल्लेख होना चाहिए सो है भी, पर इतने से भी हमारा उत्तरदायित्व पूरा नहीं हो जाता । करना कुछ और भी पड़ेगा और वह है आस्थाओं को झकझोरना, विचारों की अवांछनीयता में आमूल-चूल परिवर्तन करना । औचित्य का पक्ष समर्थन करने वाली विवेक-बुद्धि को उभारना । न्याय के प्रति आस्थावान होना । यह मान्यता भीतर से जागेगी तो वह जाति-पाँति तक वेश-वंश तक सीमित न रहेगी, वरन् विषमता के हर पक्ष की काटछाँट करेगी ।

मनुष्य की अक्लमंदी में घुसी हुई धूर्तता का कोई अन्त नहीं । वह शासन की पकड़ से बच सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कानून को अपने समर्थक के रूप में प्रस्तुत कर सकता है प्रलोभन और दबाव से गवाहियाँ जुटा सकता है । सबूत इकट्ठे कर सकता है और राजदण्ड की पकड़ से सहज ही बच सकता है । इसी प्रकार समाज को बहकाना भी कुछ कठिन नहीं है । देशभक्त नेता और धर्मोपदेशक बनने में थोड़े से कला-कौशल की आवश्यकता है जिसे किसी भी सहकर्मी के रंग-ढंग देखकर उसकी अनुकृति अपनाई जा सकती है । थोड़ा-सा दान-पुण्य, पूजा-पाठ के कर्मकाण्डों को निबाहते रहने पर सम्पर्क क्षेत्र में अपने धर्मात्मा होने की ख्याति फैलाई जा सकती है और पर्दे के पीछे अनाचार इस प्रकार करते रहा जा सकता है कि उनके सम्बन्ध में किसी को गंध भी न लगे । इसी चतुरता के बलबूते शोषितों के मुँह से जय-जयकार कराने के लिए मजबूरी उपस्थित की जा सकते है । इतने हथकण्डों को रोक पाना कठिन है, यही कारण है कि प्रत्येक अनाचार के सम्बन्ध में कानूनी प्रतिबन्ध होने, शास्त्रों द्वारा पाप घोषित किये जाने, उपदेशकों द्वारा दुष्कर्मों को हेय ठहराये जाने के धुआँधार प्रचार होते रहने पर भी लोग टस से मस नहीं होते, अपनी बेढंगी चाल में जरा भी परिवर्तन नहीं करते । चिकने घड़े की तरह अपने ऊपर उपदेशों के पानी की एक बूँद नहीं ठहरने देते ।

स्थिति यही बनी रही तो समझना चाहिए कि दुर्भाग्य का काल राहु पीछे ही पड़ा रहेगा और उन स्वर्णिम स्वप्नों के साकार होने का कभी अवसर न मिलेगा, जिसमें मनुष्य सतयुगी सुख-सुविधाओं से भरी-पूरी जिन्दगी जी सकने की आशा की अपेक्षा की जाती है । मात्र सम्पदा, शिक्षा, बलिष्ठता के बलबूते मनुष्य दूसरों को डरा धमकाकर, फुसलाकर अपना उल्लू सीधा तो कर सकता है, पर उसे औचित्य के प्रति आस्थावान होने के लिए प्रभावित, अनुप्राणित नहीं कर सकता ।

इस दिशा में गम्भीरता से सोचना होगा और ठोस प्रयास करना होगा अन्यथा जिस सर्वनाशी कुचक्र में हम फँस गये हैं उसमें से निकलना सहज ही सम्भव न होगा । जेल जाकर वहाँ रहने वाले वरिष्ठों से शिक्षा पाकर जो निकलता है, वह अपराधों के क्षेत्र में ट्रेण्ड प्रवीण-पारंगत होता है । सामाजिक भर्त्सना सुनते रहने पर मनुष्य ढीठ हो जाता है ।

विनाश विभीषिकाओं का अन्त होकर रहेगा

दो परस्पर विरोधी युगों का मिलन काल बड़ा विचित्र होता है । उस अवधि में जो विसंगतियाँ दीख पड़ती हैं, वे बहुत ही विचित्र होती हैं । ब्रह्ममुहुर्त में तारे बुझने लगते है और तमिस्रा घनीभूत हो जाती है । विदा होने से पहले अन्धकार इतना गहन होता है, जितना रात्रि के अन्य प्रहरों में नहीं होता । दूसरी ओर उषाकाल का अरुणोदय पूर्व प्राची दिशा में धीमा उजाला भी मुस्कान आरम्भ कर देता है । अन्धकार का घटना और प्रकाश का बढ़ना दोनों परस्पर विरोधी हैं । किन्तु फिर भी वे अपने समय पर अपना काम करते ही हैं । दीपक जब बुझने को होता है तो उसकी लौ बार-बार उद्दीप्त होती और अन्त में बंद हो जाती है । मृतक भी अपनी साँसें अन्तिम क्षणों में बड़ी तेजी से चलाता है । बीज एक ओर गलता जाता है दूसरी ओर नवांकुरों का उत्पादन भी करता है । शिशु जन्म के समय कितनी विकट प्रसव पीड़ा होती है इसे सभी जानते हैं, पर साथ ही यह भी आशा करते हैं कि कुल का दीपक जन्मेगा और परिवार का सहारा बनेगा ।

इन्हें परस्पर विरोधी बातें कह सकते हैं, किन्तु परिवर्तन कालों में सदा ऐसा ही होता है । बसन्ती शोभा-सुषमा बिखरने से पूर्व शीतल हेमन्त का साम्राज्य होता है । पेड़ों से पत्ते गिरते और उन्हें कुरूप ठूँठ बना देते हैं पर उस समय के तनिक खिसकते ही नई कोपलों और फूलों का सिलसिला आरम्भ होता है, जिससे वातावरण उल्लासमय बनता और मधुर फल लगने का क्रम चल पड़ता है । ग्रीष्म सब कुछ सुखा देती है । अन्धड़ों और चक्रवातों की विभीषिका खड़ी कर देती है, पर उसका समापन होते-होते ठीक प्रतिकूल परिस्थितियाँ बनती है और बादलों के घटाटोप दौड़ पड़ते हैं, जल थल एक कर देने वाली वर्षा होती है । हरीतिमा का मखमली फर्श सारी जमीन पर बिछ जाता है । तपते ग्रीष्म और बरसते श्रावण की तुलना की जाय तो उनके बीच जमीन, आसमान जैसा अन्तर दीख पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिवर्तन काल ऐसे ही विचित्र होते हैं । जीवित को मरणकाल में प्राण त्यागने पड़ते हैं और मूत्रमार्ग में बेहोश पड़ा भ्रूण प्रसवकाल के क्षणों में नवजीवन का परिचय देता है । प्रकृति की यह विचित्रताएँ लगती तो आश्चर्यजनक हैं, पर हैं सुनिश्चित और आवश्यक । यदि ऐसा न होता तो सर्वत्र स्थिर जड़ता दृष्टिगोचर होती । परिवर्तन का मोहक नृत्य समाप्त हो जाने पर यहाँ नीरवता निस्तब्धता छा जाती ।

सृष्टा ने इस धरती की शोभा सुव्यवस्था बनाये रहने का दायित्व अपने ज्येष्ठ पुत्र मनुष्य के कंधों पर सौंपा है । साथ ही यह निर्देश किया है कि अपनी गरिमा को सुसस्कृत स्तर तक पहुँचाने का प्रयत्न करे । चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते समय जो हेय स्तर की आदतें, मान्यताएँ, गतिविधियाँ एकत्र कर ली हैं उन्हें खरपतवार की तरह उखाड़ फेंके, कूड़े-कचरे की तरह बुहार डालें ताकि शक्तियों का अपव्यय बचे और ऐसे क्रिया-कलाप चल पड़ें जिनके सहारे असन्तुलन को सन्तुलन में बदला जा सके । धरती की स्वर्गोपम उपमा-गरिमा अक्षुण्ण बनी रहे ।

देखा जाता है कि मनुष्य जहाँ स्वाभाविक रूप से अति महान् है, वहाँ उसमें यह दोष भी है कि अपने गौरव और दयात्वि को भुलाकर इर्द-गिर्द चल रही गतिविधियों से प्रभावित होकर उन्हीं का अनुकरण, अनुगमन करने लगते है । सतयुगी वातावरण के दिनों में श्रेष्ठता का आवेश ही हर किसी पर छाया रहता है और आदर्शवादिता के क्षेत्र में हर कोई अपने पराक्रम एवं वर्चस्व का प्रमाण प्रस्तुत करते रहते हैं । प्रतिस्पर्धा की घुड़दौड़ लगी रहती है । सर्वत्र महामानवों का ही बाहुल्य दीख पड़ता है, किन्तु जब मनुष्य उलटी राह चलता है, कीचड़ और गंदगी में लौटता है तो शरीर-परिधान सभी दुर्गन्ध से भर जाते हैं । उन्हें छूने तक की इच्छा नहीं होती । ऐसे लोगों का बाहुल्य जहाँ भी जब भी होता है, तब वहाँ वीभत्स दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं । शराब खाने में गाली-गलौज और जुल्म-जोर का ही माहौल दीख पड़ता है, यह कलियुग है उसी को अवांछनीय वातावरण कहते हैं । जब नीतिमत्ता के निर्वाह की जिम्मेदारी की परित्याग कर दिया जाता है तो दृश्य नरक जैसा ही बन जाता है । उससे व्यक्ति का पतन और समाज का पराभव होता है । विग्रह और विनाश के शोक और संताप के दृश्य दिखाई देने लगते हैं । इन दिनों हमें ऐसे ही वातावरण में रहना पड़ रहा है । विषम परिस्थितियाँ चारों ओर से कोंचती-कचोटती दीख पड़ती है ।

बिगड़े का सुधार आवश्यक है । टूट-फूट की मरम्मत की जाती है । जराजीर्ण भवनों को ठोक-पीट कर काम चलाऊ बनाया जाता है । बर्तनों और कपड़ों की भी ऐसी ही साज सँभाल चलती रहती है । इसके लिए मनुष्यों को ही आगे आना पड़ता है । यों मूलतः निर्माता के किये पर ही बिगाड़ को सुधारने की भी जिम्मेदारी है । मकान मालिक ही मरम्मत और रंग रोगन कराता है । प्रान्तीय क्षेत्रीय शासन जब अव्यवस्था और अराजकता से घिर जाते हैं, तब कार्यवाहकों को निलम्बित या परिवर्तित कर दिया जाता है । राष्ट्रपति शासन लागू होता है । मनुष्य जब तक बिगड़ी परिस्थितियों को सन्त, सुधारक और शहीदों के माध्यम से सामयिक अव्यवस्थाओं को संभालता रहता है तब तक उसके पौरुष और वर्चस्व की प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा ही बनी रहने दी जाती है । कोई ऊपरी छेड़खानी नहीं होती । किन्तु जब पतन का प्रवाह द्रुतगामी हो जाता है, तो उसकी रोकथाम करने और साज संभाल का जुगाड़ बिठाने के लिए अधिष्ठाता को अपना मार्शल कानून लगाना पड़ता है । स्थिति को संभालने वाले प्रशिक्षित अफसर भेजने पड़ते हैं । इसी का नाम अवतार है । अधर्म की बढ़ोत्तरी और धर्म के ह्रास जैसी विषम परिस्थितियों में स्वयं आकर साज संभाल करने का दिया हुआ वचन भूतकाल में भी चरितार्थ होता रहा है और अब भी होने जा रहा है । निराकार परमेश्वर स्वयं तो जन्म नहीं ले सकता और न किसी व्यक्ति विशेष के छोटे कलेवर में सीमाबद्ध होकर विशाल ब्रह्माण्ड के घट-घट में समाया रह सकता है, जो असम्भव है वह न पिछले दिनों हुआ है और न अब या अगले दिनों होगा । अवतार एक अन्धड़ तूफान की तरह आता है जिसके सहायक होने को इच्छुकों की पात्रता उन्हें बढ-चढ़कर काम करने का अवसर प्रदान करती है । युग सृजेता उत्पन्न होते हैं और उलटे को उलटकर सीधा करने की प्रक्रिया में प्राणपण से जुटकर नियन्ता के संकेतों को समझते हुए उसकी इच्छापूर्ति में अपनी समग्र सत्ता को नियोजित करते हैं । कर्तृत्व मनुष्य का होता है और नेतृत्व भगवान् का । ऐसी दशा में कठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं और सामान्य स्तर के दीखने वाले मनुष्य भी ऐसे काम करते हैं जिन्हें देखकर आश्चर्यचकित रह जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ता है । युग-परिवर्तन के अवसरों में सृजन सैनिकों का पराक्रम ऐसा ही होता है जिसे तुच्छ मनुष्य कदाचित ही कभी कर सकें । तूफान जब आते हैं तो उसके साथ पड़कर रेत के कण और सूखे पत्ते उड़ते चले जाते हैं और आसमान चूमते हैं । नगण्य-सी टहनियाँ नदी के प्रचण्ड प्रवाह में पड़कर द्रुतगति से सनसनाती चली जाती हैं और लम्बी यात्रा पूरी करके समुद्र तक पहुँचती हैं । ग्रीष्म की बहुलता में साधारण हवा के झोंके चक्रवात बनते हैं और पेड़ों को उखाड़ते, झोंपड़ों को उछालते चले जाते हैं । युग परिवर्तन के समय भी ऐसा ही होता है । सांसारिक दृष्टि से सामान्य योग्यता और परिस्थिति के व्यक्ति जब उच्चस्तरीय परमार्थिक काम करने खड़े होते हैं तो उन्हें भगवान् की अतिरिक्त शक्ति सहायता करती है, उसी के बलबूते वे इतने बड़े काम कर दिखाते हैं जिन्हें मानुषी कहने में झिझक होती है, जिन्हें दैवी कहने को ही मन करता है । ऐसे अनेकानेक उदाहरण इतिहास में मौजूद हैं और आगे भी प्रस्तुत होते रहेंगे ।

हनुमान, अंगद, अर्जुन, भीम, परशुराम, अगस्त्य, दधीचि, भागीरथ, राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी, ईसा, दयानन्द, विवेकानन्द आदि के कृत्यों को देखकर यह अनुमान लगाना पड़ता है कि यदि उनके साथ दैवी अनुग्रह न रहा होता तो इतने असाधारण कार्य कर सकने में उन्हें आश्चर्यजनक सफलताएँ क्यों कर मिलतीं ? रीछ, वानरों की सहायता से समुद्र पर पुल कैसे बन जाता ? लाठी का टेका लगाकर ग्वालबाल गोवर्धन उठाने में कैसे सफल हो पाते ? अनीति का उन्मूलन और सत्प्रवृत्ति संवर्धन में दैवी सहायता सदा ही उपलब्ध होती रही और होती रहेगी ।

अदृश्यदर्शी अपनी दिव्य दृष्टि से यही सब होते हुए देख रहे हैं । उन्हें हस्तामलकवत् यह दीख रहा है कि मनुष्य ने अपनी मर्यादा और गरिमा को तिलांजलि दे दी । फलस्वरूप अदृश्य वातावरण विषाक्त हो गया । प्रकृति प्रतिकूलताएँ उगलने लगीं, विपत्ति बरसाने लगी और ऐसी दलदल जैसी परिस्थिति बन गई जिसकी विभीषिका विश्व विनाश जैसा संकट खड़ा किये हुए है । आशंका और आतंक से हर किसी का दिल धड़क रहा है ।

उबरने का उपाय एक ही है, मानवी सुधार प्रयासों के असफल हो जाने पर उसका दूसरा उपचार आद्यशक्ति महाप्रज्ञा के अवतरण रूप में सामने आये और अपने वीरभद्रों को सुधार प्रयासों में जुटाये । विश्वास यही बन गया है कि यही होकर रहेगा । **असुरता की लंका जलेगी और देवत्व उदय एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण वाला राम स्वयं फिर से नये रूप में प्रकट होगा** । इस प्रकटीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव एक ही रूप में दीख पड़ेगा कि युग-शिल्पियों की एक सृजन वाहिनी अनायास ही इन दिनों उग पड़ेगी । उसका पुरुषार्थ उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा, जिनकी कि इन्हीं घड़ियों में अविलम्ब आवश्यकता है । बुरा समय इन दिनों घिरा हुआ दीख अवश्य रहा है, पर ऐसा प्रचण्ड वायु वेग का माहौल भी बन रहा है, जो इन घटाटोपों को उड़ाकर कहीं से कहीं पहुँचा देगा ।

सहायता के दिए दैवी शक्ति का आह्वान

कहते है विष्णु शेष शैय्या पर क्षीरसागर में सोते रहते है । उनकी निद्रा में कोई विघ्न न डाले इसलिए शैय्या रूप में पड़ा हुआ सहस्रमुखी शेषनाग सदा फन फैलाये तैयार रहेगा । उनके विश्राम में किसी प्रकार की विघ्न बाधा न पड़े इसलिए लक्ष्मी जी पैताने बैठी चरण चापा करती रहती हैं। ऐसा क्यों होता है ? इसका एक ही उत्तर है कि वे अपने ज्येष्ठ पुत्र मनुष्य पर बहुत भरोसा करते हैं । उनका विश्वास है कि जो भी समस्याएँ, अड़चनें कभी आती होंगी उनका निराकरण वह अपनी समर्थता और बुद्धिमत्ता के सहारे कर लेगा । इस निमित्त उसे बहुत कुछ दिया भी गया है । सृष्टा ने अपनी अनन्त क्षमताओं को मनुष्य के बीज रूप में भर दिया है , ताकि उसे आत्मबल का भरोसा बना रहे और साथ ही यह ध्यान भी बना रहे कि प्रसुप्ति को जागृति में बदलना है । बीज के भीतर वृक्ष सोया रहता है । उसे धरती में बोना और खाद पानी से सींचना पड़ता है तभी वह सुयोग्य बनता है जिसके सहारे कोठों भरे धन धान्य का भण्डारण वैभव की वृद्धि करे ।

हनुमान में सामर्थ्य थी, पर बिना उद्बोधन के वह न प्रकट हो सकी और न क्रियान्वित । प्रसुप्त अन्तःकरण की स्थिति में वे भगोड़े सुग्रीव की नौकरी करके अपना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुजारा करते थे । राम लक्ष्मण के सम्पर्क से विद्युत करेण्ट उन्हें छू गया, तो स्थिति बदल गयी और महावीर विक्रम बजरंगी हो गये । अगले प्रसंगों में वह अवसर भी आता है जब समुद्र लांघने की समस्या थी । गदाधारियों में से सभी चकरा रहे थे । हनुमान भी कार्य की विशालता और भयंकरता देखकर मौन धारण किये एक कोने में उदास बैठे थे । जामवन्त ने जब उद्‌बोधन दिया तो उनका आत्म विस्मरण छूटा । कटिबद्ध हुए और देखते-देखते समुद्र लांघ कर लंका को वीरान करने में लग गये ।

शेषशायी विष्णु वह है, जो मनुष्य की क्षमता और गरिमा के भरोसे यह विश्वास करता है कि सब कुछ ठीक चलता होगा और ठीक चलेगा । जब आभास होता है कि दायित्व निभ नहीं रहा है तो स्वयं आगे आते हैं । शयन शैय्या छोड़ते हैं और पराक्रम भरे चक्र सुदर्शन को गति देते हैं । उन्होंने वाराह, नृसिंह और परशुराम के रूप भी धारण किये हैं और अवसाद, आतंक को जड़ मूल से उखाड़ कर भगाया है । उन्होंने लंका की बलिष्ठ असुरता का भी विनाश किया है और द्वापर में अनौचित्य के विरुद्ध महाभारत का भी सरंजाम जुटाते रहे हैं । उन्होंने बुद्ध, गाँधी के रूप में भी पराक्रम किये हैं । मनुष्य को कृपणता बरतते देखकर उन्होंने गीता का तत्वज्ञान भी समझाया और सारथी बन कर अर्जुन का रथ सही मार्ग पर चलाया ।

प्रथम आक्रमण सदा बाजी जीतता रहा है, पीछे उसका परिणाम कुछ भी क्यों न भुगतना पड़े ? देव दानव संग्राम में सदा प्रथम विजय दैत्यों की ही हुई है । देव वर्ग अपने जैसा सज्जन दूसरों को भी मानता रहा है और कल्पना करता रहा है कि दुष्टता चरम सीमा तक पहुँचने से पहले ही रुक जायेगी, किन्तु यह अनुमान गलत ही साबित होता रहा है । आक्रमण के विरुद्ध प्रत्याक्रमण करना पड़ा है । यों देवत्व इस संदर्भ में अभ्यस्त और प्रवीण नहीं होता इसलिए उसे निराकरण में देर भी लगी है और कठिनाई भी झेलनी पड़ी है, किन्तु एक सुयोग देवपक्ष के साथ जुड़ा रहा है, कि उसे अदृश्य शक्तियों का सहयोग उपलब्ध होता रहा है । दुर्दान्त वृत्रासुर का आतंक जब चरमसीमा पर पहुँचा तो देवता घबराये, वे प्रजापति के पास पहुँचे उन्होंने देवताओं की संयुक्त शक्ति एकत्रित की और उससे दुर्गा का सृजन किया । महाशक्ति ने महिषासुर, शुंभ निशुंभ, मधुकैटभ, रक्तबीज आदि को धराशायी बना दिया । इस कथा में तथ्य इतना ही है कि देवमानवों की संयुक्त शक्ति यदि दानवों के विरुद्ध अड़ जाय तो सफलता में कोई संदेह नहीं रह जाता । इन्द्र को हारा देखकर दधीचि ने अपनी अस्थियाँ ऐसा वज्र बनाने के लिए दे दी थीं कि देव वर्ग की जीत निश्चित हो गई । वह कथा सभी को याद है जिसमें ऋषियों के रक्त संग्रह से घड़ा भरा गया था और उस घड़े से सीता जन्मी जो असुरता के गढ़ को विस्सार करने में निमित्त कारण बनी । उन्हीं के कारण रीछ, वानरों को बहती गंगा में हाथ धोकर अपने को कृतकृत्य करने का अवसर मिला था । यह दैवी सहायता का ही अनुदान है, जिससे देवत्व की शाश्वतता सजीव बनी रही और अपनी वरिष्ठता अक्षुण्ण बनाये रह सकी ।

संदर्भ आज की परिस्थितियों का है । मायावी बेताल का वितान चारों ओर तना हुआ है । कोई क्षेत्र ऐसा नहीं बचा जिसमें प्रवेश करने पर जहरीली घुटन अनुभव न होती हो । जहाँ सत्यानाशी सम्भावनाएँ अजगर जैसा सिर उठाये फुसकार न रही हों ।

इनके निराकरण के प्रयत्न न किये गये हों, सो बात नहीं, पर सोचने का तरीका ईंट का जवाब पत्थर से देने जैसा ही रहा है । माया को माया से काटने के पासे बिछाये गये हैं, पर मैल से मैल को कैसे धोया जाय । दानवी मायाचार का मुकाबिला उस तरीके को अपना कर तो तभी दिया जा सकता है जब आक्रान्ता से बढ़कर आक्रमण किया जाय और अनीति के सामने उससे भी बड़ी अनीति खड़ी की जाय । किन्तु यह देव प्रकृति के लिए सम्भव नहीं । उनका स्वभाव ही ऐसे ढाँचे में ढला नहीं होता । ऐसी दशा में संकट की निवृत्ति तभी हो सकती है, जब देव पक्ष को ईश्वरीय सहायता उपलब्ध हो ।

यह सब कुछ अनायास ही नहीं हो जाता, वरन् देव पक्ष को भी अपनी पीड़ा व्यक्त करने के लिए ऐसी गुहार लगानी पड़ती है, जिससे आवश्यकता और पात्रता भगवान् के सामने सिद्ध हो सके । पौराणिक कथाओं के अनुसार देवता आक्रान्त होने पर प्रजापति या विष्णु की शरण में गये हैं और समय रहते सहायता मिलने की याचना की है । ग्राह के मुँह में फँसे हुए गज ने भी पुकार की थी और द्रौपदी ने भी लाज जाने की गुहार में समूची भाव संवेदना भर दी थी। इसी मनःस्थिति को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरे शब्दों में तप कहते है । भागीरथ ने गंगा को धरती पर लाने के लिए प्रचण्ड तप किया था । शिव का वरण करने के लिए पार्वती को भी तप करना पड़ा था । भगवान् को गोदी में खिलाने के लिए स्वयंभू मनु और शतरूपा रानी को कठिन तपस्या करनी पड़ी थी । सृष्टि की संरचना में हाथ डालने से पूर्व ब्रह्माजी को भी उग्र तपस्या पूरी करनी पड़ी थी । भारत भूमि एवं विश्व वसुधा को अनाचार मुक्त बनाने के लिए पिछले दिनों महर्षि रमण, योगी अरविन्द आदि ने तपश्यचर्या का मार्ग ही अपनाया था । देश की स्वतंत्रता में एक ही समय में अनेकानेक महामानवों के उत्पादन में उन तपस्याओं का आसाधारण योगदान रहा है ।

वर्तमान परिस्थितियों में विश्व समस्याओं के समाधान हेतु प्रज्ञा अभियान द्वारा सामूहिक तप साधना की एक श्रृंखला चलाई गई है । उसका प्रभाव एकाकी साधना की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावशाली होना चाहिए । ईसाइयों के गिरजों में रविवार को, मुसलमानों की मसजिदों में शुक्रवार को नमाज की धूम रहती है । जो नित्य नियमित रूप से प्रार्थना नहीं कर सकते, वे भी उन सामूहिक आयोजनों में सरलतापूर्वक सम्मिलित होते हैं । एकाकी प्रयासों की अपेक्षा सम्मिलित कार्यक्रम की शक्ति सामर्थ्य कहीं अधिक होती है इसे तो हर कोई जानता है ।

प्रज्ञा अभियान के सूत्र संचालक ने २४-२४ लक्ष्य के २४ गायत्री महापुरश्चरण किये थे । उनका संकल्प किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं वरन् जन-कल्याण के निमित्त ही था । आमतौर से साधनाएँ व्यक्तिगत ही होती हैं । लोग अपने लिए स्वर्ग मुक्ति, ऋद्धि, सिद्धि, देवदर्शन, वरदान, मनोकामना, कष्ट निवारण आदि के निमित्त ही साधनाएँ करते हैं, किन्तु अपनी साधनाएँ आरम्भ से अन्त तक युग परिवर्तन एवं जन-कल्याण के निमित्त ही हो रही हैं । महापुरश्चरणों के अन्त में सहस्रकुण्डी यज्ञ भी सामूहिक ही हुआ था और इसके उपरान्त गायत्री अनुष्ठानों एवं यज्ञ आयोजनों का क्रम सामूहिक इबादतों के रूप में ही चला है । अब भी हर नव रात्रि में सामूहिक साधनाएँ ही होती हैं ।

युग संधि के संदर्भ में विगत ४ वर्ष से प्रतिदिन २४० करोड़ गायत्री जप का आयोजन चल रहा है । प्रज्ञा परिवार के प्रायः २४ लाख परिजन प्रतिदिन दो माला गायत्री जप न्यूनतम करते है । एक माला आत्म परिष्कार के लिए, दूसरी विश्व कल्याण के लिए । इस प्रकार न्यूनतम २४० करोड़ जप नित्य हो जाता है । ऐसी योजना कहीं भी कभी भी अब तक नहीं बनी है ।

इसी प्रयोजन के लिए अब से तीन वर्ष पूर्व सूक्ष्मीकरण साधना आरम्भ की गई थी । उसे सावित्री साधना के नाम से जाना गया था और पंचकोशों का अनावरण भी कहा गया था । उसके साथ जुड़े हुए अनुशासन अतीव कठोर थे । इन दिनों जहाँ भी, जिनसे भी, जैसे भी तपश्चर्या बन पड़ रही है, इनकी तुलना में इसे किसी भी प्रकार कम नहीं माना जा सकता है । तन साधना में ऐसे कठोर इतने व्रत नियमों को कोई विरले ही साध पाते हैं । अब वह साधना पूर्ण होती हैं । इसे भारत की देवात्मा का कुण्डलिनी जागरण कहा जाय तो इसमें तनिक भी अत्युक्ति न होगी । आमतौर से व्यक्ति विशेष अपनी निजी क्षमता उभारने के लिए कुल कुण्डलिनी की प्रचंड साधना करते है । उसमें षड्चक्रों का वेधन तथा बन्ध मुद्राओं का ध्यान धारणाओं का विशेष समावेश होता है, पर अपनी साधना तो भारत की देवात्मा में प्रचण्ड बल भरने की थी, ताकि इस स्वर्गादपि गरीयसी देवभूमि का देवत्त्व दावानल की तरह उबल पड़े ।

ध्रुव, भागीरथ जैसी तीन वर्षीय प्रस्तुत साधना का अभीष्ट परिणाम निश्चित रूप से होना है और वह अपने ढंग का अत्यन्त महिमामय प्रभाव उत्पन्न करेगा । भारत की देवात्मा जगेगी और वह न केवल अपने देश की समस्याओं का समाधान करेगी, वरन् समीपवर्ती दूरवर्ती अन्य क्षेत्रों पर भी उसका प्रभाव पड़े बिना न रहेगा । देश अपना उत्कर्ष करेगा । प्राचीन गौरव गरिमा को हस्तगत करेगा और अन्यान्य क्षेत्रों पर भी कल्याण के राजमार्ग पर चल सकने की क्षमता प्रदान करेगा ।

यह तीन वर्षीय हमारे जीवन की अन्तिम और अति कठोर साधना रही है । इसकी पूर्णाहुति सौ-सौ कुण्डों के सौ गायत्री यज्ञों में हो रही है । सन् १९५८ का यज्ञ एक हजार कुण्डों का हुआ था । यह एक लाख कुण्डों का होगा । सौ-सौ कुण्डों के सौ यज्ञों में विकेन्द्रीकरण इसलिए किया गया है कि उसका अधिक व्यापक क्षेत्र में प्रभाव विस्तृत हो सके और उससे अधिकाधिक क्षेत्रों का जन-समुदाय लाभान्वित हो सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खतरा इतना गम्भीर नहीं है ?

विश्व भर में उत्थान-पतन की विग्रह-सामन्जस्य की परिस्थितियाँ अपने-अपने प्रकार की चल रही हैं । अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी समझ-बूझ के अनुसार कदम उठा रहना है । फलतः समझदारी नफे में रह रही है और ना-समझी का दंड उन समुदायों और व्यक्तियों को सहन करना पड़ रहा है । पर कहीं भी स्थिति ऐसी नहीं है जिसे निश्चिन्तता और प्रसन्नता से भरी हुई कहा जा सके । उद्वेगों का ज्वर महामारी की तरह हर क्षेत्र में फैला हुआ है ।

इनके समाधान में भारत परोक्ष भूमिकाएँ सम्पन्न करेगा । इसके लिए उसे इन्हीं दिनों अतिरिक्त दैवी बल उपलब्ध हुआ है । साधारणतया पड़ोसी ही एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान करते हैं और लाभ-हानि पहुँचाते उठते-गिरते हैं, पर आत्मबल के सम्मुख मीलों की दूरी कोई दूरी नहीं । सूर्य का प्रकाश देखते-देखते अपने प्रभाव क्षेत्र में आलोक बिखेर देता है । इसी प्रकार अपना देश विश्वव्यापी समझदारी को प्रभावित एवं परिवर्तित होने के लिए बाधित भी करेगा । जहाँ उद्दंडता चरमसीमा पर है, वहाँ प्रतिबंध खड़े होंगे और जहाँ सन्मार्ग पर चला जा रहा है, वहाँ सफलता भरे प्रोत्साहन मिलेंगे । अगले दिनों यही होने वाला है । यही होकर रहेगा ।

इन दिनों सबसे बड़ी विश्व विभीषिका तृतीय युद्ध की है । कई देशों ने परमाणु बम बना लिये है और उनके जखीरे जमा कर लिये हैं । सभी इस तैयारी में हैं कि अन्य विरोधियों का सर्वनाश करके संसार भर पर एकाकी राज्य करेंगे । संसार भर की सम्पदा पर उनका स्वामित्व होगा । बचे खुचे लोग उन्हीं के पराश्रित रहेंगे । जिस प्रकार रहने और करने के लिए उनसे कहा जायेगा, उसी प्रकार वे करेंगे । करने के लिए बाधित होंगे । स्वप्न बहुत सुनहरे हैं, पर वे कभी भी सार्थक न हो सकेंगे । प्रतिद्वन्द्वी चुपचाप यह सब सहन करते न रहेंगे । जापान की बात दूसरी थी । तब एक देश के पास ही शक्ति थी, दूसरे सभी असहाय थे, पर अब ऐसी बात नहीं है । अब प्रायः एक दर्जन देश अणुशक्ति से सम्पन्न हैं । प्रतिशोध की पूरी-पूरी सम्भावना है । हर आक्रामक इस बात से डरता है कि बदले में जो प्रहार होंगे उससे बच सकना अपने लिए भी किसी तरह सम्भव न होगा । लम्बी दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र अब अनेकों के पास हैं, ये प्रेरित भूमि से चलकर निर्बाध रूप से गन्तव्य स्थान तक पहुँच सकते हैं और कहर बरसा सकते हैं । आकाश युद्ध की, जल युद्ध की भी तैयारियाँ हो रही हैं, पर समझ लिया जाना चाहिए कि उनकी समानान्तर प्रतिकृतियाँ विरोधी देशों के साथ भी किसी न किसी तरह पहुँचती रहती हैं और उस आधार पर निष्कर्ष यही निकलता है कि वर्तमान परिस्थितियों में युद्ध आरम्भ तो कोई भी कर सकता है, पर प्रतिशोध की तैयारियों को देखते हुए यह जीत नहीं सकता । हारने के लिए लड़ना कौन चाहेगा ?

युद्ध आयुधों को कुंठित करने और उनकी क्षमता को नष्ट करने के लिए दैवी शक्तियाँ पीछे लगी हुई हैं । स्काईलैब से लेकर चैलेन्जर की एक श्रृंखला मुँह उठाते ही धूल चाटते रह गई है । कितने ही उपग्रह भटक गये हैं । सतर्कता में कमी नहीं देखी जा रही है, पर जब पासे ही उलटे पड़ रहे हों तो कोई क्या करे ? यह चेतावनी रूस को भी मिल चुकी है, उसे भी नये कारखाने खोलते समय हजार बार सोचना पड़ेगा कि अपनी बोई फसल अपने को ही न काटने लगे । जिन देशों में औद्योगिक दृष्टि से इस तकनीकी को अपने देश में लगाया है, वे भी अणु भण्डार बढ़ाने से पूर्व यह अनुभव कर रहे हैं कि इस शेर को जाल में जकड़ कर पिंजड़े में ठूँस देना तो उतना कठिन नहीं है जितना कि उसका पालना और सरकस में उपयुक्त कौशल दिखाने के लिए प्रशिक्षित करना ।

महायुद्ध में काम आने वाले अणु बम, रासायनिक गैसें मृत्यु किरणें विनिर्मित तो तेजी से हो रही हैं, पर उदीयमान दैवी शक्ति के हस्तक्षेप पर फलों में से कोई भी अभीष्ट प्रयोजन पूरा कर सकने की स्थिति तक न पहुँच पायेंगे । अन्धड़ के भयंकर दबाव को न सह सकेंगे और पकने से पहले ही धरती पर आ गिरेंगे । चलाने वाले दिग्भ्रान्त होंगे और वह करने लगेंगे जिसे करने की इच्छा कभी नहीं की और योजना कभी नहीं बनाई थी । इस विपन्नता के साथ अभागों के हाथों असफलता ही लगेगी ।

जिनके मन में बड़े-बड़े हौसले हैं, जिनके पास नीति की बड़ी-बड़ी योजनाएँ हैं, वे सभी धरी रह जायेंगी और धूलि चाटेंगी । युद्ध आरम्भ होने का अर्थ दो शक्तियों को आपस में निपटना नहीं है, वरन् यह है कि पक्ष-विपक्ष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में किसी को भी विजय न मिले । दोनों ही पराजय के गर्त में रहें यह स्थिति चाहते हुए भी लोग बरत न सकेंगे । कहावत है कि ''बिगाड़ने वाले से बनाने वाला बड़ा है, मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है ।'' इसका प्रमाण बिल्ली के बच्चों को जलते आँवे में से जीवित निकलने का कारण सामने आ चुका है । महाभारत में गंज घंट के नीचे गरुड़ पक्षी के अण्डे बच जाने की कथा भी प्रसिद्ध है । प्रह्लाद को मार डालने के कितने ही प्रयत्न किये गये थे लेकिन उनमें से एक भी सफल नहीं हुआ । मानवी सत्ता और एकता को मटियामेट करके रख देने वाले मनसूबे समर्थ न हो सकेंगे । उन्हें अपने प्रयासों की व्यर्थता समाप्त करनी पड़ेगी । इस प्रकार गर्व चूर करने में वही शक्ति काम करेगी जिसने वृत्रासुर, भस्मासुर हिरण्यकश्यप, रक्तबीज जैसे दुराधर्षों को नीचा दिखाया था । सन्धि की वेला में बीसवीं सदी के अन्त में खण्ड जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होने की प्रामाणिक वाणियाँ समय-समय पर प्रकट होती रहेंगी । अस्त्र और भण्डारण के लिए चल रहे घनघोर प्रयत्नों से आभास मिलता है । यह सम्भावना सार्थक नहीं होने वाली । अधिक से अधिक इतना हो सकता है कि प्रलय का कोहराम मचाने वाली घटनाएँ कहीं हलकी भारी चिन्ह बना के वापस लौट जायेंगी । बीसवीं सदी का यह भाग बिना किसी प्रकार का खटका किये मौन बना रह जाय यह तो नहीं कहा जा सकता । वैसे युद्ध हो सकते हैं जैसे आजकल ईरान-इराक में, लेबनान, कम्पूचिया आदि में चल रहे हैं, पर वे वहाँ तक न पहुँच सकेंगे जिसे महाविनाश की घड़ी कह सकें । शीतयुद्धों का सिलसिला देश-देश के बीच चल रहा है । अपनी-अपनी शतरंज बिछी हुई है और प्रतिपक्षी को मात देने की कुटिल चाल चलने में कमी नहीं रहने दी जा रही है पर उनका फलितार्थ होना कठिन है । यह खेल खिलवाड़ कभी इस पक्ष में कभी उस पक्ष में भारी पड़ता दीखेगा, पर इन बाजियों में से किसी भी पक्ष की सीधी विजय न हो सकेगी । अन्त वार्त्तालापों और शान्ति समझौतों के रूप में ही होगा भले ही वे किसी को स्पष्टतया जीता-हारा न कह सकें ।

महायुद्ध के स्थान पर उसका छुटपुट स्वरूप आतंकवादी लुक-छुप आक्रमणों के रूप में दृष्टिगोचर होता रहेगा । यह नई पद्धति इस युग की नई देन होगी । आमने-सामने की लड़ाई शूरवीरों को शोभा देती थी, पर आज जब नीति मर्यादा का कोई प्रश्न नहीं रहा तो ''मारो और भाग जाओ'' की छापामार नीति ही काम देगी । गुप्त प्रयास शासकों के तख्ते उलटने के होते रहेंगे । महलों में क्रान्तियाँ होने की कई घटनाएँ सुनने को मिलेंगी । रक्तपात होता रहेगा और असुरक्षा का, अराजकता का महौल बना रहेगा । यही है इस सदी का अन्त । इन उपद्रवों का सामना करने के लिए तो हमें तैयार रहना चाहिए, किन्तु यह भय मन में से निकाल ही देना चाहिए कि सर्वनाशी तृतीय महायुद्ध मानवी अस्तित्व को मिटाकर रहेगा । यदि हुआ तो इक्कीसवीं सदी का फलता-फूलता स्वरूप देखने के लिए कौन बच रहेगा ? अगले १३ वर्षों के सम्बन्ध में हमें इतना ही समझ लेना चाहिए कि घटाएँ उठेंगी, घुमड़ेंगी और गरजेंगी तो बहुत पर इतनी वर्षा होने के कोई आसार नहीं हैं, जिसमें सर्वत्र प्रलय के भयानक दृश्य दीखने लगें ।

बढ़ती हुई विभीषिकाओं के हल निकलेंगे

विश्व संकट में महायुद्ध के समतुल्य क्या देखना है? उन वस्तुओं का अकाल पड़ जाना, जिनके बलबूते तथा कथित प्रगति का पहिया घूम रहा है और जनसाधारण का निर्वाह हो रहा है । इस संदर्भ में दो प्रमुख आधार हैं । एक बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुरूप खाद्य पदार्थों की समस्या, दूसरी है खनिज पदार्थों की समस्या । इसमें धातुएँ आती हैं और खनिज तेल एवं कोयला । इन सभी चीजों की अगले दिनों कमी पड़ने वाली है । कृषि योग्य भूमि सीमित है । जमीन की उपज भी मर्यादित है । उसका रासायनिक खादों से बेहिसाब दोहन किया जाय तो जमीन ठंडी पड़ जाती है । भविष्य के लिए वह ऊसर बंजर स्तर की निर्जीव हो जाती है । इसलिए रोज एक अंडा सोने का देने वाली मुर्गी से एक-एक अंडा रोज लेते रहना ही ठीक है । उसका पेट चीर कर एक दिन में ही सारे अंडे निकाल लेने का प्रयत्न किया जाय तो उसमें घाटा भी है और मूर्खता भी । जनसंख्या वृद्धि रोके नहीं रुक रही है । उत्पादन शक्ति में ऐसी बढ़ोत्तरी हुई है कि प्रायः हर साल एक नया बच्चा पैदा होने का सिलसिला चल पड़ा है । हर बीस वर्ष में आबादी दूनी हो जाती है । इस हिसाब से बीसवीं शताब्दी में ही ५०० करोड़ के स्थान पर १०००

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करोड़ तक की आबादी जा पहुँचेगी । स्पष्ट है कि दूने खाद्य की जरूरत पड़ेगी, जबकि उतनी अभिवृद्धि होने की कोई भी सम्भावना नहीं है ।

मात्र खाद्य की ही नहीं वस्त्र, निवास, रोजी, रोटी, शिक्षा, चिकित्सा, यातायात, उद्योग आदि की इतनी अभिवृद्धि होगी कि उन सब आवश्यकताओं को जुटाना कठिन पड़ जायेगा । अभावग्रत पिछड़ी जनता के लिए सरकार को भारी टेक्स चुकाना भी सम्भव न रहेगा, जिससे वह नये साधन खड़े कर सके । कमाई कम और खर्च अधिक होने का सीधा अर्थ होता है दिवालियापन, कंगाली, महँगाई, कठिनाई । समझा जाना चाहिए कि यह अभावग्रस्तता दिन-दिन बढ़ती ही जायेगी और अंत में स्थिति यहाँ तक पहुँचेगी कि भुखमरी के मुँह में चले जाने के अतिरिक्त और कोई रास्ता शेष न रहेगा ।

धातुओं में लोहा प्रधान है । उसी से सारी मशीनें बनती हैं । उद्योग में काम आने वाले और यातायात में लगे रहने वाले सभी यंत्र लोहे से बनते हैं । रेल, मोटर, जलयान, वायुयान, कल-कारखाने आदि में लोहा ही लोहा भरा होता है । विशेषज्ञों का अनुमान है कि जिस गति से धातुओं का खनन हो रहा है यदि वही क्रम चलता रहा तो अगले सौ वर्षों से पहले ही जमीन धातुएँ देना बंद कर देगी । कोयले का भी यही हाल है और तेल पेट्रोल का भी । समूची धरती का सर्वेक्षण कर लेने पर उसका निष्कर्ष भी यह निकला है, कि इस ईंधन स्तर की खनिज सम्पदा का दोहन भी एक सौ वर्षों से अधिक नहीं हो सकेगा, तब तक वह छूँछ हो लेगी ।

चालू क्रम प्रवाह को रोका भी नहीं जा सकता । माँग और बढ़ोत्तरी में कमी होने का कोई आसार नहीं । फिर उत्पादन अभिवर्धन भी ऐसा नहीं जिसे मनमाने स्तर तक बढ़ाया जा सके । धरती मिट्टी से पत्थरों से बनी हुई है, उसे रबड़ की तरह खींच कर बढ़ाया भी नहीं जा सकता ताकि आवश्यक और अनावश्यक माँग को उसे डरा धमका कर देर तक पूरा करते रहने के लिए बाधित किया जा सके । इस असमंजस भरे व्यवधान का फलितार्थ यह हो सकता है कि मशीनी क्षेत्र को लोहा और ईंधन न मिलने से गतिरोध उत्पन्न हो जायेगा और जो अनिवार्य रूप से आवश्यक प्रतीत होता है उसकी पूर्ति का भी कोई मार्ग न होगा । इस व्यवधान का परिणाम यही हो सकता है कि मशीन विज्ञान से सम्बन्धित अनेकानेक उपकरणों का अकाल पड़ जाय और शारीरिक श्रम का आश्रय लेकर पाँच सौ वर्ष पूर्व की मशीन रहित दुनिया में लौट जाया जाय । मशीनें ईंधन की शक्ति माँगती हैं । तेल, कोयला न मिलने पर भी उनका ढाँचा ढकोसला कवाड़खाना बन कूड़े कचरे की तरह पड़ा रहेगा ।

आज तो लोग सुई से लेकर माचिस तक के लिए मशीनों पर आश्रित हैं । उसने बैलगाड़ी जैसे वाहनों और हाथकरघे के वस्त्रों से काम चलाने की आदत भुला दी है । उसे नये सिरे से आरम्भ करने में कितनी कठिनाई पड़ेगी, इसे समय आने पर ही जाना जा सकेगा ।

पिछले दिनों चल रहे ढर्रे पर अगले दिनों देर तक नहीं चला जा सकता । कम आबादी वाले दिनों में जंगली वृक्षों के कन्द मूल फल भी ऋषियों से लेकर सामान्य-जनों तक का गुजारा कर देते थे । कृषि होने लगी और पशु धन का सहयोग हाथ लगा, तब तो साधनों की और भी बहुलता हो गयी । गुजारे का कोई प्रश्न ही न रहा । धातुओं का उपयोग भी घरेलू उपकरणों के ही काम आता था । लड़ाई में तीर, तलवारों के निमित्त थोड़ी-सी आवश्कयता पड़ती थी, पर अब तो धातुएँ भी वस्त्रों की तरह ही आवश्यक हो गयी हैं। बढ़ती हुई आवश्यकताओं ने प्रकृति के भण्डार में जो चिरकाल का संचय जमा था सो उसे खोद निकाला गया । अब जब अगले दिनों नई आवश्यकता पड़ेगी तो न धातुएँ मिल सकेंगी और न खाद पदार्थों का बाहुल्य रहेगा । मनुष्य इस सन्दर्भ में क्या कर सकता है ? बुद्धि ही अपनी सीमा मर्यादा है, वह पदार्थों को उतनी ही मात्रा में उपलब्ध कर सकती है, जितनी कि वे प्रकृति के भण्डार में पहले से ही मौजूद हैं । पृथ्वी की उर्वरता भी सीमित है । रासायनिक उत्तेजनाएँ देकर तो उतना ही हो सकता है कि उस रस को धीरे-धीरे सबपूर्वक न निकाल कर एक एकांकी दोहन कर लिया जाये । इससे तात्कालिक लाभ तो बढ़ा-चढ़ा दीख सकता है, पर अगली पीढ़ी के लिए बाबा की थैली में सिक्के नहीं जुएँ, खटमल ही भरे दीखेंगे ।

मनुष्य बहुत दिनों से इन तीनों परस्पर सम्बन्धित समस्याओं के समाधान का हल सोच रहा है, पर सामयिक उत्तेजना से नशा पीकर बल प्राप्त करने की तरह सामयिक हल ही सूझ पड़ रहे है । कोई स्थायी समाधान न हस्तगत हो रहा है और न सूझ ही पड़ रहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । जनसंख्या कैसे घटे ? खाद्योत्पादन कैसे बढ़े ? धातुओं का तेल, कोयले का भण्डार खाली हो जाने पर उसका स्थानापन्न विकल्प क्या हो ? अणु बिजली का उत्पादन आरम्भ से संदेहास्पद बना हुआ है । अणु भट्ठियों से निकलने वाला विकिरण कैसे रोका जाये ? उनकी जली हुई राख को कहाँ डाला जाय ? यह प्रश्न ऐसे हैं, जिन पर विचार तो बहुत हुआ है, पर समाधान एक भी सूझ नहीं पड़ा है । मानव बुद्धि यहाँ थक कर बैठ गयी है ।

दैवी समाधान ही अगले दिनों काम देंगे । जनसंख्या बढ़ने का उद्गम नारियाँ हैं । यह भार उन्हें ही सहना पड़ता है । रिपोर्ट है कि हर साल वे प्रसव पीड़ा में ही पाँच लाख की संख्या में वेदना से प्राण गवाँ बैठती हैं । यह प्रकृतिगत विडम्बना अदृश्य जगत के भाव प्रवाह से रुकेगी । कन्याओं की अपेक्षा पुत्रों का उत्पादन बढ़ जायेगा । हो सकता है कि देहरादून जिले के जौनसार क्षेत्र की तरह बहुपति प्रथा प्रचलित हो । वहाँ के लोग अपने को पाण्डवों की सन्तान कहते हैं और बड़े एक भाई का विवाह करते हैं शेष भाइयों की यह एक नारी ही उप-पत्नी होती है । इस प्रकार पिछली पीढ़ी की तुलना में अगली पीढ़ी की संख्या नहीं बढ़ने पाती है और घर का खेतों का, बँटवारा न होकर पीढ़ियों तक शान्तिपूर्वक निर्वाह एक आजीविका का सिलसिला चलता रहता है ।

यह भी हो सकता है कि नारी समुदाय की प्रजनन इच्छा एवं शक्ति घट जाय । विवाह नर-नारी की मित्रता स्तर तक तो रहे; पर उनके मध्य यौनाचार अत्यधिक घट जाय । दोनों ही पक्ष के उत्पादक तत्वों में भारी कमी हो जाये और वैसी स्थिति अनायास ही बन जाय जैसी कि परिवार नियोजन वाले कृत्रिम उपायों से करना चाहते हैं । यह भी हो सकता है कि कामुकता भड़काने वाले साहित्य और चित्रों की फिल्मों को प्रतिबन्धित कर दिया जाय और नर-नारी कुत्साओं से छूट कर भाई-बहिन की तरह सदाचरणपूर्वक रहने लगे तथा मिल-जुल कर काम करें । ऐसे ही उपायों का मिला-जुला रूप अगले दिनों सामने आयेगा । विकिरण की वृद्धि से जब अपंग सन्तानें होने लगेंगी तो मनुष्य उस आफत से अपना बचाव करने में सतर्कता बरतने लगेगा और रोकथाम के उपाय अपनायेगा । मनुष्य जाति को महामारी, भुखमरी का शिकार नहीं होना है तो सन्तानोत्पादन पर विराम लगाने के अतिरिक्त और कोई उपाय शेष नहीं रह जाता । प्रकृति की इच्छा और प्रेरणा बदलने जा रही है और अगली शताब्दी में अबकी अपेक्षा जनगणना घटती ही जायेगी वह तीन चौथाई से भी अधिक घट सकती है । ऐसी दशा में एक बड़ा समाधान निकल आवेगा ।

खाद्यान्नों के उत्पादन में इन दिनों नई वृद्धि मांसाहार के प्रोत्साहन की ओर बढ़ रही है, पर यह उत्साह भी पानी के बुलबुले की तरह ठण्डा हो जायेगा । मांस महँगा पड़ता है, पचने में गरिष्ठ होता है । उस माध्यम से प्राणियों के रोग मनुष्यों के शरीर में पहुँचते हैं, फिर उस कारण मनुष्य को निर्दय, निष्ठुर बनना पड़ता है, वह स्वभाव में सम्मिलित हो जाता है और पशु हत्या के बाद मनुष्य हत्या में जो झिझक होनी चाहिए वह भी नहीं रहती । फिर मनुष्य को अधिक जमीन और वनस्पति की आवश्यकता पड़ेगी । उन्हें पशु ही खा लेंगे तो मनुष्यों को उससे वंचित रहना पड़ेगा । ऐसी दशा में पशुओं का भी परिवार नियोजन चल पड़ेगा और वे इतनी सीमित संख्या में रह जायेंगे जिनके बचे रहने पर मनुष्यों को कोई असुविधा न हो । किसी प्रतिद्वन्दिता का सामना न करना पड़े ।

इक्कीसवीं शताब्दी में बड़े शहरों का विकेन्द्रीकरण होगा । गाँवों का स्थान कस्बे लेंगे । कल-कारखाने छोटे-छोटे इस स्तर के लगेंगे जो प्रदूषण उत्पन्न न करें, जिनके लिए बड़ी मात्रा में कोयला न जलाना पड़ेगा । इतनी बिजली तो हवा पानी से निकल आया करेगी जिससे कुटीर उद्योग के लिए छुटपुट शक्ति मिलती रहे । मनुष्य जिस शारीरिक श्रम से अनभ्यस्त हो गया है, उसे फिर से अपनाने लगेगा । साथ ही लघु उद्योगों के लिए छोटे संयंत्रों द्वारा उत्पन्न की गई बिजली भी मिलती रहेगी । देहाती जीवन स्वास्थ्यकर भी होता है, सुविधाजनक भी और सस्ता भी ।

लोग शान्तिपूर्वक, सुविधा के साथ हिलमिलकर रहेंगे। सहकारिता के आधार पर सुविधाओं का कई गुना सम्वर्धन होने लगेगा । मिल-जुलकर काम करने की पद्धति से सभी मजदूर कृषक होंगे और सभी कृषक मजदूर । इस प्रकार कृषि समस्या सुलझायेंगे और जीवन-यापन में काम आने वाले धन्धे लोहार, बढ़ई, दर्जी, मोची, कुम्हार, धोबी आदि भी अपना गुजारा इसी स्तर का करने लगेंगे जैसा कि अन्य लोग करते हैं । सादगी और मितव्ययिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से सुनियोजित ग्राम्य जीवन की पद्धति नये सिरे से विकसित होगी और उसका प्रतिफल ऐसा होगा, जिसे आज की समस्या का कारगर समाधान कहा जा सके । लोग अन्न के स्थान पर साग अधिक उगायेंगे जो सस्ता भी पड़ेगा और पौष्टिक भी । उत्पादकों को अन्न की तुलना में अधिक लाभ मिलेगा । खाद्य समस्या का यह ही ऐसा समाधान है जिसमें कम भूमि में अधिक लोगों के लिए अधिक मात्रा में, अधिक उपयोगी संसाधन उपलब्ध हो सकें ।

भावी परिवर्तन की पृष्ठभूमि

इक्कीसवीं सदी में कई नई समस्याएँ भी उत्पन्न होंगी, जो अभी तो सिर्फ सिर चमका रही हैं, पर आगे चलकर उनकी प्रौढ़ता दृष्टिगोचर होने लगेगी । इन दिनों जो अंकुर मात्र हैं, ये अगले दिनों विशालकाय वृक्षों के रूप में बढ़े-चढ़े आकार में दृष्टिगोचर होंगे ।

उदाहरण के लिए ईंधन की समस्या को ही लिया जाय । जब आबादी थोड़ी थी तब गोबर के उपले और अरहर की लकड़ियों से सीध-साधे ढंग की रसोई पक जाती थी । जंगली टेढ़े-मेढ़े मात्र जलावन के स्तर वाले पेड़-पौधे ही इस काम आ जाते थे । तब ईंधन की कोई समस्या नहीं थी, पर अब बड़ी-बड़ी मशीनें बनने लगी हैं, वे चलती तो ईंधन से ही हैं । यह ईंधन बहुत करके तेल और कोयले से उपलब्ध होता रहा है । अब बिजली का भी उत्पादन होने लगा है और वह भी बहुत हद तक घरेलू तथा कारखाने के ईंधन की आवश्यकता पूरी करने लगी है । पर इनके उद्गम स्रोत जब अगले दिनों सूख जायेंगे, तब ऐसा गतिरोध उत्पन्न होगा कि इस ईंधन के अकाल का दबाव अन्य सभी प्रकार के दुर्भिक्षों से बढ़-चढ़कर भयावह सिद्ध होगा । न खाना पकेगा और न कारखाना चलेगा । गोबर अब तो खाद के काम आता है और बेकार पेड़ों से कागज बनाने का काम लिया जाता है ।

इक्कीसवीं सदी में ऐसे यंत्र बन जायेंगे जो सूर्य किरणों के बिखराव को केन्द्रीभूत करके उसे बिजली की तरह वितरित किया जा सके । समुद्र की लहरें और ज्वार-भाटे भी इस उत्पादन में योगदान दे सकते हैं । इस प्रकार प्रकृति की शक्ति वर्षा को ही केन्द्रीभूत किया जायेगा और उसी को मिल-बाँट कर ईंधन के काम में लाया जायेगा । फिर इन दिनों अत्यधिक ऊर्जा खर्च करने का अपव्यय जो अभ्यास में आया है उसमें भी कटौती होगी । हर व्यक्ति को समझना पड़ेगा कि ईंधन सम्पदा की मानवी क्षमता सीमित रह गई है, उसे किफायत के साथ ही उपयोग में लाना चाहिए ।

पशुओं का मलमूत्र तो गोबर गैस प्लाण्ट में प्रयुक्त होने ही लगेगा । अगले दिनों लगभग इतनी ही मात्रा में उत्पन्न होने वाला मनुष्य का मलमूत्र भी दुर्गन्ध और कुरुचि बीमारी फैलाने की अपेक्षा गोबर गैस की तरह ही प्रयुक्त होने लगेगा । उससे खाद भी प्रचुर मात्रा में मिलेगी, गंदगी भी कटेगी और प्राकृतिक खाद की उपयोगी मात्रा भी खेतों को अधिक परिमाण में प्राप्त होगी । ईंधन इस प्रकार समय की आवश्यकता को किसी प्रकार पूरा कर सकेगा ।

वनस्पति पशुओं से बचेगी । उनसे मनुष्य को इमारती लकड़ी और कागज जैसी वस्तुओं को बनाया जा सकेगा । मनुष्य को दूध पीने की आदत घटानी पड़ेगी और तिल, मूँगफली, सोयाबीन आदि के घोल से उस प्रयोजन की पूर्ति करनी पड़ेगी । पशु चर्म के लिए जिन वस्तुओं पर निर्भर रहना पड़ता है, वे प्लास्टिक जैसी वस्तुएँ होंगी । जिस प्रकार कपास का स्थानापन्न नाइलान का धागा निकल आया है, उसी प्रकार धातुओं की कमी पड़ने पर उनके स्थान पर ऐसे रासायनिक पदार्थ उपज पड़ेंगे कि उनसे धातुओं की आवश्यकता पूरी हो सके । इन दिनों बड़े कारखाने और विशाल युद्धों के लिए विनिर्मित होने वाले हथियार ही लोहे की तिहाई खपत करते हैं । साधारण घरेलू उपयोग में तो एक तिहाई की ही आवश्यकता पड़ती है । अगले दिन महायुद्ध को निरस्त कर देंगे । इसी प्रकार बड़े कारखाने बढ़-चढ़कर छोटे कुटीर उद्योगों में बदल जायेंगे । ऐसी दशा में लोहे की उपयोगिता सीमित ही रह जायेगी । उसकी पूर्ति पुरानों को नये में ढालकर अथवा जहाँ-तहाँ से कुरेदबीन कर की जाती रहेगी ।

वस्त्रों के लिए जितना अम्बार अब खड़ा करना पड़ रहा है, उतना भविष्य में न रहेगा । सभी एक जैसी सीधी-सादी पोशाकें पहनेंगे । तरह-तरह के डिजायन और फैशन उस बदले हुए जमाने में हेय समझे जाने लगेंगे । फिर बक्सों भरे कपड़े कोई न रखेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धोने-सुखाने और पहनने के लिए जितना फेर आवश्यक होगा उतने ही कपड़े बनेंगे और सींये जाया करेंगे । फैशन के नाम पर जितना पैसा तरह-तरह की डिजायनें बनानें में वेशकीमती स्तर का जखीरा जमा करने में खर्च करना पड़ता है, उतने की जरूरत ही न पड़ेगी । कपड़ा उद्योग हैण्डलूम के हिस्से में एलाट कर दिया जायेगा, इससे बेकारी भी दूर होगी, अपव्यय भी बचेगा और बेकार की शान-शौकत में लोगों में जो अनुकरण की ललक पैदा होती है, उसकी भी जड़ कट जायेगी । यह परिवर्तन अपने आप में एक क्रान्ति उत्पन्न करेगा । उससे अनेकों कठिनाइयों का एक साथ समाधान हो जायेगा ।

युटोपिया के नाम पर भविष्य कथन का विवरण जिन लेखकों ने विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, उसमें उन्होंने प्रायः एक बात लिखी है कि भौतिक विज्ञान के अनेकानेक आविष्कार होंगे, उनसे मनुष्य की सुविधाएँ और सामर्थ्य अतिशय बढ़ जायेंगी । थल की भाँति जल और नभ पर भी आधिपत्य हो जायेंगा । इस कथन में अधूरापन यह है कि वर्तमान परिस्थितियों के बदलने पर नई परिस्थितियों के साथ संगति कैसे बैठेगी ? सारे काम मशीनें करने लगीं तो मनुष्य का शरीर ही नहीं दिमाग भी निकम्मा हो जायेगा । सुविधाओं के सहारे एक सीमा तक ही उन्नति सम्भव होती है, इसके उपरान्त अधःपतन का सिलसिला चल पड़ता है और मनुष्य लुंज-पुंज हो जाता है । ऐसी दशा में स्वाभाविक है, कि दुर्बलता, रुग्णता, विलासिता और आकांक्षा, अभिलाषा इस सीमा तक बढ़ती चली जायें, तो उसे उत्थान न कहकर पतन मानना पड़े । लोग प्रसन्न रहने के स्थान पर उद्विग्न रहने लगें । तब फिर जिस उज्ज्वल भविष्य का सपना देखा गया है, वह ठीक उल्टी स्थिति में पहुँच कर विपत्तियों का कारण बने ।

मानव सत्ता शरीर नहीं आत्मा है । शारीरिक सुविधा साधनों का उपयोग तभी तक है, जब तक कि वह चेतना को समुन्नत बनाने की सहायता करता है । यदि इसके विपरीत हुआ, चेतना, आलसी, प्रमादी, अनाचारी और पतनोन्मुखी होती चली गई तो उसका प्रभाव परिणाम न केवल अन्तरात्मा के लिए वरन् बाह्य परिस्थितियों की दृष्टि से भी अनुपयुक्त एवं कष्टकारक ही होगा । इसलिए यदि उज्ज्वल भविष्य के सपनों को साकार देखना है तो यह मान कर चलना होगा कि चिन्तन चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का अधिकाधिक समावेश होगा और जीवनचर्या के साथ सादगी सहकारिता का अंश बढ़ता चला जायेगा । यही वास्तविकता है । भविष्य कथन वे ही सार्थक माने जायेंगे जो आविष्कारों और सुविधा साधनों की बात करें और मानवी सज्जनता और सुव्यवस्था की सम्भावना पर अधिक चिन्तन एकाग्र करें । अगली शताब्दी में मनुष्य भावनाओं का धनी होगा भले ही उसकी सम्पन्नता कम ही क्यों न हो ? मिल-बाँट कर खाने वाले थोड़े साधनों में भी प्रसन्नता और प्रगतिशीलता का आधार खड़ा कर लेते है, जबकि विपुल विभूतियाँ रहने पर भी कृपणता से घिरे हुए लोग बेचैन रहते और बेचैन करते रहते हैं । अगले दिनों सद्गुण, सत्कर्म और सत्स्वभाव में अभिवृद्धि होगी । उन आविष्कारों और सुविधा-साधनों को हेय ठहराया जायेगा जो मनुष्य को जादूगर स्तर की कुछ भी बुला लेने और कुछ भी भगा देने की कला सिखाता है ।

मानवी गौरव गरिमा को अक्षुण्ण रखना जब आवश्यक समझा जायेगा तो मर्यादा में बँधना और वर्जनाओं से बचना पड़ेगा । संयमशीलों की जीवनी शक्ति बढ़ती है । वे सुपाच्यसात्विक खाते और पसीना बहाने वाला श्रम करते हैं। ऐसी दशा में उन्हें न दुर्बलता घेरती है, न रुग्णता सताती है और न असमय की अकाल मृत्यु ही आती है ।

अगले दिनों मनुष्य बलिष्ठ होगा, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह हाथी की तरह विशालकाय, चीते की तरह धावक और हिरन की तरह छलांगें लगाने लगेगा । वरन् अर्थ यह है कि आदर्शों के परिपालन की उसकी साहसिकता असाधारण होगी । वह लोभ और मोह का भय और दबाव का सामना कर सकेगा । उनके आकर्षक दबाव से विचलित न होगा, वरन् अपनी प्रत्येक कृति में उस विशिष्टता का परिचय देगा जिसका धीर, वीर, गम्भीर लोग प्रमाण प्रस्तुत किया करते हैं ।

शरीरगत सुविधाएँ अभी भी कम नहीं हैं । आलसियों की तरह उन्हें अपनाया ही न जाय और अनाड़ियों की तरह दुरुपयोग किया जाय तब तो बात दूसरी है, अन्यथा साधनों की दृष्टि से पूर्वजों की तुलना में हम कहीं अधिक सुविधा भरी स्थिति में है । यदि पूर्वज रहे होते तो आज की दुनिया उन्हें स्वर्ग जैसी मोहक और बुद्धिमान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगती । हम भी इक्कीसवीं सदी के लोगों को आविष्कार के धनी होने या अपेक्षाकृत अधिक साधन सम्पन्न देख सकते हैं, पर इससे बनेगा कुछ नहीं । अन्तरंग यदि प्रसन्न और सम्पन्न न हो तो ऊपरी चमक-दमक केवल भ्रम ही उत्पन्न कर सकती है ।

साक्षर बनने की शिक्षा चिरकाल से उपलब्ध है । स्कूलों और कालेजों में हमारे बच्चे बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त करते हैं और बहुज्ञ प्रतीत होते हैं । अवसर मिलता है तो अफसर भी बन जाते हैं और कई प्रकार के कौशल दिखाकर सम्पन्नता भी बटोरते हैं । येन, केन प्रकारेण प्रख्यात भी हो जाते हैं, पर इतने भर से कोई ठोस उपलब्धि हाथ नहीं लगती । बहुरूपिये, नट, बाजीगरों, जैसे कौतूहल उत्पन्न करते रहे हैं, पर वह सूत्र हाथ नहीं आते जिनके सहारे कि महान् बना जाता है ।

अगले दिनों ऐसी शिक्षा का प्रबन्ध करना पड़ेगा जिससे मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप एवं कर्त्तव्य-दायित्व का गंभीरतापूर्वक मान करे । साथ में ऐसा आचरण भी करे जो आत्मा की पुकार, परमात्मा के संकेत एवं युगधर्म की चुनौती स्वीकारने के लिए विवश कर सके । ऐसी शिक्षा स्कूली पाठ्यक्रम में छात्रों के लिए सम्मिलित रहेगी । अध्यापकों को अपना चरित्र उसी ढाँचे में ढला हुआ सिद्ध करना पड़ेगा । यह नियमित पढ़ाई की बात हुई जिसे स्कूली शिक्षा कहते हैं । यह आवश्यक तो है पर पर्याप्त नहीं । धर्मोपदेशकों, कर्णधारों, नेतृत्व कर सकने की स्थिति में पहुँचे हुए साहित्यकारों, कलाकारों को अपने-अपने साधनों एवं कौशल के सहारे जन-मानस में वह प्रेरणा गहराई तक पहुँचानी पड़ेगी, जिसके सहारे अपने व्यक्तित्व को विभूतिवान, प्रतिभावान, चरित्रवान और कर्त्तव्यपरायण सिद्ध कर सकें । ऐसी शिक्षा के लिए हमें अभी से तैयारी करनी होगी, जिससे कि अगली शताब्दी का जन-समुदाय आदर्शवादी, कर्मनिष्ठ और सिद्धान्तों के प्रति आस्थावान, दृढ़व्रती दृष्टिगोचर हो सके ।

प्रतिभाएँ अग्रिम पंक्ति में आयें

इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ होने में अब ६ वर्ष शेष हैं । इस अवधि में पिछले पापों का प्रायश्चित हमें करना होगा । इस संदर्भ में होना तो वह चाहिए था, जिसकी कि भविष्यवाणी इन दिनों सर्वनाश के रूप में प्रामाणिक क्षेत्रों से की जाती रही है । उनमें प्रकृति प्रकोपों का विशेषतया वर्णन है । वातावरण में तापमान की वृद्धि, ध्रुवों का पिघलना, समुद्री उफान आना, हिमयुग, भूकम्प, ज्वालामुखी, बाढ़, सूखा, दुर्घटनाएँ, महामारी आदि को प्रकृति प्रकोपों में गिना जा सकता है । युद्ध, विग्रह, आतंकवाद, हत्याएँ, अपराध, अनाचार, बलात्कार, अपहरण, छल, नशा, विनाश आदि को मनुष्यकृत अनाचार कह सकते हैं । यह दोनों ही मिलकर व्यक्ति और समाज के लिए अनेकानेक संकट उत्पन्न करें, तो समझना चाहिए कि वह पिछले दिनों किये गये मानवी अनाचार का दण्ड प्रायश्चित है । प्रदूषण, विकिरण को भी इसी वर्ग में गिना जा सकता है । ज्योतिषी इसे ग्रहाचार का कारण बताते हैं । द्वितीय विश्व युद्ध में अणु आयुधों का प्रयोग होना और उससे सर्वनाश की स्थिति बनना जन-जन के मुख पर चढ़ी रहने वाली चर्चा का विषय है ।

यह सम्भावनाएँ जिन लोगों ने बताई हैं उन्होंने किसी को बहकाया नहीं है और न अपनी मान्यताओं के प्रति दुराव किया है । पिछले दिनों समर्थ वर्गों द्वारा दुर्बलों के साथ जो बर्ताव किये जाते रहे है, उनका सामूहिक परिणाम समूची मानव जाति को भुगतना पड़े तो इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं है ।

किन्तु प्रज्ञा अभियान के मंच से उन अनिष्टकर सम्भावनाओं को चुनौती देने के लिए जो प्रचण्ड तप सामूहिक एवं वैयक्तिक रूप से किया जाता है, उसकी शक्ति भी कम नहीं आँकी जानी चाहिए । घनघोर घटाओं की जलप्लावन सम्भावना को तेज आँधी उड़ा ले जाती है और छुट पुट बूँद बरस कर आसमान साफ हो जाता है । अगले १३ वर्षों में ऐसे ही उत्पात होते रहेंगे । जिन्हें एक शब्द में चैन से न बैठ पाना, न बैठने देना कह सकते हैं । ऐसे घटनाक्रम इन वर्षों में जहाँ-तहाँ देश-विदेश में होते रहेंगे, किन्तु वे इस सीमा तक न बढ़ पायेंगे कि महाविनाश की परिधि छूने लगें और काबू से बाहर निकल जायें ।

बीज के गलने के साथ अंकुर भी फूटते हैं और वे खाद, पानी पाने पर क्रमशः बढ़ते हुए पौधे से वृक्ष बनते हैं । यह विकास उन प्रतिभाओं का होगा जिन्हें समर्थ, मूर्धन्य एवं भावनाशील कहा जा सकता है । उपदेशक, नेता, कलाकार, मनीषी, लेखक, धनवान, वैज्ञानिक इसी श्रेणी में आते हैं । अब तक यह वर्ग निजी स्वार्थ सिद्धि के लिए तरह-तरह के शितून खड़े करता रहा है । जिस तरह अधिक लाभ मिले, बड़ा ठाट बने और अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ख्याति चमके, यह उद्देश्य लेकर उपरोक्त वर्गों ने चित्र-विचित्र कार्य किये हैं, उससे जनता का मनोबल और भावना स्तर गिरा है । बड़ों को कहते और करते देखकर सामान्यजनों की समझ और चेष्ठा भी उसी दिशा में बहने लगती है । नदी के प्रवाह में पत्ते अनायास ही बहते चले जाते हैं । मूर्धन्यों का अनुगमन सामान्यजन सहज ही करते देखे जाते हैं । ऊँचे चढ़ना तो कठिन है, पर नीचे गिरने में कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता और न किसी की सहायता लेनी पड़ती है । मूर्धन्यजन जो स्तर अपनाते हैं, सर्वसाधारण की इच्छा उसी के अनुकरण की होती है । धनवानों, प्रबुद्धजनों, साहित्यकारों, कलाकारों ने प्रायः पशु प्रवृत्तियों को भड़काने का व्यवसाय अपनाया है । उनका चुम्बक मध्यवृत्ति के लोगों तथा नवयुवकों को अपनी ओर खींचता चला गया है । सभी जानते हैं कि सिनेमा ने कामुकता को, फैशनपरस्ती को कितना प्रोत्साहन दिया है और उस उत्तेजना से प्रभावित होकर कितनों ने अपना कदम अधःपतन की ओर बढ़ाया है। यही बात अन्य मूर्धन्य वर्गों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है । नशा व्यवसाय को अत्यधिक आगे बढ़ाने में धनवानों का ही प्रमुख हाथ रहा है । गरीब तो उसे खरीद कर पीते और मरते भर हैं ।

अब नयी उलट-पलट में यह होने जा रहा है कि मूर्धन्य वर्ग का बहुत बड़ा भाग युग चेतना से प्रभावित होगा और अपनी दिशा धारा को, उलट कर उस दिशा को अपनायेगा, जिसके लिए युग धर्म ने समझाया, पुचकारा और ललकारा है । शक्ति की महिमा महत्ता सभी जानते हैं, वह जिस भी दिशा में कटिबद्ध होती है, उसी में सफलताओं के अम्बार लगा देती है । अब तक बिगाड़ की दिशा अपनाई तो उसमें भी चमत्कार कर दिखाया । अब यदि उनका मानस बदलता है, तो समझना चाहिए कि उस बदलाव का प्रभाव भी कम न पड़ेगा । वे ऐसी गतिविधियाँ भी अपना सकते हैं, जो उनके स्वयं के लिए तो श्रेयस्कर होती हैं, अगणित लोगों को भी अपने प्रभाव से प्रकाशित करेंगी ।

साहित्यकार, प्रकाशक, मुद्रक, बुकसेलर एक संयुक्त वर्ग है । यह मिल-जुल कर ऐसे साहित्य का सृजन, प्रकाशन और वितरण करे जो युग धर्म के अनुरूप हो तो उसका प्रभाव भी शिक्षित वर्ग पर कम न पड़ेगा । अब तक इस वर्ग में से अधिकांश ने ऐसा मसाला प्रस्तुत किया है जो पाठकों को अंधविश्वासों और दुश्चिन्तनों की ओर धकेलता रहा है । उस प्रभाव से अगणित प्रभावित हुए हैं और बड़ा-सा लोक मानस उसी ढाँचे में ढला है । अब जब सांचा बदलेगा तो उसमें ढलने वाले पुर्जे दूसरे रंग ढंग के होंगे । सत्साहित्य कितना प्रेरक होता है । इसके साक्षी ईसाइयों, कम्युनिस्टों और क्रांतियाँ प्रस्तुत करते रहने वालों से पूछकर कारगर निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है ।

गायकों, वादकों, अभिनेताओं, फिल्म निर्माताओं ने मिल-जुल कर जो माहौल रचा है उस पर अगणित लोग झूमने लगे हैं । फिल्म दर्शकों की संख्या अखबार पाठकों से भी अधिक है । रिकार्डों को सुनने वाली संख्या भी कम नहीं है, उन्हें तो जहाँ-तहाँ मुफ्त में ही सुना जाता है । साँप बीन पर लहराते हैं और सुनने वाले गीतों का रसास्वादन करते हैं । सभा सम्मेलनों समारोहों में गीत वाद्य सुनने को मिलते हैं । फिल्म देखने तो लोग पैसा देकर जाते हैं और लौटते समय उसी रंग में रंगे हुए होते हैं जो दिखाया सुनाया गया है । मस्तिष्क को बदलने में गायन वादन अभिनय का बड़ा हाथ है । वह अपना लक्ष्य बदले तो सुनने वालों का मनक्षेत्र बदले बिना रह नहीं सकेगा ।

वक्ताओं ने बड़ी-बड़ी क्रांन्तियाँ की हैं । उन्होंने लोक-शिक्षण दिया और जन-मानस को उठाकर खड़ा किया है । प्रभावित लोगों ने वह किया है जिसे करने में आम आदमी चकराता है । कृष्ण की गीता ने अर्जुन में नवजीवन भरा था। शुकदेव की कथा से परीक्षित का उद्धार हुआ है । सूत सौन के कथानकों ने सामयिक समस्याओं का उपयोगी समाधान किया था । लेनिन की वाणी ने रूस को हिलाकर रख दिया था । बुद्ध, गाँधी आदि की वाणी समय को उलटने में समर्थ हुई । मनीषियों के उद्बोधन व्यक्ति को नये सिरे से सोचने और नयी दिशा अपनाने के लिए बाधित कर सकते हैं ।

जो वैज्ञानिक अणुबम जैसे मारक अस्त्र बना सकते है, वे चाहें तो सुविधा सम्वर्धन से लेकर ब्रेन वाशिंग तक की अनेकों क्रिया प्रक्रियाएँ सम्पन्न कर सकते हैं । मारकों को निरस्त करने वाला विष-विरोधी अमृत भी खोज सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यों धन की नश्वरता को उसे कमाने में बरती जाने वाली निष्ठुरता को देखते हुए उसका नम्बर पिछली पंक्ति में आता है, पर आज तो वही प्रथम पंक्ति में है । पैसे की कीमत पर सब कुछ खरीदा जा सकता है । सम्मान भी और धर्म समुदाय भी । उसी पूँजी के बल पर अनेकों भले बुरे व्यवसाय चलते हैं । धन मनुष्य को बुद्धिमान और चतुर भी बना देता है । मूर्ख के पास तो पैसा ठहरता ही नहीं ।

धनवान चाहे तो कुटीर उद्योगों का ताना-बाना बुन कर लाखों करोड़ों को काम दे सकता है । वे शिक्षा संस्थान चला सकते हैं । प्रकाशन हाथ में लेकर वातावरण को बदल सकते हैं । लोक सेवियों को प्रश्रय दे सकते हैं । धनवानों से कहा जाय कि जिस चतुरता से उन्होंने उपार्जन किया है, उसी प्रकार दूरदर्शिता का आश्रय लेकर ऐसी सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनायें जिनसे नई हवा चल सके, नया वातावरण बन सके और नया युग बन सके ।

विश्वास किया जाना चाहिए कि यह मूर्धन्य वर्ग इन्हीं दिनों अपने भीतर समुद्र मंथन जैसी हलचलें अनुभव करेंगे और उस दिशा में कदम बढ़ायेंगे जिन पर चलने से सबका कल्याण ही कल्याण है ।

इन दिनों विपत्तियों के बरसने की वेला है । उनसे पीड़ितों को सहायता की आवश्यकता पड़ेगी । धनवानों की थैलियाँ उस प्रयोजन के लिए भी काम आ सकती हैं ।

विश्वामित्र नवयुग का सृजन करना चाहते थे । नई दुनिया बनाने का उनका मन था । राजा हरिश्चन्द्र ने उस महान् प्रयोजन के लिए न केवल अपना सारा राज पाट दे दिया, वरन् अपने पूरे परिवार को बेचकर उस आवश्यकता में कमी न पड़ने दी । सम्राट् अशोक ने बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन में अपने विशाल साम्राज्य को खपा दिया था । तक्षशिला विश्वविद्यालय के लिए हर्षवर्धन ने और नालंदा के पुनर्निर्माण में चन्द्रगुप्त ने विपुल धन लगाया था । राणा प्रताप को स्वतन्त्रता संग्राम जारी रखने के लिए भामाशाह ने अपना समस्त कोष उड़ेल दिया था । अन्य अनेकों लोभ मोह त्याग कर पुण्य प्रयोजनों के लिए अपने समय और श्रम का सार धन के रूप में लगाते रहे हैं ।

प्रज्ञा मिशन को सुविस्तृत व्यापक बनाने के लिए अनेकों उपाय हो सकते हैं । कितने ही विद्यालय चल सकते हैं । फिल्में बन सकती हैं । शतकुण्डी यज्ञों की एक बड़ी श्रृंखला चल सकती है । जिस छोटी-सी इमारत में शांति कुन्ज चल रहा है उसे दूना भी कर दिया जाय तो युग सृजन के लिए जीवन-दान, समय-दान करने वालों की कमी न पड़ेगी । युग शिल्पी सत्रों में सम्मिलित होने के इच्छुकों में से प्रायः आधों को ही स्वीकृति मिल पाती है । शिक्षण और भोजन निवास की सुविधा सर्वसाधारण के लिए घोषित कर देने पर यह स्वाभाविक ही था, कि जो आर्थिक कठिनाई के कारण इन नवजीवन प्रदान करने वाले एक-एक मासीय सत्रों में सम्मिलित होने के इच्छुक रहे हैं, वे अब सुविधाओं का अधिक प्रबन्ध होने की स्थिति में बड़ी संख्या में सम्मिलित होना चाहें, पर आर्थिक कठिनाइयाँ आगे बढ़ने के प्रयासों के हाथ पकड़ लेती हैं और पैर भी जकड़ती हैं । सार्वजनिक अपील करने में संकोच करते रहने की अपनी नीति ने कार्य को उसी सीमा तक फैलने-फूलने दिया है, जितना कि वह इन दिनों है ।

आशा की जानी चाहिए कि नव-सृजन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मनीषी, समयदानी, गायक, वादक, वक्ता, धनी आदि प्रतिभावान अपनी-अपनी श्रद्धांजलि लेकर नवयुग के अभिनव सृजन में आगे बढ़ेंगे और कहने लायक योगदान देंगे । इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य विनिर्मित करने के लिए इस प्रकार का सहयोग आवश्यक है और अनिवार्य भी ।

युग परिवर्तन–नियन्ता का सुनिश्चित आश्वासन

प्रस्तुत समय की समस्याओं की तुलना समुद्र में बहते रहने वाले उस हिम खण्ड से की जा सकती है जिसका एक तिहाई से भी कम भाग ऊपर तैरता दिखाई देता है एवं शेष पानी में डूबा अदृश्य बना रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो नाविक इस तथ्य से अनभिज्ञ होते हैं, वे अनजाने विशाल समुद्र में अपने जहाजों को इनसे टकरा देते हैं एवं जीवन तथा सम्पदा खो बैठते हैं। आज जो दृश्यमान है, वही सब कुछ है, यह सोचने की आत्म-प्रवंचना हमें नहीं करना चाहिए । युद्धोन्माद, जघन्य स्तर के अपराध, पवित्र स्थलों का आश्रय लेकर धर्म के नाम पर हिंसा व अलगाववाद की दुहाई, सम्प्रदायवाद, जातीय आधार पर टिकी राजनीति के राजघरानों के जमाने के षड्यन्त्र एवं दुरभि सन्धियाँ बीसवीं सदी के इस सातवें—आठवें दशक की कुछ त्रासदी भरी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं । इन्हें देखते-देखते गत बीस-पच्चीस वर्षों में हम मोटी चमड़ी के हो गये हैं । अब हमें ये समस्याएँ नजर नहीं आतीं, जीवन का अभिन्न अंग लगती है, लेकिन जो भुक्त भोगी हैं, वे बहुसंख्य हैं एवं वे समस्याओं का समाधान किसी भी स्थिति में चाहते कि विश्व-वसुधा की नैया युग विभीषिकाओं के इस आइसवर्ग से टकरा-टकरा कर चूर-चूर हो जाये । नियन्ता भी यह नहीं चाहता । चाहता होता तो सृष्टि रचता ही क्यों ? उस परम सत्ता की एक ही इच्छा है कि मानवी पराक्रम, आत्मबल स्वयंमेव उभर कर आये और इन विध्वंसक शक्तियों से मोर्चा ले । श्रुति का कथन सच है कि आत्मबल का पूरक परमात्म बल है । वह परमसत्ता तभी अपनी भूमिका निभाने आगे आती है जब मनुष्य अपने सारे प्रयास कर थक जाता है एवं रक्षा हेतु गुहार लगाता है ।

जो समझदार हैं, वे समय की इस विषमता को भली-भाँति समझते हैं । वे जानते हैं कि बड़े राष्ट्रों द्वारा अस्त्र एकत्र कर लेने का अर्थ है—सामूहिक आत्मघात । बढ़ती जनसंख्या एवं संव्याप्त प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रदूषण की परिणति भी वे जानते तथा भली-भाँति समझते हैं । वे इस तथ्य से भी अवगत हैं कि पूँजी के आधार पर विलासिता की पृष्ठभूमि पर एवं चिन्तन को विकृत कर देने वाले साधनों के बलबूते यह विश्व तकनीकी दृष्टि से कितना भी बढ़ा-चढ़ा होने पर भी वस्तुतः विनाश को ही प्राप्त होगा । इस सम्बन्ध में द्वितीय विश्वयुद्ध के समय फ्रांस के आश्चर्यजनक पतन का प्रसंग उल्लेखनीय है । जर्मनी के खूंखार डिक्टेटर हिटलर ने जब नस्लवाद के नाम पर अपनी विनाश लीला का आरम्भ किया तब पोलैण्ड तो उसने पहले ही दाँव में धूर्तता से हथिया लिया । उसके समक्ष एक विस्तृत साम्राज्य फ्रांस का था जिसे हस्तगत करने पर विश्व विजय की उसकी सबसे बड़ी बाधा दूर हो जाती । विदेशी आक्रामकों के बर्बर इरादों से अनभिज्ञ फ्रांसीसी सुरक्षा के स्थान पर विलासिता के मद में चूर बने हुए थे । हिटलर ने अपनी शक्ति, सैनिक बल, धन इस कार्य में अधिक नष्ट करना उचित न समझा । सुरा-सुन्दरी के नशे में डूबे फ्रांसीसियों ने मात्र चौबीस घण्टे में आत्म-समर्पण कर दिया और हिटलर फ्रांस में अपना झण्डा फहराकर नये मोर्चे की तैयारी करने लगा । तात्कालीन विचारकों ने चिन्तन करने पर पाया कि आत्मबल की दृष्टि से हीन, खोखले नागरिकों को जीता नहीं गया, उन्होंने स्वयं आत्म-समर्पण कर दिया ।

जिन्हें भगवान् ने थोड़ी भी समझ दी है वे भली-भाँति जानते हैं कि आज सारे विश्व की स्थिति लगभग वैसी ही है जैसी द्वितीय विश्व युद्ध के समय थी । राष्ट्रीयता, नैतिक अनुशासन मात्र किताबों में लिखने के लिए रह गया है । अश्लील साहित्य हमारे अपने ही देश में नहीं सारे विश्व में इतनी बड़ी मात्रा में छपता व नित्य पढ़ा जाता है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती । नशीली दवाओं की खपत नित्य बढ़ती चली जा रही है । हशीश, कोकीन, चरस, गांजा, हिरोइन जैसी घातक-मादक वस्तुओं की एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे देश में तस्करी का ऐसा जाल बिछा हुआ है जो तोड़े नहीं टूटता । फिल्मों ने ऐसे अवसर पर एक उत्प्रेरक (केटेलिस्ट) की भूमिका निभाने का दायित्व उठाया है । वे अपराधों, कामुकता, व्यभिचार, उच्छृंखलता एवं आत्मघाती उन्मादी मनोवृत्ति को जन्म देने वाली प्रवृत्तियों को ही प्रश्रय देती नजर आती है ।

समाचार पत्रों ने पत्र-पत्रिकाओं ने भी मानो नैतिक अनुशासन के पतन में भागीदार बनने का दायित्व अपने हाथों ले लिया है । मात्र वे ही समाचार प्रकाश में आते हैं जिनसे अन्यों को उन्हीं का अनुकरण करने की प्रेरणा मिले। राज्य प्रमुखों, राष्ट्राध्यक्षों, प्रशासनिक कर्मचारी वर्गों में ईमानदारी का अंश उतना ही है जितना कि पानी मिले दूध में घी का हो सकता । वे एक ओर देश-भक्ति की दुहाई देते दिखाई देते हैं, दूसरी ओर क्षेत्रवाद जातिवाद का नारा लगाते दीखते हैं । आज एक दल में हैं तो कल अन्तरात्मा की पुकार पर दूसरे दल में पहुँच कर निष्ठावान होने की शपथ गीता पर हाथ रख कर लेते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । एक वर्ग उनका रह जाता है जिन्हें हम अर्थ तन्त्र की बागडोर सम्भालने वाले पूँजीपति नाम दे सकते हैं । अपनी मनमर्जी से मिलावट, रिश्वतखोरी का आश्रय लेकर चरित्रहीन व्यक्ति धन-कुबेर बने बैठे उन सभी को अँगूठा दिखाते नजर आते हैं जो दिन भर मेहनत कर आधा पेट भरने लायक रोटी भी नहीं कमा पाते ।

लेकिन अब यह स्थिति अधिक दिन चलने वाली नहीं है । भले ही बहुसंख्य व्यक्तियों की स्थिति उन बकरों की तरह हो, जिन्हें कसाई ग्रह ले जाने के पूर्व घास खिलायी जा रही हो व वे आगत के प्रति अनभिज्ञ हों, एक ऐसा वर्ग भी है जो भले-बुरे परिणामों को समझता व विश्व के नव-निर्माण हेतु अपना पुरुषार्थ जुटाता है । भले ही इसमें उन्हें तात्कालिक हानि दिखाई पड़े वे विषम परिस्थितियों से जूझने हेतु विलम्ब न कर मोर्चा जुटाते एवं ऐसी रणनीति बनाते हैं जिससे अनीति, अभाव एवं अज्ञान मिटे, सतयुगी प्रकाश धरती पर आये ।

भारतभूमि सदा से युग परिवर्तन की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है । समय-समय पर पूर्वानुमानों एवं दिव्य दृष्टि के आधार पर अपना मत व्यक्त करने वाले देश-विदेश के मनीषियों ने कहा है कि जब-जब भी दैवी विपत्तियाँ बढ़ी हैं एवं मानव आसुरी आचरण में प्रवृत्त हुआ है, इस देवभूमि से उद्भूत दिव्यात्माओं ने ही युग-परिवर्तन की महती भूमिका निभाई है । स्वतन्त्रता संग्राम में जितना श्रेय प्रत्यक्ष क्रियाशील क्रान्तिकारियों एवं स्वाधीनता सैनिकों को दिया जाता है, उससे अधिक इन दिव्य दृष्टि सम्पन्न व्यक्तियों ने उन सिद्ध महापुरुषों को दिया है जिन्होंने वातावरण बनाने हेतु तप-साधना की, परोक्ष में क्रियाशील रहे एवं युग परिवर्तन की प्रचण्ड आँधियाँ ला सकने में समर्थ हुए । रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द से लेकर रामतीर्थ, योगीराज अरविन्द, महर्षि रमण आदि का नाम इसी सन्दर्भ में लिया जाता है । जिनका नाम इस सूची में नहीं हैं, वे सदा से उत्तराखण्ड की कन्दराओं में तप साधना में निरत हैं एवं उस समस्त लीला सन्दोह को देख रहे हैं जो प्रत्यक्ष में दृश्यमान है, परोक्ष में घटने वाला है ।

परिवर्तन शब्द कहने-सुनने में सरल है, रुचिकर भी है, अभीष्ट भी । किन्तु विडम्बना एक ही है कि लगभग असम्भव तो नहीं किन्तु कष्टसाध्य इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने के लिए न तो साधन जुटाने से काम चल सकता है, न ही अनथक परिश्रम से कोई प्रयोजन सध सकता है । इस प्रयोजन की पूर्ति हेतु तो आदर्शवादी श्रद्धा का उथला नहीं गहरा स्तर चाहिए । यह जब तक न होगा सारे बाह्योपचार निरर्थक है । युग बदल सकने में समर्थ इस बहुमूल्य पूँजी का भाण्डागार मानवी व्यक्तित्व के गहन अन्तराल में छिपा पड़ा है जिसे कुरेदने, उभारकर प्रखर बनाने भर की आवश्यकता है । यही समस्त समस्याओं का समाधान है । यदि आस्थाओं में आमूल-चूल परिवर्तन हो, उनका सुनियोजन हो गया तो मानना चाहिए कि श्रुति की मान्यतानुसार कलियुग चला गया एवं सतयुग का पदार्पण हो गया ।

हम इसी आशावादी दृष्टिकोण के साथ उन चिरायु तपस्वी ऋषियों की युग साधना में सहभागी बने हैं कि नवयुग अवश्य आयेगा । वह श्रद्धायुग कहा जायेगा । आस्थाओं के स्तर के मीटर के आधार पर ही किसी की महानता-क्षुद्रता का मूल्यांकन किया जायेगा । महाप्रज्ञा का तत्व-दर्शन जन-जन के मन-मन में प्रविष्ट होगा एवं विवेक का सारथी उन मूर्धन्यों की ज्ञानेन्द्रियों का संचालन करेगा जिनके हाथों में अर्थ, सुरक्षा, शासन एवं विचार तन्त्र है । सूक्ष्मीकरण साधना के इस पुरुषार्थ के बलबूते ही हम यह कह सकते हैं कि छोटे-छोटे अकिंचन माने जाने वाले मनुष्य इतनी समर्थ भूमिका निभायेंगे कि पर्वत जैसी अवांछनीयताओं को उलट पाना एवं स्वाति वर्षा जैसी सत्प्रवृत्तियों का नन्दन वन उगा सकना सम्भव हो सके । जो समर्थ होता है, वही यह पुरुषार्थ कर दिखाने का दावा कर सकता है । विचार-क्रांति शब्द तो अच्छा है किन्तु व्यवहार में इसे प्रयुक्त कर दिखाने के लिए एक समर्थ, दैवी तन्त्र का संरक्षण चाहिए । हमारा दावा है कि असम्भव को सम्भव कर दिखाने का यह पुरुषार्थ आगामी पन्द्रह वर्षों में सम्पन्न होकर रहेगा । विवेक और श्रद्धा के जिस समन्वित ऋतम्भरा रूप का, आद्य शक्ति का हमने अवलम्बन लिया है, उसमें लाखों-करोड़ों को अपना सहभागी बनाया है । प्रत्यक्ष जितना किया जा सकता था, हो चुका । वह पृष्ठभूमि तैयार हो गयी जो नियन्ता को अभीष्ट थी । अब राष्ट्रीय नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ''ग्लोबल क्राइसिस'' के निवारणार्थ परोक्ष भूमिका ही अभीष्ट थी । मौन-नितान्त एकाकी पुरुषार्थ क्या कुछ कर सकेगा, अन्तः में श्रद्धा का बीजारोपण कर कैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वांछित प्रयोजन कर सकेगा, इसे विश्व स्तर पर देखा जा सकना अगले दिनों सम्भव होगा ।

इतिहास भी इस तथ्य का साक्षी है कि जब-जब भी बिगाड़ बेकाबू हुआ है, उसे नियन्त्रित करने हेतु महाकाल रूपी महावर्तों की मार ही सफल हो पाई है । प्रकारान्तर से इसे भगवान् के अवतार की संज्ञा भी दी जा सकती है । अदृश्य युग प्रवाह का विनिर्मित होना ही प्रज्ञावतरण है । समझ जब काम नहीं करती, तब अदृश्य जगत से, परोक्ष के व्यवस्था उपक्रम से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इस धरित्री को महाविनाश के गर्त में जाने नहीं देगा जिसकी इच्छा से इस सृष्टि का प्रारूप बना व मानव रूपी युवराज जन्मा, उसे जगती का वर्तमान चोला ही पसन्द है यह सोचना नासमझी है । नियन्ता ने सदैव सन्तुलन स्थापित करने हेतु दौड़ लगाने का अपना वचन निवाहा है ।

इन दिनों भले ही प्रत्यक्ष में तमिस्रा का व्यापक साम्राज्य संव्याप्त नजर आता हो । वह दैवी सत्ता निराकार रूप में ही देखते-देखते एक छोटा-सा सूरज उगाकर सारी परिस्थितियाँ उलट सकती है । हरीतिमा रहित ठूँठों पर बासन्ती बहार ला देना उसके लिए बायें हाथ का खेल है । इसके लिए ऋषि-महामानव सदा-सदा से ही अवतरित होते रहे हैं । वर्तमान क्रिया-कलापों में उस दैवी चेतना के सक्रिय क्रियान्वयन को ज्ञान-चक्षुओं द्वारा देखा जा सकता है । अन्यथा वह उमंग कैसे उठती, जिसने इस दैवी मिशन को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया । जो इतना समझते हैं, वे इस आश्वासन को भी सुनिश्चित समझें कि समय बदलेगा, नासमझी का स्थान विवेकशीलता लेगी और समय सूत्र-संचालन सोये मूर्धन्यों के हाथों से निकलकर जाग्रतात्माओं के हाथों में आयेगा । हमारी अन्तर्मुखी एकाकी साधना को उसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जा सकता है ।

विश्व-शान्ति में भारत की भूमिका

इन दिनों भारत अनेक भीतरी विग्रहों और बाहरी दबावों के बीच रह रहा है । उनका प्रभाव प्रगति पथ में रोड़ा बन रहा है और चित्र-विचित्र प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न कर रहा है । इन असमंजसों को देखते हुए औसत दर्जे के मनुष्य का चिन्तित होना और भविष्य के लिए कठिनाइयों के बढ़ने की आशंका करना स्वाभाविक है । जो छोटी-मोटी असफलताएँ भी व्यवधान उत्पन्न करती हैं, वे अदूरदर्शियों को बड़ी बढ़-चढ़ कर प्रतीत होती हैं और उतने भर से उनकी स्थिति घबरा जाने जैसी बन जाया करती है ।

देश के सामने प्रस्तुत इन दिनों की समस्याओं को गिनाया जाय तो उनमें से राष्ट्रीय महत्त्व की दर्जनों विभीषिकाएँ सामने खड़ी दीखती हैं । स्थानीय महत्त्व की दुरभिसंधियों को गिना जाय तो उनकी संख्या सैकड़ों तक जा पहुँचती है । जो निराशा भरा, असफलताओं से जुड़ा पक्ष देखने के आदी हैं, जिनके लिए प्रस्तुत संकटों का बढ़ना ही कल्पना क्षेत्र में आता है । फलतः वे स्वयं हैरान होते हैं और अपनी मान्यताएँ दूसरों को बढ़ा-चढ़ा कर बताने पर उन्हें भी हैरानी में डालते हैं ।

यह एक पक्ष की चर्चा है । विचारशील दूरदर्शी लोगों के लिए उज्ज्वल भविष्य की परिकल्पना करना न केवल स्वाभाविक ही है, वरन् उनका चिन्तन रचनात्मक होता है । जो अपने पुरुषार्थ और प्रयत्न पर दृष्टि डालते हैं और सत्य की जीत होने के सिद्धान्त पर विश्वास करते हैं, उनके लिए यह स्वाभाविक है कि सुधरे हुए दृष्टिकोण से सोचें और सत्प्रयत्नों का सुखद परिणाम होने की बात का अनुमान लगायें ।

हमारा स्वयं का विश्वास इतने दिनों की आराधना और दैवी सन्निकटता के आधार पर यह बन गया है कि भारत अगले दिनों सभी क्षेत्रों में असाधारण प्रगति करेगा । इतना ही नहीं वह दूसरे पिछड़े और पददलित देशों को ऊँचा उठाने में कारगर भूमिका भी सम्पन्न करेगा । उसकी सनातन परम्परा भी ऐसी ही है । उसने उन दिनों में विश्व व्यवस्था को सुधारने सम्भालने में भारी काम किया था जब संसार में सर्वत्र अनगढ़ता और पिछड़ापन छाया हुआ था । तब यहाँ के मनीषी परिव्राजक विश्व के कोने-कोने में गये थे और ज्ञान-विज्ञान से अवगत कराके पिछड़े जन-समुदाय को ऊँचा उठाया था । अब की बार उसी पुरातन प्रक्रिया की नई परिस्थितियों के अनुरूप पुनरावृत्ति करनी होगी । सफलता पूर्वकाल में भी मिलती थी और सत्परिणाम इन दिनों की प्रयत्नशीलता के भी निकलेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन काल के पिछड़ेपन में अभाव, दारिद्र्य, अज्ञान और अनाचारों का बाहुल्य था । तब का प्रशिक्षण भारतीय देवात्माओं ने उसी के अनुरूप किया था । समस्त विश्व को भारत का अजस्र अनुदान किस प्रकार उपलब्ध करा गये थे, इसका संक्षिप्त विवरण हम अपनी इस नाम की पुस्तक में दे चुके हैं । तब की परिस्थितियों से अब भारी अन्तर हुआ है । विज्ञान और बुद्धिवाद की उन्नति से सुविधा-साधन बढ़े हैं । लोगों को तर्क करना और चमत्कारी निर्माण खड़े करना भी आ गया है, किन्तु भारी कमी यह हुई है कि मनुष्य विलासी, स्वार्थी और पाखण्डी असाधारण रूप से बन गया है । उसकी निष्ठुर आक्रामकता और विश्वासघाती प्रपंच परायणता ने अगणित तरीके ढूँढ़ निकाले हैं और मुट्ठी भर चतुर लोगों ने बहुसंख्यक असमर्थों को अपने चंगुल में कसकर उन्हें निचोड़ डालने का उपक्रम अपनाया है । प्रत्यक्ष लड़ाई का सामना किसी प्रकार किया भी जा सकता है, पर परोक्ष छद्म से जूझना किसी प्रकार भी सरल सम्भव नहीं होता । विश्व इन दिनों दो हिस्सों में बँट गया है— एक शोषक दूसरे शोषित । एक समर्थ दूसरे असमर्थ । दोनों के बीच प्रत्यक्ष संघर्ष तो जहाँ-तहाँ ही चल रहा है पर परोक्ष में ईर्ष्या, द्वेष और रोष प्रतिशोध की ऐसी आग जल रही है, जो ईंधन जैसी उपेक्षित दीखने पर भी भयानक दावानल भड़का देने के लिए अभी भी अपने अस्तित्व को दाँव पर लगा सकती है ।

स्पष्ट है कि वर्तमान परिस्थितियाँ इसी प्रकार चलती रहीं तो उसका परिणाम अणु युद्ध न होने पर भी सर्वत्र विष बीज बो देने की प्रक्रिया अपना लिये जाने पर उतने ही भयंकर होंगे, जिसे विश्व-विनाश के समतुल्य समझा जा सके । सामान्य बुद्धि हतप्रभ है कि इस व्यापक विडम्बना से कैसे निपटा जाय ? किन्तु भारत की जो देवात्मा अभी-अभी जागृत हुई है अब विश्वासपूर्वक घोषणा कर सकती है कि प्रस्तुत परिस्थितियाँ देर तक नहीं रहेंगी और देर तक नहीं रहने दी जायेंगी ।

यों भारत की जनसंख्या भी इन दिनों ९० करोड़ तक जा पहुँची है । संसार के समस्त मानवों में सात के पीछे एक भातीय सुधरता हुआ हो तो छः पिछड़ों को भी ऊँचा उठाने में सहायता कर सकता है । एक नाविक जब अपनी नाव में दिन भर सैकड़ों को इस पार से उस पार पहुँचाता रह सकता है, तो कोई कारण नहीं कि जिनकी नसों में ऋषियों और देवताओं का रक्त बहता है वे उपयोगी परिवर्तन की वेला में महती भूमिका न निभा सकें । देश गरीब है फिर भी उसकी श्रद्धा बलवती है जिसके बलबूते वे साधन जुटाये जा सकते हैं जो विश्व के कायाकल्प में महती भूमिका निभा सकें । संसार के प्रमुख तीर्थों में से अब भी तीन चौथाई भारत में ही हैं । संसार के महापुरुषों के इतिहास की आदि से लेकर अब तक की गणना की जाय तो प्रतीत होगा कि उठे हुए दूसरों को कंधों पर बिठाकर उठाने वाले लोग इसी देश में हुए हैं । यह यहाँ की मिट्टी की विशेषता है । पूर्व दिशा से ही सदा सूर्य निकलता है और उसका प्रकाश सारे संसार में फैलता है । उषाकाल ब्रह्ममुहूर्त और अरुणोदय का वह देश भारत ही है, जहाँ से दिनकर उदय होता और संसार में अपना प्रकाश फैलाता है । यह नित्य का क्रम है । अबकी बार उसे विशेष क्रम अपनाना होगा । अंधेरे को दूर कर उजाला लाने भर से काम नहीं चलेगा । इस बार बौद्धिक भ्रष्टता और आचरण की दुष्टता को निरस्त करना चाहिए । यह कार्य अपने घर से आरम्भ होगा और विश्व के दूसरे छोर तक निर्वाधगति से बढ़ता जायेगा । आज जिन कारणों से संसार भर का जन-समुदाय खिन्न-विपन्न है कल उनकी परिस्थितियाँ बदलने लगेंगी और तब तक बदलने की यह प्रक्रिया चलती ही रहेगी, जब तक कि स्वाभाविक और संतोषजनक स्थिति में जा पहुँचने का समय नहीं आता ।

अगले दिनों लोग आश्चर्य करेंगे कि किसी समय का पिछड़ा पराधीन देश किस प्रकार ऐसा कायाकल्प कर सका कि अपनी समस्या तो सुलझाई ही, विश्वभर की समस्याओं को सुलझाने में विपत्तियों के निराकरण में असाधारण सहायता की । इन दिनों भारत की राजनैतिक स्थिति और शक्ति सामान्य है । पर वह दिन प्रतिदिन आत्मबल का धनी होता जाता है । उसे ऐसी दैवी प्रेरणा और अनुकम्पा हस्तगत होने जा रही है, जिसकी क्षमता शस्त्रबल, बुद्धिबल और धन बल तीनों से ही अधिक पड़ती है । इस प्रकार भारत का पलड़ा अनायास ही भारी होकर इस स्थिति में पहुँच जाता है, कि वह अपने साथ-साथ दूसरों को भी उबार सके ।

इस संदर्भ में फ्रांसीसी अदृश्य दृष्टा-'नोस्ट्राड्रामस' का भविष्य कथन बहुत ही विश्वस्त और प्रामाणिक माना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है । उसने इस शताब्दी के आदि में केवल राजनैतिक भविष्यवाणियाँ लिखी हैं । अन्य ज्योतिषी तो व्यक्ति विशेष की ग्रह दशा बताते हैं और उसी छोटे दायरे तक सीमित रहते हैं, पर उपरोक्त अदृश्य दृष्टा ने समस्त विश्व का राजनैतिक भविष्य देखा और लिखा है । जिन देशों का उदय तक उसके जमाने में नहीं हुआ था उनके आरम्भ होने से लेकर मिट जाने तक के विवरण-प्रस्तुत किये हैं । आश्चर्य यह है कि उन कथनों की सच्चाई पिछले पाँच सौ वर्षों से सही होती गई । उसकी राजनैतिक भविष्यवादिता में कहीं अन्तर नहीं आया ।

नोस्ट्राड्रामस ने इन दिनों की परिस्थिति का पर्यवेक्षण करते हुए लिखा है कि भारत विश्व का नेतृत्व करेगा । उसी की दैवी शक्ति उन प्रयोजनों को पूरा करेगी जिनके सहारे संसार की अनेकानेक समस्याएँ सुलझें और विपत्ति की भयंकर विभीषिकाओं से त्राण मिले । इन भविष्यवाणियों पर फ्रांस के शासनाध्यक्ष 'मितरा' की तरह हमारा भी अटूट विश्वास होता है कि ऐसा ही होकर रहेगा।

यह एक सुनिश्चित और विश्वस्त तथ्य है कि युग संधि के बीस वर्षों में से लगातार देश की कुण्डलिनी जागरण के लिए प्रबल प्रयत्न हुए हैं और अब वे इस स्थिति तक पहुँच गये कि अपने प्रचंड पौरुष के चमत्कारी सत्परिणाम प्रस्तुत कर सकें, करेंगे भी ।

इन दिनों दुनिया का विस्तार सिमट कर राजनीति के इर्द-गिर्द जमा हो गया है । जिसके पास जितनी प्रचण्ड मारक शक्ति है, वह अपने को उतना ही बलिष्ठ समझता है। जो जितना सम्पन्न और धूर्त है, वह अपनी शेखी उसी अनुपात से बघारता है और अपने को सर्वसमर्थ घोषित करता है । इसी बलबूते वह छोटे देशों को डराता और फुसलाता भी है । यही क्रम इन दिनों चलता रहा है, किन्तु अगले दिनों यह सिलसिला न चल सकेगा । परिस्थितियाँ इस प्रकार करवट लेंगी कि जो पिछले दिनों होता रहा है अगले दिनों उसके ठीक विपरीत घटित होगा। भविष्य में नैतिक शक्ति ही सबसे भारी पड़ेगी । आत्मबल और दैव बल जन-समुदाय को आकर्षित, प्रभावित एवं परिवर्तित करेगा । इस नयी शक्ति का उदय होते लोग पहली बार प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे । यों प्राचीन काल में भी इसी क्षमता का मूर्धन्य प्रभाव रहा है ।

बुद्ध, गान्धी ने कुछ ही समय पूर्व न केवल अपने देश को बदला था, वरन् विशाल भू-भाग को नव-चेतना से प्रभावित किया था । विवेकानन्द विचार परिवर्तन की महती पृष्ठभूमि बना कर गये थे । कोडिन्य और कुमारजीव एशिया के पूर्वांचल को झकझोर चुके थे । विश्वामित्र, भागीरथ, दधीचि, परशुराम, अगस्त्य, व्यास, वशिष्ठ जैसी प्रतिभाओं का तो कहना ही क्या, जिन्होंने धरातल को चौंकाने वाले कृत्य प्रस्तुत किये थे । चाणक्य की राजनीति ने भारत को विश्व का मुकुटमणि बनाया था । देश को सम्भालने में तो अनेक प्रतापी सत्ताधीश और प्रतिभा के धनी मनीषी बहुत कुछ कर गुजरे हैं ।

समय आ गया है कि भारत अपनी भीतरी समस्याओं को हल करके रहेगा । अभी कितनी ही ऐसी समस्याएँ दीखती हैं जिनसे आशंका होती है कि कहीं अगले दिन विपत्ति से भरे हुए तो न होंगे । चिनगारियाँ दावानल बन कर तो न फूट पड़ेंगी । बाढ़ का पानी सिर से ऊपर होकर तो न निकल जायेगा । ऐसी आशंकाएँ करने वाले सभी लोगों को हम आश्वस्त करना चाहते हैं, कि विनाश को विकास पर हावी न होने दिया जायेगा । मार्ग में रोड़े भले ही अड़चन उत्पन्न करते रहें, पर काफिला रुकेगा नहीं । वह उस लक्ष्य तक पहुँचेगा, जिससे विश्व को शांति से रहने और चैन की साँस लेने का अवसर मिल सके । वह दिन दूर नहीं जब भारत अग्रिम पंक्ति में खड़ा होगा और वह एक-एक करके विश्व उलझनों के निराकरण में अपनी दैवी विलक्षणता का चमत्कारी सत्परिणाम प्रस्तुत कर रहा होगा ।

परिवर्तन की अदृश्य किन्तु अद्भुत प्रक्रिया

मुर्गे की बाँग लगते ही सवेरा होने का आभास मिल जाता है । उसके बाद पौ फटती है । ब्रह्ममुहूर्त, उषाकाल का आगमन होता है । लालिमा छाती है । अरुणोदय होता है। प्राची का रक्तवर्ण देखते ही बनता है । इसके उपरान्त ऊर्जा और आभा भरा सूर्य अपनी तीव्र किरणें बिखेरना आरम्भ करता है और दिनकर के प्रचण्ड प्राण भरे दर्शन होते हैं । सांयकाल भी ऐसा ही होता है । सूर्य डूबने से घंटों पहले धूप मध्यम पड़ जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डूबता सूर्य बहुत पहले से ही फैलना फूलना शुरू कर देता है । पश्चिम के दूरवर्ती बादल चित्र-विचित्र रंगों से भर जाते हैं । सूर्य थोड़ा-थोड़ा करके डूबना शुरू करता है । अन्तिम अंश अदृश्य हो जाने के उपरान्त भी पश्चिम में दूर-दूर तक लालिमा छाई रहती है । रात्रि का अंधेरा घिरने और सूर्य अस्त होने के बीच काफी मध्यान्तर रहता है । प्रभात में भी सूर्योदय से पूर्व घोर निशा रहती है और रात्रि दिन का मध्यवर्ती बहुत सा समय आधी-अधूरी असमंजस से भरी स्थिति में ही निकल जाता है ।

बीसवीं सदी का अन्त और इक्कीसवीं सदी का आगमन जब अपनी परिपूर्ण स्थिति में होंगे तब उनके बदलने में काफी देर लगेगी । यह समय क्रमिक गति से बदलेगा । परिवर्तन की धीमी गति से चलती हुई प्रक्रिया दिखाई देगी । इन्हें देखकर यह तो अनुमान लगाया जा सकता है कि समय की गति किस दिशा में चल रही है, पर जो होने जा रहा है वह एक क्षण में उलट जाय ऐसा नहीं हो सकता । नाटकों में पर्दा उलटते ही दूसरी तरह के दृश्य सामने आ खड़े होते हैं, पर युग परिवर्तन तो बड़ी बात है, उसकी प्रक्रिया द्रुतिगति से चलती हुई भी मानवी बुद्धि को धीमी ही प्रतीत होगी । पृथ्वी और सूर्य अपनी-अपनी धुरी तथा कक्षा में अत्यन्त तेजी से अग्रसर रहते हैं, पर घर बरामदे में बैठकर देखने पर उनकी चाल बहुत धीमी प्रतीत होती है । सूर्य के चलने जैसा तो कुछ अनुमान भी लगता है, पर पृथ्वी घूमती है इस बात पर तो विज्ञजन ही विश्वास करते हैं । सामान्य-जन तो अपना खेत, घर जहाँ का तहाँ देखकर यह समझ भी नहीं पाते कि पृथ्वी के घूमने वाला कथन सही है भी या नहीं । आकाश की चादर झिलमिल तारे चादर में टँगी पन्नियों की तरह सुहावने तो लगते हैं, पर प्रतीत यही होता है कि वे जहाँ के तहाँ हैं । यद्यपि वे अकल्पनीय तेजी से आगे भी बढ़ते हैं, घूमते भी हैं और दूर भी हटते हैं । उनका प्रकाश धरती तक पहुँचने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं, पर यह सब मोटी बुद्धि से नहीं समझा जा सकता । मस्तिष्क और आँखों की बनावट इस हो रहे परिवर्तन को सहज स्वीकार नहीं करती ।

युग परिवर्तन की प्रक्रिया भी विश्व व्यवस्था को देखते हुए आश्चर्यजनक गति से बदलेगी पर उस परिवर्तन की प्रक्रिया को यथावत् यथा समय समझ सकना हर किसी के लिए कठिन पड़ेगा । इस सच्चाई को हृदयंगम करने में बहुत जोर लगाना पड़ेगा ।

३१| दिसम्बर सन् २००० में रात्रि को सोते समय जो नजारे देखकर सोयेंगे वे १ जनवरी सन् २००१ में सर्वथा बदले हुए दीखें यह नहीं हो सकेगा । गति की तीव्रता को पहचानना सरल नहीं होता । धीमापन तो और भी अधिक समझने में जटिल होता है । छोटा बालक निरन्तर बढ़ता रहता है, पर वह दिखाई नहीं पड़ता कि हर रोज हर घण्टे किस क्रम से कितना बढ़ रहा है । घड़ी में सैकिण्ड की सुई जब बहुत ध्यान देने पर ही चलती मालूम पड़ती है, फिर मिनी सैकिण्ड की चालों को यथावत् समझना तो और भी कठिन है । रस्से में ढेला बाँध कर घुमाया जाय तो तेजी के कारण वह छतरी जैसा बन जाता है और स्थिर दिखाई पड़ता है । तेजी से जमीन पर घुमाया गया लट्टू भी अपनी धुरी पर खड़ा दीखता है । इतने पर भी उसकी द्रुतगामी भ्रमण प्रक्रिया को झुठलाया नहीं जा सकता ।

युग बदलेगा तो उसकी गति ऐसी ही होगी, जैसी कि पिछली शताब्दी में परिवर्तनों का क्रम रहा है । पूर्व काल में बिजली की किसी को कल्पना तक न थी । पर अब तो जीवन पूरी तरह उसी पर निर्भर हो गया है । बत्ती, पंखे, हीटर, कूलर, टेलीफोन आदि घरेलू उपकरण बिजली पर ही निर्भर हैं । जिन देहातों में बिजली नहीं पहुँची है वहाँ भी कपड़े, कुदाल हसियाँ जिन कारखानों में तैयार होते हैं वे बिजली के ऊपर ही अवलम्बित हैं । रेल, मोटर, जलयान, वायुयान आदि में बिजली ही दौड़ती है । माचिस और सुई तक वही बनाती है । एक शताब्दी पूर्व यह कल्पना न थी कि बिजली मनुष्य जीवन के साथ इस कदर गुथ जायगी कि उसकी सहायता के बिना काम ही न चल सके । प्रिंटिंग प्रेसों से लेकर रेडियो, दूरदर्शन, लाउडस्पीकर, सिनेमा आदि में बिजली का ही चमत्कार दीख पड़ता है ।

पर यह परिवर्तन कितनी धूम-धड़ाके के साथ किस दिन सम्पन्न हुए यह नहीं कहा जा सकता । संस्कृति में आधुनिकता का समावेश हुआ है । पुरानी पीढ़ी की तुलना में आज का आहार-विहार ही नहीं व्यवहार, दृष्टिकोण एवं स्वभाव भी आश्चर्यजनक रीति से असाधारण रूप से परिवर्तित हो गया है, पर यह नहीं कहा जा सकता कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना बड़ा परिवर्तन किस घड़ी मुहूर्त में सम्पन्न हुआ। बदलाव तो आया, पर उसकी गति एवं प्रक्रिया इतनी धीमी इतनी बिखरी रही कि बदल बहुत कुछ गया पर उस उलट-फेर का निश्चित समय, स्थान एवं क्रम विवेचना पूर्वक नहीं बताया जा सकता ।

शरीर की जीवकोशिकाऐं एक वर्ष के भीतर प्रायः पूरी तरह बदल जाती हैं । उनके जन्मने मरने का क्रम हर घड़ी जारी रहता है, किन्तु प्रत्यक्षतः वही शरीर यथावत् बना हुआ प्रतीत होता है । साँप केचुल बदलता रहता है, पर उसकी सत्ता वैसी ही बनी रहती है जैसी कि पहले थी । सूर्य अपने सौर मण्डल को समेटे महासूर्य की परिक्रमा पथ पर द्रुतगति से दौड़ता रहता है । आकाश के जिस क्षेत्र में आज हम हैं उसमें वापस लौटने में हजारों वर्ष लगेंगे, तब तक अपने दसियों जन्म हो चुके होंगे। इतने पर भी यही प्रतीत होता रहता है कि हम जहाँ के तहाँ हैं । धरती, आकाश, सूर्य, सितारे आदि अपना स्थान बदलते और अग्रगामी होते रहते हैं, पर हमें स्थिरता ही दृष्टिगोचर होती रहती है ।

युग संधि की इस बेला में सब कुछ तेजी से बदल रहा है भले ही उसे हम प्रत्यक्ष अनुभव न करते हों । माता के गर्भ में भ्रूण आरम्भ में एक बबूला मात्र होता है, किन्तु नौ मास पूरे होते-होते वह इस योग्य-परिपक्व हो जाता है कि प्रसव का झटका सह सके और उन्मुक्त वायुमण्डल की सर्वथा बदली हुई परिस्थितियों में साँस ले सके । यह परिवर्तन क्रम देख समझ नहीं पाते । गर्भाधान के उपरान्त प्रसव की ही प्रत्यक्ष घटना होती है इस बीच जो विकास क्रम चलता है वह पर्दे के पीछे ही बनता रहता है, उसे हम प्रत्यक्ष न तो देख पाते हैं और न अनुभव करते हैं । युग परिवर्तन की प्रक्रिया भी इसी अदृश्य वास्तविकता के साथ द्रुतगति से अग्रगामी हो रही है ।

जापान पर अणु बम गिरे थे, तब प्रतीत होता था कि विश्व के भाग्य का निबटारा इन्हीं अस्त्रों से कुछ ही दिनों में हो जायगा, किन्तु अदृश्य की परिस्थितियाँ बदली और अब जिन्होंने विशालकाय अणु बमों के भण्डार जमा कर लिये हैं, वे उनके सम्बन्ध में एक ही बात सोच रहे हैं कि इस कचरे को कहाँ दफनाया जाय । प्रकृति ने संतुलन ऐसा बनाया कि अणु युद्ध जीता नहीं जा सकता इसलिए दूरदर्शिता प्रत्यक्ष घोषणा कर रही है कि ऐसा युद्ध लड़ा नहीं जाना चाहिए । इस घोषणा के पीछे ठोस तथ्य हैं और यह निश्चित है कि जिस अणु अस्त्र भण्डारण में कुवेर भण्डार जितना धन खर्च हो चुका उसे अपव्यय रूप में बट्टे खाते ही गिना जायगा । नक्षत्र युद्ध की दिनों दिन बड़ी डींगें हाँकी जा रही हैं, पर उसका पूर्णतया असफल रहना भी निश्चित है । आकाश पर आधिपत्य जमाने के कितने प्रयास हो चुके कितने ही होने जा रहे हैं पर इसे भी ध्रुव सत्य मानना चाहिए कि इस संदर्भ में जो जितना उत्साह दिखा रहे हैं उन्हें अधिक निराशा पल्ले बाँधनी पड़ेगी । इस प्रकार विकिरण बिखेरने के उपरान्त दिग्गज इतना ही कर पायेंगे कि अपनी दुर्बुद्धि का परिचय देते हुए निर्माणकर्त्ता गाली खायें और पीढ़ियों तक कोसे जायें । विकिरण, प्रदूषण में इसी आशा से अपने आपको फिट कर लेगा । प्राणी इतने जहरीले हो जायेंगे कि उस प्रदूषण को पचा सकें । मच्छर मारने के लिए डी० डी० टी० आरम्भ में रामबाण समझी गई थी पर अब मच्छर डी० डी० टी० प्रूफ हो गये हैं और उसी के खुले ड्रमों पर बैठे भोजन का आनन्द लेते रहते हैं । प्रदूषण से उतना विनाश न होगा जितना कि समझा जाता है ।

बढ़ती आबादी एक विकट समस्या मालूम पड़ती है, पर विचारशीलता बढ़ने के साथ-साथ ही उसका घटना आरम्भ हो जायगा । योरोप के कई देशों में जन्म दर स्थिर हो गई है । कहीं-कहीं घटने भी लगी है । वहाँ का अर्थशास्त्र कहता है कि परिश्रमी जातियों को बहार से ला-ला कर अपने देश में बसाया जाय । यह समझ पिछड़ेपन का अन्त होते-होते संसार भर में हो जायगी । इन दिनों प्रसव पीड़ा में प्रायः १५ लाख महिलाऐं प्राण खो बैठती हैं । समझ बढ़ते ही महिलाऐं उपयोगी कार्यों में लगेंगी । विवाह भले ही करें पर अण्डे बच्चे उगलने के व्यवसाय से पूरी तरह हाथ खींच लेंगी । महिलाओं में असहयोग उभरे तो पुरुषों के लिए एकांकी प्रजनन करते रहना कहाँ बन पड़ेगा ? इक्कीसवीं सदी में जनसंख्या वृद्धि नाम की कोई समस्या न रहेगी । उसका समापन बीसवीं सदी का अन्त होते-होते समाप्त हो जायगा ।

एकता और समता का दर्शन हर किसी के गले उतरेगा। इन दिनों में सहकारिता आन्दोलन पनप रहा है । आगे चलकर वह शासन, अर्थशास्त्र, भाषा, सम्प्रदाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी को अपनी गाँठ में बाँध लेगा । मियाँ बीबी वाले अकेले चूल्हे न पकेंगे । लार्ज फैमली स्तर की केन्टीने गाँव-मुहल्ले के रूप में विकसित हो जायेंगी । खाना एक जगह पकेगा । कपड़े एक जगह धुलेंगे । सोने की कोठरियाँ एक ही बड़े हाल में हलके पार्टीशनों से अलग कर दिये जाया करेंगे । अलग घर बसाने, अलग खेती करने, मौत बुढ़ापे के लिए साधन, अलग बचा कर रखने की आवश्यकता न पड़ेगी । यह सहकारिता विश्व साम्यवाद के रूप में बदलेगी और सशक्त राष्ट्र संघ विश्वव्यवस्था का सूत्र संचालन करेगा । सामर्थ्य भर काम करने और आवश्यकता भर लेने की नीति हर किसी को न्यायोचित भी लगेगी और सुविधाजनक भी । आज के पूँजीवाद, विलगाववाद, उपनिवेशवाद, आधिपत्य, शोषण के सूत्र ही समाप्त हो जायेंगे ।

बढ़ते हुए अपराधों की जड़ आज का चिन्तन और वातावरण है इन दिनों में ही मानवी गरिमा का प्रवेश होगा और लोभ लिप्सा का, अमीरी ठाट-बाट का वर्तमान रवैया उपहासास्पद बन जायेगा और निन्दनीय भी । तब कोई इस जोखिम भरे झंझट में हाथ डालकर आग में झुलस मरने जैसी हरकत क्यों करेगा ? जब वसुधैव कुटुम्बकम और आत्मवत् सर्वभूतेषु का दर्शन अन्तःकरणों में गहराई तक प्रवेश करेगा तो कोई कारण नहीं कि स्वार्थों का टकराव समाप्त न हो और मिल-जुल कर सुख से रहने और चैन से रहने की नीति हर किसी के द्वारा न अपनाई जाय ।

न बड़े कारखाने वाले रहेंग और न उनके द्वारा खड़े किये गये प्रेत-पिशाच जैसे स्वसंचालित उद्योग । तब देहाती कस्बों में गृह उद्योग पनपेंगे और शहरों की घिचपिच समाप्त हो जायेगी । विशालकाय नगर, वाहन, उद्योग, अपने खंडहरों में यह साक्षी देते होंगे कि कोई ऐसा युग भी रहा जिसमें पूँजीवाद ने सर्वत्र बेकारी फैलाई थी और लोग सिमट-सिमट कर इन शहरों में अपनी सर्वांगीण सुविधा खोने के लिए आ बसते थे और यहीं नरक जैसी संड़ाँध में सड़ कर मरते थे । तब कोई बड़े नगरों की सैर पर न जाया करेगा । प्राकृतिक सुषुमा वाले क्षेत्र ही दर्शकों को आकर्षित करेंगे और उन्हीं के इर्द-गिर्द उस शिक्षा के केन्द्र बनेंगे जो मनुष्य को बहुज्ञ ही नहीं, विवेकवान भी बनाती है ।

व्यसन और व्यभिचार दुर्बुद्धि की देन है । अपव्यय और धन संग्रह भी उसी दुर्नीति की देह है वह न रहेगी तो कोई नशेबाजी जैसे दुर्व्यसन जो मनुष्य की बढ़ी-चढ़ी मूर्खता का ही परिचय देते हैं । आज तथाकथित बुद्धिमान ही इस प्रकार की मूर्खता अपनाते और अपने पैर कुल्हाड़ी मारते हैं । बर्तनों और उपकरणों के लायक धातु धरती के गर्भ से पीछे भी मिलती रहेगी । कभी तो शस्त्र और विशालकाय यंत्रों में धातुओं का अन्धाधुन्ध उपयोग होता था, उसकी जब आवश्यकता ही न रहेगी तो उत्खनन के लिए हाथ-पैर पीटने की भी आवश्यकता न रहेगी ।

मनुष्य के दो हाथ और मस्तिष्क का कोश इस योग्य है कि सभी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति हलके-फुलके प्रयासों से ही पूरा करते रहें । फिर किसी को न तो दरिद्र रहना पड़ेगा न अशिक्षित तब किसी पर भी पिछड़ेपन का लांछन न लगेगा । न कोई शोषक रहेगा न शोषित । समता और एकता को केन्द्र बिन्दु मानकर अपनी इस दुनिया का नव-निर्माण होगा ।

मनुष्यकृत ध्वंस-निर्माण की प्रत्यक्ष घटनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं, किन्तु प्रकृति द्वारा उत्पन्न किये गये परिवर्तनों में परिस्थितियाँ ही बदलती है, जिनका स्वरूप कभी-कभी कुछ हलचलों के रूप में देखा जा सकता है । युग परिवर्तनों का स्वरूप जो प्रत्यक्ष देखना चाहते है उन्हें बसन्त की उपमा से तथ्य को समझने का प्रयत्न करना चाहिए । वसन्त के दिनों सर्वत्र खिले फूलों की बहार दृष्टिगोचर होती है । स्वतंत्रता संग्राम के दिनों देश में एक साथ उच्च कोटि के अनेकों महामानव जन्मे थे और उन्होंने त्याग बलिदान के आदर्शवादी पुरुषार्थ प्रस्तुत किये थे । युग परिवर्तन की वेला में सृजन शिल्पियों द्वारा किये गये जनमानस परिष्कार एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन जैसे कृत्यों का अतिशय अभिवर्धन देखा जा सकता है । भावना क्षेत्र में सुधारकों की एक बड़ी सेना योजनाबद्ध रूप में कार्य करती हुई दिखाई देगी । सो हो भी रही है ।

दिव्य सम्भावना सुनिश्चित है

इस ग्रन्थ के प्रतिपादनों को परामर्श की भाषा में लिखा गया है । लोगों को ऐसा करना चाहिए, इस मार्गदर्शन के पीछे जन-जन का कर्त्तव्य बोध उजागर किया है, पर वस्तुतः यह समूचा प्रतिपादन सुनिश्चित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्यवाणियों की तरह है। उन्हें अकाट्य एवं विश्वस्त सम्भावनाएँ मानकर चला जा सकता है ।

इस कथन प्रतिपादन के पीछे उच्चस्तरीय अध्यात्म की वे अनुभूतियाँ हैं जिनमें घटित होने वाले घटनाक्रम का पूर्वाभास संजोया गया है । इसमें किसी व्यक्ति विशेष अतिरिक्त घटनाक्रम का उल्लेख नहीं है, वरन् विश्व की भवितव्यता का निरूपण है और बताया गया है कि प्रचण्ड प्रवाह किस दिशा में चल पड़ा है और वह भविष्य में जाकर कब, किस लक्ष्य तक पहुँच कर रुकेगा ।

नवयुग के फलितार्थ होने की सही अवधि इक्कीसवीं सदी है । महाकाल की असीम अवधि में युग की, इतिहास की दृष्टि से सैकड़ों क्या हजारों वर्षों का भी कोई महत्त्व नहीं होता । राजतंत्र को प्रजातंत्र तक पहुँचने में हजारों वर्ष लगे है । मनुष्य को सभ्यता, शिष्टाचार, अनुशासन व्यवस्था गढ़ने में भी बहुत समय लगा है । बोलना और लिखना सीखने में न जाने कितनी पीढ़ियाँ गुजरी होंगी, पर तब काल की गति धीमी थी । अब उसमें तीव्रता आ गई है । विकास कहें या परिवर्तन तेजी से हो रहा है । इसका प्रभाव किसी व्यक्ति समुदाय या क्षेत्र तक सीमित नहीं रह सकता । उससे समूचा विश्व प्रभावित होगा । इच्छा या अनिच्छा से उसके सभी निवासियों को प्रवाह के साथ बहने के लिए समय के साथ चलने के लिए विवश होना पड़ेगा ।

आमतौर से व्यक्तियों के प्रयास ही परिस्थितियों को प्रभावित करते और उनमें उथल-पुथल पैदा करते हैं । राजक्रान्तियाँ, सामाजिक क्रान्तियाँ, औद्योगिक क्रान्तियाँ कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों अथवा समुदायों के प्रभाव से ही उत्पन्न हुई है । उनका श्रेय भी अमुक व्यक्तियों या योजनाओं को ही मिला है । किन्तु कई बार ऐसा भी होता रहा है, कि उमंगे उठी और उन्होंने चमत्कारी कार्य कर दिखाये और समूचे संसार में असाधारण परिवर्तन करके दिखा दिये । वैज्ञानिक अविष्कारों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है । बिजली, रेडियो, टेलीफोन, रेल, जहाज, अणु विस्फोट जैसे कार्य तो कुछ व्यक्तियों ने ही सम्पन्न किये पर उनका प्रभाव समूचे संसार पर पड़ा । परिस्थितियों में आकाश-पाताल जैसा अन्तर हो गया । इस वैज्ञानिक क्रान्ति के लिए कोई बड़ी योजनाएँ नहीं बनी थीं । कुछ छोटी प्रयोगशालाओं में ही वे आविष्कार उपजे थे, पर उपयोगिता को देखते हुए उनका प्रचलन संसार भर में होने लगा । इक्कीसवीं सदी की युग-क्रान्ति भी इसी स्तर की माना जा सकती है । इस क्रान्ति को दार्शनिक क्रान्ति कहा जायेगा और उससे विश्व का समूचा वातावरण, समूचा उपक्रम प्रचलन प्रभावित होगा । जिस प्रकार पाँच सौ वर्ष पुरानी दुनिया की आज के समय के साथ संगति बिठाने पर आश्चर्यजनक परिवर्तन प्रतीत होता है । इसी प्रकार बीसवीं सदी में चल रही, चलती आ रही परिस्थितियों में अब जमीन-आसमान जैसा अन्तर इक्कीसवीं सदी में होने जा रहा है, उसी की रूपरेखा इस अंक में प्रस्तुत की गई है । यह सब कैसे होगा ? कौन करेगा ? परिवर्तन लाने वाली घटनाएँ कहाँ घटित होंगी ? क्यों मोड़ लेंगी ? सफलता, असफलता का उन्हें कब-कब कहाँ-कहाँ किस प्रकार सामना करना पड़ेगा ? यह भी इस भविष्य कथन के साथ यदि उल्लेख रहता तो शायद पाठकों को अधिक रोचक और कौतूहलवर्धक लगता, पर उसकी चर्चा जानबूझ कर नहीं की गई है । लिखा वही गया है जो आवश्यम्भावी है ।

पूछा जा सकता है कि इन भविष्यवाणियों का आधार क्या है ? आमतौर से ग्रह गणित, ज्योतिष को ऐसे कथनों का आधार माना जाता है, पर वास्तविकता यह है कि जो भविष्य कथन की विद्या जानते हैं वे उन सम्भावनाओं को प्रकट नहीं करते । जो करते हैं वे जानते नहीं । यदि मृत्यु काल सही बताया जा सके तो लोगों की स्वतंत्र बुद्धि और स्वतंत्र क्रिया ही समाप्त हो जाय । लोग मृत्यु से पूर्व किये जाने वाले कार्यों को निपटाने में लग जायें इसी प्रकार यदि वस्तुओं की तेजी मंदी का सही कथन कोई कर सके तो वह उसी व्यापार में लगाकर दस पाँच दिन में ही करोड़पति बन सकता है, पर ऐसा होता कहाँ है ? मनीषियों ने व्यक्तिगत भविष्य बनाने का निषेध भी किया है । इससे व्यर्थ चिन्ता बढ़ती है और पुरुषार्थ में व्यवधान पड़ता है ।

इस अंक में प्रस्तुत भविष्यवाणियों का पहला आधार है अदृश्य जगत का वह सूक्ष्म प्रवाह जो कुछ नई उथल-पुथल करने के लिए अपने उद्गम से चल पड़ा है और अपना उद्देश्य पूरा करके ही रहेगा । अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेकानेक प्रतिभाओं को हनुमान, अर्जुन की तरह अपने प्रभाव में लेकर निश्चित प्रयोजन के निमित्त उन्हें बलपूवर्क लगा देगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरा आधार है— हमारा निज का संकल्प, जो किसी उच्च सत्ता की प्रेरणा से महाकाल की चुनौती की तरह अवधारित किया गया है । नव-निर्माण के लिए अपनी निजी क्षमता को इन्हीं तीन वर्षों में विशेष रूप से पैनाया और तीक्ष्ण किया गया है । इसका प्रयोग भी सूक्ष्म जगत की दिव्य चेतनाओं को झकझोर कर खड़ा कर देने में किया जायेगा । साथ ही अनर्थों को निरस्त करने के लिए उनके साथ कटकटा कर जूझा जायेगा । यह उभयपक्षीय प्रयोजन हमारी सूक्ष्म सत्ता ही सम्पन्न कर सकेगी । इसलिए हमने अपने स्थूल शरीर से काम लेना प्रायः बन्द कर दिया है । उसके साथ एक हल्का तंतु ही जुड़ा रखा है, जब उसकी भी आवश्यकता न रहेगी तो एक झटके से इसे भी तोड़कर अलग कर देंगे ।

महान् और व्यापक क्षेत्र की महती उथल-पुथल में सूक्ष्म शक्ति ही काम करती है । स्थूल शरीर उसे सीमित रखता और एक छोटे क्षेत्र तक ही काम करते रहने के लिए बाधित करता है। इसलिए शरीर के साथ सहयोगी जैसा साधारण मोह होते हुए भी उसे गले में पत्थर की तरह नहीं बाँधे रखा जा सकता । स्थिति अभी भी वह बन चली है कि स्थूल शरीर एक स्मृति सौगात की तरह एक कोने में रखा रहे और सूक्ष्म शरीर से वह कार्य होता रहे जिसे अदृश्य जगत के व्यापक क्षेत्र में सूक्ष्म शरीर से ही किया जा सकता है । अपना निज का पुरुषार्थ और आत्म-विश्वास भी इन भविष्यवाणियों का दूसरा आधार है । इस कथन के बारे में निश्चिन्त हम इसलिए हैं कि उस प्रयोजन में हमसे भी कहीं अधिक बड़ी और समर्थ सत्ताएँ इस कार्य को आगे बढ़कर कर रही हैं । हमें तो उन्हीं के प्रचण्ड तूफानी प्रवाह में तिनके पत्ते की तरह उड़ना पड़ रहा है फिर भी उसका कुछ मूल्य तो होगा ही ? इस निजी मूल्य और उच्चस्तरीय सहयोग के आधार पर इस अंक में प्रस्तुत वे भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं जिनका उल्लेख इस अंक में हुआ है । यों आज की निराशाजनक परिस्थितियों में उतना बड़ा परिवर्तन निकट भविष्य में ही खड़ा हो जाना असम्भव जैसा लगता है, तो विश्वासी विश्वास कर सकते हैं कि संसार के इतिहास में अनेक बार असम्भव लगने वाले प्रसंग भी प्रत्यक्ष होते रहे हैं । महापुरुषों की उपलब्धियाँ एवं महान् घटनाओं की सम्भावनाएँ ऐसे ही असमंजस भरे वातावरण में फलित होती रही हैं ।

जो घटित होने वाला है उस सफलता के लिए श्रेयाधिकारी-भागीदार बनने से दूरदर्शी विज्ञजनों में से किसी को भी चूकना नहीं चाहिए । यह लोभ मोह के लिए खपने और अहंकार प्रदर्शन के लिए ठाट-बाट बनाने की बात सोचने और उसी स्तर की धारणा, रीति-नीति अपनाये रहने का समय नहीं है । औसत नागरिक स्तर का निर्वाह और परिवार को बढ़ाने की अपेक्षा स्वावलम्बी बनाने का निर्धारण किया जाय तो वह बुद्धिमत्ता भरा लाभदायक निर्धारण होगा । जिनसे इतना बन पड़ेगा वे देखेंगे कि उनके पास युग सृजन के निमित्त कितना अधिक तन, मन, धन का वैभव समर्पित करने योग्य बच जाता है, जबकि लिप्साओं में ग्रस्त रहने पर सदा व्यस्तता और अभाव ग्रस्तता की ही शिकायत बनी रहती है। श्रेय सम्भावना की भागीदारी में सम्मिलित होने का सुयोग्य, सौभाग्य जिन्हें अर्जित करना है तो हमारी ही तरह भौतिक जगत में संयमी सेवाधर्मी बनना पड़ेगा । इतना कर सकने वाले ही अगले दिनों की दिव्य भूमिका में हमारे छोड़े उत्तराधिकार को वहन कर सकेंगे । पीछे रहकर भी हमें बल देते रह सकेंगे ।

***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इक्कीसवीं सदी एवं भविष्यवेत्ताओं के अभिमत

अन्तः स्फुरणा बनाम भविष्य बोध

जानने और सीखने की प्रक्रिया दूसरों के सान्निध्य से ही सम्पन्न होती है । यात्रा, पर्यटन भी इस उद्देश्य की कुछ हद तक पूर्ति करते हैं । इतने पर भी मनुष्य के अन्तराल में निहित रहस्यमई शक्तियों द्वारा, अन्तःस्फुरणा के रूप में मिलने वाली जानकारी को भी विस्मृत नहीं कर देना चाहिए । इनका कोई प्रत्यक्ष आधार न दीखते हुए भी इसमें उतनी ही सच्चाई है, जितनी दिन के आरम्भ और अन्त में, क्रमशः सूर्य के उदयाचल से निकलने और अस्ताचल में छिपने में है ।

आरम्भ काल में अग्नि का आविष्कार इसी अन्तःस्फुरणा की देन थी । जिसे यह स्फुरणा हुई थी, उसने घर्षण का प्रयोग किया और अग्नि खोज ली । सूत कातना और उससे कपड़े बनाना-इतना ज्ञान मानव को आरम्भ में अन्तःस्फुरणा द्वारा ही हुआ होगा । भाषा, लिपि, उच्चारण यहां तक कि अविज्ञात की असाधारण एवं अभूतपूर्व समझी जाने वाली अगणित शाखाओं, खोजों, आविष्कारों का श्री गणेश इसी आधार पर सम्भव हुआ है । एक बार सुयोग बन जाने के बाद तो उस खोज में सुधार-परिवर्तन कर सकना सम्भव हो जाता है, पर जहां कोई प्रत्यक्ष आधार ही न हो, वहां इस प्रकार की अनायास सूझ को, व्यक्ति अथवा शक्ति की रहस्यमई उपलब्धि ही माना जा सकता है ।

'इलहाम', 'अपौरुषेय' शब्दों द्वारा धर्म ग्रन्थों के श्रुति खण्ड को, ऐसी उपलब्धि के रूप में अभिव्यक्त किया गया है और कहा गया है कि यह मनः शक्ति सम्पन्न व्यक्ति के माध्यम से ईश्वरीय वाणी का ही प्राकट्य है । इस प्रक्रिया में चाहे वे पैगम्बर हों, देवदूत हों अथवा अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न मनीषी, उन्हें व्यक्ति न मानकर एक प्रचण्ड विचार प्रवाह का प्रतीक माना गया व उनके माध्यम से भविष्य में क्या कुछ सम्पन्न होने वाला है इसकी अभिव्यक्ति की गई । हर धर्म, समुदाय में ऐसे इलहाम रहस्यमई अन्तःस्फुरणा के रूप में देखे समझे जा सकते हैं ।

भविष्य-ज्ञान, प्रोफेसी, पूर्वाभास इसी श्रेणी में सम्मिलित माने जाते हैं । उसके कथित रूप में घटित होने पर यह मान लिया जाता है, कि वह निराधार नहीं है । उसके पीछे कोई न कोई सुनिश्चित आधार अवश्य होना चाहिए । भविष्य-कथन का यह आधार चाहे जिस भी विधा पर अवलम्बित हो, उसे आश्चर्यजनक अद्भुत या दैवी ही समझा जाता रहा है ।

पर अब वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकारने लगे हैं कि वर्तमान के अध्ययन द्वारा भविष्य के बारे में बहुत कुछ बताया जा सकता है । इस सम्बन्ध में भविष्य विज्ञान (फ्यूचरालॉजी) की एक पृथक् शाखा का भी विकास हो चुका है । इसे भविष्यवाणी तन्त्र का एक अंग माना जाय, तो कोई अत्युक्ति न होगी ।

इसी सन्दर्भ में विश्व के मूर्धन्य लेखकों की कई पुस्तकें यथा एच.जी. वेल्स की "शेप ऑफ दि थिंग्स टु कम", "टाइम मशीन" तथा बी.एफ. स्किनर की "वाल्डन टू", "बेव न्यू वर्ल्ड" एवं '१९८४' पिछले दिनों प्रकाशित हुई हैं । उन्हें देखते हुए ऐसा लगता है जैसे उन्होंने स्वयं भविष्य की झांकी की हो और बाद में उसे ही पुस्तकाकार रूप दे दिया हो ।

फ्यूचरालॉजी या भविष्य विज्ञान अब एक पूर्णतः विज्ञान सम्मत विधा मानी जाने लगी है । पूर्व में कभी वायरलैस, माइक्रोचिप्स, रोबोट, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष में तैराकी व अन्यान्य ग्रहों पर यान भेजे जाने की सम्भावनाओं को काल्पनिक ही माना गया था, पर क्रमशः समय गुजरने के साथ ही यह सब होता चला गया । जिन-जिन विद्वानों ने कम्प्यूटर के आंकड़ों को आधार बनाकर भविष्य के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध में लिखा है वे यही कहते हैं कि आज का चिन्तन, निर्धारण भविष्य में सही निकले, तो कोई आश्चर्य नहीं किया जाना चाहिए । इसका कारण बताते हुए मनीषी कहते हैं कि प्रवाह सदा एक-सा नहीं बना रहता । उसमें समय-समय पर उतार-चढ़ाव आते रहते हैं । हवा कभी तूफान बनती है तो कभी बवण्डर-चक्रवात का रूप धारण कर लेती है । इन्हीं सम्भवनाओं को दृष्टिगत रखते हुए लेखकगण-गुन्थर स्टेण्ट, फ्रिट्जौफ, काप्रा, एल्विन टॉफलर ने अपनी कृतियों क्रमशः ''कर्मिंग ऑफ दि गोल्ड एज'', ''दि टर्निंग प्वाइण्ट'' एवं ''फ्यूचर शॉक'' में इक्कीसवीं सदी के आरम्भ को व्यापक परिवर्तनों का काल और आने वाले समय में सुख-समृद्धि होने की सम्भावना प्रकट की है ।

इन सब सन्दर्भों, कथनों, तथ्यों का उद्देश्य मात्र इतना है कि लोगों में यह विश्वास पैदा किए जा सकें कि आने वाला समय भयावह-त्रासदी भरा नहीं है, सुखद है । इक्कीसवीं सदी वैसी नहीं होगी, जैसी वर्तमान संकट भरी परिस्थितियों को देखकर अन्दाज लगाया जाता है । इस आशावाद का मूल आधार है, मानवी विभूति अन्तःस्फुरणा, पूर्वानुमान लगा पाने की दिव्य सामर्थ्य, जिसे कोई भी मनुष्य अपने अन्दर जगा सकता है । आज जो भी कुछ भविष्य के सम्बन्ध में उज्ज्वल सम्भावनाऐं व्यक्त करते हुए कहा जा रहा है, उसकी भी जड़ें वहीं विद्यमान हैं । परोक्ष जगत में चल रही हलचलें व व्यापक स्तर पर किए जा रहे प्रयास-पुरुषार्थ, जो प्रत्यक्ष भले ही दृष्टिगोचर न हों, उनकी परिणति निश्चित ही सुखद होगी ।

वैज्ञानिक शोधें भी पूर्वाभास से उपजीं

अनेकानेक आविष्कारों पर दृष्टि डाली जाय, तो ज्ञात होगा कि इनका पूर्व स्वरूप एक खान के के रूप में मनीषीगणों-वैज्ञानिकों के अन्तःकरण में उपज चुका था अथवा उन्हें तत्सम्बन्धी पूर्वाभास अन्तःबोध हुआ । उसकी परिणति एक प्रारम्भिक आविष्कार के रूप में हुई । क्रमशः संशोधन होते-होते आज वाली प्रगतिशील स्थिति में विज्ञान ने यह यात्रा पूरी कर ली है । कुछ आविष्कारों पर नजर डालें तो बात और भी साफ हो जायेगी ।

न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की शक्ति के सिद्धान्त की जानकारी देकर विज्ञान जगत में क्रान्ति ला दी । सब जानते हैं कि वे चिन्तन में निमग्न थे । एक सेब का फल टूटकर पृथ्वी पर गिरने की घटना ने ही उनकी अन्तः प्रज्ञा में हलचल मचा दी यह पृथ्वी पर ही क्यों गिरा ? यह चिन्तन करते-करते वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पृथ्वी के अन्दर प्रचुर मात्रा में गुरुत्व बल विद्यमान है, जो वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है ।

पतीली में उबलते पानी की भाप से उठते एवं गिरते ढक्कन ने किशोर जेम्सवाट की अन्तः सामर्थ्य को उकसाया एवं भाप की शक्ति का सिद्धान्त जन्मा । इसके आधार पर पानी की वाष्प के दबाव से शक्ति उत्पन्न कर, न केवल रेलें चलाई जा सकीं अपितु औद्योगिक क्रान्ति का आधार खड़ा करने की स्थिति उत्पन्न हो ऐसी सम्भावनाऐं बन गईं ।

श्री फ्रेडरिक कैकुले भी बेंजीन के न्यूक्लियस की खोज करते-करते स्वप्नावस्था में चले गये । उनने देखा कि एक सांप कुण्डली मारकर बैठा अपनी ही पूंछ काट रहा है । तुरन्त जागकर उनने इसका चित्र बनाया, तो आश्चर्यवत् देखते रह गये कि षटकोण के रूप में वे न्यूक्लियस की आकृति खींच चुके थे । आट्टोलेवी को भी इसी प्रकार स्नायु तन्तुओं में काम करने वाले उस रस के समीकरणों का अन्तर्बोध हुआ जो स्नायु-सन्धि केन्द्रकों (सिनेप्सों) पर विद्युत्प्रवाह के लिए उत्तरदाई था । कागज पर उतारते ही एसिटाइल कोलीन, कोलीन एस्टरेस, जैसे महत्त्वपूर्ण न्यूरोकेमीकल्स की प्रारम्भिक शोध का कार्य पूरा हो चुका था ।

वस्तुतः जिन भी सम्भावनाओं पर मनीषा चिन्तनरत रहती है, वे अचेतन के गर्भ में पहले ही जन्म ले चुकी होती हैं । कुछ अन्तर्बोध के रूप में, तो कुछ स्वप्न, अन्तःस्फुरणा के रूप में विकसित चेतना के धनी मनीषियों के मानस से फूट पड़ती है एवं आविष्कारों, पूर्वाभासों, भविष्यवाणियों का रूप ले लेती है ।

अमेरिकी वैज्ञानिक बेंजामिन फ्रैंकलिन ने तड़ित बिजली को चमकते देखकर सोचा कि इस वर्षा भरे तूफान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में पतंग उड़ाकर देखा जाय । गीली डोर से उनने एक चाबी बांध कर जमीन पर रख दी । उस लोहे की चाबी से जब उनने विद्युत् स्फुलिंग चमकते देखे तो तड़ित चालक का आविष्कार उनकी विकसित चेतना में उद्भूत हो चुका था । यह चमत्कार है उस अन्तर्बोध का, मनीषा में जागे पूर्वाभास का, जिसने ऐसा कुछ सम्भव है, यह सोच कर किसी वैज्ञानिक को प्रयास-पुरुषार्थ की प्रेरणा दी ।

इतिहास बताता है कि हर कल्पना, हर अप्रत्याशित घटनाक्रम को मूर्त रूप देने का कार्य दैवी चेतना ने मानवी प्रज्ञा के माध्यम से ही किया है । राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, चिन्तक, प्रकृति के रहस्यों की खोज करने वाले तथ्यान्वेषी, लेखक, कवि, संगीतकारों को भी भावी कार्यों सम्बन्धी प्रेरणा इसी आधार पर मिलती रही है । यहां तक कि असम्भव को सम्भव कर दिखाने वाली प्रकृति प्रेरणा भी अचेतन में ही जन्मी व मिस्र के पिरामिड, चीन की दीवार, पनामा-स्वेज नहर, ताजमहल, हॉलैण्ड द्वारा समुद्र में डूबी धरती पर खेती आदि जैसे काम सम्पन्न होते चले गये, जिन्हें युगान्तरकारी कहा जाता है । जिन्हें डाक व्यवस्था, नोट करेंसी का प्रचलन करने की बात सूझी अथवा समाज व्यवस्था हेतु प्रचलन परम्पराऐं बनानी पड़ीं, उन्हें भी अन्तर्प्रज्ञा ने बोध कराया होगा, परब्रह्म की प्रेरणा उन्हें मिली होगी । पैगम्बरों-देवदूतों की बात करते हैं, तो आशय ऐसी ही विभूतियों से होता है, जिन्हें इलहाम होता रहा है । जिनकी विकसित चेतना भविष्य को पढ़ पाने में समर्थ रही है ।

वही अन्तःप्रेरणा, विकसित चेतना आज भविष्य पर दृष्टि डाले कुछ कहने पर उतारू हैं । आज की संकटों से भरी वेला में दोनों ही प्रकार के भविष्य कथन हमारे सामने हैं । एक वे जिनमें आगामी बारह वर्ष व इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध को खतरों-संकटों से घिरा बताया गया है, दूसरी वे जिनमें भविष्य के सम्बन्ध में उज्ज्वल सम्भावनाऐं प्रकट की गई हैं । इन्हीं का कहना है कि यदि मानवी प्रयास क्रम उलट दिए जायें, दिशा बदल ली जाय, गलती सुधार ली जाय, तो सम्भावित विपत्तियों के घटाटोप छंट सकते हैं । घटा कितनी ही काली एवं डरावनी क्यों न हो तेज आन्धी उसे कहीं से कहीं पहुंचा देती है, उसकी भयावहता को निरस्त कर देती है । यही बात मानवी पुरुषार्थ के बारे में भी लागू होती है । वह चाहे तो हर भवितव्यता को बदल सकता है ।

प्रस्तुत वेला जिससे विश्व मानवता गुजर रही है, परिवर्तन की है । युग परिवर्तन पूर्व में भी होता रहा है, जिसे सामूहिक विकसित चेतना नाम दिया जा सकता है । यही बिगड़ी परिस्थितियों को ठीक करने, सामयिक स्थति को देखते हुए सुनियोजित विधि व्यवस्था बनाने, प्राणवान प्रतिभाओं को इकट्ठा कर युग धर्म को निबाहने का सरंजाम पूरा करती है । अवतार इसी प्रवाह का नाम है । इन दिनों उसी महाकाल की प्रबल सत्प्रेरणाऐं युग परिवर्तन के निमित्त नई परिस्थितियां विनिर्मित करती देखी जा सकती हैं । आवश्यकता इसी बात की है कि समय को पहचानकर, अपने प्रयास भी इसी निमित्त झोंक दिए जायें । श्रेय को पाने व अवतार प्रक्रिया का सहयोगी बनने का ठीक यही समय है ।

दिव्य दृष्टाओं का भविष्य कथन

ज्योर्तिविज्ञान अन्तर्ग्रही हलचलों और प्रतिक्रियाओं की सूक्ष्म जानकारी पर आधारित हैं । इसलिए उसकी गणना भौतिक विज्ञान में की जाती है । प्रतिक्रियाओं का अनुमान लगाते हुए जो भविष्य कथन किया जाता है उसका आधार भी यही है ।

अतीन्द्रिय क्षमता का क्षेत्र इससे भिन्न है । उसमें ग्रह-गणित की आवश्यकता नहीं पड़ती है । अर्न्तदृष्टि एक दिव्य सामर्थ्य है जिसके सहारे परोक्ष के अनेक रहस्यमय परतों पर पड़े हुए पर्दे को हटाया जा सकता है और वह जाना जा सकता है जो सामान्यतया सम्भव नहीं होता ।

क्रिया की प्रतिक्रिया, कार्य का प्रतिफल सिद्धान्त भी तभी भावी सम्भावनाओं का अनुमान लगा सकता है जब घटनाक्रम सामने हो । किन्तु अदृश्य दर्शन की दिव्य दृष्टि अन्तरिक्ष की हाण्डी में पक रही खिचड़ी की गन्ध लेकर यह बता सकती है कि उसमें क्या उबल रहा है और पककर किस रूप में क्या आने वाला है ?

प्रयत्न करने पर यह शक्ति योग साधना द्वारा कोई भी साधक अपने में विकसित कर सकता है । साधना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से सिद्धि का सिद्धान्त सर्वमान्य है । किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि पूर्व संचित संस्कारों के कारण यह दिव्य क्षमता अनायास ही जग पड़ती है । बिना साधना के ''सिद्ध पुरुष' स्तर के मनुष्य भी जब तब पाए जाते हैं और उनमें शाप वरदान जैसी सामर्थ्य तो नहीं होती, पर अदृश्य दर्शन की दृष्टि से उनकी विशेषता आश्चर्यजनक देखी गई है ।

पिछले दिनों संसार में ऐसे अदृश्यदर्शी पाए गये हैं, जिन्हें योगी ऋषि तो नहीं कह सकते हैं, पर भविष्य दर्शन की दृष्टि से उनकी विशिष्टता सर्वमान्य रही है । उन्हें यह शक्ति कैसे मिली इसका उत्तर 'अनायास' के अतिरिक्त और कोई दिया नहीं जा सकता । इतने पर भी यह कसौटी पर सही पाया गया कि उनके कथन अधिकांश में सच निकले । यों जब तब उनमें गलतियां भी निकली हैं ।

अगली पंक्तियों में जिन अदृश्य शक्तियों के भविष्य कथनों की चर्चा की गई है वे सभी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हैं । यह ख्याति उन्हें किसी विज्ञापन बाजी से नहीं वरन् कथनों में सच्चाई मिलने के आधार पर ही मिली है ।

युगसन्धि के मध्य क्या कुछ घटित होने वाला है, इस सन्दर्भ में इन प्रख्यात दिव्यदर्शियों के अभिमत पर दृष्टिपात करने से ही इन निष्कर्षों पर पहुंचना पड़ता है । (१) अगले बीस वर्ष मनुष्य जाति के सामने असाधारण कठिनाइयों से भरे होने की सम्भावना है । (२) वह समय दूर नहीं जब भविष्य की परिस्थितियां प्रत्यक्ष होंगी । लोग वर्तमान रीति-नीति बदल देंगे । व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं समाज व्यवस्था का नया निर्धारण करेंगे । (३) युग परिवर्तन के इन बीस वर्षों में भारत की भूमिका महान होगी । उसे अन्यत्र की अपेक्षा कम विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा । साथ ही उसकी अध्यात्म भूमिका विनाश को हलका करके और विकास को निकट लाने के लिए प्रबल प्रयास करेगी तथा सफल भी होगी ।

अदृश्य दर्शियों ने विभिन्न प्रसंगों के अन्यान्य विचार भी व्यक्त किए हैं । उनकी भविष्यवाणियों एवं दिव्यशक्तियों पर प्रकाश डालने वाली कितनी ही पुस्तकें छपी हैं । उनमें से उतना ही संकलन किया गया है, जिसे सार कहा जा सकता और जो युगसन्धि में होने वाली परिवर्तन प्रक्रिया से सम्बन्धित है । चुने हुए भविष्य दर्शियों में से जिन सात के कथन संकलन किए गये हैं, वे यह हैं: (१) जीन डिक्सन, (२) जूलवर्न, (३) प्रो० हरार, (४) पीटर हर कौस, (५) नोस्ट्राडेमस, (६) जान सेवेज, (७) एण्डरसन ।

१. जीन डिक्सन

जीन डिक्सन का नाम आज विश्वविख्यात है । यह अमरीकी महिला अपनी अचूक भविष्यवाणियों के लिए जानी जाती है । जीन जब ९ साल की बच्ची थी, तब एक दिन उसकी मां ने यों ही, बात-बात में बच्चों से पूछा कि तुम्हारे पिता तुम लोगों के लिए क्या लाऐंगे ? जीन ने दो पल रुककर जवाब दिया वे एक सुन्दर सा सफेद कुत्ता मेरे लिए लाऐंगे । उस समय पिता सवा हजार मील दूर थे । दूसरे सभी बच्चे जीन की बात पर हंसने लगे । पर उस समय पूरा घर आश्चर्य से भर उठा, जब पिता घर लौटकर आए तो सचमुच एक सफेद कुत्ता साथ लाए ।

जीन डिक्सन की यह अन्तर्दृष्टि क्षमता बढ़ती ही रही और वे जैसे-जैसे बड़ी होती गईं वैसे ही वैसे प्रसिद्ध भी होती गईं ।

सर्वप्रथम उनकी चर्चा बड़े पैमाने पर तब चल पड़ी जब उनने खुद सन् १९४४ में तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति के देहावसान की तिथि उनके दफ्तर जाकर दी। दूसरे महायुद्ध के दिन थे— रूजवेल्ट धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे । इसलिए जब विनम्र स्वरों में जीन ने यह बताया कि ''मैं एक साधारण गृहस्थ नारी हूं । पर ईश्वर ने मुझे जो अर्न्तदृष्टि दी है, वह देश के किसी काम आए यही चाहकर मैं कभी-कभी उसमें कौधी हुई बातें बताती रहती हूं ।'' तो रूजवेल्ट ने बड़ी उत्सुकता से और आत्मीयता से उन्हें अपनी बात कहने का आग्रह किया। जीन डिक्सन ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा कि ''मैंने आपसे ही सम्बन्धित एक घटना देखी है ।'' जीन को रुकते देख राष्ट्रपति रूजवेल्ट भांप गये और ''बोले आप संकोच क्यों कर रही हैं ? सम्भव है आपने मेरी मृत्यु से सम्बन्धित घटना देखी हो । तो आप अवश्य बताने की कृपा करें । ताकि मैं अपने शेष कर्त्तव्य को भली-भांति निभा सकूं ।''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जीन डिक्सन ने बहुत हिचकिचाते हुए बताया आगामी वर्ष के मध्य में आपकी मृत्यु अवश्यम्भावी है।

जीन डिक्सन का आभास पूर्णतः सही था। १९४५ के मध्य में रूजवेल्ट का अन्त हो गया और साथ ही जीन डिक्सन की राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि के क्रम का भी आरम्भ हो गया।

कुछ समय बाद राष्ट्रपति ट्रूमैन ने एक क्लब के समारोह में श्रीमती जीन डिक्सन से यों ही पूछा—"क्या आप मेरे भविष्य के बारे में कुछ बता सकती हैं ?" जीन डिक्सन बोली-आप शीघ्र ही राष्ट्रपति बनने वाले हैं थोड़े ही समय बाद ट्रूमैन सचमुच राष्ट्रपति बन गये। इस घटना के बाद जब स्वयं ट्रूमैन ने जीन डिक्सन की चर्चा की तो सारा अमरीका उन्हें जानने लगा।

भारत के विभाजन की भविष्य वाणी भी श्रीमती जीन डिक्सन ने काफी समय पहले कर दी थी।

३० जनवरी, १९४८ को जीन डिक्सन कुछ लोगों से बात कर रही थीं बीच में सहसा वे रुकीं और बोलीं अब बात आगे नहीं हो सकेगी। मुझे लग रहा है कि गान्धीजी की अभी-अभी हत्या कर दी गई है। हमें कुछ समय शान्त रहना चाहिए। वस्तुतः ठीक उसी समय गान्धीजी पर हत्यारे ने गोली चलाई थी। कुछ घण्टों में यह खबर रेडियो पर सारे संसार में सुनाई जाने लगी।

एक अप्रत्याशित भविष्यवाणी जीन ने चर्चिल के बारे में की। कुछ प्रसिद्ध पत्रकारों ने उनसे चर्चिल के बारे में भविष्यवाणी का आग्रह किया। जीन ने तत्काल कहा युद्ध के बाद वे प्रधानमन्त्री नहीं रहेंगे। हां, एक अन्तराल के बाद वे फिर प्रधानमन्त्री बनेंगे। उन दिनों चर्चिल लोकप्रियता के शिखर पर थे। युद्ध का संचालन भी उन्होंने अति उत्तम रीति से किया था। अतः उनके हटाए जाने की सम्भावना नहीं थी पर युद्ध से कुछ समय बाद सचमुच ही चर्चिल को पद त्याग करना पड़ा। दूसरे व्यक्ति प्रधानमन्त्री बने उनके बाद श्री चर्चिल फिर प्रधानमन्त्री बने।

रूस में स्टालिन के बाद मालेन्कोव के प्रधानमन्त्री और दो वर्ष के बाद ही उनका स्थान किसी मोटे-तगड़े सैन्याधिकारी द्वारा लिए जाने की भविष्यवाणी भी जीन डिक्सन ने की थी जो अक्षरशः सही निकली।

अब तक हजारों दुर्घटनाओं को उन्होंने टाला है खोए हुए का अता-पता बताया है हत्या और आत्महत्या का रहस्य अनावृत किया है तथा अन्य तरह से मदद की है। उनके घर में जो अतिथेय-कक्ष है वह न केवल उच्च अधिकारी, राजनेता, व्यवसायी आए दिन बैठे देखे जाते हैं, अपितु साधारण किसान और श्रमिक भी वहां पाए जाते हैं तथा श्रीमती डिक्सन सभी को यथोचित समय देती हैं।

जान केनेडी की राष्ट्रपति के रूप में जीत तथा चार साल के भीतर ही उनकी हत्या की भविष्यवाणी श्रीमती जीन डिक्सन ने सन् १९५६ में ही कर दी थी। सन् ६० के चुनाव में सचमुच केनेडी जीते। बाद में एक सम्वाददाता ने फिर पूछा कि "केनेडी के बारे में आपकी दूसरी भविष्यवाणी का क्या होगा" जीन डिक्सन ने कहा मुझे स्पष्ट दीखा है कि नवम्बर ६३ के तीसरे हफ्ते में राष्ट्रपति केनेडी की हत्या कर दी जायेगी। हत्यारे के नाम का पहला अक्षर ओ तथा दूसरा अक्षर डी होगा।" १७ नवम्बर को श्रीमती डिक्सन ने स्वयं व्हाइट हाउस को फोन किया और सुरक्षा अधिकारी को बताया कि राष्ट्रपति की इसी सप्ताह हत्या हो सकती है पर अफसरों ने इसे असम्भव कहकर हंस कर टाल दिया। श्रीमती डिक्सन ने अपनी एक मित्र से दुःखी स्वर में कहा कि ए अधिकारी पागल हो गये हैं मेरी बात नहीं मान रहे। लगता है कि होनी होकर रहेगी। आखिर १९६३ में ही २२ नवम्बर को केनेडी की हत्या ओसवाल्ड ने कर दी और जीन डिक्सन तथा उनकी भविष्यवाणी की गूंज सारे संसार में फैल गई।

श्रीमती डिक्सन ने ख्रुश्चेव के पतन, नेहरू के निधन तथा शास्त्रीजी के नेहरू का उत्तराधिकारी चुने जाने की भविष्यवाणी भी बहुत पहले कर दी थी। चीन द्वारा रूसी क्षेत्र में आक्रमण की उनकी भविष्यवाणी भी सही निकली। उन्हीं श्रीमती जीन डिक्सन की आगामी दिनों से सम्बन्धित ए भविष्यवाणियां जो पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं —

भारत में १९७५ में बाद तीव्र घटनाचक्र गतिशील होगा और वह भौतिक, आध्यात्मिक तथा राजनैतिक दृष्टि से तीव्रता से प्रगति करेगा। १९७९ से ८१ के बीच विश्व में कुछ बड़े नेताओं की हत्या के षड्यंत्र बनेंगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और इस दौरान अनेक राष्ट्राध्यक्षों को जान से हाथ धोना पड़ेगा । १९८१ से ८४ तक का समय विश्व के लिए अत्यन्त तनातनी का रहेगा और इस अवधि में युद्ध की सम्भावना बढ़ जायेगी । चीन का इसमें प्रमुख हाथ रहेगा । अगले युद्ध में चीन शस्त्र-युद्ध की अपेक्षा कीटाणु-युद्ध में विश्वास रखेगा तथा इसमें असंख्य प्राणियों की मृत्यु हो जायेगी । चीन के विरुद्ध रूस अमरीका एक होकर लड़ेंगे । १९८० तक चन्द्रमा के अलावा अन्य किसी ग्रह पर भी मनुष्य अपने कदम रख सकेगा । अन्तरिक्ष यात्राओं में प्रगति बराबर जारी रहेगी । पश्चिम में ईश्वर तथा धर्म पर आस्था बढ़ेगी । लोग अति भौतिक जीवन से विरक्ति का अनुभव करेंगे तथा धर्मिक आध्यात्मिक जीवन जीने की दिशा में प्रयासरत होंगे ।

भारत में ग्रामीण परिवार में जन्मा-पला व्यक्ति अपने विचारों और कार्यों से सारे संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा । वह गान्धीजी की तरह विश्व का मार्गदर्शन करेगा ।

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम बारह वर्षों के बारे में उनकी भविष्यवाणी है कि अमेरिका गृह युद्ध के साथ मध्यपूर्व के युद्ध में उलझ जायेगा । यूरोपीय सभ्यता, भोगवाद एवं युद्ध की नीति को छोड़कर अन्ततः भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए बाध्य होगी । संसार भर के उच्चकोटि के प्रतिभाशाली वैज्ञानिक एक मंच पर एकत्र होकर विश्व मानवता के लिए नये-नए आविष्कार करेंगे । ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत प्रचुर मात्रा में खोज लिए जायेंगे । शिक्षा के क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन हो जायेगा और बच्चों को प्राचीन गुरुकुलों की तरह संस्कारशालाओं में सुसंस्कारिता की शिक्षा मिलने लगेगी । वे कहती हैं कि तब मानव का मस्तिष्कीय विकास एवं अतीन्द्रिय क्षमताओं का विकास इस सीमा तक हो जायेगा कि वे विचार सम्प्रेषण से ही एक दूसरे से सम्पर्क किया करेंगे और विश्व एक सूत्र में आबद्ध हो जायेगा ।

इक्कीसवीं सदी को जीन डिक्सन ने उज्ज्वल सम्भावनाओं से भरापूरा बताया है । वे कहती हैं कि सन् २००० तक ''नीति और अनीति'' का संघर्ष तो चलता रहेगा पर अन्ततः नीति की, सत्प्रवृत्तियों की ही विजय होगी । सन् २०२० तक धरती पर स्वर्ग की कल्पना साकार होने लगेगी । तब न प्रदूषण की समस्या रहेगी और न बीमारी-भुखमरी से किसी को त्रस्त होना पड़ेगा । चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत उन्नति होगी । अन्तरिक्षीय यात्राऐं प्रकाशगति से भी तीव्र चलने वाले यानों से सम्पन्न हुआ करेंगी । सन् २०२० तक सारी मानव जाति का क्रिया-व्यापार एक ही विश्व सत्ता के अधीन संचालित होता हुआ दृष्टिगोचर होगा ।

अपनी प्रसिद्ध कृति ''माई लाइफ एण्ड प्रोफेसीज'' के आठवें अध्याय में जीन डिक्सन लिखती हैं कि ''इक्कीसवीं सदी नारी प्रधान होगी । विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व महिलाएँ सम्भालेंगी ।''विश्व शान्ति'' स्थापना की दिशा में भारत की भूमिका का उन्होंने विशेष उल्लेख किया है और कहा है कि अपने आध्यात्मिक मूल्यों एवं वैचारिक क्रान्ति के माध्यम से वह समस्त विश्व में समतावादी शासन का सूत्रपात करेगा । उनके भविष्य कथन के अनुसार राष्ट्रसंघ का कार्यालय अगले दिनों भारत में बनेगा ।

२. जूलवर्न

जूलवर्न एक विश्वविख्यात लेखक तो हैं ही, भविष्य-दूत भी हैं । जापान द्वारा मन्चूरिया पर तथा इटली द्वारा अल्वानिया पर अधिकार कर लेने की भविष्यवाणी सन् १९३१ में ही उन्होंने कर दी थी । उस समय इसे किसी ने सही नहीं माना था । दूसरे महायुद्ध में जब ए बात सर्वथा सत्यसिद्ध हुई तो जूलवर्न की धाक जम गई।

चीन द्वारा अणुबम बनाने भारत पाकिस्तान में युद्ध छिड़ने, बंगला देश बनने, इजराइल द्वारा अरबों पर विजय पाने आदि की भविष्यवाणी जूलवर्न ने काफी पहले कर दी थी । एक गम्भीर लेखक होने के नाते वे भविष्य कथन के पूर्व काफी सोच-विचार कर लेते थे । उनकी कुछ भविष्यवाणियां निम्नानुसार हैं--

१९८१ तक पाकिस्तान एक छोटे से टापू जैसा रह जाएगा । इसका कुछ भाग अफगानिस्तान ले लेगा । कुछ में स्वतन्त्र बलूचिस्तान बन जायेगा शेष अंग नगण्य रह जायेगा । १९८५ तक भारत चीन द्वारा अपहृत भूमि वापस ले सकेगा । इसी समय तक तिब्बत भी स्वतन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हो जायेगा । १९८५ तक सम्पन्न देशों को हर्षल, प्लूटो आदि ग्रहों की भी विस्तृत जानकारी मिल जायेगी और मनुष्य शुक्र तथा मंगल ग्रहों तक पहुंच जायेंगे । १९८२ तक अणुशक्ति से भी कई गुनी समर्थ शक्ति का पता चल जायेगा ।

१९८० से १९९० तक भीषण प्राकृतिक विप्लव, अतिवृष्टि समुद्री तूफान, अनावृष्टि, भूकम्प, भूस्खलन आदि सामने आयेंगे । सामुद्रिक उद्वेलन, से एक नया टापू उभर कर आएगा । इस टापू पर एक शक्तिशाली जाति का आधिपत्य होगा और इससे अथाह सम्पत्ति प्राप्त होगी । भारत अत्यधिक शक्तिशाली बनकर उभरेगा । विश्व में उसका सम्मान बढ़ता चला जायेगा । भारत से एक ऐसा व्यक्तित्व उभरेगा जो सारे संसार को शान्ति का पाठ पढ़ाएगा । विश्वयुद्ध सन् १९८० से १९८८ के बीच होगा । विश्वयुद्ध प्रारम्भ कराने में चीन का दम्भ प्रमुख कारण बनेगा । सारी पृथ्वी, विशेषकर शहरी क्षेत्र में सन् १९८० तक भयंकर पर्यावरण प्रदूषण से ग्रस्त हो जायेगा । नई-नई बीमारियां फैलेंगी, जो डॉक्टरों की भी समझ में नहीं आयेंगी । धीरे-धीरे लोगों में यान्त्रिक सभ्यता के प्रति घृणा उभरेगी और बढ़ेगी । यूरोपीय जातियों का झुकाव भारत वर्ष की ओर बढ़ेगा तथा वे आध्यात्मिक जीवन में विशेष रुचि लेंगे ।

३. प्रो० हरार

भविष्य वक्ताओं में प्रो० हरार अनन्यतम हैं । इस धार्मिक इजरायली नागरिक को यूरोप-अफ्रीका में देवदूत की संज्ञा प्राप्त है । अरब के प्रधान शाह मुहम्मद की यात्राओं की तैयारियां पूरी हो जाने पर भी तीन-तीन बार, वे यात्रा न कर सकेंगे, ऐसी भविष्यवाणियां उनके समय में प्रो० हरार ने कीं । हर बार शाह ने अपनी ओर से हर सम्भव कोशिश की वे यात्रा करें ही । पर पहली बार घोड़े से गिर पड़ने पर शाह के पैरों में खराबी आ जाने के कारण, दूसरी बार मौसम की खराबी के कारण विमान न उड़ पाने के कारण और तीसरी बार पड़ौसी देश द्वारा सहसा हमला कर देने के कारण शाह मुहम्मद को यात्राऐं रोकनी पड़ीं । इस प्रकार हर बार प्रो० हरार की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई । इससे प्रभावित होकर शाह मुहम्मद ने प्रो० हरार को व्यक्तिगत रूप से बुलवाया और उन्हें अपना मुख्य मांगलिक सलाहकार बना लिया ।

सबसे बड़ी बात यह है कि प्रो० हरार तिथिवार भविष्यवाणियां करते हैं भारत-पाक युद्ध की तारीख उनने लगभग २ वर्ष पूर्व ठीक-ठीक बता दी थी । बंगला देश के अभ्युदय की जब उन्होंने भविष्यवाणी की उस समय कोई इसकी कल्पना तक नहीं कर पाता था ।

प्रो० हरार ने भविष्य के बारे में जो कथन प्रकाशित किए है, उनमें से कुछ हैं—

१९८० तक लंका, रूस, फ्रांस, भारतवर्ष आदि में अप्रत्याशित रूप से सरकारें बदलेंगी । १९८१ में साइबेरिया या मंगोलिया के प्रश्न को लेकर रूस-चीन में भयंकर भिड़न्त होगी । इस युद्ध में अमेरिका रूस की मदद करेगा । १९८३ तक तिब्बत पूर्णरूपेण स्वतन्त्र हो जाएगा । १९८० में सारे संसार में तनातनी बढ़ेगी और १९८२ से पहले विश्वयुद्ध शुरू हो जायेगा । इस युद्ध के दौरान भारत एक अग्रणी नेता के रूप में उभरेगा । इजरायल और भारत परस्पर घनिष्ठ मित्र होंगे । सन् १९८० से २००० तक का समय भारतवर्ष के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ तथा उन्नतिदायक है । १९८५ तक भारतवर्ष अनेक वैज्ञानिक शस्त्रों का निर्माण करेगा और एक प्रचण्ड शक्ति बनकर उभरेगा । भारत में एक ऐसा व्यक्ति पैदा हो गया है, जो कि भविष्य में सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करेगा ।

प्रो० हरार के अनुसार सन् २००० तक राजनैतिक परिवर्तन होंगे । ब्रिटेन, श्रीलंका, रूस और भारतवर्ष में अप्रत्याशित रूप से सरकार बदलेंगी इजरायल और अरब के समानान्तर अक्षांश पर होने के कारण भारतवर्ष की स्थिति ठीक वैसी ही होगी । मित्र जैसे दिखाई देने वाले पड़ौसी देश या तो आक्रमण करेंगे या आक्रमण के समय मौन रहेंगे । अधिकांश प्रतिपक्ष का समर्थन करेंगे । इसके बाद दुनियां का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में होगा, जिनकी उनसे पहले तक लोगों ने कल्पना भी न की होगी । यह लोग वीर होने के साथ-साथ धर्मनिष्ठ भी होंगे ।

४. पीटर हरकौस

हालैण्ड वासी पीटर हरकौस को बीसवीं शताब्दी का महानतम भविष्यवक्ता कहा जाता है क्योंकि उसकी सभी भविष्यवाणियां समय पर सही सिद्ध होती रही हैं । उसकी दूसरी विशेषता यह है कि वह किसी भी समय किसी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति के बारे में भविष्य कथन करने में सक्षम हैं । विश्व भर के चिकित्सक, वैज्ञानिक तथा मस्तिष्क विशेषज्ञ अब तक पीटर हरकौस पर परीक्षण प्रयोग कर चुके हैं— यह जानने के लिए कि वह कौन-सी विलक्षणता है, जिसने इस व्यक्ति को इस रूप में समर्थ बना रखा है ।

हरकौस अपने सामने आए किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसके सम्पूर्ण अतीत और अनागत को जान लेता है। इतना ही नहीं, यदि किसी भी व्यक्ति के पहने हुए कपड़े या इस्तेमाल की हुई किसी वस्तु को उसके हाथ में दे दिया जाय, तब भी वह तत्काल उस व्यक्ति के भूत भविष्यत् को स्पष्टता से बता सकता है ।

अमेरिका तथा यूरोप के हजारों-लाखों व्यक्ति अब तक हरकौस से सम्पर्क कर लाभान्वित हो चुके हैं और हो रहे हैं ।

इन्हीं महानतम अन्तर्दृष्टा पीटर हरकौस ने विश्व के भविष्य से सम्बन्धित ए भविष्यवाणियां की हैं जो ध्यान देने योग्य हैं —

१९८० के बाद और १९८५ से पहले तीसरा विश्वयुद्ध अवश्यम्भावी है । इस विश्वयुद्ध के समय तक जापान और भारत एक विशेष शक्ति बनकर उभरेंगे । इस युद्ध में चीन के विरुद्ध अमरीका और रूस दोनों साथ-साथ लड़ेंगे । महायुद्ध १९९९ तक समाप्त हो जायेगा । युद्ध तथा गृहयुद्ध के कारण चीन की जनसंख्या १९८७ तक एक चौथाई के आस-पास रह जायेगी और पाकिस्तान समाप्तप्रायः हो जायेगा । भारत का उदय वृहत्तर भारत के रूप में होगा । वहां से आध्यात्मिकता की एक प्रचण्ड लहर उठेगी । यह लहर सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रभाव डालेगी । लोग भारत से उठने वाली इस आध्यात्मिक धारा से अभिभूत होकर उसी दिशा में बढ़ेंगे और तब सुखी, सम्पन्न, एकात्म, विश्व-समाज का उदय तथा विकास होगा । प्रत्येक मनुष्य में देवत्व का उदय होगा और धरती पर स्वर्ग बन उठेगा।

५. नोस्ट्राडेमस

यूरोप के विश्वविख्यात भविष्य-वक्ता दृष्टा नोस्ट्राडेमस ने फ्रांस में हुई भयंकर हिंसक क्रान्ति की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी १५०३ ई० में फ्रांस में ही जन्मे नोस्ट्राडेमस को ख्याति उस समय मिली जब फ्रांस के विषय में की गई इनकी भविष्यवाणी बताए समय एवं स्वरूप के अनुसार अक्षरशः सही-सही उतरी । घटनाओं के पूर्वाभास शक्ति सम्पन्न होने का प्रमाण उस समय मिला तथा और भी पुष्ट हुआ जब नोस्ट्राडेमस रास्ते से जाते हुए एक ईसाई साधु के चरणों में झुक पड़ा । साथ के मित्र के पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि वह साधु पांच वर्ष बाद पोप बनेगा । यह समय सन् १५८० का था । नोस्ट्राडेमस द्वारा बताए गये समय १५८५ को साधु सर्व सम्मति से फ्रांस का पोप नियुक्त किया गया। इससे नोस्ट्राडेमस की ख्याति और भी बढ़ गई । फ्रांस में वे अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न व्यक्ति के रूप में माने जाने लगे ।

नोस्ट्राडेमस की ४००० भविष्यवाणियों का संकलन चार पुस्तकों में प्रकाशित है । कविता की शैली होने के कारण इनका नाम दिया गया है 'शतियां' प्रत्येक शतियां में १०० भविष्यवाणियां हैं । पन्द्रहवीं सदी से लेकर अब तक की अधिकांश बातें अपने समयानुसार सही उतरी हैं । नेपोलियन के विषय में नोस्ट्राडेमस ने लिखा है— कि "इटली के निकट सामान्य परिवार में जन्मा एक बालक विश्व का सबसे बड़ा तानाशाह सम्राट बनेगा । अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए वह अमानवीय प्रयत्न करेगा ।" इसी क्रम में आगे वर्णन है कि उसके कुकृत्यों के कारण उसी के साथी विश्वासघात करेंगे, पराजित होने पर उसे निर्वासित कर एक द्वीप में बन्दी के रूप में रखा जायेगा वह स्थान उसके जीवन का उत्तरार्ध होना चाहिए। सभी जानते हैं कि नेपोलियन अपने ही मित्रों के विश्वासघात के कारण पकड़ा गया तथा सेण्ट हेलेना द्वीप में बन्दी रहा । वहीं उसकी मृत्यु हो गई ।

स्पेन में सन् १९३६—३७ में हुए आन्तरिक गृह युद्ध के विषय में नोस्ट्राडेमस ने भविष्यवाणी की थी । "फ्रैंकों नामक व्यक्ति स्पेन में जन-समूह एकत्रित करेगा । आन्तरिक क्रान्ति होगी । इस गृह युद्ध के फलस्वरूप फ्रैंकों को निष्कासित किया जायेगा । उसे खाड़ी में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी ।" इतिहासवेत्ता जानते हैं कि चार शती पूर्व की गई नोस्ट्राडेमस की भविष्यवाणी किस प्रकार सही घटित हुई । फ्रैंकों अपनी ही जन्मभूमि स्पेन में प्रवेश नहीं कर पाया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हिटलर का एक निरंकुश शासक के रूप में उदय होने का उल्लेख भी शतियां में है । ''राइन के निकट आस्ट्रिया के पर्वतों में सामान्य परिवार में एक व्यक्ति जन्म लेगा जो पौलेण्ड और हंगरी की रक्षा तो करेगा पर हिंसक क्रान्ति का आश्रय लेने से उसका भविष्य भी अनिश्चित होगा ।'' हिटलर का अभ्युदय और पराभव का इतिहास प्रसिद्ध है । जो नोस्ट्राडेमस की भविष्यवाणी के अनुसार सही सिद्ध हुआ । द्वितीय महायुद्ध के विषय में नोस्ट्राडेमस ने कहा था—''आग्नेयास्त्रों एवं महाविनाशक बमों के प्रहार से बन्दरगाह के निकट दो नगर युद्ध के अभिशाप सिद्ध होंगे । हिरोशिमा, नागासाकी पर अमेरिका द्वारा गिराये गये परमाणु बमों से हुई क्षति ऐतिहासिक घटना के रूप में जानी जाती है ।

बीसवीं सदी में सही घटित हुई नोस्ट्राडेमस की भविष्यवाणियों में प्रमुख-इंग्लैण्ड के राजा एडवर्ड अष्टम का सिंहासन त्याग तथा उसके स्थान पर एक अप्रत्याशित व्यक्ति का सिंहासनारूढ़ होना । एडवर्ड अष्टम ने श्रीमती सिम्प्सन से विवाह करने की इच्छा प्रकट करना एक नैतिक अपराध माना । बाध्य होकर एडवर्ड को इंग्लैण्ड छोड़ना पड़ा । अन्य प्रमुख भविष्यवाणियों में पाकिस्तान का आन्तरिक गृह युद्ध के फलस्वरूप दो भागों में विभक्त होना अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक विग्रह पैदा होना जैसी बातें देखी जा रही हैं । पाकिस्तान, ईरान, बंगाल देश में पनपता हुआ आंन्तरिक संघर्ष इन राष्ट्रों के लिए एक बड़ा संकट ध्वंस और सृजन की सुस्पष्ट सम्भावना बनी हुई है ।

बीसवीं सदी की विभीषिकाओं में जिस चमत्कारी शोध का उल्लेख नोस्ट्राडेमस करते हैं, उसका उल्लेख एक जर्मनी से प्रकाशित बहुचर्चित पुस्तक में मिलता है । पुस्तक का नाम है— दी फ्यूचर ऑफ ह्यूमिनिटी । इसमें नोस्ट्राडेमस की कुछ भविष्यवाणियों का उल्लेख किया गया है । जीवन के अन्तिम दिनों कुछ व्यक्ति नोस्ट्राडेमस से मिलने गये । उन्होंने कहा— भविष्य की कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख कीजिए जो महत्त्वपूर्ण हों । पहले तो वे सहमत नहीं हुए, पर अधिक आग्रह करने पर उन्होंने कहा— कि बीसवीं सदी में यह विकसित बुद्धि स्वयं मानव जाति के लिए अभिशाप सिद्ध होगी । भौतिक प्रयास प्रकृति सन्तुलन एवं मानवी कृत्य को श्रेष्ठ मार्ग की ओर मोड़ पाने में असमर्थ होंगे । इन परिस्थितियों में एक प्रचण्ड शक्ति का प्रादुर्भाव होगा उसका जन्म तो बीसवीं सदी के आरम्भ में ही हो जाना चाहिए । पर एशिया सम्भवतः भारत के उत्तराखण्ड में मानव जाति के उज्ज्वल निर्धारण के कार्यक्रमों में एवं क्रियान्वयन में निरत होना चाहिए । उसके अन्य मानवता वादी कार्यक्रमों में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य होगा चेतना की सत्ता को वैज्ञानिक प्रयोगशाला में सिद्ध करना । इस बौद्धिक एवं विचारात्मक प्रयास के समक्ष विश्व के मूर्धन्य एवं वैज्ञानिक भी नतमस्तक होंगे । समस्त भौतिक शक्तियां उसकी आध्यात्मिक शक्ति के समक्षनत होंगी । नोस्ट्राडेमस ने रोमांचित होकर कहा कि ''मुझे तो नवयुग के आगमन के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं । एशिया के उत्तराखण्ड से संस्कृति की एक धारा प्रचण्ड वेग से आ रही है जो समस्त मानव जाति को नव-जीवन देगी ।'' दुनियां को भावी महाविनाश से बचा सकने में यह शक्ति समर्थ होगी ।

२१ वीं सदी वनाम उज्ज्वल भविष्य

नोस्ट्राडेमस की पुस्तक, ''सेन्चुरीज'' का विश्व भर के ५० से अधिक विद्वानों ने गहराई से अध्ययन किया है । इनमें से एक आक्सफोर्ड की १८ वर्षीय छात्रा ऐरिका ने उनकी हस्तलिखित पुस्तक को उक्त पुस्तकालय से ढूंढ़ निकाला । इन अध्ययन कर्ताओं का कहना है कि उसमें जो कुछ भी लिखा है, वह सब या तो घटित हो चुका है अथवा आने वाले निकट भविष्य में घटित होने वाला है । उनके अनुसार नोस्ट्राडेमस ने सतयुग के आगमन से पूर्व एक तीसरी विध्वंसक महाशक्ति ''एण्टीक्राइस्ट'' का उल्लेख किया है, जिसे कलियुग की असुरता का चरमोत्कर्ष कहा जा सकता है । इन दिनों विश्व इसी अवधि से गुजर रहा है । यह सन्धिकाल सन् १९९९ तक चलेगा । इस अवधि में एक नई आध्यात्मिक चेतना का उदय अनुशासनों, मान्यताओं एवं वैज्ञानिक निर्धारणों को समन्वित कर, संहार की सम्भावनाओं को निरस्त करेगा और नए युग का श्री गणेश होगा, जिसे उन्होंने ''एज आफ ट्रुथ'' का नाम दिया ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नोस्ट्राडेमस ने सांस्कृति दृष्टि से सम्पन्न भारतवर्ष के एक महाशक्ति के रूप में उभरने की बात अपनी भविष्यवाणियों में लिखी है व कहा है कि तीन ओर से सागर से घिरे, धर्म प्रधान, सबसे पुरातन संस्कृति वाले एक महाद्वीप से वह विचारधारा निस्रत होगी, जो विश्व को विनाश के मार्ग से हटाकर विकास के पथ पर ले जायेगी । सभी मनीषी इन भविष्यवाणियों में भारत वर्ष के एक विश्वनेता के रूप में उभरने की झलक देखते हैं और कहते हैं कि भावी समय की विचारक्रान्ति ही नवयुग की आधारशिला रखेगी ।

बीसवीं सदी की जिन विभीषिकाओं का उल्लेख नोस्ट्राडेमस ने पौने पांच सौ वर्ष पूर्व किया है । उनको घटित होते प्रत्यक्ष देखा जा रहा है ।

६. जान सैवेज

फ्लोरिडा (अमेरिका) की प्रसिद्ध अन्तर्दृष्टि सम्पन्न, महिला जान सैवेज ने अब तक जितनी भी भविष्यवाणियां की हैं, उनमें से ९९ प्रतिशत सही सिद्ध हुई हैं । श्रीमती जान सैवेज ने एक भारतीय योगी से दीक्षा ग्रहण की है और योगाभ्यास द्वारा अपनी अर्न्तदृष्टि का विकास किया है । उन्होंने अगले दिनों की सम्भावनाओं के सम्बन्ध में लिखा है १९८१ की शताब्दी विश्व इतिहास में व्यापक उथल-पुथल और भयंकर परिवर्तनों के लिए लम्बे समय तक याद की जाती रहेगी । यह क्रम १९८० से प्रारम्भ होगा जब अमेरिका की नहर पनामा तथा जापान के अधिकांश समुद्री भाग प्रबल भूकम्प के कारण पृथ्वी की गोद में समा जायेंगे । आज रूस और अरब मित्र राष्ट्रों की तरह दिखाई देते हैं किन्तु धीरे-धीरे उनमें खाई बढ़ेगी, उग्र विवाद होंगे । (उस समय तक तो विवाद की स्थिति नहीं थी, किन्तु इस समय तक निश्चित ही दोनों देशों के बीच सन्देहजनक परिस्थितियां जन्म ले चुकी हैं) और युद्ध हो जायेगा । १९८५ के लगभग अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के अत्यधिक उग्र होने का सम्भावना है और एक बार विश्वयुद्ध के बादल घुमड़ जायेंगे ।

७. एण्डरसन

१९१० में अमेरिका के अवाबा नगर में जन्मे एण्डरसन की ९७ प्रतिशत भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध होती रही हैं । एक-एक दो-दो वर्ष आगे की हुई उसकी भविष्यवाणियों को लोगों ने सैकड़ों बार सत्य होते देखा है । एण्डरसन को मुख्य ख्याति उनके अतुलित शारीरिक पराक्रम और व्यायाम सम्बन्धी अद्‌भुत प्रदर्शनों के कारण मिली, परन्तु उनकी भविष्यवाणियों ने उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का प्रसिद्ध व्यक्ति बनाया । उनकी सत्य सिद्ध होने वाली भविष्यवाणियों के कारण न केवल अमेरिका के वरन् दूसरे देशों के व्यापारी, उद्योगपति, फिल्म कलाकार, नेता आदि भी उससे भविष्य सम्बन्धी प्रश्न पूछकर काम करते थे ।

भविष्य दर्शन या अज्ञात दर्शन की यह क्षमता उनमें बचपन से ही उत्पन्न होने लगी थी । जब आठ वर्ष के थे तो एक दिन वह अपने घर की बैठक में खेल रहे थे । उन दिनों पहला विश्व युद्ध प्रारम्भ हो चुका था । एण्डरसन का भाई नेल्सन कनाडा की सेना में कप्तान हो गया था । उसकी फोटो बैठक में लगी हुई थी । अचानक एण्डरसन को न जाने क्या सूझा कि वह खेलते-खेलते अपनी मां के पास गया और मां का हाथ पकड़कर बैठक में ले गया और बोला, ''मां ! देखो! भैया के चेहरे पर बन्दूक की गोली लगी है और वह जमीन पर गिरकर मर चुके हैं ।'

मां ने डांटा, ''चल मूर्ख ! ऐसी बुरी बात नहीं कहते। पर एण्डरसन फिर भी वही बात दोहराता रहा । मां ने डांट-फटकार कर किसी तरह चुप कराया, किन्तु इस घटना के दो-तीन दिन बाद ही कनाडा से तार आया कि १ नवम्बर, १९७८ को गोली लगने से नेल्सन की मृत्यु हो गई । यह समाचार पढ़ते ही परिवार शोक-सागर में डूब गया और आश्चर्य भी हुआ कि एण्डरसन को इस घटना का पूर्वाभास किस तरह हो गया था ।

जब दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था तो एण्डरसन ने घोषणा की कि इस युद्ध में रूस और अमेरिका एक साथ मिलकर लड़ेंगे पर आगे दोनों की शत्रुता हो जायेगी । एण्डरसन ने जिस समय भविष्यवाणी की उस समय अमेरिका और रूस एक दूसरे के अभिन्न मित्र थे और मित्र राष्ट्र दोनों के संयुक्त शत्रु । इसलिए तब किसी ने भी एण्डरसन की इस बात पर विश्वास नहीं किया लेकिन उस समय सभी लोग विस्मित रह गये जब मित्र राष्ट्रों की सेनाओं से रूस और अमेरिका दोनों साथ-साथ मिलकर लड़े ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

राष्ट्रपति रूजवेल्ट के दिवंगत हो जाने तथा एक अमरीका सेनापति के राष्ट्रपति बनने की उनकी भविष्यवाणियां भी सही सिद्ध हुईं । रूजवेल्ट की शीघ्र ही मृत्यु होने की भविष्यवाणी उन्होंने इस प्रकार आकस्मिक की थी कि तब वे पूर्ण तरह से स्वस्थ थे । उन पर विश्वास करने वालों ने सहज ही पूछा, क्या उनकी हत्या की जायेगी ? तो एण्डरसन ने कहा नहीं वे स्वास्थ्य खराब होने के कारण दिवंगत होंगे । कुछ दिनों बाद रूजवेल्ट सचमुच बीमार पड़े, साधारण सी बीमारी के झटके से ही वह चल बसे । एक सेनापति के अमेरिका का राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी भी उस समय सही सिद्ध हुई जब जनरल आइजनहावर जो मित्र देशों की सेना में अमेरिका के सेनापति थे बाद में राष्ट्रपति बने । इसी प्रकार उन्होंने भारत स्वतन्त्र होने की भी भविष्यवाणी की जो सही निकली ।

युवावस्था बीतते-बीतते तक देश विदेश में उनकी बहुत ख्याति फैल गई । मई सन् १९४५ में एक दिन वे अपने आप अमेरिकी समाचार पत्र वाकर काउण्ट्री मैसैजर के सम्पादक के पास गये और बोले— ८ अगस्त को एक ऐसी घटना घटेगी, जिसमें जापान के साथ चल रहे युद्ध की स्थिति एकदम बदल जायेगी और १८ अगस्त तक युद्ध विराम की घोषणा भी कर दी जायेगी । सम्पादक ने यह घटना नोट कर ली पर तब उन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ । किन्तु पहले एण्डरसन की कई भविष्यवाणियां सही सिद्ध हो चुकी थीं उन्होंने इसकी भी परीक्षा करने के लिए अपने पास रख लिया । ८ अगस्त ही वह क्रूर दिन था, जब हिरोशिमा पर बम गिराया गया और उसके फलस्वरूप एक लाख से भी अधिक व्यक्ति मारे गये । इस बज्रपात से जापान बुरी तरह लड़खड़ा गया । उसने आत्म समर्पण कर दिया और उसी के साथ १८ अगस्त को युद्ध विराम की घोषणा भी कर दी गयी ।

इसके बाद उन्होंने नीग्रोनेता मार्टिन लूथरकिंग, राबर्ट कैनेडी की हत्या की भविष्यवाणियां कीं जो शत प्रतिशत समय और घटनाओं के साथ सही निकलीं । मार्टिन लूथर किंग की हत्या के लिए तो उन्होंने वारेन स्मिथ नामक एक प्रेस रिपोर्टर को २ अप्रेल को ही लिखकर पत्र दे दिया था । उस पत्र में यद्यपि उसने नाम नहीं लिखा पर नीग्रोनेता का स्पष्ट अर्थ मार्टिन लूथर किंग से ही था । इसी प्रकार उन्होंने जब दुबारा फिर कहा कि एक और नीग्रो नेता की हत्या होगी, तब तो लोगों ने उसे बिल्कुल ही निराधार बताया किन्तु २२ जुलाई, १९६९ को जब स्व० मार्टिन लूथर किंग के भाई रेवरेड विलियम किंग का शव एक तालाब में तैरता पाया गया, तब लोगों को सच्चाई का पता चला ।

एण्डरसन का कथन है कि आगामी समय संसार के लिए महाविनाश कारी सिद्ध होगा । एशिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश (चीन) उत्पात शुरू करेगा और उसका सामना करने के लिए अमरीका तथा रूस को एक होना पड़ेगा । अरब राष्ट्रों सहित, मुस्लिम बहुल राज्यों में आपसी क्रान्तियां और भीषण रक्तपात होंगे । युद्ध और हिंसा का यह ताण्डव सन् १९८० के बाद निरन्तर बढ़ता ही जायेगा । इस बीच सभी देशों के राजनैतिक प्रधानों का अस्तित्व खतरे में रहेगा और उनका प्रभुत्व घटता हुआ चला जायेगा ।''

विनाश के साथ एण्डरसन ने ऐसे उज्ज्वल भविष्य का संकेत दिया है, जिसमें सब लोग सुख-शान्ति से रहेंगे । वर्तमान भेद-भाव समाप्त होंगे और सब लोग एक परिवार की तरह एक शासन तन्त्र एवं समाज व्यवस्था के अन्तर्गत निर्वाह करेंगे ।

अगले दिनों की विनाशकारी सम्भावनाऐं

पिछले पृष्ठों पर कुछ विश्वविख्यात दिव्य दृष्टाओं के भविष्य कथन प्रकाशित किए गये हैं । उनके अतिरिक्त भी कई लोग ऐसे हैं जो भले ही उतने चर्चित न हों, परन्तु शत प्रतिशत सही भविष्यवाणियां करते रहे हैं । नार्वे के प्रसिद्ध योगी आनन्दाचार्य, आर्थर, चाल्स क्लार्क, जोन एडन तथा ह्यूम टेलर भी अपने सही भविष्य कथनों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो चुके हैं ।

योगी आनन्दाचार्य तो भारत में ही जन्मे हैं । सन् १८८२ में बंगाल में उनका जन्म हुआ । तब उनका नाम सुरेन्द्रनाथ वाराल था । उनका कथन है कि तृतीय विश्व युद्ध होगा तो अवश्य, पर वह १९९५ से पहले ही

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होगा। इस बीच भारत विश्व की छठी महाशक्ति के रूप में उदित होकर सर्वाधिक शक्तिशाली सत्ता के रूप में प्रकट हो जायेगा । जिस तरह महाभारत युद्ध चरम वैज्ञानिक प्रगति के बाद भारतवर्ष में लड़ा गया, उसमें विश्व के सभी देश सम्मिलित हुए और आग्नेयास्त्रों से लेकर अलौकिक दिव्य अस्त्रों का प्रयोग हुआ था, उसी प्रकार अगले तृतीय विश्व युद्ध में भी भयंकर धातुओं वाले अणु आयुधों का प्रहार तो होगा ही, ऐसे अस्त्र-शस्त्रों का भी प्रयोग होगा जिनकी मारक क्षमता की विलक्षणता की तुलना धरती का कोई भी परमाणु बम तक न कर सकेगा पर प्रहार के बाद उनका चिन्ह तक पृथ्वी में ढूंढ़ने पर भी न मिलेगा । इस युद्ध में स्त्रियां भी भाग लेंगी ।

योगी आनन्दाचार्य को यह अद्भुत क्षमता योग साधना के परिणामस्वरूप ही प्राप्त हुई है कलकत्ता विश्वविद्यालय से भारतीय दर्शन-वैदिक विषयों का गहन अध्ययन करने के कारण उनके जीवन में आध्यात्मिकता के प्रति तीव्र जिज्ञासाऐं तभी जाग्रत हो गई थीं । कुछ दिन तक कलकत्ता विश्व विद्यालय में ही वे शिक्षक का कार्य करते रहे । इस बीच उन्होंने अनुभव किया कि भौतिक आकांक्षाओं में मानवीय सुख शान्ति की सम्भावनाऐं यदि हैं तो उनकी सीमा पहाड़ में राई के बराबर है । जो वस्तुऐं व्यक्ति, समाज और विश्व को शान्त और सुखी बना सकती हैं उनका सम्बन्ध व्यक्ति के रूप में उसकी सनातन शक्ति से है । जब तक विश्व नियामक का स्वरूप, आत्मा का दर्शन लोक-परलोक ज्ञान और प्राणी मात्र में फैली चेतना का विज्ञान समाज में नहीं आता तब तक व्यक्ति अपूर्ण है और अपूर्णता की स्थिति में न तो मनुष्य सुखी रहा और न ही आगे रह पायेगा ।

इसलिए पूर्णयोग की प्राप्ति एक स्थिर लक्ष्य और सच्ची शक्ति देने वाली है, यह विचार कर उन्होंने योगाभ्यास प्रारम्भ किया । ग्रह-गणित के अध्ययन से लेकर समाधि अवस्था तक पहुंचने की यौगिक प्रणाली का गहन अभ्यास उन्होंने किया । पीछे उन्होंने अपना नाम आनन्दाचार्य रख लिया था जन्म उनका भारत में हुआ था, साधना उन्होंने नार्वे में की । पर भारतीय दर्शन का प्रचार सारे विश्व में किया । न्यूयार्क और लन्दन से प्रकाशित उनकी पुस्तकों 'ब्रह्म दर्शन' तत्व जीवनम् तथा भारतीय दर्शन का ख्यातिपूर्ण कार्यक्रम' में उन्होंने भारतीय समाज की वर्तमान अवस्था और उसके भावी निर्माण का जो स्वरूप कई शताब्दियों पूर्व लिखा था वह आज स्पष्ट सत्य होता दिखाई दे रहा है ।

आनन्दाचार्य पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १९१० में ही बता दिया था कि चार वर्ष बाद लोग विश्व युद्ध (प्रथम) के लिए तैयार रहें । जुलाई की आखिरी तारीखों में किसी बहुत ही सामान्य घटना को लेकर युद्ध प्रारम्भ होगा, पर पीछे विश्व के लिए जिन देशों में परस्पर तनातनी चल रही है वे सब युद्ध में कूद जायेंगे । युद्ध नवम्बर १९१८ तक चलेगा और जब युद्ध समाप्त हो जायेगा तो सारे विश्व की राजनीति एक स्थान पर केन्द्रित हो जायेगी । एक ऐसा संस्थान बनेगा जिसमें विश्व के अधिकांश देश सम्मिलित होंगे पर उसमें सच्चाई और ईमानदारी के स्थान पर कूटनीति का स्थान अधिक होने से लोग उसके निर्णय बहुत कम स्वीकार किया करेंगे ।

तब इस भविष्यवाणी पर लोगों का कोई विशेष ध्यान नहीं गया, १९१४ की बात है कि सर्विया के एक नवयुवक ने वहां के आर्कड्यूक फर्डिनेंड को गोली मार दी । आर्कड्यूक आस्ट्रिया राज्य का उत्तराधिकारी था । यह छोटी-सी घटना घटी तब भी संसार के किसी भी व्यक्ति ने विश्व युद्ध जैसी कल्पना नहीं की । पर उसके एक दिन बाद आस्ट्रिया ने हंगरी पर आक्रमण कर दिया। फिर क्या था दोनों ओर से मित्र देश कूदते गये और जर्मनी, तुर्की, बुल्गेरिया, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस, बेल्जियम, जापान, इटली, अमेरिका आदि सभी देश कूद गये । विश्वयुद्ध हुआ । सोम, मांस और बर्दूनकी लड़ाई इतनी भयंकर हुई कि युद्ध के प्रति लोगों में घृणा के तीव्र भाव पैदा हो गये । उसी का परिणाम हुआ कि राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशन्स) की स्थापना हुई । इस तरह दोनों भविष्यवाणियां अक्षरशः सिद्ध हुईं ।

अब नार्वे और इंग्लैण्ड वालों का ध्यान आनन्दाचार्य की ओर गया उनसे ब्रिटेन का एक पत्रकार मण्डल विशेष रूप से मिला और भावी विश्व पर अपने विचार देने का आग्रह किया । तब उन्होंने कहा— अति शीघ्र ही एक और विश्वयुद्ध के लिए तैयार रहिए । इस द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी का हिटलर और रूस के स्टालिन जिस भयंकरता से कूदेंगे युद्ध का अन्त उससे भी भयंकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

होगा । अगस्त १९४५ में संसार में पहली बार एक भयंकर धमाका होगा लाखों लोग एक क्षण में मारे जायेंगे तभी जाकर शान्ति समझौता होगा ।

इस भविष्यवाणी के कुछ वर्षों बाद ही सितम्बर १९३९ में पोलैण्ड पर जर्मनी ने आक्रमण कर दिया और इस युद्ध के बाद उसकी ज्वालाऐं भड़कती ही गईं और फिर एक विश्वयुद्ध भड़का । इसी युद्ध में ८ अगस्त, १९४५ की प्रातः ही हिरोशिमा नागासाकी (जापान) में अणुबम गिराए गये जिससे एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों की मौत हुई ।

मुसोलिनी की मृत्यु, आइजन हावर और ख्रुश्चेव के प्रभुत्व की भी उनकी भविष्यवाणियां सच निकलीं और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उन्होंने जिन परिस्थितियों का वर्णन किया था वह भी सच निकलीं । इसके बाद अष्टग्रही योग आया । उस समय उन्होंने जो कुछ कहा वह लेख की प्रारम्भिक पंक्तियों में कहा गया है पर उसका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग वह है जो उन्होंने न्यूयार्क में कहा और बाद में उसे न्यूयार्क, पेरिस, बेल्जिम, इंग्लैण्ड और नार्वे आदि कई देशों में छापा गया ।

उन्होंने बताया एक ओर दुनियां भर के वैज्ञानिक भौतिक विज्ञान में यहां तक प्रगति करेंगे कि चन्द्रमा की यात्रा से लेकर मंगल तक की यात्रा सम्भव होगी । परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबन्ध के राजनैतिक प्रयत्न तीव्र होंगे पर छोटे-छोटे देश परमाणु बम बनाने के लिए प्रयत्नशील होंगे । कम से कम समय में दूर-दूर तक मार करने वाली मशीनों और बमों का निर्माण होगा दुनियां के दूसरे देशों में बसे भारतीयों पर संकट आयेंगे । कई देशों से तो उन्हें अपमानित होकर निकलना पड़ेगा । लंका और भारत में महिलाऐं शासन प्रभुत्व में आयेंगी । इंग्लैण्ड की राजनीति में जल्दी-जल्दी परिवर्तन होंगे । केनेडी और लूथरकिंग की हत्या की उनकी भविष्यवाणियां सत्य हुईं।

भविष्यवाणी का महत्त्वपूर्ण अंश है'' तृतीय विश्वयुद्ध से २४ वर्ष के पहले और २४ वर्ष बाद भारतवर्ष में तीव्र हलचल का समय होगा । पहले २४ वर्ष महाभारत के बाद में विकृत परिस्थितियों की संन्या के रूप में होंगे और अन्तिम २४ वर्ष नवयुग के सूर्योदय के ऊषाकाल के होंगे । मैं तो अपनी जन्मभूमि को स्वतन्त्र हुआ देखने के थोड़े ही दिन पीछे अपना यह शरीर छोड़ दूंगा, पर दूसरे लोग देखेंगे कि स्वाधीनता के बाद भारतवर्ष में कैसे विलक्षण परिवर्तन होंगे ।''

''धर्म मेरे देश में संगठित संस्था'' का रूप लेकर पनपेगा । जन्म तो उसका स्वतन्त्रता के साथ ही हो जायेगा पर २४ वर्ष बाद १९७१ में वह एक शक्तिशाली संगठन के रूप में सारे भारतवर्ष में प्रकाश में आ जायेगा । एक ओर विश्व राजनीति में व्यापक हलचलें होती रहेंगी और उनमें भारतीय राजनीति प्रमुख रूप से क्रियाशील होती दिखाई देगी । वह संगठन जो धार्मिक उद्धार के रूप में प्रकट होगा इस बीच विश्व कल्याण का नया नक्शा तैयार करेगा । इस संगठन का स्वामी संचालक कोई गृहस्थ व्यक्ति होगा और अब तक दुनियां के सबसे बड़े विचारक के रूप में ख्याति प्राप्त करेगा । वह व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्वों से लेकर-संसार के सब देश शान्तिपूर्वक कैसे रहें, उसकी एक व्यवस्थित आचार संहिता तैयार करेगा । उसके जीवन भर के संग्रहीत विचारों को यदि एक पुस्तक में लिखा जाए तो वह पुस्तक १०० पौण्ड वजन से अधिक होगी । उस समय तो लोग आश्चर्य करेंगे कि आज के भौतिक युग में इन विचारों का क्या उपयोग ? पर संसार पर व्यापक रूप से पड़ने वाली आपत्तियां और १९९५ के बाद होने वाला विश्वयुद्ध संसार में छाई वर्तमान भौतिकता की दशा को मोड़ देगा, तब ये आचार संहिताऐं,वेद, बाइविल एंजील की तरह पूजी जायेंगी । आज लोगों में जो तत्परता भौतिक प्रगति की दिशा में दिखाई दे रही है तब लोग लोक-परलोक आत्मा-परमात्मा, मोक्ष और सद्गति जैसे आध्यात्मिक तत्वों के प्रति वैसी ही तत्परता दिखाऐंगे । महाभारत के पूर्व भारत की जो स्थिति थी उससे आगे का विकास कार्य इस तृतीय विश्व युद्ध के बाद होगा और उसका सन्तुलन यह नया धार्मिक संगठन करेगा ।

चार्ल्स क्लार्क

चार्ल्स क्लार्क की भविष्यवाणियां अन्य भविष्य वक्ताओं से भिन्न कोटि की हैं । स्वयं एक वैज्ञानिक और साहित्यकार होने के कारण उनकी भविष्य सम्बन्धी पूर्वोक्तियां विज्ञान और मनुष्य के अन्तःकरण को छूने वाली भावनाओं को साथ-साथ लेकर हुई हैं । उनकी भविष्यवाणियां इतनी स्पष्ट और सत्य सिद्ध हुईं कि पीछे वैज्ञानिकों ने उनके भविष्य कथन को आधार मानकर प्रयोग भी करने प्रारम्भ कर दिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९५९ की शाम एक दावत में उन्होंने अपने मित्रों को बताया– ''१९६९ की ३० जून पृथ्वी के इतिहास का सर्वाधिक रोमांचक दिन होगा स्पष्ट देख रहा हूं कि कोई पृथ्वीवासी उस दिन चन्द्रमा पर उतर जायेगा ।''

उन्होंने जिस दिन यह भविष्यवाणी की थी तब तक अन्तर्ग्रही प्रक्षेपण की एक भी घटना नहीं घटित हुई थीं। इससे ठीक दो वर्ष पीछे १९६१ में पहली बार रूसी वैज्ञानिकों ने यूरी गागरिन को अन्तरिक्ष में भेजकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा कराई थी । इसलिए मित्रों को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ । पर सारे संसार ने देखा कि पिछले वर्ष उनकी दस वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी कुल २० दिन के अन्तर से सिद्ध हो गई । १९६९ में अमेरिका का एक अपोलो केप-कैनेडी में ही जलकर नष्ट नहीं हो गया होता तो सम्भवतः यह २० दिन का भी अन्तर न पड़ता ।

चार्ल्स क्लार्क छोटे थे तभी से उनमें अतीन्द्रिय ज्ञान और पूर्वाभास की विचित्र क्षमता उत्पन्न हो गई थी । वह कहा करते थे—मनुष्य शरीर नहीं एक शक्ति है । उस शक्ति में प्रकाश है, तेजस्विता है, और वे सब क्षमताऐं है, जिनकी मनुष्य भगवान में अपेक्षा किया करता है । मानव-अन्तःकरण की वही शक्ति अभी सोई पड़ी है पर मैं यह देख रहा हूं– 'एशिया के किसी देश (भारत वर्ष की ओर संकेत कर) से कुछ ही दिनों में एक प्रचण्ड विचार क्रान्ति उठने वाली है । वह १९७१ तक उस देश और उसके १० वर्ष बाद सारे विश्व में इस तरह गूंज जायेगी कि मानव का सोया अन्तःकरण जागने को विवश हो जाएगा । आज जिन पंक्तियों की ओर लोगों का ध्यान भी नहीं जाता तब वह शक्तियां जन-जन की शोध और अनुभूति का विषय बन जायेंगी । विज्ञान एक नई मोड़ लेगा जिसमें आध्यात्मिक तत्वों की प्रचुरता होगी। सारे ब्रह्माण्ड को एक नए सूत्र में बांधने का आधार यह आध्यात्मिक सिद्धियां और सामर्थ्ये ही होगी।'

लोगों ने तर्क प्रस्तुत किया कि जीवन का अस्तित्व तो केवल पृथ्वी में है । वैज्ञानिक भी कहते हैं कि अन्य ग्रह जीव रहित है । इस पर उन्होंने कहा–''मैंने १९४५ में कहा था कि सारी पृथ्वी समुद्र को तारों से पाटने की जरूरत नहीं । यदि कोई कृत्रिम उपग्रह १७००० मील की गति से अन्तरिक्ष में उड़ा दिया जाय और पृथ्वी की परिक्रमा करता रहे तो वह बेतार के तार वाले सन्देश पहुंचाने की आवश्यकता को पूरी कर देगा । तब लोगों को मेरी बात हंसी जैसे लगी । किन्तु १९६२ में वेल टेलीफोन कम्पनी ने 'टेलस्टार' नामक उपग्रह छोड़कर मेरे कथन की सत्यता सिद्ध कर दी । अब तो अलीवर्ड और टालराम जैसे भू-संचार उपग्रह भी बन गये हैं, जो एक स्थान से पृथ्वी के दूसरे स्थान तक १ मिनिट में १७ अखबारी पेजों के बराबर सन्देश भेज सकते है ।

एक बार मैंने कहा था—मनुष्य छोटे से छोटे अणु (अणु) से इतनी शक्ति उत्पन्न करने में सक्षम हो जायेगा जो कुछ ही मिनट में संसार को नष्ट भ्रष्ट कर डालने को क्षमता से ओत, प्रोत होगी । तब लोगों ने मेरी बात का विश्वास नहीं किया पर जब नागासाकी और हिरोशिमा काण्ड हो गये तब लोग मेरी बात मान गये। यह भविष्यवाणियां मैंने जिस दृढ़ता और आत्मविश्वास के साथ की है उसी आत्म विश्वास के साथ मैं आज भी कहता हूं कि यह सृष्टि कर्ता रहित नहीं । एक रहस्यमय चेतना शक्ति है जिसके आगे मानवीय बुद्धि, मानवीय योग्यतायें नगण्य हैं । विराट् सृष्टि का निर्माण उसी की इच्छा से होता है । यदि उसने पृथ्वी पर जीवन उत्पन्न किया है तो कोई कारण नहीं कि अन्य ग्रह भी अपवाद न हों यदि अन्य ग्रहों में जीवन हुआ तो इनमें रत्ती भर सन्देह नहीं कि वे सब पास-पास आयें और अपनी समस्याओं के समाधान के सार्वभौमिक नियम तय करें ।

श्री क्लार्क की भविष्यवाणियों में भी भारतवर्ष की उन्नति की वह बातें आती हैं, जो श्रीमती डिक्सन, कीरो, एण्डरसन आदि ने कही हैं । उनका कथन है कि—भारतवर्ष ने अतीत में अपनी आध्यात्मिक उन्नति के रूप में ही नहीं एक महान् वैज्ञानिक देश के रूप में भी गौरव अर्जित किया है । मैंने सुना है कि यहां कई तरह के आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र और अनेक गगनगामी विमानों के भी अनुसन्धान हो चुके हैं । आगे भी यह देश इस तरह की उन्नति करेगा और इस दौड़ में दुनियां के तमाम देशों को पछाड़ देगा । पर मूलतः इसकी ख्याति और विश्व प्रतिष्ठा का आधार यहां का धर्म और दर्शन होगा । विश्व धर्म के रूप में भारतीय धर्म और संस्कृति को ही स्थान मिलेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनकी भारतवर्ष की स्वतन्त्रता, चीन और पाकिस्तान की मैत्री, रूस और चीन की युद्ध सम्बन्धी भविष्यवाणियां नितान्त सत्य हो गई हैं । थोड़े दिनों का कभी हेर फेर हुआ हो वह अलग बात है । फिर यदि सन् २००० से पहले सारी पृथ्वी में एक अनोखी विचार क्रान्ति और युग परिवर्तन जैसी उनकी यह भविष्यवाणी सत्य हो तो इसमें सन्देह नहीं है, क्योंकि आज की परिस्थितियों का झुकाव भी कुछ वैसा ही है ।

चार्ल्स क्लार्क ने १९८० से सन् २००० तक विश्व परिस्थितियों के सम्बन्ध में जो भविष्य कथन किए हैं, वे पूर्वोक्त भविष्यवाणियों से ही मिलती-जुलती है । अर्थात् इस अवधि में उन्होंने विश्व युद्ध की सम्भावना तो सुनिश्चित बताई ही है, इस बीच भयंकर बीमारियां फैलने सूखा पड़ने और अनावृष्टि होने जैसे सम्भावनायें भी व्यक्त की हैं ।

महात्मा रामचन्द्र

महात्मा रामचन्द्र भी अपनी सफल भविष्य वाणियों के लिए विख्यात् हैं । राष्ट्रधर्म के जनवरी १९७१ अंक में उनका एक लेख प्रकाशित हुआ था । इस लेख में बिहार प्रदेश के व्यापक रूप से जलमग्न और क्षतिग्रस्त होने की भी भविष्यवाणी की थी । उस समय तक ऐसा कोई लक्षण नहीं था जिससे तत्काल यह मान लिया जाता कि वस्तुतः ऐसा होगा । किन्तु बाद में सचमुच दो समुद्री तूफान आए और पूर्वी पाकिस्तान के २० लाख लोगों को नष्ट करके रख गये । आज भी वहां की प्रलय विभीषिका समाप्त नहीं हुई । जब होगी तब पूर्वी पाकिस्तान प्रलय के बाद वाले शान्त और सुसंस्कृत सभ्य समाज वाले देश के रूप में दिखाई देगा । बिहार के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणी की सत्यता भी स्पष्ट देखी जा सकती है । यह पंक्तियां जिस समय लिखी जा रही हैं अधिकांश बिहार बाढ़ की चपेट में फंसा हुआ है जबकि उसकी भविष्य-वाणी १०-११ महीने पहले ही कर दी थी। यह भविष्यवाणी शाहजहांपुर के एक सुप्रसिद्ध योगी और सन्त महात्मा रामचन्द्र ने की थी ।

''संसार में जब भी कोई देवदूत आया, अवतार हुआ तब-तब प्रकृति ने उनके निर्माण के पूर्व की अवस्था को ध्वंश करने में सहयोग अवश्यक दिया है । वह महासंघर्ष की भूमिका इसी शताब्दी के अन्त तक निश्चित रूप से घटित हो जानी चाहिए । परिवर्तन का समय आ गया है जो अब टल नहीं सकता । ईश्वरीय सत्ता मानवीय रूप में अपनी परम प्रिय 'स्वर्गादपि गरीयसी; धरती पर भारतवर्ष में जन्म ले चुकी है और अपना काम करने में लगी हुई है । जब उसकी तमाम योजनाऐं और क्रिया-कलाप सामने आवेंगे तब लोगों को पता चलेगा और पश्चाताप भी होगा कि भगवान राम, श्रीकृष्ण भगवान बुद्ध और परशुराम की तरह का अवतार हमारे समय में आया और हम उन्हें पहचान भी न सके, सहयोग देना तो दूर की बात रही ।

यह शब्द भी उन्हीं महात्मा रामचन्द्र के हैं जिनकी भविष्यवाणियों का इन पंक्तियों में उल्लेख किया जा रहा है । ये किसी प्रकार के यश लोकेषणा की कामना के बिना एक सच्चे योगी के समान आत्म-कल्याण और लोकमंगल में रत रहते हैं । यह भविष्यवाणी तो उनकी इस प्रेरणा का प्रतीक समझी जानी चाहिए कि जाग्रत आत्माऐं, यदि उनका विवेक साथ देता हो तो विद्यमान देवदूत को पहचानें और उसके नव निर्माण के महसंघर्ष में हनुमान, नल-नील, अंगद की तरह मुक्ति वाहिनी का सेनापतित्व करने के लिए आगे आए ।

कुछ शंकालु और आर्य समाजी जैसे तर्क वाले व्यक्तियों ने महात्मा रामचन्द्र से प्रश्न किया कि परमात्मा तो सर्वव्यापी सत्ता है, तत्व रूप में है वह अवतार कैसे ले सकता है ? इस पर उन्होंने समझाया— हर व्यक्ति में एक अचेतन तत्व काम करता है, उसे सांसारिक कार्य-कलाप के लिए मन भी मिला है । अचेतनमन (अतीन्द्रिय जगत का अधिष्ठाता) तन प्रत्यक्ष जगत का कारण है । मन से ही योजनाऐं बनती और फिर क्रियान्वित होती हैं । परमात्मा में 'मनस' शक्ति नहीं होती है पर मनुष्य जाति के उद्बोधन और मार्गदर्शन के लिए तो यह शक्ति ही आवश्यक है । इसलिए अदृश्य चेतना के रूप में काम करने वाली सत्ता को मन में परिपूर्ण होने के लिए किसी शरीर में व्यक्त होना पड़ता है । शरीर में होने पर भी उसकी शरीर में कोई आसक्ति नहीं होती अर्थात्—काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि मनोविकार उसका कुछ नहीं कर पाते । वह भूत भविष्य सब कुछ जानने वाला होने पर भी अन्य मनुष्य की तरह ही काम करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाला होता है किन्तु उसका अतीन्द्रिय ज्ञान और बल एवं मनोबल इतना प्रचण्ड और प्रखर होता है कि संसार का कोई भी दुस्तर से दुस्तर कार्य उसके लिए असम्भव, अशक्य नहीं होता। ऐसी ही दिव्य सत्ता भारतवर्ष में अपना काम कर रही है, बहुत शीघ्र उसे लोग पहचानेंगे।

अपनी इस भविष्यवाणी में ही महात्मा रामचन्द्र ने जहां इस दिव्य सत्ता की प्रचण्ड सामर्थ्य का दिग्दर्शन करा दिया वहां लोगों की पहचान के लिए मानो संकेत भी दे दिया है। उनकी भविष्यवाणी का यह अंश बार-बार पढ़ने और मनन करने योग्य है। सूर्य की गर्मी पिछले कुछ समय से कम हो रही है। वैज्ञानिक हैरान हैं कि सूर्य के इस ह्रास का कारण क्या है ? वे इस कारण चिन्तित हैं कि सूर्य की ऊर्जा व गर्मी समाप्त हो जाने से सारे भौतिक साधन होने पर भी मनुष्य जाति का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है और उससे बचने का उपाय उनकी समझ में नहीं आ रहा है।

सूर्य की शक्ति के इस असाधारण ह्रास पर प्रकाश डालते हुए योगाचार्य लिखते हैं कि यह ह्रास मनुष्य के रूप में इस महान ईश्वरीय सत्ता द्वारा उसका उपयोग हैं। प्रकृति जो परिवर्तन करती है वह सूर्य के परिवर्तन से ही प्रारम्भ होता है, क्योंकि दृश्य जगत की आत्मा सूर्य ही है। तीव्र ह्रास का तात्पर्य यह है कि जो परिवर्तन होना है वह जल्दी ही हो जाय। इस शक्ति का उपयोग भगवान द्वारा नियुक्त यह अवतार ही कर रहा है। जैसे ही कार्य पूरा हुआ और प्रकृति ने अपनी नई व्यवस्था का क्रम जमा लिया, सूर्य फिर से अपनी पूर्व प्रखरता पर आ जायेगा (अखण्ड ज्योति के पाठकों को यह स्मरण दिलाना समयोचित ही होगा कि गायत्री उपासना का सीधा सम्बन्ध सूर्य से है) अखण्ड ज्योति में कई बार छप चुका है कि गायत्री सिद्ध हुए आत्मादर्शी पुरुष और सूर्य में कोई अन्तर नहीं होता दोनों तदाकार हो जाते हैं। अतएव यह निर्विवाद सत्य है कि यह नया अवतार महान् सावित्री शक्ति-गायत्री तत्व और सूर्य शक्ति का सिद्ध होगा। यह स्पष्ट संकेत है नए निर्माण की पहचान का।

प्रसिद्ध भविष्य वक्ता श्री रामचन्द्र इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि आज की बुद्धिवाद और नास्तिकता धर्म और अध्यात्म के प्रति उत्कृष्ट आस्था में बदल जायेंगे। उसके लिए जो ईश्वरीय सत्ता उदित हुई और काम कर रही है वह अहंभाव से पूर्णतया मुक्त होगी। शरीर में होने पर भी वह नितान्त भावनाओं से बनी एक प्रकार की भाव प्रतिमा होगी। अर्थात् वह मानवी मन न होकर ईश्वरीय मन होगी, जो सैकड़ों लोगों की सहायता करती हुई युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया को पूरा कर रही है।

यह भविष्यवाणी केवल कौतूहल के लिए नही है अतीन्द्रिय दृष्टा की प्रेरणा को समझा जाना चाहिए और यदि मन किसी ईश्वरीय दिव्य सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करता हो तो उसकी सहायता के लिए साहस भी प्रदर्शित किया ही जाना चाहिए।

जौन एडम

एक प्रामाणिक भविष्य वक्ता के रूप में जर्मनी के जौन एडम को विश्व ख्याति मिली है। वहां की पत्रिका 'एक्सप्रेस रिन्यू' के जनवरी ७८ के अंक में प्रकाशित उनकी भविष्यवाणी उल्लेखनीय है। कुछ व्यक्ति उनसे संसार का भविष्य जानने के लिए पहुंचे। पूछने पर उनने निराशापूर्ण शब्दों में कहा कि "इस सम्बन्ध में हमसे न पूछा जाय तो ही अच्छा होगा।" अधिक आग्रह करने पर उन्होंने उत्तर दिया कि "इन दिनों प्रकृति के अन्तराल में मैं असामान्य परिवर्तनों को देख रहा हूं। ध्यान की गहराईयों में पहुंचने पर मुझे स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि प्रकृति ध्वंस की सरञ्जाम जुटाने में लगी है। ध्वंसात्मक तत्व इन दिनों सूक्ष्म जगत में बढ़ते जा रहे हैं। मेरी अन्तःचेतना में संसार के नष्ट होने के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं।" यह पूछे जाने पर कि दुर्भाग्यशाली समय कौन-सा होगा ? कुछ देर के लिए शान्त होकर वे आंखें बन्द करके बैठ गये। थोड़े समय पश्चात् उन्होंने कहा 'हमें जो संकेत मिल रहे हैं, उनके अनुसार यह समय फरवरी और अगस्त ८२ के मध्य होना चाहिए। विनाश का भावी स्वरूप स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि मानवी दुर्बुद्धि एवं उसके कुकृत्यों के कारण प्रकृति अत्यन्त कुद्ध है। फलस्वरूप सन् ८१ के फरवरी और अगस्त के मध्य विश्व का अधिकांश भाग भयंकर भूकम्प झंझावात और तूफान तथा विस्फोट से नष्ट हो सकता है। इसी समय दो प्रभावशाली राष्ट्रों के मध्य युद्ध छिड़ जाने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण तृतीय विश्व युद्ध की पूरी-पूरी सम्भावना है । ये राष्ट्र कम्युनिस्ट होंगे । तृतीय विश्व युद्ध एवं प्रकृति प्रकोपों की दोहरी मार से जिस हृदय विदारक दृश्य की कल्पना हमारी चेतना में उठती है, उसे देखकर हमारा हृदय कांप उठता है।''

'जौन एडम' ने अब तक जितनी भी भविष्यवाणियां कीं, उनमें अधिकांशतः सही उतरी हैं। जिस समय भारत और पाकिस्तान की सेनाऐं बंगला देश के युद्ध में एक-दूसरे के सामने डटी नर-संहार कर रही थीं, युद्ध विराम के एक दिन पूर्व उन्होंने अपने मित्र से कहा कि कल पाकिस्तानी सेना आत्म-समर्पण कर देगी । भारत विजई होगा । बंगला देश पाकिस्तान के हाथों से निकलकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरेगा । दूसरे दिन जब पाकिस्तान सेना ने आत्म-समर्पण किया तो 'एडम' का मित्र आश्चर्यचकित रह गया । उनकी अतीन्द्रिय-सामर्थ्य से उसने जन-मानस को अवगत कराया तब से लेकर अब तक संसार के विभिन्न देशों के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की हैं, वे अधिकांशतः सही उतरी हैं । अरब-इजरायल युद्ध में अरब राष्ट्रों की गठजोड़ के बावजूद भी इजराइल की अप्रत्याशित विजय की घोषणा, भारत में ऐतिहासिक राजनैतिक परिवर्तन, पाकिस्तानी शासन में भुट्टो की तानाशाही का दुखद अन्त जैसी भविष्यवाणियां समय एवं तत्वों के अनुसार सही पाई गईं हैं ।

यह पूछे जाने पर कि क्या भावी विनाश से बचने का कोई मार्ग है ? उन्होंने कहा कि चेतना की सामर्थ्य प्रकृति की तुलना में जबरदस्त है । प्रकृति के नियमों से मुक्त चेतना उसमें आवश्यक परिवर्तन कर सकने में समर्थ होती है । ऐसा ही प्रचण्ड आत्म-बल सम्पन्न महामानव जन-कोलाहल से दूर भावी संकटों से मानव-जाति की सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील है । वह प्रकृति में आवश्यक हेर-फेर कर सकने में समर्थ है । उसकी आध्यात्मिक शक्ति सभी भौतिक शक्तियों से अधिक है । प्रकृति के अनुकूल एवं जनमानस को सही मार्ग पर चलाने में वह अपनी शक्ति का नियोजन कर रहा है । सूर्य की प्रकाश किरणों के माध्यम से वह अपनी सूक्ष्म शक्ति द्वारा भावनाशील व्यक्तियों को अभिप्रेरित करने में संलग्न है । उसमें अद्भुत संगठन बल है, जिसके कारण उसके संरक्षण में संसार को दिशा देने के लिए एक दृढ़ संगठन-शक्ति उभर रही है। उसके लाखों अनुयाई प्रचण्ड एवं विवेक युद्ध विचारों द्वारा जन-मानस में लोक-मंगल की भावना उत्पन्न कर रहे हैं । उसके तर्क युक्त एवं विज्ञान सम्मत आध्यात्मिक विचारों के समक्ष नास्तिक वर्ग भी नत-मस्तक होगा । उस महामानव के जीवन में २४ अक्षर का विशेष महत्त्व होगा । वह २४ महाशक्तियों का अधिष्ठाता होगा । जीवन के उत्तरार्द्ध में वह अपनी शक्ति का विकेन्द्रीकरण विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से करेगा । इस समय उस दिव्य मानव को भारत के उत्तराखण्ड में कहीं किसी पहाड़ी तीर्थस्थान पर विश्वव्यापी परिवर्तनों के कार्यों में तल्लीन होना चाहिए । उसके मानवतावादी विचार एवं कार्यक्रम को अपनाने से ही भावी संकटों को रोका जा सकता है वहां एक ऐसी संस्कृति का बीजारोपण हो रहा है, जो सम्प्रदाय एवं मजहब की दीवारों को तोड़ती हुई एक मानवतावादी धर्म की स्थापना करेगी ।

भविष्य में क्या होगा? उसकी सत्यता तो समय बतायेगा पर वस्तुतः अब जो स्थितियां हैं वे अपने आप में एक बहुत बुरी खबर है, मानवीय जीवन में व्याप्त आस्था संकट नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन, राजनैतिक दर्प, जनसंख्या की बाढ़, खाद्य संकट, मुद्रास्फीति और परमाणु अणुओं का अन्धाधुन्ध निर्माण ही इस बुरी खबर को सत्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है ।

यह वर्तमान परिस्थितियों का पर्यवेक्षण हुआ, किन्तु जिन्हें ईश्वरीय सत्ता और अवतार चेतना पर विश्वास है, उन्हें भरोसा रखना चाहिए कि यह सब कुछ बदलेगा और आने वाला समय ऐसा होगा जिसे अनुपम और अभूतपूर्व कहा जा सके ।

सतयुग एक भवितव्यता

विश्व इन दिनों विषम परिस्थितियों से होकर गुजर रहा है । समूची मानव जाति प्राकृतिक एवं स्व निर्मित विभीषकाओं के बीच जी रही है । प्रायः इस सम्बन्ध में चर्चाऐं होती ही रहती हैं कि आने वाला समय कैसा होगा? अपने-अपने क्षेत्र के मूर्धन्य कहे जाने वाले वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, ज्योतिर्विद, मौसम-विज्ञानी, भविष्यवक्ता अपने-अपने ढंग से नए युग का अनुमान लगाने और भविष्यवाणी करने में संलग्न हैं । आगामी युग के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध में आमतौर से सभी ने एक ही बात कही है कि सम्प्रति जो भी अवांछनीयताऐं औरविपरीतताएँविनाशकारी घटा की तरह चारों ओर छाईं दीख रही हैं, वे अपना अस्तित्व अगले ही दिनों तूफान में फंसे तिनके की भांति गंवाती नजर आऐंगी और एक ऐसे नये युग का सूत्रपात होता दीख पड़ेगा, जिसमें सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य होगा । पर नए शिशु के आगमन से पूर्व की प्रसव-पीड़ा तो सबको झेलनी ही पड़ेगी ।

इसी आशय का मन्तव्य प्रकट करती हुई मूर्धन्य **मनीषी रूथ मोण्टगोमरी** ने अपनी पुस्तक **''स्ट्रेन्जर्स एमोन्ग अस''** में अपने अदृश्य सहायकों के माध्यम से लिखा है कि आने वाले समय में जल्द ही एक विश्व राष्ट्र और विश्वसरकार की मान्यता मूर्तिमान होती दृष्टिगोचर होगी । वर्तमान के पृथक्-पृथक् देश तब अलग-अलग राज्यों जैसी भूमिका सम्पन्न करेंगे और सब मिलकर विश्व राष्ट्र व विश्व सरकार के अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित करेंगे। हर जगह एक ही प्रकार का सिक्का चलेगा । सम्पर्क सूत्र आज जैसा न रहेगा । एक सर्वथा नवीन प्रकार की विधा इस क्षेत्र में प्रयुक्त होती देखी जा सकेगी । वायुयान का स्थान स्पेसशीप ले लेंगे । जीवाश्म ईंधन की उपयोगी और महत्त्वपूर्ण स्थानापन्न सौर और चुम्बकीय ऊर्जा साबित होगी ।

इक्कीसवीं सदी में स्वर्ग का अवतरण धरती पर होते हुए लोग देख और अनुभव कर सकेंगे । सभी मिलजुल कर काम करेंगे और विभिन्न प्रकार की आपदाओं से क्षतिग्रस्त धरती को पूर्व स्थिति में लाने, उसे उर्वर बनाने एवं अपना विकास करने में सहयोग व सहकार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते देखे जायेंगे । ध्रुवों के स्थानान्तरण से जो अप्रत्याशित क्षति होगी, उसकी पूर्ति करने में २१वीं सदी की नई मानव जाति महत्त्वपूर्ण योगदान करेगी ।

वे लिखती हैं, कि तब युद्ध की भावना समाप्त हो जायेगी । मानसिक शक्ति का तब इतना विकास हो जायेगा कि लोग विश्व के किसी कोने में रह कर भी परस्पर विचार-विनिमय करने में समर्थ होंगे । इसी प्रक्रिया से वे दूसरे के चिन्तन को भी प्रभावित कर सकेंगे । शस्त्रास्त्रों की विभीषिका पूर्णतः समाप्त हो जायेगी । लोग इन विनाशकारी हथियारों को लगभग भूल जायेंगे, जिससे उन्हें अधिक समय तक सुख और शान्ति की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी । तब निश्चय ही स्वर्णयुग की वापसी देखी जा सकेगी जिसमें सभी लोग ईश्वरीय नियमों व अनुशासनों का परिपालन करते दिखाई पड़ेंगे । प्रायः संघर्ष की स्थिति तब पैदा होती है, जब लोगों के विचारों में भिन्नता हो, किन्तु जब सभी की विचारधारा समान हो, सब शासन, अनुशासन और पूजा-आराधना के सम्बन्ध में एकमत हों, तो फूट-फसाद का प्रश्न ही नहीं उठता । आने वाले समय में ऐसा ही होने वाला है । तब लोगों का रुझान आध्यात्मिकता की ओर इस कदर बढ़ेगा कि बाह्य और भौतिक प्रगति की तुलना में आन्तरिक व आध्यात्मिक उन्नति को अधिक महत्त्व देंगे।

वर्तमान समय में यह परिवर्तन धीमी गति से होगा इसमें तेजी शताब्दी के अन्त में ध्रुवों में स्थानान्तरण के उपरान्त तभी आयेगी जब इसके कारण बड़े पैमाने पर धन-जन की हानि होगी । लोग इसके दुष्परिणाम को अपनी आंखों से देखेंगे और चिन्तन में परिवर्तन व परिष्कार की आवश्यकता अनुभव करेंगे । इस विभीषिका के पश्चात् ही परिवर्तन गति पकड़ेगा और कुछ समय पश्चात् मानवी चिन्तन, चरित्र व व्यवहार में इतना आमूल-चूल अन्तर दृष्टिगोचर होगा, जिसे देख कर लोग यही अनुभव करेंगे कि कोइ नई मानव प्रजाति का उद्भव हो गया है । वस्तुतः इसी के बाद लोग सही चिन्तन की शक्ति को पहचान सकेंगे ।

अपनी इसी कृति में उनने आगे कहा है कि इन्हीं दिनों एक देवदूत का आगमन होगा, जो हेलेन किलर के उस भविष्य कथन की सार्थकता को समझाने की कोशिश करेगा, जिसमें कहा गया है कि मनुष्य की सफलता और खुशियां स्वयं उसी के अन्दर छिपी हुई हैं । उसे बाहर ढूंढ़ने का प्रयास करना मृगतृष्णा में भटकने के समान होगा । वह देवदूत स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत कर लोगों को इसकी प्रेरणा देगा । वह बतायेगा कि मनुष्य के अन्दर इतनी अपार सम्भावनाऐं छिपी पड़ी हैं, कि यदि उन्हें हस्तगत करने की विधा वह करतलगत कर ले, तो उसे वर्तमान अशान्ति और असन्तोष की दयनीय स्थिति में आगे जीना न पड़ेगा । इन सम्भावनाओं को मूर्तिमान करना किस भांति बन पड़ेगा ? इसी की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया वह संसार को समझाएगा और यह बतलाएगा कि इसी के परिपालन में मनुष्य-जाति का कल्याण है । उसके उज्ज्वल भविष्य की संरचना इससे विच्छिन्न होकर नहीं हो सकेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

यह सतयुग २१वीं सदी के बाद हजारों वर्षों तक बना रहेगा । लोग तब अद्भुत वैचारिक एवं भावनात्मक समानता का प्रदर्शन करेंगे । यह समानता आडम्बर मात्र न होगी, वरन् सभी के व्यावहारिक जीवन में समान रूप से क्रियाशील होती देखी जा सकेगी । यदि कोई बीमार पड़े तो अन्य लोग उसकी सेवा-सहायता सगे-सम्बन्धियों की तरह करते देखे जायेंगे। इसमें मानसिक शक्ति का भी उपयोग होगा । लोग आरोग्यवर्धक मानसिक ऊर्जा रोगी तक पहुंचाना अपना परम कर्त्तव्य मानेंगे और इस पुनीत कार्य को तब तक जारी रखेंगे, जब तक रोगग्रस्त पूर्णतः स्वस्थ न हो जाय। दुर्भावना का समूल नाश हो जायेगा, इसका स्थान सद्भावना ले लेगी । सब परमार्थ में स्वार्थ का अनुभव करेंगे । अशरीरधारी आत्माओं से सम्पर्क करना सम्भव हो जायेगा । इसी प्रकार सूक्ष्म सदात्माऐं सत्पुरुषों से सम्पर्क कर महत्त्वपूर्ण जानकारियां, प्रेरणा व प्रकाश देंगी, जिनसे लोग लाभ उठाते दिखाई पड़ेंगे ।

मुझे स्वर्णयुग स्पष्ट दिखाई दे रहा है

''मैं स्पष्ट देख रही हूं उत्तरी भारत का वह पवित्र स्थल, जहां एक प्रचण्ड पुरुषार्थी सन्त अपनी सतत् साधना में संलग्न रह कर ऐसे दिव्य आध्यात्मिक प्रवाह विकीर्ण कर रहे हैं, जो अगले दिनों समस्त संसार में युगान्तरकारी परिवर्तन लाने में समर्थ सिद्ध होंगे । उनके आध्यात्मिक विचार इतने क्रान्तिकारी होंगे कि उस चिनगारी के ज्वालमान में बदलने और देखते-देखते पूरी दुनिया में फैल जाने का दृश्य लोगों को आश्चर्य में डाले बिना न रहेगा । लोग उनकी सशक्त, प्रगतिशील और वर्तमान समस्याओं का सर्वमान्य हल सुझाने वाली विचारधारा को अपनाने में ही अपनी एवं सम्पूर्ण विश्व की भलाई समझेंगे । इस प्रकार विश्व धीरे-धीरे अध्यात्म की ओर झुकता चला जायेगा और पूर्णतः अध्यात्मवादी बन जायेगा, जो लम्बे काल तक लोगों को इस धरित्री में ही स्वर्ग की सुखद अनुभूति कराता रहेगा ।''

यह उद्गार हैं, न्यूजर्सी अमेरिका की मूर्धन्य भविष्यद्रष्टा फ्लोरेंस के अब से तीन दशक पूर्व देखे भविष्य को पुस्तकाकार रूप देते हुए 'गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा'' में वे लिखती हैं -''जब मैं ध्यान की अतल गहराई में उतरती हूं, तो मुझे हमेशा एक गौर वर्ण श्वेत केशों वाले दाढ़ी-मूंछ रहित ऐसे महापुरुष के दर्शन होते हैं, जिनका चेहरा दिव्य तेज से उद्भासित दिखाई पड़ता है। प्रतीत ऐसा होता है मानों सैकड़ों टिमटिमाते दीपकों के मध्य कोई अतिप्रकाशवान महासूर्य विद्यमान हो, जो अपनी आभा और ऊर्जा से न सिर्फ आस-पास के दीपकों को अनुप्राणित कर रहे हों, वरन् समस्त संसार में अपनी किरणें बिखेर कर उसे प्रकाशित करने में संलग्न हों । इस प्राणदाई प्रकाश से लोग उस ओर ऐसे खिंचते दिखाई पड़ रहे हैं, जैसे पतंगे दीपक के प्रकाश की ओर आकर्षित होते चले जाते हैं । इस प्रकाश-प्रेरणा से लोग स्वयं में एक असाधारण परिवर्तन अनुभव करेंगे, जिससे एक ऐसी महाक्रान्ति का उद्भव होगा, जिसे तत्कालीन लोग विचार-क्रान्ति के नाम से अभिहित करेंगे ।''

''इस क्रान्ति से भौतिकवादी मान्यताऐं बदलेंगी और बुद्धिजीवियों में ऐसी चिन्तन चेतना का विकास होगा, जिसे अध्यात्मवादी सोच कहने में किसी को कदाचित ही संकोच हो । इस नई सोच के उन्नयन से अध्यात्मवाद एक बार पुनः सम्पूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित होगा । तब सब एक धर्म मानव धर्म एक राष्ट्र विश्व राष्ट्र के पक्षधर होते दिखाई पड़ेंगे । पूरी दुनिया में उक्त सन्त की विचारधारा की धूम मच जायेगी । विभिन्न धर्मावलम्बी उन्हें अपने-अपने धर्म व जाति के मार्गदर्शक मानेंगे । मुसलमानों में उनकी प्रतिष्ठा पैगम्बर मुहम्मद के रूप में होगी । ईसाई लोग उन्हें प्रभु ईसु का ही दूसरा रूप मानेंगे, जबकि हिन्दुओं में वे भगवान के दशम अवतार के रूप में पूजित होंगे । उनकी शक्ति इतनी असाधारण और अद्भुत होगी कि जन-चेतना में नवीन प्रेरणा भरना और प्रकृति के बिगड़ते सन्तुलन को नियमित-नियन्त्रित करना उनके लिए सामान्य-सी बात होगी एवं देखते-देखते सम्पादित हो जायेगी। उनका बालसुलभ व्यवहार और धवल व्यक्तित्व लोगों को घसीटते हुए अपने निकट ऐसे इकट्ठा कर लेगा कि एक विशाल चतुरंगिणी सेना देखते-देखते गठित हो जायेगी तथा सृजन-सेनानियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती नजर आएगी ।''

इसके अतिरिक्त फ्लोरेंस ने अन्य अनेक भविष्यवाणियां की हैं, जिनमें मध्यपूर्व एशिया, यूरोप एवं अमेरिका के विविध देश सम्मिलित हैं । इनमें से अधिकांश सत्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध हो चुकी हैं, किन्तु अनेक अभी भी ऐसी हैं, जिनकी सत्यता प्रमाणित होनी बाकी है । हमें आशा करनी चाहिए कि आगामी समय के सम्बन्ध में उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी भी सही सिद्ध होकर रहेगी । इसी से सम्बन्धित उनने एक दूसरी पुस्तक लिखी है, जिसमें सन् २००० एवं इससे आगे आने वाले समय की चर्चा है। अपनी उक्त बेस्ट सेलर पुस्तक 'दि फाल ऑफ सेंसेशनल कल्चर'' में वे लिखती हैं–''सन् २००० के आस-पास प्राकृतिक विपदाओं का ऐसा क्रम चल पड़ेगा, जिसे देखते हुए यह कह सकना कठिन हो जायेगा कि यह सृष्टि सुरक्षित बची रह जायेगी, किन्तु बाद में लोगों की यह आशंका निर्मूल साबित होगी। वे देखेंगे कि इन्हीं विभीषिकाओं के बीच सृजन की सम्भावना भी छिपी हुई है, जो धीरे-धीरे पूर्व के अरुणोदय की तरह निकलती हुई कालक्रम में प्रचण्ड दिनमान का रूप धारण कर अपनी ऊष्मा से पूरी धरती को ओतप्रोत कर देगी। फिर न कहीं अराजकता दिखाई पड़ेगी, न अशान्ति वरन् सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा । गरीब-अमीर और ऊंच-नीच की भौतिकवादी दीवार ढह जायेगी तथा एकता-समतापरक अध्यात्मवादी दृष्टिकोण का विकास होगा । लोग परस्पर सौहार्द्रपूर्वक रह सकेंगे । उनमें एक ऐसी भावना पनपेगी, जो एक वृहत्तर परिवार को जन्म देगी, जिसमें रहते हुए लोग ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' एवं ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का साकर स्वरूप मूर्तिमान होते देख सकेंगे, किन्तु यह दिन देखने से पूर्व मनुष्य को प्रसव-पीड़ा की असह्य वेदना भी झेलनी पड़ेगी, उसी के उपरान्त उसके सौभाग्य-सूर्य का उदय होगा ।''

सन् २००० से पहले के कुछ दशक ऐसे ही सन्त्रासों एवं विक्षोभों से भरे होंगे । लोग एक-दूसरे की जान का ग्राहक बनते दिखाई पड़ेंगे । अराजकता अपनी चरमसीमा पर होगी । चहुं ओर ईर्ष्या-द्वेष का बोलबाला होगा । अशान्ति इस कदर बढ़ेगी, जिसकी तुलना जल से बाहर तड़पती मछली से की जा सके । मत्स्य-न्याय के जंगली कानून के अन्तर्गत लोग मरते-मारते नजर आएगे । नीतिमत्ता को ताक पर रख दिया जायेगा और 'जिसकी लाठी तिसकी भैंस' की अनीति बरतते किसी को संकोच न होगा । मनुष्य की दुर्बुद्धि से उपजा पर्यावरण-प्रदूषण इस संकट में आग में घी का काम करेगा व मनुष्य जाति को सामूहिक मरण के कगार पर ला खड़ा करेगा, किन्तु साथ-साथ चलने वाली निर्माण प्रक्रिया के अन्तर्गत उत्तरी भारत से उठने वाली आध्यात्मिक चेतना की लहर २१वीं सदी के प्रारम्भ में इतनी तीव्र व प्रबल हो उठेगी, कि एक समय में काली घटा से गहराते संकट देखते-देखते तूफान में पड़े तिनके की भांति अपना अस्तित्व गंवाते नजर आयेंगे । लोगों को एकता-समता का महत्त्व समझ में आने लगेगा तथा परस्पर भ्रातृभाव विकसित करने को उत्सुक प्रतीत होंगे। उस विचार-चेतना से मध्यम वर्ग सर्वाधिक प्रभावित होता दीख पड़ेगा किन्तु यह भी बात नहीं कि सम्पन्न वर्ग इससे अछूता रह जायेगा । धन के दुरुपयोग का दुष्परिणाम उसे स्पष्ट नजर आने लगेगा। तथाकथित बुद्धिजीवियों की तर्कबुद्धि विश्वासबुद्धि में परिणत हो जायेगी । उनमें श्रद्धा, आस्था और बुद्धि का सहज समन्वय भासने लगेगा। यह विचारधारा बुद्धिवादी नास्तिकों में भी यह विश्वास पैदा करने में समर्थ हो सकेगी कि धर्म और विज्ञान एक-दूसरे से पृथक् नहीं, वरन् एक दूसरे के पूरक हैं । गाड़ी के दो पहिए की तरह इनका साथ-साथ रहना ही मानवी प्रगति में सहायक सिद्ध हो सकता है, अन्यथा एकाकी प्रगति मानवी अवगति का कारण बन सकती है। उपयुक्त चिन्तनधारा से लोगों को यह समझते देर न लगेगी कि उच्च आध्यात्मिकता के आगे भौतिकता की चमक-दमक न सिर्फ फीकी है, वरन् चमकीले सांप की भांति आकर्षक लगते हुए भी घातक हैं । संत की यह विचारधारा उनके मत्स्यावतार की तरह बढ़ते शिष्य-समुदाय द्वारा विश्व के कोने-कोने तक में पहुंचायी जायेगी, और इक्कीसवीं सदी में उज्ज्वल भविष्य की संरचना करेगी।''

फ्लोरेंस ने कई ऐसी भविष्यवाणियां की हैं, जो सामयिक हैं और प्रासंगिक भी, अस्तु उनका उल्लेख करना अप्रांसगिक न होगा । उन्होंने अपने पुस्तकों में लिखा है कि सन् ८८–८९ के उपरान्त विश्व के अनेक हिस्से में ऐसे कितने ही भूकम्प आऐंगे, जिनमें जान-माल की व्यापक हानि होगी । द्रष्टव्य है कि इन्हीं दिनों उत्तराखण्ड क्षेत्र में इतना जबरदस्त भूचाल आया है, जिसमें हुई हानि का सही-सही अनुमान अब तक नहीं लगाया जा सका है । इससे पूर्व अगस्त ८८ में उत्तरी बिहार और नेपाल में आए भूकम्प में हजार से भी अधिक लोगों की जानें गईं । अक्टूबर १९९० में चीन में व फरवरी ९१ में पाकिस्तान में आई इस प्राकृतिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आपदा में पांच सौ के करीब मौतें हुईं सन् १९९४ में महाराष्ट्र के लातूर और उस्मानाबाद जिलों में इस विपदा ने जो विनाशलीला मचायी, वह वर्णनातीत है । इससे फ्लोरेंस की भविष्यवाणी की सच्चाई प्रमाणित होती है ।

उल्लेखनीय है कि फ्लोरेंस ने अपनी दोनों पुस्तकों में स्थान-स्थान पर उत्तर भारत के एक स्थल एवं ऐसे सन्त की चर्चा की है, जहां से व जिनके द्वारा आध्यात्मिक विचारक्रान्ति के सूत्रपात की बात कही गई है, किन्तु फ्लोरेंस ने दोनों में से किसी का भी नामोल्लेख नहीं किया है, परन्तु विज्ञ पाठकों को यह समझते कदाचित तनिक भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि प्रस्तुत पंक्तियों में उनका संकेत किस ओर है ?

भारत विशाल बनेगा

पन्द्रहवीं सदी की विख्यात भविष्यद्रष्टा **'मदर शिप्टन'** का जन्म इंग्लैण्ड में सन् १४८८ में हुआ था। यार्कशायर की एक गुफा में उसकी कब्र आज भी मौजूद है । कब्र पर अंग्रेजी की कुछ पंक्तियां खुदी हैं, जिनका भावार्थ है– ''यहां वह नारी चिरनिन्द्रा में पड़ी है जिसने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला; जिसकी अद्भुत अतीन्द्रिय सामर्थ्य की परीक्षा अनेकों बार की जा चुकी है; पर हर बार वह सत्य सिद्ध हुई ।''

शिप्टन ने जीवन में जो कुछ भी भविष्यवाणियां कीं वह सब गुफा के ऊपर अंकित है । वर्तमान संकटों के बारे में वहां जो उल्लेख है, उसके अनुसार ''इस सदी के अन्त तक संसार में भयंकर उथल-पुथल होगी । आबादी का एक बड़ा भाग आन्तरिक युद्धों से विनष्ट हो जायेगा । प्रकृति भी इन्हीं दिनों सर्वाधिक विक्षुब्ध होगी। मानवी दुष्कृत्यों के फलस्वरूप उत्पन्न अनेकों संकटों एवं प्रकृति विक्षोभों की दोहरी मार से उत्पन्न हृदय विदारक दृश्यों की कल्पना मात्र से मेरा हृदय कांप उठता है।''

मदर शिप्टन के अंकित भविष्य कथनों में सन् १६६६ का लन्दन का प्रसिद्ध अग्निकाण्ड तथा भयंकर प्लेग द्वारा हजारों व्यक्तियों की मृत्यु होना 'रायमेरी की हत्या । और 'ओलिवर क्रामवेल' द्वारा ब्रितानी गृह युद्ध का सूत्रपात अपने समय पर सही सिद्ध हो चुके हैं । कुछ भविष्यवाणियां अलंकारिक ढंग से की गई थीं जो इस प्रकार थीं ।

''याक नगर की ट्रिनिटी चर्च की मीनार पर एक औरत गाड़ी में बैठ कर जायेगी ।'' यह अटपटी बात उन दिनों समझ में न आ सकी । किन्तु एक समय इंग्लैण्ड में भयंकर बाढ़ आईं जिसके कारण चर्च की मीनार और निकटवर्ती एक पुल ध्वस्त हो गये । पुल के निर्माण में मीनार में लगी डण्टे प्रयुक्त हुई । पुल बन जाने के बाद उसके उद्घाटन के लिए गाड़ी में बैठ कर एक प्रख्यात महिला आईं उसके बाद उस पर से नित्य हजारों व्यक्ति गुजरने लगे ।

''बिना घोड़े की गाड़ियां दौड़ेंगी और दुर्घटनाऐं संसार को कराहों से भर देंगी ।'' सर्वविदित है कि पन्द्रहवीं सदी तक गाड़ियों को खींचने के लिए एक मात्र साधन घोड़े थे । उस समय तक बिना घोड़े के चलने वाले वाहन प्रकाश में नहीं आए थे । शिप्टन का भविष्य उद्घोष पेट्रोल, तेल, डीजल आदि से चलने वाले वाहनों के आविष्कार की ओर संकेत था । मोटर, कार, स्कूटर, रेल जैसे वाहनों की उन दिनों कल्पना भी नहीं थी ।

इसी तरह की अन्य रोचक किन्तु विचित्र भविष्यवाणियां मदर शिप्टन ने की थीं । ''हवा में मनुष्य दिखाई देंगे, सफेद में, काले में और हरे में ।'' यह हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर, रॉकेट के आविष्कार के कल्पना थी जो अब साकार हो चुकी है ।

''पलक झपकाने जितने समय में संसार भर में विचार एक छोर से दूसरे छोर तक तैरेंगे ।'' वायरलेस, रेडियो, टेलीविजन आदि के निर्माण की यह भविष्यवाणी थी जो इन दिनों सारी दुनियां पर छाए हुए हैं। इन माध्यमों से सेकण्डों में एक देश के विचार दूसरे देश तक पहुंच जाते हैं । ''मनुष्य पानी के अन्दर चलेंगे, सवारी करेंगे तथा उसमें विश्राम करेंगे । उन दिनों यह कल्पना भी नहीं थी कि पनडुब्बी जैसे सशक्त जलवाहन बन सकेंगे ।

उनकी भविष्यवाणियों में वर्तमान संकट की भी चर्चा है और आगामी समय का संकेत भी । उनके अनुसार बीसवीं सदी के अन्तिम दो दशकों में ऐसी भीषण और भयंकर अस्थिरता विश्व भर में दिखाई पड़ेगी कि एक बार यह आशंका होने लगेगी कि विश्व-विनाश सुनिश्चित है । इन्हीं दिनों प्रकृति-प्रकोप भी चरम सीमा पर होगा। महामारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप, बाढ़, अकाल, ज्वालामुखी विस्फोट सभी संसार के विभिन्न हिस्सों में इस कदर तबाही मचायेंगे कि लोग त्राहि-त्राहि कर उठेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसमें गृहयुद्ध, शीतयुद्ध, अन्तर्राष्ट्रीय विद्वेष, एक-दूसरे से आगे निकल जाने की आपाधापी कोढ़ में खाज की तरह साबित होंगे। वर्ग संघर्ष, सत्ता संघर्ष, धार्मिक उन्माद, वैयक्तिक संकीर्णता बढ़ोतरी पर होंगे, जिससे दुनिया के कई स्थानों में भीषण रक्तपात होगा । स्नेह-सौजन्य और मातृत्व की भावना का निरन्तर ह्रास दिखाई पड़ेगा । यह ह्रास वैयक्तिक स्तर से लेकर राष्ट्रों तक में इस कदर होगा कि प्रत्येक अपने से छोटे और कमजोर को दबाने-दबोचने से लेकर अपने में मिला लेने तक में कोई संकोच न करेगा । 'नैतिकता' बोलचाल का सैद्धान्तिक शब्द भर बन कर रह जायेगी । व्यवहार में तो सर्वत्र अनीति और अन्याय का ही बोलबाला होगा ।

उल्लेख में आगे कहा गया है कि प्रस्तुत विसंगतियों के बावजूद विषम स्थिति देर तक टिकी रह न सकेगी । एक ऐसी विचार चेतना का नवोदय घनघोर घटाटोप के बीच से उन्हीं दिनों होगा, जिससे सारी प्रतिकूलताऐं देखते-देखते तिरोहित हो जायेंगी और वातावरण कुछ ऐसा बनेगा, जिसे आने वाले स्वर्णयुग की आधारशिला कहा जा सके । फिर इसी नींव पर नवयुग की सुदृढ़ इमारत विनिर्मित होगी । यह इमारत इतनी मजबूत और विशाल होगी कि अपनी भव्यता के कारण सदियों तक स्मरण की जाती रहेगी । शिप्टन कहती हैं कि इस नव-निर्माण में भारत का योगदान अप्रतिम होगा । सच्चाई तो यह है कि इसकी पहली भूमिका वहीं बनेगी और सर्वप्रथम उसे ही गलाई-ढलाई से गुजरते हुए अपना कायाकल्प करना होगा । तत्पश्चात् यह प्रक्रिया सन्देश वाहकों और शान्तिदूतों के माध्यम से भारत के बाहर सम्पन्न होगी और देखते-देखते विश्व के कोने-कोने तक में अपना कलेवर-विस्तार करती चली जायेगी । परिवर्तन प्रक्रिया की सम्पूर्ण अवधि को शिप्टन ने दो सदी जितना बताया है । उनके अनुसार २१वीं शताब्दी में २०२५ तक बदलाव इतना स्पष्ट हो जायेगा कि वह व्यक्ति के चिंतन और आचरण में स्फुट झलकने लगेगा । सन् २०४० के आस-पास तक परिवर्तन समग्र और पूर्ण हो जायेगा । इसके उपरान्त विश्व एक ऐसे शान्त और सुस्थिर युग में प्रवेश करेगा, जिसे दिव्यता की दृष्टि से अध्यात्म युग और प्रखरता की दृष्टि से स्वर्णयुग कहा जा सके। इसकी अवधि उनने हजार वर्ष से भी अधिक बताई है। इसके बाद शिप्टन ने स्वर्णयुग में लोगों का चरित्र-चिन्तन, भौतिक सम्पन्नता, आध्यात्मिक उन्नति, अर्थव्यवस्था, संचार-सुविधा आदि का वर्णन किया है ।

आगामी समय का उल्लेख करती हुई वे कहती हैं कि तब अर्थव्यवस्था तो पूंजीवादी ही होगी, किन्तु उसका स्वरूप समाजवादी जैसा होगा । लोगों को अधिकाधिक उपार्जन करने का अधिकार तो होगा, पर सम्पत्ति का नियोजन समाज के हाथों में होगा । अधिक खाने और अनावश्यक व्यय करने की नीति अन्यायपूर्ण मानी जायेगी और वह किसी प्रकार बर्दाश्त नहीं की जायेगी । समान वितरण प्रणाली के अन्तर्गत सभी लोग सुविधाओं का बराबर-बराबर उपभोग करेंगे । किसी को दूसरे के हिस्से को दबाने और निगलने की छूट नहीं होगी । छूट होगी तो इतनी भर कि वे कम से कम साधनों का उपयोग करें और जीवन-निर्वाह की आवश्यकता पूर्ति के बाद शेष बचे साधनों का उपयोग समाज सेवा के लिए करें, किन्तु यह सब किसी बाह्य अथवा दण्ड द्वारा लागू नहीं होगा । आत्मानुशासन द्वारा इनका निर्वाह स्वतः होता रहेगा। जो इस आचार-संहिता की अवहेलना करेंगे, समाज में उनकी गणना अन्यायी, अत्याचारियों जैसी होगी । वे निम्न और क्षुद्र स्तर के असभ्य माने जायेंगे । ऐसे कुछ एक अपवादों को छोड़ दिया जाय, तो हर क्षेत्र में हर जगह विलक्षण समानता नजर आएगी । निजी विभूतियों और व्यक्तिगत प्रतिभाओं के कारण बौद्धिक और मानसिक स्तर की असमानता भले ही दीख पड़े, पर भौतिक भिन्नता किसी प्रकार जीवित न रह सकेगी । यदि जिन्दा रही तो असुर बन कर ही सांस ले सकेगी ।

पदार्थ विज्ञान का विकास तब चरमोत्कर्ष पर होगा। जिन क्षेत्रों में आज सोचते तक नहीं बन पड़ रहा है, अथवा जिनकी कल्पना तक नहीं की जा सकी है, उनका आविष्कार लोगों को चमत्कृत कर देगा । अनेकानेक ऐसे यन्त्र-उपकरण विकसित कर लिए जायेंगे, जो आने वाले समय को भौतिक विकास की दृष्टि से अभूतपूर्व बना दें, किन्तु इनके विकास में पदार्थपरक जानकारी का महत्त्व कम और अन्त से आविर्भूत ज्ञान की महिमा अधिक होगी। इन दोनों के समन्वय से ही विज्ञान सर्वोच्च शिखर पर सुशोभित होगा । ऐसे यानों का निर्माण सम्भव होगा जो बिना किसी ईंधन के सहारे द्रुतगति से उड़ सकें । इनकी सहायता से कई ऐसे ग्रहों की यात्रा शक्य हो सकेगी, जिनके बारे में अभी सोचा तक नहीं गया है । अन्तर्ग्रही सभ्यता का पता लगा लिया जायेगा । तब विज्ञान कई क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाएगा । समुद्र में नए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पदा-भण्डार की जानकारी मिलेगी । नए प्रकार के द्रुतगामी वाहन विकसित किए जायेंगे । आज के वाहनों का कोई मूल्य और महत्त्व न रह जायेगा । पर्यावरण को दूषित करने वाले प्रचलित वाहनों का निर्माण होगा, जो पर्यावरण को अनावश्यक गंदगी से मुक्त रख सकें और समयानुरूप अपनी उपयोगिता भी सिद्ध करते रहें । वैसी वस्तुओं का उत्पादन रोक दिया जायेगा, जो जीवन को भोगी और विलासी बनाती है । इनके स्थान पर वैसी चीजें अधिकाधिक परिमाण में विनिर्मित की जायेंगी, जिनसे जीवन-मूल्यों में विकास होता हो । आग्नेयास्त्रों का बनना नहीं के बराबर होगा। तब इसकी आवश्यकता लगभग समाप्त हो जायेगी । जिन उद्देश्यों में आज इनका प्रयोग होता है, उस समय बदली मानसिकता से उत्पन्न हुए उत्कृष्टतावादी विचार के कारण ए निरुपयोगी सिद्ध होंगे। सामाजिक असहयोग और निन्दा घृणित कार्यों के रास्ते प्रबल प्रतिरोध बन कर आड़े आयेंगे और उस प्रयोजन की सहज पूर्ति करते रहेंगे, जिनके लिए इन दिनों बल प्रयोग कर अन्तिम उपाय अपनाया जाता है ।

ईंधन का नया विकल्प समुद्र में ढूंढ़ लिया जायेगा। फिर अधिकांश कल-कारखाने इसी ऊर्जा से चलेंगे । परम्परागत ईंधन उस समय तक या तो चुक चुके होंगे अथवा समाप्ति के कगार पर पहुंच चुके होंगे । कई अन्य ऊर्जा स्रोतों का भी पता लगा लिया जायेगा । यह ऊर्जा स्रोत सहायक की भूमिका सम्पन्न करते हुए विश्व को ईंधन के महत्त्वपूर्ण भाग की आपूर्ति करते रहेंगे । वाहनों की अनावश्यक बाढ़ कम होने से ऊर्जा की खपत कम हो जायेगी । उस बचत से औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सक्रियता लम्बे समय तक सजीव बनी रहेगी । निर्जीव-निष्प्राण फिर कोई इकाई ऊर्जा की कमी के कारण नहीं होगी ।

चिन्तन-चरित्र में आदर्शवाद का समावेश जरूरी समझा जायेगा । वर्तमान में जिसे पुस्तकों में पढ़ने-सुनने तक सीमित माना जाता है, उन दिनों लोगों के आचरणों में उतरता प्रत्यक्ष देखा जा सकेगा । जनसामान्य अधिक व्यावहारिक होंगे । ईश्वरीय सत्ता के प्रति एक बार पुनः आस्था जगेगी । आस्तिकता प्रतिष्ठत होगी और नास्तिकता का अन्त सदा-सर्वदा के लिए हो जायेगा । स्वयं को उस सर्वोच्च सत्ता का जीवन्त प्रतिनिधी समझा जायेगा और जीवन में उन उच्चस्तरीय निर्धारणाओं को समाविष्ट करने पर बल दिया जायेगा, जो मनुष्य को वास्तविक अर्थों में परमात्मा का अंशधर साबित कर सके । बुद्धि पर विवेक का अंकुश होगा । किसी भी कार्य को करने से पूर्व व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर उसके व्यापक हानि-लाभ पर गम्भीरतापूर्वक हजार बार सोचा जायेगा । इसके उपरान्त ही उसे क्रियान्वित करने की बात सोची जायेगी । भावना, क्रिया और विचार का अद्भुत सामंजस्य इसी काल में देखा जायेगा । लोग किसी एक का अकेला आश्रय लेना पसन्द नहीं करेंगे । जहां क्रिया और विचार आवश्यक हों, वहां भावना प्रवाह में बहना असन्तुलन माना जायेगा। सब इससे बचेंगे ।

इस प्रकार की मिलती-जुलती भविष्यवाणियां विश्व के लगभग सभी भविष्यवक्ताओं ने की हैं । शिप्टन ने उन सबसे भिन्न एक नवीन बात कही है । उनका कथन है कि बीसवीं सदी का छोटी सीमाओं में बंधा भारत इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक ''विश्व भारत'' के रूप में विस्तृत और व्यापक हो जायेगा ।

पूरब की लाली लाई नवयुग का सन्देश

राबर्ट निक्सन इंग्लैण्ड के एक छोटे-से गांव में पैदा हुए । जब वे पन्द्रह वर्ष के किशोर थे, तभी से उनने भविष्यवाणियां करनी शुरू कर दीं । आरम्भ में लोग उन्हें सनकी प्रकृति के मानते थे, किन्तु धीरे-धीरे लोगों को जब यह पता चला कि जो वह कहता है, वह सच होकर रहता है, तो उनकी गणना भविष्यवक्ता के रूप में होने लगी । बीस वर्ष के होते-होते वे इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध भविष्यवक्ता के रूप में प्रख्यात हो चुके थे । इससे प्रभावित होकर वहां के तत्कालीन अंग्रेज सम्राट हेनरी ने उन्हें अपना राजकीय भविष्य-द्रष्टा नियुक्त कर लिया था और समय-समय पर उनसे अपने भविष्य सम्बन्धी सलाह सम्मति लेते रहते थे, किन्तु निक्सन ने सिर्फ हेनरी व इंग्लैण्ड के बार में ही भविष्यवाणियां की हों ऐसी बात नहीं है। सम्पूर्ण विश्व के सम्बन्ध में और विशेष कर भारत के संदर्भ में उनका कथन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ।

अपने दिव्य-दर्शन के आधार पर भारत के बारे में उनने कहा है कि बीसवीं शताब्दी के अन्त तक उक्त देश में आस्था संकट, अपराध और उग्रवाद अपनी चरम सीमा पर होंगे, पर २१वीं सदी आते-आते उनका मूलोच्छेद इस तरह होगा एवं परिस्थितियां ऐसे करवट बदलेंगी, जैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वहां कभी वातावरण विषम रहा ही न हो । धीरे-धीरे उसकी सारी बाधाऐं समाप्त हो जायेंगी, इनमें से जो कोई येन केन प्रकारेण अपने आपे को सुरक्षित रखना चाहेगी, वह भविष्य के गर्भ में पक रहे प्रबल आध्यात्मिक प्रवाह के एक झोंके में ही धराशाई हो जायेंगी। वह अपना अस्तित्व श्रेष्ठ और सुन्दर बना कर ही कायम रख सकेंगी। निकृष्टता तब आज की श्रेष्ठता की भांति दुर्लभ बन जायेगी । यत्र-तत्र यदि वह टिमटिमाती भी रहेगी, तो उपेक्षा और अनादर की दृष्टि से देखी जायेगी। २०५० के आस-पास वर्तमान गरीब अशिक्षित, अविकसित और प्रतिगामी भारत अपना जीर्ण-शीर्ण चोला उतार फेंकेगा और समृद्धि व श्रेष्ठता के ऐसे मानदण्ड स्थापित करेगा, जिसे अद्वितीय कहा जा सके । तब भारत एक आध्यात्मिक महाशक्ति के रूप में उभरेगा और वैसा ही उदाहरण उपस्थित करता दीख पड़ेगा, जैसा प्रबल चुम्बक के प्रभाव-क्षेत्र में आने वाले लौह कण स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते और अनायास उसका गुण धारण करने लग जाते हैं । इस समय तक सम्पूर्ण विश्व भारत का लोहा मानने लगेगा । उसकी आध्यात्मिक विरासत चरमोत्कर्ष पर होगी । उस समय का भारतीय भूगोल भी आज जैसा न रहेगा । सीमाऐं बदलेंगी और उनमें विस्तार होगा । जो भूमि पिछले युद्धों में आक्रान्ताओं द्वारा हड़प ली गई अथवा दरिद्रता के असह्य भार के कारण टूट कर पृथक् हो गई, वह सब एक बार फिर उस पवित्र देश में सम्मिलित हो जायेगी । भाषा, क्षेत्र, सम्प्रदाय, लिंग, जाति सम्बन्धी विवाद न रहेगा । सब मिल कर एक जाति-एक धर्म बन जायेंगे और समग्रता का-एक सम्पूर्ण इकाई का परिचय देंगे । तब मनुष्यता और सामाजिकता सर्वोपरि समझी जायेगी ।

वे कहते हैं कि लोग तब स्वयं की हानि पर भी दूसरों को लाभ पहुंचाने में गर्व-गौरव अनुभव करेंगे । संवेदनाओं का उफान इतने जोर पर होगा कि 'स्व' का विस्तार 'पर' तक होने में देर न लगेगी । लोगों की मानसिकता में फिर आमूल-चूल परिवर्तन आएगा । सोच बदलेगी, तो वर्तमान परिभाषाऐं भी अपना सद्यः स्वरूप यथावत् बनाए न रह सकेंगी । उनमें नए सिरे से नए विचार होंगे, और परिस्थिति के अनुरूप उनकी नूतन व्याख्या होगी, जिन्हें मानने और अपनाने में लोग किसी प्रकार की कोई अनख न दिखायेंगे ।

पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में भी उसकी उन्नति विश्व में अग्रणी मानी जायेगी । इस क्षेत्र में वह ऐसे-ऐसे अनुसन्धान करेगा, जिससे सर्वत्र उसकी तूती बोलने लगेगी । अन्तरिक्ष अनुसन्धान की दिशा में तब एकमात्र वही देश संसार भर में अकेला रह जायेगा, जो उस क्षेत्र के शोध-कार्य को आगे बढ़ायेगा । सम्प्रति जो कतिपय देश इस दिशा में अन्वेषण-कार्य में जुटे हैं, अथवा जुटने वाले हैं, वे आने वाले समय में आर्थिक संकटों और घरेलू समस्याओं में इस कदर उलझेंगे कि उनसे निपटने में ही उनकी अधिकांश सामर्थ्य चुक जायेगी, फलतः इस प्रकार के शोध-अनुसन्धान को वे आगे जारी न रख सकेंगे। रॉबर्ट निक्सन आगे कहते हैं कि यदि भारत के अथक प्रयास से किसी अन्तर्ग्रही सभ्यता का पता लगा लिया गया, तो इसे आश्चर्य नहीं माना जाना चाहिए। आज उड़न तश्तरी की जो गुत्थी पहेली बनी हुई है, आगामी समय में वह सुलझा ली जायेगी । इसका श्रेय भारत को ही मिलेगा।

खनिज तेलों के सन्दर्भ में आज का परावलम्बी भारत तब स्वावलम्बी बन जायेगा । उसे समुद्र में तेल का इतना बड़ा भण्डार प्राप्त होगा, जिससे न सिर्फ वह अपनी ही कमी दूर कर सकेगा, वरन् अन्य अनेकों का भी पेट भर सकेगा । यह बात दूसरी है कि बढ़ते प्रदूषण के कारण धीरे-धीरे उसका प्रयोग मोटर-वाहनों में बन्द हो जायेगा और सीमित क्षेत्रों में ही उपयोग अप्रतिहत जारी रह सकेगा । ईंधन के कई ऐसे विकल्प ढूंढ़ लिए जायेंगे, जो लगभग प्रदूषण मुक्त होंगे । भारत वर्ष विश्व भर में इन ईंधनों की आपूर्ति करेगा । सौर-ऊर्जा ईंधन का अच्छा विकल्प सिद्ध होगा । अधिकांश यंत्र-उपकरण इसी के माध्यम से चलाए जायेंगे । विश्व भर में इस ऊर्जा का सबसे अधिक दोहन भारत-भूमि में ही होगा । इसके लिए ऐसी परिष्कृत मशीनें विकसित की जायेंगी, जो हर क्षेत्र की ऊर्जा आवश्यकता को पूरी कर सकें ।

वहां के सबसे ऊंचे पर्वत से इतनी विपुल सम्पदा प्राप्त होगी कि उसके खोए वैभव की भरपाई हो सके। यद्यपि तब भौतिक समृद्धि की महत्ता सार्वजनिक जीवन में बदले दृष्टिकोण के कारण नगण्य जैसी समझी जाने लगेगी, किन्तु इससे भवितव्यता बदल नहीं जायेगी । निक्सन का कहना है कि यह भूमि एकबार फिर वैभवशाली बनेगी, और वह समृद्धि प्राप्त करेगी, जो पूर्व में कभी उसकी अमूल्य थाती थी । ऐश्वर्य तो उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कण-कण से इस प्रकार बोलेगा, मानों साक्षात् स्वर्ग ही उतर आया हो । फिर उसका प्रसार-विस्तार शैशव से किशोर, किशोर से वयस्क, वयस्क से प्रौढ़ावस्था की तरह पृथ्वी के कोने-कोने में अभिवृद्धि करता चलेगा, जिससे कभी का भौगोलिक सीमाओं में आबद्ध भूखण्ड अपनी बहुमूल्य आध्यात्मिक विरासत के कारण सम्पूर्ण धरा को ऐसा सांस्कृतिक चिन्तन देगा, जो भले ही देश की भौगोलिक सीमा को बढ़ा न सके, पर संस्कृति का विराट् विस्तार इस कदर होगा, कि सम्पूर्ण विश्व विशाल भारत-महाभारत लगने लगे ।

निक्सन कहते हैं कि यह सब उपलब्धियां उस देश की अभूतपूर्व आध्यात्मिक क्रान्ति के कारण होंगी । यदि निक्सन के उक्त कथन की तुलना वर्तमान भारत से करें, तो इसकी संगति देश की इन दिनों की परिस्थिति और प्रगति से काफी-कुछ मेल खाती प्रतीत होती है ।

सुखद भविष्य की एक और बानगी

प्रसुप्त क्षमताऐं मनुष्य में असीम मात्रा में भरी पड़ी हैं । ऋषि स्तर के व्यक्ति प्रयास-पुरुषार्थ से इन्हें जगा लेते हैं । कुछ में पूर्व जन्मों की संचित सम्पदा का प्रभाव बलशाली होने से वे सहज ही उभर आती हैं । ऐसी क्षमताओं में पूर्वाभास, भविष्यकथन, पूर्वानुमान जैसे घटनाक्रम अधिक देखने को मिलते हैं । टेनी हेल नामक एक अमरीकन महिला में इसी स्तर की उपलब्धियां पाई गई हैं व उसके द्वारा बताई गईं भविष्यवाणियों में से अधिकांश को सच पाया गया है । एक धर्मनिष्ठ चर्च के पादरी की पुत्री हेल में ए क्षमता एक दिन चर्च में उपदेश सुनने के बाद उभरीं व फिर यह क्रम सतत चलता ही रहा है ।

कम उम्र में ही पहली भविष्यवाणी जो हेल ने की वह थी अमरीकी क्षितिज में बहुचर्चित राजनीतिक घटना वाटरगेट काण्ड एवं तत्कालीन राष्ट्रपति रिचर्ड एम० निक्सन का राजनीतिक पतन । यह दोनों घटनाऐं बाद में शब्दशः सत्य सिद्ध हुईं । इसके उपरान्त उनके द्वारा व्यक्ति विशेष से लेकर राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिवर्तनों के बारे में की गई घोषणाऐं अक्षरशः सत्य निकलती गईं । उसने कहा था कि सन् १९७६ वहां के प्रमुख राजनेता हार्वर्ड ह्यूज के लिए निराशा एवं विशेष सावधानी बरतने का वर्ष है, जो सत्य निकला और एक दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई ।

दस वर्ष पहले उनकी घोषणा थी कि सन् १९७६ में राष्ट्रीय चुनाव होंगे, इसमें रोनाल्ड रीगन को अपने राजनीतिक स्थिति को सुरक्षित रख पाना मुश्किल हो जायेगा । १९७६ आने पर परिस्थितियां वैसी ही बन गईं और उन्हें जेराल्ड फोर्ड से हारना पड़ा । उन्होंने विश्व सम्बन्धी भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि १९७६ विश्व व्यवस्था के लिए एवं प्राकृतिक पर्यावरण के लिए अत्यन्त नाजुक समय है । इस अवधि में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अतिशीत, तीव्र गर्मी से ऐसा असन्तुलन बनेगा, जिसके कारण विश्व के अधिकांश देशों में सूखे जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी, फलस्वरूप मृत्यु दर इस वर्ष अपनी चरम सीमा पर रहेगी । यह घटना मात्र अमेरिका के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व के लिए एक संकट लेकर आई ।

टेनी हेल को भविष्य की बातें स्वयमेव ही दीखती और उन्हें ऐसे लिखती जैसे घटनाओं को सामने घटित होती देख रही हो । आगे चलकर पैसिफिक उत्तर पश्चिम के मनोविज्ञान केन्द्र में लू जाली प्रोडक्शन में उन्होंने अध्यक्ष का पद भार सम्भाला एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया ।

उन्होंने १९८० से २००० के समय को महत्त्वपूर्ण मानकर उसके बारे में भी काफी कुछ कहा है । वे लिखती है ।

(१) आने वाले २० वर्षों के दौरान हमें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि बाह्य नियमों, मान्यताओं एवं विभिन्न देशों के संविधानों में मानवहित को ध्यान में रखते हुए व्यापक स्तर पर परिवर्तन होंगे । अनेकों विनाशकारी क्षेत्रीय क्रान्तियां अनायास ही होंगी, जिनका सम्बन्ध विश्व व्यवस्था स्थापित करने से होगा, भले ही इसमें जनहानि हो, लेकिन इसके बाद की परिस्थितियां अत्यन्त सुखद होंगी ।

(२) आणविक शक्ति को बढ़ाने की अपेक्षा सम्पूर्ण वैज्ञानिक समुदाय रोगों के निदान के लिए अपनी पूरी शक्ति झोंक देंगे । इस अवधि में चिकित्सा के क्षेत्र में अद्भुत क्रान्ति होगी, जिसका लक्ष्य रहेगा "अक्षुण्ण स्वास्थ्य।"

(३) इस सदी के अन्त तक एड्स, कैंसर जैसे भयावह रोगों का जिससे सम्पूर्ण मनुष्य जाति डरी हुई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है अस्तित्व ही नहीं रहेगा, लोगों के जीवन क्रम में आमूल चूल परिवर्तन होने से डायनोसॉर जैसे ए रोग स्वतः अदृश्य हो जायेंगे । इस अवधि में प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा ही अपनी चरमसीमा पर रहेगी । अथवा यों कह लें मात्र इनका ही अस्तित्व रहेगा ।

(४) विभिन्न अखबारों एवं पुस्तकों की संख्या कम हो जायेगी, क्योंकि कागज बनाने के लिए लकड़ी एवं रसायन उपलब्ध नहीं होंगे । अतः ऐसी व्यवस्था बनेगी, जिसमें केवल मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित सीमित मात्रा में ही पुस्तकें लिखी जायेंगी ।

(५) युद्ध नहीं, बल्कि आणविक महाविपत्ति उन समस्त औद्योगिक केन्द्रों को बन्द करने पर विवश कर देगी जिनमें खतरनाक रसायनों का उत्पादन होता है, किन्तु संश्लेषित खाद्य पदार्थ एवं जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन का क्रम बन्द नहीं होगा ।

(६) पुरातत्ववेत्ताओं को प्राचीनकाल के ऐसे हस्तलिखित ग्रन्थ मिलेंगे, जिससे धार्मिक क्षेत्र में अद्भुत क्रान्ति होगी और सभी धर्मों में भेदभाव समाप्त हो जाएगा। एक लक्ष्य एवं दिशा रखकर सभी एक जुट होकर कार्य करेंगे एवं संकीर्ण बातों को लेकर होने वाले दंगे, फसाद का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा । भाई चारा ही सबका धर्म होगा ।

(७) भविष्य में मनोविश्लेषण एवं मनोविज्ञान का सर्वोपरि स्थान होगा । सम्पूर्ण विश्व की व्यवस्था में यह विशिष्ट योगदान देगा । यहां तक कि पुलिस एवं न्याय स्तर पर भी इसका उपयोग होगा । इससे अपराधियों की संख्या स्वयमेव घट जायेगी ।

(८) क्रोमोसोम्स के क्षेत्र में नई खोज, अनेकों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेगी एवं ऐसे जीवों को उत्पन्न करने का सूत्र हस्तगत होगा, जो प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित हैं और जो अपने आप में आश्चर्ययुक्त हैं ।

(९) मनुष्य का मस्तिष्क पूर्णतः उदात्त विचार चेतना से संचालित होगा । व्यक्तिगत अधिकार न होंगे । उस काल में लोग युग के सामूहिक अवचेतन स्तर पर ही नियन्त्रित होंगे, जिसका स्वरूप टेलीपैथी (दूरश्रवण) होगा। इस आधार पर स्वार्थी एवं संकुचित विचारों का प्रवाह ही प्रायः समाप्त सा हो जायेगा और विधेयात्मक विचार ही वातावरण में छाए रहने के कारण यही लोगों को आप्लावित करेगा ।

(१०) जनसंख्या नियन्त्रण के लिए, व्यक्तिगत स्तर पर अनुत्पादन चक्र के लिए नए तकनीक उभर कर आयेंगे। इसका संचालन भी वैचारिक प्रवाह से होगा । इसके बारे में हर व्यक्ति स्वयं ही जिम्मेदारी अनुभव करेगा और इस ओर विवेकपूर्ण कदम बढ़ायेगा ।

(११) सन् २००० आते ही भाई-चारा, ममता, समता से आप्लावित ऐसे मानवतावादी धर्म का स्वरूप दिखाई देगा, जिसके प्रभाव में रूस और चीन जैसे साम्यवादी राष्ट्र भी आ जायेंगे और ऐसी सुखद परिस्थितियां निर्मित करने का क्रम चल पड़ेगा, जो पिछले दो हजार वर्षों की कमी को सौ वर्ष में पूरा कर देगा। इस काल को एक शब्द में कहना हो तो 'गोल्डन सेंचुरी' के नाम से पुकार सकते हैं ।

भविष्य की झाँकी, मस्तिष्क के झरोखों से

"लोगों के आचार-व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ रहा है । असुरता क्रमशः घटती जा रही है । शालीनता का साम्राज्य बढ़ रहा है । लोग अध्यात्म के पृष्ठपोषक बनते दिखाई पड़ रहे हैं । देवत्व के प्रति उनकी अभिरुचि जगती और बढ़ती जा रही है। विज्ञान का विलय-विसर्जन अध्यात्म में हो रहा है । इससे एक समग्र और सर्वांगपूर्ण विज्ञान का उद्भव होता है । अन्ततः दुनिया इसी में प्रतिष्ठित होती है, जो लम्बे काल तक नव विकसित विज्ञान की बहुआयामी क्षमता और योग्यता के आधार पर विश्व को प्रकाश प्रेरणा देती रहती है ।"

प्रस्तुत पंक्तियां मूर्धन्य भविष्य द्रष्टा जे० हिल्टन की हैं । उन्होंने अपनी पुस्तक "दि कमिंग मिलेनियम" में इसी शैली का प्रयोग करते हुए आने वाले समय के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की है । उनकी पुस्तक को पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है, मानो उनके नेत्रों के सम्मुख ही भविष्य का विहंगम दृश्य घूम गया, जिसे लिपिबद्ध कर उन्होंने पुस्तकाकार रूप दे दिया हो । इस सन्दर्भ में पूछे जाने पर उनने कहा "निश्चय ही ऐसा है मेरी उक्त पुस्तक न तो कोई अनुमान है, न सम्भावना, वरन् एक ऐसी भवितव्यता है, जिसका अटल निर्धारण असन्दिग्ध है ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी पुस्तक में वे आगे लिखते हैं "भौतिकता घटती-मिटती जा रही है । उसका स्थान अध्यात्मवादी मान्यताऐं ले रही हैं, किन्तु धर्म-अध्यात्म के नाम पर न आज जैसी कुरीतियां हैं, न अनगढ़ प्रथा-परम्पराऐं । सब कुछ औचित्य पर आधारित हैं । अनौचित्य कुछ भी नहीं। नीतिमत्ता को जो स्वीकार्य है, विवेक-बुद्धि जिसका समर्थन करती है, जो सबके हित में है, वैसे ही प्रचलन अस्तित्व में रह गये हैं जिससे अनीति को प्रश्रय मिलता हो, अश्लीलता की वंशवृद्धि होती हो, जो कुमार्ग की ओर बढ़ चलने की कुत्सित इच्छा उभारती हो, वैसी सभी वर्जनाओं पर नैतिकता का दृढ़ अंकुश लगा हुआ है । अपरिग्रही जीवन का सर्वमान्य सिद्धान्त प्रचलित है । इसी में सभी संतुष्ट हैं । न कोई सम्पदा जोड़ कर धनकुबेर बनने की इच्छा रखता है, न सन्तानों के लिए साधन सामग्री इकट्ठी करने में अभिरुचि दिखाता है । सबों के लिए रोज कुआं खोदने और रोज पानी पीने का समान नियम लागू है । सामाजिक दृष्टि से न कोई बड़ा है, न छोटा, न ऊंच, न नीच । समानता का समान अधिकार समाज की ओर से सब को उपलब्ध है ।"

"इन सब परिवर्तनों की पृष्ठभूमि लम्बे समय से चली आ रही है । इन दिनों उसी का चरमोत्कर्ष अनेकानेक प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों, विग्रहों, उत्पातों के रूप में दिखाई पड़ रहा है । इस सदी के अन्तिम दशक में इनका उफान और बढ़ता स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है । इसके बाद आगामी सदी के आरम्भिक दो दशाब्दियों में ये धीरे-धीरे शान्त होते प्रतीत हो रहे हैं । नव-निर्माण प्रक्रिया पहले भी जारी थी, पर अब इसकी गति अधिक तीव्र होती जान पड़ती है । परिवर्तन की स्पष्ट अनुभूति लोगों को इसी अन्तराल में मिलती है । सब हतप्रभ हो रहे हैं कि यह क्रान्तिकारी परिवर्तन क्योंकर व कैसे बन पड़ा ?"

इस प्रकार हिल्टन ने आगामी स्वर्णयुग की रूपरेखा ही खींच कर रख दी है । भविष्यत का वर्णन वर्तमान काल में करने की उनकी इस अनूठी शैली से अनेकों को इसके यूटोपिया होने का विश्वास हो सकता है । कइयों ने पुस्तक में वर्णित तथ्यों और वर्तमान के प्रसंगों में कोई संगति न होने के कारण उसकी वास्तविकता पर सन्देह प्रकट किया है और उसे कपोल-कल्पना कह कर टालने का प्रयास किया है । ध्यातव्य है कि हिल्टन ने इसी आशंका को ध्यान में रखते हुए पुस्तक के प्रारम्भ में ही इसे स्पष्ट कर दिया है कि यह कोई कल्पना जल्पना नहीं, अपितु नियति की एक सुनिश्चित वास्तविकता है ।

इसी प्रकार की एक अन्य पुस्तक उनने लिखी है—"दि एज ऑफ विजडम ।" वैसे तो यह पुस्तक कलेवर की दृष्टि से अत्यन्त छोटी है, पर आगामी समय के सम्बन्ध में इसमें जो प्रकाश डाला गया है, वह अतिशय महत्त्वपूर्ण है । वे लिखते हैं "अभी जिस पर्यावरण प्रदूषण से संसार त्रस्त है और जिसके कारण वर्तमान में अनेक संकट उठ खड़े हुए हैं, अगली शताब्दी के मध्य तक उसका नामोनिशान न रहेगा । तब मनुष्य में एक ऐसी परिष्कृत बुद्धि का विकास होगा जो कुछ भी करने से पूर्व उसकी फलश्रुति पर सर्वप्रथम विचार करेगी । इसी क्रम में उन मानवी प्रयासों व गतिविधियों का लेखा-जोखा लिया जायेगा, जिसने इतने भयावह संकट पैदा किए । पुनर्मूल्यांकन के बाद उन प्रवृत्तियों पर नैतिकता का कठोर अंकुश लगा दिया जायेगा, जो प्रस्तुत सर्वग्राही समस्या का निमित्त बनी । वन-संरक्षण और वृक्षारोपण को प्राथमिकता मिलेगी और उस त्रुटि को अतिशीघ्र पूरा करने की कोशिश की जायेगी, जो पिछले दिनों स्वार्थवश बन पड़ी । पर्यावरण को सुधारने-संवारने में मनुष्य को दैवी सहयोग भी प्राप्त होगा । नियति इसके लिए ऐसी व्यवस्था करेगी कि इससे सम्बन्धित समस्या को उत्पन्न करने और प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ने वाला दूसरा बड़ा कारण वाहन न रहे । इस हेतु प्रकृति-व्यवस्था के अन्तर्गत पृथ्वी के गर्भ में जमा कच्चा तेल चुक जायेगा। भले ही तब इसका कारण वर्तमान का अतिशय दोहन माना जाय, पर यह सब होगा नियन्ता की निर्धारित व्यवस्था क्रम के अन्तर्गत ही । इसी प्रकार ईंधन का अभाव स्वचालित गाड़ियों के अस्तित्व को समाप्त कर देगा । फिर वैसे ही वाहनों का अस्तित्व रहेगा, जिससे प्रकृति को कोई खतरा न हो । इससे पर्यावरण-संकट तीव्रता से दूर हो जायेगा, जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या में भी कमी आएगी । व्याधियां अब जितनी न दिखाई पड़ेंगी । वह होंगी अवश्य पर तब उसका कारण प्रमाद न होकर परमात्म सत्ता की कर्मफल व्यवस्था होगा । अनेक दोषों के निमित्त कारण-स्वार्थ और स्वार्थियों के वंशधर न रहेंगे। इस अवगुण का सर्वथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोप हो जायेगा । इसका स्थान इसका विपरीत गुण-धर्म और अध्यात्मवाद का चिरसहचर-परमार्थ ले लेगा । लोग इसे अपना सर्वोपरि कर्त्तव्य मानेंगे और कर गुजरने में कोई कोताही न बरतेंगे। समय और समाज को अपरिमित हानि पहुंचाने वाले लोभ लालच भी अपनी मौत मरेंगे । मानवी व्यक्तित्व में अहंता एवं बड़प्पन का अवशेष न रहेगा । इन दो दुर्गणों ने, लोभ-लालच के बाद वर्तमान समाज को सर्वाधिक हानि पहुंचाई है यह निश्चय कर इसे त्यागने व इससे बचे रहने में ही लोग अपनी भलाई समझेंगे । सादगी को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलेगी । विलासिता का भौतिकता के साथ ही अन्त हो जायेगा सभी परिश्रमी एवं कर्मनिष्ठ जीवन पर विश्वास करेंगे । धर्म पूजा-पत्री और मन्दिर पूजाग्रहों तक सीमित न होकर अध्यात्म का अविच्छिन्न अंग बन जायेगा और दिनचर्या में काया-छाया की तरह सम्मिलित रहेगा । इससे सर्वत्र शान्ति व सन्तोष का साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा, जो लम्बे काल तक बना रहेगा, किन्तु इसका सम्पूर्ण श्रेय उस सद्बुद्धि को मिलेगा, जो तब के लोगों में विवेक के रूप में विद्यमान होगी ।''

भवितव्यता परिवर्तन का संकेत दे रही है

''हेराल्ड, वर्तमान में मैं इस सदी के अन्त तक पृथ्वी पर गहराते हुए उस संकट के घनघोर काले बादल को देख रहा हूं, जिसमें मानवीय मूल्यों के नष्ट होने के साथ वह दृश्य दिखाई दे रहा है, जिसमें समूची मनुष्यता नष्ट होने की स्थिति में पहुंच रही है । उसका कालापन नित-निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है । यह मात्र कल्पना नहीं है, अपितु मुझे दीखने वाला स्फुट दृश्य है । मैं इस विनाश को देखकर अत्यन्त डर रहा हूं । जो मैं घनघोर अन्धकार को देख रहा हूं , उसके लिए प्रार्थना करता हूं कि वे सभी गलत सिद्ध हो जायें, क्योंकि गलत सिद्ध होना मुझे मंजूर है, विनाश नहीं ।

उपर्युक्त उदाहरण अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न अमेरिकी सी०वी० डब्ल्यू० द्वारा सरमन को लिखे गये पत्र का वह अंश है जिसे हेराल्ड शरमन ने ''हाउ टू फोरसी एण्ड कण्ट्रोल योर फ्यूचर'' में अभिहित किया है । ''आर्कन्सेस गजट'' में सर्वप्रथम छपी सी०वी० डब्ल्यू की इस भविष्यवाणी ने जहां लोगों को चौंकाया, वहीं आश्वासन भी दिया कि सृजन शृंखला भी प्रारम्भ हो चुकी है । ६नवम्बर, १९६६ से १० मई, १९६९ के बीच इन्हें ऐसी क्षमता मिली, जिसके द्वारा आने वाले ४० वर्ष की घटनाओं को स्पष्ट रूप से देख सके । इस बीच उन्होंने अपनी इस क्षमता से भविष्य को देखकर लिखना प्रारम्भ किया, जो समय-समय पर आर्कन्सेस गजट नामक पत्र में प्रकाशित होता रहा । मई १९६९ तक पृथ्वी पर गहराते संकट के बादल को देखकर वे अत्यन्त चिन्तित हो उठे । स्थिति यहां तक आ पहुंची कि वे विक्षिप्तावस्था में पहुंच गये, किन्तु सन् १९६९ में वह अतीन्द्रिय क्षमता समाप्त होते ही पुनः सामान्य बन गये उन्माद भी जाता रहा । किन्तु तीन वर्ष के अन्तराल के दौरान उल्लिखित एक-एक घटना समय के साथ-साथ सत्य होती गई ।

ईरान-ईराक युद्ध, रुमानिया, पू० एवं पं जर्मनी जैसे पाश्चात्य देशों में साम्यवाद का उखड़ना व उनका एकीकरण, बाढ़, भूकम्प, महामारी, जल एवं वायु प्रदूषण, अमेरिका, रूस जैसे शक्तिशाली देशों में राजनीतिक परिवर्तन जैसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं का उनने पहले ही उल्लेख कर दिया था । उन्होंने ७० एवं ८० की दशाब्दी को अत्यन्त कष्टप्रद बताया था । रूस के आर्मीनिया प्रान्त में भूकम्प की सूचना एवं मध्य पूर्व के देशों में कम्यूनिज्म को बदलने के लिए संघर्ष जैसी बातें भी पहले लिख दी थीं ।

शरमन की भविष्यवाणी में विशेष बात यह है कि उन्होंने विनाश के बाद सृजन की सुखद सम्भावनाओं का भी वर्णन किया है कि सम्पूर्ण विश्व में अनायास एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आएगा । उनकी भविष्यवाणी उन्हीं के शब्दों में (१) अन्तिम तीन दशाब्दी अर्थात् सन् ७० से २००० तक पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में विनाशकारी बदलाव आ रहा है । यह अवधि परिवर्तन की अवधि है, जिसके कारण सम्पूर्ण पृथ्वी के मौसम में अनायास ऐसे परिवर्तन होंगे जिनका दुष्परिणाम मनुष्य को भुगतना पड़ेगा । इस अवधि में महाविनाश अकाल मृत्यु की बहुलता रहेगी, किन्तु इस सदी के अन्त में एक बार फिर चुम्बकीय क्षेत्र में अभिनव बदलाव आएगा, अतः विनाश विकास का रूप ले लेगा ।

(२) अन्तिम तीन में से आरम्भ की दो दशाब्दियों में मानवोचित मूल्यों में निषेधात्मक गुणों की वृद्धि होगी, किन्तु अन्तिम दशक में नैतिकता एवं मनुष्योचित गुण लोग स्वयंमेव ही धारण करेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(३) धर्म एवं विज्ञान के बीच की दूरी घटेगी और विज्ञान साधन बनेगा, तो धर्म साध्य बनकर उसे दिशा निर्देश देगा ।

(४) अधिकांश देश अन्तिम दशाब्दि के उत्तरार्ध में विशालकाय उद्योगों में सम्पत्ति लगाने की अपेक्षा छोटे-छोटे उद्योगों में अपनी पूंजी लगायेंगे एवं वैज्ञानिक खोजों का सीधा लाभ छोटे तबकों तक को भी मिलेगा तीसरी दुनिया के देश तेजी से आगे बढ़ेंगे ।

(५) बड़े-बड़े शहरों का विकेन्द्रीकरण होगा एवं लोग अनायास ही छोटे कस्बों की ओर अपने कदम बढ़ाऐंगे राजनीतिक अधिकारों का भी विकेन्द्रीकरण होने लगेगा।

(६) सम्पूर्ण विश्व में युवकों के नैतिक एवं सामाजिक उत्थान की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा एवं उनके चिन्तन चरित्र में उत्कृष्टता लाने व जिम्मेदारी सौंपने के लिए प्रयास किए जायेंगे ।

(७) भौतिकवाद जो वर्तमान में चारों ओर छाया हुआ है, धीरे-धीरे अध्यात्मवाद की ओर उन्मुख होगा । लोगों की रुचि इस ओर बढ़ेगी एवं लोग सहकारी जीवन जीने में, परमार्थ परायणता में सुख अनुभव करेंगे । तब समस्त समस्याओं का समाधान स्वतः हो जायेगा ।

(८) अन्तिम दशाब्दी में वैचारिक दृष्टि से मनुष्य एक नए आयाम में प्रवेश करेगा उनके अन्तराल में उच्च श्रेणी की भावसंवेदनाऐं हिलोरें ले रही होंगी । यही नई पीढ़ी अपने चरित्र एवं प्रखर प्राण चेतना से अशान्ति के वातावरण में स्थिरता एवं शान्ति लायेगी ।

(९) अवचेतन एवं गहन मनोविज्ञान का प्रयोग सामूहिक विचार परिवर्तन के लिए होगा, जो विशुद्ध रूप से नई पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाने की ही एक अभिनव प्रक्रिया होगी । समष्टिगत चेतना बड़ी तेजी से विकसित होगी ।

(१०) मैं देख रहा हूं कि व्यक्ति स्वयं की गलतियों को समूचे ब्रह्माण्ड के लिए हानिकारक अनुभव करेगा और कोई गलत कदम नहीं उठायेगा । ऐसी स्थिति आने पर विनाश के स्थान पर विकास का पथ प्रशस्त होगा।

(११) प्रत्येक मनुष्य के वैयक्तिक प्रभा मण्डल से सम्बन्धित एक ऐसी विधा की खोज होगी, जिसमें सामान्य मनुष्य थोड़े से साधना पराक्रम द्वारा असामान्य बन जाय ।

(१२) अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न व्यक्तियों का बाहुल्य होगा, जिसका उपयोग वे दूसरों के गुण कर्म, स्वभाव की दृष्टि से ऊंचा उठाने एवं आगे बढ़ाने में किया करेंगे।

पढ़ने में तो लगता है कि ए असम्भव प्रतीत होने वाले परिवर्तन देखते-देखते दस वर्षों में कैसे सम्भव हो सकेंगे? किन्तु तथ्य भली-भांति याद रखना चाहिए कि मनीषियों की अन्तःस्फुरणा के आधार पर व्यक्त उनके उद्‌गार निश्चित ही सत्य होकर रहते हैं । पिछले तीन वर्षों में ही विश्व पटल पर इतनी तेजी से परिवर्तन हुए हैं कि आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है । यदि कट्‌टर साम्यवादी शिकंजा जो तानाशाही का रूप ले चुका था, देखते-देखते बिस्मार हो सकता है तो फिर महाकाल की चाल के आगे किसी की क्या बिसात है ?

भविष्य सम्बन्धी पूर्वानुमान भी सम्भव

२६ जुलाई, १९७३ को अमेरिकी वायु सेना के मुख्यालय में फोन घनघना उठा, जिसमें से आवाज आई "मैं जेण्डोलिन मार्क्स बोल रही हूं । कृपया लाकहर्स्ट झील के ऊपर किए जा रहे हवाई प्रदर्शन को रोक दीजिए, क्योंकि तीन दिन के भीतर बहुत बड़ी दुर्घटना देख रही हूं । यह कल्पना नहीं है, अपितु यथार्थ है । कृपया शीघ्र निर्णय लीजिए ।" उक्त फोन मिलने पर वायुसेना के मुख्य लोगों को आश्चर्य हुआ कि आखिर हमारी गुप्त बातें इन्हें कैसे मालूम हुईं ऊहापोह और सूचना देने वाली महिला की खोजबीन में दो दिन बीत गये । उड़ान जारी रहीं ।

किन्तु फोन आने के ४८ घण्टे बाद दो नीले, युद्धक जेट विमान आपस में टकराकर झील में डूब गये । तो पूर्व सूचना देने वाली लड़की मार्क्स को लोग पुनः ढूंढ़ने लग गये । आगे चलकर यह लड़की वायुसेना में सम्मिलित हो गई और हर माह घटने वाली सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं को पहले ही स्पष्ट करने लग गई। इनकी अधिकांश भविष्यवाणियां सच निकलती गई जो समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं ।

जेण्डोलिन मार्क्स अद्‌भुत शक्ति सम्पन्न थी । बाल्यावस्था में अपने निकट घटने वाली छोटी-बड़ी घटनाओं को जब पहले ही बता देती, तो लोगों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आश्चर्य होता था । स्कूल में पढ़ने जाती, तो बच्चे घेर लेते और पूछते-बताओ, आज मास्टर जी क्या पढ़ऐंगे एवं मार किनको खानी पड़ेगी और विशेष बात यह कि जिसका नाम वह बताती उसी छात्र को मार खानी पड़ती। अनेक प्रमुख घटनाओं को तो चित्र बना कर बता देती थी एवं स्थान भी । उनका कहना था कि अतीन्द्रिय क्षमता एवं स्वप्न के द्वारा भी भविष्य में होने वाली घटनाओं को देख लेती हूं, किन्तु इस अद्भुत क्षमता का मैंने कभी दुरुपयोग नहीं किया और न ही भविष्य में कभी करुंगी। दुर्घटनाओं को पहले से जानकर उनसे बचने के लिए लोगों को सावधान करना ही अब तक का मेरा लक्ष्य रहा है और आगे भी यही रहेगा ।

फरवरी १९७४ में उसने कहा था कि १ मार्च से ३ मार्च का समय अमेरिकी वायुयान के लिए महाविपत्ति का समय है । इस अवधि में बाद में अनेक घटनाऐं घटीं।

''द पीपुल्स एलमनेक'' में डेविड वेलिकनिस्की एवं इरविंग वेलेज ने जेण्डोलिन मार्क्स के भविष्य कथन का उल्लेख करते हुए १९८० से २००१ के २१ वर्ष की अवधि को उज्ज्वल भविष्य की तैयारी के वर्ष कहा है। उनके अनुसार इसमें ऐसी सफलताऐं मिलेंगी, जिससे मनुष्य जाति की प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा । जेण्डोलिन मार्क्स लिखती हैं ।

बीसवीं सदी के अन्त तक अधिकांश लोग स्वमेव ही परिवार नियोजन के उपक्रम को अपनायेंगे, जिसमें यान्त्रिक विधि-व्यवस्था का कोई स्थान नहीं होगा, अपितु हर व्यक्ति यह अनुभव करेगा कि बहुप्रजनन से अनेकानेक संकट उपजते हैं एवं मात्र पति-पत्नी की युगल जोड़ी के लिए ही नहीं, वरन् समूचे समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं अतएव वैवाहिक जीवन में संयम की नीति अपनाऐंगे । पति-पत्नी परस्पर मित्रवत् व्यवहार करेंगे एवं एक-दूसरे को भावनात्मक एवं वैचारिक दृष्टि से उठाने का प्रयास करेंगे । प्रजनन की ओर से विमुख होने से नारियों की प्राणशक्ति में बढोत्तरी होगी, जिससे महिलाऐं भी वे सभी कार्य सम्पन्न कर सकेंगी, जिसे अब तक पुरुष ही सम्पन्न किया करते थे । शौर्य, पराक्रम एवं जीवट के क्षेत्र में वह पुरुषों के बराबर सिद्ध होंगी । इस प्रकार से परिवार नियोजन ''न्यूडायमेन्सन'' नए आयाम में प्रवेश करेगा और हर धर्म के व्यक्ति इस नई आत्मानुशासन वाली विद्या का परिपालन करेंगे । इसी में उन्हें अपनी, परिवार एवं समाज की भलाई दिखाई देगी ।

१९८० की दशाब्दी चिकित्सा के क्षेत्र में नई उपलब्धि अर्जित करने की अवधि है एवं नब्बे का दशक आरम्भ होते ही विज्ञान रोगों के कारणों को ढूंढने के लिए निरन्तर सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अवस्थाओं के में प्रवेश करता चला जायेगा और इस सदी में अन्त में विज्ञान यह सिद्ध कर देगा कि रोगों का कारण बाहरी बायरस, कीटाणु अथवा बैक्टीरिया नहीं है, अपितु व्यक्ति अपने ही असंयम से अपनी प्राणशक्ति को क्षीण कर डालता है, फलतः अनेकानेक व्याधियों का शिकार होता चला जाता है । खान-पान, रहन-सहन, सोचने-विचारने में अतिशय का अतिवाद समाए रहने से ही रोग उत्पन्न होते हैं । अतः इनका समाधान वही निकलेगा, जो प्राच्य देशों के पूर्वकालीन दर्शन व चिकित्सा ग्रन्थों में विद्यमान है । सन् २००० तक की अवधि में इस प्रकार की अनकों उपलब्धियां मानवता के समक्ष आयेंगी ।

प्रसंग यूटोपिया या एक व्यक्ति के भविष्य उद्घाटन का नहीं है । जब क्रियाकलाप उस दिशा में चल पड़े तो परिणति भी वही होकर रहती है । उज्ज्वल भविष्य की ओर महायात्रा के संकेत अभी से दिखने लगे हैं । विश्वास किया जाना चाहिए कि आने वाला एक दशक एक महत्त्वपूर्ण भूमिका समग्र मानव समुदाय के लिए निभाने जा रहा है ।

सतयुगी समाज–सपना या वास्तविकता !

१९४२ में जन्मे इंग्लैण्ड के सेमुअल आर० डेलनी विश्व के ऐसे पहले व्यक्ति हैं, जिन्हें २४ वर्ष की अल्पायु में ही साहित्य के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ । ३० वर्ष की अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते उन्होंने १० से भी अधिक उपन्यास लिख डाले । १९७६ में उनने भविष्य से सम्बन्धित एक उपन्यास की रचना की, नाम था ''ट्रिटन'' । इसमें उनने सन् २००० के बाद की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों का इतने रोचक ढंग से वर्णन किया है कि आरम्भ में पढ़कर लोगों को लगा कि किसी ''यूटोपिया'' की उन्होंने कल्पना की है, पर जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे उनकी कल्पना मात्र कल्पना न रहकर तथ्य और सत्य के रूप में सामने आने लगी, तब लोग उसे कोरी कल्पना न मानकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्यवाणी मानने लगे और अब आगे की घटनाओं के सत्य सिद्ध होने का बड़ी उत्सुकतापूर्वक इन्तजार किया जा रहा है।

''पीपुल्स एलमनैक'' नामक ग्रन्थ में उनकी भविष्य वाणियों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है । उसके अनुसार सन् २०१२ तक पृथ्वी वासियों को गुरु, शनि, मंगल और नेप्च्यून आदि ग्रहों में जीवन का स्पष्ट संकेत मिलेगा और तब यहां के निवास उनसे सम्बन्ध स्थापित कर उनके ज्ञान एवं विज्ञान से स्वयं को समृद्ध बनाने का प्रयास करेंगे । विज्ञान का विकास आगामी २१वीं सदी में चरमोत्कर्ष पर होगा, पर उसका उपयोग विनाशकारी कार्यों में न होकर रचनात्मक और विकास सम्बन्धी कार्यों में किया जायेगा । नये-नये यन्त्र उपकरण तो विकसित होंगे पर प्रत्येक के निर्माण से पूर्व यह हजार बार सोचा और लाख बार विचार किया जायेगा कि इससे किसी प्रकार की कोई क्षति मानवता या पर्यावरण को तो नहीं पहुंचेगी । यदि ऐसा प्रतीत हुआ तो उसके निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाना हर एक वैज्ञानिक का नैतिक दायित्व होगा और वे इसे बिना किसी पूर्वाग्रह अथवा ननुनच के स्वीकारेंगे।

सैमुअल ने उस समय की समाज व्यवस्था के बारे में भी ''ट्रिटन'' में बहुत कुछ लिखा है । वे कहते हैं कि तब की समाज व्यवस्था पूर्णतः आध्यात्मिक सम्यवाद पर आधारित होगी । आज के तथाकथित 'साम्यवाद' पर व्यंग करते हुए वे लिखते हैं कि आज तो कई देशों में शासन सत्ता साम्यवादी कही जाती है, पर वर्तमान में यह व्यवस्था मात्र कागजी और कहने भर को ही है । इसका वास्तविक स्वरूप आगामी समय में प्रत्येक के व्यावहारिक जीवन में स्पष्ट दिखाई देगा । वे आगे लिखते हैं कि यह व्यवस्था मानव समाज भौतिकवाद की चरम स्थिति के बाद ही स्वीकार कर सकेगा, जब उसे भली-भांति यह ज्ञात हो जायेगा कि भौतिकवादी व्यवस्था व्यक्ति और समाज के लिए हर प्रकार से हानिकारक है । तब उस व्यवस्था के अन्तर्गत न कोई भूखा-नंगा रहेगा, न दीन-हीन कहा जायेगा । सभी एक ही मानदण्ड के इर्द-गिर्द अपना जीवन यापन करेंगे । सम्पदा की दृष्टि से न कोई धनी होगा और न निर्धन ।

संचय वृत्ति के प्रति लोगों की रुझान समाप्त हो जायेगी। ''रोज कुंआ खोदना, रोज पानी पीना ।'' इस व्यवस्था को लोग हृदय से स्वीकारेंगे, फलतः आज जैसी समाज में अराजकता न रह जायेगी । चोरी, उठाईगीरी का कहीं नामोनिशान भी नहीं रहेगा । लोग ईमानदारी पूर्वक श्रम करेंगे और परिश्रम की कमाई खायेंगे । बेगार भुगतना, निठल्ला रहना, इन प्रवृत्तियों के प्रति लोग आश्चर्य और घृणा भरी दृष्टि से देखेंगे । शहरों की दो-तिहाई जनसंख्या गांवों में आ बसेगी और छोटे उद्योगों के माध्यम से अपना निर्वाह करेगी । नर-नारी में विभेद सिर्फ शारीरिक संरचना की दृष्टि से ही रह जायेगा।

भविष्य वाणियों से सार्थक दिशा बोध

''पूंजीवाद तथा साम्यवाद एक कमरे में कैसे रह सकते हैं ?'' इटली में वह शक्ति कहां जो वह विश्व युद्ध में भाग ले ? मुसोलिनी का उदय एक अपराजेय शक्ति के रूप में हुआ है । उसका पतन असम्भव है। विश्व-संस्था का निर्माण एक असंगत कल्पना है जिसकी स्थापना कभी भी सम्भव नहीं ।'' एक पत्रकार ने दृढ़ शब्दों में इटली के सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता **फादरपियो** का प्रतिवाद किया । पियो का कथन था—

''द्वितीय विश्व युद्ध की अनेक विचित्रताओं में अमेरिका और रूस दोनों का एक साथ मित्र सेना के रूप में युद्ध में भाग लेना भी सम्मिलित है । इस युद्ध में इटली को भी भाग लेना पड़ेगा और भाग ही नहीं युद्ध समाप्ति की पहल भी वही करेगा । तब तक मुसोलिनी का पतन हो चुका होगा और एक बार इटली को भयंकर मुद्रास्फीति, महंगाई तथा देशव्यापी संकटों का सामना करना पड़ेगा । इस विश्व युद्ध का आखिरी चरण इतना भयंकर होगा कि दुनियां के सभी शीर्ष राजनीतिज्ञ यह सोचने को विवश होंगे कि युद्ध, समस्याओं का अन्तिम हल नहीं है । वार्ताओं से भी समस्याऐं सुलझाई जा सकती है, इस भावना से प्रेरित एक विश्व संस्था का निर्माण होगा किन्तु उसमें राजनैतिक अखाड़ेबाजी के अतिरिक्त होगा और कुछ भी नहीं—''

ऊपर जिस पत्रकार ने फादरपियो से इन भविष्य वाणियों की सम्भावनाओं पर आशंका व्यक्त की थी तब तक अधिक ख्याति प्राप्त न होने के कारण बहुत अधिक लोगों को तो विवाद का अवसर नहीं मिला किन्तु जब उसी पत्रकार द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित फादरपियो की भविष्य वाणियां एक-एक कर सच होती गई तो एकाएक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनके नाम की इटली में धूम मच गई । इटली के एक गिरजाघर में पादरी श्री पियो अत्यन्त विनम्र स्वभाव, मधुर वाणी, ऊंचा शरीर, स्वस्थ और गौर वर्ण और विनोद प्रिय स्वभाव के है । परमात्मा पर उनकी अनन्य आस्था है । अपनी निश्चिन्तता का आधार भी वह इसी आस्था को मानते हैं उनका कहना है कि जब परमात्मा को अपनी हर सन्तान के हित की चिन्ता आप है तो मनुष्य व्यर्थ की कल्पनाओं में क्यों डूब मरे ?

विचार और व्यवहार दोनों में एक समान फादर पियो ने कभी प्रदर्शन या अहंकार भावना से कोई भविष्यवाणी नहीं की । न ही उन्होंने कभी अड़ियल रुख रखा यदि कभी किसी ने उनकी बात का प्रतिवाद किया तो वे आत्म-विश्वास पूर्वक कहते हैं । परमात्मा की शक्ति सर्वोपरि है । वह क्या करेंगे यह कोई नहीं जानता; पर कभी-कभी मुझे अपने भीतर उन्हीं का प्रकाश झांकता और प्रेरणाऐं प्रस्फुटित करता दिख जाता है । उस समय मेरे चित्त की स्थिति द्विविधाजनक नहीं होती, इसी से अपने कथन की सत्यता पर मुझे असीम विश्वास रहता है ।

उन दिनों अमेरिका में प्रेसीडेन्ट निक्सन चुनाव लड़ रहे थे । इटली में भी उनके पक्ष विपक्ष की बातें चलती रहती थीं । एक दिन यह प्रसंग फादर पियो के समक्ष भी उठा तो उन्होंने कहा—"शक नहीं निक्सन अब तक के सब अमेरिकी शासनाध्यक्षों की अपेक्षा अधिक बहुमत से विजई होंगे, किन्तु जिस तरह उफान आग को बुझा देता है और स्वयं भी तली में चला जाता है उसी प्रकार निक्सन महोदय उतने ही बदनाम राष्ट्रपति होंगे और उन्हें बीच में ही गद्दी छोड़ने तथा जन-सत्ता के अधिकारों के हनन का अपयश भोगना पड़ेगा ।"

उस समय कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इतने शक्तिशाली प्रेसीडेन्ट निक्सन को वाटर गेट काण्ड ले डूबेगा और उस कारण उन्हें महाभियोग तक का सामना करना पड़ेगा, पर इतिहास ने यह सब कुछ सच कर दिखाया ।

आइन्स्टीन ने समय की परिभाषा करते हुए कहा है कि यह घटनाओं के सापेक्ष माप की प्रतीति मात्र है अन्यथा समय नाम की कोई वस्तु नहीं जब कि इतिहास समय के बिना लिखे ही नहीं जा सकते । तब फिर यह कहना गलत न होगा कि कोई एक बिन्दु, एक शक्ति, एक स्फुरणा सृष्टि में कहीं ऐसी है जो समय का अर्थात् घटनाओं का मूल कारण है । वही महा इतिहास है । भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों ही उस केन्द्र बिन्दु पर एकाकार हैं । सामान्य मनुष्य थोड़े समय के लिए भी यदि उस महा शक्ति परमात्मा के साथ चित्तलय करता है तो उस क्षणिक अनुभूति से विराट् भविष्य के दर्शन नितान्त सम्भाव्य हैं । अनेक तत्व-दृष्टियों की तरह फादर पियो भी उसके उदाहरण थे ।

लोग उनसे अक्सर पूछते—परमात्मा नैतिक शक्तियों का केन्द्र और अध्येता है आज समाज में अनैतिकता का, अधर्म का, साम्राज्य बढ़ रहा है, पहले शिक्षित व्यक्तियों की प्रामाणिकता असंदिग्ध मानी जाती थी किन्तु अब स्थिति उलट गई है । शिक्षा का अर्थ चालाकी अर्थात् धोखेबाजी में उतना ही पटु हो गया है इससे स्थिति और भी भयानक हो गई है । क्या आप बता सकते हैं कि परमात्मा इस स्थिति में भी कभी परिवर्तन लाएगा—यदि हां तो किस तरह ?

फादरपियो ने आशा भरे स्वर में कहा—लोहे को लोहा काटता है, लोगों की बुद्धि में जो अपवित्रता समा गई है उसे काटने के लिए भारतवर्ष में एक अत्यन्त प्रबुद्ध सत्ता का अवतरण हो चुका है । उसकी प्रमुख विशेषता यह होगी कि वह अध्यात्म तत्व के बारे में जितना अधिक जानकर सिद्ध व समर्थ होगा उतना ही अधिक वह विज्ञान का भी पण्डित होगा । वह शरीर शास्त्र, जीव-शास्त्र, रसायन विज्ञान, भौतिकी, अनुवांशिकी आदि विद्याओं का अध्यात्म में समावेश कर एक नए दर्शन का प्रतिपादन करेगा उसका हर प्रतिपादन व्यक्ति की आत्मिक पवित्रता, आचरण की पुनीनता के लिए होगा । यह शक्ति अपने सहयोगियों के साथ भारत में प्रकटेगी, पर प्रभावित वह दुनियां के हर धर्म हर क्षेत्र को करेगी। यही नहीं उसी के युग में भारतवर्ष का विश्व की सर्वोपरि सत्ता के रूप में उदय होगा और चिरकाल तक वह संसार को हर क्षेत्र में मार्ग दर्शन प्रदान करेगा ।"

उनकी अनेक आगे की भविष्यवाणियों में कुछ प्रमुख इस तरह हैं—अरबों और इजराइल के बीच बराबर टक्कर होती रहेगी, अरब अपनी फूट के कारण कभी भी उसका कुछ बिगाड़ न सकेंगे । इजराइल निरन्तर शक्ति शाली होता चला जायेगा ।

रूस और अरबों में जोरदार टक्कर होगी जिसमें तटस्थ रहने के कारण पाकिस्तान मुसलिम समुदाय देशों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में असम्मानित होगा किन्तु चीन इस युद्ध में अरबों का साथ देगा ।

चीन युद्ध में विषैले कीटाणुओं का प्रयोग करेगा जिससे एक बार संसार में भीषण स्थिति आ जायेगी । उस समय भी भारत वर्ष पर्यावरण और बीमारियों से बचा रहेगा यह आश्चर्यजनक बात होगी ।

आज भी वे सामयिक भविष्यवाणियां करते रहते हैं । वे प्रायः सब सच निकली हैं । इसी कारण लोगों को यह जानने की अभिरुचि रहती है कि जिसका उन्होंने संकेत किया है वह शक्ति कब प्रकाश में आती है ?

भारतवर्ष से ही नई नैतिक शक्तियों के उदय, उसके विश्व नेतृत्व की भविष्यवाणी जिन-जिन भविष्य वक्ताओं ने की हैं उनमें कनाडा की एक महिला ''डी माल्वा'' का भी प्रमुख स्थान है । उत्तरपूर्वी कनाडा के हायलैण्ड प्रदेश की निवासिनी **''माल्वा डी''** को एक असाध्य बीमारी के मध्य अनायास ही वह शक्ति प्राप्त हो गई जिससे वह लोगों के फोटो या हाथ की लिखावट देखकर उसके सुदूर भविष्य को जान लेती है । इन भविष्य वाणियों के द्वारा न केवल उन्होंने अनेक लोगों को उनके खोए बच्चों से मिलाया, आजीविका के रास्ते बताए अपितु सैकड़ों लोगों की आकस्मिक दुर्घटनाओं से भी रक्षा की । ऐसे व्यक्तियों में स्वयं उनके पति भी थे जो उनसे परामर्श लिए बिना कभी भी कोई काम नहीं करते थे ।

उनकी भविष्यवाणियों में कैनेडी की राष्ट्रपति चुनाव में विजय तथा उनकी मृत्यु की पूर्व घोषणा का अत्यधिक महत्त्व रहा । उन्होंने सन् १९६१ में यह भविष्य वाणी कर दी थी कि २२ नवम्बर, १९६३ को राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या कर दी जायेगी । इस घोषणा को लिखकर उन्होंने एक लिफाफे में बन्द कराकर उसे सरकारी प्रामाणिकता में रजिस्ट्री कराई । पीछे जब उनकी हत्या के दिन उसे खोला गया तो लोग आश्चर्य चकित रह गये कि वह वही तिथि थी जो माल्वा डी के पूर्व रजिस्ट्री कराए लिफाफे में थी ।

इस चर्चा का एक रोचक अध्याय यह था कि उसी दिन उन्होंने यह भी घोषणा कर दी कि ३ अगस्त, १९६४ को चर्चिल की मृत्यु हो जायेगी तथा ८ जून, १९६५ को कनाडा में एक ऐसी जबर्दस्त विमान दुर्घटना होगी जिसमें एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा ''पूर्व कथन से प्रभावित होने के कारण इस बार तो उनकी घोषणाओं को विधिवत् टेलीविजन में भी दिखाया गया। जिस दिन उनका यह कार्यक्रम प्रसारित हो रहा था उस दिन एक भी टी०वी० सेट बन्द नहीं था । लोग भारी संख्या में पहले से ही टी०वी० सेट घेर कर खड़े हो गये थे । यह दोनों भविष्यवाणियां अखबारों में भी प्रकाशित हुईं और जब निश्चित तिथियों सहित वे पूर्ण सच निकलीं तो लोगों ने दांतों तले उंगली दबा ली । लोगों में एक अपूर्व जिज्ञासा विकसित होती जा रही है आखिर मनुष्य शरीर और उसकी बुद्धि में ऐसे कौन-से तत्व विद्यमान हैं जो बहुत अधिक समय बाद में होने वाली घटनाओं का भी बोध करा देते हैं । अब तक मनुष्य शरीर और उसकी रचना को मात्र भौतिक दृष्टि से देखा जाता था, पर समय की इन सिमटती हुई दूरियों ने मनुष्य को अब इतना ध्यानस्थ कर दिया है कि उसे मनुष्य जीवन के प्रति सुनिश्चित दृष्टिकोण प्राप्त किए बिना चैन न मिलेगा ।

लार्ड टेनसिन की भविष्यवाणी

सन् १८५५ ई० में इंग्लैण्ड के संसार प्रसिद्ध महाकवि लार्ड टेनसिन ने एक पद्य द्वारा वर्तमान महायुद्ध के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की थी । वह आज बिल्कुल सच हो रही है । आज कल जिन हवाईजहाजों, बमों, गैसों का प्रयोग हो रहा है उनका सन् ५५ में नाम भी न था फिर भी उस महाकवि ने अपनी दिव्य दृष्टि से भविष्य को ठीक-ठीक जान लिया था । नीचे वह भविष्यवाणी दी जा रही है ।

मैंने भविष्यकाल का स्वप्न देखा जहां तक कि मानवी आंख देख सकती है, मैंने जगत की अद्भुत और अनुपम बातें देखीं । देखा कि ''आकाश व्यापार सामग्री से भरपूर है और बड़े-बड़े व्यापारिक जहाज बहुमूल्य वस्तुऐं जल्द-जल्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा रहे हैं ।''

देखा कि ''आकाश शोर गुल कुलाहल और भिन्न-भिन्न शब्दों की गूंज से भर गया है और भीषण बम वर्षा हो रही है और देखा कि भिन्न-भिन्न देशों के वायुयान जो आकाश मण्डल में गुंथे हुए युद्ध में संलग्न हैं एक दूसरे पर बम बरसा रहे हैं । जब तक उनकी लड़ाई समाप्त न हुई यह सब कुछ देखा परन्तु परिणाम यह हुआ कि ''अन्त में जंगी बाजे बन्द हो गये और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लड़ाई के कपड़े (वर्दियां) लपेट कर रख दिए गये, आदमी-आदमी बनकर बैठे । आपस में विचार करके उन्होंने संसार को मेल मिलाप और शान्ति का सन्देश दिया जहां सबकी सम्मति से एक अन्तरराष्ट्रीय राज्य संगठन स्थापित हुआ और धरती माता उस समय सुख की नींद सोई ।''

इससे प्रतीत होता है कि इस महायुद्ध के पश्चात् श्रेष्ठ युग आवेगा । लोग द्वेष, कलह, स्वार्थ, अपहरण, शोषण, अत्याचार आदि पापों को छोड़ कर परस्पर प्रेम पूर्वक सत्य और न्याय का व्यवहार करते हुए रहेंगे जिससे यह पृथ्वी स्वर्ग के समान आनन्ददायक हो जायेगी । उस समय को सतयुग कहने में किसी को क्या आपत्ति होगी?

पिरामिडों में अंकित सन् २००० की दुनिया

''सब लोग ऊंटों की सवारी नहीं करेंगे, हवा से भी अधिक तेज गति से चलने और आकाश में उड़ने में सक्षम हो जायेंगे, मौसम पर काबू कर लेंगे और दुनियां में जन्नत (स्वर्ग) की सी सहूलियतें तथा ऐशो आराम के समान नसीब हो सकेंगे, तब एक ऐसी लड़ाई लड़ी जायेगी जिसमें दुनियां के अधिकांश लोग मारे जायेंगे । उस लड़ाई के समय कुदरत में भी कुछ ऐसे फेर बदल होने लगेंगे जिनके मारे सारा संसार दोजख में बदल जायेगा ।''

यह भविष्यवाणी अंकित है कि मिश्र की राजधानी से ९ मील की दूरी पर बने पिरामिडों पर ये भविष्यवाणियां प्रतीकात्मक भाषा में लिखी गई हैं, जिन्हें पढ़ पाने में थोड़े ही विद्वान सफल हो सके हैं, पर जिनने सफलता प्राप्त की है, उन्होंने इन प्रतीकों की जो व्याख्या की है वे अब तक अधिकांश सही सिद्ध हुई हैं । इसलिए यह सन्देह करने का कोई कारण नहीं है कि विश्व युद्ध, महामारी, अकाल आदि का संकेत देने वाली उपर्युक्त भविष्यवाणियां गलत सिद्ध होंगी ।

मिश्र दुनिया का बहुत प्राचीन देश है । वहां की सभ्यता अति प्राचीन सभ्यताओं में मानी जाती है । यद्यपि मिश्र की सभ्यता और संस्कृति के अब अवशेष ही बचे हैं, परन्तु जो अवशेष बचे हैं उनसे सिद्ध होता है कि अब से तीन चार हजार साल पहले तक वहां के लोग काफी उन्नत जीवन व्यतीत करते थे । उस समय वहां का कला-कौशल भी बहुत उन्नत था । इसका परिचय देने वाले पिरामिड इस बात के साक्षी हैं । मिश्र को यों पिरामिडों का देश कहा जाता है, परन्तु काहिरा से पूर्व की ओर स्थित तीन पिरामिडों का समूह संसार के सात आश्चर्यों में गिना जाता है । बाकी छह आश्चर्य हैं बेबीलोन के झूलते बगीचे, चीन की दीवार, ताजमहल, पीसा का बुर्ज, ओलम्पिया में जूपिटर की विशाल मूर्ति तथा सेण्ट पीटर का गिरजाघर ।

काहिरा के पास बने इन पिरामिडों के सम्बन्ध में समझा जाता है कि ए अब से ५५०० वर्ष पूर्व से ३००० वर्ष पूर्व तक की अवधि में बनाए गये । यहां पर बड़े-बड़े पत्थरों को एक पर एक चिन कर सीढ़ियों जैसा बनाया गया है । नीचे का भाग बहुत बड़ा है और वे ज्यों-ज्यों ऊपर की ओर उठते गये हैं त्यों-त्यों पतले होते गये हैं । इनका निर्माण देखकर वास्तुशिल्प और भवन निर्माण कला के विशेषज्ञों को आज भी दंग रह जाना पड़ता है । पत्थर की चट्टानों से बने इन स्मारकों का निर्माण किस प्रकार किया गया होगा, यह जानना तो दूर रहा, इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती ।

इनके निर्माण में प्रयुक्त किए गये अधिकांश पत्थर बारह फुट से अधिक ऊंचे हैं । उनकी सतह भी इतनी ही लम्बी और चौड़ी है । बारह फुट ऊंचे और बारह फुट लम्बे-चौड़े ए पत्थर किस प्रकार इतनी ऊंचाई तक चढ़ाए गये होंगे यह समझ पाना कठिन है । आधुनिक टेक्नालॉजी और विकसित भवन निर्माण के यन्त्र उपकरणों का सहारा लेकर भी पिरामिडों में लगे पत्थरों के एक कोने जितने वाले डाट पत्थर को भी पिरामिडों जितनी ऊंचाई तक ले जाना कठिन है फिर फूटे पत्थर को तो इतनी ऊंचाई तक ले जाने की बात सोची भी नहीं जा सकती ।

उल्लेखनीय है कि पिरामिडों का निर्माण या तो मिश्र के राजाओं की स्मृति सुरक्षित करने के लिए किया गया है अथवा वे किन्हीं धार्मिक स्थलों के रूप में बनाए गये हैं । इनमें जो सबसे बड़ा स्तूप है वह राजा न्योप्स की कब्र पर बनाया गया है । इसके निचले भाग ने १३ एकड़ जमीन घेर रखी है और लगभग १३ लाख पत्थरों के बड़े-बड़े टुकड़े लगे हुए हैं । कहा जा चुका है कि अधिकांश पत्थर १५०० घन फुट से भी अधिक आकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वाले है और उनका वजन ढाई टन से भी अधिक है। इतने भारी और इतने बड़े पत्थरों को बीसियों फुट ऊंचाई तक कैसे पहुंचाया गया होगा, यही एक आश्चर्य का विषय है । उल्लेखनीय है इन पिरामिडों में सबसे बड़ा पिरामिड ४५० फीट ऊंचा तथा सबसे छोटा १४० फुट ऊंचा है।

आश्चर्य यहीं तक सीमित नहीं रह जाता । इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि पिरामिडों के निर्माण में प्रयुक्त पत्थर बड़ी सफाई के साथ काटे और तराशे गये हैं और इतनी मजबूती से उन्हें एक के ऊपर एक जमाया गया है कि उनके बीच में बाल के बराबर भी जगह नहीं है । मिश्र एक रेगिस्तानी इलाका है । इसलिए वहां पानी आदि के साधन जुटाना और वह भी इतने बड़े निर्माणों के लिए, कल्पनातीत विषय ही है । अस्तु इनके बारे में यही अनुमान लगाया जाता है कि इनके निर्माण में पानी आदि का उपयोग सम्भवतः नहीं ही किया गया होगा।

इनकी बाह्य और आन्तरिक रचना को देखने पर इस बात का अनुमान लगा पाना कठिन है कि इनके निर्माण में कितने प्रशिक्षित और दक्ष, अनुभवी शिल्पियों का योगदान रहा होगा । इनकी एक विशेषता यह भी है कि इनमें प्रयुक्त पत्थरों का माप पिरामिडों के भीतरी कक्ष और उन तक पहुंचने का मार्ग इतना छोटा है कि कोई भी व्यक्ति इनके पीछे विद्यमान रहस्य का अनुमान नहीं लगा सकता । सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक यहूदी विज्ञान ने इन पिरामिडों के रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए सिद्ध किया है कि इनका निर्माण बहुउद्देश्यीय प्रयोजनों से किया गया है । इनमें से एक तो तात्कालीन आविष्कारों और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों का अंकन था। इन स्मारकों में उस समय की विभिन्न कलाओं, गणित और ज्यामितीय अन्वेषणों तथा नक्षत्र विज्ञान की विविध उपलब्धियों का प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है।

जोसेफस के अनुसार बड़े पिरामिडों में नक्षत्र विज्ञान सम्बन्धी बहुत-सी बातों, सिद्धान्तों का विवरण मिलता है। इनमें नक्षत्रों से सम्बन्धित विभिन्न चक्रों में बीती घटनाओं अर्थात् इतिहास के अतिरिक्त आने वाली घटनाओं का विवरण भी अंकित है । इन पिरामिडों के सम्बन्ध में यह तथ्य बहुत ही विस्मयकारी है कि ए मिश्र देश के बीचों बीच तो स्थित हैं ही पृथ्वी के भी बीचों बीच स्थित हैं तथा उनकी स्थिति से यह बात प्रमाणित होती है कि इनके निर्माणकर्ताओं को उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की स्थिति के सम्बन्ध में भी पता था । उनकी स्थिति और सूर्य की गतिविधियों के बीच एक सुनिश्चित सम्बन्ध तो है ही, उन पर जो भविष्यवाणियां अंकित की गई हैं उनका आधार ध्रुव तारे की स्थिति है । जोसेफस के अनुसार इनके निर्माण का उद्देश्य न तो किसी की स्मृति में किया गया है तथा न ही राजा महाराजाओं के शव को सुरक्षित रखने के लिए किया गया है । ए उद्देश्य तो गौण हैं, इनका मूल उद्देश्य एक ऐसे निर्माण को खड़ा करना रहा है जो भविष्य में आने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में लोगों को संकेत देता रहे ।

किन्तु ये भविष्यवाणियां जिस प्रकार अंकित की गई हैं, वे न तो किसी भाषा में लिखी गई हैं और न ही चित्रों के रूप में बनाई गई हैं । यदि कोई भाषा में लिखी भी गई है तो उसके जानकर इस समय तो पृथ्वी पर कम से कम नहीं ही हैं । खगोल शास्त्रियों का मत है कि यह भाषा कुछ सार्वभौम सिद्धान्तों पर आधारित है जो पृथ्वी तथा ब्रह्माण्ड के गणितीय और ज्यामितीय नियमों से सम्बन्ध रखते हैं । इस पद्धति का इस्तेमाल इस उद्देश्य से किया गया था कि भविष्य में जो भी कोई इन नियमों को जान और समझ सकेगा, वह इन नियमों के आधार पर इन पहेलियों को सुलझा लेगा तथा आने वाले कल की घटनाओं और सम्भावनाओं के सम्बन्ध में संसार को सचेत कर सकेगा ।

सर फ्लिण्डर्स पैत्री ने लम्बे समय तक पिरामिडों के इन प्रतीकों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि पृथ्वी के मध्य भाग में स्थित ए पिरामिड मापन, ज्यामिति तथा खगोल विज्ञान के अनेकों मूलभूत सिद्धान्तों को उद्घाटित करते हैं । इन विशालकाय निर्माणों के भीतरी कक्षों और भागों के सम्बन्ध में यह एक रोचक तथ्य है कि ए परस्पर तो सम्बन्धित है ही, पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों से भी इनका सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम स्थान है।

पिरामिडों में अंकित भविष्यवाणियों को अब से ५० वर्ष पूर्व पढ़ा जाने लगा था और उनमें प्रयुक्त भाषा को मापन इकाई नाम दिया गया था । जिन लोगों ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए हैं, उनमें डेविड डेविडसन का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है । डेविडसन एक मेधावी खगोलशास्त्री और इंजीनियर थे । उन्होंने २५ वर्षों तक पिरामिडों के क्षेत्र में इन निर्माणों के सम्बन्ध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में खोज की और अपने निष्कर्षों को तथ्य तथा प्रमाणें सहित 'द ग्रेट पिरामिड-इट्स डिवाइन मैसेज' पुस्तक में लिखे । इस ग्रन्थ में पिरामिडों से सम्बन्धित अनेक दुर्लभ चित्रों के साथ १७ ऐतिहासिक पुरातत्वीय और खगोल विज्ञान सम्बन्ध तालिकाऐं भी दी गई है जो पिरामिडों में अंकित भविष्यवाणियों का सार्थक दिशाबोध कराती हैं । डेविडसन के अनुसार पिरामिडों के मापनों के आधार पर पृथ्वी से सूर्य की औसत दूरी पृथ्वी की सतह और उसके परिक्रमा पथ में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन भी किया जा सकता है ।

डेविडसन के अतिरिक्त ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के खगोल विज्ञानी जॉन ग्रीब्ज, सर जॉन हर्शल, लन्दन के प्रमुख गणितज्ञ जॉन टेलट तथा एच० स्पेन्सर लुई आदि ने पिरामिडों की रहस्यमय प्रतीकात्मक भाषा पढ़ने में सफलता प्राप्त की है । डेविडसन ने तो सन् १९२४ में ही अपनी पुस्तक 'द ग्रेट पिरामिड-इट्स डिवाइन मैसेज' में लिखा था कि इनमें पृथ्वी के जन्म काल से लेकर अब तक की तथा आगे के हजारों वर्षों की घटनाऐं तथा भविष्यवाणियां अंकित हैं । आरम्भ में जिन भविष्य वाणियों का उल्लेख मिलता है उनमें पृथ्वी के जन्म, बाढ़, भूकम्प, महामारियों और युद्धों की घटनाऐं है जो इतिहास का विषय है । इनमें महान सम्राटों और योद्धाओं का उल्लेख तो है ही युद्धों तथा धर्मिक क्रान्तियों और विश्व के महान सन्तों का भी वर्णन है ।

अब से पांच हजार वर्ष पूर्व पिरामिड का निर्माण करने वालों ने ईसा से करीब १५०० वर्ष पूर्व से इजरायलवासियों के मिश्र से निकाले जाने की तिथि लिख दी थी । उल्लेखनीय है इनका निर्माण उक्त घटना से भी ३५०० वर्ष पूर्व हुआ था । इसके बाद सिकन्दर के उदय, ईसामसीह के जन्म तथा उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटना भी पिरामिड की दीवारों पर अंकित है ।

सन् ५६९ में मोहम्मद साहब के जन्म तथा ६३२ में उनके देहान्त, तेरहवीं शताब्दी में चंगेज खां के उदय, १२८० में बारूद के आविष्कार, १८वीं-१९वीं शताब्दी नैपोलियन के उदय, वाटरलू 'की' लड़ाई तथा नैपोलियन की पराजय और मृत्यु सन् १८३३ में तुर्की के स्वतन्त्र होने, १८५४,५६ में रूस और टर्की के बीच क्राइमन की लड़ाई आदि के सम्बन्ध में भी स्पष्ट भविष्य संकेत दिए गये है ।

पिरामिडों की भाषा पढ़े जाने से पूर्व ईसा के जन्म तथा कार्यकाल के सम्बन्ध में भारी मतभेद था । विशेषज्ञों ने ईसा के जन्म की विभिन्न तिथियां निर्धारित कर रखी थीं जो १ अक्टूबर से २३ मार्च तक है । परन्तु पिरामिडों की जब अन्य भविष्यवाणियां या ऐतिहासिक घटनाऐं सही निकलीं तो विशेषज्ञों ने इस सम्बन्ध में भी पिरामिडों की सूचनाओं को प्रामाणिक मान लिया, जिसके अनुसार ईसा की जन्म तिथि ४ अप्रैल सिद्ध होती है । इसी प्रकार एक कक्ष में ईसा को साढ़े तैतीस वर्ष जीवित रहने का संकेत मिलता है । पूरी तरह सही गणना के अनुसार ईसा को ५ अप्रैल सन् ३० के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया ।

कहा जा चुका है कि पिरामिडों में उनके निर्माण पूर्व से लेकर अब तक के इतिहास और आगे की भविष्यवाणियां अंकित हैं । उन सबका संकलन किया जाए तो एक विशालकाय ग्रन्थ तैयार हो सकता है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि पिरामिडों में पृथ्वी के जन्म से लेकर समाप्त होने तक का इतिहास या भविष्यवाणियां अंकित है । आज उन सबका उल्लेख नहीं किया जा सकता । इस शताब्दी में सही सिद्ध हुईं भविष्यवाणियों का उल्लेख कर ही सन्तोष करना पड़ेगा, जो मुख्य-मुख्य इस प्रकार हैं । जो भविष्यवाणियां सही सिद्ध हो चुकी है । वे इस प्रकार हैं ।

(१) सन् १९०९ में रूस और यूरोप के प्रमुख देशों के बीच हुई महत्त्वपूर्ण सन्धि ।

(२) सन् १९११ में चीन की क्रान्ति तथा अगले वर्ष वहां प्रजातन्त्र की स्थापना ।

(३) सन् १९१३ में जब बालकन प्रदेश की स्थिति का तनाव पूर्ण बनना तथा यूरोप में मन्दी और असुरक्षा का वातावरण बनना ।

(४) सन् १९१४ में ब्रिटेन द्वारा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा ।

(५) सन् १९१७ में अमरीका द्वारा भी प्रथम विश्वयुद्ध में कूद पड़ने की घोषणा ।

(६) सन् १९१८ में विश्व युद्ध का अन्त ।

(७) सन् १९१८ में सोवियत गणतन्त्र का जन्म तथा दूसरे एक वर्ष पूर्व रूस में क्रान्ति ।

यह वे प्रमुख घटनाऐं हैं जो डेविडसन ने बीसवीं शताब्दी के सम्बन्ध में पिरामिडों पर अंकित भविष्यवाणियों को पढ़कर बताई थी । चूंकि उन्होंने अपनी पुस्तक सन्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९२४ में लिखी थी । इसलिए यह भी कहा जा सकता है कि इन्हें ऐतिहासिक कालक्रम देखकर लिख दिया गया होगा । परन्तु १९२४ से अब तक ५६-५७ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । इस अवधि के लिए जो भविष्यवाणियां की गई थीं वे शत-प्रतिशत सही सिद्ध हुई हैं इसलिए यह मानने का कोई कारण ही नहीं है कि यह सब तीर-तुक्का है अथवा इतिहास देखकर लिख दिए गये विवरण हैं । सन् १९२४ के बाद डेविडसन ने अपनी पुस्तक में जिन प्रमुख घटनाओं का उल्लेख किया था और जो सही सिद्ध हुईं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) सन् १९२९ में विश्वव्यापी आर्थिक संकट, मन्दी का दौर आना तथा उससे दुनियां के सभी देशों का प्रभावित होना ।

(२) १९३३ में हिटलर द्वारा जर्मनी की सत्ता पर सम्पूर्ण अधिकार कर लेना ।

(३) १९३९ में दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत और १९४५ में अन्त, विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप जर्मनी का दो टुकड़ों में विभाजन ।

(४) १९४७ में भारत द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा भारत का दो टुकड़ों में बंट जाना ।

(५) १९४८ में इसराइल की स्थापना । यहूदियों का पुनर्स्थापन ।

(६) १९६० में अफ्रीका के १६ देशों का स्वतन्त्र होना ।

(७) १९६५ में अमेरिका द्वारा वियतनाम पर हमला पाकिस्तान और भारत के बीच युद्ध ।

(८) १९६९ में पहली बार मनुष्य द्वारा चन्द्रमा पर पहुंचना ।

(९) १९७१ में भारत से अलग हुए पाकिस्तान का दो टुकड़ों में बंट जाना तथा स्वतन्त्र बांगला देश का उदय ।

(१०) चीन में भयंकर भूकम्प ।

(११) १९८० में इराक और ईरान के बीच घमासान लड़ाई ।

इसके बाद की भविष्यवाणियां अभी सही सिद्ध होना शेष है जिनके अनुसार "सन् १९८२ से सन् २००० तक विश्व-व्यापी हलचलें होंगी । मौसम आश्चर्यजनक रूप से बदलेंगे तथा प्राकृतिक उत्पादों में भी बढ़ोत्तरी होगी । इसी अवधि में तृतीय विश्व युद्ध की सम्भावना भी है, जिसमें दुनिया के लगभग सभी देश भाग लेंगे तथा भयानक शस्त्रास्त्रो का प्रयोग किया जायेगा । इन शस्त्रों के प्रयोग से एक बारगी तो समूची मनुष्य जाति के ही नष्ट हो जाने का खतरा उत्पन्न हो जायेगा । फिर भी कुछ लोग बचेंगे और नए युग का सूत्रपात होगा ।" पिरामिडों में इस नए युग को जमाना रुहानी (आध्यात्मिक युग) नाम दिया गया है । इस युग का नेतृत्व एक ऐसे आध्यात्मिक व्यक्तित्व द्वारा किया जायेगा जो जीवन भर इस नवयुग का ढांचा तैयार करने तथा पृष्ठभूमि बनाने में लगा रहा है । इतने व्यापक परिवर्तन सन् १९९९ तक हो जाने निश्चित बताए गये हैं ।

पिरामिडों पर अंकित सभी भविष्यवाणियां अब तक सही सिद्ध हुई हैं । देखना यह है कि सन् २००० के नए युग का निर्माण करने में किन अध्यात्मवादियों को श्रेय मिलता है और कौन उस समय की सुखद परिस्थितियों का लाभ उठा सकेंगे ।

भारत द्वारा नवयुग नेतृत्व की भविष्यवाणी

"एक प्रकाश उठ रहा है जो वायुमण्डल को भी शुद्ध करेगा और लोगों के अन्तःकरण में छाए कषाय-कल्मष को भी । संसार एक सूत्र में बंधेगा और सर्वत्र अमन चैन होगा ।' —**गेरार्ड क्राइसे**

चमत्कार प्रदर्शन से आपकी अरुचि हो गई है और आप यह मानते हैं कि अतीन्द्रिय शक्तियों एवं सिद्धियों का उपयोग विश्वकल्याण के लिए है । तो आप इतना तो बता सकते हैं कि संसार में भीषण रूप से पनप रही भौतिक वृत्तियों में क्या कभी परिवर्तन आएगा ? क्या यह राजनैतिक हलचलें कभी बन्द होंगी? क्या निःशस्त्रीकरण भी सम्भव है ? क्या सारा संसार कभी एक सूत्र में आबद्ध हो सकता है ? क्या साम्यवाद सारे संसार में फैल जायेगा और यह सब परिवर्तन क्या अभी कुछ दिन में होने वाले हैं?

यह प्रश्न हालैण्ड के एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ ने वहां के ख्याति प्राप्त भविष्यदृष्टा गेरार्ड क्राइसे से पूछा । भारतवर्ष में तो भविष्य कथन पर विश्वास एक सामान्य बात है, पर हालैण्ड शायद संसार का पहला देश है जहां पर थानों, कचहरियों, संसद तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए भी मान्य भविष्यदृष्टाओं की मदद ली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती है । अतीन्द्रिय क्षमता हमारे देश में उच्चस्तरीय आध्यात्मिक साधनाओं, अभ्यास और तपश्चर्या से कोई भी प्राप्त कर सकता है । ऐसा विधान दुनियां के किसी और देश में नहीं किन्तु ईश्वरीय देन के रूप में ऐसी आत्माऐं जन्म लेती रहती हैं । जिनके भविष्य कथन बहुत अंशों में सच निकलते रहते है । इस शताब्दी में हालैण्ड में ही नहीं सम्भवतः सारे योरोप में गेरार्ड क्राइसे अधिक प्रभावशाली भविष्यद्दृष्टा हुआ है, उसकी बताई हुई बातें असत्य निकली हों ऐसा बहुत ही कम हुआ। गेरार्ड क्राइसे हालैण्ड में एक यहूदी परिवार से सम्बन्धित है ।

एक बार अमेरिका से एक प्रोफेसर ने फोन पर क्राइसे से पूछा— 'मेरी पुत्री यकायक कहीं खो गई है, आप जानते हैं कि बच्चे तो मां-बाप की आंखों के तारे होते हैं । उसके बिना मेरा मन बहुत बेचैन है, पढ़ाई का हर्जा भी हो रहा है, क्या आप उसका कुछ अता-पता बता सकेंगे ?'

'कई बार मन अस्त-व्यस्त, उलझन और परेशानी में बहुत होता है तब सामान्य बातों के निष्कर्ष निकाल पाना कठिन हो जाता है । यह तो ऐसी बात है जिसमें अपनी भावनाओं को एकाग्र करके अन्तःकरण में प्रवेश करना पड़ता है तब कहीं सूक्ष्म स्पन्दन आत्मा की पकड़ में आते हैं । इस समय मैं कुछ उधेड़बुन में हूं, आपको कल उत्तर दूंगा ।' यह कहकर क्राइसे ने टेलीफोन रख दिया।

अगले दिन ठीक उसी समय प्रोफेसर, जो हालैण्ड से ५००० मील की दूरी पर अमेरिका में बैठे थे के टेलीफोन की घण्टी बजी और रिसीवर कान से लगाया तो पता चला कि क्राइसे बोल रहे हैं । उन्होंने बताया कि आपकी लड़की अस्पताल में थी, वहां से नहर के किनारे पर पहुंची और वहां एक बड़े कद की लाल कार खड़ी मिली । आपकी लड़की उसी में सवार होकर कहीं चली गई है । आप चिन्ता न करें, आपकी बेटी सकुशल है, छठवें दिन अपने आप आ जायेगी ।

छः दिन बीत गये तब तक उसका कोई पता न चला। प्रोफेसर साहब फोन के कमरे में गये, सोचा क्राइसे को फोन करके पूछें । पर जैसे ही चोंगा हाथ में लेकर सिर ऊपर उठाया तो देखते हैं कि लड़की सामने सोफे पर बैठी है । उन्होंने लड़की से पूछा कि वह कैसे गायब हुई ? लड़की ने जो कुछ बताया वह क्राइसे के कथन से शत-प्रतिशत मिलता-जुलता पाकर प्रोफेसर आश्चर्य में रह गये कि ऐसा संसार में क्या रहस्य है जिससे मनुष्य बिना किसी यन्त्र के भी सर्वदर्शी और सर्वव्यापी बन सकता है ?

एक बार एक स्त्री क्राइसे से पूछ बैठी— 'आप मेरे जीवन की कोई इतनी पुरानी घटना बताइए जब आप भी बच्चे रहे हों ?' इस पर क्राइसे ने बताया कि एक बार तुम अपनी सहेलियों के साथ खेत में घूमने जा रही थीं, तुम कंटीले तारों से सटी चल रही थीं । तुम्हारी एक सहेली ने धक्का दे दिया और तुम तारों में जा गिरीं, एक तार तुम्हारे पेडू में घुस गया, उसके घाव का निशान अभी तक तुम्हारे पेडू में है ।

महिला ने स्वीकार किया कि सचमुच यह घटना २७ वर्ष पूर्व तक की है जब वह स्वयं भी एक १२ वर्षीय बालिका थी । एक अतिमहत्त्वपूर्ण घटना क्राइसे के जीवन में १३ सितम्बर, १९६० को घटी जब एक पादरी क्राइसे से भेंट करने आए । पादरी ने भी एक खोए हुए लड़के के बारे में ही पूछा था । उसमें नवीनता की कोई बात नहीं थी, पर क्राइसे बताने लगे कि वह लड़का इस जंगल में एक साइकिल पर सवार हुए तेजी से जा रहा है और इतना कहकर वे एकाएक चुप-से हो गये, वे किसी विचार में डूब गये लगते थे । इस पर पादरी ने पूछा 'आप चुप क्यों हो गये ? कुछ और बताइए ।'

क्राइसे ने एक ठण्डी सांस ली और बोले— 'अब बताने को कुछ रहा नहीं । एक लम्बा-तगड़ा व्यक्ति उसका पीछा कर रहा था, उसके बाल बिलकुल काले हैं । थोड़ी दूर जाकर वह इस लड़के की हत्या करके उसे वहीं दफना देता है । उस दफनाए हुए स्थान की पूरी-पूरी जानकारी क्राइसे ने दी । इसके बाद लोग वहां गये तो पाया कि ठीक उसी समय उसकी हत्या करके उसी स्थान पर उसे दफना दिया गया था । पोस्टमार्टम की रिपोर्ट और क्राइसे की रिपोर्ट में कोई भी अन्तर नहीं था ।'

परामनोविज्ञान के शोधकर्त्ता डा० तनहैफ जो इन दिनों इस तरह की अतीन्द्रिय क्षमताओं के कारणों की शोध कर रहे हैं । एक बार क्राइसे को एक ऐसे स्थान पर ले गये जहां दूसरे दिन सभा आयोजित होने वाली थी । मंच तैयार हो गया था, दर्शकों के लिए कुर्सियां डाल दी गईं थीं । डा० तनहैफ एक कुर्सी के पास खड़े हो गये और पूछा— 'आप बता सकते हैं कि इस कुर्सी पर बैठने वाला कौन-सा व्यक्ति होगा ?'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस क्राइसे ने बताया—'इस पर एक महिला बैठेगी ।' फिर उसी स्त्री से सम्बन्धित अनेक बातें क्राइसे ने बतालाईं । वे सबकी सब रिकार्ड कर ली गईं । संयोग कि दूसरे दिन उस सीट पर एक महिला बैठी और आश्चर्य कि उसके सम्बन्ध में जितनी बातें बताई गई थीं महिला से पूछने पर उसने यह स्वीकार किया कि वे सारी बातें सही थीं । दरअसल क्राइसे को विश्व-ख्याति का माध्यम भी डाक्टर तनहैफ ही हैं ।

अब तो क्राइसे अनेक महत्त्वपूर्ण जटिल राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक समस्याऐं सुलझाने में मदद देते हैं यहां तक कि पुरातत्व विभाग वाले भी उनकी पूरी मदद ले रहे हैं । जोहान्सवर्ग विश्वविद्यालय के भूगर्भ शास्त्री डा० बालकौफ यूट्रेन को दक्षिणी अफ्रीका की कैनीवाल नामक गुफा से एक हड्डी का टुकड़ा मिला था । टुकड़ा बहुत पुराना लगता था, पर किसी भी सूत्र से उस सम्बन्ध में यह निर्णय नहीं हो पा रहा था कि किस युग से सम्बन्ध रखता है ? डा० तनहैफ की सिफारिश पर उन्होंने क्राइसे की मदद ली । क्राइसे ने वह हड्डी का टुकड़ा छूकर एक ऐसे युग की और दक्षिणी अफ्रीका के एक कबाइली संगठन की बातें बताईं जिनमें बलिप्रथा प्रचलित थी । वह टुकड़ा भी नरबलि का ही था । उन्होंने जिस जाति का नाम बताया पुरातत्व गवेषणा के अनुसार वह कथन बिलकुल सच निकले । क्राइसे की निम्न भविष्यवाणियों का इस देश के लिए विशिष्ट महत्त्व है—

'मैं देख रहा हूं कि पूर्व के अति प्राचीन देश (भारत) जहां साधु और सर्पों की पूजा होती है, वहां के लोग मांस नहीं खाते, ईश्वर भक्त और श्रद्धालु होते है । उनकी स्त्रियां पतिव्रता और कभी भी पतियों को तलाक न देने वाली होती हैं । वहां के लोग सीधे, सच्चे और ईमानदार होते हैं । उससे एक प्रकाश उठता आ रहा है, वहीं किसी ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ है जो सारे विश्व के कल्याण की योजनाऐं बनायेगा । इस बीच संसार में भारी उथल-पुथल होगी, भयंकर युद्ध होंगे, जिसमें कुछ देशों का तो अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा । वायु दुर्घटनायें इतनी अधिक होंगी कि लोग हवाई जहाज पर बहुत सीमित संख्या में चला करेंगे । उस व्यक्ति के पीछे सैकड़ों लोग जिनमें स्त्रियां बहुत अधिक संख्या में होंगी—चल रहे होंगे । वह सब लोग एक स्थान के न होकर सारे देश से इकट्ठे होंगे और आग जलाकर (यज्ञ) उसमें कोई सुगन्धित वस्तुऐं डालकर खुश होंगे । उसके धुऐं से वायुमण्डल शुद्ध होगा, तमाम संसार के लोग उधर देखेंगे और उसकी बात मानेंगे। सब राजनैतिक नेता एक मंच पर इकट्ठे होने को विवश होंगे । इन सब बातों का प्रमाण इसी शताब्दी के अन्त तक मिलने लगेगा और फिर सारा संसार एक सूत्र में बंधता चला जायेगा । उसमें सर्वत्र ही अमन-चैन होगी, कोई हिंसा न होगी, झूठ-फरेब के लिए कोई स्थान न रहेगा । दुष्ट-दुराचारियों और नारियों पर कुदृष्टि डालने वालों को सबसे अधिक दण्ड मिलेगा । लोग दूध अधिक पिया करेंगे, फूल-पौधों की संख्या बढ़ेगी, बड़ा ही सुन्दर लगने लगेगा ।

मात्र यूटोपिया नहीं, वास्तविकता

विश्व के मूर्धन्य कहे जाने वाले लेखकों में से कइयों ने वर्तमान में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर भविष्य की सुखद रूप रेखा तैयार की है, जिसे 'यूटोपिया' नाम दिया गया है । उसमें से अधिकांश ने सन् २००० के बाद आने वाले समय को सुख और शान्ति से भरा-पूरा बताया है एवं उज्ज्वल भविष्य के रूप में प्रतिपादित किया है, जिसे आज हम कुछ हद तक सत्य सिद्ध होते देख रहे हैं ।

ऐसे ही एक यूटोपियाकार हुए है ग्रीक के महान् दार्शनिक प्लेटो । उन्होंने सन् २००० के बाद के समय को '' रिपब्लिक '' नाम से अभिहित किया है । उनके अनुसार तब वैसे ही व्यक्ति, शासन-सत्ता का सूत्र-संचालन कर सकेंगे, जो पूर्णतया परमार्थम जीवन जिएंगे । वे लिखते हैं कि उन पर धर्म का अंकुश रहेगा, ताकि भटकने एवं सत्ता का दुरुपयोग करने का डर न रहे । उस समय मनुष्य जाति पूर्णतया सुख और शान्ति अनुभव करेगी । राज्य तन्त्र एवं धर्मतन्त्र एक दूसरे में एकाकार हो जायेंगे। बच्चों की पढ़ाई २० वर्ष की उम्र तक होगी । उसके बाद उनकी नैतिक चारित्रिक, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता को देखकर भविष्य में कुछ करने का निर्धारण होगा । इस आधार पर प्रतिभाशालियों का चयन होगा। जिनमें व्यवस्था बुद्धि की अधिकता एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना होगी, उन्हें संगठक के रूप में शिक्षण दिया जायेगा । शेष व्यापारी या किसान होंगे एवं सिपाही भी । प्रत्येक व्यक्ति को अध्यात्म विधा अपनाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनिवार्य हो जायेगा, यह मुख्य रूप से नैतिकता एवं चारित्रिक प्रखरता के रूप में होगी । ऐसी व्यवस्था बनाई जायेगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को परमार्थमय जीवन बिताने के लिए न्यूनतम पांच वर्ष का समय देना पड़ेगा यह उनका व्यावहारिक शिक्षण होगा । सभी वर्ण अपने-अपने दायित्व को भलीभांति पूर्ण करेंगे, और व्यावहारिक जीवन में साम्यवाद का वह स्वरूप प्रस्तुत करेंगे जो थोपा हुआ नहीं, अपितु स्वमेव धारण किया हुआ होगा, जिसके अन्तर्गत सामर्थ्य भर पुरुषार्थ एवं आवश्यकता भर लेने की नीति ही सर्वोपरि होगी ''एक प्रकार से यह ब्रह्मनिष्ठ लोकसेवियों की परम्परा के पुनर्जीवन की बात प्लेटो ने कही है ।

उनके अनुसार विवाह का आधार इन्द्रिय तृप्ति न होकर अधिक समर्थता अर्जित करना होगा । अधिकांश दम्पत्ति वैवाहिक जीवन में एक दूसरे को आगे बढ़ाने एवं प्रतिभा को निखारने का कार्य करेंगे । विवाह होगा, किन्तु बच्चे उत्पन्न करने में जल्दबाजी न करेंगे । विवाह की उम्र कम न होकर ३० से ३५ वर्ष की होगी जिसके अन्तर्गत नर एवं नारी की समान प्रगति ही मूल मुद्दा रहेगी ।

ऐसे ही एक अन्य यूटोपिया-लेखक इटली के थामस काम्पानेला हुए हैं । उन्होंने अपने जेल-जीवन के दौरान सन् १६०२ में एक उपन्यास लिखा ''ला सीटा दि सोल'' अर्थात् ''दि सिटी ऑफ दि सन्'' जिसमें उन्होंने सन् २००० के बाद की समाज व्यवस्था का एक रोचक मॉडल प्रस्तुत किया है ।

उन्होंने अपने सूर्य नगर के निवासियों को तीन श्रेणियों में बांटा है पान (शक्ति), सिन (ज्ञान) एवं मोर (प्रेम) अर्थात् वहां के निवासी इन तीनों गुणों से युक्त होंगे, जिसके कारण सूर्य नगर समस्त विश्व का आकर्षण केन्द्र बन जायेगा। यह अपने सद्गुणों और सत्प्रवृत्तियों की आभा-ऊर्जा समस्त विश्व में सूर्यवत् बिखेरेगा, जिसे अन्य देश ग्रहण कर प्रकाशवान बनेंगे । इसी उपन्यास में ए आगे लिखते हैं कि वहां के छोटे बच्चे तीन से सात वर्ष की उम्र में ही भाषा सम्बन्धी समस्त ज्ञान प्राप्त कर चुके होंगे । इस अवधि में ही उनके भविष्य की रूपरेखा बन जायेगी । इसके बाद ऋषि परम्परा के अनुसार सभी बच्चे नंगे पैर रहेंगे, जो सादगी एवं सज्जनता का प्रतीक होगा । अध्ययन के अन्तराल में स्वयं उपार्जन करेंगे । इसके दौरान ही उन्हें विज्ञान कृषि सम्बन्धी तकनीकी एवं कला सम्बन्धी भिन्न-भिन्न शिक्षा दी जायेगी ।'

सम्पत्ति व्यक्तिगत न रहेगी, अपितु सामूहिक होगी। लोग सामूहिकता का अर्थ न केवल समझेंगे अपितु अपनाऐंगे। न कहीं अनावश्यक धन संचय होगा न चोरी, न हत्या, न बलात्कार । न कहीं जेल होगी, न लोग प्रताड़ित किए जायेंगे । यह व्यवस्था थोपी हुई नहीं अपितु प्रायश्चित स्वरूप स्वमेव अपनाई गई होगी ?

सूर्य नगर में वंश चलाने की उसकी अपनी विशिष्ट शैली होगी । सन्तानोत्पादन के लिए उन्हीं माता-पिताओं को छूट मिलेगी, जो बच्चों में प्रसवपूर्व एवं बाद में सुसंस्कारों को डाल कर उन्हें महामानव के रूप में विकसित करने में समर्थ होंगे ।

इसी शृंखला में श्री एच.जी.वेल्स का भी नाम आता है । यों तो उनकी ख्याति आरम्भ में एक सामान्य उपन्यासकार से कोई बहुत अधिक नहीं थी और जैसा कि आम उपन्यासकारों को लोग सामान्य रूप में लेते और पढ़ते हैं, वैसा ही इनके साथ भी हुआ, पर समय के साथ जैसे-जैसे इनकी औपन्यासिक कल्पनाऐं मूर्तिमान होती गईं, वैसे-वैसे ही इनकी प्रसिद्धि उपन्यासकार से यूटोपिया लेखक के रूप में होने लगी । इनकी अन्य रचनाओं को फिर काल्पनिक न मानकर परिकाल्पनिक (हाइपोथेटिकल) माना जाने लगा और विशेष रुचि एवं महत्त्व को साथ पढ़ा जाने लगा ।

वे सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए अपनी बहुचर्चित रचना ''द टाइम मशीन'' से जिसमें उन्होंने १९वीं सदी से २१वीं सदी तक होने वाले वैज्ञानिक अविष्कारों, लोगों के रीति-रिवाजों में बदलाव एवं मानसिकता में परिवर्तन को स्पष्ट किया है । वर्तमान में घहराने वाले संकट के बादलों के छंटने एवं सुखद भविष्य के मानसून आने की एक झांकी भी उन्होंने प्रस्तुत की है । उनकी विश्व प्रसिद्ध रचनाओं में 'दि वार ऑफ दि वर्ल्ड', 'दि फूड ऑफ दि गॉड' आदि विशेष उल्लेखनीय है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९३३ में प्रकाशित होने वाले उपन्यास ''थिंग्स टू कम'' में विश्व-व्यवस्था की सुखद एवं शान्ति पूर्ण कल्पना की है, जिसमें बताया है कि उन्नीसवीं सदी विनाश एवं विश्व स्तर पर पतन का काल है । धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक कई खाइयां खोदी जायेंगी । इस सदी में ऐसा प्रतीत होगा, मानो सत्य, प्रेम, ईमान, भाईचारा, मानवता जैसे शब्द मात्र आडम्बर बन कर रह गये हैं । नैतिक दृष्टि से व्यक्ति इतना गिर जायेगा, जिसे पतित, पातकी की उपमा भी दी जा सके । विशेष रूप से नारी जाति को हीनता की दृष्टि से देखा जायेगा, किन्तु बीसवीं सदी के अन्तिम दस वर्षों से लेकर २०५४ तक विश्व व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन होगा । इसका केन्द्र बिन्दु होगा भारत एवं उस बदलाव से विश्व के सभी विकासशील देश प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे । उस समय व्यक्ति अध्यात्मिकता से नियन्त्रित होगा एवं विश्वव्यापी एकता, समता सम्वेदनशीलता का इतना विस्तार होगा, जिससे मृत्यु एवं विनाश के सभी साधन सदा के लिए समाप्त हो जायेंगे। तब विश्व एक परिवार के रूप में विकसित होगा एवं सीमाओं का बन्धन लोगों को विश्व बन्धुत्व से पृथक् नहीं रख सकेगा ।

'व्हेन द स्लीपर अवेक्स' उपन्यास में उन्होंने नायक के सन् १९०० में सघन निद्रा में सोने की कल्पना की है । तब परिस्थितियां पतन पराभव, विनाश, विग्रह एवं नैतिक व धार्मिक मूल्यों के असाधारण अवमूल्यन जैसी थी, किन्तु उसकी नींद २०० साल बाद खुली तो यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि परिस्थितियां सर्वथा बदल गईं । वह देखता है कि आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने वाले मनुष्य का झुकाव स्वर्गीय वातावरण उत्पन्न कर रहा है । हर व्यक्ति दैवी गुणों से सम्पन्न है । एक दूसरे को ऊंचा अपने आगे बढ़ाने का सत्प्रयास चल रहा है । युद्ध एवं विनाश के स्थान पर विश्व प्रेम एवं भाईचारा का अजस्त्र प्रवाह उमड़ रहा है । वैज्ञानिक आविष्कारों, साधनों का सदुपयोग विनाश से हट कर सृजन प्रयोजनों में हो रहा है, फलतः विकराल दीखने वाले संकटों, विपदाओं का निदान सहज ही मिल रहा है । व्यक्ति भौतिक प्रगति को नगण्य मानकर गुण परक विकास को अपना चरम लक्ष्य मान रहा है और आध्यात्मिकता की विरासत को ही अक्षुण्ण रखने में अपना गर्व-गौरव अनुभव कर रहा है, वह विरासत जिसको वर्षों पूर्व उनके पूर्वजों के पूर्वज ने इस संसार को धरोहर के रूप में प्रदान किया था ।

इसी प्रकार पुराण, महाभारत, जैसे भारतीय आर्ष ग्रन्थों की अलंकारिक शैली में ही अन्यान्य लेखकों ने अपने उपन्यासों में भविष्य की झांकी को प्रस्तुत किया है, जिसे आज हम काफी हद तक साकार होते हुए देख रहे हैं । सचमुच, अब तक हम सोए हुए ही तो थे, पर अब धीरे-धीरे हमारी तन्द्रा टूटती जा रही है । सन् २००० आने में अभी १० वर्ष की देरी है, तब तक हमारी खुमारी और हट जाय तो इसे आश्चर्य नहीं माना जाना चाहिए । और इसके ठीक सौ वर्ष बाद जब हम पूर्ण रूप से जग पड़ेंगे, तो उपन्यास के नायक का सपना सचमुच ही साकार हो उठेगा, जिसमें मनुष्य स्वयं को पूर्ण रूप से बदल कर मानव से महामानव और नर से नारायण बन कर इस धरती को ''स्वर्गादपि गरीयसी'' से महिमा मण्डित करेगा ।

भविष्य उज्ज्वल है

हमारे देश में, तथा अन्य देशों में भी समय-समय पर कुछ विशिष्ट महापुरुष ऐसे उत्पन्न हुआ करते हैं जो भविष्य में होने वाली घटनाओं को दिव्य दृष्टि द्वारा सैकड़ों, हजारों वर्ष पूर्व जान जाते है और लोक-कल्याण के उद्देश्य से उसे प्रकट भी कर देते है । इन भविष्यवाणियों में जो समय दिया जाता है वह प्रायः गुप्त संकेतों के रूप में होता है जिससे जन-साधारण में व्यर्थ का आतंक न फैले और केवल गुह्य विधाओं का अनुभव रखने वाले अथवा उनके खास अनुयाई उनको समझकर समयानुसार मार्गदर्शन का कार्य कर सकें ।

नीचे कुछ ऐसे ही द्रष्टाओं की भविष्यवाणियां दी जा रही हैं, जो वर्तमान के परिपेक्ष्य में कितनी प्रासंगिक और सारगर्भित हैं यह विचारणीय है—

मालिका की भविष्यवाणी

उड़ीसा प्रान्त में जगन्नाथ पुरी के पास कितने ही मठों में 'मालिका' नाम की एक प्राचीन पुस्तक मिलती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह पांच सौ वर्ष से अधिक पुरानी है और ताड़ के पत्तों पर लिखी गई है । कहा तो यह जाता है कि उड़ीसा में एक लाख मालिका की पुस्तकें हैं, पर इस समय जितनी पुस्तकों की जानकारी लोगों को है उनकी संख्या भी सैकड़ों है । ए सब महन्तों के अधिकार में हैं । वे इन पुस्तकों को बड़ी कोशिश से खास-खास व्यक्तियों को ही देखने देते हैं ।

मालिका की रचना बंगाल के प्रसिद्ध भगवद् भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के समय में हुई थी । उनके एक मित्र श्री अच्युतानन्द दास थे जिनको उड़ीसा में बहुत बड़ा योग और महात्मा माना जाता है । लोगों का यह भी विश्वास है कि अच्युतानन्द दास ने अपनी सब पुस्तकें योग शक्ति से लिखी हैं । इन्हीं में से एक ग्रन्थ में सतयुग से लेकर कलियुग तक अच्युतानन्द के अनेक जन्मों का भी वर्णन किया गया है । उड़ीसा में अच्युतानन्द दास की भविष्यवाणियों का बड़ा महत्त्व है और लोग उनके प्रति बड़ी श्रद्धा और विश्वास रखते हैं । उनकी भविष्यवाणियां वैसे तो बड़ी विस्तृत हैं जिनका विवरण एक बड़े ग्रन्थ में नहीं दिया जा सकता । पर उनका सारांश थोड़े शब्दों में नीचे दिया जाता है ।

"बाढ़ और युद्ध, अकाल और महामारी, भूचाल और विस्फोट इस युग की अनिवार्य घटनाऐं हैं । योरोप की प्रायः समस्त आबादी नष्ट हो जायेगी, और कुछ समय बाद अमरीका पानी में डूब जायेगा, अन्त में रूस सफलता प्राप्त करेगा । विजई रूस को आगामी अवतार वश में करेगा । भारतवर्ष में नीलांचल (जो जगन्नाथ पुरी के नाम से प्रसिद्ध है) समुद्र-गर्भ में विलीन हो जाएगा । यह एक नियम-सा हो गया है कि प्रत्येक युग के अन्त में भारत का एक हिस्सा डूब जाता है । त्रेता के अंत में लंका डूबी थी, द्वापर के अन्त में द्वारिका समुद्र में विलीन हो गई, और अब कलियुग का अन्त होते समय हिन्दू-धर्म का प्रधान तीर्थ जगन्नाथपुरी लोप हो जायेगी ।"

'मालिका' की भाषा और भविष्यवाणियों की शैली का एक नमूना भी देखिए--

ठावे-ठावे अनर्थ जे होइ बढ़ि वीर,
दिवस आंमार दिशु थिप अन्धकार॥ १ ॥
महा घोर अनर्थ जे होइ व संसार,
तेतिकि वेल कुलक्ष रखि थिवु वीर ॥ २॥
केहि जे काहारि होई न रहिवे मही,
अरजीला धन पर नेउ थिवे वो ही ॥ ३॥
घरे-घरे तातटि बाट पड़िव संसार,
दुर्बाद गाउ थिवे जे सुजन संगर ॥ ४ ॥
असुरान्त माने बड़चड़ बोलाइये,
खट जे खचु आमाने संसारे फेरिवे ॥ ५॥
श्री हरि महीमा जे अट दिव्य रस,
निगम वेलकु एका रहिवे मो दास॥ ६॥
पश्चिम दिगरु अनुकूल हेव जे वे,
निश्चय जणिव निकटटि हेव तेवे ॥ ७॥

बलरामजी गरुड़ जी को कलियुग का भविष्य बतलाते हैं कि-"हे वीर जब कलियुग के अन्त होने का समय होगा, तब जगह-जगह लड़ाई होगी और दिन में अन्धेरा दिखलाई पड़ेगा ॥ १॥ उतने ही समय में संसार में बड़ा भारी अनर्थ होगा, उसी समय को ध्यान में रखा ॥२॥ उस समय संसार में कोई किसी का न होगा, लोग दूसरे का धन लूटने को हमेशा तैयार रहेंगे ॥ ३॥ हर एक घर में किवाड़ (टट्टी) लग जावेगा । हर जगह भाग्य को कोसना और खराब बातें सुनाई पड़ेंगी ॥४॥ असुर प्रकृति वाले व्यक्ति बड़े आदमी (अमीर) बनकर पूज्य बन जायेंगे और लुटेरे संसार में स्वच्छन्द होकर फिरेंगे ॥ ५॥ श्री हरि का चरित्र अमृत है । उसके प्रभाव से अन्त समय में भक्त लोग ही बचेंगे ॥ ६॥ यह लूट-मार जब पश्चिम में शुरू होगी तब समझ लेना कि समय नजदीक आ गया है ॥ ७॥"

अगले दिनों धर्म फले-फूलेगा

महात्मा सूरदास के कुछ भजन बहुत ही प्रसिद्ध है, जिनमें उनने सतयुग का स्पष्ट संकेत करते हुए राम-राज्य आने की बात कही है ।

अरे मन धीरज क्यों न धरे ।
मेघनाद रावण का बेटा सो पुनि जन्म धरे ।
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन चहुं दिशि राज करे॥
अकाल मृत्यु जगमाहीं व्यापै परजा बहुत मरे।
दुष्ट-दुष्ट को ऐसा काटे जैसे कीट जरे ।
एक सहस्र नौ सौ के ऊपर ऐसा योग परे ।
सहस्र वर्ष लों सतयुग बीते धर्म की बेलि बढ़े॥
स्वर्ण फूल पृथ्वी पर फूले, पुनि जग दशा फिरे।
सूरदास यह हरि की लीला टारे नाहि टरे ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उक्त पद में संवत् १९०० के बाद संसार में परिवर्तन की चर्चा करते हुए कहा गया है कि इस महापरिवर्तन के पश्चात् संसार में धर्म की बेल बढ़ेगी और हजारों वर्ष तक सतयुग फले-फूलेगा ।

सूरदास दिव्य द्रष्टा थे उनने पिछले समय के कई सामयिक घटनाओं और परिवर्तनों का उल्लेख भी अपने पदों में किया है जो बाद में अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ ।

अरे, मन धीरज क्यों न धरे ।
एक सहस्र नौ सौ के ऊपर यह संयोग परै॥
मेघनाथ रावण का बेटा, पूरब जन्म धरै ॥
हिन्दू तुरक तेज को नासै जैसे कीट जरै। १॥
भूप उपाय करें सब मिलके टारे नाहि टरै। २॥
चारों धाम आनन्द में फेरे बहु विधि राज करै॥
बीसी रुद ह्वेमगति सारी ब्रह्म प्रकाश करै ॥ २॥
शुक्ल नाम संवत जब आवै छटि सोमवार परै ॥
फूटे फौज मलेच्छ राजा की दुन्दुभि सदा करै॥ ४॥
प्रजा राजानाश सवन सों देश मलिच्छ हरें ॥
दक्खिन फौज फेरि ब्रज आवे कछु दिन राज करै।
कछुक दिनन में ऐसी ह्वेए आपहि आप गिरै ॥
हलधर पुत्र परम सुख उपजे देहली छत्र फिरै॥ ५॥
अस्सी वरस को सतयुग होवे धरम की बेलि बढ़ै॥
नीति परम सुख आनन्द होए अमरन सुख उपजै।
सूरदास दोनी सो ह्वैवै काहे को सोच करै॥

अंग्रेजों के सत्ताच्युत होने की स्पष्ट भविष्यवाणी प्रस्तुत पद में की गई है । इसके अतिरिक्त मथुरा और दिल्ली पर सामयिक शासन का भी उल्लेख है ।

नवयुग आ रहा है

योगी अरविन्द की घोषणा है—"अब पुनर्संगठन का युग आ गया है । भारत की उन्नति का आरम्भ हो गया है विपत्ति की काली घटा जो भारत के गगन में मण्डरा रही थी, हट रही है । पूर्व आकाश में उषा का उज्ज्वल प्रकाश दिखाई पड़ रहा है । प्रकृति के गुप्त मन्दिर में सुन्दर दीपक सज्जित हो गया है, शीघ्र ही भगवान की आरती उतारी जायेगी । नवीनयुग के आरम्भ में धर्म, नीति, विद्या, ज्ञान इत्यादि अनेक प्रकार के आन्दोलन मनुष्य समाजों में अवतीर्ण हुए देखे जा रहे हैं, किन्तु यथार्थ सत्य का पता तब भी किसी ने नहीं पाया है । सबसे प्रथम भारतवर्ष ही इस सत्य का पता लगाने में समर्थ होगा । आज संसार में जिस नए युग का आविर्भाव होगा, जिस धर्म, सत्य, प्रेम, न्याय तथा एकता की भगवान ने पृथ्वी पर प्रतिष्ठा करने की इच्छा की है, यह वर्तमान मानव चरित्र के आंशिक परिवर्तन में सम्भव नहीं । आधुनिक मानव जाति के बीच कानूनी-बन्धन-विधान चलाने से काम नहीं चल सकता । एकवार काया पलट करनी होगी, पुराने संस्कारों से यह कार्य सिद्ध नही होगा,बाह्य जीवन में थोड़ा-सा परिवर्तन लाने से अथवा मनुष्य के कार्य परम्परा की धारा बदल देने से भी यह पूरा नहीं होगा । आवश्यकता इस बात की है कि यह पुनर्संगठन भीतर से आरम्भ होना चाहिए । मानव अन्तःकरण को एक दम नया आकार प्रकार धारण करना होगा । मन, प्राण और चित्त की वृत्तियों में पूर्ण रूप से परिवर्तन करना होगा । इस पार्थिव जीवन में ही देवता की लीला परिपूर्ण होगी । इसी महान संकल्प को लेकर हम साधना के मार्ग में अग्रसर होंगे । इसी की साधना से सिद्ध होकर भारतवर्ष नवयुग की स्थापना करेगा । उनके एक लेख में जिसका शीर्षक था 'संसार का उद्धार योगी करेंगे' और जो जुलाई १९४१ में 'सतयुग' में प्रकाशित हुआ था, उन्होंने कहा था—

"इस समय भारत का सबसे बड़ा काम यही है कि वह पूर्ण-योगी मनुष्यों को पैदा करे । इस समय संसार का भविष्य उन्हीं पूर्ण योगियों पर निर्भर है । भविष्य में भारत को जिस विपुल विराट कर्म का भार अपने ऊपर लेकर खड़ा होना पड़ेगा, उसकी सूचना स्वरूप सारे संसार में एक विचित्र विकास का होना आरम्भ हो गया है । आगामी तीस-चालीस वर्ष के भीतर संसार में एक विचित्र परिवर्तन होगा, सारी बातों में ही उलट फेर हो जायेगा । उसके बाद जो नवीन जगत तैयार होगा उसमें भारत की सभ्यता ही संसार की सभ्यता होगी । भावी भारत का काम केवल अपने ही लिए नहीं है वरन् समग्र संसार के लिए है । अतएव अब भारत को उन्हीं पूर्ण योगी मनुष्यों की तैयारी में लगना चाहिए जो इतने गुरुतर भार को सम्भाल सकने में समर्थ हों । योगियों के लिए सब कुछ सम्भव है । शिक्षा, समाज, राजनीति, शिल्प और वाणिज्य आदि सभी क्षेत्रों में योगियों की अपूर्व प्रतिभा एक विचित्र सृष्टि तैयार कर सकती है, यह

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निश्चय है। इस समय योगियों द्वारा ही संसार में एक नवीन परिवर्तन भगवान करना चाहते हैं, पूर्ण योगी पुरुषों द्वारा जो कर्म तैयार होगा वही भावी जगत का सच्चा आधार होगा । बुद्धिजीवी या हृदयजीवी मनुष्य, चाहे वे कितने ही बड़े नेता अथवा कार्यकर्त्ता क्यों न हो इस कार्य का भार नहीं सम्भाल सकेंगे । पूर्ण योगियों को पैदा किए बिना कभी भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता । आज उसी की साधना भी चल रही है ।

प्रसिद्ध महायोगी और आजीवन अध्यात्म की मशाल प्रज्ज्वलित रखने वाले महर्षि अरविन्द अतीन्द्रिय दृष्टा थे । वे लोगों की भविष्यवाणियां करने जैसे चमत्कारों को आत्म-कल्याण में बाधक बताते थे, इसलिए उन्होंने अनावश्यक भविष्यवाणियां नहीं कीं, पर लोगों को शक्ति और धैर्य दिलाने वाली भविष्यवाणियां उन्होंने कीं और वे सच निकलीं । सन् १९३९ में उन्होंने कहा था कि आठ वर्ष बाद भारत स्वतन्त्र हो जायेगा, पर शीघ्र ही वह टुकड़ों में बंट सकता है दोनों बातें सच निकलीं।

युग परिवर्तन के सम्बन्ध में उनकी भविष्यवाणियां बहुत महत्त्वपूर्ण हैं । एक बार उन्होंने श्री यज्ञशिक्षा मां से बड़ी आल्हादपूर्ण मुद्रा में बताया था—

'मेरे अन्तःकरण में दैवी स्फुरणाऐं हिलोरें मार रही हैं और कह रही हैं कि भारत का अभ्युदय बहुत निकट हैं । कुछ लोग इसे पश्चिमी सभ्यता का अनुयाई बनाने का प्रयत्न करेंगे, पर मेरा विश्वास है कि भारतवर्ष में एक अभियान प्रारम्भ होगा, जो यहां की असुरता को नष्ट करके फिर से धर्म को एक नई दिशा देगा और इस देश की प्रतिष्ठा, यहां के गौरव को बढ़ायेगा । यह आन्दोलन संसार में फिर से सतयुग की-सी सुख-सौम्यता लायेगा।'

उलट-पलट अवश्यम्भावी है

"भविष्य में भारत को जिस विपुल तथा विराट् कार्य का भार अपने ऊपर लेकर खड़ा होना पड़ेगा, उसकी सूचना स्वरूप सारे संसार में एक विचित्र प्रकाश का होना आरम्भ हो गया है । आगामी ३०-४० वर्ष के भीतर संसार में एक विचित्र प्रकार का परिवर्तन होगा, सारी बातों में उलट-पलट हो जायेगी । उसके बाद जो नया जगत तैयार होगा, उसमें भारत की सभ्यता ही संसार की सभ्यता होगी। भावी भारत का काम केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि समूचे संसार के लिए है ।"

—योगी अरविन्द घोष सन् १९१८

अब कलियुग का अन्त हो रहा है और जीर्ण शीर्ण विचारों का ध्वंस हो रहा है । अब वह समय आ पहुंचा जब कि उन्नति और विकास के कार्यों को आरम्भ किया जाय ठीक यही समय आने वाले सतयुग की तैयारी करने का है ।

—महात्मा अरविन्द घोष
(Yoga and Its Object पुस्तक से)

महाव्रत का उद्यापन

महाप्रभु जगतबन्धु ने कहा था—"कलियुग की अवधि पूरी हो चुकी, अब नवयुग का प्रकाश होगा और एक हजार वर्ष तक मेरी लीला चलेगी । इस बार सभी भगवान के नाम का अमृत चखेंगे । इस महाव्रत का उद्यापन इसी बीसवीं शताब्दी के भीतर पूर्ण रूप से हो जायेगा ।"

और भी अनेक महात्माओं ने यही विचार प्रकट किया है कि—इस समय जो पापकर्म, भ्रष्टाचार, अनैतिकता की वृद्धि हो रही है उसका कारण कलियुग समाप्त होकर एक श्रेष्ठ युग का आगमन होना ही है । जिस प्रकार दीपक बुझने के पहले एक बार जोर से भभक उठता है उसी प्रकार पाप-युग की समाप्ति होने से पहले एक बार वह अपना समस्त बल लगा कर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, जिससे बाह्य दृष्टि वालों को परिस्थिति और भी बिगड़ी जान पड़ती है । पर जिनको अन्तर्दृष्टि प्राप्त है वे ऐसे समय में और भी आशान्वित हो जाते हैं कि यह पाप-समूह अब जल्दी ही क्षीण हो रहा है और इसके पश्चात् धर्म-युग का प्रकाश बिखरेगा । यह भी आशा की जा रही है कि चूंकि इस समय संसार के अधिकांश देश भौतिकवाद के पीछे भाग रहे हैं, केवल भारत में ही प्राचीन काल के अध्यात्म ज्ञान के कुछ अवशेष बाकी हैं, इसलिए आधुनिक युग में दैवी प्रकाश यहीं से विकीर्ण होगा ।

विश्व की संचालन शक्ति

महर्षि रमण का आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत ऊंचा स्थान था । देश और विदेशों के जिज्ञासु उनके ऊंचे अरुणाचल पर्वत के छोटे से आश्रम में पहुंच कर आत्मोन्नति के सम्बन्ध में मार्ग दर्शन ग्रहण किया करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थे । महर्षि कभी सांसारिक बातों की तरफ ध्यान नहीं देते थे और ऐसा प्रसंग छेड़े जाने पर भी वर्तमान घटनाओं पर भली या बुरी सम्मति नहीं प्रकट करते थे । जब 'पाल ब्रैंटन' नामक प्रसिद्ध अंग्रेज अध्यात्मवादी लेखक ने साहस करके उनसे प्रश्न किया कि ''क्या महर्षि कृपा करके संसार के भविष्य के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करेंगे, क्योंकि हम लोग बड़े संकटपूर्ण समय में होकर गुजर रहे हैं'' तो उन्होंने कहा—

''तुम भविष्य की चिन्ता क्यों करते हो ? तुमको तो वर्तमान समय का हाल भी ठीक तरह मालूम नहीं है । तुम वर्तमान समय को सम्भालो भविष्य अपने आप ही ठीक बन जायेगा ।''

यह उत्तर पाल ब्रैंटन के लिए एक फटकार की तरह था । पर वह विदेशी अखबारों का 'सम्वाददाता' सहज में चुप होने वाला नहीं था । उसने कुछ घुमाकर फिर पूछा—''क्या संसार में पारस्परिक मित्रता और सहयोग का युग शीघ्र आरम्भ होगा ? अथवा वर्तमान दुनिया आपस में लड़-झगड़ कर अन्धकार के गर्त में जा गिरेगी ?''

महर्षि को ऐसा प्रश्न पसन्द नहीं आया, तो भी उन्होंने कहा—''इस संसार पर एक महान् शक्ति शासन करती है और यह उसका काम है कि वह उसकी देख भाल करे । वह, जिसने कि इस संसार को जीवन प्रदान किया है, इस बात को अच्छी तरह जानता है कि इसे किस तरह पालना चाहिए । इस संसार का भार उसी के ऊपर है, तुम्हारे ऊपर नहीं ।''

पाल ब्रैंटन फिर भी हठ करता रहा और उसने कहा कि संसार की दशा इस समय जैसी कठिन होती जा रही है, उससे यह प्रकट नहीं होता कि वह विश्व-संचालक इस संसार के हित का कुछ विशेष ध्यान नहीं रखता है । पर महर्षि ने इसके सिवा कुछ नहीं कहा कि ''जैसे तुम हो वैसा ही संसार भी है । अगर तुम अपने को नहीं समझ सकते तो संसार को समझने से क्या लाभ हो सकता है ?'' उनका आशय यही था कि जब संसार के मनुष्य स्वार्थ-साधन में ही संलग्न हैं और लाखों उपदेश सुन कर भी सत्य-मार्ग पर नहीं आते तो विश्व-संचालक शक्ति कर्मों का यथोचित फल देकर ही उनको सही रास्ते पर लायेगी ।

मंदिर जन-जागरण के केन्द्र बनेंगे

स्वामी विवेकानन्द ने अपने मद्रास प्रवास में दिए गये भाषण में ओजपूर्ण शब्दों में कहा था कि भारत का भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल है । ''भारत का भविष्य'' शीर्षक से प्रकाशित ''भारत में विवेकानन्द'' (श्री राम कृष्ण आश्रम नागपुर) पुस्तक में स्वामी जी कहते हैं कि ''इस महान राष्ट्र की अवनति व पतन की कथा—गाथा से भरे भूतकालीन इतिहास में ही भविष्य के भारत रूपी वृक्ष का अंकुर छिपा पड़ा है । उस शक्तिधर ऊर्ध्व मूलम् वृक्ष का निकलना प्रारम्भ हो चुका है । आने वाले वर्षों में शास्त्र ग्रन्थों में आध्यात्मिकता के जो रत्न विद्यमान हैं वे मठों में छिपे पड़े हैं, बाहर निकलेंगे । जन-जन तक इस व्यावहारिक अध्यात्म को पहुंचाया जायेगा । चाहे व्यक्ति संस्कृत जाने या न जाने पर ऐसी जन सुलभ भाषा में, बोलचाल की भाषा में उन विचारों को जन-जन तक पहुंचाना होगा जो युगान्तरकारी होंगे । संस्कृत का भी भली-भांति प्रचार-प्रसार होगा एवं वह विश्व भाषा बनेगी । ज्ञान नहीं, संस्कार ही शिक्षा के मूल होंगे एवं व्याप स्तर पर संस्कारों की शिक्षा हेतु केन्द्र खुलेंगे ।

''भविष्य में जो सतयुग आ रहा है, उसमें ब्राह्मणेतर सभी जातियां फिर ब्राह्मण रूप में परिणत होंगी । ब्राह्मणत्व का अर्थ होगा मनुष्यत्व का चरम आदर्श । आने वाला युग एकता का—समता का होगा । न कोई छोटा होगा, न बड़ा । उसे आध्यात्मिक साम्यवाद भी कहा जा सकता है ।''

''हर बड़े स्थान पर हमें मन्दिरों की आवश्यकता होगी। ए मन्दिर ही शिक्षण-संस्था की भूमिका निभायेंगे। हर मन्दिर चाहे वह अति पुरातन हो या नवीनतम धार्मिक प्रचारक तैयार करेगा जो लौकिक ज्ञान का भी शिक्षण लेंगे । सारे भारत में नव निर्माण के ऐसे जाग्रत केन्द्र बीसवीं सदी के अन्त तक बन कर तैयार हो जायेंगे। युवकों से मुझे बड़ी आशा है । वे ही, इस योजना को कार्य रूप में परिणत करेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पृथ्वी ईश्वर की होगी

बंगाल की '**अरुणाचल मिशन**' नामक संस्था की स्थापना करने वाले **ठाकुर दयानन्द** ने अपने एक उपदेश में कहा था--

''**आगामी युग में यह पृथ्वी मानवों की नहीं ईश्वर की होगी** । इसे ईश्वर का उत्तराधिकार समझ कर ही रखना होगा । सारी दुनिया एक पूर्ण वस्तु की तरह सारे मानव-समाज को दे दी गई है । प्रत्येक व्यक्ति पिता के घर में उसकी सम्पूर्ण जागीर (विश्व) का सम्मिलित उत्तराधिकारी और जिम्मेदार है । इस तरह विश्व की सम्पत्ति को एक वर्ग, दूसरे लोगों को वंचित रख कर, नहीं हड़प सकता । तब इस तरह एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का, एक जाति द्वारा दूसरी जाति का, एक देश द्वारा दूसरे देश का शोषण नहीं होगा । पिता ने जो दिया है, उसका प्रत्येक व्यक्ति को यथार्थ आवश्यकतानुसार वितरण हो जाना चाहिए ।

''संसार के सभी देश, संसार के सभी लोग एक संघ में संगठित हो जायेंगे । प्रत्येक देश उस संघ का समान और स्वतन्त्र इकाई (यूनिट) होगा । प्रत्येक देश पहले अपने हर एक देशवासी की भौतिक, आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति के लिए उत्तरदाई होगा । प्रत्येक इकाई स्वतन्त्र व्यक्तियों का संघ होगा जो समान अधिकार, स्वतन्त्रता और सुविधाओं का उपभोग करेंगे तथा जिनमें किसी प्रकार का कोई विभेद नहीं होगा ।

''इकाई-संघ (यूनिट यूनियन) का प्रधान उत्तरदायित्व प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति करना होगा । प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, इकाई-संघ से अपने जीवन की आवश्यक चीजें, अपने अधिकार से ही प्राप्त कर सकता है । इसके बदले इकाई-संघ प्रत्येक व्यक्ति से उसके द्वारा की जा सकने वाली उच्चतम सेवा प्राप्त करेगा ।''

इसी प्रकार 'बहाई' समाज के संस्थापक महात्मा बहा और उनके उत्तराधिकारियों ने पिछले सौ वर्षों में लगातार यह प्रयत्न किया है कि पृथ्वी के सब निवासी पारस्परिक मतभेदों और लड़ाई-झगड़े के कारणों को त्याग कर एक विश्व-समाज, विश्व राज्य की स्थापना करें और उसके अनुशासन में सब अत्यन्त प्रेमपूर्वक रहने लगें । इन उपदेशों का सारांश 'सतयुग' (मासिक-पत्र) के एक लेख में इस प्रकार दिया गया था--

''संसार में इस समय को जो भयंकर परिवर्तन, अव्यवस्था दिखाई पड़ रही है, उससे चिन्तित नहीं होना चाहिए । संसार इस समय एक पुराने युग को छोड़ कर नए युग में प्रवेश कर रहा है, इसलिए ऐसी क्रान्ति होना अनिवार्य ही है । क्रान्ति और अव्यवस्था युग-परिवर्तन की निशानी होती है । जब एक युग मृत्यु के मुख में विलीन होने लगता है और नया युग कर्मक्षेत्र में प्रवेश करता है तो दोनों में तुमुल संघर्ष होना स्वाभाविक ही है ।

उपासना पद्धति एक होगी

बुन्देलखण्ड केसरी महाराज छत्रसाल के गुरु योगी प्राणनाथ ने भी युग परिवर्तन के सम्बन्ध में काफी कुछ लिखा है । उन्होंने भगवान की शक्तियों के द्वारा युग-परिवर्तन की चर्चा करते हुए इसका समय संवत् २००० के आसपास बताया है--

विजयाभिनन्दन बुद्धजी, और निष्कलंक इत आय।
मुक्ति देसी सबन को, मेट सबै असुराय ॥
एक सृष्टि धनी भजन एकै, एक ज्ञान, एक आहार।
छोड़ बैर मिलै सब प्यार सों, भया जगत में जैजैकार॥
कहा जमाना आबसी झूठा और नुकसान ।
यार असहाव होसी कतल, तलवार उठसी सब जहान॥
अक्षर के दो चश्मे, नहासी नूर नजर ।
बीसा सौ बरसें कायम होसी बैराट सचराचर ॥

प्राणनाथ जी का यह भी कहना है कि बीसवीं शताब्दी में जब यह युग-परिवर्तन का कार्य पूर्ण हो जायेगा और एक विराट (विश्वव्यापी) दैवी विधान समस्त देशों में व्याप्त हो जायेगा । तब विभिन्न मतमतान्तरों की द्विविधा मिट कर सब लोग एक ही परब्रह्म को स्वीकार करेंगे, एक ही उपासना पद्धति पर चलेंगे, एक-सी मान्यताऐं होंगी और रहन-सहन, खान-पान में ही एकता पैदा हो जायेगी । उस समय आपस की फूट, बैर का अन्त हो जायेगा, सब सद्भावपूर्वक रहते हुए दैवी-जीवन व्यतीत करने लगेंगे । यही आदर्श आजकल संसार के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्त अध्यात्मवादी विद्वान स्वीकार कर रहे हैं और इसी का प्रचार किया जा रहा है ।

पंजाब में एक प्राचीन कहावत गुरु नानक के नाम से प्रसिद्ध है कि—'जब आवे संवत बीसा, तो ईसा रहे न, मूसा ।' इसका आशय यही है कि बीसवीं सदी में मुसलमान और ईसाइयों में ऐसा भयंकर युद्ध होगा कि दोनों की अत्यन्त बर्बादी हो जायेगी ।

राधास्वामी सम्प्रदाय के प्रधान गुरु स्वामी ब्रह्मशंकर (हजूर महाराज) ने कहा है कि—''निकट भविष्य में ही दैवी क्षेत्र में से आध्यात्मिक लहरें हमारी पृथ्वी पर आधिपत्य जमाने वाली है । इस समय हम जितनी आपत्तियों को अनुभव कर रहे हैं वे सब गायब हो जायेंगी और सतयुग से भी बढ़ कर प्रेम, आनन्द और कल्याण की दशा सर्वत्र व्याप्त हो जायेगी । जो आत्मिक शक्तियां इस समय छिपी पड़ी हैं, तब वे बहुत कुछ प्रकट हो जायेंगी।''

महान आध्यात्मिक क्रान्ति

महात्मा तिश्वरंजन ब्रह्मचारी ने श्री शास्त्रीजी के प्रधानमन्त्री होने की भविष्यवाणी करते समय दुःख के साथ कहा था—

'शास्त्रीजी थोड़े समय प्रधानमन्त्री रहेंगे, उनकी मृत्यु भारतवर्ष से बाहर होगी । उसके बाद एक महिला प्रधानमन्त्री होगी । इन दिनों देश में व्यापक उतार-चढ़ाव आयेंगे पर उनमें उल्लेखनीय एक घटना होगी—देश में एक महान आध्यात्मिक क्रान्ति । इस क्रान्ति का संचालन यद्यपि मध्यभारत से ही होगा, पर उसका सम्बन्ध भारतवर्ष के हर प्रान्त में होगा । उत्तर और दक्षिण भारत को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का यश इस नई क्रान्ति के संचालक ही प्राप्त करेंगे । कुछ दिनों में भारतवर्ष नए आदर्शों की स्थापना करेगा जिन्हें सारी दुनियां के लोग मानेंगे । आगे प्रतिद्वन्दिता रुपये-पैसे, पद-प्रतिष्ठा की न होकर इस बात की होगी कि कौन मनुष्य कितना सत्यनिष्ठ, कितना ईमानदार और कितना दानी, सेवाभावी, परिश्रमी और साहसी है ।

स्मरण रहे कि ब्रह्मचारी जी ने पूर्वी पाकिस्तान में जल प्रलय की भविष्यवाणी की थी । उनकी कई भविष्यवाणियां आगे प्रस्तुत हैं— जैसे भारतवर्ष को भी वैसी जलप्रलय अथवा भूकम्प का सामना करना पड़ेगा। उसे चीन और पाकिस्तान के संयुक्त युद्ध का सामना करना पड़ सकता है, इसके बावजूद भी भारतवर्ष उन्नति करेगा और १९९२ के बाद उसको अमेरिका और रूस से बढ़कर प्रतिष्ठा मिलेगी । विश्वयुद्ध से संसार को बचाने का श्रेय भारतवर्ष को मिलेगा ।

भगवत सत्ता का अवतरण हो चुका

'होलिंग लाइफ' के सम्पादक पादरी जान मेलार्ड ने भी युग परिवर्तन का समर्थन करते हुए लिखा है—

'आज संसार की समस्यायें इतनी जटिल हो गई हैं कि उन्हें मानवीय बुद्धि और बल पर सुलझाया नहीं जा सकता । विश्व-शांति अब मनुष्य की ताकत के बाहर हो गई है तथापि हमें निराश होने की बात नहीं क्योंकि ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि भगवान धरती पर आ गया है और वह अपनी सहायक शक्तियों के साथ नवयुग स्थापना के प्रयत्नों में जुट गया है । उसका बौद्धिक और आत्मिक क्षमता उसके अपने आप अवतार होने की बात स्पष्ट कर देगी । वह दुनियां का उद्धारक देर तक पर्दे में छिपा नहीं रह सकता ।'

डब्ल्यू० ई० ओरचार्ड ने भी अपना मत ऐसे ही व्यक्त करते हुए लिखा है—'इजराइल के निवासी जिस प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं वह धरती पर आ गया है और अब उनके दुःखों के साथ सारे संसार से दुःखों का अन्त होने वाला है । भगवान अपनी सृष्टि में अमंगल, अन्याय, अत्याचार नहीं रहने देते, आज वे इस सीमा तक बढ़ गये हैं कि उन्हें व्यक्त होना ही पड़ेगा।'

स्वामी असीमानन्द का कथन है—'मुझे इस समय भगवान की अनुपम सत्ता प्रसारित होती जान पड़ती है। वह दिन समीप है जब सारे संसार में प्रेम, समता और भ्रातृभाव की भावनायें गूंज उठेगी । कलियुग का अन्त होकर एक नए युग का श्रीगणेश होगा और युगों की शृंखला का नया क्रम शुरू हो जायेगा ।'

ओरेकल का निष्कर्ष

कैलीफोर्नियां (अमरीका) की रैण्ड कारपोरेशन ने ''इलेक्ट्रॉनिक ओरेकल'' नामक एक ऐसी मशीन बनाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है जो अब तक की ऐतिहासिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक जानकारियां के आधार पर भविष्यवाणी करती है । यह जानकारियां इन यन्त्र में लगे सैकड़ों कम्प्यूटरों में इलेक्ट्रॉनिक रूप में भरी गई हैं । इस मशीन द्वारा की गई अधिकांश भविष्यवाणियों सत्य निकलती हैं । ''ओरेकल'' का विचार है १९८५ के आस-पास पृथ्वी में एक बहुत बड़ी विचार क्रान्ति होगी जो संसार की वर्तमान परिस्थितियों में तीव्र परिवर्तन लायेगी । इस विचार क्रान्ति की रूपरेखा बताने में मशीन ने असमर्थता प्रकट की है ।

नव-युग का मार्ग संकटों में होकर ही है

मेहर बाबा ने आने वाले विश्व-संकट और नव-युग पर जो स्पष्ट विचार प्रकट किए हैं वे अवश्य विचारणीय है—

''विश्व का तूफान जो पिछले समय में भीतर ही भीतर उमड़-घुमड़ रहा था, अब मानो फट कर बाहर निकल पड़ा है, और वह अन्तिम सीमा पर पहुंचते ही विश्व-व्यापी दुर्घटना में परिणत होगा । भौतिक सुख की खींचातानी ने मनुष्यों को स्वार्थान्ध बना कर पारस्परिक विरोध को भड़का दिया है ।

''इस समय संसार अंधकार और प्रकाश की महान शक्तियों के संग्राम का अनुभव कर रहा है । एक ओर स्वार्थी मनुष्य है जो सुख और अधिकार प्राप्ति की पाशविक इच्छाओं की पूर्ति के लिए बेलगाम लालच और बेजोड़ द्वेष लिए अन्धे की तरह आगे बढ़ रहा है । कर्त्तव्यता के अज्ञान से आदमी सभ्यता के नीच-तम स्तर तक पहुंच गया है । स्वार्थ और अज्ञान के बन्धनों में बंधे हुए लोग अपने दैवी ध्येय को भूल गये हैं । दूसरी ओर थोड़े ऐसे लोग भी हैं जो सहनशीलता, वीरता और स्वार्थ त्याग से अपनी शिवात्मा को प्रकट करते हैं ।

''आज के दुःखदाई संघर्ष और उससे उत्पन्न होने वाले कष्टों से जिस नवीन मानवता का निर्माण होगा, उसमें भौतिक ज्ञान और उससे निर्मित व्यवहारोपयोगी साधनों को तुच्छ नहीं माना जायेगा । भौतिक ज्ञान को अध्यात्म विरोधी मानना गलती है । भलाई और बुराई का आधार तो उस भौतिक ज्ञान के उपयोग करने के ढंग पर निर्भर है । जिस प्रकार कला के उचित प्रयोग से अध्यात्म-जीवन प्रकट होता है उसी प्रकार भौतिक शास्त्र का यही उपयोग भी अध्यात्म जीवन को प्रकट करने में सहायक हो सकता है । अब वह समय बहुत समीप आ गया है जब मनुष्य इस तथ्य को समझ कर दैवी मार्ग पर चलने की कोशिश करेंगे और संसार में एक नए युग का प्रकाश दिखाई पड़ने लगेगा ।''

सृजन से पूर्व ध्वंस अवश्य सम्भावी है

हरियाणा के प्रसिद्ध संत बांगड़ ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

सम्वत बीसा द्वौ बीसा कूं असा जोग अनौखा आवै सै,
नौ ग्रह मिलसी एक रास पर गुरुदशा बिचलावै सै।
राजा प्रजा को घणा दुःखनूं सौ, कोहराम मचावै सै।
पढ़सी विकट अकाल वाद सूं अनावृष्टि दिखलावै है,
धरती फटै, आकाश टूटि के महानास सपह्लवै है ।
असा बखत नो ज्योति प्रगटवा सबकी राह यह दिखावै है
वह बांगड़ की बात झूट ना कतै कणै हवै पावै है।
लइसी रयाख्या गोरा तुरकां राजराजाना धणी धणी
तुरक तवारा मिटसी रेखी अमरीसा छेट छणी
उसै जंगड़ी नग चबारा धरणी कोय देखावणी
दुःख सर दुःख पावसी दुनिया धुन्ध कोणली पावै सै ।

अकबर के समकालीन इन महान सन्त का उल्लेख 'फरजान-ए रशीदी, पुस्तक में भी मिलता है । उपयुक्त छन्द में जो स्थितियां बताई गई हैं, उनकी संगति वर्तमान परिस्थितियों से बहुत मिलती-जुलती है । लोकश्रुति के रूप में प्रचलित यह पंक्तियां कई पुराने लोगों को कंठाग्र हैं और ''फरमान ए रशीदी'' में भी सन्त बांगड़ की इसी तरह की भविष्यवाणियां मिलती हैं । इस छन्द का अर्थ इस प्रकार हैं, सम्वत् २०४० (बीस-द्वौ बीसा) को ऐसा विचित्र संयोग पड़ने वाला है, जिसके कारण दुनियां पर अगणित आपदाऐं और भयंकर विपदायें आयेंगी । इस तरह की सम्भावना उस समय प्रत्यक्ष होने लगेगी जब नौ ग्रह एक ही राशि में स्थित होंगे तथा फाल्गुन मास में पूर्ण सूर्य ग्रहण होगा (उल्लेखनीय है कि १६ फरवरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को पड़ा सूर्य ग्रहण फाल्गुन मास में ही था, तथा नौ ग्रह भी अगले दिनों सूर्य के एक सीध में आ रहे हैं) इस योग से शासन चलाने वालों के साथ-साथ जनता को भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा । अकाल अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, उल्कापात आदि प्राकृतिक विपदाओं के अतिरिक्त विभिन्न देशों में युद्ध की भी सम्भावना है । अंग्रेज (गोरा) और तुरका (मुस्लिम) राष्ट्रों के बीच संघर्ष की पूरी-पूरी सम्भावना संत बांगड़ ने बताई है । मनुष्य कृत उत्पातों और प्राकृतिक विपदाओं के कारण कई देशों के तहस-नहस हो जाने तथा जन-जीवन के बुरी तरह अस्त-व्यस्त होने की बात उपयुक्त पंक्तियों में स्पष्ट की गई है ।

पटना की **''खुदा बख्श ओरियण्टल लाईब्रेरी''** में फारसी कसीदों (कविता) की पुस्तक है, जो बुखारा के सुप्रसिद्ध सन्त शाह नियामतुल्लाबल्लीसाहब की लिखी हुई है । इस पुस्तक में उन्होंने लिखा है, जापान और रूस में युद्ध होगा (१९०४ में रूस और जापान में युद्ध हुआ था) । जापान में भयंकर भूकम्प आएगा (१९२३ में भूकम्प आया) । प्रथम विश्व युद्ध में अलप (अंग्रेज) और जीम (जर्मन लड़ेंगे उसमें अंग्रेज जीतेंगे पर युद्ध में एक करोड़ इकतीस लाख व्यक्ति मारे जायेंगे (ब्रिटिश कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार सचमुच इस युद्ध में एक करोड़ तीस लाख लोगों की मृत्यु का विवरण दिया गया है) जर्मनी दो भागों में बंट कर आपस में तनावपूर्ण स्थिति में आ जायेंगे । द्वितीय विश्व युद्ध में जापान पर बम विस्फोट की-भविष्यवाणी भी सच निकली इस तरह उनकी एक भी भविष्यवाणी अभी तक गलत नहीं हुई है।

भारत के प्रसंग में बली साहब ने लिखा है, कि मुसलमानों के हाथ से यह मुल्क विदेशियों के हाथ चला जायेगा, फिर हिन्दू मुसलमान मिलकर उनके खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे । विदेशी यहां से चले तो जायेंगे पर हिन्दुस्तान को टुकड़ों में बांट जायेंगे । दोनों ही देश बन जायेंगे और परस्पर इतनी शत्रुता बढ़ जायेगी कि दोनों में युद्ध का तनाव तब तक बना रहेगा जब तक मुसलमान भू-भाग पूरी तरह पराजित नहीं हो जायेगा ।

तृतीय विश्व युद्ध के सम्बन्ध में बली साहब ने लिखा है, यह युद्ध बड़ा भयंकर होगा । श्वेत जातियां बहुत कमजोर पड़ जायेंगी । भारत का अभ्युदय एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में हो जाएगा, पर उसके लिए उसे बहुत कठोर संघर्ष करने पड़ेंगे । देखने में यह स्थिति कष्टकारक होगी, पर इस देश में एक फरिश्ता आयेगा जो हजारों छोटे-छोटे लोगों को इकट्ठा करके उनमें इतनी हिम्मत पैदा कर देगा कि वही नन्हें-नन्हें लोग ऐसी परिस्थितियां पैदा कर देंगे जिससे संसार में सीधे-सच्चे लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और अमन चैन फैलता चला जाएगा ।

मिश्र की एक बहुत प्राचीन मीनार पर एक भविष्य वाणी अंकित है जिसमें कहा गया है कि चौदहवीं सदी बीत जाने पर (हिजरी सन् के अनुसार चौदहवीं सदी अब बीत चुकी है) कयामत आयेगी अर्थात् भीषण विनाश और संघर्ष उत्पन्न होगा इसी मीनार पर जल्द ही एक नया जमाना आने की बात भी लिखी है जिसस सत्य ही धर्म होगा, न्याय ही कानून होगा, सारी पृथ्वी के लोग एक परिवार की तरह रहेंगे तथा कोई किसी से बैर-भाव नहीं रखेगा। सब ओर सुख शांति रहेगी । किन्तु इससे पहले भयंकर युद्ध अकाल और प्राकृतिक प्रकोप इतने सघन होंगे कि संसार की आबादी का एक बड़ा भाग नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। इस नए युग का आरम्भ थोड़े से लोगों के द्वारा किए जाने की भविष्यवाणी भी उस मीनार पर अंकित है ।

अनौचित्य को उलटने को तत्पर दैवी चेतना !

अमेरिका के सुप्रसिद्ध दार्शनिक कोर्लिस लेमोन्ट ने अपनी कृति ''द इल्यूजन ऑफ इम्मौर्टलिटी'' में 'कैन गॉड सेव द सिचुएशन' नामक शीर्षक से विस्तारपूर्वक लिखा है । उनका कहना है कि मनुष्य सृष्टि में असंतुलन पैदा कर सकता है और बीसवीं शताब्दी में उसने किया भी है, पर उसके सुधार की बात अब उसे सूझ रही हो, ऐसी आशा बंधती दीखती नहीं । पिछले दिनों अणुआयुधों के निर्माण से लेकर वातावरण बिगाड़ने तक, प्रकृति को रुष्ट करने से लेकर स्वयं चिन्तन चेतना में, क्रिया-कलापों में, विकृतियों की भरमार को कार्य तो उसने पूरे कर लिए, परन्तु प्रतिफल जब अकालमृत्यु के रूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में सामने आया तो, किंकर्तव्य-विमूढ़ हो अदृश्य सत्ता की ओर ताकने लगा है । उनके अनुसार प्रस्तुत समय की विषम-परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में मात्र परमात्मसत्ता ही सहायक सिद्ध हो सकती है । मनुष्य की शक्ति, क्षमता और प्रतिभा एक सीमित दायरे में थोड़ा बहुत अपना चमत्कार प्रस्तुत कर सकती है, किन्तु विस्तृत भू मण्डल की परिस्थितियों का नियन्त्रण करना तो दूर, उनकी सूक्ष्मता को समझना भी मुश्किल है । फिर समूचे ब्रह्माण्ड की स्थिति को समझना तो उसकी शक्ति से सर्वथा परे है ।

ब्रिटेन से विख्यात खगोल भौतिकी विशेषज्ञ सर जेम्स जीन्स ने अपनी पुस्तक 'द वर्ल्ड अराउण्ड अस' में इसी तरह के उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा है कि ''संकट की जिन घड़ियों से हम गुजर रहे हैं, उसमें सुधार-परिवर्तन कर सकना मात्र अदृश्य सत्ता के द्वारा ही सम्भव है । हममें से हर कोई जब अपनी, अपने परिवार-परिकर की समस्याओं को समझने, सम्भालने में विफल रह रहा हो, तो सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाले पृथ्वी सहित अगणित ग्रहगोलकों को नियन्त्रित कर सकना तो दूर उनकी पूर्ण जानकारी भी नहीं रख सकता । मनुष्य की शक्ति-सामर्थ्य इसका अनुमान नहीं लगा सकती । संसार की भली-बुरी परिस्थितियों को जान सकना उनमें सुधार-परिवर्तन कर सकने की क्षमता उसी अदृश्य समर्थ सत्ता में है, जिसे 'डिवाइन माइण्ड' के नाम से पुकारा गया है । अब हमें उसी का आश्रय लेना होगा और तदनुरूप प्रयत्नशील होने के लिए अपनी मानसिक चेतना को अत्यधिक पवित्र, प्रखर एवं परिष्कृत बनाना होगा । आसन्न संकटों को तभी टाला और सुख शान्ति का वातावरण विनिर्मित किया जा सकता है ।''

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ० राबर्ट एच० स्कूलर का कथन है कि संसार की बढ़ती हुई समस्याओं और विभीषिकाओं के दुष्परिणामों को देखकर आज का अधिसंख्य बुद्धिजीवी और वैज्ञानिक समुदाय ईश्वरीय सत्ता की महत्ता और जीवन में उसकी भागीदारी की अनिवार्यता में गम्भीरतापूर्वक आस्था प्रकट करने लगा है । अब यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि दैवी सहायता के बिना न तो बिगाड़ को सुधारा जाना सम्भव है और न मानवी सभ्यता को संरक्षित रखा जाना ही । ईश्वर की स्वसंचालित प्रक्रिया ही समस्त विग्रहों को समाप्त करने में समर्थ है, उनके अनुसार सूक्ष्म जगत में ऐसा वातावरण विनिर्मित हो चुका है जिससे सुखद् सम्भावनाओं की सुनिश्चितता पर विश्वास किया जा सकता है । डॉ० स्कूलर की दैवी सत्ता पर प्रगाढ़ आस्था है और उनने कॉस्मिक पावर के अनुशासन के अनुरूप आचरण करने के लिए एक सघन जन अभियान भी चला रखा है । ''ऑवर ऑफ पावर'' नामक सुनिश्चित कार्यक्रम के द्वारा लोगों को प्रार्थना और ध्यान जैसे ईश्वर उपासनात्मक अभ्यासों के द्वारा जीवनशैली को नया रूप प्रदान करने, धार्मिक वातावरण बनाने में वे उत्साहपूर्वक लगे हैं । उनका कहना है कि आसन्न संकटों का निवारण तो दैवी चेतना के द्वारा ही सम्पन्न होगा, परन्तु माध्यम तो मनुष्य ही रहेगा । उसकी सूक्ष्म प्रेरणाऐं वही ग्रहण कर सकते हैं जिनकी आत्म चेतना जाग्रत एवं परिष्कृत स्तर की होंगी ।

ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबिल के मैथ्यू २१:२२ प्रकरण में कहा गया है कि दैवी सत्ता में आस्था रखने से जीवन के समस्त विग्रहों का समापन होता है और स्नेह-सद्‌भाव का, सुख-शांति का वातावरण विनिर्मित होता है । धरती पर स्वर्गीय परिस्थितियों का निर्माण भी सम्भव होता है। इसी तथ्य का प्रतिपादन करते हुए इंग्लैण्ड के ख्यातिलब्ध दार्शनिक एवं गुह्यविज्ञानी **डॉ० पाल ब्रण्टन** ने अपनी पुस्तक ''**द स्प्रिचुअल क्राइसिस ऑफ मैन**'' में कहा है कि विगत कुछ वर्षों से विश्व के मूर्धन्य वैज्ञानिकों का ध्यान '**एन्थोपोमार्फिक गॉड**' की ओर केन्द्रित होता जा रहा है जिसकी अदृश्य शक्ति अनन्त एवं सर्व समर्थ है । संसार के समस्त मनुष्यों की सम्मिलित शक्ति भी उसके समक्ष नगण्य है । उनने इसे 'डिवाइन पावर' नाम से सम्बोधित किया है तथा विश्व-व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप से नियन्त्रित एवं संचालित करने वाली उसकी विधि व्यवस्था को-'डिवाइन लॉ' की संज्ञा दी है।

मनुष्य जब सब ओर से अपनी असमर्थता प्रकट करने लगता है, परिस्थितयां उसके सामर्थ्य से बाहर हो जाती है तब दिव्य चेतना अपने दिव्य कानून के अनुसार विनाश के गर्त में लुढ़कती जा रही मानव सभ्यता को उबारती,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका मार्गदर्शन करती है । वस्तुतः हमारी आन्तरिक पुकार जितनी अधिक तीव्र होगी, परमचेतना का उदार अनुदान भी शीघ्र बरसने लगेगा ।

'यदा-यदाहि धर्मस्य' वाले गीताकार के कथन का समर्थन करते हुए एल्गरमैन ब्लैकवुड ने अपनी पुस्तक ''द ब्राइट मैसेंजर'' में स्पष्ट किया है कि परमसत्ता को अनौचित्य का निराकरण और औचित्य का अभिवर्धन ही अभीष्ट है । मानव समाज में दुष्प्रवृत्तियां जब अपनी चरमसीमा का उल्लंघन कर जाती हैं, तब उनके निवारणार्थ दैवी चेतना का मानव स्वरूप में अवतरण होता है और सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन की पुण्य-प्रक्रिया को विकसित, विस्तारित करने में वह सफल होती है । अब वही समय फिर से आ गया है जिसमें सृष्टा अपनी श्रेष्ठतम् कृति धरित्री और उस पर निवास करने वाले मानव समुदाय को विनष्ट होने से बचाने के लिए कृतसंकल्प है ।

समस्याऐं मिटेंगी, इस तरह नवयुग में

इंग्लैण्ड स्थित ''मैकडोनाल्ड डगलस'' वेधशाला के निदेशक थियोडोर जे० गोर्डन एक खगोलविद् ही नहीं, वरन् जाने-माने भविष्यवक्ता भी हैं । उनकी अब तक की अस्सी प्रतिशत भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध हो चुकी हैं । उन्होंने भविष्य के बारे में भी अपने सहयोगी ओलाफ हेल्मर के साथ अनुमान लगाते हुए कहा है कि आने वाला समय मानवी इतिहास में ऐसा होगा, जिसे अभूतपूर्व कहा जा सके, ऐसा जिसका अब तक मात्र अनुमान ही लगाया जाता रहा है ।

श्री गॉर्डन ने १९६८ से ७० के बीच ऐसी गैसों का प्रयोग होने का संकेत दिया था, जिससे मनुष्यों को परेशानी तो होगी, किन्तु लोग मरेंगे नहीं । जो सत्य सिद्ध हुआ और आंसू गैस आदि का प्रयोग युद्ध में होने लगा। १९६९—१९७० के मध्य ही उन्होंने मनुष्य द्वारा चन्द्रमा पर विजय की भविष्यवाणी की थी, जो पूर्णतः सत्य सिद्ध हुई । १९७० से १९८३ के मध्य पारिवारिक संख्या नियन्त्रण के लिए नई विधा विकसित होने का उल्लेख उनने किया था जो समय आने पर परिवार नियोजन की एक नूतन विधा के रूप में सामने आया ।

उन्होंने सन् २००० के सम्बन्ध में लिखा है कि विश्व की जनसंख्या छह अरब होने पर सबसे बड़ी समस्या संकट के रूप में सामने आएगी, किन्तु सामूहिक श्रम एवं विशेष क्षमता वाली कृषि व्यवस्था अपनाने पर इसका सहज समाधान निकल आवेगा । तब समूचा विश्व एक हो जायेगा और अधिक उत्पादन के लिए सामूहिक प्रयास चलेंगे । जिन राष्ट्रों के पास जमीन है, किन्तु उत्पादन करने की क्षमता एवं साधन उनके पास नहीं हैं। उनका उपयोग सम्मिलित रूप में किया जायेगा और खाद्य पदार्थों का उत्पादन इतने बड़े पैमाने पर होगा, जिससे अन्न संकट दूर हो जायेगा ।

विदेशों में प्रयुक्त हो रहे मांस का स्थान सोयाबीन एवं दूसरे प्रकार के वानस्पतिक पदार्थ लेंगे । इनके द्वारा ही समूचे विश्व में भोजन की समस्या का समाधान होगा और मांस उत्पादन का क्रमबन्द हो जाएगा । पशु पालन मांस उत्पादन का स्थान लेगा और समुन्नत कृषि में पशुओं के उपयोग को प्रोत्साहन मिलेगा ।

कृषि क्षेत्र में वास्तविक क्रान्ति तब होगी, जब ऐसे हानिरहित बैक्टीरिया की खोज कर ली जायेगी, जिससे मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ जाने से उसकी उर्वरता बढ़े और अन्न-उत्पादन में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी हो । तब विशेष रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किए बिना ही अधिकतम उत्पादन का क्रम चल पड़ेगा और अन्न संकट का सहज समाधान हस्तगत हो जायेगा ।

तब प्रदूषण समस्या का भी हल उपलब्ध हो जायेगा, क्योंकि विज्ञान की शक्ति सृजनात्मक कार्यों एवं प्रदूषण-समाधान के उपाय खोजने में लगेगी, फलस्वरूप ऐसे नए-नए तरीके सामने आऐंगे, जिनसे न केवल प्रदूषण को टाला जा सकेगा, वरन उसके अतिरिक्त लाभ भी मनुष्य और समाज को मिलेगा ।

दृष्टा विद्वानों का मत है कि अगली शताब्दी की प्रथम दशाब्दी तक ऐसी आध्यात्मिक विधा हाथ लग चुकी होगी, जिससे लोग मनचाहे गुणों वाली सन्तान पैदा कर सकेंगे। तब अभिमन्यु जैसे पराक्रमी और अष्टावक्र जैसे उद्भट विद्वान सन्तानें गर्भ में ही विकसित हो जाना कोई असम्भव या अचम्भा नहीं रह जाएगा ।

उस काल की सबसे बड़ी विशेषता यह होगी लोग सूर्य ऊर्जा को सीधे सूक्ष्म आहार के रूप में लेने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विधा सीख जायेंगे । जिस प्रकार वृक्ष-वनस्पति सूर्य किरणों द्वारा भोजन का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार तब अधिकांश मनुष्य सूर्य किरणों द्वारा अपनी आहार सम्बन्धी समस्या का हल ढूंढ़ लेंगे । किन्तु यह एक अति उच्च आध्यात्मिक प्रयोग होगा, जिसे आत्मबल सम्पन्न व्यक्ति ही सम्पादित कर सकेंगे । ऐसे ही लोगों को श्री अरविन्द ने 'नास्टि बिइंग' इकबाल ने 'नायबे इलाही' और हरमन कान्ह ने 'सुपर नेचुरल बिइंग' के नाम से पुकारा है ।

विनाश टलेगा

''गोल्डन पाथ'' नामक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति संस्थान की संस्थापिका श्रीमती आयरीन ह्यूजेज को एक प्रामाणिक भविष्य वक्ता के रूप में ख्याति प्राप्त है । उनका कथन है कि ध्यान की गहराइयों में उन्हें भविष्य में सम्भावित घटनाओं की झांकी चलचित्र की भांति दिखाई देती है । उनकी भयावहता से वे रोमांचित हो उठती है । १९८५ व १९९१ के मध्य तृतीय विश्व युद्ध की सुनिश्चित सम्भावना प्रकट करते हुए वे कहती है कि ''विनाश की तैयारी होते हुए भी महासत्ता विश्व मानवता को बचा लेगी। इसके लिए समष्टिगत प्रयास भारत से आरम्भ होंगे ।''

१९२५ में श्री शेरो ने एक पुस्तक लिखी—''वर्ल्ड प्रीडिक्शन'' इसमें की गईं उनकी अधिकांश भविष्यवाणियां सच हुईं अब जो आगे होने को हैं वे इस प्रकार हैं—

''सूर्य अपने स्थान से हट रहा प्रतीत होता है । उसका कारण पृथ्वी का अपनी धुरी से हटना है । पृथ्वी के अपने स्थान से हटने के कारण ध्रुवों की स्थिति में अन्तर पड़ेगा फलस्वरूप पृथ्वी की जलवायु में तीव्र परिवर्तन होंगे, शीत लहरों और बर्फीले तूफानों के साथ कहीं तो अति वृष्टि होगी कहीं सूखा पड़ेगा । समुद्र में कितने ही भाग डूब जायेंगे । अटलांटिक महासागर के बीच एक बड़ा टापू निकल आने से अफ्रीका का सहारा (रेगिस्तान) फिर से समुद्र बन जायेगा, जिससे उस देश की काया पलट हो जायेगी और वह भावी सभ्यता का एक बड़ा केन्द्र बन जायेगा । कितने और भी नए भी द्वीप निकल आऐंगे। तीव्र भूकम्प के कारण तुर्कों को भीषण धन-जन हानि का सामना करना पड़ेगा । वह किसी दिन भूकम्प के कारण पूरी तरह नष्ट हो सकता है । ईरान और लेबनान में भारी संकट होंगे । मिस्र और जोर्डन चैन से नहीं रह सकेंगे इनकी भूमि का बहुत-सा हिस्सा निकल जायेगा। आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड,स्वीडन, नार्वे, डेन्मार्क, रूस, जर्मनी और फ्रांस के उत्तरी भाग भीषण रूप से ठण्डे हो जायेंगे वहां लोगों का रहना कठिन होगा । इन परिवर्तनों से पूर्व एक बड़ा भयंकर युद्ध होगा इस युद्ध में संसार का बड़ा संहार होगा । सीमित जनसंख्या रह जायेगी । युद्ध और राजनैतिक कूटनीति से अलग रहकर ज्ञान-विज्ञान की उन्नति में ही अपने को तटस्थ रखने वाले लोग ही बचेंगे । इस संहार के कारण रहे बचे लोगों की विचार-धारा पलट जायेगी और सत्य, प्रेम, न्याय के सिद्धान्तों का प्रचार होने लगेगा । राजनैतिक छल-प्रपंच समाप्त हो जायेंगे, विश्वव्यापी संघ की स्थापना होगी । परस्पर प्रेम भाव की वृद्धि होगी, सुख-शान्ति सुरक्षित रहेगी और सारे संसार में एक ही धर्म-मानव धर्म के रूप में विराजमान होगा ।''

नयी संस्कृति का उदय

स्पेन से प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका ''साइन्स वेस्ट मिरर'' में सन् १९२६ के एक अंक में जी० वेजीलेटीन नामक भविष्य वक्ता का लेख छपा था जिसमें बताया गया था कि '५६, वर्ष बाद (अर्थात् १९८३ में) वायुमण्डल की जीवनदाई गैसें विषाक्त हो जायेंगी तब प्रकृति का उग्रतम रूप देखने को मिलेगा । यह उग्रता सन् १९८० के बाद क्रमशः बढ़ती ही जायेगी । प्रकृति का इतना भयंकर प्रकोप मनुष्य ने पहले कभी नहीं देखा होगा । उसमें अतिवृष्टि और अनावृष्टि से लेकर उल्कापात तथा ज्वालामुखी के विस्फोट से लेकर चुम्बकीय तूफानों तक विनाश के अनेक कारण उत्पन्न होंगे । समुद्र में कई नए टापू निकलेंगे । मिस्र जैसे लगने वाले अनेक देशों में परस्पर युद्ध होगा । उसके बाद एक नई सभ्यता और संस्कृति का उदय होगा जो पूर्व के देश (भारतवर्ष) की होगी । उससे ही वायुमण्डल शुद्ध होगा, बीमारियां दूर होंगी, आपसी कलह शान्त होंगे और संसार में फिर से अमन चैन कायम होगी । लोग भाई-भाई की तरह प्रेमपूर्वक रहने लगेंगे । देश जाति की सीमाऐं टूट कर भ्रातृ भावना का ही विस्तार होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्य भविष्य वक्ताओं की तरह श्री० जी० वेजीलेटीन ने भी यह स्वीकार किया है कि १९३० से सन् २००० तक समय ही विश्व के नए उद्धारक का कार्यकाल होगा। उसकी विचार शक्ति इतनी तीक्ष्ण होगी कि दुनिया के तीन चौथाई नास्तिकों को तो वह अपने जीवनकाल में ही बदल देगा । उसके सहायक के रूप में न केवल उसके देशवासी अपितु सारे संसार के लोग शरीर, धन, परिवार सबका मोह त्याग कर कूद पड़ेंगे । भीतर ही भीतर दीर्घकाल तक सुलगने वाली उसकी शान्ति के सम्मुख संसार के बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति हतप्रभ हो जायेंगे।

''रिलीजीयस फेथ एण्ड ट्वेण्टीएथ सेंचुरी'' पुस्तक के लेखक भविष्य दृष्टा श्री एफ० सी० हैपोल्ड ने स्पष्ट लिखा है कि १९८० से १९८८ का समय भुखमरी, प्रकृति-प्रकोप, बाढ़-भूकम्प एवं अन्तर्विग्रहों से भरा होगा, जिसकी चपेट में आज का समृद्ध कहा जाने वाला पश्चिम जगत भी अनिवार्यतः आ जायेगा । वे कहते हैं कि १९८५ से १९८८ के मध्य संभावित विश्व युद्ध को दैवी शक्ति ही टाल सकती है । यदि यह हुआ तो मात्र ३० प्रतिशत व्यक्ति इस धरती पर बचेंगे एवं वे ही नई संस्कृति के संस्थापक होंगे ।

प्रस्तुत भविष्यवाणियां किसी को भयभीत करने, मनोरंजन के निमित्त या कौतूहल उत्पन्न करने के लिए नहीं हैं । इनका एक मात्र प्रयोजन इस प्रेरणा को आत्मसात् कराना है जो इनके माध्यम से परोक्षरूप में दी गई हैं । यदि साहस उमंगें और ईश्वरीय उद्देश्यों में भागीदारी करने का तनिक भी मन बने, तो फिर उनके क्रियान्वयन का पराक्रम भी दिखाया ही जाना चाहिए ।

ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि में विश्व का भविष्य

ज्योतिष भविष्य ज्ञान की एक प्राचीन विधा है । यह इतना वैज्ञानिक है कि यदि इनकी बारीकियों को ग्रह-गणित के समय ठीक-ठीक ध्यान में रखा गया और समयानुसार ग्रहगतियों एवं नक्षत्रों की स्थितियों में होने वाले परिवर्तनों को गणना में सम्मिलित किया गया, तो इससे उतनी ही सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है, जितनी कि कोई दिव्य दृष्टि सम्पन्न योगी कर सकता है ।

वर्तमान में इसने अपनी वैज्ञानिकता खो दी है, फलतः हर ज्योतिषी न तो उतना सही भविष्य कथन कर पाता है, और न इन दिनों उस विधा पर लगे अप्रामाणिकता का कलंक ही धो पाता है । दूसरे, वर्तमान में इसे जीवको-पार्जन का माध्यम बना लिया गया है । जहां किसी विधा को धन से जोड़ दिया गया, वहां वह विज्ञान कम, व्यवसाय ज्यादा हो जाता है । फिर उसमें सम्पदा का ही महत्त्व रह जाता है और मूल विषय गौण हो जाता है। ऐसी स्थिति में सम्पत्ति प्राप्त करना ही उस विधा का एकमेव लक्ष्य होता है, भले ही उसके लिए उलटा-सीधा कोई भी तरीका क्यों न अपनाना पड़े ।

ज्योतिष की दुर्गति इन्हीं कारणों से हुई, अन्यथा वह उतना ही यथार्थ है, जितना सूर्य-चन्द्र । इसके माध्यम से विश्व के कितने ही मूर्धन्यों ने भविष्य सम्बन्धी ऐसी-ऐसी भविष्यवाणियां की हैं, जो अब तक सत्य सिद्ध हुई हैं, उनमें से कुछ निम्न हैं–

क्रुम हैलर

मैक्सिको के महान ज्योतिर्विद आर्नल्ड क्रुम हैलर की अब तक ८८ प्रतिशत भविष्यवाणियां सही उतरी हैं ।

श्री क्रुम हैलर अपने आप को ज्योतिषी कहलाने की अपेक्षा–कास्मोबायोलजिस्ट (ब्रह्माण्ड जीवशास्त्री) कहलाना अधिक पसन्द करते हैं । ब्रह्माण्ड जीवशास्त्र की प्रतिष्ठापना भी उन्होंने ही की है । उसकी मान्यता भारतीय दर्शन के सिद्धान्त से पूरी तरह मेल खाती है कि जीवन तत्व मात्र पार्थिव नहीं अपितु समूचा ब्रह्माण्ड ही जैव-द्रव्य से ओत-प्रोत है । शरीर के किसी भी अंग में पिन चुभे उसकी जानकारी अविलम्ब मस्तिष्क को होती हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि मस्तिष्कीय चेतना का शरीर से अविच्छिन्न सम्बन्ध जुड़ा हुआ है । ठीक इसी तरह समूचे ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म संचार सूत्र फुटबाल में भरी हवा की तरह आत्मसात रहते हैं । मनुष्य के न केवल तात्कालिक क्रिया-कलाप अपितु दूरगामी योजनाऐं जिस तरह मस्तिष्क के गर्भ में ताने-बाने बुनती और पकती रहती हैं । ठीक उसी तरह भविष्य में घटने वाली सारी घटनाऐं ब्रह्माण्ड के उस अविभक्त जैव द्रव्य में तरंगायित होती रहती है । हम कल जो भी कुछ होंगे उसकी पूर्व भूमिका आज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही बना लेते हैं यही है भविष्य दर्शन का विज्ञान इसी को कहते हैं—'कास्मोबायोलॉजी' मेरे अन्तरंग की कास्मोबायोलॉजी उन दृश्यों को फिल्म की तरह मानस पटल पर उतार देती है और मैं भविष्य बता देता हूं ।

उक्त विधा के आधार पर उनने कितनी ही भविष्यवाणियां कीं, जो समय की कसौटी पर सत्य सिद्ध हुईं । उनके कुछ भविष्य कथन निम्न हैं—

(१) हिटलर की सेनाऐं हालैण्ड, फ्रांस और डेनमार्क को उदरस्थ कर चुकी थीं उस समय कोई कल्पना भी नहीं करता था कि फ्युहरर को कोई पराजित कर सकेगा। तभी २३ नवम्बर, १९४५ के अखबारों में छपा कि अब हिटलर की पराजय के नहीं उसकी मृत्यु के भी दिन एक दो माह से अधिक नहीं और सचमुच सारे संसार ने देखा कि उनकी भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई ।

(२) सन् १९८५ में मैक्सिको में भयंकर भूचाल आने वाला है तीन वर्ष पूर्व ही जब उनने इस बात की भविष्यवाणी की तो लोगों ने उन्हें डराने वाला दैत्य तक कहा । पर सचमुच उस वर्ष मैक्सिको में ऐसा वीभत्स भूचाल आया कि मैक्सिको वासी त्राहि-त्राहि कर उठे ।

(३) स्टालिन की मृत्यु, मार्टिन लूथर किंग की हत्या तथा तत्कालीन भारतीय प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के लिए उन्होंने जो परिस्थितियां बताईं थीं, उनकी मृत्यु ठीक वैसी हुई । इससे डा० क्रुम हैलर ख्याति के शिखर पर जा पहुंचे ।

(४) एक बार वे लॉस ऐंजिल्स की यात्रा कर रहे थे । उनसे इण्टरव्यू के लिए अनेक पत्रकार उनके पास पहुंचे । उस समय उन्होंने ठण्डी आह भरते हुए कहा मित्रो ! मुझे न जाने क्यों परमात्मा ने अशुभ समाचार ही देने को भेजा है । जिस प्रान्त में मैं इस समय बैठा हूं कुछ ही महीनों बाद यहां के ध्वंश और लाशों के ढेर मुझे अभी दिखाई पड़ रहे हैं । उस समय तक उनका भविष्यवक्ता स्वरूप बहुत प्रसिद्ध हो गया था अतएव समाचार पत्रों में छपी सभी भविष्यवाणियों पर जहां कुछ ने मखौल उड़ाया वहां अनेकों नागरिकों और सरकारी अधिकारियों ने उस तथ्य को गम्भीरता से लिया उनके इस भविष्य कथन के कुछ ही दिन बाद लॉस ऐंजिल्स में सचमुच इतिहास का सर्वाधिक रोमांचक, भूकम्प आया। जिसमें बस्तियां उजड़ गईं । लाखों लोगों की जानें गईं, पर उनके पूर्वाभास ने लाखों को बचा भी दिया अन्यथा स्थिति इतनी दयनीय होती कि अमेरिका के सम्भाले न सम्भलती ।

(५) रूस और चीन के मध्य युद्ध और तनाव की भविष्यवाणी करने के बाद उनका सर्वाधिक उपहास हुआ था, पर दो साम्यवादी देशों के मध्य युद्ध और बुरे सम्बन्ध आज सारी दुनियॉ देख रही है ।

सन् १९६१ को अमेरिकी राष्ट्रपति यात्रा पर थे । सुरक्षा के लिए सैकड़ों पुलिस अधिकारी जुटे थे । पुलिस का घेरा तोड़कर क्रुम हैलर उनके पास पहुंच गये और उनके हाथों में एक परचा थमा दिया । कैनेडी ने पर्ची पढ़ी, उनकी ओर देखकर अविश्वास की मुद्रा में मुस्कराए और पर्ची फेंक दी घटना का विवरण अखबारों में छपा। लिखा था दो वर्ष बाद २२ नवम्बर को आपकी हत्या कर दी जायेगी । पीछे लोगों ने उस भविष्य कथन को सत्य पाया तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।

अगले कई वर्ष में सृष्टि के महाविनाश के पूर्वाभास ही हैं जिन पर लोगों को हंसी आ सकती है । मनुष्य सर्व शक्तिमान नहीं है उससे भी ऊपर समर्थ सत्ता परमात्मा की है वह स्वयं नियामक सत्ता विधान बदल भी सकता है किन्तु उसके लिए मानवीय प्रकृति का बदलना भी आवश्यक है । अंधाधुन्ध अपराध करने वाला सजा से बचेगा ? यह मात्र दुराशा है यदि वह प्रायश्चित के लिए तैयार हो तब यह सम्भव है कि उसकी दण्ड प्रक्रिया सह्य और सरल बना दी जायें । महाविनाश से बचने के लिए मानवी आस्थाओं का परिवर्तन आवश्यक है । इन दिनों हो रही स्वार्थ की भोगवादी घुड़दौड़ रोकी जाय, मनुष्य की उच्छृंखलता पर रोक लगे विलासिता का स्थान प्रकृतिस्थ जीवन ग्रहण करे । मर्यादाओं का उल्लंघन रुके तो सम्भव है इस ईश्वरीय दण्ड से कुछ विमुक्ति मिले अन्यथा सृष्टि के विनाश की सम्भावना तो चर्म-चक्षुओं से ही देखी जा सकती है ।

आर्नाल्ड क्रुम हैलर की इस समीक्षा का भविष्य क्या है लोगों ने उनसे प्रश्न किया तो उन्होंने उत्तर दिया—महाविनाश अवश्यम्भावी है किन्तु मानव जाति का लोप हो जायेगा ऐसा नहीं । उन्होंने कहा हमारे पुरखों की आद्य संस्कृति को नया जन्म मिलने वाला है यह स्मरणीय है कि मैक्सिको किसी समय में संस्कृति का घर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रहा है । 'मय सभ्यता' वहां भारतवर्ष से गई है । महायुद्ध की विभीषिकाऐं ही विकसित नहीं हो रही पवित्रता, समता, करुणा, उदारता, न्याय, नीति, मैत्री और विश्व-बन्धुत्व वाली शक्तियां भी अवतरित हो चुकी हैं विश्व की तुलना में वह यद्यपि अभी शिशु जैसी और गहन अन्तराल में है—वहां श्रद्धा और विश्वास की शक्ति कार्य कर रही है तथापि वह परमाणु से भी अति समर्थ है और अन्त में इसी महाशक्ति की सांस्कृतिक पौध सारी दुनिया में वितरित होगी, रोपी जायेगी पुष्पित पल्लवित होगी और इस तरह शान्ति प्रगति और प्रसन्नता की एक नई फुलवारी दुनियां में लहलहाएगी ।

सन् १९७२ में उन्होंने कुछ भविष्यवाणियां इस प्रकार की थीं—

(१) अफगानिस्तान में दो बड़ी समस्याऐं—अन्तर्क्रान्ति और सैनिक शासन ।

(२) पाकिस्तान में प्रजातन्त्र का सदा के लिए अन्त।

(३) भारतवर्ष में सत्ता परिवर्तन भयंकर प्राकृतिक प्रकोप जो सन् १९८२ तक प्रतिवर्ष और अधिक उग्र होते चले जायेंगे-यही वह देश है जिसके प्रताप से महायुद्ध की उग्रता शान्त होगी, विज्ञान राष्ट्र और प्रोद्यौगिकी के क्षेत्र में भारतवर्ष विश्व का शिरोमणि बनेगा ।

(४) कैलीफोर्निया में भयंकर भूचाल आएगा और उसका बहुत भाग पृथ्वी में समा जायेगा ।

(५) भारतवर्ष और रूस की अटूट मैत्री और साम्यावादी रूस का धार्मिक देश के रूप में परिवर्तन ।

(६) इंग्लैण्ड में भयंकर मुद्रा संकट ।

(७) चीन में भयंकर गृहयुद्ध जिससे बचने के लिए चीन द्वारा विश्व में युद्ध प्रारम्भ करने का पलीता ।

इनमें से अनेक भविष्यवाणियों को लोग सत्य हुआ देख भी चुके हैं । श्री क्रुम हैलर एक ऐसे ज्योतिर्विद हैं जिनकी भविष्यवाणियों की कतरनें पश्चिमी देशों में अनेक पत्रकार अपनी सम्पत्ति की तरह फाइलों में सुरक्षित रखते हैं । ''हैरिऐट'' के संवाददाता—जान मिलर जो कई बार भारत वर्ष की यात्राऐं कर चुके है—का कथन है कि उनके पास क्रुम हैलर की एक ऐसी भविष्यवाणी है जिसको उन्होंने अपनी अन्तिम भविष्यवाणी बताया है-यह भारतवर्ष से सम्बन्धित है और इसीलिए मैंने भारतवर्ष विशेषकर उत्तराखण्ड हिमालय की कई बार यात्राऐं की हैं । बहुत पूछने पर वे इतना ही बताते हैं कि इसका सम्बन्ध उस महाशक्ति से है जिसे क्रुम हैलर इस युग की एक बहुत बड़े चमत्कार की संज्ञा दिया करते थे और कहा करते थे धार्मिक आस्थाओं के कारण लोग राजकीय वैभव तक का परित्याग कर देते हैं, यह बात बुद्ध के इतिहास में तो मिलती है, पर उसकी पुनरावृत्ति इस युग के लोग अपनी आंखों से देखेंगे । यही वह आदर्श है जो इस महाविनाश का शमन करेंगे अन्यथा आगामी विश्व युद्ध में पूर्ण प्रलय तक की आशंका है ।

प्रोफेसर कीरो

प्रोफेसर 'कीरो' विलायत के सबसे बड़े ज्योतिषी और सामुद्रिक शास्त्र के आचार्य थे । उन भविष्यवाणियों ने अनेक बार लोगों को चौंकाया । व्यक्तियों, सम्प्रदाओं तथा राष्ट्रों के सम्बन्ध में उन्होंने ऐसी-ऐसी बातें घोषित कीं जो उस समय एकदम असंगत लगती थीं, पर भविष्य के घटना चक्र ने उन्हें सही सिद्ध कर दिया । उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई, महान विक्टोरिया की मृत्यु, एडवर्ड सप्तम की मृत्यु का ठीक-ठीक माह और दिन घोषित कर लोगों के कौतूहल को चरम बिन्दु तक पहुंचा दिया था। इटली के शासक हर्बर्ट की हत्या, रूस के जार का पतन और उसके परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का कत्ल होगा, जर्मन के प्रथम युद्ध का ठीक समय आदि सालों पूर्व बतला दिया था । उस समय लोगों ने भले ही शक किया, पर जब वे घटनाऐं तथ्य बनकर सामने आईं तब प्रो० कीरो की अतीन्द्रिय क्षमता का लोहा मानना पड़ा। लार्ड किचनर से सम्बन्धित उनकी भविष्यवाणी को भी बहुत महत्त्व दिया गया ।

कीरो के भविष्य-कथन का मुख्य आधार यह सिद्धान्त है कि—पृथ्वी की कक्षा अथवा धुरी अपनी जगह से बराबर हटती जाती है और इस कारण हमको सूर्य अपना स्थान बदलता जान पड़ता है । पृथ्वी का यह हटना इस प्रकार होता है कि सूर्य एक-एक करके बारहों राशियों में होकर गुजर जाता है । एक राशि से दूसरी राशि में जाने में उसे २१५० वर्ष का समय लगता है और बारह राशियों का भ्रमण २५८०० वर्ष में पूरा होता है । ईसा के जमाने में सूर्य मीन राशि में था और सन् १७६२ से कुंभ राशि में प्रविष्ट हुआ है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पृथ्वी की कक्षा में होने वाले इस बदलाव का असर दुनिया की आवहवा पर बहुत ज्यादा पड़ता है । ध्रुवों का स्थान बदल जाने से बड़े-बड़े भूकम्प आते हैं, समुद्रों की गहराई में अन्तर पड़ जाता है और दुनिया के नक्शे में बड़े-बड़े परिवर्तन दिखलाई देने लगते हैं । पृथ्वी की कक्षा में अन्तर पड़ने के सिद्धान्त को वैज्ञानिक भी मानते हैं और संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेदों से भी यह सिद्ध होता है । लोकमान्य तिलक ने अपने वेद सम्बन्धी ग्रन्थ में इस विषय पर काफी प्रकाश डाला है । उन्होंने बतलाया है कि किसी समय आर्य लोग उस भूमि में रहते थे जो इस समय ध्रुव प्रदेश Artictic के नाम से पुकारी जाती है । इससे सिद्ध होता है कि किसी समय यह भू-प्रदेश निवास योग्य होगा और बर्फ के कारण अगम्य प्रदेश उससे कुछ हट कर होगा ।

प्रोफेसर कीरो ने भविष्यवाणी की थी—'योरोप की ईसाई जातियां एक बार फिर से यहूदियों को पैलेस्टाईन में बसाऐंगी, जिनके कारण अरब राष्ट्र और उनके इस्लामी मित्र भड़क उठेंगे वे बार-बार इंग्लैण्ड, अमेरिका के विरुद्ध उत्तेजक नारे बुलन्द करेंगे, यहूदियों से उनकी टक्कर भी होगी, इन सबके बावजूद यहूदियों की शक्ति बढ़ेगी। कम संख्या में होते हुए भी ईश्वरीय चमत्कार के सहारे यहूदी अरबों को पीटेंगे और उनका बहुत सा प्रदेश अपने कब्जे में कर लेंगे । १९७० के बाद कभी भी एक बार बहुत ही भयानक टक्कर होगी जिसमें अरब राष्ट्र बुरी तरह तहस-नहस होंगे । यह विनाश लीला होने के बाद एक नई सनातन सभ्यता का अभ्युदय और सारे विश्व में प्रसार होगा । यह सन् २००० के पूर्व ही होगा ।

यह भविष्यवाणी हुई तब इसरायल कल्पना में भी नहीं आया था । कुछ ही दिनों में दुनिया भर के यहूदी फिर से पैलेस्टाइन में आए । सचमुच ईसाइयों ने उन्हें मदद दी और इस तरह एक छोटा-सा किन्तु बाघ और बाज की तरह इसरायल एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उठ खड़ा हुआ और एक ही धमाके में उसने जहां जोर्डन की कमर तोड़ दी वहां मिस्र का पूरा सिनाई प्रान्त ही हड़प लिया । प्रो० कीरो नें कहा था—'अरबों' की नील (नदी) यहूदियों का आदाब बजायेगी'' सो भी सच हुआ और अब उस भविष्यवाणी के उत्तरार्ध की प्रतीक्षा की जा रही है ।

प्रो० कीरो की भविष्यवाणियों की सत्यता का अनुमान किसी को करना हो तो वह सन् १९४३ की अखण्ड-ज्योति का जनवरी अंक उठाकर देखें जिसमें पृष्ठ २३ पर छपा है ''इंग्लैण्ड भारत को स्वतन्त्र कर देगा पर मजहबी फिसाद के कारण भारत तबाह हो जायेगा यहो तक कि हिन्दू, बौद्ध और मुसलमानों में बराबर-बराबर विभक्त हो जायेगा ।'

जिन दिनों यह भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी उन दिनों ब्रिटिश दमन चक्र अपने पूरे जोर पर था कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि भारत स्वतन्त्र होगा, पर प्रो० कीरो का कथन था, ''भारत वर्ष का सूर्य ग्रह बलवान है और कुम्भ राशि पर है अतः उसका अभ्युदय संसार की कोई ताकत नहीं रोक सकती ।'' यह कथन सच ही होकर रहा पर दूसरी भविष्यवाणी जिसमें इस देश के बंट जाने की बात थी उस पर तो किसी का कतई विश्वास नहीं था फिर भी सारी दुनियां ने देखा कि भारत के ही बहुत से बौद्ध, मतावलम्बी राज्य अलग हो गए, पाकिस्तान बना, और आज तक वह भारत के लिए सिर दर्द पैदा कर रहा है ।

इसके बाद प्रो० कीरो ने भारत वर्ष के समबन्ध में कहा है, विशुद्ध धर्मावलम्बी नीति के एक सशक्त और प्रखर व्यक्ति के भारत वर्ष में जन्म लेने का योग है । उसकी आध्यात्मिक शक्ति दुनिया भर की तमाम भौतिक शक्तियों से समर्थ होगी । वृहस्पति का योग होने के कारण ज्ञान क्रान्ति की सम्भावना है जिसका असर सारी दुनिया में पड़े बिना नहीं रहेगा ।

गोपीनाथ शास्त्री चुलैट

बरार के विद्वान ज्योतिषी श्री गोपीनाथ शास्त्री चुलैट ने एक रात स्वप्न देखा कि ''नए युग का अविर्भाव सन्निकट है ।'' उठकर उनने उस स्वप्न समय की कुण्डली बनायी, जो निम्न प्रकार थी—

लग्न तुला उच्च के शनि युक्त थी, पराक्रम के स्थान पर उच्च का केतु, सुख के स्थान में गुरु, सप्तम में स्वगृही मंगल, नवें में उच्च का राहु कर्म स्थान में स्वगृही चन्द्र और शुक्र के साथ उसकी युति जो विज्ञान और नए धर्म की प्रतिष्ठा का सूचक होती है, लाभ भाव में बुद्ध और स्वगृही सूर्य का युक्तीकरण भारतवर्ष के धन और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐश्वर्य की वृद्धि के सूचक थे । यह लग्न भगवान् कृष्ण, भगवान् राम के जन्म की लग्न के सन्दर्भ में याद दिलाती थी और यह बोध होता था कि संसार में फिर से धर्म की स्थापना करने वाली शक्ति व अवतार का प्राकृट्य हो गया होना चाहिए भले ही लोग उसे बाद में समझ पायें।

इस लग्न कुण्डली को बनाने और अध्ययन के बाद इन निष्कर्षों पर पहुंचने के बाद शास्त्री जी ने 'युग परिवर्तन' नामक एक पुस्तक लिखी जो अकोला—महाराष्ट्र से प्रकाशित हुई । इस पुस्तक में उन्होंने ज्योतिष गणना के आधार पर बताया है कि इन्हीं दिनों युग परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है और इस समय युग सन्धि चल रही है, जिसमें पहले अज्ञानान्धकार का अन्त और नवयुग की अरुणिमा निरन्तर बढ़ती ही जायेगी । यह समय एक ओर जहां भारत वर्ष के लिए तीव्र हलचलों उथल-पुथल और परिवर्तनों का है । वहीं सारे विश्व के लिए भी कम कष्टप्रद नहीं है ।

शास्त्री जी द्वारा समय-समय पर की गई भविष्यवाणियां सही सिद्ध होती रही हैं । इस आधार पर उनका युग परिवर्तन कथन भी विश्वसनीय ही माना जा सकता है।

सन् १९४५ और सन् १९५० के मध्य भारतवर्ष के स्वतन्त्र होने की भविष्यवाणी की थी, वह सच हुई, उन्होंने सन् १९३८ में ही महात्मागान्धी की मृत्यु का ठीक-ठीक समय बता दिया था, यह भी सही सिद्ध हुआ । शास्त्री जी ने भविष्यवाणी की थी सन् १९७० के आस-पास अमेरिका का कोई मनुष्य चन्द्रमा की परिक्रमा करेगा । 'कलिवर्ज्य प्रकरण में' पृथ्वी की प्रदक्षिणा नहीं करनी चाहिए इसका खण्डन करते हुए शास्त्री जी ने लिखा था कि 'भारतीय विमान आदि काल से ही पृथ्वी और अन्य ग्रहों की प्रदक्षिणा करते हुए उड़ते तथा वहां की यात्रा करते रहते थे । भविष्य में यह स्थिति भी देखने में आएगी जब सन् १९७० तक अमेरिका, निवासी चन्द्रमा पर उतर जायेंगे । इसलिए हम भारतीयों को भी प्रदक्षिणा (अन्तरिक्ष) विज्ञान की शोध करनी चाहिए, शास्त्री जी की अनेक भविष्यवाणियों में उत्तरी सीमान्त से आक्रमण (चीन के हमले) आदि की भविष्यवाणी भी सही सिद्ध हो चुकी है। ऐसी दशा में उनका युग परिवर्तन का वक्तव्य विश्वस्त समझा जा सकता है ।

युगों की काल गणना को ज्योतिष के जिन गणितीय सिद्धान्तों के आधार पर निकाला गया उसे देशभर के विद्वानों ने सत्य माना और पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई। इस पुस्तक में जहां भारतीय समाज के अन्ध श्रद्धालु वर्ग में फैली भ्रान्तियों का शास्त्रीय निराकरण किया गया है वहां अन्तिम अनुच्छेद में ज्ञान क्रान्ति के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है और बताया है—इस देश में एक जबर्दस्त विचार-क्रान्ति होने वाली है इस विचार-क्रान्ति के फलस्वरूप (१) शिक्षण पद्धति बदल जायेगी । अभी लोग नौकरी के लिए पढ़ते हैं । कुछ दिन में ही एक ऐसी शिक्षा पद्धती का अविष्कार होगा जिसमें स्कूली पढ़ाई की तुलना में व्यक्तित्व को संस्कारवान बनाने वाली 'विद्या' को महत्त्व मिलेगा । (२) ईश्वरभक्ति का स्वरूप माला-जप तक सीमित न रहकर समाज के पिछड़े वर्ग की सेवा में रूप में आएगा (३) लोग मोक्ष की नहीं सेवा की कामना करेंगे । (४) भूगर्भ विद्या, रसायन शास्त्र, यंत्र विद्या खनिज, धातु, चुम्बक-विद्या आदि के नए क्षेत्रों और विज्ञान का विस्तार होगा, जिसका कि नेतृत्व भारतवर्ष से होगा । (५) धर्म और आत्म-विज्ञान की आस्था का तीव्र विकास होगा । (६) बेहिसाब फैली जातियां सिमट कर चार वर्णों में ही सीमित हो जायेंगी । जातीय संकीर्णतायें नष्ट होंगी । उसका प्रभाव, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाजों पर पड़ेगा । (७) वेद ज्ञान का विस्तार सारे विश्व में होगा । (८) संविधान का आधार मनु और याज्ञवल्क्य की स्मृतियां होंगी । (९) विधवा विवाहों को शास्त्र विरुद्ध न माना जायेगा । (१०) लोग संघशक्ति पर विश्वास करेंगे (११) मन्दिर बनाने की अपेक्षा भग्न मन्दिरों का निर्माण पुण्यदायक माना जायेगा । मन्दिर जन-जागृति के केन्द्र बनकर काम करेंगे । (१२) परिवारों में स्नेह सद्भाव बढ़ेगा । (१३) भारतीय लोग ऐसे विमान का अनुसन्धान करेंगे जो निर्धूम होंगे । अग्नि, वर्षा, वायु, सूर्य आदि मानवीय इच्छा के अनुरूप काम करेंगे । मृत व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करने वाली विद्या का विकास होगा । (१४) स्थान-स्थान पर प्रयोगशालाओं और उद्यमशालाओं की स्थापना होगी ।''

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भविष्य वक्ता और एस्ट्रालॉजिकल मैंगजीन के सम्पादक वी० वी० रमन ने कहा है कि सन् १९८० का आरम्भ मंगल राहू की युति से होता है । वृहस्पति, चन्द्रमा और सूर्य आदि ग्रह स्थितियों के प्रमाण स्वरूप विश्व में ऐसी विकट परिस्थितियां उत्पन्न होंगी,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो अभी तक इतिहास के किसी भी काल में विनिर्पित नहीं हुई । वी० वी० रमन के अनुसार विश्व की महाशक्तियां इन्हीं दिनों एक दूसरे को तहस-नहस करने के लिए आस्तीनें चढ़ाने लगेंगी । राजनीति में अपना वर्चस्व रखने वाले नेतागण सत्ता लोलुप और अदूरदर्शी होने के कारण आसन्न समस्याओं पर नियन्त्रण रख पाने में असमर्थ होंगे।

'ज्योतिष बोध' मासिक पत्रिका के जनवरी अंक के ''भविष्य में क्या होगा ?'' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है । इस लेख में कहा गया है कि 'शनि एक राशि पर लगभग ढाई वर्ष तक रहता है अतएव प्रत्येक राशि पर वह १२X२॥ अर्थात् तीस वर्ष पश्चात् आता है गुणित कर्क, सिंह व कन्या राशि के शनि भयंकर परिवर्तन प्रस्तुत करते हैं । सन् १८७५, १९१७, १९४५, और १९७७ से अब तक की अवधि में घटी घटनाऐं स्पष्ट हैं । सन् १९८२ में शनि के चित्तार्द्ध कन्या राशि पर रहने तक भारत ही नहीं अपितु विश्व में भयंकर परिवर्तन होते रहे हैं । अनिश्चितता बनी रहेगी । भारत में अशान्ति तथा उपद्रवों की भी अभिवृद्धि होगी ।

हंगरी की महान महिला ज्योतिषी वोरिस्का सिलविगर से एक अंग्रेज आफीसर ने शर्त लगाई थी और कहा था कि हम भारत को कभी स्वतन्त्र नहीं करेंगे । पर वोरिस्काने हंसकर कहा था—''१९४४ के बाद भारतवर्ष को संसार की कोई सत्ता गुलाम रखने में समर्थ न होगी। उसका भाग्य अब चमकेगा और भारतवर्ष के ही धार्मिक लोग विश्व को शान्ति का मार्ग बताऐगे ।''

उसने आगे कहा था—''भारत का अभ्युदय एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में हो जायेगा पर उसके लिए उसे बहुत कठोर संघर्ष करने पड़ेंगे । देखने में यह स्थिति कष्टकारक होगी । पर इस देश में एक फरिश्ता आएगा जो हजारों छोटे-छोटे लोगों को इकट्ठा करके उनमें इतनी हिम्मत पैदा कर देगा कि नन्हें-नन्हें लोग तथाकथित भौतिकवादी लोगों से भिड़ जायेंगे और उनकी मान्यता को मिथ्या सिद्ध कर देंगे । इसके बाद संसार में सीधे-सच्चे लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और अमनचैन फैलता चला जायेगा । इन्हीं दिनों छल-कपट, हत्या, लूट-पाट की परिस्थितियां अत्यन्त उग्र होंगी अतएव कड़े संघर्ष के बीच ही मानवीय सद्गुणों का विकास होगा । पर यह विकास चिरस्थाई होगा उसके लक्षण सन् २००० तक स्पष्ट हो जायेंगे । उसके बाद का संसार प्रेम दया करुणा, ईमानदारी, परोपकार और भाई-चारे का संसार होगा।''

गर्ग, पाराशर, देवल, कश्यप जैसे ऋषियों की गिनती भारत के पुरातन ज्योतिर्विदों में की जाती है । उन्होंने आज के समय की परिस्थितियों की समीक्षा काल गणना के आधार पर काफी पूर्व कर दी थी । सौर कलंकों की संख्या में वृद्धि, वृहस्पति प्रभाव से पर्यावरण असन्तुलन, सूर्य व चन्द्र ग्रहणों का बड़ी जल्दी-जल्दी आना तथा पुच्छल तारे के रूप में विश्वव्यापी संकटों की भवितव्यता की चर्चा उनके ग्रन्थों में इसी समय विशेष के लिए की गई है । इन पुरातन मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में आज के खगोल विज्ञानियों—रसेल कारमन तथा कार्ल सागां, वी०वी० रमन तथा नॉवेल लॉरिएट फ्रिटजॉफ काप्रा ने भी प्रस्तुत सन्धि बेला के सम्बन्ध में ऐसे ही विचार व्यक्त किए हैं । फिजिसिस्टि श्री काप्रा ने ''द टर्निंग पॉइण्ट'' नामक पुस्तक में पूर्वी सभ्यता के उभर कर आने एवं रोगवादी समाज के मिटने की चर्चा करते हुए लिखा है कि वह सब बदलती अन्तर्ग्रही परिस्थितियों की प्रतिक्रिया के रूप में घटित होगा ।

आत्मनूल ज्योतिष ग्रन्थ में वर्णित भविष्य

कुछ वर्ष पूर्व, मद्रास के एक बहुत बड़े विद्वान ज्योतिष प्रेमी ने ग्रह-गणना के फल की जांच करने के लिए कुम्भकोणम के एक पण्डित से प्रश्न किया था, जिनके पास ''भृगुसंहिता'' के समान भविष्य बतलाने वाला एक अप्राप्य ज्योतिष ग्रन्थ है । इस ग्रंथ का नाम ''आत्म-नूल'' (सूत्र, धागा एवं व्याख्या) है और इसमें व्यक्तियों तथा देशों की भावी घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन है । इस ग्रन्थ में वर्तमान समय की घटनाओं का जो फल दिया गया है, उसका सारांश इस प्रकार है—

मंगल पृथ्वी का पुत्र है । आकाशीय पिण्डों में से मंगल ही पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के शुभाशुभ कार्यों से विशेष प्रभावित होता है । वर्तमान समय की भांति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब पाप कर्मों की वृद्धि हो जाती है तो उनका कुपरिणाम मंगल तक पहुंचता है और इससे यह क्रोधित और नाराज होता है । समय-समय पर यह मनुष्य जाति को इन कर्मों का दण्ड देता रहता है । मंगल पर्याप्त शक्तिशाली ग्रह है और वह मनुष्यों को बुरे कामों के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए भांति-भांति की दुर्घटनाओं और आपत्तियों के रूप में दण्ड देता रहता है ।

ऐसा जान पड़ता है किसी दैवी योजना के अनुसार पृथ्वी निवासियों के पाप कर्म मंगल में पहुंचते हैं, मंगल उनसे नाराज और व्यथित होकर पाप कर्म करने वालों को पाप की सजा देता है । भयंकर तूफान, अग्निकाण्ड, प्रलयकारी वर्षा और बाढ, लड़ाई-झगड़े, मारकाट और महायुद्ध भी मंगल के कुपित होने से उत्पन्न होते हैं ।

इस प्रकार ''नूल'' में निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं की भयंकरता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। पर साथ ही उसमें स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया गया है कि ईश्वरीय योजना का पूरा रहस्य मनुष्य को कभी ज्ञात नहीं हो सकता । जिन ऋषियों ने ''नूल'' की रचना की है उन्होंने अपने ऊपर किसी प्रकार का उत्तरदायित्व नहीं लिया है और सर्वत्र यही लिखा है कि ईश्वरेच्छा से ऐसा होना सम्भव जान पड़ता है । इस अवसर के लिए ''नूल'' में भयंकर घटनाओं का होना अवश्य लिखा है पर उससे ऐसा नहीं जान पड़ता कि तीसरा महायुद्ध ऐसे सर्वनाशी रूप में होगा कि जिससे दुनिया का अस्तित्व ही नष्ट हो जायेगा । आठ ग्रहों के योग से संसार में कई प्रकार की प्राकृतिक और राजनैतिक विपत्तियों का आना सम्भव है और मनुष्य जाति के लिए भयंकर दण्ड सहन करना पड़े, इसके भी चिन्ह दिखलाई देते है, पर अन्तिम परिणाम स्वरूप संसार का कल्याण भी हो सकता है । सैकड़ों वर्षो से भिन्न-भिन्न देशों में जो लड़ाई-झगड़े चल रहे हैं और जिनके फलस्वरूप प्रति बीस-पच्चीस वर्ष बाद संसार में घोर हलचल मच जाती है, इनका अन्त होकर एक ऐसी दीर्घकाल व्यापी शान्ति का आविर्भाव हो सकता है, जिसमें मनुष्य को आध्यात्मिक विकास का अवसर प्राप्त हो और वह पशुत्व तथा दानवता की प्रवृत्तियों को त्याग कर देवत्व के गुणों को ग्रहण करने लगे । पर इस स्वर्गीय में पहुंचने के पूर्व मनुष्य को अपने वर्तमान पापों का प्रायश्चित करना ही पड़ेगा ।

क्रान्ति विश्वव्यापी होगी; किन्तु होगी व्यापक

द्वितीय महायुद्ध हुआ था उस समय शनि सायण वृष राशि तथा मिथुन राशि पर भ्रमण कर रहा था । गुरु वृष राशि के वेष में भी था । ग्रह मानव जीवन पर अपनी-अपनी तरह से प्रभाव डालते हैं । शनि युद्ध, कलह और रक्तपात का, सम्यवाद का प्रतीक है । वृष और मिथुन पर होना योरोप में व्यापक युद्ध का प्रतीक था गुरु बुद्धि और विद्या का प्रतीक है । शनि के साथ वृहस्पति की युति इस बात का प्रतीक होती है कि युद्ध में बुद्धि कौशल भी साथ देगा । द्वितीय महायुद्ध के दौरान बिल्कुल यही बात हुई । युद्ध हुआ और नये-नए आयुधों-उपकरणों के साथ उससे युद्ध-प्रियता की शक्तियां बढ़ीं, साम्यवाद बढ़ा, उस समय हिंसा का जो ताण्डव हुआ वह तब से छुटपुट चला ही आ रहा है ।

इस समय शनि सायण वृष राशि पर भ्रमण करने जा रहा है । इस बार वृहस्पति फिर उसी राशि पर है, किन्तु उसकी गति-प्रतियोग में अर्थात् उलटी है इसलिए सन् १९७१ से आगे ७३ तक का समय एक महायुद्ध जैसी विश्वव्यापी अन्तःक्रान्ति का समय है । इससे एक और विनाशकारी युद्ध की परिस्थितियां जीभ लपलपायेंगी कहीं-कहीं चोटें भी होंगी, आल्पकालीन किन्तु मानवता का दिन दहलाने युद्ध होंगे, पर वृहस्पति विपरीत योग होने के कारण युद्ध लम्बे नहीं होंगे वरन् बुद्धिमान लोगों द्वारा निपटाए जाते रहेंगे । वृहस्पति के प्रतियोग में होने से महायुद्धों के समानान्तर एक बौद्धिक क्रान्ति, होगी उसका नेतृत्व भारत करेगा । धर्म और संस्कृति का तेजी से विकास होगा, जिसका प्रभाव महायुद्ध के समान ही व्यापक होगा ।

यह विचार अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के भारतीय ज्योतिषी श्री राधेश्याम रावल जी ने 'टंकार' पत्रिका के नवम्बर सन् १९६८ के अंक में प्रस्तुत किए । सौराष्ट्र निवासी श्री रावलजी की अनेक भविष्यवाणियां १५-१६ जुलाई सन् १९६८ के 'दैनिक जागरण' व 'दैनिक विश्वामित्र' में छपी । दोनों दैनिक-पत्र कानपुर से निकलते हैं । लखनऊ से प्रकाशित 'ज्ञान-भारती' में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणियां छपी हैं । उनकी सहायता से श्री रावलजी ने भविष्यदर्शन की ओर बुद्धिजीवियों का व्यापक ध्यान आकर्षित किया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'ज्ञान-भारती' मासिक के १९६३ के फरवरी अंक पृष्ठ २१० में श्री रावलजी की भविष्यवाणी थी—'अगले दिनों देश के अनेक राज्यों में मिली-जुली सरकारें स्थापित होंगी । ६५ के अन्त तक भारत-पाक युद्ध होगा, उसमें भारत अपनी पाकिस्तान के अधिकार में गई बहुत-सी सीमा वापस लौटा लेगा किन्तु बातचीत द्वारा समझौता हो जायेगा ।' इन भविष्यवाणियों को सभी ने सच होते देखा । ताशकन्द समझौते के बाद लोगों का ध्यान पिछली भविष्यवाणियों की ओर आकर्षित हुआ तो उनसे फिर आगे की बातें पूछी गईं तब उन्होंने १९६६ में 'टंकार' पत्रिका में लिखा—''पाकिस्तान ताशकन्द समझौते का पालन नहीं करेगा । बंगाल में हिंसक घटनाऐं बढ़ेंगी और साम्यवाद अपनी प्रतिष्ठा के बावजूद बढ़ेगा । पूंजीवाद और समाजवाद में उग्रसंघर्ष होगा जिसमें विजय समाजवाद की होगी । बैंकों का पूर्ण राष्ट्रीयकरण होगा । विद्यार्थियों के आन्दोलन होंगे, विश्वविद्यालय बन्द रहेंगे, साम्प्रदायिक दंगे बढ़ेंगे । कांग्रेस दो गुटों में विभाजित होगी । वित्तमन्त्री मोरारजी त्याग-पत्र देंगे ।' इन भविष्यवाणियों को उस समय कौतूहलपूर्वक सुना गया किन्तु शीघ्र ही उनकी सत्यता सामने आ गई और सभी भविष्यवाणियां सच हुयीं ।

इन्हीं दिनों मौरुष बुडरफ की भविष्यवाणी छपी तथा टेलीविजन पर भी उन्होंने घोषणा की थी कि—'१९६८ में इन्दिरागान्धी का पतन हो जायेगा । यह भविष्यवाणी श्री रावल ने पढ़ी और उसकी प्रतिक्रिया कानपुर में छपने वाले साप्ताहिक 'टंकार' में इस प्रकार छपी कि इन्दिरा गान्धी का पतन नहीं होगा वरन् उन्हें जनता का सुदृढ़ समर्थन मिलेगा और मौरुष बुडरफ की भविष्यवाणी गलत होगी—ऐसा हुआ भी । १९७१ के चुनावों ने तो इस स्थिति को और भी साफ कर दिया ।'

श्री रावल की अन्य भविष्यवाणियां जो अब तक सत्य हुईं वह इस प्रकार हैं—'पूर्वी बंगाल (पूर्वी पाकिस्तान) में प्राकृतिक प्रकोप और अन्तःक्रान्ति होगी, जिससे वहां के निवासी बहुत कष्ट उठायेंगे । सन् ७० में नासिर की मृत्यु हो जायेगी । जानसन दुबारा राष्ट्रपति नहीं होंगे । रूस की राजनीतिक चालों के बावजूद भी इजराइल जीती हुई भूमि नहीं छोड़ेगा । अयूब खां का पतन और श्री लंका में राजनैतिक हलचलें होंगी । यह सभी भविष्यवाणियां सच हुईं ।'

श्री रावलजी की धारणा है कि भारतवर्ष में कृषि और विज्ञान की तीव्र प्रगति होगी । कुछ ऐसी वैज्ञानिक खोज भारतवर्ष करेगा जिससे दुनिया के वैज्ञानिक हतप्रभ रह जायेंगे । यहा की सैन्य शक्ति बढ़ेगी और सत्ता में धर्म का हस्तक्षेप भी होगा । नारी जाति को सम्मान मिलेगा। एक बार तो विश्वव्यापी युद्ध की लपटें उठेंगी और उसे देखकर मानव जाति कांप जायेगी तब सारे देश भारतवर्ष का मुंह ताकेंगे । भारत के प्रयत्नों से युद्ध तो नहीं होगा, पर अन्तःक्रान्ति भी रोके बिना नहीं रुकेगी । राष्ट्रसंघ असफल रहेगा, पर मानव के भाईचारे की भावना का निश्चित विकास होगा । संसार एक धर्म, संस्कृति और एक समान विचारधारा पर अग्रसर होने के लिए बाध्य होगा ।'

प्रस्तुत युग सन्धि के सम्बन्ध में भविष्य वक्ता या ज्योतिषी सुखद सम्भावनाओं के सम्बन्ध में आश्वस्त हैं। लेकिन इनके पहले विनाश अवश्यम्भावी है । संसार की तेजी से बदलती हुई परिस्थितियां यह बताती है कि उपर्युक्त भविष्य कथन में जिन महासंग्राम और महाविनाश की सम्भावना पर जोर दिया गया है, वह अनुमानतः समीप ही आ गया है । इन संकेतों को समझा जाना चाहिए।

धर्मग्रन्थों में वर्णित भविष्य कथन

धर्मग्रन्थों को 'अपौरुषेय' कहा गया है । उन्हें ईश्वर की वाणी माना गया है । दिव्य द्रष्टाओं, भविष्यवक्ताओं की तरह उनमें भी आने वाले समय के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है । वे सभी इस दृष्टि से एकमत प्रतीत होते हैं कि बीसवीं सदी का अन्त और इक्कीसवीं सदी का प्रारम्भ दो युगों की सन्धि वेला के रूप में होगा और आगामी युग मनुष्य जाति के उज्ज्वल भविष्य के रूप में सामने आयेगा । इस सन्दर्भ में विभिन्न धर्मग्रन्थों का अभिमत इस प्रकार है-

ओल्ड टेस्टामेण्ट के डैनियल तथा ''रेवेलेशन'' अध्यायों में इस बात की चर्चा की गई है, कि बीसवीं सदी की समाप्ति से पूर्व नया युग आने से पहले प्राकृतिक आपदा और मानवी विग्रह चरमोत्कर्ष पर होंगे । ''सेवन टाइम्स'' में वर्णित इन भविष्यवाणियों के विशेषज्ञ समझे जाने वाले पुरातत्ववेत्ता एवं हिब्रू भाषा विशारद डॉ०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विलियम अलब्राइट एवं जेम्स ग्राण्ट ने इनके घटित होने का सही-सही समय १९८० से २००० के बीच बताया है। इसमें इस सदी के अन्त में स्वर्णिम युग की स्थापना की भी बात कही गई है । नोस्ट्राडेमस की ऐसी ही भविष्य वाणियों की संगति इससे ठीक-ठीक बैठ जाती है ।

हर्बर्ट आर्मस्ट्रांग ने अपनी पुस्तक ''वण्डरफुल वर्ल्ड टुमारो'' में बाइबल के मैथ्यू २४।२२ का हवाला देते हुए कहा है कि बीसवीं सदी के अन्त में ऐसा समय आएगा, जब सारे विश्व में शीत युद्ध एवं नाना प्रकार के विग्रहों की बाढ़ आ जायेगी । वे सभी एक महायुद्ध को जन्म देंगे जिसमें बहुत कम लोग बचेंगे ।

बाइबिल की भविष्यवाणियों में 'सेवन टाइम' की तरह ही 'सेवन ट्रम्पेट्स' विशेष महत्त्व के हैं । उसके रेवेलेशन १६ में कहा गया है—

''पहले फरिश्ते ने अपना ट्रम्पेट (बिगुल) बजाया और पृथ्वी पर आग और खून का तूफान आया इससे पेड़ों का एक तिहाई भाग जल गया और तमाम हरी घास जल गई ।''

''दूसरे फरिश्ते ने 'ट्रम्पेट' बजाया और एक बहुत बड़ा जलता हुआ पहाड़ समुद्र में गिरा और उससे समुद्र का एक तिहाई जल खून हो गया । समुद्र में रहने वाले जीवित प्राणियों में से एक तिहाई मर गये और एक तिहाई जहाज नष्ट हो गये ।''

''तीसरे फरिश्ते ने 'ट्रम्पेट' बजाया और एक बहुत बड़ा तारा गिरा, जो दीपक की तरह प्रकाशित था । यह नदियों और पानी के स्रोतों के एक तिहाई भाग पर पड़ा इस तारे का नाम वार्मवुड है । इससे जलस्रोतों का एक तिहाई भाग 'वार्मवुड' हो गया । वह पानी जहरीला था, जिसके पीने से असंख्य मनुष्य मर गये ।''

इसी तरह अगले 'ट्रम्पेट्स' से बजने से दूसरी आपत्तियां दुनियां में रहने वाले लोगों को सहनी पड़ेंगी। चौथे 'ट्रम्पेट' से सूर्य-चन्द्रमा का प्रकाश घट जायेगा । पांचवें से मनुष्यों को नष्ट करने वाले टिड्डियों के आकार में प्राणी पृथ्वी के भीतर से निकलेंगे और छठे से ऐसे सवार उत्पन्न होंगे जो आग और धुआं से मनुष्यों को मारेंगे ।

ये भविष्यवाणियां अलंकारिक भाषा में लिखी गई हैं और उनका आशय उन वैज्ञानिक अस्त्र-शास्त्रों से ही है जो आगामी युद्ध के व्यवहार में लाए जायेंगे । इस बात की आशंका आजकल सब कोई कर रहे हैं कि यदि युद्ध में एटम-अस्त्रों का प्रयोग खुल कर किया गया तो उससे पेड़-पौधे, खेती, समुद्र तथा उसमें रहने वाले प्राणी सभी नष्ट होंगे । टिड्डी के आकार के जो प्राणी कहे गये हैं ए हवाई जहाज हो सकते हैं जो आजकल युद्ध के मुख्य साधन हैं । इसी प्रकार आग और धुएं से मारने वाले सवारों का अर्थ आधुनिक तोपों से समझा जा सकता है । हो सकता है कि जिस समय अन्तर्दर्शी योगियों ने इन घटनाओं को ध्यानावस्था में देखा था उस समय उनके पास इन नवीन आविष्कारों का वर्णन करने के लिए आजकल के शब्द न थे, इससे उन्होंने सर्वसाधारण के जाने हुए शब्दों में—जैसे पहाड़ का गिरना, तारे का टूटना, टिड्डियों का निकलना, आग-धुआं उगलने वाले सवारों का प्रकट होना जैसे वर्णनों से उन घटनाओं को प्रकट किया । आगामी युद्ध के लिए जो हजारों एटम और हाइड्रोजन बम तैयार किए गये हैं और जिनमें से हर एक एकाध करोड़ व्यक्तियों को मारने तथा दो सौ वर्गमील जमीन को जला कर नष्ट करने की शक्ति रखता है, जब उनका प्रयोग किया जाएगा, तो संसार में जगह-जगह वैसे ही दृश्य देखने को मिलेंगे जिनका बाइबिल में वर्णन किया गया है ।

सतयुग का सच्चा स्वरूप

हम लोग सदा 'सतयुग', 'कलियुग' आदि का नाम लिया करते हैं, पुण्यकर्मों में सतयुग का और पाप रूप कार्यों में कलियुग का आरोपण किया करते हैं । यह ठीक है पर सतयुग का वास्तविक रूप यही है कि इस समय मनुष्यों में अध्यात्म भावना की प्रधानता रहती है और इस लिए मनुष्य एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार ही करते हैं। जहा मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्ध सत्य, न्याय, सहानुभूति, उदारता पर आधारित होंगे वहां चाहे साधन-सामग्री को कमी भी हो तो भी दुःख, क्लेश, अधि-व्याधि का अस्तित्व नहीं रह सकता । ऐसे सतयुग की स्थिति का वर्णन 'महाभारत' (वन पर्व अ० १४९) में हनुमान और भीम के सम्वाद में मिलता है । उसमें कहा गया है—

कृते नाम युगे तात यत्र धर्मः सनातनः ।
कृतमेव न कर्त्तव्यं तस्मिन् काले युगोत्तमे।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"कृतयुग में सनातन धर्म की पूर्ण स्थिति रहती है। उसका नाम कृतयुग इसी लिए पड़ा कि उस उत्तम युग के लोग अपना सब कर्त्तव्य कर्म स्वयं सम्पन्न कर लेते थे।"

न विग्रहः कुतस्तन्द्री न द्वेषो न च पैशुनम्।
न भये नापि संतापो न चेर्ष्या न च मत्सरः ॥

"कहीं लड़ाई-झगड़ा नहीं होता, कोई आलसी भी नहीं रहता, द्वेष, चुगली, भय, सन्ताप, ईर्ष्या और मत्सर आदि दोष भी दिखाई नहीं पड़ते ।"

न साम ऋग्यजुर्वर्णा क्रिया नासीच्च मानवी।
अभिध्याय फलं तत्र धर्म संन्यास एव च ।।

" उस समय साम, ऋक्, यजुः आदि का पृथक्-पृथक् विभाग नहीं होता अर्थात् सब लोगों के ज्ञान में एक समानता रहती है, मनुष्य एक मत होकर कार्य करते हैं, एक-सा विचार रखते हैं और सब एक दूसरे के लिए स्वार्थ त्याग करते रहते हैं ।

न तस्मिन् युगसंसर्गे व्याधयो नेन्द्रियक्षयः ।
नासूया नापि रुदित न दर्पो नापि वैकृतम्॥

"इसलिए उस युग में न तो किसी प्रकार की बीमारी होती है, न इन्द्रियों में क्षीणता आने पाती है । न कोई किसी का दोष-दर्शन करता था, न कोई रोता रहता था, न किसी में घमण्ड था और न कोई अन्य प्रकार का विकार पाया जाता था ।"

यह समाज की उसी स्थिति का चित्र है जब लोग अपनी और संसार की वास्तविकता को अनुभव करके पारस्परिक भेदभाव को त्याग दें और पूर्णरूप से सहयोग तथा आत्मीयता की भावना रख कर अपने कर्त्तव्य कर्मों का पालन करें । उस समय लोगों के ज्ञान, कर्म, व्यवहार में ऐसा कोई अन्तर नहीं होता जिससे पारस्परिक मतभेद और विरोध की उत्पत्ति हो । आज धर्म का इतना हो-हल्ला मचाए जाने पर और धार्मिक ग्रन्थों का पहाड़ खड़ा हो जाने पर भी लोगों में घृणा, द्वेष, और शत्रुता की भरमार देखने में आती है, पर सतयुग में एक भी धर्म ग्रन्थ न होने पर और न धर्म के नाम पर किसी प्रकार की बाहरी धूमधाम, प्रदर्शन होने पर सब लोग उसके मूल तत्वों को समझने वाले और तदनुसार आचरण करने वाले होंगे, जिससे मानव-समाज निरन्तर प्रगति ही करता जायेगा और उसमें अकारण विरोध, प्रतिस्पर्धा, शत्रुता की भावना का नाम भी सुनने में न आएगा । 'महाभारत' में ही एक अन्य स्थान (शान्ति पर्व १६९) भीष्मपितामह ने राजा या समाज के नेताओं की रीति-नीति और न्याय व्यवस्था को ही समाज के सुधार और सतयुगीन होने का मुख्य आधार बतलाया है । जब देश की सामान्य जनता अपने प्रमुख व्यक्तियों से प्रेरणा ग्रहण करके सद्मार्ग पर चलती है, सदाचरण का पूरा-पूरा ध्यान रखती है तो संसार में से स्वयं ही पापों का लोप होकर सर्वत्र सत्य और न्याय का साम्राज्य दृष्टिगोचर होने लगता है—

ततः कृतयुगे धर्मो नाधर्मो विद्यते क्वचित्।
सर्वेषामेव वर्णानां नाधर्मे रमते मनः ॥

"उस सतयुग में धर्म ही रहता है, अधर्म का सही चिन्ह भी दिखाई नहीं देता तथा किसी भी वर्ण की अधर्म में रुचि नहीं रहती ।"

योगक्षेमाः प्रवर्तन्ते प्रजानां नात्र संशयः ।
वैदिकानि च सर्वाणि भवन्त्यपि गुणान्युतः ॥

उस समय प्रजा के योगक्षेम स्वतः सिद्ध होते रहते हैं, तथा सर्वत्र वैदानुकूल गुणों का विस्तार हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ।"

व्याधयो न भवन्त्यत्र नाल्वायुर्दृश्यते नरः ।
विधवा न भवन्त्यत्र कृपणे न तु जायते ॥

"जगत में उस समय रोग नहीं होते, कोई भी मनुष्य अल्पायु नहीं होता, स्त्रियां विधवा नहीं होतीं तथा कोई भी मनुष्य दीन दुःखी नहीं होता है ।"

अकृष्टपच्या पृथ्वी भवन्त्योषधयस्तथा ।
त्वक्पत्रफलमूलानि वीर्यवन्ति भवन्ति च ॥

"पृथ्वी पर बिना जोते-बोए ही खाद्य पदार्थ तथा अन्य वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं, उनकी छाल,पत्ते, फल और मूल सभी शक्तिशाली होते हैं ।"

महाभारत में अन्यत्र लिखा है—

द्विजातिपूर्वको लोकः क्रमेण प्रभविष्यति ।
दैव कालान्तरेऽन्य स्मिन्पुनर्लोके विवृद्धये ।।

इसमें स्पष्ट कहा गया है कि—"जब युग-परिवर्तन होगा तब 'क्रम' से सुसंस्कार सम्पन्न लोगों का अभ्युत्थान होगा और समाज की वृद्धि तथा उन्नति होने लगेगी ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'योग वशिष्ठ' में महर्षि वशिष्ठ ने कहा है—"जब पृथ्वी पर मनुष्यों का भार बहुत अधिक बढ़ जाता है तो भगवान् युद्ध, अकाल, महामारी, भूकम्प आदि किसी उपाय से उनको नष्ट करके भार को हल्का करते हैं ।"

मुस्लिम धर्म-ग्रन्थों में युग-परिवर्तन के संकेत

यद्यपि मुसलमानी धर्म में अपने अनुयायियों के बाह्य संगठन पर तथा अन्य देशों को जीत कर वहां अपना मजहब फैलाने पर विशेष जोर दिया है, तो भी जो थोड़े से आत्मज्ञानी सन्त हुए हैं उन्होंने भविष्य में होने वाले परिवर्तनों की सूचना अपने धर्म-भ्राताओं को दी है, जिससे वे ऐसे अवसर पर भ्रम में न पड़ें और अपने उचित कर्त्तव्य का पालन करें । चूंकि आरम्भ में मुसलमानों में कट्टरता का भाव अधिक भरा गया था और वे अपने सिवाय संसार के अन्य समस्त मजहब वालों को 'काफिर' कहते थे, इसलिए सन्तों ने उन्हें बताया कि कोई भी मजहब संसार में सदैव कायम नहीं रह सकता । जब हमारे मजहब की उम्र पूरी हो जायेगी तो उसका अन्त हो जाएगा और उसकी जगह जो कोई नवीन धर्म-प्रचारक आयें, उसकी बातों को आदरपूर्वक सुनना और उसके कार्य में सहायक बनना तुम्हारा कर्तव्य है ।

कुरान में कुछ ऐसे निशान भी दिए गये है जिनसे प्रकट होता है कि उन भविष्य-वक्ताओं की दृष्टि में वर्तमान समय ही युग-परिवर्तन का जगाना था । कहा गया है—

"व एजल एसारो उत्तेलत्"

अर्थात्—"उस समय ऊंटनियों की सवारी नहीं रहेगी।"

यह एक प्रसिद्ध बात है कि अरब के रेगिस्तानी इलाकों में आवागमन और जीवन निर्वाह का प्रधान साधन ऊंट ही है । पर अब युग-परिवर्तन का प्रभाव अरब जैसे बीहड़ प्रदेश पर भी पड़ रहा है और वहां भी लम्बे फासले की यात्रा मोटरों द्वारा किए जाने की व्यवस्था हो गई है । इसलिए अब ऊंट की सवारी का प्रचार दिन पर दिन कम होता जाता है और कोई आश्चर्य नहीं कि शीघ्र ही वह नाम मात्र को ही शेष रह जाय ।

एक स्थान पर छपी हुई पुस्तकों का जिक्र किया गया है—

"व एजल सोहाफो नै शेरत् ।"

अर्थात्-"छपी हुई वस्तुऐं फैलाई जायेंगी।"

पुराने जमाने में विद्या प्रचार का एकमात्र साधन मुख्यतः हस्तलिखित ग्रन्थ ही होते थे जो बड़े परिश्रम से और बहुत समय में तैयार होते थे और इसलिए जिनका प्राप्त होना एक समस्या ही थी । पर अब छपाई की मशीनों के कारण छोटी-बड़ी पुस्तकों, ट्रेक्टों, हर तरह के सामयिक पत्रों की बाढ़ आ गई है और दुनियां का कोई कोना ऐसा नहीं जहां छपा कागज दिखाई न दे । संभवतः भविष्य-दर्शन में इसी दृश्य को देखकर उपयुक्त संकेत किया गया है कि छपी हुई चीजों का विश्वव्यापी व्यवहार भी नए युग का एक चिन्ह होगा ।

मदीने की मशहूर किताब 'मकसूम बुखारी' में लिखा है कि "चौदहवीं सदी में कयामत आयेगी और हजरत मेंहदी प्रकट होकर पापियों का अन्त करेंगे ।" इसी किताब में आगे चलकर लिखा है कि "कयामत पास आ गई है। दोजख की आग भड़क उठी है, खारे संसार में अन्धेरा छा गया है । आंखें खोलकर उठो और देखो कि दुनिया नाश के परदे में जाने वाली है । जो कुछ करना है आज ही करलो ।"

और भी कितने ही मुसलमान विद्वानों ने होनहार घटनाओं के बारे में भविष्यवाणियां लिखी हैं जिनकी मुसलमान जनता में प्रायः चर्चा हुआ करती है । इनसे मालूम होता है कि "चौदहवीं सदी के अन्त में एक बड़ा जालिम शासक पैदा होगा जिसका नाम 'दज्जाल ' होगा। वह बहुत शक्तिशाली होगा और अपने को ईश्वर बतलायेगा। उसका आतंक सारी दुनिया पर छा जाएगा। अन्त में कयामत का समय आयेगा और हजरत मेंहदी प्रकट होकर उसे मारेंगे ।"

इस्लाम धर्म में चौदहवीं सदी को उथल-पुथल भरा समय बताया गया है । यह समय आज की परिस्थितियों से पूर्णतः मेल खाता है । "कुरआन सार" पुस्तक में विनोबा लिखते हैं कि कयामत के बाद समस्त पृथ्वी पर ऐसा प्रकाश छा जायेगा कि हमेशा दिन रहे, रात्रि की कालिमा कभी न आए । वे कहते हैं कि इस दिव्य प्रकाश से विश्वात्मा को अद्भुत शांति मिलेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

''इस्लाम भविष्य की आशा'' पुस्तक में श्री सैयदकुत्ब कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी का प्रारम्भ विज्ञान और धर्म के अद्भुत समन्वय के रूप में होगा। डॉ० कैरेल की पुस्तक ''अज्ञात मानव'' का हवाला देते हुए वे लिखते है कि आने वाले समय में शिक्षा प्रणाली आमूलचूल बदलेगी और भाव प्रधान, संस्कार प्रधान शिक्षा पर जोर दिया जाएगा । इससे वातावरण आध्यात्मिक बनेगा और नई मानव जाति के रूप में पृथ्वी पर महामानवों का प्रादुर्भाव होगा, जिससे सर्वत्र एकता और समता का राज्य स्थापित होगा ।

इस प्रकार न केवल दिव्य दृष्टि सम्पन्न महामानव, अपितु विभिन्न धर्मग्रन्थ भी एक ही तथ्य की ओर संकेत करते हैं। कि नवयुग की अरुणोदय बेला आ पहुंची । अब समय के प्रवाह के साथ व्यक्ति को अपने चिन्तन को भी बदल लेना चाहिए, नहीं तो परब्रह्म की चेतन सत्ता उसे दण्ड व्यवस्था द्वारा भी सही मार्ग पर लाना जानती है एवं वह ऐसा करके रहेगी ।

निष्कलंक अवतार, धर्म एवं संस्कृति का पुनरुद्धार

'भगवान कल्कि 'सम्भल' ग्राम में विष्णुयश शर्मा के घर जन्म लेंगे । सावित्री के उपासक होंगे, महेन्द्र पर्वत के निवासी भगवान परशुराम उनके गुरु होंगे । मथुरा का राज्य सूर्य-केतु को सौंपकर व हरिद्वार में अपनी पत्नी सहित निवास करेंगे । बौद्धों से संग्राम में उन्हें पराजित कर संसार में धर्म की स्थापना का काम पूरा करेंगे ।'

—कल्कि पुराण

'कलियुग के अन्त में धर्म में शिथिलता आने लगेगी, पाखण्ड बढ़ जायेगा तब सच्चे ब्राह्मणत्व की प्रतिष्ठा के लिए 'निष्कलंक भगवान' जन्म लेंगे।

—कल्कि पुराण

'इस बार फिर धार्मिक क्रान्ति और संसार को नया दृष्टिकोण देने का श्रेय मथुरा को ही मिलेगा ।'

—परमहंस राजनारायण षट्शास्त्री

'कुविचारों का समूलोच्छेदन करने वाली शक्ति संस्था के रूप में जन्मेगी और विश्व में क्रान्ति उत्पन्न करेगी।'

—केदारदत्त जोशी

'संसार को नया प्रकाश देने वाली शक्ति जन्म ले चुकी है ।'

—जार्ज बावेरी

'मेरा यह जन्म मात्र आकस्मिक संयोग ही है अर्जुन!' भगवान श्री कृष्ण ने कहा—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

'जब-जब पृथ्वी पर धर्म का नाश होता है और अत्याचार की बाढ़ आती है तब-तब मानवीय रूपों में प्रकट होकर सृष्टि में धर्म का उत्थान करता हूं ।'

धर्म और आस्तिकता को लोग भूल बैठे थे, उन परिस्थितियों में जलते हुए संसार के लिए भगवान कृष्ण का अवतार हुआ था । उससे पूर्व जितने भी अवतार हुए सबने ऐसी ही परिस्थितियों में आत्म-सृजन किया और भौतिकता में, लौकिक सुखों के अन्धकूप में पड़ी मानवता का उद्धार किया । महाभारत में उन सबका भीष्म पितामह ने विस्तृत परिचय दिया । कृष्णावतार की व्याख्या के बाद उन्होंने बताया—

कल्की विष्णुयशा नामा भयश्चोत्पत्स्यते हरिः।
कलेर्युगान्ते सम्प्राप्ते धर्मे शिशिलतां गते ॥
पाखण्डिनां गणानां हि वधार्य भकतर्षभ : ।
धर्मश्य च विवृद्धयर्थ विप्राणा हितकाम्यया ॥
ऐते चान्ए च बहवोहीदव्या देव गणैर्युता ।
प्रादुर्भावाः पुराणेषु गायन्ते ब्रह्मवादिभिः ॥

अर्थात् कलियुग के अन्त में जब धर्म की शिथिलता आने लगेगी, पाखण्ड बढ़ जायेगा तब धर्म की वृद्धि होगी और सच्चे ब्राह्मणत्व की प्रतिष्ठा के लिए पुनः अवतार लेंगे । वे भगवान के समान यश वाले 'विष्णुयशा' होंगे, भगवान के साथ अनेक देवतागण भी अपनी शक्तियों से पृथ्वी पर उनके सहचर बनकर आते है—ऐसा पुराणों ने गाया है ।

आज की परिस्थितियां ठीक अवतार के अनुरूप हैं। कल्कि पुराण के प्रथम अध्याय में १३ से ४५ श्लोक तक में बताया गया है कि भगवान कृष्ण जब अपना काम पूरा करके स्वर्ग लौट गये उस समय संसार में सर्वत्र धर्म, सुख और शान्ति की स्थापना हो गई । इस प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

एक युग की समाप्ति के बाद दूसरा युग आरम्भ हुआ। उसकी पीठ से अर्थात् अन्तिम भाग में (कलियुग के अन्त में) जनमानस की मलीनता के कारण पाप की वृद्धि हुई। अधर्म कोई नई और व्यक्तिवाची संज्ञा नहीं वरन् पाप और दुर्भाव, अनुशासन विहीनता एवं सामाजिक अव्यवस्था का नाम ही अधर्म है । अधर्म की पत्नी मिथ्या है, अर्थात् पाप की पुष्टि हमेशा झूठ बोलने से होती है । अधर्म और झूठ मिलकर ही दम्भ पैदा होता है । इन्हीं से एक कन्या माया, अहंकार प्रदर्शन, अपव्यय, फैशनपरस्ती, वासना के जाल आदि बढ़ाती है । दम्भ और माया के संयाग से लोभ और व्यभिचार जन्म लेते हैं । इनके मार्ग में जब-जब व्यवधान उत्पन्न होता है तब क्रोध पैदा होता है, जिससे हिंसा बढ़ती है । इस तरह के मनोविकार अर्थात् भगवान की व्यवस्था से विश्वास उठ जाना, झूठ बोलना, दम्भ-प्रदर्शन, मायावी, लोभी, कामुक, व्यभिचार, हिंसा आदि मिलाकर ही कलि होता है । उसके प्रभाव से लोग कौरवों की तरह भक्ष्य-अभक्ष्य खाते, दुष्ट स्वभाव के होते, जिन्ह से जिनकी चंचलता टपकती रहती है । शरीर से दुर्गन्ध, मांस-मदिरा, जुआ खेलने वाले, सोना और धन ही जिनकी आकांक्षाएं हों, युवावस्था का पता ही न चलता हो, रोगों की वृद्धि हो चले, यज्ञ, दान, तप, स्वाध्याय आदि वैदिक कर्मों को कुतर्क की दृष्टि से देखा जाने लगे, सभी वर्ण विकृत हो जायें, भाई-भाई के प्रति प्रेम न होकर साले से प्रेम करें, गुरु-शिष्यों के सम्बन्ध नष्ट हो जायें, साधु-सन्यासी गृहस्थों के से आचरण करने लगें, धर्मध्वजी साधुवंचक छली हो जायें, युवक-युवती आपस में ही विवाह कर लें, माता-पिता के प्रति कोई श्रद्धा न रहे, वेश पूजा जाने लगे, सदाचार का कोई महत्त्व न रह जाये, संसार की सभी धार्मिक व्यवस्थाऐं अस्त-व्यस्त हो जायें तब मानना चाहिए कि अब कलियुग पूरी तरह प्रौढ़ हो गया और उस प्रौढ़ हुए कलियुग में ही कीचड़ में कमल की भांति निष्कलंक अवतार होगा ।

आज की परिस्थितियों और ऊपर जिन परिस्थितियों का वर्णन किया गया है में राई रत्तीभर भी अन्तर नहीं है । आज की तथाकथित सभ्यता का विश्लेषण करके देखा जाए तो असमंजस ही माना जायेगा कि ज्ञानी शुकदेव और सूतजी ने इस युग की इन विकृतियों का इतना सूक्ष्म अध्ययन कैसे कर लिया होगा जो भी हो धर्म के अभिनव उत्थान की परिस्थितियां अब उभार पर हैं। शास्त्रीय प्रमाण अब यह बतलाता है कि सृजन-प्रक्रिया का निष्कलंक अवतार का अभी अवतरण होना चाहिए अन्यथा ईश्वरीय संकल्प झूठे होंगे ।

आज महर्षि ने कालातीत आत्मा का साक्षात्कार किया। वह आज की दुनियां के सभी वैज्ञानिकों की सम्मिलित बुद्धि से कहीं अधिक सूक्ष्मदर्शी विद्वान् भविष्यभेदी था, उसका कथन गलत नहीं हो सकता । अवतार आता रहा है, आता है, आता रहेगा । उसकी पहिचान संसार न करे तो वह स्वयं ही अपनी पहचान, कर्त्तव्य, अपने कर्मों की प्रचण्डता के द्वारा लोगों को कराता है ।

जाग्रत आत्मायें- देव-आत्मायें जो भगवान के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनके साथ-साथ जन्म लेती हैं वे भी कहीं इन अधर्म और पापपूर्ण विचारों के प्रवाह में न बह जायें, इसके लिए शास्त्रकार धन्यवाद का पात्र है जिसने पहले से ही आत्मा की सृजन और नव-निर्माण प्रक्रिया का इतिहास लिखकर रख दिया । कलाकार की शैली यद्यपि अलंकारिक है तथापि बोधगम्य भी है । उसने निष्कलंक अवतार की क्रिया-प्रक्रिया का सूक्ष्म विवेचन तक किया है, पर उसे सरस बनाए रखने के लिए अलंकार का, कथानक का सा ढंग लिया है । यदि बुद्धि पर थोड़ा-सा भी जोर देकर कल्कि पुराण को पढ़ा जाए तो उससे उस अवतार की जो शरीर से मनुष्य होने पर भी वंश, कुल, गोत्र, कर्म, विचार-भाव, व्यवसाय, स्वभाव आदि से पूर्ण निष्कलुष होगा, पाप उसे छू भी न पाया होगा, असत्य और अधर्म उसके पास भी न आ पाए होंगे । वह पूर्ण ज्ञानी, पूर्ण सन्त और बालकों के समान निर्मल स्वभाव वाला होगा, सब बातें स्पष्ट समझ में आती हैं।

द्वितीय अध्याय के ७वें श्लोक में उसके गांव में जन्म लेने की बात प्रकट की गई । उनके पिता यशस्वी (विष्णुयश) होंगे, उनकी माता सुन्दर बुद्धि वाली (सुमति) होंगी । अनेक देवता उनकी सहायता के लिए पृथ्वी पर पहले से ही आकर जन्म ले चुके होंगे । यह सब पृथ्वी में फिर से सतयुग लाने का संकल्प लेकर आऐंगे । अवतार उन देवआत्माओं की उस संकल्प की याद दिलाएगा और उन्हें धर्म संस्थान में प्रवृत्त करेगा ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य शरीर में जन्म लेने से जो स्थूल-भाव था उसे गंगाजी ने अर्थात् ज्ञान ने धोया, कल्कि का चिन्तन निर्मल हुआ । सावित्री ने भगवान के शरीर का मार्जन किया अर्थात् उन्हें ब्राह्मीभूत या प्राणवान् बनाया । (कलिक पुराण अध्याय २/१६) उनके जन्म से पूर्व ही तीन भाई और भी उत्पन्न हो चुके थे (श्लोक ३१) । उनके दो पुत्र हुए (८/३६) । अपने सर्वगुण सम्पन्न पुत्र देखकर उनके पिता ने कहा—'वत्स ! अब मैं तुम्हारा उपनयन सुसंस्कार कराऊंगा ब्रह्म संस्कार कराऊंगा' । सावित्री अर्थात् प्रकृति विद्या का ज्ञान कराऊंगा, गायत्री उपासना का फिर वेदाध्ययन करना (श्लोक ३५) ।'

उसके आगे ४०वें श्लोक तक कल्कि अवतार की बाल सुलभ जिज्ञासाओं का दिग्दर्शन कराया गया है । वहां ब्राह्मण की सच्ची प्रतिष्ठा के सूत्र का परिचय कराया गया है । कल्कि पिता से पूछते हैं—'पिताजी ! यह वेद क्या है ? सावित्री क्या है ? मनुष्य ब्राह्मण कैसे बनता है ?' पिता उत्तर देते हैं— तात् ! वेद विष्णु की वाणी है अर्थात् ब्रह्म का ज्ञान ही है और सावित्री-वेदमाता जो इस उपासना को करता है उसे बिना किसी अन्य मार्ग दर्शन के ही ब्रह्म का ज्ञान और ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है । यह ब्रह्म परमात्मा का अनादि, अविनश्वर, शाश्वत् और निराकार रूप है । मनुष्य जब उससे अपनी चेतना का तदाकार करा देता है तो जिस प्रकार लोटे के जल को समुद्र में डाल देने से वह समुद्र हो जाता है, उसी प्रकार मानव देह से प्रविष्ट चेतना भी ब्रह्म से मिलकर ब्रह्म हो जाती है । जब तक मनुष्य भगवान से सम्बन्ध नहीं जोड़ता वह ब्राह्मण नहीं बनता । ब्राह्मण बनने की प्रतिज्ञा स्वरूप उसे यज्ञोपवीत धारण कराते हैं । यह यज्ञोपवीत हृदय पर धारण कर लिया जाता है जिससे उसे परमलक्ष्य की याद सदैव बनी रहती है और मनुष्य सांसारिक कामनाओं, प्रलोभनों, हीन विचारों से बचकर उस पारमार्थिक लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है । साधना-उपासना, जप-तप व संयम-नियम आदि का पालन करता है । ऐसे ब्राह्मण जब तक यहां रहे तब तक देश सुख-समृद्धि, धन-धान्य और आत्मिक प्रसन्नता से परिपूर्ण रहा, पर जब से उनका अभाव हो गया संसार अधर्म में लिप्त हो गया । तात् ! तुम सच्चे ब्रह्मणत्व की उपसना करो और संसार का उद्धार करो। कल्कि बहुत प्रसन्न हुए, उनका उपनयन संस्कार कराया गया और वेदाध्ययन के लिए भेज दिया गया ।'

ब्राह्मण बालक (जो आगे चलकर अवतार होते हैं) गुरुकुल अध्ययन के लिए तत्पर होता है । तभी हिमालय पर्वत के महेन्द्र शिखर पर तप करने वाले परशुराम आते हैं, कल्कि को दर्शन देते हैं और साधनाओं के लिए आत्मज्ञान के लिए अपने साथ हिमालय ले जाते हैं । इस कथन का विस्तृत वर्णन, तृतीय अध्याय के १ से ११ श्लोक तक बड़े ही अलंकारिक ढंग से किया गया है, कल्कि पुराण की यह आख्यायिका समझने योग्य है । भगवान परशुराम उन्हें आयुर्वेद, धनुर्वेद, सामगान, आत्मदर्शन का ज्ञान और साधनाऐं सिखाकर ब्रह्म-परायण बना देते हैं । साधना पूर्ण हुई तब कल्कि भगवान ने कहा—'महाप्रभु ! दक्षिणा कैसे चुकाई जाय ?' इस पर उन्होंने कहा—'आप कल्कि अवतार हैं । अब यहां से जाकर शुक (उनकी ज्ञानयज्ञ प्रक्रिया में सहायक) और पत्नी पद्मा सहित मिलकर समस्त पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करें, यही मेरी दक्षिणा है । कल्कि महाप्रभु परशुराम को प्रणाम करके शिवजी का भस्म (ज्ञानगंगा की धारा) और परशु (विचारों की तीक्ष्णता) लेकर संसार के उद्धार के लिए चल देते हैं । भगवान शंकर उन्हें आशीर्वाद देते हैं ।—'तुम सभी शास्त्रों के ज्ञाता, शस्त्रार्थ विशारद, वेदों को जानने वाले हों और संसार के सभी मनुष्यों पर विजय प्राप्त करोगे ।'

—कल्कि पुराण ३/६

कल्कि लौटकर अपने ईश्वरीय ऐश्वर्य को प्रकट करते हैं तब सारे देश में यज्ञ, दान, तपस्या और व्रत करने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भगवान के प्रिय पात्र बनते हैं (श्लोक ३०) । इससे आगे जो भी अलंकारिक वर्णन है उसमें कल्कि के सैकड़ों सहायकों के अलंकारिक चित्रण हैं । उनकी विस्तृत व्याख्या इन पंक्तियों में सम्भव नहीं और न उनके करोड़ों सहायकों का इतिहास लिखा जा सकता है, पर कल्कि पुराण के विस्तृत अध्ययन से पता चलता है कि इसके सहायक भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान सब ओर से आते हैं । [illegible]

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म और सम्प्रदायों के लोग आते हैं और शिष्य-भाव से उनकी युग निर्माण प्रक्रिया में सहायक होते हैं । कलियुग के प्रभाव से उनमें जो मलीनता आ गई थी उसे कल्कि भगवान ने नष्ट करके उनकी बुद्धि को ईश्वर परायण, सात्विक और सदाचारी बनाकर उन्हें स्वर्ग के पारलौकिक सुख का अधिकारी बना देते हैं । इस तरह चारों सहायकों के साथ भगवान कल्कि राजसूय व अश्वमेध समाज व्यवस्था को सुधारने वाले जिसमें वातावरण का हवन द्वारा शुद्ध करना भी सम्मिलित है तथा लोगों की बुराइयां छुड़ाना भी यज्ञों द्वारा सर्वत्र प्रसार करते हैं । चौथे अध्याय के ८वें श्लोक में इन सभी सहायकों को एवं शुद्ध हुए अन्तःकरण वाले लोगों को उन्होंने आत्म स्वरूप बताया है और मृत्यु के बाद अपने में मिला लेने का वचन दिया है जिससे सभी आत्मायें अपनी चिन्ता को छोड़कर संसार को सुन्दर बनाने के कार्य में जुट जाती हैं । वे ब्राह्मण बालकों से प्रेम करते हैं और उनके उत्थान की नई-नई योजनाऐं बनाते हैं । (श्लोक २३ से २५, श्लोक ४०) में उन लोगों की भर्त्सना ही की गई है जो भगवान को केवल अपनी लौकिक इच्छाओं की पूर्ति की दृष्टि से ही देखते हैं, ऐसे लोगों को स्त्री स्वभाव वाला कहा है।

अगले अध्यायों में कल्कि के संघर्षपूर्ण कार्यों का अलंकारिक वर्णन है । जिसमें गुप्त इतिहास भी है जबकि उन्हें अनेक स्त्रियां पथभ्रष्ट करने के लिए प्रेरित की जाती हैं, पर कल्कि उन्हें पतिव्रत की महत्ता समझाकर उनके पापकर्म और कामभाव को नष्ट कर देते हैं । साथ ही अनेक पाखण्डियों के, धर्म ध्वजियों के दम्भपूर्ण कार्यों का पर्दाफाश करते हैं । उसमें उन्हें कठिन संघर्ष करना पड़ता है, पर निरन्तर प्रसन्न रहने वाले भगवान तो अपनी नवनिर्माण की गतिविधियों में संलग्न रहते हैं।

उनका सबसे बड़ा काम है - कीटकपुर निवासी बौद्धों (बुद्धिजीवियों) से संग्राम । कीटकपुर कोई राज्य नहीं है और न-बौद्ध का अर्थ बुद्धधर्म को मानने वाला ही होता है । कीटक का अर्थ है--संकीर्ण और स्वार्थी मनोवृत्ति वाला और बौद्ध का अर्थ है--जिसे बुद्धिमान होने का घमण्ड हो गया है । आज की दुनिया में शिक्षित बहुत हैं, उनके घमण्ड का कोई ठिकाना नहीं, अपने स्वार्थों में डूबे यह तथाकथित (बौद्ध) न तो धर्म को मानते हैं, न सदाचार को। आत्मा, परमात्मा, परलोक, पुनर्जन्म आदि को मूर्खतापूर्ण प्रलाप कहते हैं । कल्कि भगवान अपने ज्ञान की तलवार से उनके सिर काटते हैं, अर्थात् धर्म तत्व का ऐसा वैज्ञानिक स्वरूप उन्होंने प्रस्तुत किया कि उसे पढ़ने वाला हर व्यक्ति अपने जीवन को पलटता और बदलता चला गया है । इस ज्ञानयज्ञ में प्रबुद्ध आत्माओं ने युद्ध स्तर की तत्परता दिखाई और इस तरह घर-घर फैले भौतिकवादी बुद्धिवाद को परास्त कर उन्होंने धर्मतत्व का नूतन प्रतिरोपण किया । वे अपनी करुणा से, दया से, प्रेम से संसार को बदलते चले जाते हैं । साथ ही सैकड़ों दुःखी लोगों की, पीड़ित लोगों की पीड़ाऐं भी उन्होंने दूर कीं । अभावग्रस्त लोगों को धन, पुत्र, आरोग्य और पारिवारिक सुख-शान्ति देकर अनेक दीन-दुःखी लोगों को सुखी किया ।

उनकी बाजपेय यज्ञों (ज्ञानयज्ञ) की शृंखला लम्बे समय तक चलती है । लोगों की जीवन दिशाऐं बदलती हैं, तब वे ज्ञानयज्ञ का कार्य अपने भक्त-ब्रह्मणों पर छोड़कर तपश्चर्या के लिए चल पड़े । मथुरा की व्यवस्था सूर्य-केतु को सौंपकर वे शुक और पत्नी सहित हरिद्वार गंगाजी के तट पर निवास करने लगे । 'गंगातीरे हरिद्वार निवासमकल्पयत्' (दृष्टितौयांश प्रथम खण्ड, श्लोक ४६) वहां वामदेव, अत्रि, वशिष्ठ, गालब, भृगु पाराशर, नादर, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, ऋित, दुर्वासा, देवल, कण्व, देव, प्रमित, अंगिरा आदि ऋषियों के अंश से उत्पन्न आत्मायें भगवान के दर्शनों को जाती हैं । (४ से ७ श्लोक) और भगवान के दर्शन व उपदेश ग्रहण कर संसार को अच्छा बनाए रखने का संकल्प लेकर लौटती हैं । भगवान अपनी धर्मपत्नी सहित गंगाजी की स्तुति करते हैं और हिमालय पर्वत पर उन्मुक्त विचरण करते हैं । तृतीय अंश के उनविश अध्याय में ३३/३४ श्लोक में बताया है उनके शासनकाल में पृथ्वी पर कोई धर्महीन नहीं रह गया है । अल्पायुष्य, दरिद्रता, पाखण्ड, छल-कपट, ईर्ष्या आदि समाप्त हो गये, सब लोग सुखी हो गये ।

अवतारों को उस युग के व्यक्ति पहचान नहीं पाए, जब वे चले गये तभी उन्हें पहचाना जा सका । हो सकता है कि ऐसी सत्ता युग में विद्यमान हो, उसके क्रिया-कलाप उपयुक्त प्रतिपादन के अनुरूप चल रहे हों और हम उन्हें पहचान न पा रहे हों ।

ग्रहयोग की उपर्युक्त दशाओं में विशेष नक्षत्रों के उदय होने पर तथाकथित अवतार जिन परिस्थितियों में जन्म धारण किया करता है वह परिस्थितियां पूर्ण रूप से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्तित्व में आ गई हैं । यह देखकर उत्तराखण्ड के योगी, सन्त और महात्माओं की एक बैठक सन् १९३९ जुलाई में की गई । निष्कलंक अवतार के सम्बन्ध में चर्चा हुई और सर्वसम्पत्ति से निष्कर्ष यह निकला कि भगवान कल्कि का अवतार हो चुका है । मुसीबत यह थी कि अनेक नामधारी सन्त और महन्त अपने आपको कल्कि घोषित करने लगेंगे तब क्या होगा ? वास्तविक कल्कि की पहचान कैसे होगी ? इस सम्बन्ध में कुछ विशेषण निश्चित किए गये और यह निष्कर्ष दिया गया कि इन विशेषणों से संयुक्त व्यक्ति ही कल्कि अवतार होगा । 'कल्कि अवतार' नामक एक छोटी-सी पुस्तिका छपवाकर उत्तराखण्ड के महात्माओं ने उसे सारे देश में वितरित किया जिससे लोग अनेक कल्कियों के चक्कर में न पड़कर वास्तविक कल्कि की पहचान कर उनकी विश्व की, नव-निर्माण की प्रक्रिया में सहयोग दे सकें । इस पुस्तिका के कतिपय अंश—

'वह एक सुदृढ़ संगठन का स्वामी होगा और परब्रह्म परमात्मा से लेकर व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध तक के बारे में वह जो विवरण व आचार संहिताऐं निश्चित करेगा, उसे तर्कवादी और शिक्षित व्यक्ति भी मानेंगे । वह समस्त वैज्ञानिकों का वैज्ञानिक होगा, पर उनकी अपनी देन, धर्म और आत्मा के अन्तरंग रहस्यों का उद्‌घाटन ही होगी ।

उन महापुरुष के मस्तक में दोनों भौंहों के बीच (अंग्रेजी के v के आकार) का चन्द्रमा होगा । गले में दो रेखाओं-युक्त अर्द्धचन्द्र का चिन्ह होगा । यह विशुद्ध भारतीय वेशभूषा में होगा, उसका स्वास्थ्य बालकों जैसा, योद्धाओं जैसा साहसी, अश्विनी कुमारों की तरह चिरयुवा, वेदों और शास्त्रों का प्रकाण्ड पण्डित होगा, उसका पिता ही उसे योग साधनाओं की ओर प्रेरित करेगा। २४ अक्षरों का उसके जीवन में अत्यधिक बाहुल्य और महत्त्व होगा, २४ वर्ष की आयु में योग की उच्च भूमिका में प्रवेश करेगा, २४ अक्षर वाले मन्त्र का जप करेगा, २४वां अवतार होगा । २४ वर्ष तक तप करेगा, उसकी तपश्चर्या में २४ हजार, २४ लाख, २४ करोड़ जप आदि की खण्ड साधनाऐं सम्मिलित होंगी, २४०० यज्ञों का सम्पादन करेगा ।

श्री केदारदत्त जोशी के अनुसार—'भारतवर्ष का भौतिक स्तर उठेगा, कुविचारों का समूलोच्छेदन करने वाली शक्ति उदित होगी । यह एक छोटी-सी संस्था के रूप में जन्म लेगी, पर शीघ्र ही सारे विश्व में विचार-क्रान्ति उत्पन्न करेगी ।'

सूक्ष्म आकाश के संकेत और ज्योतिष विज्ञान की उक्त मान्यताऐं यह बताती हैं कि विश्व नवनिर्माण की शक्तियां और परिस्थितियां सम्पूर्ण शक्ति के साथ अस्तित्व में आ गई हैं, उन्हें रोक सकना अब मानवीय बल और बुद्धि के वश की बात नहीं ।

परमहंस श्रीराजनारायण षट्‌शास्त्री ने ज्योतिष गणित द्वारा जांचकर लिखा है कि—'इस बार फिर धार्मिक क्रान्ति और संसार को एक नया दृष्टिकोण देने और आज की भौतिक मान्यताओं को बदलने का श्रेय मथुरा को मिलेगा। यमुनाजी की कुण्डली देखने से पता चलता है कि सन् १९७० और १९८० के मध्य दिल्ली और आगरे तक यमुना को सुन्दर-सुसज्जित रूप दिया जायेगा । हरिद्वार की तरह मथुरा और वृन्दावन को विश्व तीर्थस्थल की प्रतिष्ठा मिलेगी । सतयुग की तीर्थ यमुना होगी । दिल्ली और मथुरा एक बार फिर महाभारत काल के समान ही उन्नति के शिखर पर आसीन होंगे ।'

महान् उपासक स्वामी जगदीशानन्द ने भी युग की प्रतिस्थापना का कार्यस्थल मथुरा मानते हुए लिखा है—'महागौरी (बंगाल की सुप्रसिद्ध साधिका) समाधि अवस्था में थी, उनकी जीवात्मा घूमते-घूमते मथुरा पहुंची, यहां उन्होंने दसवें अवतार श्रीकल्कि भगवान को एक पुराने मकान में भारतीय वेशभूषा में खड़े देखा । महागौरी ने स्वप्न में कई बार उनकी मच्छरदानी में भीतर शयन करते दर्शन किए हैं ।'

जार्ज बाबेरी जो मिश्र की गुप्त विद्याओं के प्रकाण्ड पण्डित थे, उन्होंने भविष्यवाणी की थी—'संसार को सतयुग का प्रकाश देने वाली आत्मा भारतवर्ष में जन्म ले चुकी है, पर उसका कार्य १९३६ के आसपास स्वतन्त्र रूप से विकसित होगा । १४ सितम्बर १९३६ नए युग का प्रथम दिन होगा, उस दिन यह आत्मा अपने मनुष्य-भाव से निकलकर सत्ता (अवतार) के रूप में आ जायेगी और फिर हजारों अज्ञानग्रस्त मूढ़ लोगों के विरोध के बावजूद वह अपने प्रखर और प्रचण्ड रूप से प्रभाव में आऐगी तथा संसार की झकझोरती चली जायेगी। १९६५ के बाद उसके स्वरूप की लोगों को स्पष्ट कल्पना होने लगेगी और सन् १९७० के बाद अधिकांश भारत में अवतार अपने रूप में आ जायेगा । इस बीच चौथे विश्वयुद्ध की काटछांट चलती रहेगी । एक भयंकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ज्वाला के साथ यह महाविनाशकारी होगा, जिसमें संसार की बड़ी-बड़ी सभ्यताऐं इस तरह नष्ट हो जायेंगी मानो वह कभी अस्तित्व में ही नहीं थीं । फिर भारतवर्ष अपनी तरह से संसार की व्यवस्था संभालेगा और संसार को सुख-शान्ति की राह दिखाएगा ।'

पुरातन इतिहास शोध प्रतिष्ठान मथुरा ने ''प्राचीनतम राष्ट्र इतिहास की लघु रूपरेखा'' नामक एक फोल्डर छापा है पेज ७ व ८ में सभी मनुओं का काल निर्धारण करते हुए लिखा है—''पौराणिक साहित्य के अनुसार दक्ष, ब्रह्म, धर्म, रुद्रदेव और इन्द्र सावर्णियों के मन्वन्तर व्यतीत हो चुके हैं कल्कि अवतार भी हो चुका है, जिसने बौद्ध प्रभाव को भारत में निरस्त किया था । उसका कल्कि सम्वत्-ज्योतिष गणना में मान्य है । इस समय ब्राह्म रात्रि का तमोमय सन्धिकाल है ।''

कल्कि पुराण और महाभारत आदि में निष्कलंक या कल्कि अवतार का जो समय दिया है वह भी अभी पड़ता है । इन दोनों सम्भावनाओं को एक ही स्थान पर पाकर अमेरिकी अध्यात्मवादियों की इस सन्दर्भ में रुचि बढ़ेगी, फलस्वरूप वहां 'कल्कि अवतार' की खोज के लिए एक समिति भी बनाई गई । एक अमरीकी छात्रा ने उसे अपना शोध विषय चुना है । इंग्लैण्ड आदि में जो प्रामाणिक प्रतिलिपियां हिन्दू-ग्रन्थों को मिली हैं उनके अनुसार इस समिति का विश्वास है कि कल्कि जन्म ले चुका है । ८ अक्टूबर के अमेरिकन रिपोर्टर के अनुसार यह समिति भारतवर्ष में रहकर कल्कि अवतार की विस्तृत खोज-जानकारी उपलब्ध करने में जुट गई है ।

इस युग के मसीहा और निष्कलंक अवतार पर दक्षिण के प्रसिद्ध सन्त और भविष्यवक्ता रामन स्वामी अय्यर के कथन अभी तक हुए भविष्य कथनों में सबसे अधिक स्पष्ट हैं । श्री अय्यर लिखते हैं—'कल्कि न तो घोड़े पर चढ़ा हुआ आएगा न तलवार लेकर ही, तो भी दोनों प्रतीक ही उसकी पहचान के माध्यम होंगे—घोड़ा शक्ति का प्रतीक है, उस पर कल्कि आसीन होने का अर्थ है कि वह इतना समर्थ होगा कि 'शक्ति' उसकी इच्छानुसार कार्य करेगी। राम ने अपनी शक्ति को हठात् रावण जैसे तान्त्रिक पर भी थोप दिया था । कृष्ण अवतार थे, क्योंकि उनकी शक्ति के आगे कौरव-पाण्डव तक थर्राते थे । अपने युद्ध अहंकार को व्यक्त करना अवतार का ही काम है और उनकी यही पहचान होती है कि संसार के बुद्धिमान से बुद्धिमान और बलवान से बलवान लोग भी उनकी शक्ति से नीचे पड़ जाते हैं । घोड़े का यही अर्थ है कि वह इतिहास का प्रबलतम शक्तिशाली व्यक्ति होगा ।

तलवार का अर्थ काटना है । शत्रु के सिर ही नहीं काटे जाते, विचार भी काटे जाते हैं । कल्कि पुराण से भी प्रकट है कि कल्कि बौद्धों अर्थात् उन लोगों के बुद्धिवाद से युद्ध करेगा जो आज के युग में देखने में बहुत शिक्षित लगते हैं, पर वे पदार्थ से परे कुछ सोच ही नहीं पाते । नास्तिकवादी, भोगवादी, संचय और उपयोगितावादी व्यक्तियों की ऐसी मान्यताओं का जो निराकरण करेगा वही कल्कि होगा ।

श्री अय्यर ने बताया है—'कल्कि का जन्म मथुरा के पास ही होगा । शम्भल का अर्थ चम्बल नदी के किसी तटवर्ती ग्राम से है । कार्यक्षेत्र उसका मथुरा होगा, उसके सहायक सभी प्रान्तों से आऐंगे । वह महान् गायत्री उपासक और सावित्री तत्व का ज्ञाता होगा । विचारों को विचारों से काटने की कला में वह अत्यधिक प्रवीण होगा। अब तक समाज में जो मान्यताऐं फैली हैं उनकी प्रतिस्थापनाऐं दे सकने में केवल मात्र वही समर्थ होगा। दूसरे कई लोग अपने आपको अवतार कहेंगे, वे थोड़े-बहुत चमत्कार भी दिखाऐंगे, पर किसी प्रकार की रचना उनके वश की बात न होगी । इसलिए बरसाती कीड़ों की तरह निकलेंगे और अपने आप नष्ट हो जायेंगे, जबकि कल्कि नाम महापुरुष सम्पूर्ण आर्यग्रन्थों के उद्धार से लेकर सामान्य जीवन तक के सारे रीति-नीति सम्बन्धी नए विचारों का सृजन करेगा, पीछे इन्हीं विचारों का लोग अनुसरण करेंगे । वह गृहस्थ होगा, अतुल सम्पत्ति वाला होकर भी उसका रहन-सहन साधारण गृहस्थ जैसा होगा। उसकी सम्पत्ति लोकमंगल के लिए होगी, उसके इस आदर्श को उसके देशव्यापी अनुयाई भी अपनाकर एक समर्थ संगठन तैयार करेंगे और उनके दिए हुए सुविचारों को सारे विश्व में फेला देंगे । महिलाऐं उनकी विशेष सहायक होंगी, वह अद्भुत स्वभाव वाला चमत्कारी व्यक्ति अपने जीवन के उत्तरकाल में स्थान परिवर्तन करेगा तब उसका रौद्र रूप प्रकट होगा । अब उसके भयंकर विचारों से लोग कांपने लगेंगे तब उसकी साध्वी पत्नी शासन-सूत्र सम्भालेगी, फिर वह अपने अतुलित प्यार और स्नेह से भूले-भटकों को रास्ता दिखाऐगी । भारतवर्ष विपुल उन्नति करेगा और उसका प्रभाव रूस और अमेरिका पर छा जायेगा । यह दोनों देश भी उसके वैभव के आगे नगण्य जैसे होंगे ।'

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता पैरा सेल्सन, नास्टरडम, बेजीलेटिन तथा पादरी वेल्टरबेन सबका निश्चित मत है कि युग परिवर्तन ही इस शताब्दी की अन्तिम और जबरदस्त घटना होगी, उसे रोकना किसी के लिए सम्भव न होगा । इन तत्वदर्शियों की भविष्यवाणियां भी महत्त्वपूर्ण हैं ।

१. सारे संसार का शासन-सूत्र एक स्थान से चलेगा, एक भाषा होगी, एक संस्कृति । शहरों की संख्या बहुत थोड़ी रह जायेगी, संचार के साधनों का यहां तक विकास हो जायेगा कि लोग अपने मन की बात दूसरे लोगों को बेतार के तार की तरह पहुंचा दिया करेंगे ।

—डैनियल

२. सतयुग का प्रारम्भ २५ वर्ष से कम आयु के बालकों से प्रारम्भ होगा । वृद्ध लोग रूढ़िवादी मान्यतायें छोड़ने को तैयार नहीं होंगे तब भारतवर्ष में ऐसे सन्त का जन्म होगा जो सारी दुनियां में विचारक्रान्ति खड़ी कर देगा । उसके प्रभाव में सैकड़ों लोग आ जायेंगे पर उनमें से मूढ़ मान्यताओं वाले लोग अपने को बदलने में लज्जा ग्रहण करेंगे तब नई पीढ़ी उसके विचारों को आत्मसात् करेगी और नए युग का शुभारम्भ करेगी । लोग आशावादी होंगे, छल-कपट, लूटपाट का स्थान प्रेम, दया, त्याग, ईमानदारी, परोपकारी और भाईचारे की भावना ग्रहण कर लेगी । धर्म की स्थापना होगी और अधर्म का अन्त हो जायेगा । यह सब सन् २००० तक स्पष्ट दिखाई देने लगेगा ।

'इमामेआकिज्जमा' के अनुसार—'१४वीं सदी में एक फरिश्ता आऐगा, वह फिर बचे हुए लोगों को सत्य, धर्म और न्याय का मार्ग दिखाकर संसार को अच्छा बनाऐगा ।'

३. भृगु संहिता के आधार पर स्वामी असीमानन्द ने लिखा है कि—'इस बार भी संसार का उद्धार करने वाला २४वां अवतार भगवान राम-कृष्ण की तरह सावित्री शक्ति का उपासक और भगवान बुद्ध की तरह सहस्रार चक्र का सिद्ध महायोगी होगा । वह अपने तपोबल से अनेक रोगियों को अच्छा करेगा, अनेक अभावग्रस्त लोगों के अभाव दूर करेगा । लोग उसकी पहचान अपने आप करेंगे और उसकी सेवा के लिए अपने आप तत्पर होंगे। उसके सहायक भारतवर्ष को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का प्रयास करेंगे ।'

४. श्री असीमानन्द के अनुसार—'जब ऐसी क्रान्ति उठ खड़ी होगी तब भारतवर्ष की ओर सारी दुनिया के लोग आकर्षित होंगे और उसके बाद ही संसार में नए युग का अविर्भाव होगा । यह समय यद्यपि जल्दी ही आऐगा तथा उस तक पहुंचने में सारी दुनिया को भारी संकटों का सामना करना पड़ेगा । यहां तक सम्भव है कि समस्त दुनियां की आबादी का एक बड़ा भाग आन्तरिक संघर्ष में ही नष्ट हो जायें ।'

इसी प्रकार मैक्सिको के भविष्यवक्ता श्री आहारो आमया ने भी शीघ्र ही युग परिवर्तन की भविष्यवाणी करते हुए लिखा है—सन् १९७० से २००० तक के ३० वर्ष धरती पर महान् संकट के दिन होंगे । इन दिनों तृतीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियां उमड़ती-घुमड़ती रहेंगी, पर आज के राजनेता अणुयुद्ध के भयंकर परिणामों से अच्छी तरह वाकिफ हो चुके हैं अतएव कोई बड़ा युद्ध होने की सम्भावना नहीं है, किन्तु मनुष्य जाति पर संकटपूर्ण स्थिति निश्चित है । ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि सन् २००० तक मनुष्य को भुखमरी, अकाल, ओलावृष्टि आदि तीन प्रकोपों का सामना करना पड़ेगा, पर उसी बीच संसार में ईश्वरीय शक्तियां भी प्रखर होंगी और संसार को नए आदर्शों की ओर ले चलने का काम पूरा करेंगी ।'

श्री आहारो आमाया ने राष्ट्रपति कैनेडी को एक सप्ताह पूर्व चेतावनी देकर कहा था कि उन्हें कुछ दिन तक यात्राऐं नहीं करने चाहिए । श्री कैनेडी तक यह बात पहुंचाई भी गई थी, पर उन्होंने उसे अन्धविश्वास कहकर झुठला दिया । एक सप्ताह के अन्दर ही उनकी टैक्सास की यात्रा करते हुए हत्या कर दी गई । इसी तरह उन्होंने जानसन के लिए कहा था कि वे दुबारा राष्ट्रपति नहीं होंगे। भारतवर्ष की उन्नति और उसके विश्व नेतृत्व के बारे में श्री आहारो आमाया का कथन भी उपर्युक्त भविष्यवक्ताओं के समान ही है । आगामी दिनों में विश्वव्यापी उथल-पुथल के बारे में संसार के सभी भविष्यवक्ता एकमत हैं । यह क्रान्तियां-परिवर्तन निश्चित ही दुनिया को बदल देंगे और जो आज विशृंखलताऐं, मानव जाति में पाप और पतन की सम्भावनाऐं परिलक्षित हो रही हैं उन्हें मिटाकर नए धर्म, नए आदर्शों की स्थापना करेंगे जिसमें सभी मनुष्य परस्पर प्रेम और विश्वासपूर्वक जी सकेंगे । ऐसे सतयुग की प्रतीक्षा की जानी चाहिए, उसे अस्तित्व में लाने के प्रयत्नों को पहचानना और पूरा करने में सहयोग भी देना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्य विज्ञानियों के अनुमान और आकलन

निकट भविष्य में यह परिस्थितियाँ सामने आयेंगी

मनुष्यों का हाथ और जन्म-पत्री देखकर भविष्य बताने वाले, रेखाओं और ग्रह-गणित का सहारा लेते हैं । इसमें परम्परागत मान्यताएँ आधार रहती हैं, भविष्य वक्ता की व्युत्पन्न मति का प्रयोग कम ही होता है । किन्तु संसार में ऐसे भी भविष्यवक्ता हैं जो बदलती हुई परिस्थितियों और घूमते हुए घटनाचक्र को ध्यान में रखते हुए अपनी इस दुनिया का भविष्य बताने का भी साहस करते हैं । उनका दावा है कि उनका अनुमान फलित ज्योतिषियों की तरह निराधार नहीं वरन् कम्प्यूटर द्वारा प्रस्तुत किये गये निष्कर्षों की तरह है । वे अपने प्रतिपादन उस प्रवाह को ध्यान में रखते हुए करते हैं जो प्रचण्ड धारा की तरह बह रहा है । नदी के उद्गम पर उत्पन्न हुआ जल का उभार देखकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नदी तट पर बसे हुए किस क्षेत्र में कितनी बाढ़ आवेगी । मानसून, आँधी-तूफान और टिड्डी दल के चल पड़ने पर मौसम विशेषज्ञ आगे के क्षेत्रों में सूचना भेज देते हैं कि कितनी देर में कितना बड़ा परिवर्तन उन्हें देखने को मिलेगा, इस प्रकार की सूचनाएँ भविष्य विज्ञानी अनुमान और आकलन के आधार पर पिछले दिनों देते रहे हैं ।

एल्डुअस हक्सले ने अपनी पुस्तक 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' में लिखा है—संसार के सामने सबसे बड़े खतरे दो हैं—एक बढ़ती हुई जनसंख्या और सभ्यता का यन्त्रीकरण। जिस हिसाब से लोग बच्चे पैदा करते चले जा रहे हैं यदि उसमें कोई बहुत बड़ी रोकथाम न हुई तो अगले १०० वर्ष में ही, मनुष्य के निर्वाह का प्रश्न जटिल हो जायगा और इसके बाद तो लोग जीवित रहने को—अन्न, जल और हवा की—रोटी, कपड़ा और मकान की—प्राथमिक आवश्यकताएँ पूरी न हो सकने के कारण ही अभावग्रस्त परिस्थितियों में दम तोड़ने लगेंगे । सरकारी नियन्त्रण और औद्योगिक उत्पादन वितरण का ठीक तरह से निर्वाह सम्भव न होगा और सामाजिकता अच्छृंखलता में बदल जायगी । इतनी बड़ी भीड़ में और इतनी जटिल परिस्थितियों में आदर्शवादी मान्यताओं की रक्षा नहीं हो सकती । मनुष्य के बीच जंगल का कानून चल पड़ेगा और वन्य पशुओं की तरह बिना किसी रीति-नीति का जीवन जीना पड़ेगा ।

सभ्यता का यन्त्रीकरण में इस प्रकार बताते हैं कि मनुष्य के चिन्तन पर यन्त्रों का इतना दबाव पड़ेगा कि वह स्वतन्त्र रीति से कुछ सोच ही न सकेगा और लगभग पराधीन हो जायगा । प्रेस प्रकाशन, रेडियो, टेलीविजन और फिल्में चलाने का अधिकार, सत्ता अथवा सम्पत्ति के आधार पर चन्द लोगों के हाथों चला जा रहा है । वे लोक-मानस पर अपनी मर्जी का दबाव आकर्षक पोटलियों में लपेट कर इस कदर डालते हैं कि आदमी उससे भिन्न प्रकार नहीं सोच सकते उसे हाथ-पावों की हरकत करने भर की आजादी रहती है सोचने की नहीं । फलतः वह बौद्धिक कठपुतली बनता जा रहा है । यह एक बड़ा खतरा है जिसमें जीवित मनुष्य सोचने की दिशा में उसी तरह पराधीन होंगे जैसे कि ग्रामोफोन की मशीन बोलने के लिए अपने मालिक की आज्ञानुवर्ती होती है ।

हक्सले ने अपने एक अन्य ग्रन्थ "दि जीनियस एण्ड दि गार्डस" में ये संकेत दिया है कि प्रजा का स्तर उठाये बिना आजकल जो प्रजातन्त्र का छकड़ा चल रहा है उससे केवल निहित स्वार्थों का भला होगा । प्रजा जब अपना कर्त्तव्य और अधिकार समझ ही नहीं सकेगी तो उसका मत पत्र कोई भी झटक लेगा ऐसी दशा में वह उद्देश्य पूरा न हो सकेगा जिसके अनुसार प्रजा द्वारा प्रजा के लिए शासन करने और सबको न्याय मिलने की घोषणा की गई थी । प्रजातन्त्र क्रमशः एकाधिकारी शासन में बदलते जायेंगे । यह उनकी असफलता की स्पष्ट घोषणा होगी। किन्तु इससे भी कोई हल न निकलेगा । अधिनायकों की सनकें सामन्तवादी शासन काल में रहने वाली प्रजा की अधिक पराधीन परिस्थिति लाकर खड़ी कर देगी और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोग अपने को विवशता से घिरे, लाचार और असहाय प्राणी की तरह अनुभव करेंगे ।

कुछ शताब्दियों बाद मनुष्य की आकृति में क्या कुछ परिवर्तन होगा ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रसिद्ध अँग्रेज विज्ञान लेखक एच० जी० वेल्स का कहना है कि अगले दिनों मनुष्यों के सिर काफी बड़े होंगे । अमेरिका के शरीर विज्ञानी ओलैफ स्टेन ने लिखा है कि भविष्य में मनुष्य की आँतें इतनी जटिल न रहेंगी, वे सीधी-साधी और छोटी होंगी । रूसी नृतत्ववेत्ता अलेक्सान्देर वेल्याएव की मान्यता है कि भविष्य में स्त्रियों के सिर बड़े, बाल छोटे, दाँत थोड़े और होठ पुरुषों जैसे रोम युक्त होंगे । उन्हें भूरी हलकी मूँछें भी कह सकेंगे । नाखूनों का कड़ापन चला जायगा, मात्र उस जगह उनके निशान भर रह जायेंगे।

लन्दन की रायल सोसाइटी आव आर्ट ने एक शताब्दी बाद संसार का स्वरूप क्या होगा इस विषय पर इंग्लैण्ड के दूरदर्शी विद्वानों का मत संग्रह किया है और उसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि निकट भविष्य में संसार की परिस्थितियाँ तेजी से बदलेंगी और वे उससे लगभग सर्वथा भिन्न होंगी जैसी कि आज हैं।

विज्ञान की प्रगति रुकने वाली नहीं है । उसे अधिकाधिक सुख-सुविधा के साधन प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त किया जायगा फलतः वे उपाय हाथ लग जायेंगे जो कम खर्च में अधिक आराम दे सकते हैं, दूसरी ओर जनसंख्या की वृद्धि रुकेगी नहीं, धीमी करने के प्रयास करते-करते भी संख्या इतनी बढ़ जायगी कि धरती के साधन कम पड़ेंगे । अस्तु, जो उपलब्ध होगा उसका न्यूनतम भाग लेकर ही लोगों को सन्तोष करना पड़ेगा। विज्ञान और प्रजनन की घुड़दौड़ की पूँछ से बँधी हुई परिस्थितियाँ भी आगे बढ़ने के लिए विवश होंगी अतएव स्वभावतः उनका स्वरूप आज की अपेक्षा बहुत अधिक भिन्न हो जायगा ।

सर्वेक्षण के अनुसार अब से सौ वर्ष बाद सन् २१०० के लगभग-घर-घर में चौका-चूल्हा जलने का वर्तमान झंझट उपहासास्पद पिछड़ापन गिना जायगा । प्लास्टिक के थैलों में बन्द स्टेण्डर्ड भोजन हर जगह मिलेगा । वे पैकिट पाँच औंस से भारी नहीं होंगे, पोषक पदार्थ आवश्यक मात्रा में मिले रहने से इतनी खुराक पूरी मानी जायगी। तब पेट भी अधिक बोझ उठाने, पचाने की स्थिति में नहीं होंगे, फिर वस्तुओं का वितरण भी तो जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने का ध्यान रखते हुए करना पड़ेगा । इस दृष्टि से पाँच औंस की भोजन मात्रा पूर्ण एवं पर्याप्त मानी जायेगी । उसे बड़ी फैक्टरियाँ पकावेंगी। थोड़े से कपड़ा मिल लाखों करोड़ों लोगों का तन ढक देते है फिर कोई कारण नहीं कि एक इलाके का एक भोजन मिल सैकड़ों मील के क्षेत्र में लोगों की खाद्य आवश्यकता पूरी न करदें । घर-घर चूल्हा जलाने से जो गन्दगी, परेशानी और समय तथा स्थान की बर्बादी होती है उसका सर्व सम्मति से सफाया कर दिया जायगा । इससे ईंधन की समस्या हल होगी और चौके जो स्थान घेरते हैं उसमें लाखों लोगों को रहने की जगह मिलेगी ।

विवाह शादियों के नियम तो और भी सरल हो जायेंगे, पर बच्चे पैदा करने पर नियन्त्रण क्रमशः बढ़ते ही जायेंगे । इसके लिए लाइसेन्स प्राप्त करने होंगे । आज आतिशबाजी हर कोई नहीं बना सकता । उसके लिए योग्यता, इलाका, साधन, आवश्यकता आदि अनेक बातों का ध्यान रखकर ही लाइसेन्स दिये जाते हैं । बच्चा पैदा करने का लाइसेन्स देते समय भी ऐसे अनेकों प्रश्न पूछे जायेंगे और व्यक्ति तथा देश की स्थिति देखते हुए ही लाइसेन्स मिलेंगे । तमाखू, अफीम, भाँग, शराब आदि का उत्पादन करने की इच्छा अथवा क्षमता होने पर रोक इसलिए लगी हुई है कि वे अधिक तादाद में पैदा होंगी तो जनस्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा । शहरों के घने इलाकों में जानवर पालने की छूट नहीं मिलती । क्योंकि वे गन्दगी पैदा करते हैं । ठीक इसी तरह बच्चे पैदा होने से लेकर समझदार होने तक लगातार गन्दगी तथा अव्यवस्था फैलाते हैं । उन्हें जनने का ही नहीं पलने का भी नगरों से कुछ दूर प्रबन्ध किया जाया करेगा ।

खाद्य पदार्थों में से दूध, घी ही नहीं माँस भी हटा दिया जायगा क्योंकि जमीन जब मनुष्यों के लिए ही कम पड़ेगी तो जानवारों को उस पर कौन रहने देगा । जानवर न रहेंगे तो दूध, माँस की बात ही कहाँ बनेगी । जलाशयों में पाई जाने वाली मछलियों का चूर्ण ही तब खाद्य पदार्थों में मिलाकर माँसाहारी रुचि के लोगों को मिल सकेगा। अन्न खाने की आदत भी लोग छोड़ देंगे । तरह-तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की घासें उगाई जायेंगी और उन्हीं से खाद्य पदार्थ बना लिये जायेंगे । जलाशयों पर काई उगाई जायेगी और वह भी खाने के काम आवेगी । चीनी, तेल आदि की आवश्यक मात्रा घास और पेड़ों से ही निकल आया करेगी । कपड़े सूत, ऊन या रेशम के नहीं बनेंगे । रासायनिक धागों का आजकल प्रचलन बढ़ रहा है आगे चलकर शरीर ढकने का काम पूरी तरह इन्हीं धागों से लिया जायगा ।

आकाश से जमीन का काम लिया जायगा । कम से कम तिमंजली जमीन तो हो ही जायगी । रिहायशी मकान तो कई-कई मंजिल के होंगे ही । रेलगाड़ियाँ जमीन के नीचे—पैदल जमीन पर और मोटरें पुल बनाकर खड़ी की गई सड़कों पर दौड़ा करेंगी । तब तक हैलीकाप्टर से अच्छे किस्म की उड़न मोटरें भी बन जायेंगी और वे खुले आसमान में उड़ेंगी, वैसा चलना उन्हें भी निर्धारित रास्तों से ही पड़ेगा अन्यथा उनकी भी टक्करें और दुर्घटनाएँ होंगी । रेलें, बसें कई मन्जिल की होंगी ताकि उनमें जमीन कम घिरे और आदमी अधिक बैठ सकें । स्कूल, फैक्टरी आदि सभी दुमन्जिले होंगे ।

कृषि के लिए खेत मकानों की ऊपरी मंजिल पर रहेंगे ताकि पूरी जमीन लोगों के रहने, कल कारखानों और यातायात के लिए प्रयुक्त हो सके । खम्भे लगाकर अधर में कृषि फार्म बना लिए जायेंगे और हरियाली उसी पर टँगी रहा करेगी । बड़े पेड़ भी जानवरों की तरह ही संसार से समाप्त हो जायेंगे । छोटी झाड़ियों से ही फल, फूल आदि का काम चल जायगा और घास की लुगदी से लकड़ी बन जायगी । जलावन के लिए सिर्फ बिजली प्रयुक्त होगी फिर पेड़ों की जरूरत भी क्या है ?

प्रेस उद्योग नाम मात्र का रह जायगा । रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन समाचार सुनाने तथा पत्र-व्यवहार का माध्यम बनेंगे । स्कूली पढ़ाई भी इन्हीं साधनों के सहारे हो जाया करेगी । महत्त्वपूर्ण तथ्यों वाली पुस्तकें 'माइक्रो फिल्मों' के रूप में उपलब्ध रहेंगी । पत्र पत्रिकाएँ, पुस्तकें आज जितना कागज खराब करती हैं उसकी तब बिल्कुल आवश्यकता न रहेगी । प्रमुख समस्या जीवनयापन के साधनों की होगी । रोटी, कपड़ा और मकान का प्रबन्ध ही जब कठिन हो जायगा तो 'प्रेस' जैसे विलासी साधन को जीवित रखने के लिए कागज तथा दूसरे साधन कहाँ से जुटाये जा सकेंगे ?

स्पष्ट है उक्त परिणति के लिए विश्व की वर्तमान व्यवस्था ही जिम्मेदार है ।

आवश्यकता है अब व्यवस्था में परिवर्तन की

अनेक वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों, समाजशास्त्रियों ने इसमें कई दोष गिनाये हैं । उनने इस दोषपूर्ण विश्व व्यवस्था को देखते हुए आशंका व्यक्त की है कि यदि जल्दी ही इसके लिए जिम्मेदार मनुष्य जाति ने अपनी गतिविधियों में परिवर्तन लाकर इस व्यवस्था को सन्तुलित नहीं किया तो उसे तरह-तरह के संकट झेलने पड़ेंगे और अस्तित्व सम्बन्धी समस्या भी सामने आ सकती है।

इस सम्बन्ध में पर्यावरणशास्त्री जे० फॉरेस्टर ने मानवी विकास के दो पहलुओं को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है, ये हैं प्राकृतिक संसाधनों की कमी एवं पर्यावरण पर लगातार बढ़ता दबाव । उनके अनुसार विकास की यह पद्धति प्रकृति और मनुष्य के लिए अधिक समय तक अनुकूल न रह सकेगी और दोनों को गम्भीर क्षति उठानी पड़ेगी ।

डी० मिडोज एवं उनके सहयोगियों के भी इससे मिलते-जुलते विचार हैं । उन्होंने भी इन समस्याओं को सबसे महत्त्वपूर्ण माना है । इस सन्दर्भ में वे अपनी पुस्तक "दि लिमिट्स टू ग्रोथ" (१९७२, पृ० २३) में लिखते हैं कि "यदि आबादी, औद्योगीकरण, प्रदूषण, खाद्यान्न उत्पादन एवं संसाधनों में कमी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सम्पूर्ण विश्व में विकास विस्तार की वर्तमान पद्धति ही चलती रही तो अगले सौ वर्षों में इस पृथ्वी पर और आगे मानवी विकास की किसी भी प्रकार की सम्भावना पूर्णतया समाप्त हो जायेगी । तब अकस्मात् जनसंख्या और औद्योगीकरण प्रतिष्ठान धीरे-धीरे लगातार घटते ही चले जायेंगे जिन पर पुनः नियन्त्रण स्थापित कर पाना किसी भी प्रकार सम्भव न होगा ।"

"मैनकाइण्ड एट दि टर्निंग प्वाइण्ट" (पृ० ५५) में मिह्यजल मेसारोविक एवं एडवर्ड पेस्टल ने भी वर्तमान विकास पद्धति के कारण विश्व विभीषिका से इंकार नहीं किया है । पर वे कहते हैं कि यदि ऐसी विभीषिका उत्पन्न हुई तो वह क्षेत्रीय स्तर पर आरम्भ होगी और भिन्न-भिन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय में भिन्न-भिन्न कारणों से उत्पन्न होगी । उनने इस प्रकार की विपत्ति के आरम्भ का समय भी घोषित कर दिया है । उनका कहना है कि ऐसी विपत्तियाँ आगामी शताब्दी के मध्य से बहुत समय पूर्व ही आरम्भ हो जायेंगी। लेखक द्वय का कथन है चूँकि विश्व की अपनी एक व्यवस्था है, अतः इस व्यवस्था में विश्व के किसी भी भाग में कोई व्यतिक्रम उत्पन्न होने से वह पूरे विश्व को प्रभावित करेगा । तब खतरा क्षेत्रीय न रहकर पूरे विश्व में अनुभव किया जाने लगेगा ।

जे० मैकहेल एवं एम० मैकहेल ने एक पुस्तक लिखी है-''ह्यूमन रिक्वायरमेण्ट्स सप्लाई लेवल्स एण्ड आउटर बाउण्ड्स'' इसकी भूमिका में विज्ञानवेत्ता एच० क्लीवलैण्ड लिखते हैं कि ''वर्तमान मान्यता और व्यवस्था के अन्तर्गत विश्व की संसाधनों सम्बन्धी आवश्यकता, प्राकृतिक वातावरण की ''आखिरी सीमा'' को भी पार कर जायेगी जो भावी पीढ़ियों के लिए खतरनाक साबित होगा ।''

इस सम्बन्ध में ''वर्ल्ड डायनामिक्स'' (१९७१ पृ० ८) में जे० फॉरेस्टर अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहते हैं कि ''यदि अब भी हम सँभले नहीं तो अपने ही बनाये समाज और अर्थ व्यवस्था में उलझ कर बर्बाद हो जायेंगे''

''मैन एण्ड नेचर'' (१९८० पृ० १५०-१५१) के रूसी लेखक और प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता ई० फेडोरोव लिखते हैं कि वर्तमान विपत्ति से बचने के लिए समस्त मानवी गतिविधियों को लम्बे समय के लिए नियोजित करना आवश्यक है और यह भी आवश्यक है कि इसके विभिन्न क्षेत्रों में अनियमित विकास को एकरूप बनाया जाय । उनका कहना है कि यह मानना किसी भी प्रकार गलत न होगा कि यदि इन लक्ष्यों को प्राथमिकता देकर पूरा नहीं किया गया तो सम्पूर्ण विश्व के लिए भयंकर पर्यावरण संकट खड़ा हो जायेगा । यहाँ मेसारोविक और पेस्टल की तरह फेडोरोव भी ऐसे संकट की शुरूआत क्षेत्रीय स्तर पर होने की सम्भावना व्यक्त करते है ।

पर इन आसन्न संकटों से बचा कैसे जाये ? इस सन्दर्भ में भी विश्व के विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने सुझाव दिए है ।

मेसारोविथ और पेस्टल अपनी पुस्तक ''मैनकाइण्ड एट दि टर्निंग प्वाइण्ट'' (पृ० ५५) में कहते हैं कि विश्व व्यवस्था सम्बन्धी इन विपत्तियों से बचने का एक ही उपाय है कि इस सन्दर्भ में विश्व स्तर पर सोचा और कदम उठाया जाय । उनका कहना है कि यदि ऐसे संयुक्त प्रयास नहीं किए गये तो कोई भी क्षेत्र इनके दुष्परिणामों से बच न सकेगा । वे आगे कहते हैं कि वर्तमान समस्याओं का विश्वस्तरीय हल विभिन्न क्षेत्रों में सन्तुलित विकास द्वारा ही सम्भव है । एक ऐसा विकास जो शारीरिक अथवा कायिक विकास की तरह हो, जिसमें सभी अंग अवयव एक निश्चित अनुपात में निश्चित नियमों का पालन करते हुए बढ़ते हों । उनके अनुसार यह कहना गलत होगा कि इस प्रकार के विकास अन्ततः खतरनाक साबित होते हैं । लेखकद्वय का विचार है कि इस तरह की विश्वस्तरीय रणनीति अपनाने में अब यदि तनिक भी देरी की गई तो न सिर्फ यह महँगी साबित होगी वरन् मानवी समाज के लिए महाविनाश भी प्रस्तुत करेगी ।

इसी पुस्तक में अन्यत्र (पृ० ५७) वे सम्पूर्ण विश्व में एकता समता लाने पर बल देते हुए कहते है कि जब कभी किसी मानवी सभ्यता का जन्म होता है तो उसके विभिन्न सामाजिक समुदायों के बीच कुछ मामलों में समता और कुछ में भिन्नता होती है । जब उनमें परस्पर समता-एकता बढ़ती है, तो सभ्यता का स्थायित्व भी बढ़ जाता है, किन्तु आपसी दूरी अथवा विषमता बढ़ने से पूरी सभ्यता का बिखरावजन्य विनाश सामने आता है। वे कहते हैं कि ठीक इसी प्रकार आज सम्पूर्ण विश्व के अस्तित्व का प्रश्न हमारे सामने है ।

जबकि डी० मिडोज एवं सहयोगियों का मत है कि अब आगे की मानवी प्रगति को विराम मिलना चाहिए और विश्व सन्तुलन की स्थिति प्राप्त करनी चाहिए, तभी यह संसार आसन्न संकट से बच सकता है । उनका विश्वास है कि मनुष्य ऐसा कर सकने में सक्षम है । इसी आशय का मन्तव्य प्रकट करते हुए वे अपनी पुस्तक ''दि लिमिट्स टु ग्रोथ'' (१९७२ पृ० १८३-१८४) में कहते हैं कि ज्ञान, साधन और संसाधन के रूप में मनुष्य को वह सब कुछ मिला है जो भौतिक रूप से मानवी समाज की अभिनव संरचना के लिए आवश्यक है एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऐसी संरचना जो अनेक पीढ़ियों तक कायम रह सके । पर इसमें दो मुख्य संघटकों के अभाव के कारण मनुष्य ऐसा करने में सक्षम नहीं हो पा रहा है । इनमें से प्रथम है-एक यथार्थवादी ''लक्ष्य'' जो लम्बे काल तक मनुष्य का, देव समाज के लिए मार्ग-दर्शन करता रह सके एवं द्वितीय वह ''इच्छाशक्ति'' जिससे मनुष्य इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सके । लेखकों का कथन है कि ऐसे किसी लक्ष्य व दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव में अनियन्त्रित विकास, विश्व को उस ''अन्तिम सीमा'' तक पहुँचा देगा जहाँ विनाश के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं । उनके अनुसार यदि मनुष्य इन दो आवश्यकताओं को प्राप्त कर ले तो विभिन्न क्षेत्रों में उसके विकास से लेकर विश्व सन्तुलन तक में जो परिवर्तन आयेंगे वह नियन्त्रित एवं व्यवस्थित होंगे ।

यहाँ पर ''विश्व सन्तुलन'' से मिडोज का तात्पर्य एक ऐसी प्रणाली के विकास से है जो मानवी समाज व्यवस्था के असन्तुलन को रोक सके ।

किन्तु ''इण्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ इन्स्टीटयूट्स ऑफ एडवांस स्टडी'' के ट्रस्टी बोर्ड के चेयरमैन अलेक्जेण्डर किंग का इस सन्दर्भ में कुछ भिन्न मत है। वे ''स्टेट ऑफ दि प्लैनेट स्टेटमेण्ट'' (प्रथम ड्राफ्ट १९७५ पृ० ११) में लिखते हैं कि ''वर्तमान संकट के लिए न तो विकास जिम्मेदार है न टेक्नलॉजी वरन् इसका एकमात्र कारण मानवी विवेक का अभाव है । वह विवेक जो विकास और टेक्नोलॉजी को व्यवस्थित कर सके और दिशा दे सके । उनका कहना है कि ''आवश्यकता विकास को रोकने की नहीं है अपितु इसकी अधिकता पर नियन्त्रण रखने की है ताकि इसे उपयुक्त जीवन और मानवी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया एवं सन्तुलन की स्थिति में रखा जा सके ।'' इस प्रकार वे आज की विपत्ति का सबसे प्रमुख कारण बुद्धि में ढूँढ़ते हैं । उनके अनुसार यदि विवेक बुद्धि से काम लिया गया तो मनुष्य आज के संकट को टालने और अपना अस्तित्व बचाने में सफल हो सकता है ।

मूर्धन्य भौतिकीविद् प्रो० एडवर्ड टेलर ने भी अपने निबन्ध ''दि एनर्जी डिजीज'' (हारपर्स मैगजीन फरवरी १९७५) में आज के संकट से बचने के लिए किसी न किसी प्रकार की विश्व व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है कि इसके बिना विश्व में शांन्ति और स्थिरता स्थापित नहीं हो सकती और न वह जीवन पद्धति अपनाई जा सकती है, जिसकी आशा अपेक्षा की गई है।

अन्य अनेक वैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों ने भी इसी प्रकार एक नई विश्व व्यवस्था की बात कही है । पर टेलर और उनकी विश्व व्यवस्था में एक मूलभूत अन्तर है । टेलर की विश्व व्यवस्था सिर्फ अमेरिका में अमेरिकी जीवन पद्धति के संरक्षण की बात कहती है जबकि अन्यों की ''विश्व व्यवस्था'' समस्त विश्व में समग्र मानवता के कल्याण की पक्षधर है ।

कैसे बदलेगा मानव जाति का भविष्य?

''प्राब्लम्स ऑफ द कन्टैम्पररी वर्ल्ड'' नामक पुस्तक में कई विद्वान लेखकों के निबन्ध हैं । इनमें डॉ० ईगार मैक्सीमार एवं यूरी प्लेन्टीकोव ने ''द इकॉलाजिकल सिचुएशन टुडे एण्ड द फ्यूचर ऑफ मैनकाइण्ड'' नामक लेख में लिखा है कि प्रकृति के रोष से उत्पन्न प्रकोपों को देखते हुए फैक्ट्री में कार्यरत मजदूरों से लेकर, दफ्तरों के क्लर्क, उच्च श्रेणी वर्ग के अधिकारी तथा इंजीनियर, डाक्टर, प्रशासनिक वर्ग, सभी अपने अस्तित्व के बारे में अनिश्चितता महसूस करने लगे हैं एवं यह बढ़ते हुए तनाव का इन दिनों सबसे प्रमुख कारण है ।

इटली के अर्थशास्त्री तथा क्लब ऑफ रोम के संस्थापक श्री ऑरलियो पेवकी अपने शोध प्रबन्ध ''द प्रिडिकामेण्ट ऑफ मेनकाइण्ड'' में लिखते है कि ''प्रकृति उत्तेजना से हुई गड़बड़ियों तथा उत्पन्न या आसान्न विभीषिकाओं से विश्व का हर सभ्य सोचने वाला नागरिक चिन्तित है । किन्तु हर स्थान के वैज्ञानिक मनीषी समस्या निवारण सम्बन्धी जो उपाय खोज रहे है, उनसे समस्याएँ कम होने के स्थान पर बढ़ रही हैं ।'' उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए अपनी इस कृति में कहा है कि ''इन सभी समस्याओं का मूल कारण प्रकृति को समझा जा रहा है । जब कि वास्तविकता यह है कि विभीषिकाओं की जड़ प्रकृति न होकर मानव स्वयं है, उसकी अपनी दुर्बुद्धि है ।'' अपनी इस कृति में वे आगे कहते हैं कि समष्टिगत इन समस्याओं को किसी राष्ट्र अथवा क्षेत्र

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विशेष की समस्या न मानकर विश्व भूमण्डल की-'ग्लोब' की समस्या माना जाना चाहिए । श्री पेक्की ने इन्हें वृहत वैश्व समस्याएँ (वर्ल्ड मेक्रोप्राब्लम्स) नाम दिया है तथा इन समस्याओं को मुख्यतः पाँच भागों में विभाजित करते हुए स्पष्ट किया है । इनमें से प्रथम है-जनसंख्या की अमर्यादित अभिवृद्धि तथा पृथ्वी द्वारा इस भार को सह पाने की अक्षमता । द्वितीय है प्राणदायक स्रोतों का अभाव। तृतीय है वातावरण में फैली विषाक्तता । चतुर्थ है मनुष्य के चिंतन के स्तर में रुकावट एवं गिरावट तथा पाँचवी समस्या जिसे वह समस्या न मानकर सबके हल होने का कारण मानते है तथा कहते हैं कि उस के समाधान में ही सभी का समाधान है । वह है- वर्तमान समय के अनुरूप एक ऐसे सहज और ग्राह्य दर्शन की आवश्यकता, जो मनुष्य की बुद्धि एवं चिन्तन को उलटकर उसें संहारक की जगह सृजनात्मक बना दे । मूलतः तथ्य वही है अध्यात्म के स्तर तक पहुँचकर विज्ञान द्वारा अपनी दिशा अंधों से ऊर्ध्वगामी बनाना ।

उपरोक्त विचारों का समर्थन "द लिमिट्स टु ग्रोथ" नामक पुस्तक में "मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी" के डी० एच० मीडोज, डी० एल० मीडोज, जे० रेण्डर्स आदि अध्येताओं ने किया है । पर्यावरण का " डीप एकॉलाजी" के स्तर पर अध्ययन का समर्थन करने वाले इन वैज्ञानिकों का मत है कि पृथ्वी के अंतराल में छिपे भाण्डागार की एक सीमा है । यदि मनुष्य अपनी जनसंख्या को स्थिर नहीं कर लेता तथा अपने जीवनक्रम से विलासिता को हटाकर व्यवहार में सादगी एवं साधकों के सदुपयोग की नीति का समावेश नहीं कर लेता, तथा मनुष्य जाति अगली शताब्दी| का मध्याह्न शायद ही देख पाए। इन्हीं विचारों को यू० एस० ए० के० जे० फॉरैस्टर ने "अर्बनडायनेमिक्स" नामक ग्रन्थ में स्वीकार किया है। उन्होंने अपनी कृति में शहरीकरण की वृत्ति को लताड़ते हुए भारत के प्राचीन जीवन दर्शन एवं समस्वरता-सादगी से भरे जीवनक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे अनुकरणीय बताया है, साथ ही यह भी लिखा है कि विडम्बना यही है कि भारतवासी दूसरों द्वारा अनुकरणीय कहे जाने वाले चिन्तन को स्वयं भुलाते एवं छलावे भरे पाश्चात्य जीवन को अपनाते चले जा रहे है ।

ऐसे भी चिन्तक हैं जो जे० फारेस्टर, मीडोज व रेण्डर्स की मान्यताओं की हँसी उड़ाते हुए उन्हें आदिमयुग की ओर लौटने की प्रेरणा देने वाली विचारधारा मानते हैं। ससेक्स विश्वविद्यालय के ये अध्येता कहते हैं कि शहरों से गाँवों की ओर लौटकर स्वच्छ हवा एवं शुद्ध जल का उपयोग करने तथा स्वस्थ जीवन जीने की बात पिछड़ेपन की निशानी है । वे कहते है कि पूर्वार्त दर्शन की प्रशंसा करने वाले संभवतः अगले दिनों यह कहने लगेंगे कि जंगल में जाकर पेड़ों की छाल के वस्त्र पहनो, बन्दरों की तरह उछलो, कूदो, नाचो एवं फल खाते हुए प्रगति युग से दूर निर्जन में जीवन खपा दो । ऐसे व्यक्तियों में कैनेथ डैहल वर्ग, डीमोल एवं गिगीको प्रमुख हैं । इन आलोचकों का अभिमत है कि "विकेन्द्रीकरण की पद्धति को माना जाय तो मनुष्य को जंगल में बन्दर की तरह पुनः रहना होगा । आज की आधुनिकता के जीवन की बहुमूल्य उपलब्धियों से स्वयं को वंचित कर डार्विन की उक्ति "मनुष्य का पुरखा बन्दर था" इसे प्रमाणित करना कहाँ की बुद्धिमानी है ?

उपरोक्त आधुनिक विचारकों के उपभोगवादी चिन्तन का प्रत्युत्तर "इकॉलाजिस्ट" पत्रिका में डॉ० पेस्टल एवं मेजॉकोविक ने "ए स्ट्रेटजी ऑफ सरवाइवल" नामक निबन्ध में दिया है । अपने विद्वतापूर्ण निबन्ध में पर्यावरण की महत्ता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि "ससेक्स विश्वविद्यालय के उपरोक्त विद्वानों के कथन को किसी भी स्थिति में वाक्चातुर्थ से अधिक नहीं माना जाना चाहिए। आज की परिस्थितियाँ व तट्जन्य परिणतियाँ किसी से छिपी नहीं है । यदि मनुष्य ने अपनी जीवनशैली में परिवर्तन नहीं किया तो संभवतः वह जंगलों में रहने के लिए भी अपना अस्तित्व न बचा पाए यहाँ तक कि आश्रय लेने को जंगल भी शेष न बचें ।"

डॉ० आरैलियो पेकी अपने एक अन्य ग्रन्थ "जीरो ग्रोथ रेट" में जनसंख्या की स्थिरता की बात बताते हुए इस तथ्य पर विशेष बल देते हैं कि प्रकृति के साथ समस्वरता स्थापित की जाय । वे कहते हैं कि मनुष्य मात्र इसी को लक्ष्य बना ले तो अधिकांश समस्याओं से मुक्ति पा जाएगा । इ० के० ज्योदोरोव अपनी कृति "इन्टरएक्शन ऑफ सोसायटी एण्ड नेचर" में उपरोक्त कथन पर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहते है कि प्रकृति पर पूर्णतया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नियन्त्रण स्थापित करने में जो बुद्धिमत्ता समझी जा रही है तथा उसके घटकों को जिस तरह नष्ट कर उसे दुहा जा रहा है, वह वस्तुतः बुद्धिमत्ता न होकर बुद्धिहीनता ही है ।

क्लब ऑफ रोम नामक संस्था के विचारकों ने ''ग्लोबल इक्वीलिब्रियम'' या वैश्व सामंजस्य की बात कहते हुए मनुष्य एवं प्रकृति के विभिन्न घटकों के साथ सामंजस्य स्थापित किये जाने की बात पर बल देते हुए पूर्व में की गई भूलों के परिमार्जन की बात कही है । राजनैतिक स्तर पर श्री विली ब्रांट (भूतपूर्व चांसलर प. जर्मनी) ने अपनी पुस्तक 'नार्थ-साउथ ए प्रोग्राम फॉर सरवाइवल'' (कैम्ब्रिज, एम० आय० टी० प्रेस) में एवं पिछले दिनों सोवियत रिपब्लिक के कम्युनिष्ट पार्टी के महासचिव मिखाइल गोर्वेचॉव ने सोवियत काँग्रेस के समक्ष विश्व की समस्याओं पर अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''हम सभी को प्रकृति के हितों का संरक्षण करना चाहिए तभी वह हमारा संरक्षण कर सकेगी। पर्यावरण को ग्लोबल स्तर पर ही देखा जाने पर विश्व की समस्याएँ सुलझ सकेंगी ।''

वी० आय० वेर्नेदस्की ने अपनी कृति ''बायोजियो केमीकल ऐसेज'' ने मानव के तीन स्तरों तथा अद्यतन परिस्थितियों का सुसम्बद्ध विवेचन प्रस्तुत किया है । उन्होंने ये तीन स्तर नूस्फियर अर्थात् मानवी चिन्तन, बायोस्फियर अर्थात् जैविक स्तर एवं टेक्नोस्फियर अर्थात् तकनीकी उपलब्धियों का स्तर बताये हैं । वे अपनी इस कृति में लिखते है कि मनुष्य की मानसिक गड़बड़ी के कारण ही उसके चिन्तन ने दिशाविहीन होकर असम्बद्ध एवं अमर्यादित टेक्नोस्फीयर का निर्माण किया है, जिसने सभी वर्जनाओं को लांघते हुए बायोस्फियर अर्थात् जैव मण्डल को प्रदूषित करना आरम्भ कर दिया है । यही आज की व्यक्तिगत समष्टिगत विभीषिकाओं का मूलभूत कारण है ।

इसी कथन तथ्य को यदि और सरल ढंग से लिखा जाय तो यह कहा जा सकता है कि मनुष्य के दिमागी स्तर की गड़बड़ी से उत्पन्न विकृत चिन्तन ने ही कल-कारखाने, सुविधा के साधन, परमाणु हथियारों से पृथ्वी को पाट देने की होड़ शुरू की है । इससे उत्पन्न प्रदूषण से जैविक स्तर का अस्तित्व खतरे में पड़ गया दीखता है । इसी कारण डॉ० वेर्नेद्स्की सारी गड़बड़ियों का मूल कारण नूस्फियर अर्थात् मानवी चिन्तन को मानते हैं ।

एम० एम० कैम्शिलोव ''मेन एण्ड लिविंग नेचर'' में उपरोक्त कथन में विश्वास व्यक्त करते हुए तकनीकी स्तर क्रम को मर्यादित करने तथा जैविक स्तर को बढ़ाने पर बल देते हैं । वे कहते हैं कि जो काम मशीनों से किये जाते हैं उनमें से अधिकांश मनुष्य स्वयं अथवा अपने कनिष्ठ बंधु यथा पशुओं के माध्यम से कर सकता है । इस प्रकार इस कथन से वे स्वयं के गाँधीवादी होने की झलक देते व ग्राम स्वराज्य की नीति को प्रधानता देते देखे जाते हैं । वे कहते हैं कि ग्रामीण जीवन का अवलम्बन नहीं लिया गया तो हो सकता है मनुष्य अपना अस्तित्व ही खो बैठें एवं डॉयनासोर्स, पेरोपेट्स आदि की तरह उसकी गिनती एक्सटिंक्ट एनिमल्स में होने लगे।

हेनरी वर्ग सां के अनुयायी इ० ले रॉय ने अपनी फ्रेंच कृति ''ल एक्सीजेन्स आयडिएलिस्ट एट ले० फेंट डे ल इवॉल्यूशन'' में तथा पियरे टेलहार्ट द चार्डिन ने भी '' नूस्फियर'' के परिवर्तन, परिवर्धन तथा विकास की आवश्यकता पर बल दिया है । उनके अनुसार इस स्तर को उलट कर सीधा किये बिना परिस्थितिकी तन्त्र को सुचारु रूप से चलाने की बात उसी तरह होगी, जिस तरह पेड़ बढ़ाने के लिए उसकी जड़ें काटकर पत्तियों को सींचा जाय ।

''इ इकॉलाजिकल सियुएशन टुडे एण्ड द फ्यूचर ऑफ मैनकाइण्ड'' नामक ग्रंथ में डॉ० इगार मैक्सीमोव स्वीकार करते है कि वर्तमान में मनुष्य के मानसिक चिन्तन की विकृति को सुधारने की तथा सर्वग्राह्य तर्क-सम्मत दर्शन तथा जीवन रैली को अपनाने की आवश्यकता है । ऐसा होने पर ही संभावना है कि स्थिति में विधेयात्मक परिवर्तन हो सके ।

हम विनाश की कगार पर खड़े हैं

पिछला काम जो किया जाता रहा है, उसकी परिणति सामने है, घटनाक्रम पिछले दिनों घटित होता रहा है, जो भी प्रयास पुरुषार्थ अपने द्वारा किया जाता रहा है, उसी के अनुरूप भली बुरी परिस्थितियाँ प्राप्त हैं । इन दिनों जो किया जा रहा है, उसके परिणाम अगले दिनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आकर रहेंगे । इस मोटे सिद्धान्त के आधार पर भी भावी परिस्थितियों का अनुमान लगा लेना भी कुछ कठिन नहीं होनी चाहिए । आम आदमी इसी आधार पर भविष्यवाणियाँ करता है । बादलों को देखकर वर्षा होने का तपती धूप का सिलसिला चलते देखकर सूखा पड़ने का ठंडक आने पर पतझड़ होने का अनुमान लगाता है । कार्य कारण की संगतियाँ देखकर वर्तमान एवं भविष्य के रूप को सामने रखा जाता है । हरियाली खेतों में उगी देखकर अच्छी फसल होने का अनुमान लगता है । हमें आज की स्थिति के अनुरूप कल का आभास लग जाता है । बौर आने पर कोयल कूकती और फल लगते हैं । बसंत के आते ही तितलियों, मधुमक्खियों के झुण्ड जमा होने लगते है और खिले हुए फूल फल बनते हैं । बीज गलता है तो वृक्ष बनता है फलों में नये बीज उत्पन्न होते हैं और प्रकृति क्रम का सिलसिला जारी रहता है ।

कृति की परिणिति मोटी संभावना है । कोई अपवाद व्यवधान आड़े न आये तो वह सही होकर ही रहता है।

दूरदर्शी विशेषतः और भी दूरवर्ती अनुमान अपनी सूक्ष्म बुद्धि को गहराई में उतारकर लगाते हैं । स्कूली बच्चों में से जो आवारा प्रकृति के होते हैं, पढ़ने में ध्यान नहीं लगाते और अनुशासन में नहीं बंधते, उनके बारे में अनुमान लगा लिया जाता है कि यह अस्तव्यस्त फिरेंगे और किसी उज्ज्वल भविष्य की संरचना न कर सकेंगे । इसी आधार पर मनोयोगपूर्वक पढ़ने वाले और अपने काम में तन्मयता बरतने वाले स्वभाव के मधुर लड़कों के बारे में अनुमान लगाया जाता है कि इन्हें घर वालों का प्यार, अध्यापकों का अनुग्रह एवं प्रतिस्पर्धा में छात्रवृत्ति जैसा उपहार मिलेगा । बड़े होने पर वे सफल सम्मानित लोगों में गिने जायेंगे । जमुहाई आने लगे तो समझना चाहिए कि बुखार आने के लक्षण है । इन दिनों मानवी गतिविधियों का जो प्रवाह बह रहा है उससे प्रतीत होता है कि भविष्य में बुरे दिन आ रहे हैं । विपत्तियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा ।

भविष्य का अनुमान लगाने वालों में कई वर्ग होते हैं । वे सूचनाएँ एकत्रित करते हैं । परिस्थितियों के परिवर्तन की संभावनाओं को खोजते हैं । और अनुमान लगाते हैं कि अगले दिनों क्या घटित होने की संभावना है । ज्योतिषी नाम से तो इस क्षेत्र में एक विशेष वर्ग ही बन गया है अतीन्द्रिय क्षमताओं में भविष्य दर्शन की भी क्षमता पाई जाती है । योगी और सिद्ध पुरुष भी भविष्य को वर्तमान की तरह देख लेते हैं । इनके अधिकांश कथन प्रायः सच निकलते हैं । कारण दो हैं। उनमें विशेष शक्तियों का होना दूसरा भूत और भविष्य के साथ तारतम्य बिठाते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचना कि आगे क्या होने वाला है ?

निकट भविष्य की संभावना को कीट पतंगें भी जान लेते हैं । ऋतु परिवर्तन के अनुरूप उनका कार्य क्षेत्र बढ़ता सिकुड़ता रहता है । वह अपने-अपने निवास एवं आहार के प्रबंध में समय आने से पहले ही लग जाते हैं। मनुष्य की सामान्य बुद्धि भी इस संदर्भ में सही अनुमान लगाती है । फिर विशेषज्ञों का तो कहना ही क्या ? वे तो स्वस्थ प्रमाण मिलते और हवा का रुख परखने पर भी बड़ी-बड़ी संभावना का निष्कर्ष निकाल लेते हैं । इन्हें हवाई उड़ानें नहीं कहा जा सकता । राजनैतिक क्षेत्र के नेता बड़ी-बड़ी योजनाएँ इसी आधार पर बनाते हैं । सेनापतियों की रणनीति भी तो सूझ-बूझ के सहारे ही विनिर्मित होती हैं। भविष्य कथन भी एक विज्ञान है । उसके बुद्धि संगत और दिव्य ज्ञान से जुड़े हुए दोनों ही पक्ष ऐसे हैं जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता ।

भविष्य कथन के सम्बन्ध में एक क्रमबद्ध शास्त्र ही है जिसे युटोपिया कहते हैं । इन्हें अनेक प्रतिभा सम्पन्नों ने लिखा है । यों उनका मूल आधार कल्पना है, किन्तु वे कल्पनाएँ ऐसी देखी गई हैं कि उनका अधिकांश प्रतिपादन सही निकलता है । इसलिए बड़े चाव से पढ़ा भी जाता है । भविष्य जानने का कौतूहल सभी को रहता है । इसलिए ऐसी पुस्तकों की माँगें भी रहती हैं । इसलिए उन्हें भी कौतुकपूर्ण समझा जाता है । संभावना यही रहती है । कि उन प्रतिपादनकर्त्ताओं ने दूर की कौड़ी ढूँढ़ी होगी और उसके साथ यथार्थता भी जुड़ी होगी ।

पिछले दिनों जो भविष्यवाणियाँ शास्त्रकारों या आप्तजनों के द्वारा प्रकट की जाती रही हैं उन्हें श्रद्धालु लोगों ने सुनिश्चित संभावना के रूप में माना है - भविष्य पुराण में प्रलय खण्ड बाइबिल में सेवन टाइम, कुरान में चौदहवीं शदी के समय को कठिन बताया है । ज्योतिर्विद ग्रहाचार के आधार पर निकट भविष्य में बुरी परिस्थितियाँ आने का संकेत देते रहे । कितने ही संत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

महात्माओं ने भी अपने लिखित और मौखिक प्रवचनों में ऐसा ही कहा है कि अगले दिनों प्रकृति प्रकोप के टूटने की भरमार तो रहेगी ही । इसके अतिरिक्त मनुष्यकृत आपदाओं की भी बढ़ोत्तरी होगी । पारस्परिक स्नेह सहयोग टूट जाने पर पारस्परिक स्नेह सद्भाव घटेंगे और उनके स्थान पर द्वेष दुर्भाव के प्रकटीकरण वाले दृश्य उपस्थित होंगे। शीत युद्ध और गरम युद्ध के ज्वालामुखी जहाँ-तहाँ फूटते रहेंगे ।

कुछ वर्षों पूर्व कोरिया देश में संसार भर के मूर्धन्य ज्योतिषियों की एक कान्फ्रेन्स हुई थी । बड़ी संख्या में खगोल विज्ञानी एकत्रित हुए थे । उन सभी ने अपने-अपने ढंग के ग्रह गणितज्ञों ने निकट भविष्य में किन्हीं भयावह विभीषिकाओं की संभावना घोषित की थी। इस प्रकार संसार के प्रमुख अर्थशास्त्रियों, राजनेताओं एवं परिस्थितियों का मूल्यांकन करने वाले विशेषज्ञों का यह मत एक स्वर से प्रकट हुआ था कि निकट भविष्य में मानव जाति के कई संकटों में फँस जाने की आशंका है। कुछ पर्यवेक्षकों ने एक अध्ययन में धरा के तापमान में निरन्तर बढ़ोत्तरी होते देखा ।

भूगर्भशास्त्री कहते हैं जितनी धरती की ऊर्जा खर्च हो रही है उसके भंडारण की समाप्ति की आशंका है । खनिजतेल और धातुएँ कोयला आदि का जिस तेजी से उत्खनन हो रहा है उसे देखते हुए अगली शताब्दी में इनकी समाप्ति हो जायगी । बिजली भी उतनी उत्पन्न न हो सकेगी, जिनके द्वारा सुविधा साधन का, ईंधन का और कल कारखानों का पेट भर सके । ऐसी दशा में यही उचित है कि खर्च घटाने की दृष्टि से इन निकायों से पीछा छुड़ाया जाय । वैसा किया गया तो भुखमरी बेकारी अशिक्षा अनपढ़ जीवन पद्धति का, अपराधी मनोवृत्ति का विस्तार होगा । इस कारण सर्वसाधारण को आशंकाओं से विभ्रमों से असुरक्षा से घिरा रहना पड़ेगा ।

प्रत्यक्षवादी भी ऐसी ही अशुभ संभावनाओं के स्वर में स्वर मिलाते हैं—विकिरण पर्यावरण जनसंख्या विस्फोट परस्पर बढ़ा हुआ अविश्वास यह सब मिलकर ऐसी परिस्थितियों को जन्म देंगे जिसे एक शब्द में अशुभ एवं संकटपूर्ण ही कहा जा सकता है । युद्धों और महायुद्धों की संभावना इसलिए बढ़ती दिखाई दे रही है कि आयुध, प्रक्षेपास्त्र इतने जमा हो गये हैं कि इस बारूद के ढेर में किसी भी ओर से चिनगारी फेंक दिये जाने पर वह सीमित न रहेगी वरन् समूचे विश्व को भी उदरस्थ करके रहेगी, जब वेश कीमती जखीरे जमा होते ही चले जायेंगे तो एक दिन यह भी आशंका है कि उनका विस्फोट हो और उसके फलस्वरूप संसार का समूचा नक्शा ही बदल जाय । जनसंख्या वृद्धि के साथ उत्पादन का तालमेल बैठ ही नहीं रहा है ऐसी दशा में गरीबी से पीछा छूट सकना भी कठिन है ।

वन कट रहे हैं । पशु घट रहे हैं । भूक्षरण, बाढ़ सूखा, रेगिस्तान की वृद्धि जैसी कठिनाइयाँ एक दूसरे के साथ गुथी हुई हैं । बड़े कारखानों की वृद्धि से गृह उद्योगों की बर्बादी गरीबों को अधिक गरीब और अमीरों को अधिक अमीर बनाती चली जा रही है । हर हाथ को काम न मिलने के कारण बेकारों द्वारा आये दिन उपद्रव अपनाये जाते रहे हैं । सम्प्रदायों के नाम पर भाषा, प्रान्त, क्षेत्र, जातियों, वर्गों, व्यवसायों के बीच कलह छिड़ी हुई है। एकता टूटती जा रही है । विषमता बढ़ रही है । सामूहिक समस्याओं की जिस प्रकार बाढ़ आई हुई है उतनी इससे पहले कभी देखी नहीं गई । व्यक्ति के जीवन का भी यही हाल है । चिन्तन-चरित्र और व्यवहार की दृष्टि से व्यक्ति दिन-दिन गिरता और छोटा होता जा रहा है। भौतिक और आत्मिक दोनों ही क्षेत्रों में उसे संकटों का सामना करना पड़ रहा है ।

इन परिस्थितियों को देखते हुए निकट भविष्य में विपत्तियाँ बढ़ने एवं संकटों के उभरने की आशंका की जाती है तो वह अतिश्योक्ति या अवास्तविकता भी नहीं है ।

कैसी होगी बीस वर्ष बाद की यह दुनियाँ ?

सुप्रसिद्ध लेखक एवं बोस्टन विश्वविद्यालय के जैव रसायन विशेषज्ञ डॉ० एस्मीनोव ने विश्व की वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर भविष्यवाणी की है कि सन् २००० तक इस पृथ्वी की परिस्थितयाँ इतनी विषम हो जायेंगी कि मनुष्य को जीवन के साधनों की कमी, वातावरण की घुटन तथा पारस्परिक व्यवहार में सौजन्य हीनता के कारण सर्वत्र अशान्ति का दौर होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'ह्यूमन इकॉलाजी' ग्रन्थ में डॉ० एस० जी० ब्राडन लिखते हैं कि "पृथ्वी पर मनुष्य जाति का इतिहास आने वाले बीस या तीस वर्षों के उपरान्त ही निश्चयात्मक होगा क्योंकि इन दिनों मानवी दुर्बुद्धि, परमाणु शक्ति का दुरुपयोग, बढ़ती जनसंख्या, वातावरण प्रदूषण, ऊर्जा स्रोतों की समाप्ति, बढ़ते अन्तर्राष्ट्रीय तनाव आदि से ऐसी परिस्थितियाँ बन रही हैं जिसमें मनुष्य का जीना मुश्किल कष्टकर हो जायेगा । अब ऐसा स्पष्ट लगने लगा है कि ये सभी बातें एक ही संकट बिन्दु की ओर केन्द्रित होती जा रही हैं ।"

गिरते हुए मानवी मूल्यों, अन्तर्राष्ट्रीय तनावों एवं वातावरण प्रदूषण के संकट के समाधान हेतु पिछले दिनों अमेरिका में एक विशाल स्तर का बुद्धिजीवी समागम हुआ। इसमें कई राष्ट्रों के मूर्धन्य वैज्ञानिकों एवं विचारकों ने भाग लिया । संयुक्त राष्ट्र संघ की विश्व सुरक्षा एवं पर्यावरण समिति के महासचिव श्री मॉरिस क्रोजियर ने वैज्ञानिकों से अनुरोध किया कि वे वातावरण से संभावित महा विपदा से बचाव के लिए समष्टि स्तर पर क्रियाशील होने की तैयारी करें । यदि विचारशील एवं वैज्ञानिक वर्ग द्वारा वातावरण परिष्कार के लिए अभीष्ट प्रयास नहीं हुए तो अगले दिनों महायुद्ध से भी बड़ा संकट मानवता के समक्ष उपस्थित होगा ।

इस तथ्य को कुछ दशकों पूर्व विचारक भविष्य विज्ञानी एच० जी० वेल्स ने अपनी पुस्तक" माइण्ड एट दी एण्ड ऑफटेयर" पुस्तक में इस प्रकार व्यक्त किया था-"संसार अपनी सीमा के अन्त तक पहुँच चुका है और अपने ही हाथों मानव ने अपनी विनाश लीला स्वयं रचली है । मानव सभ्यता का इस सदी के अन्त तक विनष्ट होना अवश्यम्भावी है ।"

आर० कालिन्स ने अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों पर अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि महाशक्तियों के वर्तमान टकराव वाली विस्फोटक स्थिति को देखते हुए लगता है कि आधुनिक सभ्यता इन शताब्दी के अन्त तक संकटों के उस चरम बिन्दु पर पहुँच जायेगी ।

पिछले दिनों शिकागो विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ० राबर्ट हचिन्स ने बोस्टन नगर में आयोजित मानविकी पर एक विचार गोष्ठी में कहा कि "आगामी बीस वर्ष मनुष्य जाति के लिए संक्रान्ति काल है । इस अवधि में वह सभ्यता के विकसित स्वरूप का सर्वाधिक दुरुपयोग करेगा । सम्भव है मानव जाति पूर्णतया लुप्त हो जाय। अतः अभी से मनुष्य जाति का एक छोटा सा हिस्सा कहीं सुरक्षित रखा जाना चाहिए ताकि सभ्यता को पुनः विकसित किया जा सके ।"

कम्प्यूटर्स के आधार पर भविष्यवाणी करने की नयी विद्या पिछले दिनों विकसित हुई है । इस विद्या के एक विशेषज्ञ श्री लीच ने लन्दन से प्रकाशित होने वाली प्रख्यात पत्रिका 'आब्जर्वर' में "भयानक भविष्य" के नाम से एक लेख लिखा है-"वर्तमान स्थिति का कम्प्यूटर द्वारा विश्लेषण एक भयावह भविष्य की झाँकी देता है । इन पर विचार करते ही हृदय दहल उठता है । सुधार के लिए जितने प्रयास होते हैं, दूसरी ओर बिगाड़ने वाले कारण इनसे तीन गुने जन्म ले लेते हैं ।"

अगली शताब्दी का भविष्य कथन

अपने युग की दो ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं, जो भूतकाल में कभी भी इस तरह नहीं आई । इनमें एक है जन-संख्या की वृद्धि, दूसरी है-वैज्ञानिक प्रगति । इन दोनों में प्रतिक्रियाएँ भी वैसी ही प्रचण्ड होती हैं, जैसी कि वे स्वयं हैं ।

भूतकाल में सुविस्तृत भूतल के अनुपात से मनुष्यों की जन-संख्या नगण्य थी । प्रकृति से जूझने के उतने समर्थ साधन हाथ में न होने से मृत्यु संख्या भी अधिक थी । दुर्भिक्षों, महामारियों तथा अन्य प्रकृति प्रकोपों से असंख्य मनुष्य मरते थे । वासनात्मक प्रवृत्तियाँ उग्र न होने से सन्तान भी सीमित ही होती थी । विधुर और विधवाएँ निवृत्त-जीवन जीते थे । अब किशोरावस्था आने से पूर्व ही मस्तिष्क गृहस्थ धर्म का उपभोग करने के लिए प्रशिक्षित हो जाता है । वासना भड़काने वाली फिल्में, पुस्तकें तथा तस्वीरें बे-हिसाब बढ़ रही हैं । कानाफूँसी में प्रायः वही चर्चाएँ रहती हैं जो देखा-सुना जाता है, उसमें भावुकता भड़काने वाली प्रेरणाओं की भरमार होती है । इन परिस्थितियों में प्रजनन का अनुपात बढ़ना स्वाभाविक है । दूसरी ओर विज्ञान की प्रगति ने ऐसी व्यवस्था बनादी है कि भूखों मरने अथवा प्रकृति-प्रकोप से दम तोड़ने की सम्भावनाएँ कम ही रह गई हैं । बीमारियाँ सताती बहुत हैं, पर उनने भी मारने का उत्साह ढीला कर दिया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दूसरी ओर बढ़ी हुई जनसंख्या द्वारा नई पीढ़ियों का उत्पादन चक्रवृद्धि दर से हो रहा है । एक के ३, ३ के ९, ९ के २७ के ८१, ८१ के २४३, २४३ के ७२९, ७२९ के २१८७, २१८७ के ६५६१।

एक व्यक्ति की तीन सन्तानें होती चलें तो सातवीं पीढ़ी पर ६५६१ बच्चे हो जायेंगे । यही क्रम आगे भी बढ़ता रहा तो संख्या न जाने कहाँ पहुँचेगी ? इस क्रम में कुछ रोक-थाम भी होती है, पर बढ़ोत्तरी का अनुपात इतना तीव्र है कि निकट भविष्य में मनुष्यों के निवास, आहार के लिए जमीन खाली न बचेगी । पानी की कमी पड़ेगी और शिक्षा, व्यवसाय, यातायात आदि के लिए जगह न रहेगी । ऐसी दशा में स्वभावतः वर्तमान धरती के अपर्याप्त होने पर नये स्थान तैयार करने होंगे ।

विज्ञान की प्रगति ने सुख-सुविधाओं की वृद्धि की है । आगे यह उत्साह और भी तीव्र होगा और नये-नये सुविधा साधन सामने आयेंगे । उनका उपयोग-उपभोग न किया जाय, यह भी नहीं हो सकता । इसलिए यन्त्रों द्वारा श्रम करने से मनुष्य को खाली-ठाली रहना पड़ेगा और अधिक सुविधा-साधनों का सहज उपलब्ध लाभ लेना होगा ।

इन समस्याओं का हल खोजने के लिए संसार के मूर्धन्य मस्तिष्क चिन्तित हैं । कई उपाय सोचते हैं, पर इन समस्याओं पर काबू पाने का कोई कारगर उपाय हाथ लग नहीं रहा है । हाँ, इतना अवश्य स्पष्ट होता जाता है कि आत्यन्तिक परिणाम जो भी हो, अन्तिम उपाय जो भी निकले, फिलहाल अगली शताब्दियों का कम से कम तात्कालिक हल तो निकालना ही पड़ेगा, जिसमें महाविनाश को जितनी दूर तक टाला जा सके, उतनी दूर उसे धकेल दिया जाय ।

जन-संख्या वृद्धि और वैज्ञानिक प्रगति के वर्तमान उत्साह पर अधिक नियन्त्रण अगले दिनों न हो सकेगा। हाँ, इतना प्रयत्न अवश्य किया जायगा कि कम से कम सौ वर्ष तक मानव जाति को जीवित रहने के लिए मार्ग निकाल लिया जाय । इसके लिए अभी से प्रयास चल पड़े है और सन् २००० से सन् २१०० तक की अवधि में जो किया जाना है, जो होना है, जो बनना है-आज उसकी रूप-रेखा सबके सामने स्पष्ट रहे और उसे पूरा करने के लिए आवश्यक प्रयास समय रहते आरम्भ कर दिये जायें ।

अर्थशास्त्री आर्थर सी० क्लार्क और प्रो० वक्र मिस्टर फुलर ने अगली शताब्दी के लिए जो विश्व-योजना बनाई है, उसमें जनसंख्या वृद्धि को प्रथम स्थान दिया गया है और उसके अनुरूप साधनों की उपलब्धि में वर्तमान तथा भावी वैज्ञानिक उपलब्धियों को पूरी तरह नियोजित करने का कार्यक्रम बनाया है । उनके कथनानुसार अगली शताब्दी में माँस का उत्पादन बन्द हो जायगा, क्योंकि वह बहुत मँहगा पड़ेगा । एक पौंड माँस तैयार करने में प्रायः २० पौंड चारा खर्च होता है । इतनी वनस्पति खर्च करके इतना कम माँस उत्पन्न करना सरासर घाटे का सौदा है । इसके लिए उपजाऊ जमीन की इतनी शक्ति बर्बाद नहीं की जा सकती । जो चारा, भूसा, इमारती लकड़ी अथवा कागज, गत्ता जैसी चीजें बनाने के लिए काम आकर जरूरी आवश्यकताओं को पूरी करेगी, उन्हें जानवरों को खिलाना और फिर माँस उत्पन्न करना सरासर फिजूल-खर्ची है । गिनी-चुनी बहुत दूध देने वाली गायों के लिए जगह और खुराक बचाई जा सके-यही क्या कम है ? यह भी तब हो सकेगा, जब मनुष्यों को स्थान तथा खुराक सम्बन्धी कटौती के लिए तैयार किया जा सके। दूध-दही तो सोयाबीन जैसी वनस्पतियाँ आसानी से बना दिया करेंगी । घी तो तेल की ही एक किस्म है । चिकनाई की जरूरत तेल से पूरी हो ही सकती है, फिर घी की क्या जरूरत ? तेल में प्रोटीन तथा वैक्टीरिया मिलाकर कृत्रिम माँस आसानी से तैयार हो सकता है, फिर पशु-माँस के जंजाल में उलझने की लम्बी और महँगी प्रक्रिया अपनाने की कोई आवश्यकता ही न रहेगी । फ्रांस में कृत्रिम माँस बनाने में अभी भी सफलता प्राप्त करली गई है, आगे तो वह विधि और भी सरल तथा समुन्नत हो जायगी ।

सड़कें बहुत जमीन घेरती हैं और वे जहाँ भी पक्की हो जाती हैं, जमीन की उर्वराशक्ति नष्ट कर देती हैं । इन दिनों सड़कों ने जितनी जमीन घेर रखी है और भविष्य में घेरने जा रही हैं, उस भूमि-विनाश पर गम्भीरता से विचार करना होगा । सड़कें या तो जमीन के नीचे चलेंगी या फिर सस्ते वायुयान यातायात तथा परिवहन की आवश्यकता पूरी करेंगे । सड़कों से घिरी जमीन पर पौष्टिक किस्म की बड़ी फसलें देने वाली और साल में जल्दी-जल्दी कई बार कटने वाली घासें लगाई जायेंगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वनस्पति को पूरा ही आहार प्रयोजन के लिए काम में लाना पड़ेगा, तभी आदमी का पेट भरेगा । इन दिनों अन्न खाने की जो आदत है, वह उस समय छोड़नी ही पड़ेगी। अनाज के पौधे का आकार-विस्तार जितना होता है, उसकी तुलना में बीज का अनुपात बहुत थोड़ा रहता है । फसलों का अधिकांश भाग भूसे के रूप में चला जाता है । अभी तो भूसे चारे को पशु भी खा लेते हैं, आगे पशु रहेंगे ही नहीं तो चारे की उपयोगिता भी नहीं रहेगी। ऐसी दशा में पूरी घास खाने की आदत डालनी पड़ेगी। आखिर अन्य शाकाहारी प्राणी भी तो घास खाकर ही रहते हैं, फिर मनुष्य को ही इसमें क्या ऐतराज होना चाहिए ? घास में प्रोटीन तथा दूसरे जीवनोपयोगी-तत्त्व पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं । घास का चूरा आटे का काम दे सकता है । जरूरत के अनुसार उसमें दूसरी चीजें भी मिलाई जा सकती हैं, पर आटा बनेगा घास का ही । अनाज का प्रचलन भी अगले दिनों पशु-माँस की तरह ही बहिष्कृत करना पड़ेगा । नकली दूध, नकली दही, नकली घी, नकली माँस जब सभी खाद्य पदार्थ कृत्रिम बनने लगेंगे तो अनाज का आटा खाने के लिए ही कोई क्यों आग्रह करेगा ? कुछ दिन में लोग घास का आटा खाने के लिए तैयार हो ही जायेंगे । न होंगे तो वैसा मजबूरी करा लेगी।

मनुष्यों को स्वच्छ सांस मिलती रहे, इसके लिए वृक्ष आवश्यक हैं । २५ वर्गफुट जमीन में एक आदमी को सांस ले सकने के उपयुक्त वायु मिलती है । इसलिए खुली जगह में वृक्ष-उद्यानों का प्रबन्ध अधिक करना पड़ेगा। तब सड़कों का ही सफाया नहीं करना पड़ेगा, मकान भी कई-कई मंजिल ऊँचे बना करेंगे । एक मंजिल मकान कहीं दिखाई नहीं पड़ेंगे । निवास आवास में घिरने वाली जमीन तो बचानी ही पड़ेगी । वनस्पति उगाने के लिए यह आवश्यक होगा कि मकानों में उसे अधिक न घेरा जाय । यह समस्या अनेक मंजिल ऊँचे मकान बनने के प्रचलन से ही सम्भव हो सकेगी ।

घास के आहार को अधिक पौष्टिक बनाने के लिए उसमें प्रोटीन के नये स्रोत सम्मिलित करने पड़ेंगे । एक कोषीय येस्ट—जीवाणु (वैक्टीरिया) कवक (फफूंद) शैवाल, इनमें प्रमुख होंगे । प्रचलित तेल-प्रधान वनस्पतियों में मूँगफली, सोयाबीन, नारियल और बिनौले का सम्मिश्रण खाद्य पदार्थों में मिला दिया जाय तो घास का आटा प्रचलित गेहूँ के आटे से कहीं अधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट बन जायगा । गेहूँ में १०-१२ प्रतिशत, चावल में ८-९ प्रतिशत और माँस-मछली में २०-२२ प्रतिशत प्रोटीन होता है । इस दकियानूसी आहार को हटाकर प्रोटीन के नये स्रोतों का उपयोग करने से सहज ही कहीं अधिक पौष्टिकता मिल जायगी । यीस्ट में ५५ प्रतिशत, वैक्टीरिया में ८० प्रतिशत, फफूंद में ४० प्रतिशत और शैवालों में २५ प्रतिशत प्रोटीन होता है । ऐसी दशा में उनका उपयोग करने से समस्या का बहुत समाधान निकलेगा ।

पैट्रोलियम के कारखानों से उप-उत्पादन के रूप में मिलने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं से अच्छा प्रोटीन विनिर्मित करने में फ्रांसीसी-विज्ञानी चेम्पेटन ने आशाजनक सफलता प्राप्त की है । एक कोषीय प्रोटीन माँस उत्पादन पर आने वाली लागत की तुलना में ढाई हजार गुना सस्ता पड़ता है और कम समय लेता है, ऐसी दशा में उसका आश्रय मनुष्य को लेना ही पड़ेगा । समुद्री वनस्पति क्लोरिला का जापान में खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग करने का प्रचलन है । इंग्लैण्ड घास से प्रोटीन बनाने में लगा हुआ है । सोयाबीन का दूध गो-दुग्ध की आवश्यकता पूरी कर सकेगा, यह विश्वास खाद्य शोधकों में अभिनव-आशा का संचार कर रहा है । एक किलो सोयाबीन में १० लीटर दूध बनने की सम्भावना में सस्तेपन का आकर्षण भी बहुत अधिक है । गुणों में तो उसे समान ही बताया जा रहा है ।

भोजन पकाने की प्रणाली में भारी हेर-फेर करना पड़ेगा । कच्चा राशन रखने, पकाने के लिए चौका चूल्हा बनाने, पकी हुई वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए जितने स्थान की अब जरूरत पड़ती है, भविष्य में उतनी जगह की बरबादी नहीं की जा सकेगी । अन्न, शाक आदि को उत्पन्न होते ही बड़े कारखानों में तैयार भोजन के रूप में तैयार किया जायेगा और उस सूखे सार-तत्त्व को पैकिटों में बन्द कर दिया जायगा । चूँकि भोजन में ९० प्रतिशत पानी होता है, इसलिए सूखे सार-भोजन में आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर अंगीठी पर गर्म कर लिया जाया करेगा । बस दस मिनट में भोजन तैयार है । इससे स्थान की ही नहीं, बनाने-पकाने के समय की भी बचत होगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पहाड़ समतल बनाने पड़ेंगे । पथरीली जमीन जो कृषि योग्य नहीं बन सकेगी, वह निवास और कलकारखानों के काम में ली जायगी , शहर गाँव उसी पर बसेंगे । पहाड़ों का चूरा करके इमारती ईंट-पत्थर, सीमेण्ट आदि बनेगा, ताकि इन कार्यों में उपजाऊ जमीन का एक चप्पा भी बर्बाद न किया जाय । लकड़ी की जगह प्लास्टिक अथवा कृत्रिम-धातुओं का उपयोग करके मकानों की आवश्यकता पूरी की जायगी ।

अमेरिका के विज्ञान लेखक आइजक आसिमोव ने आँकड़ों सहित बताया है कि बढ़ती हुई आबादी के कारण अगले बीस वर्षों में जो संकट उत्पन्न होंगे उनमें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में कमी पड़ने का संकट मुख्य है । वायु, जल और आहार यह तीनों ही वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनके आधार पर मनुष्य जीवित रहता है । बढ़ती हुई आबादी के लिए अगले दिनों यह तीनों ही न तो शुद्ध मिलेंगी और न पर्याप्त मात्रा में ।

मनुष्य की आवश्यकताएँ और विलासी प्रवृतियाँ जिस तेजी से बढ़ रही हैं, उसकी पूर्ति कल-कारखाने ही कर सकते हैं । कारखाने-धुआँ, धूलि और शोर फैलाते हैं, तथा उनके प्रयुक्त होने वाले विषैले रासायनिक पदार्थ बहकर जलाशयों में जाते हैं । इससे जल और वायु दोनों ही विषैले होते चले जाते हैं । बड़े शहरों के ऊपर धुआँ इतनी मात्रा में छाया रहता है कि वहाँ के निवासी धीरे-धीरे दम-घुटने जैसे संकटों में ग्रसित होते चले जा रहे हैं । इस कठिनाई को हल करने के लिए सम्भवतः अणु-विद्युत काम में लानी पड़े और वर्तमान धुआँ देने वाले कारखानों में प्रयुक्त होने वाली मशीनें रद्द करनी पड़ें तब कोयला जलाकर कारखाने चलाने पर प्रतिबन्ध लगेगा । डीजल और पेट्रोल से चलने वाली अन्य मशीनें भी रोक थाम की परिधि में आ जायेंगी । तब मोटरों में शक्तिशाली बैटरियाँ काम करेंगी । पैट्रोल पर भी प्रतिबन्ध लग जायगा ।

देहातें सिमट कर जिस तेजी से शहरों के पेट में घुसती चली जा रही हैं, उसे देखते हुए यह स्पष्ट है कि भविष्य में बड़े नगरों की संख्या तेजी से बढ़ेगी । उनके लिए पानी का प्रबन्ध करना कठिन हो जायगा । मौसम में वैज्ञानिक-प्रगति ने जो परिवर्तन किये हैं, उन्हें देखते हुए वर्षा घटने की पूरी आशंका है । पानी जितना बरसेगा उससे न तो धरती की प्यास बुझेगी और न आदमियों का । ऐसी दशा में समुद्र का आश्रय लेना पड़ेगा । अणु शक्ति के दैत्याकार बिजली घर समुद्र का पानी शुद्ध करेंगे और उसे सिंचाई तथा पीने-धोने की आवश्यकता पूरी करने के लिए उपलब्ध करेंगे । पर तब पानी इतना महँगा हो जायगा कि उसे वैसी ही सावधानी के साथ खर्च करना पड़ेगा, जैसे कि आजकल दूध या तेल का खर्च करते हैं । एक सीमित कोटे में ही जल हर किसी को मिला करेगा । तब पानी का खर्च बहुत सोच-समझकर ही करना पड़ा करेगा ।

निवास के लिए तब भूगर्भ का सहारा लेना पड़ेगा। चूहे, छछूँदर, साँप जिस तरह बिलों में रहते हैं, सन्तयोगी गुफाओं में रहते हैं, तब वही रीति मानवी-निवास के लिए फिट पड़ेगी । जमीन की ऊपरी परत अनाज, घास, वृक्ष आदि लगाने के लिए सुरक्षित रखी जायगी । शुद्ध हवा पाने के लिए खुली जगह का होना और उससे वृक्ष वनस्पतियों का उगना जरूरी है । मनुष्य का मूल आहार वनस्पति ही है, उसे उगाने के लिए जमीन चाहिए । बढ़ी हुई आबादी के लिए शुद्ध हवा और आहार की पूर्ति के लिए जगह खाली करनी पड़ेगी । अब भी निवास तथा कारखानों, स्कूलों, बाजारों, सड़कों, कब्रिस्तानों ने जो जगह घेर रखी है, उसे उनके कब्जे से छुड़ाकर पाताललोक को भिजवाना पड़ेगा । जमीन खोद कर सुरंगी-शहर बसाने पड़ेंगे, निवास के लिए जमीन की निचली परत काम में लानी पड़ेगी । अभी भी लोग समुद्र के भीतर पन-डुब्बियों में रहते हैं । ऐयर-कण्डीशन मकानों की स्थिति भी लगभग ऐसी ही होती है । उनमें कृत्रिम प्रकाशकृत्रिम-हवा से ही काम चलता है । इसका अभ्यास करने पर सारी मनुष्य जाति को भूतल-निवास की आदत पड़ जायगी । आदिम-काल में प्रायः सभी जीव खुले-मैदानों में रहते थे । पीछे परिस्थिति वश उन्होंने बिल माँद और गुफाएँ बनाने तथा उनमें रहने का अभ्यास किया था । परिस्थितियाँ मजबूर करेंगी तो मनुष्य को भी जमीन के नीचे रहना पड़ेगा । शायद समुद्र में या जलाशयों में भी तैरती बस्तियाँ बड़े जलयानों के रूप में उतारनी पड़ें । आकाश का उपयोग उतना ही हो सकता है कि सौ फुट ऊँचे मकान बनाकर उन पर बस्तियाँ बसाई जायें और उनके नीचे पेड़-पौधे उगते बढ़ते रहें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्वतों को धकेल कर उनकी जमीन तो निश्चित रूप से छीननी पड़ेगी । भूगर्भ में बसी बस्तियों का सम्पर्क बनाये रहने वाले भूतल के मकान उसी पथरीली जमीन पर—उपलब्ध पाषाण चूर्ण से ही बनेंगे । एक सम्भावना यह भी है कि दक्षिणी ध्रुव पर जमी बर्फ को अणु शक्ति से पिघला कर उस क्षेत्र को मनुष्यों के रहने योग्य बनाया जाय । ध्रुवों की जमीन छीनने के लिए जो छेड़-खानी करनी पड़ेगी, उसमें खतरा बहुत है । उन प्रदेशों में जमी बर्फ पिघलने लगी तो समुद्र की सतह ऊँची उठ जायगी और तटवर्ती इलाके पानी में डूब जायेंगे । फिर भी यह खतरा उठाना पड़ेगा, क्योंकि बम्बई जैसे शहरों के समुद्र में डूब जाने पर भी ध्रुवों से बहुत जमीन प्राप्त होगी और समुद्र की बाढ़ से उत्पन्न खतरा उठाकर भी मनुष्य-जाति बर्फ में ही रहेगी ।

वाहनों में उड़न-खटोले ही स्थायित्व प्राप्त करेंगे । हवा में उड़ने वाली मोटरें वर्तमान हेलीकोप्टरों का ही सुधरा हुआ रूप होगा । वे मकानों की ऊपरी छतों पर रखी जाया करेंगी और वहीं से उनके उड़ने उतरने का भी प्रबन्ध होगा ।

पशु थलचर है । थल तो मनुष्यों के लिए भी कम पड़ेगा । ऐसी दशा में वाहन के अथवा श्रमिक रूप में प्रयुक्त न किया जा सकेगा । दूध और माँस के लिए भी उन्हें पालना सम्भव न होगा, ऐसी दशा में शाकाहारी पशु तो न घरों में पलेंगे और न जंगलों में रहेंगे । माँस न मिलने पर सिंह आदि हिंसक जानवर भी न रहेंगे । माँस का प्रचलन बन्द हो जायगा । हाँ जलचर माँस के लिए प्रयुक्त होते रहेंगे । मछली अगली शताब्दी में भी मनुष्य का आहार बनी रहेगी, उसकी सस्ती, जल्दी बढ़ने वाली और स्वादिष्ट नसलों की फसल तैयार की जायेगी और माँस उत्पादन में समुद्रों से, नदी-सरोवरों से योगदान मिलेगा ।

बंगाल की तरह घरेलू तालाब बढ़ेंगे और उनमें मत्स्य-पालन अब की अपेक्षा कहीं अधिक होने लगेगा । इतना ही नहीं, समुद्र की सतह से लेकर तली तक में कई किस्म की घासें उगाई जायेंगी और अत्यन्त छोटे जीवों की कृषि की जायगी । जमीन पर उगी वनस्पति के अतिरिक्त खुराक की आधी आवश्यकता जलाशयों से पूरी की जायगी ।

शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्चों को स्कूलों में नहीं जाना पड़ेगा । घर ही से स्कूल-कालेज की आवश्यकता पूरी हो सकेगी । रेडियो और टेलीविजन के सहारे हर कक्षा के उपयुक्त पाठ्य-क्रम प्रसारित किये जाते रहेंगे और उन्हीं के सहारे सब कुछ सीखते रहना सम्भव हो सकेगा। शिल्प, यन्त्र, सर्जरी जैसे प्रत्यक्ष अनुभव वाले-हाथ से करके सीखने वाले विषय ही स्कूलों में रहेंगे ।

हर घर में बच्चे पालना और चूल्हा-चौका रोपना यह बहुत ही कष्ट-साध्य और गन्दगी फैलाने वाला और घरों की सुविधा व्यवस्था बिगाड़ने वाला काम माना जायगा। अस्तु बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति होंगे । सरकारें उन्हें पालेंगी। पका हुआ सारतत्व वाला सूखा आहार पैकिटों में बन्द मिलेगा और खाते वक्त आवश्यकतानुसार उसे पानी मिला-मिलाकर बिजली की अंगीठी पर गर्म कर लिया जायेगा । अब जो तरह-तरह के मिष्ठान्न-पकवान देखने को मिलते हैं, वे तब अजायब-घरों में ही रखने को मिलेंगे। तब सबको 'राष्ट्रीय-भोजन' के निर्धारित स्तर को ही स्वीकार करना पड़ेगा । बच्चे भी उतने ही पैदा करने की छूट होगी, जितने कि सरकार निश्चित करेगी । मर्यादा तोड़ने का अवसर देने से पूर्व ही नर-नारियों को बधिया बना दिया जाया करेगा ।

कपड़े लोग पहनेंगे तो सही, पर वे सूत, रेशम या ऊन के न होंगे । जो जमीन आहार उगा सकती है, उसमें कपास उगाना सरासर मूर्खता का काम होगा । पशु रहेंगे ही नहीं तो ऊन कहाँ मिलेगी ? ऐसी दशा में प्लास्टिक सरीखे रसायनों से जो कृत्रिम-धागा बनेगा, वस्त्र उसी से बना करेंगे । उनके उपयोग में धोने-सुखाने जैसे झंझट भी हल्के हो जायेंगे । आजकल भी टेलेरीन, नाइनोल आदि के कपड़े बनते हैं । भविष्य में इसी जाति का कपड़ा उपलब्ध रह जायगा ।

भविष्य विचारक विज्ञानी डॉ० जनरेल्स का कथन है, भविष्य में बिजली की आवश्यकता सूर्य-किरणों से उपलब्ध होगी । अणु-शक्ति से भी काम लिया जायगा। इन दिनों सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि अणु-भट्टियों की राख को कहाँ डाला जाय ? वह जहाँ भी डाली जायगी वहीं सत्यानाश करेगी । इसके दो उपाय निकलेंगे । सस्ता उपाय यह है कि काँच के बने बड़े-बड़े ताबूतों में बन्द करके उसे गहरे और आबादी से दूर समुद्रों के बीचों बीच

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डुबोया जाय । महँगा उपाय यह है कि उसे किसी ग्रह-उपग्रह में राकेटों द्वारा फेंक दिया जाय, दोनों में से कोई न कोई उपाय कारगर सिद्ध हो ही जायगा । क्योंकि अणु-शक्ति से ही जब काम लेना रहा तो उसकी राख के लिए भी कोई न कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा ।

अगले दिनों हमें घास खाकर ही जीना पड़ेगा

नृतत्व विज्ञानी डॉ० एस० सिम्पसन और वनस्पति विशेषज्ञ प्रो० डरमोकेनिंग ने बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के कुछ समाधान विषय पर अपने निष्कर्ष निबन्ध प्रकाशित कराये हैं—उनमें से कुछ तथ्यों का सारांश इस प्रकार है—

"इन दिनों संसार की जनसंख्या प्रतिवर्ष ७ करोड़ की दर से बढ़ रही है । चक्र के अनुसार अगले दिनों इस संख्या में और भी वृद्धि होगी । नई सन्तानों में से कन्याएँ औसतन १९ वर्ष की आयु में और लड़के २१ वर्ष की आयु में नई पीढ़ी उत्पन्न करना शुरू कर देते हैं इस तरह जनसंख्या वृद्धि की वार्षिकी बढ़ोत्तरी में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है । वर्तमान गतिविधि में यदि कोई असाधारण अवरोध उत्पन्न न हुआ तो सन् ८० में यह संख्या १० करोड़ वार्षिक तक जा पहुँचेगी । यों कहा तो यह भी जाता है कि सन् २००० में यह स्थिति उत्पन्न हो जायगी कि यदि महायुद्ध न छिड़ा तो बढ़ती जनसंख्या संसार में मनुष्यों का निर्वाह अशक्य बना देगी और धरती के साधन सीमित रह जाने से बढ़ी हुई आबादी को भुखमरी अथवा महामारी ही सन्तुलित करेंगी ।

जनसंख्या की बढ़ोत्तरी रोकने के लिए विचारशील स्तर का हर व्यक्ति चिन्तित है । उन वज्र मूर्खों की बात नहीं जो इस स्थिति में भी सन्तान न होने को दुर्भाग्य समझते हैं और बच्चे उत्पन्न करने के लिए लालायित फिरते हैं । सिद्धान्ततः अब हर जगह यह माना जाने लगा है कि व्यक्ति और समाज का हित इसी में है कि वर्तमान स्थिति में संतान वृद्धि को मानव द्रोह समझा जाय और उससे जितना बचा जा सके बचा जाय ।

सरकार जनसंख्या पर अंकुश करने के लिए तरह तरह के प्रचार कर रही है और साधन जुटा रही है फिर भी इस बाढ़ पर नियन्त्रण, आशा एवं आवश्यकता से बहुत ही कम मात्रा में हो रहा है । दुनिया में अशिक्षित और पिछड़े वर्ग की ही बहुलता है, वह अभी भी सन्तानोत्पादन की अनावश्यक अभिवृद्धि के दुष्परिणामों से परिचित नहीं हो पाया है, और इस बढ़ोत्तरी में स्वेच्छाचार बरत रहा है, भले ही उसका परिणाम कुछ भी किसी को भी, कितना भी क्यों न भुगतना पड़े ।

बढ़ती हुई आबादी के लिए सबसे बड़ा संकट अगले दिनों खाद्य पदार्थों की कमी का होगा संसार में जितना अन्न अब पैदा होता है उससे बड़ी कठिनाई में ही पेट भरा जाता है । उत्पादन के बहुमुखी प्रयत्न बढ़ती आबादी की तुलना में पीछे ही रह जाते हैं और अन्न उत्पादन के सारे प्रयत्नों का परिणाम भी अपर्याप्त रहता है ।

माँसाहार की आदत बढ़ाने में अन्न की खपत में कुछ राहत मिलने की बात सोची जाती रही है । पर मनुष्यों की बढ़ोत्तरी के कारण पशुओं के लिए निवास और चारे की समस्या जटिल होती जा रही है । चमड़े और माँस की खपत को बूचरखाने पूरा नहीं कर पा रहे । अस्तु संसार के पशुओं का अनुपात तेजी से घटता जा रहा है और दूध, घी, माँस आदि पदार्थों की कमी और महँगाई सामने आती जा रही है । कुछ ही समय में मनुष्यों की प्रतिद्वन्द्वता में पशुओं को अपना अस्तित्व गँवा बैठने के लिए विवश होना पड़ेगा । स्थिति की गम्भीरता समझने वाले कहते हैं कि अगले दिनों न गाय बचेंगी न बकरे। जंगल साफ हो जाने के कारण जंगली पशुओं का माँस भी अप्राप्य हो जावेगा । बड़े नगरों के कारखानों के विषाक्त जल को नदियाँ जिस तेजी से समुद्र में फैंक रही हैं और अणुशक्ति उत्पादन से बची भस्म सागर में जिस मात्रा में डाली जा रही है उसे देखते हुए मछलियों का जीवन भी असम्भव हो जायगा, तब न मछलियों का माँस मिलेगा न पालतू अथवा जंगली पशुओं का ।

महायुद्ध, महामारी के महा प्रलय जैसे दैवी अस्त्र यदि न चले तो मनुष्य की बढ़ती हुई आबादी के लिए खाद्य पदार्थों की तो चिन्ता करनी ही पड़ेगी और कम से कम इतना मार्ग तो ढूँढ़ना ही पड़ेगा कि भूख से तड़प-तड़प के मरने के हृदय विदारक दृश्य देखने न पड़ें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खाद्य समस्या का हल करने के लिए दूरदर्शी विचारक यह सोच रहे हैं कि अन्न या दूध या माँस की उपलब्धि में प्रस्तुत संकट को देखते हुए आहार का प्रमुख माध्यम 'घास' को बनाया जाय । जबकि असंख्य पशु घास खाकर जीवन-यापन करते हैं तो मनुष्य को ही उस पर निर्भर रहने में क्या और क्यों कठिनाई अनुभव करनी चाहिए ? मनुष्यों की बढ़ी हुई आबादी के लिए निवास, कृषि, उद्योग, परिवहन, यातायात, शिक्षा, शासन, चिकित्सा आदि की व्यवस्था जुटाने में वर्तमान भूमि में से हरियाली उत्पन्न करने वाला भाग बेतरह घट जायगा। तब पशुओं को इस धरती पर से अपना अस्तित्व समाप्त करना पड़ेगा । गाय, भैंस, घोड़ा, गधा, भेड़, बकरी किसी के भी दर्शन न होंगे । ऐसी दशा में कृषि उत्पादन से बचा हुआ घास भूसा मनुष्यों के निर्वाह का माध्यम बनेगा। पेड़ न रहने से लकड़ी नहीं मिलेगी । घास-भूसे की लुगदी को विशेष रासायनिक क्रियाओं द्वारा लकड़ी के रूप में बदल दिया जायगा । कपड़े कागज आदि की जरूरतें भी घास से ही पूरी करनी पड़ेंगी । इसी में से जितना अंश मनुष्योपयोगी होगा वह खाद्य पदार्थों के रूप में बदल लिया जायगा । अभ्यास न होने के कारण सम्भवतः पशुओं की तरह घास खाने में लोगों को कठिनाई पड़ेगी । दाँत उसे ठीक तरह चबा नही सकेंगे, पेट उसे कच्चे रूप में हजम नहीं कर सकेगा । ऐसी दशा में यह उपाय वैज्ञानिक वर्ग ने सोचा है कि घास को ऐसी शकल में बदल दिया जाये जिसे वर्तमान खाद-पदार्थों की शकल और स्वाद प्राप्त हो जाय ।

यह मात्र कल्पना या योजना नहीं वरन् एक तथ्य है जिसे व्यावहारिक रूप देने के लिए इन दिनों तेजी से प्रयत्न किये जा रहे हैं और उनमें आशाजनक सफलता भी मिल रही है ।

आहार में प्रोटीन की आवश्यकता सबसे अधिक मानी जाती है । पिछले दिनों तेल के बीजों के माध्यम से उसे प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है और उससे जो पदार्थ बने हैं उनसे घी, दूध, अंडा, माँस, मेवा आदि का स्थानापन्न खाद्य सामिग्री बनाई गई है । तिल, मूँगफली, अलसी, सरसों, सोयाबीन जैसे पदार्थों को आटे में मिलाकर बिस्कुट, डबलरोटी, मिठाई, पकवान आदि बनाये जा रहे हैं इससे जहाँ अन्न की कमी पूरी होती है वहाँ पौष्टिक तत्त्व भी मिल जाते हैं । तेल निकालने के बाद जो खली बचती है वह अब तक प्रायः पशुओं को पौष्टिक आहार के रूप में खिलाई जाती रही है पर अगले दिन न पशु रहेंगे और न उनके लिए खली आदि का खर्च करना होगा । तब उस खली को आटे में मिलाकर सस्ती रोटियाँ बनाली जाया करेंगी और नई पीढ़ी उन्हें अपने सौभाग्य का चिन्ह मानकर स्वादपूर्वक खाया करेगी ।

पर यह भी झंझट की ही बात है जब अन्न तक दुर्लभ होगा तो तेल वाली फसलें ही इतनी कहाँ से पैदा होंगी जिनसे उस बढ़ी हुई जनसंख्या का काम चल सके। इसलिए सस्तेपन और बाहुल्य को ध्यान में रखते हुए बात आकर 'घास' पर ही जमेगी । इन दिनों पशुओं द्वारा खाई जाने वाली घास, अनाज के पौधे का भूसा तब मानवी खाद्य समस्या का हल करने के लिए प्रयुक्त होंगे। पता लगाया गया है कि एक टन घास में एक हंडर वेट तक प्रोटीन प्राप्त की जा सकती है । घास की लुगदी बनाकर उसमें से हरे रंग का प्रोटीन पाउडर निकला करेगा। उसकी तीन चौथाई मात्रा और अन्न का आटा एक चौथाई मिलाकर लगभग उसी शकल और स्वाद के खाद्य पदार्थ बना लिए जायेंगे जैसे कि आजकल प्रयोग में आते है ।

इन दिनों दूध हर मनुष्य के भाग्य में तो नहीं रहा—पर बच्चों के लिए—बीमारों के लिए—चाय को उसकी आवश्यकता अभी भी समझी जाती है । अगले दिनों पशु नहीं रहेंगे तो असली दूध, घी के भी दर्शन नहीं होंगे ऐसी दशा में बीज तथा वनस्पतियों से ही दूध की शकल-सूरत का एक ऐसा पदार्थ बना दिया जायगा जो कम से कम मन बहलाने और समय की माँग का प्रयोजन पूरा करदे । मूँगफली और सोयाबीन को पीसकर अब भी उसी स्तर की एक चीज बनने लगी है—पर अगले दिनों तो अमुक घासों का गूदा ही रासायनिक पदार्थों की सहायता से सफेद और पतला बना दिया जायगा और दूध जैसी रासायनिक सुगन्ध की कुछ बूँदें डालकर ऐसी चीज बनादी जायगी जो दूध के अभ्यस्त लोगों के लिए मन बहलाने का माध्यम बन सके। नकली घी से, वनस्पति घी से तो अभी भी बाजार भरा पड़ा है, पर उसमें एक कठिनाई यह है कि बिनौला,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नारियल, मूँगफली आदि भविष्य में दुर्लभ बनते जा रहे हैं । बीजों में उनमें प्रयुक्त होने वाला तेल बनता है । भविष्य में अन्न, तेल आदि खाद्य पदार्थ आज के मेवा मिष्ठान जैसे महँगे होंगे अस्तु उनका उपयोग सर्वसाधारण के लिए सम्भव न होगा । घास से ही घी जैसे चिकनाई भी बन जायगी । चीड़, देवदारू आदि के दरख्तों में तेल रहता है ऐसी ही किसी सस्ती वनस्पति पर चिकनाई के लिए निर्भर रहना पड़ेगा। वैसे उसकी कुछ बहुत जरूरत भी नहीं पड़ेगी । कमजोर हाजमा वाले लोग स्वतः चिकनाई से परहेज करेंगे और उसके उपयोग को अनावश्यक समझेंगे ।

घास से बने खाद्य पदार्थों में जो कमी रह जायगी उसे गन्ना, महुआ, चावल, जौ आदि को सड़ा कर उसे उठाये गये खमीर को उसमें डालकर पूरा किया जायगा तब घास की बनी डबलरोटियाँ आजकल की पाकशालाओं के पिछड़ेपन का उपहास उड़ाया करेंगी । खमीर और घास के सम्मिश्रण से बनी डबलरोटियाँ महीनों काम दिया करेंगी। रोज-रोज बनाने का झंझट न रहेगा । अनुमान है कि आज के लगभग तीस वर्ष बाद जबकि बढ़ी हुई जनसंख्या के कारण घास ही मनुष्यों का प्रधान आहार रह जायगा—नित्य भोजन पकाने के लिए चूल्हा फूँकना कोई पसन्द न करेगा । महिलाएँ तो इतना झंझट मोल लेकर ही यदि गृहस्थी बसानी पड़ती हों तो उससे दो टूक इन्कार कर देंगी ।

अबसे तीस वर्ष बाद जबकि आबादी अब की अपेक्षा तीन गुनी बढ़ी हुई होगी, मनुष्य जाति को अगणित समस्याओं का सामना करना पड़ेगा । उनमें से एक खाद्य समस्या का धुंधलासा हल पेट भरने के लिए घास पर निर्भर होने के रूप में प्रस्तुत किया गया है । वनस्पति-विज्ञानी और सरकारी संस्थानों का ध्यान इस संदर्भ में अधिक कारगर शोधें करने में लगा है । घास को खाद्यन्न में भली प्रकार बदल सकने योग्य यन्त्र तथा रसायन सामने लाये जा रहे हैं । अनुमान है कि सन् ८० तक आज की चेष्टा का स्वरूप विशालकाय उत्पादन का रूप धारण कर लेगा और भूख से तड़प कर मरने की आशंका से राहत प्राप्त करली जायगी । वनस्पति उत्पादन की भूमि तक विकसित किस्म की घासें उगाने को प्रधानता देगा । और उसकी कई-कई फसलें काट कर लोग किसी तरह उदर पूर्ति कर लिया करेंगे ।

फिर भी स्थान की कमी का सवाल बना ही रहेगा। बड़े शहरों में दुमंजिली, तिमंजिली बसें चल रही हैं । रेलें भी अगले दिनों दुमंजिली ही बनेंगी । बहुत मंजिली इमारतें ही बनाई जायेंगी । खेती के ऊपर खेत भी शायद इसी प्रकार बनें । जमीन के नीचे रेलें, सड़कें ही नहीं बस्तियाँ भी बसेंगी । वर्षा के पानी की एक-एक बूँद समुद्र में जाने से रोककर उसे प्यास बुझाने के—सिंचाई के तथा कल कारखानों के काम में लाया जाया करेगा । शिक्षा के लिए घरों पर ही टेलीविजन और रेडियो से पढ़ाई हुआ करेगी । स्कूल कालिजों में घिरने वाली जगह को बचाने के लिए यही तरीका सरल पड़ेगा । यातायात के लिए वायुयानों अथवा लोहे के रस्सों पर झूलते हुए विशालकाय डिब्बे काम में लाया जाया करेंगे । धरती पर रेंगने वाली भीड़ कुचलकर न मर जाय इसके लिए ऐसे ही कुछ उपाय काम में लाने पड़ेंगे ।

प्रस्तुत है एक वैज्ञानिक भविष्य कथन

रिचर्ड फ्रिचफील्ड एक अच्छे समीक्षक और विश्लेषक रहे हैं । कृषि क्षेत्र के मूर्धन्य विशेषज्ञों में उनकी गणना होती रही है । इस क्षेत्र के दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर उनने एक पुस्तक लिखी—"भुखमरी की ओर जाता विश्व ।" इसमें उनने आगामी वर्षों में विशेषकर सन् २००० के बाद आने वाले समय में भारतीय कृषि जगत में होने वाली असाधारण क्रान्ति की चर्चा की है।

वे लिखते हैं कि सम्पूर्ण भारत में पर विशेष कर गांगेय क्षेत्र में हरित क्रांति इतनी जोर पकड़ेगी कि आगामी समय में वह उत्पादन सम्बन्धी ऐसा कीर्तिमान स्थापित करेगी, जैसा इस सदी में पहले कभी नहीं हुआ। इसी के बलबूते वह विश्व के समक्ष यह उद्घोषणा करने में समर्थ हो सकेगा कि वह १०० लाख टन अनाज रियायती मूल्य पर संसार के विभिन्न देशों को निर्यात कर सकता है । वे कहते हैं कि सन् ९० से ९५ की अवधि के बीच भारत के पास ऐसे श्रेष्ठतम विश्व स्तर के कृषि विशेषज्ञ उपलब्ध होंगे जिसके कारण फसल उत्पादन में जो अभूतपूर्व वृद्धि होगी , उससे वह विभिन्न प्रकार के दलहन, तिलहन एवं अन्य अनेक तरह के धान्यों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्यात से विश्व के निर्धन देशों की सहायता करने की स्थिति में आ जायेगा एवं स्वयं खाद्य के मामले में आत्मनिर्भर बन जायेगा ।

उनके अनुसार उनका यह निष्कर्ष पिछले १० वर्षों में भारतीय कृषि में होने वाली वैज्ञानिक उन्नति के अध्ययन पर आधारित है । उनका कहना है कि वर्तमान समय में कृषि सम्बन्धी वैज्ञानिक संस्थाओं (२१ कृषि विश्वविद्यालय तथा ३० अनुसंधानशालाओं) ने भारतीय कृषि को आधुनिक बनाने में जो महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, उसके परिणाम अभी से ही परिलक्षित होने लगे हैं। आने वाले समय में यदि वे सब मिलकर इस क्षेत्र में एक नया आयाम स्थापित कर दें तो इसे आश्चर्य नहीं माना जाना चाहिए । वे अपनी पुस्तक में आगे लिखते हैं कि जिन देशों और लोगों ने भारत को गरीब और कंगाल देश के रूप में निरूपित किया है, संभवतः सबसे बड़ी गलती यह की है कि वे इस देश की खाद्य उत्पादन सम्बन्धी मूलभूत क्षमता का सही आकलन करने में सर्वथा अक्षम रहे हैं अन्यथा इतनी बड़ी भूल कदापि न करते। इसके पास कुल भूमि का ४/५ वाँ भाग खेती के लिए पूर्णतया उपयुक्त है, जो अमेरिका जितनी (४०० से साढे ४०० मिलियन एकड़) ही है । यहाँ की भूमि अपेक्षाकृत अधिक उर्वर एवं फसल पैदा करने वाली है । यहाँ के किसान यदि सही ढ़ंग से इस दिशा में जुट पड़ें, तो मिट्टी से भी सोना पैदा करने की क्षमता का प्रदर्शन कर सकते हैं । उनमें इस दिशा में धीर-धीरे जाग्रति आ भी रही है ।

उनके अनुसार अधिकाँश विकसित देशों का खाद्य क्षेत्र में स्वावलम्बन का एक ही रहस्य है कि वे प्रचुर परिमाण में रासायनिक खादों का प्रयोग करते हैं , किन्तु इससे जिस गति से उनके खेत अनउर्वर और अनुपजाऊ बनते जा रहे हैं, उससे वे सर्वथा अनभिज्ञ हैं अथवा भिज्ञ है तो जानबूझ कर अधिकाधिक उपज लेने के चक्कर में वही गलती कर रहे हैं जो भूल उस व्यक्ति ने की थी जो प्रतिदिन सोने का एक अण्ड-देने वाली मुर्गी का पेट चीर कर सारे अण्डे एक ही दिन में निकाल लेने की उतावली बरती थी और जीवन भर पछताता रहा । भारत इस क्षेत्र में सौभाग्यशाली है । वह अपनी कृषियोग्य भूमि में सीमित क्षेत्र में ही रासायानिक खाद का प्रयोग करता है । उसका रासायनिक खाद पर आधारित खेती योग्य भूमि का कुल क्षेत्रफल मात्र ३५०० लाख एकड़ है शेष में कम्पोस्ट एवं गोबर जैसी घरेलू खादों का प्रयोग किया जाता है । इस भूमि की तुलना में उपरोक्त कृत्रिम खाद वाली भूमि को नगण्य ही समझा जा सकता है । वे कहते हैं कि इस दृष्टि से देखा जाय तो इस देश की अधिकांश कृषि योग्य जमीन अभी बंजर बनने से सुरक्षित बची हुई है ।

यदि इस तथ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो बात और भी स्पष्ट हो जाती है । उनके अध्ययन के अनुसार पिछले १० हजार वर्षों तक खेती करने में विश्व भर में यहाँ न्यूनतम रासायनिक खादों का उपयोग हुआ है और अब भी वैसा ही हो रहा है । इस संदर्भ में एक आँकड़ा प्रस्तुत कर तथ्य को और भी अधिक स्पष्ट करने का उनने प्रयास किया है । रिचर्ड क्रिचफील्ड के अध्यन के अनुसार भारत में धान के लिए १.५ टन प्रति हेक्टेअर रासायनिक खाद का उपयोग होता है, जबकि जापान सहित अन्य देशों में यह मात्र ६ टन प्रति हेक्टेअर के करीब है । गेहूँ के लिए यहाँ वह २.५ टन प्रति हेक्टेअर के अनुपात में प्रयुक्त होती है, जबकि हालैण्ड में इसकी दर ६ टन प्रति हेक्टेअर है । अपने देश में मक्का पर इसका खर्च १.५ टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से होता है, जबकि मिस्त्र के साथ-साथ अन्य विकसित एवं विकासशील देशों में इसकी औसत खपत १३-१४ टन प्रति हेक्टेअर है ।

सिंचाई के साधन भी अब तेजी से बढ़ रहे हैं और सुदूर देहातों में, जहाँ खेती के लिए एकमात्र वर्षा जल जैसे साधन पर निर्भर रहना पड़ता था, उन स्थानों में भी इसकी समुचित व्यवस्था की जा रही है । क्रीच फील्ड लिखते हैं कि यदि वर्तमान दर से यह व्यवस्था जारी रही, तो आगामी पाँच वर्षों में सिंचित भूमि का क्षेत्रफल ११२५ लाख से बढ़कर १५५० लाख एकड़ तक पहुँचने की संभावना है । यदि ऐसा सम्भव हुआ, तो यह चीन के बाद दूसरा बड़ा सिंचित क्षेत्र होगा । सिंचाई के बढ़ते साधन से अब २७ सौ लाख एकड़ भूमि में कई फसलें उपजायी जा सकेंगी । इससे पूर्व यह सुविधा उपलब्ध न होने से इतने बड़े भूभाग में केवल एक ही फसल उपजायी जाती रही थी, किन्तु कृषकों को यह साधन प्राप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हो जाने से वे अब अपने खेतों में भिन्न-भिन्न मौसम में अलग-अलग प्रकार की एक ही वर्ष में कई फसलें लेने लगे हैं, यहाँ का ६२० लाख एकड़ क्षेत्र द्विफसली है। धान की खेती वाली कुल ९०० लाख एकड़ भूमि में से ५०० लाख में इस समय एक साथ कई-कई फसलें एक वर्ष में काटने की प्रक्रिया बड़ी तेजी से अग्रगामी हो रही है । वे अपनी उक्त पुस्तक में लिखते हैं कि इस तेजी से यदि भारतीय कृषि में प्रगति जारी रही तो अनुमान है कि आगामी वर्षों में द्विफसली भूमि में कई हजार टन खाद्यान्नों की उपज अधिक होने की सम्भावना है, जो प्रति व्यक्ति भोजन की वर्तमान दर को १५० किलों से बढ़ाकर १८० किलो प्रति वर्ष कर देगी । यद्यपि वर्तमान के आकलन के अनुसार २०-२५ प्रतिशत भारतीय अर्थात् लगभग ६३ हजार लाख व्यक्ति कुपोषण के शिकार हैं, किन्तु लेखक आशावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए कहते है कि यदि आने वाले वर्षों में इस संख्या में आश्चर्यजनक कमी आई, तो किसी को विस्मय नहीं करना चाहिए ।

इस संदर्भ में अन्यान्य स्रोतों से भी भारतीय कृषि में इन्हीं दिनें हो रही असाधारण प्रगति के साक्ष्य मिल रहे हैं ।

इक्कीसवीं सदी की परिणति

इन दिनों बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या सबसे विकट है । पिछड़ापन संसार के दो तिहाई भाग पर छाया हुआ है । यह वह वर्ग है जो बिना आगा-पीछा सोचे अन्धाधुन्ध सन्तानोत्पादन करता है । फलतः प्रगति के लिए किये गये प्रयास पिछड़ जाते हैं और प्रजनन की घुड़-दौड़ कहीं आगे बढ़ जाती है । किन्तु अगले दिनों यह स्थिति न रहेगी । विज्ञान, प्रतिगामिता को पछाड़ेगा और अशिक्षा के अभिशाप से मनुष्य जाति को उबारेगा । लोग समझेंगे कि अनावश्यक प्रजनन जन्मदात्री के लिए एक प्रकार का प्राण लेवा संकट है । पिता के लिए—परिवार के लिए गरीबी को द्रुतगति से बढ़ाने वाला अभिशाप है। समूचे समाज पर तो वह देशद्रोह, समाजद्रोह की तरह विपत्ति बनकर उतरता है । विशेषतया इन परिस्थितियों में जिनमें कि अभाव और दरिद्र के दो पाटों में फंसा हुआ समाज बेतरह दम तोड़ रहा है । इस बुद्धि संगत विचारणा को अपनाने के लिए बाधित मनुष्य अपनी राह बदलेगा और प्रजनन की दर घटेगी । यह बदलाव बुद्धिपूर्वक न हो सका तो प्रकृति प्रकोपों के हण्टर चमड़ी उखाड़ लेंगे और विनाश के गर्त में गिरने की सम्भावना को रोकथाम के शिकंजे में कसेंगे ।

अर्थशास्त्री कहते हैं कि अन्न, वस्त्र की समस्या को ऐसे साधनों से हल किया जा सकेगा जिनका प्रयोग करने की अभी आवश्यकता नहीं पड़ी है । घास से आहार और भूसे से वस्त्र बनाये जा सकेंगे । बहुमंजिली इमारतें बनाकर आवास व्यवस्था को इस सीमा तक बढ़ाया जा सकेगा जिसमें अबकी अपेक्षा इन चौगुने मनुष्य भी समा सकें । शिक्षाशास्त्री कहते हैं कि पढ़ाने के लिए स्कूलों में अध्यापकों की आवश्यकता न पड़ेगी । यह कार्य घर बैठे रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से सम्पन्न हो जाया करेगा, जैसाकि इन दिनों खुले विश्व-विद्यालयों के माध्यम से हो रहा है ।

भूगर्भशास्त्री कहते हैं कि पृथ्वी की सह्य तापमान वाली परत के नीचे ऐसी सुरंगें बनाई जा सकेंगी जिनमें बिजली से चलने वाली रेलें यातायात एवं परिवहन की समस्या हल कर सकें । ऊर्जा की बढ़ती आवश्यकता हेतु सौर बैटरियाँ बार-बार चार्ज करते रहने से उतनी गर्मी उपलब्ध की जा सकेगी जिससे मनुष्य की दैनिक आवश्यकता तथा कल-कारखानों के लिए बिजली पैदा की जा सकेगी । कचरे को खाद के रूप में सड़ा कर उससे उर्वरता बढ़ाई जा सकेगी और शासन तन्त्र में साम्यवादी स्तर का ऐसा हेर-फेर होगा जिसमें ललचाने,अपराध करने पर उतारू होने की गुंजाइश ही न रहे । जब पैसा किसी के पास ही न होगा, जब वस्तु और श्रम का परिवर्तन होने लगेगा तो चोरी कोई किस चीज की करेगा ? ईर्षा और प्रतिशोध उत्पन्न करने वाली वर्तमान विद्या ही जब बदल जायगी तो पुलिस, कचहरी, जेल पर होने वाला विपुल खर्च सहज ही समाप्त हो जायेगा ।

इतने पर भी एक समस्या ऐसी है जो प्रतिगामी और प्रगतिशील हर किसी को उलझन में डाले हुए है कि धरती का बढ़ता भार और हवा में कार्बन का अनुपात बढ़ने से मनुष्य आक्सीजन कहाँ से प्राप्त कर सकेगा? उस अभिवृद्धि में पेड़ों और जंगलों का तो सफाया ही होकर रहेगा । ऐसे दम से दम घुटने के प्राणघाती संकट से कैसे बचा जा सकेगा ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सीमित समुदाय के बीच ही मैत्री, सद्भावना, स्नेह, सौजन्य जैसे गुणों का निर्वाह हो सकता है । पर जब टिड्डी दल की तरह मनुष्य की भीड़ में पारस्परिक पहचान तक कठिन हो जायेगी तो सौजन्य का निर्वाह किस प्रकार, किसके साथ बन पड़ेगा । टिड्डी दल के बीच कौन पतंगा अपनी मैत्री निभा पाता है ?

इक्कीसवीं शताब्दी कैसी होगी ? इस सन्दर्भ में यों निश्चित रूप से तो कुछ नहीं कहा जा सकता है कि वह विनाश को साथ लेकर आ रही है या विकास को । पर इतना अवश्य है कि यह परिस्थिति मानवी सभ्यता के सम्मुख इस रूप में प्रस्तुत कभी नहीं हुई थी । भूतकाल की किसी समस्या और समाधान के साथ आज के समय की नाप-तौल नहीं हो सकती, जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि इक्कीसवीं सदी में किस स्तर की कितनी जटिल समस्याएँ उत्पन्न होंगी और किसी अवगत, अनुभव के आधार पर उनका किस प्रकार हल निकल सकेगा ।

दीपक के नीचे अंधेरा भी होता है । तथाकथित बहुमुखी प्रगति के माप इन दिनों भी जटिलताओं और समस्याओं के अम्बार उबल रहे हैं । अगले दिनों की परिस्थितियों का ताना-बाना इतना उलझा हुआ होगा कि उसका हल निकलना तो दूर यह कल्पना करना अभी तो कठिन प्रतीत होता है कि उसका स्वरूप क्या होगा और उसे सुलझाया कैसे जा सकेगा ?

जुलाई, १९८० में संसार भर के ५० प्रमुख राष्ट्रों के लगभग ६००० मूर्धन्य टोरोण्टो (कनाडा) में एकत्र हुए। विभिन्न शाखाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले इन सभी मनीषियों का लक्ष्य था—प्रस्तुत विभीषिकाओं एवं भावी सम्भावनाओं पर गहन विचार मन्थन करके मानव जाति के भविष्य का निर्धारण करना, ताकि आगत को टाला जा सके एवं नये विश्व की कल्पना को मूर्त रूप दिया जाय । अगले वर्ष यह सम्मेलन बम्बई में होने जा रहा है । इसमें राष्ट्र संघ के प्रतिनिधियों, तृतीय विश्व के राष्ट्र प्रमुखों तथा महत्त्वपूर्ण भविष्य विज्ञानी—मनीषी प्रवर श्री हरमन कॉन, मार्गरिट मीड, विलियम, थॉमसन, एल्विन टॉफलर आदि ने भी भाग लिया एवं अपने शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए ।

इन भविष्य विज्ञानियों का कथन था की मानवी चिन्तन जिस प्रकार भ्रष्ट होता जा रहा है, उससे प्रतीत होता है, ध्वंस सुनिश्चित है । प्राकृतिक विक्षोभ कुछ नहीं, मानव के कृत्यों की ही परिणतियाँ हैं । आने वाले दिनों में सारा विश्व इनका बाहुल्य देखेगा ।

पारस्परिक व्यवहार में देश एवं अलगाव तथा सामूहिक व्यवहार में युद्धोन्माद जैसी स्थिति सन् १९९१ तक बनी रहेगी। तत्पश्चात् ही सृजन में विश्वास रखने वाली शक्तियाँ उभर कर आयेंगी । बढ़ती जनसंख्या से नहीं चेती मानव जाति को महामारी- बाढ़—अन्तर्ग्रही दुर्घटनाएँ- बढ़ते अपराध जैसे प्रसंग ही सच्चा सबक सिखायेंगे । सन् २००० में जनसंख्या ६ अरब नहीं होगी जैसा कि कहा जा रहा है । व्यापक संहार, चाहे वह युद्ध के कारण हो अथवा संसाधनों की कमी के कारण, बढ़ी संख्या में जनसंख्या को लुप्त कर देगा । यह घटकर चार अरब से भी कम रह जाएगी ।''

इस सम्मेलन ने ''उत्कृष्ट चिन्तन-आदर्श आचरण'' का नारा दिया ताकि भवितव्यता को टाला जा सके । इस आधार पर ही वे नवीन सुसंस्कृत विश्व की कल्पना करते हैं । उन्होंने आशा व्यक्त की है कि संघबद्ध प्रतिभावान उदारचेता ही नव सृजन में प्रमुख भूमिका निभायेंगे ।''

एक अर्थशास्त्री नृतत्व विज्ञानी ''नौरमन मेयर'' ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वातावरण को विषाक्तता इतनी बढ़ गयी है कि मानव समुदाय की जातियाँ निरन्तर नष्ट होती जा रही हैं । वे कहते हैं कि प्रति घण्टे एक जाति की क्षति हो रही है । सारे विश्व में लगभग ५०लाख प्रकार की जातियाँ मानव एवं प्राणी जगत की हैं । कारण बताते हुए वे कहते हैं कि यह सृष्टि का अनुशासित गति चक्र है जिसमें अनावश्यक वृद्धि एवं प्रदूषण को जन्म देने वाले औद्योगिक विकास की प्रतिक्रिया ही दृष्टिगोचर हो रही है ।

मूर्धन्य विश्व विचारकों का अभिमत

सन् १९६३ में अमेरिका की प्रसिद्ध जीवशास्त्री महिला प्रो० राशेल, क्रार्सन ने अपनी पुस्तक 'साइलेंट स्प्रिंग' में लिखा है कि पंद्रह बीस वर्ष बाद दुनिया के अधिकांश महानगरों की स्थिति ऐसी हो जायेगी कि वहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के सभी निवासियों पर अकाल मृत्यु की सम्भावना हर घड़ी छाई रहेगी । न केवल नगर निवासी वरन् उस क्षेत्र में रहने वाले प्राणियों को भी कभी भी मरना पड़ सकता है इस पुस्तक में उन्होंने इस तरह की सामूहिक मौतों की कल्पना के आधार पर चित्रण भी किया है । उस समय तो लोगों ने इन प्रतिपादनों का मखौल उड़ाया पर अभी कुछ वर्षों पहले अमेरिका के डेट्रायट शहर में इटली के जोर्निया तथा जापान के मिनिमाता कस्बे में 'साइलेंट स्प्रिंग' पुस्तक में दी गई स्थिति हूबहू देखने में आई ।

डेट्रायट की हवा में कारखानों की चिमनियों से निकले धुँए के कारण इतनी सल्फर डाइआक्साइड जमा हो गई कि वह बादलों के साथ मिलकर दहकते तेजाव के रूप में बरस पड़ी । इटली के जोर्निया शहर में एक कारखाने से इतनी अधिक कार्बन डाइआक्साइड छोड़ी गई कि मुर्गियाँ मरने लगीं । पेड सूखने लगे और बूढ़े खाँसते-खाँसते परेशान हो गये । जापान के मिनिमाता कस्बे में भी यही स्थिति उत्पन्न हो गई थी ।

इस तरह की घटनाओं को देख जान कर अब काफी लोग यह मानने लगे हैं कि हर व्यक्ति और हर प्राणी के सिर पर मौत नाच रही है । वह कभी भी सैकड़ों क्या हज़ारों लोगों को अपने पंजे में जकड़ सकती है ।

सन् १९७५ में अमेरिका में सम्पन्न हुए खगोलशास्त्रियों के सम्मेलन में प्रो० कार्ल सैगन ने बताया कि कुछ वर्षों बाद पृथ्वी का वातावरण अचानक शुक्रग्रह के समान गरम हो जायगा । उल्लेखनीय है कि सूर्य को छोड़कर शुक्र अपने सौर परिवार का सबसे गर्म वातावरण वाला सदस्य है वहाँ प्रायः ३८० डिग्री सेंटीग्रेट तापमान रहता है जबकि हमारी पृथ्वी का औसत तापक्रम ४७ से ५२ डिग्री सेंन्टीग्रेड के बीच है । इसका कारण बताते हुए प्रो० कार्ल सायमन ने कहा कि शुक्र पृथ्वी और बुध के बीच में सूर्य के सबसे समीप पड़ने वाला ग्रह है । वहाँ सूर्य की अधिक रोशनी पहुँचती है और सूर्य की गर्मी के कारण पानी की भाप तथा कार्बन डाइआक्साइड का एक घना आवरण बन गया है, जो गर्मी को बाहर नहीं जाने देता। इसी कारण शुक्र पर भयानक गर्मी पड़ती है ।

इन दिनों पृथ्वी पर जिस तेजी से औद्योगीकरण बढ़ता जा रहा है और वायुमण्डल में कार्बन डाइआक्साइड की जितनी मात्रा घुलती जा रही है उससे पृथ्वी के अयन मण्डल पर धीरे-धीर एक आवरण बनता जा रहा है । धीरे-धीर स्थिति यह बनती जा रही है कि उस घने आवरण में ही पृथ्वी द्वारा फेंकी जाने वाली अतिरिक्त गर्मी कैद होती जा रही है । कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ वर्षों बाद ही पृथ्वी पर असह्य गर्मी पड़ने लगे और अनेक स्तर के संकट खड़े करे ।

सुप्रसिद्ध पश्चिमी दार्शनिक ओस्वाल्ट स्पेंगुलर ने अपनी पुस्तक "दि डिक्लाइन आफ द वेस्ट" में लिखा है कि "वर्तमान सभ्यता अब बुढ़ापे के दौर से गुजर रही है । उसने संसार में कूटनीति और युद्ध का जो रंगमंच तैयार कर दिया है वह वास्तव में विनाश नदी की एक ऐसी कगार है जो अब और एक भी बाढ़ बर्दाश्त नहीं कर पायेगी । तृतीय विश्वयुद्ध अवश्य होगा और उसके बाद वर्तमान भौतिकवादी सभ्यता का सदा के लिए अन्त हो जायगा ।"

स्पेंगुलर ने जो तर्क प्रस्तुत किये हैं वे जीवाश्मों की विस्तृत गवेषणा पर आधारित हैं और ये तर्क तथा तथ्यों पर इतने आधारित हैं कि प्रत्येक विचारक उन्हें मानने के लिए अपने को लगभग बाध्य-सा अनुभव करता है ।

इक्कीसवीं सदी का आधार स्तम्भ बनेगा-आध्यात्मिक अर्थशास्त्र

मनुष्य की दृष्टि के सम्बन्ध में एक चौंकाने वाला आंकड़ा 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने विश्व के सम्मुख रखा है । इसके अनुसार पूरे विश्व में इस समय एक अरब के लगभग व्यक्ति मायोपिया (अर्थात् व्याधि जिसमें आँखों को दूर का स्पष्ट नहीं दिखाई देता) से ग्रस्त हैं । यह समाचार चिकित्सकों एवं वैज्ञानिक समुदाय को हैरानी में डाल सकता है । पर उससे एक संकेत यह भी मिलता है कि रोग की दृष्टि से न भी सोचा जाय तो भी अदूरदर्शिता (जिसमें दूर का कभी विचार ही नहीं आता) से तो तकरीबन विश्व की समूची जनसंख्या ही ग्रस्त है । न दीखने का उपचार तो लेन्स उपचार से हो जाता है, पर जीवन व्यापार की जो योजनाएँ हैं-उनमें व्याप्त अदूरदर्शिता का उपचार किस प्रकार सम्भव है ?'

यदि सारे समाज में इसी आर्थिक चिन्तन को आधार बना लिया जाय तो सौन्दर्य, शालीनता, सदाचार,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नैतिकता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जैसे सरल अनार्थिक मूल्यों का भी अस्तित्व तब रह सकेगा जब वे आर्थिकता की कसौटी पर खरे उतरते हों । नीति-अनीति के मामले में भी यही आर्थिक चिन्तन बार-बार हावी होकर उसी अदूरदर्शिता को अपनाने को बाध्य करता है-जो तुरन्त लाभ की है ।

वस्तुतः स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है । भौतिकवादी, उच्छृंखल बुद्धिवादिता कितने ही तर्क दे ले, मानवता को कुपथ पर अपनी मर्जी से नहीं ले जा सकती। धन मानव जीवन के लिए आवश्यक है पर इतना नहीं कि वही सब कुछ बन जाय । पहला स्थान अध्यात्म-परक मूल्यों का है । अर्थ की चर्चा इसके बाद की जाती है। धर्म से रहित अर्थ व्यर्थ है, हानिकारक है, रोग-शोकों को आमन्त्रित करता है । धन कमाने से पूर्व मानव में सदाचार की विवेक-बुद्धि जाग्रत होनी चाहिए । ताकि वह कमाई का सदुपयोग कर सके ।

महर्षि जैमिनि ने **''मीमांसा दर्शन''** निर्देश दिया है| **''यतो हि अभ्युदानि निःश्रेयस स धर्मः''**- आध्यात्मिक उन्नति और भौतिक प्रगति एक दूसरे की परम मित्र हैं। पर उत्पादन का आधार बड़े-बड़े उद्योग नहीं श्रम-सहकार होना चाहिए । शुभाकर इसके तीन कारण बताते हुए इसी को आध्यात्मिक अर्थशास्त्र की संज्ञा देते हैं । पहला तो यह कि इसी माध्यम से अपनी छिपी क्षमताओं एवं अविज्ञात शक्तियों का उपयोग करने एवं उन्हें विकसित करने का पूर्ण अवसर मिलता है । दूसरे सबके साथ काम करने से व्यक्ति में सहयोग की भावना जन्म लेती है । यह विचार मन से निकल जाता है कि यह काम 'मैंने, किया है । इसके स्थान पर जब 'हम' आ जाता है तो अहम् की विकृति नहीं पनपने पाती । तीसरे आध्यात्मवादी व्यक्ति जब वस्तुओं के निर्माण हेतु श्रम करता है तो आवश्यक वस्तुओं को सुन्दर-सुदृढ़ बनाने का भरपूर प्रयास करता है । यह सेवा भाव एक प्रकार का समर्पण योग है, जिसका किसी भी प्रकार के उत्पादन तन्त्र में नितान्त अभाव होता है ।

बेरोजगारी, औद्योगिक अशान्ति, हड़तालें, अपराध, नैतिक पतन आदि सभी उसी प्रकार उत्पन्न हुई समस्याएँ हैं जिस प्रकार अल्पकालीन लाभ के लिए ली गई पश्चात्य चिकित्सा पद्धति की एक तेज औषधि अपने पीछे दुष्परिणाम में रोगों का सिलसिला छोड़ जाती है। जब बाढ़ आती है तो अपने साथ महामारी, भुखमरी लेकर आती है । उसी प्रकार औद्योगीकरण के बूते समृद्धि की बाढ़ का दम्भ करने वाले देशों में इसकी परिणति-प्रेम, सौहार्द तथा धार्मिक-पवित्रता से कदापि निरपेक्ष-संकीर्ण, स्वार्थी, निष्ठुर व्यक्तियों की भरमार के रूप में देखी जा सकती है ।

विज्ञान, टेक्नोलॉजी और औद्योगिकी के अनियंत्रित विस्तार से होने वाले दुष्परिणामों से राष्ट्र पिता गाँधी अवगत थे । उन्होंने स्वतंत्र ग्राम इकाइयों के निर्माण द्वारा ग्राम स्वराज्य का सपना देखा था । किन्तु प्रगति के पाश्चात्य अन्धानुकरण ने औद्योगीकरण को अधिक महत्त्व दिया । अधिक उत्पादन के तात्कालिक लालच ने दूरवर्ती सत्परिणामों को भुला दिया और मानव जाति के लिए गाँधी की कल्याणकारी योजना मात्र सपना ही बनी रही।

'दि अमेरिकन रिव्यू' में प्रकाशित शोधपत्र ''वैल्यूज टू ए वॉयबेल फ्यूचर'' के लेखक विलियम इर्विन थाम्पसन की कल्पना भी शुभाकर की भाँति 'ग्राम्य स्वराज्य' विचारधारा पर आधारित है । थाम्पसन का विश्वास है कि वर्तमान सभ्यता जिस ओर गतिशील है उससे मानव जाति का अन्त सुनिश्चित है अतएव इस ढर्रे से आमूल-चूल परिवर्तन करना जरूरी है । उन्होंने एक ऐसी संस्कृति विकसित करने की कल्पना की है-जो ग्रामीण सभ्यता पर आधारित हो, जिसमें रहने वाले व्यक्तियों में आपसी स्नेह सौहार्द हो । उत्पादन के स्रोत छोटे कुटीर उद्योग हों ।

इस संस्कृति का नाम इर्विन थाम्पसन ने 'परा औद्योगिक संस्कृति' दिया है । उनके अनुसार परा औद्योगिक संस्कृति में उत्पादन एवं श्रम शक्ति का विकेन्द्रीकरण छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों के माध्यम से होगा। उनका कहना है कि आज प्रगतिशीलता एवं फैशन के नाम पर कितनी ही वस्तुएँ बनती हैं और उपयोगी होते हुए भी कुछ समय बाद फैशन से बाहर कह कर अनुपयोगी ठहरा दी जाती हैं । यह प्रवृत्ति हानिकारक है। अब जो वस्तुएँ बनेंगी-उपयोगिता के आधार पर विनिर्मित होंगी तथा वर्षों तक कारगर सिद्ध होंगी ।

विलियम इर्विन ने अपनी 'भविष्यत् संस्कृति' को विकसित करने में चार आदर्शों पर बल दिया है । इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आदर्शों का नाम उन्होंने 'कार्यकारी सामाजिक शक्ति' रखा है । प्रथम आदर्श है -''राष्ट्रों का ग्रहीकरण'' अर्थात् समस्त विश्व को एक कुटुम्ब के रूप में माना जाय । जब तक प्रत्येक राष्ट्र अपने को स्वतंत्र एवं अलग समझते रहेंगे तब तक आपसी सद्भाव नहीं बन सकता है । अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने और दूसरों पर प्रभुत्व जमाने की दृष्टि से अधिकाधिक शस्त्रों के निर्माण एवं संग्रह की होड़ चलती है । फलतः आपसी तनाव एवं संघर्ष बढ़ते हैं । अतएव राष्ट्रों के एकीकरण का प्रयास आवश्यक है । दूसरा आदर्श है ''नगरों का विकेन्द्रीकरण वे कहते हैं कि नई संस्कृति में नगरों की ओर केन्द्रित परिधि के ध्रुवीकरण को हटाकर प्रकृति की ओर उन्मुख करना होगा। पर्यावरण के संकटों से इसी प्रकार बचना सम्भव है ।

तीसरा आधार है ''तकनीकी शिक्षा (जिससे औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिलता है) के प्रति उत्साह को कम करना।'' छोटे उद्योगों को बड़े उद्योगों के स्थान पर प्रतिष्ठित करना होगा । थाम्पसन का कहना है कि बड़े उद्योगों में लगी तकनीकी शक्ति को प्रकृति को सुरम्य पेड़ पौधों से युक्त बनाने में प्रयोग करना अधिक श्रेयस्कर होगा । बड़े-बड़े उद्योगों के विस्तार का प्रभाव पर्यावरण पर ही नहीं हमारे नैतिक वातावरण पर भी पड़ता है । जब तक नई वस्तुओं के अधिकाधिक निर्माण के स्थान पर सद्ज्ञान को अधिक पूँजी वाली अर्थव्यवस्था की जगह क्षेत्रीय उत्पादन के लिए लघु उद्योगों वाली अर्थव्यवस्था को तथा उपभोक्ता मूल्यों को स्थान देने लगेंगे, तो औद्योगिक असन्तुलन के खतरे घटने लगेंगे। आपसी मन मुटाव एवं तनाव भी समाप्त होता दीख पड़ेगा ।

इर्विन की नव संस्कृति निर्माण प्रक्रिया का चौथा आदर्श है- ''चेतना का अन्तर्मुखीकरण'' । इससे उनका अभिप्राय यह है कि मानव जाति आज बहिर्मुखी बनी हुई है । विचारशील वर्ग भी सभ्यता के विकास का चरम अर्थ-अन्तरिक्ष में अपनी बस्तियाँ बसाना अथवा उपनिवेश स्थापित करना मानता है । जबकि सभ्यता का चरम लक्ष्य है मनुष्य जाति का आन्तरिक विकास । वर्तमान सभ्यता में इस अन्तर्दृष्टि का अभाव है । इसके विकास द्वारा ही मानव जीवन से सम्बन्धित भौतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना सम्भव है । ऐसी स्थिति में संसार का स्वरूप दूसरा ही होगा । भौगोलिक सीमाओं के विस्तार के लिए उन्मुख राष्ट्रों के बीच आपसी तनाव एवं संघर्ष पैदा होता है । चेतना के अन्तर्मुखी होने पर समस्त विश्व एक परिवार के रूप में दिखाई देगा । मनुष्य का लक्ष्य **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** की स्थापना होगा ।

इन चार आदर्शों के आधार पर विकसित हुई 'नवयुग संस्कृति' का लक्ष्य समाज में सद्विचारों की समृद्धि होगा न कि वस्तुओं की समृद्धि । छोटे कल-कारखानों, उद्योगों से विनिर्मित हुए उपकरणों का उपयोग तो होगा किन्तु मनुष्य पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों के सहचर्य में रहकर अपनी चेतना के विकास एवं विस्तार के प्रयत्न को अधिक पसन्द करेगा । समाज की वास्तविक प्रगति इसी में मानी जाएगी। बस्तियाँ छोटी-छोटी तथा पेड़-पौधों से घिरी होंगी। आज जैसे महानगर नहीं होंगे जिनके लिए ऊर्जा एवं खाद्यान्न जुटाना एक समस्या बनती जा रही है । तब बुद्धि को प्रखर एवं परिष्कृत तथा हृदय को उदात्त बनाना शिक्षा का लक्ष्य होगा न कि वस्तुओं का विस्तार।

परिवर्तन प्रकृति की एक नियमित प्रक्रिया

पिछले दिनों अमेरीकन स्पेस शटल से खींचे गये धरती के चित्रों में पूर्व के नक्शों से महत्त्वपूर्ण अंतर पाया गया । वैज्ञानिकों का कहना था कि १९६६ में खीचें गये चित्र को सामने रखकर सेण्ट्रल अफ्रीका का नक्शा बनाया जाय तो वैज्ञानिक यह देखकर हतप्रभ रह जायेंगे कि जिस चाड झील को २०० मील लम्बी बताया जाता रहा है उसकी सतह ९५ प्रतिशत घटकर नगण्य रह गयी है एवं यह परिवर्तन मात्र विगत २२ वर्षों में ही हुआ है कभी जिस झील की सतह २६५०० वर्ग किलो मीटर थी, २४० वर्ग किलो मीटर तक ही सीमित होकर रह गयी थी । चूँकि दक्षिणपूर्व एशिया के ऊपर सतत् बादल छाये रहते हैं वे यहाँ का स्पष्ट चित्र नहीं ले सके पर अपने सम्मिलित कम्यूटराइज्ड निष्कर्षों के आधार पर उनने पाया कि हिमालय क्रमशः ऊपर खिसक रहा है व भारतीय भू-भाग बढ़ रहा है । यू० एन०आई० के हवाले से ३१ मार्च को प्रकाशित यह समाचार एक तथ्य तक हमें ले जाता है कि परिवर्तन एक सतत् शाश्वत प्रक्रिया है व इसमें हजारों लाखों नहीं कुछ ही वर्ष लगते हैं । सोचा जा सकता है कि अगले १३ वर्षों में विश्व का न केवल भौगोलिक नक्शा बदलेगा अपितु समग्र स्वरूप में ही व्यापक परिवर्तन देखा जा सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या पृथ्वी का नक्शा बदलने जा रहा है?

पृथ्वी को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला घटक सूर्य है । उसकी स्थिति में जब भी तनिक-सी उथल-पुथल होती है तो धरातल और समुद्र स्थल का सन्तुलन भी गड़बड़ा जाता है और नक्शा कुछ से कुछ बदल जाता है । इसी प्रकार मनुष्य जब भूगर्भ की सम्पदा का दोहन करने में आत्यधिक जल्दबाजी करता है तो भी स्थिति बेतरह बिगड़ जाती है ।

इन दिनों तेल, कोयला और धातुओं के उत्खनन के लिए अत्यधिक आतुरता बढ़ती जा रही है । इस बढ़ती लिप्सा का कारण यह है कि कारखानों के लिए इनकी अत्यधिक आवश्यकता पड़ रही है । द्रुतगामी वाहन भी इन्हीं के आधार पर चलते हैं । रेल, मोटर, जलयान, वायुयान आदि के लिए यही ईंधन अपेक्षित होता है । विद्युत उत्पादन में भी प्रायः इन्हीं की आवश्यकता पड़ती है ।

बढ़ी हुई जनसंख्या के लिए प्रयास यह किए जा रहे हैं कि भूतल से जितना अधिक पानी निचोड़ा जा सके, निचोड़ लिया जाय । इस सबका पृथ्वी की आन्तरिक स्थिति पर भी भारी प्रभाव पड़ता है । भूगर्भ बड़ा सम्वेदनशील है । ठीक हृदय की तरह । जब शरीर पर चिन्ता भाव, सम्वेदना,आहार-व्यतिक्रम, बढ़ते कोलोस्टरॉल, रक्तवाही नलिकाओं के मोटे होने से दबाव पड़ता है तो हृदय चीख उठता है व इसे इन्जाइना पैकटोरिस या मायोकार्डियल इस्चीमिया कहते हैं । भूगर्भ भी जब दबाव सहन नहीं कर पाता तो ज्वालामुखी फूटने, भूकम्प आने से लेकर पर्यावरण और ऋतु परिवर्तन का ऐसा अवांछनीय चक्र चल पड़ता है जो भूगर्भीय समस्वरता वे असाधारण परिवर्तन उत्पादन करता है और उसके कारण स्थिरता पर भारी दबाव पड़ता है । इस प्रकार के परिवर्तनों का मनुष्य जीवन पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है यह सहज ही समझा जा सकता है ।

पुरातत्ववेत्ताओं ने ईसा से ६००० वर्ष पुराने इतिहास में पृथ्वी पर हुई उलट-पुलट का विवरण ढूँढ़ निकाला है । ''वर्ल्ड एथनालाजी फ्रांस ६००० बी०सी०'' पुस्तक में ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किए गये हैं जिनसे प्रतीत होता है कि नदियों के प्रवाह बदल गए । धरातल पर समुद्र घुस पड़े और समुद्रों की हलचलों ने कितने ही नये द्वीप विनिर्मित किए ।

''साइण्टिफिक अमेरिकन'' (अप्रैल ८५) पत्रिका में वैज्ञानिक द्वय डॉ० ग्रेगरीविन्क एवं जैसन मॉर्गन ने ''द अर्थ्स हॉट स्पाट्स'' शीर्षक से एक निबन्ध प्रस्तुत किया है जिनमें उन्होंने इस विषय का विस्तार से विवेचन किया है । वे कहते हैं कि भूगर्भशास्त्री यह मानते हैं कि पृथ्वी की सतह स्थिर रही है । इसमें कुछ बड़े-बड़े टुकड़े (प्लेट्स) तैरते रहा करते हैं और कभी-कभी टकराते भी रहते हैं । विज्ञान की इस शाखा को ''प्लेट टेक्टोनिक्स'' नाम दिया गया है । इसके अनुसार पृथ्वी की १०० से १५० किलोमीटर मोटी ये प्लेटें होती हैं जिस पर भूखण्ड बने होते हैं किन्तु समुद्र के नीचे इस प्लेट की मोटाई ५० से ७५ किलोमीटर पायी जाती है । इस प्लेट को भूविज्ञानी ''लिथोस्फियर'' कहते हैं । इस परत के नीचे २०० किलोमीटर मोटी दूसरी परत होती है जिसे ''एस्थिनोस्फियर'' कहा जाता है। आज की भूभौतिकी विज्ञान का मूल विषय यह जानना है कि जो स्थिर है उसके ऊपर ''लिथोस्फियर'' किस प्रकार रेंगता है, किस दिशा में सरकता है ।

टोरोण्टो विश्व विद्यालय के अध्यापक डॉ० जे० स्नो० विल्सन ने इस दिशा में विशेष अध्ययन हेतु हवाई द्वीप की यात्रा की । वहाँ के निवासियों के बीच प्रचलित दन्त कथाओं तथा भू भौतिकी सिद्धान्तों के बीच सम्बन्ध स्थापना का पहला प्रयास उन्हीं ने किया ।

इस सम्बन्ध में हवाई द्वीप में एक दन्त कथा प्रचलित है । यहाँ के ज्वालामुखी की एक देवी 'पीली' है जिनकी एक आँख से आग निकला करती है । पहले उनका निवास हवाई द्वीप के पश्चिम में स्थित क्वाई द्वीप में था । किन्तु समुद्र के देवता ने इन्हें जब भगाया तो वे ओई द्वीप में आई व आकर वहाँ डेरा जमा लिया । वहाँ से भी भगाई जाने पर वे मावी द्वीप में रहीं और अब अन्ततः हवाई द्वीप में आकर बस गई हैं तथा किलाऊ नामक ज्वालामुखी के मुख से ज्वाला उगला करती है। यह सत्य है कि यह ज्वालामुखी भूगर्भीय प्लेटों की जरा-सी हलचल से फूट पड़ता है पर उसका इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

किम्वदन्ती से कितना सम्बन्ध है कहा नहीं जा सकता । हाँ, समुद्र के ज्वार-भाटे, तूफान आदि आने के पूर्व संकेत लावा निकलने के पूर्व मिलने लगते है । श्री विल्सन इस कथा को भूगर्भ विधा के ''प्लेट टेक्टोनिक साइकल'' से जोड़ते हैं । भूगर्भ विद्या विशारदों ने पृथ्वी की धरातल तथा महासमुद्रों में पाई जाती ज्वालामुखी श्रृंखलाओं की गणना भी की है व उनका वर्गीकरण पाया है कि इनमें से कुछ नई है एवं कुछ अति प्राचीन । पुरानी और नई श्रृंखलाओं को जोड़ने से एक सम्पूर्ण कड़ी बनती है । इसदिशा को भूगर्भशास्त्रियों ने लिथोस्फियर की भिन्न-भिन्न प्लेटों के रेंगने की दिशा मानी है ।

हवाई द्वीप की उक्त कथा के अनुसार पश्चिम की ज्वालामुखी पूर्व की ओर खिसकता रहा । इस बात की पुष्टि भूगर्भशास्त्रियों द्वारा बनाए गये रेखाचित्र भी करते है लेकिन इस बात का अध्ययन २०० वर्षों से हो रहा है कि किसी दिशा विशेष में प्लेट्स की थरकन क्यों होती हैं ? उसका प्रेरक बल क्या है ? आज से लगभग एक शतक पूर्व अमरीकी भूगर्भशास्त्री डॉ० जेम्स ह्वाइट ने यह संशोधन प्रस्तुत किया था कि लिथोस्फियर के नीचे लावा की एक जेट धारा है जिसका प्रारम्भ हवाई द्वीप के पूर्व से होता है और पश्चिम में समापन ।

अमेरिका का वेलोस्टाने भी इसी प्रकार ऐसा नवीनतम स्थान है । इसका प्रारम्भ मध्यम अमरीका से होता है । खिसकने की गति क्रमशः पश्चिम से पूर्व की ओर देखी गयी है । इस प्रकार भूपटल पर अन्य स्थानों पर भी हॉट स्पॉटस के स्थानान्तरण का चित्रांकन किया गया है । यह पाया गया है कि कालान्तर में पुराने स्पॉटस घिसते जाते हैं और नवीन बनते जाते हैं । यह प्रक्रिया सारी पृथ्वी के भूगर्भ में घटती देखी जा सकती है ।

उपरोक्त अन्वेषणों के आधार पर गम्भीर विचार करने वाले यह आशंका गलत व्यक्त नहीं करते कि अगले दिनों कोई ऐसा उथल-पुथल हो सकती है जो पृथ्वी के नक्शे में असाधारण परिवर्तन करके रख दें । जिस तरह महाद्वीपों के खिसकने से भूतल की आज की स्थिति हुई एवं समुद्र ने एटलांटिक उप महाद्वीप का स्थान ले लिया हो सकता है अगले दिनों खिसकते जाने की प्रवृत्ति बढ़े एवं पृथ्वी वैसी न रहे जैसी कि आज दिखाई देती है।

विश्व शांति की ओर अग्रसर

''द गार्जियन वीकली'' जो इंग्लैण्ड से प्रकाशित एक मान्यता प्राप्त प्रख्यात समाचार पत्र है, अपने २अप्रैल, १९८९ के अंक में लिखा है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ४० वर्ष गुजर गये एवं छुटपुट लड़ाइयों के अतिरिक्त विश्वस्तर पर कोई महायुद्ध अभी नहीं हुआ है अपितु विश्व शाँति का माहौल पूरी धरित्री पर तेजी से बढ़ा है ।

तनाव कम होगा, शांति आएगी

–हुआन जियांग–

बीजिंग (चीन) में अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र के निदेशक हुआन जियांग ने पिछले दिनों कहा कि भविष्य में विश्व स्तर पर दीर्घकालिक शांति व्याप्त रहने की संभावना है । अब रूस व अमेरिका दोनों महाशक्तियाँ हथियारों के जखीरे के जमाव की चरम सीमा पर पहुँच कर संधि कर चुकी हैं, रूस ने अपनी मिसाइलों को नष्ट भी किया है तथा आर्थिक मजबूती पर गरीबी उन्मूलन पर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है । मौजूदायुग सहप्रतिस्पर्धा का युग है । जिसमें प्रत्येक व्यक्ति शंतिव्यवस्था कायम करने में जुटा हुआ है । सभी अब यह बात समझने लगे हैं कि युद्ध किसी समस्या का हल नहीं है ।

अध्यात्म मात्र भारत के कारण जीवित है

– स्वा० आत्मानन्द

रामकृष्ण मिशन रायपुर के स्वामी आत्मानन्दजी ने पिछले दिनों इन्दौर में एक प्रवचन माला में कहा कि भारत के लोगों में रोम-रोम में धर्म संव्याप्त है । दुनिया का हर देश आज सच्चे अध्यात्म की तालश में है । नैतिक मूल्यों में ह्रास के कारण वे शांति भारतीय अध्यात्म में पाते हैं इसलिए सभी धर्म की वकालत करने लगे हैं । अगले दिनों भारत ही विश्व का मार्गदर्शक राष्ट्र होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत सम्बन्धी मान्यताओं में भारी परिवर्तन

अभी तक गरीबी, शाप, फकीर मात्र का प्रतीक माने जाते रहे भारत के सम्बन्ध में अमेरिकियों के चिन्तन में भारी परिवर्तन आया हैं । संस्कृति सम्बन्धी शोधों के बाद अमरीका के प्राच्यविद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि भारत ही सभी संस्कृतियों का मूल है । स्कूल व कालेजों के पाठ्यक्रम इस वर्ष से बदले जा रहे हैं तथा भारत की उपलब्धियों पर प्रो० जुलियन हिलौक द्वारा एक टी०वी० सीरियल व पाठ्यक्रम बनाया गया है ''पेसेजेस टु इण्डिया'' यह बदलती विश्व चिन्तन की विचारधारा का प्रतीक है ।

भारत दुनिया का मुकुटमणि बनेगा

– एडमंड हिलेरी

शेरपा तेनसिंग के साथ एवरेस्ट के प्रथम विजेता एवं सम्प्रति भारत में न्यूजीलैण्ड के उच्चायुक्त सर एडमंड हिलेरी ने पिछले दिनों भारत की सांस्कृतिक परिवेश से अपनी तादात्मयता का परिचय देते हुए कहा कि विश्व का यह सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता रखता है । अपने सांस्कृतिक विरासत के बलबूते ही भारत विश्व की महाशक्ति के रूप में विकसित होकर रहेगा ।

भारत हथियार घटायेगा व नैतिकता के क्षेत्र में अगुआई करेगा

यह भविष्यवाणी है -१९६२ में शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्री लिनीस पॉलिंग की जिनकी एक पुस्तक आय०सी०सी०आर० ने पिछले दिनों प्रकाशित की है ''साइंस एण्ड वर्ल्ड पीस'' । वे लिखते हैं कि यद्यपि पिछले दो दशकों में भारत ने सैन्य शक्ति बढ़ायी है पर वह अब क्रमशः अस्त्रों व सुरक्षा बलों को घटाकर अन्यान्य राष्ट्रों का नेतृत्व ही नहीं करेगा, मोरेलिटी (नीति) एवं सेनिटी (विवेकशीलता) के क्षेत्र में भी शेष विश्व का नेतृत्व करेगा ।

रूस से बढ़ता भारतीय संस्कृति के प्रति रुझान

सोवियत नागरिकों में भारतीय संस्कृति धर्मदर्शन सम्बन्धी साहित्य की इन दिनों काफी माँग है । विशेषरूप से रामायण व महाभारत में लोगों ने काफी रुचि ली है। इन पर बैले खेले गये हैं तथा ज्ञान मीमांसा, तत्त्वदर्शन की पुस्तकों के रूसी अनुवाद भी पिछले एक वर्ष में काफी संख्या में छपे हैं । सोवियत विज्ञान अकादमी की प्राच्यविधा विभाग की प्रमुख तात्याना एलिसाटेन्कोवा पिछले दिनों भारत आयीं व यह जानकारी उनने भारतवासियों को दी ।

भारत विश्वयुद्ध की सम्भावना को निरस्त करेगा

सुप्रसिद्ध ''मय'' सभ्यता (अमेरिका) के ज्योर्तिविदों ने सन् २०२० तक अपना कैलेण्डर तैयार किया था । उनकी लिपि का अध्ययन कर पिछले दिनों 'ला फिन डू मॉण्डे'' शीर्षक से एक पुस्तक मॉरिस चैटलिन ने प्रकाशित की है जिसमें चर्चा है कि सन् १९९९ आते ही विश्व की परिस्थितियाँ बड़ी विषम हो जायेंगी । विश्व युद्ध की परिस्थितयाँ बनने लगेंगी । परन्तु भारत से उभरने वाली अध्यात्मिक चेतना उन्हें निरस्त कर देगी । यहाँ यह याद रखने योग्य बात है कि ''मय'' सभ्यता चिरपुरातन आर्य संस्कृति ही एक अभिन्न अंग रही है एवं उनके ध्वंसावशेषों में नृतत्ववेत्ता भारतीय संस्कृति के चिन्ह ही पाते है ।

भारत की संसार को जरूरत है

–महर्षि अरविंद

अपने निर्माण से कुछ दिनों पूर्व श्री अरविंद ने कहा था कि भारत नष्ट नहीं हो सकता । क्योंकि सम्पूर्ण मानवजाति के भविष्य के लिए भारत की सर्वाधिक आवश्यकता है । अगले दिनों भारतवर्ष से ही सारे संसार का धर्म निकलेगा । वह शाश्वत सनातनधर्म जो सब धर्मों में विज्ञान और दर्शन में समन्वय करेगा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवजाति को एक झण्डे तले ला खड़ा करेगा । नैतिक क्षेत्र में अभी भारत को मानवजाति की म्लेच्छता, गँवारुपन एवं अशिष्टता मिटाकर सारे संसार को आर्य बनाना है और इसी कार्य के लिए भारतवासी सर्व प्रथम अपने आपको गढ़ेंगे एवं परिवर्तन चक्र पूरे विश्व में फैलायेंगे।

नवयुग का अरुणोदय अब निकट ही

भौतिक विज्ञानियों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों एवं भविष्यविज्ञानियों ने अपने-अपने ढंग से अपने क्षेत्र के तथ्यों के आधार पर आने वाले समय के सम्बन्ध में अपने-अपने प्रकार की कल्पनाएँ की है ।

किसी ने उसे ''सुपर इण्डस्ट्रीयल एज'' की संज्ञा दी है किसी ने उसे ''क्रियेटिव ह्यूमन एज'' कहा है, किसी ने कुछ अन्य नाम से सम्बोधित किया है, पर एक बात लगभग सभी ने स्वीकारी है, कि तब मनुष्य का भावनात्मक विकास चरमोत्कर्ष पर होगा और प्रायः हर कार्य उसका विवेक पर आधारित होगा । ऐसे ही एक द्रष्टा मनीषी रूप में विक्तोर ग्रिगोयोंविच अफनास्टोप हुए है । उन्होंने एक पुस्तक लिखी हैं ''वैज्ञानिक कम्यूनिज्म के मूल सिद्धान्त'' जिसमें उनने भविष्य की लगभग मिलती-जुलती परिकल्पना की है ।

नये मानव को ढालना एक मानव जाति का उज्जवल भविष्य शीर्षक अध्यायों में वे कहते हैं कि उस काल में बौद्धिक वकास ही सर्वोपति नही होगा, बलिक भावना एवं संवेदना के विस्तार की ओर अब विशेष यप से ध्यान दिया जायेगा, क्योंकि मानव एक अत्यन्त संवेदनशील और भावुक प्राणी है और बिना इसके उन्नयन के समाज में परिवर्तन ला पाना असाध्य ही नही असंभव भी है । इसे और स्पष्ट करते हुए वे आगे कहते हैं कि मानवीय भावनाओं के बिना सत्य के लिए न कभी कोई मानवीय खोज हुई है और न हो सकती है। अतः निकट भविष्य में व्यक्ति के मौलिक गुण इस रूप में विकसित होंगे जिससे वह अपनी भावनाओं को नियत्रित करने एवं स्वास्थ्य मनोवेगों को विकसित करने की दिशा में चरण बढ़ायेगा तथा उन्हें अपने तथा समाज कल्याण में लगायेगा। जिससे पिछड़े हुए ऊँचा उठें, उठे हुए प्रतिभाशाली बनें और प्रतिभाशाली अपनी क्षमताओं का सुनियोजन लोक दल में कर सकें । यही है भावनाओं, आकांक्षाओं, मान्यताओं का आदर्शवादी उत्कृष्ट स्वरूप, जो अन्तकरण में भाव संवेदना बन कर रहता है एवं जिसके परिष्कृत होने पर कोई व्यक्ति देवमानव बनता है ।

जिस सामाजिक वातावरण के प्रभाव के अन्तर्गत मनुष्य का विकास होता है उसकी परिधि में भौतिक तत्वों के साथ-साथ आत्मिक तत्व भी आ जाते है । यद्यपि भौतिक तत्वों की तुलना में स्थूल दृष्टिकोण से आत्मिक तत्वों का महत्व कम है । फिर भी वे मनुष्य की समग्र प्रगति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । इसके अन्तर्गत अपने आपको विश्व वसुधा का अभिन्न अंग मानना, सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन में ईमानदारी, जिम्मेदारी, सच्चाई, नैतिक शुद्धता, नागरिक कर्त्तव्य की उदारता भावना, हरेक सबके लिए और सब हरेक के लिए एवं सब अपने और अपने को सब में मानने की आस्था, जैसे तत्व सम्मिलित है। इनके विकास के बिना न तो सुख-शान्ति सुरक्षित रह सकती है, न व्यक्ति चहुँमुखी विकास कर सकता है अगले दिनों इन्हीं से भरा पूरा हर व्यक्ति दिखाई देगा ।

शारीरिक और मानसिक कर्मठता के प्रति लोगों की आस्ता बढ़ेगी । शारीरिक श्रम के प्रति तिरस्कारपूर्ण और मानसिक तत्परता के प्रति रूझान भी बदलेगा । क्योंकि विज्ञान की प्रगति के बाद भी रॉबाट उन व्यक्तियों का स्थान नहीं ग्रहण कर सकेगा, जिनमें मानवीय उदारता, दयालुता, सौहार्द, विनम्रता और कलात्मक सुरुचि की अभिव्यक्ति होती है । पिछली सदी में तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप मनुष्य के श्रम करने की शक्ति घटी है। जापान जैसी यंत्रीकृत देशों में तो शक्ति का यह अनुपात १५ प्रतिशत से घटकर ३ प्रतिशत हो गया है। इसके कारण बीमारियों की दर बढ़ी है और समय से पूर्व जीर्णता का खतरा पैदा हो गया है, जबकि मानसिक श्रम के साथ शारीरिक श्रम का सन्तुलन अवश्य होना चाहिए ।

यही रूस की प्रगतिशीलता का रहस्य है । एक सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि सोवियत जनप्रतिनिधियों की कुल संख्या २२ लाख है । ये मात्र वैज्ञानिक क्षेत्र में ही व्यस्त नहीं रहते, वरन् चाणक्य, राजा जनक, नसीरूद्दीन की तरह अपना निर्वाह स्वयं उपार्जित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हैं इन प्रतिनिधियों में अधिकांश पेशेवर राजनीतिज्ञ नहीं अपितु सामूहिक और राजकीय वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संस्थानों में काम करने वाले लोग है । प्रतिनिधियों के रूप में वे अपने कर्तव्यों की पूर्ति अपने खाली समय में बिना पारिश्रमिक लिये करते है । पेरेस्त्रेइका व ग्लासनोस्त जैसी उदारवाद की ठण्डी हवाओं के झोंकों के साथ अब ऐसे समाचार रूस बड़ी संख्या में मिलने लगे हैं । आगामी सदी के उज्ज्वल भविष्य में यही स्वरूप सम्पूर्ण विश्व का होगा जिसमें निर्धारित शारीरिक श्रम के साथ मानसिक विकास के लिए भी हर नागरिक को अवसर मिलेगा, ताकि उसकी बहुमुखी योग्यता विकसित हो सके ।

प्रत्येक व्यक्ति राफाएल, चाइकोबकी, गोर्की, अथवा पुश्किन जैसा ख्याति प्राप्त महामानव एवक सुधारक बने या न बने, किन्तु हर व्यक्ति के अन्तराल में महामानव बनने की सुनिश्चित संभावना विद्यमान है । इसे ही विकसित करने की नई प्रक्रिया महाकाल की प्रेरणा से प्रारम्भ होगी जिससे मानव भ्रामक विचारों और मिथ्या धारणाओं से सदा के लिए मुक्त हो जायगा । अपने व्यापक ज्ञान के आधार पर अपनी नियति का स्वामी बन जायगा । कुप्रचलनों, अधंविश्वासों, कुरीतियों का विरोध करने में उसका आत्मबल एव मनोबल डगमगायेगा नही तब वह इन्हें विवेक की कसौटी में कसकर नये प्रतिपादन प्रस्तुत करेगा । उस समय हर व्यक्ति ऐसी महानता प्राप्त कर लेगा जिसमें वह मानवीय उदात्त नियमों का पालन करेगा। अपने विचारों भावनाओं और व्यवहार को स्वतन्त्रतापूर्वक समाज के हितों के अनुरूप नियंत्रित करना भी सीखेगा। मनुष्य चिन्तनशील और संवदेनशील प्राणी के रूप में विकसित होगा जिसमें समय की अनेकानेक आवश्यकताएँ अनायास ही पूरी होती रहेगी । यही मानवी योग्यताओं एवं प्रतिभाओं के अधिकाधिक उपयोग तथा उसके आधार पर उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित बना पायेगा ।

आने वाले समय में जब व्यक्ति की आध्यात्मिकता की उच्चतम अवस्था की स्थापना हो जाएगी तब मनुष्य बल प्रयोग के बिना अन्तराल की प्रेरणा से निर्देशित होकर अपने कर्त्तव्यों को समझेगा और जिम्मेदारी पूर्वक उन्हें निबाहन में स्वयं को नियोजित करेगा । प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यतानुसार काम करेगा और औसत नागरिक स्तर के निर्वाह में प्रसन्नता अनुभव करेगा । उस समय ''व्यष्टि समष्टि के लिए और समष्टि व्यटिष्टि के लिए'' जैसी भावना ही अन्तराल में घुमड़ेगी ।

यूटोपिया जैसी लगने वाली इस वास्तविकता को कपोल कल्पना भर नही मान लेना चहिए वरन् इसमें सौ टंच सच्चाई को स्वीकारते हुए तदनुरूप तैयारी भी करनी चाहिए प्रभात काल जब निकट आने वाला होता है तो विभिन्न माध्यमों से विभिन्न रूपों में हमें उसकी पूर्व सूचना मिलने लगती है । चिड़ियाँ चहचहाने लगती है मुर्गे बाँग लगाने लगते हैं । युग-परिवर्तन की संदर्भ में आज ऐसा माहौल है । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटने वाले तीखे और अप्रत्याशित घटनाक्रमों को देखकर हम यह सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि परिवर्तन का प्रभाव समुपस्थित हो गया है और हमें आज भावनात्मक सुषुप्ति से जगने की तैयारी करनी चाहिए ।

निन्यानवे का फेर : क्या आखिरी फेर ?

डूम्जडे : १९९९ नाम से एक पुस्तक चार्ल्स बर्लिटज ने लिखी है । इस पुस्तक में उन्होंने १९८९ से १९९९ व फिर एक वर्ष का समय महापरिवर्तनकारी बताया है । यह पुस्तक प्रकाशित तो आज से ६ वर्ष पूर्व हुई थी किन्तु चूँकि हम १९८९ में प्रवेश कर चुके हैं, इस पुस्तक के प्रतिपादन अभी भी वैसे ही प्रासंगिक हैं एवं ध्यान देने योग्य हैं । एक प्रकार से यह ग्रंथ विद्वान लेखक द्वारा विभिन्न मनीषियों के अभिमतों, पूर्वानुमानों एवं तर्कों पर आधारित प्रमाणों का संकलन है ।

उनने बाइबिल की भविष्यवाणियों एवं चिरपुरातन बेबीलोन की सभ्यता के अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्योतिर्विज्ञान की गणना पर आधारित कैलेण्डर के निष्कर्षों का हवाला देते हुए लिखा है कि हमारे तारामण्डल का एक चक्र लगभग सितम्बर २००१ में पूरा होता है । इसके बारह वर्षीय पूर्वकालीन समय में व्यापक उलट पुलट एवं फिर एक नवयुग का शुभारंभ होने की बात उनने ज्योतिर्विदों की भविष्यवाणियों को आधार मानते हुए कही है ।

आज से दो हजार से भी अधिक वर्ष पूर्व पृथ्वी का तापमान बढ़ने, जल प्रलय का सा दृश्य आने एवं दैवी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकोपों के बीसवीं सदी के अन्त में बाहुल्य की बात कैसे लिख दी गयी यह जानकर आश्चर्य होता हे । श्री बर्लिटज लिखते हैं कि यह सोचकर लगता है कि कही इस बार निन्यानव का फेर कोई बहुत बड़ा गुल तो नहीं खिलाने वाला है ? इसके ठोस आधार के रूप में विभिन्न भविष्यवक्ताओं, आकलनों तथा गणनाओं का हवाला देते हैं जो सभी संयोग से इक्कीसवी सदी के शुभारंभ से ही संगति खाते हैं । वे लिखते हैं कि बौद्ध धर्म के ग्रन्थों को पलटने पर भी यही निष्कर्ष निकलता है कि बुद्धावतार का उत्तरार्ध अब प्रकट होने जा रहा है इन ग्रन्थों के अनुसार गौतम के २५०० वर्ष बाद दूसरे बुद्ध का आगमन होगा । यह मैत्रेय नाम से प्रकट होंगे वे नवयुग की शुरूआत करेगे । तिब्बत के लोगों में तो यह मान्यता ही है कि १३ वें दलाई लामा के बाद यह युग समाप्त हो जाएगा व नई जीवन पद्धति आरंभ होगी । आने वाले वर्ष ही बतायेगे कि क्या होगा ? क्या नही ?

इक्कीसवीं सदी अर्थात् एन्यूमिलेनियम

इसी आशय का मन्तव्य प्रकट करते हुए सोवियत प्रेस से प्रकाशित ''स्पुतनिक '' मासिक पत्रिका (जनवरी १९८९) 'फौर द सेक आफ मैन इन द ट्वन्टी फर्स्ट सेंचुरी' नाम से एक संपादकीय टिप्पणी प्रकाशित हुई है, जिसमें इक्कीसवीं शताब्दी में मनुष्य के उज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ प्रकट की गई हैं । इस नई शताब्दी को उसमें 'एन्यूमिलेनियम' के नाम से संबोधित किया गया है जिसका अभिप्राय स्वर्णयुग अथवा सतयुग से होता है । इसमें उल्लेख है कि नवयुग के शुभारंभ से पूर्व संसार में अनेकानेक प्रकार के क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे । आज का अनगढ़ मनुष्य कल इतना समझदार, सुयोग्य एवं सुशिक्षित हो जायेगा कि संसार की भलाई-बुराई को अच्छी तरह समझ सकेगा । अनुचित को छोडकर उचित को ग्रहण करने वाली विवेक बुद्धि का विकास कर लेगा । उसमें जीवन के सदुपयोग की सूझबूझ जगेगी । सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने की प्रवृत्ति का विकास होगा। भविष्य को स्वस्थ, सुन्दर और सुखमय बनाने की प्रेरणा उभरेगी । सामुदायिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलेगा । उत्पादन क्षमता में अभिवृद्धि होगी । औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलेगा जिससे लोगों की आवश्यकता की आपूर्ति आसानी से हो सकेगी । स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास व्यवस्था की सुविधा में किसी भी प्रकार अभावग्रस्तता का सामना नही करना पड़ेगा । बुढ़ापे को कष्ट साध्य नहीं बनने दिया जायगा । सामाजिक सुरक्षा सबको समान रूप से मिलेगी ।

पत्रिका के संपादक का कहना है कि इस शताब्दी के अंत तक समूचे विश्व में नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक क्रांति का वातावरण बनेगा । लोगों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास होगा जिसके फलस्वरूप रूस में भी ईश्वर विश्वास की सत्प्रेरणाएँ उभरेंगी । राष्ट्र की भौतिक प्रगति तो होगी ही साथ ही बौद्धिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का नये सिरे से निर्धारण होगा, जिससे इक्कीसवीं शताब्दी में लोग आशावादी एवं आस्थावादी दृष्टिकोण के साथ जी सकेंगे ।

विज्ञान ही कठिनाइयों का हल ढूँढेगा

सुखद भविष्य की मान्यता रखने वाले कितने ही व्यक्ति हैं । उनमें से एक हैं -हडसन इन्स्टीट्यूट के निर्देशक श्री हरमन कान । उनने अपनी पुस्तक ''दि नैक्स्ट २०० ईयर्स - ए सोनोटरी फार अमेरिका एण्ड वर्ल्ड'' में यह बताने का प्रयत्न किया है कि बढ़ता हुआ विज्ञान युद्ध को असम्भव बना देगा । उसे आत्महत्या की सामूहिक नीति अपनाकर ही लड़ा जा सकता है । लेखक विश्वास करते हैं कि ऐसा समय किसी की कल्पना या योजना में भले ही हो पर वह कठिनाइयों को देखते हुए कभी कार्यान्वित चरितार्थ न हो सकेगा ।

इसी मत की पुष्टि विश्व परिस्थितियों के विश्लेषणकर्त्ता विद्वान विलियम ब्राउन-लियन्मार्टेल आदि ने की है । वर्तमान समस्याओं और संकटों की यथार्थता तो स्वीकार करते हैं पर साथ ही यह भी मानते हैं कि पिछले दो युद्ध का अन्त जिस प्रकार संधि के रूप में हुआ, इस बार भी विनाश के निकट पहुँचते-पहुँचते विश्व नेता कोई काम चलाऊ संधि कर लेंगे । जिससे भय भी बना रहे और प्रगति के लिए किया जाने वाला कार्य भी न रुके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपरोक्त पुस्तक का प्रतिपादन है कि अगले समय में विज्ञान के उन पक्षों का विकास होगा जो मनुष्य की कठिनाइयों को हल करते और सुख सुविधाओं का द्वार खोलते है ।

अभी तक पृथ्वी का दोहन हुआ है । उसी पर पड़े या गढ़े खनिजों का दृश्यमान प्रकृति सम्पदा का दोहन हुआ है । समुद्र ७० प्रतिशत है और समुद्र का आयतन ७० प्रतिशत यह दो तिहाई भाग न तो निरर्थक है और न इस योग्य कि उसे उपेक्षा के गर्त में डाले रखा जाय। अब मनुष्य का ध्यान इस ओर मुड़ेगा तो जहाँ-तहाँ उभरे टापुओं की अनगढ़ भूमियों को भी विकसित किया जा सकेगा जैसा कि जापान का एक छोटा जखीरा प्रगति और परिस्थितियों का तालमेल मिला कर देखने से अनुपम दीख पड़ता है। धरती पर अभी इतनी जमीन बाकी है जिन पर सैकड़ों नये जापान बसाये जा सकें और उन्हें हर दृष्टि से समृद्व किया जा सके । समुद्र में प्राणी सम्पदा, रसायनें और वनस्पतियाँ इतनी अधिक हैं कि वे हजारों वर्षों तक मनुष्य की निर्वाह समस्या का समाधान कर सकती है । समुद्र तल पर तैरती हुई बस्तियाँ बनने और स्थित एवं गतिशील बनाये जा सकने की पूरी-पूरी सम्भावना है । ऐसी दशा में जिस भूमि या व्यवसाय को लेकर इन दिनों जो आपा-धापी चल रही है उसकी उत्पादन अभिवर्धन बढ़ जाने की दिशा में कुछ भी आवश्यकता न रहेगी । लोग छीन झपट की अपेक्षा वैज्ञानिक आधार पर अपने सुविधा साधन बढ़ावेंगे । नये पदार्थ विनिनिर्मित करेंगे । जैसे कि प्लास्टिक के इतने अधिक विकास की गुंजाइश है कि उसकी मजबूती को देखते हुए मकान, रेल, वायुयान ही नहीं विशालकाय कारखाने भी खड़े किये जा सकें । धातुएँ कम पड़ जाने की स्थिति में उसका स्थान कृत्रिम प्लास्टिक ग्रहण कर लेगा । यही बात अन्य क्षेत्रों में भी होगी । ऊर्जा का दोहन सूर्य से होगा और समुद्र का खारी पानी मीठा बनाकर पेय आवश्यकता की पूर्ति तथा भूमि सिंचाई के निमित्त सहज ही काम में लाया जा सकेगा ।

तब मकान ही नहीं खेत भी कई मंजिले बनने लगेंगे इससे कृषि उत्पादन की भूमि की समस्या का समाधान निकल आवेगा । पर्वत भी निरुपयोगी नहीं रहेंगे । नदियों का पानी समुद्र तक पहुँचने से पूर्व ही रोककर मानवी प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त कर लिया जाया करेगा । कचरे की समस्या, उसे भूमि में दबाकर सड़ाने या खाद बनाने के रूप में प्रयुक्त किया जाता रहेगा ।

इस प्रकार अभी जहाँ गतिरोध दीख पड़ता है, वहाँ ऐसे नये स्रोत हाथ लगेंगे, जिनके सहारे पृथ्वी पर सैकड़ों हजारों वर्षों तक बिना किसी नई खोज के सुखपूर्वक रहा जा सके ।

फ्राँसीसी लेखक सेवास्तिया मर्सिये ने अपनी पुस्तक 'ला २४००'' में अगले ४०० वर्षो का खाका खींचा है और कहा है कि जनसंख्या वृद्धि का पूर्ण नियंत्रण न होने पर भी इस पृथ्वी में इतनी गुंजायश है कि आगत ४०० वर्षो तक बिना किसी कठिनाई के अब की अपेक्षा अधिक सुविधा भरा जीवन जीने का अवसर मनुष्य को मिल सके ।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जब जीवित थे तब उन्होंने भी अपनी कल्पना थोड़ी आगे तक दौड़ाई थी और अगले दिनों को अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर बताया था ।

अमेरिका की 'फोवर्स' पत्रिका में विश्व पर्यवेक्षण सम्बन्धी मसला ही प्रधान रूप में रहता है। उसने बदलते हुए राजनैतिक परिवेश को देखते हुए भविष्यवाणी की है कि अब के मूर्धन्य देश जिस प्रकार अपनी शक्तियों का अपव्यय कर रहे हैं, उसे देखते हुए वे अगले दिनों खोखले हो जायेंगे और नवोदित राष्ट्रों में से कई ऐसे उभरेंगे जो अपनी सुदृढ़ता का लाभ न केवल स्वयं उठायें वरन् उन्हें देशवासियों को देते हुए सार्वभौम प्रगति में अपना कहने लायक योगदान दे सकें । फोवर्स के अनुसार २१ वीं सदी में भारत विश्व की मूर्धन्य शक्ति होगा और वह अस्त्रों के बल से नहीं, अपनी नैतिकता और साहसिकता के सहारे उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच चुकेगा । उसके पास प्राकृतिक सम्पदा के इतने स्रोत अगले दिनों भी बने रहेंगे कि वह अपना तथा दूसरों का भला कर सकें ।

शान्तिवादी 'एफेयर्स' का कथन है कि आज की समस्याओं की ओर से हम सतर्क भर रहें । तैयारी उस समय की करें । वे तैयारियाँ इतनी मूल्यवान होंगी जिनकी तुलना में आज की समस्याओं से जूझना खिलवाड़ प्रतीत होगा । मनुष्य की बुद्धि, प्रतिभा और दक्षता की परीक्षा अगले दिनों होगी जब वह उलझनों को सुलझाने और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रगति का नया पथ-प्रशस्त करने के लिए अपने कौशल का श्रेष्ठतम उपयोग करने की परीक्षा में उतरेगा । विश्वास किया जाना चाहिए कि हम पीछे नहीं हट रहे, आगे बढ़ रहे हैं । हम खड्ड में गिरने की अपेक्षा पर्वत शिखर पर चढ़ने की बात सोचेंगे और लगन तथा तत्परता बनाये रख कर हम अभ्युदय के लक्ष्य तक पहुँच कर ही रहेंगे ।

हमारा भविष्य अन्धकारमय नहीं है

इस युग के माने हुए इतिहास वेत्ता टायनवी इस बात से खिन्न नहीं है कि वर्तमान युग की बढ़ती हुई विकृतियाँ मनुष्य-जाति की उज्ज्वल सम्भावनाओं को नष्ट कर देंगी । वे इस सन्दर्भ में पूर्ण आश्वस्त हैं कि इन दिनों वैज्ञानिक-प्रगति ने जो अनौखे आकर्षण मनुष्य के हाथ में दिये हैं, उनसे वह आज भले ही आतुरता भरी बाल-क्रीड़ा करले, पर कल उसे परिणामों पर विचार करना पड़ेगा और अमर्यादित लिप्सा से उत्पन्न संकट का समाधान खोजना होगा । निश्चित रूप से वह वैज्ञानिक खोजों की तरह आत्म-रक्षा और भविष्य की स्थिरता का उपाय भी ढूँढ़ लेगा ।

उस तथ्य को उन्होंने अपने अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में इतिहास की अनेक साक्षियाँ प्रस्तुत करते हुए प्रतिपादित किया है । 'चेंज एण्ड हैवइट' में उन्होंने लिखा है- ''बढ़ना, परिणाम देखना और भूलों को सुधारना मनुष्य का स्वभाव है। समझदार लोग हर देश और हर काल में रहे हैं, वे अपनी समझदारी का लाभ पिछड़े लोगों को देते हैं, और बताते हैं कि किस कठिनाई का समाधान किस तरह निकल सकता है। समझदारी की अपनी शक्ति है । वह भटकाव को थपेड़े देकर सही रास्ते पर ले आती है और आदमी ठोकरें खाकर ही सही-उस दिशा को पकड़ लेता है, जो उसके लिए श्रेयस्कर है ।

'ए स्टडी व हिस्ट्री' और रिकंसिडरेशन' ग्रन्थों में उन्होंने अनेकों ऐतिहासिक उतार-चढ़ावों का उल्लेख करते हुए सिद्ध किया है कि दबाव और आकर्षण कई बार मनुष्य को कुछ समय के लिए कुछ भी करने के लिए सहमत कर सकते हैं, पर उसमें स्थायित्व नहीं होता। मानवी-विवेक अन्ततः जाग्रत होकर ही रहता है और ऊपर से लादे हुए लबादे को फेंक कर वह सरल स्वाभाविक स्थिति पाने के लिए तीखे उपाय बरतता है ।

इस तथ्य के आधार पर वे मनुष्य-जाति का भविष्य उज्ज्वल होने की आशा करते हैं । 'एप्रोच टू रिलीजन' ग्रन्थ में वे कहते हैं-जो बुद्धि-कौशल प्रकृति के सदस्यों का पता लगाने और उनका सुविधाजनक उपभोग करने में समर्थ हो सकता है, वह वैयक्तिक विकृतियों और सामाजिक अव्यवस्थाओं के निराकरण का रास्ता निकाल लेगा । आग में पूरी तरह जलने से पहले ही बच्चा आग से अपना हाथ पीछे खींच लेता है । मनुष्य कभी सर्वभक्षी-संकट का शिकार नहीं हो सकता । जब भी संकट की तीव्रता सामने आयेगी -परिवर्तन चक्र तेजी से चल पड़ेगा और उन कारणों को निरस्त कर दिया जायगा, जो विभीषकाऐं उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी थे ।

''रिपोर्ट्स फ्राम दि ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी'' नामक पुस्तक में सोवियत संघ के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक द्वय डा० एम वेसीलीव एवं एस० गुश्चेव ने इस सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। उनके अनुसार भविष्य निर्माण में इन दिनों प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से विश्व की कितनी ही मूर्धन्य प्रतिभायें ऋषि, मनीषी एवं विचारक निरत हैं और अपनी साहसिक योजनाओं को कार्य रूप में परिणत करने में सक्रिय हैं । जिनकी मानसिक चेतना का तनिक भी विकास हुआ है वे जानते हैं कि प्रचलित वर्तमान ढर्रे की विचारधारा से भी आगे की सुखद समुन्नत संभावनाओं की कल्पना की जा सकती हैं और तदनुरूप साधन उपकरण जुटाये जा सकते हैं । बौद्धिक एवं भावना क्षेत्र में चल रही इस द्रुतगामी उथल-पुथल में उज्ज्वल भविष्य के संकेत सन्निहित हैं, यह एक सुनिश्चित तथ्य है ।

इन वैज्ञानिकों का कहना है कि लम्बी अवधि से जिन वस्तुओं के सम्बन्ध में मनुष्य कल्पना करता आया है, उनमें से अधिकांश अब मूर्त रूप ले चुके हैं, अथवा ले रहे हैं । कल की कल्पनाएँ आज की वास्तविकता बनती जा रही हैं । विश्व प्रसिद्ध घटनाएँ जिनकी कभी मात्र कल्पना तक की जाती थी, अब वे साकार रूप ले चुकी हैं । अग्नि एवं विद्युत का आविष्कार, लोहे का उत्पादन, भाप इंजन की खोज, परमाणु ऊर्जा का नियंत्रण, कृत्रिम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपग्रहों द्वारा ग्रह पिण्डों पर आवागमन आदि के सपने आज सबके सामने मूर्तिमान रूप में दिख रहे हैं। कभी समय था कि मनुष्य का एक मात्र अस्त्र तराशा हुआ पत्थर होता था । हजारों वर्ष पश्चात् कांस्य युग आया और फिर लौह युग और अब हम परमाणु युग में रह रहे हैं जिनमें आणविक ऊर्जा का शान्तिपूर्वक सृजनात्मक उपयोग भी किया जा रहा है । युगांतरकारी सभी घटनायें यह सिद्ध करती हैं कि यदि हम में से प्रत्येक सुदूर भविष्य के समुज्ज्वल पक्ष का चिंतन करना आरंभ कर दे और उसके कल्पना चित्रों को मन में गहरी जड़ें जमाने दें तो कोई कारण नहीं कि अगले ही दिनों वह कठिन श्रम, सत्प्रयोजनों एवं अध्यवसाय से जुड़कर वास्तविकता का रूप ग्रहण न कर ले और इक्कीसवीं सदी में प्रगति की उच्चस्तरीय संभावनायें साकार रूप में सामने खड़ी न दीखने लगें ।

विज्ञजनों का मत है कि वर्तमान समय की विस्फोटक समस्याओं में से ऐसी एक भी नहीं है जिनका प्रयत्नशील मनुष्य समाधान न ढूँढ़ सके । जनसंख्या की अभिवृद्धि की ज्वलन्त समस्या को ही लें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि अब अधिक अभिवृद्धि की गुंजायश नहीं दीखती । हममें से प्रत्येक विचारशील अब इस तथ्य से अवगत हो चुका है कि यदि अगले दिनों धरती पर मनुष्य को रहना है तो उस पर अधिक भार नहीं लादा जा सकता । डी० मैन्देलयेफ जैसे विख्यात विचारशीलों का कहना है कि इस सम्बन्ध में मनुष्य की मूर्च्छना जगी है और वह बहुप्रजनन जैसे कष्टकारक प्रक्रिया से पीछे हटने लगा है ।

इक्कीसवीं शताब्दी में रहने वाली जनशक्ति के लिए भोजन, वस्त्र एवं आच्छादन जैसी अनिवार्य जीवनोपयोगी सुविधा-साधन जुटा लिये जायेंगे । इसी तरह मिलजुलकर सहकारी ढंग से विविध क्षेत्रों में महाक्रान्तिकारी उपलब्धियाँ हस्तगत कर ली जायेंगी । वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना ही सर्वत्र सभी मनुष्यों में सक्रिय दिखाई देंगी। जिस तरह आधुनिक रासायनिक उद्योग ने "माल्थस सिद्धान्त" और उसके साथ ही "ह्रासमान उर्वरता" के उस निराशावादी सिद्धान्त को झुठला दिया है जिसे कभी एक अकाट्य नियम के रूप में जाना जाता था । उसी प्रकार अगले दिनों किसी को भी भूखा न रहना पड़ेगा । विशेषज्ञों के अनुसार तब विविध तकनीकों के प्रयोग से रेगिस्तानों को भी उर्वर बनाया तथा कृषि उत्पादन को सात गुना अधिक बढ़ाया जा सकेगा । उस क्षेत्र का विस्तार करके उसमें १४-१५ गुना तक की अभिवृद्धि की जा सकेगी । इस तरह मनुष्य को खाद्यान्नों में किसी प्रकार की कमी के बारे में चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि चूँकि मनुष्य अभी अपने वास्तविक वैज्ञानिक कौशल एवं पुरुषार्थ का सही मूल्यांकन नहीं कर सका है इसलिए समस्याएँ जटिल और भयावह दीखती हैं । किन्तु जब उसे इसके सुनियोजित की कला ज्ञात हो जायेगी तो न केवल धरती और रेगिस्तान में वरन् समुद्र में भी वह खेती कर सकेगा और अधिक जनसंख्या के लिए भी पर्याप्त भोजन व्यवस्था जुटा लेगा । इस तरह निर्वाह समस्या सुलझा लेना एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना होगी ।

आर्थिक क्षेत्र की तरह ही सामाजिक एवं राजनीतिक आदि क्षेत्रों में भी महाक्रान्तियाँ उठ खड़ी होंगी । युद्धोन्मादियों का समय रहते विवेक जगेगा और अणुआयुधों के शस्त्रीकरण प्रतियोगिता में लगने वाले श्रम, साधन, समय और पूँजी की बरबादी रुकेगी और उस बचत का उपयोग शान्तिपूर्ण रचनात्मक कार्यों में होने लगेगा ।

अब बारी है नवयुग के नवोन्मेष की

क्रान्ति का अर्थ है "नवीन संरचना" आमूलचूल परिवर्तन । यह परिवर्तन चाहे सामाजिक हो, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा धार्मिक कुछ भी हो सभी के मूल में विचार-क्रान्ति ही सन्निहित होती है। जब मनुष्य को एक सामाजिक संरचना अथवा व्यवस्था पुरानी या असंतोषजनक लगने लगती है, उसी समय से उसके मन में उथल-पुथल मचने लगती है ! तब एक ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता अनुभव की जाने लगती है जो तत्कालीन समय और समाज के अनुरूप हो और उसकी शान्तिमय प्रगति में सहायक भी । प्रारंभ में ऐसी हर एक क्रान्ति का रूप वैचारिक ही होता है । बाद में यह अपने साकार रूप में आती है । इस प्रकार यह कहना अत्युक्तिपूर्ण न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होगा कि विचार-क्रान्ति का इतिहास लगभग उतना ही पुराना है, जितना समाज के उद्‌भव का इतिहास।''

यह उद्‌गार प्रकट किये हैं मूर्धन्य समाज शास्त्री एफ० किंग्डर्न वार्ड ने अपने बहुचर्चित कृति ''फुटस्टैप्स इन सिविलाइजेशन'' में । यह सत्य है कि आदिकाल में विचार-बुद्धि के उदय के साथ ही मनुष्य की भौतिक स्थिति में परिवर्तन होना आरम्भ हो गया होगा । जब एक परिस्थिति एवं स्थिति उसे कष्टकर व असहाय लगती होगी तो उसके विचार तंत्र सक्रिय होते होंगे और वह नई स्थिति एवं परिस्थिति की खोज के लिए प्रयास आरंभ करता होगा। इस प्रकार यह परिवर्तन उसके लिए कुछ समय तक संतोषदायक रहता होगा और फिर वही प्रक्रिया आरंभ होती होगी, अर्थात् प्रारंभ में विचार एवं पुनः उसका मूर्तिमान रूप । यह प्रक्रिया जब व्यक्तिगत होती है, तो प्रगति कहलाती है और जब सामूहिक बन जाती है तो वही क्रान्ति कहलाने लगती है । ''इन दि बिगनिंग'' नामक पुस्तक में जी० ईलियट स्मिथ कहते हैं कि मानवी विकास के आरंभ काल में चूँकि समाज का सर्वथा अभाव था, अस्तु यह परिवर्तन व्यक्तिगत स्तर से आरंभ हुआ एवं कालक्रम में जब समाज राष्ट्र का विकास हुआ, तो क्रान्ति शुरू हो गई ।

समाज के विकास के साथ क्रान्ति की शुरूआत क्यों व कैसे हुई ? इस प्रश्न का उत्तर प्रिंस क्रोपाट्‌किन अपने निबन्ध ''क्रान्ति की भावना'' में देते हुए कहते हैं कि चूँकि क्रान्ति सामूहिक परिवर्तन का द्योतक है, अतः समाज के किसी क्षेत्र विशेष में आमूल-चूल परिवर्तन उसके एक इकाई में परिवर्तन से सम्भव न होगा क्योंकि समाज की प्रत्येक इकाई एक-दूसरे से सम्बद्ध है । अतएवं सभी इकाइयों को एक साथ वांछित साँचे में ढाल कर ही इस लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है । वे कहते हैं कि इन्हीं परिस्थितियों की चपेट में आकर समाज के समस्त तत्कालीन अवांछनीय तत्व समाप्त हो जायँ और उनकी जगह ऐसे युगानुकूल तत्व ले लें, जो मानव समाज को शान्ति संतोष की विचारधारा से अनुप्राणित कर दें ।

मूर्धन्य पुराविद प्रो० गोर्डन चाइल्ड अपनी रचना ''मानव प्रगति की कहानी'' के ''नव पाषाण युगीन क्रान्ति'' अध्याय में लिखते हैं कि हिमियुगों की दीर्घकालीन अवधि में वाह्य प्रकृति के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं हुआ था, यद्यपि उसने संग्रह विधियों में भारी सुधार कर लिये थे किन्तु हिमियुग के तुरन्त बाद प्रकृति के प्रति मानवी दृष्टिकोण में ऐसा द्रुत और आमूल-चूल परिवर्तन आया जो भविष्य में उसके लिए लाभकारी सिद्ध हुआ । वे आगे कहते हैं कि यद्यपि हिमियुगोत्तर काल मानवी अथवा मानवेतर प्राणियों के विकास काल की तुलना में अत्यल्प है और लगभग इसके बीसवें भाग के बराबर है पर इस स्वल्प काल में ही मनुष्य ने प्रकृति के साथ सहयोग द्वारा उसे नियंत्रित करना सिखा लिया ।

प्रो० गोर्डन चाइल्ड इसे भी एक क्रान्ति मानते हैं, जो सत्य है और तथ्य भी । तात्विक दृष्टि से देखा जाय, तो इसके मूल में भी विचार-क्रान्ति प्रच्छन्न नजर आयेगी । हिमियुगों के उस काल में बार-बरा की प्रकृति की इस विनाशलीला से बचने के लिए तत्कालीन लोगों ने सर्वप्रथम इसके निमित्त कारणों पर विचार किया होगा और एक बार जब इसका वास्तविक कारण उन्हें ज्ञात हुआ तथा पता चला कि प्रकृति के साथ सहयोग कर इस विपत्ति से बचा जा सकता है, तो उन्होंने सामूहिक रूप से यह प्रयास आरंभ किया । अपनी चिन्तन-चेतना व विचारधाराओं में ऐसे परिवर्तन लाकर अपने जीवन के क्रियाकलापों एवं गतिविधियों को बदला, जो प्रकृति प्रकोप के आधारभूत कारण बनते थे । इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि इसके पीछे भी विचार-क्रान्ति की ही सक्रिय भूमिका थी ।

इसके बाद के क्रम में हम मानवी अर्थव्यवस्था का रूपान्तर करने वाली क्रान्ति का प्रथम दर्शन करते हैं । इसके अन्तर्गत मनुष्य ने अपने खाद्य के प्रमुख स्रोतों पर अपना नियन्त्रण स्थापित किया । इसमें प्रधान स्रोत कृषि ही था । कृषि की भी अनेक प्रणालियाँ थीं । एक पद्धति यायावरी कृषि की थी । अमेरिका, अफ्रीका की जनजातियों में कुछ वर्ष पूर्व तक यह पद्धति जीवित थी । इसमें एक स्थान पर लगातार खेती से जमीन की उर्वरकता समाप्त हो जाने के बाद कृषक उस स्थान को छोड़ अन्यत्र प्रस्थान कर जाते थे । कृषि का यही आदिम रूप था, पर संभवतः इसमें स्थानान्तरण संबंधी कठिनाइयों को देखते हुए उनमें विचार आया होगा कि एक स्थान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर स्थायी बस कर ही खेती की जाय । उनकी इसी विचार क्रान्ति ने ग्रामों को जन्म दिया । गाँव से फिर शहरों का विकास हुआ उद्योग धन्धे पनपे । हल, पहियेदार गाड़ी, नौका, धातुकर्म और कीमियागीरी जैसे भौतिक और रसायन शस्त्र के आरंभिक रूपों का विकास हुआ । यह सब अधिकाधिक साधन-सुविधाएँ जुटाने के लिए विचारों में आयी उथल-पुथल के कारण ही संभव हो सका । फिर अनेक प्राचीन सभ्यताओं का विकास हुआ और आज हम उन्हीं की अगली कड़ी के रूप में विद्यमान हैं, पर इस लम्बी प्रगति यात्रा में हमें अनेकानेक क्रान्तियों से होकर गुजरना पड़ा, जिनमें धार्मिक सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि कितनी ही प्रमुख हैं । अब हम अन्तरिक्ष युग के कहे जाते हैं, किन्तु यह भी विचारों में विकास के कारण ही शक्य हो सका । यदि व्यक्ति अपने विचारों को स्थिरता और स्थायित्व प्रदान कर दे, समय और परिस्थिति के हिसाब से उनमें आवश्यक फेर-बदल की ललक ही न उठे, तो निश्चय ही उसकी प्रगति भी स्थिर हो जायेगी । आगे वह और उन्नति न कर सकेगा । समाज और राष्ट्र के साथ भी यही बात लागू होती है । उन्नति की अभीप्सा ही उन्हें निरन्तर प्रगतिशील बनाये रख सकती है और यह 'सामूहिक अभीप्सा' ही तो 'क्रान्ति' है । इसके बिना व्यक्ति व समाज की कोई गति प्रगति संभव नहीं है ।

इस संदर्भ में इस सदी के दूसरे दशक के रूसी एनार्किस्टों का एकता-समता, शान्ति-सुव्यवस्था का मत ध्यातव्य है । उनका यह मूलभूत सिद्धान्त ही था "दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं ।" स्पष्ट है कि वे दूसरों द्वारा स्वयं के प्रति भी वैसा कोई भी व्यवहार सहन करने के पक्षधर नहीं थे, जो नैतिकता, समानता, शान्ति और सुव्यवस्था के मानदण्डों पर खरा न उतरता हो और जहाँ कहीं स्थिति ऐसी दिखाई पड़े, वहाँ क्रान्ति कर दो, क्रान्ति अर्थात् विचार-क्रान्ति उनका स्पष्ट उद्घोष था । क्योंकि यही एक मात्र उपाय है उस स्थिति से निपटने और शाश्वत शान्ति एवं स्थायित्व प्राप्त करने के लिए । कितना सही कथन है । वर्तमान समाज शास्त्रियों का भी यही कहना है कि जिस समाज व्यवस्था में अशान्ति होगी उसका अन्तिम परिणाम भी क्रान्ति ही है-विचार-क्रान्ति । यही हमें उससे बचा कर आगे की प्रगति की स्थिति में पहुँचा सकती है । यहाँ एनार्किस्टों की क्रान्ति खूनी न होकर रक्तहीन विचार-क्रान्ति ही है, क्योंकि वे साधन-साध्य, मार्ग-ध्येय की पवित्रता पर जोर देते हैं ।

१९१७ की रूसी बोलशेविक क्रान्ति पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि जारशाही की साम्राज्यवादी और दमनकारी नीतियों से परेशान होकर ही वहाँ की जनता को उसके विरुद्ध आवाज उठानी पड़ी थी । उनमें विचार चेतना जगी तो क्रान्ति हो गई । भारत में अंग्रेजी उपनिवेशवाद व इटली में आस्ट्रियाई उपनिवेशवाद की समाप्ति, अमेरिका में दास प्रथा का अन्त, फ्रांस, चीन, क्यूबा, तथा यूरोप में साम्यवादी देशों में हुई क्रान्तियाँ-इन सभी में प्रारंभ में प्रखर विचार चेतना ही प्रकारान्तर से काम करती रही है जिसके परिणाम स्वरूप बाद में स्थिति बदली ।

इस प्रकार यदि हम राष्ट्र व समाज के विभिन्न क्षेत्रों में हुई क्रान्तियों का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करें, तो पायेंगे कि उनमें से प्रत्येक के मूल में विचार-क्रान्ति निहित थी। यहाँ तक कि सृष्टि संरचना के लिए भी वही कारण भूत रही है । भगवत् सत्ता ने यदि "एकोहम् बहुस्यामि" का निश्चय न किया होता तो शायद यह धरती आज वीरान और वियावान ही बनी रहती, पर विचारों में उथल-पुथल हुई और एक सुन्दर सृष्टि बन गई । संकल्प बल ने मूर्तिमान रूप धारण कर लिया, किन्तु आज वही सृष्टि भारी उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है । मानवी अस्तित्व खतरे में पड़ा दिखाई दे रहा है । ऐसी दशा में उसी विचार-क्रान्ति की आवश्यकता है, जो अति प्राचीन काल से चली आ रही है, पर इस बार की विचार-क्रान्ति मनुष्य को अध्यात्म की ओर मोड़ देगी, क्योंकि यह उसका चरमोत्कर्ष है । इसके आगे उसकी गति नहीं और मनुष्य को भी बाधित होकर उसे स्वीकारना पड़ेगा । भू उपग्रह जब छोड़ना होता है, तो उसके साथ रॉकेटों की एक शृंखला संलग्न कर दी जाती है, जिनमें से प्रत्येक एक के बाद एक, उपग्रह को उदग्र दिशा में लेता चला जाता है किन्तु जब शृंखला के अन्तिम रॉकेट की बारी आती है, तो वह क्षैतिज दिशा में मुड़ कर उपग्रह को उसके स्थायी क्षैतिज कक्षा में स्थापित कर देता है । यही उसका लक्ष्य है और चरमस्थिति भी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विचार-क्रान्ति की अब तक की चरम स्थिति बुद्धि का चरमोत्कर्ष है । अब आगे उसकी सरल रेखीय गति संभव नहीं । वह दिशा बदलने वाली हैं । पेण्डुलम जब चरम अवस्था पर पहुँच जाता है तो उसकी दिशा स्वतः बदल जाती हैं ।

विचार-क्रान्ति का यह अन्तिम पड़ाव है, अस्तु आगे उसकी गति बुद्धि से भाव क्षेत्र, भौतिक से अध्यात्म क्षेत्र की ओर मुड़ने वाली है । विश्व के वर्तमान घटनाक्रमों पर दृष्टि डालने पर इसकी स्वष्ट झलक झाँकी मिलने भी लगती है ।

युगान्तरकारी परिवर्तन के मोड़ पर खड़े हम सब

इस संदर्भ में वैज्ञानिकों, मनीषियों एवं भविष्यदर्शियों ने अपने-अपने ढंग से अनुसंधान निष्कर्ष व आकलन प्रस्तुत किये हैं । सुप्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता फ्रिटजाफ काप्रा कहते हैं कि इतिहास बताता है कि नया जमाना आने के पूर्व हमेशा दो-तीन दशक बड़े व्यापक उथल-पुथल भरे रहते हैं, वैसे ही जैसे कि आज दिखायी दे रहे हैं। नयी सभ्यता के अथवा नवयुग की आधार शिला रखे जाने के पूर्व ऐसी सांस्कृतिक प्रत्यावर्तन प्रक्रिया सदैव देखी जाती रही है, उनके अनुसार परिवर्तन की यह उथल-पुथल हर बार पूर्व से ही आरंभ हुई है तथा ''स्टेटिक'' से ''डायनेमिक'' अर्थात् स्थिरता से सक्रियता की और उन्मुख हुई है । इसके लिए वे अर्नाल्ड टायनबी की बहुचर्चित पुस्तक ''ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री'' का हवाला देते हैं जिसमें उन्होंने पूर्व इतिहास व भावी संभावनाओं की बड़ी गहन समीक्षा प्रस्तुत की है ।

चुनौतियाँ मनुष्य समाज की हों या पर्यावरण की समूचा विश्व उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । क्षेत्र विशेष में उठी वैचारिक-क्रान्ति की लहरें वहीं तक सीमित नहीं रह जातीं वरन् व्यापक क्षेत्र में परिवर्तन की गतिशीलता बड़ी तेजी से लाती हैं । इन दिनों यही प्रक्रिया द्रुतगामिता के साथ चल रही है और आगामी बारह पंद्रह वर्षों में सम्पूर्ण विश्वमानव को अपनी लपेट में ले लेगी ऐसी डा० काप्रा की धारणा है । सही मायने में देखा जाय तो असंतुलन को मिटाने हेतु सक्रिय सृजनप्रयास गीताकार के **''यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति''** वाले उद्घोष की ओर ही संकेत करती है । इसी प्रक्रिया को विभिन्न पाश्चात्य दार्शनिकों, वैज्ञानिक मनीषियों ने अपने-अपने चिन्तन के अनुरूप प्रस्तुत किया है और कहा है कि नवसृजन में एक ओर जहाँ ध्वंसात्मक गतिविधियाँ तीव्र होती दिखाई देती है वहीं दूसरी ओर निर्माण की प्रक्रिया भी स्थायी रूप से चल रही होती है। प्रख्यात दार्शनिक हर्बर्ट स्पेन्सर ने इसे विघटन एवं समन्वयीकरण का मिलाजुला रूप कहा है, तो हेगल ने इसे ही यूनिटी एवं डिसयूनिटी का संयुक्तीकरण माना है । इस प्रकार नवनिर्माण की सभी परिभाषायें पूर्वात्य अध्यात्म के एक बिन्दु पर आकर मिल जाती हैं ।

इंटरनेशनल कल्चरल फाउण्डेशन के संस्थापक तथा ' द प्लेन ट्रुथ' पत्रिका के प्रधान संपादक हरबर्ट डब्ल्यू० आर्म्सस्ट्रांग अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के लिए विख्यात हैं । अपने प्रसिद्ध ग्रंथ ''द वण्डरफुल वर्ल्ड टुमारो'' में मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य की उनने जो परिकल्पना की है उसके अनुसार इक्कीसवीं शताब्दी का आगमन ही नवयुग की सभ्यता का शुभारंभ माना जायेगा । अशिक्षा, गरीबी, और बेकारी की समस्याएँ जो अभी मनुष्य की सबसे बड़ी समस्याओं में प्रमुख हैं, उनका समाधान खोज लिया जायगा । आक्रामक एवं अपराधी प्रवृत्तियों को उभारने के स्थान पर मनुष्य स्नेह-सद्भाव को जाग्रत कर दैवी गुणों से सम्पन्न बनने में ही अपनी शक्तियों का नियोजन करता हुआ दृष्टिगोचर होगा । तब अनीति, अनाचार एवं शोषण की आसुरी प्रवृत्तियाँ धरती पर से अपना पसारा समेट कर शून्य में विलीन हो जायेंगी । भाषाओं की भिन्नता के कारण मनुष्य को आज जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है अगले ही दिनों वह मिटकर एक विश्वभाषा का रूप ग्रहण करेगी । इसे 'गॉडस लैंग्वेज' के नाम से जाना जायगा । जिस भाषा के माध्यम से साहित्य, संगीत और कला को विधेयात्मक एवं सृजनात्मक दिशा-प्रवाह मिले उसी को मानव जाति हृदयंगम करेगी ।

भविष्य विज्ञानियों का मत है कि वह समय अब अधिक दूर नहीं है जिसमें पृथ्वी की समूची सत्ता सूर्य में विलीन हो जायगी अर्थात् मनुष्य सविता शक्ति से ओतप्रोत हो उत्कर्ष की ओर अग्रगामी होगा क्योंकि यही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह प्रत्यक्ष सर्वव्यापी सत्ता है जिसका कार्य क्षेत्र समूचा विश्व ब्रह्माण्ड है । दैवलोक की शक्तियों का पृथ्वी पर अवतरण इसी के माध्यम से होता है ।

अगली पीढ़ी समझदारों की होगी

लन्दन के दीर्घायुष्य अनुसंधान केन्द्र तथा कैलीफोर्निया के दीर्घजीवन अनुसंधानी संस्था के निर्देशक नाथान प्रिटिकिन ने अपनी खोजों के आधार पर दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं एक ''लिव लाँगर नाऊ'' दूसरी ''दि प्रिटिकिन प्रोग्राम फार डाइट एण्ड एक्सरसाहज'' । इन ग्रन्थों में उनने इस बात पर विश्वास किया है कि मनुष्य की समझदारी वापस लौटेगी । वह स्वास्थ्य का महत्व समझेगा और उन आदतों को छोड़ देगा जिनके कारण उसे दुर्बलता, रुग्णता, असमय की वृद्धता और अकाल मृत्यु का शिकार बनना पड़ रहा है । बुरी आदतें मजेदारी के लिए अपनाई जाती हैं । किन्तु आदमी इतना ना समझ सदा नहीं बना रह सकता कि मजेदारी के लिए अपनी स्थिरता और सत्ता को ही गँवा बैठे । वे विश्वास करते हैं कि समझदारी का जमाना वापस लौटने में अब देर नही है । यह कार्य करारी ठोकरें और भी जल्दी करने के लिए मजबूर करेंगी ।

प्रिटिकिन ने इक्कीसवीं सदी का सुनहरा चित्र खींचा है और कल्पना की है कि आदमी अब की अपेक्षा भोजन की मात्रा आधी कर देगा । मांसाहार छोड़कर शाकभाजी मात्र पर निर्वाह करेगा । फलतः खाद्य संकट की समस्या सहज ही हल हो जायगी और जितनी खाद्य सामग्री इन दिनों खपती है उतने में ही वर्तमान जनसंख्या दूनी हो जाने पर भी आहार सम्बन्धी कोई संकट खड़ा न होगा।

वे कहते हैं, तब बच्चों की तुलना में वृद्धों की समस्या सामने होगी । समझदार लोग कम बच्चे पैदा करेंगे किन्तु दीर्घजीवी होने पर उन्हें अनेक वर्ष वयोवृद्ध स्थिति में गुजारने पड़ेंगे इसलिए उन दिनों बाल कल्याण केन्द्र वृद्धों की सुविधा जुटाने का काम करेंगे ।

इन दिनों आदमी की मजेदारी-नशेबाजी और कामक्रीड़ा के इर्द-गिर्द केन्द्रित दीखती है । अगली शताब्दी में इनकी हानियों को भली प्रकार समझ लिया जायेगा, तब लोग संगीत और कला की ओर मुड़ेंगे तथा खेल-कूदों में रुचि लेंगे । आहार औषधि की तरह लिया जायगा । कपड़ों की डिजाइनें और भोजनों की स्वाद भिन्नताएँ जितनी अब दीखती हैं उनका सफाया हो जायेगा । लोग संग्रह की बात नही सोचेंगे वरन् काम-चलाऊ साधनों पर ही सन्तोष करेंगे । इतना परिवर्तन होने से आदमी का खर्च चौथाई रह जायगा और जिन लोगों को इन दिनों अहिर्निशि फँसा रहना पड़ता है उनमें से किसी का भी महत्व न रह जायगा । उन दिनों 'सन्तोषी सर्वदा सुखी' की कहावत चरितार्थ होगी ।

डा० थॉमस के अनुसार प्रदूषण के कारण पिछड़े हुए वातावरण का दबाव अनेक प्राणी सहन न कर सकेंगे और उनकी जातियाँ इस धरती पर से उसी प्रकार लुप्त हो जायेंगी जैसे भूतकाल के महागज और महासरी सृप (डायनासोसे) परिस्थितियों के साथ तालमेल न बिठा पाने के कारण अपना अस्तित्व खो चुके हैं । इसी सन्दर्भ में वातावरण विशेषज्ञ 'वाल्डर' का कहना है कि अगले दिनों आदमी समेत अन्य प्राणियों का समुदाय जहरीला हो जायगा। ऐसी दशा में उसकी आकृति और प्रकृति में भी परिवर्तन होगा । फिर भी आदमी अब इतना समझदार हो गया है कि अपनी सत्ता किसी रूप में बनाये रहेगा और परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने की बात इसी प्रकार खोज लेगा जैसा कि उसने विगत सहस्राब्दियों में अपने को बदला है ।

अध्यात्म पर आधारित नवयुग का साम्यवाद

अंग्रेज राजनेता और दार्शनिक टॉमस मूर ने अपनी पुस्तक ''यूटोपियो'' में वर्तमान समय में घट रही घटनाओं का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते हुए भावी समाज की रूप-रेखा बनाई है। उनका कहना है कि इन दिनों व्यक्ति अपने आप में इतना सिकुड़ता जा रहा है, जिसके कारण वह पेण्डुलम की तरह एक निर्धारित सीमा तक सिकुड़ कर रह जायेगा और जब असह्य घुटन बर्दाश्त न कर सकेगा, तो अपने आपको विश्व मानवता के साथ जोड़ने के लिए बाध्य हो जायगा । फलस्वरूप समानता एवं सहकारिता से खुशहाली आने की मान्यता क्रियान्वित होगी। तब प्रत्येक क्रिया-कलाप में सहकारिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की आधारभूत व्यवस्था बनेगी, क्योंकि इसके बिना मनुष्य के शरीर और बौद्धिक विकास तथा समाज को सुगढ़ बनाने की सुविकसित एवं सुनियोजित करने की कल्पना ही नहीं की जा सकती ।

इतालवी मुक्ति आंदोलन के एक सक्रिय कार्यकर्त्ता तोम्मासों काम्पानेला ने उज्ज्वल भविष्य के रूप में विकसित होने वाले समाज के स्वरूप का नाम 'सूर्यनगर' रखा है । टॉमस मूर के 'यूटोपिया हीपो की तरह 'सूर्यनगर' में शोषण, उत्पीड़न, स्वार्थपरता, संकीर्णता का कोई नामोनिशान न रहने की संभावना व्यक्त करते हुए काम्पानेला कहते हैं उस समय लोग सूर्य की तरह तेजस्विता ब्राह्मणत्व से युक्त होंगे परस्पर समानता का भाव रखेंगे, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुरूप शक्ति लगाने को सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व समझेंगे, एवं खाली समय को मानसिक और शारीरिक विकास में लगाते रहेंगे । टॉमस मूर के यूटोपियाइयों की तरह वे उत्पादन तो भरपूर करेंगे लेकिन स्वभावतया वह स्वयं ही जरूरत के अनुसार इसका उपयोग भी करेंगे । सूर्य भगवान की नियमितता का गुण अपनाते हुए शारीरिक एवं मानसिक श्रम से जी नहीं चुराएँगे । इन्हीं सूत्रों के आधार पर समूचा विश्व सूर्यनगर बन जायेगा ।

सिर्फ कथनी से ही नहीं वरन् कथनी को अपने आचरण में उतारने वाले फ्राँस में काल्पनिक समाजवाद की क्रांतिकारी धारा के प्रवर्तक जॉन मेल्ये अपनी पुस्तक 'वसीयत' में सार्वभौम एकता का समर्थन करते हुए भाषा, क्षेत्र, सम्प्रदाय, जाति, लिंग, प्रचलन की विविधता से उत्पन्न संकटों को स्पष्ट किया है । उन्होंने नये समाज के नियमों का एक प्रारूप तैयार किया है जिसके आधार पर उनके अनुसार अब भव्य समाज की नव्य रचना होनी है । इसमें व्यक्तिगत उपयोग की वस्तुओं को छोड़कर शेष का उपयोग परहित में करने, अपने सुख के स्थान पर दूसरों को सुख देने, अधिकार के स्थान पर कर्त्तव्य का पालन करने एवं प्रतिभा और उम्र के अनुरूप लोकहित को बढ़ावा देने का प्रावधान है । इसमें पहली बार समाजवाद के एक मूलभूत सिद्धान्त अर्थात् हर व्यक्ति द्वारा अपनी योग्यता के अनुसार शक्ति भर काम करने की आवश्यकता एवं जरूरत भर लेने के अधिकार को सुस्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है ।

फ्राँसीसी दार्शनिक गैब्रिएल बोन्नो देमाब्ली ने एक ऐसे समाज की स्थापना की हिमायत की है जो प्रत्येक नागरिक को अधिकतम उल्लास और खुशहाली प्रदान कर सके । इस आधुनिक एवं आध्यात्मिक साम्यवाद के आधार पर बने समाज में हर व्यक्ति लोक कल्याण को बढ़ाने अपने देशवासियों के प्रति आदर और ईमानदारी से भरी प्रतिस्पर्धा में भाग लेगा । तब प्रतिभाओं को महत्ता न मिलकर उनके द्वारा लोकमंगल में किये गये कार्यों को प्राथमिकता एवं श्रेय दिया जाएगा । इसका परिणाम यह निकलेगा कि वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, मनीषी, साहित्यकार, कलाकार जैसी प्रतिभाएँ सार्वजनिक सम्पत्ति बन कर रहेंगी । वे अपनी विशेष योग्यता का विशेष मूल्य माँगने का दुस्साहस न करेंगी । कारण कि उन्हें अधिक समय सुयोग्य बनाने में वर्तमान समाज एवं चिरकालीन संचित ज्ञान सम्पदा का ही तो भरपूर लाभ उन्हें मिला है । उन्हीं के सहचर ग्राक्ख बाब्योफ समाज के भावी स्वरूप की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि कि समान लोगों के समाज की स्थापना होगी जहाँ न कोई अमीर होगा और न गरीब । हर व्यक्ति लोकहित की खातिर अपनी योग्यता के अनुरूप शक्ति भर काम करेगा । उन्होंने यह तर्क भी दिया कि चाहे मनुष्य कोई भी काम करे, उसका पेट जितना बड़ा है, उससे बड़ा तो होगा नहीं । हाँ वासना, तृष्णा, अहंता को पोषण देने वाले लोभ, मोह, अहंकार सुरसा की तरह अपना आकार बढ़ा सकते हैं । जिसका न कोई आदि है न अंत, किन्तु तब मनुष्य इनसे उत्पन्न होने वाली हानि को देखकर समान श्रम, शिक्षा, कला, सहयोग-सहकार, परमार्थ आदि की महती आवश्यकता को अनुभव करेंगे ।

१९ वीं शताब्दी के महान मनीषी रूस के अफनास्येव ''वैज्ञानिक कम्युनिज्म के मूल सिद्धान्त'' पुस्तक में सेंट साइमन दे रूग्रूआ के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि उन्होंने मानव जाति के लिए भविष्य में एक वास्तविक 'स्वर्ण युग' की कल्पना की है, जिसमें शोषण, उत्पीड़न, अहिंसा, अत्याचार, अनाचार का सदा-सदा के लिए अंत हो जायेगा और लोग प्रकृति का संतुलन बनाते हुए उसका अपने लाभार्थ उपयोग करने के लिए एक होकर प्रयासरत होंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सेंट साइमन ने संगठित और सचेत ढंग से संचालित भावी समाज की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है उसमें उन्होंने मनुष्य तथा उसकी आवश्यकताओं और योग्यताओं को प्रमुख स्थान दिया है । उनके विचार में वह सामाजिक प्रणाली सबसे अच्छी है, जो सम्पूर्ण मानवजाति को सुखद और शान्तिमय जीवन प्रदान करती हो और उसकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा भारी उपयोगी योग्यताओं के विकास के उद्देश्य से अधिक से अधिक सुअवसरों की व्यवस्था करती हो । वह यह मानते थे कि समूची मानव जाति के एक होने अपने को छोटे परिकर तक न सीमित रखकर विश्व मानव मानने और संयुक्त प्रयास के साथ नवसृजन के निमित्त मानव की क्षमताओं को पूर्ण रूप से उजागर एवं विकसित करने की वचनबद्धता ही भावी समाज के नव्य संगठन का सबसे महत्वपूर्ण आधार होगा । उन्होंने 'विश्व परिवार' की भी परिकल्पना की है, जिसे संघ का नाम दिया जो सारे सामाजिक और राष्ट्रीय विरोधों का उन्मूलन करके शान्ति और सम्पूर्ण मानव जाति की निरन्तर प्रगति सुनिश्चित बनायेगा । उनका विश्वास था कि समय और समाज का विकास विचारों पर विश्व दृष्टिकोण पर आधारित होता है । और यही आने वाले नवयुग का मूल मंत्र होगा । ऐसा वे मानते हैं

धनी व्यापारी के पुत्र होने के बाद भी मजदूरी एवं गरीबी स्वयं ओढ़ने वाले फ्रांसीसी समाजवादी फ्रांसुआ मरीशार्ल फुरिये की भी भविष्य दृष्टा के समकक्ष मान्यता है । उन्होंने नया समाज बनाने को लक्ष्य रखकर एक ऐसे शान्तिपूर्ण तरीके का समर्थन किया है जिसमें भौतिक ललक लिप्सा को गौण समझा गया हो एवं परमार्थ में मिलने वाले सुख को मुख्य नगर और देहात के बीच अंतर मिटाने की भी बात उन्होंने कही है । जब हर व्यक्ति शहरों के चकाचौंध के साथ रहने वाली उदासीनता, अन्यमनस्कता, स्वार्थान्धता, प्रदूषण, अत्याचार से इतना ऊबा होगा कि वह पुनः छोटे से आदर्श ग्राम में रहना पसन्द करेगा । इस तरह बड़े-बड़े शहरों की संस्कृति बिखर कर छोटे कस्बों में बँट जायेगी जहाँ व्यक्ति की संकीर्णता 'वसुधैव कुटुम्कम्' के रूप में परिवर्तित होकर मुक्त गगन में श्वास लेगी ।

चेतना के स्तर पर हो रही परिवर्तन प्रक्रिया

कैलिफोर्निया के जेम्स डब्ल्यू० न्यूमैन की गणना अमेरिका के मूर्धन्य मनोविज्ञानियों एवं दार्शनिकों में होती है । वह ''थामस जैफरसन रिसर्च सेण्टर'' के संचालक हैं और ''साइको एण्डोक्राइन रिसर्च फाउण्डेशन'' के संस्थापक भी । उनने मनुष्य के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार पर बड़ी गहनता से अध्ययन किया है और इस मध्य कई शोधपत्र भी प्रकाशित किये हैं । उनके अनुसंधान का मुख्य विषय रहा है ''मनुष्य का समग्र स्वास्थ्य और उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व'' । इस क्षेत्र में कार्य कर उनने महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हस्तगत कीं । उनके प्रशंसनीय कार्य एवं इस क्षेत्र में लम्बे अनुभव को ध्यान में रखते हुए लोसएंजिल्स में पिछले दिनों ''दि बोर्ड ऑफ जे० डब्ल्यू० न्यूमैन कारपोरेशन' की स्थापना की गई जिसके वे इन दिनों अध्यक्ष हैं । इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य मनुष्य के भावी जीवन को सुखद संभावनाओं से परपूरित कैसे किया जाय-यह पता लगाना है ।

अनेक संस्थानों में कार्य करते हुए अपने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर न्यूमैन ने ''रिलीज योए ब्रेक्स'' नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है, जिसका सार यदि एक वाक्य में कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि ''हमारी वर्तमान की विचारणा भविष्य का निर्धारण करती है'' अर्थात्-आज जो कुछ हम सोचते और करते हैं, हमारा कल का भविष्य इसी रूप में सामने आता है । इस प्रकार न्यूमैन ने अपनी उक्त पुस्तक में परोक्ष रूप से यही कहने का प्रयास किया है कि यदि हमें आगामी सदी को उज्ज्वल भविष्य के रूप में देखना है तो हमारे क्रियाकलापों और चिन्तन में तदनुरूप उत्कृष्टता आनी ही चाहिए । इससे कम में उसकी आशा नहीं की जा सकती, जिसकी सुखद सम्भावना हम इन दिनों सँजोये हुए हैं । उक्त पुस्तक के अन्तिम अध्याय 'यू आर चेन्जिंग द वर्ल्ड' में उनने लिखा है कि निकट भविष्य में संसार में एक विशिष्ट प्रकार का चिन्तन परक परिवर्तन आयेगा । लोगों में भविष्य के प्रति जागरूकता की प्रवृत्तियों को विकसित होते देख कर उनने इस तथ्य की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पुष्टि भी की है । उनका कहना है कि मनुष्य में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर चल रही है और उसमें विराम आने वाला नहीं । इसलिए यह मान्यता बना लेना गलत साबित होगा कि मनुष्य के जीवनक्रम में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता । शारीरिक परिवर्तन की पुष्टि के लिए शरीर शास्त्र का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है जिसके अनुसार हर छः माह बाद मनुष्य की कायिक संरचना में बहुत कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है । शारीरिक संरचना में ही नहीं वरन् क्रिया-कलापों में भी एक विशेष प्रकार का परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है । जो हम कल थे वह आज नहीं हैं, इसकी अनुभूति दिन और रात की तरह स्पष्ट होने लगती है । दिन प्रतिदिन का चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व की आधारशिला रखता है ।

वस्तुतः सृष्टि के आरंभ से ही मानव हृदय की एक ही जिज्ञासा रही है कि वह वर्तमान की अपेक्षा भविष्य को अधिक उज्ज्वल देखना चाहता है, तदनुरूप प्रयत्नशीलता का परिचय भी देता चला आया है । मानवी प्रयास क्रिया और विचारण का मिला-जुला स्वरूप ही भविष्य की संरचना करता है । मनीषियों ने शारीरिक परिवर्तन की तुलना में मानवी चिन्तन एवं आचरण में परिवर्तन को अधिक महत्वपूर्ण बताया है क्योंकि चिन्तन के अनुरूप ही क्रिया को बल मिलता है । इस संदर्भ में न्यूमैन का कहना है कि आज हम जिस विशिष्ट काल से गुजर रहे हैं, उसमें मनुष्य के चिन्तन की दिशाधारा में विशेष परिवर्तन हो रहा है । स्वार्थपरता और संकीर्णता की प्रवृत्तियाँ घटती मिटती जा रही हैं । परम्परावादी विचार शैली की अपेक्षा विवेक संगत मान्यता को अपनाने की उत्सुकता बढ़ी है । टाइम-पर्सपैक्टिव की महत्ता लोगों के गले उतरने लगी है, जिसे समय संदर्श के नाम से जाना जाता है । उदाहरण के लिए मानवी दृष्टिकोण को लिया जा सकता है समय के साथ उसमें भी परिवर्तन होता हैं । एक उदाहरण प्रस्तुत कर वे लिखते हैं कि एक छोटा बालक कटोरा भर अवलेह सेम (जैली बीन्स) को खा जाता है, पर दूसरे दिन उसे पेट दर्द की शिकायत होने लगती है । गरिष्ठ पदार्थ की इतनी भारी मात्रा खाते समय उसके मस्तिष्क में यह विचार नहीं आया कि कल क्या होगा ? इसे अपरिपक्व मस्तिष्क की अपरिपक्व निर्णय क्षमता ही समझी जायेगी, लेकिन वही मस्तिष्क परिपक्व होने पर उस भूल को कदापि नहीं दुहराता कुछ ऐसा ही दृश्य इन दिनों दृष्टिगोचर होने लगता है । मद्यपान और नशीली दवाओं के दुष्परिणाम अब लोगों की समझ में आने लगे हैं और इसके विरोध में आवाजें उठने लगी हैं जिसे देख कर यह कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं शताब्दी में लोग इन दुष्प्रवृत्तियों को मिटाने में पूरी तरह सफल होंगे ।

जेम्स डब्ल्यू न्यूमैन का कहना है कि व्यक्ति के परिपक्व व्यक्तित्व का मूल्यांकन लम्बे समय के अनुभव प्राप्त कर लेने के उपरान्त ही किया जा सकता है । उसके सत्परिणामों की प्रभावशीलता का अनुमान भी तभी लगाया जा सकता है । आज के चिन्तन और व्यवहार में जागरूकता और सजगता के माहौल को देखकर यही कहा जा सकता है कि शताब्दी के अन्त तक लोगों के दृष्टिकोण में विधेयात्मकता का समावेश होना सुनिश्चित है । समय संदर्श (टाइम पर्सपैक्टिव) की तरह दूसरा अति प्रभावशाली घटक वातावरण के परिवर्तन का है । उनने इसे ''होल परसन सिस्टम'' के नाम से सम्बोधित किया है, अर्थात्-मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व का निर्धारण वातावरण के अनुरूप ही होता है । उनके अनुसार लोगों में भावी संतति को सुयोग्य एवं सुशिक्षित बनाने का जो वातावरण आज विनिर्मित हो रहा है, निकट भविष्य में इसकी सार्थकता और भी अधिक बढ़ी-चढ़ी होगी । संतानों में माता-पिता एवं अभिभावकों के प्रति सम्मानजनक भावनाओं का विकास होगा, जिसके फलस्वरूप वृद्धावस्था का सुख सरलता से प्राप्त किया जा सकेगा ।

लोगों में समूहगत भावनाओं का विकास होगा । लार्जर फेमिली यानी परिवारों में वृहत्तर परिवार के प्रति 'टीम-स्प्रिट' की भावना का उदय होगा । परस्पर सहयोग-सहकार की प्रवृत्तियों को बल मिलेगा । यही नियम-व्यवस्था कम्पनी, क्लब, संघ-समुदाय, देवालयों, व्यापारिक संघों, राजनैतिक पार्टियों तथा सैनिक क्षेत्र में भी लागू होगी । व्यक्तिगत स्वार्थों की अपेक्षा सामूहिक हितों को ही वरीयता क्रम में आगे रखा जायेगा । उग्रवाद की प्रवृत्तियाँ रचनात्मक दिशा में आ मुड़ेंगी । ''इन्डीविजुअल

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्सनेलिटी'' की अपेक्षा ''ग्रुप पर्सनेलिटी'' की महत्ता को ही अंगीकार किया जायेगा ।

न्यूमैन ने नये युग की संभावना व्यक्त करते हुए बताया है कि तब लोगों की सूझबूझ इस स्तर तक बढ़ जायेगी कि अपने ज्ञान का सदुपयोग रचनात्मक दिशा में ही कर सकेंगे । मनुष्य की इस नयी विरादरी को ''ऐपी-और्गेनिज्म के नाम से उन्होंने अभिहित किया है जिसका अभिप्राय समूहगत चेतना के विकास से होता है । संसार की एक चौथाई जन-शक्ति बीसवीं शताब्दी कै अन्त तक विचारधारा के अनुरूप अपने क्रिया-कलापों का निर्धारण करने लगेगी । इक्कीसवीं शताब्दी में उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श व्यवहार की कल्पना हर व्यक्ति के गले उतरने लगेगी ।

इस प्रकार न्यूमैन ने अपनी उक्त पुस्तक में तर्क और तथ्य के आधार पर यही सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आगामी समय में परिवर्तन अवश्यम्भावी है । इसी बात को आज विश्व के जाने-माने भविष्य दृष्टा, ज्योतिर्विद, भविष्य विज्ञानी अपने-अपने ढंग से कह रहे हैं और यह आशा व्यक्त कर रहे हैं कि आने वाली सदी हर प्रकार से उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ अपने में सँजोये हुए है । अभी हमें उनकी भविष्यवाणियों की धुँधली छटा ही दृष्टिगोचर हो रही हैं । आगामी शताब्दी में कोहरे के छँट जाने से दृश्य यदि और अधिक सुस्पष्ट हो जाय, तो कोई आश्चर्य नहीं माना जाना चाहिए ।

अगले दिनों विश्व का नेतृत्व भारत ही करेगा

सभी यह चाहते हैं कि परिस्थितियाँ सुख-शान्ति से भरी पूरी हों । धरती पर स्वर्ग का अवतरण, पुरातन कालीन वह कल्पना है जिसे साकार करने का सपना हर भावनाशील बुद्धिजीवी इन दिनों देख रहा है । सारे विश्व के समझदार कहे जाने वाले विज्ञजनों की निगाहें भविष्य पर टिकी हुई हैं । वे ऐसी दुनिया की कल्पना कर रहे हैं, जिसमें युद्ध, पारस्परिक द्वेष, सम्प्रदाय-जन-कलह एवं नैतिक मूल्यों के प्रति बढ़ती अनास्था को कोई स्थान न हो । तीसरी दुनिया के राष्ट्र तो अपनी वर्तमान की समस्याओं में इतने उलझे हैं कि उनके पास भविष्य के विषय में न सोचने का समय है, न सुविधाएँ । फिर भी छुट-पुट प्रयास व्यवस्था तन्त्र एवं धर्मतन्त्र दोनों ही मंचों से चलते रहे हैं । लेकिन पश्चिम जगत ने भविष्य के बारे में काफी कुछ सोचा है योजनाएँ बनाई हैं एवं सन् २००० की एक झाँकी देने का प्रयास किया है । इससे यह आभास होता है कि यदि प्रगति की वर्तमान तेज दौड़ यथावत रही तो भविष्य कैसा होगा ? इस विज्ञान को जिसमें सांख्यकीय गणनाओं एवं उपलब्ध तथा सम्भावित आँकड़ों के आधार पर चिन्तन किया जाता है, फ्यूचरॉलॉजी (भविष्य विज्ञान) नाम दिया गया है, जो पिछले एक दशक मात्र की ही उत्पत्ति है । यूटोपिया एक इसी प्रकार की विद्या है जिसमें वैज्ञानिक कल्पनाएँ करते हैं । जो, उपलब्ध तथ्यों को मूल आधार बनाकर की जाती हैं ।

सड़ा हुआ अन्न यदि सम्भाल कर रखा जाय तो विष का रूप ले लेता है । उपलब्ध सुख-सुविधा के साधन दुरुपयोग करने पर संकट का स्वरूप ले लेते हैं । समृद्धि तन्त्र, जिसमें खाद्य व्यवस्था, जनसंख्या एवं स्वास्थ्य, उत्पादन-उपभोग व्यवस्था, ऊर्जा, शिक्षा जैसी सार्वजनीन व्यवस्थाएँ सन्निहित हैं, एक इसी आधार पर टिका हे जिसे प्लानिंग (योजना) कहा जाता है । यदि दूरदर्शितापूर्ण सम्वर्धन और सदुपयोग निर्वाह के साधनों का न किया गया तो ये ही साधन भस्मासुर का रूप धारण करके विश्व को नष्ट कर डालेंगे । भविष्यविद् इसीलिए समय-समय पर मिल बैठकर विचार करते हैं एवं स्वर्णिम युग लाने के सही उपाय आँकड़े के आधार पर सुझाते हैं ।

पिछले दिनों तीन प्रख्यात अमरीकी चिन्तक जिन्होंने इस विषय पर कई पुस्तकें लिखी हैं, परस्पर मिलकर बैठे एवं उन्होंने अपने अध्ययन, चिन्तन व अनुमान के आधार पर बताया कि विश्व का भविष्य उज्ज्वल है । ''दुनिया कहाँ जा रही है '' इस शीर्षक से फिल्म बना रहे अमरीकी टेलीविजन सम्वाददाता केल्विन सेण्डर्स ने डा० मार्गरेटमीड (अब स्वर्गीय), हरमन कॉन एवं विलीयम टामसन से साक्षात्कार लिया । ''स्पॉन'' पत्रिका (अप्रैल १९७९) में प्रकाशित इस विचार मंथन पर सारे विश्व के बुद्धिजीवियों का ध्यान गया है । वस्तुतः अभी तक जिन-जिन बुद्धिजीवियों ने अपना चिन्तन दिया है, यह निषेधात्मक ही रहा है । इन तीनों भविष्यविदों ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आशावादी दृष्टिकोण से कई पुस्तकें भी लिखी हैं व बताया कि समृद्धि तन्त्र अपना रास्ता बदलने में पूरी तरह से समर्थ है । उसे सही चिन्तन देने वाले मनीषी भी विश्व में हैं जो तीसरी दुनिया जिसमें भारत भी शामिल हैं, से उदित होकर एक स्वर्णिम युग अगले बीस वर्षों में लाकर दिखायेंगे ।

स्व० डा० मार्गरिटमीड अमेरीकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री की अध्यक्षा रहीं, नृतत्व विज्ञान पर उनका गहरा अध्ययन था एवं उन्होंने कमिंग आफ एन एज, 'कल्चर एण्ड कमिटमेण्ट', 'ए स्टडी ऑफ जेनरेशन गैप' नामक बेस्टसेलर पुस्तकें लिखीं । श्री हरमन कॉन ''हडसन इंस्टीट्यूट के निदेशक हैं एवं वर्ष २००० तक 'आगामी दो सौ साल' नामक पुस्तकों से काफी ख्याति पा चुके हैं । भविष्य विज्ञान के तीसरे विशेषज्ञ विलियम दूरविन थामसन ने 'एट दी एज ऑफ हिस्ट्री', डार्कनेस एण्ड स्केटर्ड लाइफ, एवं 'एसेज ऑन फ्यूचर' नामक पुस्तकें लिखी हैं । उन्होनें प्रमुख दार्शनिकों, बुद्धिजीवियों, कलाकारों तथा वैज्ञानिकों की एक मिली-जुली संस्था बनायी है जिसका उद्देश्य है आगामी भू-मण्डलीय संस्कृति का अध्ययन एवं सुनियोजित निर्धारण ।

डॉ० मार्गरिटमीड के अनुसार यद्यपि आधुनिक जगत को संस्कृति, जाति, लिंग, पीढ़ियों, एवं धर्ममतों की विभिन्नताओं एवं उनमें बढ़ रहे तनावों का सामना करना पड़ रहा है तथापि विकेन्द्रीकृत औद्योगीकरण का एक स्वरुप एवं सार्वभौम विश्व संस्कृति का एक मंच अगले दिनों तीसरी दुनिया से उभर कर आने वाला है जो पाश्चात्य जगत का भी मार्गदर्शन करेगा । उनके अनुसार भविष्य कोई ऐसी चीज नही है जो अस्तित्व में न आ चुकी हो । वस्तुतः इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर जो पीढ़ी भविष्य का फैसला करेगी वह आज जन्म ले चुकी है । इसी कारण हमारी आज की योजनाओं, हमारे चिन्तन, व्यवस्था सम्बन्धी सुझावों का एक सुनिश्चित प्रभाव इस पीढ़ी पर पड़ ही रहा है । इसे हम रोक नहीं सकते । अगली पीढ़ी अमरीकी ग्लैमर की नकलची नहीं होगी अपितु वह इन दबावों तथा तनाव के मध्य से गुजर कर-तपकर विकेन्द्रीकरण एवं प्राकृतिक जीवन-व्यवहार को ही अपना आदर्श बनायेगी ।

डॉ० हारमैन कॉन पिछले दिनों भारत की यात्रा कर चुके हैं । उनका कहना था कि''भारत के बीस प्रतिशत व्यक्ति आधुनिक खण्ड में हैं जो तेजी से प्रगति कर रहे हैं, चालीस प्रतिशत अर्ध आधुनिक खण्ड में हैं जहाँ रबर टायर युक्त बैलगाड़ियाँ प्रयुक्त होती हैं एवं कस्बों में छोटे-छोटे उद्योग हैं, शेष चालीस प्रतिशत प्रगति की दिशा में अग्रसर हैं । यह एक अच्छा लक्षण है । जब इस देश की तुलना औद्योगीकरण की दृष्टि से प्रगतिशील देशों से की जाती है तो निष्कर्ष यही निकलता है कि भारत जैसे अर्ध औद्योगीकृत राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल है । संसाधनों की उपलब्धि की अब चरमसीमा है । आज पश्चिमी देशों में तकनीकी ध्वंसकारी एवं आक्रामक होने की स्थिति में आ गयी है । वास्तव में आज दुनिया की आबादी को बड़ी तकनीक से बनायी गई ज्यादा तादाद में चीजों की जरूरत नहीं है, जरूरत है कि ज्यादा से ज्यादा तादाद में व्यक्ति वस्तुओं का निर्माण करें ताकि अधिक से अधिक लोगों के लिए जीविकोपार्जन के साधन जुटाये जा सकें । इस प्रकार के गाँधीवादी अर्थशास्त्र की वे वकालत करते हैं व कहते हैं ''मेरे अपने हिसाब से आप (भारतीय) काफी अच्छी प्रगति कर रहे हैं ।''

हरमन कॉन के अनुसार '' तीसरी दुनिया का (अर्ध विकसित एवं विकासशील देश) अपराध यह है कि वह अपनी समस्याओं के द्वारा चीजों को न देखकर पाश्चात्य जिन्दगी की लगभग नकल कर रहा है, उसके लिए पश्चिमी दुनिया के मूल्य ही सर्वोच्च मूल्य है पर स्थिति बदलेगी । विश्व के ३० प्रतिशत गरीब क्षेत्रों में इतनी प्रगति हो जायेगी जो कि रोमन साम्राज्य के सर्वश्रेष्ठ काल के निवासियों की थी ।''

डॉ० थामसन के अनुसार ''अगले दिनों खाद्यान्नों एवं भौतिक साधनों की विपुलता पर नहीं, मानवी चेतना की सम्पूर्ण क्रान्ति पर एक विचार पूर्व से उठकर आयेगा । मानवी संस्कृति के विकास की दृष्टि से , आदर्शों की दृष्टि से एवं सारे विश्व के लिए भूतकाल में रही उसकी भूमिका की दृष्टि से भारत ही विश्व संस्कृति का नेतृत्व करेगा ।, ''टायनबी'' को उद्धृत करते हुए वे कहते हैं कि पश्चिम के भौतिकवाद का पूर्व के अध्यात्मवाद से सांस्कृतिक सामंजस्य एक भविष्यवाणी है जो निश्चिततः सत्य होकर रहेगी । ''पूर्व के अध्यात्मवादी, भौतिकता से समन्वित एक संस्कृति का

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकास अगले दिनों इस प्रकार करेंगे जिससे समग्र विश्व संस्कृति का एक उत्कृष्टतम उदारवादी स्वरूप उभर कर आयेगा । इसे वे ''पैथेगोरियन सिन्थेसिस'' नाम से सम्बोधित करते हैं ।

जिस प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में पिछले तीन दशकों में अभूतपूर्व क्रान्ति आयी है कुछ उससे अधिक ही सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में परितर्वन सम्भावित है, ऐसी कल्पना थामसन ने वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर की है ।

अमरीका में अर्थ विशेषज्ञों में प्रथम पंक्ति में गिने जाने वाले लिण्डन एच लारॉच एवं अन्य अमेरिकी विशेषज्ञों का कम्प्यूटर अध्ययन के आधार पर यह अनुमान है कि वर्तमान औद्योगीकरण की व्यवस्था, आणविक ऊर्जा के सदुपयोग एवं तकनीकी ज्ञान की दृष्टि से प्रखर बुद्धिजीवियों की प्रचुरता के कारण भारत अगले ४० वर्षों में 'सुपर पावर' की श्रेणी में आ जायेगा और अमरीका, एवं रशिया से भी पहले उसका नाम होगा । प्रकारान्तर से यह श्री हारमैनकॉन के कथन की ही पुष्टि है । इस कम्प्यूटर प्रोग्राम का नाम था''–१९८०-२०२० तक भारत का औद्योगीकरण पिछड़े देश से ४० वर्ष में विकसित देश के रूप में रूपान्तरण'' । अगस्त १९८० के अन्तिम सप्ताह में पी०टी० आई को दी गयी एक भेंट में श्री लॉराच ने भारत के भविष्य को उज्जवल बताया व कहा कि अपने सांस्कृतिक गरिमा एवं आध्यात्मिक परम्परा के कारण भारत सारे विश्व का नेतृत्व करने की स्थिति में आ चुका है । वर्तमान राजनैतिक एवं आर्थिक हलचलों से किसी को आशंकित नहीं होना चाहिए ।' **(स्टेट्समैन ८ सितम्बर १९८०)**

इसका मूल कारण स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि तकनीकी ज्ञान की दृष्टि से इस समय सर्वाधिक सम्पन्न भारतवर्ष है । यदि उसकी मूर्धन्य प्रतिभाएँ अपने कार्यक्षेत्र की परिधि को पूरे देश में फैला दें, ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध उत्पादन में समर्थ संसाधनों का उचित उपयोग कर लें तथा अनियोजित व्यवस्था से होने वाले अपव्यय को रोकने में सहायता देने लगें तो न केवल भारत प्रथम श्रेणी के राष्ट्र की गिनती में होगा वरन् वह सारे विश्व को दिशा दे सकने में समर्थ हो सकेगा ।

ऐसा अनुमान है कि सन् २०२० तक भारत को श्रमिकों की कुल संख्या २३ एवं २४ करोड़ के बीच होगी जो कि अमेरिका, रशिया, पूर्व एवं पश्चिम यूरोप की सम्मिलित श्रमिक से अधिक ही होगी । यदि उपलब्ध भूमि (उपजाऊ) का सत्तर प्रतिशत भी सिंचित कर दिया गया तो अन्न का उत्पादन एक खरब टन प्रति वर्ष के लगभग जा पहुँचेगा । यदि यह हो जाता है तो भारत सारे विश्व को अन्न देने की स्थिति में होगा यह सारी कम्प्यूटर स्टडी एक आशावादी स्वरूप प्रस्तुत करती है । पर यह सब तभी सम्भव है जब उन सावधानियों पर भी ध्यान दिया जाये जिस पर इन अर्थशास्त्रियों ने मात्र इशारा किया है । वे हैं बढ़ती जनसंख्या पर समुचित नियन्त्रण, संसाधनों के दोहन के औचित्य-अनौचित्य पर विचारपूर्ण चिन्तन, एक बहुत बड़ी आबादी के लिए साक्षरता की व्यवस्था का निर्धारण एवं एक सुनियोजित तकनीकी बुद्धिजीवी समुदाय की क्षमता के उचित उपयोग की व्यवस्था का निर्माण ।

मनुष्य गलती करता है । पर भूल सुधारना भी उसकी एक सहज प्रवृत्ति है । अगले दिनों भूल समझने व सुधारने का ही अभियान चलेगा । इस बात को भविष्यवेत्ता कह रहे हैं, ग्रहगणित वाले ज्योतिषी भी यही कह रहे हैं । वैज्ञानिक (फ्यूचरालॉजिस्ट) कह रहे हैं तथा कम्प्यूटर तक ऐसी सम्भावनाएँ दे रहा है । अगले दिनों भोगवादी नास्तिकता की पक्षधर बुद्धिवादिता को उन दिग्गजों द्वारा नाकों चने चबाने को विवश किया जायेगा जो ऐसे ही विपत्ति के समय पर अवतरित होते रहे हैं ।

अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज

'टाइम' पत्रिका के ३ अप्रेल १९८९ के अग्रलेख में आयुध बल की दृष्टि से भारत को औभी विश्व में रूस, चीन, अमेरिका के बाद चौथे नम्बर पर मानते हुए लेखक श्री रॉस०एच० मुनरो लिखते हैं कि राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना अपनी सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिकता की गहरी जड़ें तथा वैज्ञानिक-मनीषा समुदाय की प्रखर मेधाशक्ति भारत को निश्चित ही मात्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

महाद्वीप की नहीं विश्व मात्र की एक महाशक्ति बनाकर रहेंगे । उनका कथन अनेकानेक तथ्यों पर आधारित है जो उनने अपने लेख में साक्षी रूप में प्रस्तुत किये हैं । वे कहते हैं कि अभी तक साँप व साधुओं, मच्छर व मलेरिया का देश माना जाने वाला भारत-वर्ष सोया पड़ा था किन्तु यह दैत्य जाग उठा है । गत दो शताब्दियों में जन्मे महापुरूषों ने जन चेतना को प्रचण्ड रूप से उभारा है एवं अस्सी करोड़ से भी अधिक की आबादी की दृष्टि से विश्व की दूसरे नम्बर की लोकशक्ति अगले दिनों अपने कर्तृत्वों से एक जन-क्रान्ति कर दिखायेगी । यह सुनिश्चित बना दिया है ।

वस्तुतः भारत का आकलन एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में किये जाने की माँग पाश्चात्य देशों के बुद्धिजीवी वर्ग के मध्य से ही उठी है । वे भारत को अपनी आशा का उज्ज्वल भविष्य का केन्द्र-बिन्दु मानते हैं वे कहते है कि पश्चिम जगत इस समय ''क्राइसिस आफ आयाडियाज'' (वैचारिक संकट) से गुजर रहा है । नैतिक मूल्यों पर अनास्था ने एक ऐसी वैचित्रपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर दी है कि वे अब आगे ''क्या किया जाय ?'' ''क्या न किया जाय ?'' इस असमंजस की स्थिति में स्वयं को पाते हैं । इसका विवरण अपनी पुस्तक ''द टर्निंग पॉइण्ट '' में देते हुए डॉ० फ्रिटजाफ काप्रा कहते हैं कि ''जब तक पूर्व से मार्ग दर्शन लेकर बुद्धिजीवी एवं वैज्ञानिक स्वयं को मकड़ी के जाल से नहीं निकालते, तब तक सारे समाज में व्यापक चिन्तन आ ही नहीं सकता ।''

''हमारे सांस्कृतिक संकट (कल्चरल क्राइसिस) का मूल कारण यह है कि अग्रगामियों के पास नेतृत्व करने वालों के पास बदलते युग के साथ न तो समस्याओं के समाधान हैं न कोई विकल्प है ।'' वे कहते हैं कि ''सारी मानव जाति इस समय उतरते हुए ज्वार-चढ़ते हुए भाटे के समान एक ऐसे बिन्दु पर खड़ी है जहाँ भविष्य का निर्धारण होना है । बदलाव के इस बिन्दु को चीनी संस्कृति में बायन्जी नाम से सम्बोधित किया जाता है । इसका अर्थ होता है-''खतरों से भी विभीषिका एवं बदलाव के अवसर उत्पन्न होने की परिस्थितियाँ'' इस प्रकार प्रकारान्तर से युगसंधि की तमिस्र एवं नवयुग के अरुणोदय का अभिनव सम्मिश्रण इस शब्द में है डॉ० काप्रा कहते हैं कि ''पाश्चात्य समाजविद अब मान चुके हैं कि सारा विश्व इन दिनों परिवर्तन की संधिवेला से गुजर रहा है । पूर्वार्ध के रूप में मनोरोगों की बढ़ोत्तरी, युद्धोन्माद की स्थिति, बढ़ता आतंकवाद, सामाजिक विघटन हमारे सम्मुख हैं किन्तु उत्तरार्ध के रूप में शान्ति को संकल्पित भावी महामानवों की पीढ़ी यह आश्वासन दिलाती है कि जो कुछ अभी दिखाई दे रहा है वह क्षणिक है । परिवर्तन की गतिशीलता यह बताती है कि इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य लेकर आ रही है व उसमें भारत की प्रमुख भूमिका होगी । जो डॉ० काप्रा के चिन्तन के मूल में निहित परोक्ष प्रेरणा को समझेंगे, वे इनके इस कथन पर अविश्वास नहीं करेंगे ।

भारत का भविष्य

भारत का भविष्य क्या है ? यदि इस विषय पर विचार किया जाय तो पता चलेगा कि भिन्न-भिन्न विचारकों, समाजशास्त्रियों, अर्थवक्ताओं, मौसम विज्ञानियों, भविष्यवक्ताओं एवं अन्तरद्रष्टाओं ने अपने-अपने ढंग से इसी एक तथ्य को भिन्न-भिन्न रूप में रखने का प्रयास किया है कि वर्तमान के संकटकालीन दौर के आधार पर भारत का भविष्य नहीं आँका जाना चाहिए वरन् ऐसा कुछ निष्कर्ष निकालने से पूर्व उसके आध्यात्मिक विरासत और प्राचीन इतिहास को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए । वे कहते है कि कई बार आँखें जो कुछ देखती हैं वह सच जान पड़ने पर भी सत्य नहीं होता । इसका कारण उस सूक्ष्म दृष्टि का अभाव है, जो सत्य और तथ्य को पहचान सके ।

भारत के संदर्भ में तथ्यान्वेषियों के इस तर्क में काफी बल है । निश्चय ही अपना देश इन दिनों कठिन दौर से गुजर रहा है एवं आन्तरिक विद्वेषों, अन्तर्विग्रहों में इस कदर उलझा हुआ है जिसे देखते हुए दृश्य रूप में तो ऐसा लगता नहीं कि वह कभी आगामी समय में जल्द ही उनसे उबर कर ऊपर उठ सकेगा, पर इस बात को भी झुठलाया नहीं जा सकता कि घनघोर घटाटोप के आये बिना भी शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी से राहत पायी जा सकती है । सुख से पहले दुःख और सफलता से पूर्व विफलता का आना सुनिश्चित है इतने पर भी यह स्थिर मान्यता नहीं बना ली जानी चाहिए कि यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थायी स्थिति है, वरन् सोचा यह जाना चाहिए कि अब उत्कर्ष का समय निकट आने वाला है । प्रसव-पीड़ा को देखकर यदि कोई यह अनुमान लगा बैठे कि यह तो ऐसी व्यथा जान पड़ती है जिसका शायद समाधान तुरंत आप्रेशन ही हो तो उसकी बुद्धि पर तरस ही आयेगा । भारत के भविष्य को वर्तमान के आधार पर कोसने वाले लोगों की बुद्धि और चेतनात्मक स्तर को इससे ऊँचा नहीं माना जाना चाहिए ।

दूसरी ओर ऐसे सूक्ष्मदृष्टाओं की भी कमी नहीं, जिनने भविष्य के गर्भ में परिपाक हो पड़े सूक्ष्म घटनाक्रमों को समय से पूर्व देखकर उसके उज्ज्वल भविष्य की भविष्यवाणी की है । ऐसे ही एक दृष्टा हुए हैं मैक्यार्ज बण्डी । उन्होंने जॉन गुलर की पुस्तक ''रिट्रीट फ्रॉम डूग्सडे'' की समीक्षा करते हुए अपना मन्तव्य प्रकट किया है कि ''रोमन साम्राज्य के उपरान्त यही सबसे ऐसी लम्बी अवधि है जब इस विश्वव्यापी तनाव शैथिल्य (देतान्ते) की स्थिति देख रहे हैं । वे लिखते हैं कि मानव जाति ने इस बात को भलीभाँति समझ लिया है कि युद्ध ही सृष्टि और उसकी उन्नति का सबसे बड़ा शत्रु है, अतः अब विश्व को शान्ति की आवश्यकता है । वे बलपूर्वक अपनी बात को स्वीकारते हुए कहते हैं कि मेरी अन्तर्दृष्टि यह स्पष्ट देख रही है कि संसार में अब कोई हिटलर, मुसोलिनी या अन्य कोई एण्टी क्राइस्ट अथवा कोई साम्राज्यवादी एम्पायर जन्म नहीं लेगा । यदि जन्म लिया भी तो वह करूणा का सागर कोई एक महामानव होगा जिसका लक्ष्य विनाश नहीं विकास-घृणा नहीं, विश्व बन्धुत्व होगा और यह महामानव भारत ही पैदा कर सकता है, क्योंकि उसकी सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक दृष्टि इतनी व्यापक और गहराई लिये हुए है कि इससे कम में विश्व-शान्ति और उज्ज्वल भविष्य की बात करना आकाश कुसुम खिलाने जैसा सिद्ध होगा ।

सन् १९८९ की ''टाइम'' मैगजीन में इसी आशय का मंतव्य प्रकट करते हुए एक निबन्ध प्रकाशित हुआ है । जिसका शीर्षक है ''सुपर इण्डिया'' । इसके लेखक एस० एच० मुनरो लिखते है कि यों तो पश्चिम में भारत की छवि एक अन्धविश्वासी, रूढ़िवादी देश के रूप में हो पर अब इसे इस प्रकार की संज्ञाओं द्वारा देर तक उपेक्षित नहीं रखा जा सकता, क्योंकि इसी भारत से एक ऐसे महाभारत-विशाल भारत का उदय होने जा रहा है जिसकी आध्यात्मिक शक्ति देखते-देखते समस्त विश्व को अपना अंकशायिनी बनाने जा रही है ।

भारत विश्व की अगुवाई करेगा

-हरमन कॉन, मागरिट मीड

''दुनिया कहाँ जा रही है ?'' इस शीर्षक से फिल्म बना रहे अमेरिकन टेलीविजन संवाददाता केल्विन सैण्डर्स ने डा० मागरिट मीड (अब स्वर्गीय) हरमन कॉन एवं विलियम थॉमसन का इंटरव्यू कुछ वर्ष पूर्व लिया था । यू.एस.आई.एस. द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''स्पॉन'' में छपे इस साक्षात्कार में अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री की अध्यक्षा, नृतत्व विज्ञानी स्व० मागरिट मीड तथा हडसन फ्यूचरॉलॉजी इंस्टीट्यूट के निदेशक हरमन कॉन ने यह आशावादी भविष्यवाणी की कि निश्चित ही तृतीय विश्व का भविष्य उज्जवल है । उसे अंततः पूरी मानवजाति का नेतृत्त्व जो करना है । उनका कहना था कि इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेशकर जो पीढ़ी भविष्य का फैसला करेगी, वह भारत, जापान व चीन में जन्म ले चुकी है । इन तीनों देशों का अगुआ भारत होगा एवं यह राष्ट्र पाश्चात्य देशों की अनावभरी, ग्लैमर भरी दुनिया से विश्व मानवता को उबार कर विकेन्द्रीकृत-प्राकृतिक जीवन-व्यवहार की नीति सम्बन्धी मार्गदर्शन करेगा । वे कहते हैं कि हमारी भविष्यवाणी तीरतुक्का नहीं, बल्कि आँकड़ों व वर्तमान की गतिविधियों पर आधारित है । हरमन कॉन का मत था कि गांधीवादी अर्थशास्त्र ही अगले दिनों विश्व की अर्थ सम्बन्धी आचार संहिता बनेगा। ''पूर्व की अध्यात्म प्रधान भौतिकता से समन्वित एक समग्र विश्व संस्कृति का अगले एक दशक में विकास'' वे एक सुनिश्चित संभावना कहते है । इसे उनने ''पैथेगोरियन सिन्थेसिस'' नाम दिया है ।

भारत विश्व का मार्गदर्शन करेगा

इस शीर्षक से एक समाचार पिछले दिनों समाचार पत्रों में छपा था जिसमें अमेरिका में बसे भारतीय आर्थिक विशेषज्ञ श्री खीबत्रा ने कहा था कि ''इक्कीसवीं सदी में विश्व का नेतृत्व भारत करेगा'' । उनका मत है कि पूँजी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

का अनियंत्रित निवेश पाश्चात्य देशों की आर्थिक व्यवस्था को ले डूबेगा एवं यह ''ग्रेट डिप्रेशन ऑफ १९९० के रूप में अगले दो वर्षों में सामने आएगा । साथ ही उनने यह भी कहा है कि आर्थिकी की, ''प्रोग्रेसिव युटिलाइजेशन थ्योरी'' के अनुसार भारत अपने संसाधनों का सुनियोजित उपयोग करते हुए विश्व की आर्थिक मण्डियों का नियन्त्रण अपने हाथ में ले लेगा एवं इस सदी के अंत तक एक महाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आयेगा । इस का मूल आधार होगा-भारत की आध्यात्मिक विरासत तथा बड़ी संख्या में उपलब्ध सुनियोजित बुद्धि-कौशल । यह एक सुविदित तथ्य है कि श्री बत्रा की सभी भविष्यवाणियों को विश्व भर में बड़ी गंभीरता से लिया जाता है क्योंकि वे सांख्यिकी एवं अर्थशास्त्र के तर्कसम्मत सिद्धान्तों पर आधारित होती हैं।

भारत: एक उभरती हुई महाशक्ति

'टाइम' पत्रिका ३ अप्रेल १९८९

''टाइम'' पत्रिका को विश्वभर में एक प्रामाणिक न्यूजमेगजीन के रूप में मान्यता प्राप्त है । शीघ्र ही अपने १०० वर्ष पूरे करने जा रही यह पत्रिका अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का विहंगावलोकन कर एक संतुलित, निष्पक्ष विवेचना प्रस्तुतकर उनके भविष्य पर प्रभावों का भी विश्लेषण करती है । अभी पिछले दिनों ही ३ अप्रेल को प्रकाशित इसका अंक भारत पर विवेचना लिए हुए आया है व इसने मुख्य शीर्षक दिया है—''सुपर इण्डिया, द नेक्स्ट मिलिट्री पॉवर ।''

''पिछले कुछ वर्षों में भारतवर्ष इतनी तेजी से एक महाशक्ति के रूप में उभर कर आया है कि अब रूस, चीन, अमेरिका, फ्रांस जैसी महाशक्तियां इसकी उपेक्षा नहीं कर सकतीं । सियाचिन ग्लेशियर पर पाकिस्तान को पीछे धकेलना, श्रीलंका में प्रवेश कर आतंक से मुक्ति दिलाना, मालदीव में हुई क्रांति को निरस्त कर अब्दुलगयूम की सरकार को पुनः प्रतिष्ठित कर देना इस महाशक्ति की इस चेतावनी का द्योतक है कि अब भारत को अविकसित पिछड़ा कह कर उपेक्षित नहीं किया जा सकता । भारत सैन्य शक्ति के आधार पर अब विश्व में चौथे नम्बर पर है—क्रमशः सोवियत रूस (५० लाख) चीन (३२ लाख), अमेरिका (२१ लाख) ट्रप्स के बाद भारत है जिस के पास १४ लाख प्रशिक्षित सुसज्जित सैन्यशक्ति है । वे कहते हैं कि प्रमुख यह नहीं कि संख्या बल के आधार पर भारत को महाशक्ति माना जाय, बल्कि प्रधानता इस तथ्य को दी जानी चाहिए कि पूरे विश्व में हर ६ व्यक्ति के पीछे एक भारतीय है ? चिकित्सा—सेना—इंजीनियरिंग—अंतरिक्ष विज्ञान हर क्षेत्र में भारतीय ही भारत में या विदेशों में अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण भारत अभी भी विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है । अपनी आंतरिक समस्याओं से जूझते हुए भी उसने खाद्यान्न उत्पन्न, उपकरणों के निर्यात तथा स्वावलम्बन के क्षेत्र में गत दो दशकों में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है । विश्व शांति के लिए पहल करने वाली यही एक महाशक्ति है जो अन्यान्य शक्तियों में टकराव को रोके हुए है ।''

पश्चिम में तो भारत की एक ही छवि है—अंधविश्वासों से, रूढ़ियों से भरा, घिचपिच, समस्याग्रस्त भारत, किन्तु अपनी कव्हरस्टोरी में श्री मुनरो लिखते हैं कि ''इस भारत के अंदर से एक और महाशक्ति उभर रही है जो क्रमशः समस्याओं से जूझती हुई अपनी आध्यात्मिक विरासत एवं कुशाग्र बुद्धिबल के सहारे यदि अगले दिनों विश्व का नेतृत्व करने वाली शक्ति बन जाय तो किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए ।'' इसे दैवी चेतना का—महाकाल का प्रवाह ही कहना चाहिए जो यह युगान्तरकारी परिवर्तन ला रहा है एवं संगठित जनशक्ति के सहारे दो हजार वर्ष की गुलामी से आजाद होने के बाद अब पुनः भारतवर्ष को महाशक्ति का रूप दे रहा है । जो इक्कीसवीं सदी में प्रमुख शक्ति का रूप ले लेगा ।

अमेरिका के रक्षा मंत्री जान टॉवर ने पिछले दिनों असोशिएटेड प्रेस के हवाले से अमेरिकन सीनेट के समक्ष दिये गए वक्तव्य में कहा कि बहुत शीघ्र हम भारत को एक ''सुपरपावर'' के रूप में उभरते देखेंगे । पूर्व के तीन राष्ट्र भारत, चीन, जापान की प्रौद्योगिकी व कलाकौशल के विकास की गति पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए यह जानकर कि इक्कीसवीं सदी में ये तीनों राष्ट्र समग्र विश्व का नियंत्रण करने लगेंगे एवं सृजन प्रयोजनों में निरत होने की प्रेरणा देंगे । उनने कहा कि कल तक जो भू भाग उपनिवेश थे, वे अपनी सांस्कृतिक विरासत के कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महाशक्ति के रूप में उभर रहे हैं एवं उनमें भी भारत का शीर्ष स्थान होगा । उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उनके अपने राष्ट्र के विकसित होने का मूल कारण भी अमरीका में जा बसे भारतीय व जापानी वैज्ञानिक तथा उद्योगपति हैं जिनका मुकाबला पाश्चात्य स्किल नहीं कर सकती ।

अमेरिका के आर्थिकी विशेषज्ञ एवं कम्प्यूटर के आधार पर सही—सार्थक भविष्यवाणी करने वालों में प्रमुख लिन्डन एच० लारॉय का मत है कि भारत अन्यान्य साधनों की दृष्टि से तो समृद्ध है ही, अपने प्रखर प्रतिभाशाली युवा बुद्धिजीवियों के कारण वह सांस्कृतिक, आर्थिक एवं भौतिक सभी क्षेत्रों में ''सुपर पॉवर'' बनकर ही रहेगा । इस अवधि को उनने १९९५ से २००५ के मध्य बताते हुए पी०टी० आई को दी हुई एक भेंटवार्ता में कहा कि अगले कुछ वर्षों की राजनैतिक उथल-पुथल के बाद अध्यात्म शक्ति सम्पन्न तेजस्वी भारतवासी क्रमशः एशिया एवं फिर सारे विश्व की महाशक्तियों का अगुआ बनकर उन्हें मार्गदर्शन देंगे ।

१२ दिसम्बर १९८८ की ''न्यूजवीक'' पत्रिका के अंक में डा० हेनरी कीसिंगर का एक वक्तव्य छपा है जिसमें उनने यह मन्तव्य व्यक्त किया है कि इस सदी के अंत तक भारत-वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक ऐसी महान शक्ति के रूप में उभर कर आएगा जिसके जिम्मे वे सारे दायित्व होंगे जो इन दिनों अमेरिका पूरे विश्व के लिए निभा रहा है । पूरे मध्य व पूर्व एशिया में उभरती इस शक्ति के अस्तित्व व अंततः नेतृत्व को सभी को स्वीकारना ही पड़ेगा । वे कहते हैं कि इन दिनों भले ही भारत व अमेरिका में मतभेद नजर आता हो, पर अंततः ये दोनों महाशक्तियाँ मिलकर सृजन प्रयोजनों में तत्पर होंगी । डा० कीसिंगर हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रख्यात प्रवक्ता, अमेरिका के भूतपूर्व विदेश मंत्री रहे हैं एवं अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर उच्च कोटि के विशेषज्ञ माने जाते हैं ।

इक्कीसवीं सदी की रूपरेखा

आजकल विज्ञान की एक नई शाखा का विकास हुआ है—''फ्यूचरोलॉजी-भविष्य विज्ञान'' जिसके आधार पर वर्तमान की परिस्थितियों का अध्ययन विश्लेषण कर भविष्य का अनुमान लगाया जाता है । यह सही है कि वर्तमान के आधार पर भविष्य का थोड़ा-बहुत अनुमान लगाया जा सकता है । कोई व्यक्ति यदि आज बुरे कार्य में संलग्न हो तो उसे देख कर यह तर्क दिया जा सकता है उसका आने वाला समय खराब होगा, पर अनुमान गलत भी हो जाता है । समय से यदि वह अपनी गलतियों को सुधा ले, तो उसका भविष्य ऐसा बनता है, जिस पर प्रसन्नता व्यक्त की जा सके ।

कुछ ऐसे ही विचार आने वाले समय के बारे में प्रकट किये हैं न्यूयार्क (अमेरिका) के हडसन इन्स्टीट्यूट के भविष्य विज्ञानियों ने । इन्स्टीट्यूट के निदेशक हरमन कान्ह अपने सहयोगी एन्थोनी विनर के साथ कृषि एवं खाद्य संकट के समाधान के रूप में लिखते हैं कि सन् दो हजार के पहले वाली शताब्दि में मनुष्य अपनी गलतियों को समझ जायेगा और सुधारने के लिए तेजी से प्रयास करेगा इसके अन्तर्गत लोगों की रूचि औद्योगिक उत्पादन की अपेक्षा खेती करने एवं वृक्षारोपण करने की होगी । वृक्ष को खाद, पानी एवं सुरक्षा देकर बड़ा करना लोग अपना व्यक्तिगत दायित्व मानेंगे । इसी को धार्मिक व्यक्ति पुण्य परमार्थ मानेंगे और ऋद्धि-सिद्धियों से सम्पन्न होने की यही कसौटी मानी जायगी कि कौन कितना विश्व वसुधा को संतुलित करने एवं विनाश से बचाने के लिए प्रयासरत रहा । अनेकों संश्लेषित खाद्य पदार्थों एवं पेय पदार्थों का विकास होगा जो मूलतः प्राकृतिक पदार्थ रहेंगे। आज के उद्योगों के विकल्प में मनुष्य ऐसी विद्या खोजने में समर्थ हो जायेगा, जिसका कोई भी विनाशकारी परिणाम उत्पन्न न हो ।

वे ऊर्जा संकट के बारे में लिखते हैं कि जीवाश्म ईंधन स्रोत (कोयला, पेट्रोल, डीजल) समाप्त होने के पहले मानव जाति सूर्य एवं भूतापीय शक्ति को ऊर्जा स्रोत के रुप में बदल देने में समर्थ हो जायेगी और यह ऊर्जा प्राप्ति का सरल एवं सीधा माध्यम बनेगा । सच्चे अर्थों में भौतिक क्षेत्र में उपलब्धि का केन्द्र सूर्य ही होगा । अणु परमाणु का उपयोग वैज्ञानिक वर्ग विनाश के लिए नहीं, अपितु विकास कार्यों में करेंगे जिसका केन्द्र बिन्दु होगा न्यूक्लीयर शक्ति का शांतिपूर्वक उपयोग-ऊर्जा का उत्पादन ।

मनुष्य शरीर के जैविक विकास के संबंध में उनकी मान्यता है कि मानव समाज धीरे-धीरे एक नई प्रजाति की ओर बढ़ रहा है जो सन् २००१ तक अपने चमत्कारी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप में सामने आयेगा । वंशानुक्रम के परिवर्तन को लोग आश्चर्य की दृष्टि से देखेंगे, जिसकी रूचि भौतिकवाद की ओर न होकर अध्यात्म की ओर होगी । स्वस्थ रहने के नये तरीके, वजन घटाने के लिए प्राकृतिक माध्यम, स्वप्नों का सदुपयोग, मनुष्य के अंग अवयवों का प्रतिरूप जो संकट में काम आ सके तथा वैचारिक आदान-प्रदान का मस्तिष्कीय तरंगों द्वारा प्रयोग, जिससे लोग अध्यात्म की ओर रुचि रखने लगेंगे । जनसंख्या अभिवृद्धि को रोकने के लिए समय-नियम से जन्म दर को रोकने की नई एवं प्राचीन विद्या के प्रति विश्वास उत्पन्न होगा ।

समूचा विश्व एक परिवार के रूप में विकसित होगा तब अपराधियों की संख्या स्वयं ही कम हो जायेगी । भ्रातृभावना जन-जन के मनों को आन्दोलित करेगी और वाध्य करेगी कि वह न अनीति बरते और न हीं इसे समर्थन दे । ब्राह्मणत्व पुनर्जीवित होगा, उसका एक ही आधार रहेगा कि किसने अपनी आवश्यकता को कम किया और कम साधनों में निर्वाह किया ।

सभी राष्ट्र एक होकर जल एवं वायु प्रदूषण के लिए सामूहिक उपचार की बात सोचेंगे, क्योंकि इन दोनों का प्रदूषण किसी-न-किसी रुप में समूचे विश्व को प्रभावित करेगा । इस प्रकार भौगोलिक सीमा बन्धन न रहेगा और सभी राष्ट्र अपनी-अपनी समस्याओं का एक साथ मिल बैठ कर समाधान सोचेंगे, तब एक विश्व एवं उसकी एक व्यवस्था की कल्पना साकार हो जायेगी । यह वही समय होगा, जिसे भविष्य वक्ताओं ने ''इक्कीसवीं सदी बनाम् उज्ज्वल भविष्य'' का सम्बोधन दिया है ।

इक्कीसवीं सदी का सार्वजनीन वाहन–साइकिल

आज विश्व के लगभग ४० प्रतिशत ऊर्जा स्रोत यातायात के संचालन में ही खर्च हो जाते हैं । प्रतिदिन दो करोड़ बैरल से भी अधिक ईंधन इसी क्षेत्र में खप जाता है । तेल के भण्डार सीमित हैं । यदि ईंधन की खपत इसी तरह बढ़ती रही तो अगले दिनों ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोत तो समाप्त होंगे ही, साथ ही ईंधन से चलने वाले द्रुतगामी वाहन भी उपयुक्त आवश्यकता न जुटा पाने और प्रदूषण फैलाने के कारण बेमौत मरेंगे । ऐसी दशा में यातायात का सर्वोपयोगी वाहन साइकिल ही रह जायगा ऐसा विशेषज्ञों का मत है ।

वाशिंगटन स्थित 'वर्ल्ड वाच इन्स्टीट्यूट' नामक अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों ने अपने एक व्यापक अध्ययन में यातायात के लिए साइकिल को सबसे उपयुक्त वाहन बतलाया है । भारत एवं चीन जैसे विशाल आबादी वाले देशों की अधिकांश जनता अभी भी अन्य साधनों की अपेक्षा साइकिल पर निर्भर करती है । सुप्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक मर्सिया लोव ने इसे इक्कीसवीं सदी का उपयुक्त वाहन बतलाया है और कहा है कि यह एक विडम्बना ही है कि विकासशील देश जहाँ मोटर गाड़ी खरीदने से बचते हैं, वहीं निर्धन देश अपनी गाढ़ी कमाई का अधिकांश भाग मोटर यातायात पर खर्च कर देते हैं। कितने ही व्यक्ति ऋण लेकर भी गाड़ी खरीदने से नहीं चूकते । उनका कहना है कि अब समय आ गया है, जब मनुष्य को सोचना होगा कि मोटर उद्योग के लिए पेट्रोलियम ईंधन की सम्पदा सीमित है, उसके स्रोत सिकुड़ते जा रहे हैं, अतः मँहगे वाहनों की अपेक्षा सस्ते एवं सर्वसुलभ हलके वाहन साइकिल को ही क्यों न अपनाया जाय ? भारत को उन्होंने साइकिल उद्योग में सबसे बड़ा निर्माता बताया है और कहा है कि वह साइकिल यातायात को बढ़ावा देकर सारे विश्व में इसके प्रचलन को प्रोत्साहन दे सकता है । इससे पर्यावरण में संव्याप्त विषाक्तता को और अधिक बढ़ने से रोका ही नहीं जा सकेगा, ईंधन पर से निर्भरता भी घटेगी और उस बचत की ऊर्जा को अन्य आवश्यक मदों पर खर्च किया जा सकेगा ।

विज्ञानवेत्ता मर्सिया लोव के अनुसार भारत की तरह ही इन दिनों चीन एवं जापान में भी साइकिल यात्रा का प्रचलन बढ़ा है । न्यूयार्क की जनता भी अब मोटर कारों की अपेक्षा साइकिलों से यात्रा करना अधिक पसन्द करती है । वे आगे कहती हैं कि छोटी दूरी की यात्रा के लिए साइकिल सर्वोत्तम वाहन है, किन्तु लम्बी दूरी की यात्रा को प्रायः थकाने वाला एवं अधिक समय लगाने वाला माना जाता है, पर पश्चिम जर्मनी के कील स्थित तकनीकी विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों ने इस समस्या का भी समाधान खोज निकाला है । उनने एक ऐसी स्वचालित साइकिल विकसित की है, जो कार्यक्षमता में स्कूटर या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मोटर साइकिल से किसी भी प्रकार कम नहीं है, परन्तु उसमें पेट्रोलियम जैसे ईंधन प्रयोग नहीं होते। उनका संचालन सौर ऊर्जा से होता है, जो एक छोटे आकार की डी०सी० मोटर में एकत्र करके चलने वाली यह साइकिल प्रति घण्टे ४५ किलोमीटर की गति से लगातार तीन घण्टे तक चल सकती है। कुछ समय के लिए सूर्य ऊर्जा बटोरने के लिए छोड़ देने पर मोटर फिर सक्रिय हो जाती है। इस बीच इससे सामान्य साइकिल का काम लिया जा सकता है। वैज्ञानिकों का यह कहना है कि अगले दिनों इस तरह के वाहनों का प्रचलन हो जायगा तब लोग मोटर वाहनों की अपेक्षा साइकिल सवारी को अधिक प्रमुखता देंगे।

एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व भर में दुपहिया वाहनों में अब साइकिल को अधिक लोकप्रियता मिलती जा रही है। उसमें सुधार विकास के वैज्ञानिक प्रयत्न भी चल रहे हैं। साइकिल यात्रा को प्रोत्साहन देने के लिए लन्दन की एक कम्पनी ने तो अपने उन कर्मचारियों को वाहन भत्ता देने की योजना बनायी है, जो ईंधन से चलने वाले वाहनों का प्रयोग न करके साइकिल प्रयुक्त करते हैं। कम्पनी मालिकों का कहना है कि इस हल्के वाहन को खरीदने और उसके रखरखाव में न तो भारी राशि ही खर्च करनी पड़ती है और न ही ईंधन पर निर्भर रहना पड़ता है। इसे चाहे जहाँ ले जाया जा सकता है और आवश्यकता पड़ने पर कन्धे पर भी उठाया जा सकता है। दिन भर कुर्सियों पर बैठकर काम करने वालों का तो साइकिल यात्रा से अच्छा खासा व्यायाम भी हो जाता है।

प्रदूषण की बढ़ती विभीषिका, तेल की कीमतों में निरन्तर होती बढ़ोत्तरी और आगामी कुछ दशकों में तेल-स्रोतों के सूख जाने की संभावना को देखते हुए अब आवागमन और यातायात की सुविधा के लिए ध्यान अनायास साइकिल की ओर खिंच जाता है। आज एकमात्र साइकिल ही ऐसा वाहन है, जो उपरोक्त सभी समस्याओं से पूर्णतः मुक्त है। वह न तो प्रदूषण फैलाती है, न अधिक मँहगी पड़ती है, साथ ही शहरों की चौड़ी सड़कों के अतिरिक्त गाँवों की सकरी पगडण्डियों में भी आसानी से चलायी जा सकती है। ऐसी दशा में यदि उसे आगामी सदी के महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय वाहन की संज्ञा दी जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होनी चाहिए।

तेल चालित वाहनों के साथ सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण की है। चाहे वह मोटर साइकिल हो, तिपहिया वाहन अथवा कार, बस जैसी गाड़ियाँ-सभी दो प्रकार के प्रदूषण फैलाने में विशेष भूमिका निभाती हैं। प्रथम तो इनमें ईंधन के रूप में प्रयुक्त होने वाला पेट्रोल, डीजल जब इंजन में जाता है, तो कई प्रकार की विषाक्त गैसें वातावरण में छोड़ता है, फलतः हवा प्रदूषित होती है जिसका प्रतिकूल असर स्वास्थ्य पर पड़ता है और तरह-तरह की बीमारियाँ पनपती हैं। आज विश्व का सबसे प्रदूषित शहर जापान का टोकियो नगर माना जाता है, पर इन सब के लिए वहाँ का अधिकतम पेट्रोल, डीजल चालित वाहन ही जिम्मेदार हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता, किन्तु इनकी भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इसमें कोई दो मत नहीं है। दूसरे ये शोर भी बहुत अधिक फैलाती हैं। कई बार तो बिना साइलेंसर की गाड़ियाँ चलाने से इतना तीव्र कोलाहल उत्पन्न होता है कि हृदय रोगियों पर विपरीत असर पड़ता है। इसी कारण विश्व के अनेक बड़े नगरों में शोर की एक निश्चित सीमा निर्धारित की गयी है, उससे अधिक ऊँचा स्तर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना गया है और अपराध की श्रेणी में गिना जाता है।

साइकिल इन दोनों प्रकार के प्रदूषणों से मुक्त है, अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से निरापद और अधिक लाभकारी मानी जाती है। वह व्यायाम की आवश्यकता की भी पूर्ति करती है, जो कि ईंधन चालित वाहनों से पूरी नहीं हो पाती है। कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता डा० ई० ग्रीफिथ के अनुसार लम्बे समय तक बराबर ईंधन चालित गाड़ियों में सफर करने से यात्रियों को रीढ़ की हड्डी सम्बन्धी अनेकानेक प्रकार की परेशानियाँ हो सकती हैं। डॉ० ग्रीफिथ इस निष्कर्ष पर एक सर्वेक्षण के बाद पहुँचे। अपने अनुसंधान के दौरान उन्होंने पाया कि कार एवं अन्य प्रकार के स्वचालित वाहनों से लम्बे काल तक यात्रा करने वाले लोगों में इसकी संभावना ७० से ८० प्रतिशत तक होती है, जबकि ३० से २० प्रतिशत लोगों के ही इस दुष्परिणाम से बचे रहने की गुंजाइश होती है। इसका कारण बताते हुए वे कहते हैं कि ऐसे वाहनों में लम्बे समय तक यात्रियों को झुककर बैठने और अंग-अवयव के निष्क्रिय पड़े रहने से ही इस प्रकार की तकलीफ की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शुरूआत होती है । जबकि दैनिक जीवन में साइकिल का प्रयोग करने वाले लोगों में से नगण्य जितने लोगों में इस प्रकार की तकलीफें देखी गयीं । फिलहाल इस अध्ययन से यह ज्ञात तो हो ही गया है कि साइकिल न केवल स्वचालित वाहनों की हानियों से हमें बचाती है वरन् आज के व्यस्त जीवन में व्यायाम की आवश्यकता भी भली-भांति पूरी करती है ।

आर्थिक दृष्टि से भी यह उतनी मँहगी नहीं कि एक औसत स्तर का नागरिक इसका क्रय-भार वहन न कर सके । इसके अतिरिक्त इसके रख-रखाव में भी आसानी रहती है । टूट-फूट की मरम्मत भी थोड़े ही पैसों में संभव हो जाती है, यदि कोई तनिक इसकी जानकारी रखता हो तो वह स्वयं भी इस प्रकार की मरम्मत कर पैसे की बचत कर सकता है, जबकि पैट्रोल चालित गाड़ियों के साथ यह बात नहीं । प्रथम तो सामान्य आय के व्यक्ति के लिए वह शेखचिल्ली का सपना बनी रहती है, द्वितीय उसके रख-रखाव में प्रति वर्ष सैकड़ों रुपये लग जाते हैं, इसके अतिरिक्त ईंधन का खर्चा अलग । साइकिल का एक अन्य लाभ यह है कि आकार-आयतन में छोटी होने के कारण उसे भीड़ भरे मार्ग में भी आसानी से चलाया जा सकता है, जो ईंधनयुक्त गाड़ी द्वारा संभव नहीं ।

साइकिल के इन सभी लाभों और पेट्रोल चालित गाड़ियों की हानियों को समझते हुए साइकिल को इक्कीसवीं सदी का लोकप्रिय वाहन बनाने की दिशा में चीन ने सराहनीय कदम उठाते हैं । वही प्रथम है, जिसने उसे इतना प्रोत्साहित किया है । इसी के परिणामस्वरूप आज वहाँ गाँवों में ही नहीं, शहरों में भी वह लोकप्रिय हो सकी है । गाँव में तो वहाँ के आवागमन का यह प्रमुख साधन है ही, शहरी क्षेत्रों में भी अब कारों की तुलना में बच्चों को आगे-पीछे बैठाये शहर की सड़कों पर घूमते देखा जा सकता है । वहाँ की सड़कों पर घूमते देखा जा सकता है । वहाँ की सड़कों को इस दृष्टि से इतना चौड़ा बनाया गया है कि साथ-साथ तीन-चार साइकिलें भी वाहनों के अतिरिक्त चल सकें । एक आँकड़े के अनुसार सन् १९८७ में वहाँ लगभग ३० करोड़ साइकिलें और १२ लाख ईंधन चालित गाड़ियाँ थीं, अर्थात् २५० साइकिलों के पीछे एक वाहन जबकि भारत में ३० साइकिलों के पीछे एक गाड़ी अर्थात् लगभग ५ करोड़ साइकिल और १५ लाख गाड़ियाँ । इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि चीन में पेडल पावर कितनी जनप्रिय हुई है, जबकि अपने देश में इसे उपेक्षा और हीनता की दृष्टि से देखा जाता है । वैसे अब अमेरिका में भी यह मुहिम चल पड़ी है और बड़ी संख्या में साइकिल यात्रियों को वहाँ सड़कों पर देखा जा सकता है, किन्तु इस क्षेत्र में चीन की तुलना में अभी वह काफी पीछे है । वहाँ अभी भी प्रति तीन व्यक्ति के पीछे एक कार का औसत बैठता है । पश्चिम में नीदरलैण्ड ही एक ऐसा देश है, जहाँ इसका प्रयोग क्रान्ति स्तर पर शुरू हुआ है । वहाँ की जनसंख्या डेढ़ करोड़ है, जबकि साइकिलें एक करोड़ पच्चीस लाख, अर्थात् प्रति व्यक्ति एक से थोड़ा ही कम । अपने देश में बीस व्यक्ति के पीछे एक साइकिल आती है । ग्रेनिनजेन वहाँ का एक प्रमुख शहर है, जिसमें पचास प्रतिशत से भी अधिक दैनिक यात्रा साइकिलों से सम्पन्न की जाती है, जबकि दिल्ली में इसका दैनिक प्रयोग २० प्रतिशत है ।

अपना देश गरीब है । यहाँ प्रति व्यक्ति आमदनी भी विकसित देशों की तुलना में कम है । ऐसी स्थिति में यहाँ के लोगों के लिए सर्वसुलभ, सस्ता और भौगोलिक दृष्टि से भी उपयोगी वाहन साइकिल ही हो सकता है। इसके प्रचलन से पेट्रोल-डीजल गाड़ियों के साथ जुड़ी समस्या भी सुलझ जायेगी और सम्पन्न-निर्धन के भेदभाव के अभिशाप से भी लोग बचे रह सकेंगे । उनमें एकता-समता की भावना पनप सकेगी । वैसे साइकिल उत्पादन के क्षेत्र में यह सर्वोपरि है, पर इसके दैनिक उपयोग के क्षेत्र में अन्य देशों से पीछे है । वैसे भी अब खाड़ी संकट युद्ध रूप में सामने है । यदि यह आगे बढ़ा तो भारत सहित अधिकांश देशों को तेल संकट का सामना करना पड़ेगा और यदि किसी प्रकार यह रुक भी जाता है तो भी प्रश्न यह उठता है कि आखिर खाड़ी के ये तेल भण्डार समस्त विश्व का पेट कब तक भरते रह सकेंगे । कभी न कभी तो अगले दिनों इन्हें चुकना ही है । ऐसी स्थिति में संभावित विकल्प अभी से ढूँढ़ लेने और उसका उपयोग शुरू कर देने में ही उस कष्टकारक परिस्थिति से बचा जा सकता है, जिसमें आग लगने के बाद कुँआ खोदने की बात सोची जाती है । ऐसी दशा में न सिर्फ भारत के लिये समस्त विश्व के लिए साइकिल ही इसका एकमात्र विकल्प हो सकता है । विशेषकर भारत जैसे विपन्न देश के लिए इसे प्रोत्साहित करना आवश्यक भी है और अभीष्ट भी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२१ वीं सदी में कैसी होगी संचार व्यवस्था ?

पिछले दिनों पी०टी०आई के हवाले से प्रकाशित एक समाचार के अनुसार ''वर्ल्ड फ्यूचर सोसायटी'' की एम्पोकिया कन्सास (यू०एस०ए०) में एक सेमीनार में बताया गया कि ''अगले दिनों मानवी मस्तिष्क की प्रस्तुत क्षमताओं का इतनी तेजी से विकास होगा कि व्यक्ति-व्यक्ति के बीच सम्पर्क का माध्यम तार नहीं मस्तिष्कीय न्यूरॉन्स से प्रवाहित होने वाली अल्फा तरंगें होंगी। क्रमशः तनाव उद्विग्नता के शमन हेतु अधिक से अधिक पाश्चात्य संस्कृति के लोग प्राच्य अध्यात्म की योग साधनाओं का आश्रय लेकर अपनी मस्तिष्कीय क्षमताओं को और प्रखर बनायेंगे ताकि ब्रेनवेव्स की परस्पर ट्यूनिंग हो सके । यह असंभव, कपोल कल्पना प्रतीत होने वाली कार्य शैली इस तेजी से जनसाधारण द्वारा क्रियारूप में परिणत की जाने लगेगी कि सम्प्रेषण माध्यम विकसित अतीन्द्रिय सामर्थ्य के रूप में बिना तारों के जंजाल, सेटेलाइट्स आदि के ऐसा भी होता है इस पर सभी आश्चर्य करने लगेंगे'' उपस्थित सभी भविष्य विज्ञानियों ने वक्ताओं के मन्तव्यों का अनुमोदन भी किया ।

ऐसी होगी इक्कीसवीं सदी की दुनिया

मद्रास में जन्मे ब्रिटिश नागरिक ''राबर्ट वॉल्ड,'' जिनकी गिनती विश्व के जाने माने भविष्य विज्ञानियों में होती है, ने अपनी पत्नी के साथ एक पुस्तक लिखी है ''टेम्स १९९४ ।'' वे अपनी इस क्रान्तिकारी पुस्तक में लिखते हैं कि ''आने वाले दिनों में संचार माध्यम एक व्यापक क्रान्तिकारी मोड़ से गुजरेंगे । टेलीविजन के माध्यम से अखबार पढ़े जायेंगे जिन्हें मुद्रित करके भी टेलीविजन पर देखे जा सकेंगे एवं मनोरंजन के स्थान पर टेलीविजन ज्ञान संचार का, लोकमानस के परिष्कार का काम करेगा ।'' सूचना बैंक और इलैक्ट्रानिक डिलीवरी का कार्य भी यही संचार माध्यम करेगा । स्टुडियो में बैठे अध्यापक सुदूर देहातों में बैठे विद्यार्थियों को, नव साक्षरों को ज्ञान-विज्ञान की नवीन जानकारी देते रहेंगे एवं इस प्रकार खुले विश्वविद्यालय की भूमिका निभायेंगे।'' लेखक द्वय कहते हैं कि ''अगले दिनों माँस का विकल्प सोयाबीन तथा समुद्र की काई के रूप में उपलब्ध होने के कारण लोग क्रमशः मांसाहार छोड़ देंगे एवं उनका चिंतन सात्विक होता हुआ चला जायगा । जनसंख्या बढ़ेगी तो स्थान की कमी होगी उसे रेगिस्तानों में शीत गृह बसाकर एवं समुद्र की लहरों पर तैरते हुए शहर बसाकर इस कमी को पूरा कर लिया जायगा । जिस विधि से पौधे भोजन का निर्माण करते हैं उसी विधि से मानव भी प्रयोगशाला में ढेरों भोजन बनाने लगेगा । अगली सदी में शुद्ध हवा के लिए प्रति व्यक्ति ढाई वर्ग मीटर घास उपलब्ध रहेगी एवं लोगों को डाक्टरों की दुकानों पर लम्बी लाइनें लगाने से मुक्ति मिल जायेगी । यह इसलिए कि रोगों के लक्षण, रोगी की स्थिति तथा निदान के परिणाम स्वयं रोगी अपने कम्प्यूटर में भर कर, न केवल अपना बल्कि, ऐसे हजारों व्यक्तियों का नुस्खा तैयार करके दे देगा । संचार उपग्रहों से शल्य चिकित्सा सम्पन्न की जायेगी।''

इक्कीसवीं सदी युवकों की होगी

युवा वर्ष के उद्घाटन भाषण में पिछले दिनों प्रधानमंत्री स्व० श्री राजीव गाँधी ने कहा कि ''भारत में इकहत्तर प्रतिशत जनसंख्या युवा वर्ग की है, भारत के सांस्कृतिक परिवेश में पला-बढ़ा युवा वर्ग जितना शक्तिशाली है उसे देखकर हमें विश्वास करना चाहिए कि आने वाली सदी इन्हीं युवकों की होगी ।''

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन दिनों विश्व में मनीषियों-राजनीतियों को सबसे बड़ा खतरा है-युवा वर्ग पर बढ़ता हुआ दवाओं के जहरीले नशे का शिकंजा! राष्ट्रीय सुरक्षा बजट के समकक्ष ही नई अमेरिकी सरकार ने नशे से लड़ने का बजट रखा है । इससे ज्ञात होता है कि विश्व-मानवता भटकी हुई युवा चेतना से कितनी चिन्तित है । ये वही युवक हैं जिनके विषय में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''आधे भारत के सौ युवक भी जाग जायँ तो सारे विश्व को उलट-पुलट कर रख देंगे ।'' स्वामी जी की वाणी भारत से ही साकार होगी, यह सुनिश्चित लगता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभ्यता का शुभारम्भ

मानवी गरिमा और सभ्यता

सृष्टा ने प्राणि जगत में मनुष्य को अनेक विशेषताओं से युक्त बनाया है । उसका शरीर और मस्तिष्क विचित्र है । खड़े होकर चलना, वाणी की अभिव्यक्ति, संगीत से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधानों और भावनात्मक सम्बन्धों तक अनेक विशेषताएँ एवं विभूतियाँ उसके साथ जुड़ी हुई हैं, परन्तु विभूतियाँ रहती हैं प्रसुप्त स्थिति में । उन्हें प्रयत्न पूर्वक जागृत करना और अभ्यास-स्वभाव में शामिल करना पड़ता है; अन्यथा वे कोयले की खदान में दबे हुए हीरे की तरह अनजान ही पड़ी रहती हैं ।

मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य और कौशल यही है कि मानवी गरिमा के साथ जुड़ी हुई विशिष्टताओं को समझे, अपनाये और उनके आधार पर समर्थ, समृद्ध और सुसंस्कारी बनने का श्रेय प्राप्त करे । ऐसे ढेरों उदाहरण मिल जाते हैं जहाँ परिस्थितियों का रोना रोते हुए प्रगति से वंचित रहा गया । इसके विपरीत ऐसों के भी असंख्य उदाहरण मिल जाते हैं, जिन्होंने परिस्थितियों की घोर प्रतिकूलता के रहते अपनी जागरुकता के आधार पर आगे बढ़ने, ऊँचे उठने के कीर्तिमान स्थापित किए ।

प्रगति की आकांक्षा सभी को है । सफलताएँ हर कोई चाहता है । महत्त्वाकांक्षाएँ सभी के मनों में उठती है, परन्तु उनकी आंशिक पूर्ति ही अधिकांश में हो पाती है। तमाम लोग तो उससे वंचित ही रह जाते हैं । यों इस सम्बन्ध में साधनों के अभाव, सहयोग न जुट पाना, परिस्थितियों का प्रतिकूल रहना ही प्रधान कारण बतलाए जाते हैं, परन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है । यदि ऐसा रहा होता तो साधन सम्पन्न लोग ही सराहनीय सफलताएँ पाया करते, निर्धनों में से किसी को भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ नहीं मिलतीं, परन्तु देखा कुछ और ही गया है । सम्पन्नता और सुविधा वाले दुर्व्यसनों में फँसते, आलस्य प्रमाद का परिचय देते और कुसंगों-दुर्गुणों में ग्रस्त होते देखे जाते हैं । फलस्वरूप वे संचित को गँवा देते हैं और अप्रत्याशित कठिनाइयों में फँस कर दुर्गति के शिकार होते हैं ।

साधनों और परिस्थितियों की प्रत्यक्ष उपयोगिता तो किसी सीमा तक है भी, परन्तु गहरी दृष्टि डालने पर वस्तुस्थिति दूसरी ही दिखती है । मनुष्य के अपने गुण, कर्म, स्वभाव की श्रेष्ठता और निकृष्टता से ही प्रगति अवगति के आधार बनते है । वही अनुकूलता को अपव्यय के आधार पर दुर्गति का निमित्त कारण बना देते हैं और वही प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल देते हैं । इसलिए विचारशील सदा इसी बात पर जोर देते रहते है कि मनुष्य का व्यक्तित्व प्रामाणिक, प्रखर और प्रतिभावान बनाने के लिए, एड़ी चोटी का जोर लगाया जाय । यह सब बन पड़ने पर व्यक्ति ऐसा जीवन्त चुम्बक बन जाता है जो प्रगतिशीलता के तत्वों को खींच घसीटकर उसे प्रचुर मात्रा में अपने भण्डार में भर सके ।

दार्शनिकों, धर्म धुरन्धरों ने सद्गुणों की गणना अपने-अपने ढंग से की है और उनके प्रतिफल को भी अपने-अपने ढंग से समझाया है । व्रत, अनुष्ठान, दान, तप, भक्ति, ध्यान, जप आदि के महत्त्व की बढ़ी-चढ़ी चर्चाएँ होती हैं । उनके प्रतिफल स्वर्ग मुक्ति स्तर के बताये जाते है । ईश्वर दर्शन, ब्रह्म-निर्वाण, ऋद्धि-सिद्धियों के आकर्षण के पीछे यही उद्देश्य रहता है कि मनुष्य इन्हें ध्यान में रखते हुए सद्गुणी बने । सभी तत्वदर्शियों ने सद्गुणों की सम्पदा संचित करके ही आत्मिक प्रगति का शुभारम्भ करने के लिए कहा है । योगाभ्यास में यम नियमों को प्राथमिकता दी गई है । वे और कुछ नहीं, शारीरिक एवं मानसिक, सदाशयता के प्रकार हैं। धर्म के दस लक्षण 'मनु' द्वारा प्रतिपादित किए गये हैं । इन सभी में सद्गुणों पर ही जोर दिया गया है ।

इतना सब होते हुए भी एक प्रश्न बना ही रहता है कि उनका प्रारम्भ किस क्रम से किस प्रकार किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाय? इसके बिना बात बनती नहीं, क्रम-बद्धता का तारतम्य बैठता नहीं । शिक्षा के सर्वांगीण स्वरूप के अन्तर्गत शिक्षार्थी को उच्च कक्षाओं में साहित्य, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि अनेक विषय पढ़ाने पड़ते हैं, किन्तु इन सबसे पहले वर्णमाला का, अक्षरों, मात्राओं का, गिनती पहाड़ों का ज्ञान तो चाहिए ही । ऐसा कोई 'शार्ट कट' नहीं है जिसके आधार पर इस प्राथमिक शिक्षा की उपेक्षा करके सीधे हाईस्कूल, कॉलेज आदि में दाखिला लिया जा सके । ऐसा प्रयास कोई अति उत्साही कर रहा हो तो समझ लेना चाहिए कि उसका समय परिश्रम और उत्साह सभी व्यर्थ जाने वाले हैं ।

विकास क्रमशः ही सम्भव है । बीज अंकुर बनता है, पौधा पेड़ बनता है और फल फूलों से लद जाता है । यह सब परिणति बीज बोने की ही है । आध्यात्मिक और भौतिक, उभय पक्षीय प्रगतियों का बीज तत्व है 'सभ्यता'। यह बहिरंग है । समयानुसार जब यह अंतरंग क्षेत्र में प्रवेश करती है तो 'सुसंस्कारिता' कहलाती है । सिद्धान्त रूप में तो यह भी कहा जाता है कि संस्कारिकता को हृदयंगम करने के उपरान्त सभ्यता की रीति नीति भी व्यवहार में मिलने लगती है । परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव यह बतलाता है कि जन सामान्य में, सुसंस्कारिता के प्रति उमंग पैदा करने के लिए सभ्यता के बहिरंग सूत्रों को ही माध्यम बनाना पड़ता है । अध्यात्म का एक मात्र उद्देश्य, चेतना को उत्कृष्टता अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना है । परन्तु इसके लिए केवल कल्पना करने भर से काम नहीं चलता । जप-जप, ध्यान-धारणा, व्रत-उपवास, आसन-प्राणायाम जैसे शरीरगत प्रयोग और अभ्यास भी करने पड़ते हैं । क्रिया के आधार पर मानस का प्रशिक्षण अधिक सरल सम्भव और स्वाभाविक है ।

अन्तरंग जीवन में दूरदर्शी विवेकशीलता, उचित-अनुचित का निर्धारण, आदर्शों की पक्षधर भाव-संवेदनाएँ जागृत करनी पड़ती हैं । देवत्व इन्हीं के सहारे उभरता है । दिव्य अनुदानों के बरसाने का सुयोग्य इसी आधार पर हस्तगत होता है । इसे सुसंस्कारिता या मानवी संस्कृति कहते हैं। मनुष्य में पाया जाने वाला देवत्व इस पृष्ठभूमि पर उगता और विकसित होता है । चेतनात्मक विकास परिकर का मूल्यांकन इन्हीं मनकों से आँका-नापा जाता है ।

दूसरा पक्ष है सभ्यता । यह प्रत्यक्ष एवं दृश्यमान है । शारीरिक गतिविधियाँ एवं पारस्परिक व्यवहार के आधार पर इसकी जानकारी मिलती है । यह आरम्भिक हैं । क्रिया से चेतना विकसित होती है । इसी से संयम जैसे अध्यात्म निर्धारण में, व्रत उपवास जैसे क्रिया-कलापों को अभ्यास में उतारा जाता है । सभ्यता का अनुसरण करते-करते संस्कृति के भावनात्मक उच्च स्तर तक पहुँचा जाता है ।

चिन्तन और चरित्र अन्तःकरण की सुसंस्कारिता के आधार पर विकसित होता है । नीति-धर्म, पुण्य परमार्थ उसी गहन अन्तराल पर निर्भर है, किन्तु तीसरी धारा व्यवहार है । उसे संपर्क में रहने वालों से शिक्षण अनुकरण द्वारा सीखा जाता है । उसमें आदर्शों का गहन पुट तो रहता है, परन्तु सीखते समय अल्प विकसित लोग अथवा बालक उस तत्व ज्ञान को उतनी अच्छी तरह समझ नहीं पाते । केवल अनुकरण-अभ्यास से ही उसे सीखते रहते हैं । सोने-उठने, खाने-पीने आदि का अभ्यास भी इसी प्रकार होता है । साँचे में खिलौने ढलते हैं और वातावरण के प्रभाव से उस क्षेत्र में रहने वाले अपना स्वभाव उस तरह का बना लेते हैं । यह धीरे-धीरे विकसित होता चलता है और कालान्तर में चरित्र का अंग बन जाता है । यह अभ्यास क्रम, मानवी गरिमा के अनुरूप होने पर शिष्टाचार और प्रतिकूल-अनगढ़ होने पर अनाचार कहा जाता है ।

शिष्टाचार से कुछ ऊँची स्थिति है— सदाचार । उसमें नीति मर्यादा एवं मानवी गरिमा के अनुरूप चिन्तन चरित्र और व्यवहार का ऐसा पुट रहता है जिसके लिए बार-बार सीखने समझने और सुधारने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह स्वभाव का अंग बन जाता है और क्रिया-कलापों में अनायास ही सम्मिलित रहता है । शालीनता इसी को कहा जाता है । सज्जनता यही है । व्यक्ति इसी आधार पर भीतर से संतुष्ट-प्रफुल्ल रहता है और बाहर से उसे श्रेय, सन्मान, सहयोग मिलते रहने का उपक्रम सहज ही बनता रहता है ।

मनुष्य के साथ जुड़ी विशिष्टता परक रीति-नीति, शिष्टाचार है । इसे अन्य प्राणी नहीं जानते, परन्तु मनुष्य को इसे आरम्भिक दिनों में ही सीख लेना पड़ता है । जब तक शिशु शारीरिक दृष्टि से अविकसित विवश है, तभी तक उसे यह छूट रहती है कि मल-मूत्र का विसर्जन चाहे जहाँ करे । जैसे ही उन्हें थोड़ा-थोड़ा बोध होता है, शरीर सक्षम होता है, वैसे ही वे यथा-सम्भव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शिष्टाचार अपनाने लगते हैं । पहले बड़े लोग उन्हें सिखाते समझाते हैं, फिर उस अनुशासन का पालन वे स्वेच्छापूर्वक करने लगते हैं । भूल होने पर जो नाराजी सहनी पड़ती है, उसके कारण भूलों का सुधार होता रहता है । छोटों के साथ, बड़ों के साथ, अपनों और परायों के साथ उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह अपने अनुभव, अपनी सूझ-बूझ से भी सीखना पड़ता है और अभिभावक भी सिखाते रहते हैं ।

यह शिक्षण यदि उपयुक्त स्तर का हुआ तो बालक में सभ्यता के लक्षण उभरते हैं और उसे श्रेय सम्मान, स्नेह सहयोग दिलाकर उत्साहित करते रहते हैं । यह प्रयास यदि सही दिशा में चलता रहे तो वयस्क होने पर वह सज्जनों की पंक्ति में गिना जाने लगता है । उसे समुचित आदर मिलने लगता है और उसकी सामर्थ्य के अनुरूप उत्तरदायित्व बे हिचक सौंपे जाते हैं । स्वयं को भी यह आत्म-विश्वास होने लगता है । उत्साह और साहस इसी आधार पर परिपक्व होते हैं । व्यक्ति अपनी गरिमा का प्रामाणिक परिचय देते हुए मूर्धन्य स्तर तक पहुँचने योग्य बन जाता है ।

यदि इस प्रक्रिया में गड़बड़ी हुई, तो व्यक्ति ढीठ, उद्दण्ड, कटुभाषी, अशिष्ट स्तर का परिचय देने लगता है । अवांच्छनीयता, प्रमाद और असभ्यों जैसी हेय आदतों का पिटारा बन, उसे साथियों की उपेक्षा और भर्त्सना ही नहीं, प्रताड़ना भी सहनी पड़ती है । अपना अनाचार उलटकर अपने ही ऊपर आक्रमण करता है और उस दुर्गति से अपना मन खिन्न और उद्विग्न रहने लगता है। मन को बहलाने के लिए इस विसंगति का दोषारोपण दूसरों पर करने का प्रयास किया जाता है । यह अनगढ़ स्थिति ऐसी है जो किसी को भी गहरा सम्मान सहयोग और विश्वास प्राप्त नहीं करने देती ।

व्यवहार को देखकर किसी के चरित्र का अनुमान लगाया जाता है । चरित्र का पर्यवेक्षण करने पर उसकी आस्थाओं, विचारणाओं, भावनाओं और आकांक्षाओं का परिचय मिलता है । यों उच्चस्तरीय विश्लेषण में चिन्तन को प्रधान, चरित्रों को उसका परिपाक और व्यवहार को उसकी अभिव्यक्ति माना जाता है । यह अपने ढंग का विश्लेषण है, परन्तु यह निश्चित है कि व्यवहार ही किसी की आरम्भिक पहचान कराता है । चरित्र और चिन्तन की जानकारी प्राप्त करने में तो बहुत देर लगती है और गहरी खोज-बीन की आवश्यकता पड़ती है । व्यवहार पहली दृष्टि में ही सामने आ जाता है । दुकान में क्या सामान रखा है, इसकी जाँच-पड़ताल समय साध्य है, परन्तु साइनबोर्ड देखकर रास्ता चलता व्यक्ति भी समझ जाता है कि यहाँ क्या रखा और बेचा जाता है । जिसके पास सम्पर्क साधने का पर्याप्त समय नहीं है, ऐसे अधिकांश लोग किसी व्यक्ति के बारे में लगे हुए अनुमान, उसके व्यवहार की थोड़ी भी गतिविधियों को देखकर लगाते हैं । इस प्रथम मूल्यांकन के आधार पर अगले मूल्यांकन होते हैं । सम्मान तिरस्कार, विश्वास अविश्वास का मन इसी आधार पर बनता है ।

कहना न होगा स्वाभाविक, सामान्य अभ्यास में शामिल व्यवहार किसी को बहुत त्रुटिपूर्ण नहीं लगते । अभ्यास में आ जाने के बाद उनकी समीक्षा करने की जरूरत भी समझ में नहीं आती । ऐसे में सुधार तो बन ही कैसे पड़े ? इसी कमजोरी के कारण अधिकांश मनुष्य शिष्टाचार से अनभ्यस्त, अनगढ़, गये गुजरे और असभ्य स्तर के बने रहते हैं । उसमें किसी को 'तात्कालिक लाभ' भले ही दिखे, पर यह निश्चित है कि अशिष्ट व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा अपना अहित स्वयं ही अधिक कर लेता है ।

अवरोध का निराकरण तो होना ही चाहिए

चुस्त और दुरुस्त रहना सभ्यता का श्री गणेश माना जाना चाहिए । शरीर से चुस्त और मन से दुरुस्त यह अभ्यास उसी प्रकार किए कराये जाने चाहिए जैसे कि आहार विहार, निद्रा, स्नान, मलमूत्र विसर्जन जैसे कार्यों के सम्बन्ध में किए जाते हैं । उसमें कमी या गड़बड़ी तभी आती है, जब व्यक्ति जागरूकता की मौलिक विशेषता से अपने आपको वंचित किए रहता है । तन्द्रा ग्रस्त व्यक्ति के सभी काम अटपटे होते हैं । गहरी नींद में सोया हुआ व्यक्ति अपनी जगह सही होता है । पूर्ण जागृत स्थिति में व्यक्ति मुस्तैदी के साथ अपने काम पूरे करते हुए अभीष्ट उपलब्धियाँ अर्जित करता है । मध्यवर्ती स्थिति बुरी होती है । उसमें अर्ध जागृत और अर्ध प्रसुप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसी अवस्था में शरीर-क्रिया और मनःचेतना किसी प्रकार घसिटती भर रहती है ।

ऐसी स्थिति को प्रकारान्तर से नशे की खुमारी में डूबे मनुष्य के समतुल्य समझा जा सकता है । खुमारी में व्यक्ति उस विचित्र स्थिति में होता है जिसे न तो जागृत कहा जा सकता है और न सोया हुआ । उस स्थिति में उसकी विचित्र हरकतें देखकर लोगों को आश्चर्य होता है कि उसे क्या कहा जाय ? क्या माना जाय ? आलसी और प्रमादी प्रायः इसी प्रकार की अपनी आदतें बना लेते हैं । मदक पीने वाले किसी कोने में विचित्र सनकों में सनकते रहते हैं । यह सनकीपन की बढ़ी-चढ़ी स्थिति है; जो तुरन्त अखरती और पकड़ में आती है, परन्तु उससे हलके स्तर का सनकीपन और भी होता है । उसमें डूबा हुआ व्यक्ति सामान्य कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों को भी भूल जाता है । इन्हें एक विचित्र प्रकार का नासमझ या सनकी कह सकते हैं, जो मानवोचित रीति-नीति अपनाने में प्रमाद बरतते और असभ्य स्तर के बन जाते हैं ।

शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुकों के लिए वर्णमाला याद करना जितना आवश्यक है, उससे भी अधिक आवश्यक है, सभ्यता का श्री गणेश । उस अनिवार्य आवश्यकता की उपेक्षा कर देने पर सभ्य जगत में प्रचलित किसी भी अभ्युदय उत्कर्ष का लाभ उठा सकना कठिन ही नहीं असम्भव भी हो जाता है । अनाचार का रास्ता ही उसके लिए रह जाता है ।

अर्थोपार्जन इन दिनों प्राथमिकता प्राप्त किये हुए है, पर उसमें भी खरीदने वाले ग्राहक से, मँगाने वाले स्टॉकिस्टों से, दुकान सम्हालने वाले कर्मचारियों से व्यवहार तो करना ही पड़ता है । जो अनगढ़ स्वभाव अभ्यास में जुड़ा रहता है, वह सभी संपर्क में आने वालों को भड़काता है । उनके साथ मधुर सम्बन्ध रहने में अनगढ़ता एक बड़ी कठिनाई बन कर राह में आ जाती है । यही बात घर-गृहस्थी के सम्बन्ध में है । परिवार वालों के साथ उपेक्षा, कटुता या तिरस्कार भरा व्यवहार किया जाय तो वे यथा सम्भव बचते रहने का प्रयत्न करते हैं । विवाद खड़ा करनें या कटुता से बचने के लिए उन्हें और कोई उपाय सूझता ही नहीं । वे हटे-हटे, कटे-कटे रहते हैं । फलतः हँसने-हँसाने, विचार विनिमय और सुव्यवस्था बनाने का अवसर ही हाथ से चला जाता है। दोनों पक्षों के बीच ऐसी खाई पड़ती और बढ़ती जाती है जिसके कारण एक घर में रहते हुए, एक चौके में खाते हुए भी, सराय में ठहरने वालों की तरह सब कुछ पराया, हीन, अनचाहा ही दीखता रहता है ।

कारखानों, दफ्तरों में भी यही ढर्रा चल रहा हो तो समझना चाहिए कि साधन, सहयोग के अभाव में उत्पादन घटेगा । जो काम चल रहा होगा उसमें असंख्यों भूलें होती रहेंगी । परस्पर साधन-सम्मान की मनःस्थिति न रहने पर उपेक्षा तो बरती ही जायेगी, ईर्ष्या भी पनपती रहेगी और अवसर मिलने पर चोट किये बिना भी न रहेगी। ऐसे लोग दफ्तर, कारखाने मालिकों के लिए, मजदूरों के लिए, ग्राहकों के लिए, सम्बन्ध रखने वालों के लिए, भारभूत ही बनकर रहते हैं । भीतरी असन्तोष के कारण कोई किसी को सन्तोष दिलाने की स्थिति में नहीं रहता । मात्र सभ्यता के अभाव में लोग समस्याओं के तिल का ताड़ और राई का पहाड़ बना लेते हैं ।

विज्ञजन सदा से इस बात के लिए चिन्तित और प्रयत्नशील रहे हैं कि जन-जन को मनुष्यता की मर्यादा में प्रवेश करने का पाठ शिष्टाचार के रूप में पढ़ाया जाय । यदि यह बीजारोपण सही प्रकार सम्भव हुआ तो व्यक्ति निखरेगा। उसके अन्दर विद्यमान अनेकानेक क्षमताओं, दक्षताओं, को विकसित होने का अवसर मिलेगा । फलतः वह जो भी कार्य हाथ में लेगा उसे सही ढंग से करने और सफलता के ऊँचे स्तर तक जा पहुँचने का सुयोग क्रमशः मिलता चला जायगा । यदि यह मौलिक कमी बनी रही तो स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी जैसे अच्छा बीज न बोए जाने पर, खाद पानी आदि की व्यवस्था करते रहने पर भी निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ ही नहीं लगता ।

किसी का व्यवसाय कुछ भी क्यों न हो, हर हालत में लोगों से सम्बन्ध रखना ही पड़ेगा । इसके लिए चुस्त दुरुस्त की आदतों का बना रहना आवश्यक है । अन्यथा लोग तिरस्कार करेंगे, मूर्ख बनायेंगे, घाटा देंगे और असहयोग जन्य अनेकानेक प्रत्यक्ष परोक्ष कठिनाइयों के निमित्त बनेंगे । दोषारोपण दूसरों पर भी किया जा सकता है; पर अपने को सर्वथा निर्दोष मानना और दूसरों को ही सारी गड़बड़ी का कारण मानना एक ऐसी बुरी आदत है, जिससे अवरोध का समाधान तो निकला ही नहीं, उल्टे उलझनें और भी अधिक उलझ जाती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मानवी प्रतिभा में प्रवेश कराते ही उसके साथ जुड़े हुए आरम्भिक कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों को समझना और अपनाना अनिवार्य रूप से आवश्यक है । इसके बिना जीवन के किसी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकना तो दूर सभ्य समाज का सदस्य कहला सकना भी कठिन है । उस अभाव में उपेक्षा, भर्त्सना और अवनति के अतिरिक्त कुछ पल्ले नहीं पड़ता । इस तथ्य को जिम्मेदारी आरम्भ होने से लेकर, मरण काल तक स्मरण रखना चाहिए। अपने आपको तो इस स्तर का बनाना ही चाहिए, साथ ही जिन किन्हीं के साथ अपनी सघनता हो उसे भी उसी अनुपात में सहमत ही नहीं बल्कि बाधित भी करना चाहिए कि उसे अपने लोक व्यवहार में शिष्टाचार का गहरा पुट लगाए रहने की विद्या अपनानी चाहिए ।

प्राचीन काल में यह प्रकरण हर किसी को समझदारी का उदय होते ही सिखाना आरम्भ कर दिया जाता था । इस सुसंस्कारिता को अभ्यास में उतारने के लिए एक धार्मिक प्रचलन था । ''संस्कार और पर्व'' । हर व्यक्ति की आयु वृद्धि के साथ-साथ संस्कार आयोजन होते थे, उसमें साझेदारी उन सब की होती थी जो उस आयोजन में उपस्थित होते थे । संस्कार, प्रवचन धार्मिक कर्मकाण्डों के माध्यम से उन सब को शिक्षण दिया जाता था । ताकि वे अपने को उस स्तर का ढालें जिसका अनुसरण करते हुए बालक या पालक भी उसी राह पर चल सकें । इस प्रक्रिया को सभ्यता का श्री गणेश भी कहा जाता था ।

इसी का एक दूसरा पक्ष था, पर्व त्योहारों का आयोजन। उन विशेष अवसरों पर विचारशील नर-नारी भावना पूर्वक एकत्रित होते थे और उसके साथ जुड़ी हुई प्राचीन परम्परा एवं अर्वाचीन विधि व्यवस्था को सामयिक संदर्भ में समझा समझाया जाता था। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि संस्कृति के यह आधार स्तम्भ एक प्रकार से लड़खड़ा से गए। निहित स्वार्थों पर उनका कब्जा हो गया। नियम कर्म काण्डों के विधि-विधान इतने जटिल और खर्रीले हो गये कि उनका कब्जा हो गया । नियम धर्मकाण्डों के विधि विधान इतने जटिल और खर्चीले हो गये । उनका भार सह सकना सर्वसाधारण के लिए सम्भव ही न रहा । रूढ़िवादी चिन्ह पूजा तो अभी जहाँ-तहाँ दृष्टिगोचर होती है, पर उनके लिए उत्साह होने के स्थान पर उपेक्षा ने जड़ जमा ली है । इससे सब से बड़ी खराबी यह हुई कि व्यावहारिक सभ्यता के प्रशिक्षण का वातावरण ही एक प्रकार से समाप्त हो गया । फलतः हम सब पढ़े-अनपढ़े, धनी-निर्धन, व्यक्तित्व की दृष्टि से जिस स्थिति में जा पहुँचते हैं, उससे निराशा भी होती है और लज्जा भी आती है ।

समस्या एक देशीय नहीं सार्वभौमिक है । उसे सर्वजनीन भी कह सकते हैं । संसार के मूर्धन्य विचारकों और समाज-सेवियों ने इस पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है । ऐसा उपाय ढूँढ़ने का प्रयत्न किया है कि जन-समुदाय को उस सभ्यता के साथ जोड़ा जाय जो नागरिक एवम् सामाजिक कर्त्तव्यों के बीच सघनता स्थापित करती है । इस अभाव की पूर्ति के बिना वर्तमान आस्था संकट और चरित्र विग्रह हट नहीं सकेगा । प्रगति के स्थान पर पराभव, गौरव के स्थान पर पतन समाज के लिए दुःखदायी वातावरण ही बनाता रहेगा, जो हर दृष्टि से हर किसी के लिए कष्टकारक ही सिद्ध होगा ।

इस संदर्भ में एक युग मनीषी ''वेडेन परवेल'' ने स्काउटिंग नाम के आन्दोलन को जन्म दिया । उसका प्रधान उद्देश्य छात्रों में नागरिक सुसंस्कारिता एवं समाज के प्रति कर्त्तव्यों के परिपालन की भावना और क्षमता बढ़ाना रखा गया । उपयोगिता को देखते हुए संसार के अनेक देशों में उसका प्रचार-प्रसार हुआ । शिक्षा विभागों ने उसे अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया । स्वतंत्र रूप से भी उसकी प्रशिक्षण प्रक्रिया चलती रही । भारत में स्काउटिंग आन्दोलन की शाखा का बीजारोपण अभिवर्धन करने में श्री श्रीराम बाजपेयी ने पूरी लगन के साथ कार्य किया । उसमें भारतीयता के तत्व सम्मिलित किए और उसके प्रयोग-अभ्यास का सिलसिला व्यापक रूप से चलाया ।

इस आन्दोलन के समानान्तर समय-समय पर स्थान-स्थान पर अन्य कई आन्दोलनों का जन्म एवं विकास हुआ । इनमें राष्ट्रीय कैडेट कोर, (एन.सी.सी) राष्ट्रीय समाज सेवक, रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, भारत सेवक समाज-रेड क्रास, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, शिव सेना, आर्य वीर दल, महावीर दल आदि संगठनों की स्थापना हुई और उनका अपने-अपने अनुभव क्षेत्र में विस्तार भी होता रहा । राष्ट्रीय काँग्रेस, लोकदल, जनता पार्टी, दलित संगठन जैसे राजनैतिक संस्थानों ने भी इसी स्तर की अपनी स्वयंसेवी शाखाओं का निर्माण किया है, पर वे, मतभेदों और निहित स्वार्थों के कारण अपने-अपने सीमित प्रयोजनों को आगे रखे रहे । यदि मूल उद्देश्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भुलाया न जाता तो जन-जन में सभ्यता के आरम्भिक चरण को परिपुष्ट करते रहने तक की बात को ही प्रमुख माना गया होता । यदि ऐसा बन पड़ता तो राजनैतिक या सामाजिक धाराओं में से किसी को चुन लेने पर भी कोई हानि न होती, पर अपरिपक्व स्तर के नागरिक मानवी गरिमा को गौण और पार्टी स्वार्थों को प्रधानता देने लगते हैं । फलतः दोनों मे से एक भी उद्देश्य पूरी तरह पूरा नहीं हो पाता । वर्तमान स्थिति में अनेकों स्काउटिंग स्तर के संगठन बने दिखाई देते हैं, पर उन सब का सम्मिलित प्रयास भी इतना नहीं कर पाता कि अपने प्रभाव क्षेत्र के लोगों को नीति, निष्ठा जागरूकता, कर्त्तव्य परायणता, नागरिकता एवं सामाजिकता के सर्वमान्य नियमों को समझने एवं स्वीकार करने में समर्थ हो सकें ।

गिनती गिनने में भूल हो जाने पर उसका एक ही समाधान है कि नए सिरे से गिनना आरम्भ कर दिया जाय। हमें एक सार्वभौम प्रयास आरम्भ करना चाहिए, जो मात्र मानवी संस्कृति को प्रखर, प्राणवान बनाने के लिए काम करें । सभ्यता का श्री गणेश करने की विधा को जन-साधारण के लिए अनिवार्य घोषित करें । छात्रों को प्राथमिकता देना उचित है, पर इस छोटे वर्ग तक किसी सार्वभौमिक आन्दोलन को सीमित कर देने से काम नहीं चल सकता । अपने देश की तो विशेषतया परिस्थितियाँ भिन्न हैं, यहाँ मात्र ३० प्रतिशत जनसंख्या शिक्षित है। उनमें यदि देखा जाय कि जो इन दिनों स्कूल में पढ़ते रहे हैं, तो इन्हें दस पाँच प्रतिशत ही पाया जायगा । केवल उन्हीं को स्काउटिंग सिखा देने से व्यक्ति में सुसंस्कारिता संवर्धन का प्रयोजन पूरा नहीं हो सकता । करोड़ों की संख्या में ऐसे नर-नारी हैं जो बिना पढ़े हैं । वे फिर से पढ़ना आरम्भ करेंगे और प्रशिक्षण के साथ 'स्काउटिंग' जैसे विशेष प्रशिक्षण को सम्मिलित रखेंगे, इसकी आशा कम ही बँधती है । फिर भी यह आवश्यकता अनिवार्य है, जिसके बिना प्रगति रथ पूरी तरह रुक गया है । उसके निराकरण के लिए कुछ उपाय उपचार तो करना ही पड़ेगा । कुछ सामाजिक मार्ग ढूँढ़ना और निकालना ही पड़ेगा ।

सुव्यवस्थित और विकासमान जीवनक्रम

किसी को सजीव, स्वस्थ, सक्रिय तभी माना जा सकता है जब उसके भीतर के अंग अवयव ठीक तरह क्रियाशील हों । इन्द्रियाँ अपना-अपना काम ठीक तरह कर रही हों । मनुष्य आकर्षक, सुन्दर एवं उपयोगी भी तभी प्रतीत होता है, जब शरीरगत स्फूर्ति अपना प्रभाव प्रतिभा का परिचय दे रही हों । इसके अभाव में मुर्दगी छाई रहती है । लगता है किसी ने शक्ति चूस ली हो और मात्र कंकाल किसी प्रकार अपना अस्तित्व बना होने का परिचय दे रहा हो । ऐसे लोग अपने आप में भार भूत होते हैं । दूसरे लोग भी उनसे घनिष्टता स्थापित करने से कतराते हैं । कारण कि हर कोई दूसरों से सहयोग की अपेक्षा करता है, कुछ पाना चाहता है । आदान-प्रदान एक सृष्टिगत स्वाभाविक नियम भी है । इसके अनुरूप अपनी स्थिति बनाए रहने के लिए हर किसी को चैतन्य रहना चाहिए । उसकी सत्ता में सक्रियता और समर्थता का पुट रहना चाहिए । यह स्थिति न बन पड़ रही हो, तो व्यक्ति का अपनी और दूसरों की दृष्टि में अवमूल्यन ही बना रहेगा । ऐसों को अपनी साँसें पूरी करना ही भारी पड़ता है । अस्तु आवश्यक यह है कि अपने को चुस्त दुरुस्त रखा जाय । जागरुकता इसी को कहते हैं । इसी चमक के आधार पर स्तर ऐसा बन पड़ता है कि सही स्थिति में रहा जा सके, ऊँचा उठने और आगे बढ़ने का अवसर मिल सके, दूसरे भी उपयोगी समझें और सहयोग समर्थन देने में उत्साह प्रगट करें ।

व्यक्तित्व को जीवन्त स्तर का बनाए रखने के लिए पाँच गुणों की अपने स्वभाव में, अभ्यास में गहरी जड़े जमाए रहना चाहिए। इन्हीं को सफलता के पंचशील कहते हैं । यह हैं— (१) श्रमशीलता (२) सुव्यवस्था (३) शिष्टता (४) मितव्ययिता (५) उदार सहकारिता । इन पाँचों को पुरानी भाषा में पाँच देवता कहना चाहिए । यह पाँच रत्न भी हैं और पंचामृत भी । व्यक्तित्व के पाँच अंग इन्हें कहा जा सकता है । इनमें से प्रत्येक के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध में अधिक गहराई के साथ अधिक अच्छी तरह स्वरूप एवं प्रतिफल समझने का प्रयत्न करना चाहिए ।

(१) श्रमशीलता— समय का श्रम के साथ ऐसा तालमेल बिठाया जाना चाहिए जिसमें मनोयोग भी सम्मिलित हो, समय को प्रमाद में गँवाते रहने वाले अपने बहुमूल्य क्षणें का बहुत ही स्वल्प लाभ उठा पाते हैं । किसी काम को बेगार भुगतने की तरह उपेक्षा पूर्वक आधे अधूरे मन से किया जाय तो वह बहुत देर में थोड़ा-सा ही बन पड़ता है । दिलचस्पी न रहने, रस न आने की स्थिति में थकान भी जल्दी आती है और जी उचटता रहता है । इस प्रकार मन मार कर किये गए काम अनेक त्रुटियों से भरे हुए होते हैं । क्योंकि उनमें श्रम समय भर लगा, मनोयोग का अभाव रहा । कोई काम सर्वथा सुन्दर तब तक नहीं हो सकता । जब तक उसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर न किया जाय । श्रमशीलता का मोटा अर्थ मेहनत करना भले ही हो । पर उसका वास्तविक तात्पर्य है समय पर सही रीति से समग्र तत्परता और तन्मयता के साथ उसे किया जाना । यह आधार मिल जाने पर काम इस स्तर का बन पड़ता है जो दूसरों की आँखों में भा जाये ।

निष्क्रियता का नाम है, मूर्छना अथवा मृत्यु । सक्रियता ही जीवन का चिन्ह है । सम्पन्नता और सक्रियता का उद्गम उसी को माना जाना चाहिए । शारीरिक आलस्य और मानसिक प्रमाद को लोग सौभाग्य सुविधा, पुण्य फल दैवी अनुग्रह आदि मानते हैं और जिन्हें बैठे-ठाले समय पूरा करने का अवसर मिलता है, उन्हें भाग्यवान कहते हैं, जबकि बात उससे ठीक उल्टी है । पड़े-पड़े चाकू में भी जंग लग जाता है । जिन घरों की निरन्तर सफाई मरम्मत नहीं होती है, उन पर सीलन-सड़न का प्रकोप होता है और अपेक्षाकृत कम समय में ही अपना अन्त कर लेते हैं ।

शरीर और मस्तिष्क के सम्बन्ध में भी यही बात है । यदि दोनों को उत्साह और मनोयोग पूर्वक कार्यरत रहने का अवसर न मिले तो दक्षता का अन्त हुआ ही समझना चाहिए । उत्पादन तो फिर बन ही कैसे पड़ेगा । इसलिए हर किसी को अपने समय की बहुमूल्यता अनुभव करनी चाहिए और उसे श्रमशीलता के साथ जोड़कर समुचित उपलब्धि हस्तगत करनी चाहिए । हाथ में लिए काम को यदि अपनी क्षमता की परीक्षा का अवसर मानकर चला जाय तो निश्चय ही वह अच्छे किस्म का होगा । सर्वत्र उसका समुचित मूल्यांकन होगा । मन उचटने का प्रश्न भी न रहेगा । जिस कार्य में रस आता हो वह अच्छा खासा मनोरंजन बन जाता है । उसमें थकान आना तो दूर उल्टे अधिक उत्साह बढ़ता है । अभ्यास से स्वभाव ऐसा बन जाता है कि श्रम किए बिना चैन ही नहीं पड़ता। ऐसे ही लोग सामान्य आयु प्राप्त करने पर भी इतने महत्त्वपूर्ण कार्य कर लेते हैं, जिस पर दूसरे आश्चर्यचकित हों और समझें कि यह प्रगति किसी देवता के अनुग्रह से हुई है । आदत अपने में तो इस प्रकार की डालनी ही चाहिए । अपने साथ जुड़े हुए या प्रभावित लोगों को भी ऐसा ही अभ्यास कराना चाहिए; ताकि वे ईश्वर प्रदत्त समय सम्पदा को बहुमूल्य समझकर उसका समुचित सदुपयोग कर सकें ।

(२) सुव्यवस्था – दूसरी विशिष्टता है सुव्यवस्था । इसी को सौन्दर्य, शोभा, व सजधज कहते हैं । हर वस्तु अपने सही स्थिति पर, सही रूप में रखी होने पर ही शोभा पाती है, दीर्घकाल तक जीवित रहती है और अपनी कार्य क्षमता बनाए रहती है । यदि उसे अस्त-व्यस्त पटक दिया जाय, जहाँ-तहाँ डाल दिया जाय, उसे नियत स्थान पर साफ सुथरी स्थिति में करीने के साथ न रखा जाय तो वह कूड़े-करकट मात्र लगेगी । खोजने पर अस्त-व्यस्त हो जाने का डर रहेगा । उपकरणों, मशीनों के बारे में यह बात विशेष रूप से लागू होती है । जो उनसे काम लेना भर जानते हैं, बाद में उनकी सफाई सुव्यवस्था आदि का ध्यान नहीं रखते । उनके यंत्र उपकरण दूसरों की तुलना में आधे समय तक ही ठीक-ठाक काम कर पाते हैं और फिर जल्दी ही कबाड़ के ढेर में जा विराजते हैं । यही बात कपड़ों, बर्तनों, पुस्तकों, उपकरणों के सम्बन्ध में भी है । इनमें से कोई भी उपेक्षा बर्दाश्त नही करता, रूठ कर कोप भवन में जा बैठता है । घर परिवार के सदस्यों, सहयोगी कार्यकर्त्ताओं के सम्बन्ध में भी यही बात है ।

उपयुक्त वस्तुओं का या व्यक्तियों का मिलना कठिन माना जाता है, पर वास्तविकता यह है कि किसी अनगढ़ को भी प्रवीण बनाया जा सकता है । चतुर माली सामान्य पेड़-पौधों को सही ढंग से खाद पानी देकर काट-छाँट कर इतना सुन्दर बना देता है कि उस बगीचे की प्रशंसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते ही बनती है । जो आमदनी के अनुरूप खर्च करते हैं उन्हें न कभी पैसे की तंगी सताती है और न कभी कर्जदार बनना पड़ता है । सन्तानोत्पादन के सम्बन्ध में जिन्हें यह ज्ञान रहता है कि कितनों को समुचित समृद्ध पोषण दिया जा सकता है, कितने के लिए सुयोग्य नागरिक बनाने की अपनी क्षमता है, वे सन्तान बढ़ाने के पूर्व हजार बार सोचते हैं और फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं ।

किसने क्या पाया ? कितना पाया ? वह मनुष्य पूर्ण नहीं । कौशल इसमें है, जो भी साधक मिले, उसका श्रेष्ठतम उपयोग कैसे किया जाय ? जो इस कला को नहीं जानते वे अपने समग्र व्यक्तित्व, साधन, उपकरण तथा परिवार को उनके भाग्य भरोसे छोड़ देते हैं और पग-पग पर बर्बादी के दृश्य देखते हैं । सदुपयोग न करा सकना, सुव्यवस्था न बना सकना एक प्रकार से अर्धविक्षिप्तता है, जिसके रहते किसी को भी उपहासास्पद बनना पड़ सकता है । लापरवाही और गैर जिम्मेदारी ऐसे नैतिक अपराध हैं जिसका दण्ड मनुष्य को निरन्तर सामने आते रहने वाले घाटे के रूप में अप्रतिष्ठा के रूप में देखना पड़ता है । बड़ा सौभाग्य भी उन्हीं की ओर उन्मुख होता है जो पहले सामने आए कार्यों में पूरी दिलचस्पी के साथ करने की परीक्षा उत्तीर्ण हो चुके होते हैं, अन्यथा सौभाग्य भी लापरवाही, गैर जिम्मेदारी को, गन्दगी को देखकर उल्टे पैरों ही वापस लौट जाते हैं। थोड़े काम भी बहुत दिखते हैं, एक को निपटा नहीं पाते कि दूसरे अपना तकाजा लेकर सामने आ खड़े होते हैं । ऐसे लोग खीजते चिल्लाते तो बहुत हैं, पर ऐसा कुछ कर नहीं पाते कि सौंपे गए उत्तरादायित्व को पूरा करते हुए प्रगति पथ पर चलने वालों के सामने आने वाली नित नयी जिम्मेदारियों को भी उत्साह पूर्वक निपटाते चलें और उत्कर्ष के उच्च शिखर तक जा पहुँचने में सफल हो सकें ।

(३) **शिष्टता** – तीसरा सद्गुण है– शिष्टता । साथियों के साथ अधिक सद्भाव का, अधिक सहयोग का आधार विनिर्मित करना । यह कार्य सर्वतोमुखी शिष्टता अपनाने से सम्भव होता है । हर कोई सम्मान चाहता है । हर स्थिति का व्यक्ति उसके लिए लालायित रहता है । इस सरल माँग को पूरी करते रहना किसी के लिए भी कठिन नहीं होना चाहिए । क्योंकि इसमें न तो कोई बड़ा पराक्रम करना पड़ता है और न कुछ धन व्यय करने के साधन जुटाने की आवश्यकता पड़ती है । मात्र अपनी विनम्रता का परिचय देने भर से काम चल जाता है । दूसरों को सम्मान देने के लिए अपनी विनम्रता आवश्यक है । वापसी में मात्र मधुर वचन ही बोले जायें । परामर्श देने में यदि मतभेद बना रहे तो भी हर्ज नहीं, पर अपना प्रस्तुतीकरण नम्रता से भरा पूरा रहना चाहिए । हर किसी में कुछ न कुछ गुण होते हैं । उसने कुछ न कुछ कृत्य या प्रयास ऐसे भी अवश्य किए होते हैं जिनकी सराहना की जा सके । यदि निन्दा के योग्य कुछ है तो उसे पीछे के लिए रखना चाहिए। पहले सद्गुणों की, सफलताओं की चर्चा करने से आरम्भ की जाय । इतना कर चुकने के उपरान्त आत्मीयता की भाषा में वे सुझाव भी रखे जा सकते हैं, जो निवेदन करने योग्य हैं ।

अपना अहंकार, आत्मश्लाघा के रूप में बहुधा इस प्रकार उभरता, उछलता रहता है कि दूसरों को अपने से हल्का सिद्ध करने की बात उसमें जुड़ जाती है जो सामने वाले को अपमान जैसी प्रतीत होती है । भले ही गाली गलौज न की जाय । भले ही व्यंग्य उपहास न उड़ाया गया हो, पर अपनी तुलना में सामने वाले को घटिया सिद्ध करना, यह भी प्रकारान्तर से अपमान ही है ।

सभी जानते हैं कि कड़वे जायके की वस्तुएँ किसी को भी पसन्द नहीं आतीं । मीठे को बच्चे से लेकर बूढ़े तक चाहते हैं । यहाँ तक कि चींटी से लेकर मक्खी तक उसी के इर्द-गिर्द मँडराती हैं । यह मिठास हर कोई अपने अन्दर पैदा कर सकता है । शर्त एक ही है कि अपनी नम्रता का पुट वाणी और व्यवहार में समुचित मात्रा में लगा रहे । शिष्टाचार की यह प्रथम शर्त है । मतभेदों का, यहाँ तक कि विरोध प्रदर्शन को भी, खण्डन को भी शिष्टाचार पूर्वक व्यक्त किया जा सकता है । ऐसी दशा में उसके कारगर सिद्ध होने की आशा भी अधिक रहती है ।

अन्यान्य शिष्टाचार समुदाय, क्षेत्र की परम्पराओं पर आधारित रहते है , पर कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें सार्वभौम कहा जा सकता है । किसी के मिलने पर प्रसन्नता की अभिव्यक्ति, मुस्कान, अभिवादन आदि से प्रगट करना । विदाई के समय भी समय लेने व धन्यवाद प्रगट करना ऐसा ही उपचार है, जिसे शिष्टाचार का अंग कह सकते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । अतिथि के आने पर या विदाई पर उठ कर बैठना, बैठने के लिए उचित स्थान प्रस्तुत करना, कुशल क्षेम पूछना, आगमन को अनुग्रह मानना और आगमन के प्रयोजन को मीठे शब्दों में पूछना भी शिष्टाचार है । कैसे कृपा की, क्या सेवा करें ? जैसे शब्दों में आगन्तुक का प्रयोजन पूछना । जो किया जा सकता है, उसके लिए शक्ति भर करने की बात कही जा सकती है । जो नहीं हो सकता है, उसके कारण बताते हुये विवशता पर खेद व्यक्त किया जा सकता है । फिर कभी अवसर मिलने पर वैसा प्रयत्न करने की बात कही जा सकती है । भले ही किसी के प्रति उपेक्षा या कटुता का भाव हो, पर प्रगट में मिलने पर शिष्टता का भी प्रदर्शन करना चाहिए ।

प्रश्न दूसरे की उपेक्षा या प्रतिष्ठा का नहीं, वरन् यह कि अपनी शालीनता को सुरक्षित रखा गया या नहीं । अपना पक्ष कमजोर किसी भी स्थिति में नहीं पड़ने देना चाहिए । इसमें चूक करने पर आदत बिगड़ती है और अकारण बैर बाँधने जैसी स्थिति बनती जाती है । सम्पर्क के लोगों के साथ मधुरता के रिश्ते बने रहें इसी में लाभ है । जिनके व्यवहार से चोट लगी हो, तो उलटकर वैसा ही व्यवहार नहीं करना चाहिए । कुत्ता किसी की टाँग काट खाए तो कोई भला मानुष उलट कर कुत्ते की टाँग कहाँ काटता है ? अप्रसन्नता होने पर अधिक से अधिक मौन धारण किया जा सकता है । कटुता का कुचक्र ऐसा है जो परस्पर चलता रहे तो अन्ततः कई बार उसकी परिणति दुष्परिणाम ही उत्पन्न करती है । ऐसे अवसरों में अपना बचाव कर लेना, आत्म रक्षा की ढाल खड़ी कर लेना और अपनी भावनाओं में मधुरता का पुट लगा लेना है । अपनी गरिमा तो निश्चित रूप से बढ़ती ही है और देखा देखी अन्यान्यों को भी गौरवान्वित होने की पगडंडी हस्तगत होती है ।

(४) मितव्ययता– चौथा शील है– मितव्ययता । किसी वस्तु को उपलब्ध कर लेना उतना सरल नहीं है जितना उसके सदुपयोग कर सकने की सूझ-बूझ का परिचय देना । दुरुपयोग में उपलब्धियाँ तो नष्ट होती ही हैं साथ ही उस व्ययजन्य अन्य दुष्परिणाम भी सिर पर लदते हैं । पैसे का महत्त्व न समझने वाले अक्सर उसका अपव्यय फिजूल खर्चों में करते रहते हैं । अमीरी की शान दिखाने, ठाट-बाट का सरंजाम जुटाने, सजधज जैसे उद्धत प्रदर्शनों में पैसा लुटाने, आवारागर्दी, बरबादी के फेर में पड़ कर नशेबाजी जैसे दुर्व्यसन सीख लेने में अपनी व्यवस्था न बना पाने और प्रतिष्ठा को अक्षुण्य न रख सकने की हानि होती है । फैशन, जेवर, शृंगार, व्यसन, शान-शौकत जैसे कार्यों में पैसा खर्च कर डालने की आदत अपना लेने पर, उपयोगी कार्यों के लिए कुछ बचता ही नहीं । उचित आवश्यकताओं की पूर्ति में भी कमी पड़ती है । इसकी पूर्ति अनीति अपनाकर या ऋण लेकर किसी प्रकार पूरी करनी पड़ती है । ऐसे लोग अपनी और दूसरों की आँखों में गिर जाते हैं । अप्रमाणिक समझे जाते हैं, उनके साथ घनिष्टता जोड़ने में समझदार लोग घाटा ही घाटा अनुभव करते हैं ।

यही बात समय, चिन्तन, कौशल आदि को गपशप में, कुसंग में, ओछे कामों में खर्च करने से होती है । बर्तन के पेंदे में छेद हो जाने पर उसमें भरा हुआ दूध या पानी कुछ ही समय में रिस जाता है । इस प्रकार जो क्षमताएँ उपयोगी कार्यों में लाने पर चमत्कारी प्रतिफल उपस्थित कर सकती थीं, वे अपव्यय की आदत के भँवर में पड़कर बुरी तरह समाप्त हो जाती हैं । फिर उपयोगी कार्य करने के लिए जिस क्षमता की आवश्यकता पड़ती है उसे जुटा सकना कैसे सम्भव हो । हर प्रयास, साधन और समय की माँग करते हैं । यदि उन्हें अपव्यय में ही खर्च कर डाला गया है, तो फिर वह बचत पास में कहाँ रहेगी, जो अपने व्यक्तित्व, परिवार का स्तर, समाजगत सन्तुलन एवम् उज्ज्वल भविष्य की संरचना कर सकने में समर्थ हो सकें । अपव्यय का अर्थ बुरी आदतें मोल लेना और प्रगति का हर दरवाजा बन्द कर देना है । इस कुटेव से हर दूरदर्शी को बचना चाहिए और सादा जीवन उच्च विचार की नीति अपनानी चाहिए । श्रृंगार सज्जा में लगे रहने वाले को मनचला, ओछा, बचकाना समझा जाता है । उनके आचरण पर अँगुली उठने लगती है । भले ही पाखण्ड को रचने वाले, मन में अपने बड़प्पन की मान्यता बनाने लगे । प्रगतिशील व्यक्तियों ने अपने समय, श्रम, चिन्तन और साधनों को सदा अपव्यय से बचाया है और उन्हें सत्प्रयोजनों में लगाया है । यही नीति है जिसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आधार पर प्रगतिशील बनने और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का अवसर मिलता है ।

(५) उदार सहकारिता— पाचवाँ शील है— उदार सहकारिता। दूसरों के विषय में दिलचस्पी लेन,उनका हाथ बँटाने, यथा-सम्भव उनकी गुत्थियाँ सुलझाने और अभ्युदय के संदर्भ में योगदान देना ऐसा कृत्य है जिसे सहज योग साधना कहा जा सकता है । विपत्तिग्रस्तों को यथा अवसर तात्कालिक आवश्यकता के अनुरूप पुण्य परमार्थ जैसी सहायता भी की जाती है, पर वैसा सदा ही सब किसी के लिए बन पड़ना सम्भव नहीं । न तो सदा दुर्घटनाएँ होती रहती है और न ऐसे लोग ही सदा सामने खड़े रहते हैं, जो वस्तुतः असमर्थ या कष्ट पीड़ित हों । ऐसी दशा में दान पुण्य का सही अवसर यदाकदा ही सामने आता है। इसे नित्य नियम नहीं बनाया जा सकता है । कई बार तो ऐसा भी होता है कि कुछ पाखण्ड प्रपंच रच कर धर्म प्रयोजनों के लिए पैसा माँगने का धंधा अपना लेते हैं और भोले-भाले भावुकजनों की जेब काटते रहते हैं। जिस दान की परिणति पाखण्ड की, दुर्व्यसनों की, प्रपंचों की अभिवृद्धि में हो वह परिणाम पुण्य के अनुरूप उल्टा पाप बन जाता है ।

सहज उदारता वह है जिसमें अपने सम्पर्क क्षेत्र में व्यक्तिगत सद्गुणों के अभिवर्धन का प्रयास किया जाय । आवश्यक सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन हेतु उपयुक्त खाद, पानी जुटाया जाय । व्यक्तिगत रूप से इस सद्भावना का परिचय दूसरों के सुख-दुःख में हाथ बँटाने, भागीदार बनने के रूप में दिया जा सकता है । हमें अपने सुखों को बाँट कर खाना चाहिए और दूसरों की उचित कठिनाइयों को सरल बनाने में हाथ बँटाना चाहिए । यह मान्यता के उपयुक्त कसौटी है । भाव-संवेदना अध्यात्मिक क्षेत्र की उच्चस्तरीय सम्पदा है, उसे अभ्यास में उतारने, बढ़ाने एवं परिपुष्ट करने का यही तरीका है कि अपने परिचय क्षेत्र में सहयोग की प्रवृत्ति का परिचय दिया जाय । मिलजुल कर रहने और मिल-बाँट कर खाने का सहज स्वभाव बनाया जाय ।

संकीर्ण स्वार्थपरता अवाँछित अनाचारों की जन्म दात्री है । जिसे सदा अपने मतलब से ही मतलब रहता है, जो अपनी क्षमताओं को मात्र अपने ही लाभ के लिए प्रयुक्त करते हैं, उन्हें निष्ठुर, कृपण, अनुदार माना जाता है। ऐसे लोगों का लोभ और अहंकार बढ़ता ही जाता है । उसकी पूर्ति के लिए अनेकानेक अनाचारों पर उतरना पड़ता है। स्वार्थ परता की आदत इसके लिए उसे मजबूर करती है। यों साधारण दृष्टि से अपने लाभ के कार्यों में लगे रहना कुछ अनुचित प्रतीत नहीं होता । पर इस प्रवृत्ति के जड़ पकड़ लेने पर व्यक्ति आत्म-केन्द्रित हो जाता है । ''इक्कड़'' कहे जाने वाले समाज को छिटक कर अलग रहने वाले जानवरों की तरह बन जाता है। जो अत्यन्त खूँखार होते हैं, किसी पर भी अकारण आक्रमण बोल सकते हैं । उन्हें देखते ही लोग बचने, भागने का प्रयत्न करते हैं । यही स्थिति उन लोगों के सम्बन्ध में भी होती है जो मात्र अपना ही स्वार्थ सोचते हैं । यह स्वभाव यदि सघन हो जाय तो बात यहाँ तक बढ़ती है कि व्यक्ति स्वार्थान्ध हो जाता है । दूसरों के अधिकारों का हनन करने, अनाचार पर उतारू होने में तनिक भी नहीं हिचकता । उदारता के अभाव में वे भाव-संवेदनाएँ समाप्त हो जाती है जिस पर करुणा, ममता, उदारता, शालीनता, सद्भाव जैसी सत्प्रवृत्तियाँ अवलम्बित रहती हैं ।

समाज की बहुमुखी सहायताओं के बलबूते ही कोई व्यक्ति अपनी दिनचर्या चलाने, सुयोग्य सम्पन्न एवं गतिशील बनने में समर्थ होता है । इस सहयोग से जिसे भी वंचित रहना पड़ा होगा, उसे आदिम काल के वन-मानुषों जैसी अनगढ़ और अभावग्रस्त स्थिति में रहना पड़ रहा होगा । सामाजिक ऋणों से उऋण होने के लिए हर भावनाशील को सेवा-साधना और धर्म-धारणा की रीति-नीति अपनानी पड़ती है । इसी कर्तव्यनिष्ठा का नाम समाज सेवा है, जिसे अन्य नित्य कर्मों की तरह दैनिक जीवन का अनिवार्य कृत्य बनाना पड़ता है । इसका प्रयोग इसी प्रकार बन पड़ता है कि सम्पर्क में आने वाले एवं प्रचार क्षेत्र की परिधि में रहने वाले हर व्यक्ति को सहयोग से लाभान्वित किया जाय । आत्मीयता की परिधि में बाँधा जाय । अपने समझे जाने वाले पदार्थों एवं व्यक्तियों के साथ आत्मीयता जुड़ जाती है । उन्हें अच्छी, ऊँची स्थिति में पहुँचाने की चर्चा चलती है । जहाँ यह प्रवृत्ति मूर्छित, मृतक स्थिति में पड़ी हो, समझना चाहिए कि वहाँ नीरसता का, निष्क्रियता का सामंजस्य है । यह भयावह, सुनसान बीहड़ में रहने जैसी मनः स्थिति है । इससे उबरने के लिए एक ही मुख्य साधना है कि अपने मन की परिधि को बढ़ाया जाय । जैसे अपने हित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का ध्यान रखा जाता हो, वैसा ही दूसरों के सम्बन्ध में किया जाय । "आत्मवत् सर्वभूतेषु" को जीवन मंत्र बनाया जाय और यह ध्यान में रखा जाय कि दूसरों के साथ वही व्यवहार करना है जो हम दूसरों से अपने लिए किए जाने की आशा अपेक्षा करते हैं ।

यह भाव संवेदना यदि अन्तःकरण में स्थान बना सकी होती तो यह उमंग उठे बिना रहती भी नहीं कि दूसरों की सेवा सहायता की जाय । उन्हें ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने के लिए जब जो सम्भव है करते रहा जाय । ऊपर से लगता है कि दूसरों का हाथ बँटाने में अपने स्वार्थ की कमी होती है, पर वस्तुतः ऐसी बात है नहीं । उर्वरभूमि में बोया गया बीज सैकड़ों हजारों गुना होकर फलता है । सत्पात्रों को सत्प्रयोजनों के लिए दी गई सहायता जितना दूसरों को लाभ करती है, उतना ही अपना स्तर उठाने, समर्थता, सम्पन्नता बढ़ाने में भी सहायक होती है । दिया गया सहयोग शब्दभेदी बाण की तरह लौट कर अपने ही तरकस में आ विराजता है । गुम्बज में की गई आवाज कई गुनी होकर गूँजती है । फेंकी गई गेंद निशाने से टकरा कर वापस लौटती है । दूसरों को दिया गया सही सहयोग अन्ततः अपनी ही प्रगति और प्रतिष्ठा का कारण बनता है ।

इस सत्प्रवृत्ति को अभ्यास में उतारने के लिए आवश्यक है कि साथियों के कार्यों में, उनके भावों में समुचित दिलचस्पी ली जाती रहे । उनके साथ विचार-विनिमय का सिलसिला चलाते रहा जाय । जहाँ जितना आवश्यक है उतना परामर्श दिया जाता रहे । उलझनों को सुलझाने, संकटों को टालने की हर स्वजन से अपेक्षा की जाती है । बिना दूसरों के कहे ही स्वयं यह विचार करते रहना चाहिए कि साथियों के क्रिया-कलापों, उत्तरदायित्वों में किस सीमा तक सहयोग देते रहना अपने लिए सम्भव हो सकता है । मनोभाव इस स्तर के रहें तो अवसर भी मिलता ही रहेगा । बिखरी वस्तुओं को यथा स्थान रख देना जैसी छोटी सहायता तो सहज ही की जा सकती है। जो काम दूसरे कर रहे हों, उनमें सहयोग देने के लिए प्रयास करना इस बात का चिन्ह है कि सहानुभूति उथली नहीं वरन् गहरी है । दूसरों की घुटन को उगलवा लेना, धैर्य बँधाना और उज्ज्वल भविष्य की आशा बँधाना भी ऐसा कार्य है जो बिना अपना अधिक समय गँवाए रास्ता चलते हुए भी किया जा सकता है । काम काज करते हुए भी ऐसी चर्चा करने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होती। गुम-सुम बैठे रहने से अपने ऊपर नीरसता चढ़ती है और सहानुभूति सम्पदाएँ बढ़ाने का अवसर हाथ से चला जाता है ।

स्वरूप और वैभव सबको दीखता है । कृत्य एवं प्रयास भी समझे जा सकते हैं । समीपवर्ती लोग गुण, कर्म, स्वभाव की स्थिति को भी जाँच लेते हैं, पर अन्तःकरण में बसने वाली भाव-संवेदनाओं को आत्मा एवं परमात्मा ही जानते हैं । वे ऐसी दिव्य स्फुरणाएँ हैं जिन्हें सृष्टा ने मनुष्य के गहन अन्तराल में छिपाकर रखा है। जो उन्हें जान सकने और सक्रिय बना सकने में समर्थ हो गया समझना चाहिए कि उसने मानवी गरिमा के उद्देश्य में दिव्य निर्झरणी के रूप में प्रवाहित कर सकने में सफलता प्राप्त कर ली । इतिहास साक्षी है कि क्रौंच पक्षी की आहत स्थिति के भाव संवेदनाएँ जोड़ देने के कारण आदि कवि के अनभ्यस्त मानस में से कविता की निर्झरणी फूट पड़ी थी । जिनने विश्व वेदना के साथ अपनी करुणा को अभीप्सा बना लिया, वे मनुष्य शरीर में रहते हुए भी देवात्मा बन गए । इस महा प्रसाद का न्यूनाधिक रसास्वादन करने के लिए हर किसी को प्रयत्नशील होना चाहिए । करुणा और ममता के समन्वय से उत्पन्न होने वाली परोक्ष भाव-संवेदना ही प्रत्यक्ष सेवा-साधना बन कर प्रकट होती है ।

मानवी गरिमा के अविच्छिन्न अंग समझे जाने वाले पंचशीलों की अवधारणा से ही मानवी गरिमा निखरती और उभरती है । श्रमशीलता, सुव्यवस्था, शिष्टता, मितव्ययता और उदात्त सहकारिता के पाँच दैवी गुणों को जो जिस भावों से अपने व्यक्तित्व का अंग बना लेता है वह उतने ही अंश में सम्पन्न कहलाता है । सभ्यता ही प्रगति के समस्त स्रोतों की जन्म दात्री है ।

प्रसन्नता पराक्रम और प्रगतिशीलता

सभी प्राणी स्वच्छन्द विचरते हैं । उनके लिए कोई निर्धारण या आचार-विचार-व्यवहार निश्चित नहीं होते। इसलिए वे न अपने निजी व्यक्तित्व को गरिमा सम्पन्न बना पाते हैं और न जीवन निर्वाह के अतिरिक्त ऐसा कुछ कर पाते हैं जिसे महत्त्वपूर्ण और अभ्युदय स्तर का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझा जा सके । गौरव गरिमा के आधारों को जो न अपना सके उन्हें गया गुजरा ही कहा जा सकता है । पशु-पक्षी, कीट पतंगे तो इस स्तर के होते ही हैं, परन्तु कुछ मनुष्य देहधारी भी वैसा ही जीवन जीते हैं । वे ऐसे स्वेच्छाचारी रहते हैं, जिन्हें न मनुष्यों के साथ जुड़े कर्त्तव्यों का ज्ञान रहता है, न उत्तरदायित्वों का । वे न मर्यादाओं के पतन की चिन्ता करते हैं और न वर्जनाओं से बचने की उन्हें चिन्ता रहती है । ऐसे लोगों को नरपामरों में गिना जाता है । अनगढ़ और असभ्य भी उन्हीं को कहते हैं । उनकी अन्तःचेतना अनुशासन में बँधने को तैयार नहीं होती । भूत पलीतों की तरह श्मशान-सुनसान में निवास और डरते-डराते हेय स्तर का जीवन बिताते हैं ।

अनुशासन के अनुबन्धों को लागू करने कराने के लिए अपने-अपने ढंग से धर्म शासन और समाज सभी ने जोर दिया है । धर्म कर्त्तव्य, पुण्य, परमार्थ, संयम तप आदि के माध्यम से दिशा निर्देश और स्वर्ग नरक के प्रलोभन अथवा भय इसी उद्देश्य से दिए जाते रहे हैं । शासकीय संविधान, नियम दण्ड संहिता आदि की रचना भी इसीलिए की गयी है । समाज में भी उद्दण्ड उच्छृंखल लोगों के प्रति भर्त्सना-प्रताड़ना बरती जाती है । उनके प्रति घृणा उपेक्षा, विरोध और बहिष्कार जैसे क्रम भी अपनाये जाते हैं । अप्रमाणिक समझे जाने वालों पर से सबका विश्वास उठ जाता है । किन्हीं महत्त्वपूर्ण कामों को प्राप्त करने का अवसर उनके हाथ से निकल जाता है । इसलिए मानव समाज के सभ्य सदस्य बनने के अनुशासनों का परिपालन सहज अभ्यास के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा रहना चाहिए ।

इन अनुशासनों के परिपालन के संदर्भ में स्काउट आन्दोलन के विचार अधिक समीचीन हैं । उस निर्धारण के सूत्रधारों ने ऐसी आचार संहिता बनायी है, जिसे हलके-फुलके मानसिक विकास वाले भी प्राथमिक शिक्षा की तरह अपना सकें । किसी को उनकी अनिवार्यतः स्वीकारने और अभ्यास में उतारने की तत्परता बरतने में कोई बड़ी कठिनाई अनुभव न हो, ऐसी दृष्टि रखी गयी है । स्काउट आन्दोलन को व्यक्तित्व की गरिमा, नागरिकता का निर्वाह और सामाजिक शालीनता का सामान्य परिपालन भी कह सकते हैं । इतना सीख लेने के उपरान्त ही कोई किसी महत्त्वपूर्ण एवं उच्चस्तरीय क्षेत्र में प्रवेश कर सकने योग्य बनता है । प्रगति और प्रतिष्ठा की इस आचार संहिता को सभ्यता की अनिवार्य शर्त माना जा सकता है । इसे मानव गरिमा का अक्षर ज्ञान जैसा श्री गणेश भी कह सकते हैं ।

एक वर्ष का होते-होते बच्चे को अविभावक अँगुली पकड़कर चलना सिखाते हैं । सही रीति से पैर रखने और सही दिशा में चलना अबोध बालक इसी प्रकार सीखता है । सभ्यता के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए भी किसी व्यक्ति को रास्ते पर बायीं ओर चलना, पंक्ति बद्ध होकर रास्ता पार करने की, काम पर जाने की विधि सीखनी पड़ती है । यह प्रथम नागरिक अनुशासन है । यदि लोग भेड़ चाल चलने लगें, तो एक दूसरे से टकरायेंगे और धमा चौकड़ी का माहौल बनने लगेगा । बायीं ओर चलने और लाइन लगाने की रीति-नीति हर किसी के अभ्यास में लायी जानी चाहिए । ढ़ेरों दुर्घटनायें सभ्यता के इन सूत्रों की उपेक्षा, उनके उल्लंघन के कारण ही होती हैं । वाहन चलाने वाले रास्ता चलने वाले का ध्यान नहीं रखते, मनमाने ढंग से चलते हैं । राहगीर भी बेतरतीव चलते हैं और वाहनों की चपेट में आकर नुकसान उठाते, जान भी गँवाते हैं । नुकसान केवल उन्हें ही नहीं होता, बचाने वालों, चिकित्सकों, सम्बन्धियों और सरकार को भी इस असभ्यता के कारण हैरानी उठानी पड़ती है ।

पर्व त्यौहारों, मेलों आदि के हर्ष भरे वातावरण में थोड़ी-सी असभ्य आदतें माहौल ही बदल देती हैं । ऐसे प्रसंगों पर हर वर्ष दुर्घटनाएँ होती रहती हैं । सैकड़ों लोग भीड़ के दबाव में पैरों तले कुचलकर मर जाते हैं । कितनी ही गाड़ियाँ उलटती हैं । यह सब अनगढ़पन के ही चिन्ह हैं । सभ्य देशों में स्टेशन पर रेलगाड़ियाँ कुछ ही मिनट रुकती हैं । व्यवस्थित, पंक्तिबद्ध क्रम के अभ्यस्त यात्रियों के उतरने-चढ़ने की क्रिया मिनटों में सरलता से पूरी हो जाती है । इसके विपरीत घमा चौकड़ी मचाने वालों में किन्हीं की जेब कटती है, किन्हीं के कपड़े फटते हैं तो किसी का सामान छूटता-टूटता है । यह सब उपरोक्त अनुशासनों के उल्लंघन के ही फल हैं । सभ्यता के इन प्राथमिक अभ्यासों को स्काउटिंग आदि में प्रथम नियम मानना उचित ही है ।

अनुशासन शक्ति पुंज है । बिखराव में समर्थ भी असमर्थ बन जाता है । सूर्य किरणों को केवल एक इंच परिधि के आतिशी शीशे द्वारा केन्द्रित किया जाय तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

देखते-देखते आग लग जाती है । बन्दूक की नली के अनुशासन में रहने वाली बारूद लम्बी दूरी तक गोली से लक्ष्य भेद करती है । केन्द्रीकृत भाप से इन्जन में भारी शक्ति आती है । मनुष्य के कण-कण में अजस्र सामर्थ्य है, पर वह अनियमित रहने से बिखरी और अस्त-व्यस्त रहती है । उससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता । सेना को शक्तिमान माना जाता है, क्योंकि उसमें अनुशासन रहता है । संख्या तो भीड़ की अधिक होती है, पर वे केवल गंदगी फैलाती और समस्याएँ पैदा करती हैं । चर्चाओं में सैनिक अनुशासन सराह्य जाता है । स्काउटिंग के केन्द्र में भी यही है । उस धारा को अपनाने वालों को अनुशासित ही रहना पड़ता है । स्वेच्छाचार का फूहड़पन अपनाया न जाय इसके लिए नियंत्रण रखा जाता है ।

अनुशासन की मनोवृत्ति और प्रवृत्ति भली प्रकार विकसित, पुष्ट होती रहे इसके लिए स्काउटिंग में वर्दी से लेकर कवायद, ट्रेनिंग आदि में पग-पग पर ध्यान रखा जाता है । यह सामायिक एवं प्राथमिक अभ्यास है । वस्तुतः उसका चरम लक्ष्य यह है कि इस विद्या का आश्रय लेकर पूरी तरह अनुशासित और कर्त्तव्यपरायण बने । एकता समता को निरन्तर चरितार्थ करता रहे । इसी हेतु स्काउट से कई प्रकार के क्रिया-कलाप कराये जाते हैं । कई प्रतिज्ञाओं से, सिद्धान्तों से और आदर्श के अनुबंधों से बाँधा जाता है । तत्वतः यह सब सभ्यता का शुभारंभ है । जन-जन के लिए इसे आवश्यक समझा जाना चाहिए ।

स्काउटों को ईश्वर के प्रति, राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति, स्काउट अनुशासन-सेवा व्रत के प्रति पूर्ण वफादारी बरतने की प्रतिज्ञा करनी होती है । संक्षेप में इसे आदर्शों के प्रति असीम अविच्छिन्न आस्था कहा जा सकता है । इसका निर्वाह अनिश्वरवादी भी कर सकते हैं । मानव-जीवन की सार्थकता एवं सुन्दरता इसी में है । स्वेच्छाचारी तो हेय योनियों के प्राणी होते हैं । वे किसी का भी खेत चर सकते हैं । किसी रिश्ते को ध्यान में रखे बिना स्वच्छन्द योनाचार कर सकते हैं । गंदगी में लोटपोट सकते हैं, परन्तु मनुष्य के लिए यह सब आचरण हेय है । उसे स्वच्छता से लेकर शिष्टाचार तक तथा आत्मीयता से औचित्य तक सभी पक्षों का ध्यान और संतुलन रखना पड़ता है । स्काउट को इन सबका अभ्यास जीवन क्रम में उतारना होता है ।

स्काउट में सैनिकों जैसे अनुशासन एवं पराक्रम तथा श्रेष्ठ नागरिक की शालीनता का समावेश किया जाता है । उन्हें अपनी वर्दी स्वच्छ और सुव्यवस्थित रखनी होती है। पूरी पोशाक, बैज, स्कार्फ सभी करीने से धारण करने होते हैं । कदम मिलाकर चलना, परेड में पूर्ण सैनिक अनुशासन मानना, आदेश का तत्काल पालन करना उनके सहज क्रम में घुले-मिले रहें, इसका प्रयास किया जाता है । खेलकूद में बौद्धिक और शारीरिक दोनों के विकास के अनुरूप क्रम अपनाये जाते हैं । स्वस्थ स्पर्धा, आगे निकलने, साहस दिखाने, पराक्रम का परिचय देने जैसे सजग मनुष्य में रखे जाने योग्य अनेक गुणों का विकास किया जाता है । अपना भोजन पकाना, अपनी सुरक्षा व्यवस्था बनाना और कैम्प फायर के माध्यम से स्वस्थ मनोरंजन की व्यवस्था भी स्वयं बनाना उनके अभ्यास में लाया जाता है । यह सभी गुण हर प्राणवान नागरिक में विकसित किये जाने चाहिए । भले ही उनका अभ्यास स्काउटिंग के माध्यम से किया जाये अथवा अन्य कोई अन्य विद्या अपनाकर ।

स्काउटिंग का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है, सेवा-भावना । इसके लिए उन्हें अपने क्षेत्र में स्वच्छता, सुरक्षा और व्यवस्था बनाये रखना सिखाया जाता है । मेलों, उत्सवों आदि में व्यवस्था बनाना, कमजोरों की सहायता करना । दुर्घटनाओं, अग्नि कॉड की रोकथाम । पानी में डूबों को, चोट लगे लोगों को बचाना, उन्हें प्राथमिक सहायता देकर उपचार केन्द्र तक सुरक्षित पहुँचाना आदि अभ्यास कराये जाते हैं । सतर्कता चोर, उचक्कों से जनता को बचाना, आवश्यकता पड़ने पर उनसे निपटना अनेक तरह के शिक्षण उनके पाठ्यक्रम में रखे जाते हैं । इन सबका यही उद्देश्य है कि वे दूसरों की सेवा सहायता के अवसर तलाशें, मौका मिलना अपना सौभाग्य माने और उत्तरदायित्व का कुशलता से निर्वाह कर सकें ।

लड़कियों के लिए गर्ल-गाइड कोर्स में महिला मण्डल, शिशु-पालन, गृह-व्यवस्था जैसे कुछ विषय विशेष रूप से जुड़े रहते हैं । स्काउट एवं गाइड, दोंनों को ही सामान्य अनिवार्य स्तर पूरा करने के पश्चात् विभिन्न कार्यों में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया जाता है, प्रवीणता पदक दिये जाते हैं । इस प्रकार लड़के-लड़कियों दोनो वर्गों के संतुलित, समुचित विकाश का तंत्र बनाया , चलाया जाता है ।

स्काउट को व्यावहारिक अभ्यास करने के साथ-साथ अपनी मनोभूमि बनाने, स्वभाव में आदर्शवादी परिवर्तन करने के लिए अनेक सिद्धान्त अपनाये जाते हैं । कहा जाता है उनमें फन, फाइट, फीट की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ होनी चाहिए । अर्थात क्रमशः प्रसन्नता, पराक्रम और शिक्षण की तीन विद्याओं को अपने जीवन में सम्मलित किये रहना । यह तीनों परिष्कृत व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण अंग हैं ।

प्रसन्नता-प्रफुल्लता

प्रसन्नता को सहज स्वभाव का अंग बनाना चाहिए । सामान्य कार्य करते हुए भी मुस्कान होटों पर खिलती रहे । प्रसन्नता की अभिव्यक्ति ऐसी सशक्त हो कि उसके आगे खीझ, निराश, थकान जैसे लक्षण प्रगट न हो सकें । प्रतिकूलताएँ, परेशानियाँ उलझनें, समस्यायें तो हर किसी के सामने थोड़ी बहुत बनी ही रहती हैं । उसका समाधान करने के लिए मानसिक संतुलन आवश्यक है । अन्यथा मानसिक तनाव-खीज एक और नयी व्याधि बनकर सिर पर चढ़ दौड़ती है । जो शक्ति समाधान में लगनी चाहिए, वह इन्हीं उद्विग्नताओं में नष्ट हो जाती है । ऐसी स्थिति में उबरने के लिए जो कुछ करना सम्भव था वह भी नहीं होने पाता ।

प्रसन्नता का स्वभाव बना लेना उत्साह, संतुलन और साहस का अभ्यास बढ़ा लेने जैसा है । यह एक मानसिक टॉनिक है, जिससे निरन्तर नयी शक्ति उभरती रहती है । ऐसे स्वभाव वाले सदा अधिक मात्रा में अधिक अच्छे स्तर का काम करने और सफलतायें अर्जित करने में प्रथम रहते हैं ।

प्रसन्नता की अभिव्यक्ति चेहरे पर खिले गुलाब पुष्प जैसी दीखती है, जिससे कुरूप शक्ल सूरत वाला व्यक्ति भी सुन्दर लगता है । मुँह लटकाए , खीजते व्यक्ति को देखकर सभी उससे बचने का प्रयत्न करते हैं । प्रसन्नता को सफलता का सूचक माना जाता है । निराशा की, अयोग्यता की असलियत का दूसरे लोग किसी के सम्बन्ध में अपनी मान्यता इसी आधार पर पक्की करते हैं । उन्हें इतनी फुरसत तो होती नहीं कि उसकी परिस्थितियों को गंभीरता पूर्वक समझें । एक नजर में उदास, हताश, व्यक्ति अयोग्य, अभागा समझ लिया जाता है और उससे सम्बन्ध साधकर अपनी प्रसन्नता गँवाने के लिए कोई तैयार नहीं होता । इसलिए दर्पण को बार-बार देखकर अपनी मुख-मुद्रा को प्रसन्नता भरी बनाए रहने का अभ्यास करते रहना चाहिए । कुछ समय के प्रयत्न से वह एक अच्छी आदत के रूप में स्वभाव का अंग बन जाता है । व्यक्तित्व की प्रखरता में चार चाँद लग जाते हैं ।

हँसता व्यक्ति दूसरे को हँसाते रहने में समर्थ होता है। सुगंधित वस्तुओं के समीपवर्ती वस्तुएँ भी सुगंधित हो जाती हैं । आग की गर्मी अपने आस-पास के पदार्थों को भी गरम कर देती है । ठीक उसी प्रकार निराशा, खीझ, उदासीनता जहाँ दूसरों को दूर रहने के लिए धकेलती है, उसी प्रकार प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करने वाले छोटे से छोटे कार्य भी अपना उत्साह वर्धक प्रभाव छोड़ते हैं । प्रसन्न किए गये व्यक्ति का संचित मनोमालिन्य नष्ट हो जाता है । कभी कोई बुरी मान्यता बन गयी तो वह भी बात की बात में समाप्त हो जाती है । सुरभित वातावरण बनाने का सही और सीधा तरीका यह है कि प्रसन्नता, सन्तोष, उत्साह और उल्लास की मनः स्थिति बनाए रहने का परिपूर्ण प्रयत्न किया जाय । इस प्रसाद को उन सब में भी बाँटा जाय , जो अच्छे हों उनकी चर्चा करके, अगले दिनों और भी प्रगतिशील कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाय । भविष्य के आशाजनक होने की सम्भावना व्यक्त करते हुए नई आशा और उमंग जगाने का प्रयत्न किया जाय । हँसते रहने की आदत अपने आप को अधिक सुन्दर आकर्षक एवं समर्थ सिद्ध करने की अच्छी प्रक्रिया है । इसे अपनाने वाले अधिक कार्यरत रहने, आगे बढ़ने, ऊँचे उठने का अवसर प्राप्त करते हैं । दूसरों को भी वे अपने साथ आगे घसीट ले जाते हैं । उसके विपरीत उदास रहने वाले, बूढ़ों जैसी उदासी लादे रहने वाले, सदैव अनाकर्षक, उपेक्षित और असफल प्रतीत होते रहते हैं । शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को अक्षुण्य बनाये रहने के लिए, मुस्कराते रहने की आदत एक अच्छे खासे टॉनिक का काम देते हैं । ऐसे बिना कीमत खर्च किए मिलने वाली रसायन का लाभ हर किसी को उठाना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संघर्ष-पराक्रम

स्काउटिंग मनोवृत्ति का दूसरा चरण है—फाइट-संघर्ष । यह प्रक्रिया अपने आप से आरम्भ करनी चाहिए । देखना चाहिए कि अपनी आदतों में कौन दुर्गुण किस मात्रा में सम्मिलित हो गया है । आलस्य, प्रमाद की कुटेव में किस हद तक सुधार करने में सफलता पायी है । व्यसनों की बढ़ोत्तरी तो नहीं हो रही है ? कटु भाषण का अभ्यास तो नहीं हो गया है ? निराशा, भय, चिन्ता, उदासी आदि की घुटन, मनः क्षेत्र को हैरान तो नहीं करने लगी है ? गंदगी से समझौता करके अपने व्यक्तित्व एवं वातावरण को फूहड़ बनाने की प्रक्रिया तो नहीं चल रही है ? यदि ऐसा कुछ अनुचित अवांछनीय अपने साथ जुड़ गया हो, या जुड़ता जा रहा हो, तो उसे घटाने और साहस पूर्वक उखाड़ फेंकने की मोर्चेबन्दी करनी चाहिए ।

हवा के साथ धूलि के कण घर में घुसते रहते हैं, उन्हें नित्य बुहारने की जरूरत पड़ती है । शरीर और कपड़ों पर गन्दगी चढ़ती रहती है, उन्हें रोज धोना साफ करना पड़ता है । ठीक इसी प्रकार अपने भीतर छिपे बैठे जन्म-जन्मान्तरों के कुसंस्कार उभरने के लिए जोर मारते रहते हैं । इर्द-गिर्द घटित होने वाले वातावरण में भी बहुत कुछ अवाँछनीय होता है और वह अनायास ही प्रभावित करता रहता है । स्वभाव में भी ऐसी दुर्बलता छिपी रहती है कि अवकाश पाते ही कुकल्पनाएँ करने, दोष दुर्गुणों, निन्दा, ईर्ष्या आदि का क्रीड़ा विनोद चल पड़े । मित्रों, स्वजनों में भी ऐसी कितनी ही त्रुटियाँ होती हैं, जो आत्मीयता सघन होने के साथ-साथ अपने आचरण में सम्मिलित होने के लिए मचलती रहती हैं । इस पतन पराभव के अनर्थ से सतर्कता पूर्वक न निपटते रहा जाय, तो उसका प्रकोप धीमी गति से चलते रहने पर भी कुछ समय में मनुष्य को गई गुजरी स्थिति का बना देता है । प्रगति के लिए आवश्यक प्रतिभा का अपहरण कर लेना है । अपनी निज की तथा दूसरों की दृष्टि में गिर जाने का घाटा उठाता है । यह स्थिति बनने न पाए इसके लिए व्यक्ति के हर पक्ष को बुहारने का प्रयत्न करते रहना चाहिए । सद्गुणों के समावेश एवं विकास के लिए यह आवश्यक है ।

आत्म-समीक्षा करने और जहाँ भी खोट दिखाई पड़े उसे सुधारने में समग्र तत्परता बरतने के शौर्य पराक्रम के आधार पर ही जीवन संग्राम जीता जाता है । यह आत्म-परिष्कार की प्रक्रिया नित्य कर्म में सम्मिलित रहनी चाहिए । शरीर, वस्त्र, घर, उपकरण आदि की सफाई की तरह व्यक्तित्व के किसी भी भाग में किसी भी मात्रा में घुलती-मिलती जा रही । अवाँछनीयता का हाथों हाथ निराकरण करना चाहिए । यह वस्तुतः वह महाभारत है, जिसमें निरन्तर लड़ते रहने के लिए गीताकार ने अर्जुन को, आवश्यक तर्क-तथ्य-प्रमाण और आधार प्रस्तुत करते हुए, संघर्षशील होने के लिए सहमत किया था । सभ्यता के श्री गणेश में इस जागरूकता और स्वच्छता की पक्षधर संघर्ष शीलता को अपनाने का असाधारण महत्त्व है ।

बाह्य क्षेत्र में भी बुराइयों की कमी नहीं है । श्रेष्ठता की अपेक्षा निकृष्टता अधिक मात्रा में पाई जाती है । उसको दर गुजर करते न रहा जाय, तो विष बेल की तरह उसे फैलने फूलने का शुभ अवसर मिल जाता है । अवाँछनीयता से यदि जूझा न जाय, तो वह और ही गर्वीली, हठीली एवं आक्रामक होती जाती है । संसार में बुराइयों की जो बेल फैलती दीखती है उसमें दुर्जनों का दुस्साहस ही एक मात्र कारण नहीं है, इससे भी बड़ा कारण है, सज्जनों का संगठित और संघर्षशील न होना । वे प्रयत्न बिखरे और अन्यमनस्क देखे जाते हैं । फलतः दुष्टता और भ्रष्टता को अपनी दुरभिसन्धि आसानी से पूरा करते रहने का अवसर मिल जाता है । प्रतिरोध के अभाव में खेतों को खरपतवार, घर में कीड़े-मकोड़े और शरीर में विषाणुओं का प्रवेश निर्धारण गति से चल पड़ता है । इसलिए बाह्य क्षेत्र में भी अनौचित्य के प्रति असहयोग विरोध एवं संघर्ष का रुख अपनाए रहना आवश्यक है ।

क्षमा और उदारता के नाम पर अनाचार को रोकने में कृपणता दिखाना एक प्रकार की आत्म-प्रवंचना है । अनीति के विरुद्ध जुझारू रुख अपनाए रहने पर ही सज्जनता की सत्प्रवृत्तियों को जीवन्त रखा जा सकता है । इन दिनों कुरीतियाँ, अन्धविश्वास, अनाचार और अवाँछनीयता दिन-दिन अधिक बढ़ती जा रही है । इसमें दोषी वे लोग भी हैं जो प्रतिरोध की उपेक्षा करते हैं, उस ओर कदम बढ़ाने से डरते हैं । यह लांछन किसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को लगने नहीं देना चाहिए कि भीतरी और बाहरी क्षेत्र में गन्दगी बढ़ने दी गयी और उन दोनों मोर्चों पर लड़ने के लिए कोई कारगर साहस नहीं दिखाया गया ।

प्रतिस्पर्धा, प्रगतिशीलता भी एक प्रकार का संघर्ष ही है, जिसकी प्रेरणा-उत्तेजना द्वारा गई गुजरी स्थिति से सही स्तर तक पहुँचा और सही स्तर से ऊँचा उठकर मूर्धन्य बन जाती है । उसी मानवों में से प्रत्येक को, औचित्य के पथ पर संघर्ष में निरन्तर रत रहना पड़ा है । ऊँचा उठने की महत्त्वाकाँक्षा इस प्रकार के साहस को क्रियान्वित करने के लिए निरन्तर आह्वान करती रहती है । स्काउट आन्दोलन में सैनिक चालढाल अपनाने के लिए वैसा रहन-सहन अभ्यास में उतारने के लिए प्रोत्साहित किया गया है ।

प्रशिक्षण

सभ्यता के शुभारम्भ का तीसरा चरण है—फीड, अर्थात् प्रशिक्षण— अधिक जानने, अधिक सीखने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना । योग्यता, क्षमता, विशेषता, वरिष्ठता के बीजांकुर तो सभी में होते हैं, पर उन्हें सुविकसित करने के लिए हर किसी को बढ़ी-चढ़ी प्रयत्नशीलता का परिचय देना पड़ता है । मनुष्य आरम्भ से शिक्षार्थी रहता है और उसे अन्तिम साँस तक सीखने के लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए जो उपयोगी एवं आवश्यक है । ज्ञान सम्पदा का संचय ही वस्तुतः सच्चे अर्थों में सुसम्पन्न बनाता है । सुसंस्कृत भी इसी रीति-नीति को अपनाने पर बना जाता है । सीखने में असमर्थ रहने पर व्यक्ति कूप-मण्डूक के स्तर का संकीर्ण सीमाबद्ध ही बनकर रह जाता है । इस जोखिम को नहीं उठाना चाहिए । अनाड़ियों को ही अभाव ग्रस्त रहना पड़ता है और वे ही अशक्त, दुर्बल, अयोग्य समझे जाते हैं । इस अभिशाप से मुक्ति पाने और दिलाने के लिए सद्ज्ञान की उपासना आवश्यक है ।

मनीषियों के पद चिन्हों पर चलते हुए हर विचारशील को अधिक जानने, अधिक सीखने, अधिक अनुभवी बनने का प्रयत्न करना चाहिए । बहुतों के लिए यह सम्भव होता है, कि संसार की दृष्टि में बहुत कुछ भला-बुरा करते रहने पर भी, अपने लिए मात्र उपयोगी वस्तुएँ ही चयन करते हैं । जिसकी जानकारियाँ जितनी कम हैं, वह उतना ही संकीर्ण रहेगा और अपने सीमित भाव को ही सब कुछ मान कर पूर्वाग्रहों पर अड़ा रहेगा । यथार्थता को समझ पाना और परिस्थितियों, आवश्यकताओं के अनुरूप सही मार्ग अपना सकना उसके लिए शक्य ही न हो सकेगा। उचित यही है कि वर्तमान ज्ञान को अपर्याप्त मानकर अधिक मात्रा में, अधिक सही जानकारियों को एकत्रित करते रहकर, अपने ज्ञान भण्डार को छुद्र से विशाल और विशालतर बनाते रहा जाय । वह समय पर, अपने काम भी आ सकता है और दूसरों को सही परामर्श दे सकने में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।

आलस्य का माहौल सुविस्तृत क्षेत्र में फैला पड़ा है। उपयोगी सोचने और करने वाले लोगों को भी यह आसान दिखाई पड़ता है । इसी कारण वे पिछड़ी स्थिति में बने रहते हैं । इतना भी नहीं कर पाते कि अपने सम्पर्क क्षेत्र में आने वालों को विचारशील बना सकें । जो विचारशील नहीं, वह अनौचित्य से बचने और अनौचित्य की प्रगतिशीलता अपनाने में सफल समर्थ नहीं हो सकता। इस प्रकार अज्ञान एक प्रकार का दुर्भाग्य ही बन कर रहता है ।

अपने देश में भी अभी साक्षरता का लाभ सर्व-साधारण को नहीं मिल पाया है । प्रायः तीन चौथाई अशिक्षितों से अपना समाज भरा पड़ा है । इसके लिए गरीबी मिटाने का प्रयत्न करना नितान्त आवश्यक है । उतना ही महत्त्वपूर्ण यह भी है कि ''शिक्षा बढ़ाओ'' के लिए प्रबल प्रयत्न किया जाय, प्रचण्ड आन्दोलन चलाया जाय। इस हेतु यदि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति पाँच को साक्षर बनाने का संकल्प करें तो इतने भर से ही अपने समुदाय पर अभिशाप की तरह छायी हुई निरक्षरता का कलंक दूर हो सकता है । आवश्यकता केवल संकल्प और इच्छा शक्ति की है । उसके होने पर समय न मिलने, साधना न होने, प्रभाव न पड़ने जैसे बहानों का सहज ही अन्त हो सकता है और अशिक्षित समझा जाने वाला अपना समुदाय सुशिक्षा का सुयोग प्राप्त कर सकता है । यह आरम्भिक आवश्यकता है, इससे तनिक आगे बढ़ने पर बहुमुखी ज्ञान वृद्धि की आवश्यकता सामने आ खड़ी होती है । अब संसार का, समाज का, जीवन क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि उसके प्रत्येक पक्ष की समुचित जानकारी प्राप्त किए बिना गति नहीं । इसके लिए पुराने स्वाध्याय सत्संग वाले, मनन चिंतन वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माध्यम तो आवश्यक है ही । इसके अतिरिक्त भी पुस्तकालय स्तर की स्थापना करनी पड़ेगी । उसे अरुचि वाले क्षेत्र में भी रुचिकर बनाने के लिए, घर-घर पहुँचाने और पढ़ा साहित्य वापिस लाने की व्यवस्था करनी पड़ेगी । युग चेतना से जन-जन को अवगत कराने के लिए यह नितान्त सामयिक भी है और आवश्यक भी ।

इस संदर्भ में ज्ञान गोष्ठियों के आयोजनों का भी कम महत्त्व नहीं है । छोटे-बड़े आयोजन समारोह होते रहें और उपयोगी ज्ञान सम्पदा से जन-जन को लाभान्वित करने की व्यवस्था बनती रहे, यह आवश्यक है । प्राचीन काल में संस्कारों, पर्वों, कथा प्रवचनों, कीर्तनों के माध्यम से यह प्रक्रिया चलती थी । परिव्राजक घर-घर अलख जगाने के पुण्य परमार्थ में निरत रहते थे । पद यात्रियों का भी यही उद्देश्य था । आज की स्थिति में देखना यह होगा कि किस वर्ग को, किस क्षेत्र में किस प्रकार के ज्ञान को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है । उसकी पूर्ति के लिए सभाओं, सम्मेलनों, विचार गोष्ठियों के माध्यम से यह कार्य किया जा सकता है । प्रश्नोत्तर शैली भी इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होती है ।

व्यावहारिक जीवन के साथ जुड़ने वाली समस्याओं का समाधान, सम्पर्क एवं प्रभाव क्षेत्र को अधिक सुनियोजित बनाने का कौशल, यह दो ज्ञान विज्ञान के, अनुभव अभ्यास के आरम्भिक एवं महत्त्वपूर्ण चरण हैं । इसके सम्बन्ध में सही अनुभव और सही अभ्यास, सर्वतोमुखी प्रगति और सुख-शांति का पथ-प्रशस्त करता है । इसलिए स्काउटिंग अभ्यासों के साथ चिन्तन पक्ष के फन-फाइट और फीड तीन पक्ष जोड़े गये हैं । अध्यात्म धर्म और तत्व दर्शन भी अपनी शैली में इन्हीं सुसंस्कारिताओं से सम्पर्क बढ़ाने का मार्ग-दर्शन करता है । सभ्यता के प्रत्यक्ष चिन्ह भी यही हैं ।

सुसंस्कारिता की ओर भी बढ़ें

स्काउटिंग, सभ्य और समग्र व्यक्तित्व विनिर्मित करने के लिए, छात्रावस्था से प्रारम्भ किया गया एक प्राथमिक चरण समझना चाहिए । वह शुरूआत है, उसकी पूर्णता तो शायद पूरे जीवन में भी सम्भव न हो सके ? उस प्रक्रिया को अगले जन्म जन्मान्तरों तक जारी रखने की आवश्यकता है । पूर्ण पुरुष ही भगवान के प्रतीक प्रतिनिधि, देवात्मा या अवतार माने जाते हैं । निज का व्यक्तित्व जब निखरने लगता है, तो अनेकानेक विभूतियाँ उभरने या निखरने लगती हैं । विकसित व्यक्तित्व ही वह पात्रता है जिसमें गहरे सरोवर की तरह सब ओर से विशिष्टताओं का जल भरता चला जाता है । वह जलाशय किस प्रकार कितनों का भला करता है, यह सभी जानते हैं । वे स्वयं भी शोभा पाते हैं और प्राणियों का हित भी करते हैं । ऊँचे पर्वत शिखरों पर बादल स्वयं ही बर्फ की मोटी परत जमाने के लिए जा पहुँचते हैं । हिमाच्छादित शिखर प्रकृति के उच्चस्तरीय सौन्दर्य के प्रतीक होते हैं । धीरे-धीरे पिघलकर वे पानी के अजस्र स्रोतों द्वारा वनस्पतियों व प्राणियों को जीवन देते हैं ।

वस्तुतः आत्म-निर्माण के प्रतिफल के रूप में ही अन्तरिक्ष से दैवी वरदान बरसते हैं । शास्त्रकार का यह कथन अक्षरशः सत्य है कि अपना आपा ही समर्थ मित्र या घिनौने शत्रु की भूमिका सम्पन्न करता रहता है । आत्म-संतोष और आन्तरिक उमंग का उद्गम केन्द्र भी यही है । विभिन्न क्षेत्रों की अनेकानेक सफलताएँ-सम्भावनाएँ और कुछ नहीं, परिष्कृत व्यक्तित्व के भण्डार में भरे हुए मणि-माणिक हैं । हेय या निकृष्ट व्यक्तित्व के लोग आये हुए सुअवसरों का भी लाभ नहीं उठा पाते । यह कथन सत्य है कि ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करने को कटिबद्ध हों । इसी आधार पर एक को स्वर्ग सुख पाने का निमंत्रण मिलता है और दूसरे को यमदूत नागपाश में बाँधकर नारकीय यातनाएँ देने के लिए ले जाते हैं । यह पक्षपात नहीं है, वस्तुतः हम ही दोनों स्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए, जाने अनजाने स्वयं आग्रह-अनुरोध करते हैं ।

आत्म-निर्माण का अर्थ है— भाग्य-निर्माण, भविष्य निर्माण। विकसित अन्तःकरण खिले हुए पुष्प की तरह दैवी अनुदानों के, भौंरों, तितलियों को आकर्षित करता है । इस तथ्य को जानने वाले ही गुह्यविद्या विशारद हैं । उन्हें ही त्रिकालदर्शी-दूरदर्शी योगी कहा जाना चाहिए । उन्हीं के पुरुषार्थ से प्रभावित होकर ऋद्धि-सिद्धियाँ आकाश से उतरती हैं और जीवन साधना के साधक को निहाल करती हैं । इस तथ्य और सत्य की उपेक्षा करने वाले जाल जंजाल में भटकते और अनगढ़ पगडण्डियों में ठोकरें खाते फिरते हैं । प्रगति का राजमार्ग तो वही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, जिसे आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास आदि नामों से जाना जाता है ।

इस भाग्योदय का श्री गणेश सभ्यता के शुभारम्भ से होता है । अध्यापक स्काउटिंग के माध्यम से इसे छात्रों के स्वभाव का अंग बनाने, अभ्यास में उतारने का प्रयत्न करते हैं । जीवन विकास के किसी भी अभिलाषी को इससे अपरिचित नहीं रहने देना चाहिए । यह विषय, शिक्षा का अनिवार्य अंग होना चाहिए । बाल कक्षाओं में स्काउटिंग तथा तरुणों-प्रौढ़ों के लिए सभ्यता का शुभारम्भ, व्यक्तित्वों के सर्वतोमुखी परिष्कार-विकास के लिए प्रयुक्त होने चाहिए।

इस महाविद्यालय में प्रवेश करने वाले को, स्वयं को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए समूची सतर्कता, जागरुकता और प्रयत्नशीलता नियोजित करनी होती है । इसे दैनिक व्यवहार का अंग बनाने के लिए व्यायाम, श्रम, खेलकूद, कबायद की प्रक्रिया नित्य कर्म में सम्मिलित रखनी पड़ती है । स्काउटिंग में तो यह सब अनिवार्य माना ही जाता है, अन्यों के लिए व्यायामशालाओं, अखाड़ों, जमनेशियमों में भी इन्हें महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है । व्यस्त जीवन में भी यह क्रम किसी न किसी रूप में सभी को अपनाते रहना चाहिए । हॉकी, फुटबाल, वॉलीबाल जैसी सुविधा न बन पड़े तो टहलने, दौड़ने, एक स्थान पर उछलने कूदने के पी०टी० जैसे प्रयोग करने चाहिए । अंग-संचालन के लिए आसन स्तर के और भी कई प्रयोग निकल सकते हैं । इन्हें नियमित रूप से करने पर जहाँ माँस पेशियों की सुदृढ़ता, रक्त संचार में नवीनता, फेफड़ों में स्वच्छ वायु का संचार जैसे शारीरिक लाभ मिलते हैं, वहीं स्फूर्ति उमंग साहसिकता जैसी प्रखरता परक् सामर्थ्यों का भी अभिवर्धन होता है । अच्छा हो कि प्रत्येक प्रतिभा सम्पन्न इसे अपनाये और अपने सम्पर्क वालों को इसके लिए प्रोत्साहित करें । इससे सैनिक स्तर की तत्परता उभरती है जिसके सामने आलस्य टिक नहीं पाता । झिझक, संकोच और भीरुता आदि का पत्ता कटता है । यह सब महात्म्य शारीरिक व्यायाम प्रक्रिया का है ।

मानसिक व्यायाम में व्यवस्था बुद्धि के विकास के लिए समुचित अवसर मिलना चाहिए । मैनेजर, सुपरिन्टेन्डैन्ट स्तर की प्रतिभा अपने में विकसित हो सके, इसके लिए ऐसे अवसरों को दौड़कर पकड़ना चाहिए और उत्तरदायित्वों को वहन करने के लिए आगे आना चाहिए। अनावश्यक शंकाशीलता, डरेसहमे रहना, झिझक, उत्तरदायित्वों को कंधे पर उठाने में घबराना, बुरी आदतें हैं । प्रतिभा और प्रखरता को बिखरने न देकर अपने श्रम, समय और मनोयोग को अपने निश्चित निर्धारित क्रिया-कलापों के साथ अनवरत रूप से जोड़ना पड़ता है । साथ ही अपने अधिकार क्षेत्र के साधनों, उपकरणों को सुव्यवस्थित, सुसज्जित रूप में रखने और उपयोग में लाने की अपनी सतर्कता का परिचय देना होता है । अनावश्यक, अनुपयोगी वस्तुओं को या तो ठीक करके उपयोग में लाया जाय, अथवा कबाड़ी के यहाँ या कूड़ाघर में पहुँचा दिया जाय। उपयोगी वस्तुएँ व्यवस्थित रहें, स्वच्छता इसी को कहते हैं ।

मानवी सभ्यता का प्रत्यक्ष पक्ष सफाई के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है । गंदगी को प्रधान दुर्गुण माना जाता है । कुरूपता यही है । इसके कारण बीमारियाँ फैलती हैं । गंदगी अनगढ़ता की पहली निशानी है । देखने वाले पहली दृष्टि में ही यह अनुमान लगा लेते हैं कि गंदगी लगाये रखने वाला व्यक्ति, मानव गरिमा के प्रथम अनुभव से रहित है । एक किस्म का अपमान या लाँछन है । स्काउटिंग के साथ स्वच्छता और सुव्यवस्था को अविच्छिन्न रूप से जोड़कर रखा जाता है ।

वस्तुओं के संदर्भ में जिसे सुव्यवस्था कहते हैं, उसी को मनुष्य समुदाय के संदर्भ में अनुशासन समझा जाना चाहिए । अपने समय और श्रम सम्पदा के सदुपयोग को, समर्थता, शोभा और प्रगति का आधार माना जाता है । वरिष्ठों से यह आशा की जाती है कि अपने परिवार और सम्पर्क क्षेत्र वाले समुदाय को, उपयुक्त कार्यों में क्रमबद्ध रूप से नियोजित रखें । आमतौर से व्यक्ति अपने आप को क्रमबद्धता में बाँध नहीं पाते । बालकों को बात-बात में सिखाना और पल-पल में निर्देश देना पड़ता है । ठीक इसी प्रकार बड़ी आयु वाले भी व्यवस्था के सम्बन्ध में अस्त-व्यस्त ही होते हैं । आर्चिटैक्ट, इंजीनियर, ठेकेदार, सेनापति बड़े कारखानों, व्यवसायों के संचालकों आदि में यही विशेषता होती है कि वे सम्बन्धित व्यक्तियों को तत्परतापूर्वक कार्यों में लगाये रहते हैं, उनकी योग्यता, दक्षता मनःस्थिति आदि का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ध्यान रखते हुए तालमेल बिठाये रहते हैं । इसी कारण असफलताएँ सफलता में बदलती देखी जाती हैं ।

व्यवस्था वृद्धि वालों की तत्परता बहुआयामी होती है। वे कार्यों को उनके महत्त्व के क्रम से लगाते हैं । उपलब्ध व्यक्तियों में से जो उन कार्यों के लिए फिट बैठते हैं, उन्हें कार्य सौंपते हैं । कार्य अधिक सही ढंग से कैसे किया जा सकता है, इसकी योजना बनाते हैं और सिलसिला बिठाते हैं । उसके लिए अनभ्यस्तों को अभ्यास कराते हैं और भूलों को ठीक करने के उपाय बतलाते हैं। कार्य जैसा होना चाहिए वैसा न हो पाना, व्यक्ति के प्रमाद और नियंत्रण की सूझ-बूझ की कमी का प्रतीक है ।

मनुष्य के पास ईश्वर प्रदत्त समय, श्रम, मनोबल, भावना आदि के अनेक महत्त्वपूर्ण साधन हैं । इन सबका समुचित और सुव्यवस्थित सदुपयोग किया जा सके तो कार्य क्षमता अनेक गुनी अधिक बढ़ जाती है । उनके सहारे चमत्कारी कहे जाने योग्य उपलब्धियाँ हो सकती हैं, किन्तु दुर्भाग्य से उन्हें सक्रिय रखने और सुनियोजित करने की विद्या बन नहीं पाती । इस कारण उपलब्ध क्षमताओं का एक छोटा अंश ही काम में आ पाता है, फलस्वरूप उपलब्धियाँ भी स्वल्प ही रह जाती हैं । स्तर की दृष्टि से इसे उपहासास्पद माना जा सकता है।

प्रतिभा की पहचान यह है कि न केवल अपनी, वरन् सम्बन्धित सभी व्यक्तियों की क्षमताओं को सुनियोजित कराया जा सके । यह वास्तविक शुभ चिंतन और हित साधन हैं । दुलार या पक्षपात के कारण काम का बोझ न पड़ने देना, आराम को, स्वेच्छाचार को शह देना, एक प्रकार से किसी अपंग-अविश्वस्त स्थिति में पड़े रहने देने का निमित्त कारण बनता है । साधनों की कमीबेशी हो सकती है, परन्तु क्षमताओं की दृष्टि से सभी लगभग समान होते हैं । अन्तर यह होता है कि किसी ने उनके सदुपयोग में तत्परता दिखायी और कोई उपेक्षा वरत कर उन्हें निष्क्रिय बनाता रहा । प्रबन्ध शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही भारी महत्त्व के कार्यों का सुसंचालन कर पाते हैं । इसीलिए प्रबन्धक का मूल्य, महत्त्व और गौरव अन्य योग्यता वालों की तुलना में कहीं अधिक माना जाता है। कौशल इसी को कहते हैं । नेतृत्व ऐसों को ही मिलता है । सफलता और प्रगति के तत्व, गाड़ी के दो पहियों के समान इसी के साथ जुड़े रहते हैं ।

अपव्यय स्थिरता और प्रगति का शत्रु है । साधनों और क्षमताओं को अनावश्यक रूप से खर्च करने वाले अपने को अमीर, अधिकार सम्पन्न तो अनुभव करते हैं, परन्तु वास्तव में वे अपने भविष्य को अंधकारमय बनाते हैं । असंयमी अपने स्वेच्छाचार का अनर्थकारी प्रतिफल हाथों-हाथ भुगतते रहते हैं । ऐसे व्यक्ति धन और समय को प्रदर्शनकारी अनावश्यक कार्यों में खर्च करके सस्ती वाहवाही लूटने या अपने आपको सुविधा सम्पन्न दिखाने का प्रयास करते हैं । वे उपलब्धियों को बर्बाद करने के बाद आवश्यक कार्यों को पूरा करते समय कठिनाई अनुभव करते हैं । अपनी परेशानी का दोष परिस्थितियों को या भाग्य को देते हैं । ठाठ-बाट, प्रदर्शन विज्ञापन में ही जिनका मन रमता है, उन्हें बचकाना माना जाता है । उन पर यह संदेह भी किया जाता है कि वे पाये गये साधनों का कभी भी दुरुपयोग कर सकते हैं । यह अप्रामाणिकता, विश्वास और सहयोग में कटौती कराती है । विचारशीलों की दृष्टि में अपव्यय की उच्छृंखलता को भी, असभ्यता ही माना जाता है । सभ्यता का सार तत्व तो सादा जीवन, उच्च विचार के सिद्धान्त के साथ जुड़ा हुआ है । तेजस्वी लोग अपनी जीवन सम्पदा का अपव्यय न होने दें ।

जीवन सम्पदा का कण-कण बचाना और उसे उपयुक्त प्रयोजनों में लगाना जीवन का मूल मंत्र है । संयम को इसी दृष्टि से महत्त्व दिया गया और उसे व्यावहारिक जीवन का तप माना गया है । तप के बदले वरदान मिलते हैं, ऋद्धि-सिद्धियों के अम्बार लगते हैं, इसे सभी जानते हैं। इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम, विचार संयम— इन चारों की अत्यधिक प्रशंसा की गई है । उन्हें जीवन साधना का अविछिन्न अंग माना गया है । साधना ही सिद्धियों की जन्मदात्री है । जीभ पर चटोरेपन का और कर्कश बोलने का अंकुश लगाया जाने लगे, तो अनियमित अनावश्यक भोजन में जो स्वास्थ्य की बर्बादी होती है, वह नहीं हो । कटु भाषण से अकारण जो मनोमालिन्य बढ़ता है, वह न बढ़े । जननेन्द्रिय संयम से जीवनी शक्ति का अनावश्यक ह्रास रुक सकता है और विपरीत लिंग के प्रति सदाशयता का दृष्टिकोण बना रहता है । यह इन्द्रिय संयम का प्रथम पक्ष है । इसी प्रकार अत्यावश्यक वस्तुओं को छोड़कर अन्य चीजें न खरीदी जायें । अनिवार्य कामों के अतिरिक्त धन को न खर्च किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाय । दिनचर्या को उतनी व्यस्त रखा जाय, कि उसमें समय की बर्बादी के लिए कहीं कोई गुंजाइश न रहे । इसी प्रकार कल्पनाओं में, विचारणाओं में, मात्र रचनात्मक तत्वों को ही स्थान रहे । कुकल्पनाओं को, ईर्ष्या, द्वेष, भय, क्रोध आदि आशंका जैसे मनोविकारों को यदि पास न फटकने दिया जाय, तो उसका परिणाम इन सभी क्षेत्रों में बचत की राशि एकत्रित करेगा और उसे सत्प्रयोजनों में लगाकर, अपनों के लिए ही नहीं, सभी अन्य जनों के लिए भी प्रगति का पथ प्रशस्त किया जायगा। इन्हीं कारणों को देखते हुए संयमशीलता, सादगी, सुव्यवस्था को सभ्यता का प्रत्यक्ष फलदायी पक्ष माना गया है । जो इसे नहीं अपना पाते, उन्हें पग-पग पर घाटा एवं अपमान ही सहन करना पड़ता है । जो मानवी सभ्यता को अपनाकर अपने को प्रगतिशीलों की पंक्ति में बिठाना चाहते हैं, उनके लिए आवश्यक है कि मानवी गरिमा की पक्षधर मर्यादाओं का श्रद्धा पूर्वक निर्वाह करें; पर जिन्हें उच्छृंखलता, उद्दण्डता, असामाजिकता की परिधि में पाया जाता है, उन वर्जनाओं से बचने और बचाने के लिए कठोर अनुशासन बनायें । सभ्य जन यही किया करते हैं ।

प्रत्यक्ष ही सब कुछ नहीं है, परोक्ष का भी अपना महत्त्व है । प्रकृति में वस्तुएँ ही प्रत्यक्ष होती हैं, पर अनेक स्तर की सशक्त सूक्ष्म तरंगें अदृश्य ही रहती हैं । इसीलिए दृश्य की तुलना में अदृश्य का महत्त्व अधिक माना गया है । शरीर प्रत्यक्ष है । उसकी हलचलें भी प्रत्यक्ष होती हैं । सम्पदा सामग्री और परिस्थिति भी आँखों देखी जा सकती है । सुन्दरता का निर्णय नेत्र कर सकते हैं, पर मान्यता, आस्था, विचारणा, आकाँक्षा, भावना, दृष्टिकोण और चरित्र जैसे चेतना क्षेत्र की विभूतियों को, भावना क्षेत्र के अन्तःकरण के साथ जुड़ी हुई ही पाया जाता है । वस्तुतः उन्हीं की प्रेरणाओं से जीवन की दिशा-धारा बनती है, क्रिया-कलापों की श्रृंखला चलती है । इसलिए महत्त्व की दृष्टि से उन्हीं की गरिमा को वरिष्ठ माना गया है । प्रत्यक्ष सत्प्रवृत्तियों को सभ्यता के नाम से जाना जाता है और अन्तःकरण से सन्निहित भावनाओं को संस्कृति कहा जाता है ।

सभ्यता से भी बढ़कर सुसंस्कारिता का मान महत्त्व एवं गौरव है । उनकी क्षमता एवं परिधि भी अपेक्षाकृत अधिक है । सभ्यता का श्री गणेश करने वाले अगला कदम सुसंस्कारिता अपनाने के रूप में उठाते है । सभ्यता की पूर्णता सुसंस्कारिता के साथ जुड़ने से ही होती है । अन्यथा सभ्यता का व्यवहार-कौशल तो, कलात्मक छद्म के रूप में भी सीखा अपनाया जा सकता है । उतने भर से बात बनती नहीं, सर्वतोमुखी प्रगति की सम्भावना सुनिश्चित होती नहीं है । हमें शरीर से सुन्दर स्वच्छ और सुव्यवस्थित तो होना ही चाहिए; किन्तु आवश्यक यह भी है कि आदर्शों के प्रति आस्थावान बनाया जाय , दृष्टिकोण में उत्कृष्टता को समाविष्ट रखा जाय । भाव-संवेदनायें, आकांक्षाएँ इस स्तर की हों जिन्हें शालीनता सज्जनता की पक्षधर कहा जा सके ।

सुसंस्कारिता के चार आधारों को प्रमुख माना गया है—(१) समझदारी, (२) ईमानदारी, (३) जिम्मेदारी, (४) बहादुरी । इन्हें आध्यात्मिक-आन्तरिक वरिष्ठता की दृष्टि में उतना ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए जितना कि शरीर के लिए अन्न, जल, वस्त्र और निवास को अनिवार्य समझा जाता है ।

समझदारी का तात्पर्य है— दूरदर्शी विवेकशीलता को अपनाया जाना । आमतौर से लोग तात्कालिक लाभ को ही सब कुछ मानते हैं और उसके लिए अनाचार भी अपना लेते हैं । इससे भविष्य अंधकारमय बनता है और व्यक्तित्व का स्तर एक प्रकार से हेय ही बन जाता है । अदूरदर्शिता तुर्त-फुर्त, अधिक सुविधा सम्पादन के लिए लालायित रहती है और इस उतावली में ऐसे काम करने में भी नहीं झिझकती, जिनकी भावी परिणति बुरे किस्म की हो सकती है । मूर्ख चिड़ियाँ और मछलियाँ इसी दुर्बुद्धि के कारण तनिक से प्रलोभन में अपनी जान जिन्दगी देती देखी गई है । चटोरे व्यक्ति इसी ललक में अपनी स्वास्थ्य सम्पदा को तहस-नहस कर लेते हैं । यौनाचार में अतिवाद बरतने वाले लोग, जवानी में ही बूढ़े-खोखले होकर अकाल मृत्यु के मुँह में जा घुसते हैं । अपराधी तत्वों में से अधिकांश लोग इसी मनोवृत्ति के होते हैं । पढ़ने का समय आवारागर्दी में गुजार देने वाले व्यक्ति जवानी में ही दर-दर की ठोकरें खाते हैं । नशेबाज भी इसी मूर्खता को अपना कर धीमी आत्म हत्या करने में निधड़क रूप से लगे रहते हैं । ऐसी नासमझी के रहते आज का, अभी का लाभ ही सब कुछ दीख पड़ता है और भविष्य की सम्भावानाओं के संदर्भ में सोचने तक की फुर्सत नहीं मिलती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूरदर्शिता, विवेकशीलता, उस अनुभवी किसान की गतिविधियों जैसी हैं, जिनके अनुसार खेत जोतने, बीज बोने, खाद-पानी देने, रखवाली करने में आरम्भिक हानि उठाने और कष्ट सहने को शिरोधार्य किया जाता है । दूरदर्शिता उसे बताती है कि इसका प्रतिफल उसे समयानुसार मिलने ही वाला है । एक बीज के दाने के बदले सौ दाने उगने ही वाले हैं और समय पर उस प्रयास के प्रतिफल कोठे भरे धन धान्य के रूप में मिलने ही वाले हैं । संयम और सत्कार्य ऐसी ही बुद्धिमत्ता है । पुण्य परमार्थ में भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाली सम्भावनाएँ सन्निहित हैं । संयम का प्रतिफल वैभव और पौरुष के रूप में दृष्टिगत होने ही वाला है । दुर्बीन के सहारे दूर तक की वस्तुओं को देखा जा सकता है और उस जानकारी के आधार पर अधिक बुद्धिमत्ता पूर्ण निर्णय लिया जा सकता है । अध्यात्म भाषा में इसी को तृतीय नेत्र खुलना भी कहते हैं, जिसके आधार पर विपत्तियों से बचना और उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाओं का सृजन सम्भव हो सकता है ।

सुसंस्कारिता का दूसरा चिन्ह है— ईमानदारी । कथनी और करनी को एक-सा रखना ईमानदारी है । आदान-प्रदान में प्रामाणिकता को इसी सिद्धान्त के सहारे अक्षुण्य रखा जाता है । विश्वसनीयता इसी आधार पर बनती है । सहयोग और सद्भाव अर्जित करने के लिए ईमानदारी ही प्रमुख आधार है । इसे अपने व्यवसाय में अपनाकर कितनों ने ही छोटी स्थिति से उठकर बड़े बनने में सफलता पाई है । बड़े उत्तरदायित्वों को उपलब्ध करने और उसका निर्वाह करने में ईमानदार ही सफल होते हैं । इस सद्गुण को सुसंस्कारिता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष माना गया है । उसे अपनाने वाले ईमानदारी और परिश्रम की कमाई से ही अपना काम चला लेते हैं । उनकी गरीबी भी ऐसी शानदार होती हैं जिस पर अमीरी के भण्डार को निछावर किया जा सके ।

सुसंस्कारिता का तीसरा पक्ष है— जिम्मेदारी । मनुष्य अनेकानेक जिम्मेदारियों से बँधा हुआ है । यों गैरजिम्मेदार लोग कुछ भी कर गुजरते हैं, किसी भी दिशा में चल पड़ते हैं, अपने किन्हीं भी उत्तरदायित्वों से निर्लज्जता पूर्वक इन्कार कर सकते हैं; पर जिम्मेदार लोगों को ही अपने अनेकों उत्तरदायित्वों का सही रीति से, सही समय पर निर्वाह करना पड़ता है । स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने की, जीवन सम्पदा का श्रेष्ठतम सदुपयोग करने की, लोक परलोक को उत्कृष्ट बनाने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी जो निभाना चाहते हैं, वे ही सन्तोष, यश और आरोग्य का लाभ प्राप्त कर सकते हैं । पारिवारिक जिम्मेदारियाँ समझने वाले आश्रितों को स्वावलम्बी, सदगुणी बनाने में निरत रहते है और सन्तान बढ़ाने के अवसर आने पर फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं । हजार बार सोचत-समझते हैं और विचार करते हैं, कि अभ्यागत को बुलाने के उपयुक्त सामग्री-परिस्थिति और योग्यता पास में हैं, या नहीं ? अविभावकों, आश्रितों और असमर्थों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करने में संकीर्ण स्वार्थपरता उन्हें बाधा नहीं डालती ।

पेट और प्रजनन तक ही मनुष्य की सीमा नहीं है । धर्म और संस्कृति के प्रति, विश्व मानवता के प्रति, मनुष्य के सामाजिक एवं सार्वभौम उत्तरदायित्व जुड़े हैं; यहाँ तक कि अन्य प्राणियों एवं वनस्पतियों के प्रति भी । उन सभी के सम्बन्ध में दायित्वों एवं कर्त्तव्यों के निर्वाह की चिन्ता हर किसी को रहनी चाहिए । यह कार्य तभी सम्भव है, जब अपनी संकीर्ण स्वार्थपरता पर अंकुश लगाया जाय । औसत व्यावहारिक स्तर का निर्वाह स्वेच्छापूर्वक स्वीकार किया जाय । यदि लोभ, मोह, अहंकार का, वासना तृष्णा और संकीर्ण स्वार्थपरता का घटाटोप ऊपर छाया होगा, तो फिर नासमझ खाली बच्चों का मन, न तो उस स्तर का सोचेगा और न सयानों से लोक मंगल के लिए कुछ निकालते बन पड़ेगा । आवश्यकताएँ तो कोई थोड़े श्रम, समय में पूरी कर सकता है; पर वैभव जन्य भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ तो ऐसी है जिन्हें पूरी कर सकना रावण, हिरण्यकश्यप, सिकन्दर आदि तक के लिए सम्भव नहीं हुआ, फिर सामान्य स्तर के लोगों की तो बात ही क्या है । वे हविस की जलती चिताओं वाली कशमकश में आजीवन विचरण करते रहते हैं । भूत-पलीत की तरह डरते, डराते समय गुजारते और अन्ततः असन्तोष तथा पाप की चट्टानें ही सिर पर लादकर विदा होते हैं । जिन्हें मानव जन्म के साथ जुड़ी हुई जिम्मेदारियाँ निवाहनी हों, उनके लिए करने को तो बहुत कुछ पड़ा है, पर वह सब बन तभी पड़ेगा जब निजी जीवन में सन्तोष और सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन जैसे लोक मंगल के कार्यों के लिए समुचित उत्साह अन्तःकरण में उमगता हो । जिम्मेदारियाँ निवाहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का, सुसंस्कारिता के लक्ष्य तक पहुँचने वाला यही राजमार्ग है ।

सुसंस्कारिता का चौथा चरण है— बहादुरी । दैनिक जीवन में अनेकानेक उलझनें आती रहती है । उन सबसे निपटने के लिए आवश्यक साहस होना आवश्यक है, अन्यथा हड़बड़ी में समाधान का कोई सही उपाय तक नहीं सूझ पड़ेगा । आगे बढ़ने और ऊँचा उठने की प्रतिस्पर्धाओं में सम्मिलित होना पड़ता है । गुण, कर्म, स्वभाव में गहराई तक घुसे, जन्म जन्मान्तरों के कुसंस्कारों से भी, निरन्तर वह महाभारत लड़ने का कृत्य करना पड़ता है, जिसमें गीताकार ने अर्जुन को प्रशंसा एवं भर्त्सना की नीति अपनाते हुए प्रवृत्त होने के लिए उद्धत किया है । अपने को निखारने, उबारने और उछालने के लिए अदम्य साहस का सहारा लिए बिना कोई मार्ग नहीं । समाज में अवांछनीय तत्वों की, अंधविश्वासों, कुप्रचलनों और अनाचारों की कमी नहीं है। उनके साथ समझौता सम्भव नहीं जो चल रहा है, उसे चलने देना सहन नहीं हो सकता। उसके विरुद्ध असहयोग, विरोध की नीति अपनाए बिना और कोई चारा नहीं इसके लिए सज्जन प्रकृति के लोगों को संगठित भी तो करना होता है । यह सभी बहादुरी के चिन्ह हैं, इन्हें भी सुसंस्कारिता का महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है।

सभ्यता के सर्वतोमुखी क्षेत्र को प्रकाशित करने के लिए जहाँ स्काउट स्तर की जागरुकता, पराक्रम, प्रयत्न अपनाए जाने की आवश्यकता है; वहीं सुसंस्कारिता को भी बढ़ाने और अपनाने के लिए, भरपूर प्रयत्न करते रहने की भी अनिवार्य आवश्यकता है ।

***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुखी, तनाव ग्रसित व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परम वंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी टेण्ड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजा घर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में 1942-43 में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ सहस्र कुण्डीयज्ञ की आधार शिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परम वंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन विस्तार डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परम वंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू० गुरुदेव की साधना स्थली व प्रातः काल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा संपन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्य श्री ने युग निर्माण योजना के शत सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युगनिर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युगनिर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शांतिकुंज, हरिद्वार- ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुनः एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने,

हवेली कहा जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जोकि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ बनाई गई। १९५३ में एवं क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों- प्रज्ञा संस्थानों भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों-चरणपीठों का महत्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्य पूर्ण था। ***परम पूज्य गुरुदेव की महत्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ, इस प्रकार हैं-***

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शांतिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष जन्मा संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन ब्राह्म मुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर १९११ के दिन आती थी। एक श्री मंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित-पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ जिसे पूरे गाँव का एक मात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीर धारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशा धारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धन राशि द्वारा विनिर्मित्त है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ-एवं कन्या इंटर कालेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा एवं एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित संस्कारवान आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव निर्माण की सांस्कृतिक-भावनात्मक क्रांति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीया मण्डी, मथुरा में स्थित हैं। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवन काल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युगनिर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्रनिर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़ पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद कांग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रंगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका-मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोबा जी के चले जाने के बाद अस्तित्त्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि. संवत् २०६८ में जन्में राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराम मत्त कहलाने वाले, आचार्य श्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रांति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माता जी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका-अपनी लेखनी से लिखी ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उनने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रांति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्व दर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में संपन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरु सत्ता को देखकर त्याग करने की यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उनने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से संपन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक आँवल खेड़ा से अपनी जन्मभूमि से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी 12 वर्ष पूर्व आरंभ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंत: स्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया । इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने 24 कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़ गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था । पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्त्तन सत्र जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े । यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का तांता लगा रहता है । पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं ।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्त ऋषियों की मूर्त्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को संपन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार संपन्न होते हैं! इस बीच परम वंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ संपन्न करना आरम्भ रखा । देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया । इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा ।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक अकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थ स्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया । यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी । स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है ।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परम-पूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवी स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७९ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था । वर्तमान शांतिकुंज-गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्त्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फल-श्रुतियों सहित स्थापित हैं । द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्त्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये । इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है । यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों-जैव विद्युत आदि पर पड़ा यह देखा जाता है । विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं । तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित हैं, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं । यहाँ प्रायः ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं । यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता ।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीला संदोह रचकर चली गयी । प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान २४००० से अधिक प्रज्ञा मण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जायें तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है ।

□□□

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org